

याने इण विघ वेंहरता देख ने, कोई खूचणो काढे जाणो रे ।
 जब तो कहे म्हें छां गृहस्थी, सेखां ताके मूढ अयाणो रे ॥ २५ ॥
 जो असुघ लेवो गृहस्थी थकां, तो गुर किण लेखे वाजो रे ।
 ओछा जीतव रे कारणे, इसडो कांय करो अकाजो रे ॥ २६ ॥
 देव अरिहत गुर साधु निग्रन्थ छें, तो श्रावक गुर किण लेखे रे ।
 मोह मिथ्यात में भूला थकां, ते तों सूतर साहमो न वेखे रे ॥ २७ ॥
 आहार असुघ वेंहरे जाण नें, त्यारो होसी काई सुलो रे ।
 वले असुघ दीयां में धर्म कहे, थे जिण मारय गया भूलो रे ॥ २८ ॥
 श्रावक ने आहार देवें असूभतो, तिणरो पिण ओहीज सुलो रे ।
 धर्म जाणे तो पाप अठारमो, ते रह्या मिथ्यात में भूलो रे ॥ २९ ॥
 साधां ने आहार देवे असूभतो, तिण मे बतावे पापो रे ।
 श्रावक नें देवें असूभतो, तिण में कीधी धर्म री थापो रे ॥ ३० ॥
 साधां ने आहार असुघ वेहरावियां, पाप कहें तो सत वाणी रे ।
 धर्म कहे श्रावक ने असुघ दीयां, आ सरधा कठा सू आणी रे ॥ ३१ ॥
 सावा ने आहार पांणी असुघ दीया, पाप लागे द्रव्ये धन खूटो रे ।
 श्रावक नें असुघ दीयां धर्म कहें, ओ इसडो काई छे लडो रे ॥ ३२ ॥
 साधां ने आहार पांणी असुघ दीयां, एकांत पाप पिछांणो रे ।
 ज्यू श्रावक नेई असुघ दीयां, निरुचेंई धर्म म जाणो रे ।
 आ साची सरधा भगवान री* ॥ ३ ॥
 श्रावक बादे श्रावकां भणी, गुण ने तिव्खुत्ता रो पाडो रे ।
 धर्म जाणे त्यांनं बांदियां, ओ मत निरुचेंई माठो रे ॥ आ० ३४ ॥
 बडा श्रावक बाजें वरतां करी, ते तो छोटा श्रावक ने बादे रे ।
 यांरे लेखेंई ए भूला थकां, कर्म तणा पुज बाधे रे ॥ ३५ ॥
 इम कक्षां जाब न उमजे, जब कूर कपट चलावे रे ।
 कहे में घर बार छोड न्यारा हूआं, वले छ काय छोडी वतावें रे ॥ ३६ ॥
 छ काय छोडी कहे सबंधा, वले छोड्यो कहे घर बारो रे ।
 ए भूट बोले छें दोनूं विघें, ते सांभलजो विस्तारो रे ॥ ३७ ॥
 घर छोड्यो कहे मुख थकी, पिण गांम गांम वेडा घर माडी रे ।
 तिण घर रो नांम थानक दीयो, आ तों युंही आत्मा भाडी रे ॥ ३८ ॥
 तिण थानक रे कारणे, विवध पणे जीव मारी रे ।
 तिण थानक नें कीयो आपरो, ए चोडें देलो घरबारी रे ॥ ३९ ॥
 छ काय छोडी कहें सबंधा, तो रात पड्यां कांय हाले रे ।
 तिहां जीव अनेक मरे घणां, वले विना जोया पिण चाले रे ॥ ४० ॥

* यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

भिक्षु-ग्रन्थमाला

ग्रन्थ : १

भिक्षु-ग्रन्थ रत्नाकर

खण्ड : १

सम्पादक :

आचार्य श्री तलसी

संग्रहकर्ता :

मुनि श्री चौथमलजी

प्रबन्ध सम्पादक :

श्रीचन्द रामपुरिया, बी. कॉम., बी. एल.



तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह के अभिनन्दन में प्रकाशित

संस्करण :

जेन श्वेताम्बर तेरपंथी महासभा

३, गोर्नगंज चर्च स्ट्रीट

लखनऊ-१



प्रथमावृत्ति

सूत्र, १९६०

अंक ००१७



प्रति मन्थ्या

१५००



पृष्ठांक :

६६२



मूल्य :

१००० रुपये



मुद्रक :

सेन्ट्रल आर्ट प्रेस,

लखनऊ

प्रकाशकीय

तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह के अभिनन्दन में तेरापंथ सम्प्रदाय के आद्य आचार्य स्वामी भीखणजी द्वारा रचित कृतियों को 'भिक्षु-ग्रन्थ रत्नाकर' (प्रथम खंड) के रूप में प्रकाशित कर वस्तुतः गौरवानुभूति हो रही है। स्वामीजी की उच्च कोटि की दार्शनिक कृतियों में जैन आचार और विचार विषयक गूढ़ तात्त्विक चर्चाएँ बड़ी सरल भाषा में हैं। यद्यपि इन कृतियों की रचना स्वामीजी ने आज से प्रायः पौने दो सौ वर्ष पूर्व तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक वातावरण में की थी, किन्तु, फिर भी ये रचनायें, आज भी उतनी ही उपयोगी हैं, जितनी अपनी रचना-काल में थीं।

महासभा ने स्वामी जी की समस्त कृतियों को जन-हितार्थ क्रम से प्रकाशित करने की परिकल्पना की है। प्रथम दो खण्डों में स्वामीजी की उपलब्ध पद्य-कृतियाँ प्रकाशित हैं। पाठकवृन्द इन परमोपयोगी ग्रन्थ रत्नों से अत्यन्त लाभान्वित होंगे, इसमें सन्देह नहीं।

तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह व्यवस्था उपसमिति

३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट,

कलकत्ता—१

३० जून, १९६०

श्रीचन्द्र रामपुरिया

व्यवस्थापक,

साहित्य-विभाग

भूमिका

तेरापंथ सम्प्रदाय के आद्य आचार्य संत मीलण जी द्वारा रचित विभिन्न तात्त्विक कृतियों को 'मिहू-ग्रन्थ रत्नाकर' के प्रथम खंड में संकलित किया गया है। इस खंड में कुल ३४ रत्न हैं। भिन्न-भिन्न रत्नों का संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जा रहा है :

१—नव पदार्थ :

जैन-दर्शन में जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, बंध, निर्जरा और मोक्ष—ये नव पदार्थ बताये गये हैं। इस कृति में इन्हीं पदार्थों का विशद विवेचन है। यह कृति सं० १८५५ में आरम्भ की गई और सं० १८५६ में समाप्त हुई। ऐसा प्रथम और बारहवीं ढाल की अन्तिम गाथाओं से मालूम होता है। 'पुण्य पदार्थ' की दूसरी ढाल, जो १८४३ में रचित है, तथा तेरहवीं ढाल, जो १८५७ में रचित है, बाद में इस कृति के साथ जोड़ी गई हैं। इस कृति में १३ ढालों में कुल ६४ दोहे और ६८० गाथाएँ हैं। नव पदार्थ का जैसा गभीर विवेचन इस कृति में है वैसे अन्यत्र कम देखा जाता है। पहली ढाल में द्रव्य जीव और भाव जीव का भेद तथा जीव के तेईस गुणनिष्पन्न नामों का बड़ा सुन्दर और सरल विवेचन है। दूसरी ढाल में घर्मास्तिकाय, अघर्मास्तिकाय और आकाशास्तिकाय का तुलनात्मक विवेचन तथा काल और पुद्गलास्तिकाय का अनेक पहलुओं से विवेचन है।

तीसरी और चौथी ढाल में पुण्य पदार्थ का विवेचन है। पुण्य की परिभाषा, पुण्य के उदय से उत्पन्न ह्योका का स्वभाव, पुण्योत्पन्न सुखों के भोगने का फल, उनके त्याग का फल, पुण्य का बध कैसे होता है ?, पुण्य बधने के नौ प्रकार आदि अनेक विषयों का गहरा विवेचन है।

पाँचवीं ढाल में पाप पदार्थ का विवेचन है। छठी और सातवीं ढाल में आश्रव और कर्म के भेद, आश्रव जीव है या अजीव, आश्रव के बीस भेद आदि का विवेचन है।

आठवीं ढाल में संवर किसे कहते हैं, संवर कैसे होता है, देश सवर और सर्व संवर आदि बातों पर मौलिक प्रकाश है। नवीं और दसवीं ढाल में निर्जरा कैसे होती है, निर्जरा की परिभाषा, शुभ योग और निर्जरा का सम्बन्ध, सवर और निर्जरा का सम्बन्ध, अकाम निर्जरा और सकाम निर्जरा, मोक्ष और निर्जरा में अन्तर आदि विषयों का विवेचन है। ग्यारहवीं ढाल में बध पदार्थ का स्वरूप, उसके चार भेद आदि का वर्णन है। बारहवीं ढाल में मोक्ष पदार्थ का विवेचन है। सांसारिक और मौक्तिक सुख, १५ प्रकार के सिद्ध, सिद्धों के स्वरूप आदि का मार्मिक विवेचन है। तेरहवीं ढाल में नौ पदार्थों में कितने जीव हैं और कितने अजीव इस विषय की चर्चा है।

२—श्रावक ना वारे व्रत :

यह कृति सं० १८३२ में गुदोच शहर में समाप्त हुई। इसमें श्रावक के वारह व्रतों का विस्तृत विवेचन है। वारह व्रतों पर इतना विशद और व्यापक विवेचन अन्यत्र कम देखा जाता है। इस कृति में १३ ढालें हैं जिनमें कुल ५२ दोहे और ३६३ गाथाएँ हैं।

३—कालवादी री चौपई :

स्वामीजी के समय में कालवादी एक विशिष्ट मत था। इस कृति में स्वामी जी इस मत की मान्यताओं का खण्डन कर वास्तविक तथ्य क्या है इस पर बड़ा गहरा प्रकाश डालते हैं। यह उच्च कोटि की दार्शनिक कृति है जिसमें गूढ तात्त्विक चर्चा बड़ी सरल भाषा में मिलती है। इसमें ७ ढालें हैं। कुल ३६ दोहे और २४७ गाथाएँ हैं। इस कृति की पहली चार ढालों में रचना-सबत् नही मिलता।

५ वीं जल गेरवा गृह में १=३२ में आषाढ सुदी १ सोमवार के दिन रची गई थी। ६ वीं और ७ वीं जलें पुर में स० १=४८ की क्रमशः वैशाख सुदी ५ बुधवार और वैशाख सुदी ८ रविवार के दिन दूरी हुईं।

४—इन्द्रियवादी री चौपई :

उमें १५ ढालें हैं। कुल ६२ दोहे और ६६७ गाथाएँ हैं। प्रथम सात और १४ वीं ढाल की रचना का काल नहीं मिलता। अवशेष ढालों का रचना-स्थान और काल इस प्रकार है।—

ढाल	= नैणवा शहर	स०	१=४६ ज्येष्ठ सुदी बुधवार
"	६ "	सं०	१=४७ फाल्गुन वदि ८ शनिवार
"	१० भाघोपुर	सं०	" फाल्गुन सुदी
"	११ नैणवा शहर	स०	" वैशाख वदि ६ बुधवार
"	१२ आतरदा गाँव	स०	" वैशाख सुदी १२ रविवार
"	१३ इन्द्रगढ़	स०	" ज्येष्ठ वदि १४ सोमवार
"	१५ भाघोपुर	स०	" चैत्र वदि २ सोमवार

इन्द्रियां सावच्च हैं या निरवच्च—इस विषय पर इन ढालों में मौलिक विवेचन है।

५—परजायवादी री चौपई :

जग कृति में ३ ढालें हैं जिनमें १५ दोहे और १०१ गाथाएँ हैं। इसके रचना-काल का उल्लेख नहीं है।

स्वामी जी के समय में परजायवादी एक मत था। उस मत की विशद समीक्षा इस कृति में है।

६—टीकम डोसी री चौपई :

टीकम डोसी की अनेक प्रकाई थी। उनका निवारण स्वामीजी ने किया। इस कृति में अनेक तात्त्विक विषयों की गहरी चर्चा है। इस कृति में ५ ढालें हैं। कुल २८ दोहे और १२८ गाथाएँ हैं।

७—निपेपां री चौपई :

उमें ६ ढालें हैं। कुल ३० दोहे और २६७ गाथाएँ हैं। किसी ढाल में रचना-काल नहीं मिलता। इस कृति में निक्षेपों के स्वल्प का विवेचन और उनपर मौलिक विचार हैं।

८—निन्ध री चौपई :

उमें ६ ढालें हैं। कुल २८ दोहे और १७२ गाथाएँ हैं। किसी भी ढाल में रचना-काल का उल्लेख नहीं है। निह्लकों की मान्यताओं की गभीर आलोचना इस कृति में है।

९—मिथ्याती री करणी री चौपई :

जग कृति में ४ ढालें हैं। कुल २५ दोहे और १५१ गाथाएँ हैं। दूसरी और चौथी ढाल का रचना समय नहीं मिलता। बाकी दो ढालों का रचना-समय इस प्रकार है—

पहली ढाल	भाघोपुर	स०	१=४३ चैत्र सुदी ६ शुक्रवार
तीसरी ढाल	नैणवा शहर	स०	१=४७ वैशाख वदि १२ शनिवार

१०—एकल री चौपई :

उमें ८ ढालें हैं जिनमें कुल ३७ दोहे और २२७ गाथाएँ हैं। इसका रचना-समय नहीं मिलता। जो गग छोटर अनेकें फिरते हैं उन्हें 'एकल' कहा जाता है। इस चौपई में ऐसे स्वच्छंदों के दोषों पर प्रथम डागा है और ऐसी स्वच्छंदता किन प्रकार जिन-आजा के विपरीत है यह सिद्ध किया है। सूत्र में प्रथम विहारी किने बहा है ? एकल विहार करते हुए भी कैसा साधु शुद्ध होता है ? आदि विषयों का

विवेचन दूसरी ढाल में है। जो अव्यक्त है और विना गुरु की आज्ञा के अकेला स्वच्छन्द विहारी होता है उसका किस तरह पतन होता है इसका बड़ा मनोवैज्ञानिक चित्रण इस कृति में होता है। स्वामी जी ने उपसंहार स्वरूप कहा है—“भगवान् ने सूत्र में कहा है कि ऐसे कुशील, पाक्वस्थ, अपछंद और ससक्त एकल विहारियों का सग नही करना चाहिये। साधु उनके साथ परिचय न करे।”

११—जिनाम्या री चौपई :

इस कृति में ५ ढालें हैं जिनमें कुल ३४ दोहे और २३५ गाथाएँ हैं। पहली ढाल में रचना-सवत् नही है। बाकी चार ढालें भिन्न २ वर्ष में रचित हैं :

ढाल २ खेरवा	स० १८४० आश्विन वदि ५ शनिवार
” ३	स० १८३१ ज्येष्ठ सुदी ३ शुक्रवार
” ४ नाथ दुवारा	स० १८४२ आषाढ वदि १ सोमवार
” ५ ”	स० १८५६ फाल्गुन वदि ६ शनिवार

उपर्युक्त विवरण से पता चलता है कि 'जिनाम्या री चौपई' कोई सलग रचना नही है। यह इस विषय की अलग-अलग समय की ढालों का सग्रह मात्र है। इसका प्रतिपाद्य है—“जैन-धर्म जिन-आज्ञा में है, जिन-आज्ञा के बाहर जैन-धर्म नही।” पहली ढाल में इसका बड़ा सुन्दर विवेचन है कि किन-किन बातों में जिन-आज्ञा है और किन-किन में नही। दूसरी ढाल में साबच्च-निरवद्य कार्य की कसौटी बताते हुए जो जिन-आज्ञा रहित कार्यों में भी धर्म बताते हैं उनकी तीव्र आलोचना की है। जो जिन-आज्ञा के बाहर के कार्यों में मिश्र—धर्म-पाप मिश्रित बतलाते हैं उनकी भी तीव्र आलोचना है। साधु, आहार आदि करते हैं, वस्त्रादि रखते हैं, रात में सोते हैं, ये कार्य जिन-आज्ञा के अन्तर्गत हैं। जो साधुओं के इन कार्यों में प्रमाद, अविरति आदि दोष कहते और उनके महाव्रतों को सागार कहते हैं उनकी आलोचना तीसरी ढाल में है। आज्ञा-सहित कार्य करने में किस तरह साधु को पाप नही लगता इसका विशद विवेचन भी इस ढाल में है। चौथी ढाल में यह बताया गया है कि साधु और साध्वियों के जो अलग-अलग कल्प हैं उनमें किसी तरह का पाप नही। यह कल्प भगवान् द्वारा निर्धारित है और उनकी मुद्रा उस पर है फिर उसे पाप पूर्ण कैसे कहा जा सकता है? इस तरह इस ढाल में साधु-साध्वियों के कल्प का बड़ा गभीर और सुन्दर विवेचन है।

साधु के उपकरण १४ ही हैं या उनसे अधिक भी हो सकते हैं इसका विवेचन ५ वीं ढाल का विषय है। स्वामीजी ने सिद्ध किया है कि साधु के उपकरण १४ ही नही अधिक भी हैं। अतः जो यह कहते हैं कि १४ उपकरण के उपरांत उपकरण रखने वाला साधु नही, इनके उपरांत जो एक कागज का पत्ता भी रखता है वह असाधु है वे विपरीत प्ररूपणा करते हैं। इस ढाल में इस बात का भी विवेचन है कि साधु लिखने के उपकरण रख सकता है या नही तथा लिख सकता है या नही।

१२—पोतियावंध री चौपई :

इस कृति में ४ ढालें हैं। इनमें कुल २८ दोहे और १६७ गाथाएँ हैं। रचना-सवत् किसी भी ढाल में नही देखा जाता।

स्वामीजी के समय में जैनो का एक सम्प्रदाय पोतियावन्ध नाम से भी था। स्वामीजी गृहस्थावास में इस सम्प्रदाय के यहाँ भी आना-जाना रखते थे। गच्छवासी सम्प्रदाय को छोड़ कर वे इसके अनुयायी बने थे।

पोतियावन्ध सम्प्रदाय की एक मान्यता यह थी कि सिद्धों के पहले अरिहन्तो की वदना करने से आशातना होती है। सर्व साधुओं को वदना नही करनी चाहिए। जो बड़े हैं उन साधुओं

के निम्नलिखित बर्णन ही करने हैं ? इस तरह नमस्कार मंत्र की रचना में वे त्रुटि बतलाते थे। स्वामीजी ने पृथ्वी ढाल में इसी मान्यता को लेकर उसकी निस्सारता सिद्ध की है। उनकी दूसरी मान्यता थी कि वर्णमान समय में जैन साधु नहीं हो सकते। स्वामीजी ने दूसरी ढाल में इस मान्यता का उलटन किया है तथा इस सम्प्रदाय के अन्य अनेक अभिनिवेशों की भी प्रशंसा की है। वे 'भन' योग से प्रत्याख्यान नहीं करते थे। 'भन' योग से प्रत्याख्यान करने में वे पान बतलाते थे। जगती आलोचना तीसरी ढाल में है। चौथी ढाल में अन्य अनेक मान्यताओं का उलटन और उनका उलटन है।

१३—निम्न रास :

जैन कृति में केवल एक ही ढाल है। सं० १८५३ की कार्तिक वदि ११ बुधवार के दिन यह ढाल रची गई। उनमें ६ दांहे और १७० गाथाएँ हैं। स्वामीजी को विपत्ती निह्लव कहते। स्वामीजी ने इस ढाल में यह बताया है कि वास्तव में निह्लव वह होता है जिसके ऋद्धा, आचार और प्रणया त्रिन-बाणी के विपरीत हों। उन्होंने उस समय के साधुओं की मान्यता, आचार, प्रह्वणा मारि पर विवेचन करते हुए यह सिद्ध किया है कि निह्लव सजा कहाँ घटती है। यह कृति उस समय के मिथ्या अभिनिवेश, क्रिया और प्रह्वणाओं पर बड़ा गभीर प्रकाश डालती है।

१४—विनीत अविनीत री चौपई :

जैन कृति में नौ ढालें हैं जिनमें दोहो की सख्या ५२ और गाथाओं की सख्या ३४२ है। यह कृति तेरवा गहर में संवत् १८३२ भाद्र शुक्ल पछी, शुक्रवार के दिन समाप्त हुई। इस कृति का मुख्य आचार 'उत्तराध्ययन' सूत्र है। पर अन्य सूत्रों में भी जहाँ भी इस विषय पर कुछ भी आया है उसको भी स्वामीजी ने इस कृति में ले लिया है। विनय किसका करना चाहिए, विनय कैसे करते हैं, अविनय किसे कहते हैं, कौन विनयी है, कौन अविनयी है, साधु के विनय का स्वरूप आदि-आदि अनेक विषयों पर इस कृति में बड़ा गम्भीर और मामिक विवेचन है। आगम आचार पर रचित जैन कृति में बड़ा मौलिक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण है और इस दृष्टि से यह एक स्वतंत्र कृति भी कही जा सकती है। उनमें स्वामीजी ने विषय को समझाने के लिए अनेक मौलिक दृष्टान्त और मनोवैज्ञानिक विचार दिये हैं।

१५—विनीत अविनीत री ढाल :

जैन कृति में दो ढालों का संग्रह है। दोनों ढालों में रचना सवत् नहीं है। दोनों में कुल मिलाकर दो दांहे और पचास गाथाएँ हैं। पहली ढाल में अविनयी के चरित्र का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण है। दूसरी ढाल में अविनयी अपनी वृत्तियों को बदल कर किस तरह विनयी हो सकता है, इसके सुन्दर विवेचन हैं।

१६—उगरी ढाल :

जैन कृति में एक ही ढाल है जिसमें एक दोहा और ७८ गाथाएँ हैं। रचना-संवत् नहीं मिलता। इस ढाल में स्वामीजी ने तीन सम्बन्धों को लिया है—(१) माता-पिता और सन्तान का सम्बन्ध, (२) माँ और नौकर का सम्बन्ध और (३) गुरु और शिष्य का सम्बन्ध और बतलाया है कि प्राण्यमिक दृष्टि ने मन्त्र, नौकर और शिष्य किस तरह उन्नत होता है। आध्यात्मिक उन्नति का गुन्दन विवेचन इस ढाल में है। स्वामीजी ने एक मौलिक दृष्टान्त द्वारा इनका विवेचन किया है।

१७—मोहणी कर्म बंध री ढाल :

आठ कर्मों में मोहनीय कर्म प्रबलतम है। प्राणी की ज्ञान और दर्शन की शक्ति इसीसे अवरुद्ध होती है। इस कृति में महा मोहनीय कर्म-बन्ध के ३० बोलों का विवेचन है। इस ढाल के गंभीर मनन से मनुष्य महान् पापों से बच सकता है। यह ढाल स्वामीजी ने पादुगाँव में सवत् १८३७ श्रावण वदि रविवार के दिन रची। इसमें ५ दोहे और ५० गाथाएँ हैं।

१८—दसवें प्राञ्चित्त री ढाल :

इस ढाल में दसवाँ प्रायश्चित्त किसको आता है, इसका विवेचन है। यह ढाल 'स्थानाङ्ग' सूत्र के तीसरे और पाँचवें स्थानक के आधार पर रची गई है। इसमें रचना-सवत् का उल्लेख नहीं है। इसमें दो दोहे और ग्यारह गाथाएँ हैं।

१९—जिण लखणा चारित आवे न आवे तिणरी ढाल :

यह ढाल सवत् १८३५ माघ सुदी ४, बुधवार के दिन रचित है। इसमें ५ दोहे और ५७ गाथाएँ हैं। श्रामण्य को आगम में गुणों का महा भार कहा है। श्रामण्य आत्मिक विशेषताओं के बिना नहीं आता। इस ढाल में इस बात का विवेचन है कि किन गुणों से सर्व सयम—श्रामण्य का पाना सुलभ होता है और किन-किन कर्मों से मनुष्य उसका अधिकारी नहीं होता।

२०—सूसं भंगावण रा फल री ढाल :

इस ढाल में ५ दोहे और ५७ गाथाएँ हैं। यह कृति १८५४ चैत्र सुदी १३ बुधवार के दिन पादुगाँव में रची गई है। इस छोटी सी ढाल में स्वामीजी ने प्रत्याख्यान के महत्वपूर्ण विषय को कई पहलुओं से स्पष्ट किया है। प्रत्याख्यान किस भावना से ग्रहण करना चाहिए, किस तरह उसका पालन करना चाहिए, प्रत्याख्यान के भङ्ग में क्या दोष है, गिरते हुए को किस तरह से दृढ करना चाहिए, व्रतों के परिणामों को ठीला नहीं करना चाहिये आदि २ विषयों पर बड़ा मार्मिक विवेचन है।

२१—सांमधर्मी सांमद्रोही री ढाल :

इस ढाल में कुल ३१ गाथाएँ हैं। इसका रचना-सवत् नहीं मिलता। एक योगी ने चूहे को मंत्र के बल से क्रमशः बिल्ली से सिंह बनाया। सिंह बनने पर वह चूहा अपने उपकारी योगी को ही खाने के लिए उद्यत हो गया। यह स्वामी द्रोह का दृष्टान्त है। इसीमें एक अन्य दृष्टान्त राजा के स्वामीभक्त नौकर का है जिसको राजा ने ठुकरा दिया। बाद में राजा पर विपद पड़ी। उस समय उस नौकर ने राजा के व्यवहार की ओर जरा भी दृष्टिपात न करते हुए उसकी रक्षा की। स्वामीजी ने इन दृष्टान्तों की उपमा देते हुए विनयी-अविनयी शिष्य के स्वभाव को प्रगट किया है।

२२—शील की नव बाहु :

इस कृति में ग्यारह ढालें हैं जिनमें दोहों की संख्या ४६ और गाथाएँ १६७ हैं। इसकी रचना सवत् १८४१ की मितो फाल्गुन वदि १० बुधवार के दिन पादुगाँव में समाप्त हुई। इस कृति में उत्तम ब्रह्मचारी के शील—उसके लक्षण, रहन-सहन और व्यवहार के नियमों का विवेचन है। ब्रह्मचर्य की रक्षा के लिए 'उत्तराध्ययन' सूत्र में दस समाधि स्थानों का उल्लेख है। उसीके आधार पर ब्रह्मचर्य की बाड़ों का विस्तृत, मार्मिक एवं मौलिक विवेचन इस कृति में है।

इस कृति का सटिप्पण हिन्दी अनुवाद अलग प्रकाशित किया जा रहा है।

२३—समकित री ढालां :

यह तीन ढालो का संग्रह है। इसमें सम्यक्त्व का महत्त्व, सम्यक्त्व की कौन है, किसमें सम्यक्त्व नहीं है, इसका विवेचन है। इसमें सम्यक्त्व के स्वरूप पर बड़ा अच्छा प्रकाश है। इस संग्रह में कुल २ दोहे और ४६ गाथाएँ हैं।

२४—गणधर सिखावणी :

यह दो ढालो का संग्रह है। दूसरी ढाल का रचना-स्थान केलवा है और यह संवत् १८४३ के पौष महीने में रची गई है। मनुष्य का श्रायुष्य किस तरह अस्थिर है यह पहली ढाल में बताया गया है। दूसरी ढाल में एक समय के लिए भी प्रमाद न करने का उपदेश देते हुए अनेक उच्च गुणों की श्रााराधना का बड़ा गम्भीर उपदेश है। दोनों ढालो में ३६ गाथाएँ हैं।

२५—दान री ढालां :

यह दो ढालों का संग्रह है। दूसरी ढाल का रचना-स्थान सिरियारी गाँव है। यह ढाल संवत् १८४२ कार्तिक मास में रची गई है। दोनों ढालो में कुल दोहो की संख्या ६ है और गाथाएँ १० हैं। प्रथम ढाल में निरवद्य सुपात्रदान की महिमा का वर्णन है और दूसरी ढाल में कृपण की प्रकृति का गम्भीर मनोवैज्ञानिक विवेचन है।

२६—घैराग री ढालां :

यह कुल ४ ढालो का संग्रह है। इसमें कुल दोहे ५ हैं और गाथाएँ १०५। दूसरी ढाल का रचना-स्थान सिरियारी गाँव है। यह संवत् १८३४ आषाढ वदि ११ शनिवार को रची गई है। पहले गणधर सिखावणी का जो संग्रह आया है उसकी पहली ढाल का ही विषय इस संग्रह की पहली ढाल का विषय है। वास्तव में ये दोनों ढालें एक ही संग्रह में होनी चाहिये थीं। दूसरी ढाल को प्रायः 'बूढे की ढाल' कहते हैं। इसमें वृद्धावस्था में मनुष्य की कैसी हालत होती है उसका वर्णन है। तीसरी ढाल में ग्रहस्थावस्था की विडम्बना का वर्णन है। इसमें कई अच्छे सूक्त हैं। उदाहरण स्वरूप :

नचित्त होय बेठा नर अंध, बांधे पर घर केरा बंध ।
 परणीजे जाणें घर मांड्या, इसडा घर अनंता छांड्या ॥
 तो ही तृप्त न हूवो जीव, नीकल्यो दे दे काची नीव ।
 घर जलाय तीरथ जे करसी, सो साधु जग माहें तिरसी ॥
 केइ श्रावक नां व्रत पाले, ते पिण नरक तिर्यंच दुखटाले ।
 देश थकी ते पिण ब्रह्मचारी, साधु तजिया सर्वं विकारी ॥
 नरक दिखावण दीनी नार, मोष जावण नें आडी किवाड ।
 सुयगडांग तंदुल वियालि साख, तिण में वीर गया छे भाख ॥
 रत्री दोष जिण कहाा अनेक, तिण न्याए मेल्या क्युंही एक ।
 बुरी मती मानें नर नारी, निश्चें देखो ग्यांन विचारी ॥
 छेदाणां जस हाथ नें पाय, कांप्या कान नें नांक कहाय ।
 ते पिण सो वरसां नीं नारी, दूर तजें रहे ब्रह्मचारी ॥
 विपें दिष्टि वरजी चित्रनारी, तो किम निरखे सोले सिणगारी ।
 सूर्य साह्यो जियां घटें तेज, ज्युं ब्रह्मचर्य घटें इण हेज ॥

उंदर बैठे मिनकी पास, जीव तिहां राखे किण आस ।
 तिम नारी संगे शीलवत, विरलो कोइ वचे बलवंत ॥
 इम जांणी रहे साधु एकंत, आपने हित वांछे ते संत ।
 शील सजम दिढ पाले ठीक, त्यांनिं जांगो मुगत नजीक ॥

२७—जुआ री ढाल :

इसमे दोहे ४ और गाथाएँ ६१ हैं। इसकी रचना पुर शहर मे संवत् १८५७ श्रावण सुदी ५ शनिवार को हुई। जुये का भीषण दुष्परिणाम इस कृति मे बड़े मौलिक ढंग से दिखाया गया है।

२८—व्याहुलो :

इसमे केवल एक ही ढाल है। इसकी गाथाएँ ६८ हैं। इसके रचना-काल व स्थान का उल्लेख नहीं है। विवाह मे जो अनेक नेगचार होते हैं उनका आध्यात्मिक गूढार्थ इस कृति मे प्रगट किया है। स्वामीजी का उद्देश्य है कि इसको पढकर “जोगी जोग सेंठे रहे, भोगी तजे विकार”—अर्थात् योगी योग मे दृढ रहे और भोगी विकार को छोडे। यह ढाल स्वामीजी की श्रौत्यातिकी बुद्धि का बड़ा सुन्दर नमूना है। विवाह सम्बन्धी लौकिक क्रियाओं का परमार्थ उपस्थित करते हुए उत्कट वैराग्य का उपदेश इस कृति में दिया गया है।

२९—तात्त्विक ढालां :

यह पाच ढालो का सग्रह है, जिनमे कुल ७ दोहे और १२४ गाथाएँ हैं। किसी भी ढाल में रचना-संवत् व स्थान का उल्लेख नहीं है। प्रथम ढाल मे जिन-शासन मे किन किन महान् व्यक्तियों ने समय ग्रहण किया उनका वर्णन है। दूसरी ढाल मे २४ दण्डक की अपेक्षा से २३ पदवियों का वर्णन है। तीसरी ढाल मे मोक्षमार्ग मे ज्ञान और क्रिया की सहचारिता पर अन्धे और पगु का दृष्टान्त है। छोटी होने पर भी यह ढाल बड़ी अर्थ-गम्भीर है। चौथी ढाल में एकेन्द्रिय जीवो को कौसी वेदना होती है इसका दिग्दर्शन है। पांचवी ढाल में मोम, लाख, लकड़ी और मिट्टी के गोले का दृष्टान्त देकर चार प्रकार के मनुष्यों की मार्मिक व्याख्या की है।

३०—अनुकम्पा री चौपई :

यह रत्न १२ ढालो का सग्रह है जिनमें ५४ दोहे और ४८७ गाथाएँ हैं।

प्रारम्भिक आठ ढालो मे रचना-संवत् नहीं मिलता। अवशेष ढालो के अन्त में निम्न ब्योरा मिलता है।

ढाल ९ बगडी १८४४ फाल्गुन सुदी ६ रविवार।

ढाल १० मांडा गाँव १८५२ आषाढ वदि ११ मंगलवार।

ढाल ११ खेरवा १८५४ आश्विन सुदी २ शुक्रवार।

ढाल १२ पुर शहर १८५३ कार्तिक वदि १४ शुक्रवार।

उपर्युक्त रचना-वर्णन से यह स्पष्ट है कि कुछ ढाले मूल कृति के साथ वाद मे जोड़ी गई हैं। मूल कृति मे ८ अथवा ९ ढालें रही इसका स्पष्ट पता नहीं चलता। इस कृति में, हिंसा, अहिंसा, दया, अनुकम्पा, उपकार आदि विषयों पर विविध गम्भीर विवेचन हैं जिसके पीछे गहरा आगम-अध्ययन और गम्भीर चिन्तन-मनन स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। अहिंसा के क्षेत्र में स्वामीजी एक बहुत बड़े विचारक और साधक रहे जिनके चिन्तन मे बहुमूल्य स्थार्थ तत्त्व हैं। इस कृति का सानुवाद सटिप्पण संस्करण अलग प्रकाशित किया जा रहा है।

३१—विरत अविरत री चौपई :

इस संग्रह में २० ढालें हैं। कुल मिला कर ८९ दोहे और ९७५ गाथाएँ हैं। इनमें विरति और अविरति के विषय पर भौतिक चिन्तन और विश्लेषण है। दान के सावद्य-निरवद्य भेद पर आगम-सम्मत विचार हैं। एक ही क्रिया में धर्म-अधर्म दोनों होते हैं ऐसी मान्यता का खण्डन है। जैन-आगम में कहाँ किस परिस्थिति में मौन रहने का विधान है इसका जिक्र है। दस प्रकार के दान पर विवेचन कर सावद्य-निरवद्य दान का विवेक उपस्थित किया गया है। यह कृति अनेक मिथ्याभिनिवेशों को दूर कर अनेक विषयों में सम्यक्दृष्टि देती है। इस संग्रह की कुछ ढालों के रचना-स्थान और काल का विवरण इस प्रकार है—

ढाल	रचना-स्थान	रचना-काल
४	नाथदुवारा	१८४३ आसोज वदि १० रविवार
८	नाथदुवारा	१८४३ आसोज वदि ८ शुक्रवार
९	कोठाखा	१८४३ आसोज सुदी १४ शनिवार
१२	धेनावस	१८४४ माघ सुदी ७ बृहस्पतिवार
१३	पाली	१८५२ श्रावण वदि १३ मंगलवार
१४	पाली	१८५२ आसोज वदि ५ शुक्रवार
१५	पाली	१८५२ आसोज वदि १५ सोमवार
१६	सोजत	१८५३ श्रावण सुदी ६ सोमवार
१७	पाली	१८५५ आसोज सुदी १ बुधवार
१८	नाथ दुवारा	१८५६ पौष वदि २ शनिवार
१९	गोधुंदा	१८५७ चैत्र सुदी १४ बुधवार

३२—श्रद्धा री चौपई :

यह रत्न ३१ ढालों का संग्रह है। ये ढालें विभिन्न स्थल और काल में रची गई हैं। इनका पूरा विवरण इस प्रकार है :

ढाल	रचना-स्थान	रचना-काल
१	बगड़ी	१८३६ कार्तिक सुदी १५ मंगलवार
२	माधोपुर	१८४८ आसोज सुदी ६ सोमवार
४	नाथदुवारा	१८४३ श्रावण वदि १५ मंगलवार
५	नाथदुवारा	१८४३ आसोज वदि ९ शनिवार
६	ईडवा	१८५४ चैत्र वदि ४ बुधवार
७	कोठाखा	१८४३ कार्तिक सुदी १३ शनिवार
८	सिरयारी	१८५० आषाढ सुदी २ रविवार
९	गुदवच	१८५१ वैसाख सुदी ११ बुधवार
१०	खेरवा	१८५३ आसोज वदि १५ बुधवार
११	मेडता	१८५४ वैसाख वदि १५ सोमवार
१२	पाली	१८५५
१३	केलवा	१८५५ फाल्गुन वदि १ बुधवार

१४	गुरला	१८५८ कार्तिक वदि ५ मंगलवार
१५	पीपाड़	१८३३ ज्येष्ठ वदि १२ मंगलवार
१६	पादू	१८५४ वैसाख वदि १० मंगलवार
१८	सिरयारी	१८५१ कार्तिक वदि १४ बुधवार
१९	पुर	१८५७ आसोज वदि ९ शुक्रवार
२०	पुर	१८५७ आसोज वदि ३३ मंगलवार
२१	गंगापुर	१८५७ पौष सुदी ८ मंगलवार
२२	पीपाड़	१८५७ चैत्र सुदी १३ सोमवार
२३	खेरवा	१८५४ आसोज सुदी १ बृहस्पतिवार
२४	खेरवा	१८५४ आसोज सुदी १५ बृहस्पतिवार
२५	पूहना	१८५७ माघ वदि २ शनिवार
२६	रावलयां	१८५७ चैत्र सुदी १४ रविवार
२७	मेवाड़	१८५७ आसोज वदि १५ बृहस्पतिवार
२९	नेणा	१८४८ माघ वदि १५ सोमवार

स्वामीजी के समय में जैन दर्शन के क्षेत्र में बड़ा वितण्डावाद फैला हुआ था। एक ही विषय के सम्बन्ध में नाना प्रकार की मान्यताएँ प्रचलित थी। श्रद्धा विषयक इन मान्यताओं का स्वामीजी ने गहरा अध्ययन किया और हजारों विषयों पर सही दृष्टि दी। श्रद्धा आचार की चौपई में श्रद्धा विषयक निर्णयों का संग्रह और जिन धर्म विषयक विपरीत मान्यताओं की तीव्र आलोचना एवं खण्डन है। इस संग्रह में कुल मिला कर १६० दोहे और १४६४ गाथाएँ हैं।

३३—आचार री चौपई :

इस चौपई में ३२ ढालों का संग्रह है। कुछ के रचना-काल और स्थान इस प्रकार मिलते हैं—

ढाल	रचना-स्थान	रचना-काल
९	मेडता	१८३३ वैसाख वदि ९
११	रीयां	१८३३ आषाढ सुदी ३ सोमवार
१२	पीपाड़	१८३४ आसोज सुदी ७ बुधवार
१४	अणंदपुर	१८३३ वैसाख सुदी ११ रविवार
१६	खेरवा	१८३२ आसोज सुदी २ मंगलवार
१७	खेरवा	१८३२ कार्तिक वदि २ मंगलवार
१८	गुंदवच	१८३२ वैसाख सुदी ११ सोमवार
१९	रीयां	१८३३ ज्येष्ठ सुदी १५ शुक्रवार
२०	रीयां	१८३३ आषाढ वदि ९ रविवार
२५	पाली	१८५२ भाद्र वदि ७ शुक्रवार
२६	सोजत	१८५३ आसोज सुदी ७ शनिवार
२७	पाली	१८५२ आसोज सुदी २ बुधवार
२८	सोजत	१८५३ आसोज वदि ११ मंगलवार
२९	पाली	१८५५ भाद्र वदि १० बुधवार
३०	नाथदुवारा	१८५६ कार्तिक सुदी ८ मंगलवार

श्रद्धा के बोली की तरह आचार के सम्बन्ध में भी स्वामीजी के समय में बड़ा अन्वेषण चला हुआ था। साधुओं के आचार में इतनी विभिन्नता थी कि किसे साधु कहा जाय और किसे नहीं यह निर्णय करना असंभव-सा हो गया था। स्वामीजी ने आचार विषयक शिथिलता की जो तीव्र आलोचना की वह इस संग्रह की प्रत्येक ढाल में देखी जाती है। उन्होंने आगम-सम्मत शुद्ध साध्याचार और श्रावकाचार को जनता के सामने रखा।

३४—अवनीत रास :

इसमें १ दोहा और ४४३ गाथाएँ हैं। अविनयी की प्रकृति का गहरा अध्ययन इस कृति की प्रत्येक गाथा से प्रगट होता है। स्वामीजी से चन्द्रभानजी आदि अलग हुए उसके बाद की यह कृति है। इसमें विनय और अविनय के विषय पर अमूल्य विचार-रत्न छिपे पड़े हैं।

इस खण्ड में आर्डि हुई कृतियों के विषयो का परिचय संक्षेप में ऊपर दिया जा चुका है। इन कृतियों के पढ़ने से पाठको के हृदय पर सहज ही निम्न प्रभाव पड़ेगा :

स्वामीजी का शास्त्रीय-ज्ञान बड़ा गंभीर था। आगमों का उनका अध्ययन वेजोड़ था।

शास्त्रीय-ज्ञान के साथ-साथ उनमें तीव्र नीर-श्रीर विवेक था जिसके सहारे वे तत्त्व-अतत्त्व का सही-सही निर्णय दे सकते थे।

उनकी कृतियों में तत्त्वों का सूक्ष्म निरूपण है। उनमें गांभीर्य के साथ-साथ सरलता और सहज बोध है।

वे बड़े भारी मनोवैज्ञानिक थे। मनोभावों का उनका विश्लेषण जितना ही गहरा है, उतना ही मुग्धकारी।

उन्होंने जो कुछ लिखा है वह विद्वानों के लिए जितना सरल है उतना ही एक साधारण पढ़े-लिखे व्यक्ति के लिए भी।

वे सहज कवि और तत्त्व-ज्ञानी थे। उनकी काव्य-प्रतिभा असाधारण और विविध पहलुओंवाली थी। वे सैद्धान्तिक थे और दिग्बिजयी चर्चावादी। वे महान् टीकाकार थे। सूत्र की गाथाओं की उनकी टीकाएँ वेजोड़ हैं। वे पाण्डित्यपूर्ण ही नहीं वरन् बड़ी मूलस्पर्शी और मार्मिक भी हैं।

महान् बहुश्रुत होने के साथ-साथ वे महान् चिन्तक भी थे।

वे महान् उपदेशक और नैयायिक थे, साथ ही साथ तीव्र आलोचक और कठोर समीक्षक भी। उनकी कृतियों में गहरा ज्ञान और सहज वैराग्य है।

वे एक महान् आचार्य्य थे और एक दूरदर्शी आचार्य्य की तरह स्थायी अनुशासन के नियम दे सकते थे।

उनका जीवन-व्यापी प्रयास शुद्ध जैनत्व का प्रकाश करना रहा।

स्वामीजी अपने समय के एक महान् विचारक एवं क्रान्तिकारी पुरुष थे। उस समय की जैन धर्म की स्थिति एवं साधुओं में छाई हुई शिथिलता के प्रति उनके मन में गहरा दर्द था। जो यह कहा करते थे कि यह पंचम काल है, सम्पूर्ण साधुत्व का पालन असंभव है, स्वामीजी उनके लिए एक नुनोती थे। उन्होंने केवल प्रचलित आचार-विषय में ही नहीं किन्तु विचारों और मान्यताओं के विषय में भी मौलिक प्रकाश दिया। उन्होंने जिज्ञासा के विपरीत कार्यों में धर्म बताने वालों की गहरी आलोचना की। वे एक अत्यन्त स्पष्टवादी आचार्य्य थे। अपने विचारों को निर्मयतापूर्वक प्रगट करने में वे कभी नहीं सकुचाये।

इस खण्ड में स्वामीजी की तात्त्विक और सिद्धान्तिक कृतियों का संग्रह है। द्वितीय खण्ड में स्वामीजी रचित आख्यानो और कथानको का संग्रह है। तृतीय खण्ड में स्वामीजी की गद्यमय रचनाओं का संग्रह रहेगा।

तीनों खण्डों की विस्तीर्ण विषय-सूचि, कठिन शब्दों का कोष आदि तृतीय खण्ड के परिशिष्ट रूप में प्रकाशित किये जायेंगे।

तात्त्विक ढालों का यह संग्रह न केवल जैनियों के लिए ही अत्यन्त महत्त्व का सिद्ध होगा पर जो जैन धर्म के हृदय को समझना चाहते हैं उन सब के लिए भी वैसा ही सिद्ध होगा।

स्वामीजी की ढालों की प्राचीनतम प्रति उनके परम भक्त शिष्य और द्वितीय आचार्य श्रीमद् भारीमालजी के हस्ताक्षरों में उपलब्ध है। वही प्रस्तुत संग्रह का आधार रही है। श्रीमद् जयाचार्य ने स्वामीजी की कृतियों का विषयवार वर्गीकरण कर उन्हें व्यवस्थित कर उनपर 'सिद्धान्त-सार' नामक ग्रन्थ की रचना की। वर्तमान आचार्य श्रीमद् तुलसीरामजी स्वामी ने "मिक्षु-ग्रन्थ रत्नाकर" के रूप में उन्हें सयोजित करने का विचार किया। मुनि श्री चौथमलजी ने आचार्य श्री की दृष्टि के अनुसार सयोजन करने में पूरा परिश्रम किया।

तेरापन्थ सम्प्रदाय के द्विशताब्दी समारोह के अवसर पर तेरापन्थ के प्रतिष्ठापक और आद्य आचार्य की वाणी का यह संग्रह एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और आवश्यक प्रकाशन है। करीब १७५ वर्षों के बाद यह बहुमूल्य साहित्य अपने अमित आलोक के साथ जनता के सामने आ रहा है, यह एक बड़े ही सौभाग्य की बात है।

१५, नूरमल लोहिया लेन

कलकत्ता,

३० जून, १९६०

श्रीचन्द्र रामपुरिया

विषय-सूची

रत्न कृति-नाम	पृष्ठ
१ नव पदारथ	१
२ श्रावक ना वारे व्रत	५६
३ कालवादी री चौपई	६३
४ इन्द्रियवादी री चौपई	११७
५ परजायवादी री चौपई	१८१
६ टीकम डोसी री चौपई	१६३
७ निषेपां री चौपई	२०६
८ निन्व री चौपई	२३३
९ मिथ्याती री करणी री चौपई	२५३
१० एकल री चौपई	२६६
११ जिनाम्या री चौपई	२६३
१२ पोतिया बन्व री चौपई	३१७
१३ निन्व रास	३३५
१४ विनीत अविनीत री चौपई	३४६
१५ विनीत अविनीत री ढाल	३८३
१६ उरण री ढाल	३९१
१७ मोहणी कर्म बंध री ढाल	३९६
१८ दशवें प्राछित्त री ढाल	४०५
१९ जिण लखणा चारित आवे न आवे तिण री ढाल	४०६
२० सूंस भगावण रा फल री ढाल	४१७
२१ सामघर्मीं सामद्रोही री ढाल	४२३
२२ शील की नव बाड	४२६
२३ समकित्त री ढालां	४५३
२४ गणघर सिखावणी	४६१
२५ दान री ढालां	४६७
२६ वैराग री ढालां	४७७
२७ जुआ री ढाल	४८६
२८ व्याहुलो	४९७
२९ तात्विक ढालां	५०५
३० अणुकम्पा री चौपई	५१६
३१ विरत इविरत री चौपई	५६७
३२ श्रद्धा री चौपई	६५१
३३ आचार री चौपई	७७६
३४ अवनीत रास	६०६

भिक्षु-ग्रन्थ रत्नाकर

खण्ड : १

रत्न : १

नव पदारथ

१ : जीव पदारथ

दुहा

नमू वीर सासन घणी, गणघर गोतम सांम ।
तारण तिरण पुरषा तणा, लीजे नित प्रत नाम ॥ १ ॥
त्या जीवादिक नव पदारथ तणो, निरणो कीयो भात भांत ।
त्यांने हलूकर्मि जीव ओलखे, पूरी मन री खात ॥ २ ॥
जीव अजीव ओलख्या विना, मिटे नही मन रो भर्म ।
समकत आयां विण जीव ने, ह्के नही आवतां कर्म ॥ ३ ॥
नव ही पदारथ जू जूआ, जथातथ सरदे जीव ।
ते निश्चे समदिष्टी जीवडा, त्या दीघी मुगत री नीव ॥ ४ ॥
हिंवे नवही पदारथ ओलखायवा, जूआ जूआ कर्हू छूं भेद ।
पहिलां ओलखाऊं जीव ने, ते सुणजो आण उमेद ॥ ५ ॥

ढाल : १

[विना रा भाव सुख सुख गुंजे]

सासतो जीव द्रव्य साख्यात, कदे घटे नहीं तिलमात ।
 तिणरा असंख्यात प्रदेस, घटे बधे नहीं लवलेस ॥ १ ॥
 तिण सूं दरवे कह्यो जीव एक, भाव जीव रा भेद अनेक ।
 तिणरो बहोत कह्यो विसतार, ते बुधवंत जाणे विचार ॥ २ ॥
 भगोती वीसमां सतक मांय, बीजे उदेशे कह्यो जिणराय ।
 जीवरा तेवीस^{२३} नाम, गुण निपन कह्या छै तांम ॥ ३ ॥
 जीवेतिवा^१ जीवरो नाम, आउखा नें बले जीवे ताम ।
 ओतो भावे जीव ससारी, तिणनें बुधवंत लीजो विचारी ॥ ४ ॥
 जीवथिकाय^२ जीवरो नाम, वेह घरे छै तेह मणी आंम ।
 प्रदेसां रा समुह ते काय, पुदगल रा समूह भेले छै ताय ॥ ५ ॥
 सास उसास लेवे छै ताम, तिण सू पाणेतिवा^३ जीव नाम ।
 भूएतिवा^४ कह्यो इण न्याय, सदा छै तिहुं काल रे मांय ॥ ६ ॥
 सतेतिवा^५ कह्यो इण न्याय, सुभासुभ पोते छै ताय ।
 विनूतिवा^६ विषे रा जांण, सबदादिक लीया सर्व पिच्छांण ॥ ७ ॥
 वेयातिवा^७ जीव रा नाम, सुख दुख वेदे छै ठाम ठाम ।
 ते तो चेतन सरूप छै जीव, पुदगल रो सवादी सदीव ॥ ८ ॥
 चेयातिवा^८ जीवरो नाम, पुदगल नी रचना करे तांम ।
 विवध प्रकारे रचे रूप, ते तो भूडा ने भला अनूप ॥ ९ ॥
 जेयातिवा^९ नाम श्रीकार, कर्म रिपू नों जीपणहार ।
 तिणरो पराक्रम सकत अतंत, थोडा में करे करमा रो अन्त ॥ १० ॥
 आयातिवा^{१०} नाम इण न्याय, सर्व लोक फरस्यो छै ताय ।
 जन्म मरण कीया ठाम ठाम, कठे पांम्यो नही आराम ॥ ११ ॥
 रंगणेतिवा^{११} नाम मदमातो, राग धेव रूप रग रातो ।
 तिण सूं रहे छै मोह मतवालो, आत्मा नें लगावे कालो ॥ १२ ॥
 हीडूतिवा^{१२} जीवरो नाम, चिहूँ गति मांहेँ हीड्यो छै तांम ।
 कर्म हिलोलें ठाम ठाम, कठे पांम्यो नही विसराम ॥ १३ ॥
 पोगलेतिवा^{१३} जीवरो नाम, पुदगल ले ले मेल्या ठाम ठाम ।
 पुदगल मांहेँ रच रह्यो जीव, तिण सूं लागी संसार री नीव ॥ १४ ॥

नव पदारथ : जीव पदारथ

माणवेतिवा^{१४} जीव रो नाम, नवो नही सासतो छै ताम ।
 तिणरी परजा तो पलटे जाय, द्रव्य तो ज्यू रो ज्यू रहे ताय ॥ १५ ॥
 कतातिवा^{१५} जीव रो नाम, करमा रो करता छै ताम ।
 तिण सू तिणने कह्यो छै आश्रव, तिण सू लगे छै पुदगल दरव ॥ १६ ॥
 विकतातिवा^{१६} नाम इण न्याय, कर्मा ने विधूणे छै ताय ।
 आ निरजरा री करणी अमाम, जीव उजलो जै निरजरा ताम ॥ १७ ॥
 जएतिवा^{१७} नाम तणो विचार, अति हि गमन तणो करणहार ।
 एक समे लोक अन्त लग जाय, एहवी सकत सभाविक पाय ॥ १८ ॥
 जतूतिवा^{१८} जीव रो नाम, जन्म पाम्यो छे ठाम ठाम ।
 चोरासी लख जोनि रे माहि, उपज्यो ने निसर गयो ताहि ॥ १९ ॥
 जोणित्तिवा^{१९} जीव कहिवाय, पर नो उत्पादक इण न्याय ।
 घट पट आदि वस्त अनेक, उपजावे निज सुविवेक ॥ २० ॥
 सयभूतिवा^{२०} जीव रो नाम, किण हि निपजायो नही ताम ।
 ते तो छे द्रव्य जीव सभावे, ते तो कदे नही विललावे ॥ २१ ॥
 सरीरेतिवा^{२१} नाम एह, सरीर रे अतर तेह ।
 सरीर पाछे नाम धरायो, कालो गोरादिक नाम कहायो ॥ २२ ॥
 नायएतिवा^{२२} ते कर्मा रो नायक, निज सुख दुख छै दायक ।
 तथा न्याय तणो करणहार, ते तो बोले छै वचन विचार ॥ २३ ॥
 अन्तरअपा^{२३} ते जीव रो नाम, सर्व सरीर व्यापे रह्यो ताम ।
 लोलीभूत छै पुदगल माहि, निज सरूप दबे रह्यो त्याही ॥ २४ ॥
 द्रव्य तो जीव सासतो एक, तिणरा भाव कहा छै अनेक ।
 भाव ते लखण गुण परयाय, ते तो भावे जीव छै ताय ॥ २५ ॥
 भाव तो पाच श्री जिण भाख्या, त्यारा सभाव जू जूआ दाख्या ।
 उदे उपसम ने खायक पिच्छाणो, खय उपसम परिणामीक जाणो ॥ २६ ॥
 उदें तो आठ कर्म अजीव, त्यांरा उदा सँ नीपना जीव ।
 ते उदे भाव जीव छै ताम, त्यारा अनेक जूआ जूआ नाम ॥ २७ ॥
 उपसम तो मोहणी कर्म एक, जब नीपजे गुण अनेक ।
 ते उपसम तो भाव जीव छै ताम, त्यारा पिण छै जूआ जूआ नाम ॥ २८ ॥
 खय तो हुवे आठ कर्म, जब खायक गुण नीपजे परम ।
 ते खायक गुण छै भाव जीव, ते उजला रहे सदा सदीव ॥ २९ ॥
 बे आवरणी ने मोहणी अंतराय, ए च्यारू कर्म खय उपसम थाय ।
 जब नीपजें खय उपसमभाव चोखो, ते पिण छै भाव जीव निरदोपो ॥ ३० ॥

जीव परिणमे जिण जिण भाव माहि ते सगला छै न्याया न्यारा ताहि ।
 पिण परिणामिक सारा छै तांम, जेहव तेहवा परिणामिक नांम ॥ ३१ ॥
 कर्म उदे सूं उदे भाव होय, ते तो भाव जीव छै सोय ।
 कर्म उपसमीयां उपसम भाव, (ते) उपसम भाव जीव इण न्याय ॥ ३२ ॥
 कर्म खय सू खायक भाव होय, ते पिण भाव जीव छै सोय ।
 कर्मखे उपसमसूं छै उपसम भाव, ते पिण छै भाव जीव इण न्याव ॥ ३३ ॥
 अे च्याहं ड भाव छै परिणामिक, ओ पिण भाव जीव छै ठीक ।
 और जीव अजीव अनेक, परिणामिक बिना नही एक ॥ ३४ ॥
 छे पाचूइं भावने भाव जीव जांणो, त्याने रुझी रीत पीछांणो ।
 उपजे ने विले हो जाय, ते भावे जीव तो छै इण न्याय ॥ ३५ ॥
 कर्म सजोग विजोग सू तेह, भावे जीव नीपनो छै एह ।
 च्यार भाव तो निश्चे फिर जाय, खायक भाव फिरे नही ताय ॥ ३६ ॥
 द्रव्य तो सासतो छै ताहि, ते तो तीनुंइ काल रे मांहि ।
 ते तो विले कदे नही होय, द्रव्य तो ज्यूं रो ज्यूं रहसी सोय ॥ ३७ ॥
 ते तो छेद्यो कदे न छेदावै, भेद्यो पिण कदे नही भेदावै ।
 जाल्यो पिण जले नाही, वाल्यो पिण न बले अगन मांहि ॥ ३८ ॥
 काट्यो पिण कटे नही कांई, गाले तो पिण गले नाहीं ।
 वाट्यो तो पिण नही बंटाय, घसे तो पिण नही घसाय ॥ ३९ ॥
 द्रव्य असख्यात प्रदेसी जीव, नित रो नित रहसी सदीव ।
 ते मारयो पिण मरे नांही, बले घटे, बचे नही कांइ ॥ ४० ॥
 द्रव्य तो असख्यात प्रदेसी, ते तो सदा ज्यूं रा ज्यूं रहसी ।
 एक प्रदेस पिण घटे नाही, तीनुंइ काल रे मांही ॥ ४१ ॥
 खंडायो पिण न खंडे लिगार, नित सदा रहे एक धार ।
 एहवो छै द्रव्य जीव अखंड, अखी थको रहे इण मड ॥ ४२ ॥
 द्रव्य रा भाव अनेक छै ताय, ते तो लखन गुण परजाय ।
 भाव लखन गुण परजाय, ए च्याह भाव जीव छै ताय ॥ ४३ ॥
 ए च्याह भला नें मूडा होय, एक धारा न रहे कोय ।
 केइ खायक भाव रहसी एक धार, नीपना पछै न घटे लिगार ॥ ४४ ॥
 दरवे जीव सासतो जांणो, तिणमें पिण संका मूल म आंणो ।
 भगोती सातमा सतक रे माय, दूजे उदेसे कह्यो जिणराय ॥ ४५ ॥
 भावे जीव असासतो जाणो, तिणमें पिण संका मूल म आणो ।
 ए पिण सातमां सतक रे मांय, दूजे उदेसे कह्यो जिणराय ॥ ४६ ॥

नव पदारथ : जीव पदारथ

जेती जीव तणी परजाय, असासती कही जिणराय ।
 तिण ने निश्चे भावे जीव जाणो, तिणने रुडी रीत पिछ्छाणो ॥ ४७ ॥
 कर्मा रो करता जीव छै तायो, तिण सू आश्रव नाम धरायो ।
 ते आश्रव छै भाव जीव, कर्म लागे ते पुदगल अजीव ॥ ४८ ॥
 कर्म रोके छै जीव ताह्यो, तिण गुण सू संवर कहायो ।
 सवर गुण छै भाव जीव, रुकीया छै कर्म पुदगल अजीव ॥ ४९ ॥
 कर्म तूटा जीव उजल थाय, तिणने निरजरा कही जिणराय ।
 ते निरजरा छै भाव जीव, तूटे ते कर्म पुदगल अजीव ॥ ५० ॥
 समस्त कर्मा सू जीव मूकायो, तिण सू तो जीव मोख कहायो ।
 मोख ते पिण छै भाव जीव, मूकी गया कर्म अजीव ॥ ५१ ॥
 सबदादिक काम ने भोग, तेहनो करे सजोग ।
 ते तो आश्रव छै भाव जीव, तिण सू लागे छै कर्म अजीव ॥ ५२ ॥
 सबदादिक काम ने भोग, त्याने त्यागे ने पाड़े विजोग ।
 ते तो सवर छै भाव जीव, तिण सू रुकीया छै कर्म अजीव ॥ ५३ ॥
 निरजरा ने निरजरा री करणी, अे दोनूह जीव ने आदरणी ।
 ए दोनू छै भाव जीव, तूटा ने तूटे कर्म अजीव ॥ ५४ ॥
 काम भोग सू पामे आरामो, ते संसार थकी जीव स्हामो ।
 ते तो आश्रव छै भाव जीव, तिण सू लागे छै कर्म अजीव ॥ ५५ ॥
 काम भोग थकी नेहू तूटो, ते संसार थकी छै अपूठो ।
 ते सवर निरजरा भाव जीव, जब रुके तूटे कर्म अजीव ॥ ५६ ॥
 सावद्य करणी सर्व अकार्य, अे तो सगला छै किरतब अनायं ।
 ते सगलाइ छै भाव जीव, त्यासू लागे छै कर्म अजीव ॥ ५७ ॥
 जिण आगन्या पाले छै रुडी रीत, ते पिण भाव जीव सुवनीत ।
 जिण आगन्या लोपे चाले कूरीत, ते तो छै भाव जीव अनीत ॥ ५८ ॥
 सूर वीरा ससार रे माही, जिणरा डराया डरे नाही ।
 ते पिण छै भाव जीव ससारी, ते तो हुवा अनती वारी ॥ ५९ ॥
 साचा सूरवीर साख्यात, ते तो कर्म काटे दिन रात ।
 ते पिण छै भाव जीव चोखो, दिन दिन नेडी करे छै मोखो ॥ ६० ॥
 कहि कहि नें कितोएक केहूँ, द्रव्य ने भाव जीव छै बेहूँ ।
 त्याने रुडी रीत पिछ्छाणो, छै ज्यूँ रा ज्यूँ हीया माहे जाणो ॥ ६१ ॥
 द्रव्य भाव ओलखावणी ताम, जोड कीची श्री दुवारे सु ठाम ।
 समत अठारे पचावने वरस, चेत विद तिथ तेरस ॥ ६२ ॥

२ : अजीव पदारथ

दुहा

हिचे अजीव ने ओलखायवा, त्यांरा कर्हू छू भाव भेद ।
थोडा सा परगट कर्हू, ते सुणजो आण उमेद ॥ १ ॥

ढाल : २

[मम करो काया माया कारमी]

धर्म अघर्म आकास छै, काल ने पुदगल जाण जी ।
अे पाचूइ द्रव्य अजीव छे, त्यारी बुद्धवत करो पिछाण जी ।
ए अजीव पदारथ ओलखो* ॥ १ ॥

यामें च्यार दरब ने अरूपी कह्या, त्यामेंवर्ण गध रस फरस नाहि जी ।
एक पुदगल द्रव्य रूपी कह्यो, वर्णादिक सर्व तिण माहि जी ॥ २ ॥

अे पाचूइ द्रव्य भेला रहे, पिण भेल सभेल न होय जी ।
आप आप तणो गुण ले रह्या, त्याने भेला करसके नही कोय जी ॥ ३ ॥

धर्म द्रव्य घर्मास्तीकाय छै, आसती ते छ्ती वसत ताय जी ।
असंख्यात प्रदेस छै तेहना, तिणने काय कही इण न्याय जी ॥ ४ ॥

अघर्म द्रव्य अघर्मास्तीकाय छै, आ पिण छ्ती वसत ताय जी ।
असंख्यात प्रदेस छे तेहना, तिणने काय कही इण न्यायजी ॥ ५ ॥

आकास द्रव्य आकास्तीकाय छै, आ पिण छ्ती वसत छै ताय जी ।
अनत प्रदेस छै तेहना, तिण सू काय कही जिणराय जी ॥ ६ ॥

धर्मास्ती अघर्मास्तीकाय तो, पेहली छै लोक प्रमाण जी ।
लोक अलोक प्रमाण आकास्ती, लबी ने पेहली जाण जी ॥ ७ ॥

धर्मास्ती ने अघर्मास्ती, बले तीजी आकास्तीकाय जी ।
अे तीनुंइ कही जिण सासती, तीनुंइ काल रे माय जी ॥ ८ ॥

अे तीनुंइ द्रव्य छै जू जूआ, जूआ जूआ गुण परजाय जी ।
त्यारी गुण परजाय पलटे नही, सासता तीन काल रे माय जी ॥ ९ ॥

ए तीनुंइ द्रव्य फेली रह्या, ते तो हाले चाले नही ताय जी ।
हाले चाले ते पुदगल जीव छे, ते फिरे छै लोक रे मांय जी ॥ १० ॥

जीव ने युदगल चाले तेहने, साज धर्मास्तीकाय जी ।
अनंता चाले त्यानें साज छै, तिण सू अनती कही परजाय जी ॥ ११ ॥

❀ यह आंकड़ी है । प्रत्येक गाया के अन्त मे इसकी पुनरावृत्ति सम्भन्ती चाहिए ।

नव पदारथ : अजीव पदारथ

जीव ने पुदगल थिर रहे, त्याने साज अघर्मास्तीकाय जी ।
 अनता थिर रहे त्याने साम छे, तिण सू अनती कही परजाय जी ॥ १२ ॥
 जीव अजीव सर्व द्रव्य नो, भाजन आकास्तीकाय जी ।
 अनता रो भाजन तेह सू, अनती कही परजाय जी ॥ १३ ॥
 चालवाने साज धर्मास्ती, थिर रहेवाने अघर्मास्तीकाय जी ।
 आकास विकास भाजन गुण, सर्व द्रव्य रहै तिण माय जी ॥ १४ ॥
 धर्मास्ती रा तीन भेद छे, खघ ने देस परदेस जी ।
 आखी धर्मास्ती खद छे, ते उणी नही लवलेस जी ॥ १५ ॥
 एक प्रदेस थी आदि दे, एक प्रदेस उणो खंव न होय जी ।
 त्या लग देस प्रदेस छे, तिणने खघ म जाणजो कोय जी ॥ १६ ॥
 धर्मास्ती काय तो सेथाले पढी, तावडा छाही ज्यू एक धार जी ।
 तिणरे वेठो ने दीटो कोई नही, वले नही छेकी साघ लग्गार जी ॥ १७ ॥
 पुदगलास्ती सू प्रदेस न्यारो पख्यो, तिणने परमाणु कह्यो जिणदाय जी ।
 तिण सूखम परमाणु थकी । तिण सू मापी छै धर्मास्तीकाय जी ॥ १८ ॥
 एक परमाणुओ फरसे धर्मास्ती, तिणने प्रदेस कह्यो जिणराय जी ।
 इण मापा सू धर्मास्ती काय ना, असख्याता प्रदेस हुवे ताय जी ॥ १९ ॥
 तिण सू असख्यात प्रदेसी धर्मास्ती, अघर्मास्ती पिण इमहीज जाण जी ।
 अनता आकास्ती काय ना, प्रदेस इण रीत पिच्छाण जी ॥ २० ॥
 काल पदारथ तेहना, द्रव्य कहया छै अनंत जी ।
 नीपना नीपजे ने नीपजसी वलि, तिणरो कदेय न आवसी अत जी ॥ २१ ॥
 गये काल अनता समा हुआ, वरतमान समो एक जाण जी ।
 आगमीये काले अनता हुसी, ए काल द्रव्य पिच्छाण जी ॥ २२ ॥
 काल द्रव्य नीपजवा आसरी, सासतो कह्यो जिणराय जी ।
 उमजे ने विणसे तिण आसरी, असासतो कह्यो इण न्याय जी ॥ २३ ॥
 तिण सू काल द्रव्य नही सासता, ए तो उपजे छै जेम प्रवाह जी ।
 जे उपजे ते समो विणसे सही, तिणरो कदेय न आवे छै थाह जी ॥ २४ ॥
 सूरज ने चन्द्रमादिक नी चाल थी, समो नीपजे दगचाल जी ।
 नीपजवा लेखे तो काल सासतो, समयादिक सर्व अघा काल जी ॥ २५ ॥
 एक समो नीपजे ने विणसे गयो, पछै बीजो समो हुवे ताय जी ।
 बीजो विणस्यो तीजो नीपजे, इन अणुक्रमे नीपजता जाय जी ॥ २६ ॥
 काल वरेत छै अढाइ धीप में, अढी दीप बारे काल नाहिं जी ।
 अढी धीप वारला जोतषी, एक ठाम रहे त्यांरा त्याहि जी ॥ २७ ॥

दंय समयादिक भेला हुवे नही, तिणसू काल नें खं व न कह्यो जिणराय जी ।
 खं तो हुवे घणा रा समदाय थी, समदाय विण खं व न थाय जी ॥ २८ ॥
 अनता गये काल समा हूआ, ते एकट्टा भेला नही हूआ कोय जी ।
 ए तो उपजे ने विणने गया, तिण रो खं व किहा थकी होय जी ॥ २९ ॥
 आगमे काले अनता समा होसी, ते पिण एकट्टा भेला नही कोय जी ।
 ते तो उपजे ने विल्लावसी, तिण सू खं व किसी पर होय जी ॥ ३० ॥
 वरतमान समो एक काल रो, एक समा रो खं व न होय जी ।
 ते पिण उपजे ने विल्लावसी, काल रो थिर द्रव्य न कोय जी ॥ ३१ ॥
 खं व विना देस हुवे नही, खं देस विना नहीं प्रदेस जी ।
 प्रदेस अल्लगों नही हुवे खं व थी, परमाणुओ न हुवे लवलेस जी ॥ ३२ ॥
 तिण सू काल नें खं व कह्यो नही, बले नही कह्यो देस प्रदेस जी ।
 खं व थी छूटे अल्लगो परखा विना, परमागूओ कुण कहेस जी ॥ ३३ ॥
 काल ने मापो थाप्यो तीर्थंकरा, चन्द्रमादिक री चाल विख्यात जी ।
 ते चाल सदा काल सासती, ते बडे घटे नही तिलमात जी ॥ ३४ ॥
 तिण सू मापो तीर्थंकर वाधीयो, जगन समो थाप्यो एक जी ।
 जगन थित्त कार्य ने द्रव्य नी, तिण सू इघका रा भेद अनेक जी ॥ ३५ ॥
 असंख्याता समा री थापी आवली, पछे मोहरत पोहर दिन रात जी ।
 पख मास रित्त अयन थापीया, दोय अयनां रो वरस विख्यात जी ॥ ३६ ॥
 इम कहिता कहिता पल सागरू, उतसर्पणी ने अवसर्पणी जाण जी ।
 जाव पुदगल परावर्तन थापीयो, इम काल द्रव्य ने पीछाण जी ॥ ३७ ॥
 इण विध गयो काल नीकल्यो, इम हीज आगमीयो काल जी ।
 वरतमान समो पूछे तिण समे, एक समो छे अघा काल जी ॥ ३८ ॥
 ते समो वरते छे अढी दीप मे, तिरछो एती दूर जाण जी ।
 उंचो वरते जोतप चक्र लगे, नव सों जोजन परमाण जी ॥ ३९ ॥
 नीचो वरते सहस जोजन लगौ, माविदेह री दो विजय रे माय जी ।
 त्यामे वरते अनता द्रव्यां उपरे, तिणसू अनती कही छे परजाय जी ॥ ४० ॥
 एक एक द्रव्य रे उपरे, एक एक समो गिण्यो ताय जी ।
 तिण सु एक समा ने अनता कह्या, काल तणी परजाय रे न्याय जी ॥ ४१ ॥
 बले कहि कहि ने कितरो कहुं, वरतमान समो सदा एक जी ।
 तिण एकण ने अनता कह्या, तिण ने ओलखो आण विवेक जी ॥ ४२ ॥
 ए काल द्रव्य अल्पी तणो, कह्यो छे अल्प विस्तार जी ।
 हिवे पुदगल द्रव्य रूपी तणो, विस्तार सुणो एक धार जी ॥ ४३ ॥

पुद्गल रा द्रव्य अनंता कह्या, ते द्रव्य तो सासता जाण जी ।
 भावे तो पुद्गल असासतो, तिणरी बुववंत करजो पिछांण जी ॥ ४४ ॥
 पुद्गल रा द्रव्य अनंता कह्या, ते घटे वधे नही एक जी ।
 घटे वधे ते भाव पुद्गलु, तिणरा छै भेद अनेक जी ॥ ४५ ॥
 तिणरा च्यार भेद जिणवर कह्या, खं व नें देस प्रदेस जी ।
 चोथो भेद न्यारो परमाणुओ, तिणरो छै ओहीज विसेस जी ॥ ४६ ॥
 ख व रे लागो त्या लग परदेस छै, ते छूटेंनं एकलो होय जी ।
 तिणनें कहीजे परमाणुओ, तिण मे फेर पड्यो नही कोय जी ॥ ४७ ॥
 परमाणु नें प्रदेस तुल छै, तिणरी संका मूल म आंण जी ।
 आगल रे असंख्यातमें भाग छै, तिणने ओलखो चतुर सुजाण जी ॥ ४८ ॥
 उतकष्टो ख व पुद्गल तणो, जब सम्पूर्ण लोक प्रमाण जी ।
 आंगुल रे भाग असख्यातमें, जगन ख व एतलो जाण जी ॥ ४९ ॥
 अनंत प्रदेसीयो ख व हुवे, एक प्रदेस खेत्र मे समाय जी ।
 ते पुद्गल फेल भोटो ख व हुवे, ते सम्पूर्ण लोक रे मांय जी ॥ ५० ॥
 समवे पुद्गल तीन लोक मे, खाली ठोर जायगां नही काय जी ।
 ते आमां स्हामां फिर रह्या लोक में, एक ठाम रहे नही ताय जी ॥ ५१ ॥
 थित च्याख्ई भेदा तणी, जगन तो एक समो छै ताम जी ।
 उतकष्टी असंख्याता काल नी, ए भावे पुद्गल तणा परिणांम जी ॥ ५२ ॥
 पुद्गल नो सभाव छै एहवो, अनता गले ने मिल जाय जी ।
 तिण सू पुद्गल रा भाव री, अनती कही परजाय जी ॥ ५३ ॥
 जे जे वस्तु नीपजे पुद्गल तणी, ते ते सगली विल्लाय जी ।
 त्यानें भावे पुद्गल जिणवर कह्या, द्रव्य तो ज्यूं रा ज्यूं रहै ताय जी ॥ ५४ ॥
 आठ कर्म ने शरीर असासता, ए नीपना हूआ छै ताय जी ।
 तिण सू भाव पुद्गल कह्या तेह ने, द्रव्य तो नीपजायो नहीं जाय जी ॥ ५५ ॥
 छाया तावडो प्रभा काति छै, ए सगला भाव पुद्गल जांण जी ।
 वले अंवारी नें उद्योत छै, ए पुद्गल भाव पिछांण जी ॥ ५६ ॥
 हलको भारी सुहालो खरदरो, गोल वटादिक पांच संठांण जी ।
 घड़ा पडहा ने वखादिक, ए सगला भावे पुद्गल जाण जी ॥ ५७ ॥
 धरत गुलादिक दसूं विगे, भोजनादि सर्व वखांण जी ।
 वले सख विवध प्रकार ना, ए सगला भावे पुद्गल जांण जी ॥ ५८ ॥
 सइकडां मण पुद्गल वल गया, पिण द्रव्ये तो बल्यो नही अस मात जी ।
 ए भावे पुद्गल उपनां हुंता, ते भावे पुद्गल विणस जात जी ॥ ५९ ॥

सइकडां मण पुदगल उपनां, पिण द्रव्य तो नहीं उपनों लिगार जी । - -
 उपनां तेहीज विणससी, पिण द्रव्य तो नहीं विगाइ जी ॥ ६० ॥
 द्रव्य तो कदेइ विणसे नही, तीनोंइ काल रे मांय जी ।
 उपजे ने विणसे ते भाव छै, ते पुदगल री परजाय जी ॥ ६१ ॥
 पुदगल नें कह्यो सासतो असासतो, द्रव नें भाव रे न्याय जी ।
 कह्यो छै उत्तराघेन छत्तीस में, तिण में संका म आणजो कांय जी ॥ ६२ ॥
 अजीव द्रव्य ओलखायवा, जोइ कीधी श्री दुवारा मजार जी ।
 संवत् अठारे पचावनें, वैसाल विद पांचम बुधवार जी ॥ ६३ ॥

३: पुन पदारथ

ढाल : ३

दुहा

पुन पदार्थ छै तीसरो, तिणसूं सुख माने संसार ।
काम भोग शब्दादिक पामे तिण थकी, तिणने लोक जाणे श्रीकार ॥ १ ॥
पुन रा सुख छै पुदगल तणा, काम भोग शब्दादिक जाण ।
ते मीठा लागे छै कर्म तणे वसे, ग्यानी तो जाणे जेहर समान ॥ २ ॥
जेहर सरीर में त्या लगे, मीठा लागे नीब पान ।
ज्युं कर्म उदय हुवे जीव रे जब, लागे भोग इमरत समान ॥ ३ ॥
पुन तणा सुख कारमा, तिण मे कला म जाणो काय ।
मोह कर्म वस जीवडा, तिण सुख मे रह्या लपटाय ॥ ४ ॥
पुन पदार्थ तो सुभ कर्म छै, तिणरी मूल न करणी चाय ।
तिण नें जयातथ परगट करू, ते सुणज्यो चित्त लाय ॥ ५ ॥

ढाल

[रे जीव मोह अनुकम्या न आशीये]

पुन तो पुदगल री परजाय छै, जीव रे आय लागे ताम रे लाल ।
ते जीव रे उदय आवे सुभ पणे, तिणसूं पुदगल रो पुन छै नांम रे लाल ॥
पुन पदारथ ओलखो ॥ १ ॥
च्यार कर्म ते एकत पाप छै, च्यार कर्म छै पुन ने पाप हो लाल ।
पुन कर्म - थि जीव ने, साता हुवे पिण न हुवे संताप हो लाल ॥ २ ॥
अनता प्रदेस छे पुन तणा, ते जीव रे उदय हुवे आय हो लाल ।
अनंती सुख करे जीव रे, तिणसूं पुन री अनंती परजाय हो लाल ॥ ३ ॥
निरबद जोग बरते जब जीव रे, सुभ पणे लागे पुदगल ताम हो लाल ।
त्या पुदगल तणा छै जू जूआ, गुण परिणामे त्यारा नाम हो लाल ॥ ४ ॥

साता वेदनीय पणे परणम्यां,
 ते सुखसाता करे जीव नें,
 पुद्गल परणम्यां सुभ आउखा पणे,
 जाणे जीविये पिण न भरजीये,
 केइ देवता नें केइ मिनख रो,
 जुगलीया तिर्यंच रो आउखो,
 सुभ नाम पणे आए परणम्यां,
 अनेक वाना सुघ हुवे तेह सूं,
 सुभ आउखा रा मिनख ने देवता,
 केइ जीव पचेन्द्रीय विसुघ छै,
 पाच वरीर छै सुघ निरमला,
 ते पामें शुभ नाम उदय हुआ,
 पेला संघयण ना रूडा हाड छै,
 ते पामे सुभ नाम उदे थकी,
 भला भला वर्ण मिले जीव ने,
 ते पामे सुभ नाम उदे हुआ,
 भला भला मिले गघ जीव ने,
 ते पामें सुभ नाम उदे थकी,
 भला भला मिले रस जीव नें,
 ते पामें सुभ नाम उदे थकी,
 भला भला मिले फरस जीव नें,
 ते पामें सुभ नाम उदय थकी,
 तस रो दश को छै पुन उदे,
 त्यांनैं जूआ जूआ कर वरणवूं,
 १तस नाम शुभ कर्म उदय थकी,
 २बादर सुभ नाम कर्म उदय हुआ,
 ३प्रतेक सुभ नाम उदे हुआं,
 ४प्रज्यापता सुभ नाम थी,
 ५सुभ थिर नाम कर्म उदे थकी,
 ६सुभ नाम थी नाभमस्तक लगे,
 ७सोभाग नाम सुभ कर्म थी,
 ८सुस्वर सुभ नाम कर्म सूं,

साता पणे उदय आवे ताम हो लाल ।
 तिण सूं साता वेदनी दीयो नांम हो लाल ॥ ५ ॥
 घणो रहणो वांछै तिण ठाम हो लाल ।
 सुभ आउखो तिण रो नाम हो लाल ॥ ६ ॥
 सुभ आउखो पुन ताय हो लाल ।
 दीसे छै पुन रे मांय हो लाल ॥ ७ ॥
 ते उदय आवे जीव रे ताय हो लाल ।
 नाम कर्म कहुओ जिणराय हो लाल ॥ ८ ॥
 त्यारी गति ने आणपूर्वी सुघ हो लाल ।
 त्यारी जात पिण पुन विसुघ हो लाल ॥ ९ ॥
 त्यारा निरमला तीन उपंग हो लाल ।
 सरीर नें उपंग सुचग हो लाल ॥ १० ॥
 पहलो संठाण रुडे आकार हो लाल ।
 हाड ने आकार श्रीकार हो लाल ॥ ११ ॥
 गमता गमता घणा श्रीकार हो लाल ।
 जीव भोगवे विविध प्रकार हो लाल ॥ १२ ॥
 गमता गमता घणा श्रीकार हो लाल ।
 जीव भोगवे विविध प्रकार हो लाल ॥ १३ ॥
 गमता गमता घणा श्रीकार हो लाल ।
 जीव भोगवे विविध प्रकार हो लाल ॥ १४ ॥
 गमता गमता घणा श्रीकार हो लाल ।
 जीव भोगवे विविध प्रकार हो लाल ॥ १५ ॥
 सुभ नाम उदय सूं जाण हो लाल ।
 निरणो कीजो चतुर सुजाण हो लाल ॥ १६ ॥
 तसपणो पामें जीव सोय हो लाल ।
 जीव चेतन बादर होय हो लाल ॥ १७ ॥
 प्रतेक सरीरी जीव थाय हो लाल ।
 प्रज्यापतो होय जाय हो लाल ॥ १८ ॥
 सरीर ना अवयव दिढ थाय हो लाल ।
 अवयव रूडा हूवै ताय हो लाल ॥ १९ ॥
 सर्वे लोक नें वलभ होय हो लाल ।
 सुस्वर कंठ मीठो हुवे सोय हो लाल ॥ २० ॥

१ आदेज वचन सुभ करम थी, तिणरो वचन मानें सहु कोय हो लाल ।
 १ ० जस किती सुभ नाम उदे हूयां, जश कीरत जग में होय हो लाल ॥ २१ ॥
 अगुरलघू नाम कर्म सूं, सरीर हलको भारी नही ल्गात हो लाल ।
 परघात सुभ नाम उदे थकी, आप जीते पेलो पामे घात हो लाल ॥ २२ ॥
 उसास सुभ नाम उदे थकी, सास उसास सुखे लेवत हो लाल ।
 आताप सुभ नाम उदे थकी, आप सीतल पेलो तपत हो लाल ॥ २३ ॥
 उद्योत सुभ नाम उदे थकी, सरीर नो उजवालो जाण हो लाल ।
 सुभ गइ सुभ नाम कर्म सू, हस ज्यू चोखी चाल वखाण हो लाल ॥ २४ ॥
 निरमाण सुभ नाम कर्म सू, सरीर फोड़ा फूलगणा रहीत हो लाल ।
 तीर्थ कर नाम कर्म उदे हूयां, तीर्थ कर हुवे तीन लोक वदीत हो लाल ॥ २५ ॥
 केइ जगलीयादिक तिरयच नी, गति नें आणपूर्वीं जाण हो लाल ।
 ते तो प्रतक दीसे पुन तणी, ग्यानी वदे ते परमाण हो लाल ॥ २६ ॥
 पेहलो संघेण सठाण वरज ने, च्यार संघेण सठाण हो लाल ।
 त्यामे तो भेल दीसे छै पुन तणो, ग्यानी वदे तो परमाण हो लाल ॥ २७ ॥
 जे जे हाड छै पहिला संघेण मे, तिण माहिला च्यारां माय हो लाल ।
 त्याने जावक पाप में घालीया, मिलतो न दीसे न्याय हो लाल ॥ २८ ॥
 जे जे आकार पहिला सठाण में, तिण माहिला च्यारां मांय हो लाल ।
 त्याने जावक पाप मे घालीया, ओ पिण मिलतो न दीसे न्याय हो लाल ॥ २९ ॥
 उच गोत पणे आय परणम्या, ते उदे आवे जीव रे ताम हो लाल ।
 उंच पदवी पामें तिग थकी, उंच गोत छै तिण रो नांम हो लाल ॥ ३० ॥
 सगली न्यात थकी उंची न्यात छै, तिणमे कठे न लागे छोट हो लाल ।
 एहवा छै मिनष ने देवता, त्यारो कर्म छै उच गोत हो लाल ॥ ३१ ॥
 जे जे गुण आवे जीव रे सुभ पणे, जेहवा छै जीव रा नाम हो लाल ।
 तेहवाइज नाम पुदगल तणा, जीव तणे सयोगे तांम हो लाल ॥ ३२ ॥
 जीव सुघ हूओ पुदगल थकी, तिण सूं रुड़ा रुडा पाया नांम हो लाल ।
 जीव ने सुघ कीघो पुदगला, त्यांरा पिण सुघ छै नाम ताम हो लाल ॥ ३३ ॥
 ज्या पुदगल रा प्रसग थी, जीव वाज्यो ससार में उच हो लाल ।
 ते पुदगल पिण उच वाजीया, त्यारो न्याय न जाणे भूच हो लाल ॥ ३४ ॥
 पदवी तियकर ने चक्रवत तणी, वासुदेव बलदेव महत रे लाल ।
 वले पदवी मडलीक राजा तणी, सारी पुन थकी लहंत रे लाल ॥ ३५ ॥
 पदवी देविद्रो ने नरिद्र नी, वले पदवी अहमिद्र वखाण हो लाल ।
 इत्यादिक मोटी मोटी पदवीयां, सह पुन तणे परमाण हो लाल ॥ ३६ ॥

जे जे पुद्गल परणम्यां सुभ पणे, ते तो पुन उदा सूं जाण हो लाल ।
 त्यां सूं सुख उपजे संसार मे, पुन रा फल एह पिच्छाण हो लाल ॥ ३७ ॥
 वाला विच्छेदीया आए मिले, सेणा तणो मिले संजोग हो लाल ।
 ते पिण पुन तणा परताप थी, सरीर में न व्यापे रोग हो लाल ॥ ३८ ॥
 हाथी घोडा रथ पायक तणी, चोरंगणी सेन्या मिले आण हो लाल ।
 रिघ विरघ ने सुख संपत मिलै, ते पुन तणे परिमाण हो लाल ॥ ३९ ॥
 खेतू^१ वत्थू^२ हिरण^३ सोवनादिक^४, धन^५ धान^६ नें कुबी घात^७ हो लाल ।
 दोपद^८ चोपदादिक आए मिलै, ते तो पुन तणो परताप हो लाल ॥ ४० ॥
 हीरा माणक मोती मूंगीया, वले रत्नां री जात अनेक हो लाल ।
 ते सारा मिलै छै पुन थकी, पुन विना मिले नही एक हो लाल ॥ ४१ ॥
 गमती गमती विनेवंत अस्त्री, ते अपछर रे उणीयार हो लाल ।
 ते पुन थकी आए मिले, वले पुत्र घणा श्रीकार हो लाल ॥ ४२ ॥
 ते सुख पामे देवता तणा, ते तो पूरा कह्या न जाय हो लाल ।
 पल सागरां लग सुख भोगवे, ते तो पुन तणे पसाय हो लाल ॥ ४३ ॥
 रूप सरीर नो सुन्दरपणो, तिण रो वर्णादिक श्रीकार हो लाल ।
 ते गमतो लागे सर्व लोग ने, तिणरो बोल्हो गमे वाख्वार हो लाल ॥ ४४ ॥
 जे जे सुख सगला संसार नां, ते तो पुन तणा फल जाण हो लाल ।
 ते कहि कहि ने कितरो कहूं, बुधवंत लीज्यो पिच्छाण हो लाल ॥ ४५ ॥
 ए तो पुन तणा सुख वरणव्या, ससार लेखे श्रीकार हो लाल ।
 त्याने मोख सुखा सूं मीढीये, तो ए सुख नही मूल लिगार हो लाल ॥ ४६ ॥
 पुद्गलीक सुख छै पुन तणा, ते तो रोगीला सुख ताय हो लाल ।
 आतमीक सुख छै मुगत नां, त्याने तो ओपमा नही काय हो लाल ॥ ४७ ॥
 पांव रोगी हुवे तेहनें, खाज मीठी लागे अतंत हो लाल ।
 ज्यूं पुन उदे हूआं जीव ने, सवदादिक सर्व गमता लागत हो लाल ॥ ४८ ॥
 सर्प डंक लागा जहर परगम्यां, मीठा लागे नीब पान हो लाल ।
 ज्यूं पुन उदय हूआं जीव ने, मीठा लागे भोग परचान हो लाल ॥ ४९ ॥
 रोगीला सुख छे पुद्गल तणा, तिणमे कला म जाणो लिगार हो लाल ।
 ते पिण काचा सुख असासता, विणसतां नही लागे वार हो लाल ॥ ५० ॥
 आतमीक सुख छै सासता, त्यां सुखा रो नही कोइ पार हो लाल ।
 ते सुख सदा काल सासता, ते सुख रहे एक धार हो लाल ॥ ५१ ॥
 पुन तणी वछा कीयां, लागे छै एकत पाप हो लाल ।
 तिण सूं दुःख पामें संसार में, वधतो जाये सोग संताप हो लाल ॥ ५२ ॥

जे जे पुद्गल परणम्यां सुभ पणे, ते तो पुन उदा सूं जाण हो लाल ।
 त्यां सूं सुख उपजे संसार मे, पुन रा फल एह पिच्छाण हो लाल ॥ ३७ ॥
 वाला विच्छेदीया आए मिले, सेणा तणो मिले संजोग हो लाल ।
 ते पिण पुन तणा परताप थी, सरीर में न व्यापे रोग हो लाल ॥ ३८ ॥
 हाथी घोडा रथ पायक तणी, चोरंगणी सेन्या मिले आण हो लाल ।
 रिघ विरघ ने सुख संपत मिलै, ते पुन तणे परिमाण हो लाल ॥ ३९ ॥
 खेतू^१ वत्थू^२ हिरण^३ सोवनादिक^४, धन^५ धान^६ नें कुबी घात^७ हो लाल ।
 दोपद^८ चोपदादिक आए मिलै, ते तो पुन तणो परताप हो लाल ॥ ४० ॥
 हीरा माणक मोती मूंगीया, वले रत्नां री जात अनेक हो लाल ।
 ते सारा मिलै छै पुन थकी, पुन विना मिले नही एक हो लाल ॥ ४१ ॥
 गमती गमती विनेवंत अस्त्री, ते अपछर रे उणीयार हो लाल ।
 ते पुन थकी आए मिले, वले पुत्र घणा श्रीकार हो लाल ॥ ४२ ॥
 ते सुख पामे देवता तणा, ते तो पूरा कह्या न जाय हो लाल ।
 पल सागरां लग सुख भोगवे, ते तो पुन तणे पसाय हो लाल ॥ ४३ ॥
 रूप सरीर नो सुन्दरपणो, तिण रो वर्णादिक श्रीकार हो लाल ।
 ते गमतो लागे सर्व लोग ने, तिणरो बोल्हो गमे वाख्वार हो लाल ॥ ४४ ॥
 जे जे सुख सगला संसार नां, ते तो पुन तणा फल जाण हो लाल ।
 ते कहि कहि ने कितरो कहूं, बुधवंत लीज्यो पिच्छाण हो लाल ॥ ४५ ॥
 ए तो पुन तणा सुख वरणव्या, ससार लेखे श्रीकार हो लाल ।
 त्याने मोख सुखा सूं मीढीये, तो ए सुख नही मूल लिगार हो लाल ॥ ४६ ॥
 पुद्गलीक सुख छै पुन तणा, ते तो रोगीला सुख ताय हो लाल ।
 आतमीक सुख छै मुगत नां, त्याने तो ओपमा नही काय हो लाल ॥ ४७ ॥
 पांव रोगी हुवे तेहनें, खाज मीठी लागे अतंत हो लाल ।
 ज्यूं पुन उदे हूआं जीव ने, सवदादिक सर्व गमता लागत हो लाल ॥ ४८ ॥
 सर्प डंक लागा जहर परगम्यां, मीठा लागे नीब पान हो लाल ।
 ज्यूं पुन उदय हूआं जीव ने, मीठा लागे भोग परचान हो लाल ॥ ४९ ॥
 रोगीला सुख छे पुद्गल तणा, तिणमे कला म जाणो लिगार हो लाल ।
 ते पिण काचा सुख असासता, विणसतां नही लागे वार हो लाल ॥ ५० ॥
 आतमीक सुख छै सासता, त्यां सुखा रो नही कोइ पार हो लाल ।
 ते सुख सदा काल सासता, ते सुख रहे एक धार हो लाल ॥ ५१ ॥
 पुन तणी वछा कीयां, लागे छै एकत पाप हो लाल ।
 तिण सूं दुःख पामें संसार में, वधतो जाये सोग संताप हो लाल ॥ ५२ ॥

जिणसूं पुन तणी वंछा करी, तिण वांछिया कांम नें भोग हो लाल ।
 त्यांनं दुःख होसी नरक निगोद नां, वले वाला रा पइसी विजोग हो लाल ॥ ५३ ॥
 पुन तणा . मुख अंसासता, ते पिण करणी विण नही थाय हो लाल ।
 निरवद करणी करे तेहनें, पुन तो सेहजा लागे छै आय हो लाल ॥ ५४ ॥
 पुन री वंछा सूं पुन न नीपजे, पुन तो सेहजां लागे छै आय हो लाल ।
 ते तो लागे छै निरवद जोग सूं, निरजरा री करणी सूं ताय हो लाल ॥ ५५ ॥
 भली लेश्या ने भला परिणाम थी, निश्चेइ निरजरा थाय हो लाल ।
 जब पुन लागे छै जीव रे, सहजे सभावे ताय हो लाल ॥ ५६ ॥
 जे करणी करे निरजरा तणी, पुन तणी मन में धार हो लाल ।
 ते तो करणी खोएने वापडा, गया जमारो हार हो लाल ॥ ५७ ॥
 पुन तो चोफरसी कर्म छै, तिणरी वंछा करे ते मूढ हो लाल ।
 त्यां कर्म ने धर्म न ओलख्यो, करे करे मिथ्यात नी रूढ हो लाल ॥ ५८ ॥
 जे जे पुन थी वस्त मिले तके, त्यांनं त्याग्या निरजरा थाय हो लाल ।
 जो पुन भोगवे ग्रिधी थको, तो चीकणा कर्म बंधाय हो लाल ॥ ५९ ॥
 जोड कीधी पुन ओलखायवा, श्रीजी दुवारा सहूर मभार हो लाल ।
 संवत अठारे पचावने, जेठ विद नवमी सोमवार हो लाल ॥ ६० ॥

ढाल : ४

दुहा

नव प्रकारे पुन नीपजे, ते करणी निरवद जाण ।
 बयालीस प्रकारे भोगवे, तिणरी बुववंत करजो पिछाण ॥ १ ॥
 पुन नीपजे तिण करणी मभे, तिहां निरजरा निश्चे जाण ।
 तिण करणी री छै जिण आगना, तिण माहे सक म आण ॥ २ ॥
 केई साध वाजे जैन रा, त्यां दीवी जिण मारग नें पूठ ।
 पुन कहे कुपातर ने दीया, त्यांरी गई अभितर फूट ॥ ३ ॥
 काचो पाणी अणगल पावे तेहने, कहै छै पुन नें धर्म ।
 ते जिण मारग सू वेगला, भूला अग्यांनी भर्म ॥ ४ ॥
 साध विना अनेरा सर्व ने, सचित्त अचित्त दीया कहे पुन ।
 वले नाव लेवे ठाणा अग री, ते तो पाठ विना छै अर्थ सुन ॥ ५ ॥
 किणहीएक ठाणा अग मभे, घाल्यो छै अर्थ विपरीत ।
 ते पिण सगला ठाणा अंग में नही, जोय करो तहतीक ॥ ६ ॥
 पुन नीपजे छै किण विधे, जोवो सूतर मांय ।
 श्री वीर जिणेसर भाषीयो, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ७ ॥

ढाल

[राजा रामजी हो रेश छमासी...]

पुन नीपजे सुभ जोग सूं रे लाल, सुभ जोग जिण आगना मांय हो । भविकजण*
 ते करणी छै निरजरा तणी रे लाल, पुन सहिजां लागे छै आय हो ॥ भविकजण*
 पुन नीपजे सुभ जोग सं रे लाल ॥ १* ॥
 जे करणी करे निरजरा तणी रे लाल, तिणरी आगना देवे जगनाथ हो ।
 तिण करणी करतां पुन नीपजे रे लाल, ज्यू खाखलो गोहां हुवे साथ हो ॥ २ ॥
 पुन नीपजे तिहां निरजरा हुवे रे लाल, ते करणी निरवद जांण हो ।
 सावद्य करणी में पुन नही नीपजे रे लाल, ते सुणज्यो चतुर सुजांण हो ॥ ३ ॥
 हिंसा कीयां भूठ बीलीयां रे लाल, साधु नें देवे असुध आहार हो ।
 तिण सूं अल्प आउखो बंधे तेहने रे लाल, ते आउखो पाप मभार हो ॥ ४ ॥
 लांबो आउषो बंधे तीन बोल सूं रे लाल, लांबो आउषो छै पुन मांय हो ।
 ते हिंसा न करे प्राणी जीवरी रे लाल, वले बोले नही मूसावाय हो ॥ ५ ॥
 दृथारूप ध्रमण निग्रंथ ने रे लाल, देवे फासू निरदोष च्यांरू आहार हो ।
 यां तीनां बोलां पुन नीपजे रे लाल, ठांणा अंग तीजा ठांणा मभार हो ॥ ६ ॥
 हिंसा कीयां भूठ बोलीयां रे लाल, साधू ने हेले निंदे ताय हो ।
 आहार अमनोगे नें अपीयकारी दीये रे लाल, तो उसभ लांबो आउषो बंधाय हो ॥ ७ ॥
 सुभ लांबो आउषो बंधे इण विघे रे लाल, ते पिण आउषो पुन मांय हो ।
 ते हिंसा न करे प्राणी जीवरी रे लाल, वले बोले नही मूसावाय हो ॥ ८ ॥
 तयारूप समण निग्रंथ ने रे लाल, करे वंदणा ने नमसकार हो ।
 पीतकारी बेहरावे च्यांरू आहार ने रे लाल, ठाणा अंग तीजा ठाणा मभार हो ॥ ९ ॥
 एहीज पाठ भगोती सूतर मभे रे लाल, पांचमें सतक षष्ठम उदेश हो ।
 संका हुवे तो निरणे करो रे लाल, तिणमें कूड़ नही लव्लेश हो ॥ १० ॥
 वंदणा करतां खपावे नीच गोत नें रे लाल, उंच गोत बंधे वले ताय हो ।
 ते वंदणा करण री जिण आगना रे लाल, उतराघेन गुणतीसमां मांय हो ॥ ११ ॥
 धर्म कथा कहै तेहनें रे लाल, बंधे किल्याणकारी कर्म हो ।
 उतराघेन गुणतीसमां अघेनमें रे लाल, तिहां पिण निरजरा धर्म हो ॥ १२ ॥
 करें वीयावच तेहनें रे लाल, बंधे तीर्थकर नाम कर्म हो ।
 उतराघेन गुणतीसमां अघेन में रे लाल, तिहां पिण निरजरा धर्म हो ॥ १३ ॥
 वीसां बोलां करेने जीवड़ो रे लाल, करमां री कोड़ खपाय हो ।
 जव बांधे तीर्थकर नाम कर्म नें रे लाल, गिनाता आठमा अघेन मांय हो ॥ १४ ॥

*यह आँकड़ी है । प्रत्येक गाथा के अन्त में इसकी पुनरावृत्ति सगभन्ती चाहिए ।

सुबाहू कुमर आदि दस जणा रे लाल,
 त्या बाघ्यो आउषो मिनख रो रे लाल,
 प्राण भूत जीव सत्त्व ने रे लाल,
 अभ्रूणया नें अतीप्पणया रे लाल,
 ए छ प्रकारे बंधे साता वेदनी रे लाल,
 भगोती सतषष सातमें रे लाल,
 करकस वेदनी बंधे जीवरे रे लाल,
 नही सेव्यां बघे अकरकस वेदनी रे लाल,
 कालोदाई पूछ्यो भगवानं नें रे लाल,
 किल्याणकारी कर्म किण विध बघे रे लाल,
 अठारे पाप थानक नही सेवीयां रे लाल,
 अठारे पाप थानक सेवे तेह सूं रे लाल,
 प्राण भूत जीव सत्त्व ने रे लाल,
 त्यांरी करे अणुकम्पा दया आणने रे लाल,
 अभ्रूणया ने अतीप्पणया रे लाल,
 या चवदे सूं बंधे साता वेदनी रे लाल,
 माहा आरभी ने माहा परिग्रही रे लाल,
 मद मांस तणो भखण करे रे लाल,
 माया कपट नें गूढ माया करे रे लाल,
 कूडा तोला ने कूडा मापा करे रे लाल,
 प्रकत रो भद्रीक^१ नें वनीत^२ छै रे लाल,
 तिण सूं बघे आउषो मिनख रो रे लाल,
^१पाले सराग पणे साधूपणो रे लाल,
 बाल तपसा^३ ने अकामनिरजरा^४ रे लाल,
 काया सरल^५ भाव सरल^६ सूं रे लाल,
 जेहवो करे तेहवो मुख सूं कहे^७ रे लाल,
 ए च्याळ^८ बोल वांका वरतीया रे लाल,
 ते सावद्य करणी छै पापरी रे लाल,
 जात^९ कुल^{१०} बल^{११} रूप^{१२} नो रे लाल,
 ए आठोई मद करे नही रे लाल,
 ए आठोई मद करे तेहनें रे लाल,
 ते सावद्य करणी पाप री रे लाल,

त्यां साघां नें असणादिक बेंहराय हो ।
 कह्यो विपाक सुतर रे मांय हो ॥ १५ ॥
 दुःख न दे उपजावे सोग नांय हो ।
 अपिट्टणया परिताप नहीं दे ताय हो ॥ १६ ॥
 उलटा कीषां असाता थाय हो ।
 छठा उदेसा मांय हो ॥ १७ ॥
 अठारे पाप सेव्यां बघाय हो ।
 भगोती सातमां सतक छठा माय हो ॥ १८ ॥
 सुतर भगोती मांहि ए रेस हो ।
 सातमे सतक दसमें उदेस हो ॥ १९ ॥
 किल्याण कारी कर्म बंधाय हो ।
 बघे अकिल्याणकारी कर्म आय हो ॥ २० ॥
 बहु सबदे च्याळ^८ मांहि हो ।
 दुःख सोग उपजावे नाहि हो ॥ २१ ॥
 अपिट्टणया नें अपरिताप हो ।
 यां उलटा सूं बंधे असाता पाप हो ॥ २२ ॥
 करे पर्चिंद्री नी घात हो ।
 तिण पाप सूं नरक में जात हो ॥ २३ ॥
 वले बोलै मूसावाय हो ।
 तिण पाप सूं तिरज्व थाय हो ॥ २४ ॥
 दया^३ नें अमच्छरभाव^४ जाण हो ।
 ते करणी निरवद पिछाण हो ॥ २५ ॥
 वले ^२श्रावक रा वरत बार हो ।
 या सूं पामे सुर अवतार हो ॥ २६ ॥
 वले भाषा सरल^३ पिछाण हो ।
 यां सूं बघे सुभ नाम कर्म जाण हो ॥ २७ ॥
 बघे उसभ नाम कर्म हो ।
 तिण मे नही निरजरा धर्म हो ॥ २८ ॥
 तप^५ लाभ^६ सुतर^७ ठाकुराय^८ हो ।
 तिण सूं उंच गोत बंधाय हो ॥ २९ ॥
 बंधे नीच गोत कर्म हो ।
 तिण में नहीं पुन धर्म हो ॥ ३० ॥

ग्यांनावणीं ने दरसणावणीं रे लाल,
 ये च्याहूँई एकंत पाप कर्म छै रे लाल,
 वेदनी आउपो नांम गोत छै रे लाल,
 तिणमेंपुन रीकरणी निरवद कहीरेलाल,
 ए भगवती शतक आठ मे रे लाल,
 पुन पाप तणी करणी तणो रे लाल,
 १करणी करे नीहांपो नही करे रे लाल,
 २समाच जोग वरते तेहनो रे लाल,
 ३पांचूँ इंद्री नें वसा कीयां रे लाल,
 ४अपासत्यपणो ग्यांनादिक तणो रे लाल,
 ५हितकारी प्रवचन आठां तणो रे लाल,
 यां दसां बोलां बंधे जीवरे रे लाल,
 ते किल्याणकारी कर्म पुन छै रे लाल,
 ते ठाणा अंग दसमें ठाणे कह्यो रे लाल,
 अण पुने पाण पुने कह्यो रे लाल,
 मन पुने वचन काया पुने रे लाल,
 पुन्य बधे नव प्रकार सूं रे लाल,
 ते नवोई बोलां में जिण आगना रे लाल,
 कोईकहै नवोईबोल समचे कह्यारेलाल,
 सचित्त अचित्त पिण नही कह्यारेलाल,
 तिणसूसचित्त अचित्त दोनूंकह्या रे लाल,
 पुन नीपजे दीघां सकल ने रे लाल,
 साव श्रावक पातर नें दीया रे लाल,
 अनेरां ने दान दीघां थकारे लाल,
 इम कहै नांम लेई ठाणा अंग नों रे लाल,
 ते अर्थ अणहंतो घालीयो रे लाल,
 जो अनेरा ने दीयां पुन नीपजे रे लाल,
 कुपातर नें दीयां पुन किहां थकी रे लाल,
 पुन रा नव बोलतो समचे कह्या रे लाल,
 ज्यूं वंदणा वीयावच पिण समचे कही रे लाल,
 वंदणा कीघां खपावे नीच गोत नें रे लाल,
 तीथंकर गोत वंधे वीयावच कीयारे लाल,

वले मोहणी ने अतराय हो ।
 त्यांरी करणी नही आग्या माय हो ॥ ३१ ॥
 ए च्याहूँई कर्म पुन पाप हो ।
 तिणरी आग्या वे जिन आप हो ॥ ३२ ॥
 नवमां उदेसा मांय हो ।
 ते जाणे समदिष्टी न्याय हो ॥ ३३ ॥
 ३चोखा परिणामां समकतवंत हो ।
 खिमा करी परीसह खमंत हो ॥ ३४ ॥
 ६वले माया कपट रहीत हो ।
 ८समणपणे छै सहीत हो ॥ ३५ ॥
 १०धर्मकथा कहें विसतार हो ।
 किल्याणकारी कर्म श्रीकार हो ॥ ३६ ॥
 त्यांरी करणी पिण निरवद जाण हो ।
 तिहां जोय करो पिच्छाण हो ॥ ३७ ॥
 लेण सेण वल्ल पुन जाण हो ।
 नमसकार पुने नवमां पिच्छाण हो ॥ ३८ ॥
 ते नवोई निरवद जाण हो ।
 तिणरी करज्यो पिच्छाण हो ॥ ३९ ॥
 सावध निरवद न कह्या तांम हो ।
 पातर कुपातर रो पिण नहीं नांम हो ॥ ४० ॥
 पातर कुपातर ने दीयां तांम हो ।
 ते भूठबोले सुतर रो लेले नांम हो ॥ ४१ ॥
 तीथंकर नामादिक पुन थाय हो ।
 अनेरी पुन प्रकत बंधाय हो ॥ ४२ ॥
 नवमा ठाणा में अर्थ दिखाय हो ।
 ते भोलां ने खबर न काय हो ॥ ४३ ॥
 जब टलीयो नहीं जीव एक हो ।
 समभो आंण विवेक हो ॥ ४४ ॥
 उण ठामें तो नही छै नीकाल हो ।
 ते गुणवंत सूं लेजो संभाल हो ॥ ४५ ॥
 उंच गोत कर्म बंधाय हो ।
 ते पिण समचे कह्या छै ताय हो ॥ ४६ ॥

तीथकर गोत बधे वीस बोल सू रे लाल,
समचे बोल घणा छै सिघत मे रे लाल,
जो अन पुने समचे दीघा सकल ने रे लाल,
हुवे निरणो कहे छू नवा ही तणो रे लाल,
अन सचित अचित दीघा सकल ने रे लाल,
तो इमहीज पुन पाणी दीया रे लाल,
इमहीज मन पुने समचे हुवे रे लाल,
वले वचन पुने पिण समचे हुवे रे लाल,
काय पुने विण समचे हुवे रे लाल,
नमसकार पुने पिण समचे हुवे रे लाल,
मन वचय काया माठा वरतीया रे लाल,
तो नवोई बोल इम जाणजो रे लाल,
मन वचन काया सू पुन नीपजे रे लाल,
तो नवोई बोल इम जाण जो रे लाल,
नमसकार अनेरा ने कीया थका रे लाल,
तो अनादिक सचित दीया थका रे लाल,
निरवद करणी मे पुन नीपजे रे लाल,
ते सावद्य निरवद किम जाणीये रे लाल,
अन पाणी पातर ने बेहरावीया रे लाल,
त्यारी श्री जिण देवे आगना रे लाल,
अन पाणी अनेरा नें दीया रे लाल,
त्यारी देवे नही जिण आगन्या रे लाल,
सुपातर ने दीया पुन नीपजे रे लाल,
जो अनेरा ने दीयाई पुन नीपजे रे लाल,
ठाम २ सुतर मे देखलो रे लाल,
पुन हुवे तिहा निरजरा रे लाल,
नव प्रकारे पुन नीपजे रे लाल,
ते पुन उदे हुवे जीवरे रे लाल,
ए पुन तणा सुख कारिमा रे लाल,
तिणरी वच्छा नही कीजीये रे लाल,
जिण पुन तणी वच्छा करी रे लाल,
ससार बधे काम भोग सू रे लाल,

त्यामे पिण समचे बोल अनेक हो ।
त्यामे कुण समभे विगर ववेक हो ॥ ४७ ॥
ते नवोई समचे जाण हो ।
ते सुणज्यो चतुर सुजाण हो ॥ ४८ ॥
जो पुन नीपजे छै ताम हो ।
लेण सेण वसतर पुन आम हो ॥ ४९ ॥
तो मन भूडोई वरत्या पुन थाय हो ।
भूडो बोल्याई पुन बघाय हो ॥ ५० ॥
तो काया सू हिंसा कीया पुन होय हो ।
तो सकल ने नम्या पुन जोय हो ॥ ५१ ॥
जो लागे छै एकत पाप हो ।
उथप गई समचे री थाप हो ॥ ५२ ॥
ते निरवद वरत्या होय हो ।
सावद्य मे पुन न कोय हो ॥ ५३ ॥
जो लागे छै एकत पाप हो ।
कुण करसी पुन री थाप हो ॥ ५४ ॥
सावद्य करणी सू लागे पाप हो ।
निरवद मे आग्या दे जिण आप हो ॥ ५५ ॥
लेण सयण वस्त्र बेहराय हो ।
तिण ठामे पुन बघाय हो ॥ ५६ ॥
लेण सेण वसतर देवे ताय हो ।
तिणरे पुन किहा थी बघाय हो ॥ ५७ ॥
ते करणी जिण आगना माय हो ।
तिणरी जिण आगना नही काय हो ॥ ५८ ॥
निरजरा ने पुन री करणी एक हो ।
तिहा जिण आगना छै शेष हो ॥ ५९ ॥
ते भोगवे बयालीस प्रकार हो ।
सुख साता पामें संसार हो ॥ ६० ॥
ते विणसता नही वार हो ।
ज्यूं पामें भव पार हो ॥ ६१ ॥
तिण वच्छीया काम नें भोग हो ।
तिहां पामे जन्म मरण सोग हो ॥ ६२ ॥

वछा कीजे एक मुगत री रे लाल, और बंछा न कीजे लिंगार हो ।
 जे पुन तणी वछा करें रे लाल, ते गया जमारो हार हो ॥ ६३ ॥
 संवत अठारे तयांले समे रे लाल, काती सुद चोथ विसपतवार हो ।
 पुन नीपजे ते ओलखायवा रे लाल, जोड़ कीषी कोठाख्या मभार हो ॥ ६४ ॥

४ : पाप पदारथ

ढाल : ५

दुहा

पाप पदारथ पाडूओ, ते जीव नें घणो भयकार ।
ते घोर रुद्र छै बीहामणो, जीव ने दुःख नो दातार ॥ १ ॥
पाप तो पुदगल द्रव्य छै, त्याने जीव लगाया ताम ।
तिण सूं दुःख उपजे छै जीव रे, त्यारो पाप कर्म छै नाम ॥ २ ॥
जीव खोटा २ किरतब करै, जब पुदगल लागे ताम ।
ते उदय आयां दुख उपजे, ते आप कमाया काम ॥ ३ ॥
ते पाप उदय दुख उपजे, जब कोई म करजो रोस ।
आप कीघा जिता फल भोगवे, कोई पुदगल रो नही दोस ॥ ४ ॥
पाप कर्म ने करणी पाप री, दोनू जूआ जूआ छै ताम ।
त्याने जथातथ परगट कर, ते सुणजो राख चित्त ठाम ॥ ५ ॥

ढाल

[मेघ कुमर हाथी रा भव मे]

घणघातीया च्यार कर्म जिण भाष्या, ते आभपडल वादल ज्युं जाणो ।
त्या जीव तणा निज गुण ने विगरया, चंद वादल ज्यु जीव कर्म ढकाणो ॥
पाप कर्म अन्तकरण ओलखीजे* ॥ १ ॥
ग्यानावर्णी नें दर्शनावर्णीय, मोहणी अन्तराय छै ताम ।
जीवरा जेहवा २ गुण विगख्या, तेहवा २ कर्मा रा नांम ॥ २ ॥
ग्यानावर्णी कर्म ग्यान आवा न दे, दर्शनावर्णी दर्शण आवे दे नाही ।
मोहकर्म जीव नें करे मतवालो, अंतराय आछी वस्तु आडी छै माही ॥ ३ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

ए कर्म तो पुद्गल रूपी चोफरसी,
 त्यांरा उदा सूं खोटा २ जीवरा नाम,
 थां च्याहूँ कर्मां री जुदी २ प्रकृत,
 त्यां सूं जूआ २ जीव रा गुण अटक्या,
 ग्यांनावर्णीं कर्म री प्रकृत पाचे,
 मत ग्यांनावर्णीं मत ग्यान रे आडी,
 अवधि ग्यांनावर्णीं अवधि ग्यान ने रोके,
 केवल ग्यांनावर्णीं केवल ग्यान रोके,
 ग्यांनावर्णीं कर्म षयउपसम हुवै,
 केवल ग्यांनावर्णीं तो खयोपसम न हुवै,
 दर्शंगावर्णीं कर्म री नव प्रकृत छै,
 जीवां ने जाबक कर देवे आवा,
 चषू दर्शंगावर्णीं कर्म उदे सूं,
 अचषू दर्शंगावर्णीं कर्म रे जोगे,
 अवधि दर्शंगावर्णीं कर्म उदे सूं,
 केवल दर्शंगावर्णीं तणे परसरो,
 निद्रा सुतो तो सुखे जगायो जागे,
 ईठां उभां जीव ने नीद आवे,
 प्रचला २ नीद उदे सूं जीव ने,
 पांचमी नीद छै कठण थीणोदी,
 पांच निद्रा ने च्यार दर्शंगावर्णीं थी,
 देखण आश्री दर्शंगावर्णीं कर्म,
 दर्शंगावर्णीं कर्म षयउपसम हुवे जद,
 दर्शंगावर्णीं जाबक षय होवे,
 तीजो घन घातियो मोह कर्म छै,
 सूधी श्रद्धा रे विषे मूढ मिथ्याती,
 मोहणी कर्म तणा दोय भेद कह्या जिण,
 इण जीव रा निज गुण दोय विगाड्या,
 वले दंसण मोहणी उदे हुव जब,
 चारित मोहणी कर्म उदे हुवे जब,
 दर्शण मोहणी कर्म उदे सूं,
 दर्शण मोहणी उपसम हुवे जब,

त्याने खोटी करणी करे जीव लगाया ।
 तेहवा इज खोटा नाम कर्म रा कहाया ॥ ४ ॥
 जूआ २ छै त्यांरा नाम ।
 त्यारो थोडो सो विस्तार कहुं छू तांम ॥ ५ ॥
 तिण सूं पांचोंइ ग्यान जीव न पावे ।
 सुरत ग्यांनावर्णीं सुरत ग्यान न आवे ॥ ६ ॥
 मनपरज्यावर्णीं मनपरज्या आडी ।
 या पांचां में पांचमी प्रकृत जाडी ॥ ७ ॥
 जब पामें छै च्यार ग्यान ।
 आ तो खय हुवां पामें केवल ग्यान ॥ ८ ॥
 ते देखवा ने सुणवादि क आडी ।
 त्यां मे केवल दर्शंगावर्णीं सगलां में जाडी ॥ ९ ॥
 जीव चषू रहीत हुवै अंध अयाण ।
 च्याहूँ इद्रीया री पर जाये हांण ॥ १० ॥
 अवधि दर्शन न पामें जीवो ।
 उपजे नही केवल दरसण दीवो ॥ ११ ॥
 निद्रा २ उदे दुखे जागे छै तांम ।
 तिण नीद तणी छै प्रचला नाम ॥ १२ ॥
 हालतां चालता नीद आवै ।
 तिण नीद सूं जीव जाबक दब जावे ॥ १३ ॥
 जीव अंध हुवै जाबक न सुभे लिगारो ।
 जीव रे जाबक कीयो अंधारो ॥ १४ ॥
 तीन षयउपसम दर्शन पामतो जीवो ।
 केवल दर्शण पामे र्यूं घट दीवो ॥ १५ ॥
 तिणरा उदा सूं जीव होवै मतवालो ।
 माठा किरतब रो पिण न होवै टालो ॥ १६ ॥
 दर्शण मोहणी ने चारित मोहणी कर्म ।
 एक समकत न दूजो चारित घर्म ॥ १७ ॥
 सुघ समकती जीव रो हुवे मिथ्याती ।
 चारित खोय ने हुवे छ, काय रो घाती ॥ १८ ॥
 सुधी सरघा समकत नावे ।
 उपसम समकत निरमली पावे ॥ १९ ॥

दर्शन मोहणी जाबक खय होवे, जब खायक समकत सासती पावें ।
दर्शन मोहणी षयउपसम हुवे जब, खयउपसम समकत जीव ने आवें ॥ २० ॥
चारित मोहणी कर्म उदे सूं, सर्व विरत चारित नही आवे ।
चारित मोहणी उपसम हुवे जद, उपसम चारित निरमला पावे ॥ २१ ॥
चारित मोहणी जाबक खाय हुवे तो, खायक चारित आवे श्रीकार ।
चारित मोहणी खयोपसम हुवे जब, खयउपसम चारित पामें च्यार ॥ २२ ॥
जीव तणा उदे भाव नीपना, ते कर्म तणा उदा सू पिछ्छाणो ।
जीव रा उपसम भाव नीपना, ते कर्म तणा उपसम सूं जाणो ॥ २३ ॥
जीव रा खायक भाव नीपनां, ते तो कर्म तणो खय हुवा सूतां ।
जीव रा खयोउपसम भाव नीपनां, खयउपसम कर्म हुआ सूं नाम ॥ २४ ॥
जीव रा जेहवा २ भाव नीपनां, ते जेहवा २ छैं जीव रा नाम ।
ते नाम पाया छैं कर्म सजोग विजोगे, तेहवा इज कर्मा रा नाम छैं ताम ॥ २५ ॥
चारित मोहणी तणी छैं पंचवीस प्रवृत्त, त्या प्रवृत्त तणा छैं जूआ जूआ नाम ।
त्यांरा उदा सूं जीव तणा नाम तेहवा, कर्म ने जीव रा जूआ जूआ परिणाम ॥ २६ ॥
जीव अतत उतकष्टो क्रोध करे जब, जीवरा दुष्ट घणा परिणाम ।
तिणने अनुताणुवधीयो क्रोध कह्यो जिण, ते कषाय आत्मा छैं जीव रो नाम ॥ २७ ॥
जिणरा उदा सूं उतकष्टो क्रोध करे छैं, ते उतकष्टा उदे आया छैं ताम ।
ते उदे आया छैं जीव रा सच्या, त्यारो अणुताणवधी क्रोध छैं नाम ॥ २८ ॥
तिण सु कायंक थोडो अप्रत्याखानी क्रोध, तिण सु कायक थोडो प्रत्याख्यान ।
तिण सुं कायक थोडो छैं संजल रो क्रोध, आ क्रोध री चोकडी कही भगवान ॥ २९ ॥
इण रीते मान री चोकडी कहणी, माया नें लोभ री चोकडी इन जाणो ।
च्यार चोकडी प्रसगे कर्मा रा नाम, कर्म प्रसगे जीव रा नाम पिछ्छाणो ॥ ३० ॥
जीव क्रोध करें क्रोध री प्रकत सूं, मान करे मान री प्रकत सूं तांम ।
माया कपट करें छैं माया री प्रकत सूं, लोभ करें छे लोभ री प्रकत सूं आंम ॥ ३१ ॥
क्रोध करें तिण सूं जीव क्रोधी कहायो, उदे आइ ते क्रोध री प्रकत कहाणी ।
इण हीज रीत मान माया ने लोभ, याने पिण लीजो इण हीज रीत पिछ्छाणो ॥ ३२ ॥
जीव हसे छैं हास्य री प्रकत उदे सू, रित अरितरी प्रकत सूं रित अरित वघावें ।
भय प्रकत उदे हूआं भय पामें जीव, सोग प्रकत उदे जीव नें सोग आवे ॥ ३३ ॥
दुगच्छा आवें दुगच्छा प्रकत उदे सूं, अस्त्री वेद उदे सू वेदे विकार ।
तिणनें पुरष तणी अभिलाषा होवे, पछे बेतो २ हुवे बोहत विगाड ॥ ३४ ॥
पुरष वेद उदे अस्ती नी अभिलाषा, निपुंसक वेद उदे हुवे दोयां री चाय ।
करम उदे सूं सवेदी नाम कह्यो जिण, करमां ने पिण वेद कहा जिण राय ॥ ३५ ॥

मिथ्यात उदे जीव हुवो मिथ्याती, इत्यादिक माठा २ छै जीव रा नाम, चोथो घनघातीयो अतराय करम छै, ते पांचूई प्रकत पुदगल चोफरसी, दानांतराय छे दान रे आढी, मन गमता पुदगल ना सुख जे, भोगांतराय नां करम उदे सूं, उवभोगांतराय करम उदे सूं, वीर्यअंतराय रा करम उदे थो, उठाणादिक हीणा थावे पांचूई, अनंतो वल प्राकम जीव तणो छै, तिण करम नें जीव लगायां सू लागो, पाचू अन्तराय जीव तणा गुण दाब्या, ए तो जीव रे प्रसगे नांम करम रा, ए तो च्यार घनघातीया करम कह्या जिण, त्यामें पुन नें पाप दोनूं कह्या जिण, जीव असाता पावे पाप करम उदे सूं, जीव रा सचीया जीव ने दुःख देवै, नारकी रो आउखो पाप री प्रकत, असनी मिनख नें केई सनी मिनख रो, ज्यांरो आउखो पाप कह्यो छे, जिणेसर, गति अणुपूर्वी दीसैं आउखा लारे, च्यार संघेयण मे हाड पाडूआ छें, च्यार संठाण मे आकार भंडा ते, वर्ण गंध रस फरस माठा मिलीया, ते पिण उसभ नांम करम उदे सूं, सरीर उपंग वंघण नें संघातण, ते पिण उसभ नांम करम उदे सूं, थावर नांम उदे छे थावर रो दस को, नांम करम उदे छे जीव रा नांम, 'थावर नांम करम उदे जीव थावर हूओ, 'सूक्ष्म नांम उदे जीव सूक्ष्म हूओ छै,

चारित मोह उदे जीव हुवो कुकरमी । वले अनार्यं हिसाचर्मी ॥ ३६ ॥ तिणरी प्रकत पांच कही जिण तांम । त्यांरी प्रकत रा छै जूजूआ नांम ॥ ३७ ॥ लाभांतराय सूं वस्त लाभ सके नांही । लाभ न सके सब्दादिक कांई ॥ ३८ ॥ भोग मिलीया से भोग भोगवणी नावे । उवभोग मिलीया तो वेही भोगवणी नहीं आवे । ३९ । तीनूई वीर्य गुण हीणा थावे । जीव तणी सक्त जावक घट जावे ॥ ४० ॥ तिणनें एक अतराय करम सूं घटायो । आप तणो कीर्यो आप रे उदे आयो ॥ ४१ ॥ जेहवा गुण दाब्या छै तेहवा करमां रा नांम । पिण सभाव देयां रो जूजूओ तांम ॥ ४२ ॥ हिवे अघातीया करम छें च्यार । हिवे पाप तणो कहुं छूं विसतार ॥ ४३ ॥ तिण पाप रो असाता वेदनी नांम । असाता वेदनी पुदगल परिणाम ॥ ४४ ॥ केइ तिर्यंच रो आउखो पिण पाप । पाप री प्रकत दीसे छै विलाप ॥ ४५ ॥ त्यांरी गति अणुपूर्वी पिण दीसे छे पाप । इणरो निश्चो तो जांणें जिणेसर आप ॥ ४६ ॥ ते उसभ नांम करम उदे सूं जांणों । उसभ नाम करम सूं मिलीया छें आंणो ॥ ४७ ॥ ते अण गमता नें अतंत अजोग । एहवा पुदगल दुःखकारी मिले छें संजोग ॥ ४८ ॥ त्यां में केकारे माठा २ अतंत अजोग । अणगमता पुदगल रो मिले छें संजोग ॥ ४९ ॥ तिण दसका रा दस बोल पिछांणो । एहवा इज नांम करमा रा जांणों ॥ ५० ॥ तिण सूं आघो पाछो सरकणी नावें । सूक्ष्म सरीर सगला नांन्हो पावें ॥ ५१ ॥

- ३साधारण नाम सू जीव साधारण हूओ, एक्कण सरीर मे अनता रहे ताम ।
 ४अप्रज्यासा नाम सू अप्रज्यासो मरे छे, तिण सू अप्रज्यासो छे जीव रो नाम ॥ ५२ ॥
 ५अथिर नाम सू तो जीव अथिर कहाणो, सरीर अथिर जाबक ढीलो पावे ।
 ६दुभ नाम उदे जीव दुभ कहाणो, नाम नीचलो सरीर पाडूओ थावे ॥ ५३ ॥
 ७दुभग नाम थकी जीव हुवे दोभागी, अण गमतो लागे न गमे लोकां ने लगार ।
 ८दुःस्वर नाम थकी जीव हुवे दुस्वरीयो, तिणरो कठ उसभ नही श्रीकार ॥ ५४ ॥
 ९अणादेज नाम करम रा उदा थी, तिणरो वचन कोइ न करे अगीकार ।
 १०अजस नाम थकी जीव हुओ अजसीयो, तिणरो अजस बोले लोक वास्वार ॥ ५५ ॥
 ११अपघात नाम करम रा उदे थी, पेलो जीते ने आप पामे घात ।
 १२दुभ गइ नाम करम सँजोगे, तिणरी चाल किण ही नें दीठी न सुहात ॥ ५६ ॥
 १३नीच गोत उदे नीच हुवो लोका मे, उच गोत तणा तिणरी गिणे छे छोट ।
 नीच गोत थकी जीव हर्ष न पामे, पोता रो संचीयो उदे आयो नीच गोत ॥ ५७ ॥
 पाप तणी प्रकत ओलखावण काजे, जोड़ कीधी श्री दुवारा सहर मभार ।
 संवत अठारे पचावने वरसे, जेठ सुद तीज ने वृहस्पतिवार ॥ ५८ ॥

५ : आश्रव पदारथ

ढाल : ६

दुहा

आश्रव पदारथ पांचमों, तिणने कहीजे आश्रव दुवार ।
ते करम आवारा छे बारणा, ते बारणा ने करम न्यार ॥ १ ॥
आश्रव दुवार तो जीव छें, जीव रा भला भूडा परिणाम ।
भला परिणाम पुन रा बारणा, भूडा पाप तणा छें ताम ॥ २ ॥
केइ मूढ मिथ्याती जीवडा, आश्रव ने कहे छें अजीव ।
त्यां जीव अजीव न ओलख्या, त्यांरे मोटी मिथ्यात री नीव ॥ ३ ॥
आश्रव तो निश्चेइ जीव छे, श्री वीर गया छे भाख ।
ठाम २ सिद्धांत मे भाषीयो, ते सुणजो सूतर नी साख ॥ ४ ॥
हिंवे पाप आवा ना बारणा, पेंहली कछू छू ताम ।
ते जथातथ परगट कळं, ते सुणो राखे चित ठाम ॥ ५ ॥

ढाल

[विना रा भाव सुश.....]

ठांगा अग सूतर रे मभार, कह्या छे पाच आश्रव दुवार ।
ते दुवार छे माहा विकराल, त्या में पाप आवे दगचाल ॥ १ ॥
मिथ्यात इविरत ने कषाय, परमाद जोग छें ताय ।
ए पांचूई आश्रव दुवार छे, ताम, निश्चें जीव तणा परिणाम ॥ २ ॥
उचो सरघे ते आश्रव मिथ्यात, उंचो सरघे जीव साख्यात ।
तिण आश्रव नों रूचण हारो, ते समकित संवर दुवारो ॥ ३ ॥
अत्याग भाव इविरत छें ताम, जीव तणा माठा परिणाम ।
तिण इविरत ने देवे निवार, ते व्रत छें संवर दुवार ॥ ४ ॥
नही त्याग्या छे ज्यां दरबां री, आसा वांछा लजे रही ज्यांरी ।
ते इविरत जीव रा परिणाम, तिण नें त्याग्यां हुवे संवर आम ॥ ५ ॥
परमाद आश्रव छें ताम, ए पिण जीव रा मेला परिणाम ।
परमाद आश्रव रूचाय, जब अपरमाद संवर थाय ॥ ६ ॥

कषाय आश्रव छे आम, जीव रा कषाय परिणाम ।
 तिण सू पाप लागे छे आय, ते अकषाय सू मिट जाय ॥ ७ ॥
 सावद्य निरवद जोग व्यापार, ए पाचूई आश्रव दुवार ।
 रूधे भला भूडा परिणाम, अजोग सवर तिणरो नांम ॥ ८ ॥
 ए पांचूई आश्रव उघाड़ा दुवार, करम आवे या दुवार मभार ।
 दुवार तो जीव ना परिणाम, त्या सू करम लागे छे ताम ॥ ९ ॥
 यांरा ढाकणा सवर दुवार, आश्रव दुवार ना रूधणहार ।
 नवा करम नां रोकणहार, ए पिण जीव रा गुण श्रीकार ॥ १० ॥
 इमहिज कह्यो चौथा अग मभारो, पाच आश्रव ने सवर दुवारो ।
 आश्रव करमा रो करता उपाय, करम आश्रव सू लागे छे आय ॥ ११ ॥
 उत्तराधेन गुणतीसमा माह्यो, पडिकमणा रो फल बतायो ।
 व्रता रा छिद्र ढकायो, वले आश्रव दुवार रूधायो ॥ १२ ॥
 उत्तराधेन गुणतीसमा माह्यो, पच्चक्खाण रो फल बतायो ।
 पचक्खाण सू आश्रव रूधायो, आवता करम ते मिट जायो ॥ १३ ॥
 उत्तराधेन तीसमा रे माह्यो, जलना आगम रूधायो ।
 जब पाणी आवतो मिट जावे, ज्यू आश्रव रूध्या करम नावे ॥ १४ ॥
 उत्तराधेन जगणीसमा माह्यो, गाठा दुवार ढाक्या कहा ताह्यो ।
 करम आवा ना ठाम मिटायो, जब पाप न लागे आयो ॥ १५ ॥
 ढाकीया कहा आश्रव दुवार, जब पाप न वधे लिंगार ।
 कह्यो छे दगवीकालिक मभार, तीजा अधेन मे आश्रव दुवार ॥ १६ ॥
 रूधे पाचूई आश्रव दुवार, ते भीषू मोटा अणमार ।
 ते तो दसवीकालिक मभार, तिहा जेय करो निस्तार ॥ १७ ॥
 पेंहला मनजोग रूधे ते सुध, पछे वचन काय जोग रूध ।
 उत्तराधेन गुणतीसमा माहि, आश्रव रूधणा चाल्या छे ताहि ॥ १८ ॥
 पाच कहा छे अधर्म दुवार, ते तो प्रश्नव्याकरण मभार ।
 वले पाच कहा सवर दुवार, या दोया रो घणो विसतार ॥ १९ ॥
 ठाणा अग पाचमा ठाणा माहि, आश्रव पडिकमणो ताहि ।
 पडिकम्या पाछो रूधाए दुवार, फेर पाप न लागे लिंगार ॥ २० ॥
 फूटी नाव रो दिष्टत, आश्रव ओलखायो भगवत ।
 भगोती तीजा सतक मभार, तीजे उदेसे छै विसतार ॥ २१ ॥
 वले फूटी नावा रे दिष्टत, आश्रव ओलखायो भगवत ।
 भगोती पेंहला सतक मभार, छट्टे उदेसे छै विसतार ॥ २२ ॥

ए तो कह्या छे आश्रव दुवार, वले अनेक छे सूतर मभार ।
 ते पूरा केम कहिवाय, सगला रो एकज न्याय ॥ २३ ॥
 आश्रव दुवार कह्या ठाम ठाम, ते तो जीव तणा परिणाम ।
 त्याने अजीव कहे मिथ्याती, खोटी सरघा तणा पखपाती ॥ २४ ॥
 करमा नें ग्रहे ते जीव दरब, ग्रहे तेहीज छे आश्रव ।
 ते जीव तणा परिणाम, त्या सू करम लागे छे ताम ॥ २५ ॥
 जीव ने पुदगल रो मेल, तीजा दरब तणो नही मेल ।
 जीव लगावे जाण जाण, जब पुदगल लागे छें आण ॥ २६ ॥
 तेहिज पुदगल छे पुन पाप, त्यारो करता छै जीव आप ।
 करता तेहिज आश्रव जाणों, तिण मे संका मूल म आणो ॥ २७ ॥
 जीव छै करमा रो करता, सूतर मे पाठ अपरता ।
 कह्यो पेहला अंग मभारो, जीव करमां रो करतारो ॥ २८ ॥
 ते पेंहला इज उदेसो सभालो, ए तो करता कह्यो त्रिहूं कालो ।
 जीव सखप नो इधकार, तीन करणे कह्यो करतार ॥ २९ ॥
 करता तेहिज आश्रव ताम, जीव रा भला भूंडा परिणाम ।
 परिणाम ते आश्रव दुवार, ते जीव तणो व्यापार ॥ ३० ॥
 करता करणी हेतू ने उपाय, ए करमां रा करता कह्याय ।
 या सूं करम लागे छें आय, त्याने आश्रव कह्या जिण राय ॥ ३१ ॥
 सावध करणी सू पाप लागे, तिण सूं दुःख भोगवसी आगे ।
 सावध करणी ने कहें अजीव, ते तो निश्चे मिथ्याती जीव ॥ ३२ ॥
 जोग सावध निरवद चाल्या, त्यानें जीव दरब मे घाल्या ।
 जोग आतमा कही छै ताम, जोग ने कह्या जीव परिणाम ॥ ३३ ॥
 जोग छे ते जीव व्यापार, जोग छें तेहिज आश्रव दुवार ।
 आश्रव तेहिज जीव निसक, तिण में मूल म गाणो सक ॥ ३४ ॥
 लेस्या भली ने भूंडी चाली, त्याने पिण जीव दरब मे घाली ।
 लेस्या उदे भाव जीव ताम, लेस्या ते जीव परिणाम ॥ ३५ ॥
 लेस्या करमा सू आतम लेस, ते तो जीव तणा परदेस ।
 ते पिण आश्रव जीव निसक, त्यारा थानक कह्या असंख ॥ ३६ ॥
 मिथ्यात इविरत ने कषाय, उदे भाव छें जीव रा ताय ।
 कषाय आत्मा कही छै ताम, यानें कह्या छे जीव परिणाम ॥ ३७ ॥
 ए पाचूर्ई छे आश्रव दुवार, छे करम तणा करतार ।
 ए पाचूं छे जीव साख्यात, तिण में संका नही तिलमात । ३८ ॥

आश्रव जीव तणा परिणाम, नवमे ठाणे कह्यो छै आंम ।
 जीव रा परिणाम छे जीव, त्याने विकल कहे छे अजीव ॥ ३६ ॥
 नवमे ठाणे ठाणा अग माहि, आश्रव करम ग्रहे छे ताहि ।
 करम ग्रहे ते आश्रव जीव, ग्रहीया आवे ते पुदगल अजीव ॥ ४० ॥
 ठाणा अंग दसमे ठाणे, दस बोल उघा कुण जाणे ।
 उंघा जाणे तेहिज मिथ्यात, तेहिज आश्रव जीव साख्यात ॥ ४१ ॥
 पाच आश्रव ने इविरत ताम, माठी लेस्या तणा परिणाम ।
 माठी लेस्या तो जीव छै ताय, तिणरा लषण अजीव किम थाय ॥ ४२ ॥
 जीव ने लषण सू पिच्छाणो, जीव रा लषण जीव जाणो ।
 जीव रा लषण ने अजीव थापे, ते तो वीर ना वचन उथापे ॥ ४३ ॥
 च्यार सगन्या कही जिणराय, ते पिण पाप तणा छे उपाय ।
 पाप रो उपाय ते आश्रव, ते आश्रव जीव दरब ॥ ४४ ॥
 भला ने भूडा अघवसाय, त्याने आश्रव कह्या जिनराय ।
 भला सू तो लागे छे पुन, भूडा सू लागे पाप जवून ॥ ४५ ॥
 आरत ने रुद्र ध्यान, त्याने आश्रव कह्या भगवान ।
 आश्रव पाप तणा छे दुवार, दुवार तेहिज जीव व्यापार ॥ ४६ ॥
 पुन ने पाप आवाना दुवार, ते करम तणा करतार ।
 करमां रो करता आश्रव जीव, तिण ने कहे अग्यानी अजीव ॥ ४७ ॥
 जे आश्रव ने अजीव जाणे ते पीपल वाघी मूरख ज्यू ताणे ।
 करम लगावे ते आश्रव, ते निश्चेई जीव दरब ॥ ४८ ॥
 आश्रव ने कह्यो रुघाणो, आ जिनजी रा मुख री वाणो ।
 ओ कीसो दरब रुघाणो, कीसो दरब थिर थपाणो ॥ ४९ ॥
 विपरीत तत्व गुण जाणे, कुण माडे उलटी ताणे ।
 कुण हिसादिक रो अत्यागी, कुण रे वद्धा रहे लागी ॥ ५० ॥
 सबदादिक कुण अभिलाखे, कषाय भाव कुण राखे ।
 कुण मन जोग रो व्यापारो, कुण चिन्तवे म्हारो थारो ॥ ५१ ॥
 इद्रा नें कुण मोकली मेले, सबदादिक ने कुण भेले ।
 इण ने मोकली मेले ते आश्रव, तेहिज छै जीव दरब ॥ ५२ ॥
 मुख सू कुण भूंडो वोले, काया सू कुण माठो डेले ।
 ए जीव दरब नो व्यापार, पुदगल पिण वरते छे लार ॥ ५३ ॥
 जीव रा चलाचल परदेस, त्या नें थिर थापे दिढ करेस ।
 णव आश्रव दरब रुंधाणो, तब तेहिज सबर थपाणो ॥ ५४ ॥

चलाचल जीव परदेस, सारा परदेसा करम प्रवेस ।
 सारा परदेसा करम ग्रहता, सारा परदेसा करमां रा करता ॥ ५५ ॥
 त्या परदेसा रो थिर करणहार, तेहिज संवर दुवार ।
 अथिर परदेस ते आश्रव, ते निश्चेई जीव दरब ॥ ५६ ॥
 जोग परिणामीक ने उदे भाव, त्याने जीव कह्या इण न्याव ।
 अजीव तो उदे भाव नाही, ते देख लो सूतर माही ॥ ५७ ॥
 पुन निरवद जोगा सू लागे छें आय, ते करणी निरजरा री छें ताय ।
 पुन सहजा लागे छें आय, तिण सू जोग छे आश्रव मांय ॥ ५८ ॥
 जे जे संसार नां छें काम, त्यारा किण २ रा कर्हू नाम ।
 ते सगला छे आश्रव ताम, ते सगला छें जीव परिणाम ॥ ५९ ॥
 करमां ने लगावे तो आश्रव, तेहिज छे आश्रव जीव दरब ।
 लागे ते पुदगल अजीव, लगावे ते निश्चेई जीव ॥ ६० ॥
 करमा रो करता जीव दरब, करतापणो तेहिज आश्रव ।
 कीघा हुआ ते करम कहिवाय, ते तो पुदगल लागे छे आय ॥ ६१ ॥
 ज्यारे गूढ मिथ्यात अधारो, ते नही पिछ्णणे आश्रव दुवारो ।
 त्याने संवली तो मूल न सुभे, दिन २ इधक अलूभे ॥ ६२ ॥
 जीव रे करम आडा छे आठ, ते लग रह्या पाटानेपाट ।
 ज्यामे घातीया करम छें च्यार, मेख मारग रोकणहार ॥ ६३ ॥
 और करमां सू जीव ढंकाय, मोह करम थकी विगडाय ।
 विगड्यो करे सावद्य व्यापार, तेहिज आश्रव दुवार ॥ ६४ ॥
 चारित मोह उदे मतवालो, तिण सू सावद्य रो न हुवे टालो ।
 सावद्य रो सेवण हारो, तेहिज आश्रव दुवारो ॥ ६५ ॥
 दंसण मोह उदे सरघे उंचो, हाथे मारग न आवें सुघो ।
 उंची सरघा रो सरदणहारो, ते मिथ्यात आश्रव दुवारो ॥ ६६ ॥
 मूढ कहे आश्रव ने रूपी, वीर कह्यो आश्रव ने अरूपी ।
 सूतरां मे कह्यो ठाम २, आश्रव ने अरूपी तांम ॥ ६७ ॥
 पाच आश्रव ने इविरत ताम, माठी लेस्या तणा परिणाम ।
 माठी लेस्या अरूपी छें ताय, तिणरा लषण रूपी किम थाय ॥ ६८ ॥
 उजला ने मेल कह्या जोग, मोह करम संजोग विजोग ।
 उजला जोग मेल थाय, करम भरियां उजल होय जाय ॥ ६९ ॥
 उत्तरावेन गुणतीसमां माय, जोग सचे कह्यो जिणराय ।
 जोग सचे निरदोष में चाल्या, त्यां नें साघां रा गुण माहें चाल्या ॥ ७० ॥

सावां रा गुण छे सुध मान, त्याने अरूपी कह्या भगवान ।
 त्या जोग आश्रव ने रूपी थाप्या, त्या वीर ना वचन उथाप्या ॥ ७१ ॥
 ठाणा अग तीजा ठाणा मभार, जोग वीर्य रो व्यापार ।
 तिण सू अरूपी छे भाव जोग, रूपी सरघे ते सरघा अजोग ॥ ७२ ॥
 जोग आतमा जीव अरूपी, त्यां जोगा ने मूढ कहे रूपी ।
 जोग जीव तणा परिणाम, ते निश्चे अरूपी छे तांम ॥ ७३ ॥
 आश्रव जीव सरघावण ताय, जोड कीधी छे पाली मांय ।
 सवत अठारे पंचावना मभार, आसोग सुद वारस रिक्वार ॥ ७४ ॥

ढाल : ७

दुहा

आश्रव करम आवानां वारणा, त्याने विकल कहे छें करम ।
 करम दुवार ने करम एकहिज कहे, ते भूला अग्यांनी भरम ॥ १ ॥
 करम ने आश्रव छे जूजूवा, जूओजूओ छें त्यांरो सभाव ।
 करम ने आश्रव एकहिज कहे, तिणरो मूढ न जाणे न्याव ॥ २ ॥
 वले आश्रव ने रूपी कहे, आश्रव ने कहे करम दुवार ।
 दुवार ने दुवार मे आवे तेहने, एक कहे छें मूढ गिवार ॥ ३ ॥
 तीन जोगा ने रूपी कहे, त्याने इज कहे आश्रव दुवार ।
 वले तीन जोगां ने कहे करम छे, ओ पिण विकलां रे नही छें विचार ॥ ४ ॥
 आश्रव ना वीस भेद छे, ते जीव तणी पर्याय ।
 करम तणा कारण कह्या, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[चतुर विचार करी ने देखो]

मिथ्यात आश्रव तो उवो सरघे ते, उवो सरघे ते जीव साख्यातो रे ।
 तिण मिथ्यात आश्रव ने अजीव सरघे छे, त्यारा घट माहे घोर मिथ्यातो रे ॥
 आश्रव ने अजीव कहे ते अग्यानी ॥ १ ॥
 जे जे सावद्य कामा नही त्याग्या छे, त्यांरी आसा वछा रही लागी रे ।
 ते जीव तणा परिणाम छे मेल, अत्याग भाव छे इविरत सागी रे ॥ २ ॥
 परमाद आश्रव जीव नां परिणाम मेल, तिण सू लागे निरतर पापो रे ।
 तिणने अजीव कहे छे मूढ मिथ्याती, तिण रे खोटी सरघा री थापो रे ॥ ३ ॥
 कषाय आश्रव ने जीव कहे जे जिणसर, कषाय आतमा कही छें तांमो रे ।
 कषाय करदारो सभाव जीव तणो छे, कषाय छे जीव परिणामो रे ॥ ४ ॥

जोग आश्रम नें जीव कह्यो जिणेसर,
 तीन जोगा रो व्यापार जीव तणो छै,
 जीवरी हिंसा करे ते आश्रव,
 हिंसा करे ते परिणाम जीव तणा छे,
 भूठ बोले ते आश्रव कह्यो छें,
 भूठ बोलण रा परिणाम जीव तणा छें,
 चोरी करे ते आश्रव कह्यो जिणेसर,
 चोरी करवा रा परिणाम जीव तणा छें,
 मैथुन सेवे ते आश्रव चोथो,
 मैथुन परिणाम तो जीव तणा छें,
 परिग्रह राखे ते पांचमों आश्रव,
 जीव रा परिणाम छें मूर्छा परिग्रह,
 पाच इंद्रयां ने मोकली मेले ते आश्रव,
 राग घेष आवे सब्दादिक उपर,
 सुरत इंद्री तो सब्द सुणे छे,
 घाण इंद्री गन्ध ने भोगवे छे,
 फरस इंद्री तो फरस भोगवे छे,
 यां सूं राग नें घेष करे ते आश्रव,
 तीन जोगां ने मोकला मेले ते आश्रव,
 त्यांने अजीव कहे ते मूढ मिथ्याती,
 तीन जोगा रो व्यापार जीव तणो छे,
 माछा जोग छें माठी लेस्या रा लषण,
 भंड उपगरण सू कोई करे अजेणा,
 ते आश्रव सभाव तो जीव तणो छें,
 सुची-कुसग सेवे ते आश्रव,
 सुची-कुसग सेवे तिणने अजीव कहें,
 दरव जोगां ने रुपी कह्या छें,
 दरव जोगां सू तो करम न लागे,
 आश्रव ने करम कहे छे अग्यानी,
 आठ करमां ने तो चोफरसी कहे छे,
 आश्रव ने करम कहे त्यारी सरघा,
 त्यारा वोल्या री ठीक पिण त्यांने नांही,

जोग आतमा कही छे तांमो रे ।
 जोग छे जीव रा परिणामो रे ॥ ५ ॥
 हिंसा करे ते जीव साख्यातो रे ।
 तिणमें सका नही तिलमातो रे ॥ ६ ॥
 भूठ बोले ते जीव साख्यातो रे ।
 तिणमे संका नही तिलमातो रे ॥ ७ ॥
 चोरी करे ते जीव साख्यातो रे ।
 तिणमें संका नहीं तिलमातो रे ॥ ८ ॥
 मैथुन सेवे ते जीवो रे ।
 तिण सूं लागे छें पाप अतीवो रे ॥ ९ ॥
 परिग्रह राखे ते पिण जीवो रे ।
 तिण सूं लागे छे पाप अतीवो रे ॥ १० ॥
 मोकली मेले ते जीव जांणों रे ।
 यानें जीव रा भाव पिछाणो रे ॥ ११ ॥
 चषु इंद्री रूप ले देखो रे ।
 रस इंद्री रस स्वादे कषो रे ॥ १२ ॥
 पांचूं इंद्रयां नों एह सभावो रे ।
 तिण ने जीव कहीजे इण न्यावो रे ॥ १३ ॥
 मोकला मेले ते जीवो रे ।
 त्यारा घट मे नही ग्यान रो दीवो रे ॥ १४ ॥
 ते जोग छे जीव परिणामो रे ।
 जोग आतमा कही छे तांमो रे ॥ १५ ॥
 तेहिज आश्रव जांणो रे ।
 रुडी रीत पिछाणो रे ॥ १६ ॥
 सुची कुसग सेवे ते जीवो रे ।
 त्यांरे उंडी मिथ्यात री नींवो रे ॥ १७ ॥
 ते तो भाव जोग रे छें लारो रे ।
 भाव जोग छें आश्रव दुवारो रे ॥ १८ ॥
 तिण लेखे पिण उवी दरसी रे ।
 काया जोग तो छें अठफरसी रे ॥ १९ ॥
 उठी जळ थी भूठी रे ।
 त्यारी हीया निलाड री फूटी रे ॥ २० ॥

वीस आश्रव मे सोले एकत सावद्य, ते पाप तणा छे दुवारो रे ।
 ते जीव रा किरतब माठा ने खोटा, पाप तणा करतारो रे ॥ २१ ॥
 मन वचन काया रा जोग व्यापार, वले समचें जोग व्यापारो रे ।
 ए च्याहंइ आश्रव सावद्य निरवद, पुन पाप तणा छे दुवारो रे ॥ २२ ॥
 मिथ्यात इविरत ने परमाद, कषाय नें जोग व्यापारो रे ।
 ए करम तणा करता जीव रे छें, ए पांचूंइ आश्रव दुवारो रे ॥ २३ ॥
 यामें च्यार आश्रव सभावीक उदारा, जोग में पनरे आश्रव समाया रे ।
 जोग किरतब नें सभावीक पिण छें, तिण सूं जोग में पनरेंइ आया रे ॥ २४ ॥
 हिंसा करें ते जोग आश्रव छें, भूठ बोले ते जोग छें ताह्यो रे ।
 चोरी सूं लेइ सुची कुसग सेवे ते, पनरेंइ आया जोग मांह्यो रे ॥ २५ ॥
 करमा रो करता तो जीव दरब छै, कीघा हुवा ते करमो रे ।
 करम ने करता एक सरवे ते, भूला अग्यानी भर्मो रे ॥ २६ ॥
 अठारे पाप ठांगा अजीव चोफरसी, ते उदे आवे तिण वारो रे ।
 जब जूजूआ किरतब करे अठारो, ते अठारेइ आश्रव दुवारो रे ॥ २७ ॥
 उदे आया ते तो मोह करम छे, ते तो पाप रा ठांगा अठारो रे ।
 त्यांरा उदा सू अठारेइ किरतब करे छें, ते जीव तणो छें व्यापारो रे ॥ २८ ॥
 उदे ने किरतब जूआजूआ छे, आ तो सरवा सूधी रे ।
 उदे ने किरतब एकज सरवे, अकल तिगांरी उंधी रे ॥ २९ ॥
 प्राणातपात जीव री हिंसा करें ते, प्राणातपात आश्रव जांणों रे ।
 उदे हुबो ते प्राणातपात ठांणो छे, त्याने हूडी रीत पिछांणो रे ॥ ३० ॥
 भूठ बोले ते मिरषावाद आश्रव छे, उदे छे ते मिरषावाद ठांणो रे ।
 भूठ बोले ते जीव उदे हुवा करम, यां दोयां ने जूआजूआ जांणो रे ॥ ३१ ॥
 चोरी करे ते अदत्तादांन आश्रव छें, उदे ते अदत्तादांन ठांणो रे ।
 ते उदे आयां जीव चोरी करें छें, ते तो जीव रा लषण जांणो रे ॥ ३२ ॥
 मैथुन सेवे ते मैथुन आश्रव, ते जीव तणा परणांमो रे ।
 उदे हूओ ते मैथुन पाप थानक छें, मोह करम अजीव छें तांमो रे ॥ ३३ ॥
 सचित्त अचित्त मिश्र उपर, ममता राखे ते परिग्रह जाणो रे ।
 ते ममता छें मोह करम रा उदा सूं, उदे में छे ते पाप ठाणो रे ॥ ३४ ॥
 क्रोध सूं लेइ नें मिथ्यात दरसन, उदे हूआ ते पाप रो ठांणो रे ।
 यांरा उदा सूं सावद्य कामा करें ते, जीवरा लषण जांणो रे ॥ ३५ ॥
 सावद्य कामां ते जीव रा किरतब, उदे हूआ ते पाप करमो रे ।
 यां दोयां नें कोइ एकज सरवे, ते भूला अग्यानी भरमो रे ॥ ३६ ॥

आश्रव तो करम आवांनां दुवार, ते तो जीव तणा परिणामो रे ।
 दुवार माहें आवे ते आठ करम छे, ते पुदगल दरब छें तांमो रे ॥ ३७ ॥
 माठा परिणाम ने माठी लेस्या, वलें माठा जोग व्यापारो रे ।
 माठा अधवसाय नें माठो ध्यान, ए पाप आवांनां दुवारो रे ॥ ३८ ॥
 भला परिणाम ने भली लेस्या, भला निरवद जोग व्यापारो रे ।
 भला अधवसाय ने भलोइ ध्यान, ए पुन आवा रा दुवारो रे ॥ ३९ ॥
 भला भूडा परिणाम भली भूडी लेस्या, भला भूडा जोग छें तामो रे ।
 भला भूडा अधवसाय भला भूडा ध्यान, ए जीव तणा परिणामो रे ॥ ४० ॥
 भला भूडा भाव जीव तणा छे, भूडा पाप रा बारणा जांणो रे ।
 भला भाव तो छे संवर निरजरा, पुन सहजे लागे छें आंगो रे ॥ ४१ ॥
 निरजरा री निरवद करणी करता, करम तणो खय जांणो रे ।
 जीव तणा परदेस चले छे, त्यां सू पुन लागे छे आंगो रे ॥ ४२ ॥
 निरजरा री करणी करे तिण काले, जीव रा चालें सर्व परदेसो रे ।
 जब संहचर नाम करम सू उदे भाव, तिण सू पुन तणो परदेसो रे ॥ ४३ ॥
 मन बचन कांया रा जोग तीनूइ, पसत्थ ने अपसत्थ चाल्या रे ।
 अपसत्थ जोग तो पाप ना दुवार, पसत्थ निरजरा री करणी में घाल्या रे ॥ ४४ ॥
 अपसत्थ दुवार ने रुधणा चाल्या, पसत्थ उदीरणा चाल्या रे ।
 रुधता ने उदीरतां निरजरा री करणी, पुन लागे तिण सू आश्रव मे घाल्या रे ॥ ४५ ॥
 पसत्य ने अपसत्य जोग तीनूइ, त्यां बासठ भेद छे ताह्यो रे ।
 ते सावद्य निरवद जीव री करणी, सूतर उवाइ रे मांह्यो रे ॥ ४६ ॥
 जिण कह्यो सतरे भेद असंयम, असंजम ते इविरत जांणो रे ।
 इविरत ते आसा वछा जीव तणी छे, तिणने रुडी रीत पिछांणो रे ॥ ४७ ॥
 माठा २ किरतब ने माठी २ करणी, सर्व जीव व्यापारो रे ।
 वले जिण आज्ञा बारला सर्व कामां, ए सगला छे आश्रव दुवारो रे ॥ ४८ ॥
 मोह करम उदे जीव रे च्यार संज्ञा, ते तो पाप करम ग्रहे ताणो रे ।
 पाप करम ग्रहे ते आश्रव, ते तो लषण जीव रा जांणो रे ॥ ४९ ॥
 उठांण कम बल वीर्य पुरषाकार प्राकम, यांरा सावद्य जोग व्यापारो रे ।
 तिण सू पाप करम जीव रे लागे छें, ते जीव छे आश्रव दुवारो रे ॥ ५० ॥
 उठांण कम बल वीर्य पुरषाकार प्राकम, यांरा निरवद किरतब व्यापारो रे ।
 त्यांसुं पुन करम जीव रे लागें छें, ते पिण जीव छे आश्रव दुवारो रे ॥ ५१ ॥
 संजती असंजती ने संजतासंजती, ते तो संवर आश्रव दुवारो रे ।
 ते संवर नें आश्रव दोनूइ, तिण में संका नहीं छे लिगारो रे ॥ ५२ ॥

इम विरती अविरती नें विरताविरती, इम पचखाणी पिण जाणो रे ।
 इम पिंडीया बाला ने बालपिंडीया, जागरा सुत्ता एम पिच्छाणो रे ॥ ५३ ॥
 वले संबूडा असबूडा ने सबूडासबूडा, घमीया घमठी तामो रे ।
 घम्मवचसाइया इमहिज जाणो, तीन तीन बोल छे तामो रे ॥ ५४ ॥
 ए सगला बोल छे सवर ने आश्रव, त्याने हडी रीत पिच्छाणो रे ।
 कोइ आश्रव ने अजीव कहे छे, ते पूरा छे मूढ अयाणो रे ॥ ५५ ॥
 आश्रव घटीया सवर वधे छे, सवर घटीया आश्रव वधाणो रे ।
 किसो दरब घटीयो ने वधीयो, इणने हडी रीत पिच्छाणो रे ॥ ५६ ॥
 इविरत उदे भाव घटीया सू, विरत वधे छे षयउपसम भावो रे ।
 ए जीव तणा भाव वधीया ने घटीया, आश्रव जीव कह्यो इण न्यावो रे ॥ ५७ ॥
 सतरे भेद असजम ते इविरत आश्रव, ते आश्रव नें निश्चे जीव जाणो रे ।
 सतरे भेद संजम ने सवर कह्यो जिण, ए तो जीव रा लक्षण पिच्छाणो रे ॥ ५८ ॥
 आश्रव ने जीव सरवावण काजे, जोड कीधी पाली मभारो रे ।
 सवत अठारे वरस पचावने, आसोज सुद चवदस मगलवारो रे ॥ ५९ ॥

६ : संवर पदारथ

ढाल : ८

दुहा

छठो पदार्थ संवर कहुओ, तिणरा थिरी भूत परदेस ।
 आश्रव दुवार नों रूंधणो, तिण सूं मिटीयो करमा रो परवेस ॥ १ ॥
 आश्रव दुवार करमां रा बारणा, ढकीया छे सवर दुवार ।
 आतमा वश कीया संवर हूओ, ते गुण रतन श्रीकार ॥ २ ॥
 संवर पदारथ ओलख्या विना, संवर न नीपजें कोय ।
 सका कोइ मत राखजो, सूतर साह्यो जोय ॥ ३ ॥
 सवर तणा भेद पाच छें, त्या पांचा रा भेद अनेक ।
 त्यारा भाव भेद परगट करू, ते सुणजो आण ववेक ॥ ४ ॥

ढाल

[पूजजी पधारै हो नगरी]

नव ही पदारथ सरधें यथातथ, तिणनें कहिजे समकत निघांन हो । भविक जण ।
 पछें त्याग करे उंघा सरघण तणा, ते समकत संवर परघान हो । भविक जण ।
 सवर पदारथ भवीयण ओलखो* ॥ १ ॥
 त्याग कीयां सर्व सावद्य जोग रा, जावजीव तणा पचखांण हो ।
 आगार नही त्यारे पाप करण तणो, ते सर्व विरत संवर जांण हो ॥ २ ॥
 पाप उदे सू . जीव परमादी थयो, तिण पाप सूं परमादी थाय हो ।
 ते पाप खय हूआ के उपसम हूआं, अपरमाद संवर हुवें ताय हो ॥ ३ ॥
 कषाय करम उदे छे जीव रे, तिण सूं कषाय आश्रव छें ताम हो ।
 ते कषाय करम अलगा हुवा जीव रे, जव अकषाय संवर हुवें आम हो ॥ ४ ॥
 थोड़ा थोड़ा सा जोगां ने रूंधीयां, अजोग संवर नहीं थाय हो ।
 मन वचन काया रा जोग रूंधे सरवथा, ते अजोग संवर हुवें ताय हो ॥ ५ ॥
 सावद्य माळ जोग रूंध्यां सरवथा, जब तो सर्व विरत संवर होय हो ।
 पिण निरवद जोग बाकी रह्या तेहने, तिण सूं अजोग संवर नही कोय हो ॥ ६ ॥
 परमाद आश्रव ने कषाय जोग आश्रव, ए तो न मिटे कीयां पचखांण हो ।
 ए तो सहजांइ मिटे छे करम अलगा हुवां, तिणरी अंतरंग करजो पिछांण हो ॥ ७ ॥
 सुभ ध्यान ने लेस्या सूं करम कटियां थका, जव अपरमाद संवर थाय हो ।
 इमहिज करतां अकषाय संवर हुवें, इम अजोग संवर होय जाय हो ॥ ८ ॥

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

समकित्त, सवर ने सर्व विरत सवर,
 अपरमाद अकषाय अजोग सवर हुवे,
 हिंसा भूठ - चोर मैथुन परिग्रहो,
 ए पाचू आश्रव ने त्यागे दीया,
 पाचू इदर्या ने मेले मोकली,
 इदर्या ने मोकली मेलवारा त्याग छे,
 भला भूडा किरतब तीनूई जोगा तणा,
 त्या तीनूई जोगा ने जाबक रुंधिया,
 अजेणा करे भडउपगरण थकी,
 सुची-कुसग सेवे ते आश्रव कह्यो,
 हिंसादिक पनरे जोग आश्रव कह्या,
 त्यां पनरा ने माठा जोग माहें गिण्या,
 तीनूई निरवद जोग रुंध्या थका,
 ए बीसूई सवर तणो विवरो कह्यो,
 कोइ कहे कषाय ने जोगा तणा,
 त्याने पचख्या विना सवर किण विघ्न होसी,
 पचखाण चाल्यो छे सूतर मे सरीर नो,
 इभ हिज कषाय ने जोग पचखाण छे,
 सामायक आदि पाचूं चारित भणीं,
 पुलाग आदि दे छहूई नियठा,
 चारितावर्णी षयउपसम हूआं,
 जब काम ने भोग थकी विरक्त हुवे,
 सर्व सावद्य जोग ने त्यागे सरवथा,
 जब इविरत रा पाप न लागे सरवथा,
 घूर सू तो सामायक चारित आदर्यो,
 ते करम उदे सू किरतब नीपजे,
 भला ध्यान ने भली लेस्या थकी,
 जब उदे तणा किरतब पिण हलका पडे,
 मोह करम जाबक उपसम हुवे,
 जब जीव हुवें सीतलभूत निरमलो,
 मोहणीय करम ने जाबक खय हुवां,
 जब सीतलभूत हूओ जीव निरमलो,

ए तो हुवें छे कीयां पचखांण हो ।
 ते तो करम खय हूआं जोग हो ॥ ९ ॥
 ए तो जोग आश्रव में समाय हो ।
 जब विरत सवर हुवे तथि हो ॥ १० ॥
 त्याने पिण जोग आश्रव जाण हो ।
 ते पिण विरत संवर ल्यो पिच्छाण हों ॥ ११ ॥
 ते तो जोग आश्रव छे ताम हों ।
 आजोग संवर हुवे आम हो ॥ १२ ॥
 तिणने पिण जोग आश्रव जाण हो ।
 त्याने त्याग्या विरत संवर पिच्छाण हो ॥ १३ ॥
 त्याने त्याग्यां विरत संवर जाण हो ।
 निरवद जोगा री करजो पिच्छाण हो ॥ १४ ॥
 अजोग सवर होय जात हो ।
 ते बीसूई पाच संवर मे समात हो ॥ १५ ॥
 सूतर माहे चाल्या पचखांण हो ।
 हिवे तिणरी कहुं छू पिच्छाण हो ॥ १६ ॥
 ते सरीर सू न्यारो हुवा ताम हो ।
 सरीर पचखाण ज्युं आम हो ॥ १७ ॥
 सर्व वरत सवर जांण हो ।
 ए पिण लीऱ्यो सवर पिच्छाण हो ॥ १८ ॥
 जब जीव ने आवे वेराग हो ।
 जब सर्व सावद्य दे त्याग हो ॥ १९ ॥
 ते सर्व वरत सवर जाण हो ।
 ते तो चारित छे गुण खांण हो ॥ २० ॥
 तिणरे मोह करम उदे रह्यो तथि हो ।
 तिण सू पाप लागें छें आय हो ॥ २१ ॥
 मोह करम उदे थो घट जाय हो ।
 जब हलकाइ पाप लाय हों ॥ २२ ॥
 जब उपसम चारित हुवें तथि हो ।
 तिणरे पाप न लागें आय हो ॥ २३ ॥
 खायक चारित हुवे जथाख्यात हों ।
 तिणरे पाप न लागे अंसमात हो ॥ २४ ॥

सामायक चारित लीये छें उदीर ने,
 उपसम चारित आवें मोह उपसम्यां,
 खायक चारित आवें मोह करम नें खय कीयां,
 ते आवें सुकल ध्यान ध्यायां थकां,
 चारितावर्णी षयउपसम हुवां,
 ते उपसम हूआं उपसम चारित हुवे,
 चारित निज गुण जीव रा जिण कह्या,
 ते मोहणी करम अलगो हूआं परगट्या,
 चारितावर्णी ते मोहणी करम छे,
 तिणरा उदे सूं निज गुण विगड्या,
 तिण करम रा अनत परदेस अलगो हूआ,
 जब सावद्य जोग ने पचख्या छे सरवथा,
 जीव उजलो हुवो ते तो हुइ निरजरा,
 नवा पाप न लागे विरत सवर थकी,
 जिम २ मोहणी करम पतलो पडें,
 इम करता मोहनी करम खय जाए सरवथा,
 जगन सामायक चारित तेहनां,
 अनता करम परदेस उदे था ते मिट गया,
 जघन्य सामायक चारितीया तणा,
 वले अनता परदेस उदे थी मिट गया,
 मोह करम घटे छे उदे थी इण विवे,
 तिण सूं सामायक चारित नां कह्या,
 अनंत करम परदेस उदे थी मिट गया,
 चारित गुण पजवा अनता नीपजे,
 जगन सामायक चारित जेहना,
 तिण थी उतकथा सामायक चारित तणा,
 पजवा उतकथा सामायक चारित तणा,
 अनत गुणा कह्या छे जिगन चारित तणा,
 छडा गुण ठाणा थकी नवमां लगे,
 तिणरा असख्यात थानक पजवा अनंत छे,
 सुपम संपराय चारित तेहना,
 एक २ थानक रा पजवा अनंत छें,

सावद्य जोग रा करे पचखांण हो ।
 ते चारित इग्यारमे गुणठाण हो ॥ २५ ॥
 पिण नावें कीयां पचखांण हो ।
 चारित छेहेले तीन गुण ठांण हो ॥ २६ ॥
 षयउपसम चारित आवें निघान हो ।
 खय हूआं खायक चारित परघान हो ॥ २७ ॥
 ते जीव सूं न्यारा नही थाय हो ।
 त्यां गुणा सूं हुवा मुनीराय हो ॥ २८ ॥
 तिणरा अनत परदेस हो ।
 तिणसूं जीव ने अतंत कलेस हो ॥ २९ ॥
 जब अनंत गुण उजलो थाय हो ।
 ते सर्व विरत संवर छे ताय हो ॥ ३० ॥
 विरत संवर सू सूकीया पाप करम हो ।
 एहवो छे चारित धर्म हो ॥ ३१ ॥
 तिम २ जीव उजलो थाय हो ।
 जब जथाख्यात चारित होय जाय हो ॥ ३२ ॥
 अनता गुण पजवा जाण हो ।
 तिण सू अनत गुण परगट्या आंण हो ॥ ३३ ॥
 अनंत गुण उजला परदेस हो ।
 जब अनंत गुण उजलो वशे हो ॥ ३४ ॥
 ते तो घटे छे असखेज्ज वार हो ।
 असख्यात थानक श्रीकार हो ॥ ३५ ॥
 चारित थानक नीपजे एक हो ।
 सामायक चारित रा भेद अनेक हो ॥ ३६ ॥
 पजवा अनता जाण हो ।
 पजवा अनत गुणा वखाण हो ॥ ३७ ॥
 तेह थी सुषम संपराय ना वशे हो ।
 ए सुषम संपराय लो पेख हो ॥ ३८ ॥
 सामायक चारित जांण हो ।
 सुषम संपराय दसमों गुण ठाण हो ॥ ३९ ॥
 थानक असखेज जाण हो ।
 तिणने सामायक ज्यूं लीज्यो पिच्छाण हो ॥ ४० ॥

सुषम सपराय चारितीया रे सेष उदे रह्या,
 ते अनंत परदेस खख्या निरजरा हुइ,
 जब जथाख्यात चारित परगट हुवो,
 सुषम सपराय रा उतकष्टा पजवा थकी,
 जथाख्यात चारित उजल हूओ सरवथा,
 अनता पजवा तिण थानक तणा,
 मोह करम परदेस अनता उदे हुवे,
 अनता अलगा हूआं अनत गुण परगटे,
 ते निज गुण जीव रा ते तो भाव जीव छे,
 ते तो करम खय हूआ सू नीपना,
 सावद्य जोगां रा त्याग करे ने रुंधीया,
 निरवद जोग रुंध्या सवर हुवे,
 निरवद जोग मन वचन काया तणा,
 सरवथा घटीयां अजोग सवर हुवें,
 साधु तो उपवास बेलादिक तप करे,
 जब सवर सहचर साधु रे नीपजें,
 श्रावक उवास बेलादिक तप करे,
 जब विरत सवर पिण सहचर नीपनो,
 श्रावक जे जे पुदगल भोगवे,
 त्यांरो त्याग कीया थी विरत संवर हुवे,
 साधु कल्पे ते पुदगल भोगवे,
 त्याने त्याग्या सू तपसा नीपनी,
 साधु रो हालवो चालवो बोलवो,
 निरवद जोग रुंध्या जितलो सवर हुवो,
 श्रावक रे हालवो चालवो बोलवो,
 सावद्य रा त्याग सू विरत सवर हुवे,
 चारित ने तो विरत सवर कह्यो,
 अजोग सवर सुम जोग रुंध्या हुवें,
 संवर निज गुण निश्चेंड जीव रा,
 जिण दरब नें भाव जीव नही ओलख्या,
 संवर पदारथ नें ओलखायवा,
 समत अठारे वरसे छपने,

मोह करम रा अनंत परदेस हो ।
 वाकी उदे नही रह्यो लवलेस हो ॥ ४१ ॥
 तिण चारित रा पजवा अनत हो ।
 अनत - गुणा कह्यां भगवंत हो ॥ ४२ ॥
 तिण चारित रो थानक एक हो ।
 ते थानक छे उतकष्टो वगोख हो ॥ ४३ ॥
 ते तो पुदगल री पर्याय हो ।
 ते निज गुण जीव रा छे ताय हो ॥ ४४ ॥
 ते निज गुण छे वदणीक हो ।
 भाव जीव कह्या त्याने ठीक हो ॥ ४५ ॥
 तिण सूं विरत सवर हुवो जांण हो ।
 तिणरी करजो पिछ्छांण हो ॥ ४६ ॥
 ते घटीया संवर थाय हो ।
 तिणरी विघ सुणो चित्त ल्याय हो ॥ ४७ ॥
 करम काटण रे काम हो ।
 निरवद जोग रुंध्यां सूं ताम हो ॥ ४८ ॥
 करम काटण रे काम हो ।
 सावद्य जोग रुंध्या सू तांम हो ॥ ४९ ॥
 ते सावद्य जोग व्यापार हो ।
 तप पिण नीपजें लर हो ॥ ५० ॥
 ते निरवद जोग व्यापार हो ।
 जोग रुंध्या रो सवर श्रीकार हो ॥ ५१ ॥
 ते तो निरवद जोग व्यापार हो ।
 तपसा पिण नीपजे श्रीकार हो ॥ ५२ ॥
 सावद्य निरवद व्यापार हो ।
 निरवद त्याग्यां सं सवर श्रीकार हो ॥ ५३ ॥
 ते तो इविरत त्याग्या होय हो ।
 तिण माहे सक न कोय हो ॥ ५४ ॥
 तिणने भाव जीव कह्यो जंगनाथ हो ।
 तिणरो घट सू न गयो मिथ्यात हो ॥ ५५ ॥
 जोड कीधी नाथ दुवारा मभार हो ।
 फागुण विद तेरस सुक्रवार हो ॥ ५६ ॥

७ : निरजरा पदारथ

ढाल : ९

दुहा

निरजरा पदारथ सातमों, ते तो उजल वसत अनूप ।
ते निज गुण जीव चेतन तणो, ते सुणजो घर चूप ॥ १ ॥

ढाल

[धन्य धन्य जंबू स्वाम में]

आठ करम छें जीव रे अनाद रा, त्यांरी उतपत आश्व दुवार हो ।
ते उदे थइ में पछे निरजरे, बले उपजें निरंतर लार हो ॥
निरजरा पदारथ ओलखो ॥ १ ॥

दरब जीव छें तेहनें, असंख्याता परदेस हो ।
सारां परदेसां आश्रव दुवार छे, सारां परदेसां करम परवेस हो ॥ २ ॥
एक एक परदेस तेहनें, समे २ करम लागंत हो ।
ते परदेस एकीका करम नां, समे समे लागे अनत हो ॥ ३ ॥
ते करम उदे थइ जीव रे, समे २ अनंता ऋइ जाय हो ।
भरीया नींगल जूं करम मिटें नही, करम मिटवा रो न जाणें उपाय हो ॥ ४ ॥
आठ करमां में च्यार घण घातीया, त्यांसूं चेतन गुणां री हुइ घात हो ।
ते अंसमात्र षय उपसमा रहे सदा, तिण सूं उजलो रहें अंसमात हो ॥ ५ ॥
कायक छन घातीया षयउपसम हूआं, जब कायंक उदे रह्या लार हो ।
षय उपसम थी जीव उजलो हुवो, उदे थी उजलो नही छें लिगार हो ॥ ६ ॥
कार्यक करम खय हुवें, कार्यक उपसम हुवे ताय हो ।
ते षय उपसम भाव छे उजलो, चेतन गुण पर्याय हो ॥ ७ ॥
जिम २ करम षय उपसम हुवे, तिम २ जीव उजल हुवें आंम हो ।
जीव उजलो तेहिज निरजरा, ते भाव जीव छें तांम हो ॥ ८ ॥
देस थकी जीव उजलो हुवें, तिणने निरजरा कही भगवांन हो ।
सर्व उजल ते मोष छे, ते मोष छें परम निघांन हो ॥ ९ ॥
ग्यांनावरणी षय उपसम हूआं नीपजें, च्यार ग्यांन नें तीन अग्यांन हो ।
भणवो आचारंग आदि दे, चवदे पूर्व रो ग्यांन हो ॥ १० ॥
ग्यांनावरणी री पांच प्रकत मझे, दोय षयउपसम रहें छें सदीव हो ।
तिण सूं दोय अग्यांन रहें सदा, अंस मात्र उजल रहें जीव हो ॥ ११ ॥

मिथ्याती रे तो जगन दोग अग्यांन छें, उतकष्टा तीन अग्यांन हो ।
 देस उणों दस पूर्व उतकष्टो भणे, इतरो उतकष्टो षयउपसम अग्यान हो ॥ १२ ॥
 समदिष्टी रे जगन दोग ग्यान छे, उतकष्टा च्यार ग्यान हो ।
 उतकष्टो चवदे पूर्व भणे, एहवो षयउपसम भाव निघान हो ॥ १३ ॥
 मत ग्यानावरणी षयउपसम हूआ, नीयजे मत ग्यान मत अग्यान हो ।
 सुरत ग्यानावरणी षयउपसम हूआ, नीपजे सुरत ग्यान अग्यान हो ॥ १४ ॥
 वले भणवो आचारग आदि दे, समदिष्टी रे चवदे पूर्व ग्यान हो ।
 मिथ्याती उतकष्टो भणे, देस उणो देस पूर्व लग जाण हो ॥ १५ ॥
 अवधि ग्यानावरणी षयउपसम हूआ, समदिष्टी पामे अवध ग्यान हो ।
 मिथ्या दिष्टी ने विभग नाण उपजे, पयउपसम परमाण जाण हो ॥ १६ ॥
 मनपजवावर्णी षयउपसम्या, उपजे मनपजवा नाण हो ।
 ते सावु समदिष्टी ने उपजे, एहवो षयउपसम भाव परधान हो ॥ १७ ॥
 ग्यान अग्यान सागार उपीयोग छें, दोगा रो एक सभाव हो ।
 करम अलगा हूआ नीपजे, ए षयउपसम उजल भाव हो ॥ १८ ॥
 दरसणावर्णी पयउपसम हूआ, आठ बोल नीपजे श्रीकार हो ।
 पांच इद्री ने तीन दरसण हुवें, ते निरजरा उजला तत सार हो ॥ १९ ॥
 दरसणावर्णी री नव प्रकत मभे, एक प्रकत पयउपसम सदीव हो ।
 तिण सू अचषू दरसण ने फरस इद्री रहें, षयउपसम भाव जीव हो ॥ २० ॥
 चषू दरसणावर्णी पयउपसम हूआ, चषू दरसण ने चषू इद्री होय हो ।
 करम अलगा हूआ उजलो हूओ, जब देखवा लागो सोय हो ॥ २१ ॥
 अचषू दरसणावर्णी वशेष थी, षयउपसम हुवे तिण वार हो ।
 चषू टाले सेष इद्री, पयउपसम हुवे इद्री च्यार हो ॥ २२ ॥
 अवधि दरसणावर्णी षयउपसम हूआ, उपजे अवधि दरसण वशेष हो ।
 जब उतकष्टो देखे जीव एतलो, सर्व रूपी पुदगल ले देख हो ॥ २३ ॥
 पांच इद्री ने तीनू इ दरसण, ते षयउपसम उपीयोग अणाकार हो ।
 ते वानगी केवल दरसण माहिली, तिणमें सका म राखो लिंगार हो ॥ २४ ॥
 मोह करम षयउपसम हूआ, नीपजे आठ बोल अमाम हो ।
 च्यार चारित ने देस विरत नीपजे, तीन दिष्टी उजल होय ताम हो ॥ २५ ॥
 चारित मोह री पचीस प्रकत मभे, केइ सदा षयउपसम रहे ताय हो ।
 तिण सू अंस मात उजलो रहें, जब भला वरते छे अधवसाय हो ॥ २६ ॥
 कदे षयउपसम इधकी हूवे, जब इधका गुण हुवे तिण माय हो ।
 पिमा दया संतोषादिक गुण वधें, भली लेख्यादि वरतें जब आय हो ॥ २७ ॥

भला परिणाम पिण वरते तेहनें, भला जोग पिण वरते ताय हो ।
 धर्म ध्यान पिण ध्यावे किण समें, ध्यावणी आवें मिटीयां कषाय हो ॥ २८ ॥
 ध्यान परिणाम जोग लेस्या भली, वले भला वरते अघवसाय हो ।
 सारा वरते अंतराय षयउपसम हूआं, मोह करम अलगा हूआं ताय हो ॥ २९ ॥
 चोकड़ी अताणुवधी आदि दे, घणी प्रकृत्यां षयउपसम हुवें ताय हो ।
 जब जीव रे देस विरत नीपजें, इणहीज विष च्याहूं चारित आय हो ॥ ३० ॥
 मोहणी षयउपसम हूआं नीपनों, देस विरत नें चारित च्यार हो ।
 वले विमा दयादिक गुण नीपनां, सगलाइ गुण श्रीकार हो ॥ ३१ ॥
 देस विरत नें च्याहूं ई चरित भला, ते गुण रतनां री खान हो ।
 ते खायक चरित री वानगी, एहवो षयउपसम भाव परधान हो ॥ ३२ ॥
 चारित नें विरत संवर कह्यो, तिण सूं पाप रूधें छें ताय हो ।
 पिण पाप भरि नें उजल हूओं, तिणने निरजरा कही इण न्याय हो ॥ ३३ ॥
 दरसण मोहणी षयउपसम हूआं, नीपजें साची सुघ सरधान हो ।
 तीनुं दिष्ट में सुघ सरधान छें, ते तो षयउपसम भाव निधान हो ॥ ३४ ॥
 मिथ्यात मोहणी षयउपसम हूआं, मिथ्यादिष्टी उजली होय हो ।
 जब केयक पदारथ सुघ सरघलें, एहवो गुण नीपजें छें सोय हो ॥ ३५ ॥
 मिश्र मोहणी षयउपसम हूआं, सममिथ्या दिष्टी उजली हुवें तांम हो ।
 जब घणां पदारथ सुघ सरघलें, एहवो गुण नीपजें अमांम हो ॥ ३६ ॥
 समकत मोहणी षयउपसम हूआं, नीपजें समकत रतन परधान, हो ।
 नव ही पदारथ सुघ सरघलें, एहवो षयउपसम भाव निधान हो ॥ ३७ ॥
 मिथ्यात मोहणी उदे छें ज्यां लगे, सममिथ्या दिष्टी नहीं आवंत हो ।
 मिश्र मोहणी रा उदे थकी, समकत नहीं पावंत हो ॥ ३८ ॥
 समकत मोहणी ज्यां लगे उदे रहें, त्यां लग षायक समकत आवें नाय हो ।
 एहवी छाक छै दरसण मोह करम नीं, न्हांखें जीव नें भ्रमजाल मांय हो ॥ ३९ ॥
 षयउपसम भाव तीनोंइ दिष्टी छें, ते सगलोइ सुघ सरधान हो ।
 ते खायक समकत मांहिली, वानगी मातर गुण निधान हो ॥ ४० ॥
 अंतराय करम षयउपसम हूआं, लवघ आठ गुण नीपजें श्रीकार हो ।
 पांच लवघ तीन वीर्य नीपजें, हिवे तेहनों सुणो विसतार हो ॥ ४१ ॥
 पांचोंइ प्रकत अंतराय नी, सदा षयउपसम रहें छें साख्यात हो ।
 तिण सूं पांचूं लवघ वाल वीर्य, उजल रहें छें अल्पमात हो ॥ ४२ ॥
 दानांतराय षयउपसम हूआं, दान देवा री लवघ उपजंत हो
 लाभांतराय षयउपसम हूआं, लाभ री लवघ खुलंत हो ॥ ४३ ॥

भोगअंतराय पयउपसम्या, भोग लब्ध उपने छे ताय हो ।
उपभोगअंतराय खयउपसम हुआ, उपभोग लब्ध उपजे आय हो ॥ ४४ ॥
दान देवा री लब्ध निरंतर, दान देवे ते जोग व्यापार हो ।
लाम लब्ध पिण निरंतर रहे, वस्त लामे ते किण ही वार हो ॥ ४५ ॥
भोग लब्ध तो रहे छे निरंतर, भोग भोगवे ते जोग व्यापार हो ।
उपभोग पिण लब्ध छे निरंतर, उपभोग भागवे जिण वार हो ॥ ४६ ॥
अतराय अलगी हुआ जीव रे, पुन सारू मिलसी भोग उपभोग हो ।
सावु पुदगल भोगवे ते सुभ जोग छे,, और भोगवे ते असुभ जोग हो ॥ ४७ ॥
वीर्य अतराय पयउपसम हुआ, वीर्य लब्ध उपजे छे ताय हो ।
वीर्य लब्ध ते सगत छे जीव री, उतकष्टी अनती होय जाय हो ॥ ४८ ॥
तिण वीर्य लब्ध रा तीन भेद छे,, तिणरी करजो पिच्छाण हो ।
बाल वीर्य कह्यो छे बाल रो, ते चोथा गुणठाणा ताई जाण हो ॥ ४९ ॥
पिडत वीर्य कह्यो पिडत तणो, छठा थी लेइ चवदमे गुण ठाण हो ।
बाल पिडत वीर्य कह्यो छे श्रावक तणो, ए तीनोई उजल गुण जाण हो ॥ ५० ॥
कदे जीव वीर्य ने फोडवे, ते छे जोग व्यापार हो ।
सावद्य निरवद तो जोग छे, ते वीर्य सावद्य नही छे लिगार हो ॥ ५१ ॥
वीर्य तो निरतर रहे, चवदमा गुण ठाणा लग जाण हो ।
वारमा ताइ तो पयउपसम भाव छे,, खायक तेरमे चवदमे गुण ठाण हो ॥ ५२ ॥
लब्ध वीर्य ने तो वीर्य कह्यो, करण वीर्य ने कह्यो जोग हो ।
ते पिण सगत वीर्य ज्या लगे, त्या लग रहे पुदगल सजोग हो ॥ ५३ ॥
पुदगल विण वीर्य सगत हुवे नही, पुदगल विना नही जोग व्यापार हो ।
पुदगल लागा छे ज्या लग जीव रे, जोग वीर्य छे संसार ममार हो ॥ ५४ ॥
वीर्य निज गुण छे जीव रो, अतराग अलगा हुआ जाण हो ।
ते वीर्य निश्चेइ भाव जीव छे, तिण मे सका मूल म आण हो ॥ ५५ ॥
एक मोह करम उपसम हुवे, जब नीपजे उपसम भाव दीय हो ।
उपसम समकत उपसम चारित हुवे, ते तो जीव उजलो हुवो सोय हो ॥ ५६ ॥
दरसण मोहणी करम उपसम हुवा, निपजे उपसम समकत निधान हो ।
चारित मोहणी उपसम हुआ, परगटे उपसम चारित परधान हो ॥ ५७ ॥
अचार घणघातीया करम पय हुवे, जब परगट हुवे खायक भाव हो ।
ते गुण सरवथा उजला, त्यांरो जूओ र सभाव हो ॥ ५८ ॥
ग्यानावरणी सरवथा खय हुआं, उपजे केवल ग्यान हो ।
दरसणावर्णी पिण खय हुवे सरवथा, उपजे केवल दरसण परधान हो ॥ ५९ ॥

मोहणी करम खय हुवें सरवथा, वाकी रहे नही असमात हो ।
 जब खायक समकत परगटें, वले खायक चारित जथाख्यात हो ॥ ६० ॥
 दरसन मोहणी खय हुवे सरवथा, जब निपजे खायक समकत परधान हो ।
 चारित मोहणी खय हूआ, नीपजे खायक चारित निघान हो ॥ ६१ ॥
 अंतराय करम अलगो हूआं, खायक वीर्य सगत हुवें ताय हो ।
 खायक लब्ध पाचूँइ परगटे, किण ही वात् री नही अंतराय हो ॥ ६२ ॥
 उपसमय खायक पयउपसम निरमला, ते निज गुण जीव रा निरदोष हो ।
 ते तो देस थकी जीव उजलो, सर्व उजलो ते मोख हो ॥ ६३ ॥
 देस विरत श्रावक तणी, सर्व विरत साधु री छे ताय हो ।
 देस विरत समाइ सर्व विरत मे, ज्यूं निरजरा समाइ मोख मांय हो ॥ ६४ ॥
 देस थी जीव उजले ते निरजरा, सर्व उजलो ते जीव मोख हो ।
 तिण सूं निरजरा ने मोख दोनूं जीव छें, उजल गुण जीव रा निरदोष हो ॥ ६५ ॥
 जोइ कीधी निरजरा ओल्लखायवा, नाथ दुवारा सहर मभार हो ।
 संवत अठारे वरस छपने, फागण सुद दसम गुरवार हो ॥ ६६ ॥

ढाल : १०

दुहा

निरजरा गुण निरमल कह्यो, उजल गुण जीव रो वखेख ।
 ते निरजरा हुवें छें किण विघें, सुणजो आण ववेक ॥ १ ॥
 भूख तिरपा सी तानादिक, कष्ट भोगवे विविघ परकार ।
 उदे आया ते भोगव्यां, जब करम हुवें छे न्यार ॥ २ ॥
 नरकादिक दुःख भोगव्यां, करम घस्यां थी हलको थाय ।
 आ तो सहजा निरजरा हुइ जीव रे, तिणरो न कीयो मूल उपाय ॥ ३ ॥
 निरजरा तणो कामी नही, कष्ट करें छे विविघ परकार ।
 तिणरा करम अल्प मातर भरे, अकाम निरजरा नों एह विचार ॥ ४ ॥
 अह लोक अर्थें तप करे, चक्रवतादिक पदवी काम ।
 केइ परलोक ने अर्थें करे, नही निरजरा तणा परिणाम ॥ ५ ॥
 केइ जस महिमा वधारवा, तप करे छे ताम ।
 इत्यादिक अनेक कारण करे, ते निरजरा कही छे अकाम ॥ ६ ॥
 सुध करणी करे निरजरा तणी, तिण सूं करम कटे छे ताम ।
 थोडो घणो जीव उजलो हुवे, ते सुणजो राखे चित ठाम ॥ ७ ॥

ढाल

[पूज्य भिखन जी रो समरश करता]

देस थकी जीव उजल हुवो छे, ते तो निरजरा अनूप जी ।
 हिवें निरजरा तणी सुघ करणी कह छे, ते सुणजो घर चूप जी ॥
 आ सुघ करणी छें कर्म काटण री ॥ १ ॥
 ज्यू साबू दे कपडा नें तपावे, पाणी सूं छाटे करे संभाल जी ।
 पछे पाणी सूं घोवे कपडा नें, जब मेल छटे ततकाल जी ॥ आ० २ ॥
 ज्यू तप कर नें आत्म ने तपावे, ग्यान जल सूं छाटे ताय जी ।
 घ्यान रूप जल माहे म्खोले, जब करम मेल छंट जाय जी ॥ ३ ॥
 ग्यान रूप साबण सुघ चोखे, तप रूपी निरमल नीर जी ।
 घोबी ज्यू छे अंतर आतमा, ते घोवे छे निज गुण चीर जी ॥ ४ ॥
 कांमी छें एकत करम काटण रो, और वछा नही काय जी ।
 तो करणी एकत निरजरा री, तिण सूं करम भड जाय जी ॥ ५ ॥
 करम काटण री करणी चोखी, तिणरा छे बारे भेद जी ।
 तिण करणी कीयां जीव उजल हुवें छें, ते सुणजो आण उमेद जी ॥ ६ ॥
 अणसण करे च्याळं आहार त्यागे, करे जावजीव पचखाण जी ।
 अथवा थोडा काल ताइ त्यागे, एहवी तपसा करें जाण २ जी ॥ ७ ॥
 सुघ जोग रुंध्या साधु रे हूवो सवर, श्रावक रे विरत हुइ ताय जी ।
 पिण कष्ट सह्यां सू निरजरा हुवे, तिण सू घाल्यो छें निरजरा माय जी ॥ ८ ॥
 ज्यू २ भूख तिरषा लागें, ज्यू २ कष्ट उपजे अतत जी ।
 ज्यू २ करम कटे हुवे न्यारा, समें २ खिरे छे अनंत जी ॥ ९ ॥
 उणों रहे ते उणोदरी तप छे, ते तो दरब ने भाव छें न्यार जी ।
 दरब ते उणगरण उणा राखें, बले उणोइ करें आहार जी ॥ १० ॥
 भाव उणोदरी क्रोधादिक वरजे, कलहादिक दिये छें निवार जी ।
 समता भाव छें आहार उपधि थी, एहवी उणोदरी तप सार जी ॥ ११ ॥
 भिष्याचरी तप भिष्या त्याग्या हुवें, ते अभिग्रहा छे विवध परकार जी ।
 ते तो दरब बेतर काल भाव अभिग्रह छे, त्यारो छे बोहत विस्तार जी ॥ १२ ॥
 रस रो त्याग करे मन सुधे, छांड्यो विगयादिक रो सवाद जी ।
 अरस विरस आहार भोगवे समता सू, तिणरे तप तणी हुवें समाद जी ॥ १३ ॥
 काया कलेस तप कष्ट कीया हुवें, आसण करें विवध परकार जी ।
 सी तापादिक सहे खाज न खणे, बले न करें सोभा नें सिणगार जी ॥ १४ ॥

परीसंलीणीया तप च्यार परकारे, त्यांरा जूजूआ छें नांम जी ।
 इंद्री कषाय ने जोग संलीण्या, विवत सेणासण सेदणा तांम जी ॥ १५ ॥
 सोइंद्री ने विषें नां सव्व सू खवे, विषे सव्व न सुणे किवार जी ।
 कदा विपे रा सव्व कानां में पडीया, तो राग वेष न करे लिगार जी ॥ १६ ॥
 इम चषू इंद्री रूप सू संलीनता, घाण इंद्री गंध सुं जाण जी ।
 रसइंद्री रस सू नें फरस इंद्री फरस सू, सुरत इंद्री ज्यू लीजो पिच्छाण जी ॥ १७ ॥
 क्रोध उपजावारो खंघण करवो, उदे आयो निरफल करे तांम जी ।
 मान माया लोभ इम हिज जांणों, कषाय संलीणीया तप हुवें आंम जी ॥ १८ ॥
 पाडुआ मन ने खवे देणों, भलो मन परवरतावणो तांम जी ।
 इम हिज वचन नें काया जांणों, जोग संलीणीया हुवे आंम जी ॥ १९ ॥
 अस्त्री पमू पिंडग रहीत थानक सेवे, ते सुध निरदोषण जाण जी ।
 पीढ पाटादिक निरदोषण सेवें, विवत सेणासण एम पिच्छाण जी ॥ २० ॥
 ए छव परकारे बाह्य तप कह्यो छें, ते परसिध चावो दीसंत जी ।
 हिवें छ परकारें अभितर तप कहूँ छुं, ते भाष्यो छे श्री भगवंत जी ॥ २१ ॥
 प्रायच्छित्त कह्यो छे दस परकारें, दोष ओलाए प्रायच्छित्त लेवंत जी ।
 ते करम खपाय आरावक थावे, ते तो मुगत में बेगो जावंत जी ॥ २२ ॥
 विनों तप कह्यो सात परकारें, त्यांरो छें बोहत विसतार जी ।
 ग्यान दरसण चारित्त मन विनों, वचन काया ने लोग ववहार जी ॥ २३ ॥
 पांचू ग्यान तणा गुणग्राम करणा, ए ग्यान विनों करणो छे एह जी ।
 दरसण विनां रा दोय भेद छे, सुसरषा नें अणासातणा तेह जी ॥ २४ ॥
 सुसरषा बडां री करणी, त्यानें बंदणा करणी सीम नांम जी ।
 ते सुसरषा दस विष कही छे, त्यांरा जूआ जूआ नांम छें तांम जी ॥ २५ ॥
 गुर आयां उठ उभो होवणो, आसन छोडणो तांम जी ।
 आसन आमंत्रणों हरष सू देणो, सतकार ने समांण देणो आंम जी ॥ २६ ॥
 बंदणा कर हाथ जोडी रहें उभो, आवता देख साह्यो जाय जी ।
 गुर उभा रहें त्यां लग उभा रहिणो, वें जाये जब पोहचावण जावे ताय जी ॥ २७ ॥
 अणअसातणा विनां रा भेद, पेंतालीस कह्या जिणराय जी ।
 अरिहंत नें अरिहंत परूप्यो घमं, वले आचार्य नें उवभाय जी । २८ ॥
 थिवर कुल गण संघ नो विनों, किरीया वादी संभोगी जाण जी ।
 मत ग्यानादिक पांचूई ग्यान रो, ए पनरेई बोल पिच्छाण जी ॥ २९ ॥
 यां पनरां बोलों में पांच ग्यान फेर कह्या छें, ते दीसे छे चारित्त सहीत जी ।
 ए पांच ग्यान नें फेर कह्या त्यांरी, विनां तणी ओर रीत जी ॥ ३० ॥

यारी आसातना टालणी ने विनो करणों,
गुणग्राम करे ने दीपावणा त्याने,
सामायक आदि दे पाचूई चारित,
सेवा भगत त्यारी हरष सूं करणी,
सावद्य मन नें परो निवारै,
बारे परकार निरवद मन परवरतावे,
इम हिज सावद्य वचन बारे भेदे,
निरवद वचन बोले निरदोपण,
काया अजेंगा सू नही परवरतावे,
ज्युं सात भेद काया अजे णासू परवरतावे,
लोग व्यवहार विनो कहुओं सात परकारे,
गुरवादिक रे छांदे चालणो,
भणायो त्यारो विनों वीयावच करणी,
प्रसताव अवसर नों जाण हुवेणो,
वीयावच तप छे दस परकारे,
करमां री कोड खपे छे तिण थी,
सभ्नाय तप छे पांच परकारे,
अर्थ नें पाठ विवरा सुष गिणीया,
आरत रोद्र ध्यान निवारै,
ध्यावतो २ उतकष्टों ध्यावे,
विउसग तप छें तजवारी नांम,
दरव विउसग च्यार परकारे,
सरीर विउसग सरीर रो तजवो,
उपधि नों तजवो ते उपधि विउसग,
भाव विउसग रा तीन भेद छे,
कषाय विउसग च्यार परकारे,
संसार विउसग संसार नों तजवो,
नरक तिर्यंच मिनष नें देवा,
करम विउसग छें आठ परकारे,
त्यानं ज्युं २ तजे हल को होवें,
बारे परकारे तप निरजरा री करणी,
ते करम उदीर उदे आण खेरे,

भगत कर देणो समान जी ।
दरसण विनों छें सुष सरधान जी ॥ ३१ ॥
त्यारो विनों करणो जथाजोग जी ।
त्यासूं करणो निरदोष संभोग जी ॥ ३२ ॥
ते सावद्य छें बारे परकार जी ।
तिण सूं निरजरा हुवे श्रीकार जी ॥ ३३ ॥
तिण सावद्य ने देवे निवार जी ।
बारेइ वोल वचन विचार जी ॥ ३४ ॥
तिणरा भेद कहुया सात जी ।
जव करम तणी हुवे घात जी ॥ ३५ ॥
गुर समीपे वरतवो तांम जी ।
ग्यानादिक हेते करणो त्यारो काम जी ॥ ३६ ॥
आरत गवेष करणों त्यारो काम जी ।
सर्वं कार्य करणो अभिरांम जी ॥ ३७ ॥
ते वीयावच साधां री जाण जी ।
नेडी हुवें छे निरवांण जी ॥ ३८ ॥
जे भाव सहीत ही करे सोय जी ।
करमां रा भड खय होय जी ॥ ३९ ॥
ध्यावे सुकल ध्यान जी ।
तो उपजें केवल ग्यान जी ॥ ४० ॥
ते तो दरव नें भाव छे दोय जी ।
ते विवरो सुणो सहू कोय जी ॥ ४१ ॥
इम गण नों विउसग जाण जी ।
भात पांणी रो इम हिज पिछ्छाण जी ॥ ४२ ॥
कषाय संसार नें करम जी ।
क्रोधादिक च्यालं छोड्यां छे घर्म जी ॥ ४३ ॥
तिणरा भेद छें च्यार जी ।
त्यानं तजनं त्यासूं हुवें न्यार जी ॥ ४४ ॥
तजणा आठूं करम जी ।
एहवी करणी थी निरजरा घर्म जी ४५ ॥
जे तपसा करें जाण जी ।
त्याने नेडी होसी निरवांण जी ॥ ४६ ॥

साव रे वारे मेदे तपसा करतां, जिहां २ निरवद जोग हंघाय जी ।
 तिहां २ संवर हुवें तपसा रे लारे, तिण सूं पुन लागता मिट जाय जी ॥ ४७ ॥
 इण तप माहिलो तप श्रावक करतां, कठे उसभ जोग हंघाय जी ।
 जव विरत संवर हुवे तपसा लारे, लागता पाप मिट जाय जी ॥ ४८ ॥
 इण तप माहिलो तप इविरती करतां, तिणरे पिण करम कटाय जी ।
 कोड परत संसार करे इण तप थी, वेगो जाए मुगत रे मांय जी ॥ ४९ ॥
 साव श्रावक समदिष्टी तपसा करतां, त्यांरे उतकण्ठी टले करम छोट जी ।
 कदा उतकण्ठी रस आवें तिणरे, तो वंचे तीयंकर गोत जी ॥ ५० ॥
 तप थी आणे संसार नों छेहडो, वले आणे करमां रो अंत जी ।
 इण तपसा तणे परतापे जीवडो, संसारी रो सिघ होवंत जी ॥ ५१ ॥
 कोड भवां रा करम संचीया हुवे तो, खिण में दिये खपाय जी ।
 एहवो छें तप रतन अमोलक, तिणरा गुण रो पार न आय जी ॥ ५२ ॥
 निरजरा तो निरवद उजल हुवां थी, करम निरवरते हुओ न्यार जी ।
 तिण लेखे निरजरा निरवद कहीए, वीजूं तो निरवद नहीं छें लिंगार जी ॥ ५३ ॥
 इण निरजरा तणी करनी छे निरवद, तिणसूं करमां री निरजरां होय जी ।
 निरजरा नें निरजरा री करणी, ए तो जूआ जूआ छें दोय जी ॥ ५४ ॥
 निरजरा तो मोष तणो अंस निबुचे, देग थकी उजलो छें जीव जी ।
 जिणरे निरजरा करण री चूप लागी छे, तिण दीधी मुगत री नीव जी ॥ ५५ ॥
 सहजां तो निरजरा अनाद री हुवे छें, ते होय २ नें मिट जाय जी ।
 वरम वंघण सूं निवरत्यो नांहीं, संसार में गोता खाय जी ॥ ५६ ॥
 निरजरा तणी करणी ओलखावण, जोड कीवी नाथ दुवारा मभार जी ।
 समत अठारे वरस छपनें, चेत विद वीज नें गुरवार जी ॥ ५७ ॥

८ : बंध पदारथ

--ढाल : ११

दुहा

आठमों पदारथ बंध छें, तिण जीव नें राख्यो छे बंध ।
जिण बंध पदारथ नहीं ओलख्यो, ते जीव छें मोह अंध ॥ १ ॥
बंध थकी जीव दबीयो रहे, काई न रहे उघाडी कोर ।
तिण बंध तणा प्रबल थकी, काई न चले जोर ॥ २ ॥
तलाव रूप तो जीव छे, तिणमें पडीया पाणी ज्यू बंध जाण ।
नीकलता पांणी रूप पुन पाप छे, बंध ने लीजो एम पिछाण ॥ ३ ॥
एक जीव दरब छे तेहने, असंख्यात परदेस ।
सगला परदेसां आश्रव दुवार छे, सगला परदेसां करम परवेस ॥ ४ ॥
मिथ्यात इविरत ने परमाद छे, वले कषाय जोग विख्यात ।
यां पांचां तणा बीस भेद छे, पनरे आश्रव जोग में समात ॥ ५ ॥
नाला रूप आश्रव नाला करम नां, ते रूंध्यां हुवें संवर दुवार,
करम रूप जल आवतो रहे, जब बंध न हुवे लिंगार ॥ ६ ॥
तलाव नो पांणी घटे तिण विधे, जीव रे घटे छु करम ।
जब कांयक जीव उजल हुवे, ते तो छे निरजरा धर्म ॥ ७ ॥
कदे तलाव रीतो हुवें, सर्व पांणी तणो हुवें सोष
ज्यूं सर्व करमां नो सोषंत हुवें, रीता तलाव ज्यूं मोष ॥ ८ ॥
बंध तो छें आठ करमा तणो, ते पुद्गल नी पर्याय ।
तिण बंध तणी ओलखणा कर्ह, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ९ ॥

ढाल

[अइ २ कर्म विडम्बना]

बंध नीपजें छें आश्रव दुवार थी, तिण बंध ने कह्यो पुन पापो जी ।
ते पुन पाप तो दरब रूप छे, भावे बंध कह्यो जिण आपो जी ॥
बंध पदारथ ओलखो* ॥ १ ॥
ज्यू तीथंकर आय उपनां, ते तो दरब तीथंकर जाणो जी ।
भावे तीथंकर तो जिण समे, होसी तेरमें गुणठांणो जी ॥ बं २ ॥
ज्यू पुन ने पाप लागो कह्यो, ते तो दरब छें पुन ने पापो जी ।
भावे पुन पाप तो उदे आयां हुसी, सुख दुःख सोग संतापो जो ॥ ३ ॥
तिण बंध तणा दोय भेद छें, एक पुन तणो बंध जाणो जी ।
बीजो बंध छे पाप रो, दोनूं बंध री करजो पिछांणो जी ॥ ४ ॥

यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

पुन नों बंध उदे हुआं, जीव नें साता सुख हुवें सोयो जी ।
 पाप नों बंध उदे हुआं, विविध पणे दुःख होयो जी ॥ ५ ॥
 बंध उदे नहीं ज्यां लग जीव नें, सुख दुःख मूल न होय जी ।
 बंध तो छत्रा रूप लागो रहें, फोडा न पाडे कोयो जो ॥ ६ ॥
 तिण बंध तणा च्यार भेद छे, त्यानें रुडी रीत पिछाणों जी ।
 प्रकतबंध नें थितबंध दुसरो, अनुभाग नें परदेस बंध जाणो जी ॥ ७ ॥
 प्रकतबध छे करमां री जूजूइ, ते करमां रा सभाव रे न्यायो जी ।
 बांधी छे तिण समें बंध छें, जेसी बांधी तेसी उदे आयो जी ॥ ८ ॥
 तिण प्रकत नें मापी छें काल सूं, इतरा काल तांइ रहसी तांमो जी ।
 पछे तो प्रकत विल्लावसी, थित सूं प्रकत बंध छें आंमो जी ॥ ९ ॥
 अनुभाग बंध रस विपाक छें, जेसो जेसो रस देसी ताहो जी ।
 ते पिण प्रकत नों बंध रस कह्यो, बांध्या तेसांइज उदे आयो जी ॥ १० ॥
 परदेश बंध कह्यो प्रकत बंध तणो, प्रकत प्रकत रा अनंत परदेसो जी ।
 ते लोलीभूत जीव सूं होय रह्या, प्रकत बंध ओलखाई वशोषो जी ॥ ११ ॥
 आठ करमां री प्रकत छें जूजूई, एकी की रा अनंत परदेसो जी ।
 ते एकी की परदेस जीव रे, लोली भूत हुवा छें वशोषो जी ॥ १२ ॥
 ग्यांनावरणी दरसवरणी वेदनी, वले आठमों करम अतरायो जी ।
 यांरी थित छे सगला री सारिषी, ते सुणजो चित्त ल्यायो जी ॥ १३ ॥
 थित छे यां च्याहूं करमां तणी, अंतरमुहरत परिमांणो जी ।
 उतकप्टी थित यां च्याहूं करमां तणी, तीस कोडा कोडा सागर जांणों जी ॥ १४ ॥
 थित दरसण मोहणी करम नीं, जगन तो अंतरमुहरत परमांणो जी ।
 उतकप्टी थित छे एहनीं, सितर कोडा कोड सागर जांणों जी ॥ १५ ॥
 जिगन थित चारित मोहणी करम नीं, अंरमुहरत कही जगदीसो जी ।
 उतकप्टी थित छें एहनीं, सागर कोडा कोड चालीसो जी ॥ १६ ॥
 थित कही छे आउखा करम नीं, जिगन अंतरमुहरत होयो जी ।
 उतकप्टी थित सागर तेतीस नीं, आगे थित आउखा री न कोयो जी ॥ १७ ॥
 थित नांम नें गोत्र करम तणी, जगन तो आठ मुहरत सोयो जी ।
 उतकप्टी एकीका करम नीं, बीस कोडा कोड सागर होयो जी ॥ १८ ॥
 एक जीव रे आठ करमां तणां, पुदगल रा परदेस अनंतो जी ।
 ते अभवी जीवां थो मापीयां, अनंत गुणां कह्या भगवंतो जी ॥ १९ ॥
 ते अवस उदे आसी जीव रे, भोगवीयां विण नहीं छूटायो जी ।
 उदे आयां विण सुख दुःख हुवें नहीं, उदे आयां सुख दुःख थायो जी ॥ २० ॥

सुभ परिणांमां करम बांधीया, ते सुभ पणे उदे आसी जी ।
 असुभ परिणांमां करम बांधीया, तिण करमां थी दुःख थासी जी ॥ २१ ॥
 पाच वरणा आठोइ करम छें, दोय गंध ने रस पाचूई जी ।
 चोफरसी आठूइ करम छे, रूपी पुदगल करम आठोइ जी ॥ २२ ॥
 करम तो लूखा ने चोपड्या, वले ठंडा उना होइ जी ।
 करम हलका नही भारी नही, सूहाली ने खरदरा न कोइ जी ॥ २३ ॥
 कोइ तलाव जल सूं पूर्ण भख्यो, खाली कोर न रही कायो जी ।
 ज्यू जीव भख्यो करमां थकी, आ तो उपमा देस थी ताह्यो जी ॥ २४ ॥
 असंख्याता परदेस एक जीव रे, ते असंख्याता जेम तलावो जी ।
 सारा परदेस भरीया करमां थकी, जाणें भरीया चोखूणी बाबो जी ॥ २५ ॥
 एक एक परदेस छे जीव नो, तिहां अनंता करम ना परदेसो जी ।
 ते सारा परदेस भरीया छे बाव ज्यू, करम पुदगल कीयों छें परवेसो जी ॥ २६ ॥
 तलाव खाली हुवे छे इण विघे, पेंहला तो नाला देवे रूघायो जी ।
 पछे मोरियादिक छोडे तलाव री, जब तलाव रीतो थायो जी ॥ २७ ॥
 ज्यू जीव रे आश्रव नालो रूंध दे, तपसा करे हरष सहीतो जी ।
 जब छेहडो आवे सर्व करम नों, तब जीव हुवे करम रहीतो जी ॥ २८ ॥
 करम रहीत हुवो जीव निरमलो, तिण जीव नें कहिजे मोखो जी ।
 ते सिव हुवो छे सासतो, सर्व करम बंध कर दीयो सोषो जी ॥ २९ ॥
 जोड कीधी छे बंध ओलखायवा, नाथ दुवारा सह्र ममारो जी ।
 समत अठारे ने वरस छपने, चेत विद बारस सनीसर वारो जी ॥ ३० ॥

६ : मोख पदार्थ

ढाल : १२

ढुहा

ढोख पदार्थ नवढो कहुँ, ते सगला ढाँहें श्रीकार ।
सर्व गुणा करी सहीत छें, त्यारा सुखां रो छेह न पार ॥ १ ॥
करढां सूं ढूकाणा ते ढोख छें, त्यारा छें ढांढ विशे ।
परढपद ढिरवाण ते ढोख छे, सिद्ध सिव आदि छें ढांढ अनेक ॥ २ ॥
परढपद उत्कृष्टो पद ढाढीढो, तिण सूं परढपद त्यारो ढांढ ।
करढ दावानल ढेट सीतल थया, तिणसूं ढिरवांण ढांढ छें तांढ ॥ ३ ॥
सर्व कार्य सिधा छें तेहनां, तिण सूं सिध कहुँ छें तांढ ।
उपद्रव्य करेँनें रहीत हूँयां, तिण सूं ढिव कहीजे त्यारो ढांढ ॥ ४ ॥
इण अनुसारे जाणजो, ढोख रा- गुण परढाणे ढांढ ।
हिंवेँ ढोख तणा सुख वरणू, ते सुणजो राखे चित्त ठांढ ॥ ५ ॥

ढाल

(ढाखड वधसी आरे ढाचवे)

ढोख पदार्थ ढां सुख सासता रे, तिण सुखां रो कदेय न आवें अंत रे ।
ते सुख अढोलक ढिज गुण जीव रा रे, अनंत सुख ढाष्या छे ढगवंत रे ॥
ढोख पदार्थ छें सारां सिरे रे* ॥ १ ॥
तीन काल रा सुख देवां तणां रे, ते सुख इधका घणां अथाग रे ।
ते सगलाइ सुख एकण सिध नें रे, तुले ढावे अनंतढें ढाग रे ॥ ढो० २ ॥
संसार ढां सुख तो छें पुदगल तणां रे, ते तो सुख ढिश्रें रोगीला जाण रे ।
ते करढां वस गढता लागे जीव नें रे, त्यां सुखां री बुधिवंत करो ढिछांण रे ॥ ३ ॥
ढांव रोगीलो हुंवेँ छें तेहनें रे, अतंत ढीठी लागेँ छें खाज रे ।
एहवा सुख रोगीला छें पुन तणा रे, तिण सूं कदेय न सींके आतढ काज रे ॥ ४ ॥
एहवा सुखां सूं जीव राजी हुंवेँ रे, तिणरे लागेँ छें ढाढ करढ रा पूर रे ।
ढछें दुःख ढोगवे छें ढरक ढिगोद ढें रे, ढुगति सुखां सूं ढहीयो दूर रे ॥ ५ ॥
छूटा ढनढ ढरण दावानल तेह थी रे, ते तो छें ढोष सिध ढगवंत रे ।
त्यां आठोई करढां नें अलढा कीयां रे, ढब आठोई गुण ढीढना अनंत रे ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ते मोक्ष सिध भगवंत तो इहं हिज हूआं रे,
 सिध रहिवा नो खेत र छें तिहां जाए रह्या रे,
 अनंतो ग्यान ने दरसन तेहनों रे,
 बायक समकत छे सिध वीतराग तेहने रे,
 अमूरतीपणों त्यांरो परगट हूवो रे,
 तिण सू अगुरलघू नें अमूरती कहां रे,
 अतराय करम सू तो रहीत छे रे,
 ते निज गुण सुखा माहे भिले रह्यां रे,
 छूटा कलकली भूत संसार थी रे,
 ते अनंता सुख पांम्या सिवे रमणी तणा रे,
 त्यारा सुखां ने नही कई ओपमा रे,
 एक धारा त्यारा सुख सासता रे,
 तीरथ सिधा ते तीरथ मां सू सिध हूआं रे,
 तीथकर सिधा ते तीरथ थापने रे,
 सयवुधी सिधा ते पोते समझ ने रे,
 बुधबोही सिधा ते समझे ओरा कने रे,
 स्वर्लिंगी सिधा साधा रा भेप मे रे,
 ग्रहलिंगी सिधा ग्रहस्थ रा लिंग थका रे,
 पुरष लिंग सिधा ते पुरष ना लिंग छटां रे,
 एक सिधा ते एक समे एक हीज सिध हूआं रे,
 ग्यान दरसन ने चारित तप थकी रे,
 या च्यारा बिना कोई सिध हूओ नही रे,
 ग्यान थी जाणे लेवें सर्व भाव ने रे,
 चारित सूं करम रोके छे आवता रे,
 एं पनरेइ भेदे सिध हूआं तकेरे,
 वले मोष में सुख सगला रा सारिषा रे,
 मोष पदार्थ नें ओलखायवा रे,
 समत अठारे नें वरस छाने रे,

पछें एक समा में उंचा गया छे थेट रे ।
 अलोक सू जाए अड्या छें नेट रे ॥ ७ ॥
 वले आतमीक सुख अनंतों जाण रे ।
 वले अक्वाहणा अटल छे निरवाण रे ॥ ८ ॥
 हलको भारी न लागे मूल लिगार रे ।
 ए पिण गुण त्यांमे श्रीकार रे ॥ ८ ॥
 त्यारे पुद्गल सुख चाहीजे नांय रे ।
 कांइ उणारत रही न दीसे कांय रे ॥ १० ॥
 आठोइ करमा तपो कर सोष रे ।
 त्याने कहिजे अविचल मोक्ष रे ॥ ११ ॥
 तीनोइ लोक संसार मझार रे ।
 ओछा इधका सुख कदेय नहुवे लिगार रे ॥ १२ ॥
 अतीरथ सिधा ते विण तीरथ सिध थाय रे ।
 अतीथंकर सिधा ते बिना तीथंकर ताय रे ॥ १३ ॥
 प्रतेकबुधी सिधा ते कायकवस्त देख रे ।
 उपदेस सुणे ने ग्यान वशेष रे ॥ १४ ॥
 अनर्लिंगी सिधा ते अन लिंगी मांय रे ।
 अस्त्री लिंग सिधा अस्त्री लिंग मे ताय रे ॥ १५ ॥
 निपुसक सिधा निपुसक लिंग में सोय रे ।
 अनेक सिधा ते एक समे अनेक सिध होय रे ॥ १६ ॥
 सारा हूआं छे सिध निरवाण रे ।
 ए च्यारुई मोष रा मारग जाण रे ॥ १७ ॥
 दरसन सू सरध लेवे सयमेव रे ।
 तपसा सू करमा ने दीया खेव रे ॥ १८ ॥
 सगला री करणी जाणों एक रे ।
 ते सिध छें अनंत भेदे अनेक रे ॥ १९ ॥
 जोड कीधी छे नाथ दुवारा मझार रे ।
 चेत सुद चौथ ने सनीसर वार रे ॥ २० ॥

ढाल : १३

दुहा

केइ भेष घाख्यां रा घट मभे, जीव अजीव री खबर न कांय ।
 ते पिण गोला फेके गालां तणा, ते पिण सुघ न दीसे कांय ॥ १ ॥
 नव पदार्थ रो त्यारे निरणों नही, छ दरबां रो निरणों नांय ।
 न्याय निरणा विनां बक बोकरे, तिणरो सोच नही मन मांय ॥ २ ॥
 जीव अजीव दोनू जिण कह्या, तीजी वस्त न कांय ।
 जे जे वस्त छे लोक में, ते दोयां में सर्व समाय ॥ ३ ॥
 नव ही पदार्थ जिण कह्या, त्यांनं दोयां में घाले नांय ।
 त्यारे अंधकार घट में घणों, ते भूल गया भर्म मांय ॥ ४ ॥
 उंधी २ करे छें परूपणा, ते भोला ने खबर न कांय ।
 तिण सू नव पदार्थ रो निरणो कहुं, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[मेघ कुंवर हाथी रा भव में]

जीव ते चेतन अजीव अचेतन, त्यांनं बादर पणे तो ओलखणा सोरा ।
 त्यारा भेदानभेद जूआजूआ करतां, जब तो ओलखणा छे अति ही दोरा ।
 जीव अजीव सूघा न सरघे मिथ्याती ॥ १ ॥
 जीव अजीव टालेने सात पदार्थ, त्याने जीव अजीव सरघें छें दोनूइ ।
 एडवी उंघ्री सरवा रा छे मूढ मिथ्याती, त्यां साबू रो भेष ले आतम विगोइ ॥
 जीव अजीव सूघा न सरघें मिथ्याती ॥ २ ॥
 पुन पाप ने बंध एं तीनूइ करम, करम ते निश्चेइ पुदगल जांणो ।
 पुदगल छें ते निश्चेइ अजीव, तिण मांहुं संका मूल म आंणो ॥
 पुन पाप नें अजीव न सरघें मिथ्याती ॥ ३ ॥
 आठ करमां नें रूपी कह्या छे जिणसर, त्यामें पांचूइ वर्ण नें गंध छें दोय ।
 वले पांचूइ रस नें चार फरस छे, एं सोलें बोल पुदगल अजीव छे सोय ॥
 पुन पाप नें अजीव न सरघें मिथ्याती ॥ ४ ॥
 पुन पाप वेहं नें ग्रहे आश्रव, पुन पाप ग्रहे ते निश्चें जीव जांणो ।
 निरबद जोगां सूं पुन ग्रहे छें, सावद्य जोगां सूं पाप लागे छे आंणो ॥
 आश्रव नें जीव न सरघें मिथ्याती ॥ ५ ॥
 करमां नां दुवार आश्रव जीव रा भाव, तिण आश्रव नां बीसोंइ बोल पिछ्ठांणो ।
 वे बीसोंइ बोल छे करमां रा करता, करमां रा करता निश्चें जीव जांणो ।
 आश्रव नें जीव न सरघें मिथ्याती ॥ ६ ॥

आतमा ने वस करें ते संवर,
ते तो उपसम खायक षयउपसम भाव,

संवर ते आवतां करमां ने रोके,
तिण संवर ने जीव न सरघे अग्यानी,

देस थकी करमां ने तोडे,
जीव उजलो हुओ छे तेहिज निरजरा,

करमां ने तोडे ते निश्चेइ जीव,
उजला जीव ने निरजरा कही जिण,

समसत करम थकी मूकावे,
इण संसार दुख थी छूट पड्या छे,

करमां थकी मूकावे ते मोष,
वले मोष ने परमपद निरवांण कहिजे,

पुन पाप ने वंघ एं तीनूइ अजीव,
एहवी उंची सरघा रा छें मूढ मिथ्याती,

आश्रव संवर निरजरा ने मोष,
त्याने जीव अजीव दोनूइ सरघें,

नव पदारथ मे पांच जीव कह्या जिण,
ए नव पदारथ रो निरणो करसी,

जीव अजीव ओलखावण काजे,
समत्त अठारे सत्तावने ब्रसे,

आतमा वस करे ते निश्चेइ जीव ।

ए तो जीव रा भाव छें निरमल अतीव ॥

संवर ने जीव न सरघे मिथ्याती ॥ ७ ॥

आवतां करम रोके ते निश्चेइ जीव ।

तिणरे नरक निगोद री लागी छे नीव ॥

तिण संवर ने जीव न सरघे मिथ्याती ॥ ८ ॥

जब देस थकी जीव उजलो होय ।

निरजरा जीव छे तिणमें सका न कोय ॥

इण निरजरा ने जीव न सरघे मिथ्याती ॥ ९ ॥

करम तूटा थका उजलो हुवो जीव ।

जीव रा गुण छें उजल अत ही अतीव ॥

इण निरजरा ने जीव न सरघे मिथ्याती ॥ १० ॥

ते करम रहोत आतमा मोष ।

ते तो सीतलीभूत थया निरदोष ॥

तिण मोष ने जीव न सरघें मिथ्याती ॥ ११ ॥

तिण मोष ने कहिजे सिध भगवान ।

ते तों निश्चेइ निरमल जीव सुघ मान ॥

तिण मोष ने जीव न सरघें मिथ्याती ॥ १२ ॥

त्याने जीव ने अजीव सरघे दोनूइ ।

त्यां साघ रा भेष में आतम विगोइ ॥

पुन पाप ने अजीवन सरघे मिथ्याती ॥ १३ ॥

ए निमाइ निश्चे जीव च्यारूइ ।

तिण उची सरघा सू आतम विगोइ ॥

यां च्यारां ने जीव न सरघे मिथ्याती ॥ १४ ॥

च्यार पदारथ अजीव कह्या भगवान ।

तेहिज समकत्त छें सुघ मान ॥

जीव अजीव ने सुघ न सरघें मिथ्याती ॥ १५ ॥

जोड कीधी पुर सहर मभार ।

भादवा सुद पूनम ने बुधवार ॥

जीव अजीव ने सुघ न सरघें मिथ्याती ॥ १६ ॥

रत्न : २

श्रावक ना बारे व्रत

व्रत पहिलो

(स्थूल प्रासातपात विरमस्य व्रत)

ढाल : १

दुहा

पांच अणुव्रत परवरा, तीन गुण वरत सार ।
सिष्या वरत च्यारे चतुर, तेहनो करो विचार ॥ १ ॥
पहिलां में हिंसा तजे, दूजें भूळ परिहार ।
तीजे अदत्त चौथें अबंध, पांचमें तजे धन सार ॥ २ ॥
पहिलो गुण वरत दिसि तणो, दूजें भोग पचखाण ।
तीजें अनरथ परहरे, ए तीनू गुण वरत जाण ॥ ३ ॥
सामायक पहिलो सिख्या, दूजें सवर जाण ।
तीजें पोषद कहीजीयें, चौथें सावा नें दे दान ॥ ४ ॥
यां बारे वरतां तणों, कहीये छे विसतार ।
भाव घरी भवियण सुणो, मन मे आण विचार ॥ ५ ॥

ढाल

[जिन भाख्या पाप अठार]

श्रावक ना व्रत बार, पाले निरतीचार ।
ते दुरगत नहि पडे ए, भवसायर तरे ए ॥ १ ॥
पेहलो वरत इम जाण, तिण में हिंसा ना पचखाण ।
हिंसा तस तणी ए, बीजी थावर भणी ए ॥ २ ॥
वसतां ग्रहस्थावास, हिंसा हुवे जास ।
आरम्भ विण करीये ए, पेट किम भंरीये ए ॥ ३ ॥
कहं तस तणा पचखाण, थावर नो परमाण ।
भेद तस तणां ए, ग्यांनी कह्या घणां ए ॥ ४ ॥
कोई मोनें घाले घात, माहरो अपराधी साख्यात ।
खमतां दोहिलो ए, नहि मोनें सोहिलो ए ॥ ५ ॥
सांतो दे धन लेजाय, अथवा लुंटे आय ।
खून करे जरे ए, सूंस नही तरे ए ॥ ६ ॥

विण	अपराधी	होय,	तिणरी	हिंसा	दोय ।				
मारे	जांगतां	ए,	बले	अजांगतां	ए ॥ ७ ॥				
म्हारे	धान जोखण	रो काम,	गाडी	चढ़ जाऊं	गाम ।				
खेती	हल खडूं	ए,	सूर	निदांण करूं	ए ॥ ८ ॥				
तिहां	बहू जीव	हणाय,	किम	पालूं	मुनीराय ।				
नही	सभें एसो	ए,	ग्रहवासे	फस्यो	ए ॥ ९ ॥				
आकुटी	ने	साम,	जीव	मारण रे	काम ।				
व्रत	छैं	जांगतां	ए,	नहीं	अजांगतां	ए ॥ १० ॥			
म्हारी	इसडी	इरज्या	नाहि,	चालूं	अंधारा	माहि ।			
वसतू	पूजूं	नहीं	ए,	लेवूं	मूकूं	सही	ए ॥ ११ ॥		
थाप	लाठी	रो	नेम,	मोसूं	चाले	केम ।			
चोपद	हाकणा	ए,	दोपद	हठ्कणा	ए ॥ १२ ॥				
इम	करतां	जीव	मराय,	जीव	काया	जूदा	थाय ।		
हणवा	बुध	नहीं	घरी	ए,	विना	बुध	मरी	ए ॥ १३ ॥	
हणवारी	बुध	होय,	जीव	न	मालूं	कोय ।			
सेउपर्येणे	करी	ए,	एसी	विगत	घरी	ए ॥ १४ ॥			
हिंसानां		पचखांण,	में	कीघा	परमांण ।				
जावजीव	करी	ए,	करण	जोग	घरी	ए ॥ १५ ॥			
घिन	घिन	जे	ले	वैराग,	ज्यारे	सर्व	हिंसा	रा	त्याग ।
तस	थावर	तणीं	ए,	अणकंपा	घणीं	ए ॥ १६ ॥			
हूं	ग्रहस्थ	मुनीराज,	म्हारे	आरम्भ	काज ।				
इविरत	बहु	घणी	ए,	तस	थावर	तणी	ए ॥ १७ ॥		
घिन	घिन	साधू	मुनीराय,	ते	सुमते	सुमता	थाय ।		
जीवे	ज्यां	भणी	ए,	न	चूके	अणी	ए ॥ १८ ॥		
घिग	घिग	ग्रहस्थावास,	म्हारे	मोटो	पड्डीयो	पास ।			
हिंसा	बहु	घणी	ए,	लागे	मो	भणी	ए ॥ १९ ॥		
ग्यांनादिक	आंकस	ल्याय,	मन	नें	आंणी	ठाय ।			
हिंसा	टालसूं	ए,	ममता	वालसूं	ए ॥ २० ॥				
जावजीव		पचखांण,	नहिं	मोंनें	आसान ।				
लफरो	बहु	घणो	ए,	न्यातीलां	तणो	ए ॥ २१ ॥			
घिन	घिन	साधू	सूर,	जिण	लफरो	कीघो	दूर ।		
तिण	विघ	मोंवत	ए,	खातो	नहिं	खतै	ए ॥ २२ ॥		

व्रत दूजो

(स्थूल मृषावाद विरमण व्रत)

ढाल २

दुहा

दूजो व्रत श्रावक तणों, करे मूठ तणों परमाण ।
त्यागे माठे जाण नें, पाले जिणवर आंण ॥ १ ॥
भूठो बोला मानवी, नहिं ज्यारी परतीत ।
मनष जमारो हार ने, नरकां हुवे फजीत ॥ २ ॥

ढाल

[जिण भाख्या पाप अठार]

भूठ तणां पचखांण, नाहना मोटा जाण ।
पचखे मोटका ए, केयक छोटका ए ॥ १ ॥
छोटा न बोलूं केम, म्हारो ग्रहवासा सूं पेम ।
विणज सोदा करूं ए, मन मे लोभ घरूं ए ॥ २ ॥
मोटा पांच प्रकार, तेहनो करूं परिहार ।
व्रत करूं इसो ए, मोसूं निमे जिसो ए ॥ ३ ॥
किन्या गोवाली जांण, तीजी भोम पिच्छांण ।
थापण मोसो करे ए, कूडी साख भरे ए ॥ ४ ॥
किन्यां रा भेद अपार, करणो सूस विचार ।
वरसां छोटकी ए, न कहणी मोटकी ए ॥ ५ ॥
गहली गूगी होय, वले आंख नहिं दोय ।
कांणी मीमरी ए, आंख्यां चीपडी ए ॥ ६ ॥
काली कोढणी नार, काना न सुणे लिंगार ।
टूंटी पांगली ए, बोले तोतली ए ॥ ७ ॥
रोग घणो घट मांय, जीवण री आस न कांय ।
वेल्लजर तेजरो ए, आवे एकंतरो ए ॥ ८ ॥
वले रोग छे खेत, जीव न पामें चेत ।
शक्तपीती तणी ए, दुरगंध अति घणी ए ॥ ९ ॥

कूवी दूवी होय, बाडी बांकी जोय ।
 छोटी बांवणी ए, आंख्यां बांभणी ए ॥ १० ॥
 हीण वस री होय, तिणरी जात न जाणे कोय ।
 आ तो जाये जठे ए, साख न भरे कठे ए ॥ ११ ॥
 रूप रोग ने खोड, वले वरस दे तोड ।
 अछ्छतो नहि भाषणो ए, हुवें जिम दाखणो ए ॥ १२ ॥
 यां बोलां रो साम, आय पडे कोइ काम ।
 घर मांडे जठें ए, भूठ न बोलूं तठे ए ॥ १३ ॥
 हासा मसकरी काज, म्हारे सूंस नही मुनीराज ।
 पल्लां दोहिलो ए, नहि मोनें सोहिलो ए ॥ १४ ॥
 इत्यादिक परमाण, में कीघा पचखाण ।
 इमहीज पुरख तणां ए, कन्या ज्यूं भाषणां ए ॥ १५ ॥
 इम गोवाली जाण, दूघ तणो परमाण ।
 वेत न ओछारणो ए, हुवें जिम दाखणो ए ॥ १६ ॥
 भोमाली घर ने हाट, वले बाघ नें घाट ।
 घरती बावण तणी ए, इत्यादिक घणी ए ॥ १७ ॥
 कोइ धन सूंपे आय, हूं राखूं घर मांहि ।
 आय ने मांगे तरे ए, नटूं नहि जरे ए ॥ १८ ॥
 मागे घणी जो आय, वाप भाई नें माय ।
 उ वारस आय अडे ए, राजा रोके जरे ए ॥ १९ ॥
 जब भूठ वोलण रो नेम, राखूं वरत सूं पेम ।
 चोखो पालसूं ए, दोपण टाल सूं ए ॥ २० ॥
 मांगे अनेरो थाय, तो नट जावूं मुनीराय ।
 सूंस नही कियो ए, लोभे चित दीयो ए ॥ २१ ॥
 साख भरावे मोय, भूठ न बोलूं कोय ।
 ते पिण मोटकी ए, नहीं छोटकी ए ॥ २२ ॥
 जो हूं बोलूं वाय, तो घर पेलारो जाय ।
 भाषा तोलणी ए, पछे बोलणी ए ॥ २३ ॥
 करे भूठ रा भेद, त्याग्या आण उमेद ।
 मनोरथ जद फले ए, भूठ छोटोइ टले ए ॥ २४ ॥
 करण जोग घाली ने एम, करे भूठ रा नेम ।
 वरत करे इसो ए, पीते निभे जीसो ए ॥ २५ ॥

व्रत तीजो

(स्थूल अदत्त विरमया व्रत)

ढाल : ३

दुहा

तीजो व्रत श्रावक तणो, करे अदत्त रा त्याग ।
मन मे सुमता आणीया, चढे भाव वेराग ॥ १ ॥
अह लोके जस अति घणो, परलोके सुख थाय ।
भाव सहित अरावीया, जन्म मरण मिट जाय ॥ २ ॥
चोरी करे ते मानवी, गया जमारो हार ।
मनष तणो भव खोय ने, नरका खाए मार ॥ ३ ॥
तीजो व्रत छे एम, करे अदत्त रा नेम ।

ढाल

[जिन भाष्या पाप अठार]

न करे मोटकी ए, वले छोटकी ए ॥ १ ॥
न्हानी किम त्यागूं साम, म्हारे घास इंधण रो काम ।
खिण खिण किणनें केवु ए, किहा किहा आम्या लेवु ए ॥ २ ॥
न्हानी त्यागे ते घिन, पिण म्हारो नहि मन ।
चित्त चोखो नही ए, कर्म घणा सही ए ॥ ३ ॥
सांतो दे गांठी छोड, घाडो कर तांलो तोड ।
वसतु मोटी अछै ए, धणी जाण्या पछे ए ॥ ४ ॥
ऐसा अदत्त रा त्याग, मे पचख्यो आण वैराग ।
ते पिण परतणी ए, नही घर भणी ए ॥ ५ ॥
म्हारा कुटवादिक् में माल, मो मे पडे हवाल ।
भीड घणी सही ए, मांग्या दे नही ए ॥ ६ ॥
वले भूखो न मिले अन, म्हारा बाप भाई ने घन ।
सेठो कीयो सही ए, मोने दे नही ए ॥ ७ ॥
जब तालो ल्यू तोड, वले गाठडी छोड ।
सांतो दे चोरसू ए, खोसल्यू जोर सू ए ॥ ८ ॥
इतरा मो आगार, ते नरक तणा दातार ।
रमणी वस पड्यो ए, जगीरा जड्यो ए ॥ ९ ॥

राजा लेवे डंड, हुवे लोक मे भड ।
 चोरी नही कलं ए, ऐसी व्रत धरू ए ॥ १० ॥
 इसो पले मुनीराय, मोने दो पचखाय ।
 जीवे ज्यां भणी ए, व्रत चोरी तणो ए ॥ ११ ॥
 चोरी कर्म चण्डाल, तिण थी पडे हवाल ।
 दुख नरकां तणां ए, सहे अति घणां ए ॥ १२ ॥
 चोरी ले पर माल, तिण में पडे हवाल ।
 नरक निगोद तणां ए, फल चोरी तणां ए ॥ १३ ॥
 पर घन लेवे ताहि, दे पेला रे दाहि ।
 ते नरक ना पावणा ए, न्यात लजावणा ए ॥ १४ ॥
 इहलोक उदे हुवे पाप, दुख भुगते आपो आप ।
 मार घणी पडे ए, विण आइ मरे ए ॥ १५ ॥
 तिणरा काटे हाथ नें पाय, वले सूली देवे चढाय ।
 नकटो नें बूटों करे ए, वले मार घणी पडे ए ॥ १६ ॥
 मुआं पछे चोर री काय, न्हाखे खांड मांय ।
 तिहां कुत्ता आयनें ए, विगाडे काय ने ए ॥ १७ ॥
 वले काग चांचां सूं मार, तिणरा डीया काढे बार ।
 शरीर तिण तणो ए, विकराल दीसे घणो ए ॥ १८ ॥
 तिण ने देखे मात ने तात, मन में घणा सीदात ।
 इण चोरी कर परतणी ए, लजाया म्हां भणी ए ॥ १९ ॥
 लोक करे चोरी नी बात, ते सुणे मात नें तात ।
 बोले जब रोवता ए, नीचो जोवता ए ॥ २० ॥
 चोरी सूं दुख अतंत, तिणरो कहिता न आवे अंत ।
 चिहुं गति में भटके घणो ए, ते पाप चोरी तणो ए ॥ २१ ॥
 इम सांभलने नर नार, चोरी म करो लिंगार ।
 समता रस आंणनें ए, त्यागो जांणनें ए ॥ २२ ॥
 कोइ आंणे मन वैराग, चोरी सर्व थकी दे त्याग ।
 करण जोग करी ए, मन समता घरी ए ॥ २३ ॥
 कोइ सूंस करे दे भांग, तिणरा घणा नीकलसी सांग ।
 महा पापी मोटको ए, कर्मा दियो घाको ए ॥ २४ ॥
 चोखो पालसी सूंस, त्यांरी पूरी जे मन हुंस ।
 जासी देवलोक में ए, केई जाए मोख में ए ॥ २५ ॥

व्रत चौथो

(स्वदार संतोष परदार विरमण व्रत)

ढाल : ४

दुहा

मनष तणो भव पाय ते, जे नर पाले सील ।
 सिव रमणी बेगी वरे, रहे मुगत मे लील ॥ १ ॥
 साधु त्यागे सर्वथा, ग्रहचारी पर नार ।
 माठी निजर जोवे नहीं, तिण रो खेवो पार ॥ २ ॥
 एक एक श्रावक एहवा, आंणी मन वैराग ।
 भोग जाणी विष सारिषा, घर नारी दें त्याग ॥ ३ ॥

ढाल

[जिन भाष्या पाप अठार]

चौथो व्रत इम जाण, अबंभ तणा पचखांण ।
 देवगणा मिनषणी ए, त्यागे तिरजंचणी ए ॥ १ ॥
 वले पोता री नार, तेहलो करे विचार ।
 तजे दिन रात नी ए, परणी हाथ नी ए ॥ २ ॥
 परवीयादिक नो नेम, निरस्तो पाले एम ।
 मोहणी परहरे ए, आतम वस करे ए ॥ ३ ॥
 कोई सर्व थकी दे त्याग, आंणी मन वैराग ।
 विषे ओषरे ए, ब्रह्म वृत घरे ए ॥ ४ ॥
 मारे घर नारी सूं नेह, तिणने किम हूं छेह ।
 आतम वस नही ए, कर्म घणा सही ए ॥ ५ ॥
 करूं दिवस दिवस तणा पचखांण, रात तणो परमाण ।
 संतोष आदरूं ए, विषे परहरूं ए ॥ ६ ॥
 पर नारी सूं पेम, म्हे कीधो छे नेम ।
 सूइ डोरे करी ए, एसी विरत घरी ए ॥ ७ ॥
 जे सेवे पर नार, ते गया जमारो हार ।
 नरकां माहें पड़े ए, ढीलो नहिं करे ए ॥ ८ ॥
 चौथो व्रत घणो श्रीकार, सारा व्रतां रो सिरदार ।
 व्रतां रो नायको ए, मुगत रो दायको ए ॥ ९ ॥

सील व्रत छे मोटो रतन्न, तिणरा करे जतन्न ।
 ते आतम उचरे ए, सिव रमणी वरे ए ॥ १० ॥
 ए व्रत पाले निरदोष, त्याने नेडी छे मोख ।
 तिण मे संका नहीं ए, श्री जिण मुख कही ए ॥ ११ ॥
 चारुं जात रा देव, करे ब्रह्मचारी नी सेव ।
 वले सीस नमावता ए, वादे गुण गावता ए ॥ १२ ॥
 जिण चोथो वरत दीयो भांग, त्यांरा घणा नीकलसी सांग ।
 ते नरक मांहे पडे ए, घणो रडबडे ए ॥ १३ ॥
 इह लोके फिट फिट हीय, पर लोके दुरगति जोय ।
 तिण जन्म विगाडीयो ए, मानव भव हारीयो ए ॥ १४ ॥
 जातवंत कुलवंत, ते आतम नित दमंत ।
 ते व्रत पालसी ए, कुल उजवालसी ए ॥ १५ ॥
 नहीं जातवंत कुलवंत, वले रस ग्रिधी अतंत ।
 ते विषय रो प्यासीयो ए, तिण व्रत विणासीयो ए ॥ १६ ॥
 निरलजा लज्या रहीत, वले विषय विकार सहीत ।
 तिण व्रत ने कापियो ए, ते मोटो पापीयो ए ॥ १७ ॥
 ब्रह्म व्रत रा भांगणहार, घिग त्यांरो जमवार ।
 ते न्यात लज्जावणा ए, दुरगति ना पावणा ए ॥ १८ ॥
 घणा लोकां रे मांहि, उंचे सुर बोल्ह्यो न जाय ।
 आ खांमी मोटी घणी ए, व्रत भांग्यां तणी ए ॥ १९ ॥
 कोइ ओ मोटो करे अकाज, लज्यावंत ने आवे लाज ।
 निरलजा लाजे नहीं ए, सेहल गिणे सही ए ॥ २० ॥
 इण सील भांग्यां रो सोय, कहतब न मिटे कोय ।
 आ मोटी मेहणी ए, जीवे ज्यां भणी ए ॥ २१ ॥
 इण पापी कियो अकाज, अजेय न आवे लाज ।
 तोही बोले गाजतो ए, निरलज नहीं लाजतो ए ॥ २२ ॥
 ब्रह्म व्रत तणो करे भंग, तिणरो कदे न कीजे संग ।
 कुकर्म मांहे मिलीयो ए, कर्म कादे कलीयो ए ॥ २३ ॥
 जो सेवे परनार, ते गया जमारो हार ।
 लजावे न्यात में ए, पडियो मिथ्यात मे ए ॥ २४ ॥
 परनारी मा बेन समांत, त्यां सूं न करे माठो घ्यांन ।
 चित चोखो कीयो ए, ब्रह्म व्रत लीयो ए ॥ २५ ॥

कोइ छोडी सर्म नें लाज, त्यांसू इज करे अकाज ।
 ते निरलज नहिं लाजीयो ए, डाकी वाजीयो ए ॥ २६ ॥
 कर्म जोगे जाए भाज, पिण केकां ने आवे लाज ।
 केइ लाजे नही ए, बेसरमा सही ए ॥ २७ ॥
 केई सीदावें मन माय, म्हें मोटो कियो अन्याय ।
 पिछ्छतावे घणो ए, खोटा किरतब तणो ए ॥ २८ ॥
 जिणरो चोथो वरत गयो भाग, तिणरो पूरो अभाग ।
 ते नागो निरलजो ए, तिण में नही मजो ए ॥ २९ ॥
 ब्रह्म व्रत तणी नव बाड, ते पाले निरतीचार ।
 अडिग सेठो घणो ए, मन जोग तणो ए ॥ ३० ॥
 जिण लोपे दीघी वाड, तिण रो हुवे विगाड ।
 खुराबी हुवे घणी ए, ब्रह्म व्रत तणी ए ॥ ३१ ॥
 व्रत भाग सेवे परनार, ते गया जमारो हार ।
 फिट फिट हुवे घणो ए, कुजस तिण तणो ए ॥ ३२ ॥
 चोखे चित्त पाले सील, ते रहे मुगत मे लील ।
 राखे नित आसता ए, पामें सुख सासता ए ॥ ३३ ॥
 दिन दिन चढते रंग, पाले व्रत अभग ।
 मन सुमता धरे ए, ते सिव रमणी वरें ए ॥ ३४ ॥
 ब्रह्म व्रत ने श्री जगदीस, उपमा कही बतीस ।
 दसमा अग में कही ए, ते सूर पाले सही ए ॥ ३५ ॥
 करण जोग सू जाण, विवरा सुघ पचखाण ।
 चोखे चित्त पालीये ए, दोषण टालिये ए ॥ ३६ ॥

व्रत पांचमों

(स्थूल परिग्रह विरमण व्रत)

ढाल : ५

दुहा

पांचमे व्रत त्यागे परिग्रहो, ते परिग्रह मुरछा जाण ।
तिण सूं निरंतर जीव रे, पाप लागे छे आंण ॥ १ ॥
ए मोटो पाप छे परिग्रह, तिण थी गोता खांय ।
सांसी हुवे तो देखलो, तीन मनोरथ मांय ॥ २ ॥
ओ अनर्थ ग्यांनी भाषीयो, नरक ले जावे तांण ।
जती मार्ग नो भांडणो, निषेद्यों इम जाण ॥ ३ ॥
खेतू वथू हिरण सोवन तणो, धन नें धान जाण ।
वले दोपद नें चोपद तणा, कुंवि घात तणो परमाण ॥ ४ ॥
खेतू ते उघाड़ी भूमका, वथू हाट हवेली जाण ।
रूपा नें सोना तणो, करे सक्त साहं पचखांण ॥ ५ ॥
धनते रोकड नांणो गिणती तणो, धान री जात अनेक ।
कुवीघात ते घर विखेरो कह्यो, त्यानें त्यागे आंण विवेक ॥ ६ ॥
सचित्त अचित्त मिश्र द्रव्य छे, यां सगलां रो करे प्रमाण ।
राख्या ते सगला इविरत में छें, बाकी सगलां राकीया पचखांण ॥ ७ ॥
ए नवोड जात रो, बाहिरज परिग्रह जाण ।
मुर्छा अमितर परिग्रहो, तिण सूं पाप लागे छे आंण ॥ ८ ॥
बाहिरज परिग्रह नव जात रो, ममता कर ग्रह्यो छे ताहि ।
तिण सूं यांनेंइ परिग्रह कह्यो, पिण यां सूं पाप न लागे आय ॥ ९ ॥

ढाल

[जिण भाष्या पाप अठार]

परिग्रहा नों परिहार, संख्या करे बिचार ।
ममता उघरे ए, नव भेदे करे ए ॥ १ ॥
खेतू वथू छें जेह, सोनो रूप्यो तेह ।
धन धान दोपद ए, कुंवी घात चोपद ए ॥ २ ॥
ए नव विघ संख्या थाय, बंध्या दीए मिटाय ।
त्रिसणा परहरें ए, मन सुमता घरें ए ॥ ३ ॥

ममता बडी बलाय, चिहुं गति में लटकाय ।
घणो रडबडे ए, नहिं जक पडे ए ॥ ४ ॥
मन सूं करी विचार, ए नरक तणी दातार ।
एहने टालवे ए, व्रत ने पालवें ए ॥ ५ ॥
नव जात रो परिग्रह नाहिं, विचार करो मन मांहिं ।
भुछ्छी परिग्रहो ए, ओ मारग नरक रो ए ॥ ६ ॥
ए मोटो प्रतिबंध पास, करे बोध बीज रो नास ।
मारग छै कुगत रो ए, फलसो मुगत रो ए ॥ ७ ॥
परिग्रह छे मोटो फंद, कर्म तणो छै बध ।
नरक पोहचावे सही ए, तिहा मार घणी कही ए ॥ ८ ॥
परिग्रह छै महा विकराल, मोटो छै माया जाल ।
तिण में खूता सही ए, धर्म पावे नही ए ॥ ९ ॥
कनक कामणी दोय, त्यासूं दुरगति होय ।
फंद छै मोटका ए, त्यासू खाए घका ए ॥ १० ॥
कनक कामणी दोय, पेला ने पकड़ावे कोय ।
तिण फंद में नाख्यो सही ए, निकल सके नही ए ॥ ११ ॥
परिग्रहो दीघां कहे धर्म, ते मूला अयांनी भर्म ।
यारे कर्म घणा सही ए, समझ पडे नही ए ॥ १२ ॥
इण परिग्रहा तणा दलाल, त्यामे पिण होसी हवाल ।
दुख नरकां तणा ए, सहसी अति घणा ए ॥ १३ ॥
ए राख्या लागे छै कर्म, रखाया पिण नही धर्म ।
तीनूं करण सारिखा ए, ते करजो पारिखा ए ॥ १४ ॥
परिग्रहा नां दातार, त्यारा सावद्य जोग व्यापार ।
मारग नही मोखरो ए, छादो लोक रो ए ॥ १५ ॥
असणादिक च्याहं आहार, श्रावक रे परिग्रहा मभार ।
ते खाए खवावे सही ए, तिणमें पिण धर्म नही ए ॥ १६ ॥
श्रावक ते माहीं माहिं, देवो लेवो छे ताहिं ।
ते सगलो परिगरो ए, संका मति करो ए ॥ १७ ॥
सचित अचित मिश्र दरब, तिण में आय गया छै सरब ।
ए सगलोइ परिगरो ए, ते ममता मांहे खरो ए ॥ १८ ॥
सचित्तादिक सगला ताहिं, गृहस्थ रे परिग्रहा मांहिं ।
कह्यो उववाइ उपांग में ए, बले सुयगढायंग में ए ॥ १९ ॥

त्यांरो श्रावक कीयो परमाण, त्याग्या त्यांरी विरत पिच्छाण ।
 वाकी इविरत मे राखीया ए, सुतर छे साखीया ए ॥ २० ॥
 सचितादिक सारां मांहि, सावां रे इविरत नांहि ।
 त्यां मुर्छा परहरी ए ममता उवरी ए ॥ २१ ॥
 परिग्रहो दीयां धर्म ह्वेता, तो जिण आ-या देत ।
 कहे कहे ने दरावता ए, धर्म करावता ए ॥ २२ ॥
 इण घन थी अनर्थ हांय, धर्म धुरा न चले कोय ।
 भव भटकावणों ए, दुर्गति पोचावणो ए ॥ २३ ॥
 घन थी धर्म न थाय, तीन काल रे मांहि ।
 साचो कर जाणजो ए, संका मत आणजो ए ॥ २४ ॥
 इण परिगरा माहे रक्त, त्यांने आवै नही समक्त ।
 मुरझ्या तिण मे सही ए, समक्त पडे नही ए ॥ २५ ॥
 ज्यारे परिगरा सूं छै प्रीत, ते हूसी घणा फजीत ।
 नरकां जावसी ए, भीकां खावसी ए ॥ २६ ॥
 इण थी वधे संसार, जाए नरक निगोद मभार ।
 घणो रडवडे ए, जक नही पडे ए ॥ २७ ॥
 सचित अचित द्रव्य छें ताहि, ग्रहस्थ रे अव्रत मांहि ।
 ज्यांरो त्याग कीयो नही ए, त्यारो पाप लागे सही ए ॥ २८ ॥
 तीनां करणां लागे पाप, तिण सूं दुख भुगते आप ।
 त्यांने त्या-यां विरत हुसी ए, जव जीव होसी खुसी ए ॥ २९ ॥
 करण जोग घालीजे जाण, कीजे सुव पचखाण ।
 चोखे चित पालीये ए, दोषण टालीये ए ॥ ३० ॥

व्रत छठा

(दिशि परिमाण व्रत)

ढाल : ६

दुहा

पांच अणुव्रत धारतां, मोटी बांधी पाल ।
छोटा री इविरत रही, ते पाप आवै दगचाल ॥ १ ॥
तिण इविरत मेटण भणी, पहलो गुणव्रत देख ।
दिस मरजाद मांडले, टाले पाप विशेष ॥ २ ॥
माहिंली इविरत मेटवा, दूजो गुणवरत धार ।
द्रव्यादिक त्यागन करे, भोगादिक परिहार ॥ ३ ॥
जे द्रव्यादिक राषीया, तेहनी इविरत जाण ।
अर्थ डंड छूटे नहीं, अनर्थ डंड पचखाण ॥ ४ ॥
छठो वरत श्रावक तणो, करे दिस तणो परमाण ।
हिंसादिक त्यागे छहू दिस तणा, मन माहें सुमता आण ॥ ५ ॥

ढाल

[इश पुर क बल कोई न लेसी]

उंची नीची दिस कोस बे च्यार, तिण बाहिर सावध परिहार ।
त्रिछी दिस पांच सो परमाण, इण विघ दिस तणा पचखाण ॥ १ ॥
प्रथवीयादिक जीव न मारे, छोटाइ भूठ तणो परिहारे ।
चोरी न करे मइथुन टाले, धन सूं ममता पाछी वाले ॥ २ ॥
माहें बेठो पिण बारलो लेवो ने देवो, तिण रा पिण त्याग करे सयमेवो ।
बारली वसत माहें मगावे नाही, माहिंली वसत बारे मेले नहिं काई ॥ ३ ॥
जिगन तो एक आश्रव त्यागे कोई, उतकष्टा आश्रव त्यागे पांचोइ ।
एक करण तीन जोग सूं जाण, बारला आश्रव ना करे पचखाण ॥ ४ ॥
कोइ दोय करण तीन जोगां सूं ताहिं, त्याग कर ने अन्नत देवे मिटाय ।
कोइ तीन करण तीन जोगा जाण, पाचोइ आश्रवनां करे पचखाण ॥ ५ ॥
बारला आश्रवनां कीधा त्याग, इविरत छोडी छै आण वेंराग ।
षेत्र थकी सर्व षेत्र में जाण, काल थकी जावजीव पचखाण ॥ ६ ॥
कोइ देवादिक तिण ने न्हांखे बार, तो पिण नहिं सेवे तिहां आश्रव दुवार ।
कोइ कष्ट पड्यां राखे छे अगार, पोता नी कचाइ जांणी तिणवार ॥ ७ ॥

कोइ मित्री देवादिक ने बोलवे, तिण आगें आपरो काम करावे ।
 तिण पिण छठो व्रत लियो तिवार, इतरो तो पहिलां राख्यो छै आगार ॥ ८ ॥
 इत्यादिक राखे आगार अनेक, आगार विना करे नहिं एक ।
 आगार राख्यां इविरत रो पाप लागे, विना आगार करे तो छठो व्रत भांगे ॥ ९ ॥
 छठ व्रत तणो छे बोहत विसतार, ते कहितां कहितां न आवे पार ।
 ओ तो संक्षेप मातर कह्यो विसतार, बुद्धिवंत जाण लेसी अनुसार ॥ १० ॥
 छठे व्रत एहवा पचखाण, माहिं घणा दरवादिक जाण ।
 तेहनी इविरत टालण काज, सातमो व्रत कह्यो जिणराज ॥ ११ ॥

व्रत सातमों

(उपभोग परिभोग परिमाण व्रत)

ढाल : ७

दुहा

सातमों व्रत श्रावक तणो, तिण में उवभोग परिभोग नो त्याग ।
गमती वस्त त्यागे तेहने, आवे छे इधिक वैराग ॥ १ ॥
भोग आवे एक वार मे, ते कहिये उवभोग ।
वारुंवार आवे भोग जीव रे, तिण ने कहा छे परिभोग ॥ २ ॥
उवभोग परिभोग श्रावक तणें, इविरत में कहा भगवान ।
त्यांरो त्याग करे सद्गुरु कने, ते सातमों व्रत परधान ॥ ३ ॥
उवभोग परिभोग काम भोग छे, माहा दुखां री खान ।
तिणने किपाक फल री दीधी ओपमा, भगवंत श्री विरघमान ॥ ४ ॥

ढाल

[इण पुर कबल कोई न लेसी]

अगोचा दातण फल अभंगण, उगटणो पीट्टी ने मंजण ।
वत्थ वलेपण पूफ आभरण, धूपखेवण पीवण ने भखण ॥ १ ॥
ओदन सूप विगे साग विमास, महुंर जीमण पांणी मुखवास ।
वाहण सयण पानीय सचित्त, द्रव संख्या कर त्यागे एक चित्त ॥ २ ॥
ए छावीस बोल तणो परमाण, धिन त्यागे ते सुमता आण ।
नाम लेइ विवरो कर लीजे, करण जोग घाले व्रत कीजे ॥ ३ ॥
ए छावीस बोल भोगवीयां संताप, भोगवाया पिण लागे पाप ।
अणमोद्यां धर्म किहा थी होइ, तीनूइ करण सरीषा जोइ ॥ ४ ॥
मूरख रे दिल वात न बेसे, न्याय छोड भगडा मे पेसे ।
सुगुर छोड कुगुर सू परचा, भारी हुवे कर उधी चरचा ॥ ५ ॥
विरत इविरत कही जिण न्यारी, समझे नहिं तिण रे कर्म भारी ।
मूढ मती नव तत्व नहिं जाणे, लीधी टेक छोडे नहिं ताणे ॥ ६ ॥
छावीस बोल तणो आगार, ते तो इविरत आश्रव दुवार ।
त्यामें केइ उवभोग ने केइ परिभोग, त्याने भोगवे ते तो सावद्य जोग ॥ ७ ॥
त्यांरो त्याग करे मन सुमता आण, सकत सारुं करे पचखाण ।
एक करण ने तीन जोगां सूं त्यागे, जव पीते भोगवण रो पाप न लागे ॥ ८ ॥

दोय करण तीन जोग सूं पचखाण,
 ते पोते पिण भोगवे नहि कांड,
 तीन करण तीन जोगां गुं त्यागे,
 भोगवे नहि भोगवावे नांही,
 जे जे सेरी छूटी रही ताहि,
 जे सेरी रुकी ते संवर दुवार,
 छूटी सेरी में श्रावक खावे ने खवावें,
 रुकी सेरी में खावे खवावे नांही,
 श्रावक ने मांहो मां छ कय खवावे,
 ए इविरत रा सावद्य जोग व्यापार,
 श्रावक ने मांहों मां छ कय खवावे,
 तिण माहें धर्म मिथ्याती जाणें,
 विरत आश्री श्रावक नें कह्यो छें धर्मी,
 तिण सूं श्रावक नें धर्मी अधर्मी जाणो,
 श्रावक रो खाणो पीणो ने गेहणों,
 ते तीनोंइ करण इविरत में घाल्यो,
 शब्द रूप रस गंध ने फासा,
 एहीज उवभोग ने परिभोग,
 राख्या छे तिणरी इविरत जाणो,
 त्याने त्याग्यां होसी संवर सुखदाय,
 उवभोग परिभोग भोगवे जाण,
 भोगवावे तिणने दूजे करण पाप,
 अनुमोदे ते सरावे जाण जाण,
 श्रावक रा उवभोग परिभोग,
 जघन मम्मि ने उतकष्टा जाण,
 त्यांरो खाणो पीणो इविरत में जाणो,
 जघन श्रावक रे इविरत घणेरी,
 ते इविरत आश्रव पाप रो नालो,
 श्रावक तप करे आण हुलास,
 सावद्य जोग रूंच्यां संवर हूवो रुडो,
 तप पूरा हूयां पछे इविरत आमार,
 तिण सूं पाप कर्म लागे छें आय,

तिण छ भांगां रो पाप टाल्यो जाण ।
 ओरां ने पिण भोगवावे नांही ॥ ९ ॥
 तिण ने नव ही भांगां रो पाप न लागे ।
 भोगवण वाला ने सरावे नहि कांई ॥ १० ॥
 तिहां पाप कर्म लागे छें आय ।
 तिण सूं पाप न लागे लिंगार ॥ ११ ॥
 खातां ने पिण छूटी सेरी में सरावे ।
 अनुमोदना पिण न करे कांई ॥ १२ ॥
 बले छ कय मारे ने जीमावे ।
 तिण माहें धर्म नही छें लिंगार ॥ १३ ॥
 बले छ कय मारे ने जीमावे ।
 कर्म तणे वस उंची ताणें ॥ १४ ॥
 इविरत आश्री कह्यो छें अधर्मी ।
 पनवणा भगोती सूं जोय - पिछाणो ॥ १५ ॥
 मांहों मा एक एक ने लेणों ने देणों ।
 उवाइ ने सूयगडाभंग मे चाल्यो ॥ १६ ॥
 राख्या छे तिणरी लग रही आसा ।
 तिणरा मेले छे विवध संजोग ॥ १७ ॥
 तिणरो समय समय पाप लागे छे आणो ।
 तिण सूं इविरत रा पाप मिट जाय ॥ १८ ॥
 तिण सूं पाप लागे छें आण ।
 तिण सूं पिण होसी बोहत संताप ॥ १९ ॥
 तिणरे पिण पाप लागे छें आण ।
 तीनोंइ करणा छे सावद्य जोग ॥ २० ॥
 श्रावक गुण रत्ना री खाण ।
 तिणने रुडी रीत पिछाणो ॥ २१ ॥
 उतकष्टा श्रावक रे इविरत थोड़े री ।
 तिण सूं पाप आवे दगचालो ॥ २२ ॥
 उवास बेलादिक करे छ मास
 तपसा सूं कर्म करे चक्रचूरो ॥ २३ ॥
 खाए पीए ते सावद्य जोग व्यापार ।
 ते पाप होसी जीवें ने दुखदाय ॥ २४ ॥

पारणो करे ते पहले करण जाण, करावे ते दूजे करण पिछाण ।
 सरावणवालो छै तीजे करणो, या तीना रो बुधवत करसी निरणो ॥ २५ ॥
 पहले करण तो पाप बंधावे, तो बीजे करण धर्म किहा थी थावे ।
 तीजे करण धर्म नहि छै लिगार, या तीना रा सावद्य जोग व्यापार ॥ २६ ॥
 सावद्य जोग सू लागे छे पाप, तिण सू आगना नहि दे आप ।
 श्रावक ने जीमाया धर्म ह्वेत, तो अरिहंत भगवत आगना देत ॥ २७ ॥
 केइ कहे श्रावक ने जीमाया धर्म, ते भूल गया अग्यानी भर्म ।
 पोते पिण जीम्यां लागे छै पाप कर्म, औरा ने जीमाया किम हुवे धर्म ॥ २८ ॥
 कोइ कहे लाडू खवाया धर्म, ओ तप कर म्हारा काटसी कर्म ।
 तिणसू म्हे ओरा ने लाडूडा खवावा, पछे लाडूआं साटे म्हे उवास करावा ॥ २९ ॥
 पछे तो उ करसी ते उगने होय, लाडू खवाया धर्म म जाणो कोय ।
 लाडू खाधा खवाया तो एकत पाप, ते श्री जिण मुख सू भाख्यो छै आप ॥ ३० ॥
 श्रावक ने लाडू खवायां धर्म होय, तो एहवो धर्म करे हर कोय ।
 बडा बडा श्रावक हुआ घनवत, ते लाडूआ खवाय ने धर्म करत ॥ ३१ ॥
 बडा बडा सेठ सेन्यापती ताहि, त्यारे हुती धर्म री चाहि ।
 लाडू खवाया धर्म हुवे तो आचो नहि काढत, लाडू खवाय काम सिराडे चाढत ॥ ३२ ॥
 श्रावक नें लाडू खवायां हुवे धर्म, खवावण वाला रा कंट जाए कर्म ।
 तो चक्रवत बलदेव वासुदेव, ओ तो धर्म करता सयमेव ॥ ३३ ॥
 श्रावक ने लाडू खवाया हुवे धर्म, श्रावक ने लाडू खवाया कटे कर्म ।
 तो च्यारू जात रा देव सयमेव, ओ तो धर्म करत ततखेव ॥ ३४ ॥
 एहवा धर्म थी सिव सुख होय, तो देवता आगो न काढता कोय ।
 एहवो धर्म करी पुरत मन खात, देव भव थी पाधरा मोष मे जांत ॥ ३५ ॥
 लाडू खावा खवाया धर्म छै नाही, खाणो खवावणो इविरत मांही ।
 इण माहे धर्म सरखे ते भोला, त्यारे मोह कर्म ना छै रे भखोला ॥ ३६ ॥
 लाडू खवाया धर्म नहि रे भाइ, आ तो उघाड़ी दीसे विकलाइ ।
 ओ लोलपणों जीभ्या रो सवाद, तिण सू कर्म बधे छे वाद ॥ ३७ ॥
 खाणो खवावणो त्यागे सोय, जब सातमो व्रत श्रावक रे होय ।
 जव रुकसी आवाता पाप कर्म, तेहिज उजल संवर धर्म ॥ ३८ ॥

ढाल : ८

ढुहा

उबढोग ढरिढोग ने, सातढो व्रत ढरघान ।
तिण ढाहे उढवेसीया, ढनरे करढांदान ॥ १ ॥

ढाल

[इण ढुर कंढल कोई न लेसी]

इट लीहाला सोनार ठंठारा, ढडढूंजा कुढार लुहारा ।
ए कर्ढ करी ने ढेट ढरीजे, ते अंगाली कर्ढ कहीजे ॥ १ ॥
ढेचे साग ढात कद ढूल, ढल ढीजादिक घान तंदूल ।
ढेचे ढूलदिक सर्व ढनराई, ते वण कर्ढ कहीजे ढाइ ॥ २ ॥
ढेचे गाडादिक रथ कराई, चोकी ढाट ढिलग ढणाई ।
किवाड थढादिक ढेचावे, तीजे साडी कर्ढ कहावे ॥ ३ ॥
हाट हुवेली ढाडे थाढे, रोकड नांणो ढ्याजे आढे ।
गाडादिक ढाडे दे जेह, ढाडी कर्ढ कहीजे तेह ॥ ॡ ॥
ढेचे नालेरादिक ढोडी, ढले अखरोट सोढारी तोडी ।
ढथर ढोड ढल ढीसे घान, ढांचढों ढोडी करढांदान ॥ ॡ ॥
कसतुरी कढडा गजदंता, ढोती आगर ढाढ अनंता ।
चर्ढ हाड सींग जुहार, छठो कर्ढांदान ए घार ॥ ६ ॥
सातढें ढेदे ढेणसल आल, ढेचे लाख गुली हरीयाल ।
कसूंढादिक रांगण ढास, ढोषण घणा कहुढा जिण तास ॥ ७ ॥
ढधु ढास ढांखण ने ढारु, ढारी विणे कही जिण च्यारूं ।
हुध ढही घ्रत तेल गुल जाण, आठढों ते रस ढिणज ढिच्छांण ॥ ८ ॥
ढेचे उंट गवा नें गाय, घोडा हाथी ढहल ढंगाढ ।
ऊन रूइ रेसढ थान वणाढ, केस विणज ए नवढों थाढ ॥ ९ ॥
सीगीढोहरो आफूसार, नीलोथूथो सोवन खार ।
हरवंसी निरवंसी विणजे, ढसढो ते ढिस विणज कहीजे ॥ १० ॥
तिल सरसूं ढ्रढुख ढीलावे, इखू रस ना घाण ढंडावे ।
जंतढीलण इग्यारढों कर्ढ, करता ढांचे घणो अघर्ढ ॥ ११ ॥

कान फडावे नाक बीघावे, बलदादिक ने तणीय नखावे ।
 बारमो करमादान निलच्छण, व्रतघारी ने लागे लच्छण ॥ १२ ॥
 जाले गाम नगर दे लाय, अटव्यादिक ने दे रे लगाय ।
 वाले मुरडा ने दव आपे, तेरमो कर्म इसी पर व्यापे ॥ १३ ॥
 चवदमे भाजे नदी ब्रह तीर, खेत माहे आण घाले नीर ।
 सर ब्रह तलाव करे सोखत, ए कर्म करी जीव नरक पडत ॥ १४ ॥
 साघ विना सगला पोखीजे, पनरमों असजती पोख कहीजे ।
 रोजगार लेइ त्या उपर रेवे, खाणो पीणो असजती ने देवे ॥ १५ ॥
 ए पनरे कर्म तणो विसतार, मरजादा बाघ करे परिहार ।
 पनरेई कह्या सावद्य व्यापार, करे आजीविका चलावण हार ॥ १६ ॥

व्रत आठमों

(अनर्थ दण्ड विरमण व्रत)

ढाल : ६

दुहा

सात व्रत पूरा थया, हिवै आठमा नो विसतार ।
अर्थ अनर्थ ओलखवा भणी, तेहनो सुणो विचार ॥ १ ॥
सात व्रत आदरतां थकां, बाकी अव्रत रहि छे ताहि ।
तिण सू निरतर जीव रे, कर्म लागे छे आय ॥ २ ॥
तिण इविरत रा दोय भेद छे, तिणमें एक तो अनर्थ डंड जाण ।
एक इविरत अर्थे कही, तिण सू पाप लागे छे आण ॥ ३ ॥
अर्थ ते मुतलब आपरे, सावद्य करे विविध प्रकार ।
अनर्थ ते मुतलब विना, पाप करतां पिण न डरे लिमार ॥ ४ ॥
पाप करे छे अर्थे ने अनर्थे, त्याने छुडी रीत पिछाण ।
अर्थ दंड तो छोडणो दोहिलो, अनर्थ दंड रा करे पचखाण ॥ ५ ॥
अनर्थ दंड तणा भेद अति घणा, ते पूरा कह्या न जाय ।
पिण थोडा सा परगट करुं, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[इण पुर कंबल कोई न लेसी]

पहिलो भेद कह्यो अपघान, तिण थी बाधे अनर्थ खान ।
वीजे भेदे प्रमाद आखे, घ्रतादिक ठाम उचाड़ा राखे ॥ १ ॥
सस्त्र जोड़ करे विसतार, पाप उपदेश दे विवध प्रकार ।
ए अनर्थ रा करे पचखाण, सूची पाले जिणवर आण ॥ २ ॥
ए अनर्थ डड केम कहीजे, अर्थ डड सेती ओलखीजे ।
तेहना भेद छे विविध प्रकार, सखेप मात्र करु विसतार ॥ ३ ॥
माठा ध्यान रा दोय परकार, जग में जे ध्यावे नर नार ।
आत्त रुद्र ध्यान ध्यावे लोग, पामें बहु विघ हर्ष ने सोग ॥ ४ ॥
सव्दादिक इंद्रयां नां भोग, तेहनों ध्यावे संजोग विजोग ।
रोगादिक लागे अणगमता, भोग भोगवता ल्यावे ममता ॥ ५ ॥
इण विघ जीव रचे ने विरचे, आप अर्थ कुटम्ब ने परचे ।
ठकुर चाकर सगा सनेही, वोहरा ने घुरीया आद देइ ॥ ६ ॥

जिण सुखीए सुख वेदे आप, तिण दुपीये पामे सोंग सताप ।
 ते पिण टाले सुमता आण, अनर्थ ध्यान ध्यावा पचखाण ॥ ७ ॥
 छद्र ध्यान हिंसा जे ध्यावे, भूठ चोरी वदीवांन दरावे ।
 अर्थ करे पिण धूजे तन, अनर्थ ध्यान तजे एक मन ॥ ८ ॥
 घ्नत तेलादिक विणज करता, धूपादिक कारज अण सरता ।
 इण विच अर्थ उघाडा थाय, तिणरो जतन करे चित ल्याय ॥ ९ ॥



व्रत नवमों

(सामायिक व्रत)

ढाल : १०

ढुहा

पांच अणुव्रत फेल्तां, गुण व्रत दे संकड़ाय ।
 पिख्या व्रत जिम चोटली, कहे ओपमा ल्याय ॥ १ ॥
 जिम देवल इंडो चढे, मुगट मस्तक अंत ।
 जिम समदिष्टी जीवड़ा, सिख्या व्रत पालंत ॥ २ ॥
 व्रत आठ पहेलां कह्या, जावजीव लग जाण ।
 सिख्या व्रत च्यारां तणा, विविध पणे पचखांण ॥ ३ ॥
 सामायक महोरत एक नी, जो करे चित्त ल्याय ।
 देसावगासी व्रत ना, जिम करे तिम थाय ॥ ४ ॥
 पोसो हुवे दिन रात नो, जो ध्यावे निरमल ध्यान ।
 बारमो व्रत सुध साध नें, देवे सुभतो दान ॥ ५ ॥

ढाल

[मम करो काया माया कारमी]

सामायक सुमता पणे, सावद्य जोग पचखांण जी ।
 काल थी मोहरत एक नी, दुविहं तिविहेणं जाण जी ॥
 सिख्या जी व्रत आराधी ए ॥ १ ॥
 उतकष्टे भांगे करे, तीन करण तीन जोग जी ।
 ग्रहवासा तणी बात नों, न करे हर्ष न सोग जी ॥ २ ॥
 उपगरण समाइ करतां राषीया, तिण उपरंत कीया पचखांण जी ।
 राख्या ते इविरत परिभोग री, तिणरो पाप निरंतर जाण जी ॥ ३ ॥
 उपगरण समाइ में राखिया, त्यारो पिण करे परमाणं जी ।
 बाकी तीन करण तीन जोग सूं, पाचं आश्रव ना पचखांण जी ॥ ४ ॥
 ते उपगरण पेहरे ओढे वावरे, बिछोवणादिक करे वाखंवार जी ।
 ते सरीर री सातादिक कारणे, ते तो सावद्य जोग व्यापार जी ॥ ५ ॥
 वले गेहणां आभरण कनें रह्या, ते पिण इविरत में जाण जी ।
 तिण रो पिण पाप निरंतर, समे समे लागे छै आंण जी ॥ ६ ॥
 ते गेहणा आभरण रा जतन करे, त्यांसूं राजी हुवे तिण वार जी ।
 आगो पाछो समारे तिण अवसरे, सावद्य जोग व्यापार जी ॥ ७ ॥

उपगरण गेहणा कने राखीया,
 काम तो आवे छे परिभोग मे,
 समाइ री तो दीधी जिण आगना,
 उपगरण ने गेहणा परिभोगव्या,
 समाइ में श्रावक री आत्मा,
 भगोती रे सतषंघ सात में,
 अधिकरण ते सस्त्र छ्ज काय रो,
 तिणरी सार सभाल जतन करे,
 कपडो ओढे पेहरे बावरे,
 तिण अधिकरण नें सांतरो कीयो,
 असमात सरीर रो कार्य करे,
 तिण सू पाप कर्म लागे जीव रे,
 हालवो चालवो सरीर नो,
 ते सावद्य जोग श्री जिण कह्या,
 जिण किरतब कीया जिण आगना नही,
 जिण किरतब कीया जिण आगना,
 उपगरण गेहणा ने सरीर ना,
 त्याने जिण आगना नही सर्वथा,
 कने राख्या छे त्यारा जतन करे,
 समाइ करता ज्याने त्यागीया,
 श्रावक रा उपगरण इविरत मभ्के,
 त्याने, सेववो सावद्य जोग छे,
 कोइ कहे सामाइ कीधी तेहने,
 तिणरे पाप रो आगार किहा थी रह्यो,
 तेहने जाब इम दीजिये,
 सर्व सावद्य रा त्याग साधां तणे,
 छ्ज भांगा समाइ में पचखीया,
 तिणरे पाप लागे छे निरंतर,
 तिणरे पुत्रादिक हूआं हरषत हुवे,
 इत्यादिक आगार समाइ मभ्के,
 गहणो पडतो हुवे तेहने,
 ते पिण सावद्य जोग छै,

ते तो नहि आवे समाइ रे काम जी ।
 सुख साता सोभादिक तांम जी ॥ ८ ॥
 ते तो समाइ छे संवर धर्म जी ।
 तिण सू तो लागे पाप कर्म जी ॥ ९ ॥
 अधिकरण कही जिण राय जी ।
 पहिला उदेसा रे माय जी ॥ १० ॥
 तिण ने सांतरो करे अंसमात जी ।
 ते सावद्य जोग साख्यात जी ॥ ११ ॥
 वले वियावचादि करे ताहि जी ।
 तिण री आगना न दे जिणराय जी ॥ १२ ॥
 ते तो सावद्य जोग छे ताहि जी ।
 तिणरी आगना न दे जिणराय जी ॥ १३ ॥
 सुख साता काजे करे जाण जी ।
 तिण सू पाप कर्म लागे आंण जी ॥ १४ ॥
 ते सावद्य जोग साख्यात जी ।
 ते निरवद जोग विख्यात जी ॥ १५ ॥
 जतन करे समाई मभ्कार जी ।
 सावद्य जोग तणो छे व्यापार जी ॥ १६ ॥
 ओ तो राख्यो समाइ मे आगार जी ।
 त्यारा जतन नही करणा लिगार जी ॥ १७ ॥
 कह्या उवाइ नें सुयगडाअंग माय जी ।
 तिण सू आगना न दे जिणराय जी ॥ १८ ॥
 सावद्य जोग पचखाण जी ।
 कोइ एहवी पूछा करे आण जी ॥ १९ ॥
 सर्व सावद्य नहि पचखाण जी ।
 तेहनी करो पिच्छाण जी ॥ २० ॥
 तिणरे तीन भांगां रो आगार जी ।
 तिणरा जोग छै सावद्य व्यापार जी ॥ २१ ॥
 मूआ गया हुवे सोग जी ।
 एहवा सामाइ मे सावद्य जोग जी ॥ २२ ॥
 जतन करे सामाइ रे मांहि जी ।
 तिणरी आज्ञा न दे जिणराय जी ॥ २३ ॥

शरीर कपडादिक तेहना, जतन करे सामाइ रे मांय जी ।
 लाय चोरादिक ना भय थकी, एकांत ठामें जेणा सूं जाय जी ॥ २४ ॥
 वले सरप राजादिक ना भय थकी, एकंत ठामें जयणा सूं जाय जी ।
 ते पिण सावद्य जोग छै, आगार सेव्यो समाइ रे मांहि जी ॥ २५ ॥
 लाय सर्पादिक रा भय थकी, जेणा सूं नीकल जाए बार जी ।
 पारवती भिनख वेठो हुवे, त्याने तो नहीं लेजावे लार जी ॥ २६ ॥
 आपरो तो आगार राखीयो, औरां रो तो नहि छे आगार जी ।
 औरां ने त्याग्या समाइ मभे, त्याने किण विघ लेजावे बार जी ॥ २७ ॥
 लाय चोरादिक रा भय थकी, राख्या ते उपधि ले जाय जी ।
 पारवती कपडादिक हुवे घणा, त्याने बारे ले जावे नहिं ताहि जी ॥ २८ ॥
 राख्या ते दरब ले जावतां, समाइ रो भंग न थाय जी ।
 ज्याने त्याग्या छे, त्याने लेजावतां, समाइ रो व्रत भंगे जाय जी ॥ २९ ॥
 तिण सूं सर्वथा सावद्य जोग रा, समाइ में नहिं पचखांण जी ।
 आगार उपरंत सावद्य जोग रा, पचखांण कीया छे पिछांण जी ॥ ३० ॥
 तिण सूं श्रावक रे त्याग कीया तके, ते सावद्य जोग रा पचखांण जी ।
 सर्वथा सावद्य जोग रा, ते तो त्याग सावां तणा जांण जी ॥ ३१ ॥
 उपगरण समाइ में राखीया, ते तो पेले करण लेजो जांण जी ।
 ते औरां ने भोगावसी किण विघे, औरां रा तो कीया छे पचखांण जी ॥ ३२ ॥
 द्रव्य थकी तो कने तिण उपरंत रा, सगलां रा कीया पचखांण जी ।
 खेत्र थकी सर्व खेत्र मभे, काल थी मोहरत जांण जी ॥ ३३ ॥
 भाव थी राग द्वेष रहीत छै, तव संवर निरजरा गुण थाय जी ।
 इण रीते समाइ ओलख करे, जब भावे समाइ हुवे ताय जी ॥ ३४ ॥
 अवर सगलां ने त्यागे दिया, त्यांसूं इज करे संभोग जी ।
 जय भंगे समाइ व्रत तेहनों, इणरा वरतीया सावद्य जोग जी ॥ ३५ ॥
 कोड समाइ में समाइवाला तणों, कारज करणो छे जांण जी ।
 तिणरो कारज कीयां समाइ भंगे नहीं, तिणरो पिण करे परिमाण जी ॥ ३६ ॥
 समाइ में मांहोंमां कारज करे, ते तो सूत्र मांहें दीपे नहिं ताय जी ।
 तिणरी निश्चै तो थापणी आवे नही, ग्यांनी वदे ते सत्य वाय जी ॥ ३७ ॥
 कोड कहे समाइ में राखी पूजणी, राखी ते दया रे काम जी ।
 तिणरो जाव सुणो विवरा सुघ, चित्त राखे एक ठाम जी ॥ ३८ ॥
 सरीरादिक पूजे समाइ मभे, मातरादिक परठे छे पूज जी ।
 एहवा कारज री जिग आगना नही, तिण मे धर्म कहे ते अबूज जी ॥ ३९ ॥

सरीर ने पूंजे परठे मातरो, ते तो सरीरादिक नो छे काज जी ।
 जो धर्म तणो कार्य हुवे, तो आगना दे जिणराज जी ॥ ४० ॥
 जो पूंजणो परठणो करे नही, तो काया थिर करणी एक ठाम जी ।
 हस्तादिक ने दिना हलवीया, रहणी ना आवे छे तांम जी ॥ ४१ ॥
 वले आ बावा लघू बडी नीत नी, खमणी न आवे छे तांम जी ।
 तिण सूं पूंजे छे जायगा जोय ने, ते समाइ तणो नहि कांम जी ॥ ४२ ॥
 माखी माछर कीडी आद दे, ते तो लागे सरीर रे आय जी ।
 ते खमणी नावे छे तेहथी, तिण सूं पूंजे परीकरे ताय जी ॥ ४३ ॥
 जो काया थिर राखे एक आसणें, तिण रे पूंजण रो काई कांम जी ।
 परीसो खमणी नावे तेह सू, पूंजणी राखे छे तांम जी ॥ ४४ ॥
 जो इतरी कह्या समझ पड़े नही, तो राखणी जिण परतीत जी ।
 जिण आगना बारे धर्म सरघ ने, नही करणी एहवी अनीत जी ॥ ४५ ॥
 सरीर उपगरण रा जतन कीयां, सावध जोग व्यापार जी ।
 सरीर सू किरतब निरवद करे, तिण नें जिण आगना श्रीकार जी ॥ ४६ ॥



व्रत दसमों

(देसावगासी व्रत)

ढाल : ११

दुहा

दसमा देसावगासी वरत छै, तिणरा छै भेद अनेक ।
थोडा सा परगट कळं, ते सुणजो आण ववेक ॥ १ ॥

ढाल

(मम करो काया माया कारमी)

देसावगासी व्रत ना, भांगा हुवे विघ दोग जी ।
पेहलो छे छठा व्रत नी परे, दूजो सातमा ज्युं जौय जी ॥
सिख्या जी व्रत आराधी ए ॥ १ ॥

दिन परते प्रभात थी, छ दिसरो कीघो परिमाण जी ।
मरजादा कीघी तिण बारला, पांचूं आश्रव ना पचखांण जी ॥ सि० २ ॥

जे भोमका राखी छे मोकली, तिण माहे द्रव्यादिक व्यापार जी ।
मरजादा सकत सारु करे, भोगादिक परीहार जी ॥ ३ ॥

काल थी दिवस ने रात नो, भावना विवघ प्रकार जी ।
करण जोग घाले जेतला, जेहवो करे परीहार जी ॥ ४ ॥

वले जगन नवकारसी आदि दे, उतकष्टो घाले काल कोय जी ।
मरजाद सूं त्यागे सावघ भणी, जिम करे तिम होय जी ॥ ५ ॥

कोइ करे छै त्याग हिंसा तणो, तिण में काल रो करे परमाण जी ।
ते त्याग पूरो हूआं तेहने, आगे तो नही पचखांण जी ॥ ६ ॥

हिंसा भूळ चोरी मैइथुन नो, वले पांचमो परिग्रह जांण जी ।
ए पाचोंइ आश्रव दुवार नो, काल घाले ने करे पचखांण जी ॥ ७ ॥

परमाण करे छावीस बोल नो, पनरें कर्मादान तणो परमाण जी ।
वले सच्चितादिक चवदे नेम नो, यांरा नित नित करे पचखांण जी ॥ ८ ॥

नोकारसी पोरसी ने पुरमढ, एकासणो आंबलादिक तास जी ।
उपवास बेलादिक तप करे, उतकष्टो करे तप छ मास जी ॥ ९ ॥

तप तणो कष्ट हूवो तको, ते करणी निरजरा तणी जांण जी ।
खावा पीवा री विरत हुइ तका, दसमों व्रत हूवो आंण जी ॥ १० ॥

जे जे सावघ त्यागे तेहमें, काल रो करे परमाण जी ।
ते तो दशमों व्रत नीपनो, ते जावजीव नहि पचखांण जी ॥ ११ ॥

व्रत इग्यारमों

ढाल : १२

(पोषध व्रत)

दुहा

श्रावक रो व्रत इग्यारमों, पोषो कह्यो छे भगवान ।
तीजो सिख्या व्रत रलीयामणो, ते सुणो सुरत दे कान ॥ १ ॥

ढाल

(मम करो काया माया कारमी)

पोषध व्रत वखाणीये, पचखे चउ विघ आहार जी ।
अबम मणी सोवन तजे, माला वणग वलेपण परिहार जी ॥
सिख्या जी व्रत आराधीये ॥ १ ॥

सत्य मुसलादिक आद दे, सावद्य जोग तणा पचखाण जी ।
काल थी दिवस ने रात रो, एक पोसा तणो परिमाण जी ॥ २ ॥

जगन दोय करण तीन जोग सूं, करे सावद्य जोग पचखाण जी ।
कोइ उत्कष्टे भागे करे, तीन करण तीन जोग सूं जाण जी ॥ ३ ॥

द्रव्य थकी तो कने तिण उपरत रा, कीया सर्व दरवां रा पचखाण जी ।
पेतर थकी सर्व पेतर मभे, काल थी दिवस ने रात जाण जी ॥ ४ ॥

भाव थकी राग द्वेष रहीत करे, वले चोखे चित उपीयोग सहीत जी ।
जब कर्म सके छे आवता, वले निरजरा हुवे ह्खी रीत जी ॥ ५ ॥

उपगरण पोसा माहे राखिया, तिण उपरत कीया पचखाण जी ।
राख्या ते इविरत परिभोग री, तिणरो पाप निरतर लागे आण जी ॥ ६ ॥

पोसा ने सामायक वरत ना, सरीषा छे पचखाण जी ।
सामाइ तो मोहरत एक नी, पोसो दिन रात रो जाण जी ॥ ७ ॥

पोसा ने सामायक वरत में, यां दोया मे सरीषो छे आगार जी ।
ते कह्या छ सगला इविरत मे, ते जोय करो निसतार जी ॥ ८ ॥

जब कोइ कहे पोषध वरत मे, मणी सोवनादिक पचखाण जी ।
तिण सूं मणी सोवन कने राखीया, पोसो भागे गयो जाण जी ॥ ९ ॥

पोसा माहे कने राखीया, मणी सोवनादिक जाण जी ।
तिण उपरत पचखाण छे, उत्तर एह पिच्छाण जी ॥ १० ॥

उमूक कहिता मूके दीया, त्या मणी सोवन रा पचखाण जी ।
कने रह्या त्यारी इविरत रही, भगोती सूं करजो पिच्छाण जी ॥ ११ ॥

मणी सोवन रा जाबक पचखाण हुवे, तो उमूक रो पाठ कहिता नांहि जी ।
 ओ तो निरणो उघाड़ो दीसे कीयो, विचार देखो मन मांहि जी ॥ २२ ॥
 श्रेणक ने किस्नजी री राणियां, इत्यादिक हुइ राणीयां अनेक जी ।
 त्यां पोसा कीया दीसे गेहणा थकां, समभो आंण ववेक जी ॥ १३ ॥
 त्यांरी चूडीया में हीरा पना जड़या, वले दांतां मे जांणीजे मेख जी ।
 ओर गेहणा त्यांरे पेहरणे, त्यां उतारख्या नहिं दीसे छे एक जी ॥ १४ ॥
 भारी भारी जूंहर चूड्या जड्या, वले भारी २ हाथ गला मांय जी ।
 ते सगलाइ केम उतारसी, ओ तो मिलतो न दीसे छे न्यय जी ॥ १५ ॥
 त्या कीधी समाइ संख्या काल री, समाइ करी रात परभात जी ।
 ते खिण खिण मे केम उतारसी, आ पिण मिलती न दीसे छै वात जी ॥ १६ ॥
 समाइ मे गेहणा न राखणा, तो चूडो न राखणो ताहि जी ।
 गेहणो ने चूडो तो एक हीज छै, दोनूई आभूषण मांहि जी ॥ १७ ॥
 सामायक ने पोसा तणी, दोया री विध जाणो एक जी ।
 रीत दोयां री बरोबरी, समभो ने आण ववेक जी ॥ १८ ॥
 इहलोक रे अर्थ करे नही, न करे खावा पीवा रे हेत जी ।
 लोभ लालच हेते करे नही, पर लोक हेते न करे तेथ जी ॥ १९ ॥
 सवर निरजरा रे हेते करे, और वंछा नहि काय जी ।
 इण परिणामां पोसो करे, तो भाव थकी सुध थाय जी ॥ २० ॥
 कोई लाडूआं साटे पोसा करे, कोई परिग्रह लेवा करे तांम जी ।
 कोई और द्रव्य लेवा पोसो करे, ते कहिवा रो पोसो छे नांम जी ॥ २१ ॥
 ते तो अरथी छै एकंत पेट रो, ते मजूरीया तणी छै पांत जी ।
 त्यांरा जीव रो कार्य सभे नही, उलटी घाली गला माहें रांत जी ॥ २२ ॥
 लाडूआं साटे पोसा करावसी, अथवा धन देइ ने तांम जी ।
 ते कहिवा ने पोसा करावीया, पिण संवर निरजरा रो नही ओ कांम जी ॥ २३ ॥
 कर्म काठण नें करे मजूरीया, त्यांरा घट माहें घोर अग्यांन जी ।
 लाडू खवाय पोसा करावणा, ए तो कठेइ नही कह्यो भगवानं जी ॥ २४ ॥
 कर्म काटण नें करे मजूरीया, त्यांरा घाट माहे घोर अंधार जी ।
 पइसा देई पोसा करावणा, ते नाही चाल्या सुतर मभार जी ॥ २५ ॥
 मजूरीया करे खेत नेदाणवा, मजूरीया करे घर करवा कांम जी ।
 कडव काटण करे मजूरीया, कर्म काटण नही चालीया तांम जी ॥ २६ ॥
 खेत खडवा ने चाल्या मजूरीया, वले भार लेजावण कांम जी ।
 धान खंडण करे मजूरीया, कर्म काटण नें नहि चाल्या तांम जी ॥ २७ ॥

विरक्त होय काम भोग थी, त्याने त्याग्या छै सुघ परिणाम जी ।
मोष रे हेत पोसो करे, ते असल पोसो कह्यो ताम जी ॥ २८ ॥
इण विघ पोसा ने कीजीये, तो सीभसी आतम फाज जी ।
कर्म रुकसी ने वले तूटसी, इम भापीयो श्री जिणराज जी ॥ २९ ॥



व्रत बारहमों

(अतिथि सविभाग व्रत)

ढाल : १३

दुहा

अतिथि सविभाग चोथो सिख्या, ते बारमों व्रत रसाल ।
समण निग्रंथ अणगार ने, दांन देवे दगचाल ॥ १ ॥
ते फासू अचित ने सूभत्तो, कल्पे ते दरब अनेक ।
कल्पता खेतर काल मे, दान दे आण ववेक ॥ २ ॥
जो उ दान दे मुगत रे कारणे, और वंछा नहिं काय ।
जब नीपजे व्रत बारमों, इम भाप्यो जिणराय ॥ ३ ॥
इयारे व्रत वस आपरे, मन माने जब नीपजाय ।
बारमो व्रत सुव साघ ने, प्रतिलाभ्यां थो थाय ॥ ४ ॥
लाखा कोडां खरचीया, जीव अर्नती वार ।
पिण दांन सुपातर दोहिलो, जीव तणो आधार ॥ ५ ॥
इण व्रत नीपावा कारणे, उदम करे नित नेम ।
भावे साघां री भावना, हाथे दान देवण सूं पेम ॥ ६ ॥
आलस छोडणो किण विघे, किण विघ देणों दांन ।
उदम करणो किण विघे, ते सुणो सुरत दे कांन ॥ ७ ॥

ढाल

[मोह अनुकम्पा न आशीर]

वारमो व्रत छै श्रावक तणो, तिणरो सांभल जो विसतार जी ।
समण निग्रंथ अणगार ने, टेवो चउविघ सुध आहार जी ॥
इम व्रत नीपावें बारमो ॥ १ ॥
इम वसत्र पातर ने कांबलो, पायपूछणों देवे एम जी ।
पीढ फलग सेज्जा ने साथरो, देवे ओषध भेषद जेम जी ॥ २ ॥
इत्यादिक वस्तु कल्पे तका, साघां ने दीघां हरषत होय जी ।
जाणे घिन दीहाडो ने घिन घडी, बारमो व्रत नीपनो मोय जी ॥ ३ ॥
करे चिंतवणा साघां तणी, घर में देखे सुध आहार जी ।
वले भांणे बेठां भावे भावना, व्रत वारी रो ओ आचार जी ॥ ४ ॥

सावु आय उभा देखे आंगणे, विकसे सगली रोमराय जी ।
 असणादिक देवे भाव सूं, घणो मन रलीयात थाय जी ॥ ५ ॥
 काचा पांणी सूं थाली घोवे नही, वले सचित न राखे पास जी ।
 संघटे नहिं वेसे सचित रे, व्रत नीपजावण रो हुलास जी ॥ ६ ॥
 कोई काम पडे आय सचित्त रो, जब पिण रीत राखे विख्यात जी ।
 दिस अवलोक्यां विण साव नें, नहिं घाले सचित्त नें हाथ जी ॥ ७ ॥
 कल्पे ते वस्त पडी असुभती, कदे सहिजां सुभती होय जी ।
 तो उ खप कर राखे सुभती, सचित्त उपर न मेले कोय जी ॥ ८ ॥
 जे जे दरव जाणे छे सुभता, कल्पे ते सावु ने जाण जी ।
 तिणरी भावे निरंतर भावना, एहवा श्रावक चतुर सुजाण जी ॥ ९ ॥
 चित्त वित्त पातर तीनूं तणो, कदे आय मिले सजोग जी ।
 जब अढलक दान दे हाय सूं, पछे न करे पिच्छतावो सोग जी ॥ १० ॥
 जे जे वरतधारी श्रावक हुवे, ते जीमे नहिं जडे कमाड जी ।
 उवाइ ने सुयगडाअंग में, त्यांरा चाल्या उघाडा दुवार जी ॥ ११ ॥
 सहजे उघाडा हुवे वारणा, जब राखे उघाडा ताम जी ।
 नहिं जडे उघाडे वारणा, साव ने दान देवा कांम जी ॥ १२ ॥
 ओर भेष उघाड मांहे धसे, सावु नावे खोल कमाड जी ।
 तिण सूं व्रतधारी श्रावक हुवे, ते तो राखे उघाडा दुवार जी ॥ १३ ॥
 सहिजे आयो छे घरे आपरे, नीपनो देखे सुघ आहार जी ।
 जब काल जाणे गोचरी तणो, तो उ वाट जोवे तिण वार जी ॥ १४ ॥
 ज्यारे हूंस घणी छे मांहिली, पोते सहथ देवा दान जी ।
 त्यांरा हिरदा में सावु वस रह्या, त्यारो किण विव मूके ध्यान जी ॥ १५ ॥
 असणादिक थाल में लीघां पछे, तुरत घाले नहिं मुख मांय जी ।
 दिस अवलोकें भावे भावना, जाणे साव पवारे आय जी ॥ १६ ॥
 इण विव भावना भावतां थकां, मिले सतगुर नी जोगवाय जी ।
 तो उ दान दे उलट परिणाम सूं, चूके नहिं अवसर पाय जी ॥ १७ ॥
 सकत सारू दान दे साव नें, पिण न करे कूडी मनवार जी ।
 ठाला वादल ज्यूं गाजे नही, साचे मन बोले सुघ विचार जी ॥ १८ ॥
 अढलक दान देई साव ने, पमावे नही ओरा पास जी ।
 गिरवा गंभीर रहे सदा, त्याने वीर बखाप्या तास जी ॥ १९ ॥
 अढलक दान देणो पातरे, नहिं जिण तिण नें आसान जी ।
 दान देवा रो ध्यान रहे सदा, एहवा विरला छे बुधवान जी ॥ २० ॥

आछी वस्त गोपव राखे नही, नाणे लोलपणों ने लोभ जी ।
 गमती वसत देवे साध ने, पिण कूडी न साधे सोभ जी ॥ २१ ॥
 आप खाए ते इबिरत में गिणे, बंधता जाणे पाप कर्म जी ।
 तिण सूं दांन सुपातर ने दीया जाणें संवर निरजरा धर्म जी ॥ २२ ॥
 सुपातर दांन दे तिण अवसरे, लेखो नही करे मन मांंहि जी ।
 लेखो कीयां सूं लोभ उपजे, अढलक दांन दीयो नहि जाय जी ॥ २३ ॥
 लाडू घोवणादिक वेंहरावतो, राखे एक धारा परिणाम जी ।
 व्रतधारी आधो काढे नही, रुडी जोगवाइ पांम जी ॥ २४ ॥
 कदा वेंहखां विण पाछा फिरे, काइ आय पडे अंतराय जी ।
 जब पिछतावो कीयाई पुन बंधे, वले कर्म निरजरा थाय जी ॥ २५ ॥
 पिछतावो कीयाई पुन बंधे, तो वेंहरायां हुवे लाम अनंत जी ।
 उतकण्टो तीर्थंकर पद लहे, इम भाष गया भगवंत जी ॥ २६ ॥
 सूभती वसत न करे असूभती, ते तो न देवा रे कांम जी ।
 असूभती नें न करे सूभती, वेहरावण रा आण परिणाम जी ॥ २७ ॥
 जाणे नें नहीं देवे असूभती, करडे पिण वणीये कांम जी ।
 निरदोषण दीघां वस्त हाथ सूं, पाछी लेवण री नहीं हांम जी ॥ २८ ॥
 दान देवण न देवण कारणे, अतिकरमे नही काल जी ।
 मछर मांन बडाइ छोड नें, दांन देवे ते दोषण टाल जी ॥ २९ ॥
 आपणी वस्त कहे पारकी, दांन देवा कांम जी ।
 धर्म ठिकाणे भूठ बोले नहीं, मूंडे कूडी न राखे मांम जी ॥ ३० ॥
 इग्यारे व्रत तो त्यागन कीयां, बारमो व्रत दीघां होय जी ।
 तिण सूं कठण काम इण वरत रो, विरला नीपजावे कोय जी ॥ ३१ ॥
 सुपातर दांन देवे तेहनें, नीपजे तीन बोल अमोल जी ।
 संवर निरजरा होय पुन बंधे, त्यांरा अर्थ सुणो दिल खोल जी ॥ ३२ ॥
 जे जे दरब वेहराया साध नें, तिण दरब री इवरत नहीं काय जी ।
 ते वरत संवर हूवो इन विवे, सुभ जोगां सूं निरजरा थाय जी ॥ ३३ ॥
 सुभ जोग वरत्यां हुवे निरजरा, सुभ जोगां सूं पुन बंध जात जी ।
 पुन्य सहजे हुवे निरजरा कीया, ज्यूं खाखलो हुवे गोहां रे साथ जी ॥ ३४ ॥
 उतकण्टा परिणामां दान दे, तो उतकण्टी टले कर्म छोट जी ।
 उतकण्टा बंधे पुन्य तेहने, वले बंधे तीर्थंकर गोत जी ॥ ३५ ॥
 जो उणरे पुन्य उदे हुवे इण भवे, तो दुख दालद्र दूर पलाय जी ।
 रिघ संपत पामें अति घणी, सुख साता मे दिन जाय जी ॥ ३६ ॥

जो उदे न आवे इण भवे, तो पर भव में संका मत आण जी ।
 उंच गोतादिक सुख भोगवे, इण दान तणा फल जाण जी ॥ ३७ ॥
 पुन्य री बछा कर देवे नहिं, समदिष्टी साधा नें दान जी ।
 देवे सवर निरजरा कारणे, पुन्य तो सहिजां बघे आसान जी ॥ ३८ ॥
 इविरत माहे दान देता थकां, पड़े श्रावक रे मन घटक जी ।
 ज्यांनें दान दियां विरत निपजे, त्यांनें दीठाइ पामे हरष जी ॥ ३९ ॥
 काम पड़े अविरत में दान रो, जब देतो ही सरमा सम जी ।
 पछे करे पिछ्छतावो तेहनो, कायक ढीला पाडे कर्म जी ॥ ४० ॥
 इविरत मे दान देवण तणो, टालण रो करे उपाय जी ।
 जाणे कर्म बंधे छे माहरे, मोने भोगवता दुख थाय जी ॥ ४१ ॥
 इविरत में दान देता थका, बंधे आठोइ पाप कर्म जी ।
 सुपातर दान दियां हुसी, म्हारे सवर निरजरा धर्म जी ॥ ४२ ॥
 इविरत मे दान देवण तणो, कोइ त्याग करे मन सुध जी ।
 तिण पाप निरंतर टालियो, तिणरी वीर बखाणी बुध जी ॥ ४३ ॥
 कुपातर दान मोह कर्म उदे, सुपातर दान खयउपसम भाव जी ।
 व्रत नीपजे सुपातर ने दियां, तिणरो जाणे समदिष्टी न्याव जी ॥ ४४ ॥
 सहिजा जायगा पडी हुवे सूभती, जब जोवे साधा री बाट जी ।
 तिणरे कर्म तणी निरजरा हुवे, वले बंध जाए पुन्य तणा थाट जी ॥ ४५ ॥
 बाट जोवता साधु पघारिया, सेज्जा दान दे हरषत थाय जी ।
 जाणे धिन दिहाडो ने धिन घडी, माहे साध उतरिया आय जी ॥ ४६ ॥
 सेज्जा दान देइ सुध साधु ने, केइ करे परत संसार जी ।
 केइ बंध पाडे सुध गति तणो, ते तो पामे भव जल पार जी ॥ ४७ ॥
 सिज्जा थानक दे दे साधु नें, आगे तिरिया जीव अनंत जी ।
 वले तिरे ने तिरसी घणा, इम भाष गया भगवत जी ॥ ४८ ॥
 दीघा दरायां ने भलो जाणियां, निर्दोष सुपातर दान जी ।
 व्रत निपजे दीघा वस्त आपरी, इम भाष्यो श्री भगवान जी ॥ ४९ ॥
 पुत्र त्रियादिक मा बाप रा, परिणाम चढावे विशेष जी ।
 त्याने दान देवा सनमुख करे, सीखावे सुध विवेक जी ॥ ५० ॥
 पुत्र त्रियादिक मा बाप रा, दान देवा रा रहे परिणाम जी ।
 त्यासूं हेत राखे जिन धर्म नो, सुध श्रावक तिणरो नाम जी ॥ ५१ ॥
 अडलक दान देतो देखे ओर ने, त्यांरा पाडे नहिं परिणाम जी ।
 कदा देणी न आवे आप सूं, तो कर दे तिणरा गुण ग्राम जी ॥ ५२ ॥

गुण सहणी नावे दातार ना, पोते पिण दान दियो न जाय जी ।
 ए दोनूं अवगुण दूरा तजे, श्री जिनवर नो धर्म पाय जी ॥ ५३ ॥
 और नें दान देता देखने, कोइ बरज पाड़े अन्तराय जी ।
 तो उ कर्म बाधे महा मोहणी, एहवो श्रावक न करे अन्याय जी ॥ ५४ ॥
 केइ अन्यतीर्थी जीमें नहि, यांरा ठाकुर ने विण दियां भोग जी ।
 नित बारे रसांइ काठने, पोषे पूजारादिक लोण जी ॥ ५५ ॥
 त्याने ठीक नहि त्यांरा देव री, देवे लेवे न लेवे भोग जी ।
 तोहि राखे छे त्यारी आसता, नित वरतावे त्यारा जोग जी ॥ ५६ ॥
 तो व्रतधारी सुध श्रावक, धर्म सूं रगयो तन मन जी ।
 ते गुर नी भावना भाया विना, मुख में किम घाले अन जी ॥ ५७ ॥
 केकारे गुरु छे अन्यतीर्थी, त्यांरी करे साचे मन टेल जी ।
 तो साध पधाख्या आंगणे, त्याने श्रावक न गिणे सेल जी ॥ ५८ ॥
 कोइ कहे दान घणो दढावियो, ए तो लेवा रो कीधो उपाय जी ।
 एहवा उधा बोले सुध बुध विना, एहवी श्रावक न काढे वाय जी ॥ ५९ ॥
 दान देवा रा परिणाम जेहना, ते तो सुण सुण हरषत थाय जी ।
 कहे व्रत निपजावा नी विधि, मोने सतगुरु दीधी सिखाय जी ॥ ६० ॥
 और व्रत कह्या छे देवल समा, सिख्या व्रत छे इंडा समान जी ।
 त्यां मे सगला सिरे व्रत बारमों, तिणरी बुधवंत करसी पिच्छांग जी ॥ ६१ ॥
 तिरया तिरे तिरसी घणा, इण दान तणे परताप जी ।
 तिण मे सका मूल न आपवी, श्री जिन मुख भाख्यो आप जी ॥ ६२ ॥
 सुतर पुराण कुराण मे, पातर दान तणो अधिकार जी ।
 पछे पातर कुपातर ओलखे, बुधवंत काढे निसतार जी ॥ ६३ ॥
 वले कहि कहि ने कितरा कहूं, इण दान तणा गुण ग्राम जी ।
 कोइ जिभ्या करे वरणवे, पूरा कहणी न आवे ताम जी ॥ ६४ ॥
 जोड कीधी बारमा वरत री, ते तो गूंदोच सहर मभार जी ।
 संवत अठारे बतीसे समे, जेठ विद बोज सूर्य वार जी ॥ ६५ ॥

रत्न : ३

कालवादी री चोपई

ढाल : १

दुहा

दसा सतखव सूयगडाअग में, अकिरीया वादी रो विसतार ।
 नास्तक मत छें तेहनो, वले किरिया न मानें लिंगार । १ ॥
 तीर्थकर चक्रवतादिक, वले साधु सती अणगार ।
 त्याने जीव न मानें सरवथा, उ जाणें भर्म ससार ॥ २ ॥
 तिण नास्तकवादी रा मत तणो, कालवादी पिरवार ।
 तिण नास्तक पाडी जीवरी, ते भूलो भर्म गिवार ॥ ३ ॥
 उ सरघा पळ्पें एहवी, कर २ खांच अतीव ।
 जे सिद्धां मे गुण पावे नही, ते गुण सर्व अजीव ॥ ४ ॥
 वले असासता दरब नें इम कहें, नही चेतन गुण परजाय ।
 उण कृण २ काल में घालीया, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अशुकम्या...]

तीर्थकर गणघर धर्म रा नायक, आचार्य ने उवभाय मोटां अणगारो ।
 साध साधवीयादिक च्याहंई तीरथ, त्याने अजीव कहे मूढ विनां विचारो ।
 आ सरघा छें कालवादी री* ॥ १ ॥
 देव गुर, धर्म तीनू रतन अमोलक, त्यारो सरणो लीया उतरे भवपारो ।
 याने अजीव कहे कीइ मूढ मिथ्याती, तिण आख मीचने कीयो अंधारो ॥ आ० २ ॥
 गुर ही काल नें चेलो ही काल, कालरो विनों काल करें उछरगो ।
 काल सूं काल समोग करें छें, काल सू काल रो मन जाए भंगो ॥ ३ ॥
 काल उपदेस दे सूतर बांचें, धर्म कथा कहें मोटें मडांणों ।
 काल ही आय वखांण सुणें छें, काल कने काल ले पचखांणो ॥ ४ ॥
 काल तिरें नें काल ही तारें, काल नें काल उतारे पारो ।
 काल डूवें : ने काल डबोवे, काल ने काल करें छे खुवारो ॥ ५ ॥
 चक्रवत वासुदेव मंडलीक राजा, ए मनष हूआं करणी कर मोटी ।
 भवी दरब देवादिक पांचोइ देवां ने, यांनं अजीव कहें तिणरी सरघा खोटी ॥ ६ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

वाप ही काल ने बेटोइ काल, काल रे काल वधे पिरवारो ।
 काल जनम लेइ मोटों हुवें छें, पछें काल रे वधें छें विषय विकारो ॥ ७ ॥
 काल परणीजे नें काल परणावें, काल रे काल पावणा आवें ।
 असणादिक आहार काल नीपाए, काल जीमें ने काल जीमावे ॥ ८ ॥
 अपर्याप्तो पर्याप्तो काल, काल छें बाल जुवान ने बूढो ।
 नेरइत्तयो रिज्ज च मिनष नें देवा, ए सगला ने काल वहे छें मूटो ॥ ९ ॥
 चाले ही काल नें बोले ही काल, काल करें छे विणज व्यापारो ।
 खेती करसंग आदि दे काल करे छें, वले काल करे छे भगडा ने राडो ॥ १० ॥
 एकद्री आदि दे पचिद्री नें, छकाय धुरा घर कहें छें कालो ।
 चवदेइ भेद छे जीवरा त्याने, याने अजीव कहें अग्यानी बालो ॥ ११ ॥
 हिंसक भूठाबोलो इ काल, चोर कुसीलीयों नें घनपातर ।
 वले तीन सो तेसठ पाषडीयां नें, यानें इ काल कहें छें कुपातर ॥ १२ ॥
 भोगी काल ने जोगी काल, वेंरी नें मित्री ए पिण कालो ।
 मायावीया मिथ्याती नें काल कहें छें, इण सरघा रो बुधवंत करसी टालो ॥ १३ ॥
 भारत रुद्र ने धर्म ध्यान, ए तीनुंइ ध्यान नें कहें छें कालो ।
 छ भाव लेखा नें पिण काल कहें छें, सूतर रे सिर दे दे आलो ॥ १४ ॥
 अग्यान तीन ने च्याहूँ संसा, वले चवदें गुण ठांगा कहें छें कालो ।
 बुध अकलमति ए पिण काल, ते कर रह्या मूरख भूठी भखालो ॥ १५ ॥
 छ नियठा ने पांचोंइ चारित्त, उठांग कमादिक ए पिण पांच ।
 वले आतमा च्यार नें सावद्य निरवद, यानें काल कहें मूढ कर २ खांच ॥ १६ ॥
 इत्यादिक जीवरा बोल अनंता, त्यानें निश्चेंइ काल कहें छे अग्यानी ।
 जे जे सभाव सिद्धां में न पावें, ते सगला नें कर दीया काल री कानी ॥ १७ ॥
 असासता सगलाइ पाछे कह्या ते, त्यानें तो जीव कहसी किण लेखें ।
 याने जीव कहें तो भूठ बोल छें, आपणी सरघा सांहो क्यूं नहीं देखें ॥ १८ ॥
 जो चरचा रो काम पख्यां जीव कहें तो, असासता दरब री पूछा कीजें ।
 असासता दरब नें काल कहें छें, यानें जीव कहें तो भूठो घालीजे ॥ १९ ॥
 असासता दरब नें जीव कहें छें, आपरी सरघा रो आप अजाणों ।
 सिद्धां में नही ते गुण नें जीव थापें, तो पोतेइ काय न दीसें पिछाणों ॥ २० ॥
 हिवे कालवादी नें पूछा कीजें, संसार माहें दुख किण विघ पावें ।
 कुण उपजावे नें कूण खपावें, करमां रो करता कुण कहावें ।
 ए प्रश्न कालवादी नें पूछीजें ॥ २१ ॥

जो करमा रो करता जीव ने थापे,
करता अनेक असासता दीसे,
जो करमा रो करता अजीव कहे तो,
असरघा हुवे तो पिण छांने राखे,
उणरी सरघा रा एलाण एहवा दीसे,
कदा भूठ बोले ने जीव कहे पिण,
सिद्धां माहे तो करता मूल न दीसे,
एहवा प्रश्न पूछ्या रा जाब न आवे,
केतो भूठ जाणें ने बोले छे,
ए वातरो निश्चो तो केबली जाणे,
श्री वीर कह्यो आचारंग माहे,
चेतन गुण पर्याय सहीत ओलखसी,
हिंसादिक भूठ चोरी जीव करे छे,
तो छेदन भेदन जनम मरण रा,
कालवादी री सरघा परगट कीधां,
जिण आगम लोपे विरुध परूपे,
इण खोटी सरघा रो उघाड़ कीया सू,
केइ विपरीत सरघा आदर ने छोडे,

तो उणरी सरघा जाबक उठजावे ।
वले सिद्धां मे करता कठासू बतावे ॥ २२ ॥
घणा लोक न माने तिणरी वातो ।
एहवा कपटी रो भूठ ने गूढ मिथ्यातो ॥ २३ ॥
करमा रा करता ने सरघे छे कालो ।
सिद्धा मे नही करता ते सरघा संभालो ॥ २४ ॥
ते जीव ने करता कहसी किण लेखे ।
जब भूठ बोलण री सेरी देखे ॥ २५ ॥
के आपरी भाषा रो आप अजाणो ।
पिण बुघवत होसी ते करसी पिच्छाणो ॥ २६ ॥
करमां रो करता छे निश्च जीवो ।
त्यारे अर्भितर ग्यान खुलसी घट दीवो ॥ २७ ॥
तिण किरतब सूं लागे जीवरे पापो ।
चिहं गति मे दुख भुगते आपो ॥ २८ ॥
केइ क्रोध करे केइ मन माहे लाजे ।
ते सीह तणी परे कदेय न गाजे ॥ २९ ॥
केइ बुधवंत सुण २ रहसी दूरा ।
त्याने पिण वीर वखाण्या सूरा ॥ ३० ॥



ढाल : २

दुहा

आ कालवादी री सरघा वूरी, घोर रुद्र मिथ्यात ।
हलुकरमा जीव किम सरघसी, आ प्रतख भूठी वात ॥ १ ॥
चेतन गुण पर्याय नें, कहि २ अग्यानी काल ।
उधी करेय परूपणा, दीयो घणां सिर काल ॥ २ ॥
त्यांन साधु बत्तावें जूजूवा, जीव अजीव साख्यात ।
पण गुधूसरीषा मानवी, त्यांरे दीह तिकाइज रात ॥ ३ ॥
त्यांन धुरसूं तो संत मिलिया नईं, कीघों कालवादी रो प्रसंग ।
जाणें निरणें कोठे भूंबीयो, काल नाग भूर्यग ॥ ४ ॥
उणतें मिलें सतगुर गारलूं, जो उ दूर करे पखपात ।
सूतर अरथ सुणाय ने, काढें जहर मिथ्यात ॥ ५ ॥
कालवादी री सरघा उपरें, सूतर मांहे जाब अनेक ।
पिण थोड्ण सा परगट कळं, ते सुणजो धाण ववेक ॥ ६ ॥

ढाल

[पाण्ड वधसी आरे पत्रमे]

तीरथंकर गणवर उत्तम जीव छे रे, उत्तम छें आचारज नें उवभाय रे ।
त्यांरा ग्यांन दरसण चारित छे निरमला रे, यांनें वांघा सू पातक दूर पलाय रे ।
ए अरिहंत वायक सतकर जांणजो रे* ॥ १ ॥
वले साधु साधवी श्रावक श्रावका रे, सूतर में भाष्या छें तीरथ च्यार रे ।
त्यांन पिण उत्तम जीव जिण कहुया रे, ग्यांनादिक गुण रतनां रा भंडार रे ॥ ए० २ ॥
त्यांन कालवादी पापडी इम कहे रे, ए सगला छे जड अचेतन काल रे ।
यांन जीव चेतन कोइ मत जांणजो रे, ए दीयो अग्यानी मोटों आल रे ॥ ३ ॥
च्याळं तीरथ तीरथंकर देव में रे, पावें गुणठांणा परजा प्राण रे ।
जोग उपीयोग लेस्या तेहमें रे, यांनें अजीव कहे छें मूढ अयांण रे ॥ ४ ॥
त्यांरो विनो वीयावच गुण कीरत कीयां रे, वांघे तीरथंकर गोतरसाल रे ।
ते कहुयों छे गिना अधेन आठमें रे, लीजो वीसोंइ बोल संभाल रे ॥ ५ ॥
ओ काल वीयावच करसी किण विघें रे, काल वीयावच केम कराय रे ।
ए कालवादी कूडो मत काढीयो, ए प्रतख चोडें भूलों जाय रे ॥ ६ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

भवी दरब देवादिक पाचू देवमे रे, यामे करें केइ वैक्रें खप रसाल रे ।
 यारी गति आगति ने यारो आतरो रे, याने अजीव कहे ते मूरख बाल रे ॥ ७ ॥
 ए पेहली गतमा सू उपजें आय ने रे, ए मरने उपजे पेहली गति माय रे ।
 देवाधिदेव जावे छे मुगत मे रे, यानें अजीव सरखे ने बूडे कांय रे ॥ ८ ॥
 परभव में जासी ते निश्चे जीव छे रे, काल गतागत करसी केम रे ।
 इतरोइ न सुभे मोह अध जीव ने रे, उ बोले सूने चित गहला जेम रे ॥ ९ ॥
 भवी दरवादिक पाचूं देवरो रे, अरथ भगोती सूतर माहि रे ।
 नवमे उदेसे सतक बारमें रे, ए निरणो करलंजो भवीयण ताहि रे ॥ १० ॥
 एकद्री आदि पचिन्द्री जीव ने रे, छकाय घुरा धर कहे छे काल रे ।
 चवदेई भेद जीवरा तेहमे रे, याने अजीव कहे अग्यानी बाल रे ॥ ११ ॥
 काल समायादिक वरते तेहने रे, नही कोइ खं ब देस परदेस रे ।
 तिण काल ने एकद्रीयादिक जे कहे रे, ते करे अग्यानी कूड कल्से रे ॥ १२ ॥
 एकद्री आदि पचिंद्री जीव ने रे, देस परदेस कह्या जिणराय रे ।
 ते देस परदेस चेतन दरब रा रे, जोबो भगोती सूतर माय रे ॥ १३ ॥
 ते दशमे उदेशे दूजा सतक मे रे, बले दशमां सतक रे पेहले जाण रे ।
 सोलमे सतक उदेशे आठमे रे, ए निरणो कर लेजो चतुर सुजाण रे ॥ १४ ॥
 बले दसमे उदेशे सतक इग्यारमे रे, तिहां पिण तेहीज छे निसतार रे ।
 जीव अजीव देस परदेस नो रे, रूपी अरूपी नो विसतार रे ॥ १५ ॥
 नेरइयो तिरजंच भिनख ने देवता रे, त्यारे आठोई करम कह्या भगवत रे ।
 ए जीव हूसी तो यारे करम छे रे, त्याने निश्चेइ जीव जाणो मतवत रे ॥ १६ ॥
 चोवीसोइ डडक नियमा जीव छे रे, नियमा कह्यो ते वीसवावीस रे ।
 दसमे उदेशे छठा सतक मे रे, भगोती मे भाष गया जगदीस रे ॥ १७ ॥
 जीवरा चवदे भेद सिघत मे रे, ते निश्चेइ जीव कह्या साख्यात रे ।
 याने मूढ मिथ्याती कहें अजीव छें रे, आ प्रतख भूठी तिणरी व्रात रे ॥ १८ ॥
 बले दशवीकालिक चोथा अवेन में रे, निश्चेइ जीव कही छकाय रे ।
 तिणनें अग्यानी जीव न लेखवें रे, ते करे बूडण रो मूढ उपाय रे ॥ १९ ॥
 गिनाता सुतर रा तीजा अवेन मे रे, ठाणा अग मे तीजा ठाणा माय रे ।
 छजीव नीकाय माहे सका कर रे, तो अहेत असुख ने समकित जाय रे ॥ २० ॥
 छवभाव लेस्या ने जीव जिण कही रे, तिणरी अतर में करो पिछांण रे ।
 माठी लेस्या रा माठा लक्षण छे रे, रूडी लेस्या रा रूडा जांण रे ॥ २१ ॥
 जीव रे मोह करम उदे हुवे रे, जब जीव वरते जो सावद्य कांम रे ।
 ते पाप उपजावें मेंला जोग सू रे, माठी लेस्या रा ए परिणाम रे ॥ २२ ॥

कदे मोह करम रो खयउपसम हुवे रे, जब जीव वरते जो निरवद ठाम रे ।
 ते पाप खपाय उपजावे पुन नें रे, रूडी लेस्या रा ए परिणाम रे ॥ २३ ॥
 ए लेस्या छें निश्चें लषण जीवरा रे, तो कांय भारी हुवो कहि कहि काल रे ।
 जोवो उतरारावेन चोतीसमें रे, वले पन्नावणा लेस्या पद संभाल रे ॥ २४ ॥
 वले लेस्या परिणाम कह्या छें जीवरा रे, ठांगा अंग दसमां ठांगा मांय रे ।
 वले जोग उपीयोग पावे तेहमें रे, तो निश्चेइ जीव जाणों इण न्याय रे ॥ २५ ॥
 मति सुरतादिक च्याहं ग्यान रा रे, कीघा अग्यानी दोय दोय भेद रे ।
 सुतर अरथ विनां मुख सूं कहें रे, करमावस करें अणहुंती खेद रे ॥ २६ ॥
 मति सुरतादिक नें कहें काल छें रे, ग्यान कहें छें यांसू न्यार रे ।
 दोय २ भेद कीयां छें इण विघें रे, उण उंची अकल सूं कीयो विचार रे ॥ २७ ॥
 समदिष्टी री मति नें मतिग्यान कह्यो रे, मिथ्याती री मति ते मति अनांण रें ।
 ए निरणो नदी सूतर में काढीयों रे, तो ही करें अग्यानी कूड़ी तांण रे ॥ २८ ॥
 पांच ग्यान नें तीन अग्यान नों रे, वले च्याहंई दरसण तपो विचार रे ।
 त्यारा भेद कीयां छे ग्यानी अतिघणां रें, ते दोय उपीयोग तपो विसतार रे ॥ २९ ॥
 जे भेद कीया छें जिण उपीयोग रा रे, ते भेद नें तेहीज उपयोग जांण रे ।
 त्यामें काल रो भेद अग्यानी घालीयो रे, ते नंदीय सूतर सूं करो पिछ्ठांण रे ॥ ३० ॥
 वले अग्यान नें कही छे नियमा वातमा रें, नियमा ते निश्चेइ जीव जांण रे ।
 ए दसमें उदेसें सतक बारमें रे, भगोती मे जोय करो पिछ्ठांण रे ॥ ३१ ॥
 उवाइ उपंग ने ठांगा अंग में रे, च्याहंई ध्यान तपो विसतार रे ।
 ध्यान ध्यावें ते लषण जीवरों रे, यानें अजीव कहें ते मूढ गिवार रे ॥ ३२ ॥
 चवदे गुणठांगा लखण जीवरा रे, जोवो समवायंग सूतर मांय रे ।
 ए निश्चेइ चेतन गुण पर्याय नें रे, काल परुपें हूबो कांय रे ॥ ३३ ॥
 च्याहंई संज्ञा चेतन दरब छें रे, वीर कह्यो ठांगा अंग माय रे ।
 जोवो चोथो दसमां अघेन में रे, संका मत्त आणों भवीयण कांय रे ॥ ३४ ॥
 जे जे दरब मे जोग उपीयोग छे रे, वले लेस्या गुण ठांगा पर्याय प्राण रे ।
 ते तो दरब निश्चेइ जीव छें रे, ए सरघा में संका मूल म आंण रे ॥ ३५ ॥

ढाल : ३

ढुहा

कालवादी रा मति तणी, केइ कर रह्या कूडी ताण ।
त्याने खुलवा जाव वतावीया, साख सूतर री आंण ॥ १ ॥
त्यांरी खोटी सरघा छुडायवा, काढण मूल मिथ्यात ।
कितराएक तो बले कहूं, ते सुणजो विख्यात ॥ २ ॥

ढाल

[निन्हव तेरासीया केडायत ओलखो]

छ नियठा ने पांचूइ चारित भणी, याने कहे छे अग्यांनी काल हो ।
ए निश्चेइ चेतन गुण पर्याय छे, ते सुणजो सुरत संभाल हो ॥
कालवादी रो मत कूडो घणो* ॥ १ ॥
छ नियठा ने पांचूइ चारित तणा, छतीस छतीस छे दुवार ।
पच्चीस में सतक उदेसे छठे सातमे, ए भगोती में कह्यो विसतार हो ॥ का० २ ॥
यांरा पजवा अनता कह्या छे एक एक ना, त्यां पजवारी अल्पा वोहत जाण ।
ते सख असख अनंत गुणा कह्या, ते पजवारी करजो पिछाण हो ॥ ३ ॥
निग्रंथ सनातक नें यथाख्यात रा, यांरा पजवा बरोबर जाण ।
सेष चारित ने नियठा मेंला कह्या, तिणसू छे पजवारी हांण हो ॥ ४ ॥
ए कुण दरवे मेंलो कुण उजलों, तिण दरव री करजो तहतीक हो ।
याने दरव षेतर काल भाव सूं ओलखो, यांरा गुणांरी पिण करजो ठीक हो ॥ ५ ॥
किण ही दोय जणां चारित साथे लीयो, समकाले छोड्या प्रांण हो ।
काल सारिषो दोयां रा चारित तणों, पिण चारित गुण मे फेर जाण हो ॥ ६ ॥
चारित ने जगन मभम उतकण्टो कह्यों, ते तो चेतन गुण पर्याय हो ।
ते चारितावर्णी करम दुरा हूयां, निजगुण परगट थाय हो ॥ ७ ॥
ए संजया नें नियठा तो निश्चेंइ जीव छे, तिण मांहे संका म आंण हो ।
याने काल परुपे करम वावो मती, छोड दो कूडी तांण हो ॥ ८ ॥
संजनी असंजनी ने संजता संजती, एहवा बोल घणा छे ताहि हो ।
ए सगलां ने जीव जिगसर भापीया, ते पन्नवणा भगोती माहि हो ॥ ९ ॥
चारित आतमा श्री जिणवर कही, ते सूतर भगोती मभार हो ।
ए दसमे उदेसे सतक बारमे, आतमा आठा रो विसतार हो ॥ १० ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

चारितावर्णी चारित ने विगाडीयो,
 परगुण आडो करम आवे नही,
 ए चारितावर्णी जेणावर्णी करम कह्यो,
 ए नवमें सतक उदेजे इगतीस में,
 समाइ पचखाण सजम ने सवर,
 ए सगला ने कही छे जिणिसर आतमा,
 ए सूतर भगोती रा पेह्ला सतक मे,
 समाइ समता परिणाम गुण जीवरा,
 ग्यान दरसन चारित गुण कह्या जीवरा,
 कोई जीव रो निजगुण चारित नही लेखवे,
 दसमे अग छठा अवेन माहें कह्यो,
 ते दया ने नियमा निजगुण जिण कही,
 सुख दुख ग्यान दरसन चारित तप,
 ए आठ लखण कह्या चेतन दरब नां,
 चारित परिणाम कह्या छे जीवरा,
 ते जीव परिणाम ने अजीव परखने,
 ठाणाअंग चोथे कही छे च्यार परवजा,
 तेकरमन्यारा कीया परवजा हुवें निरनली,
 वले ठाणाअंग चोथे च्यार चारित कह्या,
 छिदर सहीत ने रहित चारित कह्या,
 ए ग्यान रो इंदर केवलायान छे,
 जथाख्यात चारित इंद्र चारित तणो,
 उतकण्ठा चेतन गुण ने इंदर कह्या,
 तिण चारित गुण ने काल परूपने,
 जगन मभ्रम उतकण्ठी आराधना,
 ते कुण दरब ने जीव आराधीयो,
 जिण जीव कीया निजगुण ने निरमला,
 जिण चारित आराध्यो ते निजगुण आपरो,
 देस चारित ने सर्व चारित कह्यो,
 काल दरब तो देस न चालीयो,
 चारितादिक गुण अनेक असासता,
 उ भावे जीव न मानें असासतो,

ओ विगड्यो ते निजगुण जाण हो ।
 इणरी पिण करजो पिच्छाण हो ॥ ११ ॥
 तो चारित जेणा जीव पर्याय ।
 सूतर भगोती मांय हो ॥ १२ ॥
 ववेक नें विउसग जाण हो ।
 तो कांय बूडो कर कर ताण हो ॥ १३ ॥
 नवमों उदेसी संभाल हो ।
 त्यानं भोलेइ म सरवा काल हो ॥ १४ ॥
 ते अनुयोग दुवार मभार हो ।
 ते पूरो मूढ गिवार हो ॥ १५ ॥
 प्रथम संवर दया जाण हो ।
 तिण गुण सू पोहवें निरवाण हो ॥ १६ ॥
 वले वीर्य उपीयोग वखाण हो ।
 ते अठावीसमा उत्तरावेन जाण हो ॥ १७ ॥
 दसमेवेन ठाणाअंग माय हो ।
 कोई मति करो बूडण रो उपाय हो ॥ १८ ॥
 धन पूजीयादिक समाण हो ।
 तिग परवजा नें निजगुण जाण हो ॥ १९ ॥
 भिन्नेजजरीए समाण हो ।
 ते जीवनां गुण परमाण हो ॥ २० ॥
 समकत रो खायक समकत इंद हो ।
 ए तीजे ठाणे कह्यो छे छिणंद हो ॥ २१ ॥
 तिणमे चारित गुण संपामे निरवाण हो ।
 कांय बूडो कर कर ताण हो ॥ २२ ॥
 ते ग्यान दरसन चारित री जाण हो ।
 तिण दरब री करजो पिच्छाण हो ॥ २३ ॥
 तिण मोह करम ने टाल हो ।
 तिणनें मूरख सरवें काल हो ॥ २४ ॥
 ते त्याग परमाणे गुण जोय हो ।
 तो काल चारित किम होय हो ॥ २५ ॥
 त्यानं सरवे अग्यानी काल हो ।
 ते तो सूतर सिरदें आल हो ॥ २६ ॥

दरवे सासतो ने भावे असासतो,
 ते सूतर भगोती रे सतक सातमें,
 दरवे सासतो जीव ने यू कह्यो,
 भावें जीव ने कह्यों छे असासतो,
 निजगुण फिरे ने परगुण भरपडे,
 परगुण भरिया हुवें निजगुण निरमला,
 असुध निजगुण फिरिया सुध निजगुण हुवे,
 सुध निजगुण फिरियां असुध निजगुण हुवे,
 जे मेंला निजगुण मोह वसें,
 मोह रहित निजगुण हुवे निरमला,
 सात करम उदे सूं निजगुण मेंला हुवें,
 ते करम भरिया हुवे निजगुण निरमला,
 आठ करम उदे हूआ नीपजे
 आठ करमा ने खय कीचा नीपनां,
 च्यार करमा ने खयउपसम कीया नीपजे,
 मोह करम उपसमीयां परगटे,
 ए च्याह्दई भाव परिणामीक जीव छें,
 ए भाव फिरे पिण दरव फिरे नही,
 तत सुध सरध्या हुवे जीव समकती,
 उहीज ग्यानी रो अग्यानी हुवे,
 नारकी ने देवता रो भिनष तिरजंच हुवे,
 इत्यादिक जीवरा भाव अनेक ही,
 सासतो जीव दरव छे अनादरो,
 ते पर्याय हांण विरध हुवे करम सू,
 जे भाव फिरे पिण दूर पडे नहीं,
 इणविध भावे जीव असासतो,
 उ जीव रा भाव न सरधे असासता,
 यांनं काल कहें ते कुवद ल्गाय नें,
 वले गोतम सांमी पूछा करी जीव री,
 ते तीजा उदेसा छठ सतक मे,
 आदि ने अंत रहीत ए जीव छें,
 के आदि सहीत ने अत रहीत छे,

जीव नें कह्यों जिणराय हो ।
 दूजा उदेसा माय हो ॥ २७ ॥
 जीव रो अजीव न थाय हो ।
 ते तो परजाय पलटे जाय हो ॥ २८ ॥
 ते परगुण पुदगल जाण हो ।
 आ सरधा घट मे आण हो ॥ २९ ॥
 ते परगुण करदे दूर हो ।
 तिणसूं परगुण लागे पूर हो ॥ ३० ॥
 त्या निजगुण सू करम बंवाय हो ।
 त्यांसू परगुण दूर पलाय हो ॥ ३१ ॥
 त्यासूं पाप न लागे तांम हो ।
 त्यांरा गुण निपन छे नांम हो ॥ ३२ ॥
 निजगुण उदें भाव अनेक हो ।
 निजगुण खायक भाव वशेख हो ॥ ३३ ॥
 निजगुण खयउपसम भाव हो ।
 निजगुण उपसम भाव हो ॥ ३४ ॥
 ते चेतन गुण पर्याय हो ।
 ते पिण सुणजो न्याय हो ॥ ३५ ॥
 उवा सरध्या मिथ्याती थाय हो ।
 अग्यानी रो ग्यानी हुय जाय हो ॥ ३६ ॥
 भिनख तिरजच देवता थाय हो ।
 ते ओर रो ओर हूय जाय हो ॥ ३७ ॥
 तिणरी पर्याय अनंती जाण हो ।
 पिण दरव री नही विरध हांण हो ॥ ३८ ॥
 त्या भावां रा नांम अनेक हो ।
 ते सरधो आंण ववेक हो ॥ ३९ ॥
 तिण काह्यो छे मत कूर हो ।
 तिणरी संगत करजों दूर हो ॥ ४० ॥
 सूतर भगोती माय हो ।
 ते साभल जो चित्त ल्याय हो ॥ ४१ ॥
 के आदि नही अत सहीत हो ॥ जिणसर ॥
 के आदि ने अंत सहीत वदीत हो ॥ जिणसर ॥
 ए गोतम सांमी पूछ्यो श्री वीर नें* ॥ ४२ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

श्री वीर जिणेसर कहे सुण गोयमा, ए च्याळई भांगा छें जीव हो ।
 त्यांरा भेद विसतार कहूं छूं जूजूआ, ए सरध्यां समकत री नीव हो ॥ ए० ४३ ॥
 ए आदि रहीत ने अत रहीत छें, ए अभव सिद्धीया जीव जाण हो ।
 आदि नही पिण अंत सहीत छे, ते भव सिद्धी जीव पिच्छाण हो ॥ ४४ ॥
 जे करम खपाय नें सिद्धी गति मे गया, त्यांरी आदि छें पिण अंत रहीत हो ।
 नारकी तिरजंच मिनख ने देवता, ए आदि नें अंत सहीत हो ॥ ४५ ॥
 ए च्याळई जीव जिणेसर भाषीया, त्यांने जीव न सरघें मूढ हो ।
 ते वूडें छे वीरतां वचन उत्थापनें, कर कर कूडी रूढ हो ॥ ४६ ॥

ढाल : ४

दुहा

कालवादी चेतन नही ओलख्यो, तिणमे खोट अनन्त ।
 तिमहीज पुदगल दरब मे, कहिता न आवे अत ॥ १ ॥
 एक वर्ण एक गध छे, एक रस फरस छे दोग ।
 उ माने छे पुदगल एहने, ते पिण सुध न कोय ॥ २ ॥
 पांच वर्ण दोग गध छे, पाच रस फरस छे च्यार ।
 उ समचे पुदगल कहे एहने, ते पिण असुध विचार ॥ ३ ॥
 भारी हलको सुहालो खरदरो, ए पुदगल दरब साख्यात ।
 याने कालवादी कहे काल छे, ते प्रतख भूठ मिथ्यात ॥ ४ ॥
 खघ देस परदेस परमाणुओ, याने पुदगल माने नाहि ।
 त्याने पिण कहे काल छे, आ उघी अकल घट माहि ॥ ५ ॥
 ए प्रतख पुदगल दरब ने, कहे छे अग्यानी काल ।
 उणरी सरधाने सरधा रा उतर कहूं, ते सुणजो सुरत संभाल ॥ ६ ॥

ढाल

[मम करो काया माया कारमी]

पुद्गल रूपी दरब तणा, च्यार भेद कीयां जिणराय रे ।
 खंद देस परदेस परमाणुओ, छ्तीसमां उत्तरावेन माय रे ।
 कालवादी री सरधा सुणो* ॥ १ ॥
 पुद्गल रा भेद च्याहू भणी, याने कहें छे अग्यानी मूढकाल रे ।
 ए करमां वस सुध सूभे नही, अभितर फूटी आया जाल रे ॥ २ ॥
 वीसामीसा वले पोगसा, ए पुद्गल री तीन जात रे ।
 यां पुदगलां ने काल दरब कहे, तिणरे छे गूढ मिथ्यात रे ॥ ३ ॥
 अठारे पाप ठाणा चोफरसी कह्या, आठकरमे चोफरसी कह्या वीर रे ।
 मन वचन जोग दरवे लीया, चोफरसी कह्यो कारमण सरीर रे ॥ ४ ॥
 सब्द अंधारा उद्योत ने, प्रकास छाया तावरो जाण रे ।
 इत्यादिक एहवा सूक्ष्म खंद ने, चोफरसी पुद्गल ने पिछ्णंण रे ॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

छव दरब लेस्या च्यार सरीर नें,
 काय जोग नें केइ बादर खद नें,
 दीप समुदर देवलोक नें,
 नरकावासा जाव वेमाणिया,
 ए चोफरसी आठफरसी पुद्गल कह्या,
 यांन काल कहे मूढ मूरख थको,
 धर्म अधर्म आकाश नें,
 यांम पांच दरबे ने अरूपी कह्या,
 ए भगोती रे सतक बारमें,
 ज्यांन पुद्गल दरब श्री जिण कह्या,
 हाट घर मिदर मालीया,
 वसत्र गेहणा आभूषण,
 गंध कसबोइ बाजंत्रादिक,
 ए उवभोग परिभोग आवें जीव रे,
 त्यांम सब्द रूप दोय कांमा कह्या,
 ए कांम ने भोग रूपी जिण कह्या,
 ए कांम नें भोग रूपी ते पुद्गल कह्या,
 ए भगोती रे सतक सात में,
 घृत ने खांड मेदें करी,
 ए प्रतख वात सरधे नही,
 घी खांड मेदों तो कहे काल था,
 यां तीना सून पकवांन नही नीपनां,
 पकवांन ने काल दरब कहे,
 इण विपरीत सरधां रा उत्तर कहू,
 घृत ने खांड मेदे करी,
 त्यांरा नाम एक २ रा अनेक छे,
 ए पकवांन तो पुद्गल दरब छें,
 पांच रस आठ फरस छें,
 त्यांरा नाम तो ओलखत्रा भणी,
 ते नाम ने दरब छे जूजूआ,
 ए नाम दरब जूदो सरघायवा,
 ते दरब छें लोक अलोक में,
 इण परें दरब अनेक छें,
 त्यां दरबां रा नाम जाणें जहे

घणो दधी घणवाय तणवाय रे।
 याने अठ फरसी कह्या जिणराय रे ॥ ६ ॥
 मुगत सिला पिण तेह रे।
 ए सर्व अठफरसी दरब एह रे ॥ ७ ॥
 ते वरण गंध रस सहीत रे।
 तिणरी सरधा घणी विपरीत रे ॥ ८ ॥
 काल पुद्गल जीव वखांण रे।
 रूपी एक पुद्गल जांण रे ॥ ९ ॥
 पांचमें उदेते संभाल रे।
 त्यांने मूरख परूपें छें काल रे ॥ १० ॥
 आसण सयण-सेण जांण विमांण रे।
 हिरण सोवनादिक जांण रे ॥ ११ ॥
 असणादिक च्यार आहार रे।
 एक वार बहू वार रे ॥ १२ ॥
 गंध रस फरस तीन भोग रे।
 ते आय मिलीयां जीव रे संजोग रे ॥ १३ ॥
 त्यांन काल परूपे बूडो कांय रे।
 सातमा उदेसा रे माय रे ॥ १४ ॥
 कोइ नीपजावे विविध पकवान रे।
 ओ पिण पुरो अग्यांन रे ॥ १५ ॥
 ए तीनुंड गया विल्लाय रे।
 एतो काल परगट हुआ आय रे ॥ १६ ॥
 यांरां नाम दरब कहें एक रे।
 ते सांभलो आण ववेक रे ॥ १७ ॥
 कोइ निपजावे विविध पकवान रे।
 सूतरे भाप्यो भगवान रे ॥ १८ ॥
 तिणमें पांच वर्ण दोय गंध रे।
 ते पुद्गल मिलीया छे बंध रे ॥ १९ ॥
 ते नाम छें सूत ग्यांन रे।
 ए वीर वचन सत मान रे ॥ २० ॥
 ओलखों दरब आकाश रे।
 इणरो नाम छें जीव रें पास रे ॥ २१ ॥
 ते दरब छे दरब रे ठाम रे।
 जीव कतें सर्व नाम रे ॥ २२ ॥

ढाल : ५

दुहा

चदरमा ने सूर्य नी चाल सू, नीपजे समयादिक काल ।
तिणरी उतपत छे प्रवाह ज्यू, निरन्तर दगचाल ॥ १ ॥
ते अढाई दीप दोय समुद मे, सेष दीप समुद सर्वटाल ।
पेतालीस लाख जोजन लगे, तिरछो वरते काल ॥ २ ॥
उंचो जोतक चकर लगे, ते नवसो जोजन परमाण ।
सहंस जोजन नीचो कह्यो, दोय विजे उडी ताइ जाण ॥ ३ ॥
मेरु विचे उची दिस तिहा, प्रतिबंब सू वरते काल ।
अठा बारे काल कठे नही, तिणरो सूतर माहे निकाल ॥ ४ ॥
कालवादी कहे लोक अलोक मे, सगले वरते काल ।
ते सूतर अर्थ विना वके, वले देवे सूतर सिर आल ॥ ५ ॥
उघा अर्थ करे अकल विना, वले बोले आल पपाल ।
हिंवे काल दरब रो निरणो कहू, ते सुणजो सुरत सभाल ॥ ६ ॥

ढाल

[म्हारो सेणा रो साथी रे वीछीयो]

चाल सासती ले जोतष्या तणी, जीव पुदगल रो जघन व्यापार जी ।
तिणने समो कह्यो तीथकरे, तिणरो साभलजो विसतार जी ।
काल वरते अढाई दीप मे* ॥ १ ॥
असख्याता समां री आवलका हुवे, जाव पुदगल परावर्तन जाण जी ।
अतीत अनागत वरतमान ने, काल दरब री करजों पिछाण जी ॥ का० २ ॥
जिण खेतर मे समो वरते नही, तठे आवलकादिक पिण नही जी ।
आवलकादिक तो समा सू हुवे, अघा समो सगला रे माहि जी ॥ ३ ॥
उतरावेन मे छ दरबा तणा, चाल्या दरब खेतर काल भाव जी ।
काल वरते समय खेतर मभे, तठे कह्यो उघाडो न्याव जी ॥ ४ ॥
समय खेतर कहे सर्व खेतर ने, कालवादी सूतर रो अजाण जी ।
समय खेतर चाल्यो सिद्धांत में, तिणरा पाठ री करजों पिछाण जी ॥ ५ ॥
अढाई दीप दोय समुद ने, समय खेतर कह्यो जिणराय जी ।
भगोती रे सतक दूसरे, जोवो नवमां उदेसा माय जी ॥ ६ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

सीमंत नामा नरका वासो कह्यो,
 वले मुगत सिला चौथी कही,
 च्याहं पेतालीस लाख जोजन तणा,
 समय खेतर समय सहीत छें,
 परमाण^१ आहाउनिव्वत^२ काल छे,
 च्याहं भेद छे अधाकाल ना,
 अधाकाल छे मिनख लोक मे,
 आतो सूर्यादिक री चाल छे,
 इदा^३ अगी^४ जमा^५ नें नेरइ^६,
 सोमा^७ इसणीया^८ विमला^९ दिसि,
 नव दिस मे अजीव अरूपी तणा,
 छत्र भेद नीची तमा दिस मभे,
 ए भगोती दसमा सतक मे,
 तो ही कालवादी भूठी थको,
 नीचा तिरछा खेतर लोक मे,
 छ भेद कह्या ऊंचा लोक में,
 ए भगोती रे सतक इग्यार मे,
 उंचा लोक मे काल निषेधीयो,
 छहू दिस लोक नें अंत छेहेडे,
 अजीव अरूपी रा छ भेद छें,
 धर्म अधर्म नें आकाश नां,
 कालवादी कहे तिहां काल-छें,
 छ भेद अरूपी रा कह्या,
 काल परपे लोक रे छेहेडे,
 इग्यारे भेद तो काढ सकें नही,
 उंधी परपे सुध बुध बाहिरा,
 रूपी अरूपी विण वसतु नही,
 तयारो लेखो तो मूढ करे नही,
 रूपी अरूपी जीव अजीव रो,
 भगोती रे सतक सोलमे,
 कालवादी कहे काल अलोक मे,
 अजीव दरब रो दैस अलोक में,

समय खेतर ने उडू विमाण जी ।
 ए तो च्याहं बराबर जाण जी ॥ ७ ॥
 ठांणाअंग चौथा ठांणा मांहि जी ।
 गण निपन नांम छे ताहि जी ॥ ८ ॥
 वले मरण^५ ने अधाकाल जी ।
 ठांणाअग चौथो ठांणो सभाल जी ॥ ९ ॥
 ते तो समयादिक जाणे एह जी ।
 अढी दीप बारें नही तेह जी ॥ १० ॥
 बाहणी^६ नायवा^७ दिस जाण जी ।
 दसमी दिस तमा^९ पिछांण जो ॥ ११ ॥
 सात भेद तिहा वरते काल जी ।
 अधा समो दीयो जिण टाल जी ॥ १२ ॥
 पेहले उदेसे जोय संभाल जी ।
 लोक अलोक में कहें काल जी ॥ १३ ॥
 अजीव अरूपी रा भेद सात जी ।
 अधाकाल टाल्यो साख्यात जी ॥ १४ ॥
 लेजो दसमें उदेसे संभाल जी ।
 तो अलोक मे किहा थो काल जी ॥ १५ ॥
 नही वरते समयादिक काल जी ।
 अधासमों दीयो जिण टाल जी ॥ १६ ॥
 देस परदेस कह्या जिणराय जी ।
 तो तू सातमो भेद बताय जी ॥ १७ ॥
 रूपी रा कह्या छे भेद च्यार जी ।
 तो तूं काढ बताय इग्यार जी ॥ १८ ॥
 लोक अलोक में कहें काल जी ।
 दे दे सूतर रे सिर आल जी ॥ १९ ॥
 जीव अजीव विण नही काय जी ।
 यूही कूडी करे बकवाय जी ॥ २० ॥
 रुडी रीत काढ्यो नीकाल जी ।
 आठमे उदेसे संभाल जी ॥ २१ ॥
 ते बोले नही वचन विमास जी ।
 अनत भाग उणो छें आकास जी ॥ २२ ॥

दसमे उदेसे दूजा सतक मे, भगोती मे काढ्यो नीकाल जी ।
 पिण कालवादी भूठ आदख्यो, अलोक मे कहि २ काल जी ॥ २३ ॥
 रात-दिन अनंता नीपजे, ते तो लोक असखेग माय जी ।
 अढी दीप मे दरब अनत छे, इण लेखे अनता थाय जी ॥ २४ ॥
 एक २ दरब उपर गिण्या, एक २ रात दिन जाण जी ।
 इम अनंता दरब उपर गिण्या, अनता रात दिन पिछाण जी ॥ २५ ॥
 बले तीनूइ काल तणा गिण्या, तो पिण अनत हुवे दिन रात जी ।
 ए भगोती सतक पांचमें, नवमें उदेसे कइया साख्यात जी ॥ २६ ॥
 काल फरसे पांचू दरबा तणा, छ दिस ना परदेस चकवाल जी ।
 पिण परदेस पांचू दरब ना, केइ फरसे न फरसे काल जी ॥ २७ ॥
 समय खेतर परदेस आगलो, तठा बारे न फरसे काल जी ।
 माहे परदेस पांचू दरब ना, अघा समो फरसे दगचाल जी ॥ २८ ॥
 जो काल हुवे लोक अलोक मे, तो सगला परदेस फरसे काल जी ।
 फरसे न फरसे जिण क्यानें कहे, कोइ समझो सुरत सभाल जी ॥ २९ ॥
 भगोती रे सतक तेरमे, चौथे उदेसे ए विसतार जी ।
 फरसे नही फरसे ते विवरो कइयो, छ ही दरबा तणो निसतार जी ॥ ३० ॥
 नीची दिस थी उची दिस मझे, दरब अनत गुणा तिण मांय जी ।
 छ दरबा री अल्पाबोहत मे, तिणरो अर्थ सुणो चित्त ल्याय जी ॥ ३१ ॥
 नीची दिस में काल वरते नही, उची दिस काल वरते ताहि जी ।
 ते काल दरब माहे मिल्या, अनंत गुणा उंची दिस माहि जी ॥ ३२ ॥
 फिटकरलकरंड मेरु तणो, तिहा उची दिस वरते काल जी ।
 चंद सूर्य नी प्रभा पड़े तठे, समा नीपजे दग चाल जी ॥ ३३ ॥
 उचा लोक थी नीचा लोक मे, दरब अनत गुणां छे ताहि जी ।
 तठे समां अनता नीपजे, दोय विजे उडी तिण माहि जी ॥ ३४ ॥
 उचा लोक थी नीचा लोक मे, पुदगल जीव इधक विशेष जी ।
 अनंता गुणां कइयां ते काल सूं, छ दरब री अल्पा बोहत देख जी ॥ ३५ ॥
 उंचा लोक मे काल वरते नही, नीची दिस मे न वरते काल जी ।
 काल वरते कहे सब खेतर मे, ते करें मूढ भूठी भखाल जी ॥ ३६ ॥
 पन्नावणा रा तीजा पद मझे, तठे कइयो घणो विसतार जी ।
 तिणरो निरणो करें घट भीत रे, कालवादी रो सग निवार जी ॥ ३७ ॥
 लोक आकाशती सब लोक मे, तिणरा देस ने फरसे काल जी ।
 तिमहीज फरसे देश लोक नों, ए तो अघा समो दगचाल जी ॥ ३८ ॥

आकाशती रा देस परदेस सू, अलोक ने फरस्यो जाण जी ।
 और दरब नही अलोक मे, ए श्री जिणवचन परमाण जी ॥ ३६ ॥
 अढाई दीप दोय समुद ने, अधासमों फरसें दगचाल जी ।
 सेप दीप समुदर तेहनें, अधासमों न फरसें काल जी ॥ ४० ॥
 समय खेतर बारे छें नही, आ तो जोतपीयां री चाल जी ।
 जेठ समयादिक नीपजे नही, तठें किहां थी फरसें काल जी ॥ ४१ ॥
 पन्नवणा सूतर रे पद पनरमें, कोइ बुधवंत लेजो संभाल जी ।
 पिण कालवादी करमां वसें, लोक अलोक मे कहें काल जी ॥ ४२ ॥
 नीपने सूर्यादिक चालीया, समयादिक काल अनत जी ।
 ए भगोती रे सतक बारमे, छठे उदेसे कह्यो भगवत जी ॥ ४३ ॥
 नरकादिक गति में वरते नही, समों आवलिकादिक जाण जी ।
 त्यारा आउषादिक नें मापवा, मिनष खेतर में मान परमाण जी ॥ ४४ ॥
 आखा लोक मे काल वरतें नही, तो अलोक में किहाथी होय जी ।
 भगोती रे सतक पाच मे, लेजो नवमों उदेसो जोय जी ॥ ४५ ॥
 खेतर उजाड मे धान नीपनो, कोइ कहे मण सो दोय च्यार जी ।
 तिणरा मापा तोला छे गाम में, उण उनमान कह्यो विचार जी ॥ ४६ ॥
 ज्यूं नरकादिक जीवां कने, आउषादिक पुद्गल पाय जी ।
 ते तो समे २ पुद्गल खिरे, त्यारो मापो समय खेतर कांय जी ॥ ४७ ॥
 कपडो छे बजाज रा हाट में, गज दरजी रे घर ताहि जी ।
 ज्यूं आउषादिक जीवां कने, मापो छे समय खेतर मांहि जी ॥ ४८ ॥
 गाय भेंस उहाडै हाचले, कोइ कहें दूध सेर छें च्यार जी ।
 पिण तोला पड्या घर हाट मे, इणरे उनमान कह्यो विचार जी ॥ ४९ ॥
 ज्यूं संसारी जीवां तणा, आउषादिक सगलां तीर जी ।
 त्यांरा आउषादिक ने मापवा, समय खेतर में कह्यो काल वीर जी ॥ ५० ॥
 जीव अजीव अवगाहे रह्या, तिणरी मापो छें खेतर आकास जी ।
 केइ उजें विणसें केइ सासता, काल सूं माप लेजो विनास जी ॥ ५१ ॥
 संचिठण गति च्यार में, तिणरा अरथ री कीजो पिच्छांण जी ।
 सुन असुन मिश्रपणें रह्यो, तिणनें काल सूं गिणीयो जाण जी ॥ ५२ ॥
 जीव नरक सूं गयो गति ओरमें, फेर पाछो आयो नरक मांहि जी ।
 जद नेरइय मेल गयो हुतो, ते तो एक रह्यो नहीं ताहि जी ॥ ५३ ॥
 ते तो सुन सचिठण में रह्यो, ते तो काल सूं गिणीयो वीर जी ।
 हिवें असुन सचिठण नें कहें, तिणरो सुणजो अरथ सबीर जी ॥ ५४ ॥

जीव नरक सूं गयो गति ओर में, फेर पाछो आयो नरक ताहि जी ।
 जद नेरइया मेल गयो हूँ तो, ते तो सगलाइ हुवे नरक माहि जी ॥ ५५ ॥
 ते तो असुन सचिठण में रह्यो, ते तो काल सू गिणीयो एम जी ।
 हिवें मिश्र सचिठण ने कहुँ, तिणरो अरथ सुणो घर पेम जी ॥ ५६ ॥
 जीव नरक सू गयो गति ओर मे, फेर पाछो आयो नरक मांय जी ।
 जद नेरइया मेल गयो हूँतो, केइ उवेहीज केइ ओर आय जी ॥ ५७ ॥
 ते तो मिश्र सचिठण में रह्यो, तिणने काल सूं गिण्यो भगवत जी ।
 पिण काल न वरते नरक में, तिणरो न्याय सुणो वुघवत जी ॥ ५८ ॥
 सुन असुन मिश्र काल नरक मे, ते काल कह्या ओर न्याय जी ।
 तिणरो दिष्टन्त दे निरणो कहुँ, ते सामल जो चित्त ल्याय जी ॥ ५९ ॥
 एक चाडो भरयो तेल तेहनं, कोइ कहे तेल सेर छ सात जी ।
 पिण सेर नहीं चाडा मभे, ज्यू नरक मे नहीं काल विख्यात जी ॥ ६० ॥
 कालवादी कूडो मत थापवा, नरक माहि पल्पे काल जी ।
 सुन असुन मिश्र कालरो, भेद जाण्या विण करें भखाल जी ॥ ६१ ॥
 कालवादी रा मत तणी, एक इचरज वाली वात जी ।
 समझायो समभे नहीं, तिणरा घट माहे गूढ मिथ्यात जी ॥ ६२ ॥
 हूँ कहि र नें कित्तरो कहुँ, कालवादी रा मत रो कूड जी ।
 इम सांमल नें नरनारीयां, कालवादी सू रहजो दूर जी ॥ ६३ ॥
 काल दरव ओलखायवा, जोड कीची खेरवा मभार जी ।
 समत अठारे बत्तीसे समे, आसाढ सुद एकम सोमवार जी ॥ ६४ ॥



ढलल : ६

दुहल

कललवलदी रे करड उदें हुवलं, तलणसूं हुवलं घणों वलडरीत ।
तलणने छेडवीडल उलढु डे, नही नुडलड डेलण री नीत ॥ १ ॥
अरलहुंत देव ने आडरीडल, वले उवडलड डगलल डलध ।
तुडलनें अऑीव कहुं डूरख थकें, वले डूठें करें वलषवलद ॥ २ ॥
इण कललवलदी डलषंडी तणें, करडें घणें छें डलधुडलत ।
केइ डलरीकरडल ऑीवडल, ते डलनें इणरी वलत ॥ ३ ॥
केइ घेडी छे सुध डलधलं तणलं, तुडलरे घुर रुदु डलधुडलत ।
तुडलनें डडड डडें नही डरुवडल, तुुही करें इणरी डखडलत ॥ ॡ ॥
तलरण तलरण उतुतड डुरडल डणी, अऑीव कहुतें नलणें डूड ललऑ ।
हलवे डलडु करें छे डरुडणल, डलनें ऑीव डरुधलवण कलऑ ॥ ॡ ॥

ढलल

[धनुडल श्री आऑनगर डें वलइडें]

अरलहुंत देव ऑलण डलडण रल नलडक, ते नलशुचेंइ उतुतड ऑीवु रे लु ।
तुडलनें अऑीव कहुं कुुइ डूड डलधुडलतु, तलण दीधी नरक री नीवु रे लु ॥
अरलहुत देव अरी करडल ने हणीडल, देखु रे आंवल चेते नही* ॥ १ ॥
तुडलनें अऑीव डरुधें कलड डूडु, तुडलं कुीधी धरुड री आदु रे ।
अरलहुंत आड तलरे ओरल नें तलरें, कर २ कुुडी वलषवलदु रे लु ॥ दे० २ ॥
डलने अऑीव डरुधे उडड उदे सूं, तलरण तलरण उघलडें छें डलठु रे ।
अरलहुंत देव डुगत ऑलवलरल कलंडु, तुडलरु डलड उगडीडु डलठु रे लु ॥ ३ ॥
तुडलं अरलहुंतलं नें ऑीव न डरुधें, तुडलं दीधी डंसलर नें डूठु रे ।
डगलल डुनुडीसरलं रल ठुलल डलहुं, ते डत नलशुचेंइ डूठु रे लु ॥ ॡ ॥
ते डुनुडीसरलं ने तीथकर देवल नें, तीथकर देव डुडल रे ।
डलधलं रल गण अधलडतुी गणधर, अऑीव डरुधें तलण खलधल खुुठल रे ॥ ॡ ॥
तुडलनें अऑीव कहुे केइ डलरीकरडलं, ते अनेक गुणलं कर डहीतु रे लु ।
आऑलरुड डलण डुडल डुनुडीसर, ते हुुसी ऑलहुंगतल डें डऑीतु रे लु ॥ ६ ॥
तुडलनें अऑीव कहुे केइ डत हणी डलंनव, ते छतुुतुीड गुणलं डहीतु रे लु ।
तुडलरी वलकल करें डरुतुतुु रे लु ॥ ७ ॥

*डहु आंकडी डुरतुडेक गलथल के अनुत डे हल ।

उवभाय पिण मोटा मुनीवर, ते पचीस गुणां सहीतो रे ।
 त्याने अजीव कहे केइ अकल विहूणा, ते नरभव खोय जासी रीतो रे लो ॥ ८ ॥
 साधु रिषीसर मोटा मुनीसर, ते सत्तावीस गुणा करे पूरा रे ।
 त्यानें अजीव कहे बाल अग्यानी, तिणरी वात माने ते कूडा रे ॥ ९ ॥
 अरिहत आचार्य उवभाय ने साधु, ते सगलाई मोटा अणगारो रे ।
 त्याने अजीव सरखे उसभ उदे सू, ते वूड गया काली धारो रे ॥ १० ॥
 या मोटा पुरषां ने अजीव सरखंसी, तिणरें बंधसी पाप रा पूरो रे ।
 उवे उदे आसी जद दुखीयो होसी, तिणमें म जाणो कूडा रे ॥ ११ ॥
 जो इणहीज भव मे पांप उदे हुवे, तो पडे बाहला रो विजोगो रे ।
 वले रिघ संपत सगली विललावे, वले मिले दुसमण रो जोगो रे लो ॥ १२ ॥
 कदा इण भव माहिं उदे पाप न होवे, तो परभव मे संका मत आणो रे ।
 उत्तम पुरषां ने अजीव सरखे त्याने, भव २ मे दुखीयो जाणो रे ॥ १३ ॥
 उत्तम पुरषा ने अजीव सरधीया, आसातणा लागे भारी रे ।
 उसभ करम लागे इण सरघा थी, तिणसू भव २ में होसी खुवारी रे लो ॥ १४ ॥
 अरिहत आचार्य उवभाय ने साधु, त्यारो भजन करो दिन रातो रे ।
 त्याने अजीव कहे छे कुयातर, तिणरी मूरख मानसी वातो रे लो ॥ १५ ॥
 अरिहत आचारज उवभाय ने साधु, यां सगला ने ई जीव जाणो रे ।
 आगम संभालो नें जिणमत जोवो, इणमे सका मत आणो रे ॥ १६ ॥
 कालवादी री सरघा पुरमे परगट कीधी, भव जोवा रो करण उघारो रे ।
 समत अठारे बरस अडतीसे, वंसाख मुद पाचम बुधवारो रे लो ॥ १७ ॥



ढलल : ७

दुहल

अरिहंत आचार्य उवभाय नें, वले साधु मोटां मुनीराय ।
 त्यांनं कालवादी कहें काल छें, कूडा कुहेत लगाय ॥ १ ॥
 अरिहंत ने अरिहंतपर्णों, इम दोय २ बोल लगाय ।
 भोला नें पाड्या भर्म में, त्यांनं अजीव दीया सरघाय ॥ २ ॥
 अरिहंतपर्णों छुटे गयो, साधुपर्णों पिण छुट जाय ।
 जीव हुवों सिध तिण समें, जबें ए क्यूं गया विल्लाय ॥ ३ ॥
 जीव ने जीव रा गुण सासता, ते कदे नहीं विल्लाय ।
 जे विल्लाय पूरो हुवें, ते काल दरब छें ताय ॥ ४ ॥
 इम कहि २ भोला लोक नें, नाख्या भर्म जाल मांय ।
 पिण अरिहंत साधु रो सिध हुवो, ते जावक खबर न कांय ॥ ५ ॥
 अरिहंत साधु रों सिध हुवें, ते सूतर में जाब अनेक ।
 हिवे थोडा सा परगट कहूं, ते सुणजो आंण बवेक ॥ ६ ॥

ढलल

[चतुर विचार करे नें देखो]

नमोथुणं अरिहंत सिद्धां नें कीघों, ते अरिहंत थी हुवा सिधो रे ।
 ठांम २ नमोथुणं संभालो, ओ चोड़ें पाठ प्रसिधो रे ।
 चतुर विचार करे नें देखो ॥ १ ॥
 जे अरिहंत जेंवता विचरें, ते मुगत जावा रा कांमी रे ।
 आगे अरिहंत हुवा अनंता, त्यां सगलाइ सिध गति पांमी रे ॥ २ ॥
 पेंहलो नमोथुणं कीयो अरिहंत सिद्धां नें, बीजों नमोथुणं अरिहंता नें रे ।
 त्यां अरिहंतां नें अजीव परूपें, तिणरी वात अग्यांनी मांनं रे ॥ ३ ॥
 चोवीसां री असतूती लोगस गुणतां, ते अरिहंत सिध हुवा चोइसोंई रे ।
 त्यां अरिहंता नें अजीव सरखें, ते गया जमारो खोई रे ॥ ४ ॥
 अरिहंतां रा गुणां करे अरिहंत वाजें, साघां रा गुणां सूं साधु वाजे रे ।
 त्यां मोटां पुरषां नें अजीव कहतां, मूरख मूल न लाजें रे ॥ ५ ॥
 ज्यां पुरषां रा नांम लीयां थी, कटें पाप अदभूतो रे ।
 त्यां पुरषां नें अजीव परूपें, तिण दीघा नरक रा सूतो रे ॥ ६ ॥
 कालवादी कहें साध जीव हुवें तो, सिधां में साधु बतावो रे ।
 साध तो काल दरब पूरो हुवों, जब उणनें साध वतावे छें न्यावो रे ॥ ७ ॥

रूइ रो सूत करे कपडो कीयो, पिण उतपत रूइ री जाणों रे ।
 ज्यू साध अरिहत थई ने सिध हूआ, पिण यांरी उतपत साध पिछांणो रे ॥ ८ ॥
 तिण कपड़ा ने रूइ कहे त्याने, मतहीण मानव जाणों रे ।
 ज्यू सिद्धां ने साध परूपे, ते मूढ मिथ्याती अयांणो रे ॥ ९ ॥
 रूइ रा गुण तो कपडा मे संमाया, ज्यू साध रा गुण सिधा मे समावें रे ।
 पिण वरतमान काले हुवें जिम कहणो, ते समझ विरलां ने आवे रे ॥ १० ॥
 रूइ रो गराग आया कपडो जोवे, पिण रूइ कठा सू पावे रे ।
 ज्यू कोइ साध सिधा माहे पूछे, सिद्धां मे साध किहां थी वतावे रे ॥ ११ ॥
 खाड रो बूरो करे कीधी मिश्री, पिण स्वाद न पडीयो जूओ रे ।
 ज्यू वधता २ जीव रा गुण वधीया, जब ओ साध तणो सिध हुओ रे ॥ १२ ॥
 माखण ताएने घृत कीघो, ते घृत हुओ छे चोखो रे ।
 ज्यू साधां रा सिध हूआ करणी करें, त्यां सकल करम कीयां सोखो रे ॥ १३ ॥
 आखा लोक मे धर्मास्तीकाय रा, खंध परदेस दोय भेद पावे रे ।
 आखा लोक में पूछे धर्मास्ती रो देस, तिणमे देस किहां थी वतावे रे ॥ १४ ॥
 खघ हुवे तिहा देस न हूवे, देस हुवे तिहा खंध न पावे रे ।
 आखो ते खव ने उणो ते देस, दोनूं भेला किहा थी वतावे रे ॥ १५ ॥
 ज्यू आत्मिक सुख पूरा सिद्धा मे, देस सुख साधां माहे पिछांणो रे ।
 सपूर्ण सुख ने सिध कहीजे, देस सुख ते साध ने जांणो रे ॥ १६ ॥
 सपूर्ण सुख तिहा नही अधूरा, अधूरा तिहां सपूर्ण नांही रे ।
 पूरा सुख सिधा मे उणा सुख साधा मे, दोनू सुख नहीं एकण मांही रे ॥ १७ ॥
 जिण समे साध तिण समे देस सुख, सिध तिण समे देस सुख नाही रे ।
 जब साध मरे ने सिध हूवो जद, देस सुख आयो सर्व सुख माही रे ॥ १८ ॥
 धर्मास्तीकाय रो खघ हुवे तिहा, देस रो खय नही हूवों रे ।
 ज्यू साध रो सिध हूवों जब, साध न पडीयो जूओ रे ॥ १९ ॥
 मोष री साधन करतो साध कहिवांणो, साधन कर चूका ने सिध जाणो रे ।
 उणहीज साध रो सिध हुवो छे, तिण माहे सका मत आणो रे ॥ २० ॥
 तिण साधु ने अजीव कहे छे अग्यानी, ते बूड गयो काली धारो रे ।
 ह्यण सरधा ने कोइ साची जाणे, ते पिण जासी जनम विगाडो रे ॥ २१ ॥
 साध रो सिध भगवत हूवो छे, तिणरी खबर न कायो रे ।
 तिण साध नें अजीव कहे कालवादी, तिण गाला रो गोले चलायो रे ॥ २२ ॥
 कोरा धान ने कोरो धान कह्यो छें, सीभता ने कहे सीभे धानों रे ।
 सीभ गया नें कह्यो सीइयौ धान, ए तीनूं धान जाणों बुधवानो रे ॥ २३ ॥

कोरा धान ज्यू अविरती समदिष्टी, सीभे ज्यूं साधु श्रावक पिच्छांपो रे ।
 सीइया धान ज्यूं सिध भगवांन छे, ए तीनू उत्तम जीव जाणों रे ॥ २४ ॥
 कोरा धान री खप कीयां सीइयी, ज्यूं समदिष्टी रो श्रावक हूवों जाणो रे ।
 पछे श्रावक रो साध अरिहंत हूवो, अरिहंत रो हूवों सिध निरवाणो रे ॥ २५ ॥
 कोरो धान अगन करें सीइयों, तिणमें कोरो किहां थी पावें रे ।
 ज्यूंतप सजम करे साध रो सिध हुआ, त्या में साध कठा थी वतावे रे ॥ २६ ॥
 कालवादी कहे समाइ कीधीं होवें, वले साधुपणों कीधो होवें रे ।
 कीधी वसतु ते जीव नही छे, इम कहि र भोलां नें विगोवें रे ॥ २७ ॥
 जो उ कीधी वसतु ने जीव न मानें, तो उ सिद्धा नें जीव क्यूं माने रे,
 सिध पिण करणी सू कीधा हुआ छे, आ पिण वात नही छे छाने रे ॥ २८ ॥
 भावे जीव ते भला भूंडा भाव होवे, ते तो कीधां ईज होवे रे ।
 तिण सू भावे जीव नें कह्यो असासतो, तिण सूतर सांहो न जीवे रे ॥ २९ ॥
 भावे न माने असासतो जीव ने, घणां सूतर रा पाठ उयापी रे ।
 असासता जीव रा भाव न सरधें, दूसरो छें मूरख पापी रे ॥ ३० ॥
 दरब जीव असंख परवेसी, ते तो कीधो होवे नांहो रे ।
 जीवरा भाव तो सर्व कीधां हुवे, जोवो सिधांत रे मांह्यो रे ॥ ३१ ॥
 ठाम र सूतर मांहे जीवो, साव पोहता निरवाणो रे ।
 त्या सावां नें उत्तम जीव सरधो, छोड दो कूडी ताणों रे ॥ ३२ ॥
 समत अठारें वरस अड्डीसें, वैसाष सुद आठम रविवारो रे ।
 जोड़ कीधीं पुर सहर रे मांही, भव जीवां -रो करण उचारो रे ॥ ३३ ॥

रत्न : ४

इन्द्रियवादी री चौपई

ढाल : १

ढुहा

केइ कहे इग्यारमे ने बारमे, दोय गुण ठाणा नव नव जोग ।
च्यार च्यार जोग मन वचन रा, नवमो उदारीक रो छे प्रयोग ॥ १ ॥
इम कहे ते वीतराग ने, भूठाबोला कहे छे ताम ।
ते ववेक विकल सुघ बुघ विना, भूठ बोले वेफाम ॥ २ ॥
त्यांरो भूठो मन वरते नही, मिश्र मन वरते नाहि ।
वले भूठ न बोलें सर्वथा, मिश्र भाषा नही त्यांरे माहि ॥ ३ ॥
इग्यारमा गुण ठाणा सू आदिदे, चवदमा गुण ठाणा लग जाण ।
जथाख्यात चरित छे निरमलो, जथातथ गुण रत्नारी खाण ॥ ४ ॥
ए च्यारा गुण ठाणा वीतराग छे, त्यानें पाप न लागे अस मात ।
कषायादिक जोग माठा नही, त्यारी मूल न विगटे वात ॥ ५ ॥
इग्यारमें बारमे ने तेरमे, तीन गुण ठाण पुन बघाय ।
ते पिण निरवद जोग सूं, इरिया वही कर्म लागे आय ॥ ६ ॥

ढाल

[आ अशुकम्पा जिण आग्या में]

जथतथ चाले वीतराग हुआ ते, त्याने भूठ लागतो मूल म जाणो ।
भूठ सूं पाप निकेवल लागे छे, ते अभितर जोय करों पिछाणो ।
वीतराग भाव अंतकरण ओलखजौ* ॥ १ ॥
भूठो मन मिश्र मन त्यांरो न वतें, भूठी ने मिश्र भाषा मूल न बोलें ।
निरदोष अखड चरित छे त्यारों, करलों काम पख्यां पिण मूल न डोलें ॥ २ ॥
भेषचारी कहे त्यानें भूठ लागे छे, ते ऊठी जठा थी निकेवल भूठी ।
वले ताणा ताण करे छे अग्यांनी, त्यारी अभितर आंख हीया री फूटी ॥ ३ ॥
भूठा जोग सूं पाप निकेवल लागे छें, ते पाप न लागें च्याहं गुण ठाणे ।
भूठा जोग वरत्या सूं पुन पिण न लागे, ते न्याय निरणा विण अग्यांनी तांणे ॥ ४ ॥
कदा कहिवा नें कहे पाप न लागे, जथाख्यात च्याहं गुण ठाणे ।
वले भूठाबोला त्यानें कहिता न सके, पोतारा बोल्या ने पोते नही पिछाणे ॥ ५ ॥
भूठ लागो कहे जथाख्यात चरित ने, त्यानें जाब पूछ्या बोले आल पपालो ।
ते भारीकर्मा जीव मूढ मिथ्याती, तीन काल रा अरिहत नें दीयो आलो ॥ ६ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

अठारें पाप ठांगा मोह कर्म री प्रकृत,
 ज्यारे मोह कर्म उदे जावक नाही,
 पापरा किरतब छे संसार में सगला,
 ते जयाख्यात चारितीयो नही सेवे,
 त्यानें निरवद जोग सूं पुन लागे छे,
 जब उ पण कहे त्याने पाप न लागे,
 कदा विण उपीयोगे कहुों हुवे तिणनें
 जो उ समभायों समभे नहीं मूरख,
 वीतराग नें भूठ लागे कहे तिणरे,
 कदा ताण करता टांको जलेतो,

त्यांरा उदा सूं सेवे छे किरतब अठारो ।
 ते सावद्य किरतब न करे लिंगारो ॥ ७ ॥
 हिंसा भूठ आदि दे सेवे अठारों ।
 त्यांरें निरवद जोग तणो व्यापारो ॥ ८ ॥
 भूठ ने मिश्र जोग हूआ लागें पापो ।
 पिण भूठ बोलण री करे मूढ थापो ॥ ९ ॥
 समभतों देखें तो समभाय दीजें ।
 तिणनें न्याय करे नें भूठो घालीजें ॥ १० ॥
 घट मांहें घणो छे घोर अंधारो ।
 उतकष्टो भमें तो अनंत संसारो ॥ ११ ॥

ढाल : २

दुहा

आठ कर्म जिणेसरभाषीया, तिणमें घणघातीया कर्म च्यार ।
ए च्यारू पाप कर्म उदे हूआ, जीवरे हूवे बोहत विगाड ॥ १ ॥
ए च्यारू कर्म षयोपसम हूआं, जब जीव उजल हुवे ताय ।
जिम जिम च्यारू कर्म पातला पडे, तिम तिम गुण परगट थाय ॥ २ ॥
ए च्यारू कर्म षयोपसम हूआं, जीव पावे बोल वत्तीस ।
ते वतीसोई पायक भाव माहिला, चोखा उजला विसवावीस ॥ ३ ॥
उजला हूवा करमा सू निवरते, ते उजला लेखे निरवद एह ।
वले बीजो निरवद किरतब कह्यो, तिणसू कर्म रुके तूटे तेह ॥ ४ ॥
कर्म रोके आतमा वस करे, ते सवर निरवद जाण ।
वले कर्म काटण करणी करे, ए बीजो निरवद वखाण ॥ ५ ॥
षयोपसम भाव छै निरमलो, तिणने कहे अग्यानी आम ।
त्यारा केयक बोल निरवद कहे, केइ सावद्य निरवद कहे ताम ॥ ६ ॥
षयोपसम भाव ने सावद्य कहे, तिणरी प्रतख भूठी वात ।
तिण सावद्य निरवद नही ओलख्यो, तिणरा घट माहे घोर मिथ्यात ॥ ७ ॥

ढाल

[पुन नीपजे शुभ जोग सू रे लाल]

हिवे षयोपसम भाव ओलखो रे लाल, आख हीयारी उघाड हो । भविक जण*
निरणो करो घट भितरे रे लाल, ते सावद्य नही छै लिगार हो ॥ भव० ॥
षयउपसम भाव निरवद जाणजो रे लाल* ॥ १ ॥
जो षयउपसम भाव सावद्य हुवै रे लाल, तो पायक भाव सावद्य वशेष हो ।
षयउपसम षायकभाव माहिलो रे लाल, या दोयारो छे निजगुण एक हो ॥ ष० २ ॥
ग्यानावर्णी दर्सनावर्णी मोहणी रे लाल, चोथो घणघातीयो अतराय हो ।
ए च्यारू कर्म घनघातीया रे लाल, ते धर्म आवा न दे ताय हो ॥ ३ ॥
आभ पडल ज्यू घणघातीया रे लाल, देस थकी षय थाय हो ।
जब जीव उजल हुवे देस थी रे लाल, ते सावद्य कठा थी आयो ताय हो ॥ ४ ॥
च्यारू कर्म देस थी अलगा हूआ रे लाल, मासू सावद्य निकलीयो कहे मूढ हो ।
तिण सावद्यावर्णी कर्म थापियो रे लाल, तिणरे गाढी मिथ्यात री रुढ हो ॥ ५ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

सावद्यवर्णी कर्म चाल्यो नही रे लाल,
 तिण सूं षयउपसम भाव नें रे लाल,
 मोहणी कर्म जीव रे उदे हूआं रे लाल,
 वाकी तीन कर्म उदे हूआं रे लाल,
 उदे हूआंई सावद्य न नीपजे रे लाल,
 कर्म कटीयां सावद्य नीपनों कहे रे लाल,
 जीव उजला हूआं नें सावद्य कहे रे लाल,
 सावद्य घटीयो कहे उसम उदे हूआं रे लाल,
 उणरी सरघा रे लेखे सावद्युं मिटें रे लाल,
 सावद्य सेवे च्याहूं कर्म बांध नें रे लाल,
 घणघातीया देस थी अलगा हूआं रे लाल,
 कर्म कटीयां सावद्य वचीयो कहे रे लाल,
 ए च्याहूं कर्म पातला पख्या रे लाल,
 कर्म पातला पख्यां सावद्य नीपजे रे लाल,
 कर्म अलगा हूआं निरवद नीपजे रे लाल,
 तिण निरवद ने सावद्य कहे रे लाल,
 आठ करमां मांहे छै अति बुरा रे लाल,
 ते पतला पख्यां जीवरे ओगुण कहे रे लाल,
 जिणमें अविनादिक ओंगुण घणा रे लाल,
 सिष्ट गुण जीवरा नें सावद्य कहे रे लाल,

सावद्य आडा च्याहूं कर्म नाहि हो ।
 सावद्य सरघे मत पडजों फंद माहि हो ॥ ६ ॥
 जब तो सावद्य किरस्तब होय जात हो ।
 सावद्य नहीं नीपजे तिल मात हो ॥ ७ ॥
 तो कटीयां नहीं सावद्य अंसमात हो ।
 आ विकलां री इचर्यवाली वात हो ॥ ८ ॥
 तो मेला हूआं सावद्य मिट जाय हो ।
 उणरी सरघा मिलसी इण न्याय हो ॥ ९ ॥
 च्याहूं कर्म उदे आयां पूर हो ।
 उदे आणे सावद्य करणों दूर हो ॥ १० ॥
 सावद्य भूंडो नीपनो कहे तांम हो ।
 ते तों बूडे अग्यांनी वेफांम हो ॥ ११ ॥
 कदे सावद्य नीपनों मत जाण हो ।
 आतो पाषंडीयांरी छे वांण हो ॥ १२ ॥
 आतो जिणजी रा मुख री वात हो ।
 तिण रे उदे आयो छे मिथ्यात हो ॥ १३ ॥
 घणघातीया च्याहूं कर्म हो ।
 ते भूला अग्यांनी भर्म हो ॥ १४ ॥
 तिणरी सरघा रहे नहीं सुघ हो ।
 तिणरी भिष्ट हुई छै बुघ हो ॥ १५ ॥



ढाल : ३

दुहा

कांयक घगघातीया कर्म षय हूआं, वलें उदे हूआ ते षय जाय ।
बाकी दबीया छे ते उपसम्यां, षयउपसम कर्म हूआ इण न्याय ॥ १ ॥
च्यारु कर्म षयउपसम हूआं, थोरो सो जीव उजल थाय ।
ते उजलो खयउपसम भाव छे, ते चेतन गुण परजाय ॥ २ ॥
ग्यांनावर्णीं षयउपसम हूआ, आठ गुण परगट थाय ।
च्यार ग्यान ने तीन अगिनान कह्या, सूत्रादिक नो भणवो ताय ॥ ३ ॥
ए आठ गुण छेकेवल ग्यान मांहिला, त्यामे सावद्य नही छे एक ।
जो या मांहिलो कोई सावद्य हुवे, तो केवल ग्यान सावद्य वशेष ॥ ४ ॥
ग्यांनावर्णीं षयउपसम हूआं, ग्यान आयो कहे ते तो न्याय ।
पिण अग्यान कठा थी आवीया, कोई एहवी पूछा करे आय ॥ ५ ॥
परमार्थ ग्यान अग्यान रो, एक कह्यो जिणराय ।
ते पिण आवे छे ग्यानावर्णीं घट्या, तिणरो न्याय सुणो चित्त ल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[जीव मोह अन्नुकम्पा न आशीये]

गिनान ने अगिनान दोया तणो, षयउपसम भणवो तो एक जांणरे ।
ते तो समदिष्टी रो ग्यान जिण कह्यो, मिथ्याती रो कह्यो अनाण रे ।
निरवद षयउपसम भाव छे* ॥ १ ॥
समदिष्टी भणे आगम गिनान ने, तेहिज भणे मिथ्याती गिनान रे ।
उणरो ग्यान छे उणरो अग्यान छे, तिणरो निरणो कीजो बुधवांन रे ॥ नि० २ ॥
भारतादिक साख पर समे, त्याने भणें मिथ्याती जाणे रे ।
तेहिज भणे समदिष्टी जाण ने, उणरे अनाण उणरे नांण रे ॥ ३ ॥
केइ निखद कहे गिनान नें, पछे सरघा वतावे विरुध रे ।
सावद्य निरवद कहै छै अग्यांन नें, आतो प्रतष बात विरुध रे ॥ ४ ॥
अगिनान ने सावद्य कहे, तिणरा घडा लग्गावें आंम रे ।
खोटा साख भणे जांण जांण ने, उघाडे मुख घोखे तांम रे ॥ ५ ॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

अग्यांन सावद्य हुवे इण विद्य भण्यां, तो ग्यांन पिण सावद्य होय रे ।
 एहीज भणे समदिष्टी इण विधे, ए दोनू बरोबर सोय रे ॥ ६ ॥
 समदिष्टी खेती करें जाणं ने, ग्यान सू जाणें होसी घान रे ।
 नही जाणे तो खेत वावे नही, तो ही सावद्य नही छे ग्यान रे ॥ ७ ॥
 समदिष्टी जाणे ग्यान सू, पुत्र होसी परणीज्यां नार रे ।
 पछे जाण परणीजे नार ने, पिण ग्यांन नही सावद्य लिगार रे ॥ ८ ॥
 समदिष्टी रे कोई बेरी हुवै, तिणनें मारण रो लग रह्यो ध्यांन रे ।
 ते पिण मारे छे ग्यान सू जाणं ने, ते पिण सावद्य नही छे ग्यान रे ॥ ९ ॥
 इत्यादिक अनेक सावद्य करें, समदिष्टी ग्यान सू जाण रे ।
 तो पिण ग्यान सावद्य मत जाणजों, सावद्य किरतब लेजो पिछांण रे ॥ १० ॥
 एहीज किरतब मिथ्याती करे, अग्यान सू जाण पिछांण रे ।
 जो ग्यान निरवद छे निरमलो, तो अग्यान पिण निरवद जाण रे ॥ ११ ॥
 ग्यान अग्यान दोनू छे उजला, त्यारी धारणा निरवद जाण रे ।
 धारणा दोनू री छे सारिषी, तिण मे सका मूल म आण रे ॥ १२ ॥
 ग्यान ने अगिनान तेह ने, जाणपणा तणो गुण जाण रे ।
 ओर गुण ओगुण नही एह मे, तिणरी बुधवत करजो पिछाण रे ॥ १३ ॥
 जे जे कर राखी छे धारणा, ते तो धारणा निरवद जाण रे ।
 ते धारणा उंधी सरधीयां, मिथ्यात उदें भाव पिछाण रे ॥ १४ ॥
 शास्त्र भणवारो उदम करे, तेतो जोग तणो व्यापार रे ।
 सावद्य जेग उदे भाव मोह सू, निरवद जोगारी करणी सार रे ॥ १५ ॥
 ग्यान अग्यांन छत्रा रूप जीव रे, तिणसू जाण रह्यो छे ताय रे ।
 जे जे कोई सावद्य नीपजे, मोह उदा तणी परजाय रे ॥ १६ ॥
 बोलवा चालवादिक अति घणी, जीवरी परजाय अनेक रे ।
 जाण पणा विण ग्यान अग्यान री, परजाय नही छे एक रे ॥ १७ ॥
 कोई अग्यांन ने सावद्य कहे, तिणरी प्रतष भूठी वात रे ।
 तिणरें उसभ उदे रा जोर सू, चोरें पडवजीयो मिथ्यात रे ॥ १८ ॥



ढाल : ४

दुहा

दरसणावर्णी घणघातीयो, षयउपसम होय पढ्यो खीन ।
जब आठ गुण परगट हुवे, पाच इंद्री ने दर्शन तीन ॥ १ ॥
ए आठूं गुण निरदोष छे, उजला लेखे निरवद जाण ।
ते केवल दर्शण माहिला, गुण रतनां री खांण ॥ २ ॥
केई अग्यांनी इम कहे, आठोई गुण निरवद नाहि ।
याने सावद्य निरवद दोनू कहे, भोला ने न्हाखें फंद माहि ॥ ३ ॥
यां आठा गुणा मे सावद्य हुवें, तो केवल दर्शण सावद्य विशेष ।
ए तो केवल दर्शण माहिला, यां सगला रो गुण एक ॥ ४ ॥
पाच इंद्री ने तीन दर्शण मभे, सावद्य नही छे एक ।
ते जथातथ परगट करू, ते सुणजो आंण वदेक ॥ ५ ॥

ढाल

[जोयजो रे समकित * आउषो टूटी ने साधो को नही रे]

चषू दर्शण मे चषू इद्री अछे रे, अचषू दर्शण में आइ इद्री च्यार रे ।
यां जिना देखे कोई मरजाद सू रे, ते अविद्य दर्शण छे या सू न्यार रे ।
षयउपसम भाव छे निरवद जिण कह्यो रे* ॥ १ ॥
सुरतइद्री सुने छे तीन शब्द ने रे, पाच वर्ण चषू इद्री देखे ताहि रे ।
यारो तो ओहिज गुण सभाव छे रे, गुणअवगुण और नही त्यां माहि रे ॥ २ ॥
घणइद्री वेदे दौय गध ने रे, रस इद्री रस वेदे पाच सवाद रे ।
फरस इद्री वेदे आठ फरस ने रे, यासू नही विषे तणो विवाद रे ॥ ३ ॥
ए त्रेवीस प्रकारे पुद्गल जूजूआरे, वेदे देखे ते दर्शण जाण रे ।
या में राग ने घेष सेव्या विषे हुवे रे, तिणसू तो पाप लागे छे आण रे ॥ ४ ॥
सुरतइद्री मे पुद्गल आए पडे रे, ते सुरतइद्री रे नावे भोग रे ।
चषू इद्री देखे छे पुद्गल दूर थी रे, ते पिणनावे छे तिण रे भोग प्रजोग रे ॥ ५ ॥
बाकी तीन इंद्री मे पुद्गल आए परे रे, ते पुद्गल आवे छे त्यारे भोग रे ।
गंध रस ने फरस भोगवे रे, त्यां पुद्गल नो आय मिले सजोग रे ॥ ६ ॥
सुरतइद्री ने चपूइद्रीया रे, यारे तो पुद्गल आवे काम रे ।
भोग नही छे यारे सर्वथा रे, तिणसू यारो कामी इंद्री नाम रे ॥ ७ ॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

घणइंद्री रसइंद्री नें फरस इंद्रीयां रे,
 तिण सू तीनूं इंद्री भोगी कही रे,
 कामी नें भोगी तो इंद्रियां कही रे,
 त्यासूं तो पाप न लागे सर्वथा रे,
 कामभोग सूं सुमता नही हुवै रे,
 कह्यो छे उतरावेन बतीस में रे,
 सज्जम निरवाहण राखण शरीर ने रे,
 ते निरवद जोग तणो व्यापार छे रे,
 त्यारे निरवद जोगां सूं निरजरा हुवै रे,
 त्यांसाघारे सावद्यनही राख्यो सर्वथा रे,
 ग्रहस्थ उदीरे पुदगल भोगवे रे,
 तिण शरीर प्रग्रहा नों कीयो जाबतो रे,
 वले छे काय रो सन्न ने तीखो कीयो रे,
 तिण सू पुदगल ने भोगववा तणी रे,
 सेह हजे इंद्रिया मे पुदगल आए पडें रे,
 जब पाप रो अंस न लागें तेहने रे,
 पुदगल नें भोगवे देखें उदीर ने रे,
 तिणरो सावद्य निरवद किरतब ओलखों रे,
 जिण आग्या सहीत पुदगल ने भोगवे रे,
 कर्म कटे छे तिण सू आगला रे,
 जिण आगना विण कोइ पुदगल भोगवें रे,
 तिण सू पाप कर्म लागे छे तेहने रे,
 आख्या सू देखें कागादिक जीवने रे,
 तिणसूं चषू इंद्री ने सावद्य कहे रे,
 चषू इंद्री सू रूप देखे नारी तणो रे,
 तिण सू चषू इंद्री नें सावद्य कहें रे,
 दत्यादिक रूप अनेक देखने रे,
 तिणसूं चषू इंद्री नें सावद्य कहें रे,
 च्यारां इंद्रिया मे पुदगल आए पडें रे,
 जब केयक जीवां रे अवगुण नीपजें रे,
 चषू इंद्री पुदगल देखे दूर थी रे,
 जब केयक जीवां रे आंगुण नीपजें रे,

यारें तो पुदगल आवे भोग रे।
 त्यानें पुदगल रों आय मिल्यां संजोग रे ॥ ८ ॥
 कामभोग ने पुदगल जाण रे।
 पाप लागे छे राग धेष सूं आण रे ॥ ९ ॥
 असुमता पिण तिण सूं नही लिंगार रे।
 सो नें पहली गाथा मभार रे ॥ १० ॥
 पुदगल रो करे छें साधु आहार रे।
 इंदरयां रो नही छे विषे विकार रे ॥ ११ ॥
 जब पुन्य पिण सेहजें नीपजे छें ताय रे।
 त्यानें आज्ञा दीधी छें श्री जिण राय रे ॥ १२ ॥
 ते सावद्य जोग तणों व्यापार रे।
 वले इंद्रियां री सेवा विषे विकार रे ॥ १३ ॥
 इत्यादिक अवगुण छे तिण माहि रे।
 सुध साघां विण श्री जिण आग्या नांहि रे ॥ १४ ॥
 त्यानें कोई वेदे देखे छे ताय रे।
 राग धेष सूं पाप लागें छें आय रे ॥ १५ ॥
 ते तो छे जोग तणों व्यापार रे।
 जिण आग्या अणआग्या रो करों विचार रे ॥ १६ ॥
 ते निरवद जोग तणो व्यापार रे।
 वले नवों न लागे पाप लिंगार रे ॥ १७ ॥
 ते सावद्य जोग तणो व्यापार रे।
 ते जीव ने दुखना आपणहार रे ॥ १८ ॥
 जब करे सिकारी तिणरी घात रे।
 ते प्रतष भूठी तिणरी वात रे ॥ १९ ॥
 जब करे अकारज तिण सूं तेह रे।
 तिण पिण भूठ बे.ल्यो छे एह रे ॥ २० ॥
 केइ जीवां रे उठें विषे विकार रे।
 ते निरणों न जाणें मूढ गिवार रे ॥ २१ ॥
 ते इंद्रियां वेद लेवे छे ताहि रे।
 ते अवगुण बतावे इंद्रियां माहि रे ॥ २२ ॥
 ते देखणरो गुण छे तिण में ताम रे।
 खोटा वरत्या तिणरा परिणाम रे ॥ २३ ॥

सावद्य कहे पाचू इदखां भणी रे, तिणरे उदे छे मोह मिथ्यात रे।
 ते इंदरयां नें निश्चे निरवद जिणकही रे, तिण मे सका नही तिलमात रे ॥ २४ ॥
 जो देखयां वेद्यां इदखां सावद्य हुवे रे, तो जाण्यां सू ग्यान सावद्य होय जाय रे।
 ग्यान दर्शण रा गुण दोईज छे रे, सावद्य निरवद छै ओर परजाय रे ॥ २५ ॥
 दर्शण रो सभाव छे देखण तणो रे, और गुण ओगुण नही तिणरो एक रे।
 और गुण ओगुण नीपत्रे जीव रे रे, ते परजा छे जीव तणी अनेक रे ॥ २६ ॥



ढाल : ५

दुहा

च्यार कर्म घणघातीया, तिण में मोटों मोहणी कर्म ।
तिणरा उदा सूं जीव पांमें नही, समकत चारित धर्म ॥ १ ॥
तिणमें दर्शन मोहणी उदे हुवां, पडे उंधी सरघा माही आण ।
साची सरघा मूल सूमे नही, बूडे कूडी कर कर तांण ॥ २ ॥
चारित्र मोहणी रा जोग सू, करे सावद्य किरतब अनेक ।
खोटा २ काम सर्व आवीया, बाकी सावद्य रह्यो नही एक ॥ ३ ॥
ते मोहणी षयउपसम हूआं, जब आठ गुण परगटे आय ।
च्यार चारित्र देसविरत पाचमो, तीन दिष्ट षयउपसम थाय ॥ ४ ॥
ए आठोई बोल छें उजला, त्याने निरवद कह्या जिणराय ।
ते आठोई षायक भाव मांहिला, त्यासूं कर्म न लागे आय ॥ ५ ॥
षयउपसम भाव मिथ्यादिष्टनें, सावद्य कहे अग्यांनी तांम ।
तिणरी जथातथओलखणा कहूं, ते सुणज्यो राखे चित्त ठाम ॥ ६ ॥

ढाल

[दुलहो मानव भव पावखो]

उघो सरघे ते मिथ्यादिष्ट छे, ते दसविघ कह्यो मिथ्यात हो । भविकजन ।
ते आश्रव उपाय छे पाप रो, ते उदे भाव कह्यो जगनाथ हो ॥ भ० ॥
षयउपसम भाव छे निरमलो* ॥ १ ॥
दसोई उंधा बोल मांहिलो, कोइ सूघो सरघे बोल एक हो ।
ते निरदोष षयउपसम भाव छे, पाछे सावद्य रह्या बोल शेष हो ॥ ष० २ ॥
जिम २ घट छे उंधो सरघवो, तिम २ घटें छे मिथ्यात हो ।
उवो घटया वघे सूघो सरघवो, ते षयउपसम भाव साख्यात हो ॥ ३ ॥
ते पयउपसम भाव निरवद कह्यो, श्री जिणमुख सूं आप हो ।
ते उजला लेखे निरवद कह्यो, वले लकीया छें तिणसूं पाप हो ॥ ४ ॥
इम घटतां २ सगला घटया, उघा दसोई बोल जाण हो ।
जव हूवो मिथ्याती रो समकती, एहवो पयउपसम भाव पिछांण हो ॥ ५ ॥
कोइ, षयउपसम निरवद भाव ने, सावद्य कहे छे कर २ तांण हो ।
ते यूही बूडे छे वापडा, ते जिण मारग रा अजांण हो ॥ ६ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

मिथ्यात मोहणी कर्म उदे हुआं, जब उदें भाव सावद्य मिथ्यात हो ।
 ते घटीयां सावद्य वधीयों कहे, ते विकलां वाली छें वात हो ॥ ७ ॥
 उदें भाव कही मिथ्यादिष्ट नें, ते मिथ्यात मोहणी सु जाण हो ।
 वले षयउपसम कही मिथ्यादिष्ट नें, ते मोह कर्म पख्यां हांण हो ॥ ८ ॥
 मोह कर्म उदे सावद्य नीपजें, षयउपसम हूआं सावद्य नाहि हो ।
 षयउपसम हूआं निरवद्य नीपजे, बुधवंत समभों मन माहि हो ॥ ९ ॥
 मिथ्यादिष्ट षयउपसम भाव छे, समामिथ्या दिष्ट तिमहीज जांण हो ।
 षयउपसम भाव निरवद्य कह्यो, तिण माहे सका मत आंण हो ॥ १० ॥
 जो षयउपसम भाव सावद्य हुवे, तो षायक भाव सावद्य वशेह हो ।
 षयउपसम षायक भाव माहिलो, यां दोयां रो छे निजगुण एक हो ॥ ११ ॥
 षयउपसम भाव सावद्य हुवे, तो उदे भाव सूं मिट जाय हो ।
 उणरी सरघा रो ओहीज न्याय छे, उदे भाव रो करणो उपाय हो ॥ १२ ॥
 तो मिथ्यात मोहणी कर्म बांघणो, तिण सू षयउपसम मिट जात हो ।
 साची सरघा ने उंधी सरघ ने, पाछों पडिवजणो मिथ्यात हो ॥ १३ ॥



ढलल : ६

दुहल

चुथु कुडु घणघलतुतुतु, डलरु कुडु अंतरलतु ।
तुण २ वसतुरुतु छु चलवनुल, तुण आडु हुतुतु रहुतुतु तलतु ॥ १ ॥
अंतरलतु कुडु तणल, तलतु डुतु कहुतुल तुणरलतु ।
तुरथडु दलनल अंतरलतु छु, डुतुतु डुतु ललडुल अंतरलतु ॥ २ ॥
डुतु उवडुतु आडु हुतुतु रहुतु, तुतु डुतु उवडुतु अंतरलतु ।
वुतुतु अंतरलतु कुडु थकुतु, सकुतु दवुतु रहुतु तलतु ॥ ३ ॥
षतुतुतुतुतु हुतुतु अंतरलतु तलतु, आठ गुण तुरगुतुतु आतु ।
तलतु लडुतु नुतु तुतु वुतुतु हुतुतु, तुतु नुतुतुल गुण तुरतुतुतु ॥ ॡ ॥
ए आठुतुतुतु गुण नुतुतुव उतुलल, तुतुतु नुतुतु सलवदु कहुतु कुडु डुतुडु ।
तुण अतुतु डुतुतु रल सरखल सुतुतुतु, छुडु हलतुल रल रुडु ॥ ॡ ॥

ढलल

[वलनलरल डुतु सुतु सुतु गुतुतुतु : डलडु डुतुदुक नुतु डुतुतु]

धूर सुतु तुतु दलनल अंतरलतु, तुणरुतु षतुतुतुतुतु थलतु ।
दलनल आडु नहुतुतु छु तलतु, दलनल लडुतु तुरगुतु हुतुतु आतु ॥ १ ॥
तुण लडुतु नुतु नुतुतुव तलतुतुतु, तुणल डुतुतुतु सडुक डुतु आतुतुतु ।
तुणलनुतु सलवदु कहुतु तलतु तलतु, तुतु तुतु तुणल डुतुतु अतुतुतु ॥ २ ॥
इण लडुतु डुतु ओगुण नलनुतुतु, लडुतु तुतु तुणल आगनल डुतुतुतु ।
गुण अवगुण दलनल डुतु तलतुतु, सलवदु नुतुतुव डुतु तलतुतुतुतु ॥ ३ ॥
इवलरुतु डुतु दलनल दवुतु तलतुतु, तुतु तुतु सलवदु तुतु तलतुतुतुतु ।
वलरुतु डुतु दलनल दवुतु छु कुतुतु, तुणलरल नुतुतुव तुतु छु सुतुतु ॥ ॡ ॥
दलनल नुतु सलवदु नुतुतुव तलतुतु, तुतुतुनुतु रुडुतु रलतु तलतुतुतुतु ।
सलवदु दलनल तुतु तुरतुष खुतुतु, लडुतु गुण छु नुतुतुतुतु डुतुतु ॥ ॡ ॥
दलनल लडुतु नुतु दलनल छु तुतुलरु, तुणलरुतु डुतुधवतुतु तलतु वलतुलरु ।
दलनल लडुतु तलतुनतु कुतुतु, सलवदु दलनल तलतुतु तलतुतुतु ॥ ६ ॥
दलनल लडुतु छु नुतुतुव डुतुतु, तुणल डुतुतुतु सडुक डुतु लुतुलवु ।
दलनल लडुतु सलवदु कहुतु कुतुतु, उषरुतु लुतुतु नुतुतुव कुतुतु हुतुतु ॥ ७ ॥
कुडु वलतुतु दलनल अंतरलतु, सतुतु सुतु उदुतु अणलतु ।
षतुतुतुतुतु नुतु दवुतुतुतु घतुतु, उणरुतु लुतुतु नुतुतुव इडु थलतु ॥ ॡ ॥

दांना अंतराय कर्म घटीयो, जीव उजल हूवो कर्म मिटीयो ।
 तिण उजल नें सावद्य कहे ते भूठो, मोह कर्म उदे हीयो फूटो ॥ ९ ॥
 सावद्य वधीयो कहे घटियां कर्म, ते भूला अग्यानी भर्म ।
 ते सावद्यावर्णी कर्म थाप, यू ही बाधे अग्यानी पाप ॥ १० ॥
 दूजी लाभ अंतराय, तिणरो षयउपसम थाय ।
 लाभ आडी नही छे ताय, लाभ लब्द परगट हुवे आय ॥ ११ ॥
 तिण लब्द नें निरवद जाणों, तिण माहे सका मत आपो ।
 तिणनें सावद्य कहे तांण २, ते तो जिणमारग रा अजाण ॥ १२ ॥
 इण लब्द मे आंगुण नाही, लब्द तो जिण आगना मांही ।
 गुण आंगुण लाभ लेण मे जाणो, सावद्य निरवद भेद पिच्छाणो ॥ १३ ॥
 पुदगलादिक री छे चाय, इविरत मे लेण रो उपाय ।
 तिणनें मेल्यां मिले छे आय, तिणरा सावद्य जोग छे ताय ॥ १४ ॥
 पुदगलादिक री छे चाय, जिण आग्या सूं मेलण रो उपाय ।
 तिण ने मेल्यां मिले छे आय, तिणरा निरवद जोग छे ताय ॥ १५ ॥
 सावद्य जोग सूं पाप बंधाय, निरवद जोग सूं निरजरा थाय ।
 नही तूटे बंधे लब्द सूं कर्म, लब्द छे निरजरा धर्म ॥ १६ ॥
 इत्यादिक अनेक भेद जाण, दान लब्द ज्युं लेजो पिच्छाण ।
 लाभ लब्द में ओगुण नाही, गुण अवगुण पुदगल मेल्या माही ॥ १७ ॥
 तीजी भोगा अंतराय, तिणरो षयउपसम थाय ।
 भोग आडी नहीं छे ताय, भोग लब्द परगट हुवे आय ॥ १८ ॥
 तिण लब्द नें निरवद जाणों, तिण मांहे संका मत आपो ।
 तिणने सावद्य कहे ताण २, ते तो जिण मारग रा अजाण ॥ १९ ॥
 इण लब्द मे आगुण नाही, लब्द तो जिण आगना माही ।
 गुण ओगुण भोगवण मे जाणों, सावद्य निरवद भेद पिच्छाणो ॥ २० ॥
 पुदगल भोगवण री छे चाहि, इविरत में भोगवे छे ताहि ।
 पुदगल भोगवले एक वार, तेतो सावद्य जोग व्यापार ॥ २१ ॥
 पुदगल भोगवणरी छे चाहि, जिण आग्या सूं भोगवे ताहि ।
 पुदगल भोगवले एक वार, ते तो निरवद जोग व्यापार ॥ २२ ॥
 सावद्य जोग सूं पाप बंधाय, निरवद जोग सूं निरजरा थाय ।
 नही तूटे बंधे लब्द सूं कर्म, लब्ध छे निरजरा धर्म ॥ २३ ॥
 इत्यादिक अनेक भेद जाणो, दान लब्द ज्युं लेज्यो पिच्छाणो ।
 भोग लब्द में ओगुण नाही, गुण ओगुण भोगवण रे माही ॥ २४ ॥

असणादिक च्याहं आहार, ते भोग आवे एक वार ।
 ते उवभोग कह्यो जिणराय, तिण आडी नही छे ताय ॥ २५ ॥
 वल्ल गेहणादिक अनेक प्रकार, ते तो भोग आवे वाहंवार ।
 ते परिभोग कह्यो जिणराय, तिण आडी नही छे - ताय ॥ २६ ॥
 उवभोग लब्ध ज्यूं जाणो, परिभोग लब्ध पिच्छाणों ।
 सगलोई कह्यो विसतार, लब्ध सावद्य नही छे लिगार ॥ २७ ॥
 पांचमी वीर्य अंतराय, तिणरो षयउपसम थाय ।
 वीर्य आडी नही छे ताय, वीर्य लब्ध परगट हुवे आय ॥ २८ ॥
 तिण लब्ध नें निरवद जाणो, तिण माहें संका मत आणो ।
 तिण नें सावद्य कहे तांग ताण, ते तो जिण मारग रा अजाण ॥ २९ ॥
 इण लब्ध मे ओगुण नांही, लब्ध तो जिण आगना मांही ।
 गुण ओगुण किरतब मे जाणों, सावद्य निरवद भेद पिच्छाणों ॥ ३० ॥
 संसार रो किरतब करे जाणों, ते तो सावद्य जोग पिच्छाणों ।
 निरवद किरतब करे कोय, तिणरा निरवद जोग छें सोय ॥ ३१ ॥
 किरतब नें सावद्य निरवद जाणो, त्यां नें रुडी रीत पिच्छाणों ।
 सावद्य किरतब प्रतष खोटो, लब्ध गुण छे निरंतर मोटो ॥ ३२ ॥
 वीर्य लब्ध नें किरतब न्यारो, तिणरो बुधवंत जाणें विचारो ।
 वीर्य लब्ध रा जतन कीजे, सावद्य किरतब नें त्याग दीजे ॥ ३३ ॥
 इत्यादिक अनेक भेद जाणो, दान लब्ध ज्यूं लीज्यो पिच्छाणों ।
 वीर्य लब्ध में ओगुण म जाणों, गुण अवगुण किरतब मे पिच्छाणों ॥ ३४ ॥
 कोइ कहे बल प्राकम नही हुवें ताय, तो खोटा किरतब केम कराय ।
 तिण सू बल प्राकम सावद्य छे भूडो, इण सू कर्म बांधे जीव बूडो ॥ ३५ ॥
 उसभ उदे एहवी चरचा आणे, ते बल प्राकम नें सावद्य जाणें ।
 एहवी उंधी करे बकवाय, इणरो न्याय सुणों चित्त ल्याय ॥ ३६ ॥
 अंतराय रो षयउपसम थाय, बल वीर्य सक्त हुवे ताय ।
 ते उजला लेखे निरवद रुडा, त्यानें सावद्य कहे ते कूडा ॥ ३७ ॥
 यां सू किरतब करे भला भूडा, भला सू तिरे भूडा सू बूडा ।
 किरतब नें जोग व्यापार जाणों, सावद्य निरवद री करो पिच्छाणों ॥ ३८ ॥
 बल वीर्य सक्त प्राकम ताह्यो, वीर्य लब्ध में सर्व समायो ।
 ए छता रूप जीव रे मांहि, तिणसूं कर्म तूटें बंध नाहि ॥ ३९ ॥
 धर्मी पुरष छे बलवंत रुडा, करणी करे कर्म करे दूरा ।
 अधर्मी तो निरवद हुआ रुडो, नही बांधे पाप रा पूरो ॥ ४० ॥

ते तो बल छे किरतब रूप ताह्यो,
जोवो सुतर भगोती रे म्हांयों,
सावद्य जोग उदे भाव भूडा,
लब्ध षयउपसम भाव छे रूडो,
षयउपसम ने उदे भाव,
षयउपसम ने सावद्य जाणे,
वले वीर्यं सकत पिछ्छाणो,
ते गुण जीव सू नही छे जूआ,
जेहवा सरीर पुदगल बधाय,
बल प्राकम हीणो इधिको होय,
शरीर गाढो हुवे अतंत,
शरीर पुदगल घट जावे,
जीव शरीर सू ह्वो न्यारो,
जब गयो जीव मुगत रे माही,
बल शरीर रे परसंग,
तिणरो कह्यो घणो विसतारो,
भार ले जावे वूढो ने तरुणो,
तरुणा ज्यू बालक तीर चलायो,
आहार सिज्जा उपघादिक ज्याने,
ते किरतब लेखे कह्या जाणो,
आहार सिज्जा उपघादिक जेह,
ते तो सावद्य निरवद नाही,
ज्यू बल प्राकम वीर्यं पिछ्छाणों,
माठी बुध मत कही छे ताय,
बुध मत सूं करे विचारो,
माठो विचारुवो माठो जोग पूरो,
इत्यादिक बोल अनेक पिछ्छाणो,
पिण षयउपसम भाव छे चोखो,
बाल वीर्यं गुण ठाणां च्यार,
तिण वीर्यं सूं सावद्य रो आगार,
तिण इविरत सूं पाप लागे,
पिण वीर्यं लब्ध छे षयउपसम भावो,

सावद्य निरवद जोग में आयो ।
जयवती ने वीर बतायो ॥ ४१ ॥
तिणसू जीव अनता वूडा ।
ते पामे छे कर्म हूवा हूरो ॥ ४२ ॥
त्यारो छे जूदो जूदो सभाव ।
ते अग्यांनी थका उधी ताणे ॥ ४३ ॥
ते जीवरा उजल गुण जाणो ।
पिण शरीर रे प्रयोगे हूआ ॥ ४४ ॥
तेहवा बल प्राकम थाय ।
ते शरीर काचे पाकें सोय ॥ ४५ ॥
जब जीव मे बल अनंत ।
जब प्राकम हीणो थावे ॥ ४६ ॥
जब नही बल प्राकम लिंगारो ।
तठे बल प्राकम नही काई ॥ ४७ ॥
जोवो रायप्रसेणी उपंग ।
केसीकुमर मोटा अणगारो ॥ ४८ ॥
कावर दिष्टंत दे कीयो निरणो ।
तीर कबाण रो मेल्यो न्यायो ॥ ४९ ॥
सावद्य निरवद कह्या वीर त्याने ।
तिण ने रूडी रीत पिछ्छाणो ॥ ५० ॥
ते तो पुदगल दरब छे एह ।
ते विचार करो मन माही ॥ ५१ ॥
सावद्य जोग किरतब सूं जाणो ।
ते पिण कही छे किरतब रे न्याय ॥ ५२ ॥
ते पिण मन जोगरो व्यापारो ।
अछो विचारुवो निरवद जोग रूडो ॥ ५३ ॥
त्यानें किरतब लेखे सावद्य जाणो ।
ते निश्चै निरवद निरदोखो ॥ ५४ ॥
तिणमे पिण ओगुण नही लिंगार ।
तिण आगार सूं हुवे छे विगाड ॥ ५५ ॥
तिण ने माठी जाणे ने त्यागे ।
ते तो निरजरा गुण छे चावो ॥ ५६ ॥

पिडत वीर्यं नवगुणठांणा मांही, तिण सूं सावद्य न सेवणों काई ॥
 सावद्य सेवण रो त्याग्यो आगारो, तिण सूं इविरत न रही लिगारो ॥ ५७ ॥
 जब चारित षयउपसम हूवो, ते चारित छे वीर्यं सूं जूओ ।
 तिण चारित सूं पाप रुक जावे, लब्द उज्जल रही थिर भावे ॥ ५८ ॥
 बाल पिडत वीर्यं नें पिछ्छांणो, तठें तो पांचमों गुण ठांणो ।
 देस थकी इविरत नें त्यागी, देस थकी हुवो वैंरागी ॥ ५९ ॥
 इण त्याग सूं पंडित जांणो, इविरत रही सूं बाल पिछ्छांणो ।
 बाल पिडत इण लेखे हूओ, वीर्यं रो गुण इण सूं जूओ ॥ ६० ॥



ढाल : ७

दुहा

सागार उपीयोग रा, आठ भेद कहा जिणराय ।
 पांच ग्यांन तीन अग्यांन छे, और भेद नही कोई ताय ॥ १ ॥
 त्यामें केवल ग्यांन सारां सिरे, क्षायक भाव सागार ।
 ते पामें ग्यांनावर्णी क्षय हुआं, तिणरो कोइं न पामें पार ॥ २ ॥
 सेष ग्यांन अग्यांन रह्या तेह ने, कहिजें षयउपसम भाव सागार ।
 ते केवल ग्यांन मांहिली बांनगी, त्यामे अवगुण नही छे ल्गार ॥ ३ ॥
 च्यार ग्यांन केवल ग्यांन मांहिला, ते तो मिल गयो न्याय ।
 पिणअग्यांनकेवल मांहि किम मिलें, कोई एहवी पूछा करें आय ॥ ४ ॥
 ग्यांन अग्यांन तो एकहीज छे, एकहीज उपीयोग सागार ।
 ते पामें ग्यांनावर्णी घट्यां, मिटे जीव तणों अंधकार ॥ ५ ॥
 *समदिष्टी रो ग्यांन जिण कह्यों, मिथ्याती रोकह्योंछेअनांण ।
 षयउपसम भाव तो निरमलो, दोयां रो वरोवर जांण ॥ ६ ॥
 ग्यांन अग्यांन षयउपसम भाव छे, या मेंजांणपणा रोंगुणजांण ।
 औरगुण यां में एक पावे नही, ते सुणजों चुत्तर सुजांण ॥ ७ ॥

ढाल

[विनरा भाव सुण सुण गूजे]

उंचो सूघो जांणपणो सारो, ग्यांन सूं सर्व राखे धारो ।
 ए षयउपसम भाव छे चोखों, तिण मे कोइ म जांणो दोखो ॥ १ ॥
 जिण रीतें धारे समदिष्टी, तिण रीते धारे मिच्छदिष्टी ।
 यांरी धारणा दोयां री एक, तिण में कोइ नही छे बशेष ॥ २ ॥
 धारणा षयउपसम भाव छे आछो, धारणा मति ग्यांन छे साचो ।
 तिण सूं पाप रके तुटे नाहीं, वले पाप न लागे काई ॥ ३ ॥
 ऊंचों सूघों जांणपणो सारो, धार्यां नही दोष ल्गारो ।
 उंचो सरघ्यां हुवे धणो विगाडों, जीवरो हुवे बहुत खुवारों ॥ ४ ॥
 अधर्म नें धर्म सरघे ताय, धर्म ने अधर्म सरघाय ।
 अजीव ने जीव सरघे कोय, जीव ने सरघे अजीव सोय ॥ ५ ॥

* (मिच्छत्त समाजोगा, अणाण गाणत्ति ठाविया सण्णा ।
 उपयोगो एक्कं जहा, माहण चंडाल घड सलिलं १ ॥

कुमारग ने मारग सरखें कोइ, मारग नें कुमारग सरखें सोई ।
 असाध ने सरखें साध, साध - नें सरखे असाध ॥ ६ ॥
 अमूकाणा ने सरखे मूकाणों, मूकाणों सरखे अमूकाणों ।
 इत्यादिक उंचा बोल सरधाय, तिण सूं जीव मिथ्याती थाय ॥ ७ ॥
 दंसण मोह उदे हूवों आय, उंचो सरधवा लागो ताय ।
 जब हूवो जीव मिथ्याती, उंची सरधा रो पषपाती ॥ ८ ॥
 साची सरधा भाषी जगनाथ, ते उंचा सरध्यां आवें मिथ्यात ।
 और उंचो सरधणी आवे, तो भूठ लागे पिण सरधा न जावें ॥ ९ ॥
 मिथ्याती उंचो सरधा सूं वागें, तिण रे क्रिया मिथ्यात री लागे ।
 ते दंसण मोह उदे भाव जाणों, तिण ने रूडी रीत पिछाणो ॥ १० ॥
 तिणरे षयउपसम भाव अनांण, तिण सूं पाप न लागे आंण ।
 षयउपसम भाव ने उजल जांणो, मिथ्याती रे छे तिण सूं अनांणो ॥ ११ ॥
 ओहीज समदिष्टी रे छे नांणो, षयउपसम भाव दोयां रो एक जांणो ।
 ग्यांनावणीं रो षयउपसम हूओ, तिण सूं दोयां रो गुण नहीं जूओ ॥ १२ ॥
 समदिष्टी रे कह्यो छे ग्यांन, मिथ्याती रे कह्यो छे अग्यांन ।
 तिण सूं समदिष्टी वागो ग्यांनी, मिथ्याती वागो अग्यांनी ॥ १३ ॥
 जिणरी सरधा छे सुध मान, ते भणीयो पूर्व रो ग्यांन ।
 एक बोल उंचो सरखें ताय, जब निरवद मिथ्याती थाय ॥ १४ ॥
 तिणरो भणीयो पूर्व रो ग्यांन, तिणरा ग्यांन ने कहीजे अग्यांन ।
 इण ग्यांन में आंगुण नहीं लिगार, अग्यांन वाज्यों मिथ्यात री लार ॥ १५ ॥
 ओहीज बोल सूधो सरखें ताय, जब उहीज समदिष्टी थाय ।
 तिणहीज अग्यांन ने ग्यांन जांणो, समकत लारे ग्यांन कहवांणो ॥ १६ ॥
 सावद्य उदे भाव मिथ्यादिष्ट, निरवद षयउपसम भाव दिष्ट ।
 सावद्य सूं पाप लागे आय, निरवद सूं पाप कर्म रूकाय ॥ १७ ॥
 ग्यांन अग्यांन तो षयउपसम भाव, जांणवा देखवा रो सभाव ।
 यां में तो ओहीज गुण पिछाणो, उजला लेखे निरवद जांणों ॥ १८ ॥
 त्यां सूं कर्म रूके तूटे नाही, त्यां सूं पाप न लागे काई ।
 केवल ग्यांन ने दर्शण पिछाणो, त्यां मांहिली वानगी जाणो ॥ १९ ॥
 ग्यांन सागार उपीयोग जांणो, तिणरो वरोष बोध वखांणो ।
 तिण में विवरो विचार विगनांन, दर्शण विचे ग्यांन प्रधान ॥ २० ॥
 दर्शण उपीयोग छे मणागार, तिण में नहीं विगनांन विचार ।
 तिण में देखण रो गुण छे ताहि, और गुण नही छे तिण मांहि ॥ २१ ॥

दर्शन देखवा रो गुण छे ताय, ग्यांन विना खबर नही काय ।
 तिण सूं ग्यान कह्यो परधान, दर्शन नें कह्यो सामान ॥ २२ ॥
 या री खबर जुदी जुदी पाडो, बुधवंत हीया मे विचारो ।
 मतग्यान रा अठावीस भेद, ते सुणजो आंण उमेद ॥ २३ ॥
 सुरतइद्री मे शबद पडे आय, मतग्यान विण खबर न काय ।
 उग्रह करे विचारे कोय, निरणो कर घारी राखें सोय ॥ २४ ॥
 विचारणा निरणो करे सोय, ते तो सावद्य निरवद होय ।
 ते तो जोग तणो व्यापार, सावद्य निरवद लेजों विचार ॥ २५ ॥
 धारणा कर राखें सोय, ते पिण सावद्य निरवद होय ।
 तिण में मन जोग रो व्यापार, ते पिण बुधवंत लेजों विचार ॥ २६ ॥
 उग्रह इहा उवाय नें धारे संसार नें हेत विचारे ।
 ते सावद्य जोग कह्या जिणराय, माठी बुध मत छे इण न्याय ॥ २७ ॥
 उग्रह इहा अवाय नें धारे, निरजरा हेतें मन मे विचारे ।
 ते निरवद जोग कह्या जिणराय, आछी बुध मत छे इण न्याय ॥ २८ ॥
 बुवरो व्यापार मन जोग जांणो, मन विण नही कठे ठिकांणो ।
 बुध षयउपसम भाव छे न्यारो, तिण सूं नहीं सुधारो विगाडो ॥ २९ ॥
 इम पाचूं इंद्री नें मन जांणो, उग्रहादिक च्याळूं सगले पिछाणो ।
 च्याळूं इंद्री ना वंजण च्यार, त्या में चषू नें मन कीयो न्यार ॥ ३० ॥
 ए मतग्यांन रा भेद अठावीस, सुतर मे भाष्या जगदीस ।
 ते सुणवादिक सू करे विचार, सावद्य निरवद जोग व्यापार ॥ ३१ ॥
 जांण जाण सावद्य करे कोय, तो ही ग्यांन सावद्य नही होय ।
 ग्यांन षयउपसम भाव छे ताहि, सावद्य किरतव उदे भाव माहि ॥ ३२ ॥
 ग्यान परिज्ञा समदिष्टी रे होय, पिण पचखांण परिज्ञा न कोय ।
 ते सावद्य कामा करे जांण, तिण सू पाप कर्म लागे आण ॥ ३३ ॥



ढाल : ८

[चतुर विचार करी ने देखो]

शब्द रूप गंध रस नें फरस, रुडा उपर आणें छे रागो रे ।
पाडुवा उपर धेषज आणें, तिणरे पाप कर्म आय लागो रे ।
चुतर विचार करे नें देखो* ॥ १ ॥

शब्द रूप गंध रस नें फरस, रुडा उपर न आणें रागो रे ।
पाडुवा उपर धेष न आणें, तिणरें पाप रो अंस न लागो रे ॥ २ ॥
राग धेष आयां विण पाप न लागें, ते बुधवंत करो विचारो रे ।
पाच इंद्रयां सू पाप कदे नही लागें, यां में अवगुण नही लिगारो रे ॥ ३ ॥
इंद्री तो षयउपसम भाव छे चोखो, राग धेष उदे भाव जाणो रे ।
ते चारित मोह उदे सू नीपना, यां नें रुडी रीत पिछाणों रे ॥ ४ ॥
सागार नें मणागार उपीयोग, त्यानें ओलखल्यो घट मांहीं रे ।
अनंता पदार्थ जाणे नें देखें, तिण सू अनंती परजायो रे ॥ ५ ॥
जाणपणा नें सागर उपीयोग जाणो, और गुण आंगुण तिणमें नांही रे ।
मणागार उपीयोग में देखण रो गुण, और गुण अवगुण नहीं तिण मांही रे ॥ ६ ॥
उपीयोग उपीयोग री परजाय सू, कर्म रुके तूटे नांहीं रे ।
वले उपीयोग सू कर्म न लागें, जोवो द्रव गुण पर्याय मांही रे ॥ ७ ॥
केइ मानव कहें उपीयोग सेती, रुके तूटे छें कर्मों रे ।
वले कहें कर्म उपीयोग सू लागें, ते भूला छें जाबक भर्मों रे ॥ ८ ॥
द्रव गुण परजाय दुवार लोकानें, रुडी रीत सीखावे रे ।
पिण आपरा बोल्या री समझ पड़े नही, तिण सू गाला रा गोला चलावे रे ॥ ९ ॥
अनंता पदार्थ जाणें नें देखें, उपीयोग रा ए गुण वतावे रे ।
द्रव गुण पर्याय भिन २ लोकानें, रुडी रीत सीखावें रे ॥ १० ॥
वले कहें छे कर्म रोके नें तोड़े, ते तो सागार ने मणागारो रे ।
वले कहे कर्म उपीयोग सू बंधें छे, ओ प्रतष देखो अंधारो रे ॥ ११ ॥
षयउपसम इंद्रा नें सावद्य सरघें, हाथां सू लगायो भूर्जों रे ।
आपरी सरघा में आप अलूजें, जब डाहो कुण मानसी दूजो रे ॥ १२ ॥
षयउपसम भाव नें सावद्य सरघें, जब सावद्य खोटो साख्यातो रे ।
तिण सावद्य नें आस्रव कहिता लाजें, त्यांरी बिगडी सरघा वातो रे ॥ १३ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

सावद्य कह्यो जब आश्रव निश्चै,
तो ही सावद्य कहें पिण आश्रव न कहे,
जब कहे म्हें षयउपसम भाव तिणेंने,
सुध जाब नायां दूसरी ले उठे,
जो थे उदा सूं षयउपसम सावद्य जाणो,
सावद्य कह्यो तिणेंने आश्रव कहीजे,
षयउपसम भाव ने सावद्य कहे पिण,
ते लीघी टेक छूटे नही तिण थी,
आगे आश्रव मे दोग भाव पहण्या,
षयउपसम कहां उठे आगली सरघा,
जाणे भूळ बोलूं पिण आगली सरघा,
तो दोग भाव आश्रव माहें दाखूं,
पिण षयउपसम भाव नें प्रसिघ चोडे,
सावद्य कह्यो जब आश्रव कह दीयो,
तो पिण तीन भाव आश्रव माहें,
इसडी ताण आले रह्या त्यां ने,
जो आश्रव मे तीन भाव नही कहो,
उदे ने परिणामीक कहे ने,
इणविघ चरचा में बंध कीघां,
वले अकवक करनं उघो बोलें,
कोइ गहलो कहे म्हारी मा बांभडी छे,
मो पूत तणी मा बांभडी निश्चै,
ज्युं कोई षयउपसम ने कहे सावद्य,
म्हारी मां ने वले बांभडी छे तिम,
केइ मानव पांचू इंदर्यां ने,
कूडा २ कुहेत लगाए,
सुरतइंद्री नों सभाव छे एहवो,
और गुण आंगुण नही सुरतइंद्री मे,
भला २ शब्द सुणनं राग आणें,
ए प्रतष आंगुण राग घेष में,

कह दियो चोडे साव्यातो रे ।
कूडी टेक भाल्यारी आ वातो रे ॥ १४ ॥
उदा सू कहा सावद्य तामो रे ।
तिणने पाछो कहणो वले आमो रे ॥ १५ ॥
तो पिण सावद्य कह्यो षयउपसम भावो रे ।
थारे मूढे थे कर दीयो न्यावो रे ॥ १६ ॥
आश्रव कहितां आगे सको रे ।
ते कर्म तणे वस वको रे ॥ १७ ॥
उदे ने परिणामीक भावो रे ।
तिण सू खेले छे खोटा डवो रे ॥ १८ ॥
उवा पिण कुसले खेमे राखू रे ।
तीजो षयउपसम भाव न भाखू रे ॥ १९ ॥
सावद्य तो कह चूको रे ।
तो तीन भाव कहो मान मूको रे ॥ २० ॥
मुख सू कहणी न आवे रे ।
किण न्याय करे समभावे रे ॥ २१ ॥
तो षयउपसम ने सावद्य मत भाखो रे ।
आगली सरघा राखो रे ॥ २२ ॥
जाव नाया बोले कूरो रे ।
वले क्रोध करे भागे दूरो रे ॥ २३ ॥
ते चोडे कहूं नही छानें रे ।
एहवी बातडा हो कुण मानें रे ॥ २४ ॥
पिण सावद्य ने आश्रव कहे नाही रे ।
एहवो अंधारो छे तिण माही रे ॥ २५ ॥
सावद्य कहे छे लोका ने रे ।
चोडे कहे नही छे छाने रे* ॥ २६ ॥
भला नें भूंडा शब्द सुणायो रे ।
तिण मे संका म जाणो कोयो रे ॥ २७ ॥
घेष आणे शब्द सुणे भूडा रे ।
त्या सूं पाप कर्म बाधे वूडा रे ॥ २८ ॥

*ए २६ वी गाथा समूचे पयोपसम भाव उपर कही छे ।

चषू इंद्रीनो सभाव छे एहवो,
 और गुण आगुण नहीं चषू इंद्री में,
 भला २ रूप देखें राग आणे,
 ए प्रतष आंगुण राग घेष में,
 घाणइंद्री नों सभाव छे एहवो,
 और गुण अवगुण नही घाणइंद्री में,
 भला २ गंध उपर राग आणे,
 ए प्रतष औगुण राग घेष में,
 रसइंद्री नो सभाव छे एहवो,
 और गुण ओगुण नही रसइंद्री में,
 भला २ रस उपर राग आणे,
 ए प्रतष औगुण राग घेष में,
 फरसइंद्री नो सभाव छे एहवो,
 और गुण अवगुण नही फरस इंद्री में,
 भला फरस उपर राग आणे,
 ए प्रतष ओगुण राग घेष में,
 राग घेष में अवगुण दीसे उघाडो,
 यारी गुण परजाय छे न्यारी २,
 कोई कहे छे आगुण सुरतइंद्री मे,
 इसड़ा २ कूडा कु हेत ल्गाए,
 इसड़ा कूडा कु हेत सुण ने,
 हिवे तिणरो जाव सुणे भव जीवां,
 किण ही ठामें पुरष अनेक वेठा था,
 के कां रे तो शब्द गराज न आयो,
 के कां तो शब्द ने जथातथ जाण्यो,
 के कां रे शब्द सुणे वैराग उपनो,
 केडक तो सब्द सुणने रीइया,
 के कां रे शब्द सुणनें द्वेष आयो,
 सुणवो तो सगलां रो जाणो सरीषो,
 शेष उदे पयउपसम भाव नीपना,

भला भूडा रूप देखें रे ।
 बुधवंत ग्यान सूं इम पेखे रे ॥ २६ ॥
 भूंडा देखें आणे घेषों रे ।
 चषू इंद्रीनों काई नही लेखो रे ॥ ३० ॥
 भला ने भूंडा गंध वेदायो रे ।
 सूषी समभ पारो इण न्यायो रे ॥ ३१ ॥
 भूंडा गंध उपर द्वेष आणे रे ।
 घाणइंद्री में अवगुण भोला जाणे रे ॥ ३२ ॥
 भला भूंडा वेदे रस सवादो रे ।
 इण सूं मूल नही विषवादो रे ॥ ३३ ॥
 भूंडा रस उपर घेष आणें रे ।
 रसइंद्री में ओगुण भोला जाणे रे ॥ ३४ ॥
 भला भूडा फरस वेदायो रे ।
 इण नें ओलखल्यो इण न्यायो रे ॥ ३५ ॥
 भूंडा फरस उपर आणे घेषो रे ।
 फरसइंद्री नो नही कोई लेखो रे ॥ ३६ ॥
 पिण इंद्री में अवगुण नांही रे ।
 विचार देखो मन माही रे* ॥ ३७ ॥
 सब्द सुणीयां राग घेष आयो रे ।
 सुरतइंद्री ने सावद्य कहे ताह्यो रे ॥ ३८ ॥
 सुरतइंद्री नें सावद्य जाणे रे ।
 मन ने आण ठिकाणे रे ॥ ३९ ॥
 त्यां सब्द सुण्यो विषे कारी रे ।
 त्यांरे गुण अवगुण न हूवो ल्गारी रे ॥ ४० ॥
 ते निरवद जोग व्यापारो रे ।
 त्यानें संसार लागो खारो रे ॥ ४१ ॥
 त्यांरा तो सावद्य जोग छे भूंडो रे ।
 ते पिण सावद्य जोग सूं वूडा रे ॥ ४२ ॥
 सुरतइंद्री नों ओहीज सभावो रे ।
 ते सुणजों जथातथ न्यावो रे ॥ ४३ ॥

*ए ३७ वें गाथा समचे इंद्री उपरे छे ।

सबद सुण्यो पिण गराज न आयो,
जथातथ जाण्यो तिण विचार करे ने,
जथातथ जाण्यो ते गिनान मे आयो,
ए दोनूई परजाय निरवद जाणो,
वैराग भाव उपनो तिण रे,
ओपिण सुरतइंद्री नो गुण छे नाही,
राग ने घेष आयो छे त्यारे,
ते पिण अवगुण नही छे सुरतइंद्री मे,
राग ने घेष आया ते मोह उदे सू,
राग घेष तणी परजाय छे,
राग ने घेष तणा परिणाम,
ए पिण परिणाम जूआ जूआ छे,
एहवा भला भूडा परिणाम वरते छे,
ते पिण सावद्य जोग वरत्या छे,
सुरतइंद्री सूं सबद साथे लगो सुणीयो,
तिणा काले तो सम रह्या सारा,
हिवे के कारे अंतर मोहरत माहे,
के का रे मोहरत दोय मोहरत पाछे,
इम पोहर दो पोहर दिवस पख मास,
राग आवे तिण शब्द रे उपर,
सुरतइंद्री सू शब्द साभल लीघो,
हिवे तो शब्द ग्यान सू याद आयो छे,
ग्यान सू याद आया विषे सेवा लागो,
जो याद न आवे तो विषे न सेवत,
जो शब्द सुण्या सू राग उपनों,
ज्यूं ग्यान सू याद आयां राग आवे,
सुरतइंद्री ने ग्यान तो सावद्य नाही,
ताणाताण छोडो भव जीवा,
भूडा भूडा शब्द सुणीया घेष आवे,
रागरी ठोड तो घेष ने कहणो,
कोइ कहे छे अवगुण चषू इंद्री में,
इसडा कूडा रे कुहेत ल्गाए,

ते पिणसुरतइंद्री नों स्वभाव जाणो रे ।
ग्यान दूजो निरवद्य जोग पिछाणो रे ॥ ४४ ॥
विचार्यो ते निरवद्य जोग मांही रे ।
ते तो सुरतइंद्री नो गुण नाही रे ॥ ४५ ॥
चारित मोहणी घयउपसम हूओ रे ।
वैराग भाव इण सू जूओ रे ॥ ४६ ॥
पाप कर्म बघाणा भारी रे ।
ते बुधवत करज्यो विचारी रे ॥ ४७ ॥
ते सुरतइंद्री नी नहीं परजायो रे ।
ते सुरतइंद्री मे केम समायो रे ॥ ४८ ॥
वले बीतराग परिणामो रे ।
त्यारा जूआ जूआ छे नामो रे ॥ ४९ ॥
ते गुण अवगुण छे या माही रे ।
ते तो सुरतइंद्री मे नाही रे ॥ ५० ॥
घणा मिनखा रो द्रदो रे ।
कोई न पख्यो विषे रे फदो रे ॥ ५१ ॥
परिणाम माठ आया रे ।
त्या पिण माठ परिणाम चलाया रे ॥ ५२ ॥
तथा वरस छ मास रे माही रे ।
ते सुरतइंद्री मे अवगुण नांही रे ॥ ५३ ॥
ते तो बीत गयो तिण कालो रे ।
मोह उदे सूं हूवो मतवालो रे ॥ ५४ ॥
उणरे लेखे सावद्य ग्यानो रे ।
आ सरघा क्यूं नही मांनो रे ॥ ५५ ॥
सुरत इंद्री सावद्य होय जायो रे ।
तो ग्यान सावद्य क्यूं नही थायो रे ॥ ५६ ॥
सावद्य तो राग घेष रो चालो रे ।
श्री जिण वचन समालो रे ॥ ५७ ॥
राग ज्यूं सगलोई कहणो रे ।
रूडी रीत विचारी लेणो रे ॥ ५८ ॥
रूप दीठ राग द्वेष आवे रे ।
चषू इंद्री ने सावद्य बतावे रे ॥ ५९ ॥

वले कहे जीव दीठो आंख्यां थी,
 जो नही देखे तो क्यांने हणतो,
 इत्यादिक अनेक करे छे अकारज,
 ते सर्व अवगुण छे चषू इद्री नो,
 इण लेखे म्हे चषू ने सावद्य कहा छां,
 ग्यांन रो जाणपणो छे निरवद,
 इत्यादिक कूडा र कुहेत सुणे ने,
 हिवे तिणरो जाब सुणो भवजीवां,
 किण ही ठामें पुरष अनेक बेठा था,
 के कारे रूप गराज न आयो,
 सुरतइंद्री नो विस्तार कह्यो तिम,
 उठे शब्द कह्यो अठे रूप ने कहिणो,
 वले चषू इंद्री नो विसतार कहू छू,
 कोई चक्षु दर्शन ने सावद्य म जाणो,
 चषूसू देखनें करे सावद्य कामो,
 तो ग्यान सू जाण करे सावद्य कामा,
 आधे पुरष बेटा ने मोटो हूवो जाण्यो,
 जो नही जाणतो तो नही परणावतो,
 ग्यांन सूं जाणने श्रावक खेती करे छै,
 ते जाणे म्हारे धान इण विध होसी,
 कोइ श्रावक समायक कर बेठो,
 याद आइ तो परिणाम चलीया,
 जीव देख्यो तो हिंसा जीवरी कीधी,
 जो देखवो सावद्य तो जाणवो सावद्य,
 केइ समदिष्टी जाणने करावे,
 हाट हवेली मेहलादि करावे,
 जाण र नें एहवा कामा करे छे,
 देखने करे छे सावद्य कामा,
 कोई ग्यान सूं जाण नें संचो करे छे,
 वले विवध प्रकार संचो करे तोही,
 तो दर्शन सूं देखनें करे संचो,
 जाण नें देखने कीया सावद्य कामा,

जब कीधी जीवरी घातो रे ।
 इण लेखे आंख्यां सावद्य साख्यातो रे ॥ ६० ॥
 जो कीघा छें आंख्यां सूं देखो रे ।
 इसरो बतावे छे लेखो रे ॥ ६१ ॥
 चषू माहें छे मोटो दोखो रे ।
 तिणसूं ओ उपीयोग छै चोखो रे ॥ ६२ ॥
 कोई चषू इंद्री ने सावद्य जाणे रे ।
 मन ने आंण ठिकाणे रे ॥ ६३ ॥
 त्यां रूप दीठो विषेकारी रे ।
 त्यांरे गुण अवगुण न हूवो लिंगारी रे ॥ ६४ ॥
 चखुइंद्री नो पिण जाणो रे ।
 ते पिण रूड़ी रीत पिछांणो रे ॥ ६५ ॥
 ते सांमल ज्यो चित्त ल्यायो रे ।
 तिणरो न्याय धारो मन मांह्यो रे ॥ ६६ ॥
 जो चषू सावद्य होय जायो रे ।
 ते ग्यांन सावद्य क्यू न थायो रे ॥ ६७ ॥
 तिण जाण्यो तो पूत परणायो रे ।
 उणरे लेखे सावद्य ग्यांन थायो रे ॥ ६८ ॥
 सूर नेदाणादिक करावे रे ।
 उणरे लेखे सावद्य ग्यांन थावे रे ॥ ६९ ॥
 तिणने थेली भूली याद आइ रे ।
 उठ चाल्यो भांग समाइ रे ॥ ७० ॥
 थेली जांणी तो भांगी समाइ रे ।
 तिणमें कांइ घालो घुचलाई रे ॥ ७१ ॥
 गढ कोट किलादिक भारी रे ।
 नही जाणे तो न करे लिंगारी रे ॥ ७२ ॥
 तोही ग्यांन नें नहीं कह्यो छो भूंडो रे ।
 तो दर्शन नें सावद्य कहि कांय बूडो रे ॥ ७३ ॥
 गुल तेलदिक घन घानो रे ।
 सावद्य नहीं कहें ग्यांनो रे ॥ ७४ ॥
 तो दर्शन सावद्य कांय जाणो रे ।
 दोयां री एक रीत पिछांणो रे ॥ ७५ ॥

समदिष्टी न्यातीलादिक ने मूंआ जाण्यां,
 तिण जाण्यां सूं आर्त्तध्यान ध्यावा लागो,
 तो एहीज कामा देखतां विगड्यां,
 जो देखें कीषां दर्शण सावद्य कहो छो,
 समदिष्टी घर मे घन गडीयो जाणे,
 जब याद आवे तब मन माहें मूर्छें,
 ग्यानं सूं जाण्यां तो मूर्छां आई,
 तेहीज सारा निजरां देख मूर्छें,
 जाण ने सावद्य कीयां ग्यान छे निरवद,
 अवगुण उदेभाव किरतब में छे,
 काम भोग जयातथ ग्यानं सूं जाणें,
 जो नही जाणें तो नही भोगवतो,
 तो चषू देखने भोग भोगवे,
 एक जाण भोगवे एक देख भोगवे,
 घन भूलो ते समदिष्टी ने याद आयो,
 याद नही आवे तो नही करत उदंगल,
 तो चषू सूं देखने करे उदंगल,
 जो जाण कीयां ग्यान सावद्य हुवे तो,
 माठी वस्त अजाण्यां खाधी,
 तिणरे मन भूंडो वरत्यां पाप वंघाणों,
 देख खाघो जब मन भूंडो न वरत्यो,
 तिण जाणपणा नें निरवद्य जाणो,
 चास वटाउ देखने पीधी,
 जाण्यो जब घसको पढ्यो त्यां रे,
 वटाउ मूंआ ते घसको परयां थी,
 ते जाणपणा नें निरवद थापो,
 साधु अपछरा देख रह्यो समभावे,
 तिणरो रूप आछो जाण ने साधु,
 तिणरा रूप री धारणा याद आई,
 ते धारणा ग्यानं री निरवद जाणों,
 धारणा याद आयां राग उपनो,
 चषू इंद्रि नों अवगुण मूल न दीसे,

बिगड्या जाण्यां काम अनेको रे ।
 ज्ञान ने दोष न कहो एको रे ॥ ७६ ॥
 जब पिण ध्यायो आरत ध्यानी रे ।
 तो जाणे कीषां सावद्य हुवो ज्ञानी रे ॥ ७७ ॥
 और माल मुलक वले ताह्यो रे ।
 नही जाणें तो नही मूरछायों रे ॥ ७८ ॥
 जब ग्यानं ने निरवद जाणो रे ।
 जब उलटी कांय ताणों रे ॥ ७९ ॥
 देखे सावद्य कीयां दर्शण चोखो रे ।
 दोनूं उपीयोग छे निरदोषो रे ॥ ८० ॥
 त्यां ने भोगवे जाण पिछ्छाणो रे ।
 जब थें ग्यान ने निरवद जाणो रे ॥ ८१ ॥
 जब चषू ने सावद्य कांय भाखो रे ।
 दोयां ने सरीषा क्यूं न दाखो रे ॥ ८२ ॥
 तिण सूं कीषा उदंगल अनेको रे ।
 जद ग्यान कहो निरदोषो रे ॥ ८३ ॥
 ते चषू नें सावद्य कांय भाखो रे ।
 देख कीयां चषू सावद्य दाखो रे ॥ ८४ ॥
 जाण्यो जब मन हुवो भूंडो रे ।
 ते किसा उपीयोग सूं बूडो रे ॥ ८५ ॥
 जाण्यो जब मन वरत्यो भूंडों रे ।
 तो चषू सावद्य कहे कांय बूडो रे ॥ ८६ ॥
 पछे सुणतें जाण्यो जहर पीघो रे ।
 पाप कर्म बांधें काल कीघो रे ॥ ८७ ॥
 जहर सुणने ग्यानं सूं जाण्यो रे ।
 तो चषू सावद्य मत कहो ताणो रे ॥ ८८ ॥
 घणा दिनां पछे अणसण लीघो रे ।
 भोग वंछा नीहाणो कीघो रे ।
 तो साधु कीघो नीहाणों रे ।
 तो चषू मांहे अवगुण कांय जाणो रे ॥ ९० ॥
 देख्यो जब तो राग न आयो रे ।
 तिणरो काल वीत गयो ताह्यो रे ॥ ९१ ॥

काम भोग सेव्या तै याद आया जब,
 जव किसा उपीयोग सू याद आया छे,
 ग्यान सू याद आयो तो राग उपनों,
 चपू आदि इंद्री ने सावद्य थापो,
 अस्त्री नों रूप देख विकार उपजे,
 ते पिण देखें ग्यान सू जाण्यां पाछे,
 सगली बाड भागे ग्यान सू जाण्यां पाछे,
 तिण ग्यान नें निरवद चोखो जाणो,
 देखने करे ते छे पिण ग्यान सू जाणे,
 जाण ने करे छे तिहां देखण री भजना,
 मेघकुमार हाथी रा भव मे,
 जब एक जोजनरो मंडलो कीधो,
 याद आयो जातीसमरण सेती,
 चपू सू पाछिलो भव याद न आयो,
 जिम छे तिमहिज जाण लीयां सू,
 जिम छे तिमहिज देख लीया सू,
 जिम छे तिमहिज देख लीयां थी,
 खोटो तको राग घेष उदेभाव,
 इत्यादिक अनेक करे सावद्य कामा,
 केइ दर्शग सू देख करे छे,
 इंद्रां रो सभाव तो जूओ २ छे,
 और उदे ने षयउपसम नही कोइयां में,
 केइ जाण करे केइ देख करे छे,
 उपीयोग तो छे दोइ निरवद नू,
 दोनू उपीयोग षयउपसम भाव छे चोखा,
 चपू उपीयोग ने सावद्य सरघे ते,
 जब केइ कहे म्हें मोह उदे सू,
 तिणने पाछो इम उत्तर दीजे,
 चारित मोहणी उदे हूवे जब,
 तिणसू राग ने घेष प्रवल वधीया,
 मोह कर्म पयउपसम हूवो जब,
 तेहीज मोहणी फेर उदे हूवें,

हूवो काम भोग रो रागी रे ।
 किसा उपीयोग सू बाड भागी रे ॥ ६२ ॥
 जब ग्यान जाण्यो थे रुडी रे ।
 ओ थे चोडे चलायो कूडो रे ॥ ६३ ॥
 जब भागे छे चोधी वाडो रे ।
 बाड भागी वधीयो विकारो रे ॥ ६४ ॥
 आगेवांणी तो सगलेई ग्यानो रे ।
 तो दर्शण सावद्य काय मानो रे ॥ ६५ ॥
 मन सू करे विचारो रे ।
 ए निरणो रुडी रीत धारो रे ॥ ६६ ॥
 जातीसमरण सू याद आयो रे ।
 घणा रूख उपाड्या ताह्यो रे ॥ ६७ ॥
 तिणनें तो कहो छो चोखो रे ।
 तिणमें कांय बतावो दोखो रे ॥ ६८ ॥
 ग्यान सावद्य नही ताह्यो रे ।
 दरसण सावद्य किम थायो रे ॥ ६९ ॥
 चपू दर्शण में नही खोटो रे ।
 तिण सू बधे छे पापरी पोटो रे ॥ १०० ॥
 त्यां मे केइ ग्यान सू जाणै रे ।
 त्यां ने रुडी रीत पिछांणो रे ॥ १०१ ॥
 और सभाव यां में न पावे रे ।
 इम समझ्या संका मिट जावे रे ॥ १०२ ॥
 सावद्य किरतव सारोई भडो रे ।
 त्यां नें सावद्य सरवे मत बूडो रे ॥ १०३ ॥
 उजला लेखे निरवद जाणो रे ।
 बूडे छे कर २ तांणो रे ॥ १०४ ॥
 षयउपसम ने सावद्य जाणो रे ।
 इसडी उंधी मत तांणो रे ॥ १०५ ॥
 वीतराग भाव विल्लावें रे ।
 तिण सू माठा जोग चलावें रे ॥ १०६ ॥
 षयउपसम भाव परगटीयो रे ।
 तेहीज षयउपसम घटीयो रे ॥ १०७ ॥

चारितमोहणी कर्म उदे सूं, तो षयउपसम विगंड्यो उदे भाव हूवों, मोह उदे सूं मोहरो षयउपसम विगख्यो, ज्यूं साधु विगड्या ने साधु म जाणो, ज्यूं षयउपसम विगख्या नें उदेभांव जाणो, षयउपसम आछो उदे भाव खोदो, मोह उदे सूं नीपजें सावद्य सारा, पाप लागे मोह उदे भाव सू, मोह उदे हूआं मोह रो षयउपसम विगरे, चारित मोह सूं षिमादिक गुण विगरे, दंसणमोह सूं सूधी सरधा विगाडे, दंसण नें चारित मोहनो ओहीज होदो, अनंतानबंधी चोकरी उदे हूआं, जब जीवरा दोनूइ गुण विगरे, दसण मोहणी उदे हूवे जब, जब पिण जीवरा दोनूइ गुण विगरे, आघाकर्मी आहारादिक असुध कह्यो छे, ते आहार असुध सावद्य दोनू नाही, ज्यू सुरत इंद्रीयादिक आस्रव कह्यो ते, पिण सुरत इंद्री तो आस्रव नाही, ज्यूं अजीव काय असंजम कह्यो छे, पिण अजीव तो असजम नाही, ज्यू इदख्या मोकली मेली ते आश्रव, पिण इंद्रयां तो आश्रव छे नाही, वले अजीव काय नें संजम कह्यो छे, ते अजीव तो संजम छे नाही, ज्यू इंद्रयां नें वस करे ते संवर, पिण इंद्रयां ने संवर विरत मति जाणो, परिग्रहो कह्यो सचित अचित ने मिश्र, ते परिग्रहो तो डवोवे नाही, ज्यू इंद्रयां की विषे ने सावद्य कही ए, पिण इंद्रयां तो सावद्य छे नाही,

राग घेष उदे भाव थायो रे । तो षयउपसम नहीं छे ताह्यो रे ॥ १०८ ॥ ते षयउपसम भाव छे नाही रे । ते गिण लेजो असाध रे माही रे ॥ १०९ ॥ षयउपसम भाव म जाणो रे । इम सावद्य निरवद पिछाणो रे ॥ ११० ॥ निरवद नीपजें षयउपसम तेथी रे । नहीं लागे ते षयउपसम सेती रे ॥ १११ ॥ और षयउपसम विगारे नाही रे । और गुण विगारे नहीं कांइ रे ॥ ११२ ॥ ओर तो गुण विगाडे नाही रे । ओर गुण विगाडे नहीं कांइ रे ॥ ११३ ॥ कदा दंसण मोह साथे उदे होयो रे । आप आपरा न्यारा लो जोयो रे ॥ ११४ ॥ चारित मोहणी उदे हूवे साथो रे । जोवो सूतर मे साख्यातो रे ॥ ११५ ॥ ते तो किरतव आसरी जाणो रे । आहारादिक थी सावद्य पिछाणो रे ॥ ११६ ॥ राग घेष आश्री जाणो रे । अहार ज्यूं लो इंद्रयां पिछाणो रे ॥ ११७ ॥ ते इविरत आश्री जाणो रे । असजम इविरत आश्री पिछाणो रे ॥ ११८ ॥ ते विषें इविरत आश्री जाणो रे । ते अजीव असंजम ज्यू इंद्रयां पिछाणो रे ॥ ११९ ॥ ते त्याग विरत लेखे वतायो रे । त्यांरी विरत लेखे ओलखायो रे ॥ १२० ॥ ते विषें री विरत आश्री जाणो रे । अजीव सजम ज्यू इंद्रयां पिछाणो रे ॥ १२१ ॥ ते दुरगति माहे डवोवे रे । तिणरी मूर्छा विषे विगोवे रे ॥ १२२ ॥ ते राग घेष आश्री जाणो रे । ते परिग्रहा ज्यू इंद्रयां पिछाणो रे ॥ १२३ ॥

यों तीन प्रकार को परिग्रहो कह्यो ते, पाप कर्म न लागे तेथी रे ।
 पाप लागे तिणरी मुर्छा आयां सूं, वले तिणरी इविरत सेती रे ॥ १२४ ॥
 ज्यूं पांचू इंदस्त्रां सू पाप न लागे, पाप लागो विपे सूं जाणो रे ।
 केइ कहें इंदस्त्रां सूं ई लागे, ते प्रतख भूठ पिछाणो रे ॥ १२५ ॥
 अन पुने पाण पुने कह्यो सूतर में, नमसकार पुने नवमों वतायो रे ।
 पिण ए तो नवोंई पुन छे नाहीं, पुन नीपजे परिणाम सूं ताह्यो रे ॥ १२६ ॥
 ज्यूं इंदस्त्रां नें वस करे ते संवर, पिण इंदस्त्रां नें संवर म जाणो रे ।
 विपे त्यागी ते परिणाम संवर नां छें, अन पुने ज्यूं इंदस्त्रां पिछाणो रे ॥ १२७ ॥
 जोड़ कीची इंदस्त्रां नी विपे ओलखावण, नेंणवा सहर मभारो रे ।
 संवत अठारे नें वरस छयांलें, जेठ सुद तेरस वुववारो रे ॥ १२८ ॥

ढाल : ९

दुहा

पांच भाव जिणेसर भाषीया, उदे^१ उपसम^२ क्षायक^३ भाव ।
षयउपसम^४ ने परणामीक^५ पांचमो, तिणरो जाणे समदिष्टी न्याव ॥ १ ॥
धूरला च्यार भावां तणो, जुवो जुवो गुण जाण ।
परणामीक भाव छे पाचमों, ते मिले सगलां माहें आंण ॥ २ ॥
आठ कर्म उदे हूआं, त्यांसू नीपनों उदे भाव जाण ।
त्यांरो जूओ जूओ सभाव छे, तिणरी बुववंत करजो पिछांण ॥ ३ ॥
उपसम एक मोहणी कर्म हुवे, जब नीपजे उपसम भाव ।
तिण उपसम भाव तेह में, और भाव रो नहीं छे लगाव ॥ ४ ॥
आठ कर्म षय हूआं नीपजें, षायक भाव अनेक ।
ते सगलाई षायक भाव मे, और भाव न पावे एक ॥ ५ ॥
च्यार कर्म षयउपसम हूआं, नीपजे पयउपसम भाव अनूप ।
ते षयउपसम भाव निरमलो, तिणरो जूओ जूओ छे सरूप ॥ ६ ॥
च्यांरू भाव समावे आप आप मे, परिणामीक सगलां मे जाण ।
समदिष्टी जथातथ ओलख्या, जिम छे तिम लीया छे पिछाण ॥ ७ ॥
पाच भाव पूरा नहीं ओलख्या, ते करे अग्यांती तांण ।
नव पदार्थ रो निरणो नहीं, ते मूढ मिथ्याती अयांण ॥ ८ ॥
केइ ओलख ने उलटा पख्या, मोह कर्म उदे हूओ आंण ।
तिण सू निन्व हूवा किण विघें, ते सुणजो चतुर सुजांण ॥ ९ ॥

ढाल

[पुन निपजे शुभजोग सू रे लाल]

इविरत ने कहे माठो ध्यान छे रे लाल, विरत ने कहे छे आछो ध्यान हो ।
मणागार उपीयोग कहे तेहने रे लाल, तिणरा घट माहे घोर अग्यान हो ॥
सरखा सुणो निन्वा तणी रे लाल ॥ १ ॥
माठ ध्यान नें इविरत कहे रे लाल, आछा ध्यान नें कहे छे विरत हो ।
मणागार उपीयोग त्या ने पिण कहे रे लाल, एहवा कूडा करे छे निरंत हो ॥ २ ॥
विरत इविरत भला भूडा ध्यान ने रे लाल, कहे छे मणागार उपीयोग हो ।
उवी अकल हिया रा जोर सू रे लाल, तिणरी सरखा घणी छे अजोग हो ॥ ३ ॥

विरत इविरत भला भूंडा ध्यान ने रे लाल, कहे छे उपीयोग मणागार हो ।
 तिणरी खोटी सरधा छे सर्वथा रे लाल, ते बुधवंत करजो विचार हो ॥ ४ ॥
 विरत इविरत भला भूंडा ध्यान नें रे लाल, जूदा जूदा कह्या छें भगवांन हो ।
 त्यांरो विवरा सुध निरणो कहूं रे लाल, सुणो सुरत दे कान हो ॥ ५ ॥
 इविरत ने कहे माठो ध्यान छे रे लाल, तिणरी सरधा घणी छे अजोग हो ।
 सूतर सू मिलती नहीं रे लाल, ते सुणजो देई उपीयोग हो ॥ ६ ॥
 इविरत तो अत्याग भाव जीवरा रे लाल, ते निरंतर लगती जाण हो ।
 तिण सू चेतन जीवरे रे लाल, पाप लागे निरंतर आण हो ॥ ७ ॥
 इविरत तो अत्याग भाव जीवरा रे लाल, ध्यान तो ध्यावे जब होय हो ।
 तिण सू ए तो दोनूइ जू जूआ रे लाल, यां नें एकम जाणो कोय हो ॥ ८ ॥
 जो इविरत माठो ध्यान हुवे रे लाल, तो छठे गुण ठाणे इविरत होय हो ।
 छठे गुण ठाणे आरत ध्यान छे रे लाल, जब तो विरत रो अंस न कोय हो ॥ ९ ॥
 जो विरत ध्यान आछो हुवे रे लाल, तो चोथें गुण ठाणे विरत होय हो ।
 धर्म ध्यान चोथें गुण ठाणे हुवें रे लाल, जब तो इविरत जाबक न कोय हो ॥ १० ॥
 जो इविरत माठो ध्यान हुवे रे लाल, तो श्रावक रे निरंतर माठो ध्यान हो ।
 श्रावक रे इविरत छे सदा रे लाल, ते पिण निरणो कीजो बुधवान हो ॥ ११ ॥
 जो विरत ध्यान आछो हुवे रे लाल, तो श्रावक रे निरंतर आछो ध्यान हो ।
 श्रावक रें विरत पिण छे सदा रे लाल, ओ पिण निरणो कीजो बुधवांन हो ॥ १२ ॥
 श्रावक रे दोनूं निरंतर हुवे रे लाल, विरत नें इविरत दाय हो ।
 जो विरत इविरत ध्यान छे रे लाल, दोनूं ध्यान निरंतर होय हो ॥ १३ ॥
 विरत इविरत भलो भूंडो ध्यान हुवे रे लाल, तो श्रावक रे निरंतर दाय ध्यान हो ।
 बले ध्यावें ते ध्यान तीसरो हुवे रे लाल, ओपिण निरणो कीजो बुधवांन हो ॥ १४ ॥
 तीन ध्यान एकण समे हुवे नहीं रे लाल, विरत इविरत एकण समे दाय हो ।
 हीया माहे विचारे निरणो करो रे लाल, उंची तांणकर बूडो मत कोय हो ॥ १५ ॥
 इविरत नें कहे माठो ध्यान छे रे लाल, विरत ने कहे छे आछो ध्यान हो ।
 आ उंची सरधा छे अति बुरी रे लाल, ते किण विध मानें बुधवांन हो ॥ १६ ॥
 माठा ध्यान ने पिण इविरत कहे रे लाल, आछा ध्यान ने कहे छे विरत हो ।
 आपिण उंची सरधा छे अति बुरी रे लाल, तिणमें करे अग्यांती निरत हो ॥ १७ ॥
 धर्म ध्यान थकी निरजरा हुवे रे लाल, धर्म ध्यान सूं सवर न होय हो ।
 सवर तो हुवे छे विरत सूं रे लाल, तिण सूं विरत नें ध्यान छे दाय हो ॥ १८ ॥
 संवर नें निरजरा कहे रे लाल, निरजरा नें संवर कहें तांम हो ।
 दोनूं प्रकारे वूडे छे बापड़ा रे लाल, उंची अकलं सूं वेफांम हो ॥ १९ ॥

विरत इविरत भला भूडा घ्यांन नें रे लाल, 'कहे छे मणागार उपीयोग हो ।
 ते पिण हीया रा जोर सूं रे लाल, आ पिण सरघा घणी छे अजोग हो ॥ २० ॥
 इविरत तो उदे भाव अधर्म छे रे लाल, मोह कर्म उदे सूं जाण हो ।
 मणागार उपीयोग छे उजलो रे लाल, ते तो षयउपसम भाव पिछांण हो ॥ २१ ॥
 मोह कर्म षयउपसम हुवा रे लाल, विरत नीपजे षयउपसम भाव हो ।
 तिण मणागार उपीयोग रो रे लाल, मूल नही छे लगाव हो ॥ २२ ॥
 विरत सू तो रूके कर्म आवता रे लाल, ते निश्चेंइ संवर जाण हो ।
 मणागार तो देखण री सभाव छे रे लाल, 'विरत मे मिले नही आंण हो ॥ २३ ॥
 विरत इविरत तो निरंतर हुवे रे लाल, मणागार 'निरंतर नांहि हो ।
 विरत इविरत मणागार किहां थकी रे लाल, 'ते निरणो 'करो घट माहि हो ॥ २४ ॥
 विरत इविरत नें कहे मणागार छे रे लाल, तिणरी सरघा में घोर अंधार हो ।
 ते भूठ बोले छे सर्वथा रे लाल, तिणमें सावद्य नही छे लिगार हो ॥ २५ ॥
 आरत रुदर ध्यान माठा बेहू रे लाल, त्यांन कहे छे मणागार असुघ हो ।
 धर्म शुक्ल घ्यांन बेहूं भला रे लाल, त्याने कहे छे मणागार सुघ हो ॥ २६ ॥
 भला भूडा च्याह्ण्ड ध्यान नें रे लाल, त्याने कहे उपीयोग मणागार हो ।
 ओतो गालां सू गोलो चलावीयो रे लाल, तिणमें साच नही छे लिगार हो ॥ २७ ॥
 आरत रुदर ध्यान माठा बेहू रे लाल, ते तो सावद्य जोग व्यापार हो,
 ते सावद्य किरतव पास्वो रे लाल, ते निश्चे नही मणागार हो ॥ २८ ॥
 मोहकर्म उदे सू माठो ध्यान छे रे लाल, ते तो पाप कर्म रा उपाव हो,
 मणागार षयउपसम भाव निरमलो रे लाल, तिणरो देखण रो इज सभाव हो ॥ २९ ॥
 आरत रुदर ध्यान माठा तेह ने रे लाल, त्याने कहें मणागार उपीयोग ।
 एहवी उघी करे छे परूपणा रे लाल, तिणरी सरघा घणी छे अजोग हो ॥ ३० ॥
 धर्म शुक्ल ध्यान बेहूं भला रे लाल, ते तो निरवद जोग व्यापार हो ।
 ते निरवद करणी निरजरा तणी रे लाल, ते पिण निश्चे नही मणागार हो ॥ ३० ॥
 अतराय ने मोहणी षयउपसम्या रे लाल, जब ध्यावे छे आछो ध्यान हो ।
 तिण सूं कर्म कटे छें जीवरा रे लाल, मणागार तो देखण रो इज तान हो ॥ ३२ ॥
 धर्म शुक्ल आछा घ्यांन ने रे लाल, त्याने कहें मणागार उपीयोग हो ।
 ते पिण उघी करे छे परूपणा रे लाल, आपिण सरघा घणी छे अजोग हो ॥ ३३ ॥
 हिंसा करे प्राणी जीव री रे लाल, वले बोले मूसावाय हो ।
 चोरी करे सेवे मइथुन नें रे लाल, परिग्रह मेलणरो करे उपाय हो ॥ ३४ ॥
 करे क्रोध मान माया लोभ नें रे लाल, राग घेष कलहो करे ताम हो ।
 अभिषण पेसुण पर परवाद ने रे लाल, रति अरति माया मोसों आम हो ॥ ३५ ॥

सतरे पापथानक छे पांडुआ रे लाल,
 चारित मोह ना उदें थकी रे लाल,
 सतरे पाप सेवण रो त्यागन करे रे लाल,
 आ पिण उंधी सरघा छे अतिषणी रे लाल,
 मिथ्यादसण सल अठारमो रे लाल,
 तेहीज मिथ्यात निवरत समकत हुवो रे लाल,
 अठारे पाप थानक रो सेवन करे रे लाल,
 त्यांनं कहें छे सागार मणागार छे रे लाल,
 मिथ्यातदंसण सल छे अठारमों रे लाल,
 ते दंसण मोहणी रा उदे थकी रे लाल,
 ते दंसण मोहणी षयउपसम हुवां रे लाल,
 तिणसूं किरिया टली छे मिथ्यात री रे लाल,
 सागार तो ग्यान उपीयोग छे रे लाल,
 तिण समकत ने कहें छे ग्यान छे रे लाल,
 चोथे गुणठाणे सागार ग्यान छें रे लाल,
 तिणरो समकत में तीन भाव छे रे लाल,
 चोथे गुणठाणे षायक समकत हुवे रे लाल,
 बले षयउपसम समकत छे तिहां रे लाल,
 समकत तो उपसम भाव जिण कही रे लाल,
 तिण सू ग्यान ने समकत जू जूआ रे लाल,
 षायक समकित चोथे गुणठाणे हुवे रे लाल,
 तिण सू ग्यान नें समकित जू जूआ रे,
 ग्यानावर्णी कर्म षयउपसम हुआं रे लाल,
 तिण ग्यान ने कोई समकत कहे रे लाल,
 दंसण मोहणी कर्म उपसम हुआं रे लाल,
 दंसण मोहणी षय हुवे रे लाल,
 दंसण मोहणी षयउपसम हुवे रे लाल,
 थां तीनू समकत ने कहे ग्यान छे रे लाल,
 दंसण मोहणी कर्म घटीयां थका रे लाल,
 ग्यानावर्णी कर्म घटीयो तेहसूं रे लाल,
 समकत नें ग्यान बेहू जू जूआ रे लाल,
 कोइ समकत नें गिणे ग्यान में रे लाल,

ते सेवे छें वास्वार हो ।
 त्यांनं कहें छें अग्यांनी मणागार हो ॥ ३६ ॥
 त्यांनं पिण कहें छे मणागार हो ।
 समकत री गमावणहार हो ॥ ३७ ॥
 ते तो उंधी सरघा छे अंधकार हो ।
 यां दोयां नें कहे छे सागार हो ॥ ३८ ॥
 अठारे पाप सेवण रो करे त्याग हो ।
 ते तो रह्या मिथ्यात में लाग हो ॥ ३९ ॥
 उंधी सरघा रो घोर अंधकार हो ।
 ते निश्चें नही सागार हो ॥ ४० ॥
 जब पामे समकत श्रीकार हो ।
 ते पिण निश्चें नही छे सागार हो ॥ ४१ ॥
 समकत ते तो सरघा जाण हो ।
 ते पूरा मूढ अयांन हो ॥ ४२ ॥
 ते ग्यान छे षयउपसम भाव हो ।
 तिणरो सुणो विवरा सुघ न्याव हो ॥ ४३ ॥
 बले उपसम समकत तैथ हो ।
 ग्यान तो षयउपसम छे एथ हो ॥ ४४ ॥
 ग्यान तो नहीं उपसम भाव हो ।
 एक कहे ते करे छे अन्याव हो ॥ ४५ ॥
 चोथे गुणठाणे वायक ग्यान नाय हो ।
 त्यांनं एक सरघे बूडो काय हो ॥ ४६ ॥
 जब पामे छे षयउपसम ग्यान हो ।
 तिणरा बट माहें घोर अग्यान हो ॥ ४७ ॥
 जब उपसम समकत होय हो ।
 जब वायक समकत पामें सोय हो ॥ ४८ ॥
 जब षयउपसम समकत थाय हो ।
 ते ती चोडे मूला जाय हो ॥ ४९ ॥
 पामे छे सुघ सरघांन हो ।
 पामें छे षयउपसम ग्यान हो ॥ ५० ॥
 जूइ जूइ तयारी परजाय हो ।
 तिण गेहला नें खबर न काय हो ॥ ५१ ॥

चोये गुणठाणे एक भाव ग्यांन में रे लाल,
 त्यारी समकत ने ग्यांन म जाणजे रे लाल,
 दंसण मोहणी कर्म उदे हूआं रे लाल,
 तिण मिथ्यात नें कहे सागार छें रे लाल,
 सागार षयउपसम भाव निरमलो रे लाल,
 सागार उदे भाव हुवे नही रे लाल,
 मिथ्यात उदे भाव तेहथी रे लाल,
 सागार षयउपसम भाव थी रे लाल,
 समकत उपसमादिक तेह थी रे लाल,
 समकत रो मिथ्यात प्रतिपष छे रे लाल,
 सागार वधीयां कर्म रुके नही रे लाल,
 वले कर्म न तूटें सागार थी रे लाल,
 सागार वधे ग्यांनावर्णी घट्यां रे लाल,
 सागार घटीयां सावद्य न नीपजे रे लाल,
 मिथ्यात सावद्य छे मोटको रे लाल,
 तिण मिथ्यात नें सागार कहे केई रे लाल,
 कोइ सागार नें समकत कहे रे लाल,
 संवर आस्रव कहे छे सागार नें रे लाल,
 सागार तो संवर आस्रव नही रे लाल,
 सागार नें संवर आस्रव कहे रे लाल,
 सागार उपीयोग रो विरहो पडे रे लाल,
 समकत रहे त्यां लगे निरंतर रहे रे लाल,
 मिथ्यात रहे त्यां ल्मा निरंतर रहे रे लाल,
 सागार उपीयोग रो विरहो पडे रे लाल,
 मिथ्यात ने समकत बेहू दिष्ट छे रे लाल,
 बेहू दिष्ट नें सागार म सरधज्यो रे लाल,
 बेहू दिष्ट नें घाली सागार मे रे लाल,
 जो इण ने ई कहे सागार छे रे लाल,
 समा मिथ्या दिष्ट छे तीसरी रे लाल,
 दंसण मोहणी उदे षयउपसम हूआं रे लाल,
 मिश्र दिष्ट नें कहे सागार छे रे लाल,
 मिश्र दिष्ट नें कहे छें सागार छे रे लाल,

समकत माहें तो छें तीन भाव हो ।
 यांरो जूओ २ छें सभाव हो ॥ ५२ ॥
 समकत रो हूओ छे मिथ्यात हो ।
 तिणरी खोटी सरधा साख्यात हो ॥ ५२ ॥
 मिथ्यात उदे भाव अंधकार हो ।
 ते बुववंत करजो विचार हो ॥ ५४ ॥
 लागे छे किरिया मिथ्यात हो ।
 पाप न लागे तिलमात हो ॥ ५५ ॥
 टल जाए किरिया मिथ्यात हो ।
 बिगड्यो सुघरयो होय जात हो ॥ ५६ ॥
 घटीयां पाप न आवे लगार हो ।
 उजला लेखे निरवद सागार हो ॥ ५७ ॥
 ग्यांनावर्णी वधीयां घटे सागार हो ।
 वधीयां निरवद न नीपजें लगार हो ॥ ५८ ॥
 तिणसूं पाप लागे दग चाल हो ।
 ते बोले छे आल पंपाल हो ॥ ५९ ॥
 वले कहे छें सागार ने मिथ्यात हो ।
 तिणरी प्रतष भूठी वात हो ॥ ६० ॥
 संवर आस्रव तो समकत मिथ्यात हो ।
 ते चोडे भूला जात हो ॥ ६१ ॥
 ते तो अंतरमोहरत माहि हो ।
 किण ही समें विरहो पडे नाहि हो ॥ ६२ ॥
 किण ही समें विरहो पडे नाहि हो ।
 सोच देखो मन माहि हो ॥ ६३ ॥
 ते निश्चें नही छें सागार हो ।
 करे हीया में विचार हो ॥ ६४ ॥
 तीजे दिष्ट किम राखसी न्यार हो ।
 तो अंधार माहें फेर अंधार हो ॥ ६५ ॥
 ते दिष्ट छे तीजे गुण ठाण हो ।
 मिश्र दिष्ट नीपजती जाण हो ॥ ६६ ॥
 सागार नही मिश्र दिष्ट हो ।
 तिणरी सरधां घणी छे भिष्ट हो ॥ ६७ ॥

तीनां दिष्टां नें कहे सागार छे रे लाल, आप डूबे ओरां नें डबोवता रे लाल, तीनू दिष्ट ने सागार उपीयोग रा रे लाल, ए सगला नें घाल्या सागार में रे लाल, तीन दिष्ट नें सागार उपीयोग रो रे लाल, हिचे निरणो कहू छू मणागार नों रे लाल, मणागार उपीयोग नें चारित कहे रे लाल, ते बेहू विघ सरघा उंची घणी रे लाल, चारित मोहणी षयउपसम हूआं रे लाल, तिणसूं इविरतादिक री किरिया मिटी रे लाल, मणागार तो दर्शण उपीयोग छे रे लाल, तिण चारित नें कहे मणागार छे रे लाल, छठा गुणठाणा थी बारमां लगे रे लाल, तठा तांइ चारित में तीन भाव छे रे लाल, छठा गुणठाणा थी दसमां लगे रे लाल, उपसम चारित गुणठाणें इग्यारमें रे लाल, षायक उपसम षयउपसम चारित तिहां रे लाल, तिणसूं मणागार नें चारित जू जूआ रे लाल, चारित तो उपसम भाव जिण कह्यों रे लाल, ए न्यारा २ दोनू जाण जो रे लाल, दर्शणावर्णी कर्म षयउपसम हूआं रे लाल, तिण मणागार नें चारित कहे रे लाल, चारित मोहणी कर्म उपसम हूआं रे लाल, तेहीज चारितमोहणी षय हूआं रे लाल, चारित मोहणी षयोपसम हूआं रे लाल, यां तीनां नें कहे मणागार छे रे लाल, चारित मोहणी कर्म घटीयां थकां रे लाल, दर्शणावर्णी कर्म घटीयो तेहूं सूं रे लाल, तिण सूं मणागार नें चारित जूजूआ रे लाल, कोई चारित नें गिणें मणागार हो लाल, षयउपसम ग्यान छदमस्थ रो रे लाल, तिण चारित नें मणागार मजाण जो रे लाल,

तिणरे जडे हूवो छे मिथ्यात हो ।
 कर २ भूळी वात हो ॥६८॥
 जूआ २ गुण तास हो ।
 तिणरी समकत रो हूवो छे विणास हो ॥६९॥
 निरणों कीयो छे तांम हो ।
 ते सुणजों राख चित्त ठाम हो ॥७०॥
 चारित नें कहे छे मणागार हो ।
 तिण में साच नही छे लिगार हो ॥७१॥
 जब पामें चारित श्रीकार हो ।
 ते तो निश्चेइ नहीं मणागार हो ॥७२॥
 चारित नें तो त्याग भाव जाण हो ।
 ते पिण पूरा मूढ अयाण हो ॥७३॥
 मणागार तो षयउपसम भाव हो ।
 तिणरो सुणो विवरा सुघ न्याव हो ॥७४॥
 षयउपसम चारित जाण हो ।
 षायक चारित बारमें गुणठाण हो ॥७५॥
 षयउपसम छे मणागार हो ।
 तिणमें शंका म राखो लिगार हो ॥७६॥
 मणागार उपसम भाव नांय हो ।
 यां नें एक सरघे बूडे कांय हो ॥७७॥
 जब नीपजे षयउपसम मणागार हो ।
 तिणरा घट मांहे घोर अंधार हो ॥७८॥
 जब उपसम चारित होय हो ।
 षायक चारित पामें सोय हो ॥७९॥
 षयउपसम चारित थाय हो ।
 ते तो चोडे भूला जाय हो ॥८०॥
 जब चारित पामें श्रीकार हो ।
 पामें छे षयउपसम मणागार हो ॥८१॥
 जूई जूई त्यांरी परजाय हो ।
 तिण गेंहला नें खबर न कांय हो ॥८२॥
 त्यांरा चारित मांहे तीन भाव हो ।
 यां रो जूओ २ छें सभाव हो ॥८३॥

चारित मोहणी कर्म उदें हूआं रे लाल,
 तिण अचारित नें कहे मणागार छे रे लाल,
 मणागार षयउपसम भाव निरमलो रे लाल,
 मणागार उदे भाव हुवे नही रे लाल,
 अचारित उदे भाव तेहथी रे लाल,
 मणागार षयउपसम भाव थी रे लाल,
 चारित सामायिकादिक तेहथी रे लाल,
 चारित रो प्रतिपक्ष अचारित हुवे रे लाल,
 मणागार बधीयां कर्म रुके नही रे लाल,
 वले कर्म न तूटे मणागार थी रे लाल,
 दर्सणावर्णी कर्म घटे बघे रे लाल,
 मणागार बधीयां घटीयां थकां रे लाल,
 इविरत तो सावद्य छे अति बुरी रे लाल,
 तिण इविरत नें कहें मणागार छे रे लाल,
 कोइ मणागार नें चारित कहे रे लाल,
 सवर आश्व कहे मणागार ने रे लाल,
 मणागार तो संवर आश्व नही रे लाल,
 मणागार ने संवर आश्व कहे रे लाल,
 मणागार उपीयोग रो विरहो पडे रे लाल,
 चारित रहे त्यां लो निरंतर रहे रे लाल,
 इविरत रहे त्यां लो निरंतर रहे रे लाल,
 मणागार उपीयोग रो विरहो पडे रे लाल,
 दसमें गुणठाणे चारित निरंतर हुवे रे लाल,
 जो मणागार चारित हुवे रे लाल,
 मणागार उपीयोग हुवे जिण समें रे लाल,
 तिणसूं सागार नें मणागार नों रे लाल,
 मणागार नों उपीयोग नहीं हुवे रे लाल,
 तिणसूं विरत इविरत मणागार नों रे लाल,
 विरत इविरत छे बेहूं जू जूइ रे लाल,
 यां दोयां नें मणागार म जाणजो रे लाल,
 विरत तो छे धर्म पक्ष मझे रे लाल,
 विरताविरत मिश्र पक्ष तीसरो रे लाल,

जब चारित रो अचारित हुवो जाण हो ।
 ते पूरा मूढ अयाण हो ॥८४॥
 अचारित तो उदे भाव जाण हो ।
 से निरणो करो चतुर सुजाण हो ॥८५॥
 इविरत किरिया लागे साख्यात हो ।
 पाप न लागे अंसमात हो ॥८६॥
 टलजाए किरिया पात हो ।
 विगड्यो सुघर्यो होय जात हो ॥८७॥
 घटियां पाप न लागे लिगार हो ।
 उजला लेखे निरवद मणागार हो ॥८८॥
 जब बघे घटे मणागार हो ।
 सावद्य नही नीपजे लिगार हो ॥८९॥
 तिणसूं पाप लागे द्य चाल हो ।
 ते बोले छे आल पंपाल हो ॥९०॥
 वले कहे मणागार ने इविरत हो ।
 ते तो कूडा करे छे निरत हो ॥९१॥
 संवर आश्व तो विरत इविरत हो ।
 ते चोडे भूलो छें निसरत हो ॥९२॥
 ते अतर मोहरत माहिं हो ।
 किण ही समे विरहो पडे नाहिं हो ॥९३॥
 किणही समें विरहो पडे नाहिं हो ।
 ते विचार देखो मन माहिं हो ॥९४॥
 दसमें गुणठाणे नही मणागार हो ।
 तो चारित न हुवे तिणवार हो ॥९५॥
 तिण समें नही सागार उपीयोग हो ।
 समकाले बेहां रो नही जोग हो ॥९६॥
 जब विरत इविरत हुवे ताहिं हो ।
 मिलाप नही माहो माहिं हो ॥९७॥
 ते निश्चेइ नहीं मणागार हो ।
 करे हीया में विचार हो ॥९८॥
 इविरत नें अधर्म पक्ष जाण हो ।
 यांरी पिण करज्यों पिछाण हो ॥९९॥

दोय तो पख घाल्या मणागार में रे लाल, मिश्र पख किम राखसी न्यार हो ।
 जो-इण नें इ कहे मणागार छे रे लाल, तो अंधारा में फेर अंधार हो ॥१००॥
 मिश्र पक्ष छे तीसरो रे लाल, मिश्र पक्ष पांच में गुणठांग हो ।
 चारित मोहणी उदे षयउपसम हूवां रे लाल, मिश्र पक्ष नीपजतो जाण हो ॥१०१॥
 मिश्र पक्ष मणागार निश्चें नहीं रे लाल, मणागार मिश्र पक्ष नाहि हो ।
 मिश्र पक्ष नें कहे मणागार छे रे लाल, ते पडीया मिथ्यात रे माहि हो ॥१०२॥
 तीनां पक्षां नें कहे मणागार छें रे लाल, तिणरे उदे हूवो छें मिथ्यात हो ।
 आप डूबें ओरां नें डबोवता रे लाल, कर २ कूडी वात हो ॥१०३॥
 तीनूं पक्ष नें मणागार उपीयोग रा रे लाल, जूवा २ गुण तास हो ।
 यां सगलां नें घाल्या मणागार में रे लाल, तिणरी समकत रो हुवो छे विर्णास हो ॥१०४॥
 तीनों इ पष नें मणागार नों रे लाल, ए निरणों कहुो छें तांम हो ।
 हिवें निरणो कहुं छंतीनूं जोगां तणो रे लाल, ते सुणजो राख चित्त ठाम हो ॥१०५॥
 अठारे पापथानक सेवे तेहनां रे लाल, ते तो सावद्य जोग ब्यापार हो ।
 ते तो चारित मोहणी रा उदा थकी रे लाल, ते तो निश्चेंइ नहीं मणागार हो ॥१०६॥
 हिंसा करे छे प्राणी जीवरी रे लाल, ते तो प्रणातपात आश्व दुवार हो ।
 ते पापथानक रा उदा थकी रे लाल, ते पिण निश्चेंइ नहीं मणागार हो ॥१०७॥
 भूठ बोले कोई मोटो छोटको रे लाल, ते मिरषावाद आश्व दुवार हो ।
 ते पिण पापथानक रा उदा थकी रे लाल, ते पिण निश्चेंइ नहीं मणागार हो ॥१०८॥
 कोई छोटी मोटी चोरी करे रे लाल, ते अदत्तादान आश्व दुवार हो ।
 ते पिण पापथानक रा उदा थकी रे लाल, ते पिण निश्चेंइ नहीं मणागार हो ॥१०९॥
 अस्त्रीयादिक सूं सेवें मैथुन नें रे लाल, ते मैथुन आश्व दुवार हो ।
 ते पिण पापथानक रा उदा थकी रे लाल, ते पिण निश्चेंइ मणागार हो ॥११०॥
 सचित्त अचित्त मिश्र राखे परिग्रहो रे लाल, ते परिग्रह आश्व दुवार हो ।
 ते पिण पापथानक रा उदा थकी रे लाल, ते पिण निश्चेंइ नहीं मणागार हो ॥१११॥
 इम क्रोधादिक मिथ्यात अठारमों रे लाल, अठारोंइ आश्व दुवार हो ।
 अठारे पापथानक रा उदा थकी रे लाल, ते अठारोंइ नहीं मणागार हो ॥११२॥
 सतरे पापथानक छें चारित मोहणी रे लाल, अठारमों दंसण मोहणी जाण हो ।
 त्यांरा उदा सूं ए किरतब करे रे लाल, त्यांनं जूदा २ लो पिछोण हो ॥११३॥
 हिंसादिक अठारेइ किरतब करे रे लाल, ते अठारेंइ सावद्य जोग हो ।
 ते अठारोंइ आश्व दुवार छें रे लाल, निश्चेंइ नहीं मणागार उपयोग हो ॥११४॥
 हिंसा री इविरत निरंतर हुवे रे लाल, हिंसा रा जोग चिरंतर नाहि हो ।
 हिंसा रा जोग तो हिंसा करे जदी रे लाल, विचार देखो मन माहि हो ॥११५॥

हिसादिक अठारे पाडूवा रे लाल, ज्यारी इविरत निरतर जाण हो ।
 हिसादिक री जोग वरते जदो रे लाल, यांरी करो हीया में पिछाण हो ॥११६॥
 यां अठारां री इविरत तेहना रे लाल, पूरा भेद कहां नही जाय हो ।
 यां अठारां री किरतब माठा जोगना रे लाल, कहितां र पार न आय हो ॥११७॥
 अठारां री इविरत नें माठा जोग नें रे लाल, कहीजे आश्व दुवार हो ।
 ते मोहकर्म रा उदा थकी रे लाल, ते निश्चेइ नही मणागार हो ॥११८॥
 सागार मणागार उपीयोग नें रे लाल, केई कहे छें आश्व दुवार हो ।
 तिणरी उंधी सरधा छे सर्वथा रे लाल, तिणमें साच नही छे लिगार हो ॥११९॥
 पनरे करमादान सेवे जू जूवा रे लाल, आरंभ करे अनेक परकार हो ।
 विविध पणें किरतब पाडूआ करे रे लाल, त्यांनं कहे छें ग्यानी मणागार हो ॥१२०॥
 बले कूटवो पीटवो ने रोयवो रे लाल, बले घर रा कारज अनेक हो ।
 त्यां सगलां नें कहे मणागार छें रे लाल, त्यां विकलां ने नही छे विवेक हो ॥१२१॥
 आश्व संवर नें निरजरा तणा रे लाल, त्यांरा भेदां रो नही छें कोइ पार हो ।
 यां सगला नें कहे मणागार छे रे लाल, तिण मिथ्यात कीयो अंगीकार हो ॥१२२॥
 पसारी तणा हाट तेह में रे लाल, किराणों छें विवध परकार हो ।
 त्यांरी कोथलीयां छें जू जूइ रे लाल, यां में जूइ जूइ नो जाणकार हो ॥१२३॥
 तिण पसारी रो वेठें हीया फूट थो रे लाल, तिण विकल में नही छे विवेक हो ।
 तिण सगली कोथलीयां खोलने रे लाल, किरांणा रो कीयो ढिग एक हो ॥१२४॥
 दोय कोथला हुंता तिणरी हाट में रे लाल, ते किराणो घाल्यो दोयां मांहि हो ।
 ते मन में जाणें हूं ढाहो घणो रे लाल, मोसरीषोभ्दहारो पिता पिणनाहि हो ॥१२५॥
 पूत कपूत हुवो पसारी तणो रे, तिण कीयो नीवी रो नास हो ।
 इण दिष्टते निन्व झूआ रे लाल, त्यां कीयो समकत रो विणास हो ॥१२६॥
 अनंती परजाय छें जीवरी रे लाल, ते मांहों मांहि न खाए मेल हो ।
 जे निन्हव हुआ उधी अकल का रे लाल, त्यां कर दीधी मेल संमेल हो ॥१२७॥
 समकत ने मिथ्यात नी परजाय ने रे लाल, त्यांने कहे छे सागार उपीयोग हो ।
 एहवा ववेक विकल निन्वां तणें रे लाल, लागो मिथ्यात रो रोग हो ॥१२८॥
 बले चारित अचारत री परजाय ने रे लाल, त्यांने कहे मणागार उपीयोग हो ।
 एहवा हीया फूट निन्वां तणी रे लाल, आ सरधा घणी छे अजोग हो ॥१२९॥
 इत्यादिक जीवरी परजाय नें रे लाल, कर दीधी मेल संमेल हो ।
 जूइ जूइ परजाय नही ओलखी रे लाल, ते बोले बालक जिम वेहल हो ॥१३०॥
 सागार नों गुण जाणव तणा रे लाल, देखवा रो गुण छे मणागार हो ।
 और गुण अवगुण यामें कोइ नही रे लाल, ते करो हीया में निस्तार हो ॥१३१॥

सागार मणागार उपीयोग नें रे लाल, संवर आश्व म सरघो कोय हो ।
 जो संका पडे इण बात में रे लाल, तों सूतर नें लो जोय हो ॥ १३२ ॥
 संवत अठारे सेंतालेस में रे, फागुण विद आठम शनीसर वार हो ।
 जोड कीधी भव जीवांनं प्रति बोधवा रे लाल, नेणवा सहर मभार हो ॥ १३३ ॥

ढलल : १०

दुहल

ऑर कर्म घनघलतलतल, अडड डडल ऑऑ जीवरे तलत ।
गुतलनवर्णी दशुणलवर्णी डुहणी, ऑथु कर्म अंतरलत ॥ १ ॥
ऑर कर्म डतडडडड डुडलं, नीडऑे नलरवद डलव ।
ते. नलऑगुण सुदुध डरुतल ऑे, तुतलरु ऑुदु २ ऑे डडलव ॥ २ ॥
उऑलल लेखे सगललं डणी, नलरवद कहुतल डगवलन ।
केह गुणल सु डलड कर्म रुके, उऑलल लेखे सरुव नलधलन ॥ ३ ॥
ए ऑरुलं कर्म उदे हुवलं, डडे गुणल री हलण ।
ऑे २ गुण वलगडे ऑलण कर्म थी, ते ऑलणुं ऑतुर सुऑलण ॥ ॡ ॥
गुण वलगडे ऑलण २ कर्म थी, ते डुलुल ने खडर न कलत ।
तलण सुं उंऑी करे ऑे डरुडणल, तलणरल ऑलव सुणुु वलतुललत ॥ ॡ ॥

ढलल

[धलऑ करे सीतल सती रे ललल]

गुतलनवर्णी कर्म डतडडडड हुऑल रे, आठ गुण डलडे शुरीकर रे ॥ सुगणुनर* ॥
ऑर गुतलन नुं तीन अगुतलन ने रे ललल, वले सुतर नुु डणवुु सलर रे ॥ सु० ॥
नलऑ गुण रुु नलरणुु करुु रे ललल* ॥ १ ॥
गुतलनवर्णी कर्म रल उदल थकुी रे, गुतलन तणुु ऑे वलगलड रे ।
और गुण नहुी वलगडे एहुथी रे, तलणडे संकल नहुी ऑे लललर रे ॥ सु० नल० २ ॥
दशुणलवर्णी कर्म डतडडडड हुऑलं रे, आठ डुल डलडे शुरीकर रे ।
डलंऑ इनुदुी ने दशुण तीन नुं रे, और गुण नहुी डलडे लललर रे ॥ ३ ॥
दशुणलवर्णी उदे हुऑलं रे, डणलगलर दशुण रुु वलगलर रे ।
और गुण इणथी वलगलरे नहुी रे, इणरुु तुु ओहुीऑ वलऑलर रे ॥ ॡ ॥
डुहणी कर्म डतडडडड हुऑलं रे, आठ डुल नीडऑे वलशलषुठ रे ।
ऑर ऑलरलत ने देश वलरत डलंऑडुुं रे, वले कुतुुडडडड तीन दलषुठ रे ॥ ॡ ॥
ते डुहणी कर्म उदे हुवलं रे, सडकुत नुं ऑलरलत नुुं वलगलर रे ।
तलण डतडडडड हुवलं गुण नीडनल रे, तुतलरुु वलगलरणहलर रे ॥ ॢ ॥
अतरलत कर्म डतडडडड हुऑलं रे, आठ डुल डलडे ततसलर रे ।
डलऑ लडुध ने वीरुत तीन नुं रे, आठ गुण उऑलल शुरीकर रे ॥ ॣ ॥

*डुरतुतुके गलथल के अनुत डे इनकुी डुनरलवृतुतल हुै ।

अंतराय कर्म उदे हूआं रे, लब्धि नें वीर्यं री पड़े हाण रे ।
 अनेक वस्तु आडी होय रही रे लाल, तिणरी चोखी करज्यो पिछाण रे ॥ ८ ॥
 केइ मूढ मिथ्याती इम कहें रे, मोह उदे सूं विगरे उपीयोग रे ।
 कर्म बांधे विगख्या उपीयोग थी रे, तिण सूं बूड रह्या छे लोक रे ॥
 सरधा सुणों निन्चां तणी रे लाल ॥ ९ ॥
 दंसण मोहणी उदे हुवे रे, जब पामें जीव मिथ्यात रे ।
 तिण मिथ्यात नें कहे सागार छे रे, सागार विगख्यो कहे छे साख्यात रे ॥ १० ॥
 दंसण मोहणी षयउपसम हुवे रे, जब पामें समकत सार ।
 तिण समकत नें कहे सागार छे रे, तिणमें साच नहीं छे लिगार रे ॥ ११ ॥
 चारित मोहरा उदा थकी रे, नीपजे माठी अविरत अजोग रे ।
 तिण अविरत नें कहे मणागार छे रे, तिणरे लागो मिथ्यात नों रोग रे ॥ १२ ॥
 चारित मोहिणी षयउपसम हूआं रे, चारित नीपजे सुखदाय रे ।
 तिण चारित नें कहे मणागार छे रे, एहवी कूडी करे बकवाय रे ॥ १३ ॥
 समकत तो सागार निश्चें नही रे, मिथ्यात पिण नहीं सागार रे ।
 चारित ते मणागार निश्चें नही रे, अचरित पिण नहीं मणागार रे ॥ १४ ॥
 मोह कर्म उदे सूं विगड़े नहीं रे, सागार ने मणागार रे ।
 दयादिक गुण विगरे मोह थी रे, कोइ बुववंत करज्यो विचार रे ॥ १५ ॥
 मोहकर्म षयउपसम हूआं रे, दयादिक गुण नीपजे अठार रे ।
 त्यांरो जूओ र निरणो कहुं रे, तो कहितां न आवे पार रे ॥ १६ ॥
 बले निपजावे तो नीपजे रे, मोहणी कर्म परीयां हाण रे ।
 निरबद्ध जोग निपजावे तो नीपजें रे, बले घर्म नें शुक्ल त्यान रे ॥ १७ ॥
 भली लेख्या निपजावे तो नीपजे रे, भला अध्यवसाय नें परिणाम रे ।
 इत्यादिक गुण निपजाया नीपजें रे, ते मोह दूरो हूआं ताम रे ॥ १८ ॥
 बले मोह कर्म दूरो हूआं रे, मिट जाए तिण रो मिथ्यात रे ।
 बले वीतराग भाव नीपजे रे, राग द्वेष षय जात रे ॥ १९ ॥
 इत्यादिक गुण निपजें अति घणा रे, ते सगलाई गुण श्रीकार रे ।
 ते पामें मोहणी षयउपसम हूआं रे, त्यांरो कहितां न पामें पार रे ॥ २० ॥
 ते मोहणी कर्म उदे हूआं रे, समकत ने चारित रो विगार रे ।
 मोह षयउपसम हूआं गुण नीपना रे, त्यां गुणरो विगारणहार रे ॥ २१ ॥
 समकत विगरे मिथ्याती हूओ रे, दंसण मोह उदे सूं जाण रे ।
 चारित मोह कर्म रा उदा थकी रे, पडी कुण र गुणारी हाण रे ॥ २२ ॥
 दया तणो गुण मिट गयो रे, हिंसा रो अवगुण प्रगट थाय रे ।
 भूड चोरी मैथुन परिग्रहो रे, एइवा ओगुण बवे छें थाय रे ॥ २३ ॥

*प्रत्येक गाथा के बाद यह आँकड़ी है ।

क्षमा नरमाइ विगरे मोह थी- रे, वले सरलपणो संतोष रे-
 क्रोध मान माया लोभ परगटे रे, मोह कर्म उदे सूं एहवा दोष रे ॥ २४ ॥
 वीतरागपणो विगार दे रे, राग द्वेष ववे तिणसूं ताम रे ।
 घणा कर्म ववे राग द्वेष थी रे, वले माठा वरते परिणाम रे ॥ २५ ॥
 वले मोह कर्म रा उदा थकी रे, अविरत नीपजे ताम रे ।
 सतरे पाप सेवण रो उद्यम करे रे, अनेक सावच्च करे काम रे ॥ २६ ॥
 सतरे पापथानक सेवे जीवडो रे, माठी लेख्या माठा अध्यवसाय रे ।
 ध्यावे आर्त्त रौद्र ध्यान ने रे, चारित मोह उदे सूं ताय रे ॥ २७ ॥
 माठा जोग वरते छे जीवरा रे, ते पिण मोह उदा सूं जाण रे ।
 कहि रे नें कितरो कहूं रे, ते करज्यो हिया में पिच्छाण रे ॥ २८ ॥
 मोहणी कर्म षयउपसम हूआ रे, गुण नीपजे श्रीकार रे ।
 ते उदे हूआं यांहीज गुणा तणों रे, ओहीज विगारणहार रे ॥ २९ ॥
 कोइ मूढ मिथ्याती इम कहे रे, ग्यान आडो छे मोहणी कर्म रे ।
 ते त्रिवेक विकल सुधवुध विनां रे, ते तो भूलो अग्यांनी भर्म रे ॥ ३० ॥
 जो ग्यान आडो हुवे मोहणी रे, मोह बारमें गुणठाणे हुवे दूर रे ।
 जब केवलग्यान न उपजे रे, तो पडी सरघा में बूर रे ॥ ३१ ॥
 ग्यान आडो कहे कर्म मोहणी रे, ते पूरा मूढ गिंवार रे ।
 आप हुवे ओराने डुबोवता रे, साची सरघा सूं करे छे खुवार रे ॥ ३२ ॥
 नाण मोह चाल्यो सूतर मभे रे, तो ग्यान में उपजे व्यामोह रे ।
 ते ग्यानावर्णी रा उदा थकी रे, ते मोह निश्चेई न कोय रे ॥ ३३ ॥
 नाणमूढे कह्यो सूतर मभे रे, ग्यानावर्णी उदे सूं जाण रे ।
 व्यामोह पडे तिण जीव नें रे, तिणरी पूरी न करे पिच्छाण रे ॥ ३४ ॥
 ग्यानावर्णी रा उदा थकी रे, व्यामोह पामें छे ताय रे ।
 तिण व्यामोह नें थाप्यो मोहणी रे, भोलां नें खबर न काय रे ॥ ३५ ॥
 दिसामोहेण कह्यो आवसग मभे रे, ते दिसि नें पाम्यो व्यामोह रे ।
 ते पिण ग्यानावर्णी रा उदा थकी रे, ते हिरदे त्रिचारी जोय रे ॥ ३६ ॥
 ग्यानावर्णी रा उदा थकी रे, ग्यान भूले सांसो पर जाय रे ।
 दंसणमोहणी रा उदा थकी रे, पदार्थ उंडो सरघाय रे ॥ ३७ ॥
 मोहणी कर्म जावक षय गयो रे, जब आयो बारमें गुण ठाण रे ।
 जो ग्यान आडो हुवे मोहणी रे, ते षय गयां उपजे केवलनाण रे ॥ ३८ ॥
 मोहणी कर्म जावक उपशम्यो रे, इग्यार में गुणठाण रे ।
 जो ग्यान आडो हुवे मोहणी रे, ते उपशम्यां उपजे उपशम नाण रे ॥ ३९ ॥

मुत्तें कहितां मूकाणा सर्व कर्म सूं रे,
 त्यांनं अमूकाणा सरखे कर्म सूं रे,
 अमूत्त मुकाणा नही कर्म थी रे,
 त्यांनं सरखे मूकाणा कर्म थी रे,
 ए नवमों नें दसमों मिथ्यात छें रे,
 ते दोनूई मिथ्यात उत्थाप नें रे,
 मूर्ति नें अमूर्ति बनाविया रे,
 वले जोड करी तिण ऊपर रे,
 कहे एक जाण्यां जाणें सहू रे,
 एहवी करे छे परूपणा रे,
 याहीज दसां बोलां मांहिलो रे,
 तो ऊहीज उणरी सरखा थकी रे,
 कहे नव जाण्यां एक रहे नहीं रे,
 तिण दोय न जाण्यां दसां मांहिलां रे,
 दोय नही जाण्यां ते जिहांद रह्या रे,
 अशुभ कर्म जोगे ऊंधी पडी रे,
 जो अमूर्ति अमूर्ति छोड नें रे,
 उणरे लेखे मिथ्याती ऊ थेटको रे,
 मिथ्यादिष्ट षयोपशम हुई तेहनी रे,
 ते पिण मूढ मिथ्याती जाणें नहीं रे,
 संवत अठारे सेंताले समें रे,
 जोड कीची निन्व ओल्लखायवां रे,

त्यांनं कहिजे सिद्ध भगवान रे।
 ते मिथ्याती री ऊंधी सरघान रे ॥ ४० ॥
 ते तो संसारी जीव रे।
 तिणरे निश्चें मिथ्यात री नीव रे ॥ ४१ ॥
 सूतर ठाणांग मांहि रे।
 और बनाया छें ताहि रे ॥ ४२ ॥
 मूकाणा नें अमूकाणा री ठोर रे।
 कर २ झूठा भोर रे ॥ ४३ ॥
 नव जाण्यां न रहे एक रे।
 कर २ ताण वशेख रे ॥ ४४ ॥
 जो ऊ एक बोलरो हुवे अजाण रे।
 जाबक मूढ अयाण रे ॥ ४५ ॥
 इम कहे छे कर २ ताण रे।
 तो उणरे लेखे ऊ जाबक अजाण रे ॥ ४६ ॥
 बताय दिया दोय और रे।
 ते तो बूडे छे कर २ और रे ॥ ४७ ॥
 कहे मूकाणा नें अमूकाण रे।
 उणरी सरखा लेज्यो पिछांण रे ॥ ४८ ॥
 नास्ति पाडी छे विविध प्रकार रे,
 तिणरो ती घणो छे विस्तार रे ॥ ४९ ॥
 फागुण सुद में ताहि रे।
 माघोपर सहर रे मांहि रे ॥ ५० ॥

ढाल ११

दुहा

केइ मूढ मिथ्याती जीवडा, जिण मारग ना अजाण ।
 ते ग्रहस्थ री पांचूं इन्द्रयां भणी, सावद्य कहे छे तांण तांण ॥ १ ॥
 जो कोइ ग्रहस्थ आंधो हुवे, तेहनेकहे मिटियो देखण रो पाप ।
 ते आश्व घटीयो कहे तेह नें, इम कर रह्या मूढ विलाप ॥ २ ॥
 बले बहरो कानें हुवें, ते सुणवा रो मिटीयो कहे पाप ।
 ज्यूं २ इंद्री घटे ज्यूं २ गुण वधे, एहवी करे अग्यांनी थाप ॥ ३ ॥
 इंद्री घटीया गुण नीपनों कहे, इंद्री वधीया गुण घट जाय ।
 कहे इंद्रया मे अवगुण घणा, ते चोडे भूला जाय ॥ ४ ॥
 जो इंद्रयां सावद्य हुवे, तो इंद्री घटे ते करणो उपाय ।
 जे इद्रयां ने सावद्य कहे, तिणरी सरघा रो ओहीज न्याय ॥ ५ ॥
 पाप लागे छें राग घेष थी, इद्रयां थी न लागे पाप ।
 ए वीर वचन उत्थापीयो, तिणमे होसी घणो संताप ॥ ६ ॥
 आंधो हुवां रो पाप टलियो कहे, ते पुरा मूढ अयाण ।
 तिणरा थोडा सा जाव परगट करूं, ते सुणज्यो चतुर सुजाण ॥ ७ ॥

ढाल

[जगत गुरु तिसला नन्दन वीर]

जाति^१ कुल^२ बल^३ रूप^४ नें, तप^५ लाभ^६ सूतर^७ ने ठुकराय^८ ।
 ए आठूं पांम्यां मद आवे जीव नें, तिणसूं पाप कर्म लागे आय ।
 चुतर नर समभो ग्यांन विचार* ॥ १ ॥
 ज्यूं पांचूं इंद्री पांमी जीवडे, तिणसूं शब्दादिक वेदाय ।
 जो राग घेष आणे त्या उपरे, तो पाप कर्म बंधाय ॥ २ ॥
 जात नें कुल बल रूप नें, तप लाभ सुतर ने ठुकराय ।
 ए आठूं पांम्या मद आवे नही, तिणरे पाप न लागे आय ॥ ३ ॥
 ज्यूं पांचूं इंद्री पांमी जीवडे, तिणसूं शब्दादिक वेदाय ।
 जो राग घेष न आणे त्यां उपरे, तिणसूं पाप न लागे ताय ॥ ४ ॥

*यह प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

जात कुल बल रूप नें, तप लाभ सुतर नें ठुकराय ।
 ए आठोंइ मदरा कारण कहा, पिण एतो नहीं मदरा उपाय ॥ ५ ॥
 आठ बोल ज्युं पांचूंइ इंदर्यां, ए पिण कारण कहि छे ताय ।
 आठ बोलां सूं पाप लागे नहीं, ज्युं इंदर्यांसुं पिण पाप न थाय ॥ ६ ॥
 जो पांचूं इंदरी सावद्य हुवे, तो ए पिण आठूंइ सावद्य होय ।
 जो ए आठूं बोल सावद्य नही, तो पांचूं इंदरी सावद्य नही कोय ॥ ७ ॥
 कोइ कहे आंधो हुवें छे तेहनें, देखण रो पापं टल जाय ।
 तो सुतर भण नें कोइ वीसख्यो, तिण रे टलीयो सुतर मद ताय ॥ ८ ॥
 कानें बहरो हूवों तेहनें, सुणवारो पाप मिटियो ताय ।
 कोइ तप करनें भागल हुवो, तिणरे पिण तप मद मिट जाय ॥ ९ ॥
 इण विघ्न पांचूं इंदरी हीणी पख्यां, त्यारो पाप न लागें आय ।
 तो जात कुलादिक आठूंइ भिष्ट हुवें, तिणरे आठूंइ मद मिट जाय ॥ १० ॥
 पांच इंदरी तो सावद्य नहीं, जातादिक आठूं मद नहीं ताहिं ।
 रागद्वेष ओलखायो छे एहथी, ते निरणो करो घट माहिं ॥ ११ ॥
 इंद्री घटीयां सूं गुण वधीयो कहे, ते जिण मारग रा अजाण ।
 इंद्री घटे छें उसभ उदे हूवां, तिणरी विकलां नें नहीं छे पिच्छाण ॥ १२ ॥
 उणरी सरधा रे लेखे इंदरीहार नें, थावर में उपनां गुण होय ।
 जात कुलादिक आठां तणो, त्यारे मद नांहि आवे कोय ॥ १३ ॥
 उणरे लेखे मिनष छें दलदरी, हीयाफूट इंद्रीहीण होय ।
 जातादिक आठूं हीणा हुवां, तिणरे मद नहीं आवें कोय ॥ १४ ॥
 जीव नीच जाति मांहे उपनो, तिणरे जात रो मद आवे नांहि ।
 जो नीच कुल में जीव उपनो, तो कुल मद नहीं आवे मन मांहि ॥ १५ ॥
 जो बल करनें निरबल हुवें, तो बल रो मद नावें लिगार ।
 जो रूप में जीव कुरूप हुवें, तो रूप रो नही आवे अहंकार ॥ १६ ॥
 तपसा तिण सूं मूल हुवें नहीं, तिणरे तपसा रो मद नहीं आय ।
 असणादिक जाबक मिले नही, तिण नें लाभ रो मद मावें ताय ॥ १७ ॥
 कोई ठोठ तो सुतर भणे नहीं, तो सूतर मद नावें ताय ।
 जो सिखादिक जाबक मिले नही, तो ठकुराइ रो मद नहीं आय ॥ १८ ॥
 जातादिक आठूं पामें पाडूवा, ते उसभ कर्म सूं जाण ।
 पांचूं इंद्री हीणी पड़े तेहनें, उसभ कर्म उदे हूआ आण ॥ १९ ॥
 उसभ उदे सूं गुण नीपनां कहे, तिणरे उदे हूओ छें मिथ्यात ।
 उसभ घटीया सावद्य नीपणों कहे, आतो विकला वाली छें वात ॥ २० ॥

कोई जीव दो भागी ने दल दलदरी, दुख भोगवे विविध परकार ।
 तिणनें चावे ते वस्त मिले नहीं, तिणरे गुण कहे मूढ गिवार ॥ २१ ॥
 एतो उदें आया कर्म भोगवे, तिणरे गुण नही हुओ लिंगार ।
 गुण तो होसी जद जीवरे, मिलीया त्यागसी तिण वार ॥ २२ ॥
 रूडा रूप छे विविध प्रकार नां, त्यां ने देखे चषू इंद्री तांम ।
 रूप ने चषू इंद्री सावद्य नही, सावद्य छे खोटा परिणाम ॥ २३ ॥
 रूडा शब्द विविध प्रकार ना, ते सुणें सुरत इंद्री तांम ।
 शब्द नें सुरत इंद्री सावद्य नही, सावद्य खोटा परिणाम ॥ २५ ॥
 रूडा गंध छें विविध प्रकार ना, त्यानें वेदे घणेद्री ताम ।
 गंध नें घाणेद्री सावद्य नही, सावद्य खोटा परिणाम ॥ २५ ॥
 रूडा रस विविध प्रकार नां, त्यानें वेदे रस इंद्री तांम ।
 रस नें रस इंद्री सावद्य नही, सावद्य खोटा परिणाम ॥ २६ ॥
 रूडा फरस छे विविध प्रकार ना, त्यानें वेदे फरस इन्द्री तांम ।
 फरस नें फरस इंद्री सावद्य नही, सावद्य खोटा परिणाम ॥ २७ ॥
 शब्दादिक पांचूं रूडा उपरे, राग ते सावद्य जाण ।
 शब्दादिक पांचूं पाडुआ उपरे, धेष आवे ते सावद्य पिछाण ॥ २८ ॥
 साध मनोग्य आहार करतो थको, जो ग्रिधपणो करे कोय ।
 ते जिण अगना रो चोर छे, तिणरो चारित कोयला होय ॥ २९ ॥
 साध मनोग्य आहार करतो थको, ग्रिधपणो करे नही कोय ।
 तिणरो चारित न हूवो कोयला, तिणरे कर्म निरजरा होय ॥ ३० ॥
 रस इंद्री सावद्य नही, सावद्य नही मनोग्य आहार ।
 ग्रिधपणा नें सावद्य कह्यो, तिणसू चारित हूवो छार ॥ ३१ ॥
 साधु अमनोग्य आहार करतो थको, जो उ धेष करे तिण वार ।
 तिणरे चारित में धूवो उठीयो, हूवो श्री जिण आगना वार ॥ ३२ ॥
 साधु अमनोग्य आहार करतो थको, जो उ धेष न आणे लिंगार ।
 तिणरो चारित कुसले रह्यो, वले कर्म तूटा तिण वार ॥ ३३ ॥
 रस इंद्री तो सावद्य नही, सावद्य नही अमनोग्य आहार ।
 धेष आयो तिण नें सावद्य कह्यो, तिणसू हूवो चारित रो विगार ॥ ३४ ॥
 देखो राग धेष सावद्य कह्या, ते सावद्य जोग व्यापार ।
 भगोतीरे सतक खंद सातमे, पेंहिला उदेसामे विसतार ॥ ३५ ॥
 श्रेणिक राजा ने राणी चेलणा, त्यारो रूप मनोहर देख ।
 साधु सावदियां नीहाणो कीयो, त्यारा खोटा परिणाम विशेष ॥ ३६ ॥

जब केइ अग्यानी इम कहे, रूप देख्यो तो कीयो नीहाण ।
 तिण सं चषू इंद्री नें सावद्य कहां म्हें, चोखी करी पिछाण ॥ ३७ ॥
 घणा साध नें साधव्यां, त्यारो रूप देख्यो तिण वार ।
 जो चषू इंद्रीं सावद्य हुवे तो, सगला रे हुंतो विगाड ॥ ३८ ॥
 देखणा माहें अवगुण नहीं, आंगुण मन परिणाम ।
 खोटो मन वरत्यो तेहनों, त्यां कियो नीहाणो ताम ॥ ३९ ॥
 सुरीयाभ नामे देवता, ते वीर समीपे आय ।
 नाटक पाइया विवध परकारना जी, रूप अनेक वणाय ॥ ४० ॥
 त्यांरा मीठा शब्द सुहामणा, ते सांघां सुणिया छें कांन ।
 वले साध नें साधव्यां, त्यांरा दीठा रूप असमान ॥ ४१ ॥
 शब्द सुण्या रूप देषीयां, तिणरो पाप न लागो लिंगार ।
 पाप लागे छे सावद्य जोग थी, ते बुधिवंत करज्यो विचार ॥ ४२ ॥
 नातीला ने कह्या असमाधीया, पिण ते असमाधीया नाहि ।
 असमाधीया निज परणाम छें, ते विचार देखो मन माहि ॥ ४३ ॥
 ज्यूं इंद्री ने वेरण कही पिण, इंद्रयां वेरण नाहि ।
 वेरी तो राग घेष परिणाम छें, ते विचार कीज्यो मन माहि ॥ ४४ ॥
 इंद्री तो षयउपसम भाव छे, जीवरो निज गुण सरूप ।
 केवल दर्शण माहिली वानगी, निरमल चीज अनूप ॥ ४५ ॥
 काम नें भोग थकी समता नही, असुमता पिण मत जांण ।
 राग घेष थकी असुमता हुवे, तिणरी बुधवंत करज्यो पिछाण ॥ ४६ ॥
 ए उत्तरावेन इकतीसमें जी, सो उपर ली गाथा एक ।
 तिणरो अर्थ हीया में धारने जी, छोड दो खोटी टेक ॥ ४७ ॥
 वले कही २ नें कितरो कहूं, इंद्री छें षयउपसम भाव ।
 कर्म लागे छे तेह थी, तिणरो जाणे समदिष्टी न्याव ॥ ४८ ॥
 समत अठारे सेंताले समें, वंसाध विद नवमी बुधवार ।
 जोड़ कीची इंद्री ओल्लायवा, नेंगवा सहर मभार ॥ ४९ ॥

ढाल : १२

ढुहा

केइ भारीकर्मा जीवडा, ते कर रह्या कूडी टेक ।
 ते पाचू इंदरया नें सावद्य कहे, ते बूडे छे विना ववेक ॥ १ ॥
 जो इंदरयां सावद्य हुवे, तो इंद्री घटीयां सावद्य मिट जाय ।
 उणरे लेखे इंद्री हारीयां, लाम अनतो थाय ॥ २ ॥
 इंद्रयां षयउपसम भांवछे निरमलो, केवल दरसन माहिली चीज ।
 त्या इंदरयां ने सावद्य कहे, ते रह्या मिथ्यात में भीज ॥ ३ ॥
 कहे जो इंदरयां कायम रहे, तो पडे नरक में जाय ।
 दूसरो ओगुण कहे इंदरयां मभे, ते एकंत मूसावाय ॥ ४ ॥
 अवगुण तो छे राग घेप में, ते दीया इंदरयां सिर नांख ।
 त्याने किम समभाविye, ज्यांरी फूटी अभितर आख ॥ ५ ॥
 केइ शब्दादिक सुख भोगवे घणा, तो ही जावे देवलोक माय ।
 त्यांरी इंदरया पिण कुसले रहे, तिणरो जाणे समदिटीन्याय ॥ ६ ॥
 इंदरया काम रह्यां कह नारकी, ते भूठ रा वोलणहार ।
 तिणरी खोटीसरघारो निरणो कहूं, ते सुणजों विसतार ॥ ७ ॥

ढाल

[पाषण्ड वधसी आंरे पाच मे]

तीन पल आउषारा जुगलीया रे, त्यांरी तीन कोस री हूंती काय रे ।
 इंद्री पांचोइ त्यांरी निरमली रे, ते मरने निश्चेंइ देवता थाय रे ।
 इंदरयां नें सावद्य कोइ मत्त जांणज्यो रे* ॥ १ ॥
 जुगलीया मरने हुवे छें देवता रे, त्यांरे हूंता शब्दादिक नां सुख पूर रे ।
 इंदरी कायम रह्यां कहे नारकी रे, तिणरी सरघा रो प्रतष देखो कूड रे ॥ २ ॥
 काम ने भोग जुगलीया रे घणा रे, त्यांरा सुख पूरा केम कहवाय रे ।
 पिण राग ने घेप लीवर नही तेहनें रे, तिणसूं जुगलीया नरक न जाय रे ॥ ३ ॥
 काम ने भोग उतकष्टा भोगवें रे, जो उतकटो राग तिणसूं होय रे ।
 तो जुगलीयो मरने जाए नारकी रे, देवता होय न सके कोय रे ॥ ४ ॥

*यह अर्किडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

ते वांजत्र सुणे छे विविध प्रकार नां रे, वले विविध प्रकारे देखे रूप रे।
 कसबोइ लेवे विविध प्रकार नां रे, भोजन करे छे विविध अनूप रे ॥ ५ ॥
 फरस भोगवे विविध प्रकार नां रे, त्यारे कामभोग घणा सुखदाय रे।
 पिण राग नें घेष तिणा रें पातला रे, तिण सूं तो अल्प पाप बंधाय रे ॥ ६ ॥
 जुगलीयां रा सुख रे भाग अनंत में रे, केइ राजा नां सुख छें अल्प लिंगार रे।
 जो राग ने घेष त्यारे प्रबल हुवे रे, तो पादरा जाए नरक मभार रे ॥ ७ ॥
 ए प्रतष अवगुण छे राग घेष में रे, ते इंदरयां रे माथे न्हवैं कांय रे।
 पाप लागे छे सवद्य जोग थी रे, विचार करे देखो मन मांय रे ॥ ८ ॥
 घणा काम नें भोग जुलीयां भोगवे रे, ते तो न जाए नरक मभार रे।
 केइ थोडा भोगवीयां जाए नरक में रे, तिणरो कोइ बुधिवंत करो विचार रे ॥ ९ ॥
 जुगलीयां रा सुख सूं सुख अनंत गुणा रे, एक सवार्थ सिद्ध देवतां रा जाण रे।
 पिण मूर्छा नें तिसणा त्यारे अल्प छें रे, तो अल्प कर्म लागे छें आंण रे ॥ १० ॥
 भवणपति नें व्यंतर जोतषी रे, वले नर मनष सगलाइ नर नार रे।
 त्यां सगला रा सुख सूं अनंत गुणा रे, एक देवता रा सवार्थ सिद्ध मभार रे ॥ ११ ॥
 त्यां रे सुख छे उतकष्टा शब्दादिक तणां रे, पिण राग नें घेष अल्प छे ताय रे।
 त्यां रे अल्प कर्म लागे छे तेह सूं रे, ते मिनष थइ नें मुक्ति में जाय रे ॥ १२ ॥
 केइ दोनूइ पुरष बरोबर भोगवे रे, काम नें भोग मनोग्य जाण रे।
 पिण पाप न लागे त्यांने सारिषो रे, पाप परिणामा लार पिछ्छाण रे ॥ १३ ॥
 कोइ काम नें भोग तीवर परिणाम सूं रे, भोगवे गाढी मूर्छा आंण रे।
 तिण मूर्छा सूं पाप लागे छे चीकणा रे, ते पिण इंदरयां रो दोष म जाण रे ॥ १४ ॥
 कोइ काम नें भोग मनोग्य भोगवे रे, तिण उपर व्याणं अल्पसो राग रे।
 तो अल्प कर्म लागे तिण राग थी रे, ते पिण इंदर्यां रो नहीं विभाग रे ॥ १५ ॥
 शब्दादिक पांचूं मिलिया पाडूवा रे, त्यां ऊपर करे जो गाढो घेष रे।
 तिण घेष सूं कर्म लागे छे चीकणा रे, ते इंदर्यां रो कांई नहीं विशेष रे ॥ १६ ॥
 शब्दादिक पांचूं मिलिया पाडूवा रे, तिण उपर करे अल्प सो घेष रे।
 तो अल्प कर्म लागे तिण घेष थी रे, ते पिण इंदर्यां रो नहीं विशेष रे ॥ १७ ॥
 राग ने घेष करे छे जीवडो रे, जगन भभम उतकष्टो जाण रे।
 जेहवो करे छे तेहवो पाप नीपजे रे, पिण इंदर्यां सूं पाप न लागे आंण रे ॥ १८ ॥
 घेष सूं तंदुल नामें माछलो रे, गयो छे सातमी नरक मभार रे।
 ते एकंत सावद्य मन रा जोग थी रे, तिणरी इंदरी में दोष नही लिंगार रे ॥ १९ ॥
 नाटक पड़े छे विविध प्रकारनां रे, तिहां वांजत्र बाज रह्या घुंकार रे।
 धले गीत नें नाद घणा रलीयामणा रे, ते तो सावद्य जोग तणों व्यापार रे ॥ २० ॥

ते नाटक देखे छे गायां भेंसीया रे, वले तेहीज नाटक देखे नर नार रे।
वले गीत वाजंत्र सघला सोमले रे, यां में कुण २ कर्मां रा बांवनहार रे ॥ २१ ॥
नाटक देखे छे गायां भेंसीयां रे, त्यानें तो समझ पडी नही काय रे।
मनरो पिण जोग सावद्य नही वरतीयो रे, देख्या सूं पाप न लागे ताय रे ॥ २२ ॥
गीत सुणिया छे गायां भेंसीयां रे, त्याने तो समझ पडी नही काय रे।
मनरो पिण जोग सावद्य नही वरतीयो रे, त्याने सुणीयां सू पाप न लागो ताय रे ॥ २३ ॥
त्यारे सुणीयां देख्यांरी नही विचारणा रे, विचाख्या विन मन सूं हरष न थाय रे।
कदा कोयक विचारी ने हरखत हुवे रे, जब तिणरे पिण पाप कर्म बंधाय रे ॥ २४ ॥
तेहीज नाटक देख्या नर नारीयां रे, ते मन सूं हूआ घणा गलतांन रे।
जब पाप लागो छे मनरा जोग थी रे, तिण पाप सूं होसी घणा हेरान रे ॥ २५ ॥
तेहीज गीत सुण्या नर नारीयां रे, वले सुणीया वाजंत्र ना घुकार रे।
जब केइ नर नारी मनसूं हरषिया रे, त्यां सघलां ने पाप लागो तिण वार रे ॥ २६ ॥
ते नाटक देख नें कोइ हरष्यो नही रे, नही हरष्यो सुणनें वाजंत्र गीत रे।
जब पाप न लागो तिणनें सर्वथा रे, इंदरयां नें दोष नही इण रीत रे ॥ २७ ॥
नाटक देख्यो छे गायां भेंसीयां रे, नाटक देख्यो नरनारी ताम रे।
यामे पाप कर्म लागो छे जेहने रे, जिणरा वरत्या खोटा परिणाम रे ॥ २८ ॥
पाप न लागे सुणियां देवीयां रे, तिण माहे संका मूल म आण रे।
पाप लागे छे सावद्य जोग थी रे, मोह उदे भाव नीपन सूं जाण रे ॥ २९ ॥
च्यार कषाय ने तीन वेद थी रे, वले मिध्यात इविरत सेती जाण रे।
माठी लेस्या ने माठा जोग सूं रे, या बोलां सूं पाप लागे छे आण रे ॥ ३० ॥
वले कोइ मोह उदे सूं नीपना रे, त्यांसूं पिण लागे पाप एकंत रे।
पिण पाप न लागे षयउपसम भावथी रे, विचार करे देखो मतवंत रे ॥ ३१ ॥
सात कर्म उदा सूं नीपनां रे, तिण सूं इ पाप न लागे आय रे।
तो षयउपसम कर्म हुआं गुण नीपना रे, त्यां गुणा सू पाप केम बंधाय रे ॥ ३२ ॥
पाप बंधे कहे षयउपसम भाव थी रे, तिणरी सरवा मे पुरो घोर अंधार रे।
ते आप डूबे ओरां ने बोवता रे, तिण जीतव जन्म दियो बिगार रे ॥ ३३ ॥
पांचूं इंदख्यां नें मेहले मोकली रे, ते शब्दादिक माहें त्रिधी थाय रे।
ते निश्चेइ राग तणी परजाय छे रे, तिणसू सावद्य जोग वरते छे ताय रे ॥ ३४ ॥
पांचूं इंदख्यां नें जो कोई वस करे रे, ते त्रिधी शब्दादिक सूं नही थाय रे।
ते तो वीतराग तणी परजाय छें रे, जब निरवद जोग वरते छे ताय रे ॥ ३५ ॥
इंदख्यां तो षयउपसम भाव छे निरमलो रे, तिण सू तो पाप न लागे आय रे।
पाप लागे छे उदे भाव थी रे, ते राग नें वेष तणी परजाय रे ॥ ३६ ॥

पांचूं इंद्रियां ने राग घेष रो रे, सभाव जूओ २ छे तांम रे।
 इंद्रियां रा सभाव मांहेँ अवगुण नही रे, कषाय तणा खोटा परिणाम रे ॥ ३७ ॥
 काम ने भोग शब्दादिक तेह थी रे, समता नहीं पामें जीव लिंगार रे।
 असमता पिण नही पामें छे एहथी रे, यां सूं मूल न पामें जीव विकार रे ॥ ३८ ॥
 जो राग नें घेष आपे त्यां ऊपर रे, ते हिज विकार विषय कषाय रे।
 ते कह्यो छे उत्तराघेन बत्तीस में रे, सो उपरली पहली गाथा मांय रे ॥ ३९ ॥
 इंद्रियां नें राग घेष ओलखायवा रे, जोड कीषी आंतरदा गांम मभार रे।
 संवत अठारे सेंताले समें रे, वैसाख सुदि बारस नें रविवार रे ॥ ४० ॥

ढलल : १३

दुहल

केइ इंदरयां नें सावद्य कहे, ते जिणमारग नल अजाण ।
 ते आगम अर्थ अंवलल करें, बूडे छे कर कर तलण ॥ १ ॥
 पांचूं इंदरी दमवी कही, निग्रह करवी कही छे तलय ।
 वले इंद्रयां नें संवरवी कही, तिणरो मूढ न जलणे न्यलय ॥ २ ॥
 शब्द सुणें रुडल पलडुआ, रलण घेष न करवो तलय ।
 निग्रह करवी कही छे इण वलघे, दमणी संवरवी इण न्यलय ॥ ३ ॥
 रूप दीठल रुडल पलडुआ, रलग दूषे न करवो तलय ।
 इण वलघे निग्रह करवी कही, दमवी संवरवी इण न्यलय ॥ ॡ ॥
 शेष इंदरी तीनलं तणो, इण रीत सूं कहणो तलय ।
 निग्रह करणी दमणी ने सवरवी, सगलं रो छे ओहीज न्यलय ॥ ॡ ॥
 रलग घेष उपजे जीव रे, शब्दलदक थी तलय ।
 ते इंदरयां कर ओलखलवीयो, ते भोलल नें खबर न कलंय ॥ ६ ॥
 ते आंगुण तो रलग घेष में, पलण इंदरयां मे आगुण नलहल ।
 इंद्रयां हलंसलदक अठलरल में नही, वलचलर देखो मन मलंहल ॥ ७ ॥
 इंदरयां ने सावद्य नलरवद कहे, ते परमलरथ रल अजलण ।
 हलवे जथलतथ नलरणो कहूं, ते सुणजों चुतर सुजलंण ॥ ८ ॥

ढलल

[चन्दगुप्त रलजल सुशो]

शब्द रुडल नें पलडुआ, ते सुणे सुरतइद्री तलह्यो रे ।
 तलण सूं हरष ने सोगरो आगलर छे, ते इवलरत कही जलण रलयो रे ।
 कोइ इंदरयां नें सावद्य मत जलणजो ॥ १ ॥
 इवलरत अत्यागभलव तेहसूं, पलप लगे नलरंतर आणो रे ।
 शब्द सुणलयां रो कलरण को नही, इवलरत संववीयो पलप जलणो रे ॥ को० २ ॥
 शब्द रुडल ने पलडुआ, ते सुणलयां हर्ष सोग थलयो रे ।
 तलणरल सलवद्य जोग वरतीयल, मन वचन ने कलयो रे ॥ ३ ॥
 तलण सलवद्य जोग थी जीवरे, पलप कर्म आय लगे रे ।
 जोग वरते तठल तलई जलंणज्यो, तलणरो नही नलरंतर पलप आगे रे ॥ ॡ ॥
 २२

शब्द रूडा नें पाडुवा, ते सुणे सुरत इंद्री ताह्यो रे ।
 त्यां सूं हरष नें सोगरा त्याग छे, तिणनें विरत कही जिण रायो रे ॥ ५ ॥
 ते विरत त्याग भाव तेहसूं, रुके निरंतर पापो रे ।
 शब्द सुणीयां रो कारण को नहीं, थिर परिणाम राख्या थापो रे ॥ ६ ॥
 शब्द रूडा नें पाडुवा, जो सुणनें वेराग आणे ताह्यो रे ।
 तिण रा जोग निरवद वरतीया, मन वचन नें कायो रे ॥ ७ ॥
 तिण निरवद जोग थी जीव रे, कटे छे पाप कर्मों रे ।
 ते जोग वरते छे त्यां लगे, ते पिण नही निरंतर धर्मों रे ॥ ८ ॥
 शब्द री विरत नें निरवद जोग थी, हुवे छे संवर निरजरा धर्मों रे ।
 शब्द री इविरत नें माठा जोग थी, लागे छे पाप कर्मों रे ॥ ९ ॥
 विरत ने निरवद जोग वरतीया, ए दोनूं इंदरयां नांही रे ।
 इविरत नें सावद्य जोग वरतीया, ते पिण इंदरया नही कांड रे ॥ १० ॥
 शेष च्याहूं इंदरयां भणी, सुरत इंद्री जेम पिछांणो रे ।
 विरत इविरत सुभ उसुभ जोग थी, सघली इंदरयां नें न्यारी जांणो रे ॥ ११ ॥
 शब्दादिक रूडा नें पाडुआ तणा, इविरत नें उसुभ जोग मूंडा रे ।
 पिण इंदरयां नें भूंडी मत जांणजों, छोड मिथ्यात री रूडा रे ॥ १२ ॥
 पांचूं इंदरयां नें संवर कही, वले मन वचन ने काया रे ।
 भंड उवगरण नें सूची कुसग, ए दसोंई संवर वताया रे ॥ १३ ॥
 एहीज दसोंई असंवर कह्या, त्यां नें रुडी रीत पिछांणो रे ।
 एतो दसोंई संवर असंवर नही, त्यांरो न्याय परमारथ जांणो रे ॥ १४ ॥
 शब्दादिक पांचूं विषें रा त्याग छे, मन वचन काया इम जांणो रे ।
 माठा वरतावण रा त्याग छे, संवर एह पिछांणो रे ॥ १५ ॥
 भंड उपगरण री ममता रो त्याग छे, वले अजयणा करवारो त्यागो रे ।
 सूची कुसग अजयणा रो त्याग छे, ए दसोंई संवर त्याग वेरागो रे ॥ १६ ॥
 शब्दादिक आदि सूची कुसग नों, नही त्याग्या दसोंई बोल तामो रे ।
 वले जोग वरतावे पाडुवा, ते असंवर खोटा परिणामो रे ॥ १७ ॥
 संवर ने आस्रव दोनूं तणो, ते इंद्रयां सूं कांड लेखो रे ।
 संवर मांगा इंद्रयां भागे नहीं, इविरत पिण इमहीज देखो रे ॥ १८ ॥
 प्रथवी पांणी तेउ वाड काय ने, वनसपती नें बेंइंद्री कायो रे ।
 तेइंद्री चोरिंद्री ने पचिंद्री, दसमों अजीव काय बतायो रे ॥ १९ ॥
 प्रथवी कायादिक दसां भणी, संजम कह्यो ठाणाजंग मांह्यो रे ।
 यां दसांई नें असंजम कह्यो, तिणरो मूढ न जाणे न्यायो रे ॥ २० ॥

प्रयवी कायादि दसोइ संजम नहीं, असंजम पिण नहीं छे दसोई रे ।
 यानें हणवा रो त्याग संजम कह्यो, बिना त्याग असंजम कह्यो सोई रे ॥ २१ ॥
 संजम असंजम ने इंद्रयां कहे, ते पूरा मूढ अयांणो रे ।
 संजम असंजम ने इंद्रयां भणी, निश्चेइ जूवा २ जांणो रे ॥ २२ ॥
 मोह उदे ने पयउपसम हूआं, संजम ने असजम जाणो रे ।
 दग्गाणवर्णी कर्म पयउपसम्यां, पांचूं इंद्रयां प्रगटी पिच्छांणो रे ॥ २३ ॥
 संजम ने तो संवर जांणजो, असंजम नें असंवर जांणो रे ।
 त्यानें इंद्रयां कही किण कारणे, तिणरी करो हिया में पिच्छांणो रे ॥ २४ ॥
 सुरतइंद्री ने मेले मोकली, तिणने सुरतइंद्री मत जांणो रे ।
 मोकली मेहेले ते भाव और छे, तिण ने रूडी रीत पिच्छांणो रे ॥ २५ ॥
 सुरतइंद्री नों सभाव सुणवा तणो, मोकली मेले ते राग घेपो रे ।
 ए सांप्रत दोनूंइ जूजूआ, यां दोयां ने एक म लेखो रे ॥ २६ ॥
 सुरतइंद्री सुणे ते जीव छे, ते तो पयउपसम भाव छे चोखो रे ।
 मोकली मेले ते पिण जीव छे, ते तो उदे भाव सदोखो रे ॥ २७ ॥
 उदे ने पयउपसम भाव दोय छे, त्यां ने एक कोइ मत जांणो रे ।
 पयउपसम सूं कर्म लागे नहीं, उदे भाव सूं कर्म लागे आंणो रे ॥ २८ ॥
 चपू इंद्री नें मेहेले मोकली, तिणने चपू इंद्री मत जांणो रे ।
 सुरतइंद्री जिम पांचूं इंद्रयां भणी, इणहीज रीत पिच्छांणो रे ॥ २९ ॥
 पांचूं इंद्रयां ने सत्रू कही, उत्तरावेन तेवीसमां मभारो रे ।
 ते राग घेप ओलखायो इंद्रयां करी, तिणरो पिंडत जांणे विचारो रे ॥ ३० ॥
 चोर कही पांचूं इंद्रयां भणी, उत्तरावेन दत्तीस मां मभारो रे ।
 ते विकार उलखायो इंद्रयां करी, तिणरो वुववंत जाणे विचारो रे ॥ ३१ ॥
 एक २ इंद्री रा विकार सूं, मरण पाम्यां छे अकालो रे ।
 ग्रिबी थका राग पीडिया, त्यांरी घात हुइ ततकालो रे ॥ ३२ ॥
 रूप रे विपे ग्रिबी घणो, ते पामे विणास अकालो रे ।
 जिम रागे पीड्यो पतंगीयो, रूप लंपटी मरे ततकालो रे ॥ ३३ ॥
 ग्रिबी घणो मनोग्य गब्द सूं, ते पामें विणास अकालो रे ।
 जिम रागे पीड्यो मिरगलो, गब्द लंपटी मरे ततकालो रे ॥ ३४ ॥
 मनोग्य गंघ सूं ग्रिबी घणो, ते पामें विणास अकालो रे ।
 रागे पीड्यो सर्प गंघ ओपवी, गंघ लंपटी मरे ततकालो रे ॥ ३५ ॥
 मनोग्य रस सूं ग्रिबी घणो, ते पामें विणास अकालो रे ।
 रागे पीड्यो मछमांस नें ग्रहे, रस लंपटी मरे ततकालो रे ॥ ३६ ॥

मनोग्य फर्शं सूं त्रिषी घणो, ते पामें विनास अकालो रे ।
 रागे पीड्यो महिष जल पडे, फरस लंपटी मरे ततकालो रे ॥ ३७ ॥
 मनोग्य भाव सूं त्रिषी घणो, ते पामें विनास अकालो रे ।
 रागे पीड्यो हस्ती कामभोग सूं, लम्पटपणा सूं मरे ततकालो रे ॥ ३८ ॥
 एक २ इंद्री नां विकार थी, पामी अकाले घातो रे ।
 आतो इण भव केरी वानगी, कहे दिखाई छे बातो रे ॥ ३९ ॥
 एक २ इंद्री ना विकार थी, दुख पामें छे एमो रे ।
 तो पांचू इंद्री ना विकार थी, दुखां नों कहिवो केमो रे ॥ ४० ॥
 इंद्रयां रा विकार राग घेष छे, ते इंद्रयां रा गुण थी न्यारा रे ।
 इंद्रयां तो शब्दादिक सुणे देख ले, शब्दादिक राग सूं लागे प्यारा रे ॥ ४१ ॥
 शब्दादिक जयातथ जाण्यां देषीयां, पाप न लागे लिगारो रे ।
 पाप लागे छे राग घेष आणियां, राग घेष छे विषय विकारो रे ॥ ४२ ॥
 राग ने घेष दोनू षय क्रियां, तो वितरागी गुण थावे रे ।
 इंद्रया तो कुसले रहे, ए तो केवल दर्शन मे समावे रे ॥ ४३ ॥
 तिण सूं इंद्रयां तो सावध नहीं, सावध छे राग घेषो रे ।
 पाप कर्म लागे तेहथी, ते तो इंद्रयां रो नहीं लेखो रे ॥ ४४ ॥
 करलो वचन कह्यो श्रवणे सुण्यो, मन सूं जाण्यो जब जाग्यो घेषो रे ।
 तिणरो शरीर सघलोइ प्रजल्यो, आख्यां हुई लाल वशेषो रे ॥ ४५ ॥
 विवेकारी वचन श्रवणे सुण्यो, मनसूं जाण्यो जब उपनो रागो रे ।
 सगलो सरीर विषे सूं फलफूलीयो, विकार सहित जोवा लागो रे ॥ ४६ ॥
 राग द्वेष छे सर्व प्रदेस में, तिणसूं सर्व प्रदेसां पाप लागे रे ।
 वले सावध जोग कषाय थी, पाप लागे नें निजगुण भागे रे ॥ ४७ ॥
 वले कहि २ नें कितरो कहू, इंद्रयां नें सावध मत जाणो रे ।
 इंद्रयां सूं पाप लागे नहीं, त्यांनं रूडी रीत पिच्छांणो रे ॥ ४८ ॥
 जोड कीवी इंद्रयां नें ओलखायवा, इंद्रगढ सहर मभारो रे ।
 संवत अठारे सेताले समें, जेठ विद चवदस सोमवारो रे ॥ ४९ ॥

ढलल : १ॡ

दुहल

केइ इंदरयां नें मूढ सलवद्य कहे, कूडल २ कुहेत लगलय ।
 तलण श्री जलण वचन उथलपने, खलंच लीधी गललरे मलय ॥ १ ॥
 कहे इंद्रयां नलग्रह करणी कही, दमणी जीतणी कही ठलंम २ ।
 वस करणी नें संवरणी कही, सलवद्य छे तो कही छे आंम ॥ २ ॥
 इण वलध करे छे परूपणल, तलणरो मूल न जलणे मरम ।
 तलण रहलस न जलण्यो सलदधलंत रो, मूलल अजलानी भरम ॥ ३ ॥
 पलंचूं इंदरयां नें सलवद्य थलपवल, करे अनेक उलय ।
 वले खोटी २ जोडलं करे, मूलल लोकां ने दीयल भरमलय ॥ ॡ ॥
 इंदरयां ने नलग्रह करणी कही, तलणरो न्यलय न जलणे मूढ ।
 तलण सूं उंधी करे छे परूपणल, मूठी मलल रह्यल छे रुढ ॥ ॡ ॥
 शब्दलदलक पलचू उपरे, रलग वेष न करणल हेत पीत ।
 इम नलग्रह करणी दमणी जलतणी, वस करणी संवरणी इण रीत ॥ ६ ॥
 वले वशेषे तेहनो, वलवरो कहु छूं तलंम ।
 चलत्त लगलय नें सलंभलो, चूं सीके आतम वलम ॥ ७ ॥

ढलल

(आ अशुक पल जलन आम्यल मे)

शब्दरी चलहल करनें शब्द सुणे तें, शब्द सुणवल री चलहल वलषे रस जलंणों ।
 तलण वलषे सेवण रल सुदुध सलघु नें, जीवे ज्यलं लग छे पचखलणो ।
 परमलरथकल जे शब्द सुण्यल नही दोष, वले सहलजल सुणे तोही दोष न लगने ।
 गमतल शब्दरी चलहल अभलललष करे तो, जब त्यलग वलरलग सलघु रो भलगे ॥ २ ॥
 शब्दरी अभलललषल ने शब्द रो सुणवो, एतो दोनूं सभलव जूवल २ जलंणो ।
 अभलललषल तो मोहु उदे रलग भलव छे, इदुर्यल ने षयउपसम भलव पलछलणो ॥ ३ ॥
 मोहु भलव अभलललषल तलणने, मेढ दीयल वीतरणी थलय ।
 षयउपसम इंदरी मेढ हुवे तो, जलय पडे अव कूप रे मलय ॥ ॡ ॥
 सुरतइंद्री नें नलग्रह इण वलध करणी, मन गमतल शब्द सूं मगन न थलय ।
 अमनोगम उपरे वेष न आणे, तलण सुरतइंद्री नलग्रह कीधी छे तलय ॥ ॡ ॥
 सुरतइंद्री ने नलग्रह कही जलण रीते, दमणी ने जीतणी इमहीज जलणो ।
 इमहलज वस करणी ने सवर लेणी, यल पलंचलं रो परमलरथ एक पलछलंणो ॥ ६ ॥

निग्रह निग्रह कर रह्या मूरख,
 दंसण मोह उदे संवली नही सूभे,
 तिणसूं ते तो कहे निग्रह इण विघ करणी,
 जब उणने देणो कानां आडो दाटो,
 शब्दरी अभिलाषा चाहि करे ते,
 शब्द सुणे सुरतइंद्री परोक्षपणे ते,
 शब्द सुणे सुरतइंद्री षयउपसम भावे,
 पाप लागे अभिलाषा चाहि कीयां थी,
 तिण उदे भाव नें निग्रह दमणो कह्यो छे,
 निग्रहादिक जूआ २ पांच कह्या छे,
 मन वचन काया रा जोग छे सावद्य,
 जोग ने सुरतइंद्री एक सरघे छे,
 रूपरी चाहि करने रूप देखे तो,
 तिण विषे सेवण रा सुघ साधु रे,
 सुरतइंद्री तणी बारे गाथा कही तिम,
 ए साठ गाथा पाचूं इद्रयां तणी छे,
 ए पाचू इंद्रखां रो निग्रह कह्यो जिण,
 ते मारग छोड नें उमड पडिया,
 तिण मूढ मिथ्याती ने पूछा कीजे,
 वले किण भाव नें दमणो जीतणो छे,
 जो उ षयउपसम भाव नें दमणो कहें तो,
 उपसम षायक षयउपसम तीजो,
 जो उ उदे भाव नें दमणो कहे तो,
 वले षयउपसम भाव नें दमणो कहे तो,
 उदे भाव नीपना रा तेतीस बोल,
 तिणमें मोह उदे भाव दमणो कह्यो जिण,
 सात कर्म उदे सूं नीपना भाव,
 तो षयउपसम भाव दमणो किम कहसी,
 ववहार सचा भाषा कही जिणोसर,
 तिणरी विकलां नें समझ पडे नही पूरी,
 घणा भेद छे ववहार सचा भाषा रा,
 पिण थोडा सा परगट करूं छूं त्यांनं,

पिण निग्रह तणो निरणो नहीं जाणे ।
 पीपल बांधी मूरख ज्यूं तणे ॥ ७ ॥
 जाबक शबदां नें सुणवा नाहीं ।
 छेकी पिण भूल न राखणी काई ॥ ८ ॥
 मन वचन कायारा छे माळ जोग ।
 अचषू दर्शण छे मणागार उपयोग ॥ ९ ॥
 तिण भाव सूं पाप न लागे लिगार ।
 ते तो उदे भाव सावद्य जोग व्यापार ॥ १० ॥
 जीतणो वस करणो ने संवरणो ।
 पिण पांचां रो परमारथ एक करणो ॥ ११ ॥
 त्यां जोगां ने मूढ कहे सुरतइंद्री ।
 तिण समकित खोई छे तिण दिन री ॥ १२ ॥
 रूप देखन री चाहि विषे रस जाणो ।
 जीवे ज्या लग छे पचखांणो ॥ १३ ॥
 पांचू इद्रयां तणी इमहिज विघ जाणो ।
 त्यारी जुदी २ गाथा कहि ने पिच्छांणो ॥ १४ ॥
 त्यांरो न्याय निरणो न जाणे मिथ्याती ।
 त्यारी भोला जीव करे पखपाती ॥ १५ ॥
 पांचूं भावां में निग्रह किसो भाव करणो ।
 वले किण भाव ने वस करणो संवरणो ॥ १६ ॥
 उपसम खायक भाव नें दमणो वशेख ।
 यां तीनां रो निजगुण कह्यो जिण एक ॥ १७ ॥
 तिणरो गाढो वचन ग्रहे ने बंध कीजे ।
 तिण भूठाबोला ने भूठो घालीजे ॥ १८ ॥
 इत्यादिक उदे भाव रा बोल अनेक ।
 और भाव नें दमणो कह्यो नहीं एक ॥ १९ ॥
 त्यां ने पिण दमणा कह्या जिण नाहीं ।
 ते न्याय विचार देखो घट मांही ॥ २० ॥
 तिण भाषा सूं गूथ्या छे सुतर में बोल ।
 ते तो समदिष्टी देवे विवरा सुघ खोल ॥ २१ ॥
 ते तो पूरा कहणी न आवे तांम ।
 ते सांमलजो राखे चित्त ठाम ॥ २२ ॥

सचित्त अचित्त ने मिश्र परिग्रहो,
ज्यू इदखा ने पिण सत्रू कही छे,
सचित्त अचित्त ने मिश्र परिग्रह,
ज्यू पाचू इदखा पिण सत्रू नही छे,
सचित्त अचित्त ने मिश्र परिग्रहो,
ज्यू शब्दादिक ऊपर राग आणे,
समचे शरीर ने नावा कही जिण,
ज्यू इंद्रया ने शत्रू तिहां इज कही छे,
ज्यू शरीर तो नावा निश्चे नही छे,
त्यारो परमारथ समदिष्टी जाणे,
शरीर थी सावद्य सेवण आगार जे,
ज्यू शब्दादिक ऊपर राग आणे तो,
शरीर थी सावद्य रा त्याग छे त्रिविधे,
ज्यू शब्दादिक ऊपर राग न आणे,
प्रथवीकाय ने संजम कह्यो जिण,
ते न्याय न जाणे मूढ मिथ्याती,
प्रथवीकाय तो सजम निश्चे नही छे,
ज्यू इंद्रया पिण सत्रू निश्चे नही छे,
प्रथवीकाय ने असजम कह्यो जिण,
ते पिण न्याय न जाणे मूढ मिथ्याती,
प्रथवीकाय असंजम नहीं निश्चे,
ज्यू इदखा पिण सत्रू निश्चे नहीं छे,
सतरे भेदे संजम ने असजम,
त्यारो त्याग सजम नें अत्याग असंजम,
काम ने भोग कह्या छे अनर्थरा मूल,
त्यां ने किंपाक फल री ओपमा दीधी,
काम ने भोग कह्या छे अनरथ रा मूल,
ज्यू इंद्रया ने पिण सत्रू कही छे,
काम ने भोग अनर्थ रा मूल नाही,
ज्यू इदरयां पिण सत्रू छे नाही,
काम ने भोग थी जीव समता न पामे,
उत्तराधेन बत्तीसमें घेनें,

तिणनें अनर्थ रो मूल कह्यो भगवान ।
त्यांरो न्याय न जाणे ते विकल समान ॥ २३ ॥
ते तो निश्चेइ अनर्थ रो भूल नांही ।
ते न्याय विचारे देखो घट माही ॥ २४ ॥
तिणरी मूर्छां सावद्य जोग अनरथ जाणो ।
तिण राग ने सत्रू लीजो पिछाणो ॥ २५ ॥
उत्तराधेन तेवीसमां घेन माय ।
ते पिण विकलां ने खबर न काय ॥ २६ ॥
ज्यू इंद्रया पिण सत्रू निश्चेइ नाही ।
पिण भोला ने खबर पडे नही कांई ॥ २७ ॥
तिण आगार ने फूटी नावा जाणो ।
तिण राग ने शत्रु लीजो पिछांणो ॥ २८ ॥
ते त्याग छे नावा गुण रत्नां री खाणो ।
तिण त्याग ने मित्री कह्यो जिण जाणो ॥ २९ ॥
ज्यू इदखां ने सत्रू कही भगवत ।
तिणरो परमारथ जाणे मतवत ॥ ३० ॥
सजम छे प्रथवी हणवा रो त्याग ।
सत्रू शब्दादिक सू कीयां राग ॥ ३१ ॥
ज्यू इदरया ने सत्रू कही भगवत ।
तिणरो परमारथ सुणज्यो मतवत ॥ ३२ ॥
असजम तो प्रथवी हणवारो अत्याग ।
सत्रू तो शब्दादिक सू कीया राग ॥ ३३ ॥
प्रथवीकाय ज्यू सतरेइ जांण ।
त्यारी जूदी २ कर लीजो पिछाण ॥ ३४ ॥
त्याने कह्या छे महादुख ने दुख तणी पान ।
ज्यू इदखा ने सत्रू कही भगवान ॥ ३५ ॥
ते तो राग ने वेष आसरी जाणो ।
तिण ने लीजो रुडी रीत पिछांणो ॥ ३६ ॥
त्या सू भ्रिघ पणो अनर्थ रो मूल जाणो ।
सत्रू तो शब्दादिक सू राग पिछाणो ॥ ३७ ॥
काम ने भोग थी नही पामें विकार ।
सो ऊपरली पेंहली गाथा मझार ॥ ३८ ॥

काम नें भोग ऊपर राग नें घेप, तेहीज राग घेप छे विषय विकार ।
 ते मोह कर्म उदे नीपनां भाव, पिण इंदरयां सन्नू नहीं छे लिगार ॥३९॥
 सत्त ने दत्त दोनूँड संवर कहा छे, प्रश्न व्याकरण सूत्र ममार ।
 पिण सत्त ने दत्त दोनू नहीं संवर, सत्त ने दत्त दोनूँ छे जोग व्यापार ॥४०॥

ढाल : १५

दुहा

दरबे जीव छे सासतो, भावे जीव असासतो छे ताहि ।
 भगोती रे सतषध सातमें, कह्यो बीजा उदेसा माहि ॥ १ ॥
 दरब तो तीन काल में सासतो, असंख्यात प्रदेसी जाण ।
 उपजे ने विणसे ते भाव जीव छे, तिणरी बुधवंत करजो पिछाण ॥ २ ॥
 दरब ने भाव दोनू छे जूजूआ, ते जीव लेखे तो एक हीज जाण ।
 सदयादिक पांच भावां करी, भाव जीव ने लीजो पिछाण ॥ ३ ॥
 छ दरब जिणेसर भाषीया, त्यानें सासता कहा तीन काल ।
 ते तो गिणती रा छहुं दरबां ने गिण्यां, अठे भाव रो न कह्यो निकाल ॥ ४ ॥
 छ दरबां ने छ दरब कहा, त्यांरीं गिणी नही परजाय ।
 परजाय तो एकीका दरब री, अनंती अनंती कही जिणराय ॥ ५ ॥
 जीव दरब री परजाय ने, भावे जीव कह्यो जिणराय ।
 ते परजाय तो नीपनी हुवे, दरब घटे बवे नहीं ताय ॥ ६ ॥
 दरब ने भाव जीव रो, द्विवरो कहू छू ताय ।
 ते जयातय परगट कळ, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ७ ॥

ढाल

[आ अशुकपा जिण आग्या मे]

दरब ने भाव जीव रो निरणों कीजो, धीर रा वचन आगम माहे जोवो ।
 आगम नां उंवा २ अर्थ करेनें, मानव नों भव काय द्विगोवो ।
 दरब ने भाव जीवरो निरणो कीजो* ॥ १ ॥
 नव पदारथ में धुर सू जीव कह्यो जिण, तिणमें द्रब ने भाव दोनू ई आया ।
 काई दरब गुण परजाय वारे न राखी, समवे जीव कह्यो तिण में सर्व समाया ॥ २ ॥
 आश्व संवर निरजरा ने मोष, ए च्यारू पदारथ छे भाव जीवो ।
 याने समदिष्टी ओलखिया अमितर, त्यारे अमितर ग्यांन खुल्यो घट दीवो ॥ ३ ॥
 आश्व संवर निरजरा ने मोष, याने दरबे जीव कही छे अग्यानी ।
 तिण भाव जीव ने द्रब जीव सरघ्या, तिण ने समदिष्टी किण विधजाणे ग्यानी ॥ ४ ॥
 अधवसाय परिणाम ध्यान ने लेस्या, त्यांरा भेद अनेक कहा भगवंत ।
 ए जीवरा भाव असासता निरुचें, त्यांनें भावे जीव जाणो मतवत ॥ ५ ॥

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

वले जोग उपीयोग ने दिष्ट तीनोंइ,
 ए पिण जीवरा भाव असासता निश्चे,
 नारकी तिरजंब मिनख नें देवां,
 इत्यादिक अनेक असासता त्यानें,
 द्रव आत्मा नें दरवे जीव कही जे,
 तिण परजाय नें दरवे जीव सरवे,
 भाव जीव नें दरव जीव सरवे,
 ते आगम उयापनें उंची परूपे,
 दरवे तो जीव नें एक कह्यो छे,
 तिण दरव रा लखणां नें भाव जीव कहीजे,
 सुखदेव सिन्यासी पृच्छा कीधी,
 दरव थकी तो हूं एक हो सुखदेव,
 नाणदंसणठ्या ए दोग पिण हूं छूं,
 प्रजोगठ्याए अनेक पिण हूं छूं,
 वले सोमल नें कह्यो वीर जिणेसर,
 अठारमां सतक रे दसमें उदेशे,
 वले पारसनाथजी कह्यो सोमल नें,
 निरावलिका सूतर जोय निरणो कीजो,
 इत्यादिक सूतर में ठाम ठाम,
 तिण दरव रा भाव नीपनां त्यानें,
 दरव थकी जीव तो सासतो कहीजे,
 भगोती रे सातमें सतक कह्यो छे,
 जीव दरवे सासतो भावे असासतो,
 भगोती सूतर रा नवमां सतक में,
 नरेइयो नरेइयो द्रव थी तूला,
 अवग्राहणा नें थित आश्री तो,
 नव उपीयोग आश्री छठाणवडीयो,
 चउठाण नें छठाणवडीयो,
 दरव नें प्रदेस ववे घटे नांही,
 नारकी तिम डंडक चोवीसोंइ कहणा,
 ए पन्नवणा रा पांचमां पद मांहे,
 इम सांभल नें उत्तम नरनारी,

कपाय संजादिक बोल अनंत ।
 त्यानेई भावे जीव कह्या भगवंत ॥ ६ ॥
 वले चोवीस डंडक नें छकाय ।
 भावे जीव कह्या जिण राय ॥ ७ ॥
 सेष जीवरी परजाय आत्मा सात ।
 तिणरे निश्चेइ वाय चूको छे मिथ्यात ॥ ८ ॥
 ते अन्हाखी थको करे भूठी भखाल ।
 अनंता अरिहंता पे सिर दीघो आल ॥ ९ ॥
 तिण एक रा दोग कदे नही होय ।
 तिण भाव री संख्या नही छे कोय ॥ १० ॥
 तिणरो जाव दीयो थावचे अणगार ।
 ते हू सासतो तीनोंइ काल मभार ॥ ११ ॥
 प्रदेसठ्याए अपय पिण हूं छूं ।
 ए तोने जाव सूत्र सूं देऊं छूं ॥ १२ ॥
 दरव थकी हूं सोमल एक ।
 भगोती सूतर जेय छोड दो टेका ॥ १३ ॥
 दरव थकी हूं सोमल एक ।
 परंभव साहमों जोय नें छोड दो टेक ॥ १४ ॥
 दरव थकी जीव कह्यो छें एक ।
 भाव थकी जीव नें कहीजे अनेक ॥ १५ ॥
 भाव थकी असासतो केहणो ।
 दूजा उदेसा मांहे जोय लेणो ॥ १६ ॥
 जमाली नें वीर कह्यो छें ताहि ।
 तेतीसमां उदेसा रे माहि ॥ १७ ॥
 प्रदेस थकी पिण तूला जाणो ।
 चउठाणवडीयो लेजो पिछांणो ॥ १८ ॥
 तिणरी धारणा करनें रीत सूं कहीजे ।
 त्याने भावे जीव पिछाण लीजे ॥ १९ ॥
 ववे घटे तिण नें भाव जीव कहीजे ।
 जिण जिण में बोल प्रावे ते लीजे ॥ २० ॥
 तिण ठामें तो छे घणो विस्तारो ।
 दरव भाव सरव लो न्यारो न्यारो ॥ २१ ॥

इत्यादिक सूतर में ठाम ठाम,
भावे जीव असासतो जीव कह्यो छे,
भावे जीव असासतो तिण ने
एहवी उंधी परूपणा करने अग्यानी,
दरबे जीव तो नित सासतो छे,
याने ओलखीयां विण उंधी परूपे,
दरब रा लषणा ने दरब न कहीजे,
दरब ने लखण न्यारा न्यारा कहीजे,
जिण दरब ने भाव ओलषीया नाही,
त्यानें प्रश्न पूछ्यां तो डिगता बोले,
दरब री ठोर तो भाव बतावे,
तिणरी अभितर आंख हिया री फूटी,
दरब ने भाव जीव ओलषीया नाही,
दरब जीव ने एक के अनेक कहीजे,
जो उ दरब जीवने सासतो कहदे,
तिणरो वचन गाढो कर चरचा कीजे,
पछे दरब ने भाव री चरचा करने,
जो समभायो समझे नही मूरख,
सासतो असासतो दोनूं न जाणे,
अजाण थको उंधी ताण करे छे,
दरब ने भाव जीव ओलखावण काजे,
समत अठारे ने वरस सेताले,

दरबे जीव नें सासतो कह्यो वीर ।
दरबने भाव जांण्या छे सरघासधीर ॥ २२ ॥
दरब ने भावे कहे छे दोनूं ।
उसभ कर्म उदे साची सरघाने खोइ ॥ २३-॥
तिणनें पिण कहे दरब ने भाव दोनूंइ ।
ताण कर कर ने यूंही आतम विगोइ ॥ २४ ॥
लषणा रा दरबा ने लखण न कहीजे ।
जीव रे लेखे दोया ने एक गिणीजे ॥ २५ ॥
ते खाय रह्या छे अग्यानी भखोला ।
त्यारी परतीत करनें बूढेकोइ भोला ॥ २६ ॥
भाव री ठोर दरब ने बतावे ।
तिणसूं आमो सांहमो भखोला खावे ॥ २७ ॥
तिणनें समभावण पूछा कीजे ।
वले सासतो के असासतो कहीजे ॥ २८ ॥
वले दरब जीव ने कह दे एक ।
भाव जीव असासतो कहीजे अनेक ॥ २९ ॥
समभतो जाणे तो समभाय लीजे ।
तिणसू विषवाद कदेय न कीजे ॥ ३० ॥
वले दरब ने भावरा नही निवेरा ।
तिण नरकसूं सनमुख दीघा डेरा ॥ ३१ ॥
जोड कीधी मावोपुर सहर मभारो ।
चेत विद वीज ने सोमवारो ॥ ३२ ॥



रत्न : ५

परजायवादी री चौपई

ढल १

दुहा

दसासतखंढ सूयगढलंग में, अकरीया वादी रो विसतार ।
नास्तक मत छे तेहनो, ओं जाणे भर्म ससार ॥ १ ॥
तीथंकर चक्रवरतादिक, वले साधु सती अणगार ।
त्यांने जीव न सरखे सरवथा, ते भूले भर्म गिवार ॥ २ ॥
तिण नास्तक वादी रा मत तणो, परजायवादी पिरवार ।
तिण नास्तक पाडी जीवरी, तिणरा घट मांहे घोरअन्वार ॥ ३ ॥
उ चेतन गुण परजाय नें, नही सरखे जीव अजीव ।
एहवी उंवी करे छे परूपणा, कर २ खांच अतीव ॥ ४ ॥
वले असासता दरव ने इम कहे, जीव अजीव दोनूँइ कहे नांहि ।
जीव अजीव विनां तीजी वस्तु छे, ते तो नही गिणती रे मांहि ॥ ५ ॥
नियमा निश्चे जीव तेहने, जीव गिणे नही ताय ।
तिणरी सरखा परगट करूं, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ६ ॥

ढल

[आ अणुकंपा जिन आग्या में]

तीथंकर गणवर धर्म नां नायक, आचार्य उवभ्राय मोटां अणगारो ।
साधु साधवीयादिक च्यारुई तीथं, याने जीव न सरखे ते मूढ गिवारो ।
आ सरखा छे परजायवादी री* ॥ १ ॥
देव गुर धर्म तीनूँइ रतन अमोलक, त्यांरो सरणो लीयां उतरे भवपारो ।
याने जीव न सरखे ते मूढ मिथ्याती, तिण आंख मीचीने कीयो अंधारो ॥ आ० २ ॥
गुर नही जीव चेलो नही जीव, विनो अविनो करे ते पिण जीव नांही ।
मांहोमां करे सभोग असणादिक नो, तिण मे पिण जीव रो अंस न कांई ॥ ३ ॥
आठोँइ करमां सू मूकावे ते मोख, त्यांने तो कहीजें सिध भगवान ।
त्यांने पिण जीव न सरखे अग्यानी, त्यां विकला मे नही छे जावक विगनान ॥ ४ ॥
सूतर वांचे ते जीव नही छे, धर्म कथा कहे ते पिण नही जीव ।
वखांग सुणे ते पिण जीव नांही, त्यां दीधी मिथ्यात री उंडी नीव ॥ ५ ॥
तिरण तारण जीवने नही सरखे, जीव नें जीव नही उतारे पारो ।
जीव ने जीव डवोवे नांही, वले जीव ने जीव न करे खुवारो ॥ ६ ॥

*यह आकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

चक्रवत् वासुदेव मंडलीक राजा,
 भवी दरवादिक् पांचूंड देवां नें,
 वाप नहीं जीव वेदो नही जीव,
 जीव जनमें नहीं जीव मरें पिण नाहीं,
 परणीजे परणावे ते जीव नही छें,
 अषगादिक नोपजावें ते जीव नही छें,
 अप्रजापतो होय प्रजापतो हुवों,
 नेरइय तिरजंच मिनख ने देवा,
 हालें चालें तिणनें जीव न कहीजे,
 खेती करसणादिक करें ते जीव नही छें,
 एकिद्री आदि दे पंचिद्री नें,
 वले चउदें भेद छें जीवरा त्यानें,
 हिसक भूटावोलो नही जीव,
 वले तीनसों तेसठ पापंडीयां नें,
 भोगी नही जीव जोगी नही जीव,
 मायावीया मिथ्याती ने जीव न जाणें,
 भारत रुद्र धर्म नें सुकल,
 छ भाव लेस्या नें पिण जीव न जाणें,
 वारं डीयोग नें चवदें गुण ठांणा,
 जीव न जाणें चोवीस डंडक ने,
 छव नियंठा नें पांचूंड चारित,
 वले आतमा सात ने सावद्य निरवद,
 इत्यादिक जीव रा भेद अनेक,
 त्यानें जीव अजीव न कहें दोनूंड,
 असासता सगलाइ पाछें कह्या ते,
 याने जीव कहें तो भूठ वोले छें,
 जो चरचा रो काम पड्यां जीव कहें तो,
 असासत दरव ने जीव न सरखें,
 जो असासता दरव नें जीव कहे तो,
 सूनें चित्त हीयाफूट विकल ज्यूं,
 हिवें परजायवादी नें पूछा कीजे,
 कुण उपजावे नें कुण खपावे,

ए मिनख हुवा करणी कर मोटी ।
 जीव न कहें तिणरी सरघा खोटी ॥ ७ ॥
 वले जीव नहीं सगलो पिरवारो ।
 जीव नहीं भोगवें विपें विकारो ॥ ८ ॥
 जानी मांडी आया ते पिण नही जीव ।
 जीमें जीमावें ते नही जीव अजीव ॥ ९ ॥
 पछे बाल जुवान ने होय गयो बूढो ।
 यां नें जीव न सरखें ते जावक मूढो ॥ १० ॥
 वले जीव न करें छें विणज व्यापारो ।
 जीव तो नहीं करें छें भगडा नें राडो ॥ ११ ॥
 वले प्रथवी आदि देइ छकाय ।
 यां सगलां नें जीव कहें नही ताय ॥ १२ ॥
 वले चोर कुसीलीयो नें घनपातर ।
 यां सगलां नें जीव न सरखें कुपातर ॥ १३ ॥
 वेरी नें मित्री ए पिण जीव नांही ।
 इण खोटी सरघा माहें कला न काई ॥ १४ ॥
 यां च्याहं ध्याना ने जीव न जाणें ।
 अग्यानी थका मूंड उंधी ताणें ॥ १५ ॥
 त्यानें पिण जीव न जाणें अग्यानी ।
 तिणनें बुधवंत कोइ न जाणें ग्यानी ॥ १६ ॥
 उठाण कमादिक ए पिण पांच ।
 यानें जीव न मानें करें कूडी खांच ॥ १७ ॥
 त्यानें निश्चेई जीव कह्या जिणराय ।
 तीजी रास कहें छें ताय ॥ १८ ॥
 त्यानें तो जीव कहसी किण लेवें ।
 आपरी सरघा सांहा क्यूं नही देखे ॥ १९ ॥
 असासता दरव री पूछा कीजें ।
 याने जीव कहें तो भूठो घालीजें ॥ २० ॥
 आपरी सरघा रो आप अजाणें ।
 आपरी सरघां री पिण नही पिछाणें ॥ २१ ॥
 संसार माहें दुख किण विघ पावें ।
 करमां रो करता कुण कहावें ।
 ए प्रश्न परजायवादी ने पूछीजे* ॥ २२ ॥

*इस आंकड़ी को प्रत्येक गाथा के अन्त में समझें ।

जो उ करमां रो करता जीव ने थापें, करता अनेक असासता दीसैं, जो उ करम रो करता नैं जीव नही कहे तो, जो सरघा हुवे तो पिण छानें राखें, उणरी सरघा रा अहलाण एहवा दीसैं छे, करमा रो करता तो असासतो छे, घर्म ने करम रो करता जीव छे, जीव अजीव विनां तीजी वस्तु न काई, जीव अजीव विना वस्तु थापे, तिणने कोइ तेरासीयो नही जाणें, करमां रो करता सासतो नांही, एहवा प्रश्न पूछ्या रा जाव न आवे, के तो भूठ जाणी ने बोले छे, ए वात रो निश्चो तो केवली जाणे, श्री वीर कह्यो आचारंग माहें, चेतन गुण परजाय सहीत ओलखसी, हिंसादिक भूठ चोरी जीव करे छे, ते छेदन भेदन जनम मरण रा, परजायवादी री सरघा परगट कीधा, जिण आगम लोप विरुध परुपें, इण खोटी सरघा रो उघाड कीयां सू, केइ विपरीत सरघा आदर ने छोडे, केइ मूठ मिथ्याती इसडी परुपें, जीवरी परजाय ने जीव न सरखें, पीजणी पेडा ने वले नाम नैं ओषण, यां सगला नैं गाडो निश्चेइ कहीजे, जिम गाडा री परजाय ने गाडो कहीजे, जीवरी परजाय ने जीव न सरखे, गाडां री परजाय तो भेली करी छे, पिण जीवरी परजाय न पडें छे दूरी,

तो उणरी सरघा जावक उठ जावे । असासता नैं जीव यूंही बतावें ॥ २३ ॥ घणां लोक न माने तिणरी वातो । एहवा कपटी रो भूठ ने गूढ मिथ्यातो ॥ २४ ॥ करमा रा करता ने गेबी जाणो । गेबी जाणजो इण अहअणो ॥ २५ ॥ तिणने जीव अजीव न कहे दोनूइ । तीजी कहे ते तेरासी होइ ॥ २६ ॥ तिणने नियमाइ निश्चे तेरासीयो जाणो । ते पिण मूढमती छे अयाणो ॥ २७ ॥ तो उ जीव ने करता कहसी किण लेखे । जब भूठ बोलण री सेरी देखे ॥ २८ ॥ के आपरी भाषा रो आप अजाणो । पिण बुधवंत हूसी ते करसी पिछाणो ॥ २९ ॥ करमां रो करता छे निश्चे जीवो । त्यांरे अर्भितर ग्यांन खुलसी घट दीवो । आ सरघा श्री जिणवर भाषी* ॥ ३० ॥ तिण किरतव सू लागे जीवरे पायो । चिहू गति मे दुःख भुगते आपो ॥ ३१ ॥ केइ क्रोध करे केइ मन माहे लाजे । ते सीह तणी परे कदेय न गाजे ॥ ३२ ॥ केइ बुधवंत सुण २ रहसी दूरा । त्यांने पिण वीर वखाण्या सूरा ॥ ३३ ॥ जीव ने जीव री परजाय नही छे एक । ते अग्यानी थको कूडी करें छे टेके ॥ ३४ ॥ इत्यादिक जूआ जूआ नाम अनेक । गाडा री परजाय ने गाडो छें एक ॥ ३५ ॥ तिम जीव री परजाय ने जीव छे एक । तिण खोटी सरघा धारी विनां ववेक ॥ ३६ ॥ ते तो कदेइ काले पड जाएं दूरी । उपजे उपजे ने होय जाए पूरी ॥ ३७ ॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

जे जे परजाय पूरी होय जाए, तिणरी प्रतख बीजी हुवे ताय ।
 जे मिनष मूजो ते देवादिक हुवो, इत्यादिक ओर रो ओर हुय जाय ॥ ३८ ॥
 देस थकी दिष्टत दीयों छे गाडां रो, ते बुधवंत जांग लीजो मन मांय ।
 पिण जीव री परजाय ने जीव एक छें, तिण मांहे संका म आणजों कांय ॥ ३९ ॥

ढलल : २

दुहल

आ परजलडवलदी री सरघल वूरी, घोर रूढ मिथुडलत ।
हलुकुकरमीं किम सरघसी, ए प्रतख भूकू मिथुडलत ॥ १ ॥
चेतन गुण परजलय ते जीव छे, जोवों सूतर मलहीं सभलल ।
चेतन गुण ने जीव सरघे नही, तिनण दीयो अरिहंत सिर अलल ॥ २ ॥
त्यलने सलघ वतलवे जूजुआ, जीव रल गुण जीव सलखुडलत ।
पिनण गुधू सरीखल मलंनव मलंने नही, तुडलरे दिवस तकलइज रलत ॥ ३ ॥
त्यलने धुर सू तोसंत मिलीयों नही, कीघो परजलयवलदी रो परसंग ।
जलंणे निरणें कोठें भूंवीयो, कललो नलग भूयग ॥ ॡ ॥
उणने मिले सतगुर गलरलू, जो उ दूर करे पखपलत ।
सूतर अरथ सुणलय ने, कलढे जेहर मिथुडलत ॥ ५ ॥
जीवुरल गुण लखण परजलय छें, तुडलंने जीव कहुओ जिनणुरलय ।
त्यलने जीव न सरघे सरवथल, ते चोडे भूला जलय ॥ ६ ॥
परजलयवदी री सरघल उपरे, सूतर मे जलब अनेक ।
पिनण थोडल सल परगट करू, ते सुणजो आण ववेक ॥ ७ ॥

ढलल

[पलषंड वधसी अरे पलच मे]

तीथंकर गणघर उत्तम जीव छे रे, उत्तम छे आचलर्य नें उवभलय रे ।
तुडलरल ग्यलंन दरसण चलरित छे निरमलल रे, यलने वलंघल सू पलतिक दूर पलय रे ।
ए अरिहंत वलयक सतकर जलंणजो रे* ॥ १ ॥
वले सलघ सलघवी श्रलवक श्रलवकल रे, सूतर मे भलखुडल छे तीरथ चुडलर रे ।
तुडलने पिनण उत्तम जीव जिनण कहुलल रे, ग्यलंनलदिक गुण रतनल रल भडलर रे ॥ ए० २ ॥
यल सगलल ने जीव न सरघे सरवथल रे, परजलयवलदी पलखडी वलल रे ।
वले एहवी करे छे मूढ परूपणल रे, तिनण दीयो अग्यलंनली मोटों अलल रे ।
ए परजलयवलदी रो मत रूडो नही रे ॥ ३ ॥
ए चुडलरू तीरथ तीथंकर देव मे रे, पलवे गुणठलंणल परजल पुरलण रे ।
जोग उपीयलग लेसुडल तेहमें रे, यलने जीव न गिनणे ते मूढ अयलण रे ॥ ए० ॡ ॥

*अह आँकडी प्रतुडेक गलथल के अन्त में है ।

त्यांरो विनों वीयावच गुण कीरत कीयां रे, वाघें तीथंकर गोत रसाल रे ।
 ते क्हाँ गिनातावेन आठमें रे, लीजो बीसोइ बोल सभाल रे ॥ ५ ॥
 विनों वीयावच करे ते निश्चे जीव छें रे, जीव विनां वीयावच कुण कराय रे ।
 यांनं परजायवादी जीव गिणें नही रे, ए प्रतख चोडें भूलों जाय रे ॥ ६ ॥
 भवी दरबादिक पांचूं देव में रे, यां में करे केइ वेक्रे रूप रसाल रे,
 यांरी गति आगति ने यांरो आंतरो रे, यांनं जीव न सरघे ते मूरख बाल रे ॥ ७ ॥
 ए पेंहली गति मां सूं उपजे आय नें रे, ए मरने उपजें पेंहली गति मांय रे ।
 देवातदेव जाए छे मुगत में रे, यांनं सूतर में जीव क्हा जिणराय रे ॥ ८ ॥
 परभव मे जासी ते निश्चे जीव छें रे, जीव विना गतागति करें केम रे ।
 इतलो न सूमें मोह अघ जीव नें रे, ओ बोलें सुणें चित्त गेह्ला जेम रे ॥ ९ ॥
 भवी दरबादिक पांचूं देव नों रे, विसतार भगोती सूतर माहि रे ।
 नवमें उदेसे सतक बारमें रे, ए निरणों कर लीजों भवीयण ताहि रे ॥ १० ॥
 एकद्री आदि पंचिद्री जीव छे रे, छ काय नें जीव कही जिण राय रे ।
 जीवरा चवदे भेद ते जीव छें रे, त्याने जीव न गिणें अग्यानी ताय रे ॥ ११ ॥
 वले परजायवादी पाखंडी इम कहें रे, परजाय रे नही छें देस परदेस रे ।
 जीवरी परजाय नें जीव माने नही रे, ते करें अग्यानी कूड कलेस रे ॥ १२ ॥
 एकद्री आदि पंचिद्री जीव ने रे, देस परदेस क्हा जिणराय रे ।
 ते देस परदेस चेतन दरब रा रे, जोवों भगोती सूतर मांय रे ॥ १३ ॥
 दसमें उदेसे दूजा सतक में रे, वले दसमां सतक रे पेहलें जाण रे ।
 सोलमें सतक उदेसे आठमें रे, ए निरणों करलीजों चतुर सुजाण रे ॥ १४ ॥
 वले दसमें उदेसे सतक इग्यारमे रे, तिहां पिण तेहीज छे विस्तार रे ।
 जीव अजीव देस परदेस नों रे, रूपी अरूपी नों विस्तार रे ॥ १५ ॥
 नेरइयो तिरजच मिनष ने देवता रे, त्यारे आंठोइ करम क्हाँ भगवत रे ।
 ए जीव होसी तो थारे करम छें रे, त्याने निश्चेइ जीव जाणों मतवत रे ॥ १६ ॥
 चोवीसोई डडक नियमा जीव छें रे, नियमा क्हाँ ते विसवावीस रे ।
 दसमें उदेसे छठा सतक मे रे, भगोती में भाष गया जगदीस रे ॥ १७ ॥
 जीव रा चवदे भेद सिघंत मे रे, ते निश्चेंइ जीव क्हा साख्यात रे ।
 याने मूढ मिथ्याती जीव गिणें नही रे, आ प्रतख भूडी तिणरी वात रे ॥ १८ ॥
 वले दसवीकलिक चोथा अघेयन मे रे, निश्चेइ जीव कही छव काय रे ।
 तिणने अग्यानी जीव न लेखवे रे, ते करे बूडण रों मूढ उपाय रे ॥ १९ ॥
 गिनाता सूतर रा तीजा अघेन मे रे, ठांणा अंग मे तीजा ठांणा माय रे ।
 छ जीव नीकाय माहे संका करे रे, अहेत असुख ने समकत जाय रे ॥ २० ॥

अरिहंत कही छें आठूं आतमा रे, आतमा ते निश्चें जीव साख्यात रे।
 कोइ सात आतमा ने जीव सरखे नही रे, तिणरा घट माहें घोर मिथ्यात रे ॥ २१ ॥
 हिंसादिक अठारें थानक पाप रा रे, त्यां अठारा रो बेरमण ते परिहार रे।
 पाच थावर ने घर्म अवर्म आकासासती रे, वले सलेसी साध मोटां अणगार रे ॥ २२ ॥
 बादर कलेवर ने परमाणुओ रे, वले सरीर रहीत जीव छे ताय रे।
 ए सारा अडतालीस बोलां भणी रे, जीव अजीव दरव कह्या जिणराय रे ॥ २३ ॥
 ए भगोती सूतर रे सतक अठारमे रे, कह्यो चोथा उदेसा माहि रे।
 जीव अजीव री परजाय नें रे, जीव अजीव दरव कह्या छे ताहि रे ॥ २४ ॥
 जीव री परजाय नें जीव एक छे रे, जीवरी परजाय ते निश्चे जीव रे।
 परजायवादी परजाय ने जीव गिणे' नही रे, तिण दीधी खोटी सरखा री नीव रे ॥ २५ ॥
 चोथे उदेसे सतक तेरमे रे, भगोती मे पूछ्यो गोतम साम रे।
 आप कहो सामी किरपा करी जी रे, जीव रे जीव आवे छे काम रे ॥ २६ ॥
 जब वीर कह्यो छे सुण तू गोयमा रे, जीव रे जीव आवें छे काम रे।
 उपीयोग काम आवे छे जीव रे रे, त्या उपीयोगा रा छे वारे नाम रे ॥ २७ ॥
 जीव कह्यो छे वीर उपीयोग ने रे, निसंक पणे' कीयो निस्तार रे।
 जे कोइ जीव नही सरखे' छे उपीयोग ने रे, ते निश्चेंइ पूरो मूढ गिवार रे ॥ २८ ॥
 केवल ग्यान तणो विनो कीया रे, कट जाए' माठा पाप करम रे।
 कोइ जीव न गिणे' छे केवल ग्यान ने रे, ते भूला अग्यांनी जावक भर्म रे ॥ २९ ॥
 अगिनान ने कही छे नियमा आतमा रे, नियमा ते निश्चेइ जीव जाण रे।
 ए दसमें उदेसे सतक वारमें रे, भगोती में जोय करो पिछांण रे ॥ ३० ॥
 गिनांन ने नियमा कही छें आतमा रे, नियमा ते निश्चेंइ जीव जाण रे।
 दसमे उदेसे सतक वारमें रे, भगोती मे जोय करो पिछांण रे ॥ ३१ ॥
 आतमा छें तेहीज निश्चे ग्यान छे रे, ग्यान छे तेहीज आतमा जाण रे।
 ते आचारग पांचमां अवेन मे रे, पाचमे उदेसे जोय पिछाण रे ॥ ३२ ॥
 जे जे दरव में जोग उपीयोग छे रे, वले लेस्या गुणठांणा परजाय प्राण रे।
 ते तो दरव निश्चेंइ जीव छे रे, ए सरखा में सका मूल म आण रे ॥ ३३ ॥

ढाल : ३

दुहा

परजायवादी रा मत तणा, केइ कर रह्या कूडी ताण ।
त्यांनं खुलवा जाब वतावीया, साख सूतर री आण ॥ १ ॥
त्यांरी खोटी सरधा छडायवा, काढण मूल मिथ्यात ।
कितरा एक तो वले कहूं, ते सूनजों विख्यात ॥ २ ॥

ढाल

[पूज जी पधारो हो नगरी सेविया]

संजती असंजती नें संजतासंजती, एहवा बोल घणां छें ताहि हो ।
ए सगला नें जीव जिणसर भाषीया, ते पन्नवणा भगोती माहि हो ।
ए अरिहंत वायक सतकर जाण जो* ॥१॥
संजती असंजती नें संजतासंजती, एहवा बोल घणां छें ताय हो ।
ते सगलाइ भावे जीव असासता, ते भाष्यों छें श्री जिणराय हो ॥ए०२॥
समाइ पचखाण संजम ने संवर, ववेक नें विउसग जाण हो ।
ए सगला नें कही छें जिणसर आतमा, ए भावे जीव पिछाण हो ॥३॥
ए सूतर भगोती रा पेंहला सतक में, नवमां उदेसा मांय हो ।
समाइ आदि छहुं आतमा भणी, भावे जीव कह्यों जिणराय हो ॥४॥
चारित परिणाम कह्या छें जीवरा, ठांगाअंग दसमां ठाणा मांय हो ।
ते जीव रा परिणाम तो निश्चे जीव छें, तिणमे संका म आणों कांय हो ॥५॥
दरब कषाय जोग उपीयोग आतमा, ग्यान दरसण चारित ताय हो ।
वले आठमी कही छे वीर्य आतमा, आठोइ जीव कही जिण राय हो ॥६॥
एक जीव गिणे छें दरब आतमा भणी, ते सासती नित सदीव हो ।
सेष आतमा सात नही छे सासती, त्यांनं जाबक न गिणे जीव हो ॥७॥
आतमा आठोइ जीव जिणवर कही, ते सूतर भगोती मभार हो ।
ए दसमे उदेसे सतक बारमें, आतमा आठां रो विसतार हो ॥८॥
उ भावे जीव न सरखें असासतो, तिण सूतर दीया छें उथाप हो ।
उ सांप्रत जीव नें जीव गिणें नही, यूं ही कूडों करे छे विलाप हो ॥९॥
दरबे सासतो नें भावे असासतो, जीव ने कह्यों जिणराय हो ।
ते सूतर भगोती रे सतक सातमें, दूजा उदेसा मांय हो ॥१०॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

दरबे सासतो जीव नें यूं कह्यो, जीव रो अजीव न थाय हो ।
भावे जीव ने कह्यो छे असासतो, ते तो परजाय पलटे जाय हो ॥११॥
निजगुण फिरें ने परगुण भरपडे, ते परगुण पुदगल जाण हो ।
परगुण मळीयां हुवें निजगुण निरमलो, आ सरघा घट में आंण हो ॥१२॥
असुघ निजगुण फिरीयां सुघ निजगुण हुवें, ते परगुण कर दे दूर हो ।
सुघ निजगुण फिरीयां असुघ निजगुण हुवे, तिणसूं परगुण लागे पूर हो ॥१३॥
जे मेला निजगुण मोहकरम वसे, यां निजगुणा सूं करम बंधाय हो ।
मोह रहीत निजगुण हुवे निरमला, त्यां सूं परगुण दूर पलाय हो ॥१४॥
सात करम उदे सूं निजगुण मेला हुवे, त्यां सूं पाप न लागे ताम हो ।
ते करम भख्यां हुवे निजगुण निरमला, त्यांरा गुण निपन छे नाम हो ॥१५॥
आठ करम उदे हूवां नीपजे, निजगुण उदें भाव अनेक हो ।
आठ करमा नें पय कीषां नीपनां, निजगुण पायक भाव वशेख हो ॥१६॥
च्यार करमां ने षयोपसम कीयां नीपजे, निजगुण षयोपसम भाव हो ।
मोह करम उपसमीयां परगटे, निजगुण उपसम भाव हो ॥१७॥
ए च्याहई भाव परणांमीक जीव छे, ते चेतन गुण परजाय हो ।
ए भाव फिरे पिण दरब फिरे नही, ते पिण सुणजो न्याय हो ॥१८॥
तत्व सुघ सरघ्यां हुवे जीव समकती, उंची सरघ्यां मिथ्याती थाय हो ।
उहीज ग्यांनी रो अगनांनी हुवें, अग्यांनी रो ग्यांनी हुय जाय हो ॥१९॥
नारकी देवता रो मिनप तिरजच हुवे, मिनप तिरजंच देवता थाय हो ।
इत्यादिक जीवरा भाव अनेक छे, ते ओर रो ओर होय जाय हो ॥२०॥
सासतो जीव दरब छे अनादरो, तिणरी परजाय अनती जाण हो ।
ते परजाय हाण विरघ हुवें करम सूं, पिण दरब री नही विरघ हाण हो ॥२१॥
जे भाव फिरे पिण दूर पडें नही, त्या भावां रा नाम अनेक हो ।
इण विघ भावे जीव असासतो, ते सरघो आंण ववेक हो ॥२२॥
ओ जीव रा भाव न सरखें असासता, तिण काढयो छे मत कूर हो ।
यांने जीव न सरघे मूंड मूरख थको, तिणरी सगत करजो दूर हो ॥२३॥
बले गोतम सामी पूछा करी जीव री, सूतर भगोती मांय हो ।
ते तीजा उदेसा छठा सतक में, ते सांभल जो चित्त ल्याय हो ॥२४॥
ए आदि ने अंत रहीत जीव छे, के आदि नही अत सहीत हो ।
कें आदि सहीत नें अंत रहीत छें, कें आदि नें अत सहीत हो ।
ए गोतम सामी पूछ्यो श्री वीर नें ॥२५॥

श्री वीर जिणसर कहें सुण गोयमा, ए च्याहं भांगा छें जीव हो ।
त्यांरा भेद विसतार कहें छू जूज्वा, ए सरघ्यां समकत री नीव हो ॥२६॥

ए आदि रहीत ने अंत रहीत छें, ए अभव सिधीया जीव जाण हो।
 आदि नहीं पिण अंत सहीत छें, ते भव सिधीया जीव पिछाण हो ॥२७॥
 जे करम खपाए ने सिघ गति में गया, त्यांरी आदि छें पिण अंत रहीत हो।
 नारकी तिरजंघ मिनव ने देवता, ए आदि नें अंत सहीत हो ॥२८॥
 ए च्याहंई जीव जिणेसर भाषीया, त्यांनैं जीव न सरघें मूढ हो।
 ते बूडे छें वीर ना वचन उथापनें, कर कर कूढी रुढ हो ॥२९॥



रत्न : ६

टीकम डोसी री चौपई

ढाल : १

दुहा

अरिहंत सिध ने आयरिया, उवझाया सगला साध ।
ए पाचू पदा नें नमण कीयां, पामे परम समाध ॥ १ ॥
नव पदारथ ओलख्यां विनां, निरुचेंइ समकती नाहि ।
केइ ओलख नें उंवा पड्या, ते तो निनवारी पातमाहि ॥ २ ॥
एक एक वचन उथाप ने, निनव हूआं छें कर २ ताण ।
तो अनेक वचन उथापें तके, ते तो निरुचेंइ निनव जाण ॥ ३ ॥
करणी छे निरजररा तणी, तिणनें संवर सरघे कोय ।
ते समकत खोय मिथ्याती हुवो, जीतव जनम विगोय ॥ ४ ॥
प्रबल उदे छे दंसण मोहणी, तिणसूं विगडी दिष्ट अतत ।
विभ्रम पडीयो मिथ्यात रे, तिणरी मती हुइ भय भ्रत ॥ ५ ॥
जिण अनेक वचन उथापीया, उंघा अर्थ करे ने ताय ।
कुण कुण वचन उथापीया, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[साध म जारो इश चल गत सू]

करडी सीखामण कहूं जोड नें, सुण ने मत घरजो घेष जी ।
जो परभव री चिता हुवे घट मे, तो निरणों करो विशेष जी ।
उधी सरघा कोई म राखों* ॥ १ ॥
सुभ जोगां ने सवर सरघे, संवर ने सरघे सुभ जोग जी ।
तिण रे दोनू कानी पड्यो दिवालो, आ सरघा घणी अजोग जी ॥ उ०२ ॥
धुरला पांच गुणठांगा ताइ, नही सरघे सुभ जोग जी ।
इसडी उंधी सरघा छें तिणरे, मोटों मिथ्यात रो रोग जी ॥ ३ ॥
केवल ग्यानी ने कहे अधरमी, त्यारे सरघे सविद्य जोग जी ।
वले सावद्य सूं पुन लागों सरघे, आ पिण वात अजोग जी ॥ ४ ॥
पाप ठाणो इविरत रो षय हूआं, कहे सर्व विरत आवे नांहि जी ।
देस विरत नीपनी सरघे, आ सरघा नही जिणमत मांहि जी ॥ ५ ॥
पांच महावरता नें कहें सुभ जोग, सुभ जोगा ने कहे महावरत जी ।
आपिण प्रतख उंधी सरघा, तिण में मूल नही छे सत जी ॥ ६ ॥

*यह आंकी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

पांच चारित ने कहें सुभ जोग छें, सुभ जोगां नें कहें चारित पांच जी ।
 ते समक्त खोय ने नें हूआ मिथ्याती, कर कर उंधी खांच जी ॥ ७ ॥
 सुभ जोगां ने कहे उपसम भाव, ओ पिण बडो अन्याय जी ।
 तिणरें जोग तणी ओलखणा नांही, चोडे भूला जाय जी ॥ ८ ॥
 असुभ जोग तणा कीघा पचखांग, तिणसू नीपना कहे सुभ जोग जी ।
 आपिण उंधी सरघा तिण री, ते किम सरघे डाहा लोग जी ॥ ९ ॥
 दरब जोग तीनूइ रूपी, तिण सूं लागों कहें पुन जी ।
 पुनरो करता रूपी सरघें, आ सरघा घणी जवूंन जी ॥ १० ॥
 वले सावद्य सूं पुन लागों सरघे, तिण सावद्य नें कहे अधर्म जी ।
 पुनरो करता कहें अधर्म, ते जावक भूलों मर्म जी ॥ ११ ॥
 जीव रा भाव थकी नहीं लागें, पुनरो एक प्रदेस जी ।
 ए प्रतख खोटी सरघा तिणमें, नहीं साच तणों लवलेस जी ॥ १२ ॥
 पुन ग्रहवारो किरतब नहीं कोइ, कहे विण कीघां पुन होय जी ।
 आ सरघा जिणमत सूं न्यारी, तिणने मत धारो कोय जी ॥ १३ ॥
 कहे इरियावही किरिया छे घर्म, तिहां नीपनों कहे सावद्य जी ।
 तिण सावद्य नें अधर्म सरघे, ते कहितां न आवे लाज जी ॥ १४ ॥
 कहे असुभ कर्म रों परिग्रहण, सर्व सावद्य कहे छे तांम जी ।
 तिण सावद्य नें कहें अधर्म, ते यूंही बके बेफांम जी ॥ १५ ॥
 कहे सुभ लेस्या ने सुभ जोगां विण, कहे घर्म ने निरजरा नांही जी ।
 इसडी उधी करें परूपणा, ते नहीं जिण आग्या माहि जी ॥ १६ ॥
 केवलीयां रें सावद्य सरघें, तिण सावद्य ने कहें अधर्म जी ।
 तिणरी थित कहे दोय समां री, तिणरो मूढ न जांपें मरम जी ॥ १७ ॥
 पुन ग्रहवारो किरतब नहीं कोइ, इसडो परूपें कोय जी ।
 ते पिण श्री जिण आग्या बारें, च्यार तीर्थ में नहीं होय जी ॥ १८ ॥
 कहे सुभ जोगां नें आश्रव सरध्या, वीस संवर नों हुवों विछेद जी ।
 एहवी उंधी करें परूपणा, तिण पाड्यो घर्म में भेद जी ॥ १९ ॥
 कहें सुभ लेस्या नें आश्रव सरध्या, तो निरजरा नो थाए विछेद जी ।
 आपिण उधी सरघा तिणरी, ओ घाल्यो घर्म में भेद जी ॥ २० ॥
 महावीर ना सासण मांहे, निनव हूआं सात जी ।
 त्यां तो एकीको वचन उथाप्यो, पडवजीयो मिथ्यात जी ॥ २१ ॥

एक वचन उथाप्यां निनव हुवे, तिण मे संक म राखो कोय जी ।
तो अनेक वचन उथापे ते तो, निश्चें निनव होय जी ॥२२॥
तिण एहवी जंवी सरघा काढे, वले बोलें आल पपाल जी ।
तिण तीन कालरा तीथकरा ने, दीयो अग्यानी आल जी ॥२३॥



ढाल : २

ढुहा

भारी कर्म छें जेहनें, निग सू लीची न छूटें टेक ।
 ज्यूं छेरवें ज्यूं उल्लों पडें, साची बात्र न नांती एक ॥१॥
 मोह कर्म पतणों पडीयां चिता, नही जोगें मूतर रो न्याय ।
 मड छावया मतवाला नी परें, समन पडें नहीं काय ॥२॥
 हिवें मान दडाइ छोड नें, बाणे नमता भाव ।
 तों लीची टेक न रात्रजो, जो समकत री हूवें चाव ॥३॥
 न्यारे खोटी सरवा कही तेहनो, उत्तर मुणों भव जीव ।
 जो मुण मुण नें निरणों करों, तो न्यारे मुण री नीव ॥४॥
 खेटी सन्धा ग एक एक बोचरो, उत्तर कहूं मूतर रे न्याय ।
 जो मुणत जावा री हूवें चावता, तो संमलजो चित्त ल्याय ॥५॥

ढाल

[अ अगुक्का जिग अग नें]

चारित संकर नें मुन जोग मरवें, इण सरवा मूं होसी घणा न्गद ।
 मुम जोग नें संकर जिग कहा न्यारा, त्यारों मुगजों दिवग मुव जाद ।
 मुव सरवा रो निरणों कीजों* ॥१॥
 तेरमें गुणठाणे आत्मा सात, तिहां कपाय आतना ट्य गइ जाय ।
 चवडमें गुणठाणे छ आतना छें, तिहां जोग आतना गइ छें दिल्लाय ॥२॥
 जोग आतमा निटी चवडमें गुणठाणे, चारित आतमा तो निटी नहीं कोय ।
 इग केवें चारित नें मुन जोग, प्रतख जूआ जूआ छें देय ॥३॥
 चारित नें जोग एक सरवें तो, आठ आतमा नी हूवें आतना जात ।
 मुम जोग नें चारित एक सरवें तिग, चोडेइ पडवजीयां मिथ्यात ॥४॥
 वारमें तेरमें चवडमें गुणठाणे, पायक चारित छें जयाथ्यात ।
 ते चारित निरंतर एक वारा छें, ते तो ववें वटें नहीं छें चिन्म्यात ॥५॥
 चारित मोहणी पय हूवें जव, पायक चारित नीपजें जाय ।
 इण चारित संकर रों एक सनाव, मुम जोग ने चारित कदेय न थाय ॥६॥
 चारित मोहणी उमसम हूवें जव, उमसम चारित नीपजें जाय ।
 पयउपसम हूयां पयउमसम चारित, लय हूयां पायक चारित थाय ॥७॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाय के अन्त में है ।

चारित मोहणी पय षयउपसम हूआं,
 मोह घट्या सुभ जोग नीपना सरधें,
 सुभ जोग नीपजण री विघ न जाणें,
 सुभ जोग नें ओलखीया विण आवा,
 सुभ ने असुभ जोग नीपजें तिणरो,
 त्यांरो थोडों सो विसतार कहू छें,
 अंतराय करम षय षयउपसम हूआं,
 ते लबद वीर्य छें उजलों निरमल,
 तिण लबद वीर्य सूं करम न रुकें,
 लबद वीर्य छें पुदगल ने संजोगें,
 लबद वीर्य तणां जीव करें व्यापार,
 तिण व्यापार ने भाव जोग कहीजें,
 सावद्य काम करें ते सावद्य जोग,
 तेतो दरव जोग पुदगल ने संघातें,
 सावद्य जोगां सू पाव लागें छे,
 वले निरवद जोगां सू पुन पिण लागें,
 सुभ जोग छें करणी करम काटण री,
 सुभ जोगां ने संवर सरधे छें भोला,
 मन वचन जोग उतकथा रहे तो,
 चारित तो उतकथों रहे तों,
 सुभ मन वचन जोग चारित हुवे तों,
 जो उ चारित री धित इधकी परुये,
 मन वचन रा दोय दोय तीन काया रा,
 जोग ने संवर कहे तिण ने पूछा कीजें,
 कदेयक तो सत मन जोग वरते,
 एक एक समे दोनू मन नही वरते,
 काया रा तीन जोग साथे नही वरतें,
 चारित सवर तो निरंतर एक,
 जो उ सातोइ जोगां ने सवर सरधे,
 कदे कोइ वरते कदे कोइ वरते छे,
 सवर ने सुभ जोग जूजूआ दीसे,
 अमितर आंख हीया री फूटी,

तिण सूं तो सुभ जोग नीपजे नाही ।
 ते पड गया मोह मिथ्यात रे माही ॥ ८ ॥
 अमुभ जोग तणी पिण विघ नही जाणे ।
 पीपल बाघी मूरख ज्यूं ताणे ॥ ९ ॥
 निरणो वीर सूतर में वतायों ।
 ते सांभलजों भवीयण चित्त ल्यायो ॥ १० ॥
 नीपजे षायक पयउपसम ताय ।
 तिण वीर्य सूं करम न लागें आय ॥ ११ ॥
 वले वीर्य सू करम कटें नही ताय ।
 तिण नें वीर्य आतमा कही जिणराय ॥ १२ ॥
 ते व्यापार छे करण वीर्य जोग ।
 त्यांरो व्यापार छें पुदगल रे संजोग ॥ १३ ॥
 निरवद काम करें ते निरवद जोग ।
 दरव ने भाव जोग रों भेलो संजोग ॥ १४ ॥
 निरवद जोगां सूं निरजरा होय ।
 सुभ जोगां ने सवर सरधो मत कोय ॥ १५ ॥
 सवर सू तो रुके छे करम ।
 तेतो करमा तणें वस भूला छे भर्म ॥ १६ ॥
 अतर मोहरत ताइ जाण ।
 देसजणो कोड पूर्व परमांण ॥ १७ ॥
 चारित पिण अतर मोहरत तांइ ।
 तिणनें आपरा बोल्यारी समझ न काइ ॥ १८ ॥
 ए सात जोग तेरमे गुणठाणे ।
 तू किसान जोग ने सवर जाणें ॥ १९ ॥
 कदेयक वरते जोग व्यवहार मन ।
 इमहीज वरते दोनू जोग वचन ॥ २० ॥
 एक समें वरते काया रो जोग एक ।
 जोग तो जूजूआ वरतें अनेक ॥ २१ ॥
 ते सातोइ जोग नही एक साथ ।
 संवर तो एक धारा रहें छे साख्यात ॥ २२ ॥
 या दोया ने एक कहे किण लेखें ।
 ते सूतर सांझो किण विघ देखें ॥ २३ ॥

केवली समदघात करें तिण कालें,
 पेंहले नें आठमें ओदारीक जोग,
 बीजें छठें वले सातमें समें,
 तीजें चौथें नें पांचमें ए तीन समां में,
 ए कारमण जोग तों नवों नीपनो,
 सुभ जोगां नें चारित गिणें तिण लेखें,
 जो उ कारमण जोग नें चारित सरघें,
 जब उणरे लेखे ते पिण चारित मिटीयों,
 जो उ ओदारीक रा मिश्र नें चारित सरघे,
 जब तिणरें लेखे ते पिण चारित विललांयो,
 वले पांच जोग नीपजें त्यारे,
 ते पिण जोग निरंतर नाहीं,
 चारित निरंतर केवलीयां रे,
 ए प्रतख न्याय उघाडों दीसें,
 तेरमां थी जाजें चवदमें गुणठांगें,
 तठा पछे रुधें छें वचन रो जोग,
 जो उ मन वचन जोग संवर सरघें,
 अजोग संवर पिण नीपनो नाहीं,
 एहवा प्रश्न पूछ्यां रा जाब न आवें,
 भारीकरमो हुवें तो उंघो पड जाजें,
 सुभ जोग ने संवर न्यारा न्यारा छें,
 वले दिन दिन इघिकी तांग करे तों,

काया रा तीन जोग तणों व्यापार ।
 बाकी रा जोग नहीं तिण वार ॥ २४ ॥
 ओदारीक नों मिश्र जोग व्यापार ।
 कारमण जोग वरतें तिण वार ॥ २५ ॥
 आगें जोग हुंता ते गया विललाय ।
 चारित पिण विलें होय गयो ताय ॥ २६ ॥
 ते पिण मिटसी तेरमें गुणठाणें ।
 जब उ किसान जोग नें चारित जाणें ॥ २७ ॥
 ते पिण जोग जासी विललाय ।
 आप री सरघा समभ देखों मन मांय ॥ २८ ॥
 त्यारे पिण चारित सरघ उभों रहें ताय ।
 त्यां जोगां नें चारित कहसी किण न्याय ॥ २९ ॥
 जोग निरंतर नही छें एक ।
 हलूकर्मी होसी ते छोडसी टेक ॥ ३० ॥
 जब पेंहला तो मन जोग रों रुधें व्यापार ।
 जब एक काय जोग रह्यो छें लार ॥ ३१ ॥
 तिणरें लेखें तो दोनूइ संवर घट जाय ।
 एक काया रो जोग बाकी रह्यो ताय ॥ ३२ ॥
 जब हलूकरमी हुवें तो सबलों सूभे ।
 वले उंघी सरघा मांहे इघको अलूमें ॥ ३३ ॥
 यानें एक सरघें ते मूढ मिथ्याती ।
 ते उंघी सरघा रो हुवों पखपाती ॥ ३४ ॥



ढलल : ३

दुहल

सुभ जोग सवर नरुवें नही, सुभ जोग नररवद वुवलर ।
ते करणी छें नररजरा तणी, तरण सू करम न रुके लरगर ॥ १ ॥
समदघलत करे जब केवली, कलर जोग तणो वुवलर ।
तरण सू करम तणी नररजरा हुवे, पुन तरण लगे तरण वलर ॥ २ ॥
तुवलरी नररजरा सू पुदगल भरुखल, तुवलं सूं सरुवं लुक फरसलर ।
जोगलं सूं नररुचे नररजरा हुवे, चोडे देखो सूतर रो नुवलर ॥ ३ ॥
सुभ जोगलं सूं नररजरा हुवे, ते कह्यो सूतर रे मलंर ।
ते थोडल सल परगट कहुं, ते सलंभलजो चरत लुवलर ॥ ॡ ॥

ढलल

[चतुर वररर करी ने देखो]

अकुसल जोग रुधतलं नररजरा हुवे, ते नररजरा रुधे तुवलं ललर जलंणो रे ।
वले नररजरा हुवे कुसल जोग उदीरुखलं, ते प्रवरते छे तुवलं ललर तरुछलंणो रे ।
सुभ जोग छे नररजरा री करणी* ॥ १ ॥
ओं तो तररसलीणीरल तप कह्यो श्री जरणेसर, सूतर उवलई मलंहुओ रे ।
तुवल सुभ जोगल ने कोइ संवर सरधे, ते तो चोडे भूलल जलरओ रे ॥ सु० २ ॥
प्रसस्त जोग पडुवजीरओ सलधु, अणंतघलती करमलं ने खपलरओ रे ।
ए उत्तरलधेन गुणतीसमें अधेने, सलतमो बोल कह्यो जरणलरओ रे ॥ ३ ॥
सलमलरक रो फल सलवधु जोग नररवते, इणरो ए गुण नीपनो तलहुओ रे ।
ए तरण उत्तरलधेन गुणतीसमें धेनें, कह्यो अलठमलं बोल रे मलहुओ रे ॥ ॡ ॥
पलंच परकर नी सभलरुय कीरलं सूं, नररजरा हुइ कटीरल करमो रे ।
सभलरुय करे ते नररवद जोगलं सूं, जब नीपनो नररजरा धरुमो रे ।
सुध सरधल रो नररणो कीजो ॥ ॡ ॥
ए तरण उत्तरलधेन गुणतीसमें धेनें, उगणीस सूं तेवीस तलंइ रे ।
तुवलं सुभ जोगलं ने सवर सरधे, ते भूल गलर भरुम मलंही रे ॥ ६ ॥
जोग तणल पचखलण कीरलं सूं, अजोग संवर हुवो रे ।
ते अजोग संवर चलररत नलही, अजोग संवर चलररत सूं जूवो रे ॥ ७ ॥

*यहु अलंकडी प्रतुयेक गलथल के अन्त मे है ।

अजोग संवर सुभ जोग रुध्यां नीपनों, जब छटो निरवद व्यापारो रे।
 चारित नीपनो सर्व इविरत त्याग्यां, बाकी इविरत न रही लगारो रे ॥ ८ ॥
 अजोग संवर हुवें निरवद जोग त्याग्यां, तिणमें सावद्य रो नही परिहारो रे।
 चारित हुवे सर्व इविरत त्याग्यां, नव कोटी त्याग्यो सावद्य व्यापारो रे ॥ ९ ॥
 तीन करण जोगां सर्व सावद्य त्याग्यो, ते तो तीन गुप्त संवर धर्मो रे।
 पांच सुमति छें निरवद जोग व्यापार, त्यासूं कटें छें आगला करमो रे ॥ १० ॥
 गुप्त संवर तो निरंतर साधु रे, पांच सुमत निरंतर नाही रे।
 पांच सुमत तो निरंतर नहीं छे, ए तो प्रवरते छें जठा तांड रे ॥ ११ ॥
 इर्या सुमत तो चालें जठा तांड, भाषा सुमत बोलें जठा तांड रे।
 एसणा सुमत तो प्रवरतें छे त्यां लग, त्यांनं संवर कहीजें नाही रे ॥ १२ ॥
 आयाण भंड मत निखेवणा सुमत, ते तो लेवें मूकें तठा तांड रे।
 परठणा सुमति परठे जठा तांड, त्यांनं पिण संवर कहीजें नाही रे ॥ १३ ॥
 सुमति छें सुभ जोग निरजरा री करणी, सुभ जोगां नें संवर कहें कोयो रे।
 यानें एक कहें तिणरी उंची सरधा, संवर नें सुभ जोग छे दोयो रे ॥ १४ ॥
 सुभ जोग रुध्या मिटें निरजरा री करणी, पुन ग्रहवारा दुवार रुधाणा रे।
 जब अजोग संवर नीपनों तिण कालें, करण वीर्य जोग मिटांगो रे ॥ १५ ॥
 जीव तणा प्रदेश चलावें, तेहीज जोग व्यापारो रे।
 ते प्रदेश थिर हुआं अजोग संवर छें, सुभ जोग मिट्या तिणवारो रे ॥ १६ ॥
 सुभ जोग व्यापार सूं करम कटें छें, जब जीव रा प्रदेश चाले रे।
 जीव रा प्रदेश चालें तठा तांड, पुन रा प्रदेश भालें रे ॥ १७ ॥
 चारित ना परिणाम थिर प्रदेश, त्यांरो सीतलभूत सभावो रे।
 तिणसूं सुभजोगनें चारित न्यारा न्यारा छें, ओंतीं देखों उघाडो न्यावो रे ॥ १८ ॥
 वीयावच करण रो फल वतायो, बंधे तीथंकर नाम करमों रे।
 ते वीयावच करें सुभ जोगां सूं, त्यासूं हुवां निरजरा धर्मो रे ॥ १९ ॥
 बंदणा करता नीच गोत खपावें, बले वांधें उंच गोते करमों रे।
 बंदणा करें छें सुभ जोगां सूं, तिण सूं हुवां निराजरा धर्मो रे ॥ २० ॥
 सावद्य जोगां सूं सेवे पाप अठारें, ते तो पाप री करणी जाणो रे।
 ते सावद्य करणी करतां पिण निरजरा हुवें छें, त्यांरो न्याय हीया में पिछांगो रे ॥ २१ ॥
 उदीरी उदीरी नें करें क्रोधादिक, जब लागे छें पाप ना पूरो रे।
 उदीरी नें क्रोधादिक उदें आंप्या ते, करम भरें पडें दूरो रे ॥ २२ ॥
 पाप री करणी करतां निरजरा हुवें छें, तिण करणी में जाबक खांमी रे।
 सावद्य जोगां पाप नें निरजरा हुवें छें, ते निरजरा तणों नहीं कांमी रे ॥ २३ ॥

ज्यू सुभ जोग छे निरवद व्यापार,
 तिण करणी करतां पिण पुन लागे छे,
 उदीरी ने करणी निरवद करतां,
 करम उदीर उदीर उदे आंणी ने,
 निरजरा री करणी करतां पुन हुवे छे,
 निरवद जोगा सूं निरजरा ने पुन हुवे छे,
 सुभ जोग सूं निरजरा री करणी,
 सुभ जोगां नें कोइ संवर सरखें,
 कहि कहि ने कितरो एक कहूं,
 सुभ जोगा ने सवर सरखे,
 सुभ जोग ने सुभ लेस्या सेती,
 ते जिण मारग सू न्यारा पडीया,
 भली लेस्या ने उदे भाव में आणी,
 वले भली लेस्या घर्म मे पिण आंणी,
 भली लेस्या थी तो पुन ग्रहे छे,
 निरजरा हुवें तिण सूं घर्म मे आंणी,
 लेस्या अधेन री धुरली गाथा मे,
 वले भली लेस्या ने घर्म मे आणी,
 करमां ने ग्रहे तिण सू कही करम लेस्या,
 उदें भाव ते करम ग्रहवारो हेतू,
 समचे जोगां ने उदे भाव मे आप्या,
 निरवद जोगा सू तो पुन ग्रहें छे,
 सुभ जोगा सू निरजरा हुवे छे,
 वले सुभ जोगा सूं पुन पिण लागे,
 गोहूं नीपावे छे गोहां कें कारणें,
 तो पिण साथे खाखलो नीपजे छे,
 ज्यू करणी करें निरजरा रे काजे,
 पिण पुन नीपजे छे निरजरा करतां,
 भली लेस्या ने भला जोगा सूं,
 लेस्या नें जोगा में कायक फेर छे,
 सुभ लेस्या ने सुभ जोगां सू पुन लागे,
 जो इतरे कहे किण नें समझ न पडे तो,

ते करणी निरजरा री जाणो रे ।
 त्यांरो न्याय हीया मे आंणो रे ॥ २४ ॥
 लागे पुन रा पूरा रे ।
 करम भाटक करे दूरो रे ॥ २५ ॥
 तिण करणी माहे नही खामी रे ।
 ते पुन तणा नही कामी रे ॥ २६ ॥
 तिणरो छे आगम साखी रे ।
 ते भारी करमां जीव अन्हाखी रे ॥ २७ ॥
 सुभ जोग ते संवर नाही रे ।
 ते निनवारी पांत माही रे ॥ २८ ॥
 पुन लागो सरखे नांही रे ।
 ते पिण निनवारी पांत माही रे ॥ २९ ॥
 अनुजोग दुवार सूतर मभारो रे ।
 तिणरों मूढ न जाणे विचारो रे ॥ ३० ॥
 तिण सूं उदे भाव माहे आणी रे ।
 आ श्री जिगवरनी वाणी रे ॥ ३१ ॥
 करम लेस्या छहू जिण भाखी रे ।
 उत्तराघेन चौतीसमो साखी रे ॥ ३२ ॥
 निरजरा हुवे तिण सू लेस्या घर्मो रे ।
 सुभ लेस्या सू लागे पुन करमो रे ॥ ३३ ॥
 तिण में सावद्य निरवद दोनूं जाणो रे ।
 सावद्य सू पाप लागो छे आंणो रे ॥ ३४ ॥
 तिण सूं निरजरा री करणी मे चाल्या रे ।
 तिण सूं आश्रव माहे घाल्या रे ॥ ३५ ॥
 पिण खाखला री नही चावो रे ।
 बुघवंत समझो इण न्यावो रे ॥ ३६ ॥
 पिण पुन तणी नही चावो रे ।
 खाखला ने गोहां रे न्यावो रे ॥ ३७ ॥
 निरजरा ने पुन होयो रे ।
 तिण सू लेस्या ने जोग छे देयो रे ॥ ३८ ॥
 त्यांरो न कीयो घणो विसतारो रे ।
 सूतर सूं करो निसतारो रे ॥ ३९ ॥

ढलल : ॡ

दुहल

पेहलल गुणठलणल थल पलकडलं लुगु, कदु वरतु नहुल सुड डुगु ।
 एहुवु उंधु करुं छु पलरुणल, तलणरुं ललगुं डलथुडलत रुं रुगु ॥ १ ॥
 पेहलल गुणठलंणल थल छुठल लुगु, सलवदु नलरुवद डुगु छुं तलहुल ।
 सलतडलं थल तुरुडलं लुगुं, एक नलरुवद डुगु तुडलं डलहुल ॥ २ ॥
 कुडु डूठ डलथुडलतु डुडलडल, करु रहुडल उंधु तलण ।
 शुरलवक रु सुड डुगु सरखुं नहुलं, तु डुरु डूठ अडलण ॥ ३ ॥
 शुरलवक रु सुड डुगु सरखुं नहुल, तु डुडु डुडु डुं हुसुल खुरुलव ।
 शुरलवक रु सुड डुगु डुगु कहुडल, तु सुणडुं सुतर रु डलव ॥ ॡ ॥

ढलल

[अलरुणंद सडकलत उकरु रु लल]

शुरलवक सलडलडक वुरत उकरु रु लल, सलवदु डुगु रल करु पकखलण हु । डककडन*
 तु डुगुं सडुडलड डुल थुकडल रु लल, वलु डुलुं नलरुवद वलण हु । डककडन
 सुध सरधल रु नलरुणु करु रु लल* ॥ १ ॥
 शुरलवक पलक डडलं नुं वंदणल करु रु लल, तुडलरल वरतु नलरुवद डुगु हु ।
 शुरलवक रु सुड डुगु सरखुं नहुल रु लल, तलणरुं डुलुं डलथुडलत रु रुगु हु ॥ डु सु २ ॥
 आवु डधलरु कहुं सलधलं डणु रु लल, तु ववहलर वकन डुगु सुध हु ।
 तलण वकन नुं कहुं असुड डुगु छुं रु लल, तलणरु डलषुत हुडु छुं वुध हु ॥ ३ ॥
 वलु सलधल नुं शुरलवक दलन दुं रु लल, तलणरु तलनुडु डुगु हुवुं सुध हु ।
 दलन दुवल रल डुगुलं नुं असुध कहुं रु लल, तलणरु वलगड गडु सुध वुध हु ॥ ॡ ॥
 तुलन डनुलरुथ डन कलतवु रु लल, तु सुध डन डुगु नलरुदुष हु ।
 तलण डन नुं कहुं असुड डुगु छुं रु लल, तलणरु सरधल डुगुड डुक हु ॥ ॡ ॥
 धरुन धुडलन धुडलवु शुरलवक तलण सडुं रु लल, डडु सुड डुगुलं रु छु वुडलडलर हु ।
 तलण वुडलडलर नुं कहुं असुड डुगु छुं रु लल, तलणरु खुलुतु सरधल नुं धलकर हु ॥ ६ ॥
 शुरलवक डलवु सलधलं रु डलवनल रु लल, सलध आवुं तु दुडु सुध आहलर हु ।
 डण डलवनल रल डुगुलं नुं असुध कहुं रु लल, तलण डुलतडु दुलरुं वलगलर हु ॥ ॡ ॥
 शुरलवक सुललदलक वलरु वुरत उकरु रु लल, डडु नलरुवद डुगुलं रु वुडलडलर हु ।
 तलण डुगुलं नुं असुध कहुं रु लल, तु तु डुरु डूठ डलवलर हु ॥ ८ ॥

*डहु अंकडु डुरतुडुक गलथल कु अनुत डुं हु ।

श्रावक निरवद किरतव करे रे लाल, ते निरवद जोगां सूं होय हो ।
 तिण जोगा ने सुघ सरघे नही रे लाल, तिण समकत दीची खोय हो ॥ ९ ॥
 मन पुने वचन काय पुने कह्या रे लाल, ए तीनूँइ सुघ जोग जाण हो ।
 यां तीनां ने कहे असुघ जोग छे रे लाल, ते तो जिन मारग नां अजाण हो ॥ १० ॥
 श्रावक तो जिहाइ रह्या रे लाल, मिथ्याती रे पिण सुभ जोग जांण हो ।
 जब परत संसार मिथ्याती करे रे लाल, तिणरा निरवद जोग पिच्छाण हो ॥ ११ ॥
 सुख विपाक सूतर मे दस जणां रे लाल, दान दे कीयो परत ससार हो ।
 त्यांरा तीन करण जोग सुघ था रे लाल, जोवो विपाक सूतर रे मभार हो ॥ १२ ॥
 दांन दीयो भगवानं ने रे लाल, विजे गाथापती आदि च्यार हो ।
 त्यां पिणतीनकरण तीन जोग सूं रे लाल, कीघो परत संसार हो ॥ १३ ॥
 ठांम ठांम सिचांत माहे कह्यो रे लाल, मिथ्याती कीयो परत ससार हो ।
 त्यारे सुभ जोग मूल सरघें नही रे लाल, ते तो भूठ रा बोलणहार हो ॥ १४ ॥
 सूतर भगोती माहे कह्यो रे लाल, इद्र निरवद भाषा बोले जांण हो ।
 निरवद भाषा ते निरवद जोग छे रे लाल, तिणरी करों हीया मे पिच्छाण हो ॥ १५ ॥

ढाल : ५

दुहा

अरिहंत सिध नें आयरीया, उवभाय सगला साध ।
ए मुगत नगर नां दायका, पांचूई पद अराध ॥ १ ॥
पांच भाव जिणेसर भाषीया, उदें उपसम षायक जाण ।
षयोपसम ने परिणामिक छें, त्यांरी बुधवंत करजो पिछाण ॥ २ ॥
आठ करम उदे हूआं नीपजे, जीव तणा उदें भाव ।
त्यांनं भाव जीव जिणवर कह्या, त्यांरो जूओ जूओ छे सभाव ॥ ३ ॥
नारकी तिरजंच मिनष देवता, पृथ्वी आदि देइ छ काय ।
किस्नादिक भाव लेस्या छहू, क्रोधादिक च्यार कषाय ॥ ४ ॥
तीन वेद मिथ्याती नें अविरती, असनी नें अनाण ।
वले अहारथा नें संसारथा, असिध नें अकेवली जाण ॥ ५ ॥
छदमस्थ नें संजोगीपणों, ए बोल कह्या तेतीस ।
ते सारा उदें भाव जीव छें, ते भाष गया जगदीस ॥ ६ ॥
त्यामें मोह उदें सूं नीपनां, ते साराइ सावद्य जाण ।
सेष करम उदें सूं नीपनां, त्यासूं पाप न लागें आण ॥ ७ ॥
नाम करम उदे सूं नीपनां, त्यामें केयक निरवद जाण ।
केइ सावद्य निरवद दोनूं नही, त्यासूं करम न लागें आण ॥ ८ ॥
छ करम उदें हूआं नीपनां, ते सावद्य निरवद नांहि ।
त्यांरा भाव भेद परगट करूं, ते निरणो करो घट माहि ॥ ९ ॥

ढाल

[आ अशुकं पा जिश आगया मे]

च्यार गति छ काय असनी नें अनाणी, संसारथा ते तो संसार रे मांहि ।
असिद्ध अकेवली नें छदमस्थ, ए सोलें बोल सावद्य निरवद नांही ।
उदें भाव जीव अतेकरण ओल्लखजों* ॥ १ ॥
च्यार कषाय नें तीन माठी लेस्या, वले तीनों वेद मिथ्यात नें इविरत ।
ए वारोंइ बोल छें एकंत सावद्य, त्यांसूं एकंत पाप लागें छें निरत ॥ २ ॥
तीन भली लेस्या छें एकत निरवद, त्यांसूं निरजरा होय पुन लागे छें आय ।
आहारीक नें संजोगी छें सावद्य निरवद, त्यांसूं पुन नें पाप दोनूंइ बंधाय ॥ ३ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

अंतराय करम षय षयउपसम हूआं,
ते उजला लेखे' छे' एकत निरवद,
वीर्य चलावें छें' नाम करम संजोगें,
जब करम कटे' तिण निरवद जोगां सूं,
नाम करम संजोगें प्रदेस चलावे,
अधवसाय परिणामादिक सर्व रूडा,
भली लेस्या भला जोग करणी रे लेखे',
पुन रो पिण ग्रहण हुवे' तिण लेखे',
चवदमें गुणठाणे चवदे' जोग सरवे,
ए सरघा छें' विपरीत प्रतख खोटी,

चवदमों गुणठाणो अजोगी कह्यो जिण,
पिण भारी करमा ने सवली न सूमें,
तेरमें गुणठाणे पे'हला मन जोग रूधे,
ए तीनूं जोग रूंधी नें हूआ अजोगी,
जब तो कहे प्रवर्तन जोग रुंधाणा,
ओ तों अणहूंतो गोलो चलायो,
ए निरवतन जोग छें' सुभ जोग संवर,
ते किण ही सूतर माहे' चाल्यो न दीसे',
सुभ जोग ने संवर सरघे मिथ्याती,
ते हीया फूट गघा रा साथी,
जोग तो व्यापार जीव तणो छें,
थिर प्रदेस ने जोग सरवे' छें,
सुभ जोग ने संवर जूआ जूआ छे,
त्यां दोयां ने एक सरघे अग्यानी,
सुभ जोगां सूं पुन करम लागे छें,
सुभ असुभ करम संवर सूं स्के' छें,
सवर सू जीवा रा प्रदेस बंध हुवे' छें,
यां दोयां ने एक सरवे' छें' अग्यानी,

जब वीर्य लवद उपजे' छें' आय।
तिणसूं पुन पाप निरजरा क्यूंहीन थाय ॥ ४ ॥
ते निरवद जोग तणो व्यापार।
पुन रो पिण ग्रहण हुवे' तिणवार ॥ ५ ॥
ते भली लेस्या भला जोग व्यापार।
जब निरजरा पुन हुवे' तिणवार ॥ ६ ॥
षायक षयउपसम भाव छे' ताय।
उदे' भाव मांहे' घाल्या जिणराय ॥ ७ ॥
तीणमें कारमण जोग नें दीयो छे' टालो।
तिणरो मूढ मिथ्याती न कडे' निकाल।
इण खोटी सरघा रो निरणो कीजो ॥ ८ ॥
जो सका हुवे' तो सूतर नें संभालो।
तिणरी अमितर फूटी आया करम जालो ॥ ९ ॥
पछे' वचन रूधे पछे' रूधे काया।
त्यारें पाछा जोग कठी सूं आया ॥ १० ॥
निरवरतन जोग छे' तिण मांही।
ते तो किण ही सूतर मे दीसे' नांही ॥ ११ ॥
ओ पिण अणहूतो चलायो गोलो।
आ पिण मिथ्यात्यां रे' मोटी भोलो ॥ १२ ॥
आतो उठी जठा थी जाबक भूठी।
त्यांरी अमितर आख हीया री फूटी ॥ १३ ॥
जीव रा प्रदेस हाले' चाले' त्यांही।
तिणरें मोटो मिथ्यात रह्यो घट मांही ॥ १३ ॥
त्या दोयां रो जूओ जूओ छे' सभाव।
तिण निश्चे'इ कीघो छे' मोटों अन्याव ॥ १५ ॥
असुभ जोगां सूं लागें पाप करम।
वले सुभ जोग सूं हुवे' निरजरा घर्म ॥ १६ ॥
जोग सूं जीव रा प्रदेस री हुवे' छें' छूट।
ते निश्चे'इ नेमा छें' हीया फूट ॥ १७ ॥

रत्न : ७

निषेपां री चौपई

ढाल : १

दुहा

अरिहृत सिध ने आयरिया, वले उवाभाय नें सब साध ।
 थारा गुण ओलखने वंदना करे, ते पामें परम समाध ॥ १ ॥
 केइ हिसाधर्मी जीवडा, मानें निगुणा देव गुर धर्म ।
 मारे छकाय रा जीव नें, वांचे उसम करम ॥ २ ॥
 नाम थापना दरब भाव ने, ए माने नषेपा च्यार ।
 त्यांरी पिण समज पडे नही, घट मे घोर अंधार ॥ ३ ॥
 ए च्यार नषेपा रो नाम ले, मोलां ते दे भरमाय ।
 त्यांरी सरघा रा प्रश्न पूछीयां थकां, तो भूठ बोले फिर जाय ॥ ४ ॥
 ते भूठ बोले छे किण विधें, किण विध फिर फिर जाय ।
 हिवे नाम नषेपा रो निरणो कहूं, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[धीज करे सीता सती ३]

ढेड डूब थोरी नें सरगरा रे, भील मेंगा ने मूसलमान रे ।
 चंडाल धुरा धुर सर्व जात मे रे लाल, के कांरो छें नाम भगवान रे ।
 नाम नषेपा रो निरणो सुणो रे लाल* ॥ १ ॥
 जे गुण विण नाम मानें तेहने रे, सगला नाम भगवान वंदणीक रे ।
 तिणने पूछणो सगली न्यात ने रे लाल, करणी नाम भगवान री ठीक रे ॥ ना० २ ॥
 पछे गुण विण नाम भगवान ने रे, जो उन वादें सगला रा पाय रे ।
 उण सरघा थापी ते उथप गइ रे लाल, पिण गहला ने खबर न काय रे ॥ ३ ॥
 केइ जोगी सिन्यास्यां रा नाम छे रे, सिधगिरी नें सिधनाथ रे ।
 जे गुण विणा नाम माने तके रे लाल, सिधां ने क्यूं न वादे जोडी हाथ रे ॥ ४ ॥
 केइ करे मिनषां रो कारटा रे, ते पिण वाजें आचार्य लोकां मांय रे ।
 जे गुण विण नाम माने तके रे लाल, क्यूं न वादे तिण आचार्य रा पाय रे ॥ ५ ॥
 केइक ब्राह्मण लोक मे रे, त्यांरी जात वाजें उपाध्याय रे ।
 जे गुण विणा नाम माने तके रे लाल, क्यूं न वादें उण उपाध्याय रा पाय रे ॥ ६ ॥
 केइ साध वाजें भगत हुंढीया रे, ते निगुण छे रहीत समाध रे ।
 जे गुण विण नाम माने तके रे लाल, ते क्यूं न वादे एहवां साध रे ॥ ७ ॥
 ए नाम नषेपा पांचूं गुण विणा रे, त्यांरा पूछे पूछे नें नाम रे ।
 जे गुण विणा नाम माने तेहने रे लाल, वादे पूजे करणा गुण ग्राम रे ॥ ८ ॥

*यह आंकड़ीं प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ए नाम नषेपा पांचूं गुण विणा रे, जो उ नमें तो सरखा में फूट रे।
 भाव भगत करी बांदें नहीं रे लाल, तो नाम नषेपो गयो उठ रे ॥ ९ ॥
 नाम नषेपो मानें गुण विणा रे, पिण कांम पड्यां दे उथाप रे।
 ते पग २ भूठ बोलें घणां रे लाल, ते कर रह्या कूडा विलाप रे ॥ १० ॥
 नाम बांदण रो कह्यां थकां रे, तब ते बोलें एम रे।
 कहें नाम छे तो पिण गुण नहीं रे लाल, तिणनें सीस नमावां केम रे ॥ ११ ॥
 जे नाम नकेवल मानता रे, ते गुण रो सरणो लें किण न्याय रे।
 यांरी खोटी सरखा अटकें घणीं रे लाल, जब साच बोली आया ठाय रे ॥ १२ ॥
 ते कहवा नें ठांम आवीयों रे, पिण माहें न भीजे मूढ रे।
 त्यारें लागा डंक कु गुरां तणा रे लाल, ते किण विघ छोडें रुढ रे ॥ १३ ॥
 ए नाम नषेपो करें रह्यां रे, तिण री पिण समझ न कांय रे।
 भरमाया कुगुरां तणा रे लाल, ते चोडें भूला जाय रे ॥ १४ ॥
 सोनों रूपो दीयों नाम मिनष रो रे, ते कहवा नें छें नाम रे।
 जो कांम पडे गेहणा तणो रे लाल, तो नावें गेहणा रे कांम रे ॥ १५ ॥
 किण ही मिनष रो नाम हीरो पनों दीयों रे, ते पिण कहवा नें छें नाम रे।
 जो कांम पडे जडाव रो रे लाल, तो नावें जडाव रे कांम रे ॥ १६ ॥
 किण ही मिनष रो मांणक मोती नाम छें रे, ते पिण कहवा नें छें नाम रे।
 जो पेंहरें सिणगार करवा भणी रे लाल, तो नावें पेंहरण रे कांम रे ॥ १७ ॥
 केसर किस्तुरा नाम दीयों मिनष रो रे, ते पिण कहवा नें छें नाम रे।
 जो कांम पडे वलेपण गंध रो रे, तो नावें वलेपण गंध कांम रे ॥ १८ ॥
 किण ही मिनष रो नाम लाडू दीयों रे, ते पिण कहवा नें छें नाम रे।
 पिण भूख लागें तिण अवसरें रे लाल, तो नावें खावण रे कांम रे ॥ १९ ॥
 किण ही लकडी रो नाम घोडो दीयों रे, ते पिण कहवा नें छे नाम रे।
 जो कांम पडें चालण तणो रे, तो नावें चढण रें कांम रे ॥ २० ॥
 इत्यादिक जीव अजीव रा रे, दीघां नाम अनेक रे।
 पिण गरज सरें नही ते नाम सूं रे लाल, समझी आण ववेक रे ॥ २१ ॥
 ज्युं गुण विण नाम भगवानं छें रे, ते पिण कहवा नें छें नाम रे।
 पिण धर्म नहीं तिण बांदीया रे लाल, ते तिरण तारण नहीं तांम रे ॥ २२ ॥
 नाम भगवानं सर्व जीव रो रे, दीयों अनंती वार रे।
 पिण गुण विण नाम भगवानं सूं रे लाल, न सरी गरज लिगार रे ॥ २३ ॥
 गुण विण नाम भगवानं सूं रे, न टलें आतम दोख रे।
 जे त्यानें बांधां सुद गति हुवें रे लाल, तो सगलाइ जीव जाता मोख रे ॥ २४ ॥

गुण विण नांम वांछां थकां रे, गरज सरें नही काय रे।
 गरज सरें एक भाव सूं रे लाल, जोवो सूतर रे मांय रे ॥ २५ ॥
 गुण विण नांम माने तेहनें रे, बोली रो न दीसे बंध रे।
 फिरती भाषा बोलें घणां रे लाल, ते होय रह्या मोह अंध रे ॥ २६ ॥
 गुण करने अरिहत छें रे, गुण करनैं सिध साध रे।
 त्यांरा गुण ने नांम एक हीज छे रे लाल, त्यांनैं वांछा हुवे परम समाध रे ॥ २७ ॥
 किणरी मातां रो नांम सरूपां छें रे, तेहीज नांम अखी रो होय जांय रे।
 जे गुण विण नाम माने तेहने रे लाल, दीयां नैं गिण लेंगी माय रे ॥ २८ ॥
 के दोया ने गिण लेणी अस्त्री रे, उणरी सरघा सांहो जोय रे।
 जो उ अखी ने मां जुदी गिणे रे लाल, तिण नांम नषेपो दीयो खोय रे ॥ २९ ॥
 किणरा बाप रो नांम धनरूप छे रे, त्यारे मांहोमां हेत मिलाप रे।
 जे गुण विणा नांम माने तेहने रे लाल, सगला छे घनरूप बाप रे ॥ ३० ॥
 सगला घनरूप नांम तेहने रे, संकतो नही लेखवे बाप रे।
 ओर घनरूप सूं दुजागी करे रे लाल, तिण दीयो नांम नषेपो उथाप रे ॥ ३१ ॥
 बेन बेनोइ काका वावादिके रे, यारे नांम छें नांम अनेक रे।
 त्याने नांम परमाणे न लेखवे रे लाल, तो छोड देणी कूडी टेक रे ॥ ३२ ॥
 गुण ओर ने नांम ओर छे रे, ते कह वतलावण कांम रे।
 कोई भोलेइ मत्त भूलजो रे लाल, सुण सुण एहवो नांम रे ॥ ३३ ॥
 केयक नांम कहिवा ने दीया रे, केइ गुण निपन छें नांम रे।
 कहिवा रा नांम कहिवा भणी रे लाल, पिण गुण निपन आवे कांम रे ॥ ३४ ॥
 इम कहि कहि ने कितोक कहूं रे, नांम नषेपो रो विसतार रे।
 जे गुण विण नांम वादे नहीं रे लाल, तिण सफल कीयो अवतार रे ॥ ३५ ॥



ढाल : २

ढुहा

गुण विण नांढ दीयो लोढ में, ते प्रतख लेजो देख ।
बले थोडा सा परगट कळं, ते सुण सुण म करो घेख ॥ १ ॥

ढाल

[देशी - चौपई नी]

नाम दीयो सुरो रणधीर, भागो जाअें दीठें तीर ।
नांढ दीयो छे रावाकिसन, सेवतो जाअे सातो विसन ॥ १ ॥
नाम दीयो छे गोबिदराय, फिर फिर चरावें पराइ गाय ।
बाई रो नाम दीयो छे लाछ, मांगी न मिले कुलडी छाछ ॥ २ ॥
सासु कहे म्हारी कपूरदे बहू, भाभल नांढ बोलावे सहू ।
नाम दीयो कस्तूरी जास, माहें न मिलें हीग री वास ॥ ३ ॥
टेढ घणी ने बाको न्हाल, दुरभख - पडीयो देस दुकाल ।
नांढ दीयो थो जातपाल, पिण सगलां पेंहली बेच्या बाल ॥ ४ ॥
किण ही एकरो नाम सोनो दीयो, साथ विणा एकलो चालीयो ।
घणो दलद वहेज लार, नांढ ने कदेय न उठें घाड ॥ ५ ॥
वाइ रो नांढ दीयो छें खुसाल, पिण मिट्यो नही सोक रो साल ।
कुड कुड ने दिन पूरा करें, कूअें बावडी पड ने मरें ॥ ६ ॥
नांढ दीयो छे घर्मोसाह, परभव नी नही छें परवाह ।
कूड कपट लंपट चित घरे, इसडो घरमो नरकां पडें ॥ ७ ॥
लोढ कहे आ लिच्छमी बाय, उगें सूर छांणा नें जाय ।
किण ही एक रो नांढ सरूपां दीयो, एक काली नें कुजस लीयो ॥ ८ ॥
सुंदर नांढ दीयो छें अनूप, खोटी बोले बले कुरूप ।
कुत्ता चाटें छे हाडीयां, सेडे करनें घर भाडीयां ॥ ९ ॥
ज्यूं नांढ दीयो अरिहंत भगवानं, पिण माहें न दीसें अकल गिनांढ ।
तिरण तारण री समझ न काय, तिणनें मूरख वादें जाय ॥ १० ॥
इण अनुसारे दीघां नांढ अनेक, त्यासूं गरज सरें नही एक ।
ते सुणनें समझे चतुर सुजाण, पिण मूरख माडे तांणा ताण ॥ ११ ॥

ढाल : ३

ढुहा

ए नांढ नषेपो ओलखावीयो, हिवे थापना रो इधकार ।
 गुण विण देखी थापना, भूला भर्म संसार ॥ १ ॥
 वादे पूजें तीथंकर री थापना, त्यांरें आकारे पथर कोराय ।
 सोनें पीतल घात अनेक सूं, त्यारे आकारें विब भराय ॥ २ ॥
 बले कागद कपडादिक उपरें, भगवंत रो मांडे आकार ।
 तिणनें सीस नमाय बंदणा करें, जांणे हुवो लाभ अपार ॥ ३ ॥
 कहे जिण प्रतिमा जिण सारखी, फेर म जांणों कोय ।
 दोनां ने वांघां थकां, लाभ सरीखो होय ॥ ५ ॥
 बले गुण लारें पूजा कही, निगुण पूजता जाय ।
 अं चोडें भूला मानवी, त्यांनें किम आंणीजे ठाय ॥ ५ ॥
 कदे तो कहे वांदां गुणा भणी, कदे कहे वांदा आकार ।
 त्यारी सरघा में फूट फजीती घणी, ते कहतां न आवे पार ॥ ६ ॥
 अे गुण विणा आकार नें वांदता, त्यांनें प्रश्न पूछें जाय ।
 तो फिर जाअें भूळ बोलें घणो, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ७ ॥

ढाल

[आ अशुकम्पा जिण आगन्या मे]

चक्रवत वासुदेव ने बलदेवा, ते तो छे तीन खंड तणा सिरदार ।
 इत्यादिक केइ मिनष नें सर्व जूगलीया, ते सगलाइ छे भगवंत रे आकार ।
 थापना निषेपा रो निरणो सुणजो* ॥ १ ॥
 भवनपती ने व्यंतर देवा, जोतकी देव ने विमांणीक वखांण ।
 ते पिण छें आरिहंत रे आकारे, समचोरस छे सगला रो संठाण ॥ था० २ ॥
 जे गुण विणा आकार भगवान रो वांदे, तिणरे लेखे वांदणा कुण २ आकारो ।
 समचोरस संठाण रा मिनष ने देवा, त्यानें हरष घरे वादणा वाहूं वारो ॥ ३ ॥
 जो उ हरष घरे याने वांदे नहीं तो, उणरी सरघा उणरें लेखेंइ खोटी ।
 आप थापी ते आप उथापें, आ पिण आवां रे भोल्प मोटी ॥ ५ ॥
 पथर घातु चितरामादिक ना, कर कर वांदें भगवंत रो आकारो ।
 तो लाद गोबर धूर कोयलादिक ना, आकार करे वांदणा वाहं वारो ॥ ५ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

जो गोबरादिक नां आकार न बांदें,
 पथर घातु चितरांमादिक नां,
 केई थापना सच्चित नें अचित दरब नी,
 तिण आगें आय पांचूं अंग नमें नें,
 तिणरी सेवा पूजा करे भाव भगत सू,
 पिण तेतो एकंद्री जीव अग्यानी,
 आचार्य उवभाय साव गुणवंता,
 जे गुण विणा आकार बांदें ते,
 जे जे आकार मिनष तणा छें,
 जे गुण विणा आकार बांदें ते,
 जो उ सर्व मिनषां नें नहीं बांदें तो,
 अं अकल विहुणा सरघा परूपें,
 जो आकार बांदण रो कहे कोइ उण नें,
 ए आकार छे तो पिण गुण नही माहे,
 जे थापना आकार मानें निकेवल,
 यांरी सरघा अटक्यां जाब न आवें,
 ते कहुवा नें ठाय आया जाणों,
 त्यांरे कुगुरां रा डंक करडा लागा,
 ए थापना थापना कर रह्या मूरख,
 कुगुरां रां भरमाया अग्यानी,
 जो उ हाथी मच्छल्यां भांत कपडो वेचे जब,
 जो उ गुण विण आकार बांदें तिण लेखें,
 कहें हाथी मच्छल्यां भांत कपडो फाड्यां सू,
 तो भगवंत रे आकारें प्रतिमा बांदां,
 किणरा सगा सबंधी व्याही न्यातीला,
 भगवंत रे आकारे प्रतिमा पूजें,
 कहें रेत रा लाडू में सवाद नहीं छे,
 गुण विण वसतु ते अर्थ न आवें,
 पथर कोराय नें प्रतिमा वणावें,
 तिण नें तिणहीज पथर रा रूपीया देवें ते,
 घृत तेलादिक नों सोदो देइ नें,
 तो भाठा तणा भगवंत वणाए,

तो आपरी सरघा रो आप अजाणों ।
 आकार देखी मूढ भर्म मुलांणो ॥ ६ ॥
 भगवंत रें आकार वणावें चैरो ।
 नमोथूणं गुणें मूढ होय होय नेरो ॥ ७ ॥
 एहीज म्हांरी आवागमण निवारें ।
 ए तिरें नही ते किण विघ तारें ॥ ८ ॥
 त्यांरे आकारें ढूंढीयादिक भेषघारी ।
 तो ओ क्यूं न बांदें यांरो देख आकारी ॥ ९ ॥
 तेहीज आकार साधां रा जाण ।
 सर्व मिनषां नें क्यूं नही बांदें अयाण ॥ १० ॥
 तिण थापना आकार दीयों उठाय ।
 ते पग पग भूठ बोलें फिर जाय ॥ ११ ॥
 जब तो सूघो बोलें मुख सू एम ।
 तिणनें म्हे सीस नमावां केम ॥ १२ ॥
 ते गुण रो सरणो लें छें किण न्याय ।
 जब साच बोली नें आयो छें ठाय ॥ १३ ॥
 पिण मन में न भीजें अग्यानी मूढो ।
 ते किण विघ छोडें खोटी रूढो ॥ १४ ॥
 तिण थापना री पिण समझ न कायो ।
 ते चोडे मारग भूला जायो ॥ १५ ॥
 त्यांरा फाडी फाडी करें दाय दाय टूका ।
 तो हाथी मच्छल्यां मारण कांय टूका ॥ १६ ॥
 हाथी मच्छल्यां मारवां रा न लागे पाप करमों ।
 तिणनेंइ निरुचें म जाणों धर्मों ॥ १७ ॥
 तिण नें रेत रा लाडू वणाय नें मेळें ।
 ते रेत रा लाडू पाछा कांय ठेलें ॥ १८ ॥
 तो प्रतिमा में गुण मूल म जाणो ।
 समझो रे समझो थे मूढ अयाणो ॥ १९ ॥
 तिण प्रतिमा नें भगवंत ज्यूं सेवें ।
 ओ चोखा रूपीया में क्यूं नहीं लेवें ॥ २० ॥
 पथर रा रूपीया लेइ पलें न बांघें ।
 उ भगवंत ज्यूं किण लेखें बांदें ॥ २१ ॥

भाठा रा रूपीयां लेइ वसतु देवे,
ज्यूं भाठा रा प्रभू वादे तिणरो मत,
रूपा तणा रूपीयां रे ठिकाणें,
ते तिरण तारण भगवत री ठोरे,
भाठा रा रूपीया लेइ घाले खजानें,
ज्यूं भाठा रा भगवंत थापी वादें ते,
कोइ परख विणा खावें रूपीया में खोटो,
ए भगवंत में खोटा खावा किण लेखे,
कोइ कागद उपर कटक अलकें,
त्यामें सूरपणा रो अंस न दीसे,
ज्यूं चोवीस आदि अनेक तीथंकर,
त्यामें ग्यांनादिक गुण अंस न पावें,
जो उ राखें भरोसो कागद रा कटक रो,
ज्यूं प्रतिमा नें वादें तिरण रे भरोसें,
पोल रे दोनूं कवले हाथी वणाया,
ज्यूं प्रतिमा कराय देवल में बेसारी,
उण री अस्त्री मूआं जो फेर परणीजे,
गुण विण आकार वादें तिण लेखे,
भरतार मूआं जो अस्त्री रोवे तो,
गुण विण आकार वादें तिण लेखे,
अस्त्री री गरज ढूली नही सारे,
इण दृष्टते गुण विण आकार वादें,
वले बालपणे रमें डावडा डावडी,
ज्यू भगवंत री प्रतिमा कर वादें,
पापड रा लोया ने गघा रा लीडा,
ज्यू प्रतिमा छे भगवत रे आकारें,
गघा रा लीडा रा पापड न थाये,
ज्यूं प्रतिमा ने वांछां धर्म किहां थी,
इण लोक में मोह अंध मिनप घणा छे,
तिणरो वच्छडो हूतो ते चल गयो चेतन,
वच्छडा री खाल देखी गाय भूली,
आ प्रतिमा नही भगवंत री काया,
२८

तो नीवी मे पड जायें जाबक टोटो ।
खोटो रे खोटो निकेवल खोटो ॥ २२ ॥
पथर रा रूपीया कदे नही हालें ।
भाठा रा भगवंत किण विघ चालें ॥ २३ ॥
त्यारो काम पडे जब घणो सीदावे ।
परभव माहे घणों पिछ्छतावें ॥ २४ ॥
ते तो रूपा रा भोल तणो परतापो ।
आ तो प्रतख दीसे पथर री थापो ॥ २५ ॥
माहे भल घोरीया असवार वणावें ।
वेरी दुसमण हटावण रें अर्थ न आवे ॥ २६ ॥
त्यांरा जथातथ आकार वणावें ।
ते तरण तारण रें काज न आवे ॥ २७ ॥
तो इजत जाय रहें नही आबो ।
ते चिहुं गति में होसी घणां खुराबो ॥ २८ ॥
ते चढवा रें काम कदे नही आया ।
आ पिण जाणजो थोथी माया ॥ २९ ॥
तो उ पिण उणरी सरघां गयो भूली ।
अस्त्री रे आकारे कर लेंगी ढूली ॥ ३० ॥
उवा पिण सरधा गइ छे भूलो ।
भरतार रें आकारे कर लेंगो ढूलो ॥ ३१ ॥
भरतार री गरज सारे नही ढूलो ।
त्यारी पिण जाणजो ओहीज सुलो ॥ ३२ ॥
ते विकल पणे करे ढूली नें ढूला ।
ते भूला रें भूला निकेवल भूला ॥ ३३ ॥
या दोया रो दीसे एक आकारो ।
अं गुण विण अर्थ न आवे लिंगारो ॥ ३४ ॥
कोरा खावां पिण विगडे मूढो ।
छोडो रे छोडो थे खोटी रुढो ॥ ३५ ॥
जेहवी सूआडी मोह अंध गाय ।
तिणरी खाल चाटी २ पावस जाय ॥ ३६ ॥
तो अ प्रतिमा देख भूला किण लेखे ।
ते तो मोह अंध गाय सूं भूला वसोषे ॥ ३७ ॥

अरिहंत भगवंत मुगत गया जब, त्यांरो सरिर आकार लारे' रही काय ।
 ते तो गुण विण जड अचेतन पुदगल, तिण ने' कोइ वादे' तो धर्म न थाय ॥ ३८ ॥
 त्यांरो असल आकार सरिर पड्यो ते, तिणने'इ वांछां बंधे' निश्चे' कर्मों ।
 तो ओर आकार वणाय ने' वादे', त्यां आंघां ने' किण विघ होसी धर्मों ॥ ३९ ॥
 गुण विण आकार वांदण वालो बोले', आकार वांछा कहे' लाभ अनंत ।
 तिण सूं भगवंत री प्रतिमा कर वांदा, तिण प्रतिमा ने' लेखव ल्यां भगवंत ॥ ४० ॥
 परिणाम चलें कहे' अस्त्री दीठां, मा बेंन दीठां रहे सुघ परिणाम ।
 ज्युं प्रतिमा दीठां भगवंत याद आवें, एहवा कुहेत लगावें ताम ॥ ४१ ॥
 उण रें मा बेंन अस्त्री हुवें एक आकारें, कहे' एक दीठां याद आवें तीनुंइ ।
 पिण एक तीनुंइ ज्युं काम न आवें, याद आइ पिण गरज सरी नहीं कोइ ॥ ४२ ॥
 कदे प्रतिमा दीठां भगवंत याद आवें, कदे भगवंत दीठां प्रतिमा याद आवें ।
 पिण धर्म तो भगवंत रा गुण वांछां, प्रतिमा रा गुण वांछां करम बंध जावें ॥ ४३ ॥
 मा बेंन आकारें अस्त्री तिण सूं, घर वासो करतो संक न आणें ।
 जो उ गुण विण आकार वांदें तिण लेखें, तो अस्त्री ने' मा बेंन क्युं नहीं जाणे ॥ ४४ ॥
 मा बेंन आकारें अस्त्री तिण ने' दीठां, हरषे ते विषे' रे काम ।
 ज्युं प्रतिमा देखी मन हरष धरे तो, छ काय मारण रा उठे परिणाम ॥ ४५ ॥
 मा बेंन रे आकारे अस्त्री हुवें ते, मा बेंन री गरज निश्चे'इ न सारें ।
 ज्युं भगवंत रे आकारें प्रतिमा कीधीं ते, आ पिण जाणजो कदेइ न तारें ॥ ४६ ॥
 भगवंत रे आकारें प्रतिमा वांदें, तिण आगें करे' वले अनेक विलापो ।
 तो उणरा बाप रें आकारे मिनष घणा छें, त्यां सगला ने' लेखव लेंणा बापो ॥ ४७ ॥
 जो सगला ने' बाप लेखवतो लाजे', ओ मत उण रे लेखेंइ कूडो ।
 जो गुण विण आकार माने' अग्यांनी, ते कर रह्यां मूरख फेन फित्तुरो ॥ ४८ ॥
 उण री मा रे उणीयारे वीदणी हूंती, तिणने घन खरचे परणीजे ल्यायो ।
 गुण विण आकार वादे' तिण लेखें, दोयां ने' लेखव लेंणी मायो ॥ ४९ ॥
 के' दोयां ने' अस्त्री लेखव लेंणी, आपणी सरघा रो देखी न्यायो ।
 वले मा रें उणीयारे' अनेक लूगायां, त्यां सगल्यां ने' लेखव लेंणी मायो ॥ ५० ॥
 वले बेंन बेनोइ काका बाबादिक, यारे' आकारे' छे' मिनष अनेक ।
 त्याने' आकार परमाणे नहीं लेखवे' तो, छोड देणी कूडी जावक टेक ॥ ५१ ॥
 कोइ बाइ छे' हिंसा धर्मी अनार्य, तिण पुतर जायो ते पिता रे आकारो ।
 आकार वांदें तिण बाइ रे लेखें, दोयां ने' निण लेंणा भरतारो ॥ ५२ ॥
 के' दोयां ने' बेटा लेखव लेंणा, तो उणरी सरघा में उवा परवीण दूरी ।
 जो भरतार ने' बेटा जुदा गिणे तो, उण री सरघा लेखें आ पडसी कूडी ॥ ५३ ॥

त्यांरो सरिर आकार लारे' रही काय ।
 तिण ने' कोइ वादे' तो धर्म न थाय ॥ ३८ ॥
 तिणने'इ वांछां बंधे' निश्चे' कर्मों ।
 त्यां आंघां ने' किण विघ होसी धर्मों ॥ ३९ ॥
 आकार वांछा कहे' लाभ अनंत ।
 तिण प्रतिमा ने' लेखव ल्यां भगवंत ॥ ४० ॥
 मा बेंन दीठां रहे सुघ परिणाम ।
 एहवा कुहेत लगावें ताम ॥ ४१ ॥
 कहे' एक दीठां याद आवें तीनुंइ ।
 याद आइ पिण गरज सरी नहीं कोइ ॥ ४२ ॥
 कदे भगवंत दीठां प्रतिमा याद आवें ।
 प्रतिमा रा गुण वांछां करम बंध जावें ॥ ४३ ॥
 घर वासो करतो संक न आणें ।
 तो अस्त्री ने' मा बेंन क्युं नहीं जाणे ॥ ४४ ॥
 हरषे ते विषे' रे काम ।
 छ काय मारण रा उठे परिणाम ॥ ४५ ॥
 मा बेंन री गरज निश्चे'इ न सारें ।
 आ पिण जाणजो कदेइ न तारें ॥ ४६ ॥
 तिण आगें करे' वले अनेक विलापो ।
 त्यां सगला ने' लेखव लेंणा बापो ॥ ४७ ॥
 ओ मत उण रे लेखेंइ कूडो ।
 ते कर रह्यां मूरख फेन फित्तुरो ॥ ४८ ॥
 तिणने घन खरचे परणीजे ल्यायो ।
 दोयां ने' लेखव लेंणी मायो ॥ ४९ ॥
 आपणी सरघा रो देखी न्यायो ।
 त्यां सगल्यां ने' लेखव लेंणी मायो ॥ ५० ॥
 यारे' आकारे' छे' मिनष अनेक ।
 छोड देणी कूडी जावक टेक ॥ ५१ ॥
 तिण पुतर जायो ते पिता रे आकारो ।
 दोयां ने' निण लेंणा भरतारो ॥ ५२ ॥
 तो उणरी सरघा में उवा परवीण दूरी ।
 उण री सरघा लेखें आ पडसी कूडी ॥ ५३ ॥

इत्यादिक जीव अजीव तणा छें,
 पिण गरज सरें नही आकार वांछा,
 गुण विण थापना भगवान री छे,
 पिण धर्म नही त्यानें सीस नमाया,
 भगवंत रो आकार सर्व जीवां रे,
 पिण गुण विण आकार भगवान रा सू,
 गुण विण आकार भगवान रा सू,
 जो आकार वाछां सू सुदगति जावें तो,
 गुण विना आकार वांछां सू,
 गरज सरें एक भाव नें वांछा,
 गुण विण आकार वादें तिणां रे,
 ते फिरती भाषा बोलें अग्यांनी,
 गुण करनें अरिहंत भगवंत छें,
 त्यारा आकार सू गुण न्यारा नही छें,
 जे गुण विण आकार थाप राख्यो ते,
 भर्म म भूला आकार देखी नें,
 केयक आकार कहिवारा छें,
 कहिवारा आकार कहिवा भणी छें,
 इम कहि र नें कितरो एक कहीजे,
 गुण विण थापना वादें नही,

कीघा अकीघा आकार अनेक ।
 समझो रे समझो थे आण ववेक ॥५४॥
 ते देखीं नें जाणे लेणो आकार ।
 तिरण तारण मत जाणो लिंगार ॥५५॥
 हूवो छें अनत अनंती बार ।
 किणरोइ हूवो न दीसें उद्धार ॥५६॥
 निश्चेइ न टले आतम दोख ।
 सगला जीव जाय विराजता मोख ॥५७॥
 निश्चेइ गरज सरें नही कांय ।
 सासो हूवें तो जोवो सूतर मांय ॥५८॥
 बोली मे मूल न दीसें वंध ।
 ते होय रह्या मतवाला ज्युं अघ ॥५९॥
 गुण करनें छें रखेसर साघ ।
 त्यानें वाछां सू पामें परम समाघ ॥६०॥
 कहि वतलावण आवे काम ।
 वले सुण सुण नें आकार रो नाम ॥६१॥
 केइ गुण निपन चारित परिणाम ।
 गुण निपन आवे वादण काम ॥६२॥
 इण थापना निषेपा रो विसतार ।
 त्या निश्चेइ सफल कीयो अवतार ॥६३॥



ढाल : ४

दुहा

ए थापना नषेपो कह्यो, हिवें दरब री करजो पिछांण ।
 केइ दरब नषेपो सांभली, भूला लोक अजाण ॥ १ ॥
 ते गुण विण वादे दरब नें, कूडा कुहेत ल्गाय ।
 अतीत अनागत काल री, मानें गुण परजाय ॥ २ ॥
 कहे साव हुवा श्री रिषभ नां, त्यां कीयो चोइसत्यो ले नांम ।
 चोवीस तीथंकर हुवा नही, त्यांनं वादे कीयां गुणग्राम ॥ ३ ॥
 इम कहि रे भोला लोक नें, करे निगुणा वांदण री थाप ।
 उधी करे परूपाणा, बोहला वांवे पाप ॥ ४ ॥
 त्यासू कांम पडे चरचा तणो, तो भूठ बोलें फिर जाय ।
 त्यांरी सरघा ने भूठ परगट कळं, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[आउसो तूटा ने साधो नही]

तीथंकर होसी आगमीया काल में रे, त्यांनं वादें नें करे अग्यांनी जाप रे ।
 ते भेल नमोथुणं में घालीयो रे, त्यां कीधी निगुणा वांदण री थाप रे ।
 ए दरब नषेपा रो निरणो सुणो रे* ॥ १ ॥
 नमोथुणं चोवीसत्यो करतां थकां रे, कहे गुण रो मत जाणो कोइ कांम रे ।
 तो उणरी सरघा रें लेखें कुण कुण वांदणा रे, ते सुणजो राखे चित एकण ठाम रे ॥ २ ॥
 एक मूला मांसूं जीव नीकली रे, अनंता तीथंकर आगें थाय रे ।
 जे दरब तीथंकर वादें गुण विनां रे, तो मूलां नें क्यूं नही वादे जाय रे ॥ ३ ॥
 पृथ्वी आदि देह छ काय नें रे, दरबे तीथंकर अनंत पिछांण रे ।
 जे दरब तीथंकर वादें गुण विनां रे, तो क्यूं नहीं वादें यानें जाण रे ॥ ४ ॥
 अनंता दरबे सिघ छें छ काय में रे, सिघ होसी ग्यांनादिक पांमी रिघ रे ।
 जो दरब तीथंकर वादें गुण विनां रे, तो क्यूं नहीं वादें दरबे सिघ रे ॥ ५ ॥
 अनंताइ छें साघ छ काय में रे, भावे होसी चारित आराव रे ।
 जो दरबे तीथंकर वादें गुण विनां रे, तो क्यूं नहीं वादें छे साघ रे ॥ ६ ॥
 ए दरबे तीथंकर सिघ साघ कह्या रे, त्यांनं ओहीज न वादे सीस नमाय रे ।
 इण लेखें उण री सरघा खोटी पळी रे, पिण आंघां नें समझ पडे नही काय रे ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

भरत : चक्री, नो हुवो ढीकरो रे, ते महावीर सामी नों जीव मरीच रे ।
 ते घर छोडी नें हुवो तिरडडीयो रे, तिण री सावद्य करणी नें सरघा नीच रे ॥ ८ ॥
 ते दरबे तीथंकर हुतो तिण दिनें रे, श्री रिषभ जिणेसर दीयो वताय रे ।
 तो रिषभ जिणेसर रा साघ साघव्यां रे, क्यूं नही वाद्या तिण रा पाय रे ॥ ९ ॥
 जो चौइथो करतो वादे तेहनें रे, तिण सूं तो भेलो करणो आहार रे ।
 वले रिषभ जिणेसर सरिपो लेखवी रे, अ करता बदणा ने नमसकार रे ॥ १० ॥
 श्री रिषभदेव रा साघ साघव्या रे, त्या नही वांचो निगुण मरीच रे ।
 जे कोइ दरब तीथंकर वादसी रे, तिण री पिण सावद्य करणी नीच रे ॥ ११ ॥
 वले भरतजी वाद्यो कहे मरीच ने रे, ते पिण नही छे सूतर माय रे ।
 भोला ने विगोए, पाड्या भर्म मे रे, ते निगुणां ने वादे हरषत थाय रे ॥ १२ ॥
 वले दरबे तीथंकर हुता किसनजी रे, त्यानें नेम जिणंद दीयो वताय रे ।
 पिण नेम जिणंद रा साघ साघव्यां रे, त्या किसन रा क्यूं नही वाद्या पाय रे ॥ १३ ॥
 त्यां उलटा किसन ने पगे लगावीया रे, पिण गुण विण दरबे न वाद्यो कोय रे ।
 तो चौइथो करतां निगुणा किम वादसी रे, हिरदे विमासी बुध सूं जोय रे ॥ १४ ॥
 वले दरबे तीथंकर हुती देवकी रे, वले रोहिणी बलभद्रजी जाण रे ।
 पिण नेम जिणंद रा साघ साघव्यां रे, नही वांचा ते गुण विण दरब पिच्छाण रे ॥ १५ ॥
 या तीनां ने उलटा पगे लगावीया रे, पिण गुण विण दरब न वाद्यो कोय रे ।
 तो चौइथी करता निगुण किम वादसी रे, हिरदे विमासी बुध सूं जोय रे ॥ १६ ॥
 वले दरबे तीथंकर श्रेणक राय थो रे, त्यानें वीर जिणेसर दीयो वताय रे ।
 पिण वीर जिणेसर रा साघ साघव्या रे, त्यां श्रेणक रा क्यूं नही वांचा पाय रे ॥ १७ ॥
 त्या उलटा श्रेणक ने पगे लगावीया रे, पिण गुण विण दरब न वाद्यो कोय रे ।
 तो चौइथो करता निगुण किम वादसी रे, हिरदे विमासी बुध सूं जोय रे ॥ १८ ॥
 मोटी सतीयां थी रांग्यां किसन री रे, त्यां तीथंकर वादण रो घणों हुलास रे ।
 जो वे दरबे तीथंकर वादे गुण विना रे, तो किसन सूं नही करती घरवास रे ॥ १९ ॥
 वले मोटीं सतीया श्रेणक नी राणीया रे, त्यां तीथंकर वादण रो घणों हुलास रे ।
 जो दरबे तीथंकर वादे गुण विनां रे, तो श्रेणक सूं नही करती घरवास रे ॥ २० ॥
 त्यां भरतार जाणी ने कीची विटवणा रे, वले त्यासूं पिण सेव्या काम ने भोग रे ।
 ते नमोथुण गुणता किम वादसी रे, ते तो कुमुरा री सरघा जाण अजोग रे ॥ २१ ॥
 किसनजी ने श्रेणक री रांगीयां रे, ते तो समदिष्टी चतुर सुजाण रे ।
 त्यां सामायक पोसा मे वंदणा करी रे, ते तो भावे तीथंकर देव जाण रे ॥ २२ ॥
 जे दरबे तीथंकर वादे गुण विनां रे, त्यां गुण विण वादणा दरबे साघ रे ।
 जो उ कह दे दरबे साघ न वादणा रे, उगने उग री सरघा री न पडी लाघ रे ॥ २३ ॥

केइ आगमीये काले सुध साध होसी रे, केइ भागल हुवा चारित विराध रे ।
 ते दरब छे गुण विण ठाली ठीकरा रे, त्यां सगला नें कहीजे दरबे साध रे ॥ २४ ॥
 जो दरबे साधां ने वादें गुण विनां रे, तो यां सगला नें वांढणा करणी तांम रे ।
 उणरी सरघा रे लेखे कुण कुण वांढणा रे, हिवें दरबे साध रा कहुं छूं नांम रे ॥ २५ ॥
 तो गोसाला कुपातर नें पिण वांढणो रे, ते पिण आगमीयो काले साध थाय रे ।
 जो उ दरबे साध ने वादें गुण विनां रे, तो गोसाला नें क्यूं नही वादें ताय रे ॥ २६ ॥
 वले इग्यारे श्रेणक राजा रा डीकरा रे, ते कोणक नें कालादिक कुमार रे ।
 अे साध होसी आगमीया काल में रे, यानें पिण वांढणा वाखंवार रे ॥ २७ ॥
 जमाली नें कुंडरीकादिक जे हुवा रे, ते बिगड्या समक्त नें संजम खोय रे ।
 जे दरबे साध ने वादें गुण विनां रे, तो यानें पिण वांढणा नीचो होय रे ॥ २८ ॥
 इत्यादिक भागल नें हुवा कुसीलीया रे, त्यांरो दरब नषेपो न गयो तांम रे ।
 जे दरबे साध नें वादे गुण विनां रे, तो यानेंई वांढणा ले ले नांम रे ॥ २९ ॥
 जो उ न वादे याने भाव सूं रे, तो उण रो उणहीज दीयो उथाप रे ।
 वले दरबे साध ने वादें गुण विनां रे, त्यांरें छें पोते बोहला पाप रे ॥ ३० ॥
 उण अखी परणी सूं घरवासो कीयो रे, ते माता हुंती पाछिल भव मांय रे ।
 जे मानें निकेवल गुण विण दरब नें रे, तो अखी नें लेखव लेणी माय रे ॥ ३१ ॥
 उण नें जनम देइ ने मा मोटो कीयो रे, ते तो अखी थी पाछल भव मभारं रे ।
 जे माने निकेवल गुण विण दरब ने रे, तिण लेखें मा नें गिण लेंणी नार रे ॥ ३२ ॥
 मा नें तो लेखव लेंणी अखी रे, अखी नें लेखव लेंणी माय रे ।
 जे माने निकेवल गुण विण दरब नें रे, उणरी सरघा रो ओहीज उंधो न्याय रे ॥ ३३ ॥
 इण रे सगलाइ जीव हुवा छें अखी रे, सगलाइ जीव हुवा मा बेन रे ।
 जे मानें निकेवल गुण विण दरब नें रे, तिण रा किण विघ चलसी कूडा फेंन रे ॥ ३४ ॥
 वले बेटो इण रे घरे आय जनमीयो रे, तिण रो पाछल भव बेटो हुंतो आप रे ।
 जे माने निकेवल गुण विण दरब नें रे, तो बेटा नें इण लेखें गिणणो बाप रे ॥ ३५ ॥
 इण रो बाप ते पाछल भव बेटो हुंतो रे, तिणरोइज बेटो हुवां आय रे ।
 जे मानें निकेवल गुण विण दरब नें रे, तो बाप नें बेटो गिणणो इण न्याय रे ॥ ३६ ॥
 थोरी मेंणादिक सर्व जीवां तणो रे, त्यांरे बेटो हुंतो पाछिल भव आप रे ।
 जे मानें निकेवल गुण विण दरब नें रे, इण लेखें सगला जीव इण रा बाप रे ॥ ३७ ॥
 जो उ सगला नें बाप न लेखवें रे, तो उणरेंइ लेखेइ सरघा कूड रे ।
 जे मानें निकेवल गुण विण दरब नें रे, त्यांरो चिहुं गति में होसी घणों फितुर रे ॥ ३८ ॥
 वले काका बाबादिक सगपण तेहनं रे, सगला जीव हुवा अनंती वार रे ।
 जे मानें निकेवल गुण विण दरब नें रे, ए किण विघ करसी मूढ विचार रे ॥ ३९ ॥

बले अरिहंत सिघ साघ इण जीव रे रे,
 जे माने' निकेवल गुण विण दरब ने' रे,
 ओ कुण कुण मारे ने' कुण कुण पूजसी रे,
 ते बूडा अग्यांनी निगुणा वांद ने' रे,
 अं दरब नषेपो वादे' गुण विनां रे,
 पगले पगले भूठ बोले घणों रे,
 याने' गुण विण दरब वादण रो कहां रे,
 कहे दरब छे' तो पिण गुण माहे नही रे,
 जे दरब निकेवल वादे' तेहनें रे,
 आ खोटी सरघा यांरी अटकी घणी रे,
 ते कहिवा ने' ठाय अग्यांनी आवीया रे,
 त्यादे डंक करडा लागा कुगुरां तणा रे,
 ए दरब नषेपो मुख सूं कर रहां रे,
 जे भरमाया लागा छे' कुगुरां तणा रे,
 केइ दरब तीथंकर काल अनाद रा रे,
 तो वंदणा करे तिणनें किम तारसी रे,
 जे दरवे तीथंकर छे' केइ गुण विनां रे,
 पिण धर्म नही तिणाने' वादीयां रे,
 गुण विण दरवे तीथंकर तेहसूं रे,
 जो त्यानेंइ वाद्यां सूं सुध गति हुवे' रे,
 जे दरवे तीथंकर वादे' गुण विनां रे,
 ते फिरती भाषे बोले' कपटी थका रे,
 गुणां करे तीथंकर देव छे' रे,
 त्यांरा गुण ने दरब तो एक हीज छे' रे,
 गुण ओर ने' दरब ओर छे' रे,
 कोइ भोलें मत भूलो गुण विण दरब ने' रे,
 केइ दरवा रा नाम कहिवा ने' दीयां रे,
 ते कहिवारा दरब जाणो कहिवा भणी रे,
 इम कहतां कहतां पूरो हुवे' नही रे,
 जे गुण विण थोथा दरब वादे नही रे,

ते हुवा न्यातीला वार अनंत रे।
 तिणरे लेखे' छे' सगला एकण पत रे ॥ ४० ॥
 तिणरो कहतातो कदेय न आवे' थाग रे।
 त्यांरो भव भव मे होसी घणोअभाग रे ॥ ४१ ॥
 पिण काम पढ्यां देवे' उथाप रे।
 ते कर रह्या कूडा मूढ बिलाप रे ॥ ४२ ॥
 जब तो उवे' सूंधो बोले एम रे।
 तिणने' म्हें सीस नमांवा केम रे ॥ ४३ ॥
 ते गुण रो सरणो लेवे किण न्याय रे।
 जब साच बोले ने' आया ठाय रे ॥ ४४ ॥
 पिण मांहे नही भीजे मूरख मूढ रे।
 ते किण विघ छोडे' खोटी रूढ रे ॥ ४५ ॥
 तिणरी पिण समझ पडे' नही काय रे।
 ते प्रतख चौडे' भूला जाय रे ॥ ४६ ॥
 त्यांरी पिण गरज सरी नही काय रे।
 ववेक आंणी समझो इण न्याय रे ॥ ४७ ॥
 ते पिण कहिवा ने' दरवे नाम रे।
 ते तिरण तारण नही छे' ताम रे ॥ ४८ ॥
 किण विघ टलसी आतम दोख रे।
 तो जीव सगलाइ जाता मोख रे ॥ ४९ ॥
 त्यारे मूल न दीसें बोले' वंध रे।
 ते होय रह्या पूरा मोह अब रे ॥ ५० ॥
 गुण करनें कह्या छे सिघ साघ रे।
 त्यांने वाद्यां सूं पामे परम समाघ रे ॥ ५१ ॥
 ते तो छे' कह वतलावण कांम रे।
 सुण सुण दरब रो चोखो नाम रे ॥ ५२ ॥
 केइ गुण निपन दरवां रा नाम रे।
 पिण गुण निपन ते आवे' कांम रे ॥ ५३ ॥
 इण दरब नषेपा रो विसतार रे।
 तिण सफल कीयो निश्चे अवतार रे ॥ ५४ ॥

ढाल : ५

दुहा

नाम थापना दरब तणो, यां तीनां रो कह्यो विसतार ।
 ए निगुणा भाव रहीत में, कण नही रे लिंगार ॥ १ ॥
 गुण विण नाम निकेवलो, गुण विण थापना आकार ।
 दरब नषेपो गुण विनां, ए तीनूं नषेपो असार ॥ २ ॥
 तिण कारण मोटों कह्यो, गुण सहीत नषेपो भाव ।
 च्यारूं नषेपो तिण भाव में, तिणरो विरला जाणें न्याय ॥ ३ ॥
 भाव नषेपो रूडी रीत सूं, ओलखजो नर-नार ।
 इण ने ओलखीयां विनां जीव रे, घट में घोर अंधार ॥ ४ ॥
 जे जे दरब रो नाम छें, नाम जिसा छें गुण तिण मांय ।
 ए भाव नषेपो श्री जिण कह्यो, ते सुणजो चित्त-ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

(पूज्य जी पधारो हो नगरी सेविथा)

अनंता तीथंकर आगें हुसी वले, ते हिवडां रुलें च्यारूं गति मांहि हो । भ० ज० ।
 दरबे तीथंकर कहिजें तेहनें, पिण भावें एकंद्रीयादिक ताहि हो । भ० ज० ।
 भाव नषेपो भवीयण सांभलो* ॥ १ ॥
 तीथंकर ग्रहवासें वसतां थकां, जद भोगी पुरष विख्यात हो ।
 दरब तीथंकर त्यांनेइ जिण कह्या, पिण भावें ते गृहस्थ साख्यात हो ॥ भ० भा० २ ॥
 तीथंकर घर छोडे नें चारित लीयो, पालें छें सुघ आचार हो ।
 तो ही दरबे तीथंकर कहीजें तेहनें, भावे हूआं मोटां अणगार हो ॥ ३ ॥
 केवल ग्यान दरसन उपनां पछें, थापें तीरथ च्यार हो ।
 भावे तीथंकर कहीजे तेहने, समझो आंण विचार हो ॥ ४ ॥
 चोतीस अतसय कर नें परवख्या, वांणी छें गुण पेंतिस हो ।
 तीथंकर नां गुण सगला छें तेह में, ते तीथंकर भावे जगदीस हो ॥ ५ ॥
 अनंत अरिहंत आगे हुसी वले, हिवडां तो चिहुं गति गोता खाय हो ।
 दरबे तो अरिहंत त्यांनेइ जिण कह्या, पिण भावे एकंद्रीयादिक मांय हो ॥ ६ ॥
 घर छोडे सुघो पालें साघपणो, पिण हणीया नही करम च्यार हो ।
 त्यां लगे दरबे अरिहंत कह्या तेहने, ते भावें हुवा सुघ अणगार हो ॥ ७ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

च्यार करम घन घातीया छें अरि,
 भावे अरिहत कहीजे तिण समें,
 अनंत सिघ आगमीयें काले हुसी,
 दरवे सिघ कहीजे तेहने,
 वले अरिहंत साघ भुगत नें नीकल्या,
 पिण ज्या लग्ग भुगत न पोहता त्यां लगे,
 सकल कार्य साम्नी भुगते गया,
 त्यां आवागमण मेट्यो गति च्यार नो,
 अनंत आचार्य उवभाय साघ होसी,
 ते आचार्य उवभाय साघ दरवे कह्या,
 वले आचार्य उवभाय साघ घर में थकां,
 त्यामें गुण परगट हुवा घर छोड्यां पछें,
 केइ आचार्य उवभाय साघ भागल थया,
 त्यामे आगमीये काले गुण परगट्यां,
 छत्तीस गुणा आचार्य परवस्था,
 सत्तावीस गुणा सहीत साघ कह्या,
 ए भावे अरिहत सिघ साघ कह्या,
 निगुणा तीन नषेपा बांदीया,
 जो मात पिता रा अग सूं उपनो,
 मात पिता पिण भावे तेहना,
 ते पुतर मरे ओर जायगां उपनो,
 अँ पिण मात पिता नही भावे तेहनां,
 कोइ अस्त्री परणे ग्रहवासो करे,
 ते पाछिल भव मे डण री माता हूती,
 इम भाइ भतीजा काका वावादिक,
 जे जे सगपण वरतमान काल मे,
 भावे सगपण जे जे संसार में,
 दरवे सगा सगलाइ एक एक रे,
 भावे सगपण वीतां पछे तेहनें,
 दरव छे तो पिण गुण माहें नही,
 सगलाई जीव छे दरवे नेरीया,
 तिहा छेदन भेदन खेतर वेदना,
 २६

ए अरी हणीयां सूं अरिहत हो ।
 ओलख ने वादो मतवत हो ॥ ८ ॥
 ते तो हिवडा चिहुं गत गोताखाय हो ।
 पिण भावे एकद्रीयादिक मांय हो ॥ ९ ॥
 त्यारा भाव परमाणे गुण रिच हो ।
 त्यानें दरवे कहीजे सिघ हो ॥ १० ॥
 त्या आठेंइ करम षय कीच हो ।
 त्याने भावे कहीजे सिघ हो ॥ ११ ॥
 ते हिवडां नरकादिक में ताम हो ।
 भावे नेरइयादिक नाम हो ॥ १२ ॥
 ते दरवे छें भाव रहीत हो ।
 जव भावे छें गुण सहीत हो ॥ १३ ॥
 ते दरवे छें गुण रहीत हो ।
 जद होसी वले भाव सहीत हो ॥ १४ ॥
 पचीस गुणा उवभाय हो ।
 ए सगला भावे मुनीराय हो ॥ १५ ॥
 त्याने बांधां निरजरा धर्म हो ।
 वधें सात आठ उसभ करम हो ॥ १६ ॥
 ते भावे पुतर साख्यात हो ।
 जीव ज्यां लग त्यांरो अगजात हो ॥ १७ ॥
 जव यांरो नही भावे अंगजात हो ।
 भावे सगपण नही तिलमात हो ॥ १८ ॥
 ते भावें वरतें नार हो ।
 ओ सगपण न रह्यो लिंगार हो ॥ १९ ॥
 वेन वेनोइ आदि पिच्छण हो ।
 ते भावे सगपण जाण हो ॥ २० ॥
 आवे गुण परमाणे काम हो ।
 त्यारा कुण कुण कहीजे नाम हो ॥ २१ ॥
 भावे ड्यू अर्थ न आय हो ।
 तिण सू गरज सरे नही काय हो ॥ २२ ॥
 पिण भावे तो नारकी मभार हो ।
 ते खाबे अनंती मार हो ॥ २३ ॥

जे देवता होसी आगमीया काल में, ते दरबे देवता पिछाण हो ।
 भवणपती वंतर जोतकी वेमाणीया, त्यानें भावे देवता जाण हो ॥ २४ ॥
 नारकी आदि चोवीसोइ डंडक मभे, तिहां जीव उपनों जाय हो ।
 जे भावे तो कहीजें वरतें तेहवो, ते जोवो सूतर मांय हो ॥ २५ ॥
 अणघडीया रूपा ने दरबे रूपीयो कह्यो, तिण रो घडे आकार तेह हो ।
 पछें उपर सीको दीयो चलण हुवें जेहवो, जब भावे रूपीयो एह हो ॥ २६ ॥
 सूत पूणी नें दरबे कपडो कह्यो, ते गुण विण तिण रो नांम हो ।
 भावे कपडो कहीजे वणीयां पछें, आवें पेंहरण रे काम हो ॥ २७ ॥
 इत्यादिक भाव नषेपा अनेक छें, ते पूरा केम कहिवाय हो ।
 पिण इण अणुसारे बुधवंत समझ नें, अटकल लेजो न्याय हो ॥ २८ ॥

ढलल : १

दुहल

दुनीयल में डोलुड घणी, ते कही कठल लल डलड ।
अरुथं अनरुथं धरुडं करुणें, हण रहुडल डीव अथलड ॥ १ ॥
अरुथें हणें ते आठलं करुणल, आतडल^१ नुडलत^२ धर^३ डररुवलर^५ ।
डरुतुर^५ नलडल^१ डुतु^० नेंडकुषुत^८ डलरुने, कहुडुलं घणुने वरुसरुतलर ॥ २ ॥
आठलं करुणलं वरुण हणें, ते अकल वरुनलं वेडलड ।
ते अनरुथं डड शुरी डरण कहुडुने, छु करुड हणुने वरुण कलड ॥ ३ ॥
देव गुरु धरुडं करुणें, डलणें डीव हणुडल छे धरुडं ।
धरुडं हेते हणुने छे इण वरुडे, ते डुलल अगुडलनी डरुडं ॥ ५ ॥
अरुथं अनरुथं धरुडं करुणें, सगले ठलडे हण रहुडल डुरलण ।
ते दडल करुसी ठुरे डललुसी, अे डुडडतुी अडलण ॥ ५ ॥
डे हुरलसल धरुडुी डीवडल, तुडलरे उदे डरुडुडलत अगुडलन ।
तुडलरुने छु करुड डलरण तणुने, रहुने नरुतरुत डुडलन ॥ ६ ॥
देव गुरु धरुडं करुणें, करण वरुड हणें छु करुड ।
तुडलरुी खुठुी सरुडल डरुगड करुडुं, ते सुणडुने कुत लुडलड ॥ ७ ॥

ढलल

[देशुी—वरुडुडलनल]

अरुहृत देव री करुने थलडनल, हण रहुडल डीव छु करुड डी ।
देव कलडे हणुने डीव करण वरुडे, ते सलडललडुने कुत लुडलड डी ।
डीव डलरे ते धरुडं आडुने नहुी* ॥ १ ॥
ते तुने देवलडक करलवतल, ललडलवे हणलरल दलड डी ।
धन खरुचे डुडल करुणें, वले करुने अनेक हणलड डी ॥ डी० २ ॥
डथर खलन सुं कलडे डंगलवतलं, तस थलवर डरे अनेक डी ।
तुडलरुने लेखुने करुने घड डरुडरुने, कुने डुधवंत आण ववेक डी ॥ ३ ॥
डथर डुनेडुडल डुथवीकलडल डरे, डलणुी घलले कुनुनलडक डलड डी ।
वलडुकलड डरे लेतल डेलतल, टलंकी ललडल उडे तेडकलड डी ॥ ५ ॥
वनसडतुी ने तस डीवडल, गलडलडक हेठे कुथुडल डलड डी ।
नलव देडु देवल कुणतल थकलं, तडे डरण डरे डीव छु करुड डी ॥ ५ ॥

*डह आंकडुी डुरतुडेक गलथल के अनुत में हे ।

चूनो बाल उपर देतां थकां, तिहां पिण मरे जीव अथाग जी ।
 अनंता जीव मारे देवल कीयों, ओ तो नही छे मुगत रो माग जी ॥ ६ ॥
 देवल करावतां हिंसा हुइ, ते तो पूरी केम कहवाय जी ।
 पछें पूजादिक करावतां, नित रा नित मारे छे काय जी ॥ ७ ॥
 कठे टांची वाजे छे निरंतर, नित नित मारे पृथवीकाय जी ।
 त्याने दुख उपजे छे तिण समे, घणी अतुल वेदना थाय जी ॥ ८ ॥
 नित पांणी ढोले न्हवरावतां, अग्न मारे दीवो उजवाल जी ।
 नितका वाउकाय मारे घणां, कूट कूट मजीरा ताल जी ॥ ९ ॥
 नित नित काची कलीयां तोड ने, माला गूथे चढावे आण जी ।
 दीवादिक सूं मरे पतंगीया, तसकाय रो करे घमसाण जी ॥ १० ॥
 इण विष छे काय ने मारवा, करे छे नित का संग्राम जी ।
 बले कहे म्हाने पाप लागो नही, हणीयां अरिहंत देव रे काम जी ॥ ११ ॥
 आवे दया पालण रो पगथीयो, तिथ परव पजूसण मास जी ।
 ते तो तिण दिन जीव मारे घणां, करे अनेक जीवां रो विणास जी ॥ १२ ॥
 बले सतर भेदे पूजा रचे, तिणरो माडे घणों विसतार जी ।
 तठें दया तणो सींचो नही, करे छे काय रो संघार जी ॥ १३ ॥
 बले वाघे पगां रे गूघरा, हाय में ले मजीरा ताल जी ।
 ते तो गावे वजावे कूदता, करे छे काय रो खेगाल जी ॥ १४ ॥
 देव काजे हणे जीव इण विघे, तिण में मूल न जाणे दोख जी ।
 जाणे लाभ हुवो जिण घर्म नों, तिण सूं नेडी छे अक्विल मोख जी ॥ १५ ॥
 इत्यादिक देवल काजे हणे, तिणरो कहितां न आवे पार जी ।
 हिवे गुर काजे हणे जीव ने, ते सांभलजो विसतार जी ॥ १६ ॥
 देव रे काजे देवल करवतां, तस थावर लूट्या प्राण जी ।
 तिम गुर काजे थानक कीयां, हुवे छे काय रो घमसाण जी ॥ १७ ॥
 थानक करावतां हिंसा हुइ, ते तो देवल नी परे जाण जी ।
 छे काय मारे छे तिण विघे, तिण री बुधवंत करजो पिछाण जी ॥ १८ ॥
 बले वाघे पडदा परेच ने, चंदरवा ताटादिक आण जी ।
 इत्यादिक थानक करे कारणे, हणे तस थावर रा प्राण जी ॥ १९ ॥
 खीर खांड फीणा रोट्यां करे, पांणी उकाले भर भर ठाम जी ।
 ओर वसत अनेक करे घणी, गुर ने प्रतिलाभण काम जी ॥ २० ॥
 आहार पांणी आदिक निपजावता, करे छे काया रो विणास जी ।
 पछें तेड वहरावे तेहने, बले करे मुगत री आस जी ॥ २१ ॥

इत्यादिक गुर काजे हिंसा करे, ते तो पूरी केम कहिवाय जी ।
 धर्म काजे हिंसा करे जीव री, ते सांभल जो चित लाय जी ॥ २२ ॥
 करे उजवणा ने पारणा, वले साह्मी बछल जाण जी ।
 त्यानें नहत जीमावा कारणे, करे छे काय रो घमसांण जी ॥ २३ ॥
 वले धर्म काजे धूंकल करे, संघ काढे ले जावे जात जी ।
 चोमासादिक मे जाता आवता, करे तस थावर री घात जी ॥ २४ ॥
 तप माड्यो ते पूरो हूआं पछे, जीमण करे लोक जीमाय जी ।
 वले लाडू आदिक करे घणा, ते तो हण हण जीव छ काय जी ॥ २५ ॥
 वले समदड होइ दान दे, उपर वाडा रा फल दे जाण जी ।
 आंबादिक फल नी चोवीसी दीये, इत्यादिक दांन पिच्छाण जी ॥ २६ ॥
 हणे अर्थे अनर्थे जीव ने, ते तो भारी हुवे बांधे पाप जी ।
 धर्म हेते हणे छ काय ने, ओ तो कुगुर तणो परताप जी ॥ २७ ॥
 पखी आला घाले देवल मभे, इंडा मेल बसे तिण माय जी ।
 ते निजर पडे कुगुरा तणी, तो आला दे तुरत पडाय जी ॥ २८ ॥
 केइ इंडा पंखी जीवा मरे, केइ उड भागे आकास जी ।
 त्यामें धर्म पल्पे पापीया, करावे जीवां रो विणास जी ॥ २९ ॥
 अनार्य आवे देस उपरे, जब करे अकार्य काम जी ।
 दुख उपजावे राक गरीब ने, फिर फिर मारे नगर ने गाम जी ॥ ३० ॥
 तिम कुगुर अनार्य सारिषा, त्यारा दुष्ट घणा परिणाम जी ।
 ते पिण गामां नगरा फिरता थका, मरावे पखीया रा गाम जी ॥ ३१ ॥
 अनार्य देस मारे गया पछे, वले गाम नगर वसे आण जी ।
 कदे अनार्य फेर आवे तिहां, तो वले मार करे घमसांण जी ॥ ३२ ॥
 ज्यू कुगुर विहार कीयां पछे, पंखी फेरे आला घाले लग जी ।
 वले कुगुर आवे तिण गांम मे, जब पंख्यारो जाणो अभाग जी ॥ ३३ ॥
 मोटां विरद महाजन रा कुल मभे, वाजे जीव दया प्रतिपाल जी ।
 पिण कुगुरां तणा भरमावीया, पाडे पंखी जीवा रा आल जी ॥ ३४ ॥
 अनार्य गांम नगर माख्या पछे, कोइ आणे मन पिच्छताप जी ।
 कुगुर जीव मराय हरषत हुवे, त्यारे हिंसा धर्म री थाप जी ॥ ३५ ॥
 अनार्य करे कतल जीवां तणी, ते पिण फेरे दुहाइ वेग जी ।
 कुगुर जीव मरावण नित नवा, त्यारो कठेय न दीसें थेग जी ॥ ३६ ॥
 अनार्य विचे तो कुगुर बुरा, त्यांरी मूरख मांने वात जी ।
 ते तो धर्म जाणे जीव मार ने, ओं तो करलो घणो छे मिथ्यात जी ॥ ३७ ॥

कुगुर कहे हिंसा कीयां विनां, धर्म न होवें कोय जी ।
 पोते त्याग कीयों हिंसा तणों, त्यानें धर्म किहां थी होय जी ॥ ३८ ॥
 जो हिंसा कीयां धर्म नीपजे, तो गृहस्थ होय जावें निहाल जी ।
 पिण साधां नें हिंसा करणी नही, त्यारो होसी कुण हवाल जी ॥ ३९ ॥
 जीव माख्यां में धर्म कहें, अं तो कुगुर तणा छें वेंण जी ।
 त्यांनैं वादें पूजें गुर जाण नें, त्यांरा फूटा अमितर नेण जी ॥ ४० ॥
 जीतव्य नें परसंसा हेतें हणें, वले मान वडाइ कांम जी ।
 हणें जनम मरण मूंकयवा, वले दुख दूरा करवा तांम जी ॥ ४१ ॥
 मारें छ कारणं छ काय नें, त्यांरि अहित रो कारण साख्यात जी ।
 धर्म हेते हणें तिण जीव रे, समकत जाय आवें मिथ्यात जी ॥ ४२ ॥
 ए छ कारणे हिंसा कीयां, वषे आठ करम गांठ पूर जी ।
 निश्चें मोह नें मार वणें घणी, नहीं वरतें नरक सूं दूर जी ॥ ४३ ॥
 ए छ कारणा हिंसा करें, ते तो दुख पामें इण संसार जी ।
 ए आचारांग पेहला अधेन में, छ उदेसां कह्यो विसतार जी ॥ ४४ ॥
 केइ समण माहण अनार्य थका, करें हिंसा धर्म री थाप जी ।
 कहें प्राण भूत जीव सत्व नें, धर्म हेतें हण्यां नहीं पाप जी ॥ ४५ ॥
 एहवी उंची परुपे तेहनें, आर्य साध बोल्या केम जी ।
 तुम्हे भूंडो दीठें सामल्यो, भूंडो मान्यो भूंडो जाण्यो एम जी ॥ ४६ ॥
 जीव माख्या रो दोष गिणें नही, ए तो वचन अनार्य रो जाण जी ।
 एहवा मूढ मिथ्याती दुरमती, त्यांरी सुध बुध नही ठिकाण जी ॥ ४७ ॥
 कोइ हिंसा धर्मी नें इम कहे, थानें माख्यां हुवे धर्म कें पाप जी ।
 जब कहे मोनें माख्यां पाप छें, साच बोली सुधी करे थाप जी ॥ ४८ ॥
 जो थानें माख्यां रो पाप छें, तो इम सर्व जीव माख्यां जाण जी ।
 ओरां ने माख्यां धर्म परुप नें, थे कांय बूडो कर कर तांण जी ॥ ४९ ॥
 आचारांग चोथा अधेन में, बीजें उदेसें ए विसतार जी ।
 हिंसा धर्मी अनार्य तेहनें, कीवा जिण मारग सूं न्यार जी ॥ ५० ॥
 धर्म होसी एकद्री मारीयां, तो बेद्री माख्यां पाप न थाय जी ।
 इधके माख्यां इधको धर्म छें, उण री सरघा रो ओहीज न्याय जी ॥ ५१ ॥
 जो एकद्री माख्यां पाप छें, तो बेद्री माख्यां पाप वसेख जी ।
 इधके हण्यां इधको पाप छे, इम जिण धर्म साह्यो देख जी ॥ ५२ ॥
 केइ हिंसा धर्मी चोडें कहे, हिंसा क्रीवां विण नहीं हुवें धर्म जी ।
 केइ चोडें न कहें कपटी थका, साचो कहितां आवें सम जी ॥ ५३ ॥

केइ दया धर्मी वाजें लोक में, चालें हिंसा - धर्मी री रीत जी ।
 ते पिण छें तिण हीज पात रा, बतलायां बोलें विपरीत जी ॥ ५४ ॥
 सूतर सिघत में इम कह्यो, जीव माख्यां सूं लागें पाप जी ।
 नही माख्यां पाप लागे नही, श्री जिण मुख माख्यो आप जी ॥ ५५ ॥
 बले देहरा प्रतिमा करावता, जीव हण रह्या पृथवीकाय जी ।
 त्यांनं मंद बुवी श्री जिण कह्या, दसमें अंग पेहला अघेन मांय जी ॥ ५६ ॥
 बले छद्रमति कही तेहनी, ते तो जड मूढ घणों अतंत जी ।
 ते दूरंत पंत लक्षण रो घणी, हिंसा धर्मी नें कह्यो भगवंत जी ॥ ५७ ॥
 जीव हिंसा करे तेहनें, ओलखायो श्री जिणराय जी ।
 हिंसें हिंसा धर्मी रा फल कहं, ते सांभलजो चित ल्याय जी ॥ ५८ ॥
 केइ हिंसा धर्मी जीवडा, मरी उपजे नरक मभार जी ।
 तिहां छेदन भेदन पामें घणी, बले खाअें अनंती मार जी ॥ ५९ ॥
 मार खाअें नरक थी नीकले, पडे तियंच गति मे जाय जी ।
 तिहां पिण दुख पामें अति घणां, ते तो पूरा केम कहिवाय जी ॥ ६० ॥
 बले निगोद में पडीयां पछे, दुख पामे अनंतो काल जी ।
 परिभमण करे ससार मे, जाणें अरट तणी घड माल जी ॥ ६१ ॥
 इम सुलतो सुलतो संसार मे, कदे मिनष तणो भव पाय जी ।
 ते कुण कुण पामें अवस्था, ते सांभलजो चित ल्याय जी ॥ ६२ ॥
 त्यांरी बाल्पणे माता मरे, बले पिता रो पडे विजोग जी ।
 सेण सगां रो विछोहो पडे, मिले दुसमण रो सजोग जी ॥ ६३ ॥
 वाल्क थकां मरें वेटा वेटीयां, बले घर भागे अघगाल जी ।
 दुखे दुखे जनम पूरो हुवे, माथे आवें अणहुतो आल जी ॥ ६४ ॥
 केइ होय जाअें टूटा पांगुला, केइ गुंगा बहरा जाण जी ।
 केइ होय जाअे आंचा दलद्री, रहे दिन दिन तांणा तांण जी ॥ ६५ ॥
 सोलें रोग सरीरें उपजे, तिण सूं पामे दुख संताप जी ।
 जनम मरण जरा दुख पामें घणां, हिंसा धर्मी तणे परताप जी ॥ ६६ ॥
 सुयगढायंग अघेन अठारमें, ए भाव कह्या जिणराय जी ।
 इम जाणें नर नारीयां, धर्म काजें म हणो छ काय जी ॥ ६७ ॥
 देवल हिंसा निषेधी सांभलें, केइ पाछो उत्तर दे आंम जी ।
 पाप हुवें तो नही ल्गावता, लाखां कोडां हजारों दांम जी ॥ ६८ ॥
 आगे वडा वडेरा भोला नही, धन खरचे ल्गावें पाप जी ।
 किण री उठाइ उठे नही, म्हांरा वडा वूढां री थाप जी ॥ ६९ ॥

आगेँ सिव मारगी हुवा घणां, ज्यांरो जोवो पुराणे विचार जी ।
 त्या पिण लाखां कोडां लगावीया, कराया देवल हरदुवार जी ॥ ७० ॥
 आगे वडा वडेरा तुरकां तणा, मोटीं कराइ मसीत जी ।
 त्यां पिण लाखां कोडां लगावीया, त्यांरी पिण छें आहीज रीत जी ॥ ७१ ॥
 ग्यांनी सिवी नें मुसलमान रे, सगला वडां री आ रीत जी ।
 सगला लाखां कोडां लागाय ने, कराया देवल आदि मसीत जी ॥ ७२ ॥
 ओर देवल मसीत करावीयां, त्यांनें पाप वतावें पूर जी ।
 जिण रा देवल कीयां तेहनें, धर्म कहें ते एकंत कूड जी ॥ ७३ ॥
 धर्म होसी तो सगला ने धर्म छें, पाप होसी तो सगला नें पाप जी ।
 ए लेखो कीयां तो लड पडे, खोटी सरघा री करवा थाप जी ॥ ७४ ॥
 आप रा देवल री करें थापना, ओर देवल देवें उथाप जी ।
 पिण धर्म नही हिंसा कीयां, कोइ मत करो कूड विलाप जी ॥ ७५ ॥
 दया धर्म छे जिणवर तणो, तिण में जीव न हणवो कोय जी ।
 जीव माख्यां धर्म न नीपजें, प्रवचन सांह्यो जोय जी ॥ ७६ ॥

रत्न : ८

निन्व री चौपई

ढाल : १

ढुहा

ठानाढग उवाइ उपंगढे, निन्व नों आचार ।
 वले सुयगढाढग तेरढे, अर्थ तणो विसतार ॥ १ ॥
 श्री वीर तणा सासण ढढे, निन्व चाल्या सात ।
 त्यारी सरघा नाम नगरी ढणू, ते सुणंजो विख्यात ॥ २ ॥

ढाल

[राग—सल कोई ढत राखजो]

जे कारज करवा ढाडीयो, काइ कीघो ने कांइ करणो रे ।
 कीघा ने ढूल ढाने नही, ढारी करढे न कीघों निरणो रे ।
 सरघा सुणो निन्वा तणी* ॥ १ ॥
 ए जढाली^१ सिप्य ढगवान रो, ओ सुघ सरघा थी ढागो रे ।
 वीर थकाइज विगटीयो, सावथी नगरी ने वागो रे ॥ स० २ ॥
 असष ढ्रदेसी जीव छे, वीर सगले चेतन ढाख्यो रे ।
 ए ढ्रभु वचन उथाप नें, एक ढ्रदेस ने जीव दाख्यो रे ॥ ३ ॥
 ए तीसगुत्त^२ निन्व ढूजो, नगरी राजघ्रही जाणो रे ।
 तिण चेतन दरव न ओलख्यो, ढड गयो उलटी ताणो रे ॥ ॡ ॥
 संजढादिक ढे संका ढडी, त्या ढाहोढा वंदणा छोडी रे ।
 साघा ढें सरघे देवता, ते नढे नही कर जोडी रे ॥ ५ ॥
 सुघ ववहार उथापीयो, करढ उदे वात विगडी रे ।
 ए आसाढ^३ निन्व तीजो, ते ढूओ सेवीया नगरी रे ॥ ६ ॥
 नरकादिक च्यारू गतां, थोडी थोडी घट जासी रे ।
 छेहडो आसी सर्व जीव रो, ओ संसार सूंनो थासी रे ॥ ७ ॥
 ढिथला नगरी नें ढढे, ढरगइ ढन ढे ढातो रे ।
 विछेद सरघ्यो संसार नों, ए आसढित्त^४ निन्व चोथो रे ॥ ८ ॥
 सढराय इरियावही आद दे, एक सढे किरिया दोय लागे रे ।
 विगट्यो वोल अनेक सू, ढरूप दी लोका आगें रे ॥ ९ ॥
 ए गणे^५ निन्व ढांचढा तणी, उत्ढति उलका तीर नगरी रे ।
 एक सढे किरिया दोय थाढतां, सढकत सरघा विगडी रे ॥ १० ॥

*यह आँकड़ी ढ्रत्येक गाथा के अन्त ढें है ।

जीव अजीव दोनूं जिण कह्या, तीजी रास तेरासीयें थापी रे।
 बोध बीज विणासीयो, संकीयो नही मूरख पापी रे ॥ ११ ॥
 अंतरंजी नगरी मभे, ओ हूय गयो समकत भठो रे।
 तीन रास पख्खी ताण नें, ए छल्लूक^६ निन्व छों रे ॥ १२ ॥
 खीर नीर ज्यूं आठोंइ करम छे, जिण कह्या लोलीभूतो रे।
 ते कांचूवा नी परें करम नें, ओ उंची सरघ विगतो रे ॥ १३ ॥
 दशनपुर नगरी तिहां, ते गोष्ठामाहिल^७ जाणों रे।
 ए सातांइ निन्वां तणो, सरघा एह पिच्छांणों रे ॥ १४ ॥
 ए सात निन्व तो हूय गया, वले हुसी त्यांरी केडायत रे।
 सरघा परगट कीयां तेहनी, सुण नें हुवा रलीयायत रे ॥ १५ ॥
 जे आचार में ढीला पख्या, सुघ सरघा थी पिण चूका रे।
 भव जीवां नें देखी समभत्ता, तो कर लोकां आगें कूका रे ॥ १६ ॥
 पाखंडीयां सूं मिल गया, साधां सूं अंतर घेखो रे।
 केडें चाले लोक रे, ए प्रतख निन्व देखों रे ॥ १७ ॥
 पूरा दांन दया नहीं ओलख्या, घालें अणहंता घोचा रे।
 सुघ साधां नें निन्व कहें, ए कुगुरां भाल्या चोचा रे ॥ १८ ॥
 गोसाले आद्रक कुमार पें, वीर में दोष वताया रे।
 संका नहीं आंणी भूठ री, कूडा गोला चलाया रे ॥ १९ ॥
 आद्रक कुमार उत्तर दीयां, तब पाछा जाब न आया रे।
 कुब्ब करें घट भितरें, ओर पाषंडीयां नें लगाया रे ॥ २० ॥
 इम अजूणाइ काल में, नही न्याय मेलण री नीतो रे।
 लोकां सूं करें लगावणी, त्यां लीधी गोसाला री रीतो रे ॥ २१ ॥
 महावरतां री चरचां कीयां, पगला मूल न माडे रे।
 सरणो लीयो संसार नों, भेष ले जिण मारग भाडे रे ॥ २२ ॥
 ग्यांन दरसन चारित तप विनां, धर्म वतावण लागा रे।
 सके नही सावद्य बोलतां, ते वरत विहूणा नागा रे ॥ २३ ॥

ढलल : २

दुहा

वस गयो पाच नलनूवां तणो, प्रसलघ न सुण्यो कोय ।
दोय तणा परगट हूआ, सामलजो सह लोय ॥ १ ॥
दो कलरलया नलनूव पांचमो, छठो तेरासीयो जाण ।
त्यारा केडायत उठीया, प्रतख देखो अहलाण ॥ २ ॥
माहोमाही नलनूव कहे, ते रागा घेखो जाण ।
लखणा कर ओलखाय दे, ते डहा चतुर सुजाण ॥ ३ ॥
कहूं थोडीसी वानगी, तेरासीया नी वात ।
भव जीवा ने प्रति बोघवा, काढण मूल मलथ्यात ॥ ४ ॥

ढलल

[देशी—पूजजो पधारो हो नगरी सेविया]

जीव अजीव दोनूइ जलण कहा, तीजो वस्तु न काय हो ।
तीजो रास परूपी तेरासीये, तो नलनूव कहो जलण राय हो ।
नलनूव तेरासीया केडायत ओलखो* ॥ १ ॥
धर्म अधर्म जलणसर माखीयो, तीजो पथ न कोय हो ।
तीन परूपे ते नलनूव जाणजो, छलूक छठा जलम होय हो ॥ नल० २ ॥
मलश्र पख ने तो मलश्र धर्म कहे, तलण रो न पायो भेद हो ।
वलरत इवलरत दोनू न्यारी कीयां, कुड कुड पामे खेद हो ॥ ३ ॥
सुयगडाअग अवेन अठारमे, श्रावक धर्म वलरत वखाण हो ।
इवलरत रही ते अधर्म जलण कही, तलण मे माडी ताण हो ॥ ४ ॥
इवलरत सेवाया सेवीयां भलो जाणीया, तीनूइ करणा पाप हो ।
एहवो भगवत वचन उथाप ने, कीधी छे मलश्र री थाप हो ॥ ५ ॥
सर्व वलरत छे धर्म साघां तणो, देस वलरत श्रावक जाण हो ।
ए दोनूइ धर्म मे जलणजो री आगना, तलण री न करे पलछांण हो ॥ ६ ॥
तीजा गुणठाणा ने मलश्र धर्म कहे, भोलो ने दीया भरमाय हो ।
नांख्यां मोह मलथ्यात री जाल में, हलवे सामलो तलण रो न्याय हो ॥ ७ ॥
सावी सरघा तो समकत माहिली, तलण सूं न लागे करम हो ।
कायक मलथ्यात रहो घट मलतरे, तलण मे नहीं जलण धर्म हो ॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ए दोनूं सरभा घट में जूजूइ, सममिथ्या दिष्टी तो समचे कह्यो, मिश्र भाषा नें मिश्र धर्म कहे, करम बधे इण थी महामोहणी, तीसांइ बोलां बधें महामोहणी, जो गुणतीस, बोला. मे मिश्र न नीपजें, अराधवी विराधवी मिश्र भाषा कही; वीर कही छे बोलण आसरी, साची भाषा पिण सावज बोलतां, ते साची भाषा.ने कही छे आराधवी, तो मिश्र भाषा मे धर्म किहां थकी, भूठ री नेश्राय साचो न्नीकलें, जो करमां वस इतरी समरू पडें नही, साच ने भूठ दोनूइ न्यारा करो, जमीकंद खाधा खवायां भलो जांगीयां, ए चोडे.मारग श्री जिणराज- रो, मिश्र परूपे अग्यांनी एहू में; खवाये तिरपत कीयो पर जीव नें, करम वधाख्या छे तिण जीव रे, जीव अनता मार- जूंहर कीयो, एक डबोयो अनता मार- नें, ए. प्रतख पाप लागो दोनूं विधें, काचो पांणी छांण्या मिश्र धर्म कहें, के.धर्म. हूओ तस जीव न्यारा कीयां, तस री दया. ने घात पांणी. तणी, हिचे साध. कहे ते भवीयण सांभलो, एक गलें बीजो. अणगल- पीये, पाणी रो पाप दे.या ने बरोबर, पाणी छाण्यां घात हूइ अपकाय री, ठिकाणा छुडायो अबला. जीवां. तणा, अणगल पीयां तमे पाप. लागें. घणो, थोडो घणो छे पाप दोनूं भणी,

जूओ जूओ तिण रो सभाव हो ।
 ए तीजा गुणठाणा रो न्याव हो ॥ ९ ॥
 एहूओ चलायो भूठ हो ।
 जो. बोलें सभा में आकूट हो ॥ १० ॥
 धर्म से अंसा नः कोय हो ।
 तो एकण में किम होय हो ॥ ११ ॥
 भूला. तिण रें भर्म. हो.।
 पिण न कटे तिण सूं करमा. हो.। १२ ॥
 बंध जाय सात. आठ करम हो.।
 तिणमेंइ न दीसे धर्म हो.। १३ ॥
 मोलोंइ म करजो तांण हो.।
 ते साच हीं. सावच जांण हो.। १४ ॥
 तो भेल समेल म जांण हो ।
 सावच निरवद पिछांण हो ॥ १५ ॥
 तीनूइ करणां पाप हो ।
 ते पिण दीयो छें उश्राप हो ॥ १६ ॥
 मोलां नें- वतावें- भेद हो ।
 ए सरधो धर्म उमेद हो ॥ १७ ॥
 जमीकंद. खवाय हो.।
 मिश्र किहां थी. थाय हो.। १८ ॥
 ते कुगुर जाणें उपपार हो.।
 तिणरोइ घट. में अंधार. हो.। १९ ॥
 ते भूठा. चोज. लगाय हो.।
 आ दया रही. घट माय हीं. २० ॥
 मिश्र वतावें. एम. हो.।
 एक मना घर पेम. हो ॥ २१ ॥
 ते बुधवंत करसी. नीवेर हो.।
 तस मांहे. पढीयो फेर हो ॥ २२ ॥
 देख दीयां तस नें गोताय हो.।
 ते. मिश्र. किहां. थी. थाय हो ॥ २३ ॥
 गल पीयां अल. करम. हो.।
 नहीं छेरवीयां. छें. धर्म. हो. ॥ २४ ॥

मिश्र अणहुंतो उठाय बेठो कीयो, विगटाय बोल अनेक हो ।
 ए वांकी गति छे मोह करम तणी, तिण सू न छूटे टेक हो ॥ २५ ॥
 चाले चाल असल निन्वां तणी, ओरा सिर दें आल हो ।
 निरणो न काढे समता भाव सू, बोलें आल पपाल हो ॥ २६ ॥



ढलल : ३

दुहल

हलवलं डलंढडलं नलनुव तणल, ओलखखओ डरलवलर ।
ते वलगडलडलल खलण डेष डें, ते न कहें धरुड वलखलर ॥ १ ॥
कहे दडल आण नें खलव डलरलडलं, हलवे छें धरुड नें डलड ।
ए करड उदें डंथ कलढीडु, डगवंत वखन उथलड ॥ २ ॥
डलड कलडलं धरुड न नलडडें, धरुड थल डलड न हुडड ।
एक करणल डें दुड न नलडडें, ए संकल ड आणु कुड ॥ ३ ॥
धरुड अधरुड करणल खू खूड, ते डलंहुडलंहुल नहुल डेल ।
दु कलरलडल नलनुव केडलडतलं, कर दुधल डेल डडेल ॥ ॡ ॥
एक डलवदुड करणल करें तेह नें, धरुड अधरुड दुड वतलड ।
कुण कुण खलल खललवुडल, ते सुणखु कुखतललड ॥ ॡ ॥

ढलल

[देशु-धलण धलण कलड वलडडडणल]

एक डलवदुड करणल कलडलं थकलं, धरुड अंस न हुडड रे ।
ए अरलहत वखन डलंनं नहुल, ते डलवदुड डें सरखें दुड रे ।
दुड कलरलडल नलनुव केडलडत सुणुं* ॥ १ ॥
हंखुडलदलक अठलरेंदु डेवुडलं, तुलनुंड करणलं डलड रे ।
ए नुडलड डलरग खलणरलख रु, ते नलनुवलं दुडुडुं उथलड रें ॥ दुु २ ॥
खरख आधरणल खुडडणलर डें, वले नहत खुडलवें लुक रे ।
तुडलंनं धरुड अधरुड दुुनुं कहे, ते नलनुव सरधल डुक रे ॥ ३ ॥
खकलड नलं खलव वलणलडुडल, ए खलण डलधुडुं नहुलं धरुड रे ।
वले वलडें डेवलरु डर खलव नं, दुुनुं वलध डधुडल करड रे ॥ ॡ ॥
कहें अबड नलं डलडुड डलतडुं, अण दुधुं लुडुु नलड रे ।
तुडलं आगनल ले डलंणु लुडुं, वले ओरलं डडुडल कलंड रे ॥ ॡ ॥
वले आणंद आदल दे शुरलवकलं, डलंगे लुडलडल आहलर रे ।
ते सरललडुधु थल खलवडल, तुडलं कलंड वलगुडल दलतलर रे ॥ ॡ ॥
डड कहे वलरुध डरुडडतल, हंखुडल दुदलवें डूड रे ।
हलवलं एहुनुं वलवरुं डलंडलु, खुडुु डलधुडलत रु रुड रे ॥ ॡ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गलथल के अन्त डें है ।

किण ही सूंस लीयो सतगुर कनें, जाव जीव न परणूं नार रे ।
 मोने बाप परणावे तो परणीज सूं, इतरो राख्यो आगार रे ॥ ८ ॥
 बाप परणावे तेह ने, तो हरष घरे मन मांय रे ।
 तो उण री सरघा रे श्रावकें, बाप डबोयो काय रे ॥ ९ ॥
 ज्यूं अबड आणंद आदि श्रावका, बेरागे कीयां पचखाण रे ।
 मागण री इविरत पेहलां हुंती, ते नवो पाप म जाण रे ॥ १० ॥
 जाचीयो ने अण जाचीयो, सचित अचित आहार रे ।
 सुभतो ने अण सुभतो, सगलोइ थो आगार रे ॥ ११ ॥
 वले पूछ्यां ने विण पूछीयां, पाप करता न आणता लाज रे ।
 ते विरत करी विण पूछीया, ते इविरत टालण काज रे ॥ १२ ॥
 जे जे आगार त्यागे दीयो, ते श्रावक नो छें धर्म रे ।
 बाकी रह्यो आगार सेवारीया, ते निश्चे बंधसी करम रे ॥ १३ ॥
 ए आगार तो पेहलां हुतो, नवो न सीख्यो कोय रे ।
 इविरत सिची पार की, ते धर्म किहा थो होय रे ॥ १४ ॥
 लेवाल रें इविरत लेण री, दातार रे देण री जाण रे ।
 ए दोयां रे काल अनादरी, ते त्याग्या थो निरवाण रे ॥ १५ ॥
 वले कोइ अभिग्रह ले एह्वो, हुं रनवन खेतमें जाय रे ।
 विण कहें विरख वाडूं नही, ते पूछी न्हाखे ढाय रे ॥ १६ ॥
 इम हिज फल फूल चार नों, तस थावर जीव अनेक रे ।
 विण आग्या हणवो नही, सूंस लीयो आण ववेक रे ॥ १७ ॥
 इण अनुसारे वोल अनेक छे, सावद्य किरिया करें कोय रे ।
 जे अधर्म री देसी आगना, तो आछा फल नही होय रे ॥ १८ ॥
 अबरना सिष्या नें दीधी आगना, कहें खपें स भरलों नीर रे ।
 तिण हिंसा में सिर घालीयो, न सरायों तिण ने वीर रे ॥ १९ ॥
 हिंसा तणी आग्या दीयां, नफो म जाणो कोय रे ।
 ए निरणो न कीयो घट भितरे, ते गया जमारो खोय रे ॥ २० ॥
 वरसी दान दीयो तीथकरे, एक कोड नें आठ लाख जाण रे ।
 ए प्रतख सावद्य सुमें नही, पर गया उलटी ताण रे ॥ २१ ॥
 सोनइया लीघा तिण ने कहे, हुओ छें एकंत पाप रे ।
 दीया तीथकर तेह ने, दो किरिया दीधी थाप रे ॥ २२ ॥
 धर्म अधर्म दोनू कहें, सोनइया दीघा दान रे ।
 पाप जाणें तो देता नही, ते एहवा आणें तान रे ॥ २३ ॥

इम कहे भोलां लोक नें, धर्म सूं दीयां भिरकाय रे।
 हिवें साथ कहें ते सांभलों, वरसी दान रो न्याय रे ॥ २४ ॥
 एक कनक दूजी कांमणी, त्याग्यां सिव सुख होय रे।
 पेंहला नें पकरावीयां, धर्म म जाणों कोय रे ॥ २५ ॥
 जो नफो जाणें सोनइया दीयां, तो ओरां डबोया कांय रे।
 लेवाल नें भारी कीयां, ए कपट रो मारग नांय रे ॥ २६ ॥
 जो सो सो सोनइया दीयां एक नें, तिण लेखें वांध्यो तू मार रे।
 दिन रा मिनष हूआं एतला, एक लाख नें आठ हजार रे ॥ २७ ॥
 एक बरस तणा तीन कोड ने, अठ्यासी लाख नें असी हजार रे।
 एहवे उनमाने मांनव्यां, पाप लगायो अपार रे ॥ २८ ॥
 ए जस महिमां देव वधारवा, ते समभों चतुर सुजाण रे।
 ए सासती थित छें तेहनी, उत्तर एह पिछाण रे ॥ २९ ॥
 आठ सहंस नें वले चोसठ, कलसा ढोल्या भर नीर रे।
 वाजंत्र अनेक आरंभ कीयां, दीख्या लीघीं जिण दिन वीर रे ॥ ३० ॥
 ए सगलाइ सावद्य जिण कह्या, राखों सूतर परतीत रे।
 महोछव दान सिनांन तो, ए गृहवासा री रीत रे ॥ ३१ ॥
 ग्यांन दरसन चारित तप विनां, सर्व करणी अधर्म जाण रे।
 ज्यां श्री जिणधर्म न ओलख्यो, ते कर रह्या उलटी तांण रे ॥ ३२ ॥
 तीथंकर सोनइया दीयां लोक नें, कहें हूओं छें पाप नें धर्म रे।
 सुघ आहार गवेषे नें भोगव्यो, कहें बांध्या उसभ करंम रे ॥ ३३ ॥
 सुघ आहार दीयो भगवंत नें, धर्म कहें ते तो न्याय रे।
 पाप लागों कहें भगवंत नें, ए प्रताख मुसावाय रे ॥ ३४ ॥
 आप तिरें ओरां ने डबीय नें, आप डूबें ओरां नें तार रे।
 ए दोनूं बोल विरुध छें, ते बुधवंत करसी विचार रे ॥ ३५ ॥

ढाल : ४

ढुहा

सुयगढा अंग तेरमे, जथातथ छेँ भाव ।
साध नें निन्वां तणों, कह दीयो भगवंत न्याव ॥ १ ॥
एक मारग कह्यो मोष रो, बीजो कह्यो ससार ।
किरिया भली नें पाडवी कही, भेल न राख्यो लिगार ॥ २ ॥
निन्व पाषंडी बोटकादिक, ते उठ्या दिवस नें रात ।
ते सूतर भणे जिण भाखीया, पिण गिर रह्या गूढ मिथ्यात ॥ ३ ॥
प्रबलपणो अहंकार नो, वले चाले उलटी रीत ।
समाध मारग सेवे नही, ते अपछदा अवनित ॥ ४ ॥
श्री जिण मारग उथपे, भाषे कुमारग जेह ।
निन्व पाषंडी त्याने कह्या, वले साभलजो विध तेह ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिण आगन्या मे]

विसुध निरदोषण मारग मुगत रा रे, ग्यांन दरसण चारित तप च्यार रे ।
ते छोड ने परीया करें कदगरो रे, ए निन्वां री सरधा ने आचार रे ।
त्याने पाषंडी निन्व जिण कह्या रे* ॥ १ ॥
ग्यांन दरसण चारित तप विना रे, जे धर्म कहे छें ते विपरीत रे ।
वले जोड करें हिंसा धर्म थापवा रे, त्यारें केडें पिण डूवे कर परतीत रे ॥ २ ॥
संवर सूं ह्कें छें करम आवता रे, निरजरा सूं कटे आंगल्य करम रे ।
दोष कारज सगला संसार नां रे, तिण मे पाषंडी थापे धर्म रे ॥ ३ ॥
ग्यांन आगम मे संका आणता रे, पिंडत वाजे मन मे अभिमान रे ।
प्रश्न पूछ्या रो जाब नें उपजे रे, जब आणें अग्यानी कूडा तान रे ॥ ४ ॥
विनो करावर्ण ने आगा घणां रे, म्हे पदवीधर छा मोटा अणगार रे ।
सतावीस गुण सू वरते वेगला रे, वले सरधा में पूरो धोर अंधार रे ॥ ५ ॥
केइ हीण आचारी कूगुर छोडने रे, सुध सरधा नें पाले वरत रसाल रे ।
त्याने कहि ए निन्व मायावीया रे, दे दे अणहूंतो भूठो आल रे ॥ ६ ॥
एहवा असाध साध कहावता रे, कपट सहीत त्यारी वात रे ।
ते तो भमण करसी ससार मे रे, उतकधी अनती पामे घात रे ॥ ७ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

केइ गुर कने भण नें गुर नें गोपवें रे, केइ प्रसिध आचार्य रो ले नाम रे ।
 केइ भूठ बोलें कहे हूं पोतें भण्यो रे, ए भारी करमां जीवां रा काम रे ॥ ८ ॥
 उस्नादिक पापंडीयां आगें भण्यो रे, पिण भूठ न बोलें उत्तम जीव रे ।
 खोटा जाण ने त्यानें छोडणा रे, ए न्याय मारग छेंसिध गति नीव रे ।
 ए अरिहंत वायक सतकर जाणजो रे* ॥ ९ ॥
 केइ सूतर सिघंत भणें अबवी कने रे, तोही पूछ्यां तो कहि दें तिण रो नाम रे ।
 पिण जाणें मिथ्याती तिण नें मूलगो रे, नही कोइ गुर चेला रो काम रे ॥ १० ॥
 सिघंत भणायो अनन्ता जीव नें रे, अनन्ता आगें भणीयो सिघंत रे ।
 गुर ने चेलों हूओं सर्व जीव नों रे, साची सरघा विन न भिटी अंत रे ॥ ११ ॥
 गघा में घाल्यो चंदन वावनो रे, ते भार तणो विभागी जाण रे ।
 जे किरिया में हीण थकां सूतर भणे रे, समक्त विण थोथा मूढ अयाण रे ॥ १२ ॥
 कोइ भणें भणावे करवा नाम नां रे, केइ प्रसंसा मान वडाइ हेत रे ।
 सूनें चित्त परमार्य पायो नही रे, ए बीज विण रहि गयो खाली खेत रे ॥ १३ ॥
 सुघ साध पें घर छोडे सूतर भणें रे, आचार सरघा में देखे चूक रे ।
 तो काण न राखे चेला गुर तणी रे, भागल जाणें तो जाअे मूक रे ॥ १४ ॥
 अजाणपणें कुगुर नें गुर करे रे, पिण ठीक पख्यां छोडें ततकाल रे ।
 त्यागी वेरागी त्यानें जिण कह्या रे, ए सांसो हूवें तो सूतर संभाल रे ॥ १५ ॥
 बले क्रोध घणो बोलें अलखामणा रे, उपसम्यो कलहो करवा त्यार रे ।
 खिमा रो मारग छोडे उभर पख्या रे, ते पिण दुख पांमें संसार रे ॥ १६ ॥
 कोइ भेपले हलका बोलें एहवा रे, मो तुल कुण छें ग्यान भंडार रे ।
 हूं जीवादिक नवतत रो निरणो कहुं रे, हूं तपसी छूं उतकछों अणगार रे ॥ १७ ॥
 एहवा अहंकारी साध भेप में रे, त्यां दीयां नरकादिक जावा सूत रे ।
 अनेरा उत्तम साध नें श्रावकां रे, जाणें आकार मात विबभूत रे ॥ १८ ॥
 कुडा भरीया जल सूं लाखां गमे रे, चंदरमा रो सगले छें प्रतिबिंब रे ।
 सुघ साध श्रावक नें एहवा लेखवे रे, आ भाली पाषंडीयां भूठी भंव रे ॥ १९ ॥
 ते मिरग ज्यूं परीया छें कुड जाल में रे, जे चारित लेनें करें अहंकार रे ।
 ते भमग करसी गाढा दुखीया थकां रे, इण भाव कूट संसार मभार रे ॥ २० ॥
 ए दिष्टंत सुलटा रों उलटों करें रे, साध नें कहें असाध एम रे ।
 ए हिज निन्व म्हां मांसू निकल्या रे, सगलां नें गिणीया प्रतिबिंब जेम रे ॥ २१ ॥
 इम कहि कुगुर कुन्द चलाय नें रे, साधां नें घालें निन्व मांय रे ।
 चंद्रमा^१ने प्रतिबिंब^२ निन्व^३ साव^४ रो रे, ए च्यारां तणो सुगजो भविगण न्याय रे ॥ २२ ॥
 कुंडा भरीया जल सूं लाखां गमे रे, चंद्रमा रों सगले छें प्रतिबिंब रे ।
 मूर्ख जाणें गिरलूं चंद्रमा रे, पिण ते तों आकासें अंतर लंब रे ॥ २३ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

प्रतिबिंब नें जे कोइ मानें चंद्रमा रे, ते तों कहिजें विकल समांन रे ।
 ज्युं गुण विण सरखें साधु भेष नें रे, ते खूता मिथ्याती पूर अग्यान रे ॥ २४ ॥
 प्रतिबिंब नें प्रतिबिंब कह्या थका रे, भूठ म लागों जाणो कोय रे ।
 सतावीस गुण विहुणा साग ने रे, असावु कह्यां थी दोष न होय रे ॥ २५ ॥
 साध री गुण री चरचा माडीया रे, जब तो कांनी दे जाये दूर रे ।
 घणां लिंग घाख्यां सू भेलप करे रे, सुघ साध ने निन्व कहिवा सूर रे ॥ २६ ॥
 घणां रे भरोसे कोइ रहिजो मती रे, सरघा ने चलगति मीढी जोय रे ।
 लोक भाषा माहि पिण इम कहे रे, धीखाघो पिण कुलडो न गयो कोय रे ॥ २७ ॥
 कोइ साधा म्हासू निकल भागल हुवे रे, केइ भागल छोडे ने हुवे छे साध रे ।
 बले थोडा घणा रो कारण को नही रे, सुघ करणी सूं पामे सदा समाध रे ॥ २८ ॥
 सुघ साधा ने छोडे सरघा विगटीयां रे, ते गिणजो पाषडो निन्व माहि रे ।
 सुघ सरघा भाले ने छोड्या भागला रे, आचार पालें ते निन्व नाहि रे ॥ २९ ॥
 पूजा सलगा उचा गोत ने रे, पाम्या छे जीव अनती वार रे ।
 जे वेरागे घर छोडे सजम लीयो रे, गरब छट्टो तो खेवो पार रे ॥ ३० ॥

ढाल : ५

दुहा

केरायत दोय निन्वां तणा, ओलखाया ह्डी रीत ।
 हिवे जमाली रा परगट कळं, ते सुणजो घर पीत ॥ १ ॥
 श्री वीर तणा सासण मभे, निन्व हूअ सात ।
 तिण मे प्रथम निन्व जमाली हूओ, तिण री विगडी सरघा वात ॥ २ ॥
 काई कीघों नें काई करणो अछें, ते प्रसिघ चावी वात ।
 काई कीघा नें मूल माने नही, तिण रे इण विघ आयों मिथ्यात ॥ ३ ॥
 सावथी नगरी नां बाग में, इण रे रोग उपनो आय ।
 जब इण सावा नें तेडी कह्यो, मांहरे करो संथारो जाय ॥ ४ ॥
 जब सावां करणो मांड्यो साथरो, काई कीघो ने करे तिणवार ।
 जब जमाली साधा ने कहे, अंजे कीयो के न कीयो संथार ॥ ५ ॥
 जब सावां कह्यो न कीयो करां छां साथरो, तव आयो जमाली चलाय ।
 इण पूरो न दीठो साथरो, तिण सू उंवी विचारी मन मांय ॥ ६ ॥
 भगवत कहे करवा मांडीयो, तिण ने कीघो कहे साख्यात ।
 वले चलवा मांड्यां ने चलीयो कहें, ते एकंत भूठी वात । ७ ॥
 तिण भगवंत नें भूअ कहें, पडवजीयो मिथ्यात ।
 तिणरा केडायत उठीयां, ते सुणजो विख्यात ॥ ८ ॥

ढाल

[देशी—आ अणुकम्पा जिश आगन्या में]

काई कीघां नें काई करणो छें वाकी, तिण कीघा कारज नें जे नही मानें ।
 इसडी सरघे ते जमाली रा केडायत, ते बुधवंत आगे किण विघ रहसी छानें ।
 आ सरघा जमाली निन्व री* ॥ १ ॥
 पांच सेर तणी रोटी करणी छें, तिण मे सेर तणी कीघी छें रोटी ।
 सगली कीघां विनां कहे कीघी न कहणी, तिणरी पिण सरघा जावक खोटी ॥ आ० २ ॥
 चोवीस हाथ रो थान वणवा मांड्यो, तिण मांहे वणीयो छे एक हाथ ।
 आखो वणीया विनां कहे वणीयो न कहिणो, तिणरो पिण जाणजो ओहिज मिथ्यात ॥ ३ ॥
 घर हाट हवेली करवा मांड्यां, काई कीघा पिण न कीयां छे पुरा ।
 अधूरा कीयां ने कहे कीयां न कहिणा, त्यानें पिण जाणजो जिणजी री सरघा सूं दूरा ॥ ४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

दस कोस तणे गामतरें चाल्यो,
 थेट पोहता विनां कहे चाल्यो न कहिणो,
 कोइ मास खमण चोखे चित कीधो,
 जमाली रे लेखे मास खमण न भागो,
 लाय लागी ने लाय लागी नही कहिणी,
 इण अनुसारें छे बोल अनेक,
 सुदंसणा भगवत री वेटी,
 तिणरें सरधा जमाली री आई,
 ते आहार करती थी परेच वाधे ने,
 त्याने ढीक श्रावक समभावण काजें,
 जब केइ आर्यां कहे परेच वले छे,
 परेच बली कहां थारी खोटी हुवें सरधा,
 इम सुदसणा सामल ने डरपी,
 वीर कने सुघ हुइ आलोए,
 आ प्रतख खोटी जमाली री सरधा,
 जमाली रा थका भगवत रा बाजे,
 दोष सेव्यों सेवे नें सेवसी आगें,
 वले करम तणे वस उधा बोले,
 किण ही साध सावद्य किरतब कीधो,
 जे जे होसी जमाली रा केडायत,
 हिंसा कीया पेंहलो वरत भागे,
 जमाली रा केडायत कहें भेष धारी,
 अदत लीया तीजो वरत भागे,
 तिण भागा ने भागो न सरखें अग्यानी,
 उपगरण मरजादा सूं डघका राखें,
 बंधो करावें दीख्या मो आगे लीजें,
 किवाड जड्या दोप लागो न सरखें,
 निसक थका पापी जडें उधाडे,
 ठाम ठाम थानक माडी ने वेठा केड,
 त्यारो सावपणो भागो नही सरखे,
 असणादिक नित एकण घर वेहख्या,
 केइ आहार पाणी नित घोवण वेहरें,

काई चाल्यो ने काई चालणो सेष ।
 आ पिण खोटी सरधा जमाली री टेक ॥ ५ ॥
 तिण गुणतीसमे दिन एक खाधी रोटी ।
 तिण सू जमाली री सरधा खोटी ॥ ६ ॥
 पूरो बलीया पछे कहे बलीयो ताय ।
 आ खोटी सरधा पूरी केम कहवाय ॥ ७ ॥
 तिण वीर कने लीयो सजम भार ।
 ते पिण हुइ जमाली री लार ॥ ८ ॥
 ते आर्यां सहीत वेठी थी माय ।
 अग्न सू परेच ने दीधी लागाय ॥ ९ ॥
 जब ढीक श्रावक बोल्यो छे एम ।
 पूरी बली विनां बली कहो छो केम ॥ १० ॥
 जमाली री सरधा छोडी खोटी जाण ।
 प्राछित ले पाछी आई ठिकाण ॥ ११ ॥
 ते सरधा भेष घाख्यां रे अई ।
 ते पिण विकला ने खबर न काई ॥ १२ ॥
 तिणरोई चारित सरखें नही भागों ।
 कहे वरत न भागो पिण दोषण लागों ॥ १३ ॥
 पाच महावरत मे दोषण लागो ।
 तिणरो संजम सरखे नहीं भागो ॥ १४ ॥
 भूठ बोल्यां दूजो वरत भागो ।
 वरत भागों नही पिण दोषण लागों ॥ १५ ॥
 विषे परिणाम आर्यां चोथो वरत भागो ।
 ते पिण जमाली रे केडें लागो ॥ १६ ॥
 थानकादिक उपर ममता रही लागों ।
 तिणरो पाचमों वरत न सरखें भागो ।
 ते निन्वा जमाली रा केडायत* ॥ १७ ॥
 लागो सरखें तोइ वरत भागों न सरखें ।
 रात दिवस राक जीवा ने मरदे ॥ ते० १८ ॥
 आघाकरमी केइ मोल रा लीघा ।
 त्या नरक सू सनमुख डेरा दीधा ॥ १९ ॥
 वीर कहां तिण ने अणाचारी ।
 तिण ने सरखें मूढ सुघ आचारी ॥ २० ॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

पुस्तक पांना वले लोट नें पातरा,
 थोडो घणों त्यांनं मोल बतावें,
 जीमणवार आरा माहें जावें,
 सूतर माहि वरज्यो तोही नहीं मानें,
 गृहस्थ रें घरे मेले पोथी पांना,
 जीवां रा जाल जमें तिण माहें,
 श्री पारसनाय तणी साधवीयां,
 ते भिष्ट हुइ हाथ पग घोई नें,
 त्यां समकत सहीत साधपणों खोयो,
 समदिष्टी विमांणीक देवता हुवे छें,
 भेषधारी भिष्ट भागल होय बेंठा,
 त्यांरी विकलाई देव फिरे लोक त्यांसू,
 एहवी भागल विरावक नें सरधें साधवीयां,
 त्यांरा विनां वीयावच में धर्म थापें,
 सेल्ग राय ऋपी ढीलों पख्यो जद,
 वीर कह्यो इसडो साध हुवें तो,
 हेल्वा निदवा जोग कह्यो सेल्ग नें,
 तिणरो वीयावच पंथक कीधीं,
 उस्नादिक वांदां नसीत रे माहे,
 उस्नादिक पांचूं दोष सेल्ग में पावें,
 सेल्ग ने पारसनाय तणी साधवीयां,
 यांरा पूरा भागां विण भागां न सरधें,
 यांनं कहि कहि ने क्तिरो एक कहिजें,
 यांनं वुववंत जाण लेसी थोडा में,

सानी करें साध मोल लरावे ।
 वले साध रो मूरख विडद घरावें ॥ २१ ॥
 बेठी पांत मां सूं पातरा भर ल्यावें ।
 वले लोकां माहें साध ज्यू पूजावें ॥ २२ ॥
 वले पडिलेह्यां विनां राखें वरस छ मासों ।
 एहवा साध वाजे त्यांरो दुरगत वासों ॥ २३ ॥
 दोय सों ने छ साधपणो विगारी ।
 त्यांनं साधवीयां सरधे भेषधारी ॥ २४ ॥
 समकत रही हुवें तो देवी हुवें नाहि ।
 त्यांनं साध सरधें ते जमाली रे माहि ॥ २५ ॥
 ते आप में दोषां रो पार न देखें ।
 त्यांनं साधवीयां सरधें इण लेखे ॥ २६ ॥
 त्यांनं वांदां पूज्यां कहें एकंत धर्मों ।
 ते भूला मिथ्याती एकंत भर्मों ॥ २७ ॥
 उस्नो कुसीलीयो कह्यो भगवंत ।
 उतकष्टों रुले तो काल अनंत ॥ २८ ॥
 तिणनें वांदां वंवे पाप करमो ।
 तिण नें भेषधारी कहे छें धर्मों ॥ २९ ॥
 च्यार महीनां रो प्राच्छित आवें ।
 तिण ने वांदां धर्म मिथ्याती बतावें ॥ ३० ॥
 यांरा साधपणा सगला रा भागां ।
 त्यांनं समकत विहूणा कहिजें नागां ॥ ३१ ॥
 यांरी सरधा रो छेह न आवे बेगो ।
 यांरी खोटी सरधा नें भूठ रो ठेगो ॥ ३२ ॥

ढाल : ६

दुहा

मेघधारी विगडायल जेंन रा, ते मूला सूतर वांच ।
उंधा अर्थ करे घणां, त्यांरो विकल माने ले साच ॥ १ ॥
सुघ साधां ने निन्व कहे, ले ले सूतर रो नांम ।
पोतें केडायत निन्वा तणा, ते पिण खबर नही छें तांम ॥ २ ॥
त्यांरी सुघ बुघ तो चलत्री रही, तिण सूं बोले आल पंपाल ।
त्यारे न्याय निरणो घट में नही, तिण सूं भापे अग्यांनी अलाल ॥ ३ ॥
निन्व कहिजे केहनें, किण नें कहिजे सुघ साध ।
समचें ओलखाउं दोनूं भणी, त्यारी विरलां परसी लाध ॥ ४ ॥

ढाल

[भव जीवां तुम्हें जिण धर्म ओलखो]

एक धर्म कहे जिण आगना मभे, एक कहे रे धर्म जिण आगना बार ।
यामें साची सरघा छे केहनी, किण री भूठी रे सरघा घोर अंधकार ।
बुघवंता यामें निन्व कहिजें केहने* ॥ १ ॥
धर्म कहे श्री जिण आगना मभे, ते केडायत रे श्री जिणजी रा जाण ।
जिण धर्म जिण आगन्या बारे कहे, ते केरायत रे निन्वा रा पिछाण ॥ बु० ॥ २ ॥
जिण करणी में जिण आगना नही, तिण करणी मे रे साध सामे मून ।
तिण में एक कहें मिश्र धर्म हवो, एक कहें रे ए तो करणी जबून ॥ ३ ॥
साध मून सामें पिण बोले नही, तिण करणी नें रे सावद्य जाणें तो ठीक ।
मिश्र कहे ते केडायत निन्वां तणा, तेरासीया रे जिम जाणजों तहतीक ॥ ४ ॥
आहार पांणी कपडादिक ऱाण ने, जिण आग्या सूं रे भोगवें छें सुघ साध ।
तिण में एक कहें पाप लागे नही, एक कहे रे इविरत नें परमाद ॥ ५ ॥
साध आहार पांणी कपडादिक भोगव्या, पाप न कहें रे ते तो जिणजी रा साध ।
पाप कहे ते पाषंडी कें निन्वां, त्यारे होसी रे भव-भव मे असमाध ॥ ६ ॥
एक कहे जिण आगना दीये तिहां, तिण करणी में रे पाप करम लागें नाहि ।
एक कहे जिण आगना दीयें तिहां, पाप लागे रे तिण करणी रे माहि ॥ ७ ॥
जिण आगना दीयें तिण करणी मभे, पाप लागे रे न कहें ते साची वात ।
जिण आगना सहीत करणी मभे, पाप कहे छे रे तिण रा घट में मिथ्यात ॥ ८ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

एक कहे छें असुघ थांनक भोगवें, ते तो साध रे कदे नही बंदणीक ।
 एक कहे बंदणीक असुघ भोगव्यां, यां दोयां में रे किण री सरधा ठीक ॥६॥
 असुघ भोगवे ते तो बंदणीक नही, आ तो जाणो रे सुघ साध री वाय ।
 तिण ने बंदणीक तो विकल कहें, ते तो चोडें रे निन्वां री पात मांय ॥१०॥
 एक कहे नव तत ओलख्यां पछें, दिख्या देई रे भेलो करणो आहार ।
 एक कहे नव तत ओलख्यां विनां, दिख्या देणी रे डील न करणी लिगार ॥११॥
 नवतत ओलखाय देंगो साधपणो, इम भाखें रे ते तो जिणजी रा संत ।
 नवतत ओलख्या विनां देंगो कहें, इम भाखें रे ते तो निन्वां री पंत ॥१२॥
 एक कहे चोथो वरत भांगें तेह नें, दिख्या देई रे छोटी करणो ताहि ।
 एक कहे दिख्या देई वडो राखणो, आगा ज्यूं रे वांदणा गण मांहि ॥१३॥
 वरत भांगां दिख्या देई छोटीं करें, आ तो साची रे सरधा छें ठीक ।
 वरत भांगाई वडा रो वडो राखीयो, आ निन्वां री रे सरधा जाणों तहतीक ॥१४॥
 एक कहें पाप कीचां करावीयां, भलो जाण्यां रे तीनूं करणां छें पाप ।
 एक कहें पाप कीचां पाप छें, करायां रे दीयां मिश्र धर्म थाप ॥१५॥
 पाप कीचा करायां भलो जाणीयां, यां तीनां नें रे पाप कहें ते वीर वेण ।
 कीचां पाप करायां मिश्र कहें, तिण निन्वां रा रे फूटा अभितर नेंण ॥१६॥
 एक धर्म कहें छें विरत में, एक कहें रे धर्म अविरत में तांण ।
 यामें कुण निन्व नें कुण साध छें, यांरी पिण रे कर लीजों पिछांण ॥१७॥
 विरत माहें धर्म कहें तेहनीं, सरधा चोखी रे सूतर रे न्याय ।
 इविरत माहें धर्म कहें तेहनीं, सरधा खोटी रे निन्वां री छें ताय ॥१८॥
 एक कहे देवगुर धर्म कारणे, नहीं हणवा रे छकाय रा जीव ।
 एक कहे देवगुर धर्म कारणे, छकाय नें रे हणवी निस दीव ॥१९॥
 देवगुर धर्म काजे हणवा नही, जीवां री रे छवोंई काय ।
 इम कहे ते केडायत वीर नां, हणवा कहे रे ते तो निन्वां रा वाय ॥२०॥
 एक कहें टोला सू न्यारा तेहनें, नहीं वांदणा रे विण काढ्यां निकाल ।
 एक कहे यांरा कह्यां सू वांदणा, यां दोयां में रे किण भांगी जिण पाल ॥२१॥
 टोला सू न्यारा कीयां तेहनें, नही वादे रे विण काढ्यां निकाल ।
 तिण धर्म ओलख्यो जिणराज रो, वांछा तिण रें भांगी जिण वांधी पाल ॥२२॥
 एक कहें अवकत फिरे एकलो, तिण एकल नें रे साध सरधणों नाहि ।
 एक कहें अवकत फिरें एकलो, तिण नें साध रे सरधें पडणों पगां माहि ॥२३॥
 अवकत एकल फिरें तेहनें, साध न सरधें ते तो जिणजी रा साध ।
 अवकत एकल नें साध लेखवें, ते तो निन्व रे झूठों करे विषवाद ॥२४॥

साध नें बांढण जाता थका, मारग मे रे तस थावर री हुवें घात ।
 तिण रो एक तो पाप लागो कहे, एक कहे रे पाप नही अस मात ॥ २५ ॥
 तस थावर मूआ रो पाप लेखवे, ते तो सरघा रे सुघ साधा री अटल ।
 जीव मूआ त्यारो पाप न लेखवे, त्याने जाणो रे निश्चे निन्वा असल ॥ २६ ॥



रत्न : ६

मिथ्याती री करणी री चौपई

ढाल : १

ढुहा

अरिहत सिध ने आयरीया, उवभाया सगला साध ।
मुगत नगर ना दायका, ए पांचू' पद अराव ॥ १ ॥
नमूं वीर सासण धणी, सासण नायक साम ।
त्या माथे हाथ देइ करी, साख्या घणा ना काम ॥ २ ॥
त्या श्री जिण मुख सूं भाखीया, आगम सार सिधंत ।
त्यांरो हलूकमीं निरणों कीयो, त्यां पायो छें मारग तंत ॥ ३ ॥
केई सूतर वाचे जिण भाखीया, पिण पूरा मूढ अयाग ।
उंधा उंधा अर्थ करे, ते ववेक विकल समाण ॥ ४ ॥
पेहला गुणठांणा रो घणी, वेंराग मन मांहे आंण ।
दांन सीयल तप भावनादिक, निरवद करणी करें जांणजाण ॥ ५ ॥
तिण करणी नें मूढ मूखं कहे, मिथ्याती री करणी नही सुध ।
उणरे संसार वधें करणी कीयां, उणरे प्राकम सर्व असुध ॥ ६ ॥
जो उ घणी घणी करणी करें, तो घणों घणो वधें संसार ।
तिणरी सरधा परगट कळं, ते सुणजो विसतार ॥ ७ ॥

ढाल

[आ अंनुंकम्पा जिण आगन्या मे]

केई परकत रा भद्रीक मिथ्याती, वले विनेवंत साधां रा ताहि ।
दया तणा परिणाम छे चोखा, वले मच्छर नही तिणरा घट माहि ।
इण निरवद करणी रो निरणो कीजें ॥ १ ॥
तिणरे घर साधूजी गोचरी आया, ते साध ने देख हुवो हरख अपार ।
सात आठ पग सांह्यो आय ने, सीस नमाय वाद्या वाहंवार ॥ २ ॥
पछे रसोडा घर मांहे लेजाए, प्रतिलाभ्यो असणादिक च्याहंइ आहार ।
तिणरो असुध प्राकम सरधें अग्यांनी, वले कहें तिणरें वधीयो संसार ॥ ३ ॥
मिथ्याती साधां नें असणादिक देवें, तिणरों तो उ प्राकम असुध जाणे ।
तो पिण उणरें घर जाए अयानी, असणादिक किण लेखें आणें ॥ ४ ॥
वले वस्त्र पातर आहार नें पाणी, साधां ने दीयां जाणे छे बधतो संसारो ।
तेहीज तिणरो असणादिक वेहरें, तो उणरें लेखें उ कांय पाडें छें धाडो ॥ ५ ॥

जिण नें आप जाणें छें निश्चें मिथ्याती,
असुघ प्राकम जाणें छें, त्यांरो,
जो मिथ्याती उणने असणादिक देवें,
उणरी करणी नें प्राकम असुघ जाणें छें,

ज्यारों आहार पांणी कपडादिक लेवें,
आप रा मुतलब काज ओरां नें डबोवें,
मन गमतों चोखो चोखो आहार वेंहरायों,
तिणरों दान नें प्राकम असुघ जाणें छें,
असणादिक नित ल्यावे छें घणा घरां रो,
नित नित घणां रें ससार वघारें,
इण री सरघा रे लेखें मिथ्याती रा घर रो,
वले सेज्या संधारो वस्त्र नें पातर,
जो अनेरी सरघा रें उण नें आय पूछे,
थानें दान दीयां करणी सुघ कं असुघ,
आप नें भारी भारी म्हें वस्त्र वेंहराया,
म्हें कल्पें ते वस्त आप नें दीधी,
आप नें दान दीयां री सुघ करणी हुवें,
जो सुघ नही हुवें तों असुघ कहां थे,
सुघ करणी कहां निज सरघा उठें छें,
प्रश्न पूछ्यां रो जाब तो देणी न आवें,
जब उ कहे म्हें पुन री तो पूछा न कीधी,
भली करणी कहां पुन नें धर्म जाणें,
थानें दान दीयां आछी करनी न जाणों,
तिण सू आप करणी हुवे ते बतावो,
हूं कहवायां जिनां आप ने नहीं छोडूं,
थानें दान दीयां आछी करणी कहो,
थानें दान दीयां आछी करणी न कहो तो,
म्हें थाने दान दीयां ते करणी,
म्हे तो म्हारे कारण पूछा करी छें,
थानें दान दीयां री भूडी करणी छें,
थे साध थइ इसरा काम कीचां,

त्यांरों असणादिक जांणी जांणी नें ल्यावें ।
तो उणरें लेखें उ ठागों कांय चलावें ॥ ६ ॥
तो ओ तूरत लेवण नें त्यांरी होवें ।
तो साध थइ ओरां नें कांय डबोवें ।
इण मूढ मती रो निरणों कीजो* ॥ ७ ॥
त्यांरें सांप्रत जाणें छें वघतो संसार ।
घिग घिग छें तिणरो जमवारो ॥ ६० ॥
वले मही महीं चोखो कपडो वेंहरावें ।
वले तिण हीज दान नें तेहीज सरावें ॥ ६ ॥
त्यां सगलां रें जाणें छें वधीयां संसार ।
ते तो नियमाइ निश्चें नही अणगार ॥ १० ॥
असणादिक वेंहरणों नहीं कांड ।
तिण मिथ्याती रो जाबक वेंहरणों नांही ॥ ११ ॥
म्हारों असणादिक थे वेंहरी वेंहरी नें ल्यावों ।
म्हारें फल लागें ते जयातथ वतावों ॥ १२ ॥
मनगमतों वेंहरायो म्हें आहार नें पांणी ।
म्हें तो आप नें दान दीयां धर्म जांणी ॥ १३ ॥
तो सुघ करणी मुख सूं कही आप ।
यां दीयां में एकण री करो थाप ॥ १४ ॥
असुघ करणी कहां तो उ घेखी थावे ।
जब पुन कहे नें उ पिडों छुडावें ॥ १५ ॥
थानें दान दीयां री करणी कहो आप ।
भूडी कहां तो जाण सूं एकंत पाप ॥ १६ ॥
थानें दान दीयां करणी जाणों थे भूडी ।
हिवें मती करों आप गला गोलो ।
मोनें पिण आप निपटम जाणो भोलो ॥ १७ ॥
तो हूं जाण सूं थानें मोटा अणगारो ।
हूं जाण लेसूं थाने पिण दगादारो ॥ १८ ॥
आछी जाणो तो चोडें कहिदो आछी ।
संका कांय आपो थें कहितां साची ॥ १९ ॥
तो थे ठा ठा नें म्हारो स्वाधो छें मालों ।
थांरों परभव में होसी कूण हवालो ॥ २० ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

थानें दान दीया आछ्ठी करणी न जाणों,
 वले भूडी करणी कीया पुन वतावों,
 पुन सरघो थे भूडी करणी मे,
 भूडी करणी कीयां निश्चे पाप लागे छे,
 जो इसडो मिले कोइ पूछण वालो,
 जब अकल विकल थइ उघो बोले,
 पेहले गुणठाणे दान साधा नें देइ नें,
 तिण दान रा गुण देवता पिण कीघां,
 सुपातर दान री कोइ करे दलाली,
 सुपातर दान री कोइ करे परससा,
 पेहले गुणठाणे सील पाले छे,
 तिणरो सील असुघ जाणे अग्यानी,
 पेहलें गुणठाणे तपसा करे छे,
 वले हरी नीलोतरी त्याग करें छे,
 दान सील तप तणी भावना भावे,
 जो उ घणो घणो वेराग करे तो,
 निरवद करणी करे पेहले गुणठाणे,
 इसडी परूपणा करे अग्यानी,
 पेहले गुणठाणे निरवद करणी करे छे,
 अतिचार लागो कहे समकत माही,
 निरवद करणी कोइ करे मिथ्याती,
 तिणने भगवत पिण आगना नही देवे,
 मिथ्याती री करणी माहे गुण नही जाणे,
 वले तेहीज मिथ्याती ने सूस करावे,
 वले कहि कहि मिथ्याती ने हरी छुडावे,
 उपवास वेलादिक कहि कहि ने करावे,
 वले मिथ्याती ने उपदेस देई ने,
 राती भोजनादिक रो पिण त्याग करावे,
 वले वखाण सुणावें छे तिणनें,
 संधारो पिण करावे उपदेस देइने,
 निरवद करणी करे पेहले गुणठाणे,
 वले असुघ प्राकम जाणे छे तिणरो,
 ३३

थानें दान दीयां करणी जाणो थे भूडी ।
 ते निश्चे न चाले खोटी हूडी ॥ २१ ॥
 तो पाप होसी किण करणी माय ।
 ते पिण थाने समझ न काय ॥ २२ ॥
 तो पग पग सरघा माहे अटकावें ।
 पिण पूछ्या रो जाब पुरो नही आवे ॥ २३ ॥
 परत ससार कीघो छे जीव अनत ।
 ठाम ठाम सूतर मे कह्यो भगवंत ॥ २४ ॥
 वले हर कोइ देवे सुपातर दान ।
 या तीना री आछ्ठी करणी कही भगवान ॥ २५ ॥
 वेराग सहित चोखे परिणाम ।
 वले ससार वधीयो जाणे छे ताम ॥ २६ ॥
 उपवास वेलादिक चोखे परिणाम ।
 ते सगलाई असुघ कहे छे ताम ॥ २७ ॥
 वले तिणने ससार लागे खारो ।
 उ घणो घणो जाणें वधतो ससारो ॥ २८ ॥
 तिण करणी ने जाबक जाणे असुघ ।
 तिणरी भिष्ट हुइ छे सुघ नें बुव ॥ २९ ॥
 तिणरी करणी सराया मे दोषण जाणे ।
 तिणरो न्याय जाण्या विण मूर्ख ताणे ॥ ३० ॥
 तिणरे कहे गुण नीपजे नही काइ ।
 एहवी कहे छे अग्यानी परपदा माही ॥ ३१ ॥
 सरावे तिणने पिण दोष वतावे ।
 त्यारा बोल्या री परतीत किण विघ आवे ॥ ३२ ॥
 जमीकदादिकना पिण सूस करावे ।
 तेहीज तिण करणी ने असुघ वतावें ॥ ३३ ॥
 कुसीलादिक छोडें तो छोडावें ।
 छकाय नें चवदे नेमादिक सीखावे ॥ ३४ ॥
 वले कहि कहि ने तिणनें ग्यान सीखावे ।
 तेहीज तिणरी करणी असुघ वतावे ॥ ३५ ॥
 तिणरी असुघ करणी कहें छे वारुबार ।
 वले करणी कीया जाणे वधीयो संसार ॥ ३६ ॥

समकत रो परमाद मिथ्याती री करणी,
 बले खोटा पचखाण कहें छे तिणरा,
 इसडी सरघा ताण ताण परूपें,
 कांम पढ्यां तिणरी करणी तेहीज सरावें,
 निरवद करणी करें समदिष्टी,
 यां दोयां रा फल आछा लागें,
 निरवद करणी नें मूढ नखेधे,
 सवत अठारे वरसैं सेंताले,

यां दोयां नें वरोवर कहें छें तांम ।
 तिणरी करणी नें जाबक जाणें अकांम ॥ ३७ ॥
 बले तेहीज मिथ्याती नें त्याग करावें ।
 एक धारा विकलां सूं बोलणी नावें ॥ ३८ ॥
 तेहीज करणी करें मिथ्याती तांम ।
 ते सूतर में जोवों ठांम ठांम ॥ ३९ ॥
 तिण उपर जोड कीधी माघोपुर सहर मकार ।
 चेत सुद छठ नें सुकरवार ॥ ४० ॥

ढाल : २

दुहा

जीव अजीव जाणे नही तेहनें, पेहलें गुणठाणे कह्यो जिणराय ।
त्यारा पचखांण दुपचखाण कह्या, तिणरो मूढ न जाणे न्याय ॥ १ ॥
पेहले गुणठाणे विरत न नीपजे, तिण लेखे कह्या दुपचखाण ।
पिण निरजरा लेखे पचखांण निरमला, उतम करणी बखाण ॥ २ ॥
पेहले गुणठाणे करणी करे, तिणरे हुवे छे निरजरा धर्म ।
जो घणो घणो निरवद प्राकम करें, तो घणा घणा कटे छे कर्म ॥ ३ ॥
पेहले गुणठाणे दान ददा थकी, कीयो छे परत ससार ।
थोडासा परगट करू, ते सुणजो विस्तार ॥ ४ ॥

ढाल

[पाखड वधसी आरे पाच मे]

सुलभ थो सुमुख नामे गाथापती रे, तिण प्रतिलाभ्या सुदत्त नामे अणगार रे ।
तिण परत ससार कीयो तिण दान थी रे, विपाकसूतर मे छें विस्तार रे ।
ए निरवद करणी मे छे जिण आगना रे* ॥ १ ॥
सुमुख गाथापति ज्यू दसा जणा रे, त्या पिण प्रतिलाभ्या अणगार रे ।
त्यां परत संसार कीयां सगला जणा रे, विपाक मे जूवो जूवो विस्तार रे ॥ ए० २ ॥
जब देवतां वजाइ थी देवदुंदभी रे, तिण दान रा कीया घणा गुणग्राम रे ।
थे मिनष जन्म तणों लाहो लीयो रे, जस कीरत कीधी छे तिण ठाम रे ॥ ३ ॥
केइ मूढ मिथ्याती करे परूपणा रे, मिथ्याती तो न करे परत संसार रे ।
जो मिथ्याती दान देवे सावा भणी रे, तिण करणी मे सार नही लिगार रे ॥ ४ ॥
सुमुख ने आदि देइ दसा जणा रे, त्यां दान थी न कीयो परत संसार रे ।
ते साध ने देखे ने हरखत हूआ रे, उपसम समकत आइ तिणवार रे ॥ ५ ॥
त्या उपसम समकत थी दसा जणां रे, सगलाइ कीयो परत ससार रे ।
ते समकत अतरमुहरतमे वमी रे, पछे मिनष आजखो बाघ्यो तिणवार रे ॥ ६ ॥
इसडी वातां मन सूं उठाय ने रे, दान री करणी कहें असुध रे ।
ते सके नही सूतर उथापतां रे, मिष्ट हुइ छे तयारी बुध रे ॥ ७ ॥
साप्रत सूतर माहे इम कह्यो रे, दानथी कीयो परत ससार रे ।
मिनष रो आजखो बाघ्यो दानथी रे, जोवो विपाक सूतर ममार रे ॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

सुलभ थो विजय नामें गायापति रे, तिण प्रतिलाभ्या भगवंत श्री महावीर रे।
 तिण परत संसार कीयो तिण दानथी रे, दान सूं पांम्यो भवजल तीर रे ॥ ९ ॥
 आणंद नें सुदंसण विजय नीपरें रे, बले बहुल वाहाण तिमहीज जाण रे।
 त्यां वीर ने दान देइ च्यारूं जणां रे, परत संसार कीयो छे देता पाण रे ॥ १० ॥
 यां च्यारू रे सोनइयां री विरखा हुइ रे, पांच दरव परगट्या तांम रे।
 तिहा देव वजाइ देवदूबभी रे, यां च्यारां रा कीयां घणा गुणग्राम रे ॥ ११ ॥
 बले घिन घिन कह्यो छे त्यानें देवता रे, थे सफल कीयो मानव अवतार रे।
 दान निरदोषण देइ वीर नें रे, मिनष नो जीतव दीयो सुघार रे ॥ १२ ॥
 जस कीरत कीधी त्यांरी देवता रे, बले मिनषा पिण कीयां घणा गुण ताहि रे।
 तिणरो विस्तार कह्यो छें अति घणो रे, भगोती रा पनरमा सतक रे माहि रे ॥ १३ ॥
 त्यानें दान दीयो छे मिथ्याती थकें रे, मिथ्याती थकां कीयो परत संसार रे।
 झण करणी री जिणजी री छें आगना रे, तिण करणी में अवगुण नही लिंगार रे ॥ १४ ॥
 विजे गायापती आदि च्यारूं जणा रे, त्यां दान थी न कीयो परत संसार रे।
 ते पिण साघ ने देखी हरखीया रे, उपसम समकत आइ तिणवार रे ॥ १५ ॥
 त्यां उपसम समकत पामी थी च्यारूं जणां रे, सगलाइ कीयो परत संसार रे।
 देव तणो आउखों बांधीयो रे, ए मिथ्याती नही हूंता तिणवार रे ॥ १६ ॥
 इसडी वातां मन सूं उठाय नें रे, दान री करणी कहे असुघ रे।
 ते सके नही सूतर उथापता रे, भिष्ट हुइ छे त्यांरी बुव रे ॥ १७ ॥
 सांप्रत सूतर माहे इम कह्यो रे, दान थी कीयो परत संसार रे।
 देव आउखो बांध्यों दान थी रे, भगोती रा पनरमा सतक मकार रे ॥ १८ ॥
 घणा मिथ्याती श्री भगवानं ने रे, हरख सूं दीयो निरदोषण दान रे।
 तिण दान री करणी नें कहे असुघ छें रे, त्यां विकलां रा घट मे घोर अग्यांन रे ॥ १९ ॥
 अनंता तीथंकर हूआ तेहनें रे, त्यानें हरख सूं दीयो अनता दान रे।
 त्यां सगलां री करणी कहे असुघ छें रे, ते भवभव में होसी घणा हिरांन रे ॥ २० ॥
 रेवती वेहरायो विजोरा पाक नें रे, तिण दान सूं कीयो परत संसार रे।
 बले देव आउखों बांध्यों दान थी रे, ते विजय ज्यूं जाण लेजो विस्तार रे ॥ २१ ॥
 जिग नें वाडे हरकेसी साघ नें रे, ब्राह्मणां दीयो निरदोषण दान रे।
 तिण दान री जस महिमा कीधी देवतां रे, ते सूतर माहें गूंथ्यो भगवानं रे ॥ २२ ॥
 मिथ्याती अनंता मातर दान थी रे, निश्चेइ कीयो परत संसार रे।
 ए वीर ना वचन उथापें पापीया रे, भूठ बोउ नें हूआ त्यार रे ॥ २३ ॥
 सीले आचार करें सहीत छें रे, पिण सूतर नें समकत तिणरें नाहि रे।
 तिणनें आराधक कह्यो देसथी रे, विचार कर जोवो हीया माहि रे ॥ २४ ॥

देस थकी तो आराधक कह्यो रे, पेहले गुणठाणे ते किण न्याय रे ।
 विरत नही छे तिणरे सर्वथा रे, निरजरा लेखे कह्यो जिणराय रे ॥ २५ ॥
 जो पेंहले गुणठाणे असुध करणी हुवें रे, तो देस आराधक कहिता नाहि रे ।
 ते विस्तार भगोती सतकज आठमे रे, ए चोभणी दसमा उद्देसा माहि रे ॥ २६ ॥
 देस आराधक करणी जिण कही रे, ते करणी छे जिण आग्या माय रे ।
 कर्म कटे छे तिण करणी थकी रे, तिणने असुध कहे ने वूडो काय रे ॥ २७ ॥
 तामलीतापस तप कीधो घणो रे, साठसहस वरसा लग जाण रे ।
 वेले बेले निरतर पारणो रे, वेंराग भावे सुमता आण रे ॥ २८ ॥
 आहार बेहरी ने ल्यायो तेहने रे, पाणी सू घोयो इकवीस वार रे ।
 सार काढे ने कूकस राखीयो रे, एहवो पारणे कीयो आहार रे ॥ २९ ॥
 तिण सथारो कीयो भला परिणांम सू रे, जब देवदेवी आया तिण पास रे ।
 त्यां नाटक पाडे विवध परकारदा रे, पछे हाथ जोडी करे अरदास रे ॥ ३० ॥
 म्हे चमरचचा राजघ्यानी तणा रे, देवदेवी हूआ म्हे सर्व अनाथ रे ।
 इद्र हूतो ते म्हारो चव गयो रे, थे नीहाणो कर हुवो म्हारा नाथ रे ॥ ३१ ॥
 इम कहे ने देवदेवी चलता रह्या रे, पिण तामली न कीयो नीहाणो ताय रे ।
 तिण कर्म निरजरीया मिथ्याती थका रे, ते इसांण इद्र हुवो छे जाय रे ॥ ३२ ॥
 ते देवचवी ने होसी मानवी रे, महाविदेह खेतर मभार रे ।
 ते साव थई ने सिवपुर जावसी रे, ससारनी आवागमण निवार रे ॥ ३३ ॥
 इण करणी कीधी छे मिथ्याती थके रे, तिण करणी सू घटीयो छे ससार रे ।
 इद्र हुवो छे तिण करणी थकी रे, इण करणी सूं हुवो एकाभवतार रे ॥ ३४ ॥
 जो तामलीतापस तप करतो नही रे, तो तपसा विण इद्र हूतो नाहि रे ।
 एकावतारी पिण हूतो नही रे, विचार करे देखो मन माहि रे ॥ ३५ ॥
 जो निरवद करणी मिथ्याती करे रे, ते पिण कर्म करे चकचूर रे ।
 तिण निरवद करणी ने कहे असुध छे रे, तिणरी सरधा मे कूड कूड मे कूड रे ॥ ३६ ॥
 तामली बालतपसी तेहनी रे, करणी तणो करो निस्तार रे ।
 ए भगोती सूतर रे सतकज तीसरे रे, पेहला उद्देसा मे विस्तार रे ॥ ३७ ॥
 असोचा केवली मिथ्याती थकां रे, छठ छठ तप कीयो निरतर जाण रे ।
 वले लीधी सूर्य साहूी आतापना रे, वाह दोनूड उची आण रे ॥ ३८ ॥
 परकत रो भद्रीक ने वनीत छे रे, उपसतपणो घणों छे ताहि रे ।
 क्रोध मान माया ने लोभ पातला रे, मांन ने मर्द लीयो तिण माहि रे ॥ ३९ ॥
 इद्री ने वस कर लीधी जांण ने रे, वले घणा छे गुण तिण माहि रे ।
 इसरा गुणा सहीत तपसा करे रे, करमा ने पतला पाडे छे ताहि रे ॥ ४० ॥

इम करतां एकदा प्रस्तावें तेहनां रे, आया सुभ अधवसाय परिणाम रे।
 वले चढती चढती लेस्या विमुध छे रे, विषय विकार तणी नहीं हाम रे ॥४१॥
 तदावर्णी कर्म पयउपसम हुवा रे, करवा लागो ते सुध विचार रे।
 न्याय मारग री करतां गवेषणा रे, विभंग अनांग उपजें तिणवार रे ॥४२॥
 जो थोडो जाणे विभंग अनांग सू रे, आंगुल रे असंख्याता में भाग रे।
 उतकष्टें जाणे नें देखे तैह सू रे, असंख्याता जोयण सहस रो भाग रे ॥४३॥
 वले जाणें विभंग अनांग सू रे, जीव ने अजीव तणों सरूप रे।
 पाखडीयां ने जाण्यां पाडूआ रे, त्याने बूडंता जाण्यां भवजल कूप रे ॥४४॥
 सारभी सपरिअही जाण्या तेहने रे, संकलेस करता जाण्यां छें तांम रे।
 विमुध निरदोषण हुता तेहनें रे, त्याने पिण जाण लीया तिण ठाम रे ॥४५॥
 इण रीतें पेंहला तो समकत पांमीयो रे, विभंग अनांग रो हुवो अवधि गिनान रे।
 पछें अनुक्रमें हुवो केवली रे, पछें गयें पांचमी गति प्रधान रे ॥४६॥
 असोचा केवली हूआ इण रीत सू रे, मिथ्याती थकां तिण करणी कीध रे।
 कर्म पतला पख्या मिथ्याती थकां रे, तिण सू अनुक्रमें सिवपुर लीध रे ॥४७॥
 जो मिथ्याती थको तपसा करतों नही रे, मिथ्याती थको नही लेतो आताप रे।
 क्रोधादिक नही पाडतो पातला रे, तो किण विध कटता इणरा पाप रे ॥४८॥
 जो लेस्या परिणाम भला हुंता नही रे, तो किण विध पामत विभंग अनांग रे।
 इत्यादिक कीयां सू हुवों समकती रे, अनुक्रमें पोहतो छें निरवाण रे ॥४९॥
 पेहले गुणठांणे मिथ्याती थकां रे, निरवद करणी कीधी छें तांम रे।
 तिण करणी थी नीव लागी छें मुगत री रे, ते करणी चोखी ने सुध परिणाम रे ॥५०॥
 असोचा केवली री करणी तणो रे, विस्तार भगोती सूतर माहि रे।
 नवमां सतक रे उद्देशें इगतीस में रे, तिहा जोय निरणों कर लीजो ताहि रे ॥५१॥
 समकत विण हाथी रा भव मभे रे, सुसला री दया पाली छे ताहि रे।
 तिण परत ससार कीयो दया थकी रे, जोवों पेंहला अधेन गिनाता मांहि रे ॥५२॥
 मिथ्याती निरवद करणी करली थकां रे, समकत पाय पोहता निरवाण रे।
 तिण करणी नें असुध कहे छें पापीया रे, ते निश्चेंइ पूरा मूढ अयाण रे ॥५३॥

ढाल : ३

ढुहा

सूयगडावंग आठमा अधेन मे, दोय गाथा कही तिण माय ।
तेवीसमी ने चोवीसमी, तिणरो मूढ न जाणे न्याय ॥ १ ॥
जे ततवना अजाण छे, मोटा भाग सहीत ।
ते वीर सुभट वाजे लोक में, पिण समकत कर ने रहीत ॥ २ ॥
ते करणी निरवद करे, दांन सीलादि निरदोष ।
मास खमणादिक तपसा करे, तिणरी करणी कहे सर्व फोक ॥ ३ ॥
असुघ प्राकम कहे तेहने, करणी कीयां वधे संसार ।
कर्म बंध कहे तिणरें सर्वथा, निरजरा नही कहे लिंगार ॥ ४ ॥
इण विघ अर्थ उघा करे, निरवद करणी ने कहे छे असुघ ।
ते ववेक विकल सुघ बुघ विना, त्यांरी भिष्ट हुइ छें बुघ ॥ ५ ॥
तेवीसमी गाथा तणो, तिण मूल न जाण्यो न्याय ।
असुघ प्राकम कह्यो तेहनो, तिणरो अर्थ सुणो चित्तल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[श्री नेम जिणद समोसरया रे लाल]

असुघ प्राकम कह्यो तेहनों रे, ते असुघ करणी तणो कथन जाण रे ।
सुघ करणी रो कथन इहा नहीं रे लाल, तिणरी बुघवत करजो पिच्छाण रे ।
जे खोटी करणी मिथ्याती करे रे, सुघ सरघा रो निरणो करो रे लाल* ॥ १ ॥
ते असुघ प्राकम तिणरो कह्यो लाल, ते जिण आगना बाहिर जाण रे ।
असुघ करणी रो असुघ प्राकम कह्यो रे, तिणसू पाप कर्म लागे आण रे ॥ सु० २ ॥
तिणसू निरवद करणी मिथ्याती तणी रे लाल, ते विकला ने खबर न काय रे ।
सावध निरवद करणी मिथ्याती करे रे, तिणनें असुघ कहे ताय रे ॥ ३ ॥
तो उणरी सरघा रो लेखो कीया रे लाल, यां दोनू ने कहे छे असुघ रे ।
जे ततवतणा केइ जाण छे रे, समकती रो प्राकम सर्व सुघ रे ॥ ४ ॥
ते वीर सुभट वाजे लोक में रे लाल, ते मोटा भाग सहीत रे ।
ते करणी निरवद करे रे, ते समकत करने सहीत रे ॥ ५ ॥
मास खमणादिक तपसा करे रे लाल, दानसीलादिक निरदोख रे ।
तिणसू कर्म तणो हुवे सोख रे ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

निरवद करणी ते सुध प्राकम कह्यो रे, ते जिण आगना माहिलों जाण रे ।
 शेष करणी असुध प्राकम कह्यो लाल, तिण सू पाप कर्म लागें आण रे ॥ ७ ॥
 ते असुध प्राकम समदिष्टी तणो रे, तिणरो कथन नहीं तिण ठाम रे ।
 सुध प्राकम मिथ्याती तणो लाल, तिणरो पिण कथन नहीं छें तांम रे ॥ ८ ॥
 तिण ठामें तो कथन इतलोंज छें रे, असुध प्राकम मिथ्याती रो ताम रे ।
 समदिष्टी रा सुध प्राकम तणो रे लाल, फल वतायो तिण ठाम रे ॥ ९ ॥
 सावद्य निरवद करणी मिथ्याती तणी रे, यां दोयां रो प्राकम हुवें असुध रे ।
 तो समदिष्टी री दोनूं करणी तणो रे लाल, प्राकम हो जावें सुध रे ॥ १० ॥
 मिथ्याती निरवद करणी करें रे, तिणरी करणी व्हें छें असुध रे ।
 ते ववेक विकल सुध बुध विनां रे लाल, त्यांरी भिष्ट हुइ छें बुध रे ॥ ११ ॥
 वले मूढ मिथ्याती इम कहें रे, समदिष्टी तणों परमाद रे ।
 मिथ्याती तणी करणी तणो रे लाल, यां दोयां ने कहे असमाद रे ॥ १२ ॥
 निरवद करणी मिथ्याती तणी रे, समदिष्टी तणो परमाद रे ।
 अे दोनूइ दुरगत रो कारण कहें रे लाल, एहवो कूडों करें छें विवाद रे ॥ १३ ॥
 आचारंग पाचमां अघेयन रो रे, छठों उद्देसों वताय रे ।
 भोला नें न्हाखें भर्म में रे लाल, तिणरो उंधो अर्थ वताय रे ॥ १४ ॥
 आचारंग तिण ठामें तो इम कह्यो रे, सावद्य करणी जिण आगना बार रे ।
 तिण करणी करण रों उदम करे रे लाल, ते पडीया कुमारग मभार रे ॥ १५ ॥
 निरवद करणी जिण आगना सहीत छें रे, तिणमें उदम नही छें लिगार रे ।
 ते पिण कुमारग में पड्या रे लाल, कर्मां रा वधारण हार रे ॥ १६ ॥
 अठें कुमारग री करणी कही रे, सनमारग रों कह्यो परमाद रे ।
 अें दोनूं कुगति रा कारण कह्या रे लाल, ए साची सरध्यां होसी समाद रे ॥ १७ ॥
 अठें मिथ्याती नें समदिष्टी तणो रे, कथन नही छे लिगार रे ।
 उठें करणी निखेवी आग्या बारली रे लाल, दुरगति नी पोहचावण हार रे ॥ १८ ॥
 वले निखेध्यों परमारद नें रे, करणी न करें जिण आगना सहीत रे ।
 तिणनें दुरगतिनो कारण कह्यो लाल, तिहां जोय लो रुडी रीत रे ॥ १९ ॥
 करणी जिण आगना माहिली रे, तिहां वीर कही निरदोष रे ।
 जे करसी ते सुख पावसी रे लाल, आग्या वारें करणी सर्व फोक रे ॥ २० ॥
 एहवो कथन आचारंग नें मभे रे, तिणरो अर्थ न जाण्यो ताय रे ।
 तिणसूं निरवद करणी मिथ्याती तणी रे लाल, तिणनें कही दुरगति रों उपाय रे ॥ २१ ॥
 निरवद करणी मिथ्याती करें रे, तिणने कहे दुरगति रो उपाय रे ।
 समदिष्टी रा परमाद सरिखी कही र लाल, वले पुन वतावे तिण मांय रे ॥ २२ ॥

समदिष्टी रा परमाद थी रे, पाप लागें छे आय रे
तो मिथ्याती री करणी मभे रे लाल, पुन क्यूं वतावें ताय रे ॥ २३ ॥
उणरी करणी दुरगति रो कारण कहें रे, तिण लेखें तो पुन नाहि रे ।
पुन सूं तो जाअे सुदगति मभे रे लाल, ते पिण निरणों नही घट माहि रे ॥ २४ ॥
मिथ्यात्वी निरवद करणी करे रे, तिणने दुरगति रो कारणकहे मूढ रे ।
परमाद कहें अन्हाखी थकां रे लाल, तिण भाली मिथ्यात री छुड रे ॥ २५ ॥
मिथ्याती दान देवें साधा भणी रे, तिणरें जाणें दुरगति रो उपाय रे ।
वले तेहीज वेंहरें तिणरो जाण नें रे लाल, इसडों काय करे छे अन्याय रे ॥ २६ ॥
मिथ्याती देवें वस्त्र पातरा रे, वले देवें असणादिक च्याखू आहार रे ।
तिणरें जाणें उपाय दुरगति तणो रे लाल, तो लेवा नें कांय हुवें तयार रे ॥ २७ ॥
घणा मिथ्यात्या रा घर तणों रे, नित्य नित्य ल्यावे आहार रे ।
त्यारे दुरगति वघारें जाण जाण ने रे लाल, त्याने किम कहिजें अणगार रे ॥ २८ ॥
शील पाले मिथ्याती वेराग सूं रे, तपसा करें वेंराग सूं ताय रे ।
हरियादिक त्यागे वेराग सू रे लाल, तिणरें कहे दुरगत रो उपाय रे ॥ २९ ॥
इत्यादिक निरवद करणी करें रे, वेराग मन माहे आण रे ।
तिणरी करणी दुरगत रो कारणकहे रे लाल, ते जिण मारग रा अजाण रे ॥ ३० ॥
वले तेहीज मिथ्याती जीव ने रे, उपदेस दे दे वाखुवार रे ।
कुसील छोडावे तेहने रे लाल, वले तपसा करावण ने तयार रे ॥ ३१ ॥
वले तिणने छोडावे नीलोतरी रे, वले छोडावें वस्त अनेक रे ।
तिणरी करणी रा फल दुरगति कहें रे लाल, त्या विकला मे नही छें ववेक रे ॥ ३२ ॥
निरवद करणी मिथ्याती करे रे, तिणनें कहें दुरगति ने परमाद रे ।
ते ववेक विकल सुध बुध विनां रे लाल, बोले छें मिरखावाद रे ॥ ३३ ॥
निरवद करणी ओलखायवा रे, जोड कीधी नेणवा मभार रे ।
समत अठारे सेताले समें रे लाल, वेंसाख विद वारस थावरवार रे ॥ ३४ ॥



ढलल : ॡ

दुहल

मलथुतलतु नलरवद करणी करुं, तलणरुं नलरजरल कहुल जलणरलतु ।
तलण मलहुं संक म रलखओ, ओवओ सुतर रं मलंतु ॥ १ ॥
मलथुतलतु आछुल करणी कुतुतल वलतलं, कुण वलघ पलमें समकत सलर ।
सुध प्रलकम सुं समकत पलंमसुल, तलणमे संकल म रलखु लललर ॥ २ ॥
धूर सुं तु ओव मलथुतलतु थकलं, सुणुं सलधलं रल वलण ।
गुतलं समकत पलत सलधलं कनुं, अनुकुरमें पओहुं नलरवलण ॥ ३ ॥
सलधलं रल संगत कुतुतल थकलं, दस डुललं रल प्रलत ओलण ।
धुर सुं तु सुणवु सलघंत रु, पछुं गुतलं वलगनलन पचखलण ॥ ॡ ॥
संजम नुं आशुध रहुलत पणुं, तपसल नुं कुरु डुदलण ।
नवडु कुतुतल रहुलत पणुं, दसडुं सलघ नलरवलण ॥ ॡ ॥
सकल हुवुं तु डुगुतुल में ओतु लु, दुओं सतक पलंचमें उहुंस ।
सुणुतुतल सुं समकत पलंमसुल, इणमें कुड नहुं लवलेस ॥ ॢ ॥
ओ मलथुतलतु रल करणी असुध हुवुं, वले असुध प्रलकम हुवुं तलतु ।
ओव सुणवुदु तलणरु असुध हुवुं, तु उ समकतु कदुत न थलतु ॥ ॣ ॥
मलथुतलतु नलरवद करणी करुं, तलणनुं असुध कहुे तु अतुतलण ।
तलणरल ओल कहुं सुतर थकुल, तु सुणओं चतुर सुओलण ॥ ॡ ॥

ढलल

[ओगत गुरु तलसल नदुन वुल]

कुलतुतलण करणी वलरतल, सुणुतुतल सुं ओलणुं सलखुतलतु ।
वले ओलणु सुणुतुतल थकुल, अकुलतुतलण करणी वलतु ।
चतुर नर समडुं गुतलं वलचलर* ॥ १ ॥
कुलतुतलण ने अकुलतुतलण रल, सुणुतुतल सुं दुतुतल रल ठुक हुतुतु ।
दसवुकललुक चुथल अडुवतुन में ओ, इगुतलरडु गलथल ओतु ॥ च० २ ॥
मलथुतलतु सुणुं सलधलं कनुं, पछुं करुं छुं मन में वलचलर ।
नलरणु करुं घट डलतुतुं, तलण सुं पलमें समकत सलर ॥ ३ ॥
ओ मलथुतलतु रु प्रलकम असुध हुवुं, तु वलचलरणल सुध नहुल हुतुतु ।
असुध प्रलकम ने असुध वलचलर थु, समकत नहुं पलमें कुतुतु ॥ ॡ ॥

*तुह आंकुडु प्रतुतुक गलथल कुे अनुत में हु ।

समकत पामें सुध विचारीयां, ते निश्चे सुध प्राकम जाण ।
तिण प्राकम ने असुध कहें, ते तो पूरा मूढ अयाण ॥ ५ ॥
सकडाल पुत्र श्री वीर ने जी, बदणा कीधी सीस नमाय ।
बले जायगा माहे उतारीया, पाट पाटला दीघा वेहराय ॥ ६ ॥
तिण दान दीयो श्री वीर ने, मिथ्याती थके निरदोष ।
अनुक्रमे समझ श्रावक हुवो, तिण कीयों कर्मा रो सोष ॥ ७ ॥
तिणरा प्राकम ने कहे असुध छे, बले असुध करणी कहे ताय ।
कर्म बंधवा रो कारण कहे, ते तो चोडे भूला जाय ॥ ८ ॥
धर्म करवा ने जाबक न उठीया, धर्म सुणवो न वाछे ताहि ।
तिणने पिण धर्म सुणावणो, जोवो आचारग माहि ॥ ९ ॥
जिणरो सुणवा रो असुध प्राकम हुवे तो, सीखणो पिण असुध होय ।
जब धर्म न सुणावणो तेहने, ग्यान सीखावणो नही कोय ॥ १० ॥
मिथ्याती निरवद सीखे सुणे, तिणरी करणी जाणे छे असुध ।
तेहीज सुणावे सीखावे तेहने, उणरे लेखे उणरी भिष्ट बुध ॥ ११ ॥
सोगधीया नगरी बाहिरे, नीलासोग वाग मझार ।
तिहां सुखदेव सिन्यासी आवीयो, साथे ल्यायो सीष हजार ॥ १२ ॥
तिण थावरचा अणगार ने जी, पूछ्या प्रश्न अनेक ।
त्यारा जाब सुणे हरखत हुवो जी, घट माहे आयो ववेक ॥ १३ ॥
पछे वांगी सुणे हीये सरख ने, समकत पांमी तिण ठाम ।
तिण सजम लीयो एक सहस सू जी, साख्या आतम काम ॥ १४ ॥
तिण प्रश्न पूछ्या मिथ्याती थके, मिथ्याती थके सुणीया जाब ।
मिथ्याती थका कीधी विचारणा, तिण सू समकत पायो सताब ॥ १५ ॥
जो मिथ्याती रो सुणवो असुध हुवे तो, समकत नही पामतो ताम ।
तिणरो सुणवारो प्राकम सुध हूतो, तिण सू समकत पायो तिण ठाम ॥ १६ ॥
खषक नामे सिन्यासी हूतो जी, सावथी नगरी माय ।
तिणने प्रश्नज पूछ्या जी, पिंगल नियठे आय ॥ १७ ॥
जब तिणने जाब न उपनो, तिण सू आयो वीर ने पास ।
तिणने वीर आगूच वतावीयो, ते सुणने पाम्यो हुलास ॥ १८ ॥
तिण मिथ्याती थके वाणी सुणे, पाम्यो समकत सार ।
श्रीवीर जिणेसर आगले, तिण लीघो सजम भार ॥ १९ ॥
तिणरो सुणवारो प्राकम सुध थो, तिण सू पामीयो समकत सार ।
तिणरा प्राकम कोइ असुध कहे, ते पूरा मूढ गिवार ॥ २० ॥

हृथणापुर नगर नाँ वासीयो, सिवराज रखेश्वर जाण ।
 ते राज छांडे तापस हुवों, तिणनें उपनों - विभंग नाण ॥ २१ ॥
 सातबीप समुंदर देखीया, इतलोइज जाण्यो संसार ।
 असंख धीप समुंदर सुण्या जब, संका पडी तिणवार ॥ २२ ॥
 संका पड्यां इतरोइ देखें नहीं, जब आयो वीर नें पास ।
 वीर वचन सुणे हीये सरघीया, जब समकत पांमीयो तास ॥ २३ ॥
 वीर वचन सुण्या भिथ्याती थकां, तो पांमीयो समकत सार ।
 तिणरो सुणवारों प्राकम सुघ छें, तिणमें संका नही लिगार ॥ २४ ॥

रत्न : १०

एकल री चौपई

ढलल : १

दुहल

आरंभ जीवी ग्रहस्थी, फिरें त्यांरी नेश्राय ।
 अणतीर्थी पासथादिक, ते पिण तेहवा थाय ॥ १ ॥
 केइ वेंरागे घर छोड ने, राचे विषे रस रग
 राग वेख व्याकुल थकां, करें व्रत नो भग ॥ २ ॥
 रित पांमें पाप कर्म में, सावध सरणो मांन,
 गण छोडी हुवे एकला, कुड कपट री खान ॥ ३ ॥
 न्यात लजावें पाछली, वले भेख लजावण हार ।
 एहवा मानव फिरे एकला, घिग त्यारो जमवार ॥ ४ ॥
 घणां में रहे सकें नही, ते एकलडा थाय ।
 कुण कुण दोख तिणमें कह्या, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ५ ॥

ढलल

[समरुं मन हरखे तेह सती]

आप छांदें फिरें जे एकला, ते जिण मारग में नही भला ।
 साध श्रावक धर्म थकी टलीया, संसार समुद्र में कलिया ॥ १ ॥
 एकलो देख ने लोक पूछा करें, घणो क्रोध करी तिण सूं रे लडे ।
 कोइ वादें नही तब मांन वहे, करला वचन तिणनें रे कहे ॥ २ ॥
 कपटाइ घणी छे एकल तणी, सूतर माहे भाखी त्रिभुवन घणी ।
 वले लोभ घणो छें वोहल पणे, श्री वीर कह्यो छे एकलतणे ॥ ३ ॥
 बहु आरंभ ने विषे रक्त घणो, संचो करे बजर पाप तणों ।
 नट नी परें अर्थी भोग तणों, बहु भेख घरे माहे त्रिघपणो ॥ ४ ॥
 घणे प्रकारे करें धुरतपणों, संके नही करतो कर्म रिणो ।
 अधवसाय मन रा अतही घणा, माठा वर्ते छें एकल तणा ॥ ५ ॥
 बहु कोहे माणे^२ माया^३ लोभ^४ पणो, रते^५ नडे^६ सडे^७ संकप घणो ।
 ए आठ आंगुण घट में वर्ती, हिंसादिक आश्रवना अर्थी ॥ ६ ॥
 वले साधु नो लिंग लीयां रहे, कर्म आछाद्यो एम कहें ।
 हूं सुघ चारितीयो आचारी, सतरे भेदे सजमघारी ॥ ७ ॥
 रखे कोइ देखें अकार्य करतो, आंजीवका अर्थी रहे डरतो ।
 अग्यांन परमाद दोख भख्यों, निरंतर मूढ मोह्यो कुपंथ पख्यों ॥ ८ ॥

जिणवर्म न जांगे अपच्छादें रह्या, त्यानें कर्म बांधण नें पिंडत कह्या ।
 पाप करणूं सूं अलगा रे नहीं, तिणनें संसार में भमण कही ॥ ९ ॥
 आचारंग पांचमें अधेनें आख्यो, पेंहलें उदेसें जिण भाख्यो ।
 ए चिरत कह्या छें एकल तणा, इण अनुसारें अतहि घणा ॥ १० ॥
 एहवा अपच्छंदा अवनीत, त्यां छोडी घर्म तणी रीत ।
 निरलजा भागल विपरीत, किम आवें तिणरी परतीत ॥ ११ ॥
 उस्नादिक पाचूं रे तणी, संगत वर्जी छे त्रिभुवन घणी ।
 ए मोख मारग ना छें फंदा, एहवा छे जेन तणा जिंदा ॥ १२ ॥
 त्यां छोडी लोकीक तणी लजीया, संको नही आणे करतां कजीया ।
 दोखण काढ्यां तो तपता रहें, ते आया परिसा केम सहें ॥ १३ ॥

ढाल २

दुहा

ठाणाअंग माहें कह्यो, एकल रो ववहार ।
 आठ गुणां सहीत छे, ते सुणजो विसतार ॥ १ ॥
 सरघा में सेठो घणो^१, न सके देव डिगाय ।
 सतवादी^२ प्रज्ञासूर^३ छे, बोले नही अन्याय ॥ २ ॥
 सूतर ग्रहवा सक्त घणो, मरजादा वत वखाण ।
 बहुश्रुती^४ नवमा पूर्व तणी, तीजो आचार वथू नों जाण ॥ ३ ॥
 पांचमे पांचू समरथा^५, तप सूतर एकलपणो जाण ।
 सत्त्व करी सेठो घणो, वले समरथ सरीर वखाण ॥ ४ ॥
 कलहकारी^६ छठे नही, सातमें घीरज^७ ताहि ।
 अनुकूल प्रतिकूल उपसग्र सहे, आठमें वीरज^८ अच्छाहि ॥ ५ ॥
 ए आठां गुणां सहीत छें, तो करणो उग्र विहार ।
 तो पिण गुर आग्या दीयां, फिरे एकलमल अणगार ॥ ६ ॥
 ए आठा गुणा विण एकला फिरे, ते अवक्त मूढ अयाण ।
 वले आचारंग मे निखेधीयो, ते सुणजो चतुर सुजाण ॥ ७ ॥

ढाल

[पासड बधसी आरे पाच में]

एकल नें मुनी रो भाव नखेधीयो रे, अवक्त ने कह्यो छें घणो विगाड रे ।
 दुष्ट पराक्रम नो थांनक तेहने रे, दुष्ट कहीं तिणरो विहार रे ।
 अवक्त ने नखेध्यों रहणो एकलो रे ॥ १ ॥
 धुर सूं तो लोपी अरिहंत आगना रे, एक तो आहीज मोटी खोड रे ।
 वले नांम धरावें एकल साध रो रे, ए तो छें जिण सासण में चोर रे ॥ २ ॥
 सूतर अवक्त वय अवक्त पणें रे, तिणरी चोभगी चित्त मे धार रे ।
 यां दोनू बोलां माहे काचो नही रे, तो नचिंत रह्यो एकल अणगार रे ॥ ३ ॥
 कोइ गण माहे रहता पडीयो चूक में रे, तिणने गुर हित सूं दीधी सीख रे ।
 अवक्त क्रोध तणें वस आय ने रे, वचन न बोलें गुर ने ठीक रे ॥ ४ ॥
 कहें सगला साध तो इमहीज चालता रे, त्यानें सीखामण न दीए कांय रे ।
 हूं घणां माहे तो रहे सकूं नही रे, ओघट घाट घणी मन मांय रे ॥ ५ ॥

अभिमांनी आपणपो मोटो मानतो रे, प्रबल मोह मांहे मुरभाय रे।
 कार्य अकार्य सुख सूभे नही रे, ववेक विकल ते एकल थाय रे ॥६॥
 गांमानुमांम विचरतां तेहनें रे, घणी आवाघा उपजे आय रे।
 आवाघा एकल ने खमतां दोहिली रे, खमवा रो जाणगे नही उपाय रे ॥७॥
 वीर कह्यो म्हांरा उपदेस थी रे, तोनें सीष एकल्पणो म होय रे।
 ए तो सरघा तीर्थंकर देव री रे, गण मत छोडो सूतर जोय रे ॥८॥
 आचारंग पांचमां अवेन में रे, चोथें उद्देंसें छे ए भाव रे।
 उपसग्र थी आवावा उपजे तेहनों रे, विसतार कहुं छूं तिणरो न्याव रे ॥९॥

ढाल : ३

दुहा

सास खास ताव तेज रो, रोग उपजें अनेक विघ आय ।
वले गरढापो आया थकां, विवघ पणे दुख पाय ॥ १ ॥
वले परिणाम चल विचल हूआ, किण री हटक न काय ।
ज्या एकलपणो आदख्यो, त्यानें परभव चितन कांय ॥ २ ॥
जो साधां री संगत करे, तो वधें घणो बेराग ।
आप छान्दे एकला फिच्छा, जाए संजम थी भाग ॥ ३ ॥
भागण रा उपाय छे अति घणा, ते पूरा कह्या न जाय ।
पिण कहू थोडी सी वानगी, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ४ ॥

ढाल

[सत्य कोइ मत राखजो]

ताव चढे कदा आकरो, वाचा रुके वोल्यो न जायो रे ।
तिरखा अतुल वाय भिडकीया, कुण सखाइ थायो रे ।
घिग घिग अवक्त एकलो* ॥ १ ॥
कर्म जोगे कुत्तो डसें, तो ठरले मात्र किम जावें रे ।
डावरु जान्ही वालादिक हुवा, आहार पांणी कुण ल्यावे रे ॥ घि० २ ॥
जव केइ कायर सीदावता, आप छान्दे करे मन जाण्यो रे ।
भूख त्रिषा ना पीडीया, खाये ग्रहस्थ नो आण्यो रे ॥ ३ ॥
केइ आरत ध्यान मांहे मरे, नरक तिरजंच में जायो रे ।
उतकष्टें अनंतां भव भमे, चिहूँ गति गोता खायो रे ॥ ४ ॥
अखी आय वकारीया, तो लाग जाए तिण चाले रें ।
विटल हुवा होसी घणा, किणरी लज्जा सील पाले रे ॥ ५ ॥
विखे अतत पीड्या थका, वेस्यादिक ने घरे जायो रे ।
माठी भावना भावीया, कुण आणें तिणने ठायो रे ॥ ६ ॥
अकार्य करतो संकें नही, थोडा सुखा ने काजें रे ।
घात चावी हुवा लोक मे, कने बेंसणवाला पिण लाजे रे ॥ ७ ॥
यूं जाणे नर नारीया, एकल दूर ताजीजे रे ।
घरे हाण हासो हुवे लोक मे, इसरो काम न कीजें रे ॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

क्यां सूं प्रकत पाछी वले नही, किण सूं न मिलें सभावो रे ।
 दुख वेदी हुवें एकला, केइ करे घणो अत्यावो रे ॥ ६ ॥
 क्यां सूं पोते आचार पलें नही, वले कूड कपट रो चालो रे ।
 गण छोडी हुवें एकला, ओरां रें सिर दे आलो रे ॥ १० ॥
 क्यां सूं पोते आचार पले नही, पिण समकत राखें चोखों रे ।
 गण छोडी हुवें एकला, नही काढे ओरां में दोखो रे ॥ ११ ॥
 पछे मोह कर्म उदे हुवां, कुड कपट चलावे रे ।
 फिरती भाषा बोलें घणी, अणहूता आंगुण गावें रे ॥ १२ ॥
 गांवां नगरा विचरतां, लोक पूछें हर कोइ रे ।
 थे साधा मांसूं नौकलें, आतम कांय विगोइ रे ॥ १३ ॥
 जब केयक बोले पाघरा, केइ बोलें आलपंपालो रे ।
 केइ क्रोध करें केइ परजलें, केइ मूह करें विकरालो रे ॥ १४ ॥
 केइ दोखण ढांके आपणा, ओरां में वतावें चूर्को रे ।
 पूछ्यां न बोले पाघरो, पूजा सलागा रो भूखो रे ॥ १५ ॥
 कोइ लालालोलो करे, आहारदिकनां लपटी रे ।
 पूरो निकालो काढे नही, अंसा एकल कपटी रे ॥ १६ ॥
 आए साधां नें वंदणा करें, मांहें माठा परिणामो रे ।
 विनो नरमाइ करें घणी, ए पेट भरण रो कामो रे ॥ १७ ॥
 समभू नर नार वादे नहीं रे, आगना लोप एकल देखी रे ।
 आहार पांणी न दे भाव भगतसूं, तो हुवें साधां रो घेखी रे ॥ १८ ॥
 छल छिद्र जोवतों रहें, दुष्ट परिणामा दिन काढे रे ।
 च्यार तीरथ सूं तपतो रहें, मोख तणी विरत वाढे रे ॥ १९ ॥
 दगध बीज करें आप रो, वले घालें ओरां रे संकारे ।
 भर्म में पाडें लोक नें, असा छें एकल वंका रे ॥ २० ॥
 चित भरम्यों फिरतो रहें, तिणनें साची सरधा तावें रे ।
 कदाच जो आइ हुवे, तो थोडा मांहें गमावे रे ॥ २१ ॥
 मांगे न खांणो पार को, वले कनें साधां रो भेखो रे ।
 सरधा राखे निरमली, केयक विरला देखो रे ॥ २२ ॥
 च्यार तीरथ नें ओर लोक में, फिट फिट सगले कहिवांणो रे ।
 जो अवगुण जाणें आप में, साची सरधा रो एह अहलांणो रे ॥ २३ ॥
 वले अवगुण काढें गुर तेहनां, तो ही कुलष भांवें नही आणें रे ।
 अभितर समकत परगामी, ते तों मोटां उपगारी जाणें रे ॥ २४ ॥

बोध समकत पायो त्या कनें, त्या दीठां हरषत थायो रे।
 विनो भगत करे घणी, साची सरघा दीसे तिण मांहुों रे ॥ २५ ॥
 साघ साघवी ने सरघा तणा, पूठ पाछें गुण गावे रे।
 एकण घारा बोलतां, परतीत इण विघ [आवें रे ॥ २६ ॥



ढाल : ४

दुहा

भला कुल री विगरी तका, जोवे विरांणा साध ।
 ज्युं साध विगखो आचार थी, ते किण विघ आवें हाथ ॥ १ ॥
 आग्या लोपें सतगुर तणी, तिणनें ओपम छें गलीयार ।
 आप छावें एकलो भमें, ज्युं ढोर फिरें रूलीयार ॥ २ ॥
 विगख्यां घान री पाखती, बेठां हुरगंध आय ।
 ज्युं एकल री संगत कीयां, बुधवंत अकल पत जाय ॥ ३ ॥
 जो एकल नें आदर दीए, तो वधे मिथ्यात ।
 फूट परें जिण धर्म मे, ते सुणजो विख्यात ॥ ४ ॥

ढाल :

[भव जीवा तुम जिण धर्म ओलखी]

जिण सासण में आग्या वडी, आ तों बांधी रे श्री भगवंत पाल ।
 अें तो सजन असजन भेला रहें, छांदे चालें रे प्रभु वचन संभाल ।
 बुधवंता एकल संगत न कीजिए* ॥ १ ॥
 छांदो रुंध्यां विण संजम नीपजे, तो कुण चाले रे परनी आग्या मांय ।
 सह आप मतें हुवें एकला, खिण भेला रें खिण वीखर जांय ॥ बु० २ ॥
 आप मतें एकला हुवां, तो सासण में रे पर जाए घमडोल ।
 एहवा अपछंदा री करे थापना, ते पिण भूला रे भेद न पायो रही भोल ॥ ३ ॥
 ढंराग घटे तिणरी पाखती, के उण संगत रे आवें मूल मिथ्यात ।
 के साध सूं उतर जाय आसता, साची सरध्यां रे एकल तणी घात ॥ ४ ॥
 अें तो भिडकावें साधां रा समदाय थी, आपस में रे दोलें विरुवा वेंग ।
 बले छिद्र धरावे एक एक ने, साध दीठां रें बले अतर नेंग ॥ ५ ॥
 नकटादिक चोर कुसीलीया, वधी चावें रे आप आपणी न्यात ।
 ज्युं भागल ने भागल मिल्या, घणों हरषे रे करे मनोगत घात ॥ ६ ॥
 चोरी जारी आदि खून अकरज कीयां, राजा पकडे रे करे छवी छेद खोड ।
 बले देस नीकालो दें काढीयां, त्यांने राखे रे भील मेंगादिक चोर ॥ ७ ॥
 ते विगाड करे तिण देसनों, भीलमेंणा रे त्यानें आणी साथ ।
 दुख उपजावे रेंत गरीब नें, धन लेजावें रे करे करे त्यांरी घात ॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

त्यानें असणादिक आदर दीयां,
 कदा राय कोपे तो धन खोस ले,
 इण दिष्टते साधा रा समदाय मे,
 ते आप छादें एकला रहे,
 अे तो साधां रा ओगुण बोलता फिरे,
 ओछी बुधवाला ने विगोवता,
 त्यांरी भाव भगत संगत कीया,
 ते तो दुख पामें इण संसार मे,
 चोर ने तो आहार आदर दीया,
 भेष धारी ने भागल एकल तणी,
 उसनां कुसीलीया पासया,
 त्याने तीरथ मे गिणवा नही,
 अें तो हेलवा निदवा जोग छें,
 त्यांरो सग परचो करणो नही,
 या तो अनंत ससार आरे कीयो,
 त्यानें आहारपाणी उपघ दीया,
 भेला वेस सभाय करवी नही,
 यांरो संग परचो करता थकां,

लफरो लागे रे भांग्या राजा तणी आण ।
 जीवा मारे रे तिणरा अें फल जाण ॥ ९ ॥
 दोखण सेव्यां रे साघ काढे गण बार ।
 के भागल रे आगें पाछे फिरें लार ॥ १० ॥
 मुख मीठा रे खेलें अतर घात ।
 कूडी कथणी रे कूडी कर कर वात ॥ ११ ॥
 तिण भागी रे भगवत नी आण ।
 उतकथां रे अनंत जामण मरण जाण ॥ १२ ॥
 इह लोके रे धन जीतव नो विणास ।
 संगत कीघा रे वघे करम तणी रास ॥ १३ ॥
 अपछंदा रे ससत्तादिक जाण ।
 ओ कर लीजो रे जिण वचन परमाण ॥ १४ ॥
 खिष्ट करवा रे तिणरी ग्याता में साख ।
 सूतर मांहे रे भगवत गया भाख ॥ १५ ॥
 इह लोकें रे परलोके हुसी भंड ।
 तिणनें आवे रे चोमासी नों दड ॥ १६ ॥
 नही करणो रे त्यारे साथे वीहार ।
 ग्यान दरसण रे चारित नों विगार ॥ १७ ॥



ढाल : ५

दुहा

केइ भेषघाख्यां रा टोलां थकी, लड भगड नीकलें बार ।
ते आप छादें फिरें एकला, ज्यूं ढोर फिरें खलीयार ॥ १ ॥
तिणने हीर हटक किणरी नही, स इछाचारी फिरें छे सदीव ।
वले प्रबल उदें तिणरें मोहणी, एहवा एकल भारी करमां जीव ॥ २ ॥
ते नांम घरावें साव रो, पिण मूंक दीघी मरजाद ।
वले वाड लोपी ब्रह्म वरत री, करतों फिरें मूड उपाध ॥ ३ ॥
आठां गुणां विण एकलों, साध नें रहिवों नांहि ।
श्री वीर जिणेसर भाखीयों, जोवों आगम रे माहि ॥ ४ ॥
जे आप छादें फिरें एकला, श्री जिण वचन विराध ।
जिण लोक लज्या पिण परहरी, तिणनें मूरख सरखें साध ॥ ५ ॥

ढाल

[चतुर विचार करो ने देखो]

बावीस टोलां बाजें त्यांरी आ सरघा, साघां नें एकलो नहीं रहणो रे ।
हिवें तेहीज एकल नें साध थापें, त्यांरी विकलाइ रो कांड कहणो रे ।
एकल भेषघारी रो संग न कीजें ॥ १ ॥
जो एकल नें चोडें साध परूपें, तो लागें लोकां माहें भूडी रे ।
जो एकल नें गिणें बावीस टोलां में, तो सगला री सरघा बूडी रे ॥ २ ॥
त्यां वीर नां वचन तो हेठा मेल्या, तो एकल सूं पीत वांधें रे ।
एकल नें कोइ साध सरखें तिण, आगम उथाप्या आंधे रे ॥ ३ ॥
क्यारों नेव चवें क्यारी चवें नेवाली, ते तों रहें एकल सूं डरता रे ।
जाणें एकल म्हारो उघाड करें ला, तिण सूं संकता रहें लाजां मरता रे ॥ ४ ॥
त्यांरा श्रावक श्रावका वादें एकल नें, त्यांनें इतरो पिण कहणों काठो रे ।
थे एकल नें वादों किण लेखें, गुणें तीखुतों रा पाठो रे ॥ ५ ॥
एकल तो जिण आगना बारें, तिणनें वांधां तो नहीं छें धर्मो रे ।
थे सीस नमाय एकल नें वादें, कांय वांधों चीकणा करमो रे ॥ ६ ॥
इतरी कहेनें एकल री वंदणा छडावें, तो एकल घणों दुख पावें रे ।
जब एकल पिण यांरा खोटा खोटा किरतब, चोडें लोकां में वतावें रे ॥ ७ ॥

केइ इण कारण डरता थकां भेषघारी,
 वले उल्टी खुसामदी करें एकल री,
 केइ तो भेषघाख्या रे ओहीज कारण,
 वले वीजों कारण भेषघाख्या रे,
 एकला रा श्रावक भेषघाख्यां नें,
 वले आहार पांणी भावभगत सूं देवें,
 वले एकल रा श्रावक श्रावका पासे,,
 तेतीं पेटभरा इहलोक रा अरथी,
 मन माहें तों आछों न जाणें एकल ने,
 पिण निज मुतलब रे काजें भेषघारी,
 अें तो कूड कपट कर काम चलावे,
 यांसूं एकल नें असाध चोडे कहणी नावे,
 कठेंक तो एकल नें साध कहें छे,
 यारें काम पडे जेहवी भाषा बोले,
 जो एकल भेषघाख्यां रे काम न आवे,
 खोटो सरघाय नें वंदणा छोडावे,
 जिण एकल मे पांणी मरे विवध परकारे,
 भागल एकल नें भेषघारी,
 ते एकल भेषघाख्यां सूं मिलतो चाले,
 आप रा किरतव आपनें सूभे,
 एहवो एकल भागल भेषघाख्यां सूं,
 वले भूठ वोलें त्यारा अवगुण ढाकें,
 इमहीज भेषघारी भागल एकल सूं,
 ते पिण भूठ बोली दोष ढाकें एकल रा,
 एकल पिण भेषघाख्यां रो न करें उघाड,
 गालागोलो कनें टग खाअें लोकाने,
 काम पड्यां एकल सूं करें आहार पांणी,
 काम पड्या देवो लेवो करें एकल सूं,
 काम परजाएं तो भेषघारी एकल सूं,
 एकल पिण भेषघाख्यां सूं करें संभोग,
 कदेक तो एकल सूं करें संभोग,
 एकल सूं संभोग करें छें त्यारा,

राखें एकल सूं मिलापो रे।
 न करे एकल री उथापो रे ॥ ८ ॥
 ते एकल ने उथापे केमो रे।
 ते सांभलजो घर पेमो रे ॥ ९ ॥
 साध सरघें वादे पूजे रे।
 तिणसूं एकल रा अवगुण न सूभे रे ॥ १० ॥
 एकल रा गुण गावे रे।
 एकला ने साध सरघावे रे ॥ ११ ॥
 पिण मुख सूं खोटो कहणी नावे रे।
 एकल ने नही रीसावे रे ॥ १२ ॥
 त्याने पूछ्या करे गालागोलो रे।
 यारे पिण तांबा उपर भोलो रे ॥ १३ ॥
 कठे कहे एकल ने असाधो रे।
 त्याने किम कहिजे वीर ना साधो रे ॥ १४ ॥
 तो तुरत दे तिणने उडायो रे।
 घाले असाध तणी पांत मायो रे ॥ १५ ॥
 ते तो ओरा ने केम उथापे रे।
 त्या सगलां नें साध थापे रे ॥ १६ ॥
 वले करे त्यासूं नरमाइ रे।
 मन छानी चोरी नही काइ रे ॥ १७ ॥
 डरतो रहे दिन रातो रे।
 त्यांरी कूडी करें पखपातो रे ॥ १८ ॥
 डरता रहे दिन रातो रे।
 वले कूडी करें पखपातो रे ॥ १९ ॥
 अे पिण न करें एकल रो उघाडो रे।
 धिग्रधिग्र त्यारो जमवारो रे ॥ २० ॥
 काम पड्या उतर जाअें भेला रे।
 काम पड्यां वादें किण बेला रे ॥ २१ ॥
 करें बारेंइ संभोगो रे।
 ते मेल दें सर्व सजोगो रे ॥ २२ ॥
 कदेक न करें एकल सूं संभोगो रे।
 वरत छें माठा जोगो रे ॥ २३ ॥

कदेक तो एकल सूं होय जाएं जूदा, कदेक होय जाएं भेअ रे ।
 ए सावां रा भेष में प्रतख देखो, जाणें नाचें कुबदी खेला रे ॥ २४ ॥
 गघा रा कंठ ने उट बखाणें, उंट रो रूप गघा बखाणें रे ।
 ए तो दोनुं जणां मांहोमां हिलमिलीया, ते तो परमारथ नही पिछाणे रे ॥ २५ ॥
 ज्यूं भेषघाख्यां नें एकल सरावे, एकल नें भेषघारी सरावें रे ।
 ए पिण मांहोमां हिलमिल एक हूआ, ठगठा लोकां नें खावें रे ॥ २६ ॥
 चोर मांहोमां मिलनें चोरी करें नें, पर घन कुसले ल्यावें रे ।
 ज्यूं एकल नें भेषघारी मिल चालें, तो भोलां नें ठगं ठग खावें रे ॥ २७ ॥
 जो चोरां रे मांहोमां फाट पडें तो, पर घन हाथ न आवें रे ।
 ज्यूं यारे पिण मांहोमां रे फाट पडें तो, यां आगें पिण कुण ठावें रे ॥ २८ ॥
 एकल नें भेषघारी भेला मिल चालें, ओ प्रतख देखो पोलाणो रे ।
 ए ठग-ठग नें माल खावें लोकां रो, त्यांरी बुधवंत करो पिछाणो रे ॥ २९ ॥
 भेषघाख्यां रा श्रावक नें एकल रा श्रावक, त्यांरा घट माहें घोर अंधारो रे ।
 ते साघ असाघ रा गुण नहीं जाणें, नहीं जाणें साघां रो आचारो रे ॥ ३० ॥
 ते एकल नें पिण साघ सरघे, यारें आ पिण सुध बुध नाहि रे ।
 समझाया पिण समझें नही भोला, परीया एकल रा फंद माहि रे ॥ ३१ ॥
 भेषघाख्यां रा श्रावका त्यांरी, सुधबुध जाबक विगडी रे ।
 ते एकल नें वादें तीखुतो करनें, मस्तक पगां रे रगडी रे ॥ ३२ ॥
 केइ एकल नें भेषघाख्यां रा श्रावक, ते पिण एकल रा दोष ढाकें रे ।
 सुध साघां रे आल देतां अग्यांनी, भारी करमा मूल न साकें रे ॥ ३३ ॥
 साघां रे आल दें एकल रा दोष ढांके, ते तों दोनुं परकारें बूडा रे ।
 ते तों नरक निगोद रा वीद वण्यां छे, चिहूंगति माहें दीस सी भूंडा रे ॥ ३४ ॥
 त्यांरा गुर में हूंता दोष बतावें, तो लडवा नें छें तयारो रे ।
 निकाल काढण री तो वात न कांइ, उलटा करें कजीया ने राडो रे ॥ ३५ ॥
 त्यांनें परभव री चिंता नही कांइ, त्यांरा मत माहें गाढा घूलीया रे ।
 त्यांरे न्याय निरणों तो मूल न दीसैं, जेंसा हूंता जिसा गुर - मिलीया रे ॥ ३६ ॥

ढाल : ६

डुहा

केइ भेषधारी एकला फिरें, अवक्त मूढ अयाण ।
ववेक विकल सुधबुध विना, जिण मारग रा अजाण ॥ १ ॥
सगला एकल नहीं सरिखा, सगलां री सरधा नहीं एक ।
चलगत पिण त्यांरी जूजूइ, त्यांरा चाला चिरत अनेक ॥ २ ॥
केइ एकल छे भोलीया, केइ विकल छे तांम ।
केइ एकल छें पेटारथी, केकांरा छे दुष्ट परिणांम ॥ ३ ॥
केइ एकल छें धूरत अति घणां, कूड कपट री खान ।
केइ एकल छे कुसीलीया, त्यांरो एकंत विषे सूं ध्यान ॥ ४ ॥
केइ एकल तपसा करें, लोकां नें ठिगण रे कांम ।
ते छानो खावे तपसा मभे, ते तों थोथा करें छें हगाम ॥ ५ ॥
केइ एकल दुष्ट छे अति घणां, निज दोषण देवें ढाक ।
मोटां मोटां अकार्य पोते करे, देवे ओरां सिर न्हाख ॥ ६ ॥
एकल माहे तो अवगुण घणां, ते पूरा कह्या न जाय ।
थोडा सा परगट कहं, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ७ ॥

ढाल

[चतुर विचार करी ने देखो]

केइ एकल कुपातर कुसीलीया छें, ते तो बुगल ध्यानी वणजायो रे ।
तिणरे ठामं ठाम वायां सूं परचो, ते करता फिरें विषे रो उपायो रे ।
एकल भेषधारी रो सग न कीजे* ॥ १ ॥
बुगला रो ध्यान तो मछल्या उपर, ज्यू एकल रे विषे सूं ध्यांनो रे ।
तिणने भोला लोक तो साधु जाणे छे, पिण पिंडत सूं नही छे छानो रे ॥ १०२ ॥
एहवा एकल उत्तरे खूणें खचूणें, ते जायगा छे अप्रतीतकारी रे ।
तिण ठामे रात री अस्त्री रहे तो, लोका ने न पडे ठीक लिंगारी रे ॥ ३ ॥
बले रात रो आडो जडे सूअे एकल, जब कुण जाणें अस्त्री छे मांही रे ।
इण वात रो कुण करे गवेसों, गवेसो कीया मिले त्याने कांड रे ॥ ४ ॥
घणा साध रहे कदा एहवें ठिकाणें, तो अस्त्री नो जोर न लागें रे ।
जो एकल एहवे ठिकाणें रहें तो, ब्रह्मव्रत तिणरो भागे रे ॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

जिण एकल रा परिणाम नही छें ठिकाणें, ते उतरें एहवी जायगां रे ।
 जे उतरें अप्रतीतकारी ठिकाणें, ते तों वरत विहूणा नागा रे ॥ ६ ॥
 जिण एकल रे सील पालणो नहीं, ते तों अजोग ठिकाणों जोवे रे ।
 तिण ठामें निसंक सूं करें अकारज, एकल आतम विगोवें रे ॥ ७ ॥
 खूण खचूण उतरें ते ठिकाणे, घणी अस्त्रियां तिण तिण ठामें आवे रे ।
 त्याने हासा कतुहल री वातां सुणाए, घणी अस्त्रां नें मोह उपजावे रे ॥ ८ ॥
 त्यामें भोली बायां केयक इम बोले, आपां नें ओपरी नही जाण रे ।
 सांमीजी रो आपां सूं मोह घणों छें, ते एकल रा चाला चारितन पिछाणें रे ॥ ९ ॥
 त्यामें केयक अस्त्री कुपातर हुवें ते, एकल सूं दिष्ट ल्यावे रे ।
 तिणरी निजर चेष्टा देख नें एकल, तिणनें विषें सहीत वतलावें रे ॥ १० ॥
 तिणरी लाज सरम छोडाय नें एकल, अकारज करतों नाणे सका रे ।
 भला कुल री ने मिष्ट करतो नही संके, केइ एहवा छे एकल वका रे ॥ ११ ॥
 गाम गांम विचरें तिहां एकल, ठामं ठामं ओहीज चालो रे ।
 एकल अकारज करें छे तिणरों, कुण काढें नीकालो रे ॥ १२ ॥
 टोलावर भेषधारी भेला रहें छे, ते तो साच वाजे भली भांती रे ।
 त्यां माहे पिण कोइ कपडादिक देइ, विषें सेवी पूरें मन खांतो रे ॥ १३ ॥
 टोलां माहिलों विषे सेवें इण रीते, तो एकल रो काई कहणो रे ।
 घणां भेलां रहे ते तों संकोच पांमैं, तो एकल नें तो एकलो रहणो रे ॥ १४ ॥
 घणां भेलां रहें ते तो अकारज करतो, राखें ओरां री संको रे ।
 एकल भेषधारी अकारज करे ते, निडर थको निसंको रे ॥ १५ ॥
 टोला माहिलो कपडो दे करें अकारज, तिणनें पूछें कोइ टोला बालो रे ।
 थारे कपडों हुंतो किणनें दीघां, इम पूछी नें काढें नीकालो रे ॥ १६ ॥
 एकल कपडादिक देइ करें अकारज, तिणने कुण पूछें काढें नीकालो रे ।
 तिणसूं एकल ने डर किणरो न दीसैं, ते विषे रो किम करसी टालो रे ॥ १७ ॥
 टोलां माहिलो मोडेरो आवें ठिकाणे, तिणनें पूछें तूं हुंतो कठे रे ।
 जो एकल मोडों आवे तो कुण पूछें, तिणसूं ओं फिरें छे मनमाने जठे रे ॥ १८ ॥
 कुटंबवाली अस्त्री रा परिणाम चालीया, तो सरमा सरमी पिणनकरें अकाजो रे ।
 जो आगें पाछें तिणरे कोइ न हुवे, तो छोड दें सरम नें लाजो रे ॥ १९ ॥
 ज्यूं एकल रें आगें पाछें कोइ न दीसैं, तिणरे किणरी न दीसे लाजो रे ।
 तिण एकल रा परिणाम चल जाअे, तो सके नही करतो अकाजो रे ॥ २० ॥
 एकल तो गुर नें गुर भायां सूं न्यारा, वले संभोगी पिण तिणरें नांही रे ।
 तिणसूं ओर नीकाल काढें क्यारे तांड, याने दोष न लागें कांइ रे ॥ २१ ॥

जो घणां भेला हुवे तो कोइ काढें नीकालो,
 तिण एकल री चिता नही किणने,
 केइ करमां रे जोगें फिरें एकला,
 पिण लोक लज्या सूं सील पालें छे,
 ते खूणें खचूणें उतरतो सके,
 तो एकल ने कुण साचो जाणे,
 यूं जाणें ने केयक एकल भेषधारी,
 ओर ओंगुण तो अनेक छे तिणमें,
 वले सेंसतो परचो न करे बायां स्,
 केइ तो एकल एहवा फिरे छे,
 एकल होय ने करे बायां सूं परचो,
 तिणरा उघाडा अहलाण दीसे भागल रा,
 आजूणा काल मे पाचमे आरे,
 ते तों निरचेइ छे च्यार तीरथ वारे,
 इण विघ फिरे एकल भेषधारी,
 तिणरी तपसा ने आचारसील बरतरी,
 ए तों एकल कुपातर कुसीलीया रे,
 हिवे फिरवा रा चिरत कहु छू एकल रा,
 केइ एकल घर घर फिरे एकला,
 ते विषे रों बाह्यों फिरें एकलो,
 केइ एकलो पातरो घाले पडला में,
 ते तो विषे विकार रो पीडीयो एकल,
 बाया ने दरसण देवा रो नांम लेवे छे,
 बायां ने देखण री चावना पोतें,
 जो बाया रें चावना दरसण री छे,
 जो एकल रे चावना बाया देखण री,
 तिण एकल ने कोयक इम पूछे,
 थे आहार पांणी वेहरता न दीसो,
 जब एकल कहे बायां ने दरसण देवा,
 ओर तो मांहरे काम न कोइ,
 निरलज घर घर फिरें एकलो,
 आ चलगति खोटी प्रतख दीसे,

सारां नें दोष लागतों जाणी रे।
 तिणरो निकाल काढें कुण तांणी रे ॥ २२ ॥
 दोष सेवें छें विवध परकारों रे।
 ते तो उतरे मझ बाजारो रे ॥ २३ ॥
 रखें आवें अण हृतो आलो रे।
 कुण काढे एकल रो नीकालो रे ॥ २४ ॥
 नही उतरे अप्रतीत काखें ठामो रे।
 पिण कुसील रा नही परिणामो रे ॥ २५ ॥
 वले न करे आलाप सलापो रे।
 तिणरे कुसील री नही थापो रे ॥ २६ ॥
 तिण तो हाथां सू वात विगाडी रे।
 तिण नें कुण कहसी ब्रह्मचारी रे ॥ २७ ॥
 केइ अवक्त रहे एकलो रे।
 एहवो एकल कदेय न भलो रे ॥ २८ ॥
 तिणमे साध तणी नही रीतो रे।
 किम आवें परतीतो रे ॥ २९ ॥
 कहा उतरवा रा ठामो रे।
 ते सांभलजो सुघ परिणामो रे ॥ ३० ॥
 ज्यूं ढोर फिरें खलीयारो रे।
 तिणरो बुधवत करजो विचारो रे ॥ ३१ ॥
 फिरें छे घर घर बारो रे।
 करतों फिरें बाया रों दीदारो रे ॥ ३२ ॥
 ते पिण मूठ बोले छें तामो रे।
 तिणसू घर घर फिरें इण कामो रे ॥ ३३ ॥
 तो बाया आय दरसण करसी रे।
 तो एकल घर घर फिरसी रे ॥ ३४ ॥
 थे क्यूं फिरो घर घर आमो रे।
 ओर थारे काइ कामो रे ॥ ३५ ॥
 घर घर फिरू जाणें उपगारो रे।
 इम कहिनें उतर जावे पारो रे ॥ ३६ ॥
 बायां ने दरसण देंतो रे।
 ए अजोग एकल रो पेंतो रे ॥ ३७ ॥

बायां ने दरसण देवा घर घर फिरणो, आ तों सुध साघांरी नही रीतो रे ।
 आ तों रीत काढी छे, एकल भागल, ते तों उघाडी दीसैं विपरीतो रे ॥ ३८ ॥
 कोइ गरडी गिलाण छें तपसण बाइ, कोइ करती जाणें पचखांणो रे ।
 इत्यादिक कोइ उपगार जाणें तो, कारण पंडीया दरसण देवा जाणो रे ॥ ३९ ॥
 घर घर फिरें बायां नें दरसण देवा, ते तों सूतर में नहीं पाठो रे ।
 दरसण देवा ने फिरें घर घर एकलो, तिणरो सील भाचार छें माठो रे ॥ ४० ॥
 दरसण देवा ने फिरें घर घर एकलो, ते पिण गोचरी री वेला टालो रे ।
 अकाल वेला में फिरें घर घर एकलो, ओ प्रतख दाल में कालो रे ॥ ४१ ॥
 एकल घणां घरां फिरें खोज भांगण नें, दरसण देवा रों ले ले ओटो रे ।
 विवध पणें चाला चारित करें नें, करें निसाणें चोटो रे ॥ ४२ ॥
 जो उणहीज घर जाअें दरसण देवा, तो पडजाअें हाथां सूं कूरो रे ।
 ओर बायां पिण मांहोमां माडें किचाकिच, वले करे एकल रों फित्तूरो रे ॥ ४३ ॥
 जो एकल विकलां नें मूंड करें चेला, त्यांनें तो म्हेळें तिण गांमो रे ।
 आप तों एकलो परगांवां जाअें, बायां नें दरसण देवा कांमो रे ॥ ४४ ॥
 एकल चेला ने राखें ठिकाणें, एकलो जाअें परगांमो रे ।
 ते पिण जाअें बायां नें दरसण देवा, तिणरा कुण जाणें सुध परिणामो रे ॥ ४५ ॥
 दरसण देवा बायां नें जाअें एकलो, चेलां राखें ठिकाणें रे ।
 पांच सात रात तिहां रहे एकलो, तिणनें ब्रह्मचारी कुण जाणें रे ॥ ४६ ॥
 लखण तो उणरा ओ ही जाणें, कें केवल ग्यानी जाणें रे ।
 छद्मस्थ तों बारलो बवहार देखी, खोटो जाणें छें तिणनें अलाणें रे ॥ ४७ ॥
 एहवा धूरत केइ एकल भागल, त्यांरी कुण करसी प्रतीतो रे ।
 तिण एकल नें कोइ साधु जाणें, ते भव भव में होसी फजीतो रे ॥ ४८ ॥
 एकल घर घर फिरें कुवेला, किण सूं करे विषें री बातो रे ।
 किण किण सूं करें अंग कुचेष्टा, किण किण रें फेरें मस्तक हाथो रे ॥ ४९ ॥
 छोटी डवरीयां रे माथें हाथ फेरें, ते तों मोह उपजावण कामो रे ।
 जो तुरणी रा माथा उपर हाथ फेरें, जब तो दीसैं विषें रा परिणामो रे ॥ ५० ॥
 जो उण लखणी कोइ बाइ हुवें तों, ते तों वात न काडें बारें रे ।
 एकल सूं हिलमिल करे अकारज, उ विगस्थो ओरां नें विगाडे रे ॥ ५१ ॥
 कोई जातवंत कुलवंत हुवे बाई, ते तों कर दें एकल रों उघाडी रे ।
 जाणें रखे मोने आल आवें अणहंतों, तिण सूं आ तो कहिने हुवे न्यारी रे ॥ ५२ ॥
 जब एकल कहें मोने आल देवे छें, जब आ पाडें एकल नें कूडो रे ।
 वले कहें एकल नें ये भूड बोलों ला, तो इधकों होसी वले फित्तूरो रे ॥ ५३ ॥

ए वात सुणे एकल रा श्रावक श्रावका,
 वले बदी करे दरबारा ताइ,
 तिणने भेला होय दबकावे अग्यानी,
 म्हांरा गुरां नें तूं आल देवें छे,
 तिणनें अनेक परकारें करी तें डरावे,
 त्यारे निरणो काढण री तो वात न कांइ,
 जांणे इण आगा सू भूठ बोलाए,
 पिण इसरी तो विकलां रे मन मे आवे,
 तिणमें कोयक बाइ काची हुवे ते,
 जब विकल जाणें गुर रो आल उतरियो,
 जो केयक बाइ गाढी हुवे हीया री,
 तिणनें एकल रा श्रावक श्रावका पूछें,
 तिणसूं घेप घरे पिण निकाल न काढे,
 एहवा मत ग्राही मानव मत माहे घुलीया,
 अँ तो दोष जांणे तोही दावे राखे,
 वले पड जाओला म्हांरा मत में विखेरो,
 इम जाणे ने एकल रा दोष ढाके,
 एकल रे वदले भूठ बोली ने,
 वले एकल घर घर फिरें तो अग्यानी,
 त्यारे सुखीअे सुखी त्यारे दुखीअे दुखी हुवे,
 साता पूछे बायां सू माया मोह बाघे,
 जे विकल बायां तिणने गुर जाणे,
 जो गृहस्थ री साता साध पूछे तो,
 तिण अणाचारी ने गुर जांण वादे,
 कोइ गृहस्थ बाइ भाड मादो हुवे तो,
 एहवो विकल एकल भेषघारी,
 ए तों एकल रो विषे विकार वतायो,
 हिवे लोलपणा री विघ कहुं एकल री,

तो उलटा मांडें तिणसूं कजीया रे ।
 त्यां छोडी लोकीक री लोजीया रे ॥ ५४ ॥
 देदे अणहूता दाबा रे ।
 वले करे लोकां में हाबा रे ॥ ५५ ॥
 तिणरो कर कर लोका मे फित्तुरो रे ।
 खवे छे बोलावण कूडो रे ॥ ५६ ॥
 उतारा गुरा रो आलो रे ।
 आपां काढां इणरो नीकालो रे ॥ ५७ ॥
 डरती थकी भूठ बोले रे ।
 पिण अभितर री आंख न खेले रे ॥ ५८ ॥
 वले साची हुवे साहस पूरो रे ।
 तो डरती न बोले कूडो रे ॥ ५९ ॥
 यारे दोष ढाकण री रीतों रे ।
 त्यारे न्याय तणी नही नीतो रे ॥ ६० ॥
 जाणे लागे लोका माहे भूडी रे ।
 तो जावक जायला वात बूडी रे ॥ ६१ ॥
 नही काढे तिणरों नीकालो रे ।
 आतमा नें लगावे कालो रे ॥ ६२ ॥
 साता पूछे बाया री रे ।
 वरग वहुं छे आछा खांया री रे ॥ ६३ ॥
 त्यांसूं कर कर गमती वाता रे ।
 ते करें एकल री पखपातां रे ॥ ६४ ॥
 ते तों साध निश्चे अणाचारी रे ।
 ते गया जमारो हारी रे ॥ ६५ ॥
 त्यारी फिर फिर पूछें समाघो रे ।
 ते तो निमाइ निश्चे असाघो रे ॥ ६६ ॥
 थोडीसी कही विकलाइ रे ।
 ते सामलजो चित्तलाइ रे ॥ ६७ ॥

ढाल : ७

दुहा

केइ खावा पीवा रों अतिलोलपी, ते घणां भेलो रहें केम ।
 गण छोडी एकलो फिरें, तिणरेखावा रों घ्यांन नित नेम ॥ १ ॥
 आप छांदे एकल गोचरी करें, ते बुगल घ्यांनी बण जाय ।
 ताजे आहार तूटों परें, लांबों देख्यां तुरत फिर जाय ॥ २ ॥
 एकल जांणे आहार नितकों कळं, तो न मिलें सरस आहार ।
 तपसा कळं तों आहार ताजों मिलें, वले जस फेलें लोक मभार ॥ ३ ॥
 इम जांणी एकल तपसा करें, तिणरी तपसा री किसी परतीत ।
 तिणरी विकलाइ वेंहरण तणी, दीसैं घणी विपरीत ॥ ४ ॥
 रस गिघी री तपसा तणी, परतीत आवें केम ।
 तिणरी वेंहरण री विध परगट कळं, ते सुणजो घर पेम ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अनुकम्पा जिण आग्या में]

एकल नें आखी रोटी जवां री वेंहरावें, जब तों घणां गाढ सूं लेवें बटको ।
 जो लाडू सेरेक वेहरावें एकल ने, तो तुरत वेहरी नें करजावें गटको ।
 एकल भेषघारी राचारित ओखलजो* ॥ १ ॥
 आखी रोटी न लेवें नें बटको लेवें, ते तो आखो लाडू वेंहरें किण लेवें ।
 बटका रें लेखें तो डली लेणी लाडू री, आपरी सरघा सांहो क्यूं नही देखें ॥ ए० २ ॥
 आखी रोटी न लेवें नें बटको लेवें, तिणरो भेद भोली बायां नहीं जाणें ।
 आहार थोडो वेंहख्यो तिणसूं गुण गावें, तिणरो परमारथ पूरो न पिछाणें ॥ ३ ॥
 आतो घर घर फिरें आछाआहार नें रिगतों, तिण तो आछे आहार खांणे चित्त वीघो ।
 ते जवां री रोटी आखी किम खावें, तिणसूं जवां री रोटी रो बटको लीघो ॥ ४ ॥
 किणरेइ घरे तो बटकोइ न लेवें, गाला गोलों करें जवां री रोटी देख ।
 आगलें घर गयां आहार चोखों देवें तों, प्रतिपूर्ण आहार लेवें क्खोख ॥ ५ ॥
 कोइ तो बाइ कहे म्हारे बटको लीघों, कोइ कहे म्हारे मूल न लीयों आहार ।
 ते तों मिल मिल नें एकल रा गुण गावें, ते एकल रा चावा चारित न जाणें लिार ॥ ६ ॥
 यारें दया रा लाडू जाणें तिण ठामें, उरला घर छोडी नें तिण घर जावें ।
 तिहां एकल नें बाइ लाडू वेंहरावें, तो भावें जिता एक घर नां ल्यावें ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

जब रोटी रो तों बटको बटको वेंहरे,
 बटको बटको वेहख्यो तिणसूं महिमा वघारे,
 किणरे खरच विवाह रा लाडू वच्यां हुवे,
 ओर दातार छोडी ने तिण घर जावें,
 पारणें पारणें तिणहीज घर जावे,
 लाडू पूरा हुआं पछें जावें आगा ज्यूं,
 जवा री रोटी रो तो बटको वेहरे,
 ताजा आहार उपर तो तुटो पडे छे,
 जवां री रोटी रो तो बटको लेवे,
 बले फिरतों फिरतो ताजा घर सोभे,
 घणा लाडू वेहख्या तो दोष न कोइ,
 दोष तो छें आहार असुव वेहख्या मे,
 घणी रोटी वेहख्यां कोइ दोषण जाणे,
 ते मूढ मिथ्याती ववेक रा विकल,
 जवां री रोटी रो तो बटको वेंहरे,
 बले बेरांगी वाजें बटको वेहख्या सूं,
 आखी रोटी न वेंहरे नें बटको वेहरे,
 इण कारण एकल घणां घरां भटके,
 आखीआखी रोटी वेहख्यां थोडा घरा मे आवे,
 दूध दही पिण थोडोइज आवें,
 तिणसूं घर घर रोटी रो बटको वेंहरे,
 जब विगें पिण आवे छे घणां घरां नों,
 विगें सुखडी घणी खावां हुवें राजी,
 सरस आहार रे कारण घणां घरा भटके,
 केइ धूरत एकल छें मायावीया कपटी,
 ते एकंत आछों आहार खावा रे ताइ,
 जिण गांव में थोडो आहार मिलतों जाणे,
 जब लांबो पातलों आहार न छोडें,
 केइ एकल महिमा वघारण काजे,
 बले तपसा जणाय ताजो आहार ल्यावे,
 किणही कनें तो कपडादिक देवे,
 अथवा कोइ बाइ हुवे रागण एकल री,
 ३७

लाडू वेंहरावे तो लेवे भरपूर ।
 ते तो समझ पड्या विण बोले कूर ॥ ८ ॥
 तिण ने आपरो रागी दातार जाणे ।
 खपे जिता एकण घर रा आणे ॥ ९ ॥
 ब्रोहत लाडू वेहरावे छे जिहा ताई ।
 तिण री भोला ने खवर पडे नही काई ॥ १० ॥
 लाडू वेहरावे तो ल्गाय दे भीको ।
 एहवा एकल ने कदेय म जाणो नीकों ॥ ११ ॥
 गोहा री देवे तो लेवे दोग्य च्यार रोटी ।
 आ एकल री चलगत देखलो खोटी ॥ १२ ॥
 गोहां री रोटी घणी वेहख्या दोष नांही ।
 के दोष छे लोलपणा रे माही ॥ १३ ॥
 घणा लाडू वेहख्या कोइ दोषण जाणे ।
 ते पीपल बांधी मूरख ज्यूं ताणे ॥ १४ ॥
 ताजो आहार देवे तो लेवें भरपूरो ।
 एहवा कपटी रो बेराग कूडी फित्तूरो ॥ १५ ॥
 जाणें आछो आहार मिलसी ओर ठाम ।
 ताजो ताजों आहार गवेषण काम ॥ १६ ॥
 जब विगे सुखडी पिण थोडीज आवे ।
 जब थोडा सूं एकल संतोप न पावें ॥ १७ ॥
 जब तो वीस तीस घरां वेहर ल्यावे ।
 सुखडी दूध दही अं पिण घणां आवे ॥ १८ ॥
 बले ढाल राखे छे त्यारा दातार ।
 तिणरे किणरी हटक न दीसें लिंगार ॥ १९ ॥
 ते तो कूड कपट कर काम चलावे ।
 तिणसूं बटको बटको वेहरी ने ल्यावे ॥ २० ॥
 तो जवां री रोटी वेहरे दोग्य च्यार ।
 जाण ने अणोदरी न करे लिंगार ॥ २१ ॥
 तपसा कर लोकां माहे पमावे ।
 पछे छाने छाने तपसा माहे खावे ॥ २२ ॥
 किणही रे घर मेले सुखडियादिक सार ।
 ते छाने छाने देवे एकल ने आहार ॥ २३ ॥

कोइ एकल राखे आप तणा थानक मे,
 ते तों रातेवासी राखे तपसा में खावे,
 एकल कहे मोने वीस वरस हुआं छे,
 तिणरो डील तों दीसे आगा जिम पुष्टों,
 जो बेलें बेलें पारणो कहे निरंतर,
 तिणरी तपसा री परतीत किण विघ आवें,
 तिणरो डील पिण दीसे चिलका करतो,
 चाल तों पिण दीसे सेठें थकों एकल,
 तिणरा सरीर रो गोलों दीसें एक घारा,
 बेला तेला तिणरा किण विघ कहीजे,
 इणरा डील तणा अलांण देखतां,
 एहवा एकल भागल छे भेषधारी,
 एकल री तपसा री नही परतीत,
 तपसा नाम लेवें छे ठाण लोकां नें,

ते मेल दे एकत गुप्त ठिकाणें ।
 एहवा एकल रा चारित तो केवली जाणें ॥ २४ ॥
 निरंतर बेलें बेलें पारणो करतां ।
 बले थाको नही वीहार करतां विचरतां ॥ २५ ॥
 तो पिण हीणों कुमलाणो दीसे नांही ।
 कोइ चतुर विचार देखों मन मांही ॥ २६ ॥
 बले लोही ने मांस तूटा दीसे नांही ।
 तिणरे तपसा रा लखण न दीसे काई ॥ २७ ॥
 बले बल प्राकम पिण तिणरो दीसे छें गाढो ।
 पेट में पिण परीयों न दीसें खाडो ॥ २८ ॥
 तपसा रो अंस न दीसें लिगार ।
 ते तों निश्चेइ छें जिण आगना बार ॥ २९ ॥
 बले एकल रा सील री नही परतीत ।
 एहवा एकल होसी भव भव में फर्जात ॥ ३० ॥

ढलल ॢ

[सेवो रे सलध सयलसल]

के कलसूँ तो घणल भेलो रहणी न आवे, तलणसूँ फलरे एकलो ललपे ।
ते सुध सलधल ने पलण कहे असलध, ते करे एकल री थलप रे । भवीयण ।
जोवो हलरदय वलचलरी, थे छोड दो तलणरी ललरी रे । भवीयण ।
एकल छे जलण ललगनल बलरी* ॥ १ ॥

केइ वलषे रल बलडल फलरे एकलल, तलणसूँ घणल भेलो रहणी नलवे ।
वले खलवल रो वलघी रसनो लोलपी छे, घणल मे केम खटलवे रे ॥ २ ॥
जुवलने सलध सरखे तुवलसूँ न रहे भेलल, ललप छलडे फलरे एकलो ।
एहवो भलगल फलरे एकलो, तलणने कदेय म जलणजो भलो रे ॥ ३ ॥
लनेक टोललघर फलरे छे तुवलने, सलधु सरखे वलडे कर जोड ।
तुवलसूँ भेलो न रहे ने फलरे एकलो, तलणमें जलणजो मोटी खोड रे ॥ ॡ ॥
घणल भेलल रहलल परतो दीसे उघलड, तलणसूँ एकलल फलरे लघर्मी ।
तलणरल अहलण तो उघलडल दीसे, जलणोजे सलचेलो कुकरमी रे ॥ ५ ॥
तलण एकल ने पूछे थे टोलो कलड छोडयोँ, जब एकल वोले छे ललमो ।
म्हे डीलल जलणे ने छोडयल छे तुवलने, म्हलरे नही छे घणल सू कलमो रे ॥ ॢ ॥
मो सरलखो जे कोइ ललड मलले तो, जब तो करूँ तलणने चेलो ।
जो मो सरलखो कोइ नही मलले चेलो, तो ललपरे मेले रहूँ एकलो रे ॥ ॣ ॥
इम कहल कहल एकल ललणो जणलवे, ते पलण वोले बध न कलई ।
तलण एकल ने वलकल मलले चेलल, तुवलने पलण मूड लेवे मलही रे ॥ । ॥
ओ कहलतो मो सरलखल ने करसूँ चेलोँ, तलण मूड लीयल वलकल ने मलही ।
ओ पलण भूठ उघलडो एकल रो, ते पलण वलकल ने खवर न कलई रे ॥ ॥ ॥
थे पेहलल कहलतल हूँ चेलो करूँ तो, मो सरलखो करसूँ सुवनीत ।
हलवे चेलो कीयल भोलल वलकल ने, थलरल वोलुथल री कलसी परतीत ॥ १० ॥
एहवल चतुर वलचक्षण श्रलवक हुवे तो, इम पूछ करे तलणने खलष्ट ।
भलरीकरमल मूड श्रलवक तुवलने, गुर मललीयो एकल भलष्ट ॥ ११ ॥
एकलपणल रो खोज भलगण ने, वलकल ने मूड कीयल भेलल ।
जो उणरल श्रलवक ने समझ पडेँ तो, तुरत करे तलणरी हेलल रे ॥ १२ ॥
चेलल ने रलत रल नुवलरल रलखे, ललप रलत रो रहे एकलो ।
तलण एकल री लपरतीत दीसे उघलडी, एहवो एकल कडे नही भलो रे ॥ १३ ॥

*यह लकडी प्रत्येक गलथल के लनुत मे है ।

तिण एकल रा चेला ववेक विकल छें,
 म्हारो गुर म्हासू रात रो रहें एकलो,
 एहवा कुकरमी फिरे एकल,
 ते चेलो करे तो ही रहें एकलो,
 एहवां एकल गये कारले हुआ अनंता,
 केइ वरतमान काले पिण एहवा छें एकल,
 एकल रा चारित तो एकल जाणें,
 छद्मस्य तो अहनाणां सू जाणें,
 केइ भेषधारी फिरे एकला,
 तिणने पिण साध सरधे केइ भोला,
 ओ तों साध सरधे छें अनेक टोलां ने,
 वले त्यांसू पिण संभोग करे छें,
 त्यासू भेलों पिण रहे नही एकल,
 गामां नगरा पिण फिरें एकलो,
 ओ किण कारण फिरे एकलडो,
 तिणरा कूड कपट नें दोष सेवण री,
 तिण एकल माहे अनेक अवगुण छें,
 ते एकल रहे छें सगला थी डरतों,
 विण कारण फिरें घर घर एकलो,
 अवसर देखनें एकल पापी,
 घर घर फिरतो तपसा जणावे,
 पछें पारणा रे दिन तिण घर सेती,
 तिण एकल री सील आचार तपसा री,
 कोइ चतुर विचक्षण डाहा होसी ते,
 केइ क्रोधी कषाइ लोलपी होसी,
 वले विषे तणा वाया फिरें एकलो,
 ठाम ठाम सूतर माहें वीर नषेद्यों,
 केइ एकल नें साध सरधे ने वादे,
 इम सामल नें उत्तम नर नारी,
 उत्तम साध हुवे सुध आचारी,
 इण पाचमें आरे फिरें एकलो,
 ते ववेक विकल जिण आगना बारे,
 त्याने इतरी समझ छें नाही।
 किसा मुतलब रे ताइ रे ॥ १४ ॥
 तिणरे कुकरम रो छें चालो।
 ते नही संके लगावतों कालो रे ॥ १५ ॥
 अनंता होसी आगमीयें कालो।
 तिणरो कुण काढे नीकालो रे ॥ १६ ॥
 के केवलग्यांनी रह्या जाणों।
 कोइ आप म लेजो ताणों रे ॥ १७ ॥
 अपछंदा अवक्त मूढ।
 कर कर कूडी रुढ रे ॥ १८ ॥
 त्याने वादे छें सीस नमाय।
 वले मुख सू करे गुण ग्राम रे ॥ २६ ॥
 रहें एकलडो न्यार।
 वले करे एकलडो वीहार रे ॥ २० ॥
 ते तों भोलां ने नही ठीक।
 कुण करे तहतीक रे ॥ २१ ॥
 वले कूडकपट रो भंडार।
 रखे करे म्हारो उघाड रे ॥ २२ ॥
 पातरो लेइ हाथ।
 फेरे बाया रे माथे हाथ रे ॥ २३ ॥
 ताजो आहार पिण गली आवे।
 ताजों आहार ताकी ल्यावे रे ॥ २४ ॥
 भोला करसी परतीत।
 एकल ने जाणें विपरीत रे ॥ २५ ॥
 ते फिरसी एकल।
 एहवा एकल कदेयन भला रे ॥ २६ ॥
 साध ने एकलो रहणों नाही।
 ते पडीया मोटां फंद मांही रे ॥ २७ ॥
 एकल दूर तजीजे।
 त्याने हरष सहीत गुर कीजे रे ॥ २८ ॥
 ते नीमाइ निश्चे भिठी।
 तिणने साध न सरधे समदिठी रे ॥ २९ ॥

रत्न : ११

जिनाग्था री चौपई

ढलल : १

दुहा

श्री जिण धर्म जिण आगना मभे, आगना बारें नही जिण धर्म ।
तिण सूं पाप कर्म लागें नही, वले कटे आगला कर्म ॥ १ ॥
केइ मूढ मिध्याती इम कहें, जिण आगना बारें जिण धर्म ।
जिण आगना माहे कहे पाप छे, ते भूला अग्यानी भर्म ॥ २ ॥
जिण आगना बारें धर्म कहें, जिण आगना माहे कहे पाप ।
ते किण ही सूतर मे चाल्यो नही, यूं ही करें मूढ विलाप ॥ ३ ॥
केइ कहें धर्म तिहां देवा आगना, पाप छें तिहां करां नखेद ।
मिश्र ठिकाणें मून छें, एह धर्म नो भेद ॥ ४ ॥
इसडी करें छें परूपणा, ते करें मिश्र री थाप ।
ते बूढा खोटें मत बांध ने, श्री जिण वचन उथाप ॥ ५ ॥
केइ मिश्र तो मानें नही, माने हिंसा में एकंत धर्म ।
ते पिण बूढा छे बापडा, भारी करें छें कर्म ॥ ६ ॥
जिण धर्म तो जिण आगना मभे, आगना बारें नही धर्म लिगार ।
तिणरी साख सूतर री दे कहूं, ते सुणजो विस्तार ॥ ७ ॥

ढलल

[जीव मोह अणुकम्मा न आशीये]

आग्या मे जिण धर्म जिणराज रो, आगना बारे कहे ते मूढ रे ।
ववेक विकल सुध दुध विनां, ते बूढे छें कर कर रूढ रे ।
श्री जिण धर्म जिण आगना मभे* ॥ १ ॥
ग्यान दर्शन चरित ने तप, ए तो मोख रा मारग च्यार रे ।
या च्यारा में जिणजी री आगना, यां विना नही धर्म लिगार रे ॥ श्री २ ॥
यां च्यारा महिला एक एक री, आगना मागे श्री जिण पास रे ।
तिण ने देवे जिणेसर आगना, जब उ पिण पामें मन मे हुलास रे ॥ ३ ॥
या च्यारां विण मांनें कोइ अगना, तो जिणेसर सामे मून रे ।
जिण आगना विण करणी करे, ते करणी जावक जबून रे ॥ ४ ॥
वीसां भेदां रुके कर्म आवता, बारे भेदां कटें बांध्या कर्म रे ।
त्यांरी देवे जिणेसर आगना, ओहीज जिण भाष्यो धर्म रे ॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

कर्म हकें तिण करणी में आगना, कर्म कटें तिण करणी में जाण रे ।
 यां दोय करणी विनां नही आगना, ते सगली सावच्च पिछांण रे ॥ ६ ॥
 देव अरिहंत नें गुर साघ छें, केवलीयें भाष्यो ते धर्म रे ।
 ओर धर्म में नही जिण आगना, तिण सूं लागें पाप कर्म रे ॥ ७ ॥
 जिण भाष्या में जिण आगना, ओर रो भाष्यो ते ओर जाण रे ।
 तिण सूं सुद गत जायें नही, पाप कर्म लागे छें आंण रे ॥ ८ ॥
 केवली भाष्यो धर्म मंगलीक छें, ओहीज धर्म उत्तम जाण रे ।
 सरणों पिण लेणों दण धर्म रो, तिणमें जिण आगना परमांण रे ॥ ९ ॥
 ठाम ठाम सूतर में देखलों, केवली भाष्यों ते धर्म रे ।
 मून सामें तिहां धर्म कह्यों नहीं, मून सामें तिहां पाप कर्म रे ॥ १० ॥
 मून साम्भणीयों धर्म माठो धणों, भेष धाख्यां परुष्यों तांण रे ।
 खांच खांच बूडें छें बापडा, सूतर रा मूढ अजाण रे ॥ ११ ॥
 धर्म नें सुकल दोनूं ध्यान में, जिण आग्या दीघी वाखंवार रे ।
 आरत रुद्र ध्यान माठा बेहूं, यानें ध्यावें ते आग्या बार रे ॥ १२ ॥
 तेजू पदम सुकल लेस्या भली, त्यामें जिण आग्यामें निरजर धर्म रे ।
 तीन माठी लेख्या में आग्या नहीं, तिण सूं बंधे पाप कर्म रे ॥ १३ ॥
 भला परिणाम में जिण आगना, माठा परिणाम आग्या बार रे ।
 भला परिणामा निरजरा नीपजे, माठा परिणामा पाप दुवार रे ॥ १४ ॥
 भला अघवसाय में जिण आगना, आग्या बारें माठा अघवसाय रे ।
 भला अघवसाय सूं निरजरा हुवें, माठा अघवसाय सूं पाप बंधाय रे ॥ १५ ॥
 ध्यान लेस्या परिणाम अघवसाय, च्याहं भलां में आग्या जाण रे ।
 च्याहं माठा में जिण आगना नहीं, यांरा गुणां रो कीजो पिछांण रे ॥ १६ ॥
 च्यार मंगल च्यार उत्तम कह्या, च्यार सरणा कह्या जिणराय रे ।
 ए सगला छें जिण आगना मफे, आग्या विण आछी वस्त न काय रे ॥ १७ ॥
 सर्व मूल गुण उत्तरगुण, देस मूल उत्तर गुण दोय रे ।
 यां दोनूं गुणां में जिण आगना, आगना बारे गुण नहीं कोय रे ॥ १८ ॥
 अर्थ परमअर्थ जिण धर्म छें, उवाइ सूयगडाअंग मांय रे ।
 तिण मांहे तो श्री जिण आगना, सेख अनर्थ में आग्या न कांय रे ॥ १९ ॥
 सर्वविरत धर्म साघ तणों, देसविरत श्राक्क रो धर्म रे ।
 यां दोनूं धर्म में जिण आगना, आग्या बारें तो बंधसी कर्म रे ॥ २० ॥
 उजल धर्म छें श्री जिणराज रो, ते तो श्री जिण आग्या सहीत रे ।
 मुगत जावा अजोग साघ कह्यों, ते जिण आगना सूं विपरीत रे ॥ २१ ॥

आग्या लोपी चालें छांदें आप रें, तेग्यांनादिक घन सूं ठालो थाय रे ।
 आचारग अघेन दुसरे, जोवो छठा उदेसा मांय रे ॥ २२ ॥
 आग्या सूं करूं ते घन मांहरो, एहवो चित्तवें साधु मन मांय रे ।
 आगना विण करवो जिहाइ रह्यो, रुडो बोलवो पिण नही कांय रे ॥ २३ ॥
 आग्या मांहिलो ते धर्म मांहरो, ओर सर्व पारको थाय रे ।
 आचारंग छठा अघेन मे, दूजे उदेसें कह्यो जिणराय रे ॥ २४ ॥
 आगना मांहें संजम ने तप, आगना में दांन परमाण रे ।
 आगना रहीत धर्म आछों नही, जिण कह्यो पलाल समांण रे ॥ २५ ॥
 आश्रव निरजरा रो ग्रहण जूदो कह्यो, ते जाणसीजिण आग्या रो जांण रे ।
 आचारंग चोथा अघेन में, पेंहले उदेसें जोय पिछांण रे ॥ २६ ॥
 निरवद धर्मी चतुरविध संघ छे, ते आग्या सहीत वांछें अनुष्ठान रे ।
 ते आचारंग चोथा अघेन में, तीजे उदेसें कह्यो भगवांन रे ॥ २७ ॥
 तीथंकर धर्म कीघो तको, ते मोख रो मारग सुघ वेस रे ।
 ओर मोख रों मारग को नही, पांचमें आचारग तीजे उदेस रे ॥ २८ ॥
 जिण आगना बारली करणी तणो, उदम करें अग्यानी कोय रे ।
 आग्या मांहिली करणी रो आलस करें, गुर कहे सीष तोने दोनूं म होय रे ॥ २९ ॥
 कुमारग तणी करणी करे, सुमारग रो आलस करे कोय रे ।
 दोनूं कारण दुरगत तणा, आचारंग पांचमो घेन जोय रे ॥ ३० ॥
 जिण मारग रा अजांण ने, जिण उपदेस रो लाभ न होय रे ।
 ते आचारंग नां चोथा अघेन में, तीजा उदेसा मे जोय रे ॥ ३१ ॥
 जो दांन सुपातर नें दीयो, तिणमें श्री जिण आग्या जांण रे ।
 कुपातर दांन में आगना नही, तिणरी बुधवंत करजो पिछांण रे ॥ ३२ ॥
 साध विनां अनेरा सर्व नें, दांन न दे साध माठो जाण रे ।
 दीघां भमण करें संसार मे, तिणसूं साधां कीया पचखाण रे ॥ ३३ ॥
 सुयगढाअंग नवमां अघेन में, तेवीसमी गाथा जोय रे ।
 वले दीघां भागे वरत साधु रा, जिण आगना पिण नही कोय रे ॥ ३४ ॥
 पातर कुपातर दोनूं ने दीयां, विकल जांणे दोया मे धर्म रे ।
 धर्म होसी सुपातर दांन में, कुपातर नें दीयां पाप कर्म रे ॥ ३५ ॥
 खेतर कुखेतर श्री जिणवर कह्या, चोथें ठाणें ठाणाअंग मांय रे ।
 सुखेतर में दीयां जिण आगना, कुखेतर में आग्या नही कांय रे ॥ ३६ ॥
 आहार पांणी ने उपघादिक, साध देवे गृहस्थ नें कोय रे ।
 तिणने चोमासी डड नसीत मे, पनरमें उदेसें जोय रे ॥ ३७ ॥

गृहस्थ नें दांन दे तिण साध नें, प्रायच्छित आवें छें कीषां अधर्म रे।
 तो तेहीज दांन गृहस्थ दीयें, त्याने किण विघ होसी धर्म रे ॥ ३८ ॥
 असंजम छोडें संजम आदर्यों, कुसील छोडें हूवो ब्रह्मचार रे।
 अकल्पणीक अकारज परहरे, कल्प आचार कीयो अंगीकार रे ॥ ३९ ॥
 अग्यांन छोडें ने ग्यांन आदर्यों, माठी किरिया छोडी माठी जाण रे।
 भली किरिया ने साधां आदरी, जिण आग्या सू चतुर सुजाण रे ॥ ४० ॥
 मिथ्यात छोडे समकत आदर्यों, अबोध छोडें नें आदरीयो बोध रे।
 उनमारग छोडे संनमारग लीयों, तिणसूं आतम -होसी सोध रे ॥ ४१ ॥
 आठ छोड्या ते जिण उपदेस सू, पाप कर्म तणो बंध जाण रे।
 जिण आगना सू आठ आदर्या, तिणसूं पामें पद निरवाण रे ॥ ४२ ॥
 ठाम ठाम सूतर में देख लो, जिण धर्म जिग आग्या में जाण रे।
 ते मूढ मिथ्याती जाणें नही, यूंही बूडें छें कर कर ताण रे ॥ ४३ ॥
 हूं कहि कहि नें कितरो कहूं, आग्या वारें नही धर्म मूल रे।
 आग्या वारे धर्म कहें तेहनी, सरखा कण विण जाणों घूल रे ॥ ४४ ॥

ढाल : २

दुहा

केइ साधु वाजे जेंन रा, ते कूड - कपट री खान ।
ते आगना बारें धर्म कहे, त्यांरा घट माहे घोरअग्यांन ॥ १ ॥
त्याने ठीक नही जिण धर्म री, जिणआग्या रीपिणनही ठीक ।
त्याने पिरवार बवेक विकल मिल्यो, त्यामे बाजे पूज महिडीक ॥ २ ॥
ते वडा उट ज्युं आगें चलें, लारें चालें जेम कतार ।
ते बोहला वूडें छे वापडा, बडा वूडां री लार ॥ ३ ॥
हिचे वले वशेखे जिण आगना, ओलखजो बुधवांन ।
तिणरा भाव भेद परगट करूं, ते सुण सुस्त दे कान ॥ ४ ॥

ढाल

[बालम मोरा हो]

साध सामायक वरत उचरें, तिणमें सावद्य रा पचचाण ।
तेहीज सावद्य गृहस्थ करें, तिणमे श्री जिण धर्म म जाण ॥
श्री जिण धर्म जिण आगना तिहा* ॥ १ ॥
श्रावक सामायक पोसो करे, तिणमे पिण सावद्य रा पचखांण ।
तेहीज सावद्य कामा छूटो करें, तिणमे पिण जिण धर्म म जाण ॥ श्री० २ ॥
धर्म कहें साध जिण आगना मभे, आग्या बारें धर्म कहे मूढ ।
तिण श्री जिण धर्म न ओलख्यो, तिण भाली मिथ्यात री रुढ ॥ ३ ॥
जिण धर्म री जिण आगना दीये, जिण धर्म सिखावे जिणराय ।
आग्या बारें धर्म किण सिखावीयो, इणरी आग्या देवे कुण ताय ॥ ४ ॥
केइ आगना बारें मिश्र कहें, केइ धर्म पिण कहे आग्या वार ।
तिणने पूछीजे ओ धर्म किण कह्यो, तिणरो नाम चोडे तूं पार ॥ ५ ॥
इन मिश्र ने धर्म री कुण घणी, इणरी आग्या कुण दे जोड्यां हाथ ।
देव गुर मून सामे न्यारा हूवा, उणरी उतपत रो कुण नाथ ॥ ६ ॥
केइ वेस्या रा पुत्र ने पूछा करें, थारी मा कुण ने कुण तात ।
जब ओ नाम बतावे किण तात रो, ज्युं आ मिश्र वालां री छे वात ॥ ७ ॥
वेस्या रा अग रो उपनों, तिणरो कुण हुवे उदीरी ने बाप ।
ज्युं आग्या बारें धर्म ने मिश्र री, जिण धर्मी कुण करसी थाप ॥ ८ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

देस्या रा अंग रो उपनो,
 ज्यू जिण आग्या बारें धर्म नें मिश्र री,
 बाप विण बेटो निरुचें हुवें नहीं
 जिण आग्या होसी तो जिण धर्म छे,
 कोइ कहे मांहरी मा तो छें बांभडी,
 ज्यू मूर्ख कहें जिण आगना विनां,
 मा विण बेटा रो जनम हुवें नहीं,
 ज्यू आग्या विण धर्म हुवें नहीं,
 गूधू पंखी ने चोर दोनू भणी,
 ज्यू भारी करमा जीव तेहनें,
 काग नीबोली में रित करे,
 ज्यू काग भडसूरा जेहवा मानवी,
 चोर परदार सेवण कुसीलीया,
 ज्यू आग्या बारें धर्म सरघायवा,
 दुष्ट जीव मंजारा नें चीत रा,
 एहवो दुष्ट मिश्र सरघा रो घणी,
 सतगुर री आग्या मानें नहीं,
 ज्यू कोइ जिण आग्या विण करणी करे,
 विगडायल हुवां न्यात बारे करे,
 जेहवो धर्म जिण आग्या बारलो,
 न्यात बारें ते न्यात माहें नहीं,
 ज्यू जिण आग्या विण धर्म अजोग छें,
 जो आग्या विण करणी में धर्म छें,
 तो मन मानी करणी करसी तेहने,
 जिण आग्या बारली करणी कीयां,
 तो किण करणी सू पाप नीपजें,
 ग्यान दरसन चारित नें तप,
 यां च्यारा माहें तो धर्म जिण कह्यो,
 इम पूछ्यां रो जाब न उपजें,
 विकलां नें विगोवें छें पापीया,
 जिण धर्म जिण आग्या बारें कहें,
 इण सरघा सू वूडें छे वापडा,

उण लखणों हुवे उदीरी नें बाप ।
 केइ करें छें पाषंडी थाप ॥ ९ ॥
 ज्यू जिण आगना विण धर्म न होय ।
 आगना विण धर्म न कोय ॥ १० ॥
 तिणरो हूं छूं आतम जात ।
 करणी कीघां धर्म साख्यात ॥ ११ ॥
 जनमे ते बांभ न कोय ।
 जिण आग्या तिहां पाप न होय ॥ १२ ॥
 गमती लागें अंधारा री रात ।
 जिण आग्या बारलो धर्म सुहात ॥ १३ ॥
 भंडसूरा रें मिष्टो आवें दाय ।
 रीभें आग्या बारली करणी मांय ॥ १४ ॥
 ते तो सेरी जोवे दिन रात ।
 उंधी कर कर अग्यानी वात ॥ १५ ॥
 छल सूं करें पर जीवां री घात ।
 छल सूं घालें विकलां रे मिथ्यात ॥ १६ ॥
 ते तो अपछंडा नें अवनीत ।
 ते करणी पिण छें विपरीत ॥ १७ ॥
 ते विगडायल फिरें न्यात रें बार ।
 तिणमें कदे मंत जाणो भली वार ॥ १८ ॥
 तिणनें नहीं बेंसाणे एक पांत ।
 कीयां पूरीजें नहीं मन खांत ॥ १९ ॥
 तो जिण आग्या रो काम न कोय ।
 सगली करणी कीघां धर्म होय ॥ २० ॥
 पाप नहीं लागें नें धर्म थाय ।
 तिण करणी रो तूं नाम वताय ॥ २१ ॥
 ए च्याळंड छें आगना मांय ।
 यां विनां ओर नाम वताय ॥ २२ ॥
 भूठ बोले वणाय वणाय ।
 जिण आग्या बारें धर्म सरघाय ॥ २३ ॥
 ते पिण छें जिण आगना वार ।
 ते भव भव में होसी खुवार ॥ २४ ॥

जिण आगना बारे घर्म कहे, ते विगडायल जेंन रा जाण ।
 त्यारी अर्भितर फूटी छे मांहिली, ते अघारा ने कहें भाण ॥ २५ ॥
 जिण आगना विण करणी करे, ते तो दुरगतना आगेवाण ।
 जिण आग्या सहीत करणी कीयां, तिण सूं पामे पद निरवाण ॥ २६ ॥
 आग्या बारे घर्म कहे तेहनी, जोड कीधी खेरवा मभार ।
 सवत अठारें चालीसे समे, असोज विद पांचम थावरवार ॥ २७ ॥



ढाल : ३

दुहा

केह पाखंडी जेन रा, साघ नाम धराय ।
ते पाप कहें जिण आगना मभे, कूडा कुहेत लमाय ॥ १ ॥
आहार पांणी साघ भोगवें, ते श्रीजिण आगना सहीत ।
तिण मे परमाव नें इविरत कहें, त्यांरी सरघा घणी विपरीत ॥ २ ॥
वले वसत्र पातर कांबलो, इत्यादिक उपघ अनेक ।
ते पिण जिण आगना सूं भोगवें, त्यांनें पाप कहें ते विगर ववेक ॥ ३ ॥
त्यां श्रीजिण घर्म न ओलख्यो, जिण आगना पिण ओलखी नाहि ।
तिणसूं अनेक बोलां तणों, पाप कहे जिण आगना माहि ॥ ४ ॥
कहे नंदी उतरें तिण साघ नें, आगना दे जिण आप ।
ते प्रतख हिंसा देख लो, जिण आगना छे पिण पाप ॥ ५ ॥
इत्यादिक बोल अनेक में, आगना दे जिणराय ।
तिहां हिंसा हुवें छें जीव री, तिण सूं पाप लागें आय ॥ ६ ॥
इम कहि कहि जिण आगना मभे, थापे छे पाप एकंत ।
हिंवे ओलखाउ जिण आगना, ते सुणजों मतवंत ॥ ७ ॥

ढाल

[मगध देस को राजा राजे]

जे जे कारज जिण आगना सहीत छें, ते उपयोग सहीत करें कोय ।
जे कारज करतां घात जीव तणी हुवे, तिणरों साघ नें पाप न होय रे । भवीयण ।
जोवो हिरदय विचारी, ये कांय करों रूढ हीया री रे । भवीयण ।
जिण आगना सुखकारी ॥ १ ॥
जीव तणी घात हुवें साघ थी, तिणरों साघ नें पाप न लागे ।
जिण आगना पिण लोपी न कहीजें, वले साघ रो वरत न भागें रे ॥ २ ॥ भ० जि० २ ॥
ए इचर्य वाली वात उघाडी, काचां रे हीयें केम समावें ।
ज्यां जिण आगना ओलखी नही पूरी, ते जिण आगना में पाप वतावें रे ॥ ३ ॥
नंदी उतरें जब सुघ साघां नें, आगना दे जिण आप ।
जों नंदी उतरें त्यांने पाप हुवें तो, आगना दीधी त्यांने पिण पाप रे ॥ ४ ॥
छंदमएय साव नंदी उतरें त्यांने, केवली आगना दें सोय ।
पोंतें पिण केवली नदी उतरें छें, पाप होसी तो दोयां नें होय रे ॥ ५ ॥

जे नदी उतरे छे केवलम्यानी, त्याने पाप न लागे, लिगार ।
 तो छदमस्थ ने पाप किण विघ लागे, या दोया रें छे एक आचार रे ॥ ६ ॥
 छदमस्थ ने केवली नंदी उतरें जब, दोया सू हुवे जीवा री घात ।
 जो जीव मूआ त्यांरी हिंसा लागे तो, दोया ने लागे परणातिपात रे ॥ ७ ॥
 केवल ग्यानी नदी उतरे त्याने, पाप - न लागे कोय ।
 तो छदमस्थ साघ नदी उतरे जब, त्याने पिण पाप न होय रे ॥ ८ ॥
 कोइ कहे केवली ने पाप न लागे, नदी उतरता जोग सुध ।
 पिण छदमस्थ ने पाप लागे नदी रो, ए प्रतख वात विरुध रे ॥ ९ ॥
 जिण विघ केवली नदी उतरे जिम, पिण छदमस्थ उतरे जो नाहि ।
 तो खामी छे तिणरे इरज्या सुमत में, पिण खामी नही किरतव माहि रे ॥ १० ॥
 ते खामी पडे ते अजाण पणे छे, इरियावही पडिकमण री थाप ।
 वले इधकी खामी जाणे इर्या सुमत मे, तो प्राच्छित ले उतारे पाप रे ॥ ११ ॥
 साघ नदी उतरे ते किरतव, सावद्य म जाणो कोय ।
 जो सावद्य हुवे तो सजम मागे, ते विराधक री पात होय रे ॥ १२ ॥
 आगे नदी उतरता अनता सावां ने, उपनो केवलम्यानी ।
 ते नंदी माहे आउपो पूरो करने, गया पाचमी गति परखानों रे ॥ १३ ॥
 कोइ कहे साघ नदी उतरे ते, इतरी हिंसा रो छे आगार ।
 तिणरो पाप लागे पिण व्रत न भागे, इम कहे ते मूढ गिंवार रे ॥ १४ ॥
 जो साघ रे हिंसा रो आगार हुवे तो, नदी उतरतां मोख न जावे ।
 हिंसा रो आगार ने पाप लागे जब, चवदमोइ गुणठाणो नावे रे ॥ १५ ॥
 कोइ कहे नदी उतरे जब साघने, लागे असक हिंसा परीहार ।
 तिणरो प्राच्छित विण लीया सुध नही छे, इम कहे तिणरेंई अधार रे ॥ १६ ॥
 जो नदी उतर्यां रो प्राच्छित विण लीघा, साघ सुध न थावे ।
 तो नंदी माहे साघ मरे तो असुध, ते मोख माहे क्युं जावें रे ॥ १७ ॥
 साघ नंदी उतर्यां माहे दोष हुवे तो, जिण आगना दे नाहि ।
 जिण आगना देतां पाप नहीं छे, थे सोच देखो मन मांहि रे ॥ १८ ॥
 नंदी उतरे त्यारो ध्यान कीसो छें, किसी लेइया किसा परिणांम ।
 जोग किसा अघवसाय किसा छें, भला भूंडा री करो पिच्छांण रे ॥ १९ ॥
 ए पांचू भला छें तो जिण आगना छे, माठा में जिण आग्या न कोय ।
 ए पांचू माठा सू पाप लागे छे, भलां सू पाप न होय रे ॥ २० ॥
 छदमस्थ ने केवली नंदी उतरे जब, लारें छदमस्थ केवली आगें ।
 छदमस्थ उतरें केवली री आग्या सू, त्याने पाप किसे लेखें लागें रे ॥ २१ ॥

जिण सासण नें च्यार तीर्थ माहें, जिण आगना छें मोटी ।
 कोइ जिण आगना माहें पाप बतावें, तिणरी सरघा घणी छें खोटी रे ॥ २२ ॥
 दवरो दाघो पड्यो जाय जला में, पिण जल में लागी लाय ।
 तो किसी ठोड करे ठंडाई, किसी ठोड साता हुवे ताहि रे ॥ २३ ॥
 ज्यूं जिण आगना माहें पाप हुवें तो, किणरी आगना माहे धर्म ।
 किणरी आगना पाल्यां सुद गति जावें, किणरी आग्या पाल्यां कटें कर्म रे ॥ २४ ॥
 छाटां आवे तिण माहे साघ, मातरो परठें दिसां जावें ।
 त्यांनं पिण छे जिणजी री आग्या, तिणमें कुण पाप बतावें रे ॥ २५ ॥
 साधु राते लघू बड़ी नीत दोनूई, परठण जावें अछायां ।
 बले समभाय करण राते थानक वारें, जावे आवें अछायां माहा रे ॥ २६ ॥
 इत्यादिक साधु रे राते काम पडें जब, अछायां जावें नें आवें ।
 त्यांनं पिण छे जिणजी री आग्या, तिणमें कुण पाप बतावें रे ॥ २७ ॥
 राते अछायां अपकाय पडें छें, त्यांरी घात साव थी थाय ।
 ओ पिण न्याय नंदी जिम जाणों, पाप नही जिम आगना मांय रे ॥ २८ ॥
 नंदी माहें वेंहती साघवी नें, साघ राखे हाय सभाय ।
 तिण माहे पिण छें जिणजी री आग्या, तिण माहें पाप किसी पर थाय रे ॥ २९ ॥
 इरजा सुमत चालंतां साघनं, कदा जीव तणी हुवे घात ।
 ते जीव मूंआ रो पाप साघ नें, लागे नहीं अंसमात रे ॥ ३० ॥
 जो ईर्या सुमत विण साधु चाले, कदा जीव मरें नही कोय ।
 तो पिण साघ नें हिंसा छकाय री लागी, पाप तणो बंध होय रे ॥ ३१ ॥
 जीव मूंआ तिहां पाप न लागो, न मूंआ तिहां लागो पापो ।
 जिण आगम संभालो जिन आगना जोवो, जिण आग्या में पाप म थापो रे ॥ ३२ ॥
 जब केइ कहें गृहस्य हाल्यां चाल्यां विण, साघां नें केम बेहरावें ।
 हालण चालण री तो नहीं जिण आग्या, चाल्यां विण वेंहरावणी नावे रे ॥ ३३ ॥
 बेंठो हुवें तो उठ बेहरावें, उभो हुवें तो बेंठ वेंहरावें ।
 बेसण उठण री तो नहीं जिण आग्या, बारमो वरत किम नीपजावे रे ॥ ३४ ॥
 जो जिण आगना बारे पाप हुवें तो, हांलण चालण रो पाप थावें ।
 साघां ने वेंहराया रो धर्म ते चोडे, कोइ इसडी चरचा ल्यावें रे ॥ ३५ ॥
 कोइ कहे चालण री जिण आगना नाहीं, तो ही चाल वेंहरायो रो धर्म ।
 जिण आगना विण चाल्यो तिणने, लागो नहीं पाप कर्मो रे ॥ ३६ ॥
 इण विघ कूहेत लगावें अग्यांनी, धर्म कहें जिण आगना बारो ।
 हिवें जिग आगना माहें धर्म सरघण रा, जाब हीया में धारो रे ॥ ३७ ॥

मन वचन काया रा जोग तीनुई,
 निरवद जोगां री श्री जिण आग्या,
 जोग नाम व्यापार तणो छे,
 भला जोगां री जिण आगना छे,
 मन वचन काया भली परवतावो,
 ते काया भली किण विघ परवरतावे,
 निरवद किरतव मांहे काया परवरतावे,
 तिण किरतव री छें जिण आग्या,
 साघां नें आहार हाथां सूं वेंहरावे
 ते वेंहरावण रों किरतव निरवद,
 निरवद किरतव गृहस्थ करे त्यानें,
 ते किरतव तो काया सूं करसी,
 निरवद किरतव री आगना दीघां,
 हालण चालण री आगना दीघां,
 बेंसो सूओ उभां रहो ने जावो,
 दसवीकालिक सातमें अधेने,
 उभां रो किरतव बेठा रो किरतव,
 पिण बेसण उठण रो न कहें गृहस्थ ने,
 निरवद किरतव री आगना दीघां,
 किरतव छोड नें चालण री आग्या दे,
 गृहस्थ रे दुवारे पड्यो कपडादिक,
 जब कोइ गृहस्थ भेलो करें कपडादिक,
 साघां नें मारग देवा रो किरतव,
 जो कपडादिक रे काम भेलो करे तो,
 तिण सूं साघ कहें गृहस्थ ने,
 कपडो भेलो करों सांवटने,
 गृहस्थ रो उपघ करें आगो पाछो,
 ते पिण किरतव निरवद जाणों,
 केइ श्रीजिण आगना वारें अग्यांनी,
 भोला लोकां ने भर्म में पाडें,
 श्रावक री मांहोमांहि करे वीयावच,
 त्याने श्रीजिण आगना मूल न दीसैं,

सावद्य निरवद जाणो ।
 तिणरी करों पिछांणो रे ॥ ३८ ॥
 ते भला नें भूंडा व्यापार ।
 माठा जोग जिण आगना बार रे ॥ ३९ ॥
 गृहस्थ ने कहे जिणराय ।
 तिणरो विवरो सुणों चित्त ल्याय ॥ ४० ॥
 तिण किरतव नें काय जोग जाणो ।
 किरतव ने करो अपोवांणो रे ॥ ४१ ॥
 उठ बेस वेंहरावे कोय ।
 तिणरी श्री जिण आगना होय रे ॥ ४२ ॥
 आगना दे जिणराय ।
 पिण न कहे चलावो थे काय रे ॥ ४३ ॥
 पाप न लागे कोय ।
 गृहस्थ सूं संभोग होय ॥ ४४ ॥
 गृहस्थ ने साघ न कहें आंम ।
 सेंतालीसमीं गाथा में तांम रे ॥ ४५ ॥
 किरतव करणो कहें जिणराय ।
 ते विचार जोवो मन मांय रे ॥ ४६ ॥
 निरवद चलिओ ते माहे आयो ।
 तो गृहस्थ रो संभोगी थापो रे ॥ ४७ ॥
 जब साघ सूं जाणी नावे माहि ।
 साघ ने मारग देवा ताहि रे ॥ ४८ ॥
 ते किरतव निरवद चोखो ।
 सावद्य काम सदोखो रे ॥ ४९ ॥
 मोने जागां दो जावां माय ।
 इसडी न काडे वाय रे ॥ ५० ॥
 वेंसवा सूवादिक रे काम ।
 नही उपधि उपर परिणाम रे ॥ ५१ ॥
 धर्म कहे छें तांम ।
 लेई अनेक वोलां रो नाम रे ॥ ५२ ॥
 वले साता पूछे नें पूछावे ।
 तिण मांहें धर्म वतावें रे ॥ ५३ ॥

श्रावक माहोमांहि वीयावच कीधी, तिण दीयों सरीर रो साज ।
 छक्राय रो ससतर तीखो कीघों, तिणसूं आग्या न दें जिणराज रे ॥ ५४ ॥
 गृहस्थ री वीयावच कीधी तिणरो, अठावीसमो अणाचार ।
 साता पूछ्यां रो अणाचार सोलमो, तिण मे धर्म नहीं छे लिंगार रे ॥ ५५ ॥
 सरीरादिक ने श्रावक पूजें, मातरादिक परठें पूज ।
 इयादिक कारज री नही जिण आग्या, तिणमें धर्म कहें ते अबूज रे ॥ ५६ ॥
 सरीर पूजे मातरादिक परठे, ते तो सरीरादिका रों छें काज ।
 जो धर्म तणो ए कारज हुवें तो, आगना देतां जिणराज रे ॥ ५७ ॥
 जो पूजणो परठणो न करे जावक, तो काया थिर राखणी एक ठाम ।
 हस्तादिक ने विनां चलायां, रहणी न आवे तांम रे ॥ ५८ ॥
 लघू बडी नीत तणी अबाधा, खमणी ठांमणी नावे तांम ।
 पूज ने परठें तोही कांमो सावद्य, तठे जिण आग्या रों नहीं कांमरे ॥ ५९ ॥
 कदा थोडी बुध ज्यानें समझ पडें नही, त्यानें राखणी जिण परतीत ।
 आगना माहें पाप आग्या बारें धर्म, इसडी न करणी अनीत रे ॥ ६० ॥
 जिण आगना माहें पाप कहें ज्यांरी, मति घणी छे माठी ।
 जिण आगना बारें धर्म कहें छें, त्यांरी अकल आडी आई पाटी रे ॥ ६१ ॥
 जिण आगना माहें पाप कहितां, मूर्ख मूल न लाजे ।
 वले धर्म कहें जिण आगना बारें, ते पिडत पाखंड्यां मे वाजे रे ॥ ६२ ॥
 जिण आगना माहें पाप कहे छे, ते बूडें कर कर तांण ।
 जिण आगना बारें धर्म कहें छें, ते पिण पूरा मूढ अयांण रे ॥ ६३ ॥
 संवत अठारें वरस इक्तीसे, जेठ सुदि तीज सुकरवार ।
 श्री जिण आगना ओलखावण, जोड कीघो पर उपगार रे ॥ ६४ ॥

ढाल : ४

ढुहा

पाप अठारे कह्या अति बुरा, श्री जिण मुख सू आन ।
 ते सेव्यां सेवायां भलो जांणीयां, तीनूइ करणा पाप ॥ १ ॥
 ए श्री जिण वचन उत्थापने, वेई उंधी परुपे ताहि ।
 कहे करण जोग मिले नही, पाप अठारा माहि ॥ २ ॥
 पाप कीया पाप नीपनो कहे, पाप कराया कहे छे' धर्म ।
 इण विघ करे छे परुपणा, ते भूला अग्यांनी भर्म ॥ ३ ॥
 त्याने प्रश्न पूछे इण वात रो, पाप कराया धर्म किघ थाय ।
 जब कल्प वतावे साघ रो, पिण सुखो बोल्यो नही जाय ॥ ४ ॥
 तिण जिण आगना नही ओलखी, साघरो कल्प ओलख्यो नाहि ।
 त्या करण जोग विगटावीया, पाप कहे जिण आगना माहि ॥ ५ ॥
 कहे साघ न पेहरे कांचूवो, पेहख्या लागे पाप कर्म ।
 पिण साघवी ने आगना दीयां, हुवे छे निकेवल धर्म ॥ ६ ॥
 इत्यादिक अनेक बोल कल्प रा, त्यामे घाले घुचलाई मूढ ।
 करण जोग उथापे अग्यांनी थकां, त्या भाली मिथ्यात री रूढ ॥ ७ ॥
 कल्प साघ साघवी तणो, जुदो जुदो बाध्यो जिणराय ।
 तिण कल्प मे जिणजी री आगना, तिणमे पाप कीहां थी थाय ॥ ८ ॥
 साघनें कल्पे ते साघ करे, साघवी करे कल्पे ते तांम ।
 पाप नही त्यारा कल्प मे, करण जोग रो अठेनही काम ॥ ९ ॥
 हिवे कल्प साघ साघवी तणो, सांभलजो नर नार ।
 निरणो कीजे घट भितरे, ज्यू उतरो भवपार ॥ १० ॥

ढाल

[मगध देस को राज राजे]

साघ साघवी रा कल्प माहे अग्यानी, पाप कहे मूढ कोय,
 तिण कल्प माहे श्री जिणजी री आग्या, तिहा पाप रो अस न होय रे ॥
 भवीयण जोवो हिरदय विचारी, काय करो आतम भारी रे ।
 जिण बाध्यो कल्प सुखकारी* ॥ १ ॥
 साघ साघवी रो कल्प श्री जिण बांध्यों, तिणरी श्री जिण आगना दीधी ।
 तिण माहे पाप वताए अग्यानी, खाच गला ने लीधी रे ॥ जि० २ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

तीन पिछोवडी साध ने कल्पे, साधवी ने कल्पे च्यार ।
 यां देयां ने छे श्रीजिण आग्या, तिमें पाप नहीं छे लिंगार ॥ ३ ॥
 च्यार पछोवडी साधवी राखे तो, साध आग्या देवे भलीभात ।
 जो पातेंई साध च्यार राखे तो, भागल री छे पांत रे ॥ ४ ॥
 कांचूओ ने जांधीयो साधवी राखे, तिणने आग्या दे साध रखावे
 जो साध पेंहरे कांचूओ जांधीयो, तो जिण आग्या रो चोर कहावे रे ॥ ५ ॥
 गांमां नगरा साधवी ने कल्पे, शेखाकाल रहिणो मास देय ।
 जो शेखा काल साध रहे दोय महीना, तो जिण आगना रो चोर होय रे ॥ ६ ॥
 साधवीयां कमाड जडे ने उघाडे, सील व्रत राखण रे काजे ।
 जो राध कमाड जडे ने उघाडे, तो पेंहिलो माहावरत भाजे रे ॥ ७ ॥
 साधवीयां किवाड जडे ने उघाडे, त्याने जिण आगना दे सोय ।
 साध ने किवाड जडण उघाडण री, जिण आगना नही कोय रे ॥ ८ ॥
 कदा साधवी राखे उघाडो दुवार, तिणने प्राछित दे करे सुध ।
 तिणने आगनां दे किवाड जडण री, साध पोते जडे तो असुध रे ॥ ९ ॥
 पेंहला ने छेहला तीर्थकर त्यांरा, ते वाजे कपठीया साध ।
 त्यारे धवला ने अल्पमोला कपडा, वले गिणती में पिण मरजादा रे ॥ १० ॥
 विचला तीर्थकर बावीस त्यांरा, ते वाजे अकपठीयां साध ।
 त्यारे पांच वर्णा ने बहुमोला कपडा, वले गिणती में नही मरजाद रे ॥ ११ ॥
 जे कपठीया ने नही कल्पे ते कपडा, भोगवे तो लागे पाप कर्म ।
 तेहीज कपडा अकपठीया ने कल्पे, त्याने भोगवीयां छे धर्म रे ॥ १२ ॥
 पांच वर्णा ने बहु मोला कपडा, अकपठीया राखे भली भात ।
 त्याने कपठीया आगना दे तो ही धर्म, पोते राखे तो चोरां री पांत रे ॥ १३ ॥
 कपठीया साध साधवी ने, गांमां नगरां मरजाद सूं रहिणो ।
 अकपठीया रहे विण मरजादा, जिण आग्या परिमाणे वहिणो रे ॥ १४ ॥
 असणादिक सेज्जा संथारो उद्देसी, कीघो कपठीयां रे ताई ।
 ते कपठीया सर्व साध ने न कल्पे, अकपठीया ने दोष नांही रे ॥ १५ ॥
 असणादिक सेज्जा संथारो उद्देसी, कीघो एक कपठीया ताई ।
 तो पिण कपठीया ने न कल्पे, अकपठीया ने दोष नांही रे ॥ १६ ॥
 असणादिक सेज्जा संथारो, कीघो अकपठीया रे ताई ।
 तो कपठीया अकपठीया बेहू ने, कल्पे नहीं मूल काई रे ॥ १७ ॥
 असणादिक सेज्जा संथारो उद्देसी, कीघो एक अकपठीया ताई ।
 तो अकपठीया ने कल्पे उण विनां, कपठीया साध ने कल्पे नांही रे ॥ १८ ॥

सघटो साधवी रो साध ने न करणो,
 ओ पिण कल्प जिणैसर बाध्यो,
 साध साधवी ने राते भेलों न रहिणों,
 जिण रीते वीर कन्हो तिण रीते,
 साध साधवी ने साथे विहार न करणो,
 त्याने आगना दे हर कोइ साध,
 साध नें तो एकलो रहिणो न कल्पें,
 त्याने पिण रहिणो कल्पें कारण पडीयां,
 साधवी दिखत घणा काल री छे,
 साधवी पद तीथंकर पांमी,
 दिख्या वडी साधवी साध ने वादें,
 ओ पिण कल्प तीथंकर बाध्यों,
 दोय कोस उपरत आहार च्यारुई,
 पेहला पोहर तणो आहार छेहला पोहर मे,
 जो गाढ गाढ रो कारण पडे तो,
 ओषघादिक जिम जाणे ने साधु,
 ओ पिण कल्प छे कपठीयां रो,
 ते पिण त्यारा कल्प माहे रहिसी,
 इत्यादिक कल्प रा बोल अनेक,
 आप आप तणा कल्प माहे चाल्या,
 साधरा कल्प मे साध चाले,
 याने आगना दे कोइ यारा कल्प री,
 साधवी रा कल्प मे साधवी चाले,
 याने पिण आगना दे यारा कल्प री,
 एहवो कल्प तीथंकर बाध्यो,
 इण कल्प मे पाप म सरघो कोइ,
 करण जोग विगटावण अग्यानी,
 जे जे कल्प तिथंकर बाध्यो,
 तीथंकर कल्प बाध्यो तिण माहें,
 तिण कल्प तणी कोइ आगना देसी,
 जे मोटा पुरुषां रो कल्प बाध्यो छें,
 ते बूड गयों मानव भव पाए,

कारण पडीया 'कीयां दोष नांही।
 पाप नही तिण माही रे ॥ १६ ॥
 कारण पडीयां तो रहिणों भेले।
 रहिता ने कोइ मत हलो रे ॥ २० ॥
 कारणे करणो साथे विहार।
 तिणने पिण नही पाप लिगार रे ॥ २१ ॥
 साधवी नें न कल्पे दोय।
 जिण आगना पिण छे सोय रे ॥ २२ ॥
 तो ही नव दिखत साध ने वदे।
 तिणनें साध वादे आणदे रे ॥ २३ ॥
 साध पिण साधवी ने वादे।
 ओर नही बाध्यो आप छादे रे ॥ २४ ॥
 साध ने भोगवणो नाहि।
 ते पिण नही घालणो मुख माहि रे ॥ २५ ॥
 पेहला पोहर तणो पोहर छेहले।
 मुख माहे निसक सूं मेले रे ॥ २६ ॥
 अकपठीयां रो केवली जाणे।
 ते निश्चो काढे कुण ताणे रे ॥ २७ ॥
 ते सूतर सूं कीजो पिच्छाणो।
 तिण मे जिण आगना थे जाणो रे ॥ २८ ॥
 त्याने लागे नाही पाप कर्म।
 तिणने हुवे छें निरजर घर्म रे ॥ २९ ॥
 याने पिण नही छे पाप कर्म।
 तिणने पिण निरजर घर्म रे ॥ ३० ॥
 तिण कल्प परमाणे चालो।
 आ सरघा सेठी कर भालो रे ॥ ३१ ॥
 करे साध रा कल्प री बात।
 तिणमें पाप नही तिलमात रे ॥ ३२ ॥
 पाप हुवें तो कल्प छे भूडों।
 ते पिण जावक वूडो रे ॥ ३३ ॥
 तिणमें पाप कहे ते पापी।
 वीरनी वचन उथापी रे ॥ ३४ ॥

तीर्थकरे कल्प बांध्यों छें तिणरी,
 त्यारी आग्या नें कल्प में पाप हुवें तो,
 साध नें आगना दे साध रा कल्प री,
 निरवद भाषा सूं निश्चें हुवें निरजरा,
 साधां तो सावद्य सगलोइ त्याग्यो,
 त्यांरा कल्प में आगार पाप तणों हुवे,
 हिंसा भूठ चोरी मइथुन परिग्रह,
 ते सेव्यां सेवायां नें भलो जाण्यां,
 जे जे किरतब कीघाई पाप छें,
 इणमेई घोचो घाले अग्यानी,
 कीघाइ पाप करायाइ पाप,
 इण मांहे संका मूल म जाणो,
 साधु रो काम करे कोइ श्रावक,
 यां दोयां नें श्री जिण आग्या नाहि,
 कोइ श्राविका काम करे साधु रो,
 यां दोयां नें पिण जिनाग्या नांहि,
 कोइ श्राविका साधु रो पेट मसल नें,
 मुरछी मसले पीड्यां करे पगचंमी,
 वले कांटो काढे बाई साधु रा पग थी,
 इत्यादिक साधु रो काम बाई करे तो,
 श्राविका साधु रो काम करे तिम,
 यां दोयां नें पिण जिण धर्म नांही,
 साधवी रो पेट मसल नें श्रावक,
 मुरछी मसले पीड्यां करे पगचंपी,
 साधवी रो कांटो श्रावक पग थी काढे,
 इत्यादिक साधवी रो करे काम श्रावक,
 श्रीजिण पाल बांधी ते भागे,
 केई - धर्म बतावें भेषचारी भागल,
 जे जिनाग्या बारे धर्म कहें त्यां,
 एतो उंधी श्रद्धा रा मूढ मिथ्याती,
 साधु साधवी नें श्रावक जीवां बचावे,
 अरिहंत भगवंत कह्यो तिण रीते,

तीर्थकर आगना दे आप ।
 किणरी आग्या नें कल्प निपाप रे ॥ ३५ ॥
 त्यांरी निरवद भाषा जाणो ।
 तिणमें संका मूल म आणो रे ॥ ३६ ॥
 त्यांरे पाप रो नहीं आगार ।
 तो निश्चें नहीं अणगार रे ॥ ३७ ॥
 इत्यादिक पाप थानक अठारे ।
 तिणमें धर्म नही छें लिगारे रे ॥ ३८ ॥
 तो करायां अणूमोघ्यांइ पाप ।
 श्री जिण वचन उथाप ॥ ३९ ॥
 अणुमोघ्यां पिण हुवे पापो ।
 श्री जिण भाख्यो छे आपो रे ॥ ४० ॥
 श्रावक रो काम करे जो साध ।
 यां दोयां रे नहीं समाध रे ॥ ४१ ॥
 श्राविका रो करे साधु काम ।
 वले धर्म नही छे तांम रे ॥ ४२ ॥
 साधु नें जीवां बचावे ।
 साधु नें बाई साता उपजावे रे ॥ ४३ ॥
 फांटो काढे आख्या थी बारे ।
 तिणने जिनाग्या नहीं लिगारे रे ॥ ४४ ॥
 श्रावक करे साधवियां रो काम ।
 जिनाग्या नही छें तांम रे ॥ ४५ ॥
 साधवी मरती नें बचावे ।
 साधवी नें साता उपजावे रे ॥ ४६ ॥
 फांटो काढे आख्या बारे ।
 जिनाग्या नहीं लिगारे रे ॥ ४७ ॥
 तिणने साधु तो न कहें धर्म ।
 ते तो भूला ग्यानी भर्म रे ॥ ४८ ॥
 जिनाग्या दीधी छे भांगो ।
 त्यां पहर विगाड्यो सांगो रे ॥ ४९ ॥
 अथवा वले साता उपजावे ।
 कर्मा री कोड खपावे रे ॥ ५० ॥

अरिहत भगवंत री आग्या लोपे, करे साधु साघवियां रो कांम ।
तिण मांहे घर्म कहें भेषघारी, ते तो यू ही बके बेफाम रे ॥ ५१ ॥
संवत अठारे वरस बयांले, असाड विद एकम सोमवार ।
साधु साघवी तणो कल्प ओलखायो, नाथ दुवारा सहर मभार रे ॥ ५२ ॥



ढलल : ॡ

दुहल

केई जेंनी नलंढ धरलड नें, वलंघें सूतर सलदुधंत ।
 डलण सवलु न सुंके तेहनें, उंघल उंघल अरुथ करत ॥ १ ॥
 तुडलंढें केई उघलडे डसुतके, केई डुतुतुडल डसुतक डंघ ।
 ते वकन उडलडें वीर नल, ते हुुड रहुडल डुहु अंघ ॥ २ ॥
 ते सलघ उडलडण सलंतरल, डुलें डललरुडडलल ।
 नलंढ लेइ सूतर तणुुं, देवे अणहुंतु डलल ॥ ३ ॥
 ते कवदे उडणरण कहे छें सलघ रे, इघकुुं रलखणु कहे छें नलंहु ।
 इघकुुं रलखे छें तेहनें, न गलणें सलघलं तणुडलं डलंढल ॥ ॡ ॥
 एहुवु उघु करे छें डरुडणल, घणल लुकलं रे डलंढ ।
 सुघ सलघलं सुं डलडकलवुडल, कर कर कुडु डकवडल ॥ ॡ ॥
 उडणरण इघकलं रु नलंढ ले, सुघ सलघलं ने देडलं छे उडलड ।
 वले वीर वकन उडलडनें, कर रहुडल डुड वललड ॥ ६ ॥
 शुु वीर वकन सतडेव छें, तुडलंढें उडलडकुु डत कुडुड ।
 एक वकन उडलडें कुणं नें, तु डनंत संसलरु हुुड ॥ ॡ ॥
 डंड उडणरण कहुडल छे सलघ नें, ते वीर गडल छें डलख ।
 कलत लगलड ने सलडलुुं, तलणरु सूतर डें छें सलख ॥ ॡ ॥

ढलल

[डलखंड वधसु डलरे डलक डें २]

उडणरण उगणुस तु लगतल कहुडल रे, दसडलं अंग दसडलं अधेन डलंढ रे ।
 ते नलंढें डरनलंढें कहुडलं छें कुकुडल रे, सलंडलुुं एकडनल कलत लुडलड रे ।
 उडणरण डलखुडल छें डगवत सलघ ने रे* ॥ १ ॥
 डुकन डंड ने वले डलतरल रे, संगुह सडद डें तुन डलतरल कुणं रे ।
 कु तुनलं डलतरल तणु संकल डडे रे, तु तुनलं सूतरलं सुं करुुं डलखुणं रे ॥ ॡ ॥
 तुन डलतरल कहुडलं सूतर ववहलर डें रे, दुकुडल उदेसल डें कुणरणल रे ।
 वले डलतरल कहुडलं छे तुन नसुत डें रे, उदेसल अठलरडलं रे डलंढ रे ॥ ३ ॥
 डंड कहुडुुं छे ते डलडु तणुुं रे, ते उकलरलदलक रे आडे छें कलंढ रे ।
 तलणरुुं कलंढ डडे छे अकलकुु रु रे, तलण सुं डंड कहुडुुं छे तलणरुुं नलंढ रे ॥ ॡ ॥

*डह अंकुडु डुरतुडेक गलथल के अनंत डें है ।

भोली कही छें पातरा बांधवा रे, पाय केसरीया पातरा पडिलेहण जाण रे ।
 पाय ठवणंच ते कह्यो भंडल्यो रे, तीन पडिला कह्या छे ते परमाणे ॥ ५ ॥
 रसतांन गोछो ने तीन पिछोवडी रे, रजोहरणों ने चोलपटें कह्यो तांम रे ।
 मुहपती चाली छें मुख बांधवा रे, पायपुछणो कह्यो विछावण कांम रे ॥ ६ ॥
 पायपुछणादि कह्यो तेहमें रे, आदि मांहे उपगरण छें अनेक रे ।
 ते सूतर जोय जोय परगट करू रे, सांमलजों भवीयण आण ववेक रे ॥ ७ ॥
 पातरा लूहवा ने चाल्यों लूहणो रे, दसवीकालिक पांचमा मांहि रे ।
 गलणों कहीं छें पांणी छाणवा रे, कल्प सूतर में जोवो ताहि रे ॥ ८ ॥
 बांह परमाणे डांडो ने वले लाकडी रे, पगे कावो लूहवा ने कही खपाट रे ।
 वांसादिक नी पिण सूइ कही रे, नसीत रे पेंहले उदेसें पाठ रे ॥ ९ ॥
 सूत नी डोरी ने वले रासडी रे, चिलमिली आडी बांधवा जाण रे ।
 ते नसीत सूतर मांहे जिण कही रे, पेंहले उदेसे में जोय करो पिछाण रे ॥ १० ॥
 डोरा चाल्या छे कपडो सीववा रे, ते कह्या छें सूतर आचारग मांय रे ।
 ते पिण उनमान जाण ने राखणा रे, तिणरी संका मत राखो कांय रे ॥ ११ ॥
 दोय वार सुच लेणो कहीं खडीया थकी रे, नसीत रे चोथा उदेसा मांहि रे ।
 ते खंडीया तो गिणती में दीसें नही रे, जीत ववहार सू जाणे लेसी ताहि रे ॥ १२ ॥
 आज्या रे ज्यार उपगरण इधका कह्या रे, कांचूयो जांधीयो पिछोवडी एक रे ।
 वले साडी मांहे कपडो इधको कह्यो रे, वेतकल्प आचारंग लीजों देख रे ॥ १३ ॥
 साठ वरसा मे हूआं ने थिवर कह्यो रे, त्यांने उपगरण इधका वशेख रे ।
 ते ववहार सूतर उदेसे आठमे रे, संका पडें तों लेजो देख रे ॥ १४ ॥
 छतंवा कह्यो छें ते तो छत्तरडो रे, ते कंवलादिक नों कर राखें तांम रे ।
 ते राखे छें सी तापादिक टालवा रे, ओर मूतलव रो नही छे कांम रे ॥ १५ ॥
 सरीर परमाणे डांडो कल्पे छें तेहने रे, माटी नों भंड कल्पें छे ताहि रे ।
 ते राखे वडी नीतादिक कारणे रे, वले मात्रीयों राखे इधक सवाय रे ॥ १६ ॥
 लाठी राखणी कल्पे तेहने रे, ते कही छें दोड हाथ परमाणे रे ।
 ते वेसतां उठतां आधार छें रे, एहवें कारण कही छे जाण रे ॥ १७ ॥
 पाटली कही दीसे बेंसवा मणी रे, गरडा ने वायादिक हुवेती जाण रे ।
 रोग उपजतों जांणी ने कही रे, सूतर सूं कर लेजों परमाणे रे ॥ १८ ॥
 वस्त्र इधको कल्पे कहीं थिवर ने रे, मसतकादिक वाधवा रे कांम रे ।
 रोग बघतों जांण्यों तिण सूं कहीं रे, चोखा रहता जांण्या परिणामे रे ॥ १९ ॥
 वडी नीतादिक रो कारण वेगो पडे रे, वारे जांणो पडतो जाणे अकाल रे ।
 तिण सूं चिलमिली कही दीसें छें थिवर ने रे, आडी वांधने दीये आबाधा टाल रे ॥ २० ॥

चर्म नें चर्म तणी वले कोथली रे,
 ए पिण कहां वांयादिक टालवा रे,
 ए इग्यारें उपगरण इधका छें थिवर ने रे,
 कहां छें संयम थिर रहवा भणी रे,
 तीस उपगरण साधु रे सूतर थी कहां रे,
 इग्यारें उपगरण थिवर ने कहां रे,
 खेल करवाने अवस चाहिजे खेलीयो रे,
 एहवा उपगरण राखें ते आदि सबद में रे,
 वले उपगरण सूतर माहें निकले रे,
 वीर वचनां नें कुण उथावसी रे,
 केइ मूढ मिथ्याती ते बकवोकरें रे,
 चवदें उपगरण सूं इधका राखें तेहने रे,
 सूतरां रो तो पूरी समझ पडे नहीं रे,
 चवदें उपगरण सूं इधका राखें तेहने रे,
 उपगरण चवदें सूं तो इधका कहां रे,
 ते वचन उथापे बूडा बापडा रे,
 त्यां तीथंकर उथाप्या छें तीन काल ना रे,
 वले सूतर उथाप्या भगवंत भाखीया रे,
 तीन काल रा अरिहंत ने साधां भणी रे,
 ते कर्म बांधे नें बूडा बापडा रे,
 घणाभोलां नें भिडकाया सुध साधा थकी रे,
 ते पेट भरा अन्ह्वाखी पापीया रे,
 त्यां घणा लोकां नें बोया पापीया रे,
 तांण करे चवदें उपगरण नी रे,
 ते सूतर रा वचन न मानें पापीया रे,
 यां पीढ्यां खप आल दीयों साधां भणी रे,
 केइ मूढ मिथ्याती जीव इम कहें रे,
 पानां पिण साध नें नहीं राखणा रे,
 चवदें उपगरण सूं इधका नही राखणा रे,
 उपगरण इधका राखें ते साध निश्चें नहीं रे,
 एहवी भूठी भूठी करे परूपणा रे,
 त्याने सुध साधां सूं तो भिडकावीया रे,

चर्म तणों वले कटकों जाण रे।
 सरीरादिक कारण जाण पिछाण रे ॥ २१ ॥
 गरदपणा तणी दय जाण रे।
 तिण माहें संका मूल म आण रे ॥ २२ ॥
 आरज्या रे उपगरण इधका च्यार रे।
 सूतर सूं जोय कीयां छें त्यार रे ॥ २३ ॥
 पायपुछणादि सबद में जाण रे।
 अल्पमात्र राखें उनमान परमाण रे ॥ २४ ॥
 ते पिण कर लेणों परमाण रे।
 ओर कर लेणा साचा जाण रे ॥ २५ ॥
 सूतर अरथ तणा अजाण रे।
 सुध साध न सरचे मूढ अयाण रे ॥ २६ ॥
 वले सूतरां रा अर्थ मरोड मरोड रे।
 सरचे छें तीथंकर ना चोर रे ॥ २७ ॥
 ते सूतर में भाख गया भगवान रे।
 त्यांरा घट माहें पूरो घोर अग्यांन रे ॥ २८ ॥
 तीन काल रा दीघा साध उथाप रे।
 मत बांधण नें कीधी खोटी थाप रे ॥ २९ ॥
 दीयों अग्यांनी अछतो आल रे।
 त्यारे भव भव में होसी घणोंजंजाल रे ॥ ३० ॥
 चवदें उपगरण रो ले ले नाम रे।
 त्यारे एकंत मत बांधण रो काम रे ॥ ३१ ॥
 ते पिण मांनी छें तिणरी वात रे।
 सुध साधां सूं पडवजीयो मिथ्यात रे ॥ ३२ ॥
 सुमता आणे नें काढें नहीं निकाल रे।
 कर कर भूठी मूढ भखाल रे ॥ ३३ ॥
 साध नें लिखणों कल्पे नाहि रे।
 इम कहे छें घणा लोका रे माहि रे ॥ ३४ ॥
 पांना राख्यांतो उपगरण इधका थाप रे।
 एहवी उंधी परूपें लोकां माहि रे ॥ ३५ ॥
 घणा लोकां नें दीयां डबोय रे।
 परभव सूं तो मूल न डरीयो कोय रे ॥ ३६ ॥

- लिखणो चाल्यो छे सुघ साघा भणी रे, तिणरी छे सूतर माहे साख रे।
 तिणरी सका कोइ मत आणजो रे, भगवंत आगम मे गया भाख रे ॥ ३७ ॥
 आचार्य री चाली छे आठ संपदा रे, तिण माहे लिखणो कह्यो साख्यात रे।
 दसासुतखंघ सूतर जोय निरणो करो रें, छोड दो भवीयण भूठ मिथ्यात रे ॥ ३८ ॥
 वले प्रश्न व्याकरण मे लिखणों चालीयों रे, साच बोले ज्यूं लिखणो साच रे।
 हुजे संवर ते अघेन सातमो रे, संका काढो ते सूतर बाच रे ॥ ३९ ॥
 वले नसीत सूतर पूरो हुवे जठे रे, तिहा पिण लिखणो चाल्यो छे ताम रे।
 वले नंदी सूतर मे लिखणों कह्यो रे, नरकादिक अलंकार चित्राम रे ॥ ४० ॥
 लिखणों चाल्यो तो लेखण राखणी रे, स्याही आदि दे रग राखणी रे।
 नालेरी आदि स्याही गालण नें राखणी रे, पाटी पाटला पांना बांधण रे काम रे ॥ ४१ ॥
 पाना राखे ते ग्यान रे कारणे रे, पाना रा उपगरण छे अनेक रे।
 त्या पाना तणा जतन करवा भणी रे, मेंणीयादिक राखे वले वशेख रे ॥ ४२ ॥
 पाना विण ठीक किसी आचार री रे, पाना विण किम पाले आचार रे।
 पाना तणी पूरी परतीत छे रे, आजूणा पाचमा काल मभार रे ॥ ४३ ॥
 धूर सूं तो पांना लिख्या आचारीया रे, तिणसू पाना री छे परतीत रे।
 अणाचाखा रा लिख्या जो सूतर हुवे रे, तो सूतर पाठ हुवें विपरीत रे ॥ ४४ ॥
 जिण सासण चालसी आरे पाचमे रे, तिणमे मत जांणो कोइ सक रे।
 जो आचार सरघा मे सका पडे रे, जब पाना जोय ने हुवे निसक रे ॥ ४५ ॥
 साघ ने लिखणो निषेधे पापीया रे, त्यारी भिष्ट हुइ छे सुघ नें वुध रे।
 ते यूही वूडे छे अन्हाखी थका रे, कर कर खोटी परूपणा विरुध रे ॥ ४६ ॥
 सरघा ने आचार थकी भिष्टी हूआं रे, त्या खोटा घाली सूतरा मभार रे।
 त्यां खोटा ने समदिष्टी जथातथ जांण ने रे, कर दीघा दूध पांणी ज्यूं न्यार रे ॥ ४७ ॥
 साधु रा उपगरण नें लिखणा तणी रे, जोड कीधी नाथदुवारा सहार मभार रे।
 समत अठारे छपना वरस मे रे, फागुण विद छठ सनीसरवार रे ॥ ४८ ॥

रत्न : १२

पोतिया बन्ध री चौपई

ढाल : १

ढुहा

अरिहंत सिद्ध ने आयरिया, उवभाय सगला साध ।
 मुगत नगर ना दायका, ए पांचूं पद आराच ॥ १ ॥
 ए पाचू पद वादे भाव सूं, पातक दूर पलाय ।
 शिव रमणी वेगा वरे, जनम मरण मिट जाय ॥ २ ॥
 केइ अग्यांनी इम कहे, इम बाद्या नही जिण धर्म ।
 उलटो लागे अविनों आशातना, तिण सूं बवे पाप कर्म ॥ ३ ॥
 पेहला वादे अरिहंत ने, पछे वादे सिद्ध भगवान ।
 तिण सू लागे सिद्धा री आशातना, एहवा करे अग्यानी तांन ॥ ४ ॥
 वले सर्व साधा नें वाद्यां थका, आ पिण न लागे ठीक ।
 वडा साधु हुवे तेहने, छोट्टा किम वदनीक ॥ ५ ॥
 इम कहि कहि भोला लोक नें, सका घाले घट मांय ।
 पाचू पद वादण तणी, पाडे मोटी अंतराय ॥ ६ ॥
 सिद्धा पेहली अरिहंत ने वादणा, सिद्धा पेहली अरिहंत रा नाम ।
 सूतर शाख दे वरणवू, ते सुणजो राखे चित्त ठाम ॥ ७ ॥

ढाल

[धीज करे सीता सती रे]

पेंहुली अरिहंत रा गुण करे रे, पछे करे सिद्धां रा गुण ग्राम रे । सुगुण नर ।
 तो बवे तीर्थकर गोत तेहने रे लाल, जो आवे उतकष्टो रस तांम रे ॥ सुगुण नर ॥
 वांदो पांचूं पद भाव सूं रे लाल* ॥ १ ॥
 ए ग्याता सूतर रे अघेन आठमे रे, वीसां बोलां रो विस्तार रे । सु० ।
 सिद्धा पेहली अरिहंत रा गुण कीया रे, ते जीवो आंख उघाड रे ॥ सु० वां० २ ॥
 सिद्धां पेहलां अरिहंत ने वादियां रे, कहे न हुवो विने मूल धर्म रे ।
 तों उ वीस बोल गुणसी जदी रे, उणरे लेखेइ बघसी उणरे कर्म रे ॥ ३ ॥
 इम कह्या संवली सूभे नही रे, त्यारा घट माहे गूढ मिथ्यात रे ।
 ते गुधू सरिषा होय रह्या रे लाल, त्यारे दिवस तिकाइज रात रे ॥ ४ ॥
 जब केइ कहे पाचूं पद तणा रे, लगता काढो सूतर मे नाम रे ।
 तो में माना नवकार नें रे लाल, तो सुणो राखे चित्त ठाम रे ॥ ५ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

अरिहंत सिद्ध नें आयरिया रे, उवभाय सगला साव ताहि रे।
 ए पांचूं पद लगता कहा रे लाल, चंदपनती सूतर मांहि रे ॥ ६ ॥
 इरियावही कहेने काउस्सग ठावणो रे, पारणो कहेनें नमोकार रे।
 दसवेकालिक अधेन पांचमें रे लाल, तेराणुमीं गाथा मभार रे ॥ ७ ॥
 वले आवसग सूतर विषे कह्यो रे, लगतो पांचूं पदां ने नमस्कार रे।
 त्यामें पेहली अरिहंत पछे सिद्ध कहा रे, ते जोय करो निस्तार रे ॥ ८ ॥
 वले आशातना टालण तणा रे, घणा बोल कहा जिणराय रे।
 त्यां पेहली अरिहंत सिद्ध पछे कहा रे, ते पिण आवस्सग मांय रे ॥ ९ ॥
 साधु समचे वादे सर्व साध नें रे, ते पाठ छें आवस्सग मांय रे।
 तिणरी बुववंत करजो विचारणा रे लाल, जोए सूतर रो न्याय रे ॥ १० ॥
 जे पांचूं पद लगता मानें नही रे, त्यां काउस्सग दीयो उत्थाप रे।
 त्या क्रीची आशातना अरिहंतनी रे लाल, त्यांरे जाणजों जाडा पाप रे ॥ ११ ॥
 च्यार मंगलीक कहा लोक में रे, अरिहंत सिद्ध साधु धर्म रे।
 तिहां पिण पेहली अरिहंत छे रे लाल, ते जोय मेटो मन भर्म रे ॥ १२ ॥
 च्यार उत्तम कहा लोक में रे, अरिहंत सिद्ध साधु धर्म रे।
 तिहा पिण पेहली अरिहंत छे रे लाल, ते जोय मेटो मन भर्म रे ॥ १३ ॥
 च्यारू सरणा लेणा कहा साध ने रे, अरिहंत सिद्ध साध धर्म रे।
 त्यामें पेहलो सरणो अरिहंत नों कह्यो रे लाल, ते जोय मेटो मन भर्म रे ॥ १४ ॥
 च्यार मंगलीक च्यार उत्तम छें रे, वले च्यारूं शरणा कहा ताहि रे।
 तिहां पेहली अरिहंत पछे सिद्ध कहा रे लाल, ते पिण आवस्सग मांहि रे ॥ १५ ॥
 सिद्धा पेहली अरिहंत रो नाम छे रे, सूतर में जायगां अनेक रे।
 संका म घालो लोकां भणी रे, छोड दो कूडी टेक रे ॥ १६ ॥
 दोनूं टंका साध पडिक्कमणो करे रे, ते पडिक्कमणो आवस्सग सूत रे।
 ते आवस्सग सूतर मानें नही रे, ते जिण सासन में कपूत रे ॥ १७ ॥
 साध आवस्सग सूतर वाच्यां विनां रे, जो वांचे ओर सिद्धांत रे।
 नसीत उद्देंसें उगणीस में रे लाल, चोमासी दंड कह्यो भगवंत रे ॥ १८ ॥
 ए पडिक्कमणो आवस्सग सूतर छे रे, नित करणी साधु नें दोग वार रे।
 ते ने कीयां विराधक जिण धर्म नों रे, जोवो अनुयोग दुवार मभार रे ॥ १९ ॥
 आगे सूतर भण्या साधु साववी रे, जोवो सूतर में ठाम ठाम रे।
 ते सामायक सूतर आदि दे रे, ते सामायक छे आवस्सग रो नाम रे ॥ २० ॥
 केइ आवस्सग मोलो कही रे, जाबक दीयो उत्थाप रे।
 ते डरे नहीं भूठ बोलता रे, त्यांरे भव भव में होसी संताप रे ॥ २१ ॥

दोनू टकां आवस्सग कीयां रे, टले करमा री छोट रे ।
 जो आवे उतकण्ठो रस तेहनें रे, तो वघे तीर्थकर गोत रे ॥ २२ ॥
 ए ग्यातारा आठमां अध्येन मे रे, बीस बोला मे इग्यारमों बोल रे ।
 जे आवस्सग सूतर मानें नहीं रे, त्यारे पूरी जाणजो पोल रे ॥ २३ ॥
 नमस्कार लगतो पाचू पद भणी रे, ए मानें नहीं किण न्याय रे ।
 जो साचा हुवो तो सूतर में बताय दो रे, नहीं तो मत करो कूडी वकवाय रे ॥ २४ ॥
 नमस्कार लगतो पाचूं पद भणी रे, कीषां कहे अविनो होय रे ।
 एहवी ऊची करें परूपणा रे लाल, पिण पोते अविना री खबर न कोय रे ॥ २५ ॥
 देव अरिहत गुर साधुजी रे, ए चोडे सूतर रो न्याय रे ।
 गुर बाजे श्रावक थकां रे, ओ प्रतख मांड्यो अन्याय रे ।
 ते श्रावक नहीं भगवान रा रे ॥ २६ ॥

ते चेला चेली करता फिरे रे, श्रावक नाम धराय रे ।
 भोला ने भरमाय ने रे, तिक्खुता सू बंदावे पाय रे ॥ २७ ॥
 आगे श्रावक हुआ भगवान रा रे, आणंद आदि अनेक रे ।
 ते घर में थकां पडिमा बुहा रे, पिण चेलो न कीषो एक रे ।
 ए साचो मत जिणराज रों रे ॥ २८ ॥

ते पडिमा बुहा जव कीषी गोचरी रे, आपणी न्यात में जाय रे ।
 पिण ओर कुल मे कीषी नहीं रे, जोवो दसामुतखव उपासग दसा मांय रे ॥ २९ ॥
 चेला चेली करता फिरे रे, घणा कुल री रोटी खाये माग रे ।
 आगे श्रावक हुवा भगवान रा रे लाल, एहवो किण ही न काड्यो बीसे सांग रे ॥ ३० ॥
 अंबड सन्यासी रे चेला सातसो रे, ते रीत संन्यास्यां री जाण रे ।
 पछे समझे श्रावक हुवा रे, इणरी म करजो कोइ ताण रे ।
 ते रीत सन्यास्यां री मूलगी रे लाल ॥ ३१ ॥

त्यां संन्यासी थकां चेला कीयां रे, ते कुल री रीत परमाण रे ।
 त्यां सांग न पलट्यो मूलगो रे लाल, तिणरी बुधवंत करजो पिच्छाण रे ॥ ३२ ॥
 श्रावक श्रावक नें नमें रे, वले नेंहत जीमावे च्यांरू आहार रे ।
 त्यांनं अरिहत री आग्या नहीं रे लाल, ए लोकिक रो व्यवहार रे ॥ ३३ ॥
 साधु साधवियां नी परे रे, श्रावक श्रावका री थापी रीत रे ।
 ते पिण रीत चाले नहीं रे, यारे लेखेई ए अवनीत रे ॥ ३४ ॥
 श्रावक वेसैं आंगणे रे, श्रावका वेसैं पाट रे ।
 यांरो विनों मारग यां उत्थापियो रे, त्यांरे लेखेई होसी भूंडो घाट रे ॥ ३५ ॥

वले श्रावक वादे श्रावका भणी रे, यारे लेखे वा ऊंघी रीत रे ।
 यारे लेखे यां विनों उत्थापियो रे, ते चिहूँ गति होसी फजीत रे ॥ ३६ ॥
 ए विनों विनो कर रह्या रे, पिण विनां री खबर न कोय रे ।
 त्यांसूँ लेखो कीयां तो लडपडे रे लाल, त्यानें किम आणीजे ठाय रे ॥ ३७ ॥
 नोकार री कुणसी चली रे, यां उथाप्या बोल अनेक रे ।
 ते थोडासा परगट करूं रे लाल, ते सुणजो आण ववेक रे ॥ ३८ ॥

ढाल : २

दुहा

याने छता साघ सूम्हे नही, घट मे घोर अधार ।
 पोथा पांना बाच ने, भूला भर्म गिवार ॥ १ ॥
 बले केइ अग्यांनी इम कहे, कठे अबारू साघ ।
 ते भूठा थका बकवोकरें, त्या परमारथ नही लाघ ॥ २ ॥
 प्रतख आरे पाचमे, साघ कह्या जिणराय ।
 सांसो हुवे तो देख लो, सूतर भगोती माय ॥ ३ ॥
 साघ हुता तो सूतर छे, जेन जतीको वेस ।
 याहीज साघु देख लो, ओहीज आरज देस ॥ ४ ॥
 जेवंतो जिण घर्म छे, आंघा करे अधेर ।
 छेहूडा सूधी चाल्सी, तिण में म जांणो फेर ॥ ५ ॥
 कुमती चालणी सारीखा, त्याने किहा लगे उपदेस ।
 सार सार तो गेर दे, ग्रहे तूंतडा केस ॥ ६ ॥
 एक साघ ने उथपे, तिणरे बंधे घणो सताप ।
 तो घणा साघा ने उथपे, तिणरे पोते बोहला पाप ॥ ७ ॥
 जे देवालयो हुवे ते इम कहे, आज नही साहुकारा री रीत ।
 ज्यासूं पोतें सजम पले नही, ते उतारे साघां री परतीत ॥ ८ ॥
 साहुकार होसी तिके, छता दिखावसी साह ।
 ज्यू साघुपणो सुघ पालसी, ते खरो दिखावसी राह ॥ ९ ॥
 केइ मूढ मिथ्याती भूरख थका, श्रावक श्राविका नाम धराय ।
 ते कुण कुण बोल उथापिया, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ १० ॥

ढाल

[वे वे मुनिवर वहरण पागुख्या रे]

त्या समाई पडिक्कमणो उथापियो रे, वले दशमा व्रत ने दीयो उथाप रे ।
 बले पोसो उथाप्यो व्रत इग्यारमो रे, त्यारे होसी परभव मे घणो सताप रे ।
 त्यानें श्रावक मत जाणो भगवान रा रे* ॥ १ ॥
 सुघ आचारी साघा ने माने नही रे, तिणथी भावसू दानदीयो नही जाय रे ।
 इण लेखे व्रत उथाप्यो वारमो रे, वले साघु बादण रा सूस दिराय रे ॥ त्या० २ ॥

*यह-आंकड़ी प्रत्येक गाथा-के अन्त में है ।

बले व्रत उथाप्यों मूरख आठमों रे, तिण में अर्थ बिन पाप करण रा त्याग रे ।
 ते पोतें पिण एहवो त्याग करें नहीं रे, ओर करे त्पारो पाडे बैरग रे ॥ ३ ॥
 जे मांगे नें खाए रोटी पार की रे, तो ही अनर्थ पाप करण भागार रे ।
 त्यानिं वादे अग्यानी सतगुरु जाण नें रे, त्यां दोयां रो विगड गयो जमवार रे ॥ ४ ॥
 बले समाई पडिक्कमणो करे नहीं रे, नहीं पोसो करवा सूं त्पारो पेम रे ।
 बले सुघ आचारी साधु सुभे नहीं रे, त्यां विकलानें श्रावक कहीजे केम रे ॥ ५ ॥
 उतारे साघां री मूरख आसता रे, बले कनें जातां नें राखे पाल रे ।
 जाणे खोटा सरबेला मों भणी रे, आ चोडे रेणा देवी री चाल रे ॥ ६ ॥
 मिनकी फिरे छे घर घर वारणे रे, तिणरी अंदरा उमर खोटी दिष्ट रे ।
 ज्यूं समाई पोसा पडिक्कमणा करे रे, तिण नें संका घालेने करदे मिष्ट रे ॥ ७ ॥
 कोइ समाई पोसा पडिक्कमणा करे रे, तिणरे संका घाले नें पाडे घडकर रे ।
 जद केयक भोला सामायक छोड दे रे, तब पामे अग्यानी मन में हरष रे ॥ ८ ॥
 सामायक पचखण री विघ जाणे नहीं रे, बले पालण रो आंणे नहीं विचार रे ।
 पचखांण पालण री विघ जांणयां विनां रे, संका घालण ने पापी त्पार रे ॥ ९ ॥
 समाई करे त्पारो मन भांग दे रे, बले भिष्ट करण रो करे उपाय रे ।
 परिणाम पेलारा पारण सांतरा रे, दोष बत्तीस सुणाय सुणाय रे ॥ १० ॥
 ए समाई रा दोष बत्तीस कहे तिके रे, किण ही सूतर में वीसैं नांही रे ।
 तो ही मान्या सामायक नें उथापवा रे, त्पारो घोर अंबारो छे घट मांही रे ॥ ११ ॥
 त्पारो परतीत नें संगत करे तेहनें रे, बत्तीस दोषण देवे सीखाय रे ।
 जांणे रखे समाई पडिक्कमणो करे रे, इसडो घडको त्पारो मन मांय रे ॥ १२ ॥
 कोइ समाई पडिक्कमणो करे रे, तिण सूं घरे अग्यानी द्वेष रे ।
 कोइ समाई पोसो करणो छोड दे रे, जब पामें पापीडा हर्ष वशेष रे ॥ १३ ॥
 कोइ समाई पोसा पडिक्कमणा करे रे, बले वादे साघां ने जोडी हाथ रे ।
 तो मिष्ट पुरुषे मूरख तेहनें रे, ओ चोडे देखो त्पारो मिथ्यात रे ॥ १४ ॥
 कोइ समाई पोसा रो बंधो करें रे, त्पारो पिण देवे सूंस भंगाय रे ।
 तिण नें कूड कपट केलव करे आपणो रे, बले समाई करवा न देवे ताय रे ॥ १५ ॥
 कोइ समाई पोसा पडिक्कमणा करे रे, तिण नें मिष्ट करे बोले आल पंपाल रे ।
 ओछी अकल रा भोला मिनघ नें रे, माहें न्हाखण नें चोडे मांड्यो जाल रे ॥ १६ ॥
 केइ मांगे नें खाए रोटी पारकी रे, ते बोले अग्यानी एहवी वाण रे ।
 भूँ करं सामायक पोसा किण विषे रे, म्हांरो नहीं रे मन रो जोग ठिकाण रे ॥ १७ ॥
 यांरी सरघा रा सगला इमहीज बोल्ता रे, त्पारो ववेक विचार नहीं छें सुघ रे ।
 त्यां समाई पोसा करणा उथापिया रे, आ मिष्ट हुइ सगलां री बुद्ध रे ॥ १८ ॥

केइ मांगे नें खाए रोटी पारकी रे,
 त्यांसूं एक घडी पिण मन बस हुवे नही रे,
 आगे हुवा मोटा मोटा राजवी रे,
 त्यांरा घर में आरभ ने परिग्रहो अति घणो रे,
 त्यारे राजविणज रा विभा था घणा रे,
 त्यां पिण सामायक ने पोसा कीया रे,
 राय उदाइ हूतो मोटको रे,
 तिण समाई पोसा पडिकमणा कीया रे,
 अदीनसत्तु राजा रो डीकरो रे,
 पांचसो राण्या हूती तेहनें रे,
 कुमर सुबाहु आदि दस जणां रे,
 त्यां सगलां रे पांचसो पांचसो राणियां रे,
 राय परदेशी हूतो पापियो रे,
 उण पिण घर माहे वेठां थका रे,
 सुबुद्धी प्रधान आगे समझियो रे,
 तिण पिण सामायक ने पोसा कीयां रे,
 कासी नें कोशल देस तणा घणी रे,
 श्रीवीर निरवांण गया तिण अवसरे रे,
 आणंद आदि दे श्रावक दस हुवा रे,
 हजारं गमे त्यारे गायां हूती रे,
 वले तुगीया नगरी नां श्रावक मोटका रे,
 त्यां समाई पोसा पडिकमणा करें रे,
 इत्यादिक राजा सेठ सेनापति रे,
 त्यां समाई पोसा पडिकमणा कीयां रे,
 तो घरवार छोडे नें गेहला थकां रे,
 ते कहवा नें श्रावक वाजें मोटका रे,
 श्रावक रा बारे व्रता माहिलां रे,
 बाकी सात व्रतां मे मन पचखे नही रे,
 वले उत्थापी इयावही नें तस्सुत्तरी रे,
 खबर विना उथाप्या खामणा रे,
 एक वचन उथाप्या श्री भगवंत रो रे,
 तो घणा उथापें बोल सिद्धांत रा रे,

तो ही सुध न रहे त्यांरा परिणाम रे ।
 ते घर छोडी नें खोटी हुवा बेकांम रे ॥ १६ ॥
 वले सेठ सेनापती आदि पिच्छांण रे ।
 त्यां पिण कीधी सामायक समता आंण रे ॥ २० ॥
 वले तरह तरह रा हूता कांम रे ।
 ते थोडासा कहे बताऊ नाम रे ॥ २१ ॥
 ते सोले देसा रो करतो राज रे ।
 छोडे सगलाइ घर रा काज रे ॥ २२ ॥
 कुमर सुबाहु तिणरो नांम रे ।
 तिण कीधी समाई सुध परिणाम रे ॥ २३ ॥
 ते सगलाई मोटा राजकुमार रे ।
 त्यां कीधी सामायक समता धार रे ॥ २४ ॥
 तिण सभभे ने लीघा व्रत रसाल रे ।
 कीधी सामायक दोषण टाल रे ॥ २५ ॥
 जितशत्रु नामें राजेद रे ।
 ग्याता में भाख्यो वीर जिणंद रे ॥ २६ ॥
 हूता अठारे मोटा राय रे ।
 त्यां पोसा कीधांथा तिण दिन आय रे ॥ २७ ॥
 त्यारा घर में हूतो कोडां रो घन रे ।
 त्यां कीधी सामायक चोखे मन रे ॥ २८ ॥
 त्यारा घर माहे घन हूतो परभूत रे ।
 मुक्ति जावा ना दीघा सूत रे ॥ २९ ॥
 त्यारो कहतां कहता नही आवेपार रे ।
 त्यां घर मे वेठा पाल्या व्रत वार रे ॥ ३० ॥
 न करे सामायक मूढ अयाण रे ।
 पिण श्री जिण घर्म तणा अजांण रे ॥ ३१ ॥
 व्रत उथाप्या मूरख पांच रे ।
 कर्मां वस कर कर कूडी खांच रे ॥ ३२ ॥
 वले लोगस उथाप्यो जिण सत्तुत रे ।
 त्या दीघा दुरगति जावां ना सूत रे ॥ ३३ ॥
 उतकष्टो हल्लें तो अनंतो काल रे ।
 ते भमसी ज्यूं अरट तणी घड माल रे ॥ ३४ ॥

चिरमी नें उडव दोनू देल्या थकां रे, भिड्के पूर्वीया भगत वगेख रे।
 झण दिष्टाते भरमाया भोला लोक नें रे, ते भिड्के सावां नें निजरां देख रे ॥ ३५ ॥
 ते वरत पचखांण करे ते मन विना रे, पिणमनसूं तो जावक नही पचखांण रे।
 त्यांरा विकल्पणा री विव परगट कळं रे, ते विवरा सुव सुणंजो चतुर सुजांण रे ॥ ३६ ॥

ढाल : ३

ढुहा

आप छादे उधी अकल सूं, काढ्यों मत विपरीत ।
 त्या सूस पचखाण कीयां तिके, सगलाई मन रहीत ॥ १ ॥
 त्यारे सिष्य शिष्या हुआ तिके, राखी उणरी परतीत ।
 ते पिण भूला भर्म मे, ते चाले उणहीज रीत ॥ २ ॥
 बडो ऊट आगें चले, पाछे चलें कतार ।
 ज्यूं बहुला बूडा बापडा, या बडां बूडां री लार ॥ ३ ॥
 लीधी टेक छूटे नही, घट मे घोर मिथ्यात ।
 गुधू सरिपा होय रह्या, त्यारे दिवस तिकाइज रात ॥ ४ ॥
 कूआ तणो डेडक कूए रंजे, तिण सायर लहर न दीठ ।
 ज्यूं साधा री सगत करी नही, त्याने लागे पाषड मत मीठ ॥ ५ ॥
 त्या जिण मारग नही ओलख्यो, नही ओलखिया सुघ साध ।
 वले श्रावक विघ समझे नही, यूही करता फिरे विषवाद ॥ ६ ॥
 जिण वस्तु सू काम पडे नही, तिणरो पिण न करे नेम ।
 त्या कुण कुण आगार राखिया, ते सुणजो धर पेम ॥ ७ ॥

ढाल

[जिश धर्म आराधीये ए]

त्यारा मत माहे सका मोटकी ए, ते मन सूं न करे पचखाण ।
 परमारथ जाण्या विना ए, ए बूडा करें करे ताण ।
 भविक जन सांभलो ए* ॥ १ ॥
 मुरगी गाडर वाकरा ए, वले हिरण सूंसा नें गाय ।
 त्याने मारण तणी ए, मन सूं विरत न कीधी काय ॥ भ० २ ॥
 वले जलचर थलचर खेचरा ए, वले उरपर भुजपर जाण ।
 याने मारण तणो ए, मन सूं न कीयो पचखाण ॥ ३ ॥
 वले मात-पिता सुत वंघवाए, सेण सगा मित्र विचार ।
 त्याने पिण मारण तणो ए, मन सूं राख्यो आगार ॥ ४ ॥
 वले इडा जात अनेक रा ए, त्याने मन सूं मारण रो नही नेम ।
 एहुवा मूरखां भणी ए, विकल वादे घर पेम ॥ ५ ॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

तीड पतंग भमरा माखियां	ए,	कीडी	माकण	लट	नें	गीडोल ।	
मन सू राख्यां मारणा	ए,	त्यां	विकलां	रे	मोटी	भोल ॥ ६ ॥	
पुढवी पांणी अग्नि ने वाय रो	ए,	वले	वनस्पती	नें	तस	जाण ।	
ए छकाय नें हणवा तणा	ए,	मन	सूं	न	कीया	पचखाण ॥ ७ ॥	
जीव अनंत छकाय में	ए,	त्यारी	विवध	परकारे	छे	घात ।	
त्यानें हणवा तणी	ए,	मन	सूं	विरत	नहीं	तिलभात ॥ ८ ॥	
ओर जीव तो जिहांई रह्या	ए,	गुर	री	पिण	न	छोडी घात ।	
हणवा ने मन मोकलो	ए,	ए	इचरज	वाली	वात	॥ ९ ॥	
देव अरिहंत गुर साधजी	ए,	यांनें	हणवा	रो	मन	सूं	आगार ।
इसरोई सूंस कीयां नहीं	ए,	त्यांरा	जीतव	नें	घिकार	॥ १० ॥	
वले चेला चेली आपरा	ए,	गुर	भाई	गुर	बहिन	पिछांण ।	
त्यांनेई हणवा तणो	ए,	मन	सूं	न	कीयो	पचखांण ॥ ११ ॥	
मोटो भूठ पांच परकार नों	ए,	वले	छोटो	विवध	परकार	।	
मन सूं बोलण तणो	ए,	सगलोई	राख्यो	आगार	॥ १२ ॥		
मोटी चोरी पांच परकार नी	ए,	वले	छोटी	रा	भेद	अनेक ।	
ते सगली चोरी मोकली	ए,	पिण	मन	सूं	न	छोडी एक ॥ १३ ॥	
देव देवांगणा मिनष मिनषणी	ए,	वले	तिर्यंच	तिर्यचणी	विचार	।	
त्यांनें सेवण तणो	ए,	मन	सूं	सगलोई	आगार	॥ १४ ॥	
जिण माता री कूखे उपनों	ए,	वले	बहिन	बेटी	आदि	जांण ।	
चेली गुर बहिन नें	ए,	मन	सूं	सेवा	रा	नहीं	पचखांण ॥ १५ ॥
हीरा माणक मोती मूंगीया	ए,	सोनो	रुपादिक	सर्व	घात	।	
कंकर पत्थर घणां	ए,	वले	रत्नां	री	सोले	जात ॥ १६ ॥	
सर्व परिग्रहो छें नवजात रो	ए,	तीनूई	लोक	मभार	।		
ते मन रा जोग सूं	ए,	यांरे	सगलोई	आगार	॥ १७ ॥		
पाप अठारें सेवण तणो	ए,	तीनूई	लोक	मभार	।		
ते मन रा जोग सूं	ए,	जाबक	नहीं	परिहार	॥ १८ ॥		
गेंहणा कपडा विवध परकार नां	ए,	खावा	पिवा	री	जात	अनेक ।	
फूल बहु जात रा	ए,	यां	मन	सूं	न	छोड्यो एक ॥ १९ ॥	
मद पिवण मांस खावण तणो	ए,	वनस्पती	अठारे	भार	।		
जमीकंद सर्व रो	ए,	मन	सूं	राख्यो	सर्व	आगार ॥ २० ॥	
हाथी घोडादिक बाहण तणो	ए,	घणी	जात	रा	पीठी	मरदन ।	
धूपादिक खेवणो	ए,	त्यांनें	सगलेई	मोकलो	मन	॥ २१ ॥	

सर दह तलाब फोडण तणो ए, दबदे करे जीवां रो संघार ।
 गामांदिक बालण तणो ए, यारे मन सूं सगलो आगार ॥ २२ ॥
 मोटा मोटा वृष वाढण तणो ए, बले कटावणा बाग ।
 घाणी फेरण तणो ए, मन सू न कीघों त्याग ॥ २३ ॥
 पनरे कर्मादान मे ए, आयो सगलोई विणज व्यापार ।
 तिणरा भेद अति घणा ए, ते सगलोई मन सूं आगार ॥ २४ ॥
 इत्यादिक कुकरम घणा ए, ते तों पूरा कह्या न जाय ।
 ते मन सू न पचखिया ए, त्यारे बघसी कर्म अथाय ॥ २५ ॥
 अर्थे काम करणो तो ज्याही रह्यो ए, अर्थ विनां न करणो पाप ।
 ते मन सू न त्यागियो ए, आ खोटा मत री थाप ॥ २६ ॥
 मन सू तदुल माच्छलो ए, अशुभ कर्म उपाय ।
 अतर महुरत ममे ए, पडे सातमी नरक में जाय ॥ २७ ॥
 ज्यांरो सदा काल मन मोकलो ए, सगलाई कुकरम माय ।
 त्यांरो काई पूछणो ए, ए चोडे बूड जाय ॥ २८ ॥
 माठी माठी वस्तु खावा भणी ए, चलता न दीसे परिणाम ।
 तिणमेई मन मोकलो ए, ओ राख्यो अग्यानी किण काम ॥ २९ ॥
 आखा जनम में करणा पडे नही ए, माठा माठा अकारज अनेक ।
 ते मन सू न पचखिया ए, आ खोटा मत री टेक ॥ ३० ॥
 एह्वा ववेक विकला भणी ए, पूछा कीजें आम ।
 अकारज करवा भणी ए, मन मोकलो राख्यो किण काम ॥ ३१ ॥
 इम पूछ्या जाब न उपजे ए, जब क्रोध करे घट माय ।
 चरचा करवा थकी ए, मूंह टालो दे जाय ॥ ३२ ॥
 कदा लाजा मरता मन पचख दे ए, छोडे खोटा मत री रुढ ।
 इण लेखे यारा वडबडा ए, सगला हुआ ते मूह ॥ ३३ ॥
 इम कहि कहि ने कितरो कहु ए, इण मत रो घोर अंधार ।
 समक पड्यां विना ए, ए भूला भरम गिंवार ॥ ३४ ॥
 त्या आपो न ओलख्यो आपणो ए, तो ही साधु उत्थापण शूर ।
 भोला नें भरमायवा ए, कर रह्या फेन फितूर ॥ ३५ ॥
 ते जिण मारग रा धारवी ए, कूडो उठायो घघ ।
 जिण वचन उथाप ने ए, चोडे मांड्यो फद ॥ ३६ ॥
 इम सुण नें नर नारियां ए, छोडो कूडी टेक ।
 साघां री सेवा करो ए, मन मे आण ववेक ॥ ३७ ॥

ढलल : ॡ

दुहल

केइ श्रावक वलजे' धर छुडनें, मलगे लुवलवे आहलर ।
 पलण नुवलड मलरग सुभे' नहलं, घट भे' घुर अंधलर ॥ १ ॥
 चेला चेला करतलं फलरें, वले सलधलं डु' रहल पूजलड ।
 वले खुटेी करे' छे' परूपणल, ते पलण खबर न कलंड ॥ २ ॥
 अधर्म करे' करलवे' तुवलरे कलरणे', तलण ने' बतलवे' धर्म ।
 कुड धर्म करे' जलण भलषलड, तलणनें कहें छे' अधर्म ॥ ३ ॥
 एहुवुी अंधी करे' परूपणल, ते पूरी केम कहलवलड ।
 पलण थुडेसी परगट कलं, ते सुणकुओ कलत लुवलड ॥ ॡ ॥

ढलल

[सल कुड मल रलखुओ कुओ]

डलरल कपडल घुवे' कुड गृहसुथुी, तलणनें कहे वलने' मूल धर्मे' रे ।
 एहुवुी अंधी करे' परूपणल, भुललं ने' पलडुवल भर्मे' रे ।
 सरधल सुणकुओ वलकललं तणुी* ॥ १ ॥
 जब केडक गृहसुथुी बलपडल, कपडल घुवे' कुीवलं ने' मलरी रे ।
 तलणनें कहे ओ तुं वनूत छे, धर्मी पुरुषलं ने' सलतलकलरी रे ॥ स० २ ॥
 ए हलसल धर्म परूपलड, अंभलतर री अलल मीचु रे ।
 कुड कतुर पुरुष हुुसी तलकुओ, एहुवुओ कलं न करसी नूचु रे ॥ ३ ॥
 डलरल कपडल घुवे' तेहुते', नलरुचे'ई बंधसी कर्मे' रे ।
 कुे धर्म कहे इण कलं मे', तलण शलपुडुओ अधर्म ने' धर्मे' रे ॥ ॡ ॥
 नभसुकलर करे' पलंनु' पड भणुी, सीस नमी कुडे हलथु रे ।
 डलने बलंधल पलप ललगे कहे, तुडलरल घट मलहें घुर मलधुडलतु रे ॥ ॡ ॥
 डलरल कपडल घुवे' पलंणुी अलंण ने', तलण ने' ललभ बतलवे' भुडे रे ।
 नुओकलर गुणुडल कहे' पलप छे, ओ मल नलरुचे'ई खुटेी रे ॥ ॢ ॥
 वले कुंवलं कढलवे गृहसुथुी कनें, कलढणवलल ने' मुख थुी सरलवे रे ।
 वलने मूल धर्म कहे' तेहुनें, ए तुं इसडल गुलल चललवे रे ॥ ॣ ॥
 सलधु सुतर ललखे कुेणलं कलरी, ते तुं गुडलं ववलरण हेतु रे ।
 तलण सलधु ने' पलप ललगे कहे', तुडलरल फूडु अंभलतर नेतु रे ॥ । ॥

*यहु अलंकुडी प्रतुडुक गलथल के अंतु मे' है ।

थारी जूआं काढ्यां तो धर्म कहे, साधु सूतर लिख्या कहे पापो रे ।
 ते दोनूं विघ बूडे बापडा, कर कर कूड विलापो रे ॥ ९ ॥
 यांने वेसावें गाडे घोडे पीठी ए, करे तस थावर नी घातो रे ।
 तिण वेंसाण वाला ने धर्म कहे, आ उंची सरधा साख्यातो रे ॥ १० ॥
 साधु सूतर रा न्याय सूं, जोडे तवन सभायो रे ।
 तिणमे पाप वतावे भूठा थका, कर कर कूडी वकवायो रे ॥ ११ ॥
 यांने गाडे घोडे वेसाणिया, तिणने धर्म कहे छे अग्यानी रे ।
 साधु जोड कीयां अधर्म कहें, त्याने किण विघ कहीजे ग्यानी रे ॥ १२ ॥
 ए तों अधर्म ने धर्म कहे, धर्म नें अधर्म कहे अन्हाखी रे ।
 त्याने निश्चे मिथ्याती जिण कह्या, ठाणांग दसमो ठाणो साखी रे ॥ १३ ॥
 यांने थानक देवे असूभतो, तिणमें धर्म कहें निसको रे ।
 त्या ववेक विकल भोला मिनष रे, लग्गाया मिथ्यात रा डको रे ॥ १४ ॥
 थानक दडे लीपे यारे कारणे, वले केलू सारे छांन छावे रे ।
 ते मारे अनंता जीवां भणी, तिणमें धर्म वतावें रे ॥ १५ ॥
 इत्यादिक यारे कारणे, जीव छकाय रा हतिया रे ।
 वले धर्म सरधे जीव मारने रे, ते बूड गया त्यारा मतिया रे ॥ १६ ॥
 यांने आहार पाणी दें असूभतो, तिणने कहे निकेवल धर्मो रे ।
 ते भोला ने समझ पडे नही, ते तो भूला अग्यानी भर्मो रे ॥ १७ ॥
 कहिवा ने कहे ल्यां म्हे सूभतो, तिणरो पुरो न जाणें विचारो रे ।
 जाण जाण ने लेवें असूभतो, ते साभलजो विस्तारो रे ॥ १८ ॥
 यांरे गाम पर गांम थी वीदडी, चोमासा दिक में चाली आवे रे ।
 जब जीव अनेक मरें घणां, तिणमेंई धर्म वतावे रे ॥ १९ ॥
 आहार पाणी वस्त्र पात्रादिक, यारे कारणे मोल ले आणे रे ।
 इण विघ वेंहरावे असूभतो, तिण दातार ने धर्म जाणे रे ॥ २० ॥
 घी खाड लाडू आदि चोर ने, वहू ले आवे सासू छाने रे ।
 त्यांने आण वेंहरावे तेहमें, धर्म निकेवल माने रे ॥ २१ ॥
 ए बात चाबी हुवे लोक मे, तो दोनूंई दीसे भूडी रे ।
 चोरी कर नें वेहरायो असूभतो, ते तों दोनूं प्रकारें बूडी रे ॥ २२ ॥
 जाये ग्रहस्थ रे घरे गोचरी, जब माडे फेन वरोषे रे ।
 कहे असूभतो माहरे लेणों नही, माने वेंहरायजो सुघ देखे रे ॥ २३ ॥
 साहमी आण दे धरसता मेह मे, तिणरो तो न करे टालो रे ।
 धूर्तवादी करे गृहस्थ नें घरे, एहवो कूड कपट रो चालो रे ॥ २४ ॥

वले बेसे गाडे घोडे पोठीए, करे अंनंत जीवां री घातो रे ।
 छकाय छोडी कहे सर्वथा, ते चोडें बोले भूठ साख्यातो रे ॥ ४१ ॥
 वले छाटां में ऊठे गोचरी, साह्यां आंग दीयां पिण लेवे रे ।
 तिहां जीवां री हिंसा हुवे घणी, वले बूहारी सूं बूहारो देवे रे ॥ ४२ ॥
 इत्यादिक कामां करतां थकां, विवध पणे जीव मारे रे ।
 वले छ काय छोडी कहे सर्वथा, ते भूठ बोली जनम विगाडे रे ॥ ४३ ॥
 इम कहां जाव न ऊपजे, जव सूवा बोले तिण वारो रे ।
 में छोडी जितो म्हांरे विरत छे, वाकी रह्यो आगारो रे ॥ ४४ ॥
 तो गृहस्थ छोडी छ काय देस धी, ते पिण हुवो वरत धारो रे ।
 तिग लेखे तो ऊ श्रावक वडो, तिग वडा नें पगे कांय पारो रे ॥ ४५ ॥
 जव कहे में छ काय छोडी घगी, इण श्रावक छोडी छे थोडी रे ।
 इण श्रावक सूं मों में गुण घगां, म्हांने तिण सूं वांदे हाय जोडी रे ॥ ४६ ॥
 एहवी ऊंधी करे परूपणा, वडा श्रावक ने पगे लग्गावे रे ।
 इण वात रो प्रश्न पूछियां, ते पिण जाव न आवें रे ॥ ४७ ॥
 किण ही गृहस्थ संयारो कीयो, च्यांरु आहार दीयां बोसरायो रे ।
 जव यांसूं तो उण में गुण घगां, तिणनें न्यूं नहीं वांदे जायो रे ॥ ४८ ॥
 गुर रे पचखाण हुवे मोकला, लारे चेलो हुवे इचक वेरागी रे ।
 घगां गुण वाला ने कहे वांदगो, तो चेला नें वांदणो पगे लागी रे ॥ ४९ ॥
 चेला ने वांदणी आवें नही, जव करे वडां री थापो रे ।
 ते न्याय निरणो कीयां विनां, कर रह्या कूड विलापो रे ॥ ५० ॥
 तो वरतां वडो छे ऊ गृहस्थी, ऊ पिण श्रावक वाजें रे ।
 आप छोटा छे उण श्रावक थकी, तिण वडा नें वांदता कांय लाजे रे ॥ ५१ ॥
 कदे करे वडा री थापना, कदे करे गुणा री थापो रे ।
 ते वंदणा रा भूखा थकां, ओरां ने डवोय डूवसी आपो रे ॥ ५२ ॥
 एहवा पाखंडी लोक में, गृहस्थ थकां गुर वाजें रे ।
 करावे तिकखुत्ता सूं वंदणा, पिण निरलजा मूल न लाजे रे ॥ ५३ ॥
 जिम अरिहंत सिव ने वंदणा करे, तिमहिज आप वंदावे रे ।
 ए गुण विण ठाली ठीकरा, अरिहंत सिव रे जोडे किम आवे रे ॥ ५४ ॥
 त्याने तिकखुत्ता सूं वंदणा करे, ते जिण मारग गया भूलो रे ।
 ज्यां गुर कीवा गृहस्थी भणी, ते रह्या मिथ्यात मे भूलो रे ॥ ५५ ॥
 इम सांभल नें नर नारियां, पाषंड मत निवारो रे ।
 सुव सावां ने ओलख गुर करो, ज्यू उतरो भव पारो रे ॥ ५६ ॥

रत्न : १३

निम्न रास

ढाल : १

दुहा

भेषधारी भागलां थकी, पलें नही आचार ।
 वले सरधा पिण त्यारी बुरी, तिणमें अतंत अंधार ॥ १ ॥
 केइ नाम धरावें साध रो, पिण वरत न पाले एक ।
 ते मिष्ट थया आचार थी, सेवण लागा दोष अनेक ॥ २ ॥
 ते आचार तणी वाता सुणे, तो लागें अभितर लाय ।
 तलतलट करता थकां, बोले मूसावाय ॥ ३ ॥
 सुध साघां नें निन्व कहें, वले बोले फिरता वेंण ।
 सिकल विकल बुध बाहिरा, त्यांरा फूटा अभितर नेण ॥ ४ ॥
 त्यारे सरधा छे' निन्वा तणी, ते अरू वरू ल्यो' देख ।
 वले मिष्ट थया आचार थी, त्यां पेहर विगाड्यो भेख ॥ ५ ॥
 माहोमा निन्व कहे, ते तों रागा घेवो जाण ।
 लखणा कर ओल्लखाय दे, ते डाहा चतुर सुजाण ॥ ६ ॥
 त्यांरा टोला अनेक छे' जूजूआ, जूइ जूइ सरधा छे' तांम ।
 जूइ जूइ करे छे' परूणणा, ते पिण साध धरावें नांम ॥ ७ ॥
 ते आचार में हीणा घणां, वले लोप दीवी मरजाद ।
 साची सूतर री वात माने नही, कूरो करे रह्या विषवाद ॥ ८ ॥
 ते दोष सेवें छे' अति घणा, ते पूरा केम कहिवाय ।
 थोरा सा परगट करू, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ९ ॥

ढाल

[हूं वलीहारी जादवा]

अरिहंत सिध नें आयरिया, उवभाय ने उत्तम सुध साध कें ।
 मुगत नगर ना दायका, ए पाचूं पद ने लीजो अराध के ।
 रास भणूं निन्वां तणो* ॥ १ ॥
 नमूं वीर सासण धणी, वले नमूं गणधर गोतम सांम के ।
 त्या मोटा पुरुषां नें नमीयां थका, सीमें मन वद्धत आतम काम कें ॥ २० २ ॥
 इण दुषम आरें पांचमें, साग पेंहरे बाजे' साध अणगार के ।
 सरधा त्यारे निन्वां तणी, वले' छे' त्यारो मिष्ट आचार कें ।
 नीचों मत निन्वां तणो ॥ ३ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

त्यांरा चेंहन लखण परगट कळं, कोइ म घरजो मन मांहे घेप कें।
 निरणों कीजों घट भितरें, जे जे कहुं ते निजरां लेजो देख कें ॥ ४ ॥
 कोइ मिनष आंतरीयो जूतों धुरल कें, ते धन उदकें छे थानक रें काज के।
 ते दान लेइ थानक करे, त्यां छोड दीधी लोकां री लाज कें ॥ ५ ॥
 वले थानक करावण कारणें, अउत तणों लेवें छें माल कें।
 तिण थानक मांहे रहें, ओ प्रतख जाणों खांपण वालो ख्याल कें ॥ ६ ॥
 लिगडा लिगड्यां कारणें, जागां वांधी छें मठ जेम कें।
 मठवासी ज्यूं मांहे वसें, त्यां विकलां नें साध कहीजे' केम कें ॥ ७ ॥
 आधाकरमी थानक भोगवें, वले मोल रा लीया में रहें छें ताहि कें।
 वले भाडे लीया पिण भोगवें, त्यांनें निरुचेंइ जाणों निन्वां री पांत माहि कें ॥ ८ ॥
 कोइ मिनप आंतरीयो जूतों धरल कें, ते घर री जायगां नें थानक दे थाप कें।
 तिण थापीता थानक में रहें, तिण थानक रा घणी होय बेंठा आप कें ॥ ९ ॥
 एहवा थानक भोगव्यां, बुध अकल पत त्यारी जाय कें।
 त्यां भेष भांड्यो छें भगवानं रो, ते बूडा साध नामं धराय कें ॥ १० ॥
 ए चाला तो पोतें चालवें, काम पड्यां कपटी होय जाए दूर के।
 थानक भायां निमते' कहें, जाणे जाणें नें मूरख बोले कूर कें ॥ ११ ॥
 दडें लीपें साधां रें कारणें, ओडीयां ओडीयां आणें छें गार कें।
 ते पिण बूड गया बापडा, वले गुर रोइ जनम दीयों छे विगाड कें ॥ १२ ॥
 केइ भेषधारी नें भेषधाख्यां, हाथां दडें लीपें छें गार कें।
 त्यां भेष भांड्यो भगवानं रों, त्यांनें वादें ते पिण मूड गिबार कें ॥ १३ ॥
 साध काजे' वादें चंदरवा, वले वांधे' पडदा परेच कनात कें।
 ते पिण बूडे गया बापडा, वले गुर नें भिष्ट कीयां साख्यात के ॥ १४ ॥
 केलू फेरें साधां रे कारणें, जमीया उखेलें छे जीवां रा जाल कें।
 नीलण फूलण कुलायता, अनंत जीवां रा छें खेंगाल कें ॥ १५ ॥
 छपरा करे साध कारणें, वले उपर चढ छावें छें छान कें।
 ते गुर नें सेवग बेहूं जणां, भव भव में होसी घणां हिरान कें ॥ १६ ॥
 मुरड न्हांखे नीलो उखणे', अनंत जीवां री करे' छें घात कें।
 जब साध श्रावक बेहूं जणां, चोडेंइ बूड गया साख्यात कें ॥ १७ ॥
 थानक री भीत पड गइ, जब श्रावक फेर चुणावें भीत कें।
 तिण हिंसा रा पाप उदे' हूआं, चिहुं गति में होसी घणां फजीत कें ॥ १८ ॥
 साध रेत आणे नें पाथरें, ते रहें रों छार उपर बरसें मेह के।
 जीव अनंत मरें तिहां, तिण रा साधपणा रो आए गयो छेह कें ॥ १९ ॥

वले टाची वजावे सिलावटा,
 तिण जायगां मे सावु रहें,
 पका थाभा मंगावे पर गांम थी,
 ते वूडो जीवा थी वेर वाध नें,
 नवी जायगा उठाय वेठी करे,
 सावा निमत हिंसा करे,
 हिंसा करें साधा रे कारणें,
 तिण विघ विघ सूं जीव मारीया,
 गरथ दीयो छे थानक करायवा,
 पाप रो मूल मूदे तो तेहिज छें,
 एहवा थानक भोगवें,
 आचारांग नसीत सूत्तर ममें,
 नवो थानक त्यारे मोल ले,
 ते व्याज देवें सामग्री ममें,
 मुरदादिक रो माल लें भेलो करे,
 तिणने पिण कहे थानक तालके,
 जिणरो थानक तिणरो परगरो,
 ते थानक छे भेपघाख्या तणो,
 वले थापीता थानक मे रहें,
 तिण दोप ने दोप जाणें नही,
 कहि कहि ने कितरो कहू,
 एहवा थानक भोगवे,
 राते किवाड जड्या उघाडीया
 तिणरो पाप ने दोप गिणे नही,
 नित को वेहरे एकण घरे,
 ते सिष्ट हुआ जिण धर्म थी,
 साध नाम धराय ने,
 त्या भेध भाड्यो भगवान रो,
 कलाल ना घर नों पांणी पीयें,
 एहवो पाणी पीये तेहनी,
 पाणी वेहरे कलाल ना घर तणो,
 वले रूपीया ने व्याज दे तेहने,

साधा रें थानक सुधारण काज के ।
 त्यां छोड्यो संजम नेलोकां री लाज कें ॥ २० ॥
 तिहा अनत जीवा रो करे छे सघार के ।
 गुर रो पिण दीघों जनम विगाड कें ॥ २१ ॥
 थेट सूं नवी दराए नीव के ।
 ते तो निश्चेइ हिंसक दुष्टी जीव के ॥ २२ ॥
 त्या जीवां रो जाणजो पूरो अभाग के ।
 त्यारो कहितां कहितां न आवे थाग के ॥ २३ ॥
 तिण अनंत जीवां रो करायो छें नास के ।
 तिणनें निश्चेइ जाणजों दुर्गति वास के ॥ २४ ॥
 ते निश्चेइ छें भगवत रा चोर कें ।
 तिहा वीर जिणद कीयों छे निचोड कें ॥ २५ ॥
 जब भागलो थानक वेचे करें दाम कें ।
 ते थानक तालके कहें छे तांम के ॥ २६ ॥
 ते व्याज देइ नें वघारें माल के ।
 ते वूडा देवाल लेवाल दलाल के ॥ २७ ॥
 ओर रो परगरो म जाणो कोय के ।
 त्यारो इज परगरो जाणो लीजो सोय के ॥ २८ ॥
 ओ पिण छे उघाडो दोप के ।
 ते मिथ्याती किण विघ जावसी मोख के ॥ २९ ॥
 इण अनुसारें दोल अनेक के ।
 त्यामें आखो वरत न पावे एक के ॥ ३० ॥
 तिहा पिण हुवें छें जीवां री घात के ।
 त्यानें निन्व जाणो साख्यात के ॥ ३१ ॥
 धोवण पाणी असणादिक आहार कें ।
 विगड गयो विकलां रो आचार कें ॥ ३२ ॥
 वेठी पात आरा माहे जाय के ।
 त्या विकला ने जाणजो निन्वां रे माय के ॥ ३३ ॥
 ते पिण दोप सहीत असुघ कें ।
 सिष्ट हुइ छें मुघ ने वुघ के ॥ ३४ ॥
 ते पिण मोल रो लीघो छे ताम के ।
 ते पाणी वेहरे ते निन्वां रो काम कें ॥ ३५ ॥

विण पडिलेह्यां गिंज पोथ्यां तणो, त्यांमें अनंत जीवां री हुवें छें घात कें ।
 त्यां जीवां रों पाप गिणें नही, ते तो असल निन्व साख्यात कें ॥ ३६ ॥
 ववेक विकल बालक विरघ छें, ते तों समकत विरत जाणें नही ताहिकें ।
 वले साधपणों नही ओलख्यो, एहवा विकला नें मूढे ले मांहि कें ॥ ३७ ॥
 सात आठ वरस रो डावडो, समकत विण हीण वृषीयो जीव कें ।
 तिणनें दिख्या दे आहार भेलो करे, त्यां पिण दीवी छें नरक री नीव कें ॥ ३८ ॥
 तिण बालक नें न्यातीला पकड नें, पाछो गृहस्थ करे तिण रो भेष उतार कें ।
 तिणनें पाछें निन्व जाय नें, घरणो पाडें वाख्वार कें ॥ ३९ ॥
 पूछ्यां कहें म्हें घरणो पाड्यो नही, जाणें जाणें नें बोले सांप्रत कूड कें ।
 एहवा किरतब तो निन्व करे, त्यांरो लोकिक में पिण हुवो फितूर कें ॥ ४० ॥
 कोइ निरघन घर छोडे त्यां कनें, तिणनें घर रा आगना देवें नही ताम कें ।
 जब निन्व आमना करे, गृहस्थ कनाथी दरावें छें दाम कें ॥ ४१ ॥
 दाम दरावण री दलाली करे, त्यांरो पाचमो वरत हुवो चकचूर कें ।
 दसवीकाल कें देखलो, साधपणों गयो वेहतीरे पूर कें ॥ ४२ ॥
 मूंवा गयां रा पातरा, इधका राखें थानक रे माय कें ।
 त्यांनें पूछें तो कहें गृहस्थ ना, सांप्रत बोळें मूंसावाय कें ॥ ४३ ॥
 ते पडिलेह्यां विण पडीया रहे, जाल जमें जीवां री हुवें घात के ।
 इधका राख्यां भागों वरत पांचमों, त्यांनें जाणजों निन्व साख्यात के ॥ ४४ ॥
 इधका थान राखें कपडा तणा, ते पिण विण पडिलेह्या तांम के ।
 त्यांनें आला में घालें मूढ दे, अं तो भेषवारी निन्वा रा काम कें ॥ ४५ ॥
 आरा मां सूं साधां रे कारणें, घोवण मांड मेले अनेरे घर आण कें ।
 ते दोखीलें वेहरे जाण नें, एहवो भिष्ट आचार निन्वांरो जाण कें ॥ ४६ ॥
 घोवण माहें नीलेंतरी, तिण घोवण नें वेहरे जाण कें ।
 वले दोष गिणे नही तेह में, ते निन्व छें पूरा मूढ अयाण कें ॥ ४७ ॥
 भूरी घोवे छें जुवार री, तिण घोवण में जुवार रा दाणा अनेक कें ।
 ते घोवण वेहरे छें जाण नें, त्यां छोड दीवीं जिण धर्म री टेक के ॥ ४८ ॥
 बायां घर घर नों घोवण भेलो करे, साधां नें वेहरावण रें काज कें ।
 ते घोवण वेहरे साध जाण नें, त्यांने किम कहिजें मुनिराज कें ॥ ४९ ॥
 छती सकत फिरवा तणी, तोही लिमाडा लिमाडी थाणें वेंस ताहिकें ।
 कल्प मरजादा भांगी छें पापीयां, त्यांनें गिणों निन्वां री पांत मांहि कें ॥ ५० ॥
 सहर में फिरें गोचरी उतावला, वले हाथ माहें लीयां चाले छें भार कें ।
 वले मेड्यां चढें नें उतरे, त्यां विकलां नें छें तीन विकार कें ॥ ५१ ॥

थाणे बेठा छें खावा घालीया,
 ते रस ग्रिधी नगर पिंडोलीया,
 एक दिन माहें एकण घर मभे,
 ते पिण सख्या छें नही,
 ते पिण विनाइ कारण वेहरता,
 एहवा भेषधारी भागल फिरे,
 माहोमाहि साव सरधे नही,
 आदर भाव नही आयां तणी,
 वले गृहस्थ नें बे'सण री आमना करे,
 तिण कीयो सभोग गृहस्थ्य सू,
 प्रश्न व्याकरण दसमा अग मभे,
 ते राखे छे सूतर उथाप ने,
 एकलो साव चोमासो करे,
 तिणने अव्यक्त भगवत भाखीयो,
 दोय साधवीया चोमासो करे,
 कारण विण विचरें दोय जणी,
 पांणी ठारे गृहस्थ रा ठाम मे,
 त्याने अणाचारी जिणवर कह्या,
 मातरियादिक रो नांम ले,
 तिण माहे दोष जाणे नही,
 कारण विनाइ साधव्यां,
 अणाचारणी त्याने कही,
 केइ आयां पेहरे छे काचूओ,
 ते विगडायल छे जेन री,
 वधो करावे गृहस्थ ने,
 ओर साध कनें लीजे मती,
 मोल लरावे लोट पातरा,
 वले मोल वतावें थोडो घणो,
 लोट पातरा वसतर पोथीया,
 त्यारी पडिलेहण करे नही,
 लोट पातरा वसतर ने पोथीया,
 त्यारी भलावण देवे गृहस्थ ने,

ते थाणें न वेंठा खाणगे वेठा जाण के ।
 त्यां भेषधास्थां भागी छे जिणवर आणके ॥ ५२ ॥
 वेहर ल्यावे छेतीन च्यार वार के ।
 त्या विकला रो विगड गयीं आचार के ॥ ५३ ॥
 त्यां भागे दीधी छें कल्प मरजाद के ।
 विकल थकां वाजे छे साध के ॥ ५४ ॥
 त्यारा मूळे गद्ये करे मांहोमा मूकाण के ।
 ते निन्व जिण मारग रा अजाण के ॥ ५५ ॥
 जायगा वतावे बे'सण सुवण नें ताय के ।
 तिणरी पिण विकलाने खबरन काय के ॥ ५६ ॥
 साव ने न राखणो चसमो कांच के ।
 त्या निन्वां रो विकल माने छे साच के ॥ ५७ ॥
 वले एकलो रहे छे सेषे काल के ।
 सावपणा थी दीयो छे टाल के ॥ ५८ ॥
 दोय जणी रहे सेखा काल के ।
 तिण लोपी मरजादा भागे दीधी पाल के ॥ ५९ ॥
 भोगवी पाछ्या सूप दे ताहि के ।
 दसवीकालिक तीजा अवेन रे माहि के ॥ ६० ॥
 पातरो इधको राखे छे ताहि के ।
 त्याने जाणो निन्वा री पांत माहि के ॥ ६१ ॥
 काजल घाले आख्या रे माहि के ।
 दसवीकालक तीजा अवेन रे माहि के ॥ ६२ ॥
 मिश्रू आदि वले खीनखाप के ।
 त्यानें वाद्यां पूज्या छे निकेवल पाप के ॥ ६३ ॥
 तूं दिख्या ले तो लीजे म्हारे पास के ।
 तिणश्री जिण आगना लोपे दीधी तास के ॥ ६४ ॥
 वले पाना परत लारावे मोल के ।
 ओ देखो निन्वां रो पोल के ॥ ६५ ॥
 सेठी घालें भुयरा रे माहि के ।
 एहवा मिष्ट आचारी छें निन्व ताहि के ॥ ६६ ॥
 गृहस्थ रे घरे मेले छे ताम के ।
 पछें विहार करें जाजे ओर गाम के ॥ ६७ ॥

मोल ले राखें सांचां नें बेहरायवा, धी खांड आदि दे वस्तु बनेक के ।
 ते बेहर आणें लोलपी थकां, त्यां पेहर विगाडयो साथ तणो मेख के ॥ ६८ ॥
 गृहस्थ ने देवें लोट पातरा, पूछ पांता नें परत कणेश के ।
 बले देवे ओघो नें पूजणी, ते मिष्ट दूआ ले साथ रो भेप के ॥ ६३ ॥
 थोडोइ उपधि गृहस्थ नें दीयो, त्यारो आखो वरत रह्यो नहीं एक के ।
 नसीत रे पनरमें उद्देसे क्खों, ओ पिण नही विकला रे चकेक के ॥ ७० ॥
 इधका राखें छें लोट नें पातरा, इधका राखें कपडा लोपें मरजाद के ।
 वरत भांगों त्यारो पांचमो, त्यां विकलां ने विकल जाणें छें साथ के ॥ ७१ ॥
 कागद लिखावें गृहस्थ कनें, ओर गांम मेलण ने ताहि के ।
 तिण माहें समाचार आपरा, ते पिण छें निन्वां री पांत माहि के ॥ ७२ ॥
 केइ तों कागद हाथां लिखें, मेल देवे गृहस्थ रें साथ के ।
 क्हें ओर किणही ने दीजों मती, छानें दीजों साथ सावव्यां रे हाथ के ॥ ७३ ॥
 कपडा बेहरावे त्यानें मोल लें, ते जाण नें बेहरें छें ताहि के ।
 ते मिष्ट दूआं जिण धर्म थी, त्यानें निश्चोइ जाणजो निन्वां रे माहि के ॥ ७४ ॥
 मोल लीघो थानक भोगवें, मोल रो लीघो भोगवे आहार के ।
 कपडा पिण मोल लीघा भोगवें, त्यानें निश्चोइ मत जाणजों अणगर के ॥ ७५ ॥
 सिजातर पिंड भोगवें, तें सरस आहार तिणरो आवतो देख के ।
 धणी छोडे आग्या ले ओर नीं, तिण पेहर विगाडयो साथ तणो भेख के ॥ ७६ ॥
 त्यांरा श्रावक खाअं केइ मांग नें, त्यानें सानी करें दरावे दांम के ।
 तिणमें मुतलव जाणें आपरों, इणरे होसी ते आवसी म्हारे कांम के ॥ ७७ ॥
 ओ मोल त्यावें धी खांड नें, बले चिरक पणो मेवा मिष्टान के ।
 ओ पिण खाअं मत मांणीयो, गुर नें पिण दे अडलक दांन के ॥ ७८ ॥
 उपरे निठे खांतां नें देवतां, जब फेर त्यांरी करें दातार के ।
 जब ओ पिण बेहरावे उण रीत सूं, एहवो छें भेपघाखां रें अंधार के ॥ ७९ ॥
 कोइ घर सूं आयों बोलायवा, बेहरायवा असणादिक आहार के ।
 तिण घर जाए तेडीया, त्यां विकलां रो विगड गयो आचार के ॥ ८० ॥
 घर हाट सूं आयों चलाय नें, कपडों बेहरण ने ले जावें बोलाय के ।
 तिहां पिण जाये तेडीया, त्यांमें पिण कला मत जाणजों कांय के ॥ ८१ ॥
 सांहो आण्यों ले जाए तेडीयो, ए दोनूइ दोप कहा मगवान के ।
 ते पिण बेहरें निसंक सूं, त्यानें मिष्ट आचारी जाणें चुववान के ॥ ८२ ॥
 पाट वाजोट आणें गृहस्थ रा, पाछा देवण री नहीं छे नीत के ।
 मरजादा लोपीं नें भोगवें, आ तो निश्चोइ जाणो निन्वां री रीत के ॥ ८३ ॥

केइ पाट वाजोट मोल रा लीया,
 केइ तो साह्या आणे दीया,
 भांगां तूटा करावे त्याने सातरा,
 केइ पाट वाजोट आगा लीयें,
 गृहस्थ ने लिखावें बोल थोकडा,
 ते उतारे छें पानो देख ने,
 पेहलो करण लिख दीया मे पाप छे,
 तिणमें निन्व जाणे धर्म छे,
 पुस्तक पातरा आदि दें,
 आछा मूंडा कहे तेहनें,
 गराम नें तो कइयो कह्यो,
 वेचण वालो वाणीयो कह्यो,
 क्रय विक्रय माहें वरते साधजी,
 उत्तराघेन पेतीसमे,
 जो मोल लरावे अचित वस्त ने,
 पांचूं महावरत भागें गया,
 ए भाव कह्या छे नसीत मे,
 सुध साधा विण कुण कहे,
 पोथां रा गिज राखे पडिलेह्या विना,
 पडे कथुया माकड उपजे,
 जोवे वरस छें मास नीकल्या थका,
 नसीत रे दूजे उहेंसे कह्यो,
 गृहस्थ रें साथे संदेसो कहे,
 ते साध नही भगवान रा,
 भेषधारी मांहोमां कजीया करें,
 आंम्हा सांह्या बेसैं बाजार में,
 अन पांणी छोडावे आण दे,
 एहवा किरतव करें तेह में,
 धरणो पाडें साध रा भेष मे,
 ते बेसरमा सर्म वाहिरा,
 त्यानें वादे पूजे ते भोलीया,
 ते पिण बूडें गया बापडा,

केइ आधाकरमी पाट वाजोट के।
 ओ पिण त्यामें मोटकों खोट कें ॥ ८४ ॥
 खाती रे पासैं पागाविक दराय कें।
 केइ थानक ज्यूं थापे राख्या ताय कें ॥ ८५ ॥
 आप तणो पानो दे उतारण ताय कें।
 इण दोष री विकला ने खबर न कांय कें ॥ ८६ ॥
 तो लिखाया पिण होसी पाप के।
 त्यां श्री जिण वचन ने दीया उथाय के ॥ ८७ ॥
 मोल लरावें ले ले नाम के।
 अे पिण छे भागलां रा काम के ॥ ८८ ॥
 कुगुर छे तिण विच दलाल कें।
 यां तीना रो जाणजो एक हवाल के ॥ ८९ ॥
 त्यानें महा दोषण छे एह के।
 तिणने तो साध न कह्यो छे तेह के ॥ ९० ॥
 तो सुमत गुप्त होय जाअे खड के।
 तिणरो आवे चोमासी डड के ॥ ९१ ॥
 संका हुवे तो जोवो उगणीस मे उहेंस के।
 सूत्तर तणी उडी रेस के ॥ ९२ ॥
 त्या माहें जमे छे जीवा रा जाल के।
 नीलण फूलणादिक जीवा रोहुवें खेगाल कें ॥ ९३ ॥
 तो पेहला वरत तणों हुवे खड के।
 एक मास रो आवे डड के ॥ ९४ ॥
 जब गृहस्थ सू भेलो कीयो संभोग के।
 त्यारे लागो मिथ्यात रो रोग के ॥ ९५ ॥
 धरणा पाडे दरावें आण के।
 अन खावा रा दरावे पचखाण के ॥ ९६ ॥
 कदा होय जाअें तिणमिनष री घात कें।
 साधपणो रह्यो नही अंसमात के ॥ ९७ ॥
 त्यां छोड दीधी लोका री लाज के।
 त्या विकला ने विकल कहे मुनीराज के ॥ ९८ ॥
 त्याने साधपणा री खबर न कांय कें।
 कुगुर तणी पखपात रें मांय के ॥ ९९ ॥

नहीं कल्पें ते वस्त भोगवें, तिण मांहिं जाणजों मोटी खोड कें ।
 आचारंग पेंहला सतखंभ में, तिणनें तों भगवंत कहि दीयो चोर कें ॥१००॥
 अनेक असुघ वस्त भोगवें, ते तों निश्चेंइ चोर साख्यात कें ।
 तिणरो प्राङ्घित पिण लेखें नही, तिण री तो विगड गइ सवें वात के ॥१०१॥
 महंत रो नांम कांनै सुणें, जब जाणें लीघी जमात री करामात कें ।
 ज्युं मिष्ट आचार्य तेहनीं, निश्चेंइ मिष्ट जाणों जमात कें ॥१०२॥
 एक वचन सिधंत नों उथपें, तिणनें निन्व कहां जिनराय कें ।
 उवाइ ने ठांगाजंग में देखलो, तिहां विवरा सुघ दीया छें कताय कें ॥१०३॥
 तीन रास परूपी तेरासीयें, तिण घाली गला नें मिथ्यात री रांत के ।
 ज्युं मिश्र दांत कहें तके, ते छें तेरासीया निन्व री पांत कें ॥१०४॥
 मिश्र दांत भगवते न भाखीयो, संका हुवें तो जोवों सिधंत रे मांहि कें ।
 मिश्र दांत कहें ते निन्वां, तेरासीया निन्व ज्युं ताहि के ॥१०५॥
 मिश्र दांत अणहुंतो परूपीयो, भूढ मिथ्याती कर कर खांच कें ।
 ज्युं काग मेवो दाखां परहरी, उकरली में घालें चांच कें ॥१०६॥
 माठी वसत ज्युं सरघां मिश्र दांत री, तिण सरघां नें कदेय मजाणजों साच के ।
 पिग काग सरीषा मानबी, ते मिश्र री सरघा में रह्या छे राच कें ॥१०७॥
 पेंहलो निन्व जमाली थयो, पांचमों निन्व गंगेय नांम कें ।
 छलूक निन्व छटो कहां, यां तीनां री सरघा आदर वेंठा तांम कें ॥१०८॥
 निन्व निन्व कर रह्या, पिण निन्वां नें निन्व कहां किण न्याय के ।
 पोतें निन्व छें तेहनीं, ते पिण विकलां नें खबर न काय कें ॥१०९॥
 साल दाल मोठा भोजन तजें, भंड्यूरों घालें मिष्टा मुख मांहि कें ।
 ज्युं भेषधारी मिष्टी थया, त्यां सील आचार छोडें दीयो ताहि कें ॥११०॥
 आहार सेजा नें वसतर पातरा, जाण जाण नें भोगवें असुघ के ।
 भंड्यूरा सम त्यांनै कहां, मिष्ट हुइ छें त्यांरी सुघ नें वुच कें ॥१११॥
 कूहा कांनो री किडवी कूतरी, तिणनें कोइ आवा नही दे घर मांहि के ।
 जिहां जायें तिहां हुड हुड करे, ज्युं मिश्र री सरघा जाणें लीजों ताहि कें ॥११२॥
 भंड्यूरों नें कूती कूहा कांन री, तिण री ओपमा भागल निन्व नें ताहि कें ।
 किण रें संका हुवें तो जोयलों, उत्तराधेन रा पेंहलां अधेन रे मांहि कें ॥११३॥
 जिण जिण सेख्यां हाथी संचरे, तिहां तिहां स्वानं मुखें लव तोड कें ।
 अलगा थकां भुसवों करे, ए दिष्टंत वुचवंत लेजों जोड कें ॥११४॥
 जिहां जिहां विचरें साघजी, तिहां तिहां हुवे तों देखें उपमार के ।
 जब भेषधारी भागल निन्वां, स्वानं ज्युं करे घणी भुसवाड कें ॥११५॥

डोला बारें काढे' तुरकां तणें, जव मोटे मोटें सब्दे' करें आइघोय के।
 ज्यूं निन्वा रो मत विखरे जवे, आहिज रीत जाणें लेजो सोय के ॥ ११६ ॥
 सैद माख्या तुरकां तणा, तिण सूं आए वरस करे छें आइघोय के।
 ज्यूं ज्यांरा खेतर श्रावक फिरे, आइघोय ज्यूं करें छें हाय वोय के ॥ ११७ ॥
 सूतर विख्य जोडा करे, तिणरा कागदिया लिख दीघा हाय के।
 आइघोय ज्यूं करता थकां, बक्ता फिरें हाटां मे दिन रात कें ॥ ११८ ॥
 सुघ साधां ने' निन्व कहे, निन्वा ने' कहे सुघ साघ के।
 ते दोनूं विघ वूडा बापडा, त्यांरा घटमे उपनी मिथ्यात री' व्याघ के ॥ ११९ ॥
 नवकरवाली निंद्या तणी, कुगुरां दीघी छें त्यानें पकडाय के।
 जाप जपे' नित तेहनो, रात दिवस करे' छें बुडण रो उपाय के ॥ १२० ॥
 सुघ साधां तणी निंद्या करे', वले अणहूता देवे आल के।
 गेंहला ज्यूं बकबोकरे, साच भूठ तणो नही काढे निकाल के ॥ १२१ ॥
 ओरां रे' माथे' आल दे', तिणसूंड पांमे भव भव में आल के।
 ज्यूं साधां रे आल देवें तिको, उतकष्टों हले' तो अनतो काल कें ॥ १२२ ॥
 जो पाप उदे' हुवे' इण भवे, तों घर माहे आवे दलदर भूख कें।
 विजोग पडे वाहलां तणों, वले दिन दिन उपजे' दुख माहे दुख कें ॥ १२३ ॥
 रोग सोग संताप वघे घणों, जीवे' जा लग रहे खांचा ताण के।
 वले दुख पांमें नरक निगोद ना, सुघ साधा री निंदा रा ए फल जाण के ॥ १२४ ॥
 जिहां विचरे' साघजी, तिहा तिहां मिले परपदा रा थाट के।
 तिहा भेषधारी ने निन्वा, रात दिवस करे' छें तलतलाट के ॥ ११५ ॥
 जिहां जिहां निन्व संचरे', तिहां तिहा हुवे' जिण धर्म री हांण कें।
 कजीयो कलेस वघे' घणो, तिहा मूरख बूडे छे कर कर ताण के ॥ १२६ ॥
 जिहां जिहां सूर्य उदे' हुवे', तिहां तिहां हुवे' चोरां तणी घात के।
 जिहां जिहां विचरे' साघजी, तिहां तिहां पतलों पडे' छें मिथ्यात के ॥ १२७ ॥
 साघ रो आचार परगट करे', जव भेषघाख्या रे लागे दाह के।
 रोम रोम तिणा रा परजले', ओर लोकां रे' तो नही परवाह के ॥ १२८ ॥
 कजीया कलेस तो अँहिज करे', अँहीज करे' जिण धर्म री हांण के।
 अँहीज निंद्या करे' पारकी, ते पिण विकलनें नही छे पिच्छांण कें ॥ १२९ ॥
 मत विखरतो देखे आप रो, वले परती देखें छें मत माहे फूट के।
 जव निन्व ने' निन्वा रा श्रावका, मिल मिल ने' चलवे' छें भूठ के ॥ १३० ॥
 स्वांन भुसे' छें मुख उंचों करे', कानां सुणे भालर रो मिणकार कें।
 ज्यूं साधां रा सब्द कानां सुणे, स्वांन ज्यूं निन्व करे' भुसवार के ॥ १३१ ॥
 ४४

माठी वस्तु नें ज्यूं ज्यूं उकरालीयां, ज्यूं ज्यूं नीकले दुरगंध वास के।
 ज्यूं ज्यूं निन्वां नें छेडेवे, ज्यूं ज्यूं उंवा दोले छें तास के ॥१३२॥
 नीव फलें जब कागलो, घणों हरणें नीवोली देख के।
 ज्यू कास सरीपा मानवी, मिश्र री सरखा सूं हरणे वशेप के ॥१३३॥
 ते मल मल नें गावें मिश्र नें, जाणें सार काढ्यो इण सरखा मांय के।
 न्याय निरणों त्यारे नहीं, सूही करे थोथी वक्रवाय के ॥१३४॥
 मिश्र दांन उठाय वेंठो कीयों, ते सरखा छें एकंत भूठ मिष्यात के।
 ते किण किण में मिश्र कहें, ते सांभलजों छोडी पक्षपात के ॥१३५॥
 आठ दांन कहा संसार नां, तिण माहें कहें जिण धर्म रो भेल के।
 आ उंवी सरखा निन्वां तणी, ते जिण मारा सूं नहीं खावें भेल के ॥१३६॥
 अणुकांपा आंण गाजर मूला दीयें, वले सर्व नीलोतरी नें जमीकंद के।
 ते पिण दीयां मिश्र कहें, एहवो छे निन्वां री सरखा रो फंद के ॥१३७॥
 बंदीवानादिक नें दांन दें, सच्चितादिक नीलोती अनेक के।
 तिणमें भेल कहें जिण धर्म रो, आ खोटी सरखा भाले रह्या टेक के ॥१३८॥
 ग्रह करडा आयां भय रो घालीयो, थावरीयादिक नें देवें दांन के।
 तिणमें भेल कहें जिण धर्म रो, आ निन्वां री सरखा घोर अग्यांन के ॥१३९॥
 खरच मूंआ रे केडें करे, ए चोथो दांन लोकिक ववहार के।
 तिणमें भेल कहें जिण धर्म रों, आ निन्वां री सरखा छें घोर अंधार के ॥१४०॥
 सांकडें पडीयो लज्या सूं दांन दें, ते सासरादिक में जमाइ ज्यूं जाण के।
 तिणमें भेल कहें जिण धर्म रो, एहवा निन्वां छें मूढ अयांण के ॥१४१॥
 गरव चढ्यो दांन दे जेह भणी, मुकलावोपेहरावणी मूसालों रंगरेलके।
 रावलीयादिक नें दांन दें, तिण माहें कहें जिण धर्म रो भेल के ॥१४२॥
 हांती नेंतो देवो नेंत घालवो, इत्यादिक आमों सांह्यो देवो लेवो तांमके।
 ए नवमों दसमों दांन छें, तिणमें जिण धर्म रो भेल कहें छें अलाम के ॥१४३॥
 पीहर वाजें छकाय नां, छकाय खवायां कहें मिश्र दांन के।
 जब पीहर तों पुरो पब्बो, दया रहीत छें विकल समान के ॥१४४॥
 एक करणी करे तेहमें, नीपनो कहे छें धर्म नें पाप के।
 एहवी करे छें पक्षपणा, मिश्र दांन री कीवीं छें थाप के ॥१४५॥
 जीव खावां खवायां भलो जाणीयां, तीनुइ करणा कह्यो जिण पाप के।
 जीव खवायां मिश्र कहें, त्यां निन्वां रे होसी भव भव माहें संताप के ॥१४६॥
 भात वरोटी जीमणवार में, नेंत जीमावें सगा नें सेण के।
 तिणमें भेल कहें जिण धर्म रो, त्यांरा फूट गया अभितरं नेण के ॥१४७॥

छही , छकाय जीवां तणी,
 त्यामे किणहीक मे तो मिश्र कहे,
 बावीस टोला ने कहे साध छे,
 खोटी जाणे ने परहरी,
 बावीस टोला ने कहे साध छे,
 पिण मन माहि साध जाणे नही,
 जो साध सरघे छे तो तेहनी,
 एहवा प्रश्न पूछे सांकडे लीया,
 कदे करडे काम साकडे पड्या,
 ओ पिण भूठ बोले छे जाण जाण ने,
 मिश्र दान उथापे तेहने,
 हिंसा धर्मी तो निश्चेइ असाध छे,
 मिश्र दान ने उथपे,
 वले हिंसाधर्मी त्याने कहे,
 वले खोटो मत कहे तेहनो,
 ग्यान विना आधा कहे,
 जोड कीधी छे त्या उपरे,
 साधपणा ने समकत तणो,
 ज्याने भिन भिन कर ने नषेबीया,
 एहवा भूठाबोला छे निन्वा,
 बावीस टोला मे केइ भोलीया,
 ते पिण सुध बुध वाहिरा,
 सील भागे निन्वां रा टोला मभे,
 पिण वडो ज्यू रो ज्यू राखीयो,
 कुसीलीया भागल भेला रहे,
 पाणी भरे सगला मभे,
 साध साधवी सू वरत भाग दे,
 ते ठांगाअग वेदकल्प मे,
 सील भागें साध साधवी थकी,
 तिण ने वडो ज्यू रो ज्यू राखीयो,
 फेर दिख्या दे सगला सू छोटो कीयो,
 तिणरी बदणा तो जिहांइ रही,

कोइ मडावे छही दान साल के।
 किणहीक रो नही काढे निकाल के ॥ १४८ ॥
 त्या पिण मिश्र री सरघा जाणे लीची कूडके।
 ज्यू माठी वस्त उपर दे घूर के ॥ १४९ ॥
 ओ पिण भूठ बोले जाण जाण के।
 त्या भूठा बोला री करजो पिछाण के ॥ १५० ॥
 बदणा छडावे छे किण न्याय के।
 जब तो जीभ पडे नही ठाय के ॥ १५१ ॥
 बावीस टोला ने कहिदे साध के।
 पिण अतरग माहे जाणे असाध के ॥ १५२ ॥
 हिंसाधर्मी कहे छे ताम के।
 जब तो बावीस टोला री पाडी माम के ॥ १५३ ॥
 त्याने पाखडी कहे छे ताम के।
 वले भूठाबोला कहे छे ठाम ठाम के ॥ १५४ ॥
 वले अग्यानी कहे छे ताम के।
 विध विध सू पाडे छे माम के ॥ १५५ ॥
 तिणमे निषेद्या छे विवध परकार के।
 खेरो मूल न राख्यो लिगार के ॥ १५६ ॥
 वले त्यानेइज कहे छे साध के।
 त्या विकलारे किण विध होसी समाध के ॥ १५७ ॥
 त्या भूठाबोला ने कहे छे साध के।
 त्यारे पिण कदेय म जाणो समाध के ॥ १५८ ॥
 तिणनें कहिवा ने तो दिख्या दे फेर के।
 एहवो छे निन्वा रा मन मे अधेर के ॥ १५९ ॥
 त्यारो तो किण विध काढे निकाल के।
 कण रहीत भेलो कीयो छे पराल के ॥ १६० ॥
 तिणनें दसमो प्राच्छित कह्यो जिण आप के।
 ते प्राच्छित निन्वां दीयो उथाप के ॥ १६१ ॥
 तिणनें न्याय करण ने दिख्या दे फेर के।
 ओ पिण निन्वा रे अतत अधेर के ॥ १६२ ॥
 जब सगलां वादणा सीस नमाय के।
 उलटा वडा ने पाडे छे पाय के ॥ १६३ ॥

आगे छोटीं थों तिणनें बंदणा करें, तो इणरो पडें छें लोका में उवाड के ।
 तिण सूं बडो ज्यूं रो ज्यूं राखीयो, ओ चोडें देखें निन्वां रो आचार कें ॥ १६४ ॥
 बडो छोटां नें बंदणा करें, त्यां खोय दीयो छें विनें मूल धर्म के ।
 ते जिण मारग सूं उलटा पखा, त्यां निन्वा रे छें भारी करम कें ॥ १६५ ॥
 साध साधवी सूं अकारज करें, तिण पापी ने काढ देणो गण वार कें ।
 तिणरो काण मूल न राखणों, हेलणों निदणो च्याहं तीरथ मभार कें ॥ १६६ ॥
 तिणनें माहें लेणों छें तो इण विघें, जो उ पोतीयो वाघें फिरें छ मास कें ।
 पछें दिख्या दे सगलां सूं छोटीं करें, आ रीत करने माहें लेणो तास कें ॥ १६७ ॥
 फेर दिख्या दे बडो राखीयो, तिणनें प्राच्छित न दीयो छें अं समातके ।
 जिण टोला माहें आ रीत छें, त्यानें निश्चेंइ निन्वां जाणो साख्यात के ॥ १६८ ॥
 जिणरो प्राच्छित ओछो दीये, जिण रो प्राच्छित उण ने आवे ताहि कें ।
 जो संका हुवें तो जोय लों, वेदकल्प ठाणाअंग माहि कें ॥ १६९ ॥
 रास जोड्यो निन्वां तणों, प्रसिघ सोजत सहर मभार कें ।
 समत अठारें वरस तेपनें, काती विद इग्यारस नें बुधवार कें ॥ १७० ॥

रत्न : १४

विनीत अविनीत री चौपई

ढलल : १

दुहल

नरुु वीर सलसन धणी, ते पलम्यल पद नलरवलण ।
 त्यल वलनो पुरुष्यो सद्गुर तणो, वलधी मर्यलद परमलण ॥ १ ॥
 केइ सलधु नलम धरलवतल, ते बोलें ंलल पपलल ।
 सुध ंललर श्रद्धल थी वेगलल, ज्यु कण रहलत परलल ॥ २ ॥
 एहवल भेषघलरी भलषुटी थकल, मुख सूं कहें म्हे सलध ।
 ते वलनो पुरुषें भलगल तणो, श्री जलण वचन वलरलध ॥ ३ ॥
 त्यलसूं महलन्रतल री चरचल कीयल, तो भलगें मृग ज्युं दूर ।
 घणल ंलडंवर करें पूजलवतल, वले भलखे ंनेक वलध कूड ॥ ॡ ॥
 त्यलरो वलनो करें गुर जलण नें, भोलल लोक ंयलण ।
 केडे ललगल कुगरल तणे, ते वूडें कर कर तलण ॥ ५ ॥
 कुगुर ंलदर ने छुडुण तणो, कठलन घणो ए कलंम ।
 कोइ छुडे हलरदे ग्यलंन परगटुधल, त्यलनें वीर वलखलण्यल तलंम ॥ ६ ॥
 वलनो करणो छें सतगुर तणो, त्यलंरल गुणल री करी पलछुंण ।
 ंतुरलघेन पेहललें कह्यो, ते सुणजो चतुर सुजलण ॥ ७ ॥

ढलल :

[पलणंड वधसी ंररे पलचमें रे]

संजुग छुडुध्यल ंभलतर वलहलरलल रे, ते मोटल ःवुषलश्वर छे ंणगलर रे ।
 ते सर्व सलवध त्यलगे ने नीकल्यल रे, त्यलंरे पलप करण रो नही ंलगलर रे ।
 वलनो कीजे एहवल सतगुर तणो रे ॥ १ ॥
 ते करणी कर भेदे भलकुवु कर्म ने रे, नलरदुवण भलख्यल नल लेवणहलर रे ।
 वलनो पुरुष्यो एहवल सतगुर तणो रे, सूतर में श्रीवीर कह्यो वलसुतलर रे । वलं २ ॥
 जे चलले नलरंतर गुर री ंलगनलं मके रे, समीपे रहे तो रुडी रीत रे ।
 ते जलण वरते गुर री ंग चेष्टु रे, तलणने श्रीवीर कह्यो सुवलनीत रे ॥ ३ ॥
 वलनो तो जलण सलसन रो मूल छे रे, वलनो नलरवलण सलधन रो कलज रे ।
 जे वलनो करण सूं ंपलरलठल पडुध्यल रे, ते गयल संजम नें तप सूं भलज रे ।
 ते ंवलनीत भलरी कर्मल एहवल रे ॥ ॡ ॥
 केइ गुर री नहीं पलले मूरख ंलगनल रे, समीपे रहलतल संके मन मलंय रे ।
 रखे करलवे कलरज मोक नें रे, एहवो वूडुण रो करें ंपलय रे ॥ ते ५ ॥

ते प्रत्यनीक अंतरंग में गुर नों पापियो रे, उण विनों न जाण्यो रुडी रीत रे।
 उणरे कूड कपट ने घेठापणो घणों रे, तिणनें श्रीवीर कहुओं अविनीत रे ॥ ६ ॥
 जो कार्य करे अविनीत गुर तणो रे, तो जाणे अग्यानी बैठ समान रे।
 तिण धर्म जिणेर नों नही ओलख्यो रे, ते चिहुं गति मे होसी घणो हूरान रे ॥ ७ ॥
 जो तप कर काया कष्टे आपणी रे, ते जस कीरति के खावा ध्यान रे।
 के पूजा श्लाघा रो भूखो थकों रे, पिण विनों करणो तो नहीं आसान रे ॥ ८ ॥
 जो घरावे गृहस्थ नें बोल थोकडा रे, ते पिण मान बडाई काज रे।
 ओ आपो प्रसवे अवर ने निंदतो रे, ते अविनीत निरलज नाणे लाज रे ॥ ९ ॥
 अविनीत नें आपो दमवो दोहिलो रे, तिणरा अथिर परिणाम रहे सदीव रे।
 ओ किण विव पाले गुर री आगनां रे, जे क्रोधी अहंकारी दुष्टी जीव रे ॥ १० ॥
 उणरे चेला करण री मन में अति घणी रे, तिणसूं गुर रागुण मुखसूं कहुआन जाय रे।
 रखे मोंनं छोड दिख्या लें गुर कनें रे, एहवी ओघट घाट घणी मन मांय रे ॥ ११ ॥
 कोइ गुर कनें दिख्या ले तो जाणनें रे, तो फाडण रो करे मूड उपाय रे।
 बुगल ध्यानी ज्यूं वरते तिण कनें रे, नाहर भगत ज्यूं आपो दीये छिपाय रे ॥ १२ ॥
 उतारे टोला नें गुर री आसता रे, भाव चारित्रिया पासे नाय रे।
 ओ परभव रो डर नहीं आणे पापियो रे, चेला करण री मन में चाय रे ॥ १३ ॥
 अविनीत रे चेला री हुवे चावना रे, पिण गुर नें आग्या देतां नहीं जाण रे।
 उ चेलो हुंतो देखे जो आपरो रे, तो गुर सूं पिण तोडे मूड अयाण रे ॥ १४ ॥
 अविनीत आगे घर छोडे तेहनें रे, ते अविनीत करे चेलो ततकाल रे।
 वले कुकला सीखाय मिडकावें गुर थकी रे, दे दें अणहुंता कूडा आल रे ॥ १५ ॥
 अविनीत आगे घर छोडें तेहनें रे, तिणनें तो पूरी खबर न काय रे।
 जो गुर नही सूपे शिष्य अविनीत नें रे, तो कुण कुण करे अकारज ताय रे ॥ १६ ॥
 ओ असाव परूपें सगला साध नें रे, वले गुर सूं पिण राखें मूरख वेष रे।
 वले काण न राखें पापी तेहनीं रे, तिण प्रहर विगाड्यो साधु रो भेष रे ॥ १७ ॥
 कोइ गुर री आग्या लोपे चेलो करे रे, तिण छोडी छें जिण सासण री रीत रे।
 ते फिट फिट हुसी समभू लोक में रे, परभव में पिण होसी घणो फजीत रे ॥ १८ ॥
 वेंराग घटवो ने आपो बस नहीं रे, तिणरे रहे चेला करण रो ध्यान रे।
 उणनें शिष्य मिलियां सूं तो सिथल पडें रे, वले ववे लोलपणो नें अभिमान रे ॥ १९ ॥
 विनीत शिष्य रे शिष्य री मन में उपनीं रे, पिण गुर री आग्या विनन करे चाव रे।
 तिण आत्मा दमनें इंद्रया वस करी रे, शिष्य मिलियां न मिलियां सरल स्वभाव रे ॥ २० ॥
 जो विनीत आगे घर छोडें तेहनें रे, तो विनीत बोलें सूतर रे न्याय रे।
 हूं गुर री आग्या विन चेलो किम करूं रे, हूं दिख्या दे सूपूं गुर नें जाय रे ॥ २१ ॥

कोइ उपगारी कंठ कला घर साधु री रे,
 अविनीत अभिमांनी सुण सुण परजलें,
 जो कंठ कला न हुवे अविनीत री रे,
 यां गाय गाय रीभाया लोक ने रे,
 एहवा अभिमांनी अविनीत ते लोकां कर्ने रे,
 उना रे उत्तम साधा री आसता रे,
 ओ गुर रा पिण गुण सुण नें विलखो हुवे रे,
 एहवा अभिमांनी अविनीत तेहने रे,
 कोइ प्रत्यनीक ओगुण बोलें गुर तणा रे,
 तो उत्तर पडउत्तर न दे तेहने रे,
 प्रत्यनीक ओगुण बोलें तेहनी रे,
 तो अविनीत एकठ करे उण सूं घणी रे,
 वले करें अभिमांनी गुर सूं वरोवरी रे,
 ओ जद तद टोलां मे आछो नही रे,
 ओ खिण मांहे रंग विरंग करतों थकों रे,
 जव गूंथे अग्यांनी कूडा गूंथणा रे,
 जो अविनीत ने अविनीत भेला हुवे रे,
 क्रोध रे वस गुर री करें आसातना रे,
 जो अविनीत अविनीत सूं एकठ करें रे,
 त्यारे क्रोध अहंकार ने लीलपणो घणो रे,
 उणने छोटा ने छादे चलावण तणी रे,
 वडा रे पिण छादे चाल सके नही रे,
 पुस्तक पाना वसतर नें पातरा रे,
 गुर ओर साधां ने देता देख नें रे,
 जव करे मांहोमां खेदो ईसकों रे,
 तिण जनम विगाड्यो करे कदागरो रे,
 एहवा अभिमांनी नें अविनीति री रे,
 उणरा लपण परिणाम कह्या छे पाडुआ रे,

प्रवांसा जव कीरति बोलें लोग रे ।
 उणरें हरष घटें नें वघें सोग रे ॥ २२ ॥
 तो लोकां आगें बोलें विपरीत रे ।
 कहे हूं तत्व ओलखाउं रूडी रीत रे ॥ २३ ॥
 एहवी जणावे ऊंधी रेस रे ।
 तिण छोड्यो छे सतगुर नों आदेस रे ॥ २४ ॥
 ओ गुण सुणे तो हरषत थाय रे ।
 ओलखाऊं भव जीवां नें इण न्याय रे ॥ २५ ॥
 अविनीत गुर द्रोही पासें आय रे ।
 अभितर में मन रलियायत थाय रे ॥ २६ ॥
 जो आवे उणरी पूरी परतीत रे ।
 ओ गुर रा ओगुण बोलें विपरीत रे ॥ २७ ॥
 तिणरे प्रबल अविनीं नें अभिमान रे ।
 ज्यूं विगड्यो विगाडे सडियो पांन रे ॥ २८ ॥
 वले गुर सूं पिण जाए खिण मे रूस रे ।
 ओर अविनीत सूं मिलवा री मनहूस रे ॥ २९ ॥
 तो मिल मिल करें अग्यांनी गूम रे ।
 पिण आपो नहीं खोजे मूढ अबूम रे ॥ ३० ॥
 ते पिण थोडा में विखर जाय रे ।
 ते तो साधां में केम खटाय रे ॥ ३१ ॥
 ते पिण अकल नही घट मांय रे ।
 तिण अविनीत रा दुख मांहे दिन जाय रे ॥ ३२ ॥
 इत्यादिक साधु रा उपधि अनेक रे ।
 तो गुर सूं पिण राखे मूरख घेख रे ॥ ३३ ॥
 वले वांछे उत्तम साधां री घात रे ।
 करें मांहोमां मन भांगण री वात रे ॥ ३४ ॥
 करें भोला भारी कर्मा परतीत रे ।
 कोइ चतुर अटकलसी तिणरी रीत रे ॥ ३५ ॥



ढाल : २

दुहा

टोलां माहें रहिवा री आसा नहीं, क्रीवी अविनीत जाणें एम ।
 तिण सूं छानें छानें लोकां कर्नें, बोले थावरिया जेंम ॥ १ ॥
 गर्भवती नें कर्हें डाकोत रो, थारें होसी पुत्र अनूप ।
 पाडोसण ने कर्हें होसी डीकरी, ते पिण अतंत करूप ॥ २ ॥
 गुर भगता श्रावक श्रावका कर्नें, गुर रा गुण बोले तांम ।
 आपो वश हुवो जाणें तिण कर्नें, ओगुण बोलें तिण ठांम ॥ ३ ॥
 थावरिया डाकोत ज्यूं, बोलें अनेक विध कूर ।
 इह लोक तणो अरथी घणो, वले मानें आपण पो सूर ॥ ४ ॥
 कर्नें रहे तिण साधु तणो, वर बुद्धी ज्यूं जाण ।
 खीटोरखेडाइ करें घणी, पग पग तांणा तांण ॥ ५ ॥
 कलहगारा अभिमांनी अविनीत नें, निषेधो सूतर मांय ।
 तिणनें माठी माठी दीधीं ओपमा, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[रावण दिगजय चालियो]

कुह्या कानां री कूतरी, तिणरे भरु कीडा राव लोही रे ।
 सगले ठांम सूं काठें हुड हुड करें, घर में आवण न दे कोइ रे ।
 घिग घिग अविनीत आतमा* ॥ १ ॥
 कुत्ती विगाडे रमणीक आंगणो, न्हांखे कीडा राव ने लोही रे ।
 वास दुरगंध आवे अति बुरी, तिणनें धुर धुर करें सर्व कोइ रे ॥ घि० २ ॥
 जेहवी कुह्या कानां री कूतरी, तेहवा अविनीत नें अभिमांनी रे ।
 तिणरो पाडुओ शील ने मुख अरी, तिण सूं सगलाइ दे जाए कानी रे ॥ ३ ॥
 अविनीत रा मुख मां सूं नीकलें, ते तों कुवचन कीडा सम जाणो रे ।
 रमणीक आंगणा ज्यूं सुध साध नें, पाप लगवें क्रोध उठाणो रे ॥ ४ ॥
 धिर करण माहें राखे तेहनें, छिद्र ग्रहे हुवे द्रोही रे ।
 तिणनें कुह्या काना री कूतरी ज्यूं, गण बारे काठें सर्व कोइ रे ॥ ५ ॥
 कण सहित कुंडो छोड नें, भिष्टो भखे भंडसूरो रे ।
 तिण भंडसूरा री ओपमा, अविनीत नें दीधीं वीरो रे ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ते अविनो छे भिष्य सारिषो,
 विना धर्म सू अल्यो पडे,
 हरिया जव तो मिले खावा भणी,
 तिण सू भिडके मूढ मिरगलो,
 ते अविनीत छे मिरग सारिखो,
 अविना रूपणी जाल में पडे,
 तिण भडसूरा ने मिरग री,
 तिणरो विगड्यो इहलोक परलोक,
 गलियार गघो घोडो अविनीत ते,
 ज्यू अविनीत नें काम भलाविया,
 गलियार गघो घोडो मोल ले,
 ज्यू अविनीत ने दिख्या दीयां पछें,
 वुटकने गघेडे दुराचरी,
 आप छादे रह्यो उजाड मे,
 तिण अविनीत वलद ने तुरकिया,
 वुटकनां ने आण जोतख्यो,
 ज्यू अविनीत ने अविनीत मिल्यां,
 पछें वुटकना ने वलद ज्यूं,
 कुशिष्य रो चेलापणो,
 खिण खिण आय विनो करे,
 ते वेश्या मुतलव आपणे,
 पुरप रीभावे पारका,
 ज्यूं अविनीत वाजें विनो करें,
 जो स्वारथ देखे असीभतो,
 वेश्या सू घर वासो करे तिके,
 ज्यूं अविनीत ने कर्ने राखिया,
 वेश्या ने अविनीत री,
 त्यारो इहलोक परलोक विगडियो,
 अंगीकार न करे गुर वचन ने,
 मूडु सुकुमाल गुर छे खिम्यावंत,
 तिणने चूक पड्यां गुर सीख दे,
 वले कलहो करे उलटो पडे,

तिणने अविनीत आचर लीघो रे । -
 अनंत ससार आरे कीघो रे ॥ ७ ॥
 पीवा नें मिले पांणी ताह्यो रे ।
 पछे जाय पडे जाल माह्यो रे ॥ ८ ॥
 ते तों विनों करतो संक आणे रे ।
 ते पिण मूढ न जाणे रे ॥ ९ ॥
 ए ओपमा अविनीत नें छाजे रे ।
 तोही निरलज मूल न लाजें रे ॥ १० ॥
 कूट्यां विन आगो न चालें रे ।
 कह्यां नीठ नीठ पार घाले रे ॥ ११ ॥
 खाडेती घणो दुख पावे रे ।
 पग पग गुर पिछ्तावे रे ॥ १२ ॥
 तिण कीघी घणी खोटाई रे ।
 एक वलद ने कुवद सीखाई रे ॥ १३ ॥
 मार गाडा मे घाल्यो रे ।
 हिंवे जाये उतावल सू चाल्यो रे ॥ १४ ॥
 अविनीतपणो सिखावे रे ।
 दोनू जणा दुख पावे रे ॥ १५ ॥
 जेह्वो वेश्या नों घरवासो रे ।
 खिण खिण हुवे उदासो रे ॥ १६ ॥
 करें सोलें सिणगारो रे ।
 किणरी म जाणो नारो रे ॥ १७ ॥
 ते तो मुतलव रों छे यारो रे ।
 तो खिण माहे हुय जाय न्यारो रे ॥ १८ ॥
 घन खूटा पछे पिछ्तावे रे ।
 ते तों काम पड्या सीदावे रे ॥ १९ ॥
 या दोया री एकज रीतो रे ।
 वले भव होसी फजीतो रे ॥ २० ॥
 विरुओ बोले पाहें विरोधो रे ।
 उणरी संगत सू करे क्रोधो रे ॥ २१ ॥
 तो अविनीत ने द्वेष जागें रे ।
 पिण गुर री सीख न लागे रे ॥ २२ ॥

ते सीख छें कल्याण कारणी, ते अविनीत एहवी घारी रे ।
 मोनें मारे चपेटा नें टाकरां, देवें डंडादिक परिहारी रे ॥ २३ ॥
 बांध्यो कालारी पाखती गोरियो, वर्ण नावें पिण लखण आवे रे ।
 ज्यूं विनीत अविनीत कनें रहे, तो उ कांयक कुब्द सीखावें रे ॥ २४ ॥
 अभिमांनी अविनीत सूं, सुष विनों कीयो नही आवे रे ।
 कोइ विनीत गुर रो विनों करे, जब आप घणो सीदावे रे ॥ २५ ॥
 अविनीत दुखदाई केहवो, जेहवी सोक वरते दुखदाई रे ।
 ते छल छिद्र जोवतो रहे, खुद परिणाम रहें सदाई रे ॥ २६ ॥
 ज्यूं सोक रो सोक लोकां कनें, करें चावत नें बाछे घातो रे ।
 ज्यूं अविनीत वरते गुर थकी, आहिज रीत विख्यातो रे ॥ २७ ॥
 काई जात कुजात री उपनी, भरतार सूं लडें रीसावें रे ।
 पछें ताके कुवा नें बावडी, के ओर साथे उठ जावें रे ॥ २८ ॥
 ज्यूं अविनीत गुर सूं रूठो थकों, करें सलेखणा माडें मरणो रे ।
 ते मरणो अविनीत नें दोहिलो, तिणसूं ताके ओरां रो सरणो रे ॥ २९ ॥
 तिणरो संथारो ज्यूं कूवो बावडी, तिण सूं मरे तोहि बाल मरणो रे ।
 ओर साथे उठ जावे अस्त्री, ज्यूं ओर अविनीत रो ले सरणो रे ॥ ३० ॥
 सोर ठंडो लागें मुख में घालियां, अग्नि माहें घाल्यां हुवें तातो रे ।
 ज्यूं अविनीत नें सोर री ओपमां, सोर ज्यूं अलगो पडे जातो रे ॥ ३१ ॥
 आहार पांणी वस्त्रादिक आपियां, तो उ श्वान ज्यूं पूंछ हलावे रे ।
 करडो कहां उठे सोर अग्नि ज्यूं, गण छोडी एकल उठ जावे रे ॥ ३२ ॥
 सोर आप बले बालें ओर नें, पछें राख थइ उड जावे रे ।
 ज्यूं अविनीत आप ने परतणा, ग्यांनादिक गुण गमावें रे ॥ ३३ ॥
 सोर सोरीगर रा घर थकी, लोक बुधवंत रहें छें दूरा रे ।
 ज्यूं अविनीत सूं अलगा रहे, ते तों परमेश्वर रा पूरा रे ॥ ३४ ॥
 उत्तराघेन पेहलां अघेन सूं, अविनीत नें ओलखायो रे ।
 बले तिण अनुसारे निषेधियो, ते तों ले ले सूतर रो न्यायो रे ॥ ३५ ॥

ढाल : ३

दुहा

बले अविनीत नें ओलखावियो, दशविकालिक मांय ।
 निरणो कहूं नवमा अघेन सूं, ते सुणजो चित्तल्याय ॥ १ ॥
 अहंकारे करी क्रोधे करी, जात्यादिक मद तास ।
 बले पाच परमाद रे वस पढ्यो, विनों न सीखे गुर पास ॥ २ ॥
 या च्यार बोलां अविनीत रे, हुवें ग्यांनादिक रो विणास ।
 ज्यूं वंस फल विणासे वंस नें, ज्यूं अविने सू निजगुण नास ॥ ३ ॥
 कोइ अविनीत मद मूरख थको, गुर ने बालक जांण ।
 बले थोडा भण्या गुर तेहनो, अविनों करें मूढ अयांण ॥ ४ ॥
 जे गुर री हेला निंदा करें, तिण पडवजियों मिथ्यात ।
 तिणरे दरसन मोह उदे हुवां, संवली न सूंफे वात ॥ ५ ॥
 केइ बालक गुर बुधवत छे, केइ बालक अल्प बुद्धिताय ।
 पिण चारित पाले निरमलो, बले गुण घणा त्या मांय ॥ ६ ॥
 त्यारी हेला निंदा कीयां थका, सकल गुण खय थाय ।
 तिणने उपमा देने निषेधियो, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ७ ॥

ढाल

[निन्हव तेरासिया केडायत आलखो]

•ज्यूं अग्न में रुडी वस्त घाल्या थकां, तो बल जल भस्म होय जाय हो । भविक जन
 ज्यू अविनें रूपणी अग्न सूं गुण बले, ओगुण परगट थाय हो । भविक जन
 श्रीवीरकह्यो अविनीत ने अति बुरो* ॥ १ ॥
 कोइ बालक नाग जांणे नें खीजावियो, तो पामें तिण सू घात हो । भ० ।
 इण दृष्टान्ते गुर री हेला निंदा कीयां, पामे एकेन्द्रियादिक जात हो ॥ भ० श्री० २ ॥
 आसी विष सर्प अतत रुठा थकां, जीव घात सूं इघको न थाय हो ।
 पिण गुर रा पग अप्रसन हुआ थका, अबोध ने मुगत न जाय हो ॥ ३ ॥
 कोइ अग्नि प्रजलती नें चापे पग थकी, कोइ सर्प नें श्रोवे चढाण हो ।
 कोइ ताल पुट विष खाये जीववा भणी, ज्यूं गुर नी आसातना जांण हो ॥ ४ ॥
 कदा अग्नि न वाले मंत्रादिक जोग सूं, कदा कोप्यो इ सर्प न खाय हो ।
 कदा ताल पुट विष न मारें खाघां थका, पिण गुर हेलेणा सूं मुगत न जाय हो ॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

कोइ पर्वत बांछे सिर सूं फोडवो, कोइ सूतोइ सिंह जगय हो।
 कोइ भाला री अणी नें मारें छें टाकरां, ज्युं गुर नी आसातना थाय हो ॥ ६ ॥
 कदा पर्वत पिण फोडे कोइ मस्तकें, कदा कोप्योइ सिंह न खाय हो।
 कदा भालोइ न भेदे टाकर मारियां, पिण गुर हेल्णा सूं सुगत न जाय हो ॥ ७ ॥
 कोइ क्रोधी कुशिष्य अग्यांती अहंकार सूं, बोलें विगर विचारी वाण हो।
 ते मायावियो धुरत तांणीजसी संसार में, काष्ट बूहो जाये पाणी में ज्युं जाण हो ॥ ८ ॥
 अविनीत नें सीख दीये हेत जुगत सूं, तो उ क्रोध करे तिण वार हो।
 ते आवती लिखमी नें ठेले डांडे करी, ते तौं पूरों छें मूढ गिवार हो ॥ ९ ॥
 केइ हस्ती घोडा छें अविनीत आतमा, त्यांनं प्रतख दीसे छें दुख हो।
 तो अविनीत धर्माचारज तेहनों, ते किण विघ पामें सुख हो ॥ १० ॥
 बले अविनीत आतमा दुख पामें घणो, लोक माहें नरनार हो।
 ते विकलेंद्रिय सारिखा छें सुघ बुव वाहिरा, त्यांरों विगड्यो दीसैं आकार हो ॥ ११ ॥
 सै तौं डांडे शखकरी मारीजता, भूख तिरखा रा दुख सहैत हो।
 तो गुर रा अविनीत नें सुख किहां थकी, तिण छोडी छें जिण धर्म रीत हो ॥ १२ ॥
 बले अविनीत देव दाणव गंधव्वा, ते पिण खाये छें मार हो।
 तो गुर रा अविनीत नें मार अनंत गुणी, नरक निगोद ममार हो ॥ १३ ॥
 अविनीत ग्यांन दरसण चारित तणो, उ दिन दिन पामें विणांत हो।
 उणनं ऊंधोई सूमें नें ऊंधो अरथ करे, बले बुव नें अकल रो हुवें नास हो ॥ १४ ॥
 केइ विनीत अविनीत भण्या दोनूं गुर कनें, पिण विने सहैत भणियो विनीत हो।
 तिणनं सूघोई सूमे नें सूघो अरथ करे, भण भण ऊंधो पडे अविनीत हो ॥ १५ ॥
 ते विनीत अविनीत मारग जातां थकां, हथणी रो पग देखी तांम हो।
 अविनीत कहे हाथी गयो इण मारो, ओ बोरयो निसंक पणे आंम हो ॥ १६ ॥
 विनीत कहे हथणी पिण कांणी डानी आंख री, उपर राजा री राणी सहैत हो।
 बले पुत्र रतन छे तिणरी कूख में, विवरा सुघ बोरयो विनीत हो ॥ १७ ॥
 बले आगे गयां एक बाइ प्रसन्न पूछियो, ते ऊमी सरवर पाल हो।
 म्हारो पुत्र प्रदेश गयो ते मिलसी किण दिनं, जब अविनीत कहे कीयो उण काल हो ॥ १८ ॥
 हूं काटूं रे वाडूं जीमडली तांहरि, तु विह्वयो बोले केम रे दो भागी।
 तूं घसको क्यूं नांखे रे पापी एहवो, जब विनीत बोलें छें एम हो ॥ १९ ॥
 विनीत कहे पुत्र थारो घरे आवियो, आज मिलसी तोसूं निसंक हो।
 इणरो साच न माने ओ भूठ बोले घणो, इणरी जीम वेरण रो वंक हो ॥ २० ॥
 ए दोनई बोलों मे अविनीत भूठी पंढ्यो, साच उत्तरियो विनीत हो।
 जब अविनीत घेव धरयो गुर ऊमरें, कहे मोनं न भणायो रूडी रीत हो ॥ २१ ॥

एहवी ऊधी करें विचारणा,
 कहे मोनें न भणायो थे कूड कपट करी,
 अविनीत ने बोल्यो जाण बुरी तरें,
 निरणों करे संका काढी अविनीत री,
 इहलोक तणा गुर रा अविनीत री,
 तो घर्माचारज रा अविनीत री,
 नकटी बूटी कुलखणी नार ने,
 तिण विगडायल नें जोगी भखडादिक आदरे,
 नकटी तो आप सरिखो आवे मिल्यां,
 ते इधको न वाछे आपणपो खोजिया,
 नकटी सरिखो छे अविनीत कुलखणो,
 तिणनें आप सरिखो को एक आए मिले,
 नकटी तो जोवें जोगी भखडादिक,
 जो अशुभ उदे हुवें घणो अविनीत रे,
 कांदा ने सो वार पाणी सूं धोवियां,
 ज्यूं अविनीत ने गुर उपदेश दीये घणो,
 कांदा री तो वास धोया मुखरी पडे,
 जो छोडवे तो अविनीत अंवलो पडे घणो,
 कोइ गुर भक्ता छे सुविनीत आतमा,
 जो हेत देखें तिण ऊपर गुर तणो,
 विनीत ऊपर घणो हेत हुवें गुर तणो,
 जब ओगुण सूमे अणहंताइ गुर तणा,
 अविनीत जाणें विनीत मूंवा थकां,
 एहवा परिणामा घात वाछे सुविनीत री,
 वले ओषध भेषज आहार पाणी तणी,
 दुख ने असाता वाछें सुविनीत री,
 ओरां री अतराय असाता दुख चित्तव्यां,
 सितर कोडा कोड सागर त्यां लगे,
 ते तो जिहां जिहां उपजे तिहा तिहां दुख हुवें,
 अतराय अविनीत पणो छे एहवी,
 जो पाप उदे हुवे अविनीत रे इण भवे,
 वले गमतों न लागे इणरो बोलियो,

आए गुर सूं भगड्यो अविनीत रे ।
 वले बोलें घणो विपरीत रे ॥ २२ ॥
 तिण सू गुर पूछ्यो दोयाने विचार हो ।
 पिण उणरो तो उहिज आचार हो ॥ २३ ॥
 अकल विगड गई एम हो ।
 ऊधी अकल रो कहिवो केम हो ॥ २४ ॥
 तिणनें परहरी निज भरतार हो ।
 ते पिण जाए तिणहिज लार हो ॥ २५ ॥
 घणो हरष घरे मन पीत हो ।
 तिमहिज जाणो अविनीत हो ॥ २६ ॥
 तिण सूं निज गुर न घरे पीत हो ।
 तिणसूंई इधकों अविनीत हो ॥ २७ ॥
 ज्यूं अविनीत जोवे अजोग हो ।
 तो मिल जाए सरिखो संजोग हो ॥ २८ ॥
 तो ही न मिटें तिणरी वास हो ।
 पिण मूल न लागें पास हो ॥ २९ ॥
 निरफल छें अविनीत नें उपदेश हो ।
 उणरे दिन दिन इधक कलेश हो ॥ ३० ॥
 गुर छादे रो चालणहार हो ।
 तो अविनीत मुख दे विगड हो ॥ ३१ ॥
 तो अविनीत नें दुख हुवें साख्यात हो ।
 वले वाछे विनीत री घात हो ॥ ३२ ॥
 पछें म्हांरोईज हुसी आग हो ।
 तिण लीधो कुगति रो माग हो ॥ ३३ ॥
 ओ जाणे नें पाडे अन्तराय हो ।
 अविनीत नें ओलखो इण न्याय हो ॥ ३४ ॥
 तिणरे बंधे महा मोहणी कर्म हो ।
 नही पांमे जिणवर घर्म हो ॥ ३५ ॥
 उत्तकष्टो अनंतो काल हो ।
 कोइ बुधवंत देसी टाल हो ॥ ३६ ॥
 तो सगला ने लागे जहर समान हो ।
 आगें खुलसी दुखां री खान हो ॥ ३७ ॥

गुर बारा सूं आयां उठ ऊमो हुवें, पग पूंज नेमें सुविनीत हो ।
 अविनीत नें इतरो ही करणो दोहिलो, कदा करें तोही भूँडी रीत हो ॥ ३८ ॥
 पग पूंज वीयावच करणी अविनीत नें, ते तों कळण घणो छे काम हो ।
 ते काम पड्यां अविनीत टालो दीये, तिणरें प्रबल अविनो नें अभिमान हो ॥ ३९ ॥
 गुर भक्ता उपर द्वेष अविनीत रो, वले ईसको ने खेदो अतंत हो ।
 उणरा छिद्र जोवें छें उतारणा आसता, तिणरा चारित जाणें मतवंत हो ॥ ४० ॥
 वले करें विनीत सूं मूढ बरोबरी, पिण विनो कीयो मूल न जाय हो ।
 वले अवगुण न सूर्में अविनीत ने आपरा, तिण सूं दिन दिन दुखियो थाय हो ॥ ४१ ॥

ढलल : ॡ

दुहल

छु डुललं करु सहुत नुं, करणु गण अडुकरुी ऑणु ।
तु तु करुं डुधुतर गण तणुी, तु गुण रतनुल री खलणु ॥ १ ॥
कलहुगलरुी अडुडुडुनुी अडुनुीत नु, ऑु करु अगुवलणु ।
तु डुडु डुवलखुरु गण डुडुडु, करु सलडु री हलणु ॥ २ ॥
कुडुल नु लडुलडु नुं दुरुल करुं, वलु वलंछु कुडुल री घलत ।
गुणवंत सलडुलं रल गुण सुणु, तु डुडुण सहुडुल न ऑलत ॥ ३ ॥
उ अलडुी सलहुडुी वलत करुं, उठलवुं डुलहुडुलं डुष ।
करुं डुलहुडुलं लुडुलवणुी, तु अडुनुीत लुऑुं डुख ॥ ॡ ॥
डुसडुल अऑुग अडुनुीत सुं, कुडु डु करु अगुडुलनुी डुडुीत ।
तु डुडुण घणु डुडुडुतलवसुी, हुीसुी घणु डु डुऑुीत ॥ ॡ ॥
अगुं अडुनुीत हुवल घणल, तुडुलरुी सुतुतर डुं छुं नलडु ।
डुण अनुसलरुं अवर नुं, अुलखु लुऑुु तलडु ॥ ॡ ॥

ढलल

[डुीऑु करु सुीतल सतुी रल ललल]

घनलवु सुठ सुत ऑुडुलरु डुहु रल, उडुडुडुल नुं डुडुगवतुी ऑणु रल । सुगण नर* ।
रखुडुल नुं वलु रुहुणुी रल ललल, तुडुलरुी सुठ कुीधुी छु डुडुडुऑुलणु रल । सुगण नर ।
डुलव सुणुु अडुनुीत रल रल ललल* ॥ १ ॥
डुलंऑु डुलंऑु सलल दलणल सुंडु नुं रल, डुलंगुडुल कुतुु अक कलल रल । सु० ।
उडुडुडुल कुण उऑुललु दुीडुल रल, डुडुगवतुी गलल गडुी सलल रल ॥ सु० डुल० २ ॥
रखुडुल ऑुतन कर रलखुडुल रल, रुहुणुी कुीधुी डुधुतर डुडुडुडु रल ।
तु तुु सुसुरु डुलंगुडुल सुंडु दुीडुल रल ललल, धुरुलुी दुुडुलं रुु वुगडुडुु नुरु रल ॥ ३ ॥
सुठ ऑुडुलरुं नुं सलऑु डुलुलडु नुं रल, डुलरुल नुडुलतुील उडुल अलणु रल ।
सुठ सुंडुुु कुलडु ऑुडुलरुं डुणुी रल, डुलरुल गुण डुडुलरुलडु ऑणु रल ॥ ॡ ॥
गुडुवर वलसुीदुु उडुडुडुल डुणुी रल, डुडुगवतुी रसुुडुदुलरु रल ।
कुुठलरु सुंडुुु रलखुडुल डुणुी रल ललल, रुहुणुी नुं सगलुु घर डुलरु रल ॥ ॡ ॥
उडुडुडुल डुडुगवतुी दुुखणुी थडुी रल, घरतुी डुन डुलहु रल ।
तु हुलल नुंदल डुलडुी लुक डु रल ललल, डुडुणु सुसुरुु हुवु नुलरुदुुष रल ॥ ॡ ॥

*डुहु अलंकडुी डुडुतुुक गलथल कु अनुत डुं हु ।

ज्युं गुर गण सूपे सुविनीत नें रे, ते छे रखिया नें रोहिणी समान रे।
 जब अविनीत दुख पावें घणो रे लाल, उभिया भोगवती ज्युं जाण रे ॥ ७ ॥
 उभिया नें भोगवती दुखणी हुई रे, ते तों एकण भव मभार रे।
 पिण अविनीत दुखियो हुसी घणो रे, तिणरो कहितां नावें पार रे ॥ ८ ॥
 उभिया भोगवती नें घर सूपियां रे, ते करें खजानो खुराब रे।
 ज्युं अविनीत नें गण सूपियां रे, तो जाए टोलां री आब रे ॥ ९ ॥
 जिण टोलां में अविनीत छे रे, तिणसूं आछो कदेय म जाण रे।
 तिणरी खप करने ठाम आणजो रे, नहीं तो परिहरो चतुर सुजाण रे ॥ १० ॥
 किण ही गाय दीवीं च्यार ब्राह्मणां भणी रे, ते वारे वारे दूहे ताय रे।
 तिणतें चारे न नीरे लोभी थकां रे, म्हारे काले न दूजें आ गाय रे ॥ ११ ॥
 त्यारें मांहोमां लागो इसको रे, तिण सूं दुखे दुखे मूड गाय रे।
 ते फिट फिट हुवा ब्राह्मण लोक में रे, ते दिटंत अविनीत नें ओल्लाय रे ॥ १२ ॥
 गाय सारिखा आचारज मोटकां रे, दूध सारिखो .दे ग्यान अमोल रे।
 कुशिष्य मिल्या तो ब्राह्मण सारिखा रे, ते ग्यान तो लेवें दिल खोल रे ॥ १३ ॥
 आहार पांणी आदि वीयाक्च तणी रे, ए न करें सार संमाल रे।
 एहवा अविनीतां रे . वस गुर पड्या रे, त्यां पिण दुखे दुखे कीयो काल रे ॥ १४ ॥
 ब्राह्मण तो फिट फिट हुवा घणां रे, ते तों एकण भव मभार रे।
 तो गुर रा अविनीत रो कहिवो किसूं रे, तिणरो भव भव हुसी विगाड रे ॥ १५ ॥
 ज्यारें सिखां रो लोभ लालच नहीं रे, ते तों दूर तजें अविनीत रे।
 ते गरग आचारज सारिखा रे, गया जमारो जीत रे ॥ १६ ॥
 गरग आचारज नें मिल्या रे, पांचसो शिष्य अविनीत रे।
 ते गुर वचनें जलटा पड्या रे, हिवें सुणजों त्यारी रीत रे ॥ १७ ॥
 गुर नें रोग उपना थकां रे, पडियो ओषधादिक रो काम रे।
 अविनीत मेल्या जाये नहीं रे, ते तों जुवा जुवा बोलें आम रे ॥ १८ ॥
 एक कहें भोंनं नहीं ओल्लखो रे, बीजों कहें न देसी मोय रे।
 तीजों कहें घरे हुसी नहीं रे, जोयो कहे मेलो वें ओर जोय रे ॥ १९ ॥
 केइ सुण सुण उत्तर दे नहीं रे, मूनं सामें कपट सहीत रे।
 केइ अलगा जाय बेसैं गुर थकी रे, कार्य करवा सूं डरिया अविनीत रे ॥ २० ॥
 केइ राय बेठियां री परें मानता रे, केइ बतलायां मुख दे विगाड रे।
 एहवा अविनीतां उमरें रे, गुर खेद पाम्या तिणवार रे ॥ २१ ॥
 म्हे दिख्या दे सूतर भणाविया रे, भात पांणी सूं पोख्या अविनीत रे।
 मारे काम न आया दिन आजरे रे लाल, यां लीवीं पांखियां वाली रीत रे ॥ २२ ॥

पंखी इंडा पाल मोटा करें रे, पछें उड जाये आया पांख रे ।
 ज्यू ए अविनीत भण भण विगडिया रे, म्हारी मूल न माने सांक रे ॥ २३ ॥
 सीदावें छें म्हारी आतमा रे, यां अविनीता रे परसंग रे ।
 इहलोक परलोक मांहरो रे, रखे विगड जाये यारे सग रे ॥ २४ ॥
 एहवा शिष्य छे माहरा रे, गलियार गघा ज्यूं अविनीत रे ।
 त्यानें दुर तजें अल्लो रहे रे, सुघ संयम पालूं रूडी रीत रे ॥ २५ ॥
 छोड्या पाचसो अविनीत ने रे, आण्यो मन संतोष रे ।
 करणी करे कर्म काट ने रे, पहुता अविचल मोख रे ॥ २६ ॥
 ज्यूं अविनीत ने छोड्या थकां रे, ग्यानादिक गुण वधता जांण रे ।
 मिट जोय कलेश कदागरो रे लाल, त्यानें नेडी हुसी निरवाण रे ॥ २७ ॥
 केइ अविनीत नरके गया रे, केइ जाय पड्या छे निगोद रे ।
 आप छादे ऊधी अकल सू रे लाल, गमाय ने समकित्त बोध रे ॥ २८ ॥
 अविनीत मे अवगुण घणा रे, ते तो पूरा कह्या न जाय रे ।
 पिण इण अनुसारे अनेक छें रे, ते वुचवंत देसी बताय रे ॥ २९ ॥
 अविनीत रा भाव सांभले रे, घणो हरख पामे नरनार ।
 केइ भारी करमा उलटा पडे रे, त्यारे घट माहे घोर अघार रे ॥ ३० ॥

ढलल : ॡ

दुहल

केइ अविनीत एकल फिरें, बिटल हुआं बेकार।
 ते धीठल निरलज लोक में, त्पारो विगड गयो जमवार ॥ १ ॥
 तिण एकल सूं अविनीत बुरो, साघां रा गण माय।
 ते स्वामद्रोही सेवग जिसो, न डरें करतों अन्याय ॥ २ ॥
 दुमनों चाकर दुसमण सारिखो, ते प्रसिद्ध लोक वदीत।
 ज्यूं छिद्री थकों टोलां माहें रहें, ते आछो नही अविनीत ॥ ३ ॥
 ओ भेलो रहे कपटी थकों, ते करें घणी नरमाय।
 छल बल खेलें चोर ज्यूं, करें बूडण रो उपाय ॥ ॡ ॥
 तिणरी चरचा उपदेश छेअति बुरो, ते फाडा तोडा रें कांम।
 अभिमांनी अविनीत री रीत नें, कहि बताऊं तांम ॥ ॡ ॥

ढलल

[जिण धर्म अराधीये र]

अविनीत समभावे तेहनें ए, आपरो कर राखे तांम।
 ओरां सूं करें ओपरो रे, तिणरो आपो वस नही ठांम के।
 अविनीत एहवा ए* ॥ १ ॥
 ओर साघां रा काहें गृहस्थ खूंचणा ए, तिण सूं बात करें दिल खोल।
 अंतर में जाणें आपरो ए, तिणनें सीखावे चरचा बोल के ॥ अ० २ ॥
 कोइ ओर साघां रा गुण करें ए, तो अविनीत सूं सह्या रे न जाय।
 तिण सूं इस भाल नें ए, तिणनें ग्यांन चरचा न सीखाय के ॥ ३ ॥
 कोइ सतगुर आगें समभियो ए, सतगुर री घणी छें परतीत।
 तिणरेई ओगुण नीपजें ए, जो आय मिलें अविनीत ॥ ॡ ॥
 तिणनें आडा टेडा बोल पूछ नें ए, तिणरी समकित दे रे उडाय।
 आओ परगट करें ए, कोइ चरचा बोल सीखाय ॥ ॡ ॥
 कोइ चरचा बोल सीखाय नें ए, इम बोलें अविनीत।
 हिवें हुवा थे समकती ए, तिणरे मन माहें छोटी नीत ॥ ६ ॥
 ते तों गुर श्रद्धावण आपनें ए, मांन बडाइ काज।
 करें आपण थापना ए, तिण रा किण विघ सीमें काज ॥ ७ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

तिणनें आप तणो करें रागियो ए, शंका ओरां री घाल ।
 अभिमांनी अविनीत री ए, एहवी छे उंधी चाल ॥ ८ ॥
 कोइ गुर गुर भायां आगे समभियो ए, तिण व्रत लीया तिण पास ।
 बांदें त्पारों नाम ले ए, जब अविनीत पामे उदास ॥ ९ ॥
 अविनीत रो नाम लेवां दे नही ए, तो तिण सूं राखे घेष ।
 भूखो घणो नाम रो ए, तिण पहिर विगाड्यो भेष ॥ १० ॥
 कोइ विनीत आगे व्रत आदरे ए, तो विनीत बोले एम ।
 म्हारें सो गुर थाहरे रे, हिवें अविनीत बोले केम ॥ ११ ॥
 जो अविनीत आगे व्रत आदरे ए, तो उ न लें गुर रो नाम ।
 पोतेंइ गुर ठेहरे ए, ते पिण मान बडाई काम ॥ १२ ॥
 विनीत सीखावे करणी वंदणा ए, तो घुर सूं ले गुर रो नाम ।
 अविनीत सीखावता ए, ते तो आपरो नाम ले ताम ॥ १३ ॥
 विनीत तणा समभाविया ए, साल दाल ज्यूं भेला होय जाय ।
 अविनीत रा समभाविया ए, ते कोकला ज्यूं कानी थाय ॥ १४ ॥
 समभाया विनीत अविनीत रा ए, त्यामे फेर कितोयक होय ।
 ज्यूं तावडो नें छाहडी ए, इतरो अन्तर जोय ॥ १५ ॥
 कोइ अविनीत आगे समभियो ए, पिण ग्यान रो होय गराग ।
 को एक हुवे समकती ए, नही लागो अविनीत रो दाग ॥ १६ ॥
 कोइ कठ कलाघर साथ जी ए, ते तो करें घणो उपगार ।
 हेत ने जुगत करी ए, समभावे नर नार ।
 उपगारी साथ एहवा ए ॥ १७ ॥
 केया ने साथ पणो अदरावता ए, केयां ने श्रावक व्रत दराय ।
 केया ने करे समकती ए, नवतत्त्व निरणो कराय ॥ १८ ॥
 केया ने जिण धर्म सूं सनमुख करें ए, तिणसू दान देवे निरदोख ।
 ससार परित्त करे ए, तिणसू पामे अविचल मोख ॥ १९ ॥
 केइ दयासत सील आदरे ए, केइ तप कर करम दे तोड ।
 ते पिण सुण्यां सांभल्यां ए, वले पामे आणद कोड ॥ २० ॥
 केइ सुण सुण नें सुलभ पडें ए, घणो हरष पामे भवि जीव ।
 उपदेश सुणियां थका ए, घणा जीव दे मुगत री नीव ॥ २१ ॥
 ते तों जिण मारग करें दीपतो ए, धर्म कथा रे संजोग ।
 महिमा फेलें अतिघणी ए, त्यांनं धन घन करें बहुलोग ॥ २२ ॥
 अविनीत सुणे तो मुंह मचकोड नें ए, करें हासो मसकरी ठेक ।
 कहे म्हे सगला देखिया ए, समकती न दीठों एक ॥ २३ ॥

पेला रा गुण सहिवा दोहिला ए, तिण सूं ऊंधो बोलें अविनीत ।
 करें घणी इरखा ए, तिणमें होसी घणी रे कुपीत ॥ २४ ॥
 तिणनें चतुर विचक्षण अटकले ए, ए गुर भायां रो अविनीत ।
 ओलख नें परहरे ए, राखें सतगुर री परतीत ॥ २५ ॥
 कोइ अविनीत आगें समभियो ए, जो उ राखें उणरी परतीत ।
 ओरां री नही आसता ए, तो उणरी पिण आहिज रीत ॥ २६ ॥
 अविनीत समभायो तेहनें ए, जो उ माने अविनीत री वात ।
 ओरां सूं रहे ओपरो ए, तिणरे मांहे रह्यो मिथ्यात ॥ २७ ॥
 अविनीत नें अविनीत श्रावक मिले ए, ते पामें घणो मन हरखें ।
 ज्यूं डाकण राजी हुवे ए, चढवा नें मिलिया जरख ॥ २८ ॥
 डाकण जरख चढी फिरें ए, ज्यूं अविनीत अविनीत रे साथ ।
 डाकण मारें मिनष नें ए, ज्यूं अे करें समकत री घात ॥ २९ ॥
 डाकण चोर राजा तणी ए, तिणनें राजा मारें तो एक बार ।
 अविनीत चोर जिण तणो ए, ते भव भव में खासी मार ॥ ३० ॥
 केइ काछ लपटी कुशिलिया ए, ते न गिणें जात कुजात ।
 गृद्धि घणा रूप रा ए, नीच रे घरे जाये साख्यात ॥ ३१ ॥
 ते फिट फिट हुवे सागली न्यात में ए, वले राजा लेवे डंड ।
 कुजरबी बणे घणी ए, हुवें देश विदेश में मंड ॥ ३२ ॥
 ए काछ लपटी री ओपमां ए, अविनीत नें दीधी इम जाण ।
 गिरधी घणो खांण रो ए, तिणसूं विकलां नें मूंडे ताण ॥ ३३ ॥
 ओर आगे विकलाइ कर सकें नही ए, तिणसूं चेला री भूख अतंत ।
 सके नहीं दोप सूं ए, ते कुण कुण करें विरतंत ॥ ३४ ॥
 पेला रो शिष्य फटावतो ए, ओ न करे जेज लिंगार ।
 को एक आए मिले ए, तो लेजाअे धाडोपाड ॥ ३५ ॥
 पेला रो शिष्य फाड आपणो करे ए, तिणने भारी प्रायश्चित्त आय ।
 ते पिण सूमें नहीं ए, तिणरे लग रहि चेला री चाय ॥ ३६ ॥
 कोइ अजोग अविनीत गिरधी घणो ए, तिणरी परतीत नही रे लिंगार ।
 इसडो इ शिष्य सूपिथां ए, करवा नें होय जाय त्यार ॥ ३७ ॥
 विकल नें शिष्य पणे आदरे ए, ते तों अभिमांनी के अविनीत ।
 कें गिरधी छें आहार रो ए, त्यांरी किम आवें परतीत ॥ ३८ ॥
 उणनें विकल अजोग जाणया पछें ए, तिणनें चेलो करें मतहीण ।
 निरलज सके नहीं ए, ते तों करम बांघण परवीण ॥ ३९ ॥

ज्यारे चेला री तृष्णा अति घणी ए, त्यांरा अधिर रहे परिणाम ।
चरित ने आराधणो ए, तिणरो छे काठो काम ॥ ४० ॥



ढाल : ६

दुहा

ए अविनीत साध ओलखावियो, इमहिज साधवी जाण ।
 वले श्रावक श्रावका तणी, तिमहिज करजो पिछाण ॥ १ ॥
 केयक गृहस्थ अजोग छें, श्रावक श्रावका नांम घराय ।
 ते अविनीत घणा साधां तणा, संके नहीं करता अन्याय ॥ २ ॥
 त्यांनं विनो धर्म सूमें नहीं, प्रबल अविनों नें अभिमान ।
 दगाबाजी करें जिण धर्म में, वले कूड कपट री खान ॥ ३ ॥
 ते करें साधां री आसातना, वले बोळें घणा विपरीत ।
 त्यांरी ओगुण ग्राही छे आतमा, अतिही घणा अविनीत ॥ ४ ॥
 एहवा अविनीता में अवगुण घणां, कहितां नावें पार ।
 पिण थोडा सा परगट कळं, ते सुणजो आंख उघाड ॥ ५ ॥

ढाल

[मम करो काया माया कारमी]

केइ अविनीत श्रावक श्रावका, संके नही बांधता कर्म रे ।
 करें धर्म ठिकाणे कदागरो, नहीं उल्लख्यो विने मूल धर्म रे ।
 केइ अविनीत श्रावक एहवा ॥ १ ॥
 ते साध साधव्यां री निंदा करे, अवगुण बोले विपरीत रे ।
 ते सूंस कराय ग्रहस्थ नें, त्यांरी भोला मांनं परतीत रे ॥ २ ॥
 ते सूंस री संका रो मारियो, किण विघ काढें निकाल रे ।
 जो प्रतीत राखे एहवा अजोग री, ते बांधे अशुभ कर्म जाल रे ॥ ३ ॥
 उंधा सूंस दीया अविनीत रा, ते सरध्यां हुवे समकित नास रे ।
 एहवा दुपच खांणा दूरा करें, आलोवण करें गुर पास रे ॥ ४ ॥
 उण कही ते सगली कहे गुर कनें, गोपवी नही राखे लिंगार रे ।
 नही कह्यां तो सल्य माहें रहें, ते मतवंत करज्यो विचार रे ॥ ५ ॥
 बात अविनीत री मानियां, उणरे कुण कुण अवगुण थाय रे ।
 उतर जाये साधां री आसता, सुघ बंदणा पिण कीधी न जाय रे ॥ ६ ॥
 दांन पिण देणी नावें भाव सूं, असणादिक च्यार आहार रे ।
 संका सहित बेंहरावियां, किम करें परित संसार रे ॥ ७ ॥

हुलास न आवे साधु देखियां, अनेक गुणां री पडे हांण रे ।
दग्ध बीज दावा रीगा हुवे, तिणरी संगत रा एकल जाण रे ॥ ८ ॥
जो उ सूंस भागण सूं डरतो थको, नही काढे तिणरो निकाल रे ।
तो उ भमण करे इण ससार भे, ज्युं अरट तणी घड माल रे ॥ ९ ॥
सूस दराय ने अवगुण कहे, काढण न दे निकाल रे ।
एहवा अविनीत अजोग ने, बुधवंत जाण देसी टाल रे ॥ १० ॥
कोइ अविनीत हुवे साधु साधवी, तिण सूं मिलें मूढ जाय रे ।
ओ अणहूता अवगुण कहे तिके, धार राखे मन मांय रे ॥ ११ ॥
ते गुर कने आय कहे नही, अविनीत रो न करे उवाड रे ।
वले ओगुण बोलावण कारणे, तिण जनम कीयो छें खुवार रे ॥ १२ ॥
उ साच माने अविनीत रो, वले तिणरी करें पखपात रे ।
सुघ साधां री निंदा करतो फिरें, तिणरे न मिट्यो मूल मिथ्यात रे ॥ १३ ॥
अविनीत नरमाइ करे उण कने, वले बोले मीठा मीठा वेण रे ।
करे खुसामदी तेहनी, रोवे घणो भर भर नेण रे ॥ १४ ॥
पछें अवगुण बोले ओ गुर तणा, केइ एहवा छे दुष्ट अविनीत रे ।
गरीब होय आपो छिपाय दे, तिणरी मूरख मानें परतीत रे ॥ १५ ॥
जो साच माने अविनीत रो, घणा री न मानें परतीत रे ।
पखपात करे अविनीत री, ते चिहुंगति में होसी फजीत रे ॥ १६ ॥
अविनीत नरमाइ करे घणी, तिणरी वात राखे सर्व दाव रे ।
तिण नें साघ लेखव ने विनो करें, तिणरी पिण जावसी आव रे ॥ १७ ॥
आप सूं आय मिले तेहनां, ओगुण दे सर्व ढांक रे ।
रहितो जाणे आप सूं ओपरो, तो उणने आल देतो नांणे सांक रे ॥ १८ ॥
ए राग ने घेष रो घालियो, कर रह्यो कूडी पखपात रे ।
एहवा अजोग श्रावक तणी, कोइ मूरख मानसी वात रे ॥ १९ ॥
एहवा जनम कदागरी अजोग सूं, गूज्झ करे मतिहीण रे ।
कर्म बंधे उणरी सगत कीया, तिणनें दूर तजे परबीण रे ॥ २० ॥
कोइ अविनीत अजोग साधु तिण कनें, लीया श्रावक त्रत पचखांण रे ।
वले सीख्यो सभाय बोल थोकडा, पिण तिणरी न कीधी पिच्छाण रे ॥ २१ ॥
जो उ निंदा करे सुघ साध री, तो उ मांन लेवे ततकाल रे ।
उणने श्रद्धे सत्यवादी भोलो थको, वले संकतो नहीं काढे निकाल रे ॥ २२ ॥
अविनीत ओगुण कहे ओर ना, जो जाण राखे घट मांय रे ।
पिण कोइक उणरा ओगुण कहे, तो कह दे उ तिण कने जाय रे ॥ २३ ॥

ते भणियां नें वरत लीयां तणी, ए कूडी करे पखपात रे
 ओ आछो जांणे छे अविनीत नें, ते तो निश्चेंई बूडो राख्यात रे ॥ २४ ॥
 केइ एहवा छे श्रावक श्रावका, वले लड पडे काढ्या नेकाल रे।
 ते तों राग नें घेष मांहे कल्या, ते निफल गमावे छे फाल रे ॥ २५ ॥
 वले गृहस्थावास मांहे थकां, उणरे स्वारथ पूगो छ एक रे।
 तिणनें साचो करवा भणी, तांण करें मूढ अनेक रे ॥ २६ ॥
 एक स्वारथ पूगो थो आपणो, तिण सूं डस राखे मन माय रे।
 तिण साचा नें भूठो करवा भणी, करे ओ अनेक उपाय रे ॥ २७ ॥
 उणरा गुण कीरत जवा सांभले, तो लागें अभितर लाय रे।
 तिणरा अणहुंता ओगुण परगट करें, गुण गुण दे रे उडाय रे ॥ २८ ॥
 वले छल छिद्र जोवतो रडे, सदा रहे दुष्ट परिणाम रे।
 उणरी आसता उतारण खप करे, यूंही जनम गमावें बेकाम रे ॥ २९ ॥
 ए दोष आलीयां विनां मरे, ते मरणो छे सत्य सहीत रे।
 पछें पाप उदे हुवां तेहनें, भव भव होसी कुपीत रे ॥ ३० ॥
 जिण उपर घेष हुवे तेहनों, छिद्र जोवें दिन रात रे।
 उणरा दोष अणहुंताइ कहे गुर कनें, करें मन भांगण तणी वात रे ॥ ३१ ॥
 साधु कहे दोष लागो नहीं, ओ कहे लागो दोष साख्यात रे।
 डंड दो एहनें निसंक सूं, तिणमें कूड नहीं तिलमात रे ॥ ३२ ॥
 साधु कहे डंड लेवूं नहीं, जब गुर बोल्या छे आम रे।
 डंड ले नें संका काढो एहनीं, ते तों भगडो भांजण काम रे ॥ ३३ ॥
 उणनें डंड दीयो गुर समभाय नें, वले केतब न राख्यो लिगार रे।
 डंड दिरायो तिणनें कहे, ओर नें नहीं कहिणो लिगार रे ॥ ३४ ॥
 जो कह्यो तो तोनें भूठो जांण र्खां, वले जांण लेख्यां थारो घेख रे।
 एहवी कीधीं छें थापना, ते सर्व ग्यांनी रह्या देख रे ॥ ३५ ॥
 तिण अंतर द्वेष हुवे तेहनों, पिण सूं कख्यां विण केम रहिवाय रे।
 उ कहे छानें छानें लोकां कनें, सूंस दराय दराय रे ॥ ३६ ॥
 पछें आल देवें मन मानियो, वले बोलें घणो विपरीत रे।
 वेंर जाग्यो तिण उपरें, तिणरी किण विघ आवे परतीत रे ॥ ३७ ॥
 उणरी वात चालें तो पडती कहे, घणी निंदा करे परपूठ रे।
 उणनें चतुर हुंता त्यां जांणें लीयो, ओ द्वेष वस बोले छे मूठ रे ॥ ३८ ॥
 छद्मस्थ एहनांण सूं अटकल्यो, ओ अजोग घणो अविनीत रे।
 कदा साच कहे पिण तेहनीं, पूरी नावें परतीत रे ॥ ३९ ॥

उणरो वचन न माने तिण ऊपरे, क्रोध करे मूंह दे विगाड रे।
 उण लारे बोल्या हरपित हुवे, तो घिग घिग तिणरो जमवार रे ॥ ४० ॥
 वले आपो जणावे भूठो थकों, वले भूठो दरायो छे डड रे।
 एहुवा अविनीत अजोग छे, ते चिहुंगति मे होसी भंड रे ॥ ४१ ॥

ढाल : ७

डुहा

कूडा कूडा आल सांघा रे दीयां, महामोहणी करम बंधाय ।
 समकित बोध गमाय नें, पडे नरक निगोद में जाय ॥ १ ॥
 तिहां छेदन भेदन पामें घणी, कहितां नावें पार ।
 उतक्रष्टा अनंता भव करे, तिहां खावें अनंती मार ॥ २ ॥
 केइ खावें श्रावक घर तणो, केयक मागे खाय ।
 पिण अविनीत पणो छूटे नही, तो गरज सरे नही कांय ॥ ३ ॥
 केइ पेढी जमावे आपणी, मांगे नें ल्यावे आहार ।
 त्यां सूं विनों करणो छे दोहिलो, छोडे नें गरव अहंकार ॥ ४ ॥
 पिण सगला नही छे सारिसा, सुविनीत ने अविनीत ।
 त्यांनैं जथातथ परगट कहूं, त्यांरी सुणजो भवियण रीत ॥ ५ ॥

ढाल

[चन्द्रगुप्त राजा सुणे]

ज्यारे मांगे ने खावणो पारको, त्यारे श्रद्धा रो कठिन छे कामो रे ।
 वले मान बडाइ रा भूखा थकां, त्यांनैं न गर्में साधां रा गुण ग्रामो रे ।
 केइ अविनीत श्रावक एहवा ॥ १ ॥
 जो लोक न देवे खावा पहिरवा, अंचो हाथ न करे त्यांनैं देखो रे ।
 वले आदर सनमान देवें नहीं, तो साधा उपर करें घेखो रे ॥ २ ॥
 साध साधवियां नें दीठां थकां, उठे अमितर आलो रे ।
 वले पेट रे कारण पापिया, डरे नहीं देता भालो रे ॥ ३ ॥
 म्हानें दीघां में अविरत कहे, तो म्हें उठाय दां यांरी परतीतो रे ।
 तिणसूं लोकां रा मन भांगता थकां, वोळें घणा विपरीतो रे ॥ ४ ॥
 साधां री छे लोकां में आसता, तिणसूं नही छे म्हारो आघो रे ।
 आघ बिनां वेंहरासी म्हानें किण विघें, यांनैं पेट भरण रो सोच लागो रे ॥ ५ ॥
 त्यांनैं दीघां में पुन परूपियां, तो श्वान ज्यूं पूछ हलायो रे ।
 वले दरावे कर कर आमना, तो वांदे लुलू पायो रे ॥ ६ ॥
 केइ अविनीत हुवे साध साधवी, कदा गुर दे लोकां ने जतायो रे ।
 ते जनम कदागरी सांमले, तो तुरंत कहदे तिण कने जायो रे ॥ ७ ॥

अविनीत ने तीखो करे घणो,
तिणरो मन भागे कूड कपट करी,
अविनीत ने पोगां चढाय ने,
ते सुण सुण ने हरपत हुवे,
उ छांनो विगड्यो थो घणा दिना,
अविनीत सूं एकठ कीया पछे,
जो दोप लागो देखे साध ने,
जो उ माने नही तो कहिणो गुर कने,

प्रायश्चित दराय नें सुव करे,
ते तों थावक गिरवा गंभीर छे,
उणरे मूढे तो दोप कहे नही,
ओर लोका आगे कहतो फिरे,
वले साधां ने आय बंदणा करे,
त्याने थावक थावका म जाणजो,
तिण थ्री जिण घरम न ओलख्यो,
आप छ्त्रदे माठी मत उपजें,
कोइ साप पड्यो थो उजाड मे,
तिण सर्प री अणुकपा आण ने,

ते सर्प सचेत थयां पछे,
जो उ लूठो हुवे तो उणने दाव दे,
सर्प सारिखो अविनीत कोइ मानवी,
त्याने समकित चारित पमाड ने,
एहवो उपगार कीयो तिको,
वले उलटा अवगुण वोले तेहना,

आहार पाणी कपडादिक कारणें,
इणने उपरलो हुवे तो दावे डड दे,
सर्प ने मिथ्री दूध पाया पछे,
ज्यूं ओ समकित चारित लीया पछे,
वले खाणा पीणा रो हुवो लोलपी,
छेडविया सू साह्यो मडे,

विगड्या ने बशेप विगाडे रे ।
टोलां माहे भेद पाडे रे ॥ ८ ॥
अवगुण वोले तिण पासो रे ।
ते तों वाघे करमा री रासो रे ॥ ९ ॥
पिण लोकां मे न पड्यो उघाडो रे ।
प्रगट हुवो लोक मभारो रे ॥ १० ॥
तो कहे देणो तिणनें एकतो रे ।
ते थावक छे वुद्धिवतो रे ।
सुविनीत थावक एहवा ॥ ११ ॥

पिण न कहे ओरा रे पासो रे ।
त्याने वीर वखाण्या तासो रे ॥ १२ ॥
उणरा गुर ने पिण न कहे जायो रे ।
तिणरी परतीत किण विध आयो रे ॥ १३ ॥
साधवियां ने न वादे रुडी रीतो रे ।
ते तो मूढ मति छे अविनीतो रे ॥ १४ ॥
वले भण भण करें अभिमानो रे ।
तिणने लगा नही गुर कानो रे ॥ १५ ॥
चेत नही सुव कायो रे ।
मिथ्री घाले ने दूध पायो रे ।
भाव सुणो अविनीता रा ॥ १६ ॥

आडो फिरियो खावा ने आयो रे ।
काचो हुवे तो डक दे लगायो रे ॥ १७ ॥
एकल फिरे ज्यूं ढोर रुलियारो रे ।
कीघो मोटो अणगारो रे ॥ १८ ॥
ततकाल भूले अविनीतो रे ।
उणरे सर्प वाली छे रीतो रे ।
केइ अविनीत मानव एहवा ॥ १९ ॥

ते पिण भूठो भगडो माडे रे ।
आघो काढे तो उलटा भाडे रे ॥ २० ॥
डक देवे ते तो सर्प गेरी रे ।
हुवो सावा रो वेरी रे ॥ २१ ॥
आपरा दोप मूल न सुमें रे ।
वले क्रोध करें तन धूजें रे ॥ २२ ॥

तिणनें दूर करे तो दुसमण थकी, बोलें घणो विपरीतो रे ।
 असाध परूपे सगला साध नें, साच बोलण री नही नीतो रे ॥ २३ ॥
 वले प्रायश्चित्त देनं माहें लिये, तो माहें आवे ततकालो रे ।
 इसडा अजोग अविनीतरो, साच माने अग्यानी बालो रे ॥ २४ ॥
 त्यांनं भागल असाध परूपिया, त्यांनं प्रायश्चित्त लेई माहे आवे रे ।
 कदे कर्म जोगे हुवे एकलो, तिणनें बुधवंत मूढे न लगावे रे ॥ २५ ॥
 सुगरा सांप ने दूध पायां थकां, तो उ करे पाछो उपगारो रे ।
 तिणने घन देई नें घनवंत करे, वले दीठां हुवे हरख अपारो रे ॥ २६ ॥
 ज्यूं कोई आप छादे थो एकलो, सरल परिणांमी नें सुध रीतो रे ।
 तिणनें समभाय नें संजम दीयो, ते आग्या पाले रुडी रीतो रे ॥ २७ ॥
 कीघो उपगार कदे नहीं वीसरे, सर्व देही त्यारे काजें सूपे रे ।
 त्यांरो दरसण देख हरषत हुवे, सर्व काम में घोरी ज्यूं जूपे रे ॥ २८ ॥
 तिणनें समकित्त ने सजम बेहू, रुचिया अभितर पूरो रे ।
 ते चलावे ज्यूं चाले छांदो रुंध नें, पाछो उपगार करण नें सूरु रे ॥ २९ ॥
 वले गामां नगरां फिरतां थकां, सदा काल करे गुण ग्रामा रे ।
 ते सुविनीत गुण ग्राही आतमा, त्यांनं वीर वखाण्या तांमो रे ॥ ३० ॥
 ए भाव कछ्हा अविनीत रा, सांभल ने नरनारो रे ।
 सतगुर रो विनीं करो, तो पामों भव जल पारो रे ॥ ३१ ॥

दुहा

ढाल : ८

ज्यारी विनेवंत छे आतमा, ते हलु करमी छे जीव ।
 ते विनो कर्षण उद्यमी घणा, त्या दीधी मुगत री नीव ॥ १ ॥
 ते विनो करे सत गुर तणो, त्यारा गुणां री करे पिछांण ।
 भेषचारी भागल ने परहरे, ते डाहा चतुर सुजाण ॥ २ ॥
 सतावीस गुणा सहित छे, तारण तिरण जिहाज ।
 एहवा गुरां रो विनों कीयां थकां, सीमे आतम काज ॥ ३ ॥
 भेषचारी भागल तणो, विनो कीया वंवे कर्म रास ।
 धर्माचार्य सुध गुर तणो, विनों कीयां हुवे सुध गतिवास ॥ ४ ॥
 ते तो सर्व सावद्य तज नीकल्या, नही पाप करण रो आगार ।
 विनो करणो कह्यो छे वीर तेहनो, ते सूतर मे विस्तार ॥ ५ ॥
 त्यांरो विनो करणो छे किण विधे, वले करणो फित्तोयक काल ।
 त्यारी आग्या पालणी किण विधे, ते सुणजो सूतर सभाल ॥ ६ ॥

ढाल

[२ जीव मोह असुकम्पा न आशिये]

पाले गुर री निरंतर आगना, कने राख्यां हुवे हरख अपार जी ।
 वले वरते गुर री अंग चेष्टा, जिण सफल कीयो अवतार जी ।
 श्री वीर वखाण्यो विनीत ने* ॥ १ ॥
 तिण अभितर छोडी कषाय ने, नहीं मुख तणो लवाल जी ।
 एहवा गुर समीप रह्यां थका, छता गुण दीपे रसाल जी ॥ श्री २ ॥
 तिणने करडे काठे वचने करी, गुर सीख देवे किणवार जी ।
 तो उ खिम्या करे धर्म जाण ने, पिण न करे क्रोध लिगार जी ॥ ३ ॥
 सुकुमाल कठोर वचने करी, गुर दीधी सीखावण भोय जी ।
 सुविनीत हुवे ते इम चित्तवे, मोने हेत रो कारण होय जी ॥ ४ ॥
 कदा क्रोध करे करमा वसे, तो ओलवे नही राखे विनीत जी ।
 आलोवे ने प्रायश्चित्त ले गुर कने, नही विचरे सल्य सहीत जी ॥ ५ ॥
 भद्र किलाणकारी घोडे चढ्या, असवार रे हरष आणंद जी ।
 ज्यू सीख दीया सुविनीत ने, गुर पामे परमानन्द जी ॥ ६ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

विनीत घोडो आकीर्ण जात रो, चाबखो घणी रे हाथ देख जी ।
 मन गमतो चाले असवार रे, चाबखानी न खाए एक जी ॥ ७ ॥
 इण दृष्टान्ते सुविनीत ने ओलखो, ते तों चाले गुर अणुसार जी ।
 चाबखा रूप वचन लागां विनां, देखी वरतें गुर रो आकार जी ॥ ८ ॥
 ते तों मन वचन काया करी, चित्त चौखे हडे परिणाम जी ।
 मारवाड नां घोरी नी परें, विण कहां करें गुर कांम जी ॥ ९ ॥
 जे जे गुर नें कारज अननां, जब सुविनीत रो आधार जी ।
 एहवा गुर भगता विनीत रो, जश कीरती वोलें ससार जी ॥ १० ॥
 गुर नां चित केडें चालतो, कार्यं करें विलंब रहीत जी ।
 कदा क्रोधी गुर हुवे आकरा, पिण प्रसन्न करें सुविनीत जी ॥ ११ ॥
 क्रोध न चढावे गुर नें सर्वथा, सुविनीत गुणां रो मंडार जी ।
 ते तों घात न वांछें गुर तणी, न हुवें छिद्र गवेणहार जी ॥ १२ ॥
 विनीत जाणें गुर नें कोपिया, तो उपजावें पूरी परतीत जी ।
 दोनूं हाथ जोडी गुर नें कहे, हूं कदेय न चालूं कुरीत जी ॥ १३ ॥
 विनीत दमी छे आतमा, तिण संजम तप सूं सोय जी ।
 तिण जनम सुघाखो आपणो, बेहूं लोक में सुखियो होय जी ॥ १४ ॥
 दोनूं पासां बरोबर वेसैं नहीं, नहीं वेसैं पूठ अडाय जी ।
 सायल सूं साथल संघटे नहीं, नहीं वेसैं पसारी पाय जी ॥ १५ ॥
 पग उपर पग चढाय नें, गुर पासें नही वेसैं आय जी ।
 वले ठांसली मार वेसैं नही, उंचे आसण न वेसैं जाय जी ॥ १६ ॥
 विनीत नें गुर बोलावियां, बेंठो नही रहे मून साभ जी ।
 आसण छोडी आय उभो रहे, मोसूं किरपा करी गुर आज जी ॥ १७ ॥
 आसण बेंठो न लेवे वांचणी, वांचणी लेवे हडी रीत जी ।
 सनमुख आय वेसैं ऊकडू, दोनूं हाथ जोडी सुविनीत जी ॥ १८ ॥
 आहार पांणी कपडादिक भोगवे, ते पिण गुर री आग्या सहैत जी ।
 शिरय पिण न करे विण आगना, पालें जिण शासण री रीत जी ॥ १९ ॥
 वले उपघादिक नों जाचवो, इत्यादिक कांम अनेक जी ।
 वले देवो लेवो ओर साच नें, गुर आग्या विण न करें एक जी ॥ २० ॥
 उपवास बेलादिक तप करें, करें रसादिक परिहार जी ।
 ते पिण न करें आगनां विना, वले संलेखणा संघार जी ॥ २१ ॥
 करें वयावच्च ओर साच री, ओर पासें करावे आप जी ।
 ते पिण गुर आगनां हुवां, एहवी जिण शासण री थाप जी ॥ २२ ॥

अंसमात्र करणो करावणो, ते पिण आग्या लें सुविनीत जी ।
 सर्व कारज मे लेणी आगनां, एहवी बांधी छे अरिहंत रीत जी ॥ २३ ॥
 सुविनीत टोलां माहे रह्यां, ते तो सगलां नें गमतो होय जी ।
 ओर साधु साथे मेल्या थकां, तिणने पाछो न ठेले कोय जी ॥ २४ ॥
 आतमा दमे इद्र्या वस करे, उपजावे साघां नें परतीत जी ।
 वले लोक वतावे आंगुली, एहवो काम न करे विनीत जी ॥ २५ ॥
 विनीत सू गुर प्रसन्न हुवे, तो आपे ग्यान अमूल जी ।
 तिण सू शिव रमणी वेगी वरे, रहे साश्वत सुख में भूल जी ॥ २६ ॥
 अन्नहोत्री ब्राह्मण अन्न ने, नमस्कार करे हाथ जोड जी ।
 ष्टादिक सीची ने मंत्र भणे, तिणने आरावे मांन मोड जी ॥ २७ ॥
 इण विद्यान्ते गुर नें अरावतां, केवली थयो शिष्य सुविनीत जी ।
 तो पिण सेवा भगत करे गुर तणी, विनो साचवे आगली रीत जी ॥ २८ ॥
 राज मे हाथी घोडा विनीत छे, ते तो सुख पामे रूडी रीत जी ।
 नरनारी रिद्ध सम्पत करी, सुखी दीसे छें सुविनीत जी ॥ २९ ॥
 वले सुखी दीसें देवी देवता, जशवत मोटी रिद्ध पाय जी ।
 जावजीव लो सुख भोगवे, लोक जस कीरति थाय जी ॥ ३० ॥
 ते पाछिल भव पुन्य बांध्या तिके, भोगवे उदे आयां आप जी ।
 पिण प्रतख दीसे लोक मे, जाणें विनां तणो परताप जी ॥ ३१ ॥
 ज्यूं कोइ गुर ने रिभाव्ये विनो करी, कारज कर उपजावे संतोष जी ।
 तिणरा ग्यान दरसन चारित बधे, वेगो पामें अविचल मोख जी ॥ ३२ ॥
 केइ पेट भराइ कारणे, सीखे सिल्प कला विग्यान जी ।
 ते तों संसार ना गुर कने, ते पिण विनो करें मूकें मान जी ॥ ३३ ॥
 इहलोक तणा अरथी थकां, भणे राजादिक नां कुमार जी ।
 गुर करडा वचन कहे तेहनें, देवे हडादिक परिहार जी ॥ ३४ ॥
 ते पिण तिण गुर नां पग पूज ने, देवे सतकार ने सनमान जी ।
 वले घणा सतोषे तेहनें, वले देवे प्रीतीदान जी ॥ ३५ ॥
 तो सिद्धांत भणावे तेहनी, विनेवत किम लोपे कार जी ।
 ते तों गुर वचने लीनो घणो, तिण सफल कीयो अवतार जी ॥ ३६ ॥
 इहलोक नां गुर नो विनो कीयां, कदा सीमें इहलोक काज जी ।
 पिण सतगुर नों विनो कीया, पामे मुगतपूरी नो राज जी ॥ ३७ ॥
 मूल नें खंघ थी वृक्ष उपजे, पछें साखा पडिसाखा वखाण जी ।
 पांन फूल फल रस नीपजे, ते उत्पत्ति सहू मूल री जाण जी ॥ ३८ ॥

इण दिष्टान्ते जिण धर्म विरख रे, विने रूपियो मूल वखाण जी ।
 समकित रूप थापो तेहनें, धीरज रूपियो खंव पिछाण जी ॥ ३६ ॥
 जश रूप खंव विने वेद का, शील रूपियो गंव वखाण जी ।
 शुभ ध्यान रूपी छे कूपलां, पंच महाव्रत शाखा जाण जी ॥ ४० ॥
 प्रति शाखा ते पचीस भावनां, बहु गुण रूपियो छे फूल जी ।
 पंच संवर रूप फल तेहनें, दया रूपियो रस अमूल जी ॥ ४१ ॥
 मोष रूपियो बीज तिण फल मभे, एहवो धर्म विरख छे अलोम जी ।
 ते समदृष्टि रे हिये विराजतो, विने मूल सूं रह्यो सोम जी ॥ ४२ ॥
 ज्यूं विरख रो मूल सूकां थकां, शाखादिक सगला सूक जाय जी ।
 ज्यूं विने रूप मूल खिस गयां, सगलाइ गुण खय थाय जी ॥ ४३ ॥
 गुर गुरभाई नें टोलां तणा, गुण बोलें रूडी रीत जी ।
 लोक पिण गुण ग्राम करतां थकां, सुण सुण हरखे सुविनीत जी ॥ ४४ ॥
 शिष्य शिष्यणी मिलें ओर साघ ने, मिले उपघादिक अनेक जी ।
 वले कंठ कला देखी ओर नी, विनीत तो हरखे वशेष जी ॥ ४५ ॥
 क्रिण ही साघ रो न करे ईशको, सर्व साघ नें हुवे हितकार जी ।
 एहवा सुविनीत री वंसावली, फेले तीनुंइ लोक मभार जी ॥ ४६ ॥
 गमतो लागें तीरथ च्यार में, जिण शासन रो सिणगार जी ।
 एहवा सुविनीत पासें रह्यां, सीखावे विनो आचार जी ॥ ४७ ॥
 ज्यांरी जात माता री निरमली, पिता रो कुल छें निरदोष जी ।
 ते पिण लज्या कर सहीत छे, ते विनो कर लेसी मोख जी ॥ ४८ ॥
 ते पिण मोह कर्म पतलो पडयां, सुघ रीत जाणें बुववांन जी ।
 हाड मिजा रंगी जिण धर्म सूं, तिणनें विनों करणो आसान जी ॥ ४९ ॥
 केइ क्रोधी अहंकारी निरलजा, भेष पहिरी करे कपटाय जी ।
 इहलोक तणा अरयी घणा, त्यां सूं विनो कीयो किम जाय जी ॥ ५० ॥
 अविनीत में अवगुण घणा, ते तों जाबक छोडे विनीत जी ।
 विनां रा गुण सगला आदरे, ते तों गया जमारो जीत जी ॥ ५१ ॥
 उत्तरावेन पेंहला अध्ययन में, दसविकालिक नवमें जाण जी ।
 वले ओर अनेक सिद्धांत में, कीया विनीत रा वखाण जी ॥ ५२ ॥
 सतगुर तणा विनीत में, गुण भाख्या श्री भगवंत जी ।
 ते कोड जीभ्या कर वरणवे, पिण कहितां न आवे अंत जी ॥ ५३ ॥

ढाल : ६

दुहा

अविनीत रा भाव सांभले, अविनीत घणो दुख पाय ।
केइ कुगुर सुघ वुघ वाहिरा, ते पिण हरषत थाय ॥ १ ॥
विनीत तणा गुण सांभले, विनीत रे आणद ओच्छ्राव ।
ते पिण कुगुर हरषत हुवे, त्यारे विनो करावण चाव ॥ २ ॥
ते तो विनो परूपे निसंक सू, मन मे आणंद कोड ।
शिष्या उमर हुकम चलावता, कर कर मन रो जोड ॥ ३ ॥
ज्याने समझ नही जिण धर्म री, सूतर री खबर न काय ।
त्यांरो विनों करे भोला थकां, करे वूडण रो उपाय ॥ ४ ॥
एहवा कुगुरा ने वीर निषेधिया, तो ही विनों सुणी हरखत ।
त्याने जथातथ परगट करू, ते सुणजो कर खंत ॥ ५ ॥

ढाल

[ङाभ मू जादिक नी ङोरो]

विना रा भाव सुण सुण गूंजे, आपरा किरतब नही सुभे ।
ते तों व्रत विहूणा नागा, ते पिण विनो करावण आगा ॥ १ ॥
देखो कुगुर हीण आचारी, हुवा विनो करावण त्यारी ।
आपण किरतब नही देखे, विनों करावसी किण लेखे ॥ २ ॥
हसली नी देखी हाल, वुगली पिण काढी चाल ।
पिण वुगली सूं चाल न आवे, तिणसूं हसली उपर दुख पावे ॥ ३ ॥
एहवा कुगुर साधा ने देखी, ते पिण करवा लागा शेखी ।
आडम्वर कर विनो करावे, पिण आचार पाल्यो नही जावे ॥ ४ ॥
सुण कोयल रा टहुकारी, कां कां काग करे तिण वारी ।
सतियां रा सुण सोभागी, केइ कुसत्या कुडवा लागी ॥ ५ ॥
काग बोले कुराले गाढें, पिण कोयल जेहवो शब्द न काढे ।
कुसती लजा करे किण वारे, सती रे तुले नावे लिगारे ॥ ६ ॥
काग कुसती जेहवा भेषचारी, ते तो वितल थया वेकारी ।
ढाला वादल ज्यू थोथा गाजे, विनो करावता नही लाजे ॥ ७ ॥

गति गयवर की देखी श्वान, भूसवा लागा ऊंचा कर कांत ।
 ज्यूं सावां नें देखे भेषचारी, श्वान व्यूं बोले मूंह त्रिगारी ॥ ८ ॥
 ते पिण विनों करावण भूखा, बले बोलें अग्यांनी बचूका ।
 कने राखें सावु रो भेष, तिण सूं वूडे लोक अनेक ॥ ९ ॥
 ते तों व्रत न पाले एक, तोही कर रह्या कूडी टेक ।
 बले चढ गया मान रे छाजे, एहवा पिण लोक में गुर वाजे ॥ १० ॥
 विनों परूपता तो गाजे, आचार वतावता लजे ।
 त्यामें दोखां रा छेह न पारा, त्यारें चिहुं दिनि पडिया वधाग ॥ ११ ॥
 सीष सिबोटिया रा साथी, थेट रा मूलगा छे मिथ्याती ।
 कूडा कर रह्या पापंड फेन, एहवा पांचमां आरा रा चेन ॥ १२ ॥
 वांध्या थानक मिष्टाचारी, बले माया ममता चारी ।
 ते पिण नाम धरावे पूज, ते तों पूरा मूड बडूज ॥ १३ ॥
 नहीं जिण शासन री ठीक, त्यां नरक नें कीर्षीं नजीक ।
 एहवा ने पिण गुर कर पूजें, समकित विन संवली न सुजें ॥ १४ ॥
 त्यांरा मत माहें मोटी भोलो, जाणें मंड रह्यो गांगी रोलो ।
 फेल्यो कूड कपट रो चालो, त्यांरो कुण काडें निकालो ॥ १५ ॥
 नव तूवा तेरे नेगदारो, तिण राज में पूरो अंधारो ।
 ए पोपां वाई रो राज पिछाणो, ए तो दृष्टांत लोकिन जाणो ॥ १६ ॥
 एहवा भेषवाख्यां रे अंधारो, ते तो फेल्यो लोक मझारो ।
 ठा ठा खाए लोकां रो माल, चिहुंगति में होसी हवाल ॥ १७ ॥
 ज्यांरा गुर छे मिष्ट आचारी, त्यांरें हुइ नरक तीं त्यारी ।
 दुख में दुख पामें अथागा, कुगुर बांवां रा ए फल लागा ॥ १८ ॥
 कुगुर बांदे पग भाल, मुख सूं करे लाल नें पाल ।
 बले सावां री निंदा ने सूरा, ते तो डूवसी मूरख पूरा ॥ १९ ॥
 एक सत गुर रो अविनीत, एक कुगुर रो सुविनीत ।
 ए दोनूं मारग गया भूल, रह्या पाप कर्म में भूल ॥ २० ॥
 कुगुरां रा तो दोषण ढाके, सावां रे आल देतो न साके ।
 ते तों करे बूडण रो उपाय, भव भव माहें दुखिया धाय ॥ २१ ॥
 सावां रा गुण सुणे मिथ्याती, के कां री बल उठे छाती ।
 ओ पिण छे बूडण रो उपाय, सेजे दलद्र लीयो बुलाय ॥ २२ ॥
 कुगुर बांवां सूं हुवे छे खुचारी, सुगुर हेल्यां हुवे अनंत संसारी ।
 कुगुर छोडें नें सतगुर बांदे, ते तों शिवपुर सूं पीत सांवे ॥ २३ ॥

कुगुर निषेध्या सुणे अविनीत, ऊंघा अर्थ करे विपरीत ।
 नही विनो करण री नीत, तिण सू बोलें कपट सहीत ॥ ३४ ॥
 उण सू विनो कीयो नही जावे, तिणसूं गुर ने कुगुर सरघावे ।
 आपणा दोष सगला ढाके, साघा सिर आल देतो न साके ॥ ३५ ॥
 ते तों गुर सू पिण नही गुदरे, त्यारा कारज किण विष सुघरे ।
 तिण ने करे टोलां सू न्यारो, तो उ चोर ज्यूं करे विगाडो ॥ ३६ ॥
 सगला साघा नें कहे असाघ, वले करे घणो विषवाद ।
 सर्व साघां रो होय जाय बेरी, केइ एहवा छे अविनीत गेरी ॥ ३७ ॥
 तिणने लोक आरे करे नाही, तो उ प्राच्छित्त ले आवे मांही ।
 ज्यानें असाघु परुण्या था मुख सूं, त्यारा वादे पग मस्तक सूं ॥ ३८ ॥
 जो उ वले न चाले सूघो, तो उण ने कर देवे गुर जूदो ।
 जब अविनीत रे उवाइज रीत, त्यारो कीयां बोलें विपरीत ॥ ३९ ॥
 लोकां नें साघां सूं भिडकावे, आप बुगल घ्यांनी होय जावे ।
 वले कूड कपट रो चालो, आतमा नें लगावे कालो ॥ ४० ॥
 ओतो ओगुण काढे अनेक, बुववंत न माने एक ।
 एहवा अविनीत छे गुर द्रोही, तिण आतम पूरी विगोई ॥ ४१ ॥
 जे माने अविनीत री वात, त्यारे घट में आवे मिथ्यात ।
 एहवा अविनीत अवगुणगारा, त्या सूं बुववत रहसी न्यारा ॥ ४२ ॥
 इम सुण सुण ने नरनारी, छोडो कुगुर हीण आचारी ।
 अविनीत सूं रहसी दूरा, ते तो परमेश्वर नां पूरा ॥ ४३ ॥
 विनीत सुण सुण पामे हरष, पडे अविनीत रे मन बडक ।
 ते तो रहे चोर ज्यूं रांच, लेवे आपण ऊपर खांच ॥ ४४ ॥
 विनीत अविनीत रा श्हेहलाण, इम ओलख कीजो पिछांण ।
 रुडी रीत सू काढे नीकालो, अविनीत सू दीजो टालो ॥ ४५ ॥
 विना अविना रो ए विस्तार, कीघो खेरवा शहर मभार ।
 वत्तीसे वरष सवत अठारो, भादवा सुद छठ सुकरवारी ॥ ४६ ॥



रत्न : १५.

विनीत अविनीत री ढाल

ढाल : १

दुहा

केइ अविनीत छे दुष्ट आतमा, ते सके नही करता अन्याय ।
त्यानें जयातथ प्रगट करूं, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ १ ॥

ढाल

[समरू मन हरखे तेह]

छिद्रपेही छिद्रघारी राखे, कदे काम पडे जब कहे दाखे ।
तिणरें चारित पालण री नही नीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १ ॥
ओर साषां नें दोष लागो देखी, जो उ तुरत कहे तो निरापेखी ।
आ सुष साषां री छोडी नीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ २ ॥
गुर री निदा करे छाने छाने, तिण अविनीत री वात अविनीत माने ।
ते चिहुंगति में होसी फजीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ ३ ॥
छाने छाने टोला में जिलो बांधे, गुर आग्या विण आपरे छाडे ।
तिण संजम सहीत खोई परतीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ ४ ॥
गुर सूं चेला रो मन फाडे, वले टोलां में मूरख भेद पाडे ।
कूड कपट कर कर बोले विपरीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ ५ ॥
सतगुर री वात देवे ठेली, अविनीत रो तुरत हुवे वेली ।
तिण छोडी सतगुर सूं प्रीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ ६ ॥
गुर नें वादे तिकखुत्ता रो पाठ गुणी, पिण मन मांहे ओघटघाट घणी ।
वले खेले कपट दगा सहीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ ७ ॥
जिण सूं हेत राखे तिणरा दोष ढाके, तूटां हेत देतो आल नही सांके ।
पछे मन मानें ज्यूं बोले नचीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ ८ ॥
ते नागा निरलज्ज होय वेठा, त्यानें वतलायां वचन बोलें घेठा ।
त्यारे संजम रूप खिस गई भीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ ९ ॥
पेला ने कुषावण रे कामो, पोते नाक कटे ने मिले साह्यो ।
ज्यूं अविनीत री छे आहिज रीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १० ॥
सुष साषां नें जत्थापण काजे, पोते असाघ हुवतो पिण नही लाजे ।
त्यां जनम खोयो पिण वे रीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ ११ ॥
अविनीत साषां रा ओगुण गावे, ते तौं भेष घाख्यां रे मन भावे ।
त्यारें लारे ए पिण गावें गीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १२ ॥

त्यां लाज सरम अलगी मेली, त्यांरा भेषधारी भागल बेली ।
 अविनीत नें यांरी एकहीज रीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १३ ॥
 अविनीत भण भण उलटो वूडे, कर कर अमिमान वेसैं तूडें ।
 तिणरे विनों नरमाइ नही घट भीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १४ ॥
 इसडा अविनीत जाबक भूंडा, त्यांरे केडें लागा ते पिण वूडा ।
 त्यांमें पिण हुसी घणी कुपीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १५ ॥
 अविनीत नें हाथ जोडी वांघे, ते तों सात कर्म निश्चें बाघे ।
 तिणनें सतगुर री नही परतीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १६ ॥
 अविनीत रो वखांण सुणवा जावे, तिणरे मिथ्यात वेगो आवे ।
 तिणनें पिण कर देवे विपरीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १७ ॥
 अविनीतां आगे करें समाई, तिणरे पिण जांणजो मोलाई ।
 तिण अविनीतां री नहीं जांणी रीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १८ ॥
 अविनीतां सूं जे कोइ प्रीत बांघे, तिण धर्म न ओलखियो आंघे ।
 समकित्त जावण री आहिज रीत, इसडा भारीकर्मा अविनीत ॥ १९ ॥

ढलल : २

दुहल

सलघ सलघवी सर्व ने, सतगुर नी ए सीख ।
आदर जो आछी तरे, चित्त नें रलखे ठीक ॥ १ ॥

ढलल

[ङलम मूजलदिक नी ङोरी]

गुर उभो सूकलवे तो उभो सूके, ओ पिण अवसर नही चूके ।
गुर करलवे शिष्य ने सथारो, ते पिण आग्यल न लोपे लिंगारो ॥ १ ॥
शक्ति न हुवे तो कहे जोडी हलथ, म्हलरी शक्ति नही सलंमी नलथ ।
शक्ति हुवे तो आघो नही कलढ, आप कहो ते सिर उपर चलढू ॥ २ ॥
एहुवल शिष्य गुर रल सुविनीत, आगन्यल पलले इण रीत ।
ते पिण जीवे ज्या लग जलण, गुर को वचन करे परमलण ॥ ३ ॥
गुर पिण अवसर कल जलण, ते पिण एहुवी क्यलने करे तलंण ।
सूस करलवे अवसर देख, किण सूं मूल न रलखे ढेख ॥ ॡ ॥
अपछदल में घणल छे दोप, छलदो रुंघ्यल सूं पलमें मोष ।
उतरलघेन चोथल अघेन मभलरो, कोइ बुघवंत करज्यो विचलरो ॥ ५ ॥
गुर ने शिष्य री उपजे अপরतीत, विनलंदिक में जलणे विपरतीत ।
जो उ शिष्य हुवे सुविनीत, तो उपजलवे गुर नें परतीत ॥ ६ ॥
जिण जिण बोळल री गुर ने संक, ते संकल कलढें नें करे निशक ।
करडल करडल सूस खलवे, गुर नें परतीत उपजलवे ॥ ७ ॥
सूस कीघलई परतीत नलणे, सूसलं ने पिण लोपतो जलणे ।
तो सूस लिख दे कोरे पलनें, ते किण सू न रलखे छलने ॥ ८ ॥
ह इण लिख्यल परमलणो हललू, आगन्यलं लोष कदे नही चललूं ।
जो शिष्य हुवे सुविनीत, इम उपजलवे परतीत ॥ ९ ॥
सूस लिखत री नलणे परतीत, आगे गुर ने घणी अपरतीत ।
तोही हलथ जोडे सुविनीत, विने सहित बोले रुडी रीत ॥ १० ॥
थें म्हलरी परतीत मूल न रलखी, तो हिवें च्यलर तीरथ देउं सलखी ।
म्हलंरल सूस कलगद मे लिखलय, च्यलर तीरथ नें देउ बंचलय ॥ ११ ॥
ह चललू इण लिख्यल परमलणो, कदल चूक मे पडियो जलणो ।
तो च्यलर तीरथ नें देजो जतलय, मोने हेलें निंदे आणे ठम ॥ १२ ॥

जो यारे कहे न चालूं सूघो, तो मोनें कर देजो गण सूं जूदो ।
 पिण मोसूं किरपा करो स्वामी नाथ, म्हारे मस्तक राखो हाथ ॥ १३ ॥
 हूं मरजादा नही चूकूं, आपरो शरणो नही मूंकू ।
 आपरो छे मोनें आधार, मोने उतारो भव पार ॥ १४ ॥
 जब गुर कहे तूं वोले सूघो, हिवडां मूल न दीसें ऊघो ।
 रखे हुवेला विश्वासघाती, बांवलिया रा बीज रो साथी ॥ १५ ॥
 बांवल बीज वाया पांणी पूगे, तो उ सूला लीयाईज उगे ।
 बांवल बीज सुंहालो थो आगे, हिवे ज्यूं वघे ज्यूं गूला लागे ॥ १६ ॥
 ज्यूं तूं रहे छे गण मांय, घणो विनों करे छे ताय ।
 रखे साघ साधुवियां फारे, गुर सू परिणाम उतारे ॥ १७ ॥
 पछे आल दे नीकलेला वारे, ओरां ने ले जावेला लारे ।
 पाछला नें परूपे असाघ, करेला घणो विपवाद ॥ १८ ॥
 घणा जीवां रे घाले ला संका, लगावे ला मिथ्यात रो डंक ।
 ओ तो भारी अकारज मोटो, इसडो मन में म राखे खोटो ॥ १९ ॥
 आ पिण शंका छे थारी मोने, वारवार कहुं हिवे तोने ।
 आ परतीत उपजाव तूं गाढी, करडा सूसादिक काढी ॥ २० ॥
 जो तूं सरल छे नही अनाखी, तो तूं च्यार तीरथ दे साखी ।
 जो थारे रहिणो छे गण मांय, तो इण विघ परतीत उपजाय ॥ २१ ॥
 इम सांभल नें सुविनीत, विने सहित बोले रुडी रीत ।
 आप कहो तिणनें साखी देऊं, आप कहो तिको सूंस लेऊं ॥ २२ ॥
 कदा कर्म जोगे पडूं न्यारो, तो ओरां ने न ले जाऊं लारो ।
 कोइ आफे आवे म्हारे लार, तिण सूं भेलो न कहूं आहारो ॥ २३ ॥
 गण में रहूं निरदावे एकलो, किण सूं मिले न बांधूं जिलो ।
 किणनें रागी करे राखूं म्हारो, एहवो पिण न कहूं विगाडो ॥ २४ ॥
 साघ साधुवियां री वात, उतरती न कहूं तिल मात ।
 वले मांहोमां कलहो लागे, किणरी नही कहुं किण आगे ॥ २५ ॥
 इण विघ रहूं गण ममारो, किणरो ओगुण न बोळूं लिगारो ।
 एहवा सूंस करावो आप, च्यार तीरथ नें शाखी थाप ॥ २६ ॥
 कदा कर्म जोगे पडूं न्यारो, तो हूं मुख में न घालूं आहारो ।
 ओ पिण सूंस करावो मेय, तिणरा साखी करो सहु कोय ॥ २७ ॥
 च्यार तीरथ नें दो थें जताय, मो छूटकरी न मानें वाय ।
 याने ही दो सूंस कराय, पिण मोनें राखो गण मांय ॥ २८ ॥

गुर नें उपनी जाणें अपरतीत, तो इम उपजावे परतीत ।
 ज्यारे मुगत जावा री नीत, गुर ने आराधे इण रीत ॥ २६ ॥
 जे समता रस मे रह्या भूल, ते तों मरणो कर दें कबूल ।
 पिण गुर कुल बासो नही मूके, विनादिक गुण सूं नही चूके ॥ ३० ॥
 सुविनीत गुर ने आराधे, ते आतम कारज साधे ।
 विनों कर गुर ने रीभावे, ते मुगत तणा सुख पावे ॥ ३१ ॥



रत्न : १६

उरण री ढाल

ढाल : १

ढुहा

ढात ढिता सूं उरण क्णिण विघ हुवे, सेठ सूं उरण हुवे केढ ।
वले गुर सूं उरण क्णिण विघ हुवे, ते सुणजो धर ढेढ ॥ १ ॥

ढाल

[ङाढ ढूँजादिक नी ङोरो]

ढात ढिता जनढ रा दातार, करे संसार नों उपगार ।
तिणनें ढालें ढोसें छडी रीत, त्यांरो कोयक हुवे सुविनीत ॥ १ ॥
त्याने गढता ढोजन खवावे, गढता गेंहणा वस्तर ढेंहरावे ।
ढीठी ढरदन सिनांन करावे, गढती सेज्या ढे जाय ढोढावे ॥ २ ॥
वले कावड ढांहे वेसाय, कावड खावे लीयां फिरे ताय ।
घणो विनों करे जोडी हाथ, ते उरण हुवो नही तिलढात ॥ ३ ॥
ढाइतां रो जाणे उपगार, त्यांरो विनो करे वाह्वार ।
जाव जीव रहे आगन्याकारी, तोही उरण न हुवे लिगारी ॥ ॡ ॥
इसडो ढाइतां नें हितकारी, जीव हुवो अनंती वारो ।
ढुगत जावा रो उपगार, तिण न कीयो ढूल लिगार ॥ ॡ ॥
ढात ढिता सूं उरण थावे, जो उ जिण घर्ढें त्यांनें ढढावे ।
सढढाय ढेले ढुगत ढें ताय, ते ढा वाढ सूं उरण थाय ॥ ॢ ॥
कोड दलद्री दलिद्री सहीत, घन घानादिक सूं रहीत ।
नीठ नीठ ढरे छे ढेट, तिणनें राख्यो गुढासतो सेठ ॥ ॣ ॥
दलद्री तिणने सेठ वघाख्यो, तिणरो दलिद्री दूर निवाख्यो ।
तिणने कीवों रिघिवंत ढारी, सेठ इसडो हुवो उपगारी ॥ । ॥
कदे सेठ न्यारो कीयो ताय, जव ओ ओर सहर रह्यो जाय ।
तो ढिण सेठ री आगन्यां ढाय, त्यारो नांढ धरावे ताय ॥ ॥ ॥
वले लाखां कोडां ढाढी आथ, हुवो घणा नरा नो नाथ ।
तिणरे गुढासता वोहत कढावे, सगला उढर हुकढ चलावे ॥ १० ॥
आढ हुवो घणा रो सेठ, तोही निज सेठ सूं वरते हेठ ।
त्यांरो गुढासतो आढ वाजे, ढुख सूं ढिण कहतो न लाजे ॥ ११ ॥
ढूलढ्रा जांणें उपगारी, त्याने क्णिण विघ घाले विसारी ।
त्यांरो सिक्को घारे रह्यो सेंठो, त्यांरो थको तिहा रहे बेठो ॥ १२ ॥

लारे सेठ रे दिन आयो खोटो, तिणरे पड गयो जाक्क तोटो ।
 वले घर में आई पूरी खाल, बाकी क्यूं ही रह्यो नही माल ॥ १३ ॥
 सेठ रा पुन पड गया माठा, गुमासता पिण धन ले नाठा ।
 कांनी कांनी रह्या धन दाव, थोडा में छेडे आयो सताव ॥ १४ ॥
 माथे पिण ऋण हुवो पूरो, सेंग सगा हुवा सरव दूरो ।
 उपर सूं पडियो दुरमख ताही, खावा धान नही घर माही ॥ १५ ॥
 लोकां माहें पिण पडियो उघाडो, तिणसूं माथेई न मिले उचारो ।
 अन्न विण मरतां मेली नाकी, जब गुमासता री दिशि ताकी ॥ १६ ॥
 तिण दलद्री रो सेठ कीवो, तिणरो शरणो लेवा मन कीवो ।
 अशुभ उदे विपद रो घाल्यो, तिणरी दिशि नें चाल्यो ॥ १७ ॥
 तूटो डील नें तूटी सभाई, मुख वदन गयो कुमलाई ।
 पगां लिंगतरा बाजे ताहि, इण रीते आयो शहर रे माहि ॥ १८ ॥
 निज सेठ नें आवतो देखी, हरख्यो मन माहें वशेली ।
 गादी तकिया छोडी साह्रों जाय, सेठ रा पगा मे पडियो आय ॥ १९ ॥
 विने सहीत बोलें जोडी हाय, मोने आज कीयो थें सनाथ ।
 थारो दरसन में दीठो आज, म्हांरा सरिया बंछित काज ॥ २० ॥
 म्हांरे आज भलो दिन ऊगो, मन रो मनोरथ पूगो ।
 घणी अतंत कीधी लघुताई, इण कुमिय न राखी काई ॥ २१ ॥
 विनो नरमाई करता देख, लोक इचरज पाम्यां वशेल ।
 त्यानि उत्पत्ति धुर सू बताय, सगलां ने दीया समभाय ॥ २२ ॥
 पछें निज सेठ ने घरां ल्याय, मरदन सिनांन कराय ।
 मोय मूंहागा नें हलका तोल मांय, एहवा वस्त्र गेंहणा पहिराय ॥ २३ ॥
 पछें मन गमता भोजन कराय, रुडी सेज्या मे आंग पोढाय ।
 वले भोजन अनेक रसाल, नित्य जीमावे काल रा काल ॥ २४ ॥
 डीलां में चाका कीयो जरूरो, सूरत में घणो सनूरो ।
 गादी तकिया वेंसाणे आंग, हिवे बोले किण विघ वांग ॥ २५ ॥
 आप पघाख्या इण ठाम, ते मोनें फुरमावो कांम ।
 जब सेठ बोले द्रम वाय, मोमे विपत पडी छे आय ॥ २६ ॥
 देश दुरमख पडियो ताय, खावा धान नहीं घर माय ।
 माथे पिण न मिले उचारो, जब हूं आयो थारी दिशि वारो ॥ २७ ॥
 आ हूं आप कनें करूं अरज, कांयक तो करो म्हांरी गरज ।
 जब ओ बोल्यो सीस नमाय, इसडी भोले म काडजो वाय ॥ २८ ॥

आप तो म्हारा सिर घणी सेठ, हूं तो गुमासतो थारो नेठ ।
 हूं दलद्री तिणने आप वधाख्यो, म्हारो मिनष जमारो सुवाख्यो ॥ २६ ॥
 म्हे आ पामी रिधि विस्तार, ओ सगलो आप तणो उपगार ।
 हिचे सगली अवेरलो आथ, रिधि सहित सगला रा थे नाथ ॥ ३० ॥
 आ रिधि खावो पीवो उडावो, सगलां ऊपर हुकम चलावो ।
 मोने पिण ऋजक रोटी दो आप, हू पिण इधका क्याने करूँ टाप ॥ ३१ ॥
 सेठ नें सगली सोपे आथ, सेवग थको रहे जोडी हाथ ।
 वले कदेय न हुवे त्यांसूं जूओ, तो पिण सेठ सू उरण न हूवो ॥ ३२ ॥
 इसढो सेठ नें हितकारी, जीव हुवो अनती वारो ।
 मुगति जावा रो उपगार, तिण न कीयो मूल लिंगार ॥ ३३ ॥
 जे कोइ सेठ सू उरण थावे, ते सेठ ने जिण घर्म पमावे ।
 समभाय मेले मुगत रे मांय, इम सेठ सू उरण थाय ॥ ३४ ॥
 सेठ नें माईत कीयो उपगार, तिणसू उलटो बधे ससार ।
 ए तो सावद्य रो दातार, तिणमे घर्म नही छे लिंगार ॥ ३५ ॥
 जो उ मुगत गामी जीव होवे, तो एहवा उपगार साह्यो न जोवे ।
 जो इण उपगार मे घर्म जाणे, ते तो भर्म मे भूला ताणे ॥ ३६ ॥
 एहवा उपगारी ने देखे ताय, थोडो घणो हरषे मन माय ।
 तिणरे निश्चे बधें कर्म सात, आ तो जिणजी रा मुख री वात ॥ ३७ ॥
 एहवो पाछो करे उपगार, तिणरें पिण बधे ससार ।
 एहवा आह्या साह्या उपगार, कीघा नही पामे भव पार ॥ ३८ ॥
 कोइ हुतो जीव मिथ्याती, खोटा देव गुर रो पखपाती ।
 करे अघर्म ने घर्म जाणे, महामूढ थको ऊंधी ताणे ॥ ३९ ॥
 तिणनें मिल्या मोटा मुनिराय, समदिष्टि कीयो समभाय ।
 वले श्रावक करे साधु कीघो, मुगत गामी निश्चे कर दीघो ॥ ४० ॥
 ते सावपणो सुध पाल, पछे कीयो तिहा धी काल ।
 ते उपनों देव लोक मे जाय, गुर भगता घणो छे ताय ॥ ४१ ॥
 तिण उपयोग दे जोयो तांम, गुर ने देख लीया तिण ठांम ।
 गुर चोमास कीयो तिणवार, काल पडियो ते देश मझार ॥ ४२ ॥
 गोचरी गया न मिले आहार, जाबक तूट गया दातार ।
 लोक होय गया हेंरान, खावा ने पूरो न मिले घान ॥ ४३ ॥
 ओर देश में सुणियो सुगाल, पिण मारग में दुरभख काल ।
 तिहा पिण जावा रो काठो काम, विच मे उज्जड होय गया गाम ॥ ४४ ॥

जब कष्ट घणो गुर मांय, मोत घात आए लागी ताय ।
 जब उ शिष्य देवलोक मभार, कष्ट देखी नैं कीयो विचार ॥ ४५ ॥
 म्हांरा गुर में पडी इसडी बेला, तो हूं जाय कळं अन्न भेला ।
 इम चिन्तव सताब सूं आय, गुर नैं मेल्या सुगाल रे मांय ॥ ४६ ॥
 गुर नो कष्ट मेट्यो शिष्य आय, अन्न विण मरता राख्या ताय ।
 बले हरख्यो घणो मन मांय, तो पिण शिष्य उरण हुवो नाय ॥ ४७ ॥
 बले गुर भूला मोटी अटवी मांय, मारग री पिण खबर न काय ।
 बले भूख तिरखा लागी आय, पग भर आघो खिसियो न जाय ॥ ४८ ॥
 अन्न पांणी विनां अटवी मांय, जुदा हुवे जीव ने काय ।
 सिंघ चित्तादिक तिहां आय, उपसर्ग देवा लागा ताय ॥ ४९ ॥
 जब उ शिष्य देवलोक थी आय, गुर नैं वसती में मेल्या उठाय ।
 गुर ने जीवां मरता राख्या ताय, तो पिण शिष्य उरण नही थाय ॥ ५० ॥
 बले गुर रा शरीरे मांय, सोले रोग उपनां आय ।
 तिण रोग सूं हुवे जीव घात, बले सुख नहीं तिल मात ॥ ५१ ॥
 जब उ शिष्य देवलोक थी आय, सोलेई रोग दीया गमाय ।
 सुख साता कीवी जीवां वचाय, तो पिण गुर सूं उरण नही थाय ॥ ५२ ॥
 काल रा मेल्या सुगाल रे मांय, अटवी सूं मेल्या वसती में ताय ।
 रोग कीया शरीर थी न्यार, तोही उरण न हुवो लिंगार ॥ ५३ ॥
 जो इसडा करे अनेक उपाय, तोही गुर सूं उरण नहीं थाय ।
 उरण न हुवो ते किण लेखे, ते परमारथ विरला देखे ॥ ५४ ॥
 जो उ शिष्य आए इम न करंत, तो पेहले छेहडें गुर जीवां मरत ।
 मरनें संसार में न पडंत, कष्ट सही कर्म दूर करंत ॥ ५५ ॥
 तो पिण बले नही हुआ कर्म, बले घटतो नही त्यांरो धर्म ।
 मुगत जावा रो न कीयो उपाय, उरण न हुवो ते इण न्याय ॥ ५६ ॥
 गुर धर्म थी भिष्ट हुवे ताय, ने आणे शिष्य ठाय ।
 पडता राख्या भव कूआं मांय, जब गुर सूं उरण हुवो ताय ॥ ५७ ॥
 कदा गुर भिष्ट होय बेंठा ताय, ग्यांनादिक गुण सर्व गमाय ।
 रात दिवस हणे छे छ काय, जाबक खूता संसार रे माय ॥ ५८ ॥
 जब उ शिष्य देवलोक थी आय, खपकर आणे गुर नैं ठाय ।
 पाछा साधु करें समभाय, ते गुर सूं उरण हुवे ताय ॥ ५९ ॥
 जो गुर भगता हुवे शिष्य सुविनीत, गुर सूं उरण हुवे इण रीत ।
 ए ठाणां अंग सूतर मांय, तीजे ठाणे कह्यो जिगराय ॥ ६० ॥

गुर कीघो भारी उपगार, गुर उताख्यो संसार थी पार ।
 कीघो मुगत तणो अधिकारी, त्याने किण विघ घाले विसारी ॥ ६१ ॥
 रात दिवस गुर रो ध्यान ध्यावे, रात दिवस गुर रा गुण गावे ।
 गुर रो कीघो उपगार बतावे, गुर रा गुण किण विघ गावे ॥ ६२ ॥
 गुर मोसूं कीयो मोटो उपगार, ग्यानादिक गुण रा दातार ।
 हूं तो हुतो जीव अग्यानी, मोने सतगुर कीघो ग्यानी ॥ ६३ ॥
 हूं अनाद काल रो हुंतो मिथ्याती, हिंसा धर्म तणो पखपाती
 ते म्हांरी श्रद्धा खोटी छुडाय, गुर समकित दे आय्यो ठाय ॥ ६४ ॥
 हूं खूतो थो संसार मभार, जब हूं सेवतो पाप अठार ।
 मोने दीख्या दे कीयो साघ, म्हांरी भव भव री मेटी व्याघ ॥ ६५ ॥
 हूं डूबो इण संसार मांहो, गुर बारें काढ्यो बांह संमायो ।
 सुव श्रावक रो धर्म पमायो, त्यासूं उरण किण विघ थायो ॥ ६६ ॥
 हूं अनंत संसारी जीव थो भारी, ते मोने गुर कीयो परित संसारी ।
 हूं दुर्लभ बोधी जीव थो करलो, गुर मोने सुलभ बोधी कीयो सरलो ॥ ६७ ॥
 हूं तो कृष्ण पखी जीव थो कुकरमी, हिंसाधर्मी ने पूरो अधर्मी ।
 मोने शुक्ल पखी गुर कीघो, मुगतगढ रो पट्टो लिख दीघो ॥ ६८ ॥
 हूं तो अचरम मिथ्यात सहीत, संसार नां छेड्डा रहीत ।
 गुरां चरम करे सिर चाढ्यो, म्हांरा संसार नों छेड्डो काढ्यो ॥ ६९ ॥
 मोने गुर कीघो मुगत नजीक, इन्द्र नों पिण कीयो पूजनीक ।
 म्हांरो जीतव जनम सुधाख्यो, मोने संसार पार उताख्यो ॥ ७० ॥
 शिष्य सुविनीत हलुकर्मी होवे, तो गुर रा उपगार साह्यो जावे ।
 जिण आगम सीखामण सूधी घारी, हिंवे कुण कुण करे विचारी ॥ ७१ ॥
 कोइ पट्टो राजा रो खावे, कोइ रोजगार नित पावे ।
 ते पिण विनों करे जोडी हाथ, वले लेखवे सिर घणी नाथ ॥ ७२ ॥
 तिणनें करडी मूहम घणी मेले, तो पिण घणी रो वचन नही ठेलें ।
 मर जाये तिणरा मूंडा आगे, घणी ने मेल पाछो नही भागे ॥ ७३ ॥
 तिण घणी रो पिण काचो आघार, थोडा में पट्टो देवे उतार हो ।
 वले काढ दे देश रे बार, कदा जीवां पिण नाखे मार ॥ ७४ ॥
 तिण घणी रो वचन न लोपें, मरण साह्यो मडे पग रोपें ।
 जाणें आउं घणी रे काम, तो हूं नही होउं लूण हराम ॥ ७५ ॥
 रिजक रोटी पट्टा रे काजें, मर जाये पिण पाछो न भाजें ।
 तो हूं मुगत जावा रे काज, पिंडत मरण करतो नाणू लाज ॥ ७६ ॥

गुर शिष्य नें भुगत गांभी कीघो, मोष रो पट्टो अविचल दीघो ।
 दलिद्र दीयो दूर गमाय, ग्यांन दरसण चारित पमाय ॥ ७७ ॥
 जो उ शिष्य हुवे सुविनीत, गुर री आग्या पालें ह्डी रीत ।
 ते गुर रो वचन किम लोपें, मरण साह्यो तुरत पग रोपें ॥ ७८ ॥

रत्न : १७

मोहणी कर्म बंध री ढाल

ढल

दुहल

महलमोहणी कर्म री, स्थिति ललबी कहूँ जिनरलय ।
सितर कोडल कोड सलगर तणी, ते भोगवतलं दुख थलय ॥ १ ॥
थलठ कर्म मलहे रलजवी, मोटो मोहणी कर्म ।
इण कर्म उदे वस जीवडो, पलमे नहूँ जिन धर्म ॥ २ ॥
जे जे मलठल किरतब करे, मोह कर्म उदे वस जीव ।
पलप कर्म उपजलवे अति घणल, तिनसूँ पलमें दुख अतीव ॥ ३ ॥
इण मोह कर्म रल जोर सूँ, मलठी मलठी अकल बुद्धि थलय ।
सलधु थ्रलवक धर्म सूँ चूक ने, पडें नरक निगोद मे जलय ॥ ॡ ॥
जे कर्म वधे महलमोहणी, तिनरल छे तीस बोल ।
ते चित्त लगलय ने सलंभलो, आंख हूँयल री खोल ॥ ५ ॥

ढल

[विछियलनी]

दुष्ट परिणलमलं तस जीव ने, डबोवें पलंणी रे मलय रे ।
तिणने मलरे पलंणी मे बुरी तरें, जुदल करे जीव ने कलय रे ।
इम कर्म वधे महलमोहणी* ॥ १ ॥
मुख भीच मलरे तस जीव नें, बले मलरे नलकलदिक भीच रे ।
मलरे गले देई गल भीचियो, इण विघ मलरे भूँडी कुमीच रे ॥ इ० २ ॥
घणल जीव बलडल मे घलल ने, देवे चोफेर अगन लगलय रे ।
मलरे अगन धूअल रल जोग सूँ, खोटल परिणलमल तलय रे ॥ ३ ॥
मलरे खडग सूँ मस्तक भेद ने, मलरे मुगदरलदिक सिर मलर रे ।
अथवल मस्तक फलडे विदलर ने, करे जीव ने कलय न्यलर रे ॥ ॡ ॥
तस जीव तणल मस्तक मभे, लललो वलघ वीटे तलण तलंण रे ।
पछे आण वेसलणे तलवडे, इण विघ हणे पलंणी रल पलण रे ॥ ५ ॥
कलल गेहलल ने मलरे हसेँ, कतोहल करवल कलंम रे ।
वले कपट करी भेप पललटे, ते ललपो छिपलवण कलम रे ॥ ६ ॥
खोटो ललचलर गोपवे ललपरो, देखलडे खडो ललचलर रे ।
वले मलयल डलकण मलयल केलेवे, भूठ बोलूँ गोपे वलखुवलर रे ॥ ७ ॥
अणलचलर सेव्यो नहूँ तेहनें, हेले देवे भूठल ललल रे ।
ललप दोप अणलचलर सेव नें, ओर रे सिर देवे रलल रे ॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गलथल के अन्त मे है ।

भरी सभा में बेठी थकी, सके नहीं करतो अन्याय रे ।
 मिश्र भाषा बोले तिण अबसरे, भूठ ने भूठ जाणतो नांय रे ॥ ६ ॥
 राजा रे खंबे लिखमी आवती, द्रोही प्रधान कपट सहीत रे ।
 बले भेद पाहें सुभटां थकी, राजा नें करे राज रहीत रे ॥ १० ॥
 राज लिखमी गयां विल विल करे, तिणनें बोले मरम मोसाबाय रे ।
 बले भोग भोगवतां तेहनें, जोरी दावे देवे अंतराय रे ॥ ११ ॥
 आचारज गणनायक अधपति, त्यारे शिष्य कोइ दुष्ट अविनीत रे ।
 ते मन भांगे ओर साधां तणो, गुर नें करे पदवी रहीत रे ॥ १२ ॥
 जस कीर्ति घटावे गुर तणी, देवे पूजा श्लाघा घटाय रे ।
 बले शिष्य हो तो देखनें बरज दे, उपधादिक री देवे अंतराय रे ॥ १३ ॥
 राजा रे खंबे लिखमी आवती, तिणमें दरवे चोरी री खोड रे ।
 इण विघ गुर सूं चेलो करे, ते तीथंकर रो चोर रे ॥ १४ ॥
 बाल ब्रह्मचारी नहीं ते कहे, हूं तो बाल ब्रह्मचारी अकन कवार रे ।
 बले अल्त्री सेवण गिरवी घणो, विषय पिण वांछे वाह्वार रे ॥ १५ ॥
 ब्रह्मचारी नहीं बले इम कहे, हूं छं शीलवतो ब्रह्मचार रे ।
 जिम गवो भूके गायां मफे, तिम ओ बोले साधां रे मझार रे ॥ १६ ॥
 जिणरी नेश्राय करे आजीवका, घन बघियो तिणरी नेश्राय रे ।
 जस कीरति वधी तिणरी नेश्राय सूं, तिणरो घन लूसे जाय रे ॥ १७ ॥
 बघियो राजादिक री नेश्राये, त्यांनेईज दगो दे ताप रे ।
 बले छल बल खेले तेह सूं, उपगारी नें हुवे दुखदाय रे ॥ १८ ॥
 गुण बघिया गुर री नेश्राये, त्यां सूं दगो करे मन मांय रे ।
 छल छिद्र जोवे चोर नी परे, शिष्य शिष्यणी लेवे फंदाय रे ॥ १९ ॥
 साधु साधवी श्रावक श्रावका, त्यांनें फाडण रो करे उपाय रे ।
 गुर सूं मन भांगे तेहनों, भूठा भूठा अवगुण दरसाय रे ॥ २० ॥
 करे विश्वासघात माहें थको, मुख मोठो खोटो मन मांय रे ।
 बले जिल्लो बांघे ओर साध सूं, आपरो कर राखे ताप रे ॥ २१ ॥
 राजा नही तिणनें राजा कीयो, राज दीघो मोटे मंडण रे ।
 ते तों उपगारी छे मूलगो, तिणनेइज दुख दुख देवे जांण रे ॥ २२ ॥
 सर्पणी इंडा गिले आपरा, अस्त्री मारे निज भरतार रे ।
 बले चाकर मारे ठाकर भणी, गुर नें शिष्य नांखे मार रे ॥ २३ ॥
 मारे देश तणा नायक भणी, सेठ नें हणे माठे ध्यान रे ।
 कोइ मारे अधिकारी पुरुष नें, कुल में दीवा समान रे ॥ २४ ॥

कोइ संत रिषेश्वर मोटको, घणा जीवां रो तारणहार रे ।
 द्वीपा समान डूबता जीव नें, त्यानें हूणे कोइ घेषघार रे ॥ २५ ॥
 केई चारित लेवा उठिया, केइ चारित पाले ताय रे ।
 तिण चारितीया नें चारित थकी, भिष्ट करवा रो करे उपाय रे ॥ २६ ॥
 उतकष्टा ग्यानी केवली, त्यारे संजम तप री समाध रे ।
 ते तो प्रतिबोधे भवि जीव नें, त्यारा बोले अवगुणवाद रे ॥ २७ ॥
 न्याय मारग छे सुध मुगत रो, तिणसूं तपतो रहे दिन रात रे ।
 तिण मारग सूं घणा ने चूकाय दे, खोटी श्रद्धा हिया मे घात रे ॥ २८ ॥
 आचार्य उवभाय त्यां कने, साध हुवो छोडे माया जाल रे ।
 वले भणियो सिद्धात त्यां कने, त्यानेंइज निंदे मूरख बाल रे ॥ २९ ॥
 आचार्य उवभाय तेहने, न करे सेवा भगत मन सुध रे ।
 विनो वियावच पिण करे नही, अहमेव पणा री बुद्ध रे ॥ ३० ॥
 आचार्य उवभाय त्यां कने, ग्यान दरसन चारित पाय रे ।
 त्यां सूं पिण करे मूढ बरोवरी, वले सनमुख भगडे आय रे ॥ ३१ ॥
 आचार्य उवभाय त्या कने, समझे कीयो परित्त ससार रे ।
 वले सजम रे सनमुख कीयो, त्यारा अवगुण बोले वाख्वार रे ॥ ३२ ॥
 आचार्य उवभाय गण थकी, अविनीत ने देवे दूर टाल रे ।
 जब अविनीत क्रोध तणे वसे, हेले देंदे भूठा आल रे ॥ ३३ ॥
 आचार्य उवभाय तेहनी, वदणा छोडावे संका घाल रे ।
 उत्तमा री उतारे आसता, दुष्ट अविनीत री आ चाल रे ॥ ३४ ॥
 आचार्य उवभाया उपरे, कोइ पडिवजियो मिथ्यात रे ।
 तिण अविनीत नें सवलो सूझे नही, करे जोम ने गाढ री वात रे ॥ ३५ ॥
 कोइ बहुश्रुती तो निश्चे नही, ते कहे हू छू बहुश्रुती साध रे ।
 मो बरोबर सूत्तर कुण भण्यो, अभिमानी करे भूठो विवाद रे ॥ ३६ ॥
 कोइ तपसी तो निश्चे नही, ते कहे हू छूं तपसी घोर रे ।
 तिणने तीन लोक रा चोर सूं, उतकष्टो कह्यो वीर चोर रे ॥ ३७ ॥
 बालक तपसी गरढा गिलाण छे, त्यारी न करे वियावच देख रे ।
 ते छती सगत घेठो थको, वले राखे त्या उपर घेख रे ॥ ३८ ॥
 वले कपट केलव भूठो कहे, हू करू छू वियावच ताय रे ।
 पिण दुष्ट परिणामा तेहने, उलटी देवे अंतराय रे ॥ ३९ ॥
 कलह कारणी कथा कहे, वले घाले माहोमा खेद रे ।
 आह्मी साह्मी करे लगावणी, पाडे च्यार तीरथ मे भेद रे ॥ ४० ॥

चेला रो मन भांगे गुर थकी, गुर रो चेला सूं दे मन भांग रे ।
 यानें भेद घाली न्यारा करे, तिण पहर विगाह्यो सांग रे ॥ ४१ ॥
 गुर मोटा उपगारी मुगत रा, त्यां सूं दूर करे भरमाय रे ।
 जीवे ज्यां लग भेला हुवे नहीं, एहवी मोटी देवे अंतराय रे ॥ ४२ ॥
 गण माहें वसे साधु साधवी, त्यामें पाडे विखेरो कोय रे ।
 चित्त भंग करे यांरो एहवो, कदे फेर मिलाप न होय रे ॥ ४३ ॥
 साधु साधवी गुर सूं फाड नें, आपरा कर राखे ताय रे ।
 गुर सूं छानें छानें बांधे जिल्लो, मूरख चोरी करे गण मांय रे ॥ ४४ ॥
 जोतिष निमित्तादिक भाखे घणा, वले हिंसा कीयां कहे घर्म रे ।
 वले पूजा श्लाघा रे कारणे, करे वसीकरणादिक कर्म रे ॥ ४५ ॥
 कांम भोग मिनष देवता तणा तिणमें रहे अतुसो ताय रे ।
 तिणरे वंद्धा घणी कांम भोग री, वले लंपट रहे तिण मांय रे ॥ ४६ ॥
 मोटी रिघ संगत पांमी देवता, ते संजम तप रे प्रसाद रे ।
 इसडा मोटका देवता तणा, कोइ बोले अक्वगुण वाद रे ॥ ४७ ॥
 देवता नही देखे ते कहें, हूं देवता देखूं साख्यात रे ।
 वले अग्यांनी थको लोकां मभे, जिणेसर ज्यूं पूजावे विख्यात रे ॥ ४८ ॥
 तीसां बोलां बंधे महामोहणी, एतो कह्यो तीर्थंकर देव रे ।
 त्यांनैं साधु तो वरजे सर्वथा, तयारी करे इंद्रयादिक सेव रे ॥ ४९ ॥
 संवत अठारे सेंतीसे समें, सावण विद सातम रिक्वार रे ।
 कर्म बंधे छे महामोहणी, जोडी पाहु गाम मभार रे ॥ ५० ॥
 भवि जीवां ने समभायवा ॥

रत्न : १८

दसवें प्राञ्चित्त री ढाल

ढल

दुहा

ठणलडंग तीजे न पांचमे, दशमों डुरलडुत कहुओ जणुरलय ।
जघन्य डरुडड डुरलडुत कण हूी डोल डे, ते डडडत जलणे न्यलय ॥ १ ॥
कोडु दशडुओ डुरलडुत सेवनें, ए आलोए तो डतडवत ।
ते जथलतथ डुरगट करूँ, ते सुणजुओ कर खंत ॥ २ ॥

ढल

[डडरूँ डन हरखे तेह सती]

दुषुट डरलणलडलं ऊंधी धलरे, गुरुवलदक डूवलं रल दलंत डलडे ।
तीनु कषलय वस सडतल नलवें, तलणनें दशडुओ डुरलडुत आवे ॥ १ ॥
करे डुरडलद वस अकरुड डुओटु, ते डुरतख लुक वलरुव खुओटु ।
तलणरुओ लुकक डलण वलगडी जलवे, तलणने दशडुओ डुरलडुत आवें ॥ २ ॥
सलघ सलघवलडुडलं रुओ डेहरुण सलग, डलहुओडल कुथुओ वुरत देवे डुलडुग ।
ते कुवलर तीरुथ डे डलड डलडुत थलवे, तलणने दशडुओ डुरलडुत आवे ॥ ३ ॥
रहुँ एक आकुलरुड रल शलषुड डेले, कुल डलहे वसे सहु डनडेले ।
तुडलडे डेद डलडुण उवडुी थलवे, तलणने दशडुओ डुरलडुत आवें ॥ ॡ ॥
रहे दुओडु आकुलरुड रल गलषुड डेले, गण डलहे वसे सहु डनडेले ।
तुडलडे डेद डलडुण उवडुी थलवे, तलणने दशडुओ डुरलडुत आवे ॥ ॡ ॥
गुरुवलदक री वलडे धलत, एहुवुओ धुडलन रहे दलन ने रलत ।
ते डन डे डलण नही डलडुतलवे, तलणने दशडुओ डुरलडुत आवे ॥ ॢ ॥
ओर सलधलं रल डुडुद जुवे तुलडु, तलणने हेलेवल नलदवल रे कलडु ।
दुषुड डेले कर कर डुडे उदलवे, तलणने दशडुओ डुरलडुत आवे ॥ ॣ ॥
डुरशुन डूडे हलसलदक वलरुवलर, तलण कुलरलत वलल कुीडुओ डुलर ।
ते इहलुक रुओ अरथुी थलवे, तलणनें दशडुओ डुरलडुत आवें ॥ ॡ ॥
कुल गण डे डेद डलडे केडु, हलसल ने डुडुद तणुओ डेही ।
सलवध डुरशुन वलरुवलर वतलवें, तलणने दशडुओ डुरलडुत आवे ॥ ॡ ॥
दुषुट डुरडलद ने अनडन सेवे, तलणरुओ डुरलडुत हलथ जुडी लेवें ।
जे आलुव न सुध थलवें, तलणने दशडुओ डुरलडुत आवे ॥ १० ॥
ठणलडुग तीजे ने डलंचडे ठलणे, तुडलरल डेद अनेक डलडुत जलणें ।
जघन्य डरुडड डेद नुडलरल थलवें, उतकुरुषुटुओ डुरलडुत दशडुओ आवे ॥ ११ ॥

रत्न : १६

जिण लखणा चारित आवे न आवे तिण री ढाल

ढल

दुहा

चारित आवे चोखो चित्त हुवा, पतलो पढ्या मोह कर्म ।
आतम वस छे आपरे, ते पाले छे जिण घर्म ॥ १ ॥
जे तीखी बुद्धि रा मानवी, सरल सभाव मतिवंत ।
ते समझ सताव सयम लीयो, ज्यारी पूरीजे मन खत ॥ २ ॥
केइ समझ्या छे सतगुर कने, पिण न मिटी मन री भोल ।
त्याने चारित आवे किण विधे, माहे मोटी कर्म किल्लोल ॥ ३ ॥
त्याने ससार खारो लागो नही, लपट रह्या तिण माय ।
ते सजम री भावे भावना, पिण संजम आवे नांय ॥ ४ ॥
जिण लखणा चारित आवे नही, जिण लखणा चारित आय ।
त्यारा भाव भेद परगट करू, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ५ ॥

ढल

[समरु मन हरख तेह सती]

त्यारे समकित री सेठी नीव, विनेवंत हलुकर्मी जीव ।
ते ससार सू रहे निरदावे, या लखणा चारित बेगो आवे ॥ १ ॥
जे बेराग मांहे भीना पूरा, ते लोभ लालच सूं रहे दूरा ।
बेरी वाहलां ऊपर रहे समभावे, या लखणा चारित बेगो आवे ॥ २ ॥
त्यारे न्यातीला सू नेह थोडो, वले मोह कर्म रो नही जोरो ।
दिन दिन चोकडी घटावे, या लखणा चारित बेगो आवे ॥ ३ ॥
ते आगूंच मोह माया मूकें, वले सतगुर मिल्यां अवसर नही चूके ।
कर्म काटण ने तप तेज संभावे, या लखणा चारित बेगो आवे ॥ ४ ॥
त्यारे मुगत जावण री लग रही आस, ते काल रो नही करे विश्वास ।
ते आगूंच आपो संभावे, यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ५ ॥
केइ संजम लेवा करे टाला टोला, पल पल में ऊठे अनेक डोला ।
खिण मे रंग विरग होय जावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ६ ॥
लोभ लालच त्यारे नही छटो, न्यातीला सूं नेह पिण नही तूटो ।
माया मेलण री मनसा ल्यावे, या लखणा चारित नही आवे ॥ ७ ॥
बेराग विना निरथक बेठा, त्यानें वतलाया वचन वोलें घेठा ।
शूर बीरपणो त्यामे नही पावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ८ ॥

बले दिन दिन इधक भेले तांता, बाउखा मांसू दिन नही जाणे जाता ।
 हलफल में यूही दिन गमावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ६ ॥
 बले नवा नवा सगपण साधे, आगला सू नेह इधको बांधे ।
 त्वारे काजे कर्मबंध कमावे, यां लखणा चारित नहीं आवे ॥ १० ॥
 ज्यांनें संसार लागे छे अति मीठे, त्यांरो निश्चैई वेंराग जाणो फीटो ।
 ते अंतरंग भावना किम भावे, यां लखणा चारित नहीं आवे ॥ ११ ॥
 आरा मोसर आरंभ में आधो, छकाय मारण केडे लागो ।
 बले मान बडाई में नही मावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ १२ ॥
 जिण आगल्यां पालण सू दूरा, बले सावद्य काम करण शूरा ।
 तिणनें सरायां फल फूल होय जावे, यां लखणा चारित नहीं आवे ॥ १३ ॥
 मूंडे मीठा पिण नही समभावा, घणा जीवा सूं राखे कावा दावा ।
 रात दिवस पेला रो मूंडो चावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ १४ ॥
 संसार में राड भगडा कजिया, तिण मांहे नितका सकिया ।
 थोडा मे पेला रो घर गमावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ १५ ॥
 आहो साहो घणा सूं डस राखे, बले मान बडाई मुख भाखे ।
 वले कुबुद्धि करे कलह लमावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ १६ ॥
 वेंराग रहित बोलें पोला, त्यांरो मनडो खाय रह्यो म्हेला ।
 त्यांरे चारित री चित्त में नावें, यां लखणा चारित नही आवे ॥ १७ ॥
 अथिर सभावी घर छोडण री कहें, त्यांरो भारंभियो तो यूहीज रहें ।
 घडी घडी में परिणाम फिर जावें, या लखणा चारित नहीं आवे ॥ १८ ॥
 वरस छमास में छोडूं गृहपासा, ते दिन आयां ओर बाधे आसा ।
 आगे लगा दिन चलिया जावें, यां लखणा चारित नही आवे ॥ १९ ॥
 संसार नीं वातां सुण सुण हरषे, संजम री वात कीयां धडके ।
 संजम लेवा सूं नहीं उमावे, या लखणा चारित नही आवे ॥ २० ॥
 केइ कर रह्या संजम लेऊं, जाणें गृहवासो जोग साभूं वेहूं ।
 इम करतां करतां नें काल गटकावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ २१ ॥
 संजम लेवा करे गाथा गूथा, ते तों यूही रहे घर में खूता ।
 परिणाम चढ चढ नें पड जावे, यां लखणा चारित नहीं आवे ॥ २२ ॥
 काचे मन चारित री वात काडें, ते तो काम सिराडे किम चाडे ।
 पांणी पर पोटा ज्यू वेंराग विल्लावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ २३ ॥
 केइ आपरा मन सूं शूरा बाजें, काम पड्यां डेरो नाखे भाजे ।
 इण दिष्टान्ते केइ पडिया पोमावे, या लखणा चारित नही आवे ॥ २४ ॥

घर छोडतां करें थागा थेगो, त्यारे नही वेराग रस संवेगो ।
 थागा थेगा कर दिन गमावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ २५ ॥
 इसडा जीव आगे अनत हुवा, उवे आसा अलुवा यूहीज मुवा ।
 ते तो चिहुगति मे गोता खावे, या लखणा चारित नही आवे ॥ २६ ॥
 केइ घर छोडण मन वेराग धरे, जब ओरा ने माहे लेऊ वधो करे ।
 पछे परिणाम पडे जब सीदावे या लखणा चारित नही आवे ॥ २७ ॥
 उणरो वेली घर छोडण री करे, जब कायर रे मन घडक पडे ।
 वधो करने पडियो पिछ्छतावे, या लखणा चारित नही आवे ॥ २८ ॥
 जब उणरा परिणाम पाडण खपे, घणो कूड कपट मुख सू रे जपे ।
 कर्म बंधवा रो डर नही ल्यावे, या लखणा चारित नही आवे ॥ २९ ॥
 आप घर छोडण सूं मन उमावे, जब उणरा पिण परिणाम चढावे ।
 आप डिगियो ओरा ने डीगावे, या लखणा चारित नही आवे ॥ ३० ॥
 चारितिया ने चारित सू मिष्ट करे, तो महामोहणी कर्म रो बध पडे ।
 ते तों ससार में दुखियो थावे, या लखणा चारित नही आवे ॥ ३१ ॥
 साधु सुघ उपदेश दे सुविचारी, उणरा वेली ने करे सजम सू त्यारी ।
 जब ऊ साधा ऊपर पिण दुख पावे, या लखणा चारित नही आवे ॥ ३२ ॥
 के उ भागण री ओर ताके सेरी, घणो भूठ बोले भाषा फेरी ।
 ते बधो भाग ने भागल थावे, या लखणा चारित नही आवे ॥ ३३ ॥
 भागल थई भूठ बोले भारी, केइ होय जाय अनत ससारी ।
 पछे दडी दोटा ज्यूं म्मीका खावे, या लखणा चारित नही आवे ॥ ३४ ॥
 बधो भांग सत्त बोले निरापेखो, इरडा तो वेयक विरला देखो ।
 भारीकर्मा सू साच वोळणी नावे, या लखणा चारित नही आवे ॥ ३५ ॥
 सूंस भागे ने घर मे रहिवा री करे, ते तो साधा रा छिद्र जोवतो रे फिरे ।
 मिनकी उदर ज्यूं माठी भावना भावे, या लखणा चारित नही आवे ॥ ३६ ॥
 कोइ घर छोडण री चित्त मे धागे, जब ओरा रा परिणाम ढील पाडे ।
 जाणे रखे मोसू वडो होय जावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ३७ ॥
 केइ सूस वरत देवे भगो, जब मूरख पामे उछरगो ।
 भागल ने भागल बधिया चावे, या लखणा चारित नही आवे ॥ ३८ ॥
 घर छोडण रा सूस भागे, जब साधा ने असाधु श्रद्धण लागे ।
 आल देतो पिण डर नहीं ल्यावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ३९ ॥
 निलंज सूंस वरत देवे भाग, त्यारा चिहुगति मे नीकले साग ।
 वले लौकिक पिण विगड जावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ४० ॥

लज्यावंत उत्तम नरनार, सूंस वरत करे ते घालें पार ।
 त्यांरा तीर्थंकर पिण गुण गावें, यहा लखणा चारित नही आवे ॥ ४१ ॥
 दोय दोय तरवार बांधे गाढी, वरसो वरस खुरसाण चाढी ।
 कांम पड्यां बारे काढणी नावें, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ४२ ॥
 ज्युं त्यागी वेंरागी बाजें पूरा, घर छोडण निमित्त दीसें शूरा ।
 कांम पड्यां ते पिचक जावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ४३ ॥
 गोला बाण वहे तलवाख्यां भलकी, तिण ठामें कायर जाए सलकी ।
 विरुदावली बोलताई नाठो जावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ४४ ॥
 ज्युं परीसा रूप वहे बाण गोला, ते कायर सुण भाग जाये भोला ।
 तिण भागल नें वेराग विरुद न सुहावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ४५ ॥
 गोला बाण वहे तलवाख्यां भलके, तिण ठामें शूरा हुवे ते नही सलके ।
 ते तों मरण रो डर मूल नही ल्यावे, या लखणा चारित बेगो आवे ॥ ४६ ॥
 ते परीसा रूप गोला बाण वहे, ते सुण सुण उत्तम जीव दृढ रहे ।
 घर छोडतां परीसा रो डर नही ल्यावे, यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ४७ ॥
 केइ कायर संग्राम मांहें जावें, तिणनें न्यातीलादिक याद आवे ।
 ते सनमुख लोह किण विघ खावें, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ४८ ॥
 यूं घर छोडण री चित्त मांहें घरे, ते न्यातीलादिक नें याद करे ।
 त्यांनें छोडी नें किम हुवे निरदावे, यां लखणा चारित नही आवे ॥ ४९ ॥
 शूर संग्राम चढे शस्तर झाले, न्यातीला में चित्त नही घाले ।
 आप जीते ओरा नें हठावे, यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ५० ॥
 ज्युं घर छोडण नें शूरा होवे, ते न्यातीला साहूमों नही जोवे ।
 संजम लेनें कर्म वेंरी खपावे, यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ५१ ॥
 संसार शूरा पिण सेंठी घारे, नासण भागण री नही विचारे ।
 मरण सूं साहूमों मंड जावे, यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ५२ ॥
 इण दिष्टाते वेराग मांहें पूरा, मुगत जावण नें हुवे शूरा ।
 ते घर छोडण रो डर नही ल्यावे, त्यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ५३ ॥
 कर्म रोकण तोडण री सेंठी घारे, ओर आल पंपाल नही विचारे ।
 आड दोड चित्त में मूल नही ल्यावे, यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ५४ ॥
 एक मुगत जावण री र.खे आसा, ओर छोड दे सर्व आसापासा ।।
 संसार सुखां में रति नही पावे, यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ५५ ॥
 इम सुण नें उत्तम नरनार, सूंस वरत पालो निरतीचार ।
 ज्युं जनम मरण दुख मिट जावे, यां लखणा चारित बेगो आवे ॥ ५६ ॥

वरस पेतीसे संवत अठारे, महासुदि चोथ दिन बुधवारे ।
देश मेवाड वनेडे गाम, जोड पूरी कीधी छे तिण ठाम ॥ ५७ ॥



रत्न : २०

सूस भंगावण रा फल री ढाल

ढाल

दुहा

वनस्पति ढाल नें पाच काय थी, अनंत गुणा अभी जाण ।
 त्यासू पडिवाई समदिष्टी अनंत गुणां, समकित भिष्ट अयाण ॥ १ ॥
 त्यामे केकां तो-भांग्यो साधपणो, केका भांग्यो श्रावकपणो जाण ।
 केइ भिष्ट हुवा समकित थकी, होय गया मूढ अयाण ॥ २ ॥
 ते पडिया छे नरक निगोद में, तिहा खाये अनंती मार ।
 अनंत काल लगे दुख भोगवे, तिणरो बेगो न आवे पार ॥ ३ ॥
 भागल हुवा छे बापडा, दीधो जीतब जनम विगाड ।
 थोडा सुखां रे कारणे, गया जमारो हार ॥ ४ ॥
 भागल भिष्ट्या ने निषेधियां, सूतर सिद्धांत रे माय ।
 थोडा सा परगट करूं, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[भविष्य सेवा रे साध सथाखा]

छोटो मोटो सूंस व्रत आदरो तो, पालज्यो रुडी रीत ।
 जे सूंस भाग ने भिष्ट हुवा ते, चिहू गति मे होसी फजीत रे ।
 भविष्य सूंस म भांगो लिगारी, सूंस भांग्या सूं घणी खुवारी रे ॥ भ० ॥
 टांको भले तो अनंत ससारी* ॥ १ ॥
 छोटोइ सूंस भागे छे तिणमें, हवाल पडे छे अतंत ।
 तो मोटा मोटा सूंस भागे छे तिणरो, होसी कुण विरतत रे ॥ भ० २ ॥
 हिंसा भूठ चोरी मैथुन ने परिग्रहो, त्याने त्यागे छे आण वेरागो ।
 त्यारा त्याग जाण ने भागे, तिणरो छे पूरो अभागो रे ॥ ३ ॥
 छक्राय हणवा रा त्याग करे ने, पहख्यो साध रो सांग ।
 शोलादिक आदख्यो रुडी रीते, वले रोटी खाए छे माग रे ॥ ४ ॥
 करडा करडा सूंस कीया छे त्याने, भाग करे चकचूर ।
 ते वूडा छे बापडा जीव अग्यानी, ते पड गया मुगत सू दूर रे ॥ ५ ॥
 केइ सूंस भांगी ने परणीजे पापी, वले चोथो व्रत देवे भाग ।
 तिण पापी जीव रा चिहूंगति माहे, घणा निकलसी सांग रे ॥ ६ ॥
 चोथो व्रत शील आदर ने भागे, तिण दीधी नरक नी नीव ।
 तिणने परमावांभी मार देसी जब, करसी नरक मे रीव रे ॥ ७ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाया के अन्त मे है ।

शीलव्रत आदर नें सर्व अस्त्री नें, थापी छे मा बेंन सामान ।
 तिणनें परणीजे तिणसूं करे गृहवासो, ते चिहुगति में होसी हेंरान रे ॥ ८ ॥
 शील आदरियो जब सर्व अस्त्री नें, मूख सूं कही छे मा बेंन ।
 तिणसूं हीज पाछो करे ग्रहवासो, ते किण विघ पांमसी चेंन रे ॥ ९ ॥
 व्रत भांग नें भागल हुवा तिण, दीयो जीवत जनम विगाड ।
 नरक निगोद तणो पाहुणो होय बेटो, गयो जमारो हार रे ॥ १० ॥
 सूंस तणा भागल छे त्यानें, जक कठे नहीं होय ।
 दुख भोगवसी नरक में निरंतर, तिहां सुख नों संचार न कोय रे ॥ ११ ॥
 सूंसा रो भागल संसार माहें खले तो, उतकष्टो अनंतो काल ।
 ते तों नरक निगोद में भीकां खासी, तिणरो वेगा न आवे निकाल रे ॥ १२ ॥
 अनंतेइ काले मिनष हुवे तो, गूंगो मूंगो दुखियारी होय ।
 आछो खाणो पीणो मिले नहीं तिणनें, रहे हींजरतो सोय रे ॥ १३ ॥
 बाल्हां रो विजोग पडे ऊगतां रे, मिले दुशमण तणो सजोग ।
 आदर भाव कठे नहीं पामें, नित्य रहे संताप नें सोग रे ॥ १४ ॥
 कहि कहि नें कितरा एक कहूं, तिणरा दुखां रो छेह न पार ।
 छेदन भेदन पामें संसार रे माहें, तिणरो कहणी नावे विस्तार रे ॥ १५ ॥
 इहलोक माहें पिण फिट फिट हुवे, सूंस व्रत रो भागणहार ।
 मस्तक नीचो घाले लोका में, तिणनें सहु कोइ देवे धिकार रे ॥ १६ ॥
 लज्या रहित निरलज्या मानव, सूंस भांगता मूल न लजे ।
 तिणनें परलोक नी परवाह नहीं छे, बकाखाई गीदंड जिम भाजे ॥ १७ ॥
 शील व्रत भांगो छे तिणरा, पाचूं व्रत हुवा चकचूर ।
 मानव नों भव खोए अंग्यानी, गयो बहती रे पूर रे ॥ १८ ॥
 पाप करे त्यानें पापी कहीजें, पाप्यां तणी पात मांय ।
 पिण सूंस व्रत भागे ते महापापी छे, महा पाप्यां री पांत माहे गिणाय रे ॥ १९ ॥
 तिणरे पाप उदे हुवे इण भव माहें, तो बधें घणो रोग सोग ।
 रिधि संपति रो छेहडो आवे इण भव में, पडे बाल्हां तणो विजोग रे ॥ २० ॥
 जातिवंत लज्यावंत कुलवंत तिणरो, कर्म जोगे गयो व्रत भागी ।
 ते परभव नें लोकिक सूं डरतो, पाछो ऊठ खडो रहे जागी ॥ २१ ॥
 भागल होय होय नें पाछा उच्छा अनंता, टाल्या आतम ना सर्व दोष ।
 सूंस भांगा ते पाछा सताब सूं साधे, उणहिज भव पोहता मोष ॥ २२ ॥
 सूंस भांग नें भागल मिष्ट हुआ ते, धर्म सूं होय गयो रीतो ।
 काल कीयो आलोयां पडिकमियां विण, तिणमें भव भव में होसी कुपीतो रे ॥ २३ ॥

केइ भागल भिष्टी छें भारीकर्मां, ते तो भागल बधिया चावे ।
 घर छोडण रो बंधो कीयो आप साथे, तिणरोई बंधो भंगावे रे ॥ २४ ॥
 सूंस भागे ने भागल भिष्ट हुआ छे, त्या सूं साधपणो लेणी नावे ।
 तिणनें आपरा अवगुण तो मूल न सूंसे, उलटा साधा मे दोष बतावे रे ॥ २५ ॥
 केइ टोलां तणा टालोकड भिष्टी, त्या साधा सूं पड्विजियो मिथ्यात ।
 ते पिण सावां मे दोष कहे अणहुता, भूठ सू न डरे तिलमात रे ॥ २६ ॥
 केइ साधपणो लेवा ने ऊठ्या, सूंस भाग रह्या घर माय ।
 ते पिण सावां मे दोष कहे अणहुता, निज अवगुण देवे छिपाय रे ॥ २७ ॥
 टोलां रा टोलाकड भागल भिष्टी, त्यारा बोल्या री नही परतीत ।
 त्यारी समदिष्टी ने संगत न करणी, आजिण मारग री रीत रे ॥ २८ ॥
 केइ तो सूंस भागे ने बेठा, केइ पेला रा सूंस भगावे ।
 त्यारी पिण आहिज रीत जाणो, नरक निगोद मे दुख पावे रे ॥ २९ ॥
 कोइ चढता परिणामा सूंस पाले छे, चढता परिणामां अधिक वेरागो ।
 चारित लेवा उद्यमी थया छे, मुगत जावा सूं चित्त लागो रे ॥ ३० ॥
 तिणरा कोइ सूंस भंगावण दुष्टी, करे अनेक उपाय ।
 ते डूव गया वापडा अग्यानी, त्याने भव भव मे दुख थाय रे ॥ ३१ ॥
 केइ सूंस भगावे उपसर्ग कर ने, दुख देइ विवध परकार ।
 चारित लेवा ने ऊठ्या छे तिणने, कर दे थोडा मे खुवार रे ॥ ३२ ॥
 केइ चारित लेवा ऊठ्या छे तिणनें, कु कलाकार देवे चलाय ।
 विषय री वाता सुणाए तिणने, ससार नां सुख वताय रे ॥ ३३ ॥
 कोइ चारित लेवा ने उठ्यो छे तिणने, मिष्ट करण ने ताम ।
 सावां मे दोष अणहुता बताए, पाडे तिणरा परिणाम रे ॥ ३४ ॥
 साधा री आसता उतारण ने उणरा, परिणाम करे चकचूर ।
 चारितिया ने मिष्ट करे चारित सूं, ते तो गया बहती रे पूर रे ॥ ३५ ॥
 सुध सावां ने असाधु सरघा ए पापी, करे चारित सूं मिष्ट ।
 एहवा कांम करे ते मिथ्यांती, भूंडी छे तिणरी दिष्ट रे ॥ ३६ ॥
 सुध सावां ने असाधु कह्या तिण, मोटो कीयो अन्याय ।
 वले मिष्ट कीयो चारित लेवा सूं, ओ तो पूरो बूडण रो उपाय रे ॥ ३७ ॥
 छकाय हणवा रा त्याग करनें, रोटी तिण माग ने खावे ।
 वले पाच आश्रव ना त्याग छे तिणरा, जोरी दावो करे भंगावे रे ॥ ३८ ॥
 पांच आश्रव ना त्याग भगाए पापी, साधपणो लेवा दे नाय ।
 तिण मोटो अकार्य कीयो अग्यानी, बूडो संसार समुद्र रे मांय रे ॥ ३९ ॥

साधु रो भेष उतरावे पापी, माधे बंधावे पाप ।
 छत्राय मारण नें सरु कीयो छे, तिणरो पिण जाणो पूरो अमाग रे ॥ ४० ॥
 भेष उतारण री कोइ करे दलाली, तिण दलाली सूं होसी खुराव ।
 ते पिण चिहुंगति माहें गोता खासी, भव भव माहें जासी आव रे ॥ ४१ ॥
 परतणा सूस भंगावे पापी, मोष जावा री दे अंतराय ।
 तिणरे चीकणा कर्म बंधे छे भारी, तिणसूं भव भव में दुख थाय रे ॥ ४२ ॥
 चारितीया नें भिष्ट करे चारित सूं, इणसूं इषको नहीं कोइ पाप ।
 एहवा पाप सूं जाए पडें नरक माहें, तिहां होसी घणो सोग संताप रे ॥ ४३ ॥
 चारितीया नें भिष्ट चारित सूं, करवा नें, खोटी काढे मूंडा सूं वाणी ।
 तिणरी परमाचामी नरक रे माहें, जीम काढे जडां सूं तांणी रे ॥ ४४ ॥
 नरक तणा दुख सहे अनंता, सूसा रो भंगावणहारो ।
 छेदन भेदन मार अनंती, तिणरो कहितां न आवे पारो रे ॥ ४५ ॥
 उत्तकष्टो छले तो काल अनंतो, नरक निगोद मभार ।
 अनंता काल में दुख सहे अनंता, सूसा रो भंगावण हार रे ॥ ४६ ॥
 कदा पाप उदे हुवे इण भव माहें, तो बवें घणो रोम सोग ।
 वले छेहडो आवे रिघ संपत केरो, पडें वाल्हां तणो विजोग रे ॥ ४७ ॥
 केइ तो आंवा होय जाअे इण भव में, जाबक होय जाअे निरावार ।
 भीख भमता हुवे इण भव मे, सूसा रा भंगावण हार रे ॥ ४८ ॥
 केइ तो मर जाअें अन्न विहुणा, करता थकां विल विलट ।
 परतणा सूस भंगावे तिणरा, भव भव में हुवे एहिज घाट रे ॥ ४९ ॥
 सर्व संसार नां कांमा चालू कीया छे, सूसा रो भंगावण हार ।
 तिण महामोटो पाप में सीर घाल्यो, ते तों बूड गयो काली धार रे ॥ ५० ॥
 इम सांभल उत्तम नरनारी, पेला रा सूस मति भंगावो ।
 इण कुकरम री दलाली मत करज्यो, जो जीव नें सुख चावो रे ॥ ५१ ॥
 कोइ धर्म थकी डिगती हुवे तिणनें, पाछो समभाय नें थिर कीजे ।
 यूं कीधां तो कर्म तणो निरजरा हुवे, डूबता नें पिण उद्धर लीजे रे ॥ ५२ ॥
 धर्म सूं डिगता नें थिर कीयां सूं, टल जाए कर्म री छोट ।
 जो उत्तकष्टो रस आवे तो जिण रे, बंधे तीथंकर गोतर रे ॥ ५३ ॥
 सूस भंगावे तिण रा फल उपर, जोडी पाहू गांम मभार ।
 संवत अचारे नें चोपनैं वरसे, चेत सुद्ध तेरस नें गुरवार रे ॥ ५४ ॥

रत्न : २१

सांम धर्मी सांमद्रोही री ढाल

ढाल

[म्हें तो भार लियो सो लियो]

ऊंदर ऊंर मिनकी चापी जाण, जब जोगी ऊंदर री अणुकंपा आण ।
 तिण जोगी मंत्र पढ्यो ततकाल, उदर ने कीयो घोघड विकराल ॥ १ ॥
 जब मिनकी न्हाट्टी घोघड ने देख, घोघड देख ने चाप्यो स्वान वशेख ।
 जोगी घोघड नी करुणा लीघ, कुतो सिकारी ततक्षण कीघ ॥ २ ॥
 अहो कर्म गति इघकी देख, जोगी मोह्यो राग वशेख ।
 स्वान देखी चीत्तो चाप्यो आय, जब स्वान नें जोगी सिंह कीयो ताय ॥ ३ ॥
 जब चीत्तो नाठो सिघरी देख हाक, सीकंप हुवो पडी मन में धाक ।
 हिवें तिण सिंह ने भूख लागी छे तांम, तिण जोगी नें खावा उठ्यो तिण ठाम ॥ ४ ॥
 जब जोगी देख मन इचरज यात, देखो नीच उदर री जात ।
 इणरी मिनकी करती अकाले घात, ते म्हे वचा लियो साख्यात ॥ ५ ॥
 म्हारो उपगार कीयो न गिण्यो तिलमात, म्हारी उलटी मांडी करवा घात ।
 म्हें नीच ऊंदर नें ऊंचा लियो, सिघ नी पदवी दे ने मोटो कीयो ॥ ६ ॥
 नीच नें वधाख्यां आछो हुवे नाहि, ते भाख्यो छे नीति सास्र माहि ।
 तो इणनें पाछो ऊंदर करूं मंत्र राल, सिघ नें ऊंदर कीयो ततकाल ॥ ७ ॥
 ते ऊंदर जाबक हुवो अनाथ, तिण री मिनकी वले करवा मांडी घात ।
 जोगी देख अणुकंपा कीवी नाहि, किरतधन मुवो ते दिल रे माहि ॥ ८ ॥
 ज्यू नीच नें ऊच पदवी जीखे नाहि, जोय देखो लोकिक लोकोत्तर माहि ।
 किण ही राय वधाख्या अमराव दाय, वले कीया पदवी घर मोटा सोय ॥ ९ ॥
 यामे एक तो साम धर्मी सुवनीत, वले राजनीति जाणें सर्व रीत ।
 तिण सूं राय रूठो किणवार, पट्टो उतार काढ्यो देश वार ॥ १० ॥
 जब राय ऊंर इण न कख्यो रोस, जाण लियो निज कर्म रो दोष ।
 अलगो रहे तोही माने कीयो उपगार, राजा तणो सदा रहे हितकार ॥ ११ ॥
 कदा राजा ने भीड पडी सुण कान, भीड आयो लेइ साथ सामान ।
 वले मुख सूं कहै म्हारा सिर धणी आप, सारो दीसैं ते आप तणो परताप ॥ १२ ॥
 इम सुण नें तिण सूं रीइयो राय, आगे विचेइ धणों वधाख्यो ताय ।
 वले घणो वधाख्यो तिणरो मान, आगेवांग कीयो सगली ठाम ॥ १३ ॥
 बीजो हरामखोर लूणहराम, सामद्रोही रा दुष्ट परिणाम ।
 तिण सूं पिण राय रूठो किणवार, तिणरो पट्टो उतार काढ्यो देश वार ॥ १४ ॥

जब ऊ घाडा करे वले करे उजाड,
 फिर फिर मारे वले नगर नें ग्राम,
 राजा सूं जुध करे ताण ताण,
 ज्यां वधाख्यो त्यांसूं ही मांड्यो गर्व,
 जब राजा अनेक करणें उपाय,
 इणरा हाथ पांव कांन नाक नें काट,
 वले विवध परकारे दीघी मार,
 एतो लोकिक कह्यो दिष्टांत,
 एक आचार्य मोटो अणगार,
 त्यांनैं समक्ति पमाय नें कीया साध,
 यामें एक तो गुर भगता सुवनीत,
 घणो भणे तोही न करे मांन,
 तिणनैं गुर करडे वचनैं देवे सीख,
 वले गुर निखेदे वारूंवार,
 गुर नें देखी करडी निजर कळड,
 गुर राखे तो रहे गुर नी हजूर,
 सदा गुर सूं राखे सुध परिणाम,
 याद आवे गुर नों कीयो उपगार,
 एहवा गुणां करे कर कर्मां नो सोख,
 एहवा उंच जीव ऊंच पदवी लही,
 दूजा अवनीत री ऊंची रीत,
 गुर सूं पिण यो करे अभिमान,
 तिणनैं गुर सीख देवे चूको देख,
 घणो छेडवे तो करे विगाड,
 वले दूजो अवनीत हुवो टोलां मांय,
 गुर सूं मन भागे कूडी कर कर वात,
 गुर ना अवगुण बोले दिन रात,
 अवनीत वधारे अति ही मिथ्यात,
 टोलां नें गुर सूं जागे वेर,
 केयक एहवा हुवे अवनीत,
 ते फिट फिट हुवो इहलोक मभार,
 घणो भमण करे संसार मभार,

राय तणा देव नें करे विगाड।
 वलि राय सूं सनमुख करे संग्राम ॥ १५ ॥
 देखो नीच वधाख्यां रा ए फल जाण।
 उपगार कीयो ते भूल भयो सर्व ॥ १६ ॥
 हरामखोर नें पकड लीयो ताय।
 गांम दोले फेख्यो गवे चाड ॥ १७ ॥
 फिट फिट हुवो लोक मभार।
 हिंवे लोकोत्तर सुणो मन खांत ॥ १८ ॥
 दोय जणा सूं कीयो उपगार।
 वले ग्यांन भणाय नें करी छेसमाध ॥ १९ ॥
 तिण नें असल साध री रीत।
 अवनीत री वात सुणे नहीं कांन ॥ २० ॥
 तो पिण अविनां साहीं न भरे वीख।
 तो पिण न करे क्रोध लिगार ॥ २१ ॥
 तो पिण न विगाडे मुख नो नूर।
 गुर दूरी राखे तो सुखे रहे दूर ॥ २२ ॥
 रात दिवस करे गुर रा गुण ग्राम।
 ते तों कदेय न घाले विसार ॥ २३ ॥
 अनुक्रमें पांमैं अविचल : मोख।
 त्यांरा मुख रों कोइ पार नहीं ॥ २४ ॥
 घणो भणे ज्यूं घणो अवनीत।
 ओर अवनीत नें लगावे कांन ॥ २५ ॥
 तो तुरत जागे अवनीत नें घेक।
 क्रोध करे नें होय जाए न्यार ॥ २६ ॥
 तिणनैं पिण देवे भरमाय।
 तिण अवनीत नें ले जावे साध ॥ २७ ॥
 संका पिण नांणे तिलमात।
 भूठी कर कर मुख सूं वात ॥ २८ ॥
 अवनीत हुवे छे एहवा गेर।
 त्यांनैं छेडवियां बोले विपरीत ॥ २९ ॥
 आगे नरक निगोद में खाए मार।
 तेहनों कहिवां नावें पार ॥ ३० ॥

नीच नें बधाखां बाछो नाहिं, ज्युं अविनीत जाण लेजो मन माहिं ।
इम सामल ने उत्तम नर नार, अविनीत ने नीचनो सग निवार ॥ ३१ ॥



रत्न : २२

शील की नव बाढ

ढाल : १

दुहा

श्री नेमीसर चरण जुग, प्रणमूं उठ परभात ।
 बावीसमां जिण जगत गुर, ब्रह्मचारी विख्यात ॥ १ ॥
 सुंदर अपछर सारिखी, विद्यु सम राजकुमार ।
 भर जोवन में जुगति सूं, छोडी राजल नार ॥ २ ॥
 ब्रह्मचर्यं जिण पालीयो, घरतां दूघर जेह ।
 तेह तणां गुण वरणव्यां, पांमें भव जल छेह ॥ ३ ॥
 कोड केवली गुण करे, रसना सहस वणाय ।
 तो ही ब्रह्मचर्यं नां गुण घणां, पूरा कह्या न जाय ॥ ४ ॥
 गलित पलित काया थई, तो ही न मूकें आस ।
 तरुणपणे जे वरत घरे, हूं बलीहारी तास ॥ ५ ॥
 जीव विमासी जोय तूं, विषय म राच गिवार ।
 थोडा सुखां रे कारणे, मूरख घणा म हार ॥ ६ ॥
 दस दिष्टते दोहिलो, लाघो नर भव सार ।
 सील पालो नव वाड सूं, ज्यूं सफल हुवे अवतार ॥ ७ ॥
 सील माहें गुण अति घणा, ते पूरा कह्या न जाय ।
 थोडा सा परगट कळं, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ८ ॥

ढाल

[मन मधुकर मोही रह्यो]

सीयल सुर तखर सेवीये, ते वरतां माहें गिरवो छे एह रे ।
 सीयल सूं सिव सुख पामीये, त्यां सुखां रो कदे नावें छेह रे ।
 सीयल सुर तखर सेवीये* ॥ १ ॥
 सीयल मोटो सर्व वरत में, ते भाप्यो छे श्री भगवंत रे ।
 ज्या समकित सहीत वरत पालीयो, त्यां कीयो संसार नों अत रे ॥ सी० २ ॥
 जिण सासण वन अति भलो, ते नंदण वन अनुसार रे ।
 जिणवर वनपालक तेह में, ते कख्या रस भडार रे ॥ ३ ॥
 विरख तिण वन में सील रूपीयो, तिणरें मूल दिढ समकित जाण रे ।
 साखा छें महावरत तेहनी, प्रति साखा अणुवरत वखांण रे ॥ ४ ॥

*यह आंकी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

साधा साधवी श्रावक श्रावका, त्यांरा गुण रूप पत्र अनेक रे ।
 महुकर करम सुभ बंध नों, परमल गुण वशेख रे ॥ ५ ॥
 उत्तम सुर सुख रूप फूलडा, सिव सुख ते फल जाण रे ।
 तिण सीयल विरख रा जतन करों, ज्यूं वेगी पांमों निरवांण रे ॥ ६ ॥
 संसार सीयल थकी उघरे, जो पाले नव कोटी अर्भण रे ।
 तो स्वयंभू रमण जितलों तिस्थों, सेष रही नदी गंग रे ॥ ७ ॥
 उत्तराघेन रें सोल में, बंभ समाही ठाण रे ।
 कीची तिण विरख नें राखवा, नव बाड दसमों कोट जाण रे ॥ ८ ॥

ढाल : ३

दुहा

कथा न कहणी नार नी, ते जिण कही दूजी बाड ।
जो नारी कथा कहे तेह सू, हुवे वरत विगाड ॥ १ ॥
जे भूल रह्या ब्रह्म वरत मे, त्यारे विषे नही मन माय ।
ते ब्रह्मचारी नें नारी कथा, करवी सोभे नाय ॥ २ ॥

ढाल

[कपूर हुवे अति उजलो य]

जात रूप कुल देसनी रे, नारी कथा कहे जेह ।
वार वार कथा करे रे, तो किम रहे वरत सूं नेह रे ।
भवीयण नारी कथा निवार, तू तो दूजी बाड विचार रे* ॥ १ ॥
चद मुखी मिरग लोयणी रे, वेणी जाणे भूयग ।
दीप सिखा सम नासिका रे, होठ प्रवाली रे रंग रे ॥ २ ॥
वाणी कोयल जेहवी रे, हाथ पाव रा करे वखाण ।
हस गमणी कटी सीह समी रे, नाभि ते कमल समाण रे ॥ ३ ॥
कूख छें जेहनी अति भली रे, वले अग उपग अनेक ।
त्याने वाहवार न सरावणा रे, आणी मन मे विवेक रे ॥ ४ ॥
जयातथ कहितां थका रे, दोष नही छे लिंगार ।
पिण विना काम कहिवा नही रे, नारी रूप वर्ण सिणगार रे ॥ ५ ॥
नारी रूप सरावतां रे, बघे छे विषे विकार ।
परिणाम चल विचल हुवे रे, हुवे वरत नो विगाड रे ॥ ६ ॥
मली कुमारी नो रूप सांभल्यो रे, छहू राजा रा चलीया परिणाम ।
त्यां सगाई करण ने दूत मेलीयो रे, विगड्यो मांहोमांही तान रे ॥ ७ ॥
मिरगावती रो रूप सांभल्यो रे, चडप्रद्योत राजान ।
तिण कोसवी नगर घेरो दीयो रे, करायो मिनषा रो घमसाण रे ॥ ८ ॥
तिणरे हाथे न आई मिरगावती रे, ते यूंही हुओ खुराब ।
फिट फिट हुओ लोक मे रे, घणी पडाइ आव रे ॥ ९ ॥
पदमोतर राजा नारद कनें रे, द्रोपदी रा रूप री सुण वात ।
देव कनें मगाई तिण द्रोपदी रे, तो इजत मगाई साख्यात रे ॥ १० ॥

*यइ आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

सम स्रणगार देवांगणा, आई चलावण तास हो ।
 तिण आगे तो चलीयो नही, तो ही रहिणों एकंत वास हो ॥ ५ ॥
 अस्त्री हुवें तिहां वासो रहें, कदा चल जाअें परिणाम हो ।
 जब दिढ रहिणों दोहिलों, भिष्ट हुवें तिण ठाम हों ॥ ६ ॥
 सींह गुफावासी जती, रह्यो वेखा चित्रसाल हो ।
 तुरत पख्यो वस तेहनें, गयो देस नेपाल हो ॥ ७ ॥
 कुल बालूरो साथ थो, तिण भाग्यो वरत रसाल हो ।
 कोणक री गणका वस पख्यो, ते रुलसी अनंतो काल हो ॥ ८ ॥
 मंजारी जिहां उंदर रहें, ते घात पांमे ततकाल हो ।
 ज्यूं नारी तिहां ब्रह्मचारी रहें, भागे सीयल रसाल हो ॥ ९ ॥
 बाड सहीत सूष पालीयें, पूरीजे मन खांत हो ।
 आ सीख दीवी छें, तो भणी, तं रहिजे जायगां एकंत हो ॥ १० ॥

ढाल : ३

दुहा

कथा न कहणी नार नी, ते जिण कही दूजी बाड ।
जो नारी कथा कहे तेह सूं, हुवे वरत विगाड ॥ १ ॥
जे भूल रह्या ब्रह्म वरत मे, त्यारे विषे नही मन मांय ।
ते ब्रह्मचारी ने नारी कथा, करवी सोमे नाय ॥ २ ॥

ढाल

[कपूर हुवे अति उजलो य]

जात रूप कुल देसनी रे, नारी कथा कहे जेह ।
वार वार कथा करे रे, तो किम रहे वरत सू नेह रे ।
भवीयण नारी कथा निवार, तू तो दूजी बाड विचार रे* ॥ १ ॥
चद मुखी मिरग लोयणी रे, वेणी जाणे भूयग ।
दीप सिखा सम नासिका रे, होठ प्रवाली रे रंग रे ॥ भ० २ ॥
वाणी कोयल जेहवी रे, हाथ पाव रा करे वखाण ।
हस गमणी कटी सीह समी रे, नाभि ते कमल समाण रे ॥ ३ ॥
कूख छे जेहनी अति भली रे, वले अंग उपग अनेक ।
त्याने वास्वार न सरावणा रे, आणी मन मे विवेक रे ॥ ४ ॥
जथातथ कहिता थका रे, दोष नही छे लिंगार ।
पिण विना काम कहिवा नही रे, नारी रूप वर्ण सिणगार रे ॥ ५ ॥
नारी रूप सरावता रे, वघे छे विषे विकार ।
परिणाम चल विचल हुवे रे, हुवे वरत नो विगाड रे ॥ ६ ॥
मली कुमारी नों रूप सामल्यो रे, छहू राजा रा चलीया परिणाम ।
त्या सगाई करण ने दूत मेलीयो रे, विगड्यो माहोमाही तान रे ॥ ७ ॥
मिरगावती रो रूप सामल्यो रे, चंडप्रद्योत राजान ।
तिण कोसबी नगर घेरो दीयो रे, करायो मिनषा रो घमसाण रे ॥ ८ ॥
तिणरे हाथे न आई मिरगावती रे, ते यूही हुओ खुराब ।
फिट फिट हुओ लोक मे रे, घणी पडाइ आव रे ॥ ९ ॥
पदमोतर राजा नारद कने रे, द्रोपदी रा रूप री मुण बात ।
देव कने मगाई तिण द्रोपदी रे, तो इजत गमाई साख्यात रे ॥ १० ॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

नारी कथा सुणनें विगड्या घणां रे, त्यांरा कहितां न आवें पार।
 ते भिष्ट हुवां वरत भांग नें रे, ते हार गया जमवार रे ॥११॥
 नीवू फल नीं वारता सुण्यां रे, मुख पांणी मेलें छें ताय।
 ज्यूं अस्त्री कथा सुणीयां थकां रे, परिणाम थोडा में चल जाय रे ॥१२॥
 संका कंखा वितिगच्छा मन उपजें रे, सीयल वरत पालूं के नाहीं।
 तिण सूं नारी कथा करवी नही रे, दूजी बाड रें माहीं रे ॥१३॥
 वार वार अस्त्री तणी रे, कथा न कहणी ताम।
 ए बीजी बाड सुघ पालसी रे, ते पांमसी अविचल ठाम रे ॥१४॥

ढाल : ४

दुहा

हिवें तीजी वाड मे इम कह्यो, ब्रह्मचारी नार सहीत ।
 एकण सय्या नही बेसवो, ए जिण सासण री रीत ॥ १ ॥
 अगन कुड पासें रहे, तो प्रगले घृत नो कुंभ ।
 ज्युं नारी संगति पुरखे नो, रहे किसी पर बंध ॥ २ ॥
 ब्रह्मचारी जोगी जती, न करें नार प्रसंग ।
 एकण आसण बेसता, थावें वरत नों भंग ॥ ३ ॥
 पावक गाले लोह ने, जो रहें पावक संग ।
 ज्युं एकण आसण बेसता, न रहे वरत सूरंग ॥ ४ ॥

ढाल

[अमिया रांणी कहे धाय ने]

तीजी वाड हिवें चित्त विचारो, नारी सहित आसण निवारो लाल ।
 एकण आसण वेठा काम दीपे छे, ते ब्रह्मचारी ने आछो नही छे लाल ।
 तीजी वाड हिवे चित्त विचारो ॥* १ ॥
 एकण आसण वेठा आसगो थावें, आसगे काया फरसावे लाल ।
 काया फरस्यां विपें रस जागे, इम करतां जावक वरत भागें लाल ॥ ती ० २ ॥
 पाट वाजोट सेज्जा सथारो जाणो, एहवा आसण अनेक पिछ्छाणों लाल ।
 तिहां नारी सहीत बेसो मत कोइ, जिण वचनां साह्यो जोई लाल ॥ ३ ॥
 अस्त्री सहीत बेसे एकण आसण, तो वले लोक पडें छे विमासण लाल ।
 अछतोई आल दे करें फित्तूरो, वले बोले अनेक विध कूडो लाल ॥ ४ ॥
 जिन ठामे बेठी हुवें नारी, तिण ठामे न बेसे ब्रह्मचारी लाल ।
 बेसैं तो अंतर मूहरत टाली, वेद सभाव संभाली लाल ॥ ५ ॥
 नारी वेद रा पुदगल तिण थी, नर वेद विकार वेदे जिण थी लाल ।
 यूहीज नारी ने पुरख सूं जाणों, मांहोमा वेद विकार पिछ्छाणो लाल ॥ ६ ॥
 नारी फरस वेद्या हुवे भोग रो रागी, जब जावे वरत सूं भागी लाल ।
 इण कारण एकण आसण बेसणो नाही, नारी फरस सूं डरणों मन माही लाल ॥ ७ ॥
 श्री रांणी सम्भूत वाद्यो आणी मन रागों, कर फरस मुनी तन लागों लाल ।
 तिण चारित्र खोय नीहाणो कीघो, दुरगत नों पथ लीघो लाल ॥ ८ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ते देव थई चक्रवत् हुवों, भोग माहें प्रिधी थको मूव्यो लाल ।
 सातमीं नरक माहें जाय पडीयो, पाप सूं पूर्ण भरीयो लाल ॥ ९ ॥
 नारी फरस वेद्यां सूं ओगुण अनेक, तिण सूं आसण न बेंसणों एक लाल ।
 संका कंखा वित्तगच्छा उपजें मन माही, सील वरत पालूं के नाहीं लाल ॥ १० ॥
 ए बाड लोपी तिण बात विगोई, तिण दीयो ब्रह्म वरत खोइ लाल ।
 ते नरक निगोद माहें जाय पडीया, ते संसार में रडबडिया लाल ॥ ११ ॥
 काचर कोहलो फाड्यां कर फाटों, तिण सूं वाक तूट हुवें आटो लाल ।
 ज्यू अस्त्री सूं एकण आसण बेंठां ताम, ब्रह्मचारी रा चलें परिणाम लाल ॥ १२ ॥
 मा बेंन बेटी पिण इम हीज जाणों, एकण आसण मतीय बेंसाणों लाल ।
 त्यां सूं पिण भाग गया छें अनंत, ते भाव्यो छें श्री भगवंत लाल ॥ १३ ॥
 इम सांभल तीजी वाड म लोपो, ब्रह्मचर्य में धिर पग रोपो लाल ।
 तो सिव रमणी नें वेगी वरसों, आवागमण न करसों लाल ॥ १४ ॥

ढाल : ५

दुहा

नारी रूप नही विरखणो, ए जिण कही चोथी वाड ।
ए सुच मानं जे पालसी, तिण सफल कीयो अबतार ॥ १ ॥
चित्र लिखित जे पृतली, ते पिण जोयवी नाहि ।
केवलग्यांनी इम कह्यो, दशवेकालिक माहि ॥ २ ॥

ढाल

[मोहन मू'दडी ले गयो]

मनहर इंद्री नार नी रे, तिण दीठाई बधे विकार ।
मिरग जाल ज्युं नर भणी रे, पास रच्यों संसार ।
नारी रूप न जोईये, जोईये नही घर राग* ॥ १ ॥
नारी रूप दीवली रे, भोगी पुरष पतंग ।
भमे सुख रे कारणे रे, दामे कोमल अंग ॥ ना० २ ॥
कांमणगारी कांमणी रे, वस कीयो सर्व ससार ।
आखी अणी कोयक रह्यां रे, सूर नर गया सर्व हार ॥ ३ ॥
रूपे रंभा सारिषी रे, वले मीठा बोली हुवें नार ।
ते निजर भरे नें निरखतां रे, वरत ने होवे विगाड ॥ ४ ॥
रूप में रूडी देखने रे, माहे पडे काम अंध ।
सुख मांणे जाणें नही रे, ते पाडे' दुरगत नों बंध ॥ ५ ॥
रूप घणों रलीयामणो रे, वले अपछरें रे उणीयार ।
ते देखे रीभो किसू रे, आ मल मूतर रो भडार ॥ ६ ॥
अशुच अपवित्र नों कोथलो रे, कलह काजल नो ठाम ।
बारें श्रोत वहे सदा रे, चरम दीवडी नाम ॥ ७ ॥
वेह उदारीक कारमी रे, खिण मे भंगुर थाय ।
सपत धात रोगाकुली रे, जतन करतां जाय ॥ ८ ॥
अबला इंद्री निरखतां रे, बाधें विधे रस पेम ।
राजमती देखी करी रे, तुरत डिग्यों रहनेम ॥ ९ ॥
नारी वेद नरपति थयो रे, वले चखू कूसीलीयो ते थाय ।
बाड भांग लाखां भवा रे, रूलीयो रूपी राय ॥ १० ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

सेठ घरे	जामो लीयो	रे,	नाम	इलापुतर	जाण ।
ते नटवी	रुपें मोहीयो	रे,	ते	वसीयो नटवां	घरे आण ॥ ११ ॥
ते बांस	उपर चढ नाचतो	रे,	ते मन	माहें हरष न	मात ।
ओ बांछें	घन राय नों	रे,	राय	बांछें इणरी	घात ॥ १२ ॥
मणरथ	बंधव मारीयो	रे,	मेणरेहा	रो देखी	रूप ।
मरण	पांभ्यों तिण जोग सूं	रे,	वले जाय	पख्यों अंध	कूप ॥ १३ ॥
अरणक	संजम आदख्यो	रे,	दीधी	संसार नें	पूठ ।
ते नारी	रुपें मोहीयो	रे,	ते नारी	लीयो तिण	लूट ॥ १४ ॥
एक षत्री	आणों लेजावतां	रे,	मारग	माहें मिलीयो	चौर ।
तिणनें	षत्री बाण वाया घणां	रे,	चोर	फरसी सूं न्हांख्या	तोड ॥ १५ ॥
हिवें	एक बाण बाकी रह्यो	रे,	जब अस्त्री	निज रूप	दिखाय ।
ते चोर	तिणरें रूप बिलंबीयो	रे,	जब षत्री	बाण सूं दीयो	ढाय ॥ १६ ॥
चोर	पख्यों ते देखनें	रे,	षत्री	करवा लागों	माण ।
चोर	कहें गरबे किसूं	रे,	म्हारे	नारी नेणां रा	लागा बाण ॥ १७ ॥
इत्यादिक	बहु मांनवी	रे,	त्यांरो	कहितां न आवें	पार ।
जे नारी	रूप में रीभीया	रे,	ते	गया जमारो	हार ॥ १८ ॥
नारी	रूप कांनें सुणी	रे,	मिष्ट	हुआ छें	अनेक ।
तो दीठां	गुण होसी किहां	रे,	समझों	आण विवेक	॥ १९ ॥
काची	कारी आँख नीं	रे,	सूर्य	सांहरों जोयां अंध	होय ।
ज्यूं	नारी नेणा निरखीयां	रे,	ब्रह्म	वरत देवें	खोय ॥ २० ॥
ब्रह्मचारी	निरखे मती	रे,	नारी	रूप	सिणगार ।
आ सीख	दीधी छें तो भणी	रे,	रखे	चूकेंला चोथी	बाड ॥ २१ ॥

ढाल : ६

दुहा

भीत परेच ताटी आतरे, जिहां रहिता हुवे नर नार ।
तिहा ब्रह्मचारी ने रहिवों नही, ए जिण कही पांचमी बाड ॥ १ ॥
संजोगी पासे रहें, ब्रह्मचारी दिन रात ।
तेह तणा सब्द सुण्या थका, हुवें वरत नी घात ॥ २ ॥
जेवर नेउर खलकती, ते सब्द पडे तिहा कांन ।
जव चल जाअे ब्रह्म वरत थी, लागे विषे सू ध्यान ॥ ३ ॥

ढाल

[आराद समकित उचरे रे लाल]

वाड सुणो हिवें पांचमी रे लाल, सील तणी रखवाल ब्रह्मचारी रे ।
ज्य वरत कुसल रहे तांहरो रे, वले नावे अछतो बाल ।
वाड सुणो हिवे पांचमी रे लाल* ॥ १ ॥
भीत परेच ताटी आंतरे रे लाल, अस्त्री पुरष रहिता हुवें रात ।
तिहा कुण कुण दोषण उपजे रे लाल, ते सांभलजे चितलाय ॥ वा० २ ॥
केल करे निज कत सू रे लाल, ते बोलती जगावें छे काम ।
कुई सब्द करे तिहा रे लाल, रुदन सब्द करे तिण ठाम ॥ ३ ॥
कोयल जिम बोले कत सू रे लाल, गावे मधूरे साद ।
काम वसें हडि हडि हसे रे लाल, वोलती करे उनमाद ॥ ४ ॥
वले थणित क्रदित सब्द तिहा रे लाल, वले विलपति सब्द हुवें ताम ।
तिहां रहितां एहवा सब्द सांभले रे लाल, जव चल जाअे तुरत परिणाम ॥ ५ ॥
गाज तणो सब्द सुणी रे लाल, रित पामे पपहीया मोर ।
ज्युं भोग समे रा सब्द सांभल्यां रे लाल, लागें वरत ने खोड ॥ ६ ॥
इम सांभल नें रहिवो नही रे लाल, सब्द पडें तिहां कांन ।
ए पाचमी बाड पालीया रे लाल, पामे मुगति निधान ॥ ७ ॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।



ढलल : ७

दुहल

हलवें छठी डलड डें इड कहूँ, चंचल डन ड डलडलड ।
खलधु डुडु वललसलडुँ, ते डत डलद अणलड ॥ १ ॥
डन डडतल डुड डुडडुडल, ते डलद कलडलं गुण नलहल ।
ए डलड डलंगुडलं वरत खंड हुवें, वले अडस हुवें लुक डलहल ॥ २ ॥

ढलल

[२ डुड डुड अलनुकडुडल नलशुडड]

हलव डलड डडड नलरल तणल, तुडलं सुणुडलं डधे वलडु वलकलर रे ।
एहवल डडड अरुँ सुणुडल हुवें, तुडलनें डलद न करणल ललडलर रे ।
छठी डलड सुणु डुरहुडरुड नुँ* ॥ १ ॥
वणुं डुरुलदलक सरलर नुँ, रुड सुडलडडलन अतंत रे ।
एहवु अलुी सुं डुड डुडडुडल, डुीतलरें नहुी वरतवंत रे ॥ २ ॥
गंध डुवल नें चंदणलदलक, रस डधुरुलदलक अनेक रे ।
ते डलण अलुी संघलतें डुडडुडल, ते डलण डलद न करणुँ एक रे ॥ ३ ॥
हलथ डड सुखडलल नलरल तणल, सुखडलल सरलर सुखदलड रे ।
एहवु अलुी सुं कललल करुी, ते डुीतलरें नहुी डन डलड रे ॥ ॡ ॥
डडड रुड गनुव रस नें डरस, डलंच डरकलर नलं कलड डुड रे ।
ते तुँ अलुी संघलतें डुडडुडल, तुडलनें डलद करणल नहुी डुड रे ॥ ५ ॥
रडुडल सरुी डलसल सुडुडलदलक, डुुवडलदलक रलडत अनेक रे ।
ते अलुी संघलतें रलडत करुी, तुडलनें डलद न करणुी एक रे ॥ ६ ॥
डडड सुणुडलं डलंगे डलड डलंचडुी, रुड सुं डुीथु डलड वलडलड रे ।
डरस सुं डलंगे डलड तुीसरुी, अलुी कथल सुं दूडुी डलड रे ॥ ७ ॥
एक डलद करुँ डलं डलहललुँ, तलण सुं डुडुँ छरुँ डलड रे ।
तु सुगलरुी डलद कलडलं थकलं, डुरहुड वरत नें हुवें वलडलड रे ॥ ॡ ॥
डन डडतल कलड डुड डुडडुडल, तलण सुं हरखत हुवें संडलल रे ।
तलण डलड सहलत वरत खंडुीडल, डलणुी कलड रहुँ डुुडलं डलल रे ॥ ॡ ॥
डुरुवलु कलड डुड डुीतलर नें, कलडुीं रेंणल देवुी सुं डुीत रे ।
डड डलन रलष नें डष नहुलखुीडुँ, रेंणल देवुी डलखुँ डुरुीत रे ॥ १० ॥

*डह अलंकडुी डुरतुडेक गलथल के अलनुत डें हल ।

जहर सहीत चास पीये चालीयां, त्यांरो वांकोई न हुवों वाल रे।
 त्यांने घणां वरसां पछें कह्यो, तिण सूं मरण पांम्यो ततकाल रे ॥ ११ ॥
 भाई नें पवन भूळ्यो देख नें, भाई ने न जणायों ताय रे।
 जणायो जिण दिन घसकों पडें, ततकाल छोडी तिण काय रे ॥ १२ ॥
 ए मूंआ जहर याद अणावीयां, पांमी अणचितवी असमाघ रे।
 ज्यूं भागे ब्रह्मचारी सील सूं, काम भोग नें कीघां याद रे ॥ १३ ॥
 काम भोग नें याद कीयां थकां, संका कंखा उपजें मन माय रे।
 सील पालूं के पालूं नही, वले जाबक पिण भिष्ट थाय रे ॥ १४ ॥
 इम सांभल ने नर नारीयां, मत लोपो छठी वाड रे।
 तो सील वरत सुघ नीपजे, तिण सूं हुवें खेवो पार रे ॥ १५ ॥



ढाल : ८

दुहा

नित नित अति सरस आहार नें, वरज्यों सातमी वाड ।
 ते ब्रह्मचारी नित भोगवें, तो वरत नें हुवे विगाड ॥ १ ॥
 ध्रुतादिक सूं पूर्ण भस्त्रों, एहवों भारी आहार ।
 ते धातू दीपार्ने अति घणी, तिण सूं वघें छे विकार ॥ २ ॥
 खाटा खारा चरपरा, वले मीठा भोजन जेह ।
 वले विविध पणे रस नीपजें, ते रसना सब रस लेह ॥ ३ ॥
 जेहनीं रसना बस नहीं, ते चाहें सरस आहार ।
 ते वरत भागे भागल हुवें, खोवे ब्रह्म वरत सार ॥ ४ ॥

ढाल

[हें तो करु साधने वंदना]

कवलां करें आहार उपारतां, धृत विन्दू भरतो आहार भारी रे ।
 एहबो आहार सरस चांप चांप नें, नित नित न करें ब्रह्मचारी रे ।
 ए बाड म लोपो सातमी* ॥ १ ॥
 वय तुरणी काया रोग रहीत छे, ते करें सरस आहारो रे ।
 ते आहार रुडी रीत परगमें, तिण सूं वघे अतंत विकारो रे ॥ २ ॥
 विकार वघ्यां ब्रह्म वरत नें, दोष अनेक विध लागें रे ।
 वले अंग कुचेष्टा उपजे, आबक वरत पिण भागे रे ॥ ३ ॥
 सरस आहार नित चापे कीयां, वरत भागे विगाडे बेहू लोगो रे ।
 संसार में दुखीयों हुवें, बधतो जाए रोग नें सोगो रे ॥ ४ ॥
 वय तुरणी काया जीर्ण पडी, ते करें सरस आहारो रे ।
 तो पेट फाटें पस्त्रों टल वलें, वले आवें अजीरण डकारो रे ॥ ५ ॥
 वले विविध पणे रोग उपजे, नित सरस आहार कीधा भारी रे ।
 अकाले मरे धर्म खोय नें, पछें होय जाए अनंत संसारी रे ॥ ६ ॥
 वय तुरणी रो घणीं इण विध मरें, नित कीर्षा सरस आहारो रे ।
 तो बूढा रो कहिवो किसूं, इणरे पेट तुरत भाले भारो रे ॥ ७ ॥
 दूध दही विविध पकवान नें, सरस आहार भोगवें रहें सूतो रे ।
 पाप समण कहीं उत्तराधिन मे, ते साधवणा थी विगूतो रे ॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

चक्रवर्त नी रसवती भोगवे, भूदेव ब्राह्मण छोडी लाजो रे ।
 काम विटवणा तिण लही, बेंन बेटी सू कीर्यो अकाजो रे ॥ ९ ॥
 सरस आहार तणो लपटी घणो, मगू आचार्य तेहो रे ।
 मरने गयो व्यतरीक में, संजम लारे उडाई खेहो रे ॥ १० ॥
 वले सेलग ' राय रिषीसरु, सरस आहार तणो हुवो गिघी रे ।
 ते जिभ्या वस पडीये थके, किरिया अलगी घर दी रे ॥ ११ ॥
 कुडरीक रस ' लोलपी थको, पाछो घर में आयो रे ।
 भारी आहार सू रोग उपज मूंओ, पडीयो सातमी नरक मे जायो रे ॥ १२ ॥
 इत्यादिक बहु साध ने साधवी, लोपी ने सातमी बाडो रे ।
 ब्रह्मचर्य वरत खोय ने, गया जमारो हारो रे ॥ १३ ॥
 सनीपातीयो दूध मिश्री पीये, तो सनीपात वधतो देखो रे ।
 ज्यू ब्रह्मचारी ने सरस आहार सू, विकार वचे छे वशखो रे ॥ १४ ॥
 इम सामल ब्रह्मचारीयां, नित भारी म करजो आहारो रे ।
 सील वरत सुघ पाल ने, आवा गमण निवारो रे ॥ १५ ॥
 सरस आहार तो जीहाई रह्यो, लूखोई पिण आहारो रे ।
 चाप चांप दिन प्रते करणो नही, ते कहिसू आठ्मी बाडो रे ॥ १६ ॥



ढलल : ९

दुहल

आठमीं बलड में इम कह्योँ, चलंप चलंप न करणो आहलर।
प्रमलण लोप इषकओ करेँ, तो वरत नेँ हुवेँ बलगड ॥ १ ॥
अतल आहलर थी दुख हुवेँ, गलेँ रूप बल गलत।
परमलद नलद्रल आलस हुवेँ, वले अनेक रोग होय जलत ॥ २ ॥
अतल आहलर थी वलषेँ वधेँ, घणोँइज फलटेँ पेट।
घलंन अमलउ उरतलं, हलंडी फलटेँ नेत ॥ ३ ॥
केइ बलड लोपे वलकल थकलं, करसी इषक आहलर।
त्यलरेँ कुण कुण ओगुण नीपजेँ, ते सुणजो वलसतलर ॥ ॡ ॥

ढलल

[वलमल केवली शक रे चम्यल नगरी]

भर जोवन रे मलंहल रे, देह नलरोगी हुवे।
मलहे तेजस रो जोरो घणोँ ए ॥ २ ॥
ते चलंपे करे आहलर रे, ते पचे सतलब सुँ।
तो वलषेँ वधेँ तलण रेँ घणी ए ॥ २ ॥
जब गमतल ललगेँ भोग रे, ध्यलंन मलठो रहें।
वले गमती ललगेँ अस्त्री ए ॥ ३ ॥
हूँ सील पललूँ केँ नलंहल रे, ए संकल उपजेँ।
पछेँ भोग तणी वंछलं हुवेँ ए ॥ ॡ ॥
मोनेँ लभ होसी केँ नलंहल रे, सील वरत पललीयलं।
ए पलण सलंसोँ उपजेँ ए ॥ ५ ॥
जब भलष्ट हुवेँ वरत भलग रे, भेष मलहेँ थकलं।
केइ भेष छोडी हुवेँ गृहस्थी ए ॥ ६ ॥
जे चलंपे कीघलं आहलर रे, पचेँ आछी तरें।
तो इसडो अनरथ नीपजेँ ए ॥ ७ ॥
के कलं रेँ हुवेँ रोग रे, आहलर इषकओ कीयलं।
वधेँ असलतल वेदनी ए ॥ ८ ॥
फलटेँ पेट अतंत रे, बंध हुवेँ नलडीयलं।
वले सलस लेवेँ अबखो थकलं ए ॥ ९ ॥

वले हुवे अजीरण रोग रे, मुख वासैं बुरों ।
 पेटे भाले आफरो ए ॥ १० ॥
 वले उठें उकाला पेट रे, चालें कलमली ।
 वले छूटे मुख थूकणी ए ॥ ११ ॥
 डील फिरें चकडोल रे, पित धूमे घणां ।
 चाले मुजल वले मुलकणी ए ॥ १२ ॥
 आवें माठी घणी डकार रे, वले आवें गूचरका ।
 जब आहार भाग उल्टों पडें ए ॥ १३ ॥
 वले चाले मरोडा पीड रे, पेट दुखे घणो ।
 लोही ठाण फेरो हुवें ए ॥ १४ ॥
 वले नाड्यां में हुवें रोग रे, ते आहार भलें नही ।
 ज्यूं खावे ज्यूं नीकले ए ॥ १५ ॥
 वले ताव चडें ततकाल रे, बंध हुवें मातरो ।
 आहार इषको कीयां थका ए ॥ १६ ॥
 घणी देही पडे कथाय रे, आहार भावें नही ।
 जब मांस लोही दिन दिन घटें ए ॥ १७ ॥
 खीण पडे जब देह रे, निवलाई पडें ।
 हाथ पगां सोजों चडे ए ॥ १८ ॥
 जब ठंभे अतीसार रे, ओषध करे घणां ।
 दिन दिन फेरो इषको हुवें ए ॥ १९ ॥
 पछें जाबक छूटें अन रे, चूकें घर्म ध्यान थी ।
 वले बोलें घणो दयामणो ए ॥ २० ॥
 वले हुवें सांस नें खास रे, जलोदर वघें ।
 सूंन बून देही पडे ए ॥ २१ ॥
 वघें अपचों रोग रे, आहार पचें नहीं ।
 ओषध को लागें नही ए ॥ २२ ॥
 वले उपजें दाह सरीर रे, बलण लागी रहे ।
 पेट सूल चाले घणी ए ॥ २३ ॥
 वेदन हुवें आंख नें कांन रे, खाज हुवें घणी ।
 वले रोग पीतंजर उपजे ए ॥ २४ ॥
 इत्यादिक बहु रोग रे, उपजें आहार थी ।
 कहि कहि नें कितरो कहूं ए ॥ २५ ॥

ए	हुवें	आहार	थी	रोग	रे,	जब	नाम	लें	अवर	नों।
						कूड	कपट	वर्षे	घणो	ए ॥ २६ ॥
जे	चापे	करें	आहार	रे,	श्रिघी	पेट	रो।			
						त्यानें	साच	बोलणो	दोहिलो	ए ॥ २७ ॥
कोइ	साध	कहें	एम	रे,	ओ	आहार	इधको	करें।		
						तो	घणों	कुहें	तिण	उपरे ए ॥ २८ ॥
जो	मिलनें	कहें	अनेक	रे,	तूं	आहार	घणों	करें।		
						तो	ही	कह्यो	न मानें	केहनो ए ॥ २९ ॥
केइ	पूरण	भरें	नित	पेट	रे,	इधको	चांप	नें।		
						जब	पांणी	पूरो	मावें	नहीं ए ॥ ३० ॥
जब	तिरवा	लागें	अतंत	रे,	पेट	फाटें	घणों।			
						जब	टलवल्लट	करें	घणां	ए ॥ ३१ ॥
घले	खाअें	आंवल	डील	रे,	जक	नहीं	तेहनें।			
						अजक	घणों	बले	तेहनें	ए ॥ ३२ ॥
इसडी	पहें	विपत	रे,	तो	ही	श्रिघी	पेट	रो।		
						निज	अवगुण	छोडें	नहीं	ए ॥ ३३ ॥
जब	रोग	पीडलें	आंण	रे,	मरें	माठी	तरें।			
						श्री	जिण	धर्म	गमाय	नें ए ॥ ३४ ॥
पछें	च्यारूं	गति	रे	मांहि	रे,	भमण	करें	घणों।		
						अनंत	काल	दुख	भोगवें	ए ॥ ३५ ॥
कूंडरीक	रे	उपनों	रोग	रे,	आहार	इधको	कीयां।			
						ते	मरनें	गयो	नरक	सातमीं ए ॥ ३६ ॥
हांडी	फाटे	नेट	रे,	इधको	उरीयां।					
						तो	पेट	न फाटें	किण	विचें ए ॥ ३७ ॥
ब्रह्मचारी	इम	जांण	रे,	इधको	नहीं	जीमीयें।				
						अणोदरीए	गुण	घणां	ए ॥ ३८ ॥	
ए	उतम	अणोदरी	तप	रे,	करतां	दोहिली।				
						वेंराग	विनां	हुवें	नहीं	ए ॥ ३९ ॥
ए	कही	आठमीं	बाड	रे,	ब्रह्मचारी	मणी।				
						चोखें	चित्त	आराधजो	ए ॥ ४० ॥	

ढलल : १०

दुहल

नवमी बलड ब्रह्मचर्यं नी, वलभूषल न करणी अंग ।
वलभूषल कीयलं थकलं, थलर्ये वरत नो बंग ॥ १ ॥
सरलर वलभूषल जे करे, ते करे तन सलणगलर ।
वले रहे घटलख्यल मठलरीयल, त्यलं लोपी ब्रह्म व्रत बलड ॥ २ ॥
सरलर वलभूषल जे करे, ते संजोगी होय ।
ब्रह्मचलरी तन सोभवे, ते कलरण नही कोय ॥ ३ ॥
बलड भलंग्यलं कलण वलध रहे, अमोलक सील रतन ।
तलण सूं ब्रह्मचलरी ब्रह्मचर्यं नलं, कलण वलध करे जतन ॥ ॡ ॥

ढलल

[धीज करे सीतल सती रे ललल]

सोभल न करणी वेह नीं रे ललल, नहीं करणो तन सलणगलर ब्रह्मचलरी रे ।
पीठी उगतणो करणो नही रे ललल, मरदन नहीं करणो ललगलर ब्रह्मचलरी रे ।
ए नवमी बलड ब्रह्म वरत नी रे ललल* ॥ १ ॥
ठंडल उन्हल पलंणी थकी रे ललल, मूल न करणो अंगोल ।
केसर चंदण नही चरचणल रे ललल, दलंत रगे न करणल चल ॥ ॡ ॥
बहू मोललं नें उजलल रे ललल, ते वसत्र नें पेहरणल नलंहल ।
टीकल तललक करणल नही रे ललल, ते पलण नवमी बलड रे मलहल ॥ ३ ॥
कलंकण कुंडल नें मुंदडी रे ललल, वले मललल मोती ने हलर ।
ते ब्रह्मचलरी पेहरे नही रे ललल, वले गेहणल वलवध परकलर ॥ ॡ ॥
नही रहणो घटलख्यो मठलरीयो रे ललल, केसलदलक नें समलर ।
वले वसत्रलदलक पलण पेहरनें रे ललल, मूल न करणो सलणगलर ॥ ॡ ॥
वलभूषल अंग छे कुसील नो रे ललल, तलण सूं चीकणल करम बंधलय ।
तलण सूं पडे संसलर सलगर मभे रे ललल, तलणरो पलर वेगो नहीं आय ॥ ६ ॥
सलणगलर कीयलं रहे तेहनें रे ललल, अस्त्री देवें चललय ।
भलष्ट करे सील वरत थी रे ललल, ठललो कर देवें तलय ॥ ७ ॥
रतन हलथे आयो रलंक रे रे ललल, ते दीठलं खोस ले रलय ।
ज्यूं ब्रह्मचलरी वलभूषलं कीयलं रे ललल, अस्त्री सील रतन खोसें तलय ॥ ॡ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गलथल के अन्त में है ।

ब्रह्मचारी इम सांभली रे लाल, सील विभूषा मत करजे लिंगार।
 ज्यूं सीयल रतन कुसलें रहें रे लाल, तिणूं सूं जतरें भव जल पार ॥ ६ ॥

ढाल : ११

दुहा

ए नव वाड कही ब्रह्मचर्य री, हिचे दसमो कहे छे कोट ।
 ए वाड लोपी वीटे रह्यो, तिणमे मूल न चाले खोट ॥ १ ॥
 कोट भांगा जोखो छे वाड ने, वाड भांगा वरत ने जाण ।
 तिण सू कोट मिलण देवे नही, ते वाहा चतुर सुजाण ॥ २ ॥
 कोट भांग वर्धारा पडीया थका, वाड भागता किती एक वार ।
 तिण सू वशेष कोट रो, करवो जतन विचार ॥ ३ ॥
 सेर कोट सेठो हुवे, तो चिंता न पामें लोक ।
 ज्यू अडिग कोट ब्रह्मचर्य रो, तिण सू सील न पामे दोख ॥ ४ ॥
 ते कोट करणो किण विध कह्यो, किण विध करणो जतन ।
 ते ब्रह्मचारी विवरा सुघ, साभलजो एक मन ॥ ५ ॥

ढाल

[ङाम मुजादिक नी डोरी]

मन गमता सब्द रसाल, अण गमता सब्द विकराल ।
 गमता सब्द सुण्या नही रीमे, अण गमता सुण्या नही खीजे ॥ १ ॥
 काला नीला राता पीला घोला, पाच परकार ना रूप वोहला ।
 राग नाणें भला रूप देख, माठा देख न आणणो घेख ॥ २ ॥
 गघ सुगघ दुगघ छे दोय, गमता अण गमता सोय ।
 गमता सू नही रति सोय, अण गमता सू अरति न कोय ॥ ३ ॥
 रस पांच परकार ना जाणो, त्यांरा स्वाद अनेक पिछाणो ।
 गमता सू राग न करणो, अण गमता सू घेष न घरणो ॥ ४ ॥
 फरस आठ परकार नां तांम, त्यांरा जूआ जूआ छे नांम ।
 राणी गमता रो अण गमता रो घेखी, यां दोयां सूं रहणो निरापेखी ॥ ५ ॥
 सब्द रूप गन्व रस फरस, भला भूंडा हलका भारी सरस ।
 या सूं राग घेष करणो नांही, सील रहसी एहवा कोट मांही ॥ ६ ॥
 सील वरत छे भारी रतन, तिणरा किण विध करणा जतन ।
 सगला व्रता माहे वरत मोटो, तिणरी रिज्या भणी कह्यो कोटो ॥ ७ ॥
 जो सब्दादिक सू हुवे राजी, तो कोट जाये छे भाजी ।
 कोट भागा वाड चकचूरो, ब्रह्म वरत पिण पर जाये पुरो ॥ ८ ॥

तिण सूं कोट रा करणा जतन, तो कुसले रहे सील रतन ।
 टल जावें सगल दोख, जब पांमें अविचल मोख ॥ ६ ॥
 इम सांभल नें ब्रह्मचारी, तूं कोट म खंडे लिगारी ।
 ज्यूं दिन दिन इधको आणन्द, इम भाष्यो छें वीर जिणंद ॥ १० ॥
 ए कोट सहित कही नव बाड, ते सांभल नें नर नार ।
 इण रीत सूं ब्रह्म वरत पालों, ज्यूं मिटें सर्व आल जंगालों ॥ ११ ॥
 उत्तराधेन सोलमां मभारों, तिणरो लेई नें अनुसारो ।
 तिहां कोट सहित कही नव बाड, ते संखेप कह्यो विसतार ॥ १२ ॥
 इगतालीसैं नें समत अठार, फागुण विद दसमीं गुरवार ।
 जोड कीधीं पादू मभार, समभाषण नें नर नार ॥ १३ ॥

रत्न : २३

समकित री ढालां

ढाल : १

[म्हारो मनडो उमाह्यो प्रभुजी ने बांढवा]

राय सिद्धार्थ नें घर जनमिया, राणी तिसलादे अंग जात ।
 छेह्ला तीर्थकर श्री महावीर जी, चावा तीनूं लोक विख्यात ।
 श्री वीर जिणेश्वर सुणज्यो मोरी वीनती* ॥ १ ॥
 त्यां अथिर संसार छोडी संजम लियो, तोड्या घनघातिया कर्म ।
 तीरथ चलायो हो केवली थया पछे, परूपियो निरवद्य धर्म ॥ श्री० २ ॥
 चवदें सहस्र मुनिश्वर तारिया, बले आर्या छतीस हजार ।
 पाप अठारे हो सर्व पचखाय नें, उताख्या भव पार ॥ ३ ॥
 एक लाख गुणसठ सहस्र श्रावक हूवा, त्याने कीया बारे व्रत धार ।
 श्रावका तीन लाख अठारे हजार नें, त्यांरो पिण कीयो उद्धार ॥ ४ ॥
 ग्यान दरसण चारित तप निरमला, ए शिवपुर मारग च्यार ।
 ए साव श्रावक नो धर्म वताय ने, पहुंचता मुक्त मभार ॥ ५ ॥
 अघेन अठावीसमां उत्तराघेन मे, मोष मार्ग कहा च्यार ।
 ग्यान दरसण चारित ने तप विनां, नहीं श्रद्धूं धर्म लिंगार ॥ ६ ॥
 देव अरिहंत निग्रंथ गुर मांहरे, केवलीए भाखित धर्म ।
 ए तीनूई तत्व सेठा कर भाळिया, ओर छोड दीया सहु भर्म ॥ ७ ॥
 ए तीनूं ही तत्व मांहि जिणजी री आगन्या, मै कर लीघी परमाण ।
 धर्म शुक्ल घ्यान घ्यावे वा आत्मा, हूं इम पालू तुम आण ॥ ८ ॥
 केवल ग्यांनी भरत मे को नहीं, वले पूर्व ग्यान विच्छेद ।
 कुवधी कदाप्रही उठ्या अति घणा, त्यां घाल्यो धर्म मे भेद ॥ ९ ॥
 वले उंचा तो कुल नां हो मोटा राजव्यां, त्यां छोड दीयो जिण धर्म ।
 वले लिंगाडा नें लिंगाडी साधु रा भेष मे, त्यांरो पिण निकल गयो भर्म ॥ १० ॥
 द्रव्य जेनी केइ साधु कहावतां, त्यां सू चरचा कीजे जाय ।
 त्यां शरणो लियो हो सगला दरशण्वा तणो, त्यांनं किम आणिजे ठाय ॥ ११ ॥
 जिण धर्म मांहे साहेबा विखो पड्यो, मांहे राजा न दीसे एक ।
 गुण विनां भेष वध्यो भगवानं रो, त्यारी सरघा चाल अनेक ॥ १२ ॥
 एक एक री उतारे माहोमांहि आसता, वदना रा सूस दिराय ।
 न्याय री चरचा रो कांम पड्यां थका, मूठ बोले एक होय जाय ॥ १३ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

त्यांरी सरधा रो मुंह माथो को दीसें नहीं, बले बोलें घणा विपरीत ।
 पिण मांहरे तो आघार छे प्रभु ए बडो. एक सूतर री परतीत ॥ १४ ॥

ढाल : २

[कद ठाकुर फुरमाथो]

देव तणो आचार न जाणें, गुर री खबर न काई रे ।
धर्म तणो तू नाम न जाणें, तूं राखे घणी ठसकाई रे ।
प्राणी समकित किण विघ आई रे ॥ १ ॥

नव तत्व नां भेद न आवे, कूडी करे लपरआई रे ।
धर्म तणो घोरी होय बेठो, तोमें दीसे घणी भोलाई रे ॥ प्रा० २ ॥

जीव न जाणें अजीव न जाणें, पुन्य नी पारखा नाई रे ।
पाप तणी प्रकृति नही घारी, थे कीघी घणी नहराई रे ॥ ३ ॥

आश्रव नाला छूटा नही देखे, संवर सुमता नाई रे ।
निरजरा तणो निरणो नही कीघो, कठे गइ चतुराई रे ॥ ४ ॥

बंध मोष बेहूं नो जोडो, तिणरी समझ न पाई रे ।
समदिष्टी तू नांम घरावे, तोनें कुगुरां दीयो भरमाई रे ॥ ५ ॥

हाथ जोडी नें समकित लेवे, कुगुरां पासे जाई रे ।
अजाण पणो मिटियो नही अंतर, मिथ्यात दीयो बोसराई रे ॥ ६ ॥

न्याय री बात हृदय में नहीं वेसें, थोथी करे बडाई रे ।
आग्या बारे धर्म परुपें, बूड गई चतुराई रे ॥ ७ ॥

करण जोग भांगा नहीं घाख्या, व्रतां री खबर न काई रे ।
अव्रत मांहि धर्म परुपें, या ही नरक री साई रे ॥ ८ ॥

पाप धर्म नों नही निवेडो, अकल गई दपटाई रे ।
जब तोनें कोइ जाण पणो पूछे, तो उलटी करे लडाई रे ॥ ९ ॥

पोथा पानां काढ नें बेठो, भोला नें दे भरमाई रे ।
कूड कपट कर फंद में पाडे, ते मांडी पेट भराई रे ॥ १० ॥

सांगघारी नें साघज सरघें, पडें पगा में जाई रे ।
तिखुत्ता सूं करे बंदणा, मन में हरषित थाई रे ॥ ११ ॥

सावद्य करणी सूं पापज लगों, तिण री विगत न पाई रे ।
निरवद्य में धर्म पुन्य दोनूंई, ते पिण अटकल नाई रे ॥ १२ ॥

द्रव्य खेतर काल भाव न घाख्या, गुण विण वस्तु न काई रे ।
घ्यार निषेपा नों निरणो नही कीघो, ते मिनष जमारो पाई रे ॥ १३ ॥

सगला मे तूं बडेरो बाजे, मन में मगज न माई रे ।
न्याय मार्ग तोनें किण विघ आवे, कुगुरां दीया डंक लग्गाई रे ॥ १४ ॥

सरघा दुर्लभ जिणेश्वर भाखी, सूतर में दीयो जताई रे ।
 चतुर हुंता त्यां निरणो कीघो, ते मिनष जमारो पाई रे ॥ १५ ॥
 जीव अजीव ए छ द्रव्य कीघा, नव कीया न्याय बताई रे ।
 समदिष्टी ओलखिया अंतर, त्यानें नही सके देव डिगाई रे ॥ १६ ॥

ढलल : ३

दुहल

नव पदलरुथ ओलुखुयलं वलनलं, सडकलत नहल तलण डलहल ।
सडकलत वलण सलधपणुओ नहल, सलधपणल वलण शलवपुर नलहल ॥ १ ॥
तलण सूं वकुषुओ सडकलत तणुओ, खप करकुओ डव कुओव ।
सडकलत सहलत करणुओ करुओ, तुयलरुओ नलरुकुत डुतुकुत रल नुओव ॥ २ ॥

ढलल

[पलरुओ डलनष कुडलरुओ डतल हलरुओ]

दुव गुरु धरुड रल पलरखल करुओ, पखवलत डलहल कुओइ डतल पलरुओ ।
कुओडुओ कुगुरुल तणुओ ललरुओ, सगलल डलहुओ सडकलत सलरुओ* ॥ १ ॥
डलवुओ कुतलरल तलप तपुओ, वलुओ डलवुओ कुतलरल कुलप कुणुओ ।
पलण सडकलत वलण न हुवुओ उदुडलरुओ ॥ स० २ ॥
डुओदुवल अनुओ डलडुओ दुखुओ, आंक वलनलं नहल ललगुओ लुओखुओ ।
कुतुं आकल कुतलसुओ सडकलत धलरुओ ॥ ३ ॥
सलधु रुओ आकुओर पुरुओ पललुओ, दुओषण सगलल वलध सुू डललुओ ।
तुओ सडकलत वलण नहल पलडुओ पलरुओ ॥ ॡ ॥
कुओइक उकुलड डलहुओ रहुओ, सुओ तलपलदलक नल दुख सहुओ ।
पलण सडकलत वलण पुरुओ अंधलरुओ ॥ ५ ॥
सूस आखडुओ सलकडल कुओधल, वलुओ सलधु धुरलवक नल वुरत लुओधल ।
सडकलत वलण वरत नहल ललगलरुओ ॥ ० ॥
उणल पुरुव दुश डण डलकुओ गुडलनुओ, पलण सडकलत वलण कुओ अगुडलनुओ ।
तलणरुओ ततुव तणुओ नहल वलकुओरुओ ॥ ७ ॥
शुरुओणलक रलध धर डुओ वुओठुओ, तुओ सडकलत डलहल रहुओ सुंठुओ ।
तलण सुू हुओसुओ तुओथुंकलर अवतलरुओ ॥ ॡ ॥
अरणक नुओ वलुओ कलड दुवुओ, तुयल धरुड तणुओ नहल कुओडुओ डुवुओ ।
कुडल कनुओ दुव गडल हलरुओ ॥ । ॥
संसुकुत डुरलकुत डणलणुओ डुओकल, पलण सडकलत वलण सगलल डुओकल ।
तलण सुू ततुव तणुओ नलरणुओ धलरुओ ॥ १० ॥
वुडलकरण डणलणुओ डुओडुओ डंडलण, वलुओ षड वलध डलषल रुओ कुलण ।
पलण ततुव वलनल सगलल कुओरुओ ॥ ११ ॥

*डहु आंकडुओ डुरलतुवुओ कल गलथल कुओ अनुत डुओ हुओ ।

विद विद पाठ भणे भारी, त्यांरा अर्थ करे शुद्ध विचारी ।
 पिण नव तत्त्व मांहि पूरो अंधारो ॥ १२ ॥
 केह भण भण नें उलटा बूढे, ऊंधा अर्थ करे वेसे तुढे ।
 ते धर्म कहे जिण धाय्या वारो ॥ १३ ॥
 सरघा दुर्लभ जिण भाखी, उत्तराधेन आदि वोलें साखी ।
 डाहा होसी ते करसी विचारो ॥ १४ ॥
 समकती जीव मिथ्यात दीयो मूको, ते मोषगांमी जीव होय चूको ।
 इसडो समकित नो आधारो ॥ १५ ॥
 मिथ्यात्व दश परकारों, त्यांमें एक रह्यो बाकी लारो ।
 तो ही समकित यांरी पांत वारो ॥ १६ ॥

रत्न : २४

गणधर सिखावणी

ढलल ; १

[सतुतु कुडु डत रलसुतुतुतु]

शुतुी वीर कुहे सुणु गुतुतुडल, इणु गुतुी तणुी नहुी आदुु रे ।
 हुतुवे नुीठ नुीठ नर डुतु लहुुु, सडुुु डुक ड कर डरडलदुु रे ॥ शुतुी०* १ ॥
 वृषुतु तणुु गुतुड डलनडुु, डंडुर थडु डडु डलतुु रे ।
 इडु अथुिर आऊरुु डुनडु रुु, खुण डे वेरंग थलतुु रे ॥ २ ॥
 डलड अणु डलल गुतुेहुवुु, वुले अथुिर सुडनल री डलतुु रे ।
 गुतुु अथुिर आऊरुु डुनडु रुु, खुण डें घुलु घलणुी हुवे कलतुु रे ॥ ३ ॥
 अथुिर घडल देवल तणुी, अथुिर डलणुी डे डतलसुु रे ।
 गुतुु अथुिर आऊरुु डुनडु रुु, गुतुेहुवुु डेर डलडुी रुु तडलसुु रे ॥ ॡ ॥
 अथुिर वेग नदुी तणुु, वुले अथुिर वलदल नुी डुतुलतुु रे ।
 गुतुु अथुिर आऊरुु डुनडु रुु, गुतुेहुवुी गुवलरी री डलतुु रे ॥ ॡ ॥
 अथुिर वडन कल डुरष रुु, वुले अथुिर सुीख अवनीतुु रे ।
 गुतुु अथुिर आऊरुु डुनडु रुु, अथुिर नलरी री डुरीतुु रे ॥ ॢ ॥
 अथुिर डूस नुु तलडवुु, अथुिर उनुुहलल रुु डेहुु रे ।
 गुतुु अथुिर आऊरुु डुनडु रुु, अथुिर कनुतुल धन गुतुेहुु रे ॥ ॣ ॥
 अथुिर रंग डतग रुु, ते डलतुु न ललुु वलरुु रे ।
 गुतुु अथुिर आऊरुु डुनडु रुु, डलणे आंख तणुुु तुडडकलरुु रे ॥ ॡ ॥
 अथुिर घनुष आकलश रुु, अथुिर कुंडर नुु कलनुु रे ।
 गुतुु अथुिर आऊरुु डुनडु रुु, गुतुेहुवुु संघुतुल रुु वलनुु रे ॥ ॡ ॥
 अथुिर डरडुुतुु डलणुी तणुु, अथुिर डुललर रुु डुडुणकलरुु रे ।
 गुतुु अथुिर आऊरुु डुनडु रुु, डलणुु वलडुलुी तणुुु डडतकलरुु रे ॥ १० ॥
 डुहुवुु अथुिर आऊरुु डुनडु रुु, तणुुडे घणुुु उदवेगुु रे ।
 इडु डलणु डरडलद ने डरुहुरुु, डरण आवे डुे वेगुु रे ॥ ११ ॥
 डुनडु तणुु डुतु डलड ने, आणुुे वेरलंग संवेगुु रे ।
 कलल अनंतुु डुुहुलुु, वलर वलर न डलडसुी वेगुु रे ॥ १२ ॥



*डुह आंकडुी डुरतुुडुक गलतुल के अनंतुु डे हुु ।

ढल २.

[आकसौ द्रुढ नें साधो को नहीं रे]

श्री जिणवर गणधर मुनिवर नें कहे रे, एक समो पिण मत कर परमाद रे ।
सुमति गुप्ति आठूं सुघ पालजे रे, ज्युं तोने उपजे परम समाध रे ॥ १ ॥
भूसर परमाणें इरिया सोधजे रे, ऊंची तिरछी बिष्टी म जोय रे ।
दश बोल वरजे तूं मारग चालतो रे, ज्युं जीव तणी हिंसा नहीं होय रे ॥ २ ॥
भाषा विचारी निरवद बोलजे रे, करकस कठोर मूल मत बोल रे ।
सावद्य भाषा मत बोले सरवथा रे, मीठो बोले तूं पेंहली तोल रे ॥ ३ ॥
दोष बयालीस सगला टाल नें रे, असणादिक वेंहरे च्याहं आहार रे ।
पांच दोषण टाले मंडला तणा रे, ज्युं तोनें पाप न लागे लिंगार रे ॥ ४ ॥
वस्त्र पातर लेतां मेलतां रे, जोय पूंजे तूं रूडी रीत रे ।
हिंसा हुवे तिम कीजे मती रे, दया सूं राखे अंतरंग पीत रे ॥ ५ ॥
उचार पासवणादिक नें परठतां रे, जायगां जोय नें परठे ताम रे ।
त्यां पिण जयणा कीजें जीव नीं रे, सिमें निकेवल आतम कांम रे ॥ ६ ॥
मन वचन काया शुद्ध तूं गोपवे रे, ज्युं तोनें मूल न लागे पाप रे ।
ए आठूंई प्रवचन पाले निरमला रे, तो मिट जाय जनम मरण संताप रे ॥ ७ ॥
जयणा सूं चल्यां जयणा सूं बोलियां रे, जयणा सूं कीघां शुद्ध आहार रे ।
जिण आग्या सहित करणी कीयां रे, तोने पाप न लागे मूल लिंगार रे ॥ ८ ॥
पांच महाव्रत पाले निरमला रे, बले पाले तूं पांच आचार रे ।
पांचूं इंद्री नें वस कर राखजे रे, तेवीसूंई विषय परिनिवार रे ॥ ९ ॥
छ काय जीवां री जयणा राखजे रे, निरभय रहिजे भय सात निवार रे ।
मद रा थानक आठूंई परहरे रे, बले शील तणी पाले नव वाढ रे ॥ १० ॥
बीस थानक वरजे असमाधिया रे, इकवीस सबला दोषण टाल रे ।
बावीस परिषह जीते जुगत सूं रे, सतावीस साधु रा गुण पाल रे ॥ ११ ॥
तीसां बोलां बंधे महा मोहणी रे, तीसूंई टाले विसवावीस रे ।
जोग संग्रह नां बोल बतीस छे रे, टाले तूं आसातना तेतीस रे ॥ १२ ॥
आहार सेजा नें वस्त्र पातरा रे, लीजे बयालीस दोषण टाल रे ।
अनाचार विघ टाले सरवथा रे, श्री जिण आग्या चौखी पाल रे ॥ १३ ॥
सेवा भक्ति कीजे शुद्ध साध री रे, अणाचारी सूं रहिजे दूर रे ।
ए दोनूं सीखामण सेंठी धारजे रे, ज्युं कर्म आठूंई हुवें चकचूर रे ॥ १४ ॥

प्रीति पुराणी विणसे क्रोध सूं रे, मांन सूं विनय तणो हुवे नास रे ।
 मित्रीपणो विणसे माया कपट सू रे, लोम सू सर्व तणो हुवे नास रे ॥ १५ ॥
 क्रोध मांन माया नें लोम सूं रे, लागे छे निश्चे पाप कर्म रे ।
 तिण कर्मा सूं भ्रमण करे ससार में रे, पांम न सके श्री जिण धर्म रे ॥ १६ ॥
 ए च्याहूर्द्ध चडाल तणी छे चोकडी रे, तिण सूं तप सजम नो हुवे नास रे ।
 इहलोक परलोक विगडे एह थी रे, त्यानें मत राखे लगता पाम रे ॥ १७ ॥
 शब्द रूप गद्य रस फर्श छे रे, राग घेख मत धरज्यो कोय रे ।
 पाचूं इन्द्री ने वस कीयां थकां रे, सवर निरजरा दोनू होय रे ॥ १८ ॥
 शब्द रूप रस गंध फर्श छे रे, गमता सू राग म धरो लिंगार रे ।
 घेख मत धरज्यो भंडा ऊमरे रे, ज्यूं पामें भव सागर रो पार रे ॥ १९ ॥
 शरीर जीरण पडे छे ताहरो रे, केश पण्डूर पडे छे बशेख रे ।
 इन्द्री पिण हीणी पडे छे ताहरी रे, परमाद मत करतू समो एक रे ॥ २० ॥
 कपडा रो तार तूटे इता विचे रे, असख्याता समा वहे अगाध रे ।
 एहवो सूक्ष्म समो छे काल रो रे, एक समो पिण मत करजे परमाद रे ॥ २१ ॥
 एक समा तणा परमाद मे रे, सात आठ लागे पाप कर्म रे ।
 प्रदेण अनता एकीका कर्म ना रे, त्या कर्मा सूं खोवे श्री जिण धर्म रे ॥ २२ ॥
 ज्यां लग पाच इंद्रिं परवरी रे, जरा न व्यापी तोने आय रे ।
 वले देही में रोग न फेल्यो ज्यां लो रे, कर्म काटे ए अवसर माय रे ॥ २३ ॥
 जोड कीची गणधर सीखामणी रे, केलवा सहुर माहिं हित ल्याय रे ।
 समत अठारे तयालीम मे रे, पोष महिना सुघ पख माय रे ॥ २४ ॥



रत्न : २५

दांन री ढालां

ढाल : १

[पूज पाणड न देता छड]

दान	थी	दलदर	दूर,	दान थी दोलत पूर आज हो । दान थी जोत काति हुवे डील नी जी ॥ १ ॥		
दान	सू	पामे	रिघ,	दान सू पामे विरघ आज हो । दान सू दीपे तीरथ च्यार मे जी ॥ २ ॥		
भरिया		रिघ	भडार,	ते जावा ने हुवा तैयार आज हो । दान थी थिर लिखमी रहे तेहनी जी ॥ ३ ॥		
दान	सू	रहे	मुख	सनूर,	रोग सोग रहे सहु दूर आज हो । दान सू कदेय न आवे आपदा जी ॥ ४ ॥	
दान	सू	करे	परत	संसार,	दान सू पामे भव पार आज हो । दान सू पामे शिव सुख सासता जी ॥ ५ ॥	
दान	सू	पामे	सर्व	थोक,	दान सू जावे देवलोक आज हो । दान सू जावे सिद्ध गीत पाचमी जी ॥ ६ ॥	
दान	सू	टले	कर्मा	री	छोत,	बले बाघे तीर्थकर गोत आज हो । दान थी पामे पदवी मोटकी जी ॥ ७ ॥
दान	थी	पावे	नव	ही	निधान,	दान सुखा री खान आज हो । मन रा मनोरथ सीमे दान थी जी ॥ ८ ॥
इसो	छे	सुपातर			दान,	नहीं जिण तिणनें आसान आज हो । कृपण ने दान सुपातर दोहिलो जी ॥ ९ ॥
मिले		सुपातर			आण,	जब मन में उजम आण आज हो । अडलक दान दीया उद्धरे जी ॥ १० ॥
भरत		नरेशर			जाण,	पाछल भव दीयो दान आज हो । चक्रव्रत पदवी पामी दान थी जी ॥ ११ ॥
सुबाहु	कुमर	आदि			जाण,	सुखे सुखे जासी निरवाण आज हो । परत संसार कीधो दान थी जी ॥ १२ ॥
दीयो		रेवती			पाक,	तिण सू वीरजी हो गया चाक आज हो । परत संसार करी ने उद्धरी जी ॥ १३ ॥
संख		नामे			राजान,	दीयो घोवण रो दान आज हो । तीर्थकर हुवा जिण वावीसमा जी ॥ १४ ॥

ढाल : २

दुहा

दांन शील तप भावना, ए च्याखूं जिण आग्या सहित ।
जे समदिष्टि जिण घर्म में, यानें ओलखो रूडी रीत ॥ १ ॥
कडुवा फल छे कुपातर दांन रा, तिणसूं भ्रमण करे संसार ।
आच्छा फल छे सुपातर दांन रा, तिणसूं पामें भव पार ॥ २ ॥
दांन सुपातर ओलख्यो, तो ही देतां धूजे हाथ ।
कुपातर दांन दे हर्ष सूं, आ इचरज वाली बात ॥ ३ ॥
पाप जाणें कुपातर दांन में, सुपातर दांन में जाणें छे घर्म ।
तो ही सुपातर दांन में कृपण हुवे, तिणरे बहुत भारी छे कर्म ॥ ४ ॥
कर्म बान्ध्या छे भव पाछिले, ते उदय हुवा छे आय ।
ते छत्रे जोग मिलियां थकां, पातर दांन दीयो नही जाय ॥ ५ ॥
दातार नें कृपण तणी, ठीक पाडे बुधवांन ।
हिंवे ओलखाउं कृपण भणी, सुणो सुरत दे कान ॥ ६ ॥

ढाल

[नशदल हे नशदल]

दांनान्तराय निकाचित बघ्यो, वले मोह कर्म उदय जोर । भवियण ।
तिण कर्मा कर कृपण हुवो, त्यांनं देवण रो नहीं कोड ॥ भवियण ।
कृपण नें दांन देणो दोहिलो* ॥ १ ॥
घर रो माल देणो तो दोहिलो, ओरां आडा अंतराय ने तयार । भ० ।
इणरा कृपणपणा रा प्रताप थी, संवलो न सुमें लिगार ॥ भ० कृ० २ ॥
सुपातर दांन में कृपणपणो, कुपातर दांन माहि चूर ।
ते दोनूं प्रकारे हुवे दलद्री, त्यां सू दुरगति नही छे दूर ॥ ३ ॥
कृपण ने दांन देता थकां, कोइ देख लेवे दातार ।
तो सरखा घटे तिणरे दांन री, करतो रहे परत संसार ॥ ४ ॥
कोइ कृपण साधां रे पातरे, जो देखे सरस आहार ।
तो दोष अणहुंतो जाणें साध में, अंबो सुमें तिण वार ॥ ५ ॥
कोइ दांन दे उलट परिणाम सं, असणादिक सरस आहार ।
ते निजर पडे कृपण तणी, तो मूढो दे तूरंत विगाड ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

पोते बेरावणो तो जिहाड रह्यो, देखणो पिण जिहां रह्यो तांम ।
 सरस आहार वेहख्यो काने सुणे, तो विगडे तुरंत परिणाम ॥ ७ ॥
 कृपण रो कृपणपणो, कृपण नही जाणे लिगार ।
 आपो न सूभे आपरो, हू सूम छं के दातार ॥ ८ ॥
 साधु समचे निपेधे कृपणपणो, समचे करे दांन रा गुण ग्राम ।
 ए दोनू वात कृपण सुणे, गमती न लागे ताम ॥ ९ ॥
 कृपण भाणे बेठ न भावे भावना, ते कृपणपणा नों प्रताप ।
 साधु विण वेहख्या घर सू पाछा फिरें, तो पिण मूल न करे पिछाताप ॥ १० ॥
 कदा कृपण भावे भावना, ते तों तिण वेला हरष ।
 जो ऊ साधु आया देखे बारणे, तो पड जाय मन में घडक ॥ ११ ॥
 कृपण आदरे व्रत बारमो, तोही भावना नही भाय ।
 हाथ सू दान देवण तणी, हंस नही मन मांय ॥ १२ ॥
 कदा कृपण हाथां सू वेहरावता, मन मे नही हरष वशेष ।
 जो न कहे नाकारो साधु तो, साधां उमर करे घेप ॥ १३ ॥
 कृपण जो लोलपी हुवे, बले हुवे लोभ असमान ।
 ए तीनूई दोष तिण मे हुवे, ते किण विघ देवे दान ॥ १४ ॥
 जो कृपण अति मानी हुवे, तो घन खरचे जश कीर्ति कांम ।
 पिण दान सुपातर देवण तणा, आधा चाले नही परिणाम ॥ १५ ॥
 तिणने राजा खोसे के घरे गिले, तसकर लगे के लाय ।
 कृपण नें कापुरुष री खाटवां, माल मस्करा खाय ॥ १६ ॥
 कण कण सचो कीडी करे, ते कण तीतर चुग जाय ।
 ज्यू कृपण रो घन सचियो, यू ही जावे विललाय ॥ १७ ॥
 केइ घनवंत पिण कृपण हुवें, केइ निरघन हुवें दातार ।
 छते जोग मिल्या कृपण थकी, लाहो लेणी न आवे लार ॥ १८ ॥
 कृपण दान दे तिण समें, कोइ देखे अनेरो तांम ।
 ते कृपणपणो पिण आदरे, उतर जावे दांन सू परिणाम ॥ १९ ॥
 दातार दांन दे तिण समे, कोइ देखे अनेरो तांम ।
 तो दांन देवा सू तेहनां, चढे घणा परिणाम ॥ २० ॥
 दातार री संगत कीयां थका, ते पिण हुवे दातार ।
 कृपण री संगत कीया, कृपणपणों छे तयार ॥ २१ ॥
 दान शील तप भावना, यासू सीझें आतम अर्थ ।
 तीनां मे कवडी लागे नही, दांन दीयां घट जाय गर्थ ॥ २२ ॥

केइ धनवंत पिण कृपण हुवे, केइ निरधन ही हुवे दातार ।
 ते धनवंत रह गयो दरिद्री, निरधन करे परत संसार ॥ २३ ॥
 घर में धन माल छातां थकां, वले छाती जोगवाइ पांम ।
 लाहो लेणी न आवे दांन रो, ओ कृपण रो काम ॥ २४ ॥
 आगे दांन थकी तिरिया घणा, कृपण नें कहे बात मांड ।
 तो पिण टूळ न लामे तेहनें, ज्यूं रेत री न हुवे खाड ॥ २५ ॥
 कृपण नें दांन देवण तणो, साधु उपदेश दे दगचाल ।
 ज्यूं लाखां प्रकारां हुवे नहीं, कदे गेहूं री दाल ॥ २६ ॥
 बुद्धि पाम्यां फल तत्व विचारणा, देह पाम्यां रो फल व्रत धार ।
 धन पाम्यां फल दांन सुपातरां, वाचा फल बोले हितकार ॥ २७ ॥
 मोटका नें खिम्या करणी दोहिली, कृपण नें दोहिलो दान ।
 भर जोवन में शील दोहिलो, कायर नें दोरो चारित निबान ॥ २८ ॥
 एक सूम नी त्रिया कहे, आज काई पीऊ मुख दीन ।
 के कछु ही खोयो गयो, के क्रिण ही नें दीन ॥ २९ ॥
 ना कछु ही खोयो गयो, ना क्रिण ही नें दीन ।
 एक पाडोसी नें देतां देखनें, मांहरो मुख थयो दीन ॥ ३० ॥
 जब सूमन की त्रिया कहे, थांरा धन पाम्यां नें धूर ।
 थां सूं दांन देणी तो आवे नहीं, थें देख किगाड्यो कांय नूर ॥ ३१ ॥
 जब सूम कहे त्रिया भणी, मोनें न गमे दांन री बात ।
 दांन देणो तो जिहांइ रह्यो, कानें सुणियो पिण न सुहात ॥ ३२ ॥
 आवे अगगाट करतो अहंकार जब, कृपणपणो गयो बहती रे पूर ।
 षय उपशम री तयारी हुवां, जब कृपणपणो छे हजूर ॥ ३३ ॥
 काम पडे सावद्य दांन रो, जब कृपणपणा रो हुवे नास ।
 षयउपसम देखे आवतो, जब कृपणपणो छे पास ॥ ३४ ॥
 दातार नें कृपण बेहूं, रहे एकण घर मांय ।
 जो दातार डरे कृपण थकी, तिण सूं दांन दीयो नहीं जाय ॥ ३५ ॥
 दातार नें कृपण बेहूं, रहे एकण घर मांहि ।
 जो कृपण डरे दातार थी, देतां वरजणी आवे नांहि ॥ ३६ ॥
 घर में दातार नें कृपण बेहूं, त्यांरे आय ऊमा साधु बार ।
 जब दातार उठ्यो वेंहरायवा, तिण पेंहली कृपण हुवो तयार ॥ ३७ ॥
 जो सगलाइ घर में कृपण हुवे, त्यांरे साधु ऊमा बार ।
 जब सगलां रे हुलास वेंहरावण तणी, मांडे मांहोमां मनवार ॥ ३८ ॥

कृपण रे घसको दातार नो, रखे ओ देला बहुत वैहराय ।
 दातार रे घसको कृपण तणो, रखे ओ देला मोनें अन्तराय ॥ ३६ ॥
 घर में सगला कृपण हुवें, के सगलाइ हुवें दातार ।
 तो कजियो न लागे दांन रो, पछें किरतब सारू फल लार ॥ ४० ॥
 किणरे दांन देवण री मन में घणी, पिण मिलियो कृपण रो जोग ।
 ते मन री मन माहि ले गयो, इसडो छे कृपण रो सजोग ॥ ४१ ॥
 दाता धनवत रो निरघन हुवे, तो ही दांन देवण रो हुलास ।
 घर मे वस्तु न हुवे तेहने, तो ही करे दलाली ओरां पास ॥ ४२ ॥
 असली राजा रो राज गया थकां, तो ही ओ राखे राज री रीत ।
 ज्यू दातार रो धन खूटें सरवथा, तो पिण दान देवण सूं पीत ॥ ४३ ॥
 कदे कृपण निरघन रो धनवत हुवे, तो ही देणी न आवे दान ।
 बले वरजे घर रां ने कहे द्यो मती, वात न गमे दांन री कान ॥ ४४ ॥
 कमसल रे राज घरे थकां, तो ही शुद्ध नही राज रीत ।
 ज्यू कृपण नें धन मिलियां थका, दान देवण री नही पीत ॥ ४५ ॥
 एक मेह गाजे ने वरसे घणो, एक गाजे पिण वरसे नही काय ।
 एक गाजे नही पिण वरसे घणो, एक गाजे वरसे नाय ॥ ४६ ॥
 ज्यू एक दातार गाजे ने वरसे घणो, एक गाजे पिण नही छे दातार ।
 एक गाजे नही पिण दातार छे, एक न गाजे न वरसे लिगार ॥ ४७ ॥
 केइ कृपण थोथा गाजें घणा, पिण मूल नही दातार ।
 केइ कृपण मूल गाजे नही, दान पिण नही देवे लिगार ॥ ४८ ॥
 केइ कृपण पिण एहवा, थाथा करे गुमान ।
 ठाला बादल ज्यू गाजें घणा, पिण देणी नांवे दान ॥ ४९ ॥
 केइ ओरां ने देतां देखने, मुरझ रहे मन मांय ।
 हाय न चाले आपरो, तिण सूं बोल्थो पिण नही जाय ॥ ५० ॥
 कृपण दान देवे नही, तिण उपर साधु करे घेख ।
 दोनू बूडें छें बापडा, त्यानें ग्यानी रह्या छें देख ॥ ५१ ॥
 वार वार कृपण भणी, निषेवण रो नही काम ।
 राग घेख बंधे घणो, न रहे शुद्ध परिणाम ॥ ५२ ॥
 कोइ दातार रो कृपण हुवे, कोइ कृपण रो हुवे दातार ।
 पछे कर्मा गति छे बांकडी, तिण सूं जीव न रहे एक धार ॥ ५३ ॥
 सुपातर दांन दे तेहने, वरज्या बंधे भारी अन्तराय ।
 तिण सूं दुख असाता हुवे अति घणी, चिहुंगति गोता खाय ॥ ५४ ॥
 ६०

नीठ नीठ नर भव लह्यो, इण जग मे नर नार ।
पिण कर्म जोगे कृपण हुवा, महा लोभी परले पार ॥ ५५ ॥
कृपण नें दांन दोहिलो, हुवा सत हीणा नर सूम ।
दिसे फररा फूटरा, हलका थोथा वूम ॥ ५६ ॥
सूमा केरी संपदा, चोडें कुमातर खाय ।
के रोकीले रावले, पिण हाथां सूं दीयो नही जाय ॥ ५७ ॥
सूम सावां नें आया देख नें, मूंढो फेर दे पूठ ।
कला करी वस्तु छिपाय दे, के कोइ बोले भूठ ॥ ५८ ॥
घर में घन पिण दलद्री, जिके न देवे दांन ।
भार भूत घन तेहनों, कोरो करे गुमान ॥ ५९ ॥
जीव कटे कृपण तणो, देतां लडथड धूजें हाथ ।
कृपण काठी भाठा सारीषो, कपिला दासी वाली जात ॥ ६० ॥
सात थोक देवे सूमडा, कृपण आडा देवे किवाड ।
के आडा पग दे आंग नें, बेठो उत्तर देवण ने तयार ॥ ६१ ॥
कृपण सीख दे दातार नें, कदे नही दीजें दांन ।
जो घर रा मिनपां नें देता देखनें, तो तोडे जांसूं तांन ॥ ६२ ॥
देखे साधु आया नें अन्न सूभतो, देखे वेहरावूं एकण वार ।
भाले कुडल्ली वलतो थको, वले पाछा नहीं आवे दुजी बार ॥ ६३ ॥
कृपण करे कदागरो, करे सावां नें भाड ।
मांहरो असूभतो आहार ले गया, कहे काचा पाणी कनें मांड ॥ ६४ ॥
दातार नें दांन देता देख ने, मूंढो दे कुमलाय ।
पारका दुखां हुवे दुबलो, मांणे बेठो रोटी नहीं खाय ॥ ६५ ॥
कृपण रो घन कारमों, घस्थो रहें घर मांय ।
लेखे क्यूं ही लागे नहीं, घन पापी रो परले जाय ॥ ६६ ॥
कीडी सिचे कहे लोक में, तेहनों तीतर खाय ।
कृपण कीडी सारिषो, कहे लोक दुनियां रे मांय ॥ ६७ ॥
छाती फाटें सूम री, जो देता देखे दांन ।
दांन तणा गुण वरणवे, तो कृपण कदे न मांडे कान ॥ ६८ ॥
घणो उपदेश दे दांन रो, कृपण नें किरपाल ।
लाखां प्रकारां न हुवे, कदे गेहुं तणी दाल ॥ ६९ ॥
मूल कदेही मानें नहीं, कृपण केरी बात ।
कृपण आयां कोड हरषे नहीं, जिम अमावस री रात ॥ ७० ॥

कदे सूम री सोभा हुवे नही, देखो सहु ससार ।
 जात न्यात ने लोक मे, सहु देखलो नर नार ॥ ७१ ॥
 लाहो मिनष जन्म तणो, कृपण न लीनो कोय ।
 धन माल सहु मेल ने, चाल्यो कलदर होय ॥ ७२ ॥
 परलोके पाप परगटें, भरे नेणा भरे नीर ।
 हाय मे दान दीयो नही, अब कुण वटावे पीड ॥ ७३ ॥
 कृपण राक ते बापडा, वाघी पूर्व भव अतराय ।
 तिण कारण तिण जीव सू, दान दीयो नही जाय ॥ ७४ ॥
 कृपण ओलखणी प्रगट करी, कहिज्यो अवसर देख ।
 जो कृपण नें सुणावोला माड ने, तो तुरत जागेल्या घेख ॥ ७५ ॥
 सबत अठारे वयालीस मे, कार्तिक मास मभार ।
 कृपण ने ओलखावीयो, सरीयारी सह्र मभार ॥ ७६ ॥



रत्न : २६

वैराग री ढालां

ढलल : १

[श्री ऒणलशुवर गणधर ढुनलवर ने कहें रे]

वृक्ष तणुु ऒू ढलकु ढलनडु रे, ते ढडतल कलड न ललगे वलर रे ।
 ऒू तूटे आउखुु ढरतलं ढलनष नुु रे, ऒब कुड न सके रलखण हलर रे ॥
 ढील ढत करऒुुु चतुरल धरुु नुु रे ॥ १ ॥
 ढलत ढलतलदलक कुढल ढेलने रे, ढर ढव ढें ऒलसुु एकलडु आढ रे ।
 वलछुडलडलं ने ढलछुु ढललणुु ढुुहललु रे, कुण गतल ढे ऒलसुु ढल वेतुु ढलढ रे ॥ ढी० २ ॥
 ऒीवडु तुु अलुढु रहुुु ढलडल ढढु रे, वले छुु ढलत ढलतलदलक ढलड रे ।
 तलणल वेऒल तलणरे ललगे रहुडल रे, ढलण आसल अलघल छुुडु ऒलड रे ॥ ३ ॥
 ऒीव कलडल छुुडे तलण अवसरु रे, चलतुवे ढन ढलहे अनेक ऒऒलल रे ।
 ढुहे घन ऒुवन रुु ललहुु लीडु नहुु रे, इढ वलल वलल करतुु कर ऒलडे कलल रे ॥ ॡ ॥
 ऒीवडु तुु ऒलणे केडु दलन थलर रहू रे, ढलण ढरण आगे नहुु ललगे ऒुुर रे ।
 ऒनुढ ढरण रुु सगलल ऒगत ढे रे, ढुदे तुु आहलऒ ढुुतुु खुुड रे ॥ ॡ ॥
 कलडल ढलडल सगलु छुुं कलरढुु रे, कलरढुु छुु सगलु ढरलवलर रे ।
 ते ढलल ढलल वललवे ढलदलल नुु ढरे रे, एहुवु छुु सगलु अधलर संसर रे ॥ ॢ ॥
 घन गडुडुु घर ढलहें लुुणुु लुक ढे रे, ऒलणुु ढुतुरलदलक ने देऊं सर्व वतलड रे ।
 ऒीढ थकुु ऒब न आवे ढुलणुु रे, ते ढलण रह गडु ढन रुु ढन ढलड रे ॥ ॣ ॥
 कलंडु कुुषुु कलंडु करणुु अछुु रे, घर हलतलदलक वलणऒ वुडलढलर रे ।
 वले ढलडल ढेलुं ढेलू करतुु ढलरे रे, ढलण कलल अण चलतुु नुुहलखे ढलर रे ॥ ॡ ॥
 घर रल कलरऒ ढुरु कर नहुु सके रे, अघ ढीच छुुडु चलुडल सहु कुुड रे ।
 घलल ढलहल कलललडल रहुे सदल रे, ते गडल नलरथुक ढलनव ढव खुुड रे ॥ ॡ ॥
 ढलनष तणुु ढव छुु अतल ढुुहललु रे, उतकषुु ढलढे अनते कलल रे ।
 ते अलुढ सुखल रे कलरण ढडुचलं रे, हलरे ढलनव ढव ढुरुख ढलल रे ॥ १० ॥
 एहुवु अधलर आउखुु ऒलण ने रे, करु ऒणुेशुवर ढलवुुु धरुु रे ।
 ऒु शुदुध गतल ऒलवल रुु छुु चलवनलं रे, तुु दलन दलन ढतलल ढलडु करुु रे ॥ ११ ॥
 हुु कहल कहल नुुं कलतरुु कहुु रे, ससर छुु सगलु अतत असलर रे ।
 गुडलं दरसण चलरलत तढ वलनलं रे, सर ढ ऒलणुु ढूलु ललढलर रे ॥ १२ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गलथल के अन्त ढें है ।

ढाल : २

दुहा

केइ बालपणे समज्या नहीं, वले जोवन दीघो खोय ।
 पछें बुढापो आयां थकां, कुण कुण अवस्या होय ॥ १ ॥
 शक्ति घटी देही तणी, वले वली लीलरी आय ।
 तिणसूं कमायो पिण जात्रे नही, जब बेठो रहे घर मांय ॥ २ ॥
 जब गमतो न लगें केहनें, वले दीठांई न सुहाय ।
 पुन्य संचो पूरो हुवो, हिंवें दुख मांहें दिन जाय ॥ ३ ॥
 खाट पड्यो खूं खूं करे, हुइ सुगली देह ।
 हाल हुकम चाले नहीं, परिजन फिर दीघो छेह ॥ ४ ॥
 भूख तृषा पीड्यो थको, पामें दुख अतंत ।
 जरा आइ जोवन गयो, जब कुण-कुण हुवे वृतन्त ॥ ५ ॥

ढाल

[म्हारी सासु री नाम छे फूली]

बूढो डिगतो डिगतो चाले, आंख नाक भरे सिर हाले ।
 कांग वाय जूं मस्तक धूगे, जब जाय बेठो घर खूणें ॥ १ ॥
 बूढो खूं खूं करतो थूके, घर रा तिण अमर कूकें ।
 नीठ नीठ दड लीप सुघाख्यो, थें तो सगलो आंगण विगाड्यो ॥ २ ॥
 बूढे हाठ हवेली कराया, तठे वेसण न दे जाया ।
 नोहरे जाय वेसाण्यो एकंत, सार संभार को न करत ॥ ३ ॥
 सुसरे करे घणी नरमाड, पुत्र नी बहु नें बतलाइ ।
 है तूं बडा साजन की जाइ, मोनें ठंडो सो पांणी पाइ ॥ ४ ॥
 हूंजो होबुं छूं कातण सूं खोटी, हूं तो किम भर ल्यावुं लोटी ।
 इम सुण हुवो बूढो जदास, न्हांखे हिया मांसूं निसास ॥ ५ ॥
 बूढा सूं बेठो रहणी नावें, वले बेटा री बहु नें बोलावे ।
 कहे मोसूं बेठो रह्यो न जाय, खाट गूदडी दे तूं विछाय ॥ ६ ॥
 म्हारा बालक बालकी रोवें, ते तों पालणियां में न सोवें ।
 थानें छोडपरी किम जाऊं, खाट गूदडी केम विछावूं ॥ ७ ॥
 सुसरा मोनें क्यानें संतावो, थारा बेटां नें कांम भोलावो ।
 बेटा नें बोलायां मूंन सामे, कने ऊमो रह्यो पिण लाजें ॥ ८ ॥

बूढला रा पुन्य परवाख्या, तिणसूं वचन जाए मांख्या ।
 जब बूढलो मन में खीजे, वेटा बहु मूल न भीजे ॥ ९ ॥
 वूढा रे बालपणा रा हेवा, जाणे खाबूं मिष्टान नें मेवा ।
 मन गमता भोजन खावूं, लाडू पेडा जलेवी मगावूं ॥ १० ॥
 उन्हीं सीरो मगद बले खाजा, एहवा भोजन भावे ताजा ।
 जाणे नरमसी खीचडी खावूं, दही दूध ने बूरो मंगावूं ॥ ११ ॥
 बूढा नें आछा भोजन भावे, पुन्य विनां कहो कुण खवावे ।
 ओ तो स्वारथ किणरे न आवे, तिण सूं घर रां ने मूल न सुहावे ॥ १२ ॥
 घर सूं सूखी लूखी रोटी आवे, ते तो दांता सूं खाइ न जावे ।
 जब बूढो हुबो दिल्लीर, काढें आख्यां मां सूं नीर ॥ १३ ॥
 जां की बोली पिण न सुहावे, मीठा भोजन कुण खवावे ।
 बूढे हाथां सूं द्रव्य कमाया, वेटा दाब रह्या घन माया ॥ १४ ॥
 जब ओ कर कर लोकां ने भेला, करे वेटा बहुं नीं हेल्या ।
 म्हारा कह्या में को नही चाले, पूरो धान खवानें न घाले ॥ १५ ॥
 जब लोक हसैं पीटें ताल्यां, बोले वेटा बहु नें गाल्या ।
 कहे वेटा बहु ने एम, डोकरा नें दुब दो केम ॥ १६ ॥
 केइ केहवा लागा आम, थें तो मत हुबो लूण हराम ।
 जब वेटा बहु इम बोले, डोकरा रा परदा खोले ॥ १७ ॥
 ओ तो लोका सूं एकठ मांडे, म्हाने यूं ही अनाखी भाडें ।
 म्हे तो आछा भोजन नित घालां, इणरे केडें सगला चाला ॥ १८ ॥
 इणरे पीत मुरीद न कांई, ओ तों यूं ही करे विकलाई ।
 इणरी गइ अकल विग्यांनो, इणरी वात कोइ मत मांनो ॥ १९ ॥
 बूढा रो कुण उठे वेली, उणरी वात गइ सर्व ठेली ।
 बूढा रा पुन्य पड गया पूरा, तिण सूं सेंण सगा हुवा दूरा ॥ २० ॥
 निज नारी री आहिज रीत, वूढा सूं न घरें प्रीत ।
 बले ओर सगा सेंण सारा, वूढा सूं होय जाय न्यारा ॥ २१ ॥
 कदे घी गुल सूंधा होय जात, जब वांछे वूढा री घात ।
 घर रां तो मांड्यो अति आंचो, ओ तों मरे न छोडे माचो ॥ २२ ॥
 बाल जवान तो मर जावे, इण वूढा नें मरण न आवे ।
 ओ तों नित नबो होय रह्यो सेठो, म्हारे वारणे रिणाइ ज्यूं बेठो ॥ २३ ॥
 म्हे तो सगला हुवां छां काया, इण डोकरे वोहत सताया ।
 इणरी दांई ना पर गया विरखो, ओ तो अजे न मुंवे जरखो ॥ २४ ॥

म्हारि उघडी पाप री खानो, इण बूढा सूं पडियो पानो ।
 एहवा वचन बूढा नें सुणावे, जब बूढो अतंत दुःख पावे ॥ २५ ॥
 बूढे कर्म कीया था जाडा, ते तों आया कुबेलां में आडा ।
 ते भोगवतां दुख पावे, सुमता विण पडियो सीदावे ॥ २६ ॥
 बूढा री विपत अनेक, पूरी कहणी नावें वसोख ।
 थोडीसी कही बांनगी मात, देखो अरुबरु साख्यात ॥ २७ ॥
 इणरी सुणज्यो लोक लुगाइ, एहवी विपत बुढापे आई ।
 जो ऊ पेंहली धर्म करतो, एहवी विपत में क्यांनं पडतो ॥ २८ ॥
 बूढो पेंहलां बूढो मद छकियो, जिण धर्म ओलख नही सकियो ।
 हिंवे रह्यो आरत ध्यान ध्याय, तिण सूं धर्म कीयो किम जाय ॥ २९ ॥
 बूढे पेंहलां कीची कूडी सेखी, रह्यो धर्म तणो नित बेखी ।
 करतो साधु श्रावकां री हेला, हिंवे आय पडी छे बेलां ॥ ३० ॥
 पेंहलां कीची न्यातीलां ठेलो, जिण धर्म नें जाणियो सेलो ।
 हिंवे न्यातीला आडा न आवे, जब आप पड्यो पिच्छतावे ॥ ३१ ॥
 मोह माया में रह्यो कलियो, दुरगति नों टांको भलियो ।
 जोवन हुंतो ते दीघो गमाय, हिंवे कारी न लागे काय ॥ ३२ ॥
 पछें मरनें माठी गति जावे, चिहुंगति में गोता खावे ।
 पाप आगे न चाले जोरो, पाछी नर भव पावणो दोरो ॥ ३३ ॥
 केइ बूढा घर रां नें डरावे, लड भगड नें आछो खावे ।
 वले कर कर लोकां नें साखी, बेटा बहु ने भांडे अन्हाखी ॥ ३४ ॥
 वले करे खीटोर खोराई, घर रां नें घणो दुखदाइ ।
 केइ बूढा छे एहवा पापी, रह्या घर रां नें नित संतापी ॥ ३५ ॥
 केइ बूढा सूधा हुवे जोग, वेटा बहु मिलिया अजोग ।
 कदा आछी वस्तु बूढो खावे, तो उवे खूणे घाली घुरकावे ॥ ३६ ॥
 कहे तूं तो हुवो गटकायो, म्हारि घन नही घर मांयो ।
 सूधो बेटो रोटी क्यूं न खावे, म्हाने कांय अन्हाखी सतावे ॥ ३७ ॥
 जब बूढो संके लाजां मरतो, वारे वचन न काढे डरतो ।
 बूढे कीयो विचारज ऊंडो, रखे दीसूं लोका मे भूंडो ॥ ३८ ॥
 एतो कर रह्या फेन फितुरो, म्हारि घोलां में घालें घुरो ।
 यानें छेडवियां नहीं बाकी, रखे जावे बूढापे नाकी ॥ ३९ ॥
 म्हारो काण कुख थो भारी, रखे लोकिन्क विगडे म्हारी ।
 इम जांपी बूढे मून साभी, जाण्यो राखूं बूढापे वाजी ॥ ४० ॥

जो न हुवे दोग्यां मांहे लजिया, तिणरा घर मांसू न मिटे कजिया ।
 कुड कुड काढे राता डोला, नीकले नित सांग बनोला ॥ ४१ ॥
 बात करता माथे सल चाढे, नितका दुख मे दिन काढे ।
 देखो नीठ मानव भव पायो, राग वेख में यूही गमायो ॥ ४२ ॥
 ससार ना सगा सर्व काचा, त्याने जाण रह्या मूढ साचा ।
 तिण री बुववंत करज्यो पिछ्छाणो, याने जाणज्यो वैरी समाणो ॥ ४३ ॥
 केइ बूढा रे पुन्य रहे बाकी, घर रा कार न लोपे जाकी ।
 जिण रे पूर्व पुन्य छे भारी, तिणरी मरजादा राखे नारी ॥ ४४ ॥
 जिण पूर्व पुन्य उपाया, त्यारे हाथ जोड रे जाया ।
 जो ऊ थोडीसी वस्तु मंगावे, तो उवे थाल भरी बेगा ल्यावे ॥ ४५ ॥
 सर्व जी जी कारे बतलावे, वले बूढा को हुकम चगावे ।
 मन गमता भोजन खवावे, सारा पेहली बूढा ने जीमावे ॥ ४६ ॥
 जिण पूरी कीधी पुन्याई, बेटा बहु मिल्या सुखदाई ।
 रूडा रूडा वस्त्र पहरावे, सुख सेज्या माहे पोढावे ॥ ४७ ॥
 वले काण कुख राखे भारी, सगला रहे आगन्या कारी ।
 देव परमेश्वर ज्युं पूजे, करडी नजर कीया सर्व घूजे ॥ ४८ ॥
 एहवा सुख मे बूढो रति पामे, वले रही लोकिक लोका मे ।
 बूढो एहवी साता सुख पाय, घणो मगन हुवी मन मांय ॥ ४९ ॥
 एतो सारा मिल्या सुखदाय, पिण त्राण शरण नही थाय ।
 एतो इण भव केडे चाले, परभव जाता साथे न हाले ॥ ५० ॥
 साथ आवे पुन्य ने पाप, सुख दुख भोगवे आपोआप ।
 इम सांभल नें नर नारी, करज्यो मन मांहि विचारी ॥ ५१ ॥
 एहवा सुख तो सगलाइ फीका, त्यानें कदे म जाणो नीका ।
 ते तो थोडा माहे विललावे, सुपना जिम आल माल होय जावे ॥ ५२ ॥
 त्यामें कदे म जाणज्यो सार, ते तो मिल्लिया अनती वार ।
 एहवा सुख ऊपर निजर न दीजे, करणी कर लाहो लीजे ॥ ५३ ॥
 आचारग्य रो ले अनुसारो, कह्यो बूढा तपो विस्तारो ।
 इम जांणी करो जिण धरम, ज्युं पांमो मुगत सुख परम ॥ ५४ ॥
 सवत अठारे चोतीसें बरस, अषाढ विद तिथ इर्यारस ।
 सनीसर वार विचारो, जोड किधी सरियारी मभारो ॥ ५५ ॥

ढाल : ३

[इण पुर कंबल कोई न लेसी]

देखो नारी कादें में खूंता, लोक फिरे सहु हा हा हूंता ।
जल थल देश प्रदेशां जावे, तो पिण नारी सुख कर ध्यावे ॥ १ ॥
ठगण मूंसण दगा री हूंस, ज्यूं ज्यूं धन ल्यावूं लूंस ।
असा डाव अनेक उपावे, पिण पूर्व पुन्य हुवे ते पावे ॥ २ ॥
किण उहां वेठें कीधी सगाइ, पिण पाछा घर न सक्या आइ ।
किण नें विचे ठांइज माख्या, देखो नर भव यूंहिज हाख्या ॥ ३ ॥
केइ आय परणीज्या नारी, धन खूटां वले हुवा तयारी ।
किण ही द्रव्य इहाइज कमाया, पिण निश्चें छे काची माया ॥ ४ ॥
खांण भोग छे कर्म बलाय, पेहलां स्वाद विगडे जाय ।
ज्यूं विष चडिया नें नीम ही भावे, पांव रोगी नें खाज सुहावे ॥ ५ ॥
एसा काचां सुख सहु फीका, अंत लागु छे निश्चें जी का ।
इंद्री कदें तृप्त नहीं होवे, यूं ही मूरख जमारो खोवे ॥ ६ ॥
मरण तणो भय न मिट्यो जेथ, कासूं सुख भुगतेलो तेथ ।
मोह्यो विषें नार नों दास, कुण कुण कामं करावे तास ॥ ७ ॥
फिर फिर वस्तु घणी जो आंणी, तो पिण आगल नार रीसाणी ।
हूं तुम्ह केडें लागी फोक, कांइ न आणे रुपिया रोक ॥ ८ ॥
गेंहणा गांठा मुम्ह नें जोइजें, तुम्ह थी कारज कोइ न सीमें ।
किण हूंसे तें मुम्ह नें परणी, घर किम चालसी थारी करणी ॥ ९ ॥
हूंतो कळें सहु घर नों कामं, तूं जाय वेसे बीजी ठामं ।
ए तुम्ह ने किण बात सीखाइ, घर री चित न जाणें काई ॥ १० ॥
आज तो जोइजे घर में हांडी, चूलो भांज गयो घर माडी ।
इंधण री भारी गई खूटी, बांण गयो मात्रा रो तूटी ॥ ११ ॥
धान पीसण जोगी नही घरटी, आंण आप मुम्ह गेहु वरटी ।
साल दाल घृत ल्यावण पाछो, तुम्ह नें भावे आछो आछो ॥ १२ ॥
काजल कूंकूं डाबी हार, गेंहणा आंण समूं सिणगार ।
टीकी राखडी तेल सुगंध, पेइ आरसी मेल संबंध ॥ १३ ॥
मेल्या वस्त्र घोई ने ल्याव, जूना जोय तूं नवा कराव ।
सूई सूत बीजणो छाज, जोडी आंण मुम्ह पहरवा काज ॥ १४ ॥

साजी लूण हीग मिरच वेसवार, खुवारो वुहारी दातणा चार ।
 अखल मूसल आछी गाय, कुडछी डे,यला छुरी मोलाय ॥ १५ ॥
 ढहिया घर तूं नवा कराय, डावडा रमवा दडी बणाय ।
 गुडी गुली तीर घुणी ने हटरी, टोपी भगो रूप भलियो कुलडी ॥ १६ ॥
 एता ल्याव सताब संभाल, काना हेटे मती फुजाल ।
 अजे न ल्यायो कदकी कूकी, थारी अकल गइ छे चूकी ॥ १७ ॥
 मोर मसल थाकी कहे कामण, बेटो आज छे आमण दूमण ।
 बेस तूं इण ने खोले लेइ, काम कर न सकू हू बेई ॥ १८ ॥
 दोहिली हुवे नें ए मे जायो, हिवे तू पालीस काय उपायो ।
 सवा नव मास वूही हू भार, तू दोरो लेतो खिणवार ॥ १९ ॥
 किण ही काज रीसाणी नार, मनावे पगे लग तिवार ।
 डावा पगरी दे सिर लात, तो पिण मूरख तजे न तात ॥ २० ॥
 पाप तणे वस पडियो समणी, रुदन करावे छे वलि रमणी ।
 भेष लेइ केइ विषे विगूता, ते पिण यू घर ३ भार जूता ॥ २१ ॥
 भात भात रा सुख मधु विद, आगे नरक तणा छिद भिद ।
 इण परे रोलवे पुष नें नारी, नीचा काम करावे भारी ॥ २२ ॥
 दास तणी पर आगे ध्यावे, तो पिण विरत न काचित आवे ।
 जीव तो थोडा सुखा ने काजे, गुलामपणो करतो नही लजे ॥ २३ ॥
 एहवा दुख ने सुख कर मानें, यूही बूडा जाय अग्याने ।
 भटके तलफे सुख के ताई, ज्यू ज्यू अलूम पडे दुख माही ॥ २४ ॥
 नचित होय बेठा नर अघ, बावे पर घर केरा बघ ।
 परणीजे जाणें घर माड्या, इसडा घर अनता छाड्या ॥ २५ ॥
 तो ही तुस न हूवो जीव, नीकल्यो दे दे काची नीव ।
 घर जलाय तीरथ जे करसी, सो साधु जग माहे तिरसी ॥ २६ ॥
 केइ श्रावक ना व्रत पाले, ते पिण नरक तिर्यंच दुख डाले ।
 देश थकी ते पिण ब्रह्मचारी, साधु तजिया सर्व विकारी ॥ २७ ॥
 नरक दिखावण दीवी नार, मोष जावण ने आडी किवाड ।
 सुयगडायग तदुल वियालिए साख, तिण मे वीर गया छे भाख ॥ २८ ॥
 स्त्री दोष जिण कहा अनेक, तिण न्याए मेल्या क्यूही एक ।
 बुरो मती माने नर नारी, निश्चे देखो ग्यान विचारी ॥ २९ ॥
 छेदाणा जस हाथ ने पाय, काप्या कांन नें नाक कहाय ।
 ते पिण सो वरसा नी नारी, दूर तजें रहे ब्रह्मचारी ॥ ३० ॥

विषें दिष्टी वरजी चित्रनारी, तो किम निरखे सोले सिणगारी ।
 सूर्य साह्यो जोयां घटें तेज, ज्यूं ब्रह्मचर्य घटें इण हेज ॥ ३१ ॥
 उंदर बेठो मिनकी पास, जीव तिहां राखे किण आस ।
 तिम नारी संगे शीलवंत, विरलो कोइ वचे बलवंत ॥ ३२ ॥
 इम जांणी रहे साधु एकंत, आपनें हित वांछे ते सत ।
 शील संजम दिढ पाले ठीक, त्यांनं जांणो मुगत नजीक ॥ ३३ ॥

ढाल : ४

[तारा हो प्रतख मोहशी]

स्वारथ सहू ने बाल हो, स्वारथ जग मंडाण । चतुरनर ।
उद्यम जीव करे घणो, प्राप्ति भाग परमाण ॥ चतुरनर ॥
स्वारथ जग मंडाण* ॥ १ ॥

पीहरिया सूं पुत्री राजी रहे, ज्यां लग विवध पणे आवे माल ।
मुतलब पूगे त्यां लगे, त्यानें दिठा हुवे अतत कुशाल ॥ २ ॥
जो पीहरियां होय जाय दरिद्री, पुत्री नो घर ताजा देख ।
जो मागे कायक पुत्री कने, तो तुरत जागे तिण नें घेख ॥ ३ ॥
पुत्र ने पाल मोटो करे, सूपे सारो घर घन माल ।
ते गरढापणे पिता भणी, पुत्र जाणे पिता नें साल ॥ ४ ॥
घर रे काम न आवे सर्वथा, निकमो बेठो खावे धान ।
जब गमतो न लागे केहने, खारो लागे विष समान ॥ ५ ॥



*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

रत्न : २७

जुआ री ढाल

दुहा

विसन सातोंई छे अति बुरा, त्यांने छोडे उत्तम जीव ।
 त्यांने सेवे भारीकर्मा जीवडा, त्यां दीधी नरक री नीव ॥ १ ॥
 प्रथम विसन जूवा तणो, तिण खेल्या बंधे छे कर्म ।
 मतिभ्रष्ट हुवे तेहथी, वले खाय देवे जिण धर्म ॥ २ ॥
 जूवे रमे ते मांनवी, गया जमारो हार ।
 इह लोक परलोक विगाड ने, गया नगर निगोद ममार ॥ ३ ॥
 तिण जूवा में अवगुण घणा, ते पूरा केम कहिवाय ।
 थोडा सा परगट करू, ते सुणज्यो चित्त व्याय ॥ ४ ॥

ढाल

[१ भविष्य संवो १ साध सथाखा]

जूवे रमें त्यांरो रहे माठो ध्यान, माठी लेख्या नें माठ परिणांम ।
 वले माठाइ जोग नें माठा अघ्यवसाय, वले चित्त न रहे एक ठांम रे । भविष्यण ।
 जूवो मत रमजो कोइ, इण जूवा थी आछो न होइ रे । भविष्यण ।
 हीये विमासी जोइ ॥ १ ॥
 जूवे रमें तिणरे भूठ ने चोरी, दोनूं लारे लागी रहे नित । भ० ।
 थोडा मे दरिद्री होय जावे, थोडा मे हार दें सर्व वित्त रे ॥ भ० ही० २ ॥
 वले धसको निरतर न मिटे तिणरो, वले न मिटे सोग संताप ।
 वले विलखे मूढे फिरे लोकां में, इन जूवा तणे परताप रे ॥ ३ ॥
 जुवारी रा घर में घन माल हुवे तो, थोडा मे हार दें ततकालो ।
 वले लोका रो माथे उचारो ल्यावे, मांग्यां काढें तुरत देवालो रे ॥ ४ ॥
 लोक आय मांग्यां माथो नीचे घाले, तिण सूं पाछो तो देणी न आवे ।
 कोइ लाजां भरतो कूवो बावडी ताके, केइ परदेशां उठ जावे रे ॥ ५ ॥
 जूवे रमे जुवारी तिणरो, घर रा पिण न करे विश्वास ।
 जाणे रखे घर मासू चोर लेजावे, रखे नीवी तणो करे नास रे ॥ ६ ॥
 तिणरा सगा संबंधी ने मंत्री न्यातीला, त्यारे घरे जुवारी आवे ।
 जब त्यारे पिण धसको पडे तिणरो, रखे कांयक चोरे लेजावे रे ॥ ७ ॥
 मात पिता मासू नें सुसरा, वले सेंग सगां रे माहि ।
 वले सजन नें असजन सारा में, जुवारी री परतीत नाहिं रे ॥ ८ ॥

कोइ जुवारी नें बेटी देतो सके, इणरे जूवा रो कलंक लागो ।
 इण नें बेटी परणाए क्यानें विगोऊं, ओ तों धन खोय हुंतो दिसे नागो रे ॥ ९ ॥
 कोइ जुवारी नें ब्याज देवे छे, कोइ जूवारी नें देवे उचारो ।
 कोइ जुवारी सूं सीर मांडे छे, यां तीनां रो हुवे विगाडो रे ॥ १० ॥
 कोइ जुवारी री संगत करे छे, ते पिण जुवारी होवे ।
 ते पिण धन माल खोय नें होय जाय रीतो, पछे छानें - छानें घणो रोवे रे ॥ ११ ॥
 जुवारी री संगत कीधी ते बोलें, हूं इण री संग सूं गाडो बूडो ।
 घर में धन माल हुंतो ते सारोई हाख्यो, वले दीठो लोकां में भूडो रे ॥ १२ ॥
 जुवारी जूवे रमे ते व्यसनी, बाप दादा नें मेंहणी बोलवे ।
 उवे जुवारी तणी बात कांना सुणे जब, त्यां सूं पिण पूरो बोल्यो न जावे रे ॥ १३ ॥
 जुवारी रा बेटा नें पोता सुघी, मेंहणी बोलवे लोकां माहि ।
 इण रो बाप दादो जुवारी हुंतो, जब ए नीचो मायो घाले ताहि रे ॥ १४ ॥
 जुवारी रो आबरू घटे लोकां में, वले काण कुख जाबक घट जावे ।
 वले जुवारी री संगत करे छे, तिण रा पिण विसवा हीणा थावे रे ॥ १५ ॥
 वले जुवारी री स्त्री जूवा थी, दुखे दुखे काढे दिन रात ।
 इण भरतार लारे आयां पछें मोनें, कदे सुख न हुवो तिलमात रे ॥ १६ ॥
 वले जुवारी रा माता नें पिता, जुवारी थी सारा हुवा काया ।
 ओ पापी म्हारे घर आय ऊपनो, इण निठाय दीनी म्हारी माया रे ॥ १७ ॥
 जुवारी रे कुटंब कबीलो, सगलाइ दुखिया थाय ।
 जुवारी सारो धन हार जावे जब, न्यातीला पिण सीदावें ताय रे ॥ १८ ॥
 जुवारी जूवे रमतो हार जावे, सारो धन स्त्री नें माल ।
 पछे भीख भमतो फिरे लोकां में, रोतां रा पिण पडें हवाल रे ॥ १९ ॥
 जुवारी रे घर कोइ थापण मेले, तिण नें जुवारी हार देवे ।
 तो पाछो आय मांग्यां कठा सूं देवे, जब ऊ घणा घमेडा लेवे रे ॥ २० ॥
 जुवारी जूवे रमें तिण काले, तिणनें देवे कोइ उचारो ।
 ते पिण दूजें तीजे करण जुवारी, ते जुवारियां रो सिरदारो रे ॥ २१ ॥
 जूवा रो पट्टी कराय सही कराई, ते सगला जूवा तणो अधिकारी ।
 तिण सगला जुवाख्यां रे छूट कराई, तिण रे नरक तणी छे तयारी रे ॥ २२ ॥
 केइ चोपडं रमे छे गरथ अडे नें, ते पिण निश्चें जुवारी साख्यात ।
 मार- मार करे मुख बोले रीणोइ, तिण री पिण विगडी छे बात रे ॥ २३ ॥
 भेला करे पासा नें सारी, मुख बोले मार मारी ।
 चोपड रमें कर्म बांध्या भारी, ते हुवा नरक नें तयारी रे ॥ २४ ॥

जूवे रमें केइ माल अडे नें,
 इण भव पर भव मे दुख पावे,
 जिण गाव मे जुवारी घणा हुवे ते,
 भला भला मिनष छे तिण गाम माहे,
 जुवारी गांम रा सगला लोकां ने,
 जो जुवारी सगला ने कहावे,
 जान बरात पर गांम मे जाये,
 तठे पिण तिण गाम री हलकी लग्गावे,
 जुवारी जूवे रमे घन माल हारे,
 शोभा तो लोकां में कठेय न दीसैं,
 जूवे रमें तिण रे उतकष्टे भागे,
 आगला ने पाछला न्यातीला ने,
 नल राजा तो जूवो रमें ने,
 देश नगर साराइ छोडी ने,
 पाचोई पांडव जूवे रमे ने,
 देश प्रदेशां भमता फिरिया,
 आगे बडा बडा राजा अनेक हुवा ज्यां,
 भीख मंगता हुवा भिख्यारी,
 जूवे रमे जुवारी तिण रे,
 ताणा बेजा लाग़ा रहे चित्त मे,
 पछे जुवारी मरने माठी गति जावे,
 नरक निगोद मे भीकां खावे,
 साहुकार रो बेटो जूवे रमें नित को,
 जाण्यो वरजूं तो बेटो अपघात करनं,
 रेसे रेसे बेटा ने समझायो घणो,
 जब साहुकार बेटा थी डरियो,
 म्हारो कह्यो बेटो मूल न माने,
 ओ तो कपूत उठ्यो म्हारा पाप रे उदे,
 इतले साहुकार मादो पड्यो जब,
 मो काल कीयां पछे हूं कहूं ज्यूं कीजे,
 म्हारा खरच ऊपर देशां देशां रा,
 खरच कीयां पछे तूं पाट वेसे जब,

हारी नें बले रोवे ।
 दोनूंई जन्म विगोवे रे ॥ २५ ॥
 गाव री पेठ गमावे ।
 ते सगला ने भूडा दिखावे रे ॥ २६ ॥
 देशां देशां मे मेहणी बोलावे ।
 गांम री हलकी घणी लगावे रे ॥ २७ ॥
 जो तिण माहे जुवारी होवे ।
 जानियां रो पिण आवरू खोवे रे ॥ २८ ॥
 तिणने मुख मुख दे फिटकारो ।
 धिग धिग छे तिण रो जमवारो रे ॥ २९ ॥
 विसन सातोई आवे ।
 जुवारी सगला नें लग्गावे रे ॥ ३० ॥
 सर्व राज नें स्त्री हारी ।
 एकलो चाल्यो मूंहु विगाडी रे ॥ ३१ ॥
 हाख्यो हथनापुर नो राज ।
 त्यां गमाई लोका में लाज रे ॥ ३२ ॥
 जूवा थी राज हाख्यो ।
 त्यां जीतव जनम विगाड्यो रे ॥ ३३ ॥
 अजक रहे दिन रात ।
 तिण रा दुख माहे दिन जात रे ॥ ३४ ॥
 तिहा पावे दुख अनंत ।
 इम भाख्यो छे श्री भगवंत रे ॥ ३५ ॥
 साहुकार सू वरजणी नावे ।
 रखे अकाले मर जावे रे ॥ ३६ ॥
 पिण बेटा सू जूवो छोडणी नावें ।
 रखे सारो घन जुवा मे गमावे रे ॥ ३७ ॥
 इणने छेडवूं तो हूणो हूणों ।
 करतो दीसे छे घर रो पूणो रे ॥ ३८ ॥
 बेटा नें कहे एकंत बोलाय ।
 ज्यूं तोनें सुख थाय रे ॥ ३९ ॥
 जूवाख्यां ने लीजे बोलाय ।
 जुवाख्यां कने टीको कढाय रे ॥ ४० ॥

जुवाख्यां में बड़ा जुवारी पासैं,
तूं चोड़ें कहीजे न्यातीलां सारां नें,
इम कही नें काल साहुकार कीघो,
तिणरी बेटा नें समझ पडी नही कांई,
हिवें साहुकार रे खरच रे ऊपर,
भारी खरच करे सारी न्यात जीमाए,
साहुकार रो बेटो पाट बेटो जब,
म्हारे पिता कह्यो तूं पाट बेसे जब,
इम न्यातीलां रा कानां में काढें,
थां में पका में पको जुवारी हुवे ते,

एक कहे हूं पको जुवारी,
म्हारे घन माल हंतो ते सगलोई हाख्यो,

दूजो कहे हूं थां थकी पको जुवारी,
म्हें पिण घन माल हंतो ते सगलोइ हाख्यो,
तीजो जुवारी कहे थां थकी म्हारो,
हाट हवेली म्हें पिण हाख्या,
चोथो जुवारी कहे हूं थां थकी पको,
थें हाख्यो छे ते म्हें पिण हाख्यो,
पांचमों कहे हूं थां सूं पको जुवारी,
थें हाख्या छे ते म्हें पिण हाख्या,
छठो कहे थां थकी पको जुवारी,
मोनें गधे चढाय गांम बारे काढ्यो,
सातमों कहे हूं थां थकी पको जुवारी,
थानें संका हुवे तो निजरां देखल्यो,
आठमों कहे हूं सारां सिरे जुवारी,
थां सगला में बीतीं ते मो में बीतीं,
जुवाख्यां रे मांहोमांहि वाद लागो,
जब साहुकार तणो बेटो डरियो,
तिण जुवारी आगे टीको नहीं कढायो,
जूवो रमवो तिण जाबक छोड्यो,

तिण कनें तूं टीको कढाय ।
मोनें तात कह्यो छे बोलाय रे ॥ ४१ ॥
जूवो छोडावण रो कीयो उपाय ।
पिण ग्यांन सूं दीयो समभ्नाय रे ॥ ४२ ॥
जुवारी लिया अनेक बोलाय ।
पछे जुवारी सर्वं जीमाय रे ॥ ४३ ॥
न्यातीलां नें कह्यो संभलाय ।
जुवारी आगें टीको कढाय रे ॥ ४४ ॥
सारा जुवारियां नें बोलाय ।
म्हारे टीको काढो आय रे ।

भायां मत करो जेज लिगार ॥ ४५ ॥

जुवारी मांहि पका सूं पको ।
होय बेटो छूं फक्कम पको रे ।
टीको तो हूं देसूं ॥ ४६ ॥

जुवाख्यां मांहें बडो जुवारी ।
हाट हवेली म्हें अघिकी हारी रे ॥ ४७ ॥

सुणो थें सगलाइ ढालो ।
चले म्हें अघिको काढ्यो दिवालो रे ॥ ४८ ॥

थानें खबर नहीं छे म्हारी ।
थां सूं स्त्री म्हें अघिकी हारी रे ॥ ४९ ॥

मोनें गांव वारे काढ्यो कूटो ।
अघिकाइ रो ठिकांणो छूटो रे ॥ ५० ॥

थें हाख्यो ते म्हें पिण हाख्यो ।
वले उमर जूतां सूं माख्यो रे ॥ ५१ ॥

थां में बीतीं ते सारी मो मांयो ।
म्हें हाथ अघिकेरो कटायो रे ॥ ५२ ॥

तिणरो लेखो तूं सुण रे माया ।
म्हें हाथ ने नाक दोनूं कटायो रे ॥ ५३ ॥

त्यांरो देखी मांहोमां ताण ।
जुवारी लागो जहर समाण रे ॥ ५४ ॥

त्यांनें काढ दीया घर बारो ।
हीया में कीयो शुद्ध विचारो रे ॥ ५५ ॥

म्हारे बाप मरते थके कह्यो थो मोने, तूं जुवारी आगे टीको कढाय ।
 ते तो एकत म्हारो जूवो छोडावण, त्या इण विघ मोनें समभाय रे ॥ ५६ ॥
 जो हूइज बले जूवो रमू, इण सारिखो हू पिण थाऊ ।
 तो जीतव जन्म विगाडूं म्हारो, घन माल पिण सगलो गमाऊ रे ॥ ५७ ॥
 जुवारी मर नें माठी गति जावे, पावे दुख अनंत ।
 नरक निगोद मे भ्रीका खावे, इम भाख्यो श्री भगवंत रे ॥ ५८ ॥
 कही-कही ने फितरो एक कहुं, जूवा माहे अवगुण अनेक ।
 इम सांमल ने उत्तम नर नारी, जूवा नें छोडो आण ववेक रे ॥ ५९ ॥
 कोइ जूवा तणा अति अवगुण सुण ने, जूवो छोडे साधां हजूर ।
 ते सूस भांग ने जूवे रमे पापी, तिणरा जीतव जनम नें घूड रे ॥ ६० ॥
 जूवा ने ओलखावण काजे, जोड कीधी पुर सहर मभार ।
 संवत अठारे वरस सतावने, सावण सुदी पंचमी शनिसर बार रे ॥ ६१ ॥



रत्न : २८

व्याहृतो

ढाल

साखी	शब्द	कहे	घणा,	सीखी	अकल	उठांण ।
परमारथ	खोजे		तिके,	तें	नर	विरला जांण ॥ १ ॥
कद	कूपल	बोली	हंसी,	पान	दीयो	कद जाव ।
वीर	वखाणी		ओपमा,	समभे	लोग	सताव ॥ २ ॥
नवा	नवा	लोक	जाण	नें,	कह्या	घणा प्रस्ताव ।
करज्यो	मती		कदागरो,	जोयजो	सूतरां	न्याव ॥ ३ ॥
अच्छता	नें	ओपमा	छती,	छते	अछती	होय ।
इम	जांणी	ने	गुण	ग्रहो,	भगडो	कोय ॥ ४ ॥
मति	ग्यान	रा	भेद	छे,	सुणज्यो	चित्त
एक	सूतर	नेश्राय	छे,	बीजो	विण	लगाय ।
अणदीठो		अणसाभल्यो,	मेले	वचन	दे	नेश्राय ॥ ५ ॥
जेसो	नर	देखे	तिसो,	उत्तर		रसाल ।
इसी	बुद्धि	उत्पात	की,	वीर	वखाणी	ततकाल ॥ ६ ॥
सशय	हुवे	तो	देखलो,	नंदी	ठांगाअग	ताहि ।
लोक	तिके	पिण	थूं	कहे,	कनक	माहि ॥ ७ ॥
साधु	कहे	तिण	मे	किसूं,	इण	फंद ।
कहे	लोक	जांणे	नही,	पूरो	छलिया	नर इद ॥ ८ ॥
विषे	रूपिया	फद	रो,	सुणज्यो	अवे	परमारथ ।
जोगी	जोग	सेठो	रहे,	भोगी	तजे	अरथ ॥ ९ ॥
तिण	उपर	दिष्टान्त	छे,	सुणज्यो	रोस	विकार ।
प्राणी	चाल्यो		परणवा,	जव	आगूंच	निवार ॥ १० ॥
तोरण	तारा		छांहडी,	किम	कर	जताय ।
जो	तू	बेटो	शाह	नों,	करे	जाय ॥ ११ ॥
तो	तुमने		परणावस्या,	इण	विष	कांम ।
तोही	विषे	मे	अघ	हुओ,	तुरंत	दाम ॥ १२ ॥
साला	न्हाखे	धूल	सिर,	चेत	अबे	ले
तव	थोडोसो		बोलियो,	मुहडे	पोत्यो	चेत ॥ १३ ॥
पाछो	पिण	जावे	नही,	उभो	छे	देय ।
					हठ	लेय ॥ १४ ॥

सासू	म्हांसूं	सलसली,	आई	मोड	वार ।
चोहें	लोकां	देखतां,	मांख्यो	कोण	विचार ॥ १५ ॥
नाक	ताण	वही	चोखियो,	अब तो हुजो	अधिराज ।
भोग	धकी	नरके	गयो,	नकटा	अब तो लाज ॥ १६ ॥
साले	थूलो		म्हांखियो,	सासू	खांच्यो
सालो	सुसरो	स्यूं	करे,	डर लाग्यो	तिण घाक ॥ १७ ॥
रुपिया	सेती		राजवी,	बस हो जावे	तेह ।
तो	स्यूं छे	आ	बापडी,	नांगे	घरसी नेह ॥ १८ ॥
इम	चितव	आवा	कीया,	घाल्या	रुपिया रोक ।
तुरंत	उतारे		आरती,	इचरज	पाम्या लोक ॥ १९ ॥
मिल	नं	मांहे	लेगाया,	माया	दरआई घोक ।
कोइक	जूती		मेल्ले,	हांसी	करेज लोक ॥ २० ॥
अनमी	भूम्यां	ज्यूं	नम्यां,	चाकर	ऊमो बाय ।
आपो	परवश		वेचियो,	तिणरी	खबर न काय ॥ २१ ॥
हाथी	हलकां		आवज्यो,	मोत्यां	चोक पुराय ।
पग	हेडे	गंगा	बहे,	कूडी	करें सराय ॥ २२ ॥
केसरियो	वनडो		कहे,	घणो	लडायो जोर ।
गाल्यां	गावा		ओसरी,	जाणो	दीधी भाटा री ठोर ॥ २३ ॥
कोइ	कहे	तुम्ह	मा इसी,	तो	करें रावला लग ।
साल्यां	भांडे	तब	हसैं,	तिण	जीतव नें धिग ॥ २४ ॥
बोल्यो	तब	मोत्यो	कह्यो,	पाणी	लावण दास ।
कुटुम्ब	कबीलो		भाडियो,	तोइ	न हुयो उदास ॥ २५ ॥
भोला	कहे	गाया	भला,	रीम	गया घर पीत ।
ग्यांनी	मन	में	मुलकिया,	ए	नेल्यां वाला गीत ॥ २६ ॥
जातादिक	तेडाव		सूं,	दुनियां	हरषित थाय ।
मन	लागो	छे	मुगत	सूं,	तिण और न आवे दाय ॥ २७ ॥
घर	में	संढो	घाल	नूं,	नांख्यो माया जाल ।
आपो	मेल्यो	भूस	रो,	अब तो	सुरत संभाल ॥ २८ ॥
बदल	तणी	परि	खांचसी,	सगला	घर नों भार ।
आलस	करनें		बेससीं	तो,	देसी वचन प्रहार ॥ २९ ॥
छेहडे	छेहडो		बांघियो,	नास	न सकें जाय ।
छोडी	नासे	ठव	को,	तो संढो	हाथ संभाय ॥ ३० ॥

व्याहृलो

बोच	मेदी	घाली	वली,	दागल	कीयो	तिवार ।
देखो	काम		विडम्बना,	ओ	लाजें	नही
ओलख	लेस्या	आप	स्यू,	मेदी	रे	एलाण ।
लाखां	हजार	लोक	मे,	पकडे	लेसा	तांण ॥ ३२ ॥
चिहुगति	चंवरी		जाणज्यो,	बंधन	डोर	छे
थोथा	तीनू		बांसडा,	कुगुर	कुदेव	कुघर्म ॥ ३३ ॥
हिंसा	धर्म	बताय	नें,	घणो	स्लावसी	तोय ।
पाच	थावर	च्यार	त्रस,	ए	नव	घाटी
होम	तणी	पर	होमसी,	पापी	नरकां	माय ।
रंक	राव	सब	एकसा,	कारण	किसका	नाय ॥ ३५ ॥
नरक	पंथ	जाणे	नही,	आव	बतावूं	नाह ।
तीन	फेरा	आगें	लीया,	चोथे	चलियो	जाह ॥ ३६ ॥
खीच	तणी	पर	खांडसी,	भूरे	जेम	कपास ।
इण	विघ	बेला	बीतसी,	तो	पिण	जीवण
जुवारी		जिम	जाणज्यो,	हाख्यो	जाय	री
कर्म	गाठ	काठी	होसी,	जाता	मोष	किवार ।
पेहला	हुतो		माणसियो,	अबे	हुवो	छे
बाया	पिण	गावे	खरी,	ओ	हिज	इचरज
ढोल	घुरावे	जीत	रा,	देखो	उलटी	डोर ।
मानस	खोडे	मार	ने,	गावे	टोडर	जोर ॥ ३६ ॥
जीत्वो	नही	पिण	हारियो,	इम	भावे	घन
पडसा	भर	भर	नीठ	सू,	देव	देव
आगेवाणी		तूं	होसी,	पापे	मेल्सी	कर
दोरो	काकण		दोरडो,	ते	खुलसी	एकण
विणज	पप	नारी	तणो,	थोडा	कर्म	बंघाय ।
तिण	सू	खोले	दोरडो,	दोनूं	हाथ	लगाय ॥ ४३ ॥
सूंक	पाक	दीधी	घणो,	दे	जाचकां	दांन ।
इतरा		थोका	परणियो,	तोइ	करे	छे
घर	चिंता	लागी	घणी,	दिन	भूरंतां	जाय ।
अछ्ते	छ्ते		तिरपतो,	तडफे	फासी	मांय ॥ ४५ ॥
चोर	कसाई	रिण	दगो,	भूठ	गुलामी	वेठ ।
इतरा		वानां	आदरे,	तोइ	नीठ	भरीजे
						पेट ॥ ४६ ॥

एक	कवलियो	जद	होसी,	अनता	जीव	संहार ।
दोटे	ले	दोली	फिरी,	इण	विघ	दां ला मार ॥ ४७ ॥
कद	सासू	मुख	सू	कह्यो,	कह्यो	कुण दीयो जताय ।
नरक	दीवी	श्री	जिण	कह्यो,	तिण	स्युं मेल्यो न्याय ॥ ४८ ॥
नारी	सेती	नेह	करी,	रलियो	काल	अनंत ।
इम	सामल	नं	यडहृथा,	बूर	वीर	गुणवंत ॥ ४९ ॥
तडके	मोहज		तोडियो,	चित्त	लागो	निरवाण ।
आज	पछे	विषें	सेववा,	मोनें	देव	गुर री आण ॥ ५० ॥
तोरण	सूं	पाछा	फिट्या,	बावीसमां	जिण	चंद ।
जानी	जोवंत		रहा,	छोड	दीया	घर फंद ॥ ५१ ॥
चोसठ	सहल		अतेवरू,	पायक	छिन्नु	कोड ।
भरत	चक्रवर्ति		सारिखा,	छिन	में	दीघा छोड ॥ ५२ ॥
एकीका	नर		बोलिया,	ए	आगली	रीत ।
मोटा	मोटा		मानवी,	मांडी	इण	सूं पीत ॥ ५३ ॥
तिणरो	जाव	सुणो	तुमें,	कोच	कषाय	निवार ।
आगम	वेद	कुरान	में,	माख्यो	दोषण	नार ॥ ५४ ॥
मोटा	मोटा		मानवी,	मांड्यो	इण	सूं प्यार ।
थोडा	सुखां	रे	कारणें,	भव	भव	हुआ खुवार ॥ ५५ ॥
महाभारत	इण	थी	हुओ,	आतो	बात	बदीत ।
रावण	सारिखा		जोवडा,	बहुला	हुआ	फजीत ॥ ५६ ॥
लंका	कोट	चितोड	पिण,	मार	कीया	पेमाल ।
नारी	हंदा	नेह	सूं,	कुण	कुण	पड्या हवाल ॥ ५७ ॥
लोक	तिके	जाणें	घणा,	परे	मांडे	छे रांत ।
मांडे	झोलू	भोज	री,	कराइ	बकडावतां	री घात ॥ ५८ ॥
नारी	घर	आई	तरे,	करे	कवण	ब्रूंत ।
भेद	घाल	पर	भावसी,	चिता	गले	पडंत ॥ ५९ ॥
माता	जण	मोटो	कीयो,	पिता	पोषियो	वेह ।
भाई	बहन		रमाडता,	त्यांसूं	तोडायो	नेह ॥ ६० ॥
नारी	बोली	नाह	सूं,	घर	रो	कांम चलाय ।
आरों	अक्सर		आवियो,	हिम्मत	हिं	संभाव ॥ ६१ ॥
के	तों	जावो	चाकरी,	के	जावो	परदेस ।
के	करषण	व्यापार	कर,	बंठा	कांय	अजेस ॥ ६२ ॥

लेणायत	लडवो	करे,,	हाकिम	दहे	हमेश ।
ज्यू त्यू	कर धन	आण ने,	मेटो	परो	कलेश ॥ ६३ ॥
उपसर्ग	आरो	आवियो,	घर	मे नही	दरब ।
दिन	दिन	चिता	मे गले,	किण	विघ रहे
सगा	सेण	सू	मांगणी,	जाये	करो
म्हारी	गर्म	थासू	रहिस,	क्युंइक	करो
टीण	पुन्नी	कोइक	स्त्री,	घर्म	करण दे
वेर	काढे	भरतार	सू,	न्हांखे	नारकी
चाकर	नी पर	चूकले,	हुकम	चलावे	वार ।
दिल	केडे	चाले	पिऊ,	तो पिण	विरचे
परण्यो	जब	उजम	हुंतो,	अवे	गयो तन
बाघी	गले	कलेषणी,	रुपिया	लीघा	खोस ॥ ६८ ॥



रत्न : २६

तात्त्विक ढालां

ढाल : १

[जिण मारग मे धुर सू आदि जिणद के]

जिण मारग मे धुर सू आदि जिणद कें, त्या आदि काडी जिण धर्म री जी ।
 त्यारी सेवा सारे सुर नर चोसठ इद कें, त्या सारां पेहली संजम लियो जी ॥ जि०*१॥
 जिण मारग मे रिषभ देव जी को पूत के, भरतेश्वर छ खण्ड नो घणी जी ।
 त्यां पिण दीघा मुगति नगर ना सूत के, त्यागी चउसठ सहस्र अन्तेवरू जी ॥ २ ॥
 समुद्र विजय सुत नेम महा बलवान कें, तीर्थंकर बावीसमां जी ।
 त्या तोरण सेती पाछी वाली जान के, तेल चढी तज नीकल्या जी ॥ ३ ॥
 जिण मारग मे प्रगट्या पारस नाथ के, जश नांमी थया जगत मे जी ।
 दिख्या लीघी तीनसो पुरषा संघात कें, जिण शासण ना अधिपती जी ॥ ४ ॥
 जिण मारग मे भगवत श्री बरघमान के, त्या सूर पणे सजम लियो जी ।
 कष्ट सही उपजायो केवल ग्यांन कें, आज शासण वरते तेहनो जी ॥ ५ ॥
 शाति जिणेश्वर ऊपना गर्भ में आय के, देश नगर मे शाति हूई जी ।
 एकण भव मे छहुं पदवी पाय के, मुगत गया तीरथ थापने जी ॥ ६ ॥
 जिण मारग मे शाति कुथु अरनाथ के, तीरथ धर्म दीपायने जी ।
 दिख्या लीघी सहस्र पुष्व सघात के, मास संथारे शिव लह्या जी ॥ ७ ॥
 जिण मारग मे तीथकर चौबीस के, क्षत्रिय कुल ना ऊपना जी ।
 त्या सगला चारित पाल्यो विसवां वीस के, च्यारुं तीरथ थापने जी ॥ ८ ॥
 जिण मारग मे सागर नामे राय के, साठ सहंस सुत मुवा सुणी जी ।
 दीघी सगली छ खण्ड रिद्धि छिट्काय के, वेरागे मन वालने जी ॥ ९ ॥
 जिण मारग मे चक्रवती सनत कुमार के, तस रूप देखण देव आवियो जी ।
 रोग ऊपनो जांणी देही असार के, चारित ले मुगते गया जी ॥ १० ॥
 जि० भरत सगर मघव सनत-कुमार के, शाति कुथु अर जाणिये जी ।
 महापद्म हरिवेण जय विचार के, दसूई चक्रवर्ती मोटका जी ॥ ११ ॥
 त्यारे लख चोरासी हय गय रथ ना थाट के, चोसठ सहस्र अन्तेवरू जी ।
 ते छोड्या पाय दल छव खण्ड रिद्धि गहघाट के, जिण मारग कीयो दीपतो जी ॥ १२ ॥
 जिण मारग में नव ही बलदेव के, राज रमण सर्व परिहरी जी ।
 मुगत पहुंता श्री जिण मारग सेव के, बलभद्र गया सुर पाचमे जी ॥ १३ ॥
 जिण मारग में दशारण नाम नरेंद के, देश दशारण को घणी जी ।
 तास पारखा करवा आयो शकेद्र के, वीर समीपे दिख्या ग्रही जी ॥ १४ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

राय उदाई त्याग्या सोले देश कें, वित भय पाटण नगर सहू जी ।
 मुगत गया दिल बाण दया नी रेस कें, राज भाणेजा नें थाम नें जी ॥ १५ ॥
 जिण मारग में नमी नामे राय कें, छोडी सहस्र अन्तेवरु जी ।
 दश प्रश्न पूछ्या इन्द्र आय कें, जब अडिग थके उत्तर दीया जी ॥ १६ ॥
 जिण मारग में पांचूं पांडव तांम कें, त्यां द्रोपदी सहित संजम लियो जी ।
 तपस्या कर नें साख्या आतम काम कें, दोय मास संथारे शिव लही जी ॥ १७ ॥
 जिण मारग में दववंत नाम राजान के, हस्तीसीर्ष नगर तणो घणी जी ।
 तिण पांच पांडव नों गाल दीयो अभिमान कें, पछें चारित ले मुगते गयो जी ॥ १८ ॥
 जि० करकण्डू देश कर्कला नों राय कें, दुमुही देश पंचाल नों जी ।
 विदेह देश नों नमी राजा ताहि कें, गघार देश नों नगई जी ॥ १९ ॥
 जिण मारग मे प्रत्येक बुद्धि च्यार कें, राज रमणी सर्वं परिहरी जी ।
 यां स्वमेव संजम लीघो सम काल कें, एकण काल मुगते गया जी ॥ २० ॥
 जिण मारग में संजती नामें राय कें, सिकार गयो तिहां समझियो जी ।
 तिण कपिल पुर नो राज दीयो छिट्काय कें, गर्दमाली गुर आगले जी ॥ २१ ॥
 जिण मारग में त्यागी देश सोहाय के, क्षत्रिय राय संजम लियो जी ।
 ते संजति राय नें मिलियो मारग मांय कें, तब तिहां चरचा कीघी चूप सूं जी ॥ २२ ॥
 जिण मारग में महाबल नाम राजान कें, आठ रमण तिण परिहरी जी ।
 छ काय जीवां ने दीयो अमय दांन कें, राज हथणापुर नो छोडियो जी ॥ २३ ॥
 जिण मारग में भरतेश्वर ना भाय कें, अठाणु एकण समें जी ।
 त्यां चारित लियो रिषभ समीपे आय कें, भगडो साइ सूं भांजियो जी ॥ २४ ॥
 जिण मारग में बाहुबल बुद्धिमान कें, तिण जीती राड चारित लियो जी ।
 केवल पाम्यो छोडी निज अभिमान कें, लघु बंधव तिहां बादने जी ॥ २५ ॥
 जिण मारग में मुनिवर गज सुकुमाल कें, तिण बालपणे संजम लियो जी ।
 त्यांरे मस्तक खीरा घाल्या बांधी पाल कें, ते खिम्या कर मुगते गया जी ॥ २६ ॥
 जिण मारग में जम्बू नाम कुमार कें, आठ परण नें परिहरी जी ।
 आठों ने समझाइ लीघी लार कें, छेला हुवा केवली जी ॥ २७ ॥
 जिण मारग में भद्रा सुत घनो जाण कें, नगरी काकंदी नों वासियो जी ।
 जिणरा कीघा श्री वीर जिणंद वखाण कें, सिरे चवदे सहस्र अणगार मे जी ॥ २८ ॥
 जि० थावच्चा पुत्र छोडी बत्तीस नार कें, रूपे रंभा सारिखी जी ।
 सहस्र पुरुष संजम लियो तिण लार कें, तिणरा मोच्छव कीघा कृष्णजी जी ॥ २९ ॥
 जिण मारग में साला बेनोइ नी जोड कें, घन्तो नें शालभद्र हुवो जी ।
 त्यां चारित लीघो तडके बंधन तोड कें, तिणरे माथे नाथ न सुहाइयो जी ॥ ३० ॥

जिण मारग मे कार्तिक नामे सेठ के,	ते सो वेलं पडिमा वहो जी ।
पछे संजम लीघो सगलो सावद्य भेट के,	बाणोत्तर सहस्र ने आळसो जी ॥ ३१ ॥
जिण मारग मे इत्यादिक तीथकर चक्रवर्त के,	बलदेव मंडलीक राजवी जी ।
सेठ सेनापति आदर मारग सत्य के,	मुगति गया ने जावसी जी ॥ ३२ ॥
जिण मारग मे मोरा देवी माय के,	ते जननी रिषभ जिणंद नी जी ।
तिण हाथी होदे केवल ग्यान उपाय के,	ते सारा पेहली सिद्ध हुवा जी ॥ ३३ ॥
जिण मारग मे ब्राह्मी सुदरी जाण के,	ते पुत्री रिषभ जिणंद री जी ।
दिल्या लीघी शूरपणो मन व्याण के,	बाहुबल प्रतिबोधियो जी ॥ ३४ ॥
जि० सीता सतिया मे सिरदार के,	तिणरे आल अणहुतो आवियो जी ।
ते धीज उत्तर ने लीघो सजम भार के,	ते इंद्र हुवो सुर बार मे जी ॥ ३५ ॥
जिण मारग मे राजमती राजकुमार के,	तिण तेल चढी सजम लियो जी ।
वले तीनसो जणिया नीकली तिणरी लार के,	ते मोटा कुल नी उमनी जी ॥ ३६ ॥
जिण मारग मे अग्रमहेपी आठ के,	ते पटराणी श्री कृष्ण नी जी ।
ते मुगत गइ छे कर्म तणी जड काट के,	वले पुत्र देय बहु तेहनी जी ॥ ३७ ॥
जि० श्रेणिक नी राण्या तेवीस के,	त्या वीर कने संजम लियो जी ।
त्यां तपस्या कीघी पूरी बिसवा वीस के,	कर्म खपाय मुगते गई जी ॥ ३८ ॥



ढाल : २

[सल्य कोइ मत रलसुष्यो]

गणघर	गोतम	स्वाम	जी,	समहं	सुख	दातारो	जी ।
चोवीस	डंडक		ऊपरे,	पदवी	रो	विस्तारो	जी ।
				भाव	घरी	भवियण	सुणो ॥* १ ॥
समादिष्टी	श्रावक		मुनि,	केवली	जिणवर	जाणो	जी ।
चक्री	हलधर		केशवा,	मंडलीपती	राजानों		जी ॥भा०२॥
सेनापति			गाथापति,	बढही	प्रोहित	जोयो	जी ।
इत्थी	हय	गय	जाणज्यो	ए	रत्न	पचेन्त्री	होयो
				ए	रत्न	पचेन्त्री	होयो
चक्र	छतर	चरम	डंड,	असी	मणी	कागणी	सातो
सातूं	नरक	रो	नीकल्यो,	ए	न	लहे	पदवी
पेंहली	नरक	रो	नीकल्यो,	पदवी	सोले	पावे	जी ।
दुजी	रा	पनरा	लहे,	चक्रवर्त्त	नही	थावे	जी ॥ ५ ॥
तीजी	रा	तेरा	लहे,	टलिया	बल	वासुदेवो	जी
चोथी	रा	बारा	लहे,	न	हुवे	देवाधिदेवो	जी ॥ ६ ॥
पांचमी	नरक	इग्यार	छे,	केवलग्यानी	न	होयो	जी ।
छठी	रा	दश	रिघ	लहे,	साधु	न	थाये
सातमीं	नरक	रा	नीकल्यो,	तिर्यंच	माहि	आवे	जी ।
हय	गय	समकित	जाणज्यो,	पदवी	तीनज	पावे	जी ॥ ८ ॥
पृथवी	पांणी		वनस्पति,	तिर्यंच	मिनष	बखाणो	जी ।
काल	करी	नें	रिघ	लहे,	संख्या	उगणीस	परमाणो
तीथंकर		चक्रवर्त्ति	नी,	टलिया	बल	वासुदेवो	जी ।
तेवीस	पदवी		माहिली,	च्यार	पदवी	नही	लेवो
बे	ते	चोइन्त्री	जीवडा,	रिधि	अठारे	पावे	जी ।
च्यार	बोल	ल्यो	पाछला,	वले	केवलग्यानी	न	थावे
तेउ	बाउ	रा	नीकल्यो,	पदवी	नव	बखाणो	जी ।
एकेन्त्री	साते		सही,	वले	घोडो	ने	हाथी
भवन	पति	ब्यंतर	ज्योतिषी,	पदवी	इम	इकवीसो	जी ।
तीथंकर	वासुदेव		नी,	वे	न	लहे	कही

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

तात्त्विक ढालां : ढाल २

पेहला	वीजा	देवलोक	रा,	पदवी	तेवीस	पावे	जी ।
तीजा	सू	आठमा	लगे,	एकेन्द्री	नही	थावे	जी ॥ १४ ॥
च्यार	देव	लोक	नव	ग्रीवेक	ना,	रिघि लहे दश	च्यारो
घोडो	ने	हाथी	टल	गया,	लेज्यो	चतुर	विचारो
पांच	अनुत्तर	विमाण	रा,	पदवी	आठज	पावे	जी ।
चवदें	रत्न	चक्रवर्त्ती	ना,	बले	वासुदेव	न	थावे
ए	तेवीस	पदवी	जिण	कही,	भव	जीवा	रे
भणे	गुणे	सुणे	सामले,	आणज्यो	घट	वेंरागो	जी ॥ १७ ॥



ढलल : ३

दुहल

एक आंधो नें एक पांगलो, दोनूं पडियो अटवी मांय ।
इणरे आंख नहीं उणरे पग नहीं, त्यां सूं नगर गयो नही जाय ॥ १ ॥
आंधो डूंडाटी मारतो थकों, आमों साहमों ममलेटा खात ।
पांगलो पडियो तिहां आवियो, दोनूं करे मांहोमांहि बात ॥ २ ॥
पांगलो कहे हूं दुखियो घणो, हूं पडियो छूं अटवी मांय ।
दोनूं पग नही भाई मांहरे, मोसूं नगर गयो नहीं जाय ॥ ३ ॥
जब आंधो कहे हूं पिण दुखियो घणो, हूं पिण मारूं अटवी में डूंडाट ।
आंख्या विण नगर पोहचूं नहीं, नोनें कुण बतावे बाट ॥ ४ ॥
जो तं खांधे वेसे मांहरे, तूं मोनें मारग चलाय ।
तो आपां दोनं जणा, नगरी पहुंचा जाय ॥ ५ ॥

ढलल

[ङाम मुंजादिक नी डोरी]

पांगलो सुण हरख्यो ताहि, मिसलत कीधी मांहोमांहि ।
पांगला नें उठायो आंधे, वेसाण्यो पोतारा खांधे ॥ १ ॥
पांगलो ते आंधा नें चलावे, सांनीकर मारग बतावे ।
इण विघ अटवी लांधी ताहि, दोनूं आया छें नगरी मांहि ॥ २ ॥
नगरी आया तो सुखिया हुआ, अन्न पाणी विनां नहीं मुवा ।
ए दिष्टान्त रूडी रीत जाणों, संसार ने मुगत पिछाणो ॥ ३ ॥
मोटी अटवी जिम संसार, तिण में दुखिया जीव अपार ।
नगर जिम मुगति नं जाणो, तिण नें रूडी रीत पिछाणो ॥ ४ ॥
आंधा ज्यूं जीव ग्यांन रहित, अग्यांनी मिथ्यात सहित ।
तिण रे क्रिया रूप नहीं पाय, ते मुगत नगर किम जाय ॥ ५ ॥
ते जीव क्रिया करवा लागो, पिण नही जाणे मुगत रो माणो ।
जिण आगम नों जाण नाहीं, जीवादिक न जाणे काई ॥ ६ ॥
ते मुगत नगर किम जावें, संसार में भोला खावें ।
ते तों आंधा जेम अलूमें, ग्यांन विनां संबलो न सूमें ॥ ७ ॥
कदा जीवादिक नो हुवो जाण, मोप मारग लियो पिछाण ।
पिण क्रिया करणी नहीं आवे, तो पिण मुगत नहीं जावे ॥ ८ ॥

मिल्लिया आघो ने पागलो दोय, सुखे नगर पोहता सोय ।
 ज्युं ग्यांन क्रिया नों संयोग थाय, तो जीव मुगत माहे जाय ॥ ९ ॥
 क्रिया तो ग्यांन छे नांही, क्रिया तो जाणे देखे नहीं कांइ ।
 क्रिया तो सुमता रस भाव, कर्म रोकण तोडण रो सभाव ॥ १० ॥
 ग्यांन दरसण छे उपयोग, ते जाणे देखे लोक अलोक ।
 कोइ क्रिया नें कहे उपयोग, तिण ते मोटो मिथ्यात रो रोग ॥ ११ ॥
 ग्यांन क्रिया छे दोय, त्या नें एक म जाणो कोय ।
 त्यांरो सभाव जूवो जूवो जाणो, त्यांने रूढी रीत पिछाणो ॥ १२ ॥



ढाल : ४

दुहा

केइ अग्यांनी इम कहें, एकेन्द्रिय ना पुन्य अल्प मात ।
 त्यांनं मार पचेन्द्री पोषियां, तिण में कहें धर्म साख्यात ॥ १ ॥
 तिण एकेन्द्री नें वेदना हुवे, ते भोलां नें खबर न कांय ।
 तिणरी गोतम स्वांमी पूछा करी, जब दीधी वीर बताय ॥ २ ॥

ढाल

[स्वांमी म्हारा राजा नें धर्म सुशाण्यो]

हाथ जोडी विनती करे, नीचो शीष नमाय हो । स्वांमीः ।
 पृथवी काय हणियां थकां, वेदना केहवी थाय हो । स्वांमीः ।
 अरज करूं छूं विनतीः ॥ १ ॥
 तिणरे आंख कांन नासिका नहीं, जिभ्या पिण नहीं ताय हो । स्वां ।
 वले मन वचन विण वेदना, भोगे छे किण न्याय हो ॥ स्वां०अ०२॥
 वलता वीर इसडी कहे, अति वेदन हुवे ताय हो । गोतम ।
 दिष्टांत देइ नें कहूं तो कने, सुण तूं चित ल्गाय हो । गोतम ।
 उपकारी इम उपदिशे ॥* ३ ॥
 कोइ गुंगो पुरुष छे जन्म रो, वहरो जन्म रो जाण हो ।
 ते पिण आंधो ने पांगुलो, वले रोग घेरित छे आंण हो ॥ गो०उ०४॥
 तिण अंध पुरुष नें भालां करी, भेदें जायगा बत्तीस हो ।
 वले बत्तीस जायगां खडगे करी, छेदे कर कर रीस हो ॥ ५ ॥
 तिण अंध पुरुष नें हुवे वेदनां, छेदे भेदे तिण वार हो ।
 एहवी वेदन पृथवी काय नें, हुवे छे दीयां परिहार हो ॥ ६ ॥
 ते रांक गरीब छें बापडा, त्यांरी करे हर कोइ घात हो ।
 त्यांरी पुकार लागें किण आगले, ए इसडा जीव अनाथ हो ॥ ७ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ढलल : ॡ

दुहल

मेण ललख लकडल तणु, चुथु मलटी रु तलहल ।
 ए च्यलरुंडु गुरुल कहुल, सुतर ठलणुलतणु मलरुहल ॥ १ ॥
 ज्युं च्यलरु जलत रु मलनुवु, इण संसलर मभरुल ।
 केइ गुरुदड केइ सुरमल, ते सुणज्यु वलसुतर ॥ २ ॥
 सलषलं रु वलणुी सुणुी च्यलरुं जणु, ललतु मनु वेरलणु ।
 ललतु इतलल दलनु ललषलं बूहल, ललवे उधडलतु भलणु ॥ ३ ॥
 हलवुं थलनुक वलरे नुीकलतुल, केइ लुक वुलतुल छे तडकुी ।
 थे वेठल मूडु वलष नुं, भलुी गमलइ धरकुी ॥ ॡ ॥
 केइक तु इम वुललतुल, केइकलं दुधुी गलल ।
 मेण गुरुल ज्युं डरगलतुल, तलत ललगु ततकलल ॥ ॡ ॥
 मेण गुरुल सुरुतु रु तलत थुी, गल नुं हुवु नरम ।
 ज्युं इण लुकलं रु तलत थुी, छुड दुधुी जलणु धरुम ॥ ॢ ॥
 तुन डुरुष गलडल रुहुल, तुथलनु डलछल उतर ललतु ।
 डुतल डुतल रे धरे ललवलतुल, जलहलं वेठल छे मल वलतु ॥ ॣ ॥
 मलत डुतल नु इम कहे, मूहं सुणुी सलषलं रु वलणु ।
 तुथल वचन ललमुरुक वलगुथल, मूहलनु ललगल ललतुतु सलणुणु ॥ । ॥
 ललव मलतल तुरलसुलु चलड नुं, वुलुी मुख सु गुरु ।
 नलकल मूहलरु धर थुी, लेने थलरुी वेर ॥ ॥ ॥
 ते हलथ जुडुी नु इम कहे, तु मूहलंरु जनुम रु दलतल ।
 हूं सलषलं कने जलऊं नहलं, ललज डछे हे मलतल ॥ १० ॥
 सुरुतु तलत थुी नहल डुगललतुल, तलणु नु ललगुी ललगुन रु भलल ।
 ललख तणु गुरुलु हुंतु, डुगललतुल ततकलल ॥ ११ ॥
 मलतल वचन करडल कंहुल, तलणु नुं ललगुन जलम भलल ।
 डुते ललख गुरुल जलसु, ते डुडुतु हुवु ततकलल ॥ १२ ॥
 दुधु डुरुष गलडल रुहुल, न हुवल मूल उदलस ।
 मलतल डुतल नु उतर दुधुी, हलवे ललतुल नलरुी रे डलस ॥ १३ ॥
 नलरुी डुरुी कलेसणुी, तलणु रे धरुम न ललवे दलतु ।
 तुन लललडुी सल चलड नुं, कलणु वलध वुलुं वलतु ॥ १ॡ ॥
 तडक भडक वुलुी इसुी, कर ललवे ज्यु दलतु ।
 लल धर नु ए टलवुथल, हूं कुवुं डड तुतु जलतु ॥ १ॡ ॥

हूं जीमण राधू जुगत सूँ, तूं आवे खांग में हूँस्यो ।
 तूं जाय बेडो मुख बांध नें, बडो धर्म को घूँस्यो ॥ १६ ॥
 ए वचन सुणी नारी तणा, भय पाप्यो छे अतंत ।
 आ मरसी मो उमरे, तो करवो कुण चिरतंत ॥ १७ ॥
 आ मरती दीसैं खरा खरी, तो हिवैं छोड देवूं जिण धर्म ।
 ज्यूं सगा संबंधी लोकां मझो, रहे ज्यूं म्हांरी समं ॥ १८ ॥
 ओ नारी सूँ डरतो कहे, राखो म्हांरी समं ।
 थें कूवे कदे पडज्यो मती, हूं कदे न करसूं धर्म ॥ १९ ॥
 सूर्य अग्नि रा ताप सूँ, पिगल्यो मेंण नें लाव ।
 त्यां काठ गोळो काठो रह्यो, ते हूवो अग्नि सूँ राख ॥ २० ॥
 हूं कोड घणो परण्यो हुंतो, घणां लोकां री साव ।
 काठ गोला सारिखो थो गीदच्छो, ते बल नें होय गयो राख ॥ २१ ॥
 स्त्री अग्नि जिसी कही, तिण री भरे सहु कोइ साव ।
 काठ गोला जिसो हुंतो, तिण नें बाल कीयो छे राख ॥ २२ ॥
 जे आग्याकारी नार नां, ते पडिया इण रे पास ।
 ते नित डरता रहे तेह सूँ, जानें आग्याकारी दास ॥ २३ ॥
 उठ वेस आव जाव रो, कर अमकडियो कांम ।
 बानर जेम नचावियो, जाणे असल गुलाम ॥ २४ ॥
 इसडा गीदड बापरा, तिण सूँ धर्म कीयो किम जात ।
 हिवैं चोयो गार गोला जितो, सुणज्यो तिण री बात ॥ २५ ॥
 तिण लोका ने उत्तर दीया, कर मा बाप सूँ जाव ।
 निज स्त्री बेठी तिहां, आयो तुरत सताव ॥ २६ ॥
 तिण स्त्री ने मांडी कही, मै जिण धर्म जाण्यो आज ।
 हिवैं सामायक पोसा करी, सारुं आतम काज ॥ २७ ॥
 ए वचन सुणी नें स्त्री, कीघो क्रोध अपार ।
 अगल डगल बोली घणी, तीन लीटी चाढी निलाड ॥ २८ ॥
 थें मूंडे बांधी मुंहपती, मांड्यो धर में फें ।
 हूं जहर फांसी खाये मरूं, थें किसो एक पावो चें ॥ २९ ॥
 पापंड छोडी चारो पावरा, थें मानो म्हांरी बात ।
 नहीं तो हूं थां उमरे, मर सूँ कर अपघात ॥ ३० ॥
 जब इम जाण्यो आ पावणी, नाहरी सम छे नार ।
 कह्यो कहुं जो एहनों, तो म्हांखे तरक म्भार ॥ ३१ ॥

जो हूं नरमाइ कलं, तो आ उलटी पाड आब ।
 तो वणसी म्हांरा भाग री, हिवे देऊं पादरा जाब ॥ ३२ ॥
 तू कूवे बावडी पड मरे, थारे उदे हुआ छे कर्म ।
 पिण हूतो थारे कारणे, छोडूं नही जिण धर्म ॥ ३३ ॥
 म्हांरे बंधन छे एक तांहरो, तो तुट जावे इणवार ।
 तूं कूवे बावडी पड मरे, तो हूं लेसूं संजम भार ॥ ३४ ॥
 कत वचन इसडो कह्यो, जब पीहर गइ रीसाय ।
 घणो ओसीयालो होय नें, मोने ले जासी मनाय ॥ ३५ ॥
 स्त्री आगे मूल चलियो नही, ओ अडिग रह्यो व्रत भाल ।
 ओ तों गार गोला जिसो, ज्यू धमे ज्यू लाल ॥ ३६ ॥
 इण लारे तेलो करे, आडा जडे किंवाड ।
 तीन पोसा ठाय नें, धर्म ध्यांन ध्वावे तिणवार ॥ ३७ ॥
 स्त्री वाट जोए रही, मनाय लेजावे मोय ।
 तीन दिन विचें गया, पिण अजे न आयो कोय ॥ ३८ ॥
 छोरा छोरी पीहर तणा, भेला कर मेल्या सोय ।
 थारो बेनोंइ काई करे, पाछो आय कहिज्यो मोय ॥ ३९ ॥
 ते भेला होय ने आविया, जोवे छेकली माहि ।
 मस्तक उघाडे मुंह मुंहपती, वेठो दीठो घर माहि ॥ ४० ॥
 ते देखी पाछा आय नें, मांड कही सर्व बात ।
 जब घसको पढ्यो तेहने, घर गयो दीसैं साल्यात ॥ ४१ ॥
 बेंन भाइ मा वाप नें, साथे ले आह तेह ।
 हिवें हाय जोडी ने इम कहे, मोनें कदे म दीजो छेह ॥ ४२ ॥
 टाबरियां घर तणी, थानें छे आशर्म ।
 उवे मुनिवर मोटा जती, थें करो जोख सूं धर्म ॥ ४३ ॥
 में संजम री सुणी बारता, म्हांरा गल गल हुवा नेंण ।
 थें दुरो मूल मानो मती, म्हें हसती बोल्या वेंण ॥ ४४ ॥
 ह कह्यो न लोपूं तुम तणो, हूं रहसूं आग्याकार ।
 थें घर बेठांइ करो धर्म, मत लो संजम भार ॥ ४५ ॥
 जब कंत कहे सुण कांमणी, ओ हूं कलं नही करार ।
 जब म्हांरो मन ऊठसी, तब लेसूं संजम भार ॥ ४६ ॥
 जब स्त्री मन माहे जांणियो, ओ रखे छोडेल्ला मोय ।
 तो विनय भक्ति कलं घणी, इण रो कह्यो न लोपं कोय ॥ ४७ ॥

आ मव गमती चाले घणी, करे लाल नें पाल ।
 पिणं ओ छे गार गोला जिसो, ज्यूं धमें ज्यूं लाल ॥ ४८ ॥
 इसडा होसी मांनवी, ते करसी जिण धर्म ।
 कायर तीन गोला जिसा, त्यांरो नीकल गयो छे भर्म ॥ ४९ ॥

रत्न : ३०

अणुकम्पा री चौपई

ढाल : १

दुहा

अणुकंपा नैं आदरे, कीजों घणा जतन ।
जिणवर ना धर्म मांहिली, समकत पाय रतन ॥ १ ॥
गाय भेंस आक थोर नों, ए च्यारुई दूध ।
तिम अणुकंपा जाणजों, राखे मन में सूघ ॥ २ ॥
आक दूध पीघां थकां, जुदा करे जीव काय ।
ज्यूं सावद्य अणुकंपा कीयां, पाप कर्म बंधाय ॥ ३ ॥
भोलेंई मत भूलजों, अणुकंपा रे नांम ।
कीजो अंतरंग पारखा, ज्यूं सीमें आतम कांम ॥ ४ ॥
अणुकंपा में आगन्यां, तीर्थकर नी होय ।
सावद्य निरवद ओलखों, सूतर साहां जोय ॥ ५ ॥

ढाल

[समकित्त वमिथो नन्दश०]

मेघ कुंमर हाथी ना भव में, श्री जिण भापी दया दिल आई ।
उंचो पग राख्यों सुसीयो न माख्यों, या करणी श्री वीर सराई ।
या अणुकंपा जिण आगन्या मे* ॥ १ ॥
कष्ट सहों तिण पाप सू डरते, मन दिढ सेंठी राखी तिण काया ।
बलता जीव दावानल जांणी, सूंड सू गिर गिर बारें न ल्याया ॥ या० २ ॥
परत ससार कीयों तिण ठांमें, उपतो श्रेणक नैं घर आई ।
भगवंत आगला दीप्या लीघी, पेंहला अघेन गिनाता मांहि ॥ ३ ॥
मांडलो एक जोजन रो कीघो, घणा जीव वचीया तिहां आई ।
तिण वचीयां रो धर्म न चाल्यो, समकत आया विण समझ न काई ।
या अणुकंपा सावद्य जाणों ॥ ४ ॥
नेम कुंमर परणीजण चाल्या, पसू पंखी देख दया दिल आंणी ।
एहवो कांम सिरें नही मोनें, म्हारे काज मरें बहु प्रांणी ॥ ५ ॥
परणीजणा सूं परिणाम फिरीया, राजमती नैं उमी छिटकाई ।
कर्म तणा बंध सूं नेम डरीया, तोडी आठ भवां री सगाई ॥ ६ ॥
आप सूं मरता जीव जांणी नैं, कडवा तूबा रो कीघों आहारो ।
कीडीयां री अणुकंपा आंणी, चिन चिन धर्म रूची अणगारो ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

फोडवी लब्ध अणुकंपा आंणी, गोसाला नें वीर वचायो ।
 छ लेस्या छदमस्थ हूँता, मोह कर्म वश रागज भायो ।
 या अणुकंपा सावद्य जाणों ॥ ८ ॥
 असंजती गोसालो कुपातर, तिणनें साहज सरोर रो दीवो ।
 धर्म जाणे तो जगत दुखी था, वले वीर ए कांम कांय न कीवों ॥ १० ॥
 तेजु लेस्या मेल गोसालें, बाल्या दोय साध भसम करी काया ।
 लब्ध धारी था साध घणाई, मोटा पुरुषां नें क्यूं न वचाया ॥ १० ॥
 जिण राखियें अणुकंपा कीवी, रेंगा देवी तिण साह्यो जोयो ।
 सेलग जष हेठो उताख्यो, देवी आंण खड्या में पोयो ॥ ११ ॥
 भगता हिरण गमेवी नी सुलसा, कीवी अणुकंपा विलखी जाणी ।
 छ वेटा देवकी रा जाया, सुलसा रें घर मेल्या आंणी ॥ १२ ॥
 जगन वाडे हरकेसी आया, असणादिक तेहने नहीं दीवों ।
 जषदेव अणुकंपा आंणे, खद वमता ब्राह्मण कीवां ॥ १३ ॥
 मेघकुमार गर्भें हूँता जब, सुख रें ताई कीवां अनेक उपायो ।
 धारणी रांणी कीवी अणुकंपा, मन गमता असणादिक खायो ॥ १४ ॥
 अमयकुमार रो मित्री देवता, तिण अभयकुमार रो अणुकंपा आणी ।
 धारणी रांणी रो डोहलो पूख्यो, अकाले विरपा कर ने वरसायो पांणी ॥ १५ ॥
 किसनजी नेम वंदण नें जातां, एक पुरुष नें दुखीयो जाणी ।
 साज दीयो अणुकंपा कीवी, इंट उठाय उणरे घर आंणी ॥ १६ ॥
 दुखीया दोहरा देख दलद्री, अणुकंपा उणरी किण आंणी ।
 गाजर मूलादिक सचित्त खवावे, वले पावें काचो अणगल पांणी ॥ १७ ॥
 दुखीया जीव मारग माहें देवी, टल जाए साध संकोची काया ।
 आप हणे नहीं पाप सू डरता, अणुकंपा आंण न मेले छाया ॥ १८ ॥
 उपाडे नें जो छाया मेलें तों, असंजती नीं वीयावचा लामो ।
 या अणुकंपा साध करें तों, जाए पांचूई महावरत भाणी ॥ १९ ॥
 सो साध त्रिषमकाल उन्हालें, पांणी विनां हुवें जुदा जीव काया ।
 अणुकंपा आंणे नें असुघ वेंहरावें, छ काया रा पीहर साधु वचाया ॥ २० ॥
 गज सुखमाल ले नेम री आग्या, काउसग कीयो मसांगा में जाई ।
 सोमल आंण खीरा सिर धाल्या, सीस न धूप्यो दया विल आई ॥ २१ ॥
 साधु विनां अनेरा सर्व जीवां री, अणुकंपा आणे साध बांधे वंवावें ।
 तिणनें नसीत रे बारमें उद्देसें, तिण साध नें चोमासी प्राखित्त वावें ॥ २२ ॥

रासडीयादिक सूं तस जीव बंध्या छे, ते तो मूख तिरपादि सूं अतत दुख पावे ।
 त्याने अणुकंपा आणे ने छोडे छोडावे, तिण साघ ने चोमासी प्राच्छित आवे ॥ २३ ॥
 व्याघ कसटादिक रोगीलो सुण ने, तिण उपर वेद चलाए ने आवे ।
 साजो करे अणुकंपा आणे, गोली चूरण दे रोग गमावे ॥ २४ ॥
 लवदघारी ना खेलादिक थी, सोलेई रोग जडां सू जावे ।
 वले जाणे साघ ए रोग सू मरसी, अणुकंपा आणे रोग नही गमावें ॥ २५ ॥
 जो अणुकंपा साघ करे तो, उपदेस देई वेराग चढावे ।
 चोखे चित पेलो हाथ जोडे तो, च्यारुई आहार ना त्याग करावें ।
 या अणुकंपा निरवद जाणों ॥ २६ ॥
 गृहस्य भूलो उजाड वन मे, अटवी ने वले उजड जावे ।
 अणुकंपा आणे साघ मारग वतावे, तो च्यार महीना रो चारित जावें ॥ २७ ॥
 अटवी मे भूला ने अतत दुखी देख, च्यारुई सरणा साघ दिरावें ।
 मारग पूछे तो मुनज साभे, बोलें तो भिन भिन धर्म सुणावें ।
 या अणुकंपा निरवद जाणों ॥ २८ ॥



ढल २

दुहा

अणुकंपा इह लोक नी, कर्म तणो बंध होय ।
 ग्यांन दरसण चारित विनां, धर्म म जाणो कोय ॥ १ ॥
 जे अणुकंपा साधु करे, ते नवा न बांधे कर्म ।
 तिण मांहिली श्रावक करे, तिणमे पिण छे धर्म ॥ २ ॥
 साध श्रावक दोनू तणी, एक अणुकंपा जाण ।
 इमरत सहु नें सारिषों, कूडी मत करो ताण ॥ ३ ॥
 वरजी अणुकंपा साध नें, सूतर नी दे साख ।
 चित्त लगाय नें सांभलो, श्री वीर गया छे भाष ॥ ४ ॥

ढाल

[सोरठा, यतनी नी देशी]

डाम मूंजादिक नी डोरी, बंधीया करे हेला नें सोरी ।
 सी तापादिक कर दुखीया, साता बांधें जाणें हुवां सुखीया ॥ १ ॥
 अणुकंपा उणारी आणें, छोडें छोडावें नें भलों जाणें ।
 तिणनें चोमासी प्रायच्छित आवें, धर्म जाणें तों समकत्त जावें ॥ २ ॥
 इम बांधे बंधावे हुवें राजी, तिणरो संजम गयो भाजी ।
 ए तो सावद्य कांमा जाणों, तिणरा सावां कीया पचखाणों ॥ ३ ॥
 जीवणों मरणों नहीं चावें, साध क्याने बंधावें छोडावें ।
 ज्यांरी लागी मुगत सूं ताली, नहीं करे तिके रुखवाली ॥ ४ ॥
 गृहस्थ रें लागी लायों, घर बारें नोकलीयो न जायों ।
 बल्लतो जीव बिल बिल बोले, साधु जाय किवाड न खोलें ॥ ५ ॥
 दरबे भावें लाय लागी, तिण माहें केयक वेंरगी ।
 तिणरी अणुकंपा आवें, उपदेश देई समभावें ॥ ६ ॥
 जनम मरण री लाय थी काढें, उणरों कांम सिराडें चाडें ।
 पकडावें ग्यांनादिक डोरी, तिण थी आठूंई कर्म दें तोडी ॥ ७ ॥
 अणुकंपा कीयां डंड आवें, परमारथ विरला पावे ।
 नसीत नों बारमों उद्देशों, जिण भाष्यों दया नों रेंसो ॥ ८ ॥
 छोडें साध सूतर में कहें चाल्यो, ए तो अर्थ अणहूंतो घाल्यो ।
 भोला नें कुगुरां बेहकाया, कूडा कूडा अर्थ वताया ॥ ९ ॥

सिष वाघादिक मंजारी, हिंसक जीव देखी आचारी ।
 त्यांनं मार कहां हिंसा लागें, पेंहलोई महावरत भागें ॥ १० ॥
 मत मार कहां उणरो रागी, तीजें कारण हिंसादिक लागी ।
 सूर्यगढाभग छे साखी, श्री वीर गया छे भाखी ॥ ११ ॥
 गृहस्थ नां सरीर ममता मे, साधु वेठो समता मे ।
 रह्या धर्म सुकल ध्यान ध्याई, मूंआ गयां फिकर न काई ॥ १२ ॥
 इह लोक ने पर लोक, जीवणो मरणो काम भोग ।
 ए तो पाचूई छें अतिचार, वांध्यां नही धर्म लिगार ॥ १३ ॥
 आपणोंई वाळें तो पाप, पर नो कुण घाले संताप ।
 घणों जीवणो वाळें अन्यांनी, समभाव राखें ते ग्यांनी ॥ १४ ॥
 वायरो विरषा सी तान, रह्यो न रह्यो चावें तो पाप ।
 राज विरोध रहीत सुकाल, उपद्रव जावो ततकाल ॥ १५ ॥
 साता बोलां रो ए विसतार, ओलखीयो ते अणगार ।
 घट माहे जो सुमता आवे, हुवा न हुवा एको ही न चावे ॥ १६ ॥
 एकण रे दे रे चपेटी, एकण रो दे उपद्रव मेटी ।
 ए तो राग द्वेष नों चालो, दसवीकालक संभालो ॥ १७ ॥
 साघ वेठों नावा में आई, नावडीए नाव चलाई ।
 नावा फूटी माहें आवे पांणी, साघ देखें लोकां नही जांणी ॥ १८ ॥
 आप डूबें अनेरा प्रांणी, किणरी अणुकंपा नाणी ।
 वतायां वरत रो भग, तिणरो साखी आचारंग ॥ १९ ॥
 सानी कर साघ जतावे, लोक कुसले खेमें घर आवे ।
 डूवा पिण साघ न चावे, रह्या चावें तो तुरत वतावे ॥ २० ॥
 मूंन साघ रह्या ते संत, तिके करें संसार नो अंत ।
 परिणामज राखें सेंठा, धर्म ध्यान माहे रहें बेठां ॥ २१ ॥



ढाल : ३

दुहा

वाँछें मरणों जीवणों, तो धर्म तणों नही अंस ।
 ए अणुकंपा थकां, वधें कर्म नों वंस ॥ १ ॥
 मोह अणुकंपा जे करे, तिणमें राग ने धेष ।
 भोग वधें इंद्रियां तणो, अंतर उंडो देख ॥ २ ॥
 दया अणुकंपा आदरे, तिण आतम आंणी ठाय ।
 मरतो देखे जगत नें, सोच फिकर नहीं कांय ॥ ३ ॥
 कष्ट सहा घर में थकां, पाल्या वरत रसाल ।
 मोह अणुकंपा श्रावकां, त्यां पिण दीवी टाल ॥ ४ ॥
 काचा था ते चल गया, ते होय गया चक्चूर ।
 के सेठां रह्या चलीया नहीं, त्यानें वीर वखांण्या सूर ॥ ५ ॥

ढाल

तुम जायेज्यो रे स्वारथ ना सगा]

चंपा नगरी नां वांणीयां, ज्याज भर नें समुदर में जाय रे ।
 हिवें तिण अवसर एक देवता, त्यानें उपसर्ग कीधो आय रे ।
 जीव मोह अणुकंपा न आणीए* ॥ १ ॥
 मिनका सीयाल खांधे वेसांण नें, गले पेंहरी छे रुंड माल रे ।
 लोही राव सूं लीप्यो सरीर नें, हाथे खडग दीसें विकराल रे ॥ जी० २ ॥
 लोक घड घड लागा धूजवा, ओर देव रह्या मन ध्याय रे ।
 अरणक श्रावक डरीयो नहीं, तिण काउसग दीधो ठाय रे ॥ ३ ॥
 सागारी अणक्षण कीयों, धर्म ध्यान रह्यो चित्त ध्याय रे ।
 सगलां ने जांण्या डूबता, अणुकंपा न आंणी कांय रे ॥ ४ ॥
 अरणक श्रावक नें डिगायवा, देव वदि वदि बोलें वाय रे ।
 जो अरणक धर्म न छोडसी, तो ज्याज डबोवूं जल मांय रे ॥ ५ ॥
 उंची उपाड नें उंची न्हांख नें, कर सू सगलां री घात रे ।
 काली बोली अमावस रा जण्या, मांन रे तूं अरणक बात रे ॥ ६ ॥
 ग्यान दरसण म्हारा वरत नें, इणरों कीधों विघन न थाय रे ।
 हूं सेवग छूं भगवान रो, मोनें कोइ न सकें चलाय रे ॥ ७ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

लोक विल विल करता देख ने, अरणक रो न विगड्यो नूर रे।
मोह करुणा न आणी केहनी, देव उपसर्ग कीवो दूर रे ॥ ८ ॥
देव घिन घिन अरणक ने कहे, तूं तो जीवादिक नो जाण रे।
थारा सुघर्मी सभा मभे, इद्र कीया घणा वखाण रे ॥ ९ ॥
अरणक श्रावक रा गुण देख नें, आया देव री दाय रे।
दोय कुडल री जोखी आप ने, देव आयो जिण दिस जाय रे ॥ १० ॥
नमीराय रिषि चारित लीयो, ते तो उभो बाग मे आय रे।
इद्र आयो तिणने परखवा, ते किण विघ बोले वाय रे ॥ ११ ॥
थारी अगन करी मिथला बलें, एकर सू साह्यो जोय रे।
अतेवर बलतो मेलसी, ए वात सिरे नही तोय रे ॥ १२ ॥
सुख वपराय सारा लोक मे, विलखा देख पुत्र रतन रे।
जो तू दया पालण ने उठीयो, तो कर तूं यांरा जतन रे ॥ १३ ॥
नमी कहे वसूं जीवूं सुखे, म्हारी पल पल सफला जात रे।
या मिथला नगरी दाभता, म्हारो बले नही तिलमात रे ॥ १४ ॥
मोंनैं हरष नहीं मिथला रह्या, वलीया नही सोग लिंगार रे।
मैं सावद्य जाण त्यागी जका, रही बली न चावें अणगार रे ॥ १५ ॥
नमिराय रिषी आंणी नही, मोह अणुकंपा नी वात रे।
समभाव राखे मुगते गया, करे अष्ट कर्मा री घात रे ॥ १६ ॥
श्री केसव केरो बघवो, यो तो नामे गजसुखमाल रे।
तिण दीख्या ले काउसग रह्यो, सोमल आयो तिण काल रे ॥ १७ ॥
माथें पाल बाघी माटी तणी, माहे घाल्या लाल अंगार रे।
कष्ट ऊयनों वेदन अति घणी, नेम करुणा न आणी लिंगार रे ॥ १८ ॥
श्री नेम जिणेसर जाणता, होसी गज सुखमाल री घात रे।
पिण अणुकंपा आंणी नही, ओर साव न मेल्या साथ रे ॥ १९ ॥
श्री वीर जिणद चोवीसमा, कल्पातीत मोटा अणगार रे।
त्यानें देव मिनष तिरजंच नां, उपसर्ग उपनां अपार रे ॥ २० ॥
सगम देवता भगवत नें, दुख दीघा अनेक प्रकार रे।
अनार्य लोकां पिण वीर ने, स्वानादिक दीवा लार रे ॥ २१ ॥
चोसठ इद्र मोहछव आवीया, दीष्या दिन भेला होय रे।
पिण कष्ट पड्यो भगवान ने, नायो उपसर्ग टारण कोय रे ॥ २२ ॥
दुख देता देखी जगनाथ ने, किण अलगा न कीघा आय रे।
समदिष्टी देव हुंता घणा, त्यां करुणा न आणी कांय रे ॥ २३ ॥

देवता जाण्यो श्री विरघमानं रे, उदे आया दीसैं छैं कर्म रे ।
 अणुकंपा आण विचें पड्यां, ए जिण भाष्यो नहीं धर्म रे ॥ २४ ॥
 धर्म हुवें तो आघों नहीं काढता, वले वीर नें दुखीया जाण रे ।
 परीसो देवण आवे तेहनें, देव अलगो करता ताण रे ॥ २५ ॥
 मछ गलागल मंड रही, सारा दीप समुद्रां मांय रे ।
 भगवंत कहे जो इंद्र नें, तो थोडा में दीयें मिटाय रे ॥ २६ ॥
 पडती जाणें अंतराय नें, तो अचित्त खवारें पूर रे ।
 एहवी सकत घणी छैं इंद्र नीं, पिण कर्म न हुवें दूर रे ॥ २७ ॥
 चूलणी पीया नें पोसा मर्में, देव दीघा छैं दुख आय रे ।
 कुण कुण हवाल तिण कीया, ते सांभलजो चित्त ल्याय रे ॥ २८ ॥
 तीन बेटां रा नव सूला कीया, तिणरा मूंढा आगें लाय रे ।
 तेल उकाल नें माहें तल्या, बलबलता सूं छांटी काय रे ॥ २९ ॥
 समें परिणामां वेदना सही, जांणी आपणा संच्या कर्म रे ।
 अणुकंपा नांणी अंगजात री, तिण छोड्यो नही जिण धर्म रे ॥ ३० ॥
 मत मारण रो कह्यो नहीं, ते तों जाण्यो सावद्य वाय रे ।
 कसणा नांणी मरता देख ने, सेंठों रह्यो धर्म ध्याय रे ॥ ३१ ॥
 जो तूं धर्म न छोडसी, तो थारें देव गुर जिम छे माय रे ।
 तिणने मारुं विघ आगली, थारा मूंढा आगें ल्याय रे ॥ ३२ ॥
 जद आरत ध्यान तूं ध्याय नें, परसी माठी गति में जाय रे ।
 सुणनें चूलणीपीया चळ गयो, मानें राखण रो करें उपाय रे ॥ ३३ ॥
 ओ तों पुरप अनर्थ करें जिसो, भाल राखूं ज्यूं न करें घात रे ।
 ते तों भद्रा वचावण उठीयो, इणरें थांभो आयो हाथ रे ॥ ३४ ॥
 अणुकंपा आंणी जणणी तणी, तो भागा वरत ने नेम रे ।
 देखों मोह अणुकंपा एहवीं, तिणमें धर्म कहीजें केम रे ॥ ३५ ॥
 चूलणीपीया नें सुरादेव नां, चलशतक नें सकडाल रे ।
 यां च्यांरा रा मास्था दीकरा, देव तलीया तेल उकाल रे ॥ ३६ ॥
 बेटां नें मरता देखीया, नांणी मोह अणुकंपा पेम रे ।
 उठ्या मात त्रियादिक राखवा, तों भागा वरत नें नेम रे ॥ ३७ ॥
 मात त्रियादिक राखतां, भागा वरत नें बंध्या कर्म रे ।
 तो साघ विचे जाए पडीयां थकां, यांनं किण विघ होसी धर्म रे ॥ ३८ ॥
 चेडा नें कोणिक री वारता, निरावलिका भगोती साख रे ।
 मानव मूंआ दिय संगरांम में, एक कोड नें असी लाख रे ॥ ३९ ॥

भगवत अणुकंपा आण नें, पोतें न गया न मेल्या साध रे ।
 यानें पेंहला पिण वरज्यां नहीं, घणा जीवां री जाणे विराध रे ॥ ४० ॥
 ए दया अणुकंपा जाणता, तो वीर बडालें जाय रे ।
 सगला ने साता वपरावता, थोडा में देता चकाय रे ॥ ४१ ॥
 कोणिक भगता भगवान रो, चेंडो बारें वरतघार रे ।
 इंद्र भीडी आयों ते समकती, अे किण विघ लोपता कार रे ॥ ४२ ॥
 ग्यान दरसण चारित माहिलीं, वधतों जाणें किणरो उपाय रे ।
 तो करें अणुकंपा भव जीव री, वीर विनां बोलायां जाय रे ॥ ४३ ॥
 समुद्र पाली सुखां में मिल रह्यो, संसार विवें रस लग्न रे ।
 चोर नें मारतो देखी ऊमनों, उतकष्टो परम वेंराग रे ॥ ४४ ॥
 चारित लीयो कर्म काटवा, जाणें मीष तणों उपाय रे ।
 पिण करुणा न आंणी चोर नीं, छोडावण री न काढी वाय रे ॥ ४५ ॥
 साध श्रावक नीं एक रीत छें, तुमे जीवो सुतर नीं न्याय रे ।
 देखो अंतर माहे विचार नें, कूडी कांय करों वकवाय रे ॥ ४६ ॥



ढल : ४

दुहा

दुखीया देखी तावडें, जो नहीं मेलें छाया ।
साध श्रावक न गिणें तेहनें, ए अन तीरथी नीं वाय ॥ १ ॥
माख्यां मरायां भलो जांगीयां, तीनुई करणां पाप ।
देखण वाला नें जे कहें, ते खोटा कुगुर सराप ॥ २ ॥
करमां कर नें जीवडा, उपजें ने मर जाय ।
असंजम जीतब्य तेहनो, ते साध न करें उपाय ॥ ३ ॥
देखे मांहोमांहि विणसता, अलगो करवां जाय ।
एहवो कहें तिण उपरें, साध वतावें न्याय ॥ ४ ॥

ढल

[दुलहो मात्रवु भव काई तुमें]

नाडो भरीयो छे डेडक माछल्यां, मांहें नीलण फूलण रो पूर हो । भविकजण ।
लट फूहारा आदि जलोक सुं, तस थावर भरीया अरुड हो । भविकजण ।
करजों पारख जिण घर्म री * ॥ १ ॥
सुलीया घांन तणो ढिगलो पख्यो, मांहें लटां ने ईल्यां अथाय हो ।
सुलसल्यां इंडादिक अति घणा, किल विल करें तिण मांय हो ॥ क०२ ॥
एक गाडो भख्यो जमीकंद सुं, तिणमें जीव घणा छे अनंत हो ।
अ्यार प्रज्या अ्यार प्राण छे, माख्यां कष्ट कह्यो भगवंत हो ॥ ३ ॥
काचा पांणी तणा माटा भखा, घणा जीव छें अणगल नीर हो ।
नीलण फूलण आदि लटां घणी, त्यामें अनंत वताया छे वीर हो ॥ ४ ॥
खात भीनों उकरडी लटां घणी, गींडोला गघईया जाण हो ।
टलबल टलवल कर रह्या, यांनं कर्मां नाख्या छे आण हो ॥ ५ ॥
कांयक जायगां में उंदर घणा, फिरें आमां नें सांहा अथाग हो ।
थोडों सो खडकों सांभलें, तो जावें दिशोदिश भाग हो ॥ ६ ॥
गुल खांड आदि मिसटांन में, जीव चिहुं दिस दोड्या जाय हो ।
माख्यां नें मांका फिर रह्या, ते तों हुवकें मांहोमां आय हो ॥ ७ ॥
नाडों देखी नें आवें भेंसीयां, घांन हुकें बकरा आय हो ।
गाडें आवें बलद पावरा, माटों आय उभी छें गाय हो ॥ ८ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

पंखी चूगें उकरली उपरे, उंदर पासे मिनकी जाय हो ।
 माखी ने माका पकड लें, साधु किणनें बचावें छोडाय हो ॥ ९ ॥
 भेस्यां हाकल्यां नाडा माहिलां, सगला रे साता थाय हो ।
 बकरा ने अलगा कीयां, इंडादिक जीव ते बच जाय हो ॥ १० ॥
 थोडा सा बलदां ने हाकल्यां, तो न मरे अनत काय हो ।
 पाणी फूहारादिक किण विघ मरे, नेडी आवण न दें गाय हो ॥ ११ ॥
 लट गीडोलादिक कुसले रहे, जो पंखी नें दीये उडाय हो ।
 मिनकी छछकार नसार दें, तो उंदर घर सोग न थाय हो ॥ १२ ॥
 मांका ने आघो पाछो करे, तो माखी उड नाठी जाय हो ।
 साधा रे सगला सारिषा, ते तो विचें न पडें जाय हो ॥ १३ ॥
 मिनकी धाकल उदर बचाय ले, माखी राखें माका ने धकाय हो ।
 ओर मरता देख राखे नही, यामे चूक पड्यो ते बत्ताय हो ॥ १४ ॥
 साध पीहर बाजे छ काय नां, एक छोडावें तस काय हो ।
 पांच काय मरती राखे नही, तो पीहर किण विघ थाय हो ॥ १५ ॥
 रजुहरण लेई ने उ उठीयो, जोरी दावे दीयो छुडाय हो ।
 ग्यान दरसण चारित मांहिलो, यारें बघीयो ते मोय बत्ताय हो ॥ १६ ॥
 ग्यान दरसण चारित तप विनां, ओर मुगिति रो नही उपाय हो ।
 छोडा मेल उपगार संसार नां, तिण थी सद गति किण विघ जाय हो ॥ १७ ॥
 जितरा उपगार संसार नां, ते तो सगलाइ सावद्य जाण हो ।
 श्री जिण धर्म मे आवे नही, कूडी म करो ताण हो ॥ १८ ॥
 अग्यानी रो ग्यानी कीया थका, हुवो निश्चें पेला रो उधार हो ।
 कीयो मिथ्याती रो समकती, तिण उतारीयो भव पार हो ॥ १९ ॥
 असजती ने कीयो संजती, ते तो मोष तणा दलाल हो ।
 तपसी कर पार पोंहचावीयो, तिण भेट्या सर्व हवाल हो ॥ २० ॥
 ग्यान दरसण चारित ने तप, यारों करें कोइ उपगार हो ।
 आप तिरे पेलो उवरे, दोयां रों खेवों पार हो ॥ २१ ॥
 ए च्यार उपगार छें मोटका, तिणमे निश्चेंई जाणों धर्म हो ।
 शेष रह्या कार्य संसार नां, तिण कीघां बघसी कर्म हो ॥ २२ ॥

ढाल : ५

दुहा

जीव दया छें उपरें, मुल्ला तीन दिष्टत ।
आगें विसतार करें जितों, ते सुणजो कर खंत ॥ १ ॥

ढाल

[सहेल्था ए वादो रुडा साध नें]

एक चोर चोरें घन पार को, वले दूजो हों चोरावें आगेंबाण ।
तीजों कोइ करें अनुमोदनां, ए तीनां रा हो खोट किरतव जाण ।
भव जीवां तुमें जिण धर्म ओलखों* ॥ १ ॥

एक जीव हणें तसकाय ना, हणावे हो बीजों पर नां प्राण ।
तीजों पिण हरबे मारीयां, ए तीनूई हो जीव हिंसक जाण ॥ २ ॥

एक कुसील सेवें हरप्यों थको, सेवाडे हो ते तो दूजें करण जोय ।
तीजों पिण भलो जाणें सेवीयां, ए तीनां रे हो कर्म तणों बंध होय ॥ ३ ॥

ए सगला नें सतगुर मिल्या, प्रतिबोध्या हो आण्या मारग ठाय ।
किण किण जीवां नें साधां उधख्या, तिणरो सुणजो हो विवरा सुघ न्याय ॥ ४ ॥

चोर हिंसक नें कुसीलीया, यारें ताई रे दीघो साधां उपदेस ।
त्यांन सावद्य रा निरवद कीया, एहवो छें हो जिण दया धर्म रेस ॥ ५ ॥

ग्यांन दरसण चारित तीनू तणों, साधां कीघो हो जिण थी उपमार ।
ते तो तिरण तारण हुआं तेहनां, उताख्या हो त्यांनें संसार थी पार ॥ ६ ॥

ए तो चोर तीनू समभ्यां थकां, घन रह्यो रे घणी नें कुसले खेम ।
हिंसक तीनू प्रतिबोधीयां, जीव बचीया हो कीघो मारण रो नेम ॥ ७ ॥

सील आदरीयो तेहनी, अस्त्री पडी हो कूला मांहे जाय ।
यारो पाप धर्म नहीं साध नें, रह्या मूखा हो तीनू इविरत माय ॥ ८ ॥

घन रो घणी राजी हुवों घन रह्यां, जीव बचीया हो ते पिण हरपत थाय ।
साध तिरण तारण नहीं तेहनां, नारी नें पिण हो नहीं डबोई आय ॥ ९ ॥

कोइ मूढ मिथ्याती इम कहें, जीव बचीया हों घन रह्यो ते धर्म ।
तो उणरी सरघा रे लेखें, अन्नी मूई हो तिणरा लागें कर्म ॥ १० ॥

जीव जीवें ते दया नहीं, मरें ते हो हिंसा मत जाण ।
मारण वाला नें हिंसा कही, नहीं मारे हो ते तों दया गुण खाण ॥ ११ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

नीब आंवादिक विरष नो, किण ही कीघो हो वाढण रो नेम ।
इविरत घटी तिण जीव नी, विरष उभो हो तिणरो धर्म केम ॥ १२ ॥
सर ब्रह्म तलाव फोडण तणों, सूस लेइ हो मेट्या आवता कर्म ।
सर ब्रह्म तलाव भख्या रहें, तिण माहिं हो नही जिणजी रो धर्म ॥ १३ ॥
लाडू घेवर आदि पकवांन नें, खाणा छोड्या हो आतम आंणी तिण ठाय ।
बेंराग बघ्यों तिण जीव रें, लाडू रह्यों हो तिणरो धर्म न थाय ॥ १४ ॥
दव देवो गांम जलायवो, इत्यादिक हो सावद्य कार्य अनेक ।
ए सर्व छोडावें समभाय ने, सगला री हो विघ जाणों तूमें एक ॥ १५ ॥
हिंवे कोइक अग्यानी इम कहें, छ काय काजे हो धां छां धर्म उपदेस ।
एकण जीव नें समभावीयां, मिट जाए हो घणा जीवा रो कलेश ॥ १६ ॥
छ काय घरे साता हुइ, एहवो भाषे हो अण तीरथी धर्म ।
त्यां भेद न पायो जिण धर्म रो, ते तो भूला हो उदें आयो मोह कर्म ॥ १७ ॥
हिंवे साध कहें तुमे सामलों, छ काया रे हो साता किण विघ थाय ।
सुभ असुभ बांध्या ते भोगवें, नही पाम्या हो त्यां मुगत उपाय ॥ १८ ॥
हणवा सूंस कीया छ काय नां, तिणरे टलीया हो मेल्ल असुभ कर्म पाप ।
ग्यानी जाणें साता हुई एहने, मिट गया हो जनम मरण संताप ॥ १९ ॥
साध तिरण तारण हुआ एहना, सिध गति मे हो मेल्यो अविचल ठाम ।
छ काय लारें भिल्लती रही, नही सभ्नीया हो तिणरा आतम काम ॥ २० ॥
आगें अरिहंत अनंता हुआ, कहता कहता हो कदे नावें त्यांरो पार ।
आप तिख्या ओरां नें तारीया, छ काया रे हो साता न हुइ लिंगार ॥ २१ ॥
एक पोतें बच्च्यों ते मरवा थकी, दूजे कीघो हो तिणरे जीवण रो उपाय ।
तीजों पिण हरष्यों उण जीवीयां, यां तीनां मे हो कुण सुघ गति जाय ॥ २२ ॥
कुसले रह्यो तिणरे इविरत घटी नही, तो दूजा ने हो तुमे जाणजो एम ।
भलो जाणें तिणरें विरत न नीपनी, ए तीनूई हो सुघ गति जासी केम ॥ २३ ॥
जीवीयां जीवायां भलो जांणीयां, ए तीनूई हो करण सरीषा जाण ।
कोइ चतुर होसी ते परखसी, अणसमझ्या हो करसी ताणा ताण ॥ २४ ॥
छ काया रो बांछें मरणो जीवणो, ते तो रहसी हो संसार मझार ।
ग्यांन दरसण चारित्त तप भला, आदरीयां हो आदरायां खेवो पार ॥ २५ ॥

ढाल : ६

दुहा

पोतें हणें हणावें नहीं, पर जीवां ना प्राण ।
हणें जिणें भलो जाणें नहीं, ए नव कोटी पचखाण ॥ १ ॥
ए अमय दांन दया कही, श्री जिण आगम मांय ।
तो. पिण द्वंध उठावीयों, जेंनी नांम वराय ॥ २ ॥
अमय दांन न ओलख्यों, दया री खबर न कांय ।
भोला लोकां आगले, कूडा चोज लगाय ॥ ३ ॥
कहें साध बचावें जीव नें, ओरां नें कहें तूं बचाय ।
भलों जाणें वचावीयां थकां, पिण पूछ्यां पलटे जाय ॥ ४ ॥

ढाल

[जगत गुरु तिसला नन्दन वीर]

इण सावां रा मेघ में जी, बोलें एहवी वांय ।
म्हें पीहर छां छ काय नां जी, जीव वचावां जाय ।
चतुर नर समभो ग्यान विचार ॥ १ ॥
एहवी करें परूपणा जी, बोले बंध न होय ।
पलट जाए पूछ्यां थकां जी, भोलां खबर न कोय ॥ चु० सं० २ ॥
पेट हुखे सों श्रावकां जी, जुदा हुवें जीव काय ।
साध आया तिण अवसरे जी, हाथ फेछ्यां मुख थाय ॥ ३ ॥
साध पघाख्या देख नें जी, गृहस्थ बोल्या वाय ।
थें हाथ फेरो पेट उपरें जी, अें श्रावक जीवां जाय ॥ ४ ॥
जब कहें हाथ न फेरणो जी, ए साध नें कल्पें नांय ।
थें कहिता जीव वचावणो, तो बोल नें बदलो कांय ॥ ५ ॥
गोसाला नें वीर वचावीयों जी, तिणमें कहे छे धर्म ।
सों श्रावक नहीं वचावीयां, त्यांरी सरधा रो निकल्यो भर्म ॥ ६ ॥
गोसाला रे कारणे जी, लब्ध फोडी जगनाथ ।
सों श्रावक मरता देख नें, ते कांय न फरों हाथ ॥ ७ ॥
धर्म कहें भगवंत नें, पोतें कांय छोडी रीत ।
सों श्रावक नहीं वचावीयां, त्यांरी कुण मानें परतीत ॥ ८ ॥

गोसाला ने वचावीयां में, धर्म कहे साख्यात ।
 तो सो श्रावक नहीं वचावीयां, त्यारी विगडी सरधा चात ॥ ९ ॥
 इम कहां जाव न ऊाजे, जत्र कूडी करें वकवाय ।
 हिवें साध कहे तुमें सांभलों जी, गोसाला रो न्याय ॥ १० ॥
 साध नें लब्ध न फोडणी, कह्यो सूतर भगोती रे मांय ।
 पिण मोह कर्म वस राग थी जी, लीयो गोसालो वचाय ॥ ११ ॥
 छ लेस्या हती जद वीर में जी, हूता आहुई कर्म ।
 छदमस्य चूका तिण समें जी, मूर्ख थापे धर्म ॥ १२ ॥
 छदमस्य चूक पढ्यो तिकों जी, मुंढे आणें बोल ।
 निरवद कोइ म जाणजो जी, अकल हीया री खोल ॥ १३ ॥
 ज्युं आणंद श्रावक नें घरे जी, गोतम बोल्या कूड ।
 पडीया छदमस्य चूक मे जी, सुघ हुवा वीर हजूर ॥ १४ ॥
 इम अवस उदें मोह आवीयो, नहीं टाल सक्या जगनाथ ।
 ते तो न्याय न जाणीयो, त्यारे माहें मूल मिथ्यात ॥ १५ ॥
 गोसाला नें नहीं वचावता तो, घटतो अछेरो एक ।
 निश्चें होणहार टले नहीं जी, समभों आण ववेक ॥ १६ ॥
 गोसाला नें वचावीयो तो, वचीयो घणो मिथ्यात ।
 लोहीठाण कीयो भगवंत नें, बले दीय साधां री घात ॥ १७ ॥
 गोसाला नें वचावीया में, धर्म जाणें ए सांम ।
 तो दीय साध वचावत आपणा, वले करता ओहिज कांम ॥ १८ ॥
 गोसाला नें वचायने जी, धर्म जाणें जिणराय ।
 दीय साध न राख्या आपणा, यो किण विघ मिलसी न्याय ॥ १९ ॥
 जगत नें मरता देख नें जी, आडा न दीधा हाथ ।
 धर्म जाणें तो आगो न काढतां, अें तिरण तारण जगनाथ ॥ २० ॥
 ए विवरा सुघ वतावीयो जी, सूतर भगोती रे न्याय ।
 कुबदी करें कदागरों जी, सुबुवी री आवें दाय ॥ २१ ॥
 साधां रा मुख आगळें, पंखी पडीयो माला थी आय ।
 कहे मेहलां ठिकाणें हाथ सूं तो, दया रहे घट मांय ॥ २२ ॥
 तपसी श्रावक उपासरे जी, काउसग दीयो ठाय ।
 तांगी मिरगी आय ढहि पखों जी, गाबड भागे जीव जाय ॥ २३ ॥
 कोइ गुहस्थ आण नें कहे जी, थें मोटां मुनिराज ।
 थें वेठें न कखों एहनें जी, ओ मर छे गाबड भांज ॥ २४ ॥

जब तो कहें म्हेँ साध छाँ जी, श्रावक बेठो कराँ केम ।
माँहरे कांम काँई गृहस्थ सूँ जी, बोलें पावरा एम ॥ २५ ॥
श्रावक बेठो करें नहीं जी, पंखी मेले माला मांय ।
देखो पूरो अंधारों एहनेँ जी, ए चोडें भूला जाय ॥ २६ ॥
पंखी माला में मेलतां जी, सके नही मन मांय ।
तो श्रावक नें बेठों कीयां में, धर्म न सरधे कांय ॥ २७ ॥
इतरौ समझ पडे नहीं, त्यानेँ समकत आवे केम ।
छकीया मोह मिथ्यात में, बोलें मतवाला जेम ॥ २८ ॥
कहें साध नें उंदर छोडावणों जी, भिनकी पाछें जाय ।
श्रावक नें बेठों करें नहीं, अँ किण विघ मिलसी न्याय ॥ २९ ॥
मुंसादिक वचावतां जी, भिनकी नें दुख थाय ।
श्रावक नें बेठों कीयां जी, नहीं किण रे अंतराय ॥ ३० ॥
मुंसादिक नें कारणें जी, भिनकी नें न्हासावे डराय ।
श्रावक मरें मुख आगलें, बेठों न करें हाथ संभाय ॥ ३१ ॥
ए प्रतख वात मिलें नहीं जी, तावडा छाँया जेम ।
श्री जिण मारग ओलख्योँ, त्यारें हिरदे' वेसैं केम ॥ ३२ ॥
लाय लामें तो ढांडां खोल नें, साध काढें उषाडें दुवार ।
श्रावक नें बेठों करें नहीं, वा सरघा करसी खुवार ॥ ३३ ॥
ढांडां नें तो खोलतां जी, खप घणी छें ताय ।
सों श्रावक हाथ फेख्यां वचें, त्यारी नांगें काँई मन मांय ॥ ३४ ॥
कहें ढांडां खोल वचावसां, पिण श्रावक रें न फेरां हाय ।
एह अग्यांनी जीव री जी, कोइ मूर्ख मानें वात ॥ ३५ ॥
गाडा नीचें आवें डावडों, कहें साध नें लेणों उठाय ।
श्रावक नें बेठों करे नहीं, ओ उबों पंथ इण न्याय ॥ ३६ ॥
रित वरसाला नें समें जी, जीव घणा छें ताय ।
लटां गजायां नें कातरा जी, पडीया मारण मांय ॥ ३७ ॥
साध वारे नीकल्या जी, जोय जोय मुँकें पाय ।
लारें ढांडां देख्या आवतां, पिण साध न लेवें उठाय ॥ ३८ ॥
जे बालक लेवें उठाय नें, यां जीवां नें न लें उठाय ।
तो उणरी सरघा रें लेखें, उणरें दया नही घट मांय ॥ ३९ ॥
जो बालक नें लेवें उठाय नें, ओर जीव देखी ले नांय ।
इण सरघा रो करजों पारिखों, कोइ रखे पडों फंद मांय ॥ ४० ॥

इम कहें मिश्र परूपतां, नहीं संके हो करता बकवाय ।
 इण सरघा रो प्रश्न पूछीयां, जाब नावें हो जब लोक लाय ॥ ३ ॥
 हिवें सात दिष्टंत री थापर्ना, त्यांरी सुणजो हो विवरों सुघ वात ।
 निरणो करजों घट भितरें, बुधवंता हो छोड नें पखपात ॥ ४ ॥
 सो मिनषां नें मरता राखीया, मूला गाजर हो जमीकंद खवाय ।
 वले कुसले राख्या सो मानवी, काचो पांणी हो त्यांनैं अणगल पाय ॥ ५ ॥
 पोह माह महीनैं ठारी परें, तिण काले हो वाजें शीतल वाय ।
 अचेत पख्या सो मानवी, मरता राख्या हो त्यांनैं अग्न लाय ॥ ६ ॥
 पेट दुखें तलफल करें, जीव दोरो हो करें हाय विराय ।
 साता वपराइ सो जणा, मरता राख्या हो त्यांनैं होको पाय ॥ ७ ॥
 सो जणा दुरभख काल में, अन्न विनां हो मरें उजाड मांय ।
 कोइ एकू मारें तसकाय नें, सो जणा नें हो मरता राख्या जीमाय ॥ ८ ॥
 किण ही कालें अन्न विनां, सो जणा रा हो जुदा हुवें जीव काय ।
 सहजें कलेवर मूओ पड्यो, कुसले राख्या हो त्यांनैं एहू खवाय ॥ ९ ॥
 मरता देखी सो रोगला, ममाइ विण हो ते तो साजा न थाय ।
 कोइ ममाइ कर एक मिनष री, सो जणां रे हो साता कीधी बचाय ॥ १० ॥
 जमीकंद खवायां पांणी पावीयां, त्यांमैं थापें हो धर्म नें पाप दोय ।
 तो अग्न लागायां होको पावीयां, इत्यादिक हो सगलें मिश्र होय ॥ ११ ॥
 जो धर्म सरखें बचीया तिकों, हिंसा तिणरा हो लागा जाणें कर्म ।
 तो सातूई सारिषा लेखवे, कहि देणों हो सगलें पाप नें धर्म ॥ १२ ॥
 जो सातां में मिश्र कहें नहीं, तो किम आवे हो इण बोल्या री परतीत ।
 आप थापें आप उथपें, तो कुण मानें हो आ सरघा विपरीत ॥ १३ ॥
 जो सातांइ में मिश्र कहें, तो नही लागें हो गमती लोकां नें वात ।
 मिलती कहां विण तेहनीं, कुण करे हो कूडां री पखपात ॥ १४ ॥
 एक दोय बोलां में मिश्र कहें, सगलां में हो कहितां लाजें मूंड ।
 एहूवो उलटों पंथ भालीयो, त्यांरें केडें हो ताणें मूर्ख रूड ॥ १५ ॥
 सो सो मिनष सगलें बच्या, थोडी घणी हो सगलें हुइ घात ।
 जो धर्म बरोबर न लेखवें, तो उथप गई हो मूला पांणी री वात ॥ १६ ॥
 बात उथपती जाण नें, कदा कहिदें हो सगलें पाप नें धर्म ।
 पिण समदिष्टी सरघे नही, ए तों काढ्यो हो खोटी सरघा री भर्म ॥ १७ ॥
 असंजती रों मरणों जीवणो, वंछा कीषां हो निरुवें राग नें घेव ।
 ओ धर्म नहीं जिण भाखियो, सांसों हुवें तो हो अंग उपंग देख ॥ १८ ॥

काच तणा देखी मिणकला, अण समझा ही जाणे रतन अमोल ।
 ते निजर पड्यो सराफ री, कर दीघो हो त्यारो कोड्या मोल ॥ १६ ॥
 मूला खवाया मिश्र कहे, या सरघा हो काच मणी समान ।
 तो पिण भाली रतन अमोल ज्यु, न्याय न सूझें हो चाला कर्मा रा जाण ॥ २० ॥
 जीव मारें भूठ बोल ने, चोरी करने हो पर जीव बचाय ।
 बले करे अकार्य एहवा, मरता राख्या हो मइथुन सेवाय ॥ २१ ॥
 घन दे राखे पर प्राण ने, क्रोधादिक हो अठारे सेवाय ।
 ए सावद्य काम पोतें करी, पर जीवां ने हो मरता राखे ताय ॥ २२ ॥
 जो हिंसा करे जीव राखीया, तिणमें होसी हो घर्म ने पाप दोय ।
 तो इम अठारेइ जाणजों, ए चरचा मे हो विरलो सममें कोय ॥ २३ ॥
 जो एकण मे मिश्र कहे, सतरां मे हो भाषा बोले वोर ।
 उची सरघा रों न्याय मिलें नही, जब उलटी हो कर उठे भोड ॥ २४ ॥
 जीव मारे जीव राखणा, सूतर मे हो नही भगवत वेण ।
 उंचो पंथ कुगुरा चलावीयों, सुघ न सूझे हो फूटा अतर नेण ॥ २५ ॥
 कोइ जीवता मिनष तिर्यंच नां, होम करे हो जुघ जीतण सगराम ।
 एक तो ओं पाप मोटकी, जीव होम्या हो बीजों सावद्य काम ॥ २६ ॥
 कोइ नाहर कसाइ मार ने, मरता राख्या हो घणा जीव अनेक ।
 जो गिणे दोया ने सारिषा, त्यांरी बिगडी हो सरघा बात ववेक ॥ २७ ॥
 पेहला कहिता जीव बचावणा, तिण लेखे हो बोलें सुघ न कांय ।
 जीव बचीयां रों घर्म गिणे नही, खिण थापे हो खिण मे फिर जांय ॥ २८ ॥
 देवल धजा तेहनी परे, फिरता बोले हो न रहे एकण ठोम ।
 त्यानें पाषडी जिण कह्या, भगडो झाल्यो हो नही चरचा रोकाम ॥ २९ ॥
 जो एकण ने अघर्म कहे, तो दूजा नें हो कहणो घर्म नें पाप ।
 ए लेखो कीया तो लड पडे, त्यारा घट मे हो खोटी सरघा री थाप ॥ ३० ॥
 बले सरणो लेइ श्रेणक तणों, सावद्य बोले हो तिणरी खबर न कांय ।
 जोरी दावें पेला ने वरजीयां, तिण माहे हों जिण घर्म बत्ताय ॥ ३१ ॥
 कहे श्रेणक फडहो फेरावियो, हणो मती हो फेरी नगरी मे आण ।
 तिण मोष हेते घर्म जाणीयो, एहवो भाषे हो मिथ्या दिष्टि अजाण ॥ ३२ ॥
 कहे राय श्रेणक तो समकती, घर्म विनां हो किम करसी ए काम ।
 इम कहि कहि भोला लोक ने, फंद मे न्हाखे हो श्रेणक रो ले नाम ॥ ३३ ॥
 श्रेणक नें करे मुख आगले, आह्मी साह्मी हो माडे खाचा ताण ।
 आप छांदें उटका मेलता, कुण पालें हो श्री जिणवर आंण ॥ ३४ ॥

समदिष्टी तर्णों कोइ नाम ले, भरमावे हो अणसमइया अजाण ।
 तो सकंद्र समदिष्टि देवता, जिण भगता हो एका अवतारी जाण ॥ ३५ ॥
 ते भीड आए कोणक तणी, जुव कीघा हो तिण सावच्च जाण ।
 एक कोइ असी लाख उपरें, मिनषां रो हो कर दीयो घमसाण ॥ ३६ ॥
 श्रेणक राय फड्हो फेरावीयों, ए तो जाणों हो मोटां राजां री रीत ।
 भगवंत न सरायों तेहनें, तो किम आवें हो तिणरी परतीत ॥ ३७ ॥
 फड्हो फेख्यों हणों मती, इतरी छें हो सूतर में वात ।
 कोइ धर्म कहें श्रेणक भणीं, ते तो बोलें हो चोडें भूठ विख्यात ॥ ३८ ॥
 लोकां सूं मिलती बात जाण नें, कर रह्या हो कूडी बकवाष ।
 मिश्र कहें ते पिण अटकलां, साचा हुवें तो हो सूतर में दे बताय ॥ ३९ ॥
 ए तो पुत्रादिक जायां परणीयां, ओछ्वादिक हो ओरी सीतला जाण ।
 एहवो कारण कोइ उपजें, श्रेणक राजा हो फेरी नगरी में आण ॥ ४० ॥
 ते रुकीया नहीं कर्म आवतां, नही कटीया हो तिणरा आगला कर्म ।
 नरक जातो रह्यो नहीं, न सीखायो हो तिणनें भगवंत धर्म ॥ ४१ ॥
 भगवते मोटा मोटा राजवी, प्रतिबोध्या हो आण्या मारग ठाय ।
 साध श्रावक धर्म बतावीयों, न सीखायो हो फड्हो फेरणो ताय ॥ ४२ ॥
 तो श्रेणक सीख्यो किण आगलें, भगवंत हो पूछ्यां साडें मून ।
 वले न जणावें आंमना, आग्या विण हो करणी जाणों जबून ॥ ४३ ॥
 वासुदेव चक्रवत मोटकां, त्यांरी वरती हो तीन छ खंड में आण ।
 जो फड्हो फेखां मुगत मिलें, तो कुण काढे हो आषो जिण धर्म जाण ॥ ४४ ॥
 कोउ रांगण दीवादिक सिनांन नें, विसन सातूं हो विनां मन दे छोडाय ।
 जो इण विघ जिण धर्म नीपजें, तो छ खंड में हो वरजें आण फेराय ॥ ४५ ॥
 फल फूल अर्नत काय नें, हिंसादिक हो अठारें पाप नें जाण ।
 जोरी दावें पेंला नें मना कीयां, धर्म हुवे तो हो फेरें छ खंड में आण ॥ ४६ ॥
 तीर्थंकर घर में थकां, त्यांनं हुंता हो तीन ग्यांन वक्षेप ।
 हाल हुकम थो लोक में, त्यां नहीं फेख्यो हो फड्हो सूतर देख ॥ ४७ ॥
 वल देवादिक मोटा राजवी, घर छोडी हो कीया पाप पचछाण ।
 श्रेणक जिम फड्हो न फेरीयों, जोरी दावें हो न वरताइ आण ॥ ४८ ॥
 ब्रह्मादत्त चक्रवत तेहनें, चित्त मुनी हो प्रतिबोधण आय ।
 साध श्रावक नो धर्म कहां, फड्हो री हो न कही आंमना काय ॥ ४९ ॥
 बीसां भेदां रुकें कर्म आवतां, बारें भेदा हो कटें आगला कर्म ।
 ए मोष रा मारग पाघरा, -छोडा मेलो हो सगला पापंड धर्म ॥ ५० ॥

दोय वेस्या कसाइवाडे गइ, करता देख्या हो जीवां रा संघार ।
 दोनू जण्यां मतो करी, मरता राख्या हो जीव एक हजार ॥ ५१ ॥
 एकण गेहणो देइ आपणो, तिण छोडाया हो जीव एक हजार ।
 दूजी छोडाया इण विवे, एका दोया हो चौथो आश्रव सेवार ॥ ५२ ॥
 एकण नें पाषंडी मिश्र कहे, तो दूजी ने हो पाप किण विघ होय ।
 जीव बरोबर बचावीया, फेर पडीयो हो ते तो पाप मे जोय ॥ ५३ ॥
 एकण सेवायो आश्रव पाचमो, तो उण दूजी हो चौथो आश्रव सेवाय ।
 फेर पड्यो तो इण पाप मे, धर्म होसी हो ते तो सरीषो थाय ॥ ५४ ॥
 एकण ने धर्म कहितां लाजे नही, दूजोडी नें हो कहितां आवे सक ।
 जब लोका सूं करें लगावणी, एहवो जाणो हो चोडे कुगुरा रा डक ॥ ५५ ॥
 एक वेस्या सावद्य कामो करी, सहस्र नाणो हो ले बडी घर मांय ।
 दूजी किरतब करी आपणा, मरता राख्या हो सहस्र जीव छोडाय ॥ ५६ ॥
 धन आप्यो खोटा किरतब करी, तिणरें लागा हो दोनू विघ्र कर्म ।
 दूजी जीव छोडाया तेहने, उण लेखें हो हुवो पाप ने धर्म ॥ ५७ ॥
 पाप गिणें मइयुन मे, जीव बचीयां हो तिणरो न गिणे धर्म ।
 पोतें सरघा री खबर पोते नही, ताणे ताणे हो बावे भारी कर्म ॥ ५८ ॥
 ए प्रस्नां रो जाब न उप,जे चरचा मे हो अटकें ठाम ठाम ।
 तो पिण निरणों करे नही, बक उठे हो जीवां रो ले नाम ॥ ५९ ॥
 जीव जीवें काल अनाद रो, मरे तेहनीं हो पर्याय पलटी जाण ।
 संवर निरजरा तो न्यारा कह्या, ते ले जावे हो जीव ने निरवाण ॥ ६० ॥
 पृथवी पाणी अग्न वाय नें, वनस्पति हो छठी तसकाय ।
 मोल ले ले छोडावे तेहनें, धर्म होसी हो ते तों सगलां मे थाय ॥ ६१ ॥
 तसकाय छोडायां धर्म कहे, पांच काय मे हो नहीं बोले निसंक ।
 भर्म मे पाड्या लोक ने, त्या लगाया हो मिथ्यात रा डक ॥ ६२ ॥
 त्रिविधे त्रिविधे छकाय हणवी नही, एहवी छे हो भगवंत री वाय ।
 मोल लीया कर्म कहें मोष रो, ए फद माड्यो हो कुगुरां कुबदचलाय ॥ ६३ ॥
 देव गुर धर्म रतन तीनूं, सूतर मे हो जिण भाप्या अमोल ।
 मोल लीयां नही नीपजें, साची सरयो हो आख हिया री खोल ॥ ६४ ॥
 ग्यान दरसन चारित ने तप, मोष जावा हो मारग छे च्यार ।
 स्थाने भिन भिन ओलखे आदरे, सुघ पालें हो ते पामे भव पार ॥ ६५ ॥

ढाल : ८

दुहा

दया दया सहको कहें, ते दया धर्म छें ठीक ।
 दया ओलख नें पालसी, त्यानें मुगत नजीक ॥ १ ॥
 आ दया तो पहिलो व्रत छें, साध श्रावक नों धर्म ।
 पाप रुकें तिण सूं आवता, नवा न लागें कर्म ॥ २ ॥
 छ्र काय हृणावें नहीं, हृणीयां भलो न जाणें ताय ।
 मन वचन काया करी, आ दया कही जिणराय ॥ ३ ॥
 आ दया चोखें चित्त पालीयां, तिरें घोर रुदर संसार ।
 वले आहीज दया परूपने, भव जीवां उतारें पार ॥ ४ ॥
 एक नाम दया लोकीक री, तिणरा भेद अनेक ।
 तिणमें भेषधारी भूला घणा, ते सुणजों आंण ववेक ॥ ५ ॥

ढाल

[पाण्ड मत रो निरणो कीजे]

द्रवे लाय लागी भावे लाय लागी, द्रवे कूवो नें भावेई कूवो ।
 ए भेद न जाणें मूढ मिथ्याती, संसार नें मुगत रो मारग जूवो ।
 भेष धर ने भूला रो निरणो कीजो* ॥ १ ॥
 कोइ द्रवे लाय सूं बलतों राखें, द्रवे कूवो पडता नें भाल बचायों ।
 ओं तो उपगार कीयो इण भव रों, जो ववेक विकल त्याने खबर न कायो ॥ मे० २ ॥
 घट में ग्यान घाल नें पाप पचखावें, तिण पडतो राख्यो भव कूजा मांह्यो ।
 भावे लाय सूं बलता नें काढें रिषेश्वर, ते पिण गेंहलां भेद न पायो ॥ ३ ॥
 सूनें चित सूतर बांचे मिथ्याती, त्यारे द्रव ने भाव रा नही निवेरा ।
 पिरवार सहीत कुपथ में पडीया, त्यां नरक सूं सनमुख दीषा डेरा ॥ ४ ॥
 गृहस्थ नें ओषध भेषद देइ नें, अनेक उपाय करे जीवां वचावें ।
 ए संसार तणा उपगार कीयां मे, मुगत रो मारग मूढ बतावें ॥ ५ ॥
 करें मितर जंतर भाडा नें भ्रमटा, सरपादिक नों जेंहर देवे उतारी ।
 काढें डाकण सांकण भूत जषादिक, तिणमेंइ धर्म कहे सांगधारी ॥ ६ ॥
 एहवा किरतब सावद्य जाणें, त्रिविधे त्रिविधे साधां त्याग कीवों ।
 भेषधारी लोकां सूं मिल्लें अग्यांनी, त्यां जीव बचावण रो सरणो लीघो ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

उवे जीव बचावण रो मुख सूं कहें पिण,
भोला नें भर्म मे पाड विगोया,
कीड्या मकोडा नें लटा गजाया,
भेषधारी कहें म्हें जीव बचावां,
कोइ आखो चोमासों उपदेस देवे तो,
जो उद्धम करे च्यार महीना माहे,
सो घर रे आंतर कोइ लेवे संथारो,
सो पगलां गया जीव लाखा बचें छे,
घर छोडतो जाणें सो कासो उपरे,
एक कोस गयां जीव कोडां बचे छे,
जब तो कहें म्हारो कल्प नही छें,
कब ही कहे म्हे जीव बचावां,
साध तो आपरा व्रत राखग नें,
संसार मांहे जीव पच रह्या छें,

जीवणो मरणों त्यारो नही चावें,
ग्यानादिक गुण घट माहें घालें,
गृहस्थ रा पग हेठें जीव आवें तो,
ते पिण जीव बचावण काजें,
इविरती जीवा रो जीवणो वाछें,
आ सरधा अग्यानी री पग पग अटके,
गृहस्थ रे तेल जाअे मूंग फूटा,
बिच में जीव आवे ते तेल सूं वहिता,
जो अग्न उठे तो लाय लागे छे,
गृहस्थ रा पग हेठें जीव बतावें,
पग सूं मरता जीव बतावें,
आ खोटी सरधा उघाडो दीसें,
वले भेषधारी विहार करतां मारग में,
ते मारग छोड ने उज्जड पडीया,
श्रावका ने उज्जड पडीया जाणे,
गृहस्थ रा पग हेठें जीव बतावें,

काम पड्यां बोलें फिरती चांणो ।
ते पिण डूबे छे कर कर ताणो ॥ ८ ॥
ढांढां रा पग हेठे चीथ्या जावें ।
तो चुण चुण जीवां ने क्यूं न बचावे ॥ ९ ॥
दश पांच जीवां ने दोहरा समभावें ।
तो लाखां गमे जीव तेह बचावें ॥ १० ॥
तो तुरत आलस छोडी देवण जावे ।
त्यां जीवां नें जाए क्यूं न बचावें ॥ ११ ॥
तो सांग पेहरावण सताब सूं जावें ।
त्यां जीवा जाय क्यूं न बचावें ॥ १२ ॥
म्हे तो संसार सूं हूआ न्यारा ।
उवे वाणी न बोलें एकण धारा ॥ १३ ॥
त्रिविध त्रिविध जीव नहीं सतावें ।
त्यांसू तो साध हुव निरदावें ।
आ सरधा जिणवर भाखी ॥ १४ ॥
समभतो देखें तो साध समभावें ।
मुगतनगर मे साध पोहचावें ॥ १५ ॥
भेषधारी कहे म्हे तुरत बतावां ।
म्हें सर्व जीवां रों जीवणो चावां ॥ १६ ॥
तिण धर्म रो परमारथ नही पायो ।
ते साभलजों भवियण चित ल्यायो ॥ १७ ॥
ते कीड्यां रा दर माहें रेलो आवे ।
वले तेल बुहो बुहो अगनि में जावें ॥ १८ ॥
तो तस थावर जीव मास्थ्या जावें ।
तो तेल बूलें ते बासण क्यूं न बतावे ॥ १९ ॥
तेल सूं मरता जीवा नें नही बतावे ।
पिण अभितर आंधा रें निजर न आवे ॥ २० ॥
त्याने श्रावक साह्यां मिलीया आयो ।
तस थावर जीवां नें चीथता जायो ॥ २१ ॥
तस थावर जीवा ने मरता देखें ।
तो मारग बताय देणो इण लेखें ॥ २२ ॥

एक पग हेठें जीव मरें ते बतावें, तो थोडा सा जीवां नें बचता जाणो ।
 ध्रावकां ने उज्जड सूं मारग घाल्या, घणां जीवें वचें तस थावर प्राणो ॥ २३ ॥
 एक पग हेठें जीव वचावे अग्यानी, ठाला बादल अंवर ज्यूं गाजें ।
 त्यांनैं श्रावक उजाड में मारग पूछे तो, मोन साभें बोलता कांय लाजें ॥ २४ ॥
 थोडी दूर बतायां थोडो धर्म हुवें तो, धणी दूर बतायां धणो धर्म जाणों ।
 घणी दूर रों नांम लीयां बक उठे, त्यारी खोटी सरघा रो ए अह्माणो ॥ २५ ॥
 कोइ आंधी पुरुष गामांतरें जातां, ऊ आंख विनां जीव किण विघ जेवें ।
 कीड्यां माकादिक चीथतो जाअें, तस थावर जीवा रो घमसाण होवें ॥ २६ ॥
 भेषघारी सहजाइ साथे जातां, आंधा रा पग सूं जीव मरता देखें ।
 जो पग पग जीवां नें नहीं बतावें, तो खोटी सरघा जाणजों इण लेखे ॥ २७ ॥
 त्यांनैं बताय बताय नें जीव बचावणा, कें पूंजी पूंजी नें करणा दूरो ।
 इण धर्म करण सूं तो पोतेंइ लाजें, तो दूजें कुण मानसी यो मत कूडो ॥ २८ ॥
 वले इल्यां सुल सलीयां सहीत आटो छे, ते गृहस्थ रे दुलें मारग मायो ।
 तपती रेत उनाला री तिण में, ते परत पाण जुदा हुवें जीव कायो ॥ २९ ॥
 गृहस्थ नहीं देखें आटो दुल्लतो, ते भेषवाख्यां री निजखा आवें ।
 उवे पग सूं मरता जीव बतावें, आटे दुल्लतें मरता जीव कथूं न बतावें ॥ ३० ॥
 इत्यादिक गृहस्थ रा अनेक उपघ सूं, तस थावर जीव मंआ नें मरसी ।
 ते पग हेठें जीव बतावें त्यांनैं, सगली ठोड बतावणा पडसी ॥ ३१ ॥
 किण हीक ठोडें जीव बतावें, किण हीक ठोड संका मन बाणें ।
 समरु पड्यां विण सरघा परूपें, पीपल बांधी मूर्ख ज्यूं ताणें ॥ ३२ ॥
 ए पग पग जाव अटकता देखें, कंदा सर्व आरे हुवें अग्यानी थूलो ।
 कूड कपट - करे मत कुसले राखण ने, पिण बुधवंत बात न मांनैं मूलो ॥ ३३ ॥
 गृहस्थ रों न वांछणों जीवणो मरणों, ते वाछें बतायां लागें पाप कर्मों ।
 राग वेष रहित रहिणों निरदावें, एहवो निकेवल श्री जिण धर्मों ॥ ३४ ॥
 समोसरण ते एक जोजन मांडला में, तठें नर नाख्यां रा व्रंद आवें नें जावें ।
 अरिहंत आणें वांणी सुणवा त्यांनैं, भगवंत भिन भिन भाव सुणावें ॥ ३५ ॥
 च्यार कोस मांहे तस थावर हुंता, मर गया जीव उराणें आया ।
 नर नाख्यां रा पगां सूं विण उपीयोगे, पिण भगवंत कठेय न दीसें बताया ॥ ३६ ॥
 नंद मिणीयारो डेडकों हुय नें, वीर वांघण जांतो मारग मांयों ।
 तिणनैं चीथ माख्यां श्रेणक रे वछेरें, वीर साघ साहां मंहली कथूं न बचायो ॥ ३७ ॥
 गृहस्थ रा पग हेठें जीव आवें ते, साघां नें बतावणों कठेय न चाल्यो ।
 भारीं कर्मा लोकां नें भिष्ट करण नें, ओ पिण घोचो कुगुरां रो घाल्यो ॥ ३८ ॥

जब साधा, रो नांम तो. अलनों मेलें,
 साव सूं. मरता जीव साव बतावे,
 सिधंत रा बल विण बोलें अग्यानी,
 अँ गाला रा गोला मुख सूं चलाया,
 साधां रा पग हेठे जीव मरे ते,
 तो अरिहंत नी आग्या लोपावे,
 साध तो साधा ने जीव बतावें,
 श्रावक श्रावकां ने जीव नहीं बतावे,
 श्रावक श्रावका नें न बताया पाप लागो कहें,
 श्रावकां रें संभोग साधां ज्यू हुवे तो,
 पाट बाजोटादिक साध बारे मेलें,
 लारें ओर साध त्यांनैं भीजतो देखे,
 रोगी गरढा गिलाण साध री वीयावच,
 महा मोहणी कर्म तणो बंध पाडें,
 आहार पांणी साध बँहरे आणे,
 आप आप्यों जाण इधिको लेवें तो,
 इत्यादिक साध साध रे अनेक बोलां रो,
 याहिज बोलां रो श्रावक श्रावकां रे,
 श्रावकां रे संभोग साधा ज्यू हुवें तो,
 ए सरधा रो निरणों न काडें अग्यानी,
 जो ए श्रावक श्रावकां रा नही करें तो,
 त्यां श्रावकां रे संभोग साधां ज्यू परूप्यों,
 श्रावक रें संभोग तो श्रावक सूं छें,
 त्यारो संभोग तो अविरत मे छें,
 त्यांसूं सरीरादिक रो संभोग टाले नें,
 उपदेस वेइ निरदावें रहिणों,
 लाय लागी जो गृहस्थ देखे तो,
 ए सावच किरतव लोक करें छें,
 अगन पाणी छ काय मूई त्यांरों,
 ओर जीव बच्या त्यारो धर्म बतावे,
 ए पाप नें धर्म रो मिश्र परूपे,
 त्यां भेषधाख्यां री परतीत आवे तो,
 ६६

श्रावकां री चरचा मुख ल्यावे ।
 ज्यू श्रावक श्रावकां नें जीव बतावे ॥ ३६ ॥
 श्रावका रो संभोग साधां ज्यू बतायो ।
 ते न्याय सुणो भवीयण चित ल्यायो ॥ ४० ॥
 संभोगी साध देखी जो नहीं बतावे ।
 पाप लागो ने विराधक थावें ॥ ४१ ॥
 ते पोता रो पाप टलावण रे काजें ।
 तो किसो पाप लागो किसो वरत भाजेना ॥ ४२ ॥
 ओ भेषधाख्यां मत काढ्यो कूडो ।
 पग पग बंध जायें पाप रा पूरो ॥ ४३ ॥
 ठरळें मातरादिक कारज जावें ।
 जो ओ न ल्यावें तो प्राच्छित आवे ॥ ४४ ॥
 साध न करे तो श्री जिण आगना बारें ।
 इह लोक नें परलोक दोनूं बिगाडे ॥ ४५ ॥
 संभोगी साध नें बांटे देवा री रीतो ।
 अदत्त लागे ने जावें परतीतो ॥ ४६ ॥
 संभोगी साध सूं न कीयां अटकें मोषो ।
 न करें तो मूल न लागें दोषो ॥ ४७ ॥
 श्रावक श्रावका ने पिण इण विध करणो ।
 त्यां वितल थइ लीयो लोकां रों सरणो ॥ ४८ ॥
 भेषधाख्या रे लेखे भागल जाणो ।
 ते पड गया मूर्ख उलटी ताणो ॥ ४९ ॥
 वले मिथ्याती सूं राखें भेलापो ।
 ते त्याग कीया सूं टलसी पापो ॥ ५० ॥
 ग्यांनादिक गुण रो राखें भेलापो ।
 पॅलो समझे नें टाळें तो टलसी पापो ॥ ५१ ॥
 तुरत बुझावें छ काय नें मारी ।
 तिण मांहे धर्म कहे सांगवारी ॥ ५२ ॥
 थोडो सो पाप कहें हुवें कानी ।
 लाय बुझावण री करे सांती ॥ ५३ ॥
 तांटा बिचे लाभ घणों बतावें ।
 लाय बुझावण दोच्या जावें ॥ ५४ ॥

एहवी दया बतावें अग्यांनी, छ काय रा पीहर नांम घरावें ।
 मिश्र घर्म कहें लाय बुभायां, पिण प्रश्न पूछ्यां रो जाव न आवें ॥ ५५ ॥
 छ काय जीवां री हिंसा कीवां, ओर जीव बच्यात्यांरो कहें छें घर्मो ।
 आ सरधा सुण सुण नें बुधवंता, खोटा नांणा ज्यूं काढ्यो भर्मो ॥ ५६ ॥
 नित रा नित पांचसों जीवां ने मारें, कोइ करे कसाइ अनार्य कर्मो ।
 जो मिश्र घर्म छें लाय बुभायां, तो इणनेइ माख्यां हुवें मिश्र घर्मो ॥ ५७ ॥
 लाय सूं बलता जीव जांणी नें, छ काय हणें नें लाय बुभाइ ।
 ज्यूं कसाइ सूं मरता जीवां नें देखें, कोइ जीव बचावण हणें कसाइ ॥ ५८ ॥
 जो लाय बुभायां जीव बचें तो, कसाइ नें माख्यां बचें घणां प्राणों ।
 लाय बुभायां कसाइ नें माख्यां, ए दोयां रो लेखो बरोबर जाणों ॥ ५९ ॥
 वले नाहर सिंघादिक चीता बघेरा, अँ दुष्टी जीव करे पर घाता ।
 जो लाय बुभायां जीव बचे छें, तों यानेइ माख्यां घणां रे हुवें साता ॥ ६० ॥

ढलल : ६

दुहा

जीव हिंसा छे अति बुरी, तिण माहे ओगुण अनेक ।
दया धर्म मे गुण घणा, ते सुणजों आंग ववेक ॥ १ ॥

ढलल

[ओ मल रे सीता पति आओ]

दया भगोती छे सुखदाई, ते मुगत पुरी नी साइ जी ।
साठ नाम दया रा कह्या जिण, दसमा अग रे माहि जी ।
दया धर्म श्री जिणजी री वांणी ॥ १ ॥

पूजणीक नाम दया रो भगोती, मगलीक नाम छे नीको जी ।
जे भव जीव आया इण सरणे, त्यानें छे मुगत नजीको जी ॥ २ ॥

त्रिविधे त्रिविधे छे काय न हणवी, आ दया कही जिणरायो जी ।
तिण दया भगोती रा गुण छे अनता, ते पूरा केम कहवायो जी ॥ ३ ॥

त्रिविधे त्रिविधे छे काय जीवां ने, भय नही उपजावे तामो जी ।
ए अमयदान कह्यो भगवते, ए पिण दया रो नामो जी ॥ ४ ॥

त्रिविधे त्रिविधे छे काय मारण रा, त्याग करे मन सुधे जी ।
आ पूरी दया भगवते भाषी, तिण सूं पाप रा वारणा रूधे जी ॥ ५ ॥

त्याग कीयां विण हिंसा टालें, तो कर्म निरजरा थायो जी ।
हिंसा टाल्यां सुभ जोग वरते छे, तिहा पुन रा थाट वंघायो जी ॥ ६ ॥

इण दया सू पाप कर्म रुक जावे, वले कर्म करें चकचूरो जी ।
या दोय गुणा में अनत गुण आया, ते पाले छे विरला सूरु जी ॥ ७ ॥

आहीज दया छें महावरत पहलो, तिणमे दया दया सर्व आई जी ।
ते पूरी दया तो साध जी पालें, वाकी दया रही नही काई जी ॥ ८ ॥

छे काय ने हणें हणावें नही, वले हणतां ने नही सरावे जी ।
इसडी दया निरंतर पाले, त्यारे तुलें बीजो कुण आवे जी ॥ ९ ॥

आहीज दया चोखे चित्त पाले, ते केवलीया री छे गादी जी ।
आहीज दया सभा में परूपे, तिणने वीर कह्यो न्यायवादी जी ॥ १० ॥

आहीज दया केवलीया पाली, मन-परयव अवधि ग्यानी जी ।
वले मति ग्यानी नें सुरत ग्यानी, आहीज दया मन मानी जी ॥ ११ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

आहीज दया लब्ध धार्यां पाली, आहीज पूर्व घर ग्यानी जी ।
 संका ह्वे तो निसंक सूं जोवों, सूतर में नही छें बात छानी जी ॥ १२ ॥
 देस थकी दया श्रावक पालें, तिणनें पिण साव बलाणे जी ।
 ते श्रावक हिंसा करे घर बेठां, पिण तिण माहि धर्म न जाणें जी ॥ १३ ॥
 प्राण भूत जीव नें सतव, त्यारी घात न करणी लिगारो जी ।
 या तीन काल नां तीथकर नी वाणो, आचारंग चोथा अघेन ममारो जी ॥ १४ ॥
 मत हणों मत हणों कह्यो अरिहंतां, अे जीव हणें किण लेखे रे ।
 ज्यारी अभितर खांख हीया री फूटी, ते सूतर साह्यो न देखें रे ॥ १५ ॥
 जीवां री हिंसा छे महा दुखदाई, ते नरक तणी छे साई जी ।
 खोटा खोटा नांम तीस हिंसा रा, कह्या दसमां अंग रे मांहि जी ।
 प्राण घात हिंसा छे खोटी, हिंसा धर्म कुगुरां री वाणो ॥ १६ ॥
 तिण जीव हिंसा माहें अवगुण अनेक, ते सर्व जीव नें दुखदायो जी ।
 केइ कहें म्हें हिंसा कीयां में, ते पूरा केम कहुवायो जी ॥ १७ ॥
 पिण हिंसा कीयां विण धर्म न हुबें, जाणां छां पाप एकतो जी ।
 केइ कहें म्हें हणां एकेंद्री, म्हें किण विध पूरा मन खतो जी ॥ १८ ॥
 एकेंद्री मार पंचेंद्री पोप्यां, पंचेंद्री जीवां रे तांइ जी ।
 एकेंद्री थी पंचेंद्रीय नां, धर्म घणों तिण माहि जी ॥ १९ ॥
 एकेंद्री मार पंचेंद्री पोप्यां, मोटां घणा पुन मारी जी ।
 केइ इसडों धर्म धारे नें बेठा, म्हानें पाप न लगणें लिगारी जी ॥ २० ॥
 निसंक थका छ् काय नें मारें, ते तो कुगुरां तणा सीखायो जी ।
 कोइ पांच थावर नें सहल गिणी नें, वले मन मांहे हरषत थायो जी ॥ २१ ॥
 तिण सूं त्यानें हणतां संक न खाणें, माखां न जाणें पापो जी ।
 पांच थावर नां आरंभ सेती, ओ तो कुगुरां तणों परतापो जी ॥ २२ ॥
 कह्यो दसवीकालक छठें अघेने, दुरगत दोष बघारें जी ।
 छ् काय जीवां नें जीवां मारे नें, तो बुधवंत किण विध मारें जी ॥ २३ ॥
 ए प्रतल सावध संसार नो कांमो, सगा संण न्यात जीमावें जी ।
 जीवां नें मारे जीवां नें पोषें, तिण मांहे धर्म बतावें जी ॥ २४ ॥
 तिण मांहे साव धर्म बतावें, ते तो मारण संसार नें जाणो जी ।
 मूला गाजर सकरकंद कांदा, ते पूरा छें मूंड अयाणो जी ॥ २५ ॥
 ते पिण दान दीयां में पुन परूपें, दत्यादिक नीलोती अनेको जी ।
 केइ जीव खवायां में पुन परूपें, ते बूडें छे निनां ववेको जी ॥ २६ ॥
 ए दोनूइ हिंसा धर्मी अनाय, केइ मिथ्र कहें छें मूडो जी ।
 ते बूडें छें कर कर खडो जी ॥ २७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

जीवां री हिंसा में पुन पल्पे, त्यांरी जीभ वहे तलवारो जी ।
 वले पहरण सांग साधु रो राखे, धिग त्यांरो जमवारो जी ॥ २८ ॥
 केइ साध रो विहद धरावें लोका मे, वले वाजे भगवत रा भगता जी ।
 पिण हिंसा माहें धर्म पल्पें, त्यारा तीन वरत भागे लगता जी ॥ २९ ॥
 छ काय माख्यां माहे धर्म पल्पें, त्याने हिंसा छ काय री लागे जी ।
 तीन काल री हिंसा अणुमोदी, तिण सू पेहलो महावरत भागें जी ॥ ३० ॥
 हिंसा में धर्म तो जिण कह्यो नाही, हिंसा धर्म कह्या मूठ लागे जी ।
 इसडी मूठ निरतर बोळें, त्यारो बीजोइ महावरत भागें जी ॥ ३१ ॥
 ज्यां जीवा नें माख्यां धर्म पल्पें, त्या जीवां रो अदत्त लागो जी ।
 वले आग्या लोपी श्री अरिहत नी, तिण सू तीजोई महावरत भागो जी ॥ ३२ ॥
 छ काय माख्यां माहे धर्म बतावे, त्यारी सरघा घणी छे उची जी ।
 ते भोह मिथ्यात मे जडीया अग्यानी, त्याने सरघा न सुमैं सूची जी ॥ ३३ ॥
 त्यानें पूछ्यां कहे म्हे दयाधर्मीं छा, पिण निश्चे छ काय रा घाती जी ।
 त्या हिंसाधर्म्यां ने साध सरघे केइ, ते पिण निश्चें मिथ्याती जी ॥ ३४ ॥
 केइ कहे साध जीव बचावे, राखें रखावे भलो जाणें जी ।
 ते जिण मारण रा अजाण अग्यानी, इसडी चरचा आणें जी ॥ ३५ ॥
 साध तो जीवां ने क्याने बचावे, ते पचे रह्या निज कर्मों जी ।
 कोइ साध री संगत आय करे तो, सीखाय देवे जिण धर्मों जी ॥ ३६ ॥
 छ काय रा सख जीव इविरती, त्यांरो जीवणों मरणों न चावे जी ।
 त्यारो जीवणों मरणों साध वळें तो, राग धेष बेहू आवें जी ॥ ३७ ॥
 छ काय रा सख जीव इविरती, त्यारो जीवणो मरणो खोटो जी ।
 त्यानें हणवा रो त्याग कीयो तिण माहे, दया तणो गुण मोटो जी ॥ ३८ ॥
 असजम जीतब ने बाल मरण, या दोग्यो री वछा न करणी जी ।
 पिडत मरण ने संजम जीतब, यारी आसा वंछा मन धरणी जी ॥ ३९ ॥
 छ काय रा सहस्र जीव इविरती, त्यारो असजम जीतब जाणो जी ।
 सर्व सावद्य त्याग कीया त्यारो, सजम जीतब एह पिछाणो जी ॥ ४० ॥
 त्रिविधे त्राइ छ काय रा साध, त्यांरी दया निरतर राखें जी ।
 ते छ काय रा पीहर छ काय ने माख्या, धर्म किसे लेखे भाषें जी ॥ ४१ ॥
 छ काय रा जीवां ने हणें ससारी, त्यारें विचे पडे नही जायो जी ।
 विचे पड्या वरत भागे साध रो, ते विकला ने खबर न कायो जी ॥ ४२ ॥
 केइ तो कहे सावां नें विचें न पडणो, केइ कहे विचें पडणो जी ।
 सावां नें समभावे रहणो, ते विकलां रे नही छें निरणो जी ॥ ४३ ॥

साधां नें बिचें पडणों त्रिविधे निषेध्यों, ते हणतां बिचें न पडें जायो जी ।
 पिण गृहस्थ नें धर्म कहे बिचें पडीयां, तो घर रों धर्म कांय गमायों जी ॥ ४४ ॥
 हणे जीतब नें परसंसा रे हेतें, हणें मानं नें पूजा रे कामो जी ।
 वले जनम मरण मूकावा हणें छें, हणें दुख गमावण तांमो जी ॥ ४५ ॥
 यां छ कारणं छ काय नें मारें तो, अहेत रो कारण थावें जी ।
 जनम मरण मूकावण हणें तो, समकत रतन गमावें जी ॥ ४६ ॥
 ए छ कारणें छ काय नें माख्यां, आठ कर्मां री गांठ बंधायो जी ।
 मोह नें मार वधें घणी निश्चें, वले पडें नरक मे जायो जी ॥ ४७ ॥
 अर्थ अनर्थ हिंसा कीघां, अहेत रो कारण तासो जी ।
 धर्म रें कारण हिंसा कीघां, बोध वीज रो नासो जी ॥ ४८ ॥
 ए छ कारणें छ काय नें मारें, ते तो दुख पांमे इण संसारो जी ।
 ए तो आचारंग रें पेंहलें अघेनें, छ उदेसा में कह्यो विसतारो जी ॥ ४९ ॥
 केइ समण माहण अनार्य पापी, करें हिंसा धर्म री थापो जी ।
 कहें प्राण भूत जीव नें सतव, धर्म हेतें हण्यो नहीं पापो जी ॥ ५० ॥
 एहवी उंची परूपणा करे अनार्य, त्यांनं आर्य बोल्या घर पेमों जी ।
 थें भूंडो दीठो नें भूंडो सांभलीयों, भूंडो मान्यो भूंडो जाण्यो एमो जी ॥ ५१ ॥
 जीव माख्यां में धर्म परूपें, ए तो अनार्य री वाणो जी ।
 ते तो मूढ मिथ्याती भारीकर्मां, त्यांरी सुघ वुच नही ठीकाणो जी ॥ ५२ ॥
 त्यां हिंसाधर्मी नें आर्य पूछ्यो, थानें माख्यां धर्म कें पापो जी ।
 जब तो कहें म्हांनं माख्यां छे पाप एकंत, साच बोले कीघी सुघ थापो जी ॥ ५३ ॥
 जब आर्य कहें थानें माख्यां पाप छे, तो सर्व जीवां नें इम जाणो जी ।
 ओरां नें माख्यां धर्म परूपें, थें कांय बूडो कर कर तांणो जी ॥ ५४ ॥
 इम हिंसाधर्मी अनार्य त्यांनं, कीघा जिण मारग सूं न्यारो जी ।
 जोवों अचारंग चोथा अघेन माहें, बीजें उद्देसें विसतारो जी ॥ ५५ ॥
 ओरां नें माख्यां धर्म परूपें, आप नें माख्यां पापो जी ।
 आ सरघा विकलां री उंची, तिणमें कर रह्या मूंड विलापो जी ॥ ५६ ॥
 अर्थ अनर्थ धर्म रे काजें, जीव हणें छ कायो जी ।
 तिणनें मंद बुधी कह्यो दसमां अंग में, पेंहला अघेन रे मांयो जी ॥ ५७ ॥
 छ काय जीवां रो घमसाण करतें, श्रावकां नें जीमावें जी ।
 उणनें मंद बुधी तो कह दीयो भगवंत, तिणनें धर्म किसी विध थावे जी ॥ ५८ ॥
 कोइ तो जीवां नें मार खवावें, कोइ जीव खवावें आषा जी ।
 तिण माहें एकंत धर्म परूपें, ते अनार्य री भाषा जी ॥ ५९ ॥

केइ जीव माख्यां माहे धर्म कहे छें, ते पूरा अग्यांनी उंघा जी ।
 त्यांन जाण पुरष मिलें जिण मारग रो, किण विच वोलावें सूधा जी ॥ ६० ॥
 लोह नो गोलो अगन तपाए, ते अगन वर्ण करे तातो जी ।
 ते पकड संडासे आयो त्यां पासें, कहें बलतो गोलों थें भालो हाथो जी ॥ ६१ ॥
 जब पापडीया हाथ पाछो खाच्यो, जब जाण पुरुष कहे त्याने जी ।
 ये हाथ पाछो खांच्यो किण कारण, थारो सरधा म राखो छाने जी ॥ ६२ ॥
 जब कहे गोलो म्हे हाथे ल्यां तों, म्हारो हाथ वले लागें तापो जी ।
 तो थारो हाथ बाले तिणने पाप के धर्म, जब कहें उणने लागो पापो जी ॥ ६३ ॥
 थारो हाथ बाले तिणने पाप लागें तो, ओरा नें माख्यां धर्म नाही जी ।
 थें सर्व जीव सरीपा जाणों, ये सोच देखो मन माहि जी ॥ ६४ ॥
 जे जीव माख्या मे धर्म कहे ते, हले काल अनंतो जी ।
 सूर्यगडा अग अघेन अठारमे, तिहा भाष गया भगवंतो जी ॥ ६५ ॥
 स्थानक करावे छ काय हणे ते, करे अनत जीवा री घातो जी ।
 अहेत नो कारण निश्चे हुवो छें, धर्म जाणें तो आवे मिथ्यातो जी ॥ ६६ ॥
 जब कहे म्हे स्थानक करावा तिणमें, जाणा छां एकंत पापो जी ।
 तिण कहिवा नें पाप कह्यो भूठ बोले, सरधा गोप विगोयो आपो जी ॥ ६७ ॥
 कोइ मिनष आंतरीयो छे तिण काले, धन उदकें स्थानक काजो जी ।
 जो उ पाप जाणें तो पर भव जातें, इसडों कांय कीयो अकाजो जी ॥ ६८ ॥
 घर रो धन देने जीव मराया, ते अर्थ न दीसैं कांई जी ।
 अनर्थ पिण जाण्यो नाही दीसैं, धर्म जाण्यो दीसैं तिण माहि जी ॥ ६९ ॥
 हिंसा री करणी मे दया नाही छें, दया री करणी मे हिंसा नाही जी ।
 दया नें हिंसा री करणी छें न्यारी, ज्युं तावडो नें छांही जी ॥ ७० ॥
 ओर वसत में भेल हुवें पिण, दया मे नाही हिंसा रो भेलो जी ।
 ज्युं पूर्व ने पिच्छम रो मारग, किण विच खाये मेलो जी ॥ ७१ ॥
 केइ दया ने हिंसा री मिश्र करणी कहे, ते कूडा कुहेत लगावें जी ।
 मिश्र थापण ने मूढ मिथ्याती, भोला लोकां ने भरमावें जी ॥ ७२ ॥
 जो हिंसा कीयां थी मिश्र हुवे तो, मिश्र हुवें पाप अठारो जी ।
 एक फिख्यां अठारे फिरे छें, कोइ वुचवत करजो विचारो जी ॥ ७३ ॥
 जिण मारग री नीव दया पर, खोजी हुवें ते पावे जी ।
 जो हिंसा माहे धर्म हुवें तो, जल मथीयां धी आवे जी ॥ ७४ ॥
 संवत अठारे नें वरस चमालें, फागुण सुद नवमी रिक्वारो जी ।
 जोड कीची दया धर्म दीपावणां, बगडी सहर मकारो जी ॥ ७५ ॥

ढाल : १०

दुहा

नमूं वीर सासण घणी, गणधर गोतम सांम ।
त्यां मोटा पुरुषां रा नांम थी, सीम्हे आतम, कांम ॥ १ ॥
त्यां घर छोडे संजम लीयो, भगवंत श्री विरघमान ।
बारें वरस नें तेरें पखे, छदमस्थ रख्या भगवान ॥ २ ॥
त्यां गोसाला नें चेलो कीयो, ते तो निश्चे अजोग साख्यात ।
सराग भाव आयों तेहे थी, ते पिण छदमस्थ पणारी बात ॥ ३ ॥
तीथंकर साघ छदमस्थ थकां, चेलो न करें दीख्या देवे नाहीं ।
घर्मकथा पिण कहें नहीं, नव मे ठांगे अर्थ मांही ॥ ४ ॥
बारें वरस-नें तेरे पख मझे, दीख्या दे चेलों न कर्यो कोय ।
एक गोसाला अजोग नें चेलों कीयों, निश्चें होणहार टलें नही सोय ॥ ५ ॥
तीथंकर साथें दीख्या लीयें, तिणने दीख्या दे जिणराय ।
पछें केवली हुवें नहीं त्यां लगें, कीण नें दीख्या देवें नांय ॥ ६ ॥
गोसाला नें वीर बचावीयो, छदमस्थ पणा रो सभाव ।
मोह राग आयो तिण उपरें, तिणरो विकल न जाणेंन्याव ॥ ७ ॥
गोसाला नें वीर बचावीयों, तिणनों मूर्ख थापें घर्म ।
सूनें चित बकबो करें, ते भूला अग्यांनी भर्म ॥ ८ ॥
कहे भगवंत दीख्या लीयां पछें, न कीयो किंचित परमाद ते पाप ।
जाणतां नें अजाणतां, कदे दोष न सेव्यों जिण आप ॥ ९ ॥
इम कही भोला लोकां भणी, न्हांखे छें फंद मांय ।
तिणरो न्याय निरणो जथा तथ कहूं, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ १० ॥

ढाल

[पाण्ड वधसी आरे पाचमे]

गोसाला नें बचायों वीर सराग थी रे, तिण मांहे घर्म नही लिगार रे ।
ओ तो निश्चें होणहार टलें नहीं रे, तिणरो भोला नहीं जाणें मूल विचार रे ।
कुपातर नें बचायो वीर सराग थी रे, कुपातर नें बचायां घर्म किहां थकी रे* ॥ १ ॥
संकाः हुवें तो भगोती रों अर्थ देखनें रे, तिणमें म जाणों कोइ कूड रे ।
खोटी सरवा नें कर दो दूर रे ॥ कु०-२ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

भारीकर्मा जीवा ने समझ पडे नही रे, ते तो कुगुरा रे बदले बोले कूड रे ।
ताणा ताण मे जासी ताणीया रे, बेहती अगाध नदी रे पूर रे ॥ ३ ॥
गोसालो तो अघर्मी अवनीत थो रे, भारीकर्मा कुपातर जीव रे ।
बले दावानल छे जिण धर्म रो रे, दुष्टया मे दुष्टी घणो अतीव रे ॥ ४ ॥
भगवत ने भूठा पाडण पापीये रे, तिल नें उखणीयो पापी जाण रे ।
मिथ्यात पडवजीयो श्री भगवान थी रे, त्यारी मूल न राखी पापी काण रे ॥ ५ ॥
जगत तणा सगला चोरा थकी रे, गोसालो छे इधको चोर निसंकरे ।
बले कूड ने कपट तणो थो कोथलो रे, तिणरे करडो मिथ्यात तणों छें डंकरे ॥ ६ ॥
तिणने वीर बचायो बलतो जाण ने रे, लवद फोडवें सीतल लेस्या मूंक रे ।
राग आण्यों तिण पापी उपरे रे, छदमस्थ गया तिण कालें चूक रे ॥ ७ ॥
केइ भेषघारी भागल इसडी कहे रे, गोसाला नें बचाया हूवो धर्म रे ।
त्या धर्म जिणसर नों नही ओलख्यो रे, ते तो भूल गया अग्यानी भर्म रे ॥ ८ ॥
बले कहे छे भगवत तो घर छोड्या पछे रे, दोष न सेव्यो मूल लिगार रे ।
परमाद किंचत मात्र सेव्यों नही रे, बले आश्रव न सेव्यों किण ही वार रे ॥ ९ ॥
इम कहि कहि ने सचवादी हूवें रे, पिण एकंत वोले छे मूसावाय रे ।
त्या धर्म जिणसर नो नही ओलख्यो रे, फूटा ढोले ज्युं बोले विख्या वाय रे ॥ १० ॥
ते भूठ बोले छें सुघ बुघ बाहिरो रे, त्यांरी सरघा रीत्याने खबर न काय रे ।
त्या विकला री सरघा ने परगट करूं रे, ते भवीयण सांभलजो चित ल्याय रे ॥ ११ ॥
भगवत आहार कीयो छे जाण ने रे, तिणमे कहे छे परमाद नें आश्रव पाप रे ।
बले निद्रा लीया मे कहे पाप छे रे, ते निद्रा पिण लीवी भगवत आप रे ॥ १२ ॥
परमाद न सेव्यों कहे भगवान नें रे, बले कहिता जाबें पापी परमाद रे ।
न्याय निरणो विकला रे छे नही रे, यूंही करे कूडो विषवाद रे ॥ १३ ॥
मोह करम उदय सू सावद्य सेवीयो रे, छदमस्थ थका श्री भगवान रे ।
अजाणपणें ने विण उपीयोग छे रे, ते बुववंत सुणो सुरत दे कांन रे ॥ १४ ॥
दस सुपनां पिण भगवत देखीया रे, दस सुपनां रो पाप लागो छे आण रे ।
ते पिण दसू सुपना रो पाप जुओ जुओ रे, तिणरी सकामत करजों चतुर सुजाण रे ॥ १५ ॥
कोइ कहे भगवत तो घर छोड्या पछे रे, पाप रो अस न सेव्यों मूल रे ।
जो उवे सुपना देख्यां मे पाप ररूपसी रे, तो त्यांरे लेखें त्यांरी सरघा मे घूल रे ॥ १६ ॥
सात प्रकारे छदमस्थ जाणीये रे, कह्यो छे ठांणाअग सूतर माहि रे ।
हिंसा लागें छें प्रांणी जीव री रे, बले लागें मृषा नें अदत्त ताहि रे ॥ १७ ॥
शब्दादिक आस्वादें रागें करी रे, पूजा सतकार वांछें छे मन माय रे ।
कदे असणादिक पिण सावद्य भोगवे रे, वागरें जेसो करणी नावें ताय रे ॥ १८ ॥

ए सातोंइ सावद्य रा थांनक कह्या रे, छद्मस्थ सेवें छें किण ही वार रे ।
 त्यांरो पिण प्राच्छित जथायोग छें रे, जांण अजांण सेव्यां रो करे विचार रे ॥ १९ ॥
 ए सातोंइ बोल न सेवें केवली रे, छद्मस्थ पिण निरंतर सेवें नाहि रे ।
 सेवें तो मोह कर्म उदें हुआं रे, संका हुवें तो जोवों सूतर माहि रे ॥ २० ॥
 गोसाला नें वीर बचायो तिण दिनें रे, छद्मस्थ हुंता जिण दिन भगवान रे ।
 मोह राग आयों भगवंत नें तिण दिनें रे, निश्चें होणहार टालण नहीं आसांन रे ॥ २१ ॥
 छद्मस्थ थकां पिण श्री भगवांन नें रे, समें समें लागता कर्म सात रे ।
 मोह कर्म वशेष थकी उदें हुवो रे, कुपात्र नें बचाय लीघो साख्यात रे ॥ २२ ॥
 गोसालो दावानल श्री जिण धर्म नों रे, ते दुष्टां में दुष्टी घणो बतीव रे ।
 वले कोयलो कूड कपट रो तेहनें रे, बचायां रा फल सुणों भव जीव रे ॥ २३ ॥
 गोसाले तेजू लेस्या मेलनें रे, दोय साधां री कीघी घात रे ।
 उंचो अंवलों बोल्यो भगवांन नें रे, वीर सूं पडवजीयो मिथ्यात रे ॥ २४ ॥
 वले लेस्या मेली पापी वीर नें रे, त्यांरी पिण एकंत करवा घात रे ।
 तिण जांण्यो जमाउ सासण मांहरो रे, एहवो गोसालो दुष्ट कुपात रे ॥ २५ ॥
 तिल रो प्रश्न पूछ्यां भगवते कह्यो रे, सुगली माहें तिल बताया सात रे ।
 जब वीर नें भूटा घालण पापीयें रे, तिल उखण नें कीघी घात रे ॥ २६ ॥
 तेजू लेस्या सीखाइ गोसाला भणी रे, तिण लेस्या सूं कीघी साधां री घात रे ।
 वले लोही ठाणे कीघों भगवंत नें रे, इसडा कांम कीया पापी साख्यात रे ॥ २७ ॥
 गोसाला पापी नें वीर बचावीयो रे, तो बघीयो भरत में घणो मिथ्यात रे ।
 घणा जीवां नें पापी बोवीया रे, उंची सरघा हीया में घात रे ॥ २८ ॥
 कूड कपट करे नें पापीयें रे, भूटोइ सासण दीयो थाप रे ।
 अणहंतों तीथंकर वाज्यो लोक में रे, वीर नों सासण दीयो उथाप रे ॥ २९ ॥
 गोसाला नें वीर बचायो तठा पछे रे, घणा जीवां रें हुवों बिगाड रे ।
 ओ पापी घाडायत हुवो धर्म रो रे, इण गुण तो न कीघो मूल लिगार रे ॥ ३० ॥
 गोसाला पापीडो बचीयां पछें रे, तिण कीघा पापीडे अनेक अकाज रे ।
 तिण दुष्टी नें बचायां धर्म किहां थकी रे, विकलां नें मूल न आवें लाज रे ॥ ३१ ॥
 गोसाला नें बचायां धर्म कहे तके रे, गोसाला रा केडायत जांण रे ।
 त्यां धर्म न जांण्यो श्री जिणराज रो रे, यूं ही बूडें अग्यांनी कर कर तांण रे ॥ ३२ ॥
 जो धर्म होसी गोसाला नें बचावीयां रे, तो छ ही काय बचायां होसी धर्म रे ।
 जो उवे जीव बचायां धर्म गिणे नहीं रे, तो विकलां री सरघा रो निकल्यां भर्म रे ॥ ३३ ॥
 गोसाला नें वीर बचायो जिण विघे रे, श्रावक नें तिण विघ बचावें नाहि रे ।
 कहें छें तिण हीज विघ करे नहीं रे, तो घूर छें त्यांरी सरघा माहि रे ॥ ३४ ॥

पेट दुखे छे सो श्रावकां तणो रे, जूदा हुवे छे जीव ने काय रे ।
 साव पचाख्या छे तिण अवसरे रे, त्यारें हाथ फेरे तो साता थाय रे ॥ ३५ ॥
 लवदवारी तो साव पचाख्या देख ने रे, गृहस्थ बोल्या छे इम वाय रे ।
 हाथ फेरो त्यारा पेट उपरे रे, नही फेरो तो श्रावक जीवा जाय रे ॥ ३६ ॥
 जब कहे म्हाने तो हाथ न फेरणा रे, अँ मरो भावे दुखी घणा हुवो तांम रे ।
 मरणो जीवणो मूल न वाछे तेहनों रे, म्हारे गृहस्थ सूं काई काम रे ॥ ३७ ॥
 तो गोसाला दुष्टी नें वीर बचावीयो रे, तिण माहे क्हो छो निकेवल धर्म रे ।
 तो श्रावक मरतां नें नही बचावीयां रे, त्यांरी सरघा रो त्याहीज काढ्यो भर्म रे ॥ ३८ ॥
 श्रावक ने बचाया धर्म गिणे नही रे, गोसाला ने बचाया गिणे धर्म रे ।
 ते बवेक विकल छे सुघ बुव बाहिरा रे, उधी सरघा सू बांवे पाप कर्म रे ॥ ३९ ॥
 गोसाला पापी दुष्टी रे कारणे रे, लवद फोडी छें श्री जगनाथ रे ।
 तो सो श्रावक जीवा मरता देख ने रे, थे कांय न फेरो त्यारे हाथ रे ॥ ४० ॥
 धर्म कहे गोसाला ने बचावीया रे, तो पोतें कांइ छोडी धर्म री रीत रे ।
 सो श्रावक मरतां ने बचावे नही रे, त्या विकला री विकल करे परतीत रे ॥ ४१ ॥
 गोसाला दुष्टी ने वीर बचावीयो रे, तिण माहे धर्म कहे साख्यात रे ।
 सो श्रावक मरता ने नही बचावीयां रे, त्यां विकलां री जिगडी सरघा बात रे ॥ ४२ ॥
 श्रावक आखड ने पड मरतो हुवे रे, जिण ने पडता भेले राखे नाहि रे ।
 गोसाला ने बचाया मे कहे छे धर्म रे, ओ पिण अ धारो त्यारे माहि रे ॥ ४३ ॥
 ग्यान दरसन ने देस चारित श्रावक मभे रे, गोसालो तो एकत अधर्मी जाण रे ।
 तिणने बचायां धर्म किहा थकी रे, तिणरो न्याय न जाणे मूढ अयाण रे ॥ ४४ ॥
 गोसाला ने बचाया रो कहे धर्म छे रे, श्रावक नें बचाया कहे पाप रे ।
 एहवो अ धारो छे विकला तणे रे, उधी सरघा री कर राखी छे थाप रे ॥ ४५ ॥
 बारें वरस नें तेरे पख मभे रे, छदमस्य रह्या छे श्री भगवान रे ।
 तिणमे एक गोसाला नें बचावीयो रे, किणने न बचायां श्री विरघमान रे ॥ ४६ ॥
 गोसाला दुष्टी ने बचावीयां रे, जो धर्म कठेइ जाणे साम रे ।
 तो दोनूँइ साघ बचावत आपणा रे, बले रात दिन करता ओहीज काम रे ॥ ४७ ॥
 गोसाला दुष्टी ने बचावीयां रे, तिण माहे धर्म जाणें जिणराय रे ।
 दोय साघ मरता नही राख्या आपणा रे, ओ पिण किण विघ मिलसी न्याय रे ॥ ४८ ॥
 अकाले जगत ने मरतो देखीयो रे, पिण आडा न दीघा भगवत हाथ रे ।
 धर्म हुवें तो भगवत आघो नही काढता रे, निश्चेंइ तिरण तारण जगनाथ रे ॥ ४९ ॥
 अनत चोवीसी तो आगे हुइ रे, हिवडां तो रिषभादिक चोवीस रे ।
 त्या ताख्या भव जीवा नें समझाय ने रे, पिण मरता न राख्या श्री जगदीस रे ॥ ५० ॥

एक गोसालो वीर बचावीयो रे, ते तो निश्चेंड होणहार रे।
 मोह राग आयो भगवांन नें रे, तिणरो न्याय न जाणें मूढ गिंवार रे ॥ ५१ ॥
 संवत अठारे तेपने समे रे, आसाड विद इग्यारस मंगलवार रे।
 गोसाला कुपातर नें ओलखावीयो रे, जोड कीधी छें माडा गाव मम्मर रे ॥ ५२ ॥

ढाल : ११

दुहा

दोय उपगार श्री जिण भाषीया, त्यारो बुधवंत करजो विचार ।
तिणमे एक उपगार छें मोष रो, बीजो रुसार नो उपगार ॥ १ ॥
उपगार करे कोड मोष रो, तिणरी जिण आगना दे आप ।
उपगार करे ससार नो, तिहा आप रहे चुपचाप ॥ २ ॥
उपगार करे कोइ मोष रो, तिणने निश्चेंइ धर्म साख्यात ।
उपगार करे ससार नों, तिणमे धर्म नही तिलमात ॥ ३ ॥
दोनू उपगार छे जुवा जुवा, ते कठेइ न खाजे मेल ।
पिण मिश्र पाषड्या परूप नें, कर दीयो मेल सभेल ॥ ४ ॥
कुण कुण उपगार छें मोष रो, कुण कुण ससार ना उपगार ।
त्यांरा भाव भेद परगट करू, ते सुणजो विसतार ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अणुकम्पा जिण आगना में]

ग्यान दरसण चारित ने वले तप, या च्यारा रो कोइ करे उपगार ।
तिणने निश्चेइ निरजरा धर्म कह्यो जिण, वले श्री जिण आगना छे श्रीकार ।
ओ तो उपगार निश्चेइ मुगत रो ॥ १ ॥
ग्यान दरसण चारित ने तप, या च्यारा विनां कोइ करे उपगार ।
तिणने निश्चेइ धर्म नही जिण भाष्यो, वले जिण आगना पिण नही छे लिगार ।
ओ तो उपगार ससार तणो छे ॥ २ ॥
ससार तणो उपगार करें छे, तिणरें निश्चेइ ससार वधतो जांणो ।
मोष तणो उपगार करे छे, तिणरे निश्चेइ नेडी दीसे निरवाणो ॥ ३ ॥
कोइ दलदरी जीव ने धनवत कर दे, नव जात रों परिग्रहो देइ भर पुर ।
वले विवध प्रकारे साता उपजावे, उणरो जावक दलदर कर दे दूर ॥ ओ० ४ ॥
छ कय रा सस्त्र जीव इविरती, त्यारी साता पूछी ने साता उपजावे ।
त्यारी करे वीयावच विवध प्रकारे, तिणने तीथकर देव तों नही सरावें ॥ ५ ॥
गृहस्थ री साता पूछ्या ने वीयावच कीधा, तिण सू साध तो होय जाअे अणाचारी ।
तो ह्यारी साता पूछ्या ने वीयावच कीया मे, जिण आगना पिण नही छे लिगारी ॥ ६ ॥

*यह आकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

साता पूछ्यां तो साध नें पाप लागे छें,
 पिण मूढ मिथ्याती ववेक रा विकल,
 कोइ मरता जीव नें जीवां बचावें,
 वले अनेक उपाय करे नें तिणनें,
 कोइ मरता जीव नें सूंस करावें,
 ग्यांन ध्यांन माहें परिणाम चढावें,
 श्रावक नों खाणों पीणों छें सर्व इविरत में,
 वले नव ही जात रो परिग्रहो इविरत में,
 श्रावक नों खाणो पीणों छे सर्व इविरत में,
 वले नव ही जात रों परिग्रहो इविरत में,
 कोइ लाय सूं बलतां नें काढ बचायों,
 तलाब माहें डूबा नें वारें काढें,
 जनम मरण री लाय थी वारें काढें,
 नरकादिक नीची गति माहें पढतां नें राखें,
 किणरें लाय लागी घर बले छें,
 कोइ लाय बुभ्राय त्यानें वारें काढें,
 किणरें तिसणा लाय लागी घर भितर,
 उपदेस देइ तिणरी लाय बुभावें,
 कोइ टाबर पाले नें मोटा करे छे,
 वले मोटें मंडाण करे परणावें,
 कोइ वेटा नें रुडी रीत समभाए,
 काम भोग अस्त्रीयादिक खावों नें पीवो,
 मात पिता री सेवा करे दिन रात,
 वले कावड कांधे लीयां फिरें त्यांरी,
 कोइ मात पिता ने रुडी रीतें,
 ग्यांन दरसण चारित त्यानें पमावें,
 जिणरो खाणों पीणों गेहणो इविरत में,
 वले मांगें जिंको तिणनें धन धान आपें,
 जिणरों खाणों पीणों गेहणों इविरत में छें,
 तिणरें ग्यांनादिक गुण घट मे घालें,
 किणरा वालां काढें किणरा कीडा काढें,
 कानसिलाया बुगादिक काढें,

तो साता कीघां में धर्म किहां थी होवें ।
 ते श्री जिण आगनां साह्यों न जोवें ॥ ७ ॥
 भाडा भगटा करे ओषध देइ तांम ।
 मरतों राख्यों साजो कीयो तमांम ॥ ८ ॥
 च्याहूं सरणा देइ नें करावें संथारों ।
 न्यातीलां सूं देवें मोह उत्तारो ॥ ९ ॥
 ते सेवें तो सावध जोग व्यापारो ।
 तिणनें सेवारें छे कोइ वाखंवारो ॥ १० ॥
 तिणरों त्याग करावें चढाय बैरागों ।
 ते छोडें छोडवे त्यारे सिर भागों ॥ ११ ॥
 वले कूअें पढतां नें भाल बचायों ।
 वले उंचा थी पढतां ने भाले लीयो ताह्यो ॥ १२ ॥
 भव कूआ मांहि थी काढें वारें ।
 संसार समुद्र थी वारें काढ उघारें ॥ १३ ॥
 तिणमें नांन्हा मोटा जीव बलें लाय मांहि ।
 घणां रें साता कीघी लाय बुभाई ॥ १४ ॥
 ग्यांनादिक गुण वलें तिण मांय ।
 रुंम रुंम में साता कीघी वपराय ॥ १५ ॥
 आछी आछी वस्त तिणनें खदाय ।
 वले धन माल देवें कमाय कमाय ॥ १६ ॥
 धन माल सगलोइ देवें छोडाय ।
 मली मांत सूं त्याग करावें ताय ॥ १७ ॥
 वले मन मान्यां भोजन त्यानें खवावें ।
 वले बेहूं टकां रो सिनांन करावें ॥ १८ ॥
 भिन भिन कर नें धर्म सुणावें ।
 काम भोग शब्दादिक सर्व छोडवे ॥ १९ ॥
 तिणनें मन माने ज्यू खवावें पीवावे ।
 वले चिबध पणे तिणनें साता उपजावें ॥ २० ॥
 तिणनें उपदेस दइ नें परहो छोडवे ।
 तिणरी तिसणा लाय नें परी मिटावें ॥ २१ ॥
 वले लटां जूआदिक काढें छें ताहि ।
 घणी साता उपजावें शरीर रें मांहि ॥ २२ ॥

किणरे बाला कीडा नें लटां जूंआदिक,
 तिणने वारें काढण रा त्याग करावें,
 गृहस्थ भूलो उज्जड वन मे,
 तिणने मारग वताय ने घरे पोहचावें,
 संसार रूपणी अटवी मे भूला ने,
 सावद्य भार ने अलगो मेलाए,
 नाग नागणी हुता वलता लकडा मे,
 अगन मे वलता ने राख्या जीवता,
 पारसनाथ जी घर छोडे काउसग कीघों जब,
 जब पदमावती हेठे कीयो सिंघासण,
 नाग नागणी ने नोकार सुणाए,
 ते सुभ परिणामां सूं मरने हूआ,
 सूग्रीव सूं उपगार कीयो राम लछमण,
 सीता री खवर आणे रावण ने मरायो,
 कोइ दुष्टी जीव जूं ने मारतो थो,
 ते जूं रो जीव मिनप हुवो जब,
 घणी रा मूंडा आगे सेवग मरे ने,
 जब घणी तूठो थको रिजक रोटी दे,
 दोय इदर आयां कोणक री भीडी,
 एक कोड असी लाख मिनपां ने मारें,
 एकीका जीव ने अनती वार वचाया,
 आमां साह्या उपगार संसार ना कीघा,
 हाती नेहतादिक देवे आमा साह्या,
 अथवा कोइक आघाड पिण देवे,
 संसार नों उपगार करे जिण सेती,
 ए तो उपगार एकीका जीवा सूं,
 संसार नां उपगार सब ही फीका,
 संसार नां उपगार फीका छें,
 संसार तणा उपगार कीया में,
 ते श्री जिण मारग ओलखीयां विण,
 जितला उपगार संसार तणा छें,
 साष तो त्यानें कदे न सरावे,

शरीर में उपनां जीव अनेक ।
 कहे सरिर वारे काढणों नही छे एक ॥ २३ ॥
 अटवी ने वले उजाड जावे ।
 वले थाको हुवें तो कांघे वेसावे ॥ २४ ॥
 ग्यानादिक सुघ मारग बतावें ।
 सुखे सुखे सिवपुर मे पोंहचावे ॥ २५ ॥
 त्याने पारसनाथ जी काढ्या कहे छे वार ।
 पाणी ने अगनादिक रा जीवा ने मार ॥ २६ ॥
 कमठ उपसर्ग कर वरषायो पाणी ।
 घरणिंद्र छत्र कीयो सिर आंणी ॥ २७ ॥
 च्याहं सरणा ने सूस दराया जांणी ।
 घरणिंद्र ने पदमावती रांणी ॥ २८ ॥
 जब सुग्रीव हुवो त्यारो सखाइ ।
 तिण पाछों उपगार कीयो भीड आइ ॥ २९ ॥
 तिणने वरजे ने जूं ने वचाइ ।
 इणरो कजीयो इण पिण दीयो मिटाइ ॥ ३० ॥
 घणी ने जीवतो कुसले खेमे काडे ।
 इणरो इहलोक रो काम सिराडे चाडे ॥ ३१ ॥
 कोणक रे साता कर दीधी तांम ।
 कोणक रो सुघाख्यो काम ॥ ३२ ॥
 त्या पिण इणने अनती वार वचायो ।
 त्यासू तो जीव री गरज सरी नही कायो ॥ ३३ ॥
 लाडू खोपरादिक देवे आमां साह्यां ।
 इत्यादिक छे अनेक ससार नां कामा ॥ ३४ ॥
 कदा ते पिण पाछो करें उपगार ।
 कीघा छें अनंत अनती वार ।
 आ सरघा श्री जिणवर भापी ॥ ३५ ॥
 ते तो थोडा मांहे विलें होय जावें ।
 त्यांसूं भुगति तणा सुख कोयन पावे ॥ आ० ३६ ॥
 केइ मूढ मिथ्याती घर्म वतावें ।
 मन मानें ज्यूं गालां रा गोला चलावें ॥ ३७ ॥
 जे जे करे ते मोह वस जांणों ।
 संसारी जीव तिणरा करसी वखाणों ॥ ३८ ॥

संसार तणा उपगार कीयां में, जिण धर्म रो अंस नही छे लिगार ।
 संसार तणा उपगार कीयां में, धर्म कहे ते तो मूढ गिबार ॥ ३६ ॥
 किण ही जीव नें खप कर नें वचायो, किण ही जीव उपजाय ने कीयो मोटो ।
 जो धर्म होसी तो दोयां नें धर्म होसी, जो तोटो होसी तो दोयां नें तोटो ॥ ४० ॥
 वचावण वाला विचें तो उपजावण वालों, सांप्रत दीसैं उपगारी मोटो ।
 यांरो निरणो कीयां विण धर्म कहे छें, त्यांरो तो मत निकेवल्ल खोटों ॥ ४१ ॥
 वचावण वालों ने उपजावण वालो, अं तो दोनूं संसार तणा उपगारी ।
 एहवा उपगार करे थाभां साहां, तिणमें केवली रो धर्म नही छें लिगारी ॥ ४२ ॥
 जीव नें जीवां वचावें तिण सूं, बंध जावें तिणरों राग सनेह ।
 जो पर भव में ऊ आय मिलें तो, देखत पाण जागे तिण सूं नेह ॥ ४३ ॥
 जीव नें जीव मारें छें तिण सूं, बंध जाअें तिण सूं वेप क्खेख ।
 ते पर भव में उ आय मिले तो, देखत पाण जागें तिण सूं वेप ॥ ४४ ॥
 मित्री सूं मित्रीपणों चलीयों जावें, वेरी सूं वेरीपणों चलीयों जावें ।
 अं तो राग वेप कर्मां रा चाला, ते श्री जिण धर्म माहे नही आवें ॥ ४५ ॥
 कोइ अणुकंया आंणी घर मंडावें, कोइ मंडता घर नें सेवें मंगाय ।
 ओ प्रतख राग नें वेप उघाडो, ते आगें लगा दोनूं चलीया जाय ॥ ४६ ॥
 कोइ तो पेंला रा काम भोग वघारें, कोइ काम भोग रो वे अतराय ।
 ओ पिण राग नें वेप उघाडों, ते आगें लगा दोनूं चलीया जाय ॥ ४७ ॥
 कोइ पेंला रों घन गमीयो वतावें, बले अस्त्रीयादिक पिण गमीया वतावें ।
 कोइ लाम नें तोटो लोकां नें वतावें, तिण सूं आगें लगो राग चलीयो जावें ॥ ४८ ॥
 कोइ बेंदगरों करे करे ने लोकां रों, राग गमाय ने जीवां वचावें ।
 ओं उपगार लोकां सूं कीवां, आगे लगो राग चलीयों जावें ॥ ४९ ॥
 कहि कहि नें कितरोंएक कहूं, र.सार तणा उपगार अनेक ।
 ग्यांन दरसण चारित नें तप विनां, मोष तणों उपगार नहीं छें एक ॥ ५० ॥
 संवर ना भेद वीस कह्या जिण, निरजरा तणा भेद कह्या छे बार ।
 अं बतीसूइ बोल उपगार मुगत रा, ओर मोष रों उपगार नही छे लिगार ॥ ५१ ॥
 संसार नें मोष तणा उपगार, समदिष्टी हुवे ते न्यारा न्यारा जाणें ।
 पिण मिथ्याती ने खबर पडे नहीं सूची, तिण सूं मोह कर्म बस उओ ताणें ॥ ५२ ॥
 संसार नें मोष रो मारग ओल्लखावण, जोड कीधी छें खेरवा सहर मभार ।
 संवत अठारें नें वरस चोपनें, आसोज सुदि वीज नें सुकरवार ॥ ५३ ॥

ढलल : १२

दुहा

चोवीसमां जिणवर हुआ, महावीर विख्यात ।
 त्यांरी पहली वांणी निरफल गई, तै हुवो अछेरो इचरज बात ॥ १ ॥
 जंभीक गाम ने बाहिरे, सांम नाम करषणी रे खेत ।
 तिहा साल नांमा विरख थों, गहर गभीर पांन समेत ॥ २ ॥
 तिण साल विरख हेठें आवीया, भगवत श्री विरघमान ।
 वेसाख सुदि दसम दिनें, उपनो केवल ग्यान ॥ ३ ॥
 केवल महोछव करवा भणी, तिहा देवता आया अनेक ।
 पिण मिनषा ने ठीक पडी नही, तिणसूं मिनष न आयो एक ॥ ४ ॥
 देवता आगे वाणी वागरी, थित साचववा काम ।
 कोइ साध श्रावक हुवो नही, तिणसूं वाणी निरफल गईआम ॥ ५ ॥
 जो धन थकी धर्म नीपजे, तो देवता पिण धर्म करत ।
 वीर वाणी सफली करे, मन माहें पिण हरष धरंत ॥ ६ ॥
 वरत पचखाण न हुवे देवता थकी, धन सू पिण धर्म न थाय ।
 तिण सू वीर वाणी निरफल गई, तिणरो न्याय सुणो चित्त ल्याय ॥ ७ ॥

ढलल

[जीव मोह अशुकम्या न आशिषे]

जिण धर्म हुवे सोनइया दीयां, तो देवता देता हाथो हाथ जी ।
 पुरत मनोरथ मन तणा, वीर वाणी निरफल न गमात जी ।
 भव करजों परख जिण धर्म री* ॥ १ ॥
 रतन हीरा नें माणक पना, मन माने ज्यू देवता देत जी ।
 वीर री वाणी सफल करे, देवता पिण लाहो लेत जी ॥ भ० २ ॥
 धन दीयां हुवे धर्म जिण भाखीयो, देवता दांन दे दग चाल जी ।
 यूं कीया वीर वाणी सफल हुवे, तो अछेरो नही हुवे तिण काल जी ॥ ३ ॥
 धन धांनादिक लोकां ने दीयां, ए तो निश्चेड सावद्य दांन जी ।
 तिणमें धर्म नही जिण राज रों, ते भाष्यों छे श्री भगवांन जी ॥ ४ ॥
 जो जीव बचायां जिण धर्म हुवे, ओं तो देवता रे आसांन जी ।
 अनंता जीवां ने बचाय ने वांणी सफल करता देवां न जी ॥ ५ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

असंख्याता समदिष्टि देवता, एकीको बचावत अनंत जी ।
 जो धर्म हुवें तो आषो न काढता, वीर नीं वांणी सफल करंत जी ॥ ६ ॥
 साष श्रावक रों धर्म छें विरत में, जीव हणवा रा करें पचखाण जी ।
 ए धर्म देवता थी हुवें नहीं, तिणसूं निरफल गई वीर वाण जी ॥ ७ ॥
 जीवां नें जीवां बचावीयां हुवें, संसार तणों उपगार जी ।
 यूं तो सफल न हुवें वांणी वीर नीं, धर्म रो नहीं अंस लिंगार जी ॥ ८ ॥
 असंजती नें जीवां बचावीयां, वले असंजती नें दीयां दांन जी ।
 इम कीयां वीर वांणी सफल हुवें, ओ तो देवतां रे पिण आसान जी ॥ ९ ॥
 कुपातर जीवां नें बचावीयां, कुपातर नें दीषां दांन जी ।
 ओ सावद्य किरतव संसार नां, माष्यो श्री भगवानं जी ॥ १० ॥
 उत्तराधेन अठावीसमें कह्यो, मोष नां मारग भाष्या च्यार जी ।
 बाकी सर्व कांमा संसार नां, सावद्य जोग व्यापार जी ॥ ११ ॥
 जो धर्म हुवें सावद्य दांन में, असंजती नें बचायां हुवें धर्म जी ।
 तो निश्चेंइ समदिष्टी देवता, ओ धर्म करे काटें कर्म जी ॥ १२ ॥
 कर्म कटें इण सावद्य धर्म सूं, एहवा सावद्य कांमा अनेक जी ।
 ते तो थोडा सा परगट करूं, ते सुणजों आण ववेक जी ॥ १३ ॥
 मछ गलागल लग रही, सारा दीप समुद्रां मांय जी ।
 मोटो मछ छोटा नें भखें, उणसूं मोटें उणनेंइ खाय जी ॥ १४ ॥
 जो उद्यम करे एक देवता, तो एक दिन में बचावें अनेक जी ।
 धर्म हुवें तो आषों काटें नहीं, ओ तो छें देवता में ववेक जी ॥ १५ ॥
 जीव बचायां अभय दांन हुवें, तो अभय दांन घणां नें देत जी ।
 धर्म जाणें जीव बचावीयां, देव भव में पिण लाहो लेत जी ॥ १६ ॥
 मछला बचावें एक दिन ममे, लाखां कोडाइ गिणिया न जाय जी ।
 इणमें धर्म हुवें जिण भाषीयो, तो देवता देवें मछला छुडाय जी ॥ १७ ॥
 मच्छ आगा सूं मछ छोडावीयां, उपरे परती जाणे अंतराय जी ।
 तो अचित्त मछ उपजाय नें, उणनें पिण देवे खवाय जी ॥ १८ ॥
 जो धर्म हुवें मछला नें बचावीयां, मछला नें पोष्यां हुवें धर्म जी ।
 एहवा धर्म तो हुवें देवता थकी, यूं कर कर काटें कर्म जी ॥ १९ ॥
 जो धर्म हुवें तो देवता, असंख्याता मछला नें बचाय जी ।
 असंख्याता पोषें माछला, आलस पिण न करें ताय जी ॥ २० ॥
 पृथवी पांणी तेउ वाउ ममे, जीव कहाा छें असंख्यात जी ।
 वनसपती में अनंत छें, यानें पिण देव बचात जी ॥ २१ ॥

तीन विकलेद्री मिनष तिर्यंच ने, वचाया धर्म जाणे जो देव जी ।
तो त्यानेइ वचावण री खप करे, समदिष्टी देवता स्वमेव जी ॥ २२ ॥
नाहर चित्तादिक दुष्ट जीव छें, करें गायान्दिक री घात जी ।
गायान्दिक ने तो खावा दे नही, त्यानें पिण देव अचित्त खवात जी ॥ २३ ॥
जीव जीव तणो भक्षण करें, त्यानें बचावें अचित्त खवाय जी ।
जो यूं कीयां मे धर्म नीपजे, तो देवता करे ओहीज उपाय जी ॥ २४ ॥
अढाइ दीप मिनषां तणे, घर घर आरंभ करे जाण जी ।
ते तो कतल करे जीवा तणी, छ ही काय तणो घमसांण जी ॥ २५ ॥
नित एकीका घर मे जूजूओं, आरंभ हुवे दिन रात जी ।
छेदन भेदन करे निलोतरी, करें अनंत जीवा री घात जी ॥ २६ ॥
दलणों पीसणो नें पोवणो, घर घर चूहलो घुकावे तास जी ।
आवट कूटो करे छ काय नो, करे अनत जीवां रो विणास जी ॥ २७ ॥
एकीका समदिष्टी देवता, त्यांरी शक्त घणी छे अतत जी ।
अढी दीप रो आरभ मेट ने, वचावें जीव अनत जी ॥ २८ ॥
अढी दीप तणा मिनषा भणी, भूखा तिरषा न राखे कोय जी ।
अचित्त अन पांणी नीपजाय ने, सगला ने करे तिरपत सोय जी ॥ २९ ॥
विवध प्रकार ना भोजन करें, विवध प्रकार ना पकवांन जी ।
खादिम सादिम विवध प्रकार ना, विवध प्रकारे सीतल पांन जी ॥ ३० ॥
साग व्यजण विवध प्रकार ना, फल नीलोती विवध प्रकार जी ।
मनसा भोजन सगला मिनषा भणी, करावें देवता वार वार जी ॥ ३१ ॥
ठाम ठाम अचित्त पांणी तणा, कूड भर भर राखे ताम जी ।
वले भोजन विवध प्रकार ना, त्यांरा ढिगला करे ठाम ठाम जी ॥ ३२ ॥
च्यारुइ आहार अचित्त नीपाय नें, दीघा हुवें धर्म ने पुन तांम जी ।
वले धर्म हुवे जीव वचावीयां, तो देवता करें ओहीज कांम जी ॥ ३३ ॥
देवता खांणो देवें मिनषा भणी, तो खेती रो आरभ टल जाय जी ।
वले गेंहणा कपडा देवे देवता, तो घणा जीव मरे नही ताय जी ॥ ३४ ॥
घर हाट हवेली मेहलायतां, इत्यादिक कमठाणा ताय जी ।
अे पिण निपजाय देवे देवता, तो अनता जीव मरता रहि जाय जी ॥ ३५ ॥
ते छावणा लीपणा ना पडे, ते तो सुदर ने सोभाय मांन जी ।
ते पिण दिसे घणा रलीयामणा, देवता नें करता आसान जी ॥ ३६ ॥
एहवी करणी कीया धर्म नीपजे, तो देवता आयो नही काढंत जी ।
आ करणी करे कर्म काट ने, काम सिराडें देता चाढंत जी ॥ ३७ ॥

दांन दीयां नें जीव बचावीयां, जो कर्म तणों हुवें सोख जी ।
 तो दांन दे जीव वचाय नें, देवता पिण जावें मोप जी ॥ ३८ ॥
 अनेरा नें दीयां पुन नीपजे, देवता रे हुवें पुन रा थाट जी ।
 वले धर्म हुवें जीव बचावीयां, तो देव मोष जावें कर्म काट जी ॥ ३९ ॥
 असंजती जीवां रो जीवणो, ते सावद्य जीतव साख्यात जी ।
 तिणनें देवे ते सावद्य दांन छें, तिणमें धर्म नही असमात जी ॥ ४० ॥
 धर्म हुवें तो सगला मिनषां तणे, रतनां जड्या कर दे मेंहल जी ।
 ते पिण थोडा में नीपजाय दे, देवता नें करता सेंहल जी ॥ ४१ ॥
 खाणो पीणों गेंहणों कपडादिक, गृहस्थ तणा सारा काम भोग जी ।
 त्यांरी करें वधोतर तेहनें, बंधें पाप कर्म नो संजोग जी ॥ ४२ ॥
 काम नें भोग सारा गृहस्थ नां, दुख नें दुख री छे खान जी ।
 त्यांनें किपाक फल री ओपमां, उतरावेन में कहां भगवान जी ॥ ४३ ॥
 त्यांनें भोगवावें धर्म जाण नें, तिणरे वंधे छें पाप कर्म जी ।
 तिणमें समदिष्टी देवता, असमात न जाणें धर्म जी ॥ ४४ ॥
 केइ अग्यानी इम कहे, श्रावक नें पोष्यां छें धर्म जी ।
 लाडू खवाए दया पलावीयां, तिणरा कट जाए पाप कर्म जी ॥ ४५ ॥
 लाडूआ साटें उपवास बेला करे, तिणरा जीतव नें छे धिकार जी ।
 तिणनें पोषे छें लाडू मोल लें, तिणमें धर्म नही छें लिंगार जी ॥ ४६ ॥
 लाडूआ साटें पोषा करें, तिणमें जिण भाष्यो नही धर्म जी ।
 ते तो इह लोक रे अरयें करें, तिणरो मूरख न जाणें धर्म जी ॥ ४७ ॥
 धर्म हुवें तो समदिष्टी देवता, अचित्त लाडूआदिक नीपजाय जी ।
 वले पांणी पिण अचित्त नीपजाय नें, श्रावकां नें जिमावें ताहि जी ॥ ४८ ॥
 जाव जीव सगला श्रावकां भणी, लाडूआदिक अचित्त खवाय जी ।
 अदी दीप तणा श्रावकां भणी, दया पलावे पोषा कराय जी ॥ ४९ ॥
 त्याने आरम्भ करवा दें नही, त्यांनें कल्पे ते देवता देत जी ।
 धर्म हुवें तो आघों नही काढता, ओ पिण देवता लाहो लेत जी ॥ ५० ॥
 श्रावकां नें वस्त दें चावती, उणायत राखें नही कांय जी ।
 धर्म हुवे तो आघों काढें नही, त्यांरें कुमीय न दीसैं कांय जी ॥ ५१ ॥
 जो धर्म हुवें श्रावक नें पोषीयां, तो देवता पिण करें ओ धर्म जी ।
 असंख्याता श्रावकां नें पोष नें, काटता निज पाप कर्म जी ॥ ५२ ॥
 असंख्याता दीप समुद्र में, असंख्याता श्रावक छें ताम जी ।
 त्यांनें पोषे समदिष्टी देवता, जो जाणे धर्म नों काम जी ॥ ५३ ॥

श्रावक रो खांगों पीणों सरवथा, इविरत मे कहा छें आंम जी ।
 तिण सूं समदिधी देवता, एहवो किम करसी कांम जी ॥ ५४ ॥
 सकेंद्र ने इसाण इंद्र छें, तिरछा लोक तणा सिरदार जी ।
 हाल हुकम छे सगलां उपरें, असंख्याता दीप समुद्र मफार जी ॥ ५५ ॥
 मछ गलागल लग रही, सारा दीप समुद्रां मांय जी ।
 जो धर्म हुवें जीव बचावीयां, तो इंद्र थोडा मे देवें मिटाय जी ॥ ५६ ॥
 भगवंत कहा हुवें इंद्र ने, जीव बचायां धर्म होय जी ।
 तो दोनू इंद्र जीव बचावता, आलस नही करता कोय जी ॥ ५७ ॥
 मछ आगा सूं मछ छोडाय नें, मछां ने देता जीवा बचाय जी ।
 त्यानें पिण भूला नहीं राखता, अचित्त मछ कर देता खवाय जी ॥ ५८ ॥
 यूं कीयां जिण धर्म नीपजे, तो भगवंत सीखावत आप जी ।
 वले आगना देता तेहने, वले चोडे करता आहीज थाप जी ॥ ५९ ॥
 जीव ने जीवा बचावीया, ओ तो संसार नों उपगार जी ।
 तठें जिण आगना जावक नही, धर्म पिण नहीं छें लिगार जी ॥ ६० ॥
 छ काय ना सस्त्र बचावीयां, छ काय रो वेरी होय जी ।
 त्यारो जीतब पिण सावद्य कहाँ, त्याने बचायां धर्म न होय जी ॥ ६१ ॥
 असजती रा जीवणां मभे, धर्म नही उंसमात जी ।
 वले दान देवें छे तेहनें, ते पिण सावद्य साख्यात जी ॥ ६२ ॥
 दान देवों ने जीव बचायवों, यो तो देवता नें आसांन जी ।
 यूं कीयां धर्म हुवें तो देवता, जाबें पांचमी गति परवांन जी ॥ ६३ ॥
 जीव बचावगो ने सावद्य दान ने, ओलखायो पुर सहर मफार जी ।
 सवत अठारें वरस सातवनें, काति विद चोदस नें सुकरवार जी ॥ ६४ ॥



रत्न : ३१

विरत इविरत री चौपई

ढाल : १

[चतुर विचार करी ने देखो]

साध नें श्रावक रतनां री माला, एक मोटी दूजी नांनी रे ।
गुण गुंध्या च्याळ तीरथ नां, इविरत रह गइ कानी रे ।
चतुर विचार करी नें देखो* ॥ १ ॥

समणोवासग पडिमा आदर नें, आपणी न्याति मे लीघो रे ।
तिणनें च्याळं आहार वेंहराए, परित संसार न कीघो रे ॥ च० २ ॥

ए तो गोचरी आपणे छांदें, जोवो सिधंत संभाली रे ।
दातार ने लेवाल बेहूं में, जिण आग्या किण पाली रे ॥ ३ ॥

श्रावक नो खाणो पीणो नें गेहणो, इविरत माहें धाल्यो रे ।
उवाइ सुयगढा अंग माहे, पाठ उवाडो चाल्यो रे ॥ ४ ॥

सेवायां इविरत कर्मज लागें, ए तो सरघा सुंधी रे ।
कर्म तणें वस धर्म परुणें, अकल तिणां री उंधी रे ॥ ५ ॥

करण जोग विगटावें अग्यानी, लाग रह्या मत भूठे रे ।
न्याय करे समझावें तिण सूं, क्रोध करे लडवा उठे रे ॥ ६ ॥

खायां पाप खवायां धर्म, ए अन्य तीर्थी री वायो रे ।
विरत इविरत री खबर न काई, भोलां ने दे भरमायो रे ॥ ७ ॥

कहे ममता उतरीया धन सुं, दे उपजावे साता रे ।
इसडो धर्म वतावें लोका में, जके मोह मिथ्यात में राता रे ॥ ८ ॥

द्रव्ये साता नें भावे साता, मूरख भेद न जाणें रे ।
सावच्च साता जिण धर्म बारे, ग्यानी विण कुण पिछाणें रे ॥ ९ ॥

कहें श्रावक रतनां रो भाजन, तिण पोष्यां नही तोटो रे ।
च्याळं आहार वेंहराय नें हर्षे, तिण ने लाभज मोटो रे ।
कुगुर तणें उपदेस म भूलो ॥ १० ॥

ए तो सरघा अनारज केरी, लोक रीभावण लाग़ा रे ।
जे कोइ साध कहे तो उणरा, पाचूंइ महाव्रत भागा रे ॥ ११ ॥

रतनां रो भाजन व्रतां करनें, गुण आदरीया हूवो रे ।
खावो पीवो लेवो नें देवो, ए तो मारग जूवो रे ॥ १२ ॥

श्रमण निग्रंथ नें दांन रा दाता, बारमा व्रत मे आप्या रे ।
परित संसार कीघो सुध दें, ज्यांनं श्री मुख वीर वखाप्या रे ॥ १३ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

सामायक संवर पोषा में, साधां न हर्ष वेहरावें रे ।
सो श्रावक तेल रे पारणें, त्यानि क्यूं न जीमावें रे ॥ १४ ॥
आ करणी जिण आग्या बारें, व्रतां माहे न आवें रे ।
सावद्य जोग रा त्याग कीया तिण, श्रावक केम जीमावें रे ॥ १५ ॥
श्रावक नां च्यार विसामा तिण में, छोट्यो ते माठो बांणी रे ।
सावद्य भार नें अलगो मेल्यो, जिण आग्या आगेवांणी रे ॥ १६ ॥
वार वार दांन ने प्रससे, भेद न जाणें मिथ्याती रे ।
सुयगडा अंग अघेन इग्यारमें, कह्यो छकाय रो घाती रे ॥ १७ ॥
दांनसाला मांडी प्रदेसी, मोष रो हेत न जांणो रे ।
च्याहं भाग राज रा कीवा, सावां नही वखांण्यो रे ॥ १८ ॥
तीन भागां में पाप कहो थें, एकण री कांय ताणी रे ।
केसी -कुमार तो मुनज साजी, च्याहं बराबर रा जाणी रे ॥ १९ ॥
आणंद श्रावक व्रत आदर नें, एहवो अभिग्रहो लोवो रे ।
अन्य तीरथी नें दान न देवूं, श्री जिण आगल कीवो रे ॥ २० ॥
छ छंडी रो आगारज राख्यो, आपणी जाण कचाइ रे ।
सामायक संवर पोषा में, ते पिण दे छिट्काइ रे ॥ २१ ॥
एक तो त्याग करे नें बेठों, एक दांनसाला मंडावें रे ।
भगवंत री आगना किण पाली, साधु किण ने सरावें रे ॥ २२ ॥
असंजती दांन दीयां में, धर्म नें पुन कांय थापो रे ।
वीर कह्यो भगोती माहें, निरजरा नही एकंत पापो रे ॥ २३ ॥
जिणनें अत दीयां नीपजें पुन, नमसकार इम जाणी रे ।
उलटा पड पड कर्म म बांधो, कर कर तांणा तांणी रे ॥ २४ ॥
निरणो न कीषो नव बोलां रो, तिणरें भोलभ मोटी रे ।
नव ही बोल सरीषा न थापें, तिणरी सरवा खोटी रे ॥ २५ ॥
जितरा द्रव्य सुगातर वेंहरें, तेहीज द्रव्य बतया रे ।
गायां भेंस्यां धन धांन धरती, त्यानें क्यूं न जताया रे ॥ २६ ॥
करता पाप देखी म्हें वरज्यां, धर्म करावां माडाणी रे ।
मिश्र ठिकाणें मुनज सामां, ए कुंदसण्या नी बांणी रे ॥ २७ ॥
साध श्रावक नों एकज मारग, दोय धर्म बतया रे ।
ते पिण दोनुं आग्या माहें, मिश्र अणहूंतो ल्याया रे ॥ २८ ॥
मिश्र पष नें मिश्र भाषा, मिश्र गुणजंगो चाल्यो रे ।
इणरो ले ले नांम अग्यांनी, भूठो भगवो भाल्यो रे ॥ २९ ॥

यां तीनां रो तार काढ्यो तिण, जिण सीखावण मानी रे ।
 मिश्र धर्म ने किण विघ सरघे, भगवत रा सतानी रे ॥ ३० ॥
 हाथी घोडा रथ बेसी ने, बीर वांदण ने चाल्या रे ।
 सिनान कीया गेहणा फूल पहर्या, श्री मुख सू नही पाल्या रे ॥ ३१ ॥
 पाप तणा फल कडवा बताया, ए वायक जगनाथो रे ।
 सुण सुण ने वेंराग हूता ज्या, सूस लीया जोडी हाथो रे ॥ ३२ ॥
 मूला गाजर ने काचो पाणी, कोइ जोरी दावे ले खोसी रे ।
 जे कोइ वस्त छोडावें बिनां मन, इण विघ धर्म न होसी रे ॥ ३३ ॥
 भोगी नां कोइ भोगज रूधे, वले पाडे अतरायो रे ।
 माहामोहणी कर्मज बाघे, दसाश्रुतखघ माहि बतायो रे ॥ ३४ ॥
 देव गुर धर्म नें कारण, मूढ हणें छकायो रे ।
 उलटा पडीया जिण मार्ग थी, कुगुरा दीया बेहकायो रे ॥ ३५ ॥
 धर्म हेते श्रावक नेतरीयो, मन मे अधिक हूलासो रे ।
 आरभ कर जीमाया धर्म जाणें, तो बोध बीज रो नासो रे ॥ ३६ ॥
 वीर कह्यो आचारग माहे, जिण ओलखीयो तत सारो रे ।
 समदिष्टी धर्म नें कारण, न करे पाप लिगारो रे ॥ ३७ ॥
 एकद्री मारे पचद्री पोषे, ते निश्चे वाघे कर्मो रे ।
 मच्छ गलगल चोडे माडी, ए पाषंडीया रो धर्मो रे ॥ ३८ ॥
 लोही खरड्यो जो पितबर, लोही सू केम घोवायो रे ।
 तिम हिंसा मे धर्म कीया थी, जीव उजलो किम थायो रे ॥ ३९ ॥
 कहे म्हे पाप करां थोडो सो, पछे होसी धर्म अपारो रे ।
 सावद्य काम करां इण हेते, तिणथी खेबो पारो रे ॥ ४० ॥
 चोखी सिन्यासण धर्म कह्यो तिण, दान सिनान बतायो रे ।
 आठमा अघेन गिनाता माही, घणा लोक दीया भरमायो रे ॥ ४१ ॥
 जिम कोइ सावद्य दान दिडाइ, मन मे हुवे रलियायत रे ।
 लोका रे मन गमता बोले, चोखी जोगण नां केडायत रे ॥ ४२ ॥
 आ सरघा सुखदेव सिन्यासी री, सहस्र जणा सिप्य जाणी रे ।
 सेठ सुदसण तिण रो भगता, हाड मिजा रगाणी रे ॥ ४३ ॥
 कर्म थोडा ने सुलटो सुझ्यो, अंतर गति निरणो कीघो रे ।
 थावचे अणगार प्रतिबोध्यो, खोटी छोड सजम लीघो रे ॥ ४४ ॥
 चतुरविघ सघना कोठा ठाख्या, पाछल भव दान बतायो रे ।
 सनत कुमार इंद्र हूवो तेथी, ए पिण मूसा वायो रे ॥ ४५ ॥

ए तो पूछा वर्तमान कालें, पाछिल भव री नही चली रे ।
 फंद में नाखें अजाण लोकां नें, कुव्व हीया में घाली रे ॥ ४६ ॥
 तीनां काल री समझ पबें नही, तो हेत नें सुख बतावों रे ।
 च्यालं आहार नों नाम लेइ ने, गोल कांय चलावो रे ॥ ४७ ॥
 अबर ना सिष्य सत्त सो हूँता, अण दीवो नही लीषो रे ।
 काचो पांणी अक्षम जाण पीता, अण मिलीया अणसण कीवो रे ॥ ४८ ॥
 जे कोइ मिलतो दातार तिणा ने, हवें वेंहरावत पांणी रे ।
 लेवाल तो अविरत में लेता, इमहीअ दातार जाणी रे ॥ ४९ ॥
 ग्यांनि पुरवां दोनूं जणा री, सखध करणी जांणी रे ।
 दातार नें कोइ धर्म कहें तो, अन्य तीर्थ नीं वांणी रे ॥ ५० ॥
 समकत वमीयो नदणमणीयारे, साची सरथा भगी रे ।
 तेलो करे तीन पोवा ठाया, भूख तिरथा अति लापी रे ॥ ५१ ॥
 संगत पाषंडीयां री करणें, उल्लो मारस लीवो रे ।
 धिन धिन कूआ तलाव खणावें, तिण सफल जमारो कीवो रे ॥ ५२ ॥
 पोषो पार श्रेणक नें पूछे, पोखरणी बाव खणाइ रे ।
 घन खरचे जस लीयो लोकां में, कले दानंसाळा मंडाइ रे ॥ ५३ ॥
 सोलें रोग सरिरे उपनां, भूयो अति ध्यान ध्यापो रे ।
 आप खणाइ में जाये पडीयो, डेडक रो भव पायो रे ॥ ५४ ॥
 आर्द्र कुमार नें ब्राह्मण बोल्या, छोड तूं सगला परचा रे ।
 म्हारो धर्म उत्तम नें उजल, शुण तूं मोरी चरचा रे ॥ ५५ ॥
 दोय सहंस ब्राह्मण जीमाड्यां, परलोक में सुख दायक रे ।
 देव हूवें पुन खंघ उपार्जी, वेद तणो ए दायक रे ॥ ५६ ॥
 आर्द्रकुमार कहाो अपात्र नें, नित जिमाडे तेही रे ।
 दोय सहंस ब्राह्मण नें दाता, नरक पहुचें बेही रे ॥ ५७ ॥
 मंजारी जिम रसना गिरची, कहि दीयो समं न राखी रे ।
 धर्म नें पुन रो असं न भाप्यो, सुसगडा अंग छें साखी रे ॥ ५८ ॥
 भयू पिरोहित कहें वेटां नें, सांमल मोरी सिष्या रे ।
 वेद भगी ब्राह्मण जीमाडी, लेजों धे पछे दीख्या रे ॥ ५९ ॥
 ब्राह्मण जीमाड्यां ए फल लागें, पहुँचावें तमतमा रे ।
 उत्तरावेन चवदमें भाप्यो, ए तो साकध धर्मा रे ॥ ६० ॥
 छोटी सरथा में हीण आचारी, पूजा श्लाभा रा भूखा रे ।
 कर्म घणा नें संवली न सूमें, कदागरो करवा हुका रे ॥ ६१ ॥

राते भूला तो आसा राखे, दीयां सूझसी सूला रे ।
 कहो नैं आसा राखें किण विष, दीयां दोपारां रा भूला रे ॥ ६२ ॥
 भाव मारग थी भूला अग्यानी, उजह चलीया जायो रे ।
 मन में आसा मुगत री राखे, दिन दिन अलगा थायो रे ॥ ६३ ॥
 सूतर नी चरचा अलगी मेले, लोक कीया पखपाती रे ।
 साची सरवा किण विष आवे, हूआ घणा रा साथी रे ॥ ६४ ॥
 जो थारें दिल काय न बेसे तो, सगलो भगडो चूको रे ।
 समता आदर नैं कजीया छोडो, जिण तिण आगें म कूको रे ॥ ६५ ॥
 इविरत ओल्खो उत्तम प्रांणी, छोड द्यो राग ने बेखो रे ।
 मानव नो भव अहल म हारो, परभव सांमो देखो रे ॥ ६६ ॥



ढाल : २

[चतुर विचार करी ने देखो]

संख नें पोखली जिमण कीघो, ते तो आपणो छांदो रे ।
तिणनें सरावे मूढ अग्यानी, कर्मी रा पूज बाधें रे ॥ १ ॥
तिण जीमण नें माठो जांणी, पोषो कर दीघो त्यागी रे ।
पखी रे दिन पाप ने पचख्यो, संख बडो वेंरागी रे ॥ २ ॥
उपला श्रावका पोखली घर आयां, विनों कीयो सीस नमायो रे ।
ते तो छांदो आपणों जांण्यों, भगवंत नही सिखव्यो रे ॥ ३ ॥
नमसकार अंबर नें कीयो चेलां, ते तो सूतर उवाइ मे चाल्यो रे ।
भगवंत भाव दीठा जिम भाष्या, जिण धर्म मांहे न घाल्यो रे ॥ ४ ॥
नवकार ना पद पांच परूप्या, श्रावक नें दीघो टालो रे ।
जिण आग्या नहीं ग्रहस्थ वांदण री, भगवंत वचन समालो रे ॥ ५ ॥
मांहोमाहि वीनों वीयावच कीघां, भगवंत नही वखाण्यां रे ।
ग्रहस्थ ना कार्य सावद्य दीठा, मनकर भला न जाण्या रे ॥ ६ ॥
कहे म्हे अवरित सेवां जिण में, जाणां छां बंधता कर्मों रे ।
पिण कोइ सेवारे इवरित मांनें, जिणनें हुवें छें धर्मों रे ॥ ७ ॥
आ सरघा श्रावक नही राखें, न दे किण ने दगो रे ।
धर्म ठिकाणे भूठ बोलतो, जिण सासण में ठगो रे ॥ ८ ॥
आपतो अवरित मांहे आंणें, भोला नें धर्म बताइ रे ।
श्रावक एहवो भूठ न बोले, जिण धर्म मांहे आइ रे ॥ ९ ॥
साध नें कोइ असुघ वेंहरावें, ते गर्भ में आडो आवें रे ।
श्रावक नें कोइ सचित खवरावें, ते सुद गति किण विघ जावें रे ॥ १० ॥
एक एक मानव कर्म तणें वस, कर रह्या उंची ताणो रे ।
सचित असुघ रोकड छों मांनें, होसी धर्म संका म आपो रे ॥ ११ ॥
पेट रें कारण अनरथ भाषें, परभव सांमो न जोवे रे ।
वले पखपात करे कुगरां री, मानव नो भव खोवे रे ॥ १२ ॥
दांन सील तप भावना च्याळं, मुगत नगर ले जावें रे ।
तिण में दांन सुपातर आयो, ते इवरित माहे न ल्यावे रे ॥ १३ ॥
समचें दांन में धर्म कहें तो, नाइ जिण धर्म सेली रे ।
आक नें गाय रो दुघ अग्यानी, कर दीयो भेल समेली रे ॥ १४ ॥

इविरत मे दान ले पेंला रों, मोष रो मार्ग बतवें रे ।
 धर्म कक्षां विण लोक नही दे, जब कूर कपट चलावे रे ॥ १५ ॥
 कहे ओर जायगा घन देता देखें, खरच हू लेखे लेखें रे ।
 ए श्रावक सुगतार त्याने, दान दे तूं वसेखें रे ॥ १६ ॥
 कल्पें ते वस्त श्रावक नें देने, गोत तीथकर बाघे रे ।
 एहवो धर्म अनारज भाघे, ते किण विघ लागे सांघो रे ॥ १७ ॥
 आगार ने सुपातर कहि कहि, सानी कर साधु दरावे रे ।
 तिण रे दीसैं घोर अघारो, समकत किण विघ आवे रे ॥ १८ ॥
 खेती करें व्याज बोहरावे पाले, घर रो काम चलावें रे ।
 करे सगपण आरा ने मोसर, वेटा बेटी परणावे रे ॥ १९ ॥
 साघा रें आहार ने पाणी बघे तो, परठ दे एकत जायो रे ।
 इग्यारमी पडिमा रो श्रावक मार्गें तो, तिण ने न दें किण न्यायो रे ॥ २० ॥
 घरती परठ्या तो व्रत रहे छें, दीघा दोप उघाडा रे ।
 पांच महाव्रत मूलाग तिण मे, सगला पडीया वघारा रे ॥ २१ ॥
 घरती परठ्या तो अरथ न आवे, ए करणी नही नीची रे ।
 दीघा दराया ने भलो जाण्या, सावद्य इविरत सीची रे ॥ २२ ॥
 जगन मग्गिम उतकथा श्रावक, तीना री एकज पातो रे ।
 इविरत छे सगला री माठी, तिणमे म राखो आतो रे ॥ २३ ॥
 कोइ श्रावक ना व्रत ले साघा पें, आयो जिण दिस जायो रे ।
 मार्ग मां दोय मित्री मिलिया, ते बोल्या जूदी जूदी वायो रे ॥ २४ ॥
 एक कहे व्रत चोखा पालें, ज्यूं कटे आठोइ कर्मो रे ।
 काल अनादि रे भमत्तें भमते, पायों जिणवर धर्मों रे ॥ २५ ॥
 एक कहे तूं आगार सेवे, सचितादिक सर्व समाली रे ।
 जतन घणा कीजे डीलां रां, वले कूटव तणी प्रतपाली रे ॥ २६ ॥
 व्रत पालण ही आग्या दीघी, ए तो धर्म रो मित्री मोटो रे ।
 अविरत आग्या दीघी तिण नें, न्यानी तो जाणें खोटो रे ॥ २७ ॥
 गुर तो मिलिया जावक आंघा, चेला पूरा निरंदो रे ।
 ए तो जाल रच्यो तिण चोडें, कोइ आय पडें तिण फंदो रे ॥ २८ ॥
 न्याय री चरचा रो काम पडें तो, एकें होय माडे लडणों रे ।
 पापंडीयां सूं जाय मिल्या वले, लीयो लोका रो सरणो रे ॥ २९ ॥
 अत ही हूट्ट हुवे हिंसाघर्मीं, निन्दा करें परपूठें रे ।
 कोइ- खांच तांण साघा पें आणे, तो अवगुण लेणें उठें रे ॥ ३० ॥

कहें दान दीयो तीयंकर तिण में, जाणां छां कटीया कर्मों रे ।
 ते तो सोनइयां देवां आण दीघा, त्यां पिय हुसी धर्मों रे ॥३१॥
 कर्म कटें सोनइयां साटें, तो करणी नहीं करता रे ।
 ए मारग थी सिवपुर पोहवें, तो घर छोड बुख में न पवता रे ॥३२॥
 सोनइयां दीघां कर्म कटें तो, बरस री जेज न पावत रे ।
 लोकां रा घर भर सोनइयां, देता कर्म विहारत रे ॥३३॥
 कहें लीघां पाप नें दीघां धर्म, तिण लेखें रह गया कोरा रे ।
 देवां कर्म ले मिनष नें दीघा, पढीया अणहुंता फोडा रे ॥३४॥
 एक कोड आठ लाख सोनइयां, निकल्या वसींदांन देइ रे ।
 मुगत रों मारग तिणमें न जाण्यो, संवर निरजरा न वेइ रे ॥३५॥
 वसीं दान महोछव सगला, केवलीयां नहीं वखाण्यो रे ।
 तीयंकर नें देव दोनुं इविरती, त्यां पिय धर्म न जाण्यो रे ॥३६॥
 भगवंत दीख्या लीघी तिण कालें, चढीया अतंत वेंरगो रे ।
 सावध दान सिनांत सोनइयां, माडा जांणी दीघा त्यागो रे ॥३७॥
 भगू पिरोहित धन छोड निकलीयो, इखुकार राजा मंगायो रे ।
 धन सूं धर्म ने कर्म कटें तो, अेली साटें कांय गमायो रे ॥३८॥
 घर छाडें त्यामें अकल घणी थी, वालस कर आघो न कावत रे ।
 धन सूं धर्म हुवें ते करनें, कांम सिराडे चावत रे ॥३९॥
 धर्म री घुरा धन सूं न चालें, भगू नें कह्यो बेटां दोइ रे ।
 माहिमां धन दीयां धर्म थापें, ते गया जमारो छोइ रे ॥४०॥
 रिषभदत्त ब्राह्मण ने देवानंदा, वांणी सुण आयो वेंरगो रे ।
 त्यां पिय धन नें छोडचो अघर्म जाण, धर्म हुवें तो न कावत आघो रे ॥४१॥
 कहें आरा मोसर डायचादिक में, मिश्र धर्म कर रह्या तांणो रे ।
 राय उदाइ राज दीयो भाणेजा नें, तिण लेखें तो मोटो लाभ जांणो रे ॥४२॥
 ए परिग्रह छें अनरथ रो मूल, करें बोध बीज री दाता रे ।
 वीर कह्यो छें दसमां अंग में, ए नरक तणों छें दाता रे ॥४३॥
 ठांम ठांम सूतर सिद्धांतां में, धन सूं धर्म न थाण्यो रे ।
 किण विघ कर्म कटें दाता रा, ए तो अविस्त माहें आय्यो रे ॥४४॥
 जंबुकुमार आठ परणे आयो, डायचे रिघ लीयो अघारी रे ।
 कोड निनाणू तो पेंरावणी रो, वले घर में हुंती रिघ भारी रे ॥४५॥
 कनक कामणी सूं विरक्त भावें, उत्तम चारित लीघो रे ।
 वेंरग आणे धन छोड दीयो पिय, धन सूं धर्म न कीघो रे ॥४६॥

बीस हजार सोना रूपा ना आगर, खूटें नही अखूट भंडारो रे ।
 चक्रवत छे खंडकेरो साहिब, तिणरी रिष रो धणो विस्तारो रे ॥ ४७ ॥
 एहवी रिष में काल कीयो तिण, नरक पड्या बांधो कर्मों रे ।
 दुरगति टल जाय धन दीघां, तो दे दे करता घर्मों रे ॥ ४८ ॥
 श्रावक तो जिण कालेइ हुंता, घन लेवा नें तयारो रे ।
 यानें दीयां उवार हुवें तो, दे उतरें भव पारो रे ॥ ४९ ॥
 चित मुनी संभूत समझावा, साध श्रावक धर्म बतायो रे ।
 घन सूं सुद गति जाय विराजें, इसडो न कह्यो उपायो रे ॥ ५० ॥
 कहे साध आहार करें इविरत में, संजम नो छें ओटो रे ।
 एतो वचन अनारज करों, तिण आदरीयों मत खोटो रे ॥ ५१ ॥
 इविरत नें परमाद बेहूं नें, संजम नों छें धको रे ।
 ओटो कहें तिणरी उंची सरघा, तिण गिरीयो मिथ्यात नें पको रे ॥ ५२ ॥
 साघां सावध सगलो त्याग्यो, पाप रो नहीं आगारो रे ।
 इविरत मे आहार ल्यावें खावें, ते निश्चें नही अणगारो रे ॥ ५२ ॥
 च्यार गुणठांणां में अकेली इविरत, श्रावक में दोनूं पावें रे ।
 साघां रे इविरत मूल न दीसैं, कुब्दी कूड चलावे रे ॥ ५४ ॥
 इविरत मे साध आहार करे तो, जिण आग्या नही देता रे ।
 पाप जाणे तो मुनज सामेंत, ए पिण आग्या न लेता रे ॥ ५५ ॥
 प्रतख पाप जाणें आहार कीघां, कर्म तणो बंध होवें रे ।
 तो आग्या ले गुरनी मुख, गुर नें कांय डबोवे रे ॥ ५६ ॥
 गुर नी आग्या ले पाप करण री, ते तो मलेच्छ अनारज रे ।
 विनैं सहित कोइ सावध सेवें, तिण मोटो कीयों अकारज रे ॥ ५७ ॥
 त्यानि गुर पिण मिलीयो अतंत अग्यानी, कर्मां कर सुइयो भूंडो रे ।
 पाप करण री आग्या देणें, पोतें अली साटें कांय बूडो रे ॥ ५८ ॥
 चेला नें आग्या इविरत री दे, घाल्यो पाप में सीरो रे ।
 देखो अकल गइ तिण गुर री, इण नें कांई पडी थी भीरो रे ॥ ५९ ॥
 पाप करण री आग्या देसी, ते निश्चें होसी भारी रे ।
 कुण चेलो गुर नें गुर भाइ, जोवो अंतर माहें विचारी रे ॥ ६० ॥
 साध आहार कीयां परमाद नें इविरत, तो दातार नें नहीं घर्मों रे ।
 इविरत री इविरत में घाल्यो, तो दोयां रे बंधसी कर्मों रे ॥ ६१ ॥
 कर्म तणे वस मूढ अग्यानी, सबली सीख न धारें रे ।
 आप डूबे इविरत मे ल्याइ, ते ओरां नें किण विघ तारें रे ॥ ६२ ॥

साध आहार कीयां में पाप परूषे, तयारें मोह मिथ्यात रो चालों रे ।
 तीन काल रा मुनीसरां नें, दीयो अणहुंतो आलो रे ॥ ६३ ॥
 आहार करण री सुध साधां नें, भगवंत आग्या दीधी रे ।
 तिण में पाप बतावे अग्यांनी, खांच गला में लीधी रे ॥ ६४ ॥
 जो थानें समझ पडें नहीं पूरी, तो राखो जिण परतीतो रे ।
 आग्या माहें पाप परूषे, एहवी म करो अनीतो रे ॥ ६५ ॥
 जिण आग्या में पाप परूषे, ते भूला भरम अग्यांनी रे ।
 आग्या बारे धर्म कहें त्यांनं, किण विध कहिजें ग्यांनी रे ॥ ६६ ॥
 गुण विण भेख घरे साधु रो, करें विकलां री थापो रे ।
 छ कारणां विण आहार करसी, तिणनें छें एकंत पापो रे ॥ ६७ ॥
 छ कारणें साध आहार करें तो, जिण आग्या नहीं लोपी रे ।
 पाप तिणां नें किण विध लागें, संवर कर आतम गोपी रे ॥ ६८ ॥
 निरवद गोचरी रिखेसरां री, मोष री साधन भाखी रे ।
 पाप कर्म आहार करतां न लागें, दसवीकालक साखी रे ॥ ६९ ॥
 सात कर्म साध ढीला पाडें, आहार करें तिण कालो रे ।
 सुध भोगवीयां ए फल लागें, सूतर भगोती संभालो रे ॥ ७० ॥
 सेलक जष रे कावें बेंस नीकलीयो, राखी रेंणा देवी सू पीतो रे ।
 अणुकंपा आणें साह्यो जोयो, जिणरिष हूवो फजीतो रे ॥ ७१ ॥
 सेलक जष जिम संजम जाणो, रेंणा देवी ज्यूं इविरत मेंली रे ।
 मुगत नगर नें संत नीकलीया, त्यां इविरत छोडी पेली रे ॥ ७२ ॥
 सेलक जष नें रेंणादेवी रे, मांहोमां नहीं मेलपो रे ।
 विरत सू धर्म ते पार पोहचावें, इविरत लगावें पापो रे ॥ ७३ ॥
 रेंणा देवी एक भव दुखदायक, इविरत अन्तो कालो रे ।
 सांसो हुवें तो गिनाता माहें, नवमों अवेन संभालो रे ॥ ७४ ॥

ढाल : ३

[चतुर विचार करी ने देखो]

सुयगडा अग अधेन इग्यार मे, त्यां दान रो कीधो निचोडो रे ।
 भूढ मिथ्याती ववेक रा विकल, ते करे अणहूती भोडो रे ॥ १ ॥
 चतुर विचार करी ने देखो* ।
 सोलमीं गाथा सूं लेइ इकवीसमी ताई, ए छव गाथा रा अर्थ छे सूंघारे ।
 तिहां सावद्य दान मे मिश्र थापण ने, अर्थ करे छें उघा रे ॥ च० २ ॥
 ते सावद्य दान संसार ना कारण, तिण में निरवद रो नही भेलो रे ।
 ससार ने सुगत रा मारग न्यारा, ते कठे न खावें मेलो रे ॥ ३ ॥
 ए छ गाथा रा अर्थ छें भारी गूढा, त्यांरो निरणो कीजें बुधवांनो रे ।
 ते अर्थ विवरा सुध त्यांरो, सुणजो सुरत दे कांनो रे ॥ ४ ॥
 दान रें अर्थे जीव हणें त्याने, साधु तो भलो न जाणे रे ।
 देवे पो सतूकार खोदावें कूवादिक, लाम जाणें सरघा परमाणे रे ॥ ५ ॥
 ते आय साधां नें प्रश्न पूछे, ते आरंभ लीयां बोले वाणी रे ।
 इण करणी मे पुन हुवे के नाही, जब साध करे मून जांणी रे ॥ ६ ॥
 पुन पिण साध न कहे तिणनें, वले न कहे थारे पुन नांही रे ।
 बेहू प्रकारें माहा भय रो कारण, मून करे ते कारण कांई रे ॥ ७ ॥
 दान रे कारण लोक करे छे, तस थावर री घातो रे ।
 पुन कह्या त्यारी दया उठे छे, दया विण नही पुन साख्यातो रे ॥ ८ ॥
 असजती नें उदीरी उदीरी, आरंभ कर जीमावे अन पांणी रे ।
 पुन नही कह्या अतराय पडें छे, ओहीज कारण जांणी रे ॥ ९ ॥
 साधु तो अंतराय किणने न देवे, उण वलां जीम क्याने हलावें रे ।
 चरचा रो काम पडे तिण काले, हुवे जिसा फल बतावें रे ॥ १० ॥
 जे कोइ दान प्रससे तिणने, कह्यो छकाय रो घाती रे ।
 तो देवें दिरावे त्यांरो स्यू कहिवो, ए पिण उणरा साथी रे ॥ ११ ॥
 हिंसा भूठ चोरी कुसील प्रससें, ते बूड गया काली घारो रे ।
 तो करण करावण वाला रो, किण विघ होसी उवारो रे ॥ १२ ॥
 कोइ गांव जलावे ने गायां कटावे, इत्यादिक कारज सब भूडां रे ।
 त्यांने सरावे ते बूड गया छे, तो करण वाला तो वशेष बूडा रे ॥ १३ ॥
 ज्युं सावद्य दान प्रससे तिणनें, कह्यो छे छकाय रो घाती रे ।
 देवें तिणने धर्म मिश्र कहे त्यांनें, कहीजें भूढ मिथ्याती रे ॥ १४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

माठो कांम सरायां बूडें छें, तो कीषां बूडसी गाढो रे।
 आ सरघा सुण सेंठी धारो, थें सल अमितर काढो रे ॥ १५ ॥
 सावद्य दांन प्रससैं तिणरा, माठा फल कह्या जिण रायो रे।
 हिचें दांन नषेघणों नहीं साधु नें, तिणरो पिण सुणजों न्यायो रे ॥ १६ ॥
 दातार दांन देवें तिण कालें, लेवाल लेवें घर पीतो रे।
 जब साघ कहे तूं मत दें इणनें, नषेघणो नहीं इण रीतो रे ॥ १७ ॥
 जो दांन देता नें साघ नषेदेँ तो, लेवाल रे पडें अंतरायो रे।
 अंतराय दीयां फल कडवा लागें, तिणसूं नषेघ न करें इण न्यायो रे ॥ १८ ॥
 अंतराय सूं डरतो साधु न बोलें, ओर परमारथ मत जांणो रे।
 ते पिण मून छें वरतमान कालें, बुधवंत कीजों पिछांणो रे ॥ १९ ॥
 उपदेस देवें साघ तिण कालें, दूष पांणी ज्यूं करें नीवेडो रे।
 विनां बतायां च्यार तीरथ में, किण विघ मिटें अंचेरो रे ॥ २० ॥
 दोनूं भाषा साधु नहीं बोलें, पुन छें अथवा पुन नाही रे।
 ते वरज्यों वरतमान काल आसरी, थें सोच देखों मन मांही रे ॥ २१ ॥
 कोइ कहें पुन कहणों न कहणों वरज्यों, तो पुन में पाप रो भेल जांणो रे।
 तिणसूं मिश्र ठिकाणों ले उठ्या अग्यांनी, ते कर कर उंची ताणो रे ॥ २२ ॥
 पुन छे कें नहीं रो प्रश्न पूछ्यों, पाप रो कथन न चाल्यो रे।
 मिश्र री सरघा वालें अग्यांनी, घोचो मिश्र रो घाल्यो रे ॥ २३ ॥
 दांन में मिश्र नहीं जिण भाष्यों, पुन होसी कें पापो रे।
 सुपातर सूं पुन कुपातर सूं पाप, पिण खोटी मिश्र री थापो रे ॥ २४ ॥
 वले सुयगडा अंग अघेन इकवीसमे, दोग्य बातां जिण भाखी रे।
 त्यां पिण न कह्यौं छें मिश्र ठिकाणों, जोवो बतीसमीं गाथा साखी रे ॥ २५ ॥
 दातार नें देतां लेवाल नें लेतां, साधु इसडों देखें विरतंतो रे।
 जब गुण अवगुण न कहें तिण कालें, तिहां मून करें एकंतो रे ॥ २६ ॥
 तिण दांन तणा साधु गुण करें तो, असंजम री अणुमोदनां लागें रे।
 असंजम छें ते एकलो अघर्म, ते अणुमोद्यां संजम भागें रे ॥ २७ ॥
 जिण दांन नें साधु भलो न जाणें, भलो जांण्यां बंधें पाप कर्मों रे।
 तो तिणहीज दांन तणा दाता नें, किण विघ होसी मिश्र नें घर्मों रे ॥ २८ ॥
 पाप अणुमोद्यां तो पाप हुवें छें, घर्म अणुमोद्यां घर्म होयो रे।
 तो मिश्र अणुमोद्यां मिश्र चाहीजें, ते मिश्र न दीसैं कोयो रे ॥ २९ ॥
 दांन देवें दिवरावें भलो जाणें, यां तीनां री एकज पातो रे।
 पुन पाप मिश्र होसी तो तीनां नें, तिणमें म राखों अ्रांतो रे ॥ ३० ॥

जिण दांन तणा गुण कीघां साधु नें, असंजम री अणुमोदनां लागें रे ।
 ते दांन असंजम में जिण घाल्यो, ओगुण कह्यां रो वोळ्तीं आगें रे ॥ ३१ ॥
 दांन तणा ओगुण कीघां में, लेवाल रें पडे अंतरायो रे ।
 अंतराय देंगी ते साधु नें न कल्पें, तिण सू मून करे मुनीरायो रे ॥ ३२ ॥
 इण न्याय साध ने मून कही छे, पिण मिश्र न जाणें तिणमे रे ।
 इण दांन मे मिश्र नें धर्म थापें तो, कोरो मिथ्यात छें तिण में रे ॥ ३३ ॥
 गुण कह्यां असंजम अणुमोदीजें छें, अवगुण कहितां लागें अंतरायो रे ।
 यां दोयां सू डरतो साधु न बोले, अठें मिश्र किहा थी थायो रे ॥ ३४ ॥
 साधु मून करें वरतमान काले, पिण उपदेस मे मून न राखें रे ।
 द्रव्य खेतर काल भाव देखे तो, हुवें जिसा फल दाखे रे ॥ ३५ ॥
 मिश्र थापण ने मूढ अग्यानी, छल छिद्र रह्यो नित देखों रे ।
 सूतर में ओर बोल घणा छें मिश्र रा, त्यामें मिश्र दान दें टेकें रे ॥ ३६ ॥
 कोइ कहें पाप कहे तिण देतां पाल्यो, इसडी बोलें छे वाणों रे ।
 ए दोनूं भाषा ने एकज सरवे, ते भाषा तणा मूढ अयाणो रे ॥ ३७ ॥
 कोइ कहे पाप कहे तिण दान निषेद्यो, ते पिण भाषा रा अजाणो रे ।
 सावध दांन नें थापण अग्यानी, बोले छे उघी वाणो रें ॥ ३८ ॥
 दान देतां नें कहे तू मत दे इण ने, तिण पाल्यो निषेद्यो दांनो रे ।
 पाप हुंतो ने पाप बतायो, तिणरो छें निरमल ग्यानो रे ॥ ३९ ॥
 असंजती ने दांन दीया मे, कहि दीयो भगवंत पापो रे ।
 त्यां दांन नें वरज्यो निषेद्यो नाही, हुती जिती कीधी थापो रे ॥ ४० ॥
 किण ही साधु ने कह्यो आज पछें तूं, म्हारें घर कदे मत आयो रे ।
 किणही ए करडा वचनज बोल्यो, हिवे साधु किसे घर जायो रे ॥ ४१ ॥
 साघां नें वरज्यो तिण घर मे न पेसे, करडा कह्या तिण घर माहे जावें रे ।
 निषेद्यो ने करडो बोल्यां ते, दोनूं एकण भाषा मे न समावे रे ॥ ४२ ॥
 ज्युं कोइ दान देता वरज राखे, कोइ दीघां मे पाप बतावें रे ।
 ए दोनूई भाषा जुदी जुदी छें, ते पिण एकण भाषा में न समावे रे ॥ ४३ ॥
 कोइ रांक गरीब नें मरता देखी ने, त्यारी अणुकपा मन माहे आवे रे ।
 जब पॅला रों माल चोरी कर पोतें, रांका ने हाथ सूं पकडावें रे ॥ ४४ ॥
 घणी ने विण पूछ्यां चोरी कर देवें, राकां री अणुकपा काजें रे ।
 उणरी सरघा रें लेखें तो इणनेइ मिश्र, अठे मिश्र कहिता काय लाजें रे ॥ ४५ ॥
 माल घणी रे दाह दीधी तिणरो, हुवो एकत पाप कर्मो रे ।
 तो रांकां नें दीयो ते अणुकपा आणे, उणरे लेखें ओ प्रतख घर्मो रे ॥ ४६ ॥

पेंलां रो घन खोस रांकां नें देवें, तिणमें मिश्र कहें नाहीं रे ।
 तो उठ गई मिश्र री सरघा, थें सोच देखों मन मांहीं रे ॥ ४७ ॥
 पर रो घन चोर रांकां ने दीवां, तिण में मिश्र हुवें नाहीं रे ।
 तो जावक जीव हणे रांक नें पोषें, अठें मिश्र कठें तिण मांहीं रे ॥ ४८ ॥
 कोइ चोरी कर रांकां नें पोषें, कोइ जीव हण नें पोषें रांको रे ।
 इण एकंत पाप में मिश्र कहें, त्यांरी सरघा में पूरो छे बांको रे ॥ ४९ ॥
 रांकां नें पोषें घणा जीव हणें नें, तिणनें चोरी हिंसा लागें दोयो रे ।
 ते चोरी तो त्यांरा सरीर री लागी, जीव हणीयां री हिंसा होयो रे ॥ ५० ॥
 रांकां नें पर घन चोर देवें त्यांनें, एक चोरी तणों पाप होयो रे ।
 ए दोनूं किरतब करें अणुकंपा आणे, ते गया जमारो खोयो रे ॥ ५१ ॥
 पर नीं चोरी करे रांकां नें देवे, इण किरतब सूं जो बूडें रे ।
 तो हिंसा कर ने कुपातर पोषें, ते क्यूं नही बेंससी तूडें रे ॥ ५२ ॥
 कहें आराधवी विराधवी मिश्र भाषा छें, ते भाषा छें धर्म अधर्मों रे ।
 आराधवी जितरो छें एकलो धर्मों, विराधवी सूं लागें पाप कर्मों रे ॥ ५३ ॥
 इम कहि कहि मिश्र करणी थापें, तिण करणी में कहें धर्म पापो रे ।
 इम आंटी घालें सावद्य दांन मांहे, करे मिश्र री थापो रे ॥ ५४ ॥
 ते मिश्र भाषा छें एकंत सावद्य, तिम बोल्यां चवें पाप कर्मों रे ।
 महामोहणी कर्म वेंवें तिण सूं, तिणमें किहां थी धर्मों रे ॥ ५५ ॥
 आराधवी विराधवी मिश्र भाषा कही, ते तो बोलवा लेखें रे ।
 अठें पाप धर्म रो कथन न चाल्यो, तिणरा मुणजो भेद वखेले रे ॥ ५६ ॥
 आराधवी कही छें सत भाषा नें, ते पिण बोलवा लेखें पिछाणो रे ।
 ते साची भाषा छें सावद्य निरवद्य, तिण सावद्य में धर्म म जाणो रे ॥ ५७ ॥
 साची भाषा सावद्य तिणनें, आराधवी कही बोलवा लेखें रे ।
 पिण एकंत पाप वंधे तिण बोल्यां, ते मिश्र में मूढ पाप न देखें रे ॥ ५८ ॥
 व्यवहार भाषा नें कही छें जिणसर, आराधवी विराधवी नांही रे ।
 ते पिण कही छें बोलवा लेखें, धर्म अधर्म लेखें नाहीं मांहीं रे ॥ ५९ ॥
 धर्म अधर्म लेखें तो व्यवहार भाषा, आराधवी विराधवी जाणो रे ।
 निरवद्य नें आराधवी जाणो, विराधवी सावद्य नें पिछाणो रे ॥ ६० ॥
 जो मिश्र भाषा धर्म अधर्म लेखें, आराधवी विराधवी होइ रे ।
 तो व्यवहार भाषा बोलसी तिणनें, धर्म अधर्म नही कोइ रे ॥ ६१ ॥
 जो साची भाषा बोलें धर्म रे लेखें, थापे आराधवी कोयो रे ।
 तो साची भाषा सावद्य बोल्यां, एकंत धर्मज होयो रे ॥ ६२ ॥

जो मिश्र भाषा माहे मिश्र हुवें तो, सत भाषा मे एकंत धर्मों रे ।
 ववहार भाषा तो सुन होय जावें, बोल्या नही धर्म ने पाप कर्मों रे ॥ ६३ ॥
 ए तो बोलवा आश्री च्यारूई भाषा, आराघवी विराघवी जाणो रे ।
 अठे धर्म अघर्म रो कथन न चाल्यो, पनवणा सू करो पिछ्छाणो रे ॥ ६४ ॥
 सत असत मिश्र ने ववहार, ए च्यार भाषा जिण भाखी रे ।
 त्यामें असत ने मिश्र तो जाबक सावद्य, जोवो दसवीकालक साखी रे ॥ ६५ ॥
 सत भाषा नें ववहार भाषा, ए तो सावद्य निरवद्य दोई रे ।
 ते सावद्य टाले नें निरवद्य बोळें, तो पाप न लागें कोई रे ॥ ६६ ॥
 असत नें मिश्र तो जाबक छोडणी, ते बोल्यां बूडे जावे वहिता रे ।
 जो मिश्र भाषा माहे मिश्र धर्म हुवे तो, जाबक छोडणी नही कहिता रे ॥ ६७ ॥
 धर्म अघर्म आश्री च्यारूई भाषा, बोलवी नही बोलवी चाली रे ।
 सत नें ववहार विचार बोलवी, असत मिश्र नें सरवथा पाली रे ॥ ६८ ॥
 तीसां बोला बघे महामोहणी कर्म, ते एकंत छे पाप कर्मों रे ।
 तो मिश्र भाषा बोळें तिण माहे, किण विघ होसी पाप ने धर्मों रे ॥ ६९ ॥
 जो गुणतीस बोला मे एकलो पाप, तो मिश्र भाषा में एकंत पापो रे ।
 कोइ मिश्र भाषा माहें मिश्र धर्म कहे, तिण आगम दीया उथापो रे ॥ ७० ॥

ढाल : ४

दुहा

श्री जिण आगम मांहे इम कह्यो, धर्म अधर्म करणी दोग ।
 धर्म करणी मांहे जिण आगना, अधर्म करणी में आगना न कोय ॥ १ ॥
 धर्म अधर्म करणी जुई जुई, ते कठे न खारें मेल ।
 जे मूढ मिथ्याती जीवडा, त्यां कर दीधी मेल सभेल ॥ २ ॥
 चतुर व्यापारी विणज करे, जेंहर ने इमूत दोग ।
 मांघें ते वसत देवें गराक नें, पिण ओर न देवें कोय ॥ ३ ॥
 ववेक विकल व्यापारी हुवें, तिणनें वस्त री खबर न कांय ।
 जेंहर घालें इमूत मभे, इमूत घालें जेंहर रे मांय ॥ ४ ॥
 ज्यांनें वसत री ठीक पडें नहीं, ते घालें ओर री ओर मांय ।
 ते नाश करे नीवी तणों, तिम जाणों धर्म रो न्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[चतुर विचार करी ने देखो]

जिम कोइ घ्रत तंबाखू विणजे, पिण वासण विगत न पाडें रे ।
 घ्रत लेई तंबाखू में घालें, ते दोनूई वसत विगाडें रे ॥ १ ॥
 ज्यू इविरत रो दांन विरत में घालें, चतुर विचार करी ने देखो* ।
 विरत री विगत पाड्यां विण बांगा, पिण विरत री विगत न पाडें रे ।
 श्रावक मांहेमांहि जीमें जीमावें, सुनें चित दांन पूकारें रे ॥ च० २ ॥
 तिण मांहे धर्म परूपें अग्यानी, ते तो एकंत आश्रव जाणो रे ।
 जीम रो ओषद आख्यां में घाल्यो, ते पूरा मूढ अयाणो रे ॥ ३ ॥
 तिण री आंखई फूटी नें जीमड फाटी, आख्यां रो ओषद जीम में घाल्यो रे ।
 ज्यू अधर्म रा कांमा धर्म मांहे घाल्या, दोनूई इंद्री खोय चाल्यो रे ॥ ४ ॥
 दोनूई विघ कर्म बांधे अग्यानी, धर्म रा कांसा अधर्म में घाल्या रे ।
 सावद्य किरतव में धर्म जाणें, दुरगत मांहे चाल्या रे ॥ ५ ॥
 सावद्य निरवद में नहीं समभें, निरवद में पाप जाणें रे ।
 सचित्त अचित्त दीघां कहें पुन, अग्यानी थका उंची ताणें रे ॥ ६ ॥
 वले पुन कहे पातर कुपातर नें दीघां, वले सुघ असुघ दीघां कहे पुनो रे ।
 ओ मत जावक जंबूतो रे ॥ ७ ॥

* यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

पातर कुपातर दोनां नें दीघां,
 तिण पातर कुपातर लिणीया सारीषां,
 कूंडाघर्मी कूडें बेंस जीमें जब,
 जात कुजात नें चोखा अचोखा,
 ज्युं पातर कुपातर सर्व नें दीघां,
 ओ मत कूंडापथी जिम जाणों,
 केइ डाहा हुवें ते कूंडा पंध्यां नें,
 ज्युं पून कहे दान कुपातर दीघां,
 श्री वीर कह्यो पातर दान दीघां,
 कुपातर दान में पुन कहें ते,
 श्रावक नें एकंत सुपातर कहे नें,
 इसडी परूपणा कर कर अग्यांनी,
 श्रावक नें एकंत सुपातर कहे छें,
 त्यांनें श्रावक पिण इसडाइज मिलीया,
 नांव मातर श्रावक ववेक रा विकल,
 त्यांनें गुर पिण मिलीया त्यांहीज सरीषा,
 श्रावक नें एकत सुपातर कहे,
 सावद्य किरतव मूल न सूभे,
 आंघा मिनव नें आंघो मिलीयो,
 ज्युं श्रावक ने एकंत सुपातर कहे छें,
 श्रावक सुपातर विरतां रे लेखें,
 इविरत रो इणरें काम पडें जब,
 श्रावक सुपातर वरतां सूं हूवो,
 इविरत रो इणरें काम पडें तो,
 छकाय जीवां रो गटको करें छें,
 इण किरतव नें सुपातर जाणें,
 श्रावक अस्त्री सेवें सेवावें,
 तिणनें एकंत सुपातर थापें,
 केइ श्रावक रे हुवें अस्त्री हजारं,
 एहवा मोगी भमर नें सुपातर जाणें,
 हिंसा भूठ चोरी मइथुन सेवे,
 तिणनें एकंत सुपातर परूपें,

पुन कहें छे कर कर तांणी रे ।
 आ पाबंडीयां री वांणी रे ॥ ८ ॥
 भेला जीमें एकण कूंडा माह्यो रे ।
 त्यांरी भिन न राखे कांयो रे ॥ ९ ॥
 पुन कहे एक धारो रे ।
 किण सूं भिन न राख्यो लिंगारो रे ॥ १० ॥
 न्यात जात सूं जाणें मिष्टी रे ।
 त्यांनें ग्यांनी जाणें मिथ्यादिष्टी रे ॥ ११ ॥
 धर्म नें पुन दोनूं होयो रे ।
 गया जमारो खोयो रे ॥ १२ ॥
 तिण पोख्यां में धर्म वतावें रे ।
 भोला लोकां नें इम भरमावें रे ॥ १३ ॥
 ते पूरा मूंड अग्यांनी रे ।
 त्यां पिण सरवा साची कर मांणी रे ॥ १४ ॥
 त्यांनें निज अवगुण नहीं सूभें रे ।
 तिण सूं दिन दिन इघका अलूभें रे ॥ १५ ॥
 ते तो उठी जठायी भूठी रे ।
 त्यांरी हीया नीलाडी री फूटी रे ॥ १६ ॥
 जब कुण वतावें वाटो रे ।
 त्यांरें आयो अभितर पाटो रे ॥ १७ ॥
 इविरत लेखें जेंहर रो वटको रे ।
 छकाय रो कर जाय गटको रे ॥ १८ ॥
 इविरत सूं अघर्मी जाणो रे ।
 छकाय रो करें घमसांणो रे ॥ १९ ॥
 छकाय रो करें घमसांणो रे ।
 ते जिण मारग रा अजांणो रे ॥ २० ॥
 वले परणें नें परणावें रे ।
 ते तो गाला रा गोला चलावें रे ॥ २१ ॥
 पासवान खवासण अनेको रे ।
 त्या विकला नें नहीं ववेको रे ॥ २२ ॥
 परिग्रह मेळें विवध प्रकारो रे ।
 त्यांरा मत माहिं पुरो अंधकारो रे ॥ २३ ॥

श्रावक लाखां बीघां घर खेती करें छें, कोडां मण काढें अणगल पांणी रे ।
 त्यांनं पिण एकंत सुपातर कहें छें, ते तो पाषंडीयां री वांणी रे ॥२४॥
 दमडी काजें पागडा पाडें पडावें, आंमी साहूीं पेजारां चलवें रे ।
 एहवा श्रावक नें सुपातर कहितां, विकलां नें लाज न आवें रे ॥२५॥
 कजीयाखोर बथोकडा बगीया, मन मांनं ज्यूं बोलें मूंडा रे ।
 ममा चचा री गाल्यां तो वस रही मूढें, त्यांनं सुपातर सरवे कांय बूडा रे ॥२६॥
 केइ नागडा निरलज फीटा बोलें, ते दीसैं उघाडा कुपातर रे ।
 केइ एहवा कुपातर नें कहें छें सुपातर, त्यांनं पिण कहीजें एहवा सुपातर रे ॥२७॥
 केइ दगा दगी रो विणज करें छें, कपडादिक बेचें नग बदलावें रे ।
 त्यांनं एकंत सुपातर कहि कहि, ते विकलां नें विकल रीभावें रे ॥२८॥
 श्रावक तो घर माहें बेठों, करें छें अनेक अकाजो रे ।
 तिण घरबारी नें सुपातर कहितां, विकलां नें न आवे लाजो रे ॥२९॥
 आगें मोटा मोटा राजा श्रावक हुआ, जीवादिक नवतत रा जांणो रे ।
 ते रिण संगराम चढ्या तिण कालें, घणां मिनषां रा कीयां धमसांणो रे ॥३०॥
 एक कागादिक मारण रा त्यांग कीयां, ते पिण श्रावक री पांत माहीं रे ।
 बाकी रा सर्व किरतब खोटा करें छें, ते सुपातर पणां में नाहीं रे ॥३१॥
 श्रावक नें सुपातर किण न्याय कहीजें, किण न्याय अधर्मी कुपातर रे ।
 सूतर माहें जोए भव जीवां, हीया माहें करो जमें खातर रे ॥३२॥
 सूयगडांग अघेन अठारमें, तीन पष तणों विसतारो रे ।
 धर्म अधर्म मिश्र पष तीजों, यां तीनां रो सुणों भेद न्यारो रे ॥३३॥
 सर्व विरत नें धर्म पष कहीजें, इविरत नें अधर्म पष जांणो रे ।
 कांयक विरत नें कांयक इविरत, मिश्र पष एह पिच्छांणो रे ॥३४॥
 धर्म पष माहें एकंत साघां नें घाल्या, त्यांरे सर्व थकी विरत जांणो रे ।
 अधर्म पष माहें असंजती घाल्या, त्यारें जावक नही पचखांणो रे ॥३५॥
 मिश्र पष माहें श्रावक नें घाल्या, तिणरो न्याय सुणो चित्त ल्यायो रे ।
 जे विरत कीया ते धर्म पष माहें, इविरत छें अधर्म पष माहों रे ॥३६॥
 तिण सू श्रावक नें कहीजे धर्मी अधर्मी, संजती नें असंजती जांणों रे ।
 बले श्रावक नें कहीजे विरती इविरती, पिडत नें बाल दोनू पिच्छांणो रे ॥३७॥
 श्रावक नें बरतां कर संजती कहीजें, गुण रतनां री खांणो रे ।
 बरत आदरतां इविरत राखी, तिण सू कोरों असंजती जांणों रे ॥३८॥
 श्रावक रो खांणों पीणों नें गेहणों, इविरत माहें जांणो रे ।
 तिण इविरत नें असंजती कहीजे, तिण माहें धर्म म जांणो रे ॥३९॥

कोइ श्रावक नें असणाविक देवे, ते तो असंजतीपणा माह्यो रे।
 असजती नें दान दे त्यारें, आछा फल नही लागें ताह्यो रे ॥ ४० ॥
 असजती नें दान दीयां में, पाप कह्यो छें एकतो रे।
 भगवती आठमे सतक छठे उद्देशें, इम भाष गया भगवंतो रे ॥ ४१ ॥
 साध श्रावक विण सर्व ससारी, एकंत असंजती जाणो रे।
 श्रावक री इविरत पिण असजती छें, ते रुडी रीत पिछ्छाणो रे ॥ ४२ ॥
 अधर्मी जीव च्यारां गुण ठाणां, श्रावक रो पांचमो गुण ठाणो रे।
 बाकी नव गुण ठाणा साध रिषेसर, ए ससार मे सर्व जीव जाणो रे ॥ ४३ ॥
 पांचू इद्री मोकली मेल्यां पाप, मेलया पिण लागे छे पापो रे।
 पांचू इद्री नीं तेवीस विषे सेवायां, पाप कह्यो जिणेसर आपो रे ॥ ४४ ॥
 कोइ श्रावक नी रस इद्री पोषें, पांचू रस मन गमता जीमावे रे।
 तिण रस इद्री नी विषे सेवाइ, तिण में धर्म अग्यानी वतावें रे ॥ ४५ ॥
 कोइ श्रावक री पांचू इद्री पोषे, विषें सेवारें तेवीसो रे।
 तिण माहे धर्म पल्पे मिथ्याती, ते वूडा छें विसवावीसो रे ॥ ४६ ॥
 केइ मूढ मती जीव अतत अग्यानी, ते इसडी चरचा आणे रे।
 जो श्रावक एकंत सुपातर न हुवे, तो च्यार तीरथ मे क्यू जाणे रे ॥ ४७ ॥
 च्यार तीरथ नें कही रतना री माला, तिण माला रा भेद न जाणें रे।
 गुण अवगुण सर्व माला में घाल्या, ग्यानी थकां उधी ताणें रे ॥ ४८ ॥
 च्यार तीरथ छे गुण रतना री माला, तिण में इविरत नही लिगारो रे।
 माला माहे श्रावक रा वरत घाल्या, इविरत ने काढे दीधी बारो रे ॥ ४९ ॥
 इविरत ने एकलो अधर्मी कहीजे, तिणरा अनेक माठा माठा नामो रे।
 ते रतनां री माला में किण विघ घाले, ते तो सगलाई सावद्य कामो रे ॥ ५० ॥
 श्रावक नें एकत सुपातर थापण, कोइ इसडी चरचा ल्यावें रे।
 जो श्रावक एकंत सुपातर न हुवें, तो देवलोकां किम जावें रे ॥ ५१ ॥
 श्रावक जावे छें देवलोक माहे, ते तो समकत वरत सूं जाणो रे।
 एक समकत सूं पिण देवलोक जावे, तो श्रावक रे छे समकत पचखाणो रे ॥ ५२ ॥
 इविरती समदिष्टी चोथे गुण ठाणें, ते एकत असजती जाणो रे।
 ते पिण देवलोक माहे जावे छे, ते समकत गुण पिछ्छाणो रे ॥ ५३ ॥
 श्रावक देवलोक माहे जावें छे, ते तो समकत वरत मे पूरा रे।
 त्यारें पुन बंधे छें शुभ जोगां सूं, वले पाप कर्म करें दूरा रे ॥ ५४ ॥
 जे देवलोक जावे ते निरवद गुण सूं, अवगुण लेजावे दुरगत ताणो रे।
 ज्यू श्रावक पिण देवलोक जावे छें, ते तो गुणां री बोहलता जाणो रे ॥ ५५ ॥

अभवी जीव एकंत मिथ्याती, ते निश्चं सुपातर नाही रे ।
 ते पिण कष्ट तणें परतापें जावें छें, नवमां ग्रीवेक तांइ रे ॥ ५६ ॥
 ते तो समदिष्टी साध श्रावक पिण नाहीं, ते पिण नवमें ग्रीवेक जावें रे ।
 वले सिन्यासी नें गोसाला मती पिण, ते पिण विमांणीक थावें रे ॥ ५७ ॥
 वले कृष्ण पषी तिरजंच मिथ्याती, ते पिण आठमें देव लोक जायों रे ।
 जो देवलोक जावें ते सर्व सुपातर, तो ए पिण सुपातर माह्यों रे ॥ ५८ ॥
 बारें देवलोक नें नव ग्रीवेक माहें, जीव गयो अंनती बारो रे ।
 जे देवलोक गया ते सुपातर हुवें तो, नहीं रलें अंनंत संसारो रे ॥ ५९ ॥
 समदिष्टी नें पिण कहीजें सुपातर, ते तो समकत ग्यान सूं जाणो रे ।
 उणरी इविरत नें खोटा किरतब कीधां, एकंत कुपातर पिच्छाणो रे ॥ ६० ॥
 वले मिश्र पष में पाषंड्यां नें घाल्या, कष्ट नें कहिवा रे लेखें जाणो रे ।
 ते समकत विण छें एकंत इविरती, अधर्मी पेंहलों गुण ठाणो रे ॥ ६१ ॥
 जो किरतब सूं मिश्र पष हुवें तो, साधु पिण हुवें मिश्र पष माह्यों रे ।
 साधु नें पिण कषाय माठी लेस्या आवें, माठा जोग पिण वरतें ताह्यों रे ॥ ६२ ॥
 कदे आरत ध्यान सावां नें पिण आवें, माठा आवे अधवसाय परिणामो रे ।
 तो पिण साधां नें मिश्र पष में न घाल्या, ते तो सगला सावद्य था कामो रे ॥ ६३ ॥
 माठा किरतब नें कुमारग कहीजें, इविरत नें अधर्मी कही ताह्यों रे ।
 अधर्म नें कुमारग न्यारा कह्या छें, ठाणां दशमा ठांगा माह्यों रे ॥ ६४ ॥
 धर्मी अधर्मी ने धर्माधर्मी, मिनषां माहें तीनूई जाणो रे ।
 तिरयंच माहें छें धर्मी अधर्मी, बाकी सर्व अधर्मी पिच्छाणो रे ॥ ६५ ॥
 जो किरतब सूं धर्माधर्मी हुवें तो, देवता पिण धर्माधर्मी होथो रे ।
 देवता पिण निरवद किरतब करें छें, जोग लेस्या भला हुवें सोयो रे ॥ ६६ ॥
 देवता नें एकंत अधर्मी कह्या छें, ते तो इविरत रे न्याय जाण्यो रे ।
 ज्यू धर्मी अधर्मी धर्माधर्मी, विरत इविरत में तीनू आण्यो रे ॥ ६७ ॥
 संवत अठारें वरस तयालें, आसोज विद दसम रिक्वारो रे ।
 पातर कुपातर ओलखावण काजें, जोड कीधी नाथ दुवारा मभारो रे ॥ ६८ ॥

ढाल : ॡ

दुहा

आगना श्री अरिहंत नीं, निरवद दान में जाण ।
 सावध दान नें थापवा, मूरख मांडे तांण ॥ १ ॥
 मिश्र धर्म पळ्णीयो, ते नही सूतर रो न्याय ।
 न्हाळें फद में लोक नें, कूडा कुहेतु ल्गाय ॥ २ ॥
 इविरत आश्रव में कही, श्री जिण मुख सूं आप ।
 सेव्यां सेवायां भलो जांणीयां, तीनुई करणां पाप ॥ ३ ॥
 विरत में धर्म श्री जिण तणों, इविरत अवर्म जांण ।
 मिश्र मूल दीतें नही, करे अग्यांता तांण ॥ ॡ ॥

ढाल

[अधर्मी अवनीत...]

जिण भाख्या पाप अठार, सेव्यां नही धर्म ल्गार ।
 संका मत जांणजो ए, साचो कर जांणजो ए ॥ १ ॥
 जो थोडो घणो करो पाप, तिण थी हुवें संताप ।
 मिश्र नही जिण कह्योँ ए, समदिष्टी सरघियो ए ॥ २ ॥
 कहे अग्यांती एम, श्रावक नही पोखां केम ।
 भाजन रतना तणो ए, नफो अति घणो ए ॥ ३ ॥
 इणरो नही जांणें न्याय, त्याने किम जांणी जे ठाय ।
 भगडो भालीयो ए, वेदो घालीयो ए ॥ ॡ ॥
 हिदें सुणजो चतुर सुगान, श्रावक रतना री खांण ।
 व्रतां कर जांणजो ए, उलटी मत तांणजो ए ॥ ॡ ॥
 केइ खंख वाग मे होय, आंब धतूरा दोय ।
 फल नही सारिखा ए, करजो पारिखा ए ॥ ६ ॥
 आवा सूं लिखलाय, सीचे धतूरो आय ।
 आसा मन अति घणो ए, अंब लेवा तणी ए ॥ ७ ॥
 पिण आंब गयो कुमलाय, धतूरो रह्यो इहिवाय ।
 आम ने जोवें जरें ए, नेणा नीर भरें ए ॥ ॡ ॥
 इण दिष्टते जांण, श्रावक व्रत अंब समांण ।
 इविरत अलभी रही ए, धतूरा सम कही ए ॥ ९ ॥

सेवारे	इविरत	कोय,	व्रतां	साह्यो	जोय ।
ते भूला	भर्म में	ए,	हिंसा	धर्म में	ए ॥ १० ॥
इविरत	सूं बंधे	कर्म,	तिणमें	नहीं निश्चें	धर्म ।
तीनूं	करण सारिखा	ए,	ते विरला	पारिखा	ए ॥ ११ ॥
कहे	खायां बंधइ	कर्म,	खायां मिश्र		धर्म ।
ए भूळ	चलावीयो	ए,	मूरख मन	भावीयो	ए ॥ १२ ॥
ए मिश्र	नहीं	साख्यात,	तो कांय सरघे	ए बात ।	
अकल	नही - मूढ	में - ए,	ते पडिया	रुढ में	ए ॥ १३ ॥
पोतें	नहीं - बुध	प्रकास,	लागों कुगरां	रो पास ।	
ते निरणों	नहीं	करे ए,	ते भव कूवे	पडे	ए ॥ १४ ॥
साधु	संगत	पाय,	सुणें एक	चित्त	लगाय ।
पखपात	परहरें	ए,	खबर बेगी	पडें	ए ॥ १५ ॥
आणंद	आदि दे	जाण,	श्रावक	दसूंई	वखाण ।
त्यां	पडिमा आदरी	ए,	ते चरचा	पाधरी	ए ॥ १६ ॥
जे जे	कीघो छे	त्याम,	आंणी	मन	वैराग ।
ते करणी	निरमली	ए,	करनें	पूरी रली	ए ॥ १७ ॥
पिण	बाकी रह्यो	आगार,	इविरत	में आंण्यो	आहार ।
आपणी	न्यात	में ए,	समझो इण	बात में	ए ॥ १८ ॥
इविरत	में दे	दातार,	ते किम	उतरे भव	पार ।
मारग	नहीं मोष	रो ए,	ए छादो	लोक रो	ए ॥ १९ ॥
दाता	नें अन	सुध थाय,	पिण पातर	इविरत में	ल्याय ।
ते किम	तारसी	ए,	पार उतारसी		ए ॥ २० ॥
जूनो	छे गूढ	मिथ्यात,	तिणरें	किम बेसें	ए बात ।
कर्म घणा	सही	ए,	समझ	पडे नही	ए ॥ २१ ॥
उपासग	उवाई	उपंग,	वले		सूयाडाअंग ।
सूतर	थी उधरी	ए,	इविरत	अल्ली करी	ए ॥ २२ ॥
आगम	नीं दे	साख,	श्री वीर	गया छे	भाख ।
भवीयण	निरणों	करे ए,	तो भव	सागर तिरें	ए ॥ २३ ॥
देइ	सुपातरां	दांन,	न करें	मन	अभिमान ।
संसार	परत करें	ए,	सिव	नगरी वरें	ए ॥ २४ ॥
दांन	सूं तिख्या	अनत,	भाष्यो श्री		भगवंत ।
ते दांन	न जांणीयो	ए,	न्याय- न	छांणीयो	ए ॥ २५ ॥

साध सुपातर सोय, दाता सुभक्तो होय ।
 असणादिक सुध दीयो ए, तिण लाभ मोटो लीयो ए ॥ २६ ॥
 साध सुपातर जाण, दाता सुध पिच्छाण ।
 आहारदिक असुध सही ए, वेहराया नफो नही ए ॥ २७ ॥
 जो मिले मोटा अणगार, पिण सुध नही दातार ।
 असणादिक सुध सही ए, पिण दीघां नफो नही ए ॥ २८ ॥
 आय मिले कुपातर कोय, दाता अन सुध छे दाय ।
 प्रतिलाभ्या तिरे नही ए, श्री जिण मुख सूं कही ए ॥ २९ ॥
 धारो मन आण ववेक, तीनां मे सुध नही एक ।
 प्रतिलाभ्यां धर्म नही ए, सूतर मे इम कही ए ॥ ३० ॥
 पातर दाता ने आहार, तीनूं असुध विचार ।
 धर्म न भावें जती ए, यो झूठ जाणो मती ए ॥ ३१ ॥



ढाल : ६

डुहा

दस दान भगवंते भाषीया, सूतर ठाणांग मांय ।
गुण निपन्न ज्यांरा नांम छे, पिण भोलां नें खबर न कांय ॥ १ ॥
धर्म अधर्म दोय मूलगा, प्रसिध लोक में एह ।
आठां रो अर्थ उंधो करे, मिश्र धर्म कहे तेह ॥ २ ॥
मिश्र धर्म परूप नें, कूडो वाद करंत ।
पिण आठे अधर्म में जिण कह्या, सांभलो एक दिष्टंत ॥ ३ ॥
आंबा नें नींव रुंख नो, जूदो जूदो विसतार ।
नींबभर नींबोली तेल खल, ए नीब तणो पिरवार ॥ ४ ॥
इम आठेइ दान जाणज्यो, अधर्म तणो पिरवार ।
धर्म दान में आवें नही, श्री जिण आग्या बार ॥ ५ ॥
इतरे समझ पडे' नही, तो सुणो जूजूआ भेद ।
विवरो सुघ बतावीयां, म करो क्रोध नें खेद ॥ ६ ॥

ढाल

[जांरो छे राय तूं रत]

किरण दीन अनाथ ए, मलेच्छादिक त्पारी जात ए ।
रोग सोग नें आरत ध्यान ए, त्यांनं दे ते अणुकंपा दान ए ॥ १ ॥
देवें मूलादिक जमीकंद ए, त्यांमें अनंत जीवां रा फंद ए ।
इण दीवां कहे मिश्र धर्म ए, ज्यांरे उदें आयो मोह कर्म ए ॥ २ ॥
लूण आदि दे पृथवी काय ए, आपें अगन पांणी ढोले वाय ए ।
देवें सस्त्र विवध प्रकार ए, ए दान थी रुलें संसार ए ॥ ३ ॥
बंदीवांनादिक नें काज ए, त्यांनं कष्ट पड्यां दे साम ए ।
थोरी बावरी भील कसाइ नें ए, सचित्तादिक द्रव्य खवाइ नें ए ॥ ४ ॥
छोडावें गर्थ दे तांम ए, संग्रह दान छे तिण रो नांम ए ।
ए तो संसार नों उपगार ए, अरिहंत नीं आग्या बार ए ॥ ५ ॥
ग्रह करडा आया जांण ए, सुणी लागी पनोती आंण ए ।
फिकर घणी मरवा तणी ए, वले कुटंब तणा जतन भणी ए ॥ ६ ॥

भय रो घालीयो देवें आंम ए,	भय दांन छें तिणरो नांम ए ।
ते ले छे कुपातर आय ए,	तिण मे धर्म किहां थी थाय ए ॥ ७ ॥
खरच करें मूआ नें केडें ए,	जीमावें न्यात नें तेडें ए ।
तीनां वारां दिनां उनमान ए,	ते चोथो कालुगी दांन ए ॥ ८ ॥
वले वरस छ मासी सराष ए,	जिम जिम छे कुल मरजाद ए ।
मूआ पेली खरचे कोय ए,	घणा नें करें तिरपत सोय ए ॥ ९ ॥
आरंभ कीया नही धर्म ए,	जीमायां पिण ववइ कर्म ए ।
बुधवंत करो विचार ए,	नही संवर निरजरा लिंगार ए ॥ १० ॥
घणा नी लज्या वस थाय ए,	सांकडे पडीयो देवें ताय ए ।
देवें सचितादिक धन धान ए,	ते पांचमो लज्या दांन ए ॥ ११ ॥
ए सावद्य दान साख्यात ए,	ते दीयो कुपातर हाथ ए ।
कोइ कहे हुवो मिश्र धर्म ए,	ते निश्चें वांछें कर्म ए ॥ १२ ॥
मूकलावो परांगी मुसाल ए,	सगा नें जूआ जआ संमाल ए ।
जे द्रव्य दे जस रे कांम ए,	गरब दांन छें तिणरो नांम ए ॥ १३ ॥
किरतनीया वादी मल ए,	रावलियां रांमत चल ए ।
नट मोपा आदि क्लेष ए,	दांन दें त्यानें द्रव्य अनेक ए ॥ १४ ॥
ए दांन थी वचे कर्म ए,	मूरख कहे मिश्र धर्म ए ।
ज्यारी प्रतख भूठी बात ए,	छोटी सरघा मूल मिध्यात ए ॥ १५ ॥
गणिकादिक सेवा कुगील ए,	दांन दे त्यानें करवा कील ए ।
ए प्रतख खोटो कांम ए,	अधर्म दान छे तिणरो नाम ए ॥ १६ ॥
सूतर अर्थ सीखाय ए,	सुध मारग आणे ठाय ए ।
आपें समकत चारित एह ए,	धर्म दान छे आठमो तेह ए ॥ १७ ॥
वले मिले सुपातर आण ए,	देवे निरदोषण द्रव्य जाण ए ।
ए दांन मुगत रो माग ए,	दीयां दलदर जावे भाग ए ॥ १८ ॥
छ्काय मारण रो त्याग ए,	कोइ पचखें आण वेंराग ए ।
अभय दांन कन्हो जिणराय ए,	धर्म दांन मे मिलियो आय ए ॥ १९ ॥
सचितादिक द्रव्य अनेक ए,	जघारा जिम देवें वशेल ए ।
पाछो लेवा रो मन ध्यान ए,	नवमों कार्यति दांन ए ॥ २० ॥
लेणात ने जिम दे जेह ए,	हाती नेहतादिक दे तेह ए ।
पाछो लेवा रो एकंत काम ए,	कतंती दांन तिणरो नांम ए ॥ २१ ॥
नवमे दसमे दांन ए चाल ए,	धुर वोहरा वालो ख्याल ए ।
ग्यांनी जाणें सावद्य मांय ए,	तो मिश्र किहां थी थाय ए ॥ २२ ॥

ए दस दान. तणो विचार ए, संखेप कच्छों विसतार ए।
 वीर नीं आग्या में एक ए, आग्या वारे दान अनेक ए॥ २३ ॥
 असंजती श्रावक घरे आवियो ए, निरदोषण आहार वैहरावियो ए।
 तिणनें दीयां एकंत पाप ए, भगोती में कच्छों जिण आप ए॥ २४ ॥
 इम सांभल करो विचार ए, आठे अघर्म तणो पिरवार ए।
 घणा सूतरां नीं शाख ए, श्री वीर गया छें भाष ए॥ २५ ॥
 घर्म अघर्म दान छे दोग ए, पिण मित्र म जाणो कोय ए।
 किम सरखें मिय्याती जीव ए, मूल मे नही समकल नीव ए॥ २६ ॥

ढलल : ७

दुहल

केइ भेषघरल भलग थकल, त्यारे दयल नही घट मलय ।
हलसल घर्म परुपीयो, ते नही सूतर रो न्यलय ॥ १ ॥
दयल दयल मुख सूं कहे, पलण दयल री खवर न कलय ।
भोलल ने पलड्यल भरम मे, ते हणे जीव छकलय ॥ २ ॥
उवे हलसल घर्म दिढलवतल, वले वले फलरतल वण ।
आप डूवे ओरलं ने डबोवतल, फूटल अर्भलतर नेण ॥ ३ ॥
'हलसलवर्मी' री परतीत सूं, डूवल जीव अनेक ।
त्यारी खोटी सरघल परगट करुं, ते सुणओ आण ववेक ॥ ४ ॥

ढलल

[आ अशुकम्यल जलण आगनल मे]

थलवक ने महोमलहल छकलय खवलवे, वले छकलय मारे ने जीमलवे ।
ए जीव हलसल रो रहज खोटी, तलण मलहे घर्म अनलरज वतलवे ।
यल हलसल घर्म्यल रो नलरणो कीओ ॥ १ ॥
छकलय जीवलं रो तो घमसलण कीघो, जीमलय कीयो उणनें कर्म सूं भारी ।
दोनू कलनी जेयल दीसे दिवललो, इण मलहे घर्म कहे भेषघरली ॥ २ ॥
छकलय जीवल ने खलवलय खवलवल, अरलहंत भगवत पलप वतलवे ।
ए वचन उथलपे नें मलश्र परुपे, तलण दुष्टी रे दलल दयल न थलवे ॥ ३ ॥
रलंकलं ने मलर धीगल ने पोख्यलं, ए तो वलत दीसे घणी गेरी ।
तलण मलहे दुष्टी घर्म वतलवे, ते रलक जीवल रल उठ्यल वेरी ॥ ४ ॥
पलडलल भव पलप उवलयल तलण सूं, ते हुआ एकेद्री पुन पखारी ।
त्यलं रलक जीवलं रे उसभ उदे सूं, लोकरलं सहलत ललगू उठ्यल भेषघरली ॥ ५ ॥
कुपलतर दलंन मे पुन परुपे, तलणसू लोकरलं जीवलं ने हणे वसेप ।
कुगुर एहवल चलल चललवे, ते भलष्ट हुआ लेइ सलधु रो भेष ॥ ६ ॥
कोइ पूछे तो कहे मून सलभलं म्हे, पलण सलनी कर जीव मरलवण ललगल ।
हेठलो जेवरो खेव अलगल हुवे, ते वलरत वलहुणल कहीजे नलगल ॥ ७ ॥
कोइ मलली रे ओडो भूखो आय उभो, तलणने मूला गलजर घपलय खवलवे ।
ए एकत पलप उघलडो दीसे, तलणमेंड मूरख घर्म वतलवे ॥ ८ ॥

यह आँकडी प्रत्येक गलथल के अन्त में है ।

बेंगण बालोलादिक अनेक नीलोती, कोइ रांघें रांघें पोखें पर प्राणी ।
 इण मांहि दुष्टी धर्म बतावें, दुरगत जावा री आ अहलाणो ॥ ६ ॥
 खरच आगरणी नें भात व रोटी, अनेक आरंभ कर न्यात जीमवें ।
 ए सर्व संसार तणा किरतब छें, तिण मांहि धर्म अग्र्यानी बतावें ॥ १० ॥
 भेषवारी श्रावक नें सुपातर थापें, तिण नेहूत जीमायां कहें मुगत रो धर्मो ।
 त्यानिं सूतर सख ज्युं परगमीयो, ते हिंसा विडाय बांचे मूढ कर्मो ॥ ११ ॥
 कोइ बीस पचीस श्रावक नें नेहूतर, घर जाय घर रां नें धवें लगवें ।
 केइ मूंग दलें केइ गेहूं पोसें, केइ अगन सखूची नें चूलो घुकावें ॥ १२ ॥
 कोइ लूण पाणी घाल आटो गिलावें, कोइ आषण दे उरें चोखा दालो ।
 कोइ रोटी तवें न्हांवें खीरां सेकें, केइ तरकारी रांघ लेवें ततकालो ॥ १३ ॥
 छ काय जीवां री हिंसा करनें, अनेक चीजां रांघ कीधीं रसालो ।
 पछें दांतण कराय नें भाणें वेसाण्या, बाजोट वेइ मेली उपर थालो ॥ १४ ॥
 पछें भोजन पुरसें भेला बेंठा, आप आप तणों पेट सगलांइ भरीयो ।
 भेषवारी सहित श्रावकां नें पूछीजें, यामें कुण कुण डूबो नें कुण कुण तिरियो ॥ १५ ॥
 जब जीमण वाला नें पाप बतावें, हिंसा करण वाला नें कहें छें पापी ।
 जीमावण वाला नें धर्म कहें छें, आ सरखा भेषघाख्यां थापी ॥ १६ ॥
 हिंसा करण वाला ने जीमण वाला रे, आ पाप री उतपत किण सूं चाली ।
 वले छ काय रा जीव मूंसा त्यारो, नेहूत जीमावण वालो दलाली ॥ १७ ॥
 इण पाप दलाली नें धर्म पळवें, ते पड गया मोह मिथ्यात अंधेरे ।
 ए प्रतब हिंसाधर्मी अनारज, केइ वूड गया त्यां कुगुरां रें केइ ॥ १८ ॥
 श्रावक नें नेहूत जीमावें तिणमें, धर्म कहें मूढ बिनां विचारो ।
 मुंहपती बांध नें मीठा बोलें, पिण जीम बहें तीखी ज्युं तरवारो ॥ १९ ॥
 जो जीव हणता नें संका आवें तो, ते तुरंत हणें सुण कुगुरां री वाणी ।
 पेंहला हिंसा कीयां पछें धर्म बतावें, आ कुगुर वाणी जेंसी वेंहती घाणी ॥ २० ॥
 किण ही रांक गरीब नें दांत उदकीयो, उदकीयो दांत श्रावक नें दरावें ।
 घनवंत धर्म रो लेवण लाग्ता, पछें रांकां रे हाय क्हासूं आवें ॥ २१ ॥
 वले लाडू खोपरा रोकड नांणो, सांती कर सामग्री में दरावें ।
 कुगुर एहवा चाला चलावें, पेट भरां जाणें पातरें आवें ॥ २२ ॥
 गाय सुखी हुवां गरभ सुखी हुवें, कूवें पाणी हुवें तो अवलें आवें ।
 इण विष्टें पेट रें कारण पापी, आप आप तणी सामग्री में दरावें ॥ २३ ॥
 ते देण वाला नें तो धर्म बतावें, लेवाल नें तो कहें पापज होवें ।
 तो धर्म करण नें मूढ अग्र्यानी, सर्व सामग्री नें कांय उदोवें ॥ २४ ॥

गर्व नामग्री नें पाप लगाया, ते पिण निश्च होमी पाप नूं भारी ।
 ए माची मर्या ने उयो न्हामें, त्या चित्ल्यां ने गुर मिलीया भेषधारी ॥ २५ ॥
 धर्म करे ओरां नें पाप लागाए, तिण धर्म ने कदेय म जांगो हडो ।
 भागीकर्म लोका रे उमभ उदे सूं, भेष धार्या मन काटयो कूडो ॥ २६ ॥
 कुमानर दान री चरचा करतां, पडिमाधारी श्रावक ने मुख आणें ।
 मोला लोकां ने मिष्ट करण ने, ते पिण भेद मिथ्यानी न जाणें ॥ २७ ॥
 पडिमाधारी श्रावक वेहरी ने आणें, तिणने तो एतंत पाप वतावे ।
 उवें दातार ने तो धर्म कहे पिण, प्रश्न पूछ्यां रा जाव न आवे ॥ २८ ॥
 पडिमाधारी श्रावक नें पाप लागों तो, दातार ने धर्म हुवो किण लेखें ।
 उण इचिरत सेवण दान दीयो छे, तिण किरतव साह्यों अग्यांनी न देखे ॥ २९ ॥
 पडिमा पडिमा कर रह्यां मूरख, ते पडिमा तो छे श्री जिणवर धर्मों ।
 पिण पडिमा आदरतां इचिरत राखी, ते सेव्यां सेवायां बंधसी कर्मों ॥ ३० ॥



ढलल : ॡ

दुहल

गलण ढलगनलडलरली कलरलडल करुं, तलहलं गलव तणी हुवुं घलत ।
 गे हलसलधरुडलं छुं गलवडल, तलणरुु डलड न गलणुं तललडलत ॥ १ ॥
 गलव डलरुं छुं छ 'कलड रल, तलणरुु डलड न गलणुं ललणलर ।
 तुडलरुु खुुतुु सरघल डरगड कहुं, ते सुणगुु वलसतलर ॥ २ ॥

ढलल

[चतुर वलचलर करुु नै देखु]

अतल हल दुषुतुु हुवुं हलसलधरुडलं, ते तुु हलसल धरुडल दुडलड रे ।
 दुडल धरुडल तलणसुं डलडकलवुं, दुुरगतल डलहे डुुंहचलवुं रे ।
 हलसल धरुडलं रुुु गंग न कुुुगुं* ॥ १ ॥
 सलघ नुं तडलवुं अगन सुं अगुडलनी, ते तुु डलड अठलरलं डुं डुंहुलुु रे ।
 तलण डलहुं डुन डरुडुं अगुडलनी, तलणनुं डलडत कहुुगुं के गहुंहुलुु रे ॥ हलं २ ॥
 सलघु नुं तडलडलं डुं डुन डरुडुं, ते तुु डुड डलधुडलतुु छे डुुरुु रे ।
 अगन रुु हलसल डुं डलड न गलणुं, ते डत नलशुुवुंइ कुुडुु रे ॥ ३ ॥
 सडलड सुतवन कहे डुख उघलडे, गड वलड गलवलं रुु हुवुं घलतुु रे ।
 केइ कहुं वलडकलड रुु डलड न ललगुं, अ उंव डतुु रुु छुं डलतुु रे ॥ ॡ ॥
 शुरलवक नुं डलहुुडलं छु कलड खवलवुं, छु कलड डलरुु नुं गलडलवुं रे ।
 ँ डुरतष डलड उघलडुु दुुसुं, तलणडुं कुगुरु धरुडल वतलवुु रे ॥ ॡ ॥
 सलघलं नुं वलदण गलतल डलरग डुं, तस थलवर रुु हुवुं घलतुु रे ।
 गुडलं सुं गलव डुडल गुडलने डलड न सरघुं, तुडलरुु घड डलहुं घुुर डलधुडलतुु रे ॥ ॢ ॥
 वलण उडुडुुगुं डलरग डलहुं चलुं, गड डरुं गलव छु कलडुु रे ।
 ँ डुरतष डलड उघलडुु दुुसुं, डलण वलकललं ने खडर न कलडुु रे ॥ ॣ ॥
 वलण उडुडुुगुं डलरग डलहे चलुं, कडे न डरुं गलव कलण डलरुु रे ।
 तुु डलण वुुर कहुुगुं छुं तलण नुं, छु कलड रुु डलरणहलरुु रे ॥ ॡ ॥
 गुु गलव डुडल तुडलरुु डलड न ललगुं, तुु गुुडुु गुुडुु ने कुण हललुं रे ।
 नलसंक थकलं छु कलड गलवलं नुं, डरदतल डरदतल चलुं रे ॥ ॡ ॥
 डुुतल डुुतल रलगल गलड वुुर वलदण नुं, चडरंगणी सेनुडल ले सलथुु रे ।
 तुडलं अलरड कलघल अनेक डुरकलरुं, तलहलं हुइ छु कलड रुु घलतुु रे ॥ १० ॥

*यह आंकडुु डुरतुुके गलथल के अनुत डुं है ।

कोइ कहे जीव मूआ रो पाप न लागो, ते तो उठी जठा थी भूठी रे।
 ए प्रतष पाप उवाडो न सूभे, त्यारी हीया निलाड री फूटी रे ॥ ११ ॥
 जो वादण जावे ईया जोवतां, तो जीवा री हिंसा न थायो रे।
 विण जोयां चाले तो प्रतष हिंसा, तिण सू निरुचे लागे आयो रे ॥ १२ ॥
 कूंडापथी रो आचार कूंडापथी सूं, चोडे लोका मे कहणी न आवें रे।
 एको दुको मिले कोइ आप सारीषो, तिण आगे कायक वतावे रे ॥ १३ ॥
 उणने भरमाय भरमाय कूडे वेंसावें, माठी माठी वसत खवावे रे।
 पछे घीरा घीरा ओ पिण इसडो हुवे, जब ओ पिण कूडा घर्म दिढावे रे ॥ १४ ॥
 ज्यू जीव खवाया मे पुन कहे त्यासू, चोडे लोका मे कहणी न आवें रे।
 एको दूको कोइ आय मिले जब, थोडोसो रहस्य वतावे रे ॥ १५ ॥
 इम भोला नें भरमाय मत माहे घालें, पछे हिंसा में घर्म सीखावें रे।
 पछें ते पिण त्यां सा रीपो होय जावे, जब जीव मारता संका न आवे रे ॥ १६ ॥
 कूंडाघर्मी कूडे वेस जीमे जब, मन रलीयायत थायो रे।
 ज्यूं हिंसाघर्मी हरषे जीव खवायां, पुन नीपनो जाणें तिण माह्यो रे ॥ १७ ॥
 जीव खवाया मे पुन जाणे छें, त्यांरो दया घट माही सूं न्हाठी रे।
 वले छ काय हणे जीमाया घर्म जाणे, एहवी कुगुरां दीधी मति माठी रे ॥ १८ ॥
 जीव खवाया पुन कहे छे, पिण पूछ्या पलटें वाणो रे।
 ते छाने छाने सरघा सीखावे, ते तो जार गरभ जिम जाणो रे ॥ १९ ॥
 जमीकंद मे जीव अनता, ए भगवंत वायक जांणी रे।
 मूला खवायां मे पुन परूपे, आ कुगुरा री वांणी रे ॥ २० ॥
 कर्म घणा ने वोहल ससारी, आ सरघा साची कर मानी रे।
 कुगुर तो वीद वण्या नरक जावा, विकला ने साथे लिया जांणी रे ॥ २१ ॥
 ढाका वंगाला ने कागर देस रा, वीद्या मतर धुतारो रे।
 इण सरघा रो इचरज आवें, ओ घर्म सीखायो के धारो रे ॥ २२ ॥
 खरच आगरणी ने भात व रोटी, सगा सेण नेहत जीमायो रे।
 इण लूंट लूंट मे पुन परूपें, ओ कुगुरां कूड चलायो रे ॥ २३ ॥
 आ सरघा घराए लोकां ने, हुवा नरक अधिकारी रे।
 वडा उट जिम आगे चालें, विकलां लांरें वाधी क्तारी रे ॥ २४ ॥
 छ काया रा तो पीहर वाजे, सांग साधां रो धरीयो रे।
 जीव खवाया मे पुन परूपे, ओ पीहर पूरो पढीयो रे ॥ २५ ॥
 गृहस्थ नें मांहोमां छ काय खवावें, ते पाप थानक छें पेहलो रे।
 तिण मांहे मूरख घर्म वतावें, ते पिंडत कहीजे के गंहलो रें ॥ २६ ॥

संवत् अठारें नें वरस तयाले, आसोज विद आठम सुकरवारो रे।
 हिंसाधर्मी ओलखावण काजे, जोड कीवी नाथ दुवारा मभारो रे ॥ २७ ॥

ढाल : ९

दुहा

जिण आगम माहें इम कह्यो, श्री जिण मुख सूं बाप ।
 अर्थ अनर्थ धर्म कारणे, जीव हण्प्या छें पाप ॥ १ ॥
 केइ अग्यांनी इम कहें, धर्म काजे हणें जीव कोय ।
 चोखा परिणामां जीव मारीयां, त्यांरो जाबक पाप न होय ॥ २ ॥
 जीव मारें छें उदीर नें, तिणरा चोखा कहे परिणाम ।
 ते ववेक विकल सुघ बुघ विना, वले जेनी घरावें नाम ॥ ३ ॥
 साचां नें वादण जातां नें वेंहरावतां, तिहां जीव तणी हुवें घात ।
 तिणरो कहे पाप लागों नही, एहवी उंव मत्यां री छें बात ॥ ४ ॥
 इण विघ करें छें परूपणा, ते विकलां माने लीषी बात ।
 त्यारी खोटी सरघा परगट करूं, ते सुणजो विख्यात ॥ ५ ॥

ढाल

[चतुर विचार करी ने देखो]

कोइ गाडी जोतर साचां ने वादण, चोमासा में सो कोसां जावें रे ।
 जब लटां गजाया ने कीडी मकोडा, मारग माहें बोहत चिंथावें रे ।
 या हिंसा धर्म्यां रो संग न कीजे* ॥ १ ॥
 वले नीलो आलो नीलण फूलण चोमासें, ते पिण जीव चीथ्या जावे रे ।
 वले नदीयां अनेक उतरें मारग मे, ठाम ठाम रसोई नीपजावें रे ॥ यां० २ ॥
 इत्यादिक हिंसा कीषी अनेक प्रकारें, तिण रो पाप लागों कहें नाही रे ।
 इण विघ हिंसा माहे धर्म थापें, ते विकलां री परषदा मांही रे ॥ ३ ॥
 कहे साघा नें वादण चाल्यो जठाधी, सगलोई धर्म कारज जाणो रे ।
 विचें जीव मूआं त्यारो पाप न लागें, आ पाषडीयां री वाणो रे ॥ ४ ॥
 पांणी री भ्नीक पडे तिण कालें, कोइ वरसतां वादण जावें रे ।
 पांणी रा जीव मूआ छें त्यारो, पाषडी कहें पाप न थावें रे ॥ ५ ॥
 वले उघाडे मुख बातां करतां चालें, सगपण सोदा करें मारग मांही रे ।
 इत्यादिक सावध करे छें वादण जाता, तिणरो पिण पाप कहें छें नाही रे ॥ ६ ॥
 इण विघ जीव मूआं रो पाप न जाणें, तिण रो नियमा निश्चे मत कूडो रे ।
 ते मूठा थका जेनी नाम घरावे, पिण जिण मारग थी दूरो रे ॥ ७ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

केइ ईयां जोवतां वांढण जावें, केइ जीवां नें मरदता जावें रे ।
 केइ गाडें घोडे रथ बेंसनें जावें, कहें किणनेइ पाप न थावें रे ॥ ८ ॥
 इण लेखें तो इयां जोवण वाला नें, लाभ हुवो नही काई रे ।
 हिवें इसडो हिंसा धर्म्या री सरघा रा, जाब धारों मन माहीं रे ॥ ९ ॥
 सामायक संवर पोषा में, साधां नें वांढण जावें रे ।
 जब जीव तणी कोइ घात हुवें तो, ते प्राच्छित ले सुघ थावें रे ॥ १० ॥
 सामायक माहें वांढण जातां हिंसा हुवें, तिणरो पाप लागं प्राच्छित आवें रे ।
 तो ओर वांढण जातां हिंसा हुवें छें, तिण ने पाप क्यूं नही थावें रे ॥ ११ ॥
 साधां नें वांढण जातां मारग में, करें जिंसा फल पावें रे ।
 सावद्य निरवद तीनूं जोगां सूं, पुन पाप न्यारा न्यारा थावें रे ॥ १२ ॥
 वांढण जातां मन जोग सुघ हुवें तो, एकंत निरजरा थायो रे ।
 वचन नें काया असुघ हुवें तो, तिण सूं पाप लागें छें थायो रे ॥ १३ ॥
 कदे काया नें वचन दोनूं जोग सुघ हुवें, त्यांसूं पिण हुवें निरजरा धर्मो रे ।
 एक मन रो जोग असुघ रह्यो बाकी, तिण सूं लागें पाप कर्मो रे ॥ १४ ॥
 कदे तीनूंइ जोग सुघ हुवें तो, पाप न लागें लिगारो रे ।
 इण विघ वांढण जातां मारग में, तीनूं जोगां रो व्यापार न्यारो रे ॥ १५ ॥
 उसभ जोगां सूं पाप सुभ जोगां सूं पुन, तिण माहें म जाणों फेरो रे ।
 सावद्य निरवद रा फल जूवा जूवा छें, दूध पांणी ज्यूं जाणों निबेडो रे ॥ १६ ॥
 पछें भाव सहीत तिण साधां नें वांढा, करमां री कोड खपावें रे ।
 उतकट्ठे पद तीर्थकर पामें, मुगत में वेगो सिघावें रे ॥ १७ ॥
 साधां नें वांढण जावण आवण रो, ए पिण दोनूं किरतब न्यारो रे ।
 वले तीजो किरतब वंदणा रो न्यारो, यां तीनां रो सुणों विसतारो रे ॥ १८ ॥
 साधां नें वांढण जावें ते वंदणा रे कारण, पाछो घर रे कारण घरे आवें रे ।
 साधां नें वंदणा कीधी तिखुतो करनं, ए तीनूं करणी भेली न थावें रे ॥ १९ ॥
 कोइ उघाडे मुख बोल साधां नें वेंहरावें, जब मारें छें वाज्जायो रे ।
 ते वाज्जाय मूखां रो कहें पाप न लागें, इम बोलें पाषंडी वायो रे ॥ २० ॥
 कोइ साधां नें असणादिक आहार वेंहरावें, ते बोलें छें मुख उघाडे रे ।
 काया रो जोग तो निरवद तिणरो, वचन सूं वाज्जाय नें मारें रे ॥ २१ ॥
 उघाडें मुख बोलें वाज्जाय माख्यां, तिणरो लागें पाप कर्मो रे ।
 काया रा जोग सूं जेंणा करनं वेंहरायो, तिणरो छें एकंत धर्मो रे ॥ २२ ॥
 काया रा जोग सूं साधां नें वेंहरावें, जो काया सूं हुवें जीव घातो रे ।
 जब तो साधु तिण रा हाथां सूं, वेंहरें नहीं तिल मातो रे ॥ २३ ॥

काया रा जोग सूं करतो अजेणा, साघां नें असणांदिक् देवे रे ।
 फूंक देवे करे भट्टको फट्टको, जब तो साघु मूल न लेवे रे ॥ २४ ॥
 मन वचन तणा जोग दोनूं असुघ, एक काया तणों जोग चोखो रे ।
 तिणरा हाथां सूं साघ वेंहरें तो, मूल नही छे वोखो रे ॥ २५ ॥
 साघु वेंहरें काया रो सुघ जोग हुवें तो, जब वेहृखां वेहृयायांघर्मनिसंकघर्मी रे ।
 मन वचन रा जोग असुघ हुवे तो, तिणरो तिणनें इज लागें कर्मों रे ॥ २६ ॥
 संवत अठारें ने वरस तयांले, आसोज सुद चवदस सनीसर वारो रे ।
 हिंसाघर्मी ओलखावण काजें, जोड कीची कोठाख्या मभारो रे ॥ २७ ॥



ढाल : १०

दुहा

केइ साधु बाजें लोक में, त्यांरी सरधा अतंत अजोग ।
ते जथातथ परगट कळें, ते सांगलजो सहू लोग ॥ १ ॥
जीव मारे नें जीव बचावीयां, कहें धर्म नें पाप ।
ए कर्म उदें पंथ काढ नें, कीधी मिश्र री थाप ॥ २ ॥
इम मिश्र कहें छें तेहनें, न्याय निरणों नही घट माय ।
वले बंध नहीं त्यारें बोलीयें, प्रश्न पूछ्यांतुरंत फिर जाय ॥ ३ ॥
त्यांरी सरधा छें मिलती लोक सूं, जिण मारग थी विपरीत ।
त्यांरी एक धारा वांणी नहीं, बोली माहें फूट फजीत ॥ ४ ॥
सरधा परमाणें बोलें नहीं, बोलें आवें ज्यूं मन दाय ।
हिवें सरधा कहूं छूं तेहनीं, ते सुणजो चितल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[एक चोर चोरे धान पार को०]

काचो पांणी पावें अणुकम्पा आंण नें, तिण रो कहें छें रे मिश्र धर्म नें पाप ।
धर्म अणुकम्पा रो पाप पांणी तणो, इण विधरें करें मिश्र री थाप ।
भव जीवां तुम्हे मिश्र म मानजो * ॥ १ ॥
जो काचो पांणी पायां मिश्र धर्म हूवें, ते पांणी खोस्यां रे तो पिण मिश्र धर्म होय ।
अणुकम्पा आणे पांणी रा जीवां तणी, पाप लागो रे अंतराय तणों सोम ॥ २ ॥
कोइ अणुकम्पा आंण पंखिया तणी, मुख आगों रे न्हाखें एकंद्री आंण ।
कोइ अणुकम्पा आंण एकंद्री तणी, उरा लेई रे मेलें एकंत आंण ॥ ३ ॥
पंखियां री अणुकम्पा आंण नें, एकंद्री न्हाख्यां रे धर्म नें पाप होय ।
तो एकंद्री नी पिण अणुकम्पा आंण नें, पंखी आगा सूं रे उरा लीधां मिश्र जोय ॥ ४ ॥
जमीकंद आदि बैंगण बालोल नें, दान देवें रे अणुकम्पा आंण ।
कोइ अणुकम्पा आंण जमीकंद री, खोस लेवें रे खातां आगा सूं तांण ॥ ५ ॥
अणुकम्पा आंण जमीकंदादिक दीयां, तिण नें होसी रे धर्म नें पाप दोय ।
तो जमीकंदादिक री अणुकम्पा आंण नें, खोस लीधां रे दोनूं क्यूं नही होय ॥ ६ ॥
कोइ अणुकम्पा आंण रांक गरीब री, छ ही काया रे हणतें देवें सतूकार ।
कोइ अणुकम्पा आंण छक्राय री, वरज राखें रे कहे तूं मत दें लिगार ॥ ७ ॥

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

छ ही काय हण रांका नें पोखीयां,
तो अंतराय दे राखी छ काय ने,
खरच व रोटी आदि जीमण करे,
तिण नें धर्म नें पाप दोनू कहें,
छ काय हणे नें न्यात पोषीयां,
तो अंतराय दें राखें छ काय ने,
खणावें कूवा बाव तलाव नें,
घणा रे साता हुइ रो धर्म हुवो कहे,
तो कूवा तलाव खणावें तेह ने,
घणा जीव बच्यां रो धर्म हुवें,
जिण जिण किरतब मे मिश्र कहे,
जो अतराय तणो पाप लागसी,
धर्म पाप हुवे एक करणी कीया,
ते बरज राख्या पिण दोनू नीपजें,
पाप छूटां रे छूटें छे धर्म तेहनो,
इसडी दोघड लागी मिश्र धर्म मे,
दान दीधां धर्म पाप दोनू हुवे,
तिण मे सदा इविरत तिण रे पापी री,
असंजती इविरती जीव तेहने,
भगोती रे सूत खघ आठ में,
तिण दान नें साधा जावक छोडीयो,
भलो पिण नही जाणें तिण दान नें,
इण दान तणी परसंसा करे,
सुयगडा अग अघेन इग्यार मे,
तिण दान नें परससैं अग्यानी धकां,
श्री वीर वचन उथाप ने,
मिश्र करणी माहे लेस्या किसी,
परिणाम मिश्र मे बरते केहवा,
लेस्या ध्यान अधवसाय परिणाम ते,
धर्म भला माहे पाप भूडा मभे,
इम पूछ्या रो जाब न उपजें,
तिण सूं आल पंपाल बके घणों,

तिण नें होसी रे धर्म नें पाप दोय ।
तिण नें होसी रे धर्म नें पाप दोय ॥ ८ ॥
छकाय हण नें रे पोषे घणां जीवा नें ताय ।
पाप आरंभ रो रे धर्म पोष्यां रो थाय ॥ ९ ॥
तिण ने होसी रे धर्म नें पाप दोय ।
मिण ने पिण रे धर्म ने पाप होय ॥ १० ॥
तिण नें पिण रे कहे मिश्र धर्म ।
हिसा हुइ रे तिण रो लागो कहे पाप कर्म ॥ ११ ॥
बरजें राख्या रे हुवे मिश्र धर्म ।
अंतराय दीघी रे तिण रो लागे पाप कर्म ॥ १२ ॥
तिण किरतब नें रे बरज्या पिण मिश्र जोय ।
तो जीव बचीया रे तिण रो धर्म क्यून होय ॥ १३ ॥
ते करणी रे करायां पिण दोनू होय ।
ते पिण निरणो रे तिण रे नही कोय ॥ १४ ॥
धर्म छटा रे छूटे छे तिण रो पाप ।
तिण मिश्र नें रे कीघा बोहत संताप ॥ १५ ॥
ते तो देसी रे जब होसी पाप धर्म ।
तिण सू बधें रे समे समे सात कर्म ॥ १६ ॥
दान दीधां रे होसी एकंत पाप ।
छठें उद्देसैं रे कह्यो श्री जिण आप ॥ १७ ॥
देवे नही रे दरावे नही कोय ।
तिण माहे रे धर्म किहाथी होय ॥ १८ ॥
तिण नें कह्यो रे छकाय रो घाती वीर ।
तिण माहें रे साधु किम घाले सीर ॥ १९ ॥
तिण माहे रे कहे धर्म नें पाप ।
खोटी कीघी रे निश्चें मिश्र री थाप ॥ २० ॥
ध्यान किसो रे किंसा बरते अधवसाय ।
इम पूछीजे रे मिश्रवालां नें ताय ॥ २१ ॥
ए तो च्यारू रे भला के मूंडा जाण ।
मिश्र नही रे तिणरी करजो पिच्छाण ॥ २२ ॥
जब उ जाणें रे पिडताइ मे पडती घूड ।
मिश्र थापण ने रे बोलें अनेक विघ कूड ॥ २३ ॥

हूँ कहि कहि नें कितरो कहूं, घणी खोटी रे सरघा मिश्र री जाण । -
 भारी कर्मा जीवां त्यां आदरी, कर्मा वस रे बूडें कर कर तांण ॥ २४ ॥

ढलल : ११

दुहल

केइ भेषधलखलं री सरधल बुरी, तलण सुं कर रहलल मूढ वललड ।
तुलरें उसड उदेंरल डुग सुं, कलधु मलशुर री थलड ॥ १ ॥
तुलल गललल डलंसू गुरुल करे, डेकथल लुरुकल डलंय ।
ते मलशुर कहे छें डून डे, ते डलण सडडु न कलंय ॥ २ ॥
कहे डुहे करणु न करणु कवलं नही, आगनल डलण न धलं कुुडु ।
ते करणी गुरहसुथ करें, तलण डे डलड धरुडु हुवें दुुडु ॥ ३ ॥
डु डुधरु हुवें तुु धलं आगनल, डलड हुवें तुु वरडुलं तुलंड ।
डलड धरुडु दुुनुं हुवें, तठें डून करलं तलण ठलंड ॥ ॡ ॥
इण वलध करें छे डरुडुडणल, मलशुर कहे छें नलसंक ।
तुलंनैं तुलं सलरलषल आडु डललुडल, तुलरें ललगल डलशुधुतल रल डंक ॥ ॡ ॥
कहलवल नैं मलशुर डुखसुं कहे, तुलंनैं डुखुडुडुलं रल नलवें डलड ।
डुडु डुध नही तुलरें डुलुलुडुडु, डलर डलवें तुलरत सतलड ॥ ॥ ॥
डलड धरुडु रुरु मलशुर कहे डून डे, तलणरी सरधल डें धुरु अंधलर ।
हलवें कलण कलण ठलकलणें डुन छें, ते सुणडु वलसतलर ॥ ७ ॥

ढलल

[कतुर वलधलर करु नु देखु]

कुुडु धुरु नैं धलन दें वलंधुी सरें, ते डलण नलनलण नु कलडें रे ।
तुलंनैं देतलं लेतल सलधु नलडरल देखें तुु, डुलुलें नही डून सलडुलें रे ।
डून डें मलशुर कहे छें अगुडुलंनल* ॥ १ ॥
कुुडु सलधु देखतलं करें सगलई, तलहलं सलधु तुु रहे डून सलडुलु रे ।
डु डून सलडुलें तलहलं मलशुर हुुसी तुु, इणरेडु मलशुर छें तुलडु रे ॥ डुु २ ॥
कुुडु थुरुी डलवरी नैं ससतर देवें, ते सलधु देखें तुु सलडुलें डुनुु रे ।
डु डून डें मलशुर हुुसी तुु इणरेडु मलशुर छें, डु कलड रहसी नलडुनुु रे ॥ ३ ॥
कुुडु धलंन डुलसण नैं देवें धरतुी, वले उखल डुसल देवें कुुडुु रे ।
तुु सलधु देखें तुु डून करें छें, तुु इणरें डलण मलशुर हुुडुु रे ॥ ॡ ॥
कुुडु धलस कलडण नैं देवें दलंतरलुु, कुुडु वलरष कलडण नैं देवें कुुडुलुरु रे ।
डु सलधु डून सलडुडल मलशुर हुुवे तुु, इणरेडु मलशुर छें तुलरुरु रे ॥ ॡ ॥

*डुह अलंकडुी डुरतुडुक गलथल के अनुत डें है ।

साध कसी कूदालादिक देतां देखें तो,
 जो मून सामें तिहां मिश्र होसी तो,
 ससतर अनेक साध देतां देखें तो,
 जो मून सामें तिहां मिश्र होसी तो,
 कोइ होको पीवण नें देवें तमाखू,
 कोइ भांग तिजारो घोटी पावें,
 धांणी अरटको सीटों खडवा,
 त्यांनैं बलद कोइ मांग्या देवें,
 कोइ रोटी करण नें चूलो देवें,
 कोइ छ काय हणी नें कर दें रसोइ,
 कोइ अणगल पांणी रात रो पावें,
 कोइ भडमूंजा नें धान देवें सूलीयों,
 कोइ गेंहणा कपडा फूल पेंहरावें,
 वले काचा पांणी थी सिनांन करावें,
 कोइ सोर सीसों सिकारी नें देवें,
 कसाइ नें नांणों दें जीव ल्यावण नें,
 कोइ अर्थ अनर्थ हिंसक जीव पोवें,
 कोइ चोर नें धान दें चोरी करावण,
 कोइ सावण करण नें तेल खरीदें,
 कोइ लोह धवण नें धवण देवें छें,
 कोइ हाट हवेली आदि व्याह थापणा रा,
 इसडो वरतमान साधु देखें तो,
 कोइ लूण पांणी देवें अणुकंपा आणे,
 वले वनसपती तस काय देता देखें,
 कोइ सचित देवें बंदीवानादिक नें,
 वले खरच करें छें मूआ नें केडें,
 लज्या रो घाल्यो देवें मलेछादिक नें,
 कोइ देवें उधारों कोइ पाछो देवें,
 कुसील सेवण नें देवें गणकादिक नें,
 जो मून .में मिश्र तो इणरेंइ मिश्र छें,
 सुरियाभ देवता नाटक करण री,
 जब भगवंत मून सामी नहीं बोल्या,

मून सामें निरदोषों रे ।
 इणरेंइ मिश्र छे चोखों रे ॥ ६ ॥
 साध न बोलें तिण ठोडें रे ।
 इणरेंइ मिश्र छें चोडें रे ॥ ७ ॥
 कोइ अगन पांणी घालें तांमो रे ।
 साध रे मून सगली ठांमो रे ॥ ८ ॥
 वले गाडा हल खडवा काजे रे ।
 ते साध देखें तो मून सामें रे ॥ ९ ॥
 कोइ छांणा देवें बालण काजें रे ।
 कोइ साध देखें तो मून सामें रे ॥ १० ॥
 सूलीयों धान खवावे रांधी रे ।
 ते साध देखे नें मून सांधी रे ॥ ११ ॥
 करावें मरदन पीठी रे ।
 ते साध देखें तो मून मीठी रे ॥ १२ ॥
 मछीगर नें सूत जाली काजें रे ।
 ते साध देखें तो मून सामें रे ॥ १३ ॥
 कोइ पांणी काढण नें देवें नांणो रे ।
 साध रें तो अठेंइ मून जांणो रे ॥ १४ ॥
 कोइ लोहडो देवें ससतर काजों रे ।
 तिहां मून करें ते मुनीराजो रे ॥ १५ ॥
 मोहरत देवे विवध प्रकारो रे ।
 तिहां साधु न बोले लिंगारो रे ॥ १६ ॥
 वले घालें अगन नें वायो रे ।
 मून करें ते मुनीरायो रे ॥ १७ ॥
 डाकोतादिक ने देवें भय काजें रे ।
 साधु तो सगलेई मून सामें रे ॥ १८ ॥
 रावलीयादिक नें देवें मान आंणो रे ।
 तिहां साधु रे मून पिछांणो रे ॥ १९ ॥
 ते साध देखें तो मून सामें रे ।
 इणनैं - मिश्र कहितां कांय लाजें रे ॥ २० ॥
 आग्या मांणी भगवंत पासो रे ।
 त्यां एकंत जाण तमासो रे ॥ २१ ॥

जमाली आग्या मांगी विहार करण री, वीर समीपे. आणों रे ।
 काई कारण देखी भगवत नही बोल्या, पिण नहीं जाण्यो मिश्र ठिकाणो रे ॥ २२ ॥
 शिष्य होण रो कह्यो भगवत नें गोशालो, भगवत कीधी मून तामो रे ।
 अजोग जांणी वीर आरे न कीघो, पिण मिश्र न जाण्यो तिण ठामो रे ॥ २३ ॥
 चित्तजी विनती कीधी केशी कुमार ने, आप सेवीया नगरी पवारो रे ।
 नही जाण रा परिणाम तिण सूं न बोल्या, पिण मिश्र न जाण्यो लिंगारो रे ॥ २४ ॥
 इत्यादिक मून रा बोल अनेक छें, ते कहितां न आवें पारो रे ।
 जो मून में मिश्र तो सगलें मिश्र छे, कहि देणो एकण धारो रे ॥ २५ ॥
 किणहीक मून मे मिश्र कहि दें, किणही मून माहे कहे पापो रे ।
 जो सगलेंई मिश्र कहितां लाजे, तो उड गई मिश्र री थापो रे ॥ २६ ॥
 जे मून मे मिश्र कहे छें चोडें, ते पाप कहसी किण लेखें रे ।
 जो पाप कहें तो मिश्र उठें छें, जब किसी सरधा साह्यो देखें रे ॥ २७ ॥
 जो सगलें मिश्र कहां लोक न माने, होय जावे जाबक फित्तुरो रे ।
 जब किण ही मून माहे पाप पिण कहि दें, तो पडी मिश्र माहे घुडो रे ॥ २८ ॥
 यो मिश्र अणहुंतो चलायो अग्यानी, ते सूतर माहें कट्ये न चाल्यो रे ।
 भारी कर्मां जीवां नें डबोवण, घोचो अणहुंतो घाल्यो रे ॥ २९ ॥
 देव गुर तो मिश्र न होवें, तो धर्म मिश्र किण लेखें रे ।
 अभिन्तर आंख हीया री फूटी, ते सूतर साह्यो न देखें रे ॥ ३० ॥
 मून मे मिश्र कहे छ अग्यानी, ते उठी जठाथी भूठी रे ।
 एक करणी मे पाप धर्म दोनू कहे त्यारी, हीया निलाड री फूटी रे ॥ ३१ ॥
 मून में पाप धर्म दोनू कहि कहि, घणां लोका नें विगोया रे ।
 बले सिष सिषणी पोता रा हुंता, त्यांनं तो जाबक बोया रे ॥ ३२ ॥
 मून मे मिश्र री करें परूपणा, ते खोटो घणों छें दिल को रे ।
 ते श्री जिण आगना उलंघे अग्यानी, ते थोथो जमायो खिलको रे ॥ ३३ ॥
 अधवसाय परिणाम ध्यान नें लेस्या, च्यारूं भला के मूडा जाणो रे ।
 भला मे धर्म मूडा मे अधर्म, मिण मिश्र रो नही छे ठिकाणो रे ॥ ३४ ॥
 विरत माहे धर्म इविरत माहे अधर्म, पिण मिश्र रो नही छें ठिकाणो रे ।
 इविरत सेवाया एकंत अधर्म, तिण माहे शका मत आणो रे ॥ ३५ ॥
 पाप अठारे सेव्या एकत पाप, ते सेव्यां नही धर्म होयो रे ।
 पाप धर्म री करणी छे न्यारी, पिण मिश्र करणी नही कोयो रे ॥ ३६ ॥
 इण मिश्र रो मुंहमाथो नही दीसैं, ओ निश्चे अणहुंतो गोलो रे ।
 ते जिण मारग सूं चोडें भूला, त्यां लीयो मिश्र रो ओलो रे ॥ ३७ ॥

कुपातर दांन ते एकंत सावद्य, अंतराय पडें तिण सूं मूनज सामें, कुपातर दांन नें साघां त्रिविधे त्याग्यो, तिण दांन में घर्म परूपें, सामायक पोषां मांहें श्रावक, जो उ ओर कर्ने सांनी करे दिरावें, जिण दांन सूं भागें समायक पोषों, एहवो सावद्य दांन छें खोटो, अन पुने पाण पुने कह्यो सूतर में, ते पातर सूं पुन कुपातर सूं पाप, अन मिश्रे पाण मिश्रे न चाल्यो, मिश्र घर्म मगवते न भाष्यो, दस दांन कह्या ठाणांग मांहें, आठां दानां रा अर्थ उंवा करे नें, कहें घर्म अघर्म दांन कर दीया न्यारा, तिण सूं मिश्र कहां घर्म अघर्म रो, इण विघ मिश्र कहे छें अग्यांती, साची वात सूतर री न मानें, नव पदारथ माहे जीव अजीव, इण सरघा रे लेखें सात पदारथ, नव पदारथ में घुर सूं जीव अजीव, जो आठ दांन मांहें मिश्र होसी तो, जो सात पदारथ मांहें मिश्र न थापें, उठें जीव अजीव अठें घर्म अघर्म, पुनादिक सात पदारथ मांहें, ज्यू - भेला नहीं छें घर्म अघर्म, दांन साला मंडावें लूंण पांणी अगन री, आय मांगें त्यानें दांन दे दगचालें, छ काय रा जीवां नें जीवां मारी नें, अथवा हाथां सूं छ काय जीवां रो, जो पाप होसी तो सगलां नें पाप, जो किणही एक बोल में पाप कहे तो,

तिणमें श्री जिण आगन्यां नाही रे। पिण घर्म नही तिण मांही रे ॥ ३८ ॥ तिणनें मन करे भलोई न जाणें रे। ते जिण घर्म केम पिच्छाणें रे ॥ ३९ ॥ साघ विनां ओरां नें देवा त्यागों रे। तो सामायक पोषों भागों रे ॥ ४० ॥ वले साधपणों पिण भागों रे। तिणरा आछा फल किम लागें रे ॥ ४१ ॥ लेंण सेंण वसतर पुन चाल्यो रे। ओ धोचो मिश्र रो कांई घाल्यो रे ॥ ४२ ॥ लेंण सेंण वसतर मिश्र नही रे। किणही सूतर रे मांही रे ॥ ४३ ॥ गुण जिसाइ त्यांरा नामो रे। मिश्र ले उठ्या तांमो रे ॥ ४४ ॥ आठ दांन रो विवरो नाही रे। आठूइ दांन रे माही रे ॥ ४५ ॥ ते गाढो रह्या मत भाली रे। त्यांरे आढी छें कर्म रूप राली रे ॥ ४६ ॥ न्यारा न्यारा बतावें रे। जीव अजीव रों मिश्र थावें रे ॥ ४७ ॥ बाकी गुण जिसा नाम सातोइ रे। ए पिण सातोई मिश्र होइ रे ॥ ४८ ॥ तो दांन मिश्र नही आठो रे। बाकी समचें सूतर रो पाठो रे ॥ ४९ ॥ जीव अजीव रो भेल नाही रे। आठूइ दांन रे मांहीं रे ॥ ५० ॥ वाउ वनसपति नें तसकायो रे। खावा पीवा भोगववा ताह्यो रे ॥ ५१ ॥ मन मानें त्यांनं खवावें रे। कहि कहि नें गटको करावें रे ॥ ५२ ॥ मिश्र होसी तो सगलां नें मिश्रो रे। मिश्र होय गयो फिसरो रे ॥ ५३ ॥

जीव ने जीव खवावण ने देवे, चले हाथां सूं मार खवावे रे ।
 ए प्रतप पाम उघाडो दीसें, तिणमे मिश्र किहायी थावे रे ॥ ५४ ॥
 जीव खवाया मे मिश्र परुये, ते सरथा घणी छे खोटी रे ।
 इण सरथा सूं नरक गया अनता, त्या लीची छे अटवी मोटी रे ॥ ५५ ॥
 इण मिश्र मे थोगुण अनेक कह्या जिण, ते पूरा कहणी न आवे रे ।
 इम सामल उत्तम नरनारी, मिश्र रे संग न जावे रे ॥ ५६ ॥



ढाल : १२

ढुहा

जिण शासण में जिण आगन्यां बडी, ते ओलखें बुववांन ।
ज्यां जिण आगन्यां ओलखी नही, ते जीव विकल समान ॥ १ ॥
दोय करणी संसार में, सावद्य निरवद जाण ।
निरवद करणी में जिण आगन्यां, तिणसूं पामें पद निरवांण ॥ २ ॥
सावद्य करणी संसार नी, तिणमें श्री जिण आगन्यां नाही ।
संसार वधे छें तेहथी, धर्म नहीं तिण माही ॥ ३ ॥
हिंवे किहां किहां छें जिण आगन्यां, किहां किहां आगन्यां नाहिं ।
बुधवंत करे विचारणा, निरणों करों मन माहिं ॥ ४ ॥

ढाल

कोइ करें पचखाण नोकारसी, तिणरी आगन्या द्यो जिण आप हो ।
कोइ दान दें लाखां संसार में, पूछ्यां आप रहो चुपचाप हो ।
हृ बलिहारी हो श्री जिणजी री आगन्या* ॥ १ ॥
जिण आगन्यां सहीत नोकारसी, कीघां कटें सात आठ कर्म हो ।
कोइ दान दें लाखां संसार में, ते तो आपरो भाष्यो नही धर्म हो ॥ १० ॥ २ ॥
अंतर मोहरत त्यागें एक भूंगडों, तिणरी आग्या द्यो थे जिणराज हो ।
कोइ जीव छुडावें लाखां दाम दें, तटे आप रहो मून साम हो ॥ ३ ॥
अंतर मोहरत त्यागें एक भूंगडों, ते तो आपरो सीखायों छें धर्म हो ।
तिण सूं कर्म कटें तिण जीव रे, उतकष्टा पामें सुख परम हो ॥ ४ ॥
कोइ जीव छुडावें लाखां दाम दे, ते तो आपरो सीखायो नही धर्म हो ।
ओ तो उपगार संसार नों, तिणसूं कटता न जाण्या आप कर्म हो ॥ ५ ॥
कोइ साघां नें वेंहरावें एक तिणखलो, तिणरी आग्या द्यो आप साष्यात हो ।
कोइ श्रावक जीमावें कोडांग में, तिणरी आग्या न द्यो अंसमात हो ॥ ६ ॥
साघां नें वेंहरावें एक तिणखलो, तिणरें बारमो वरत कह्यो आप हो ।
तिण सूं आग्या दीधी आप तेहनें, बले कटता जाण्या तिणरा पाप हो ॥ ७ ॥
कोइ श्रावक नें जीमावें कोडांग में, ते तो सावद्य कामो जाण्यो आप हो ।
उण छ काय रों सख पोखीयों, तिण में धर्म री न करी थें थाप हो ॥ ८ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

कोइ करे वीयावच श्रावका तणी,
 उण तीखो कीयो सख छ काय रो,
 उघाडे मुख गुणे छे सिघंत ने,
 जिण में आप तणी आगन्या नही,
 उघाडे मुख गुणे छे नवकार नें,
 तिणमे धर्म सरखे भोला थका,
 जेणा सूं गुणे एक नवकार ने,
 तिणमे आप तणी छे आगन्यां,
 केइ साधु नाम धराय ने,
 त्या भेष माड्यो भगवान रो,
 मून कही थे साधु रें सावद्य दांन मे,
 तिणरो फल ते सूतर मे बतावीयो,
 प्रदेसी राजा कह्यो केसी साम नें,
 म्हारे सात सहस्र गांम छे खाल्सें,
 एक भाग राण्या निमते करें,
 तीजो भाग घोडा हाथ्यां निमते करे,
 च्याहू भाग सावद्य कामो जाण ने,
 जो उवे धर्म कठेइ जाणता,
 सावद्य किरतव च्याहू भाग राज रा,
 तिण सूं च्याहू बरोबर जाण ने,

दान देना माडी दानसाल ने,
 सात सहस्र गांम हुता खाल्सें,
 च्याहू भाग करे आप न्यारो हुवो,
 तिण तिथ न कीधी तिण राज री,
 ओ तो दान ओरा ने भलय ने,
 चवदे प्रकार नो दांन साध ने,
 चोथो भाग ते दांन रे ताल के,
 तीन भाग ज्यूं इण ने पिण थापीयो,
 साढा सतरेंसौं गांम दांन ताल के,
 त्यारा हासल रो धान रंघाय ने,
 टालवा गांम जाणीजे खालसे,
 हासल आयो ते तो जाणीजे घणो,

तठे पिण आपरे छें मून हो ।
 ते किरतव जाणो आप जवून हो ॥ ९ ॥
 वले कोडांग में गुणे छे नवकार हो ।
 तिण मे धर्म न सरखूं लिंगार हो ॥ १० ॥
 तिण वाउ काय मात्था असख हो ।
 तिणरें लागा कुगुरा रा डक हो ॥ ११ ॥
 तिण सूं कोडां भवां रा कटें कर्म हो ।
 तिणरे निश्चे छे निरजरा धर्म हो ॥ १२ ॥
 प्रससे छे सावद्य दांन हो ।
 त्यारा घट माहे घोर अग्यांन हो ॥ १३ ॥
 ते तो अंतराय पडती जाण हो ।
 तिणरी बुधवंत करसी पिछांण हो ॥ १४ ॥
 म्हारें तो छे चढतो वेराग हो ।
 तिणरा करे च्यार भाग हो ॥ १५ ॥
 बीजो भाग करे खजांन हो ।
 चोथो भाग करे देवा दान हो ॥ १६ ॥
 मून सामे रह्या केसी सांम हो ।
 तो करता तिणरा गुणग्राम हो ॥ १७ ॥
 त्यामे जीवा री हिंसा अतत हो ।
 मून सामी मतवंत हो ।
 हू बलिहारी हो श्री जिणजी री मून मे ॥ १८ ॥
 परदेसी राजान हो ।
 तिणरो चोथो भाग दीयो दांन हो ॥ १९ ॥
 तिण जाण्यो ससार नो माग हो ।
 रह्यो मुगत स सनमुख लाग हो ॥ २० ॥
 तिणरी पूछी न दीसें वात हो ।
 ओ तो राख्यो निज पोता रे हाथ हो ॥ २१ ॥
 नही राख्यो पोता रे हाथ हो ।
 छ काय जीवा री जाणी घात हो ॥ २२ ॥
 दिन दिन प्रतें मडेरा पाच गांम हो ।
 दानसाला माडी ठाम ठाम हो ॥ २३ ॥
 ते तो चोथा आरा रा था गांम हो ।
 नेपें हुंती घणी अमांम हो ॥ २४ ॥

हासल आयो हुवें एकीका गांम रो,
 दिन दिन प्रतें मठेरा पांच गांम रो,
 इण लेखें हुवो एक वरस तणों,
 इधको ओछो तो आप जाणें रह्या,
 पांणी लागें पांच कोड मण आसरें,
 अगन पिण एक कोड मण जांणीजें,
 नित धान हजारों मण रांघतां,
 तठें लूण मणा बंध लागतो,
 फूंहारादिक अनेक पांणी मभे,
 धान हजारों मण रांघतां,
 दिन दिन प्रतें मारी छें छ काय नें,
 त्यांरी हिंसा रो पाप गिणें नही,
 एहवा दुष्ट हिंसाधर्मी जीव नें,
 तिणरें पिण घट में घोर अंधार छें,
 केइ जीव खवायां में पुन कहे,
 ए दोनूई वूडें छें वापडा,
 जीव खाघां खवायां भलो जांणीयां,
 आ सरघा परूपी छे आपरी,
 केइ कहे जीवां नें माख्यां बिनां,
 जीव माख्यां रो पाप लागें नहीं,
 केइ कहें जीव माख्यां बिनां,
 पिण जीव मरण री सांती करे,
 केइ धर्म नें मिश्र करवा भणी,
 तिणरा चोखा परिणाम किहां थकी,
 कोइ जीव खवावें छें तेहनां,
 कहें धर्म नें मिश्र हुवें नही,
 जीव खाण रा परिणाम छे अति बुरा,
 यूंही भोलां नें न्हांखें भरम मे,
 जिण ओलख लीघी आपरी आगन्यां,
 तिण आप नें पिण ओलखे लीया,
 जिण आग्या न ओलखी आपरी,
 तिण आपनें ओलख्या नही,
 दस सहंस मण रें उनमान हो।
 उणो पचास हजार मण धान हो ॥ २५ ॥
 पूणा दोग कोड मण धान हो।
 म्हें तो अटकल सूं बांध्यो उनमान हो ॥ २६ ॥
 पूणा दोग कोड मण रांध्या धान हो।
 लूण छ लाख मण रे उनमान हो ॥ २७ ॥
 अगन पांणी हजार मण जांण हो।
 वाउकाय रो ई बोहत धमसांण हो ॥ २८ ॥
 वले वनसपती पांणी माय हो।
 तिहां अनेक मूआ तसकाय हो ॥ २९ ॥
 कीधी अनंत जीवां री घात हो।
 तिणरे हिंसा धर्मी रो मिथ्यात हो ॥ ३० ॥
 केइ जाणें छें अग्यांनी साघ हो।
 ते पिण नीमाइ निरुवें असाघ हो ॥ ३१ ॥
 केइ मिश्र कहें छे मूढ हो।
 कर कर मिथ्यात री रूढ हो ॥ ३२ ॥
 तीनूई करणां पाप हो।
 ते पिण दीघी आगन्या उथाप हो ॥ ३३ ॥
 धर्म न हुवें ताम हो।
 चोखा चाहीजें निज परिणाम हो ॥ ३४ ॥
 मिश्र न हुवें छें ताम हो।
 ले ले परिणामां रो नाम हो ॥ ३५ ॥
 छ काय रो करें धमसांण हो।
 पर जीवां रा लूटें छें प्रांण हो ॥ ३६ ॥
 चोखा कहें छें परिणाम हो।
 जीव खवायां विण ताम हो ॥ ३७ ॥
 खवावण रा पिण खोटा परिणाम हो।
 ले ले परिणामां रो नाम हो ॥ ३८ ॥
 जिण ओलख लीघी आपरी मून हो।
 तिणरी टलगी माठी माठी जून हो ॥ ३९ ॥
 आपरी नहीं ओलखी मून हो।
 तिणरें बघती माठी माठी जून हो ॥ ४० ॥

केइ जिण आगन्यां बारें धर्म कहे,
 ते दोनू विष बूडे छे बापडा,
 आपरो धर्म आपरी आग्या मभे,
 जिण धर्म जिण आग्या बारें कहे,
 आप अवसर देखी नैं बोलीया,
 जिहा आप तणी आगन्या नही,
 भेषधारी थापे सावद्य दान नैं,
 वले दया कहे छ कय बचावीयां,
 छ कय जीवां ने जीवां मार ने,
 तिणरें तो छ कय जीवा तणी,
 कोइ दान देवें तिणने वरज नैं,
 ते जीव बचायां दान उथपे,
 छ कय जीवा ने मारें दान दे,
 वले फिर फिर बचावे छ कय ने,
 सावद्य दान दीया दया उथपें,
 ते सावद्य दया दान संसार ना,
 त्रिविधे त्रिविधे छ कय हणवी नही,
 दान देणो सुपातर ने कह्यो,
 दान दया दोनू मारग मोष रा,
 यानें रूडी रीत आरावीया,
 आप तणी आगन्यां ओलखायवा,
 संवत अठारें चमालेसमें,

जिण आग्या माहे कहे छें पाप हो ।
 कूडों कर कर अग्यानी विलाप हो ॥ ४१ ॥
 आपरो धर्म नही आपरी आग्या बार हो ।
 ते पूरा छे मूढ गिंवार हो ॥ ४२ ॥
 आप अवसर देखे सामी मून हो ।
 ते करणी छें जावक जबून हो ॥ ४३ ॥
 तिण दान सू दया उठ जाय हो ।
 तिण सू दान उथप गयो ताय हो ॥ ४४ ॥
 कोइ दान दे ससार रे मांय हो ।
 घट मे दया रहें नही कय हो ॥ ४५ ॥
 जीवां बचावे छ कय हो ।
 त्यांसूं न्यारा रह्यां सुख थाय हो ॥ ४६ ॥
 तिण दान सू मुगत न जाय हो ।
 तिण सू कर्म कटें नही ताय हो ॥ ४७ ॥
 सावद्य दया सू उथपे अभय दान हो ।
 त्यानैं ओलखें ते बुधवान हो ॥ ४८ ॥
 आ थे दया कही जिण राय हो ।
 तिण सू मुगत सुखे सुखे जाय हो ॥ ४९ ॥
 ते तो आपरी आगन्यां सहीत हो ।
 ते गया जमारो जीत हो ॥ ५० ॥
 जोड कीधी घेनावस मभार हो ।
 माहा सुदि सातम विसपत्तवार हो ॥ ५१ ॥

दुहल

केइ भेषघरलरी कहेँ म्हेँ धरुँ री, आगनुयलं घलं छलं तलंम ।
 पलप करतलं नें वरक घलं, मुंन करलं मलश्र ने ठलंम ॥ १ ॥
 रलइ पलप नें धरुँ मेरु कलतलं, धरुँ रलइ नें मेरु सड पलप ।
 अनेक भलंगल छें इण मलश्र नल, तठें रहलं चुप चलप ॥ २ ॥
 पलप करण री आगनुयलं घलं नहीँ, मलश्र री पलण आगुयलं घलंनलंय ।
 मलश्र करतल नें पलण वरकलं नहीँ, म्हेँ कलण रहलं डन डलंय ॥ ३ ॥
 इण वलघ करेँ छें परुपणल, पलण डले नही डंध ललगर ।
 प्रश्न पूछुयलं रल कलव न उपकें, कड फलरतलं न ललगें डलर ॥ ॡ ॥
 कहेँ एकंत धरुँ री घलं आगनुयलं, पलप करतलं नें वरकलं सलखुयलत ।
 मुंन करलं मलश्र नें डललं नहीँ, पलण डलं तीनुंड डें फलरकलत ॥ ॡ ॥
 हलवें कुण कुण प्रश्न पूछुयलं, तुयलरी सरघल रल पडें उघलड ।
 ते चलत ललगुय नें सलंभलो, अलुप डलतर कहुँ वलसतलर ॥ ६ ॥

ढलल

[तीकल सुडत छे रषण र]

शुरलवक शुरलवक री डीयलवक करेँ, सलडलडक नें डलषल डलंही रे ।
 तलणडें धरुँ कहेँ छें नलसंक सूँ, तलणरी आगनुयलं डेवं नलंही रे ।
 सरघल सुणकल नलनवलं तणी* ॥ १ ॥
 डेंहल कलहलतल धरुँ री घलं आगनुयलं, धरुँ सरवेँ आगुयल डेवं नलंही रे ।
 तुयलरल डललुयलं री ठीक तुयलनेँ नहीँ, सुघ ववेक नहीँ तुयलं डलंहीँ रे ॥ स० २ ॥
 शुरलवक शुरलवक री पडललेहण करेँ, सलतल डुछें करेँ नडसकलरु रे ।
 तलण डें पलण धरुँ कलडें कहेँ, तलणरी पलण आगुयल नही डें ललगलरु रे ॥ ३ ॥
 शुरलवक शुरलवक नें डेवं सडलडक डडुडेँ, डुंकणी कडडलडक कलंणी रे ।
 तलण नें धरुँ कलणें पलण न डें आगनुयलं, ते तल डुरल छें डूड अडलंणु रे ॥ ॡ ॥
 इतुयलडक डलल अनेक डें, कहेँ छें एकंत धरुँ रे ।
 तलण धरुँ री नहीँ डें आगनुयलं, कड नलकल गडु सरघल रल डडु रे ॥ ॡ ॥
 कहेँ म्हेँ धरुँ करण री घलं आगनुयलं, डुंही डले अनलंखी कूडु रे ।
 कल धरुँ करण री आगनुयलं डें नहीँ, कड सरघल डें पड गड धूडु रे ॥ ६ ॥

*डह आंकडुी डुरतुडेक गलथल के अनुत डें है ।

करणी करण रो उपदेस दे, तिणरी प्रससा गुणग्राम करता रे।
 वले धर्म निकेवल कहे तेह मे, तिणरी आगन्यां नहीं दे डरता रे ॥ ७ ॥
 पाप लागो जाणे आगन्यां दीया, प्रसंसा कीयां जाणे धर्मो रे।
 एहवी उधी सरघा छे तेहनीं, त्यारे मोटे मिथ्यात नो भर्मो रे ॥ ८ ॥
 पाप कहे धर्म री आगन्यां दीयां, ते उठी जठायी भूठी रे।
 धर्म करण री आगन्या देता डरें, त्यांरी हीया निलाड री फूटी रे ॥ ९ ॥
 कदा जाव अटकता जांग ने, तो उ फिर जावे करें ताना माना रे।
 धर्म कह्यो पाछिला बोला मभे, त्यामे कहि दे मिश्र दोग वाना रे ॥ १० ॥
 दोग वाना मिश्र कहे तेह ने, न्याय चरचा माहें बांध लीजें रे।
 त्यांनं पाछो जाव न उपजे, एहवा प्रश्न पूछीजें रे ॥ ११ ॥
 तो सामायक पोषा मभे, राब्यो छे तिण उपरंत त्यागो रे।
 ते दोग बांना मिश्र कीया, सामायक ने पोषो भागो रे ॥ १२ ॥
 जब उ कहे दोग बांना मिश्र कीया, सामायक पोषो भागे नाहीं रे।
 एहवी उंधी ले उठे तेहनें, भूठ बोलण री सक न काई रे ॥ १३ ॥
 मिश्र कीया सामायक भागें नही, ते पिण चोडें कूड चलायो रे।
 तो उवे मिश्र सरघे छे सावद्य दान में, तू पिण देणो सामायक माह्यो रे ॥ १४ ॥
 आठ दाना ने पिण मिश्र कहे, ते पिण एकत मूसावायो रे।
 मिश्र दान भगवते न भाषीयो, ओ पिण गाला सूं गोलो चलायो रे ॥ १५ ॥
 जो मिश्र कीया सामायक भागे नाहीं रे, तो आठ दान सामायक मे देणा रे।
 जो आठ दान सामायक में दे नही, त्या विकला री बोली रा क्या केणा रे ॥ १६ ॥
 श्रावक नें अनेक दरव दीयां, दोग वाना मिश्र कहे ताह्यो रे।
 मिश्र कीया सामायक भागें नही, तो श्रावक नें देणा सामायक माह्यो रे ॥ १७ ॥
 धर्म तणी तो नहीं देवे आगन्यां, ते मत जाबक कुडो रे।
 वले पाप तणी देवे आगन्यां, तिण सरघा रो सुणजों फित्तुरो रे ॥ १८ ॥
 कहे म्हे पाप करता ने वरज द्यां, ते पिण थोडा माहे फिर जायो रे।
 त्यांरी सरघा री समभ त्यांनं नही, आ पिण कूडी करे वक्रवायो रे ॥ १९ ॥
 साघ चेला चेली करे तेहमें, पाप जाणे छे मूढ अग्यानी रे।
 पाप जाणे नें देवें आगन्यां, त्यांनं किण विघ कहीजे ग्यानी रे ॥ २० ॥
 साघ साघवी असणादिक भोगवे, कपडादिक दरव वशेष रे।
 तिणमें पाप जाणें नें देवें आगन्या, निज बोल्या साह्यो नही देखे रे ॥ २१ ॥
 वीयावच करावें तिण साघ ने, तिणमे पाप निकेवल थापें रे।
 तिणरी पिण देवे छे आगन्यां, आपरी सरघा आप उथापें रे ॥ २२ ॥

साध नदी उतरें छें तेहमें, पाप निकेवल जाणें रे ।
 तिणरी पिण आग्या देतां थकां, संका मूल न आणें रे ॥ २३ ॥
 इत्यादिक साधां रा काम करावता, ते पिण निरवद नें निरदोषों रे ।
 तिणमे पाप जाणें दें आग्यां, त्यांरा बोल्या गया सर्व फोको रे ॥ २४ ॥
 पेंहला कहितां वरजां निसंक सूं, पाप करतां नें जोयों रे ।
 ते वरजणों तो जिहांइ रह्यो, उलटा आग्यां देवें छें ताह्यो रे ॥ २५ ॥
 पाप री करणी जाणें छें तेहनें, तिणरी आग्यां देवण सूरा रे ।
 धर्म करणी जाणें न दें आग्यां, दोनूं परकारें मूढ छें पूरा रे ॥ २६ ॥
 हरीया जब देखें नें भिडकें मिरगला, डरता थका दूर जायो रे ।
 पास मांड्या देख डरें नांहीं, जाय पडें जाल माह्यो रे ॥ २७ ॥
 मिरग सरीषा अग्यांनी जीवडा, धर्म जाणें आग्यां दे नांहीं रे ।
 पाप करणी जाणें देवें आग्यां, ते खूता मिथ्यात रे मांहीं रे ॥ २८ ॥
 कहितां धर्म करण री धां आग्यां, पाप करता नें वरजां ताह्यो रे ।
 यां दोयां बोलां में भूठा पड्यां, मिश्र में भूठा किण विध थायो रे ॥ २९ ॥
 उघाडे मुख गुणें छें नोकार ने, वले सूतर बोल सभायो रे ।
 तिणमें दोय बांना मिश्र कहे, मिश्र में मून कहें छें ताह्यो रे ॥ ३० ॥
 उघाडे मुख गुणें छे तेहने, कहें मत गुण उघाडे मूढें रे ।
 कहे मून करां म्हे मिश्र में, तो ए मून भांगे कांय वूढें रे ॥ ३१ ॥
 सामायक वालों छूटा रो विनो करें, वले वीयावच ने नमसकारो रे ।
 तिणमे मिश्र सरधें नें वरज दें, जब पड गयो मून में बगारो रे ॥ ३२ ॥
 इत्यादिक वोल अनेक में, मिश्र जाणें छें मूढ अयांणो रे ।
 ते पिण मिश्र करतां नें वरज दें, मून भांग दीधी मूढ जांणो रे ॥ ३३ ॥
 कहें म्हे मिश्र ठिकांणे बोल बोलां नहीं, तेहीज वरजें मिश्र नें जांणो रे ।
 मून छोडे नें लाग्या बोलवा, त्यांरे ते पिण नही छें पिच्छांणो रे ॥ ३४ ॥
 दोय बांना तो मुख सूं कहें दीया, तो ए मून कहें किण लेखें रे ।
 दोय बांना कहां तो मून उड गइ, तिण साह्यो मूढ न देखें रे ॥ ३५ ॥
 दोय बांना मिश्र जाबक नहीं, ए तो यूं ही चलावें कूडो रे ।
 तेहीज मिश्र करतां नें वरज दे, जब पड गइ मून में धूडो रे ॥ ३६ ॥
 मून में दोय बांना मिश्र कहें, ते तो उठी जठायी भूठी रे ।
 सावद्य में पुन पाप दोनू कहे, त्यांरी हीया निलाडी री फूटी रे ॥ ३७ ॥
 मून वाला नें मूल बोलणो नहीं, कोइ परुषें क्यूं ही रे ।
 मिश्र थाप्यां तो मून उठे गइ, ए तो मून बतावें यूं ही रे ॥ ३८ ॥

मून करो भावे मिश्र कहो, यारो परमारथ एक जाणो रे ।
एहवी उवी करे छें परूपणा, मिश्र थापण ने मूढ अयाणो रे ॥ ३६ ॥
कोइ प्रश्न पूछे साध ने, लोका ना मारग सू मिलता तामो रे ।
जब जाणे नही तिणने समभक्ता, जब मून करें तिण ठामो रे ॥ ४० ॥
जो जाब देवे जथातथा तेह ने, तो उ करें जिण घमं री हेला रे ।
प्रवचन तणी थावे हीणता, जब मून सामें तिण ब्रेलां रे ॥ ४१ ॥
इत्यादिक अनेक कारण पड्यां, जब साधु तो मूल म बोले रे ।
पिण मिश्र न जाणे तेह ने, अवसर देखे तो बोले मून खोलें रे ॥ ४२ ॥
मिश्र दान कहे छें तेह ने, घट माहे घोर अंधारो रे ।
आप डूबे ओरो नें डबोवता, ते गया जमारो हारो रे ॥ ४३ ॥
दस दान भगवते भाषीया, त्यामें मिश्र दान नही कोइ रे ।
कोइ आठ दाना में मिश्र कहे, ते गया जमारो खोइ रे ॥ ४४ ॥
दस दान कह्या छे तेह मे, केयक आछा ने केयक भूंडा रे ।
पिण मिश्र दांन जाबक नही, मिश्र सरखे अग्यानी कांय बूडा रे ॥ ४५ ॥
कहि कहि ने कितरो कहू, दान मिश्र तो नाही रे ।
ज्या मिश्र दान परूपीयो, ते खूता मिथ्यात रे माही रे ॥ ४६ ॥
मिश्र दांन मिथ्यात ओलखायवा, जोड कीची पाली सहर मभारो रे ।
सबत अठारे वरस वावने, सावण विद तेरस मगलवारो रे ॥ ४७ ॥

ढाल : १४

दुहा

केइ भेष धारस्थां तणी, सरदहणा खोटी घणी छें अतंत ।
 बले खोटी करें छें परूपणा, हीयाफूट ज्यूं मूढ बकंत ॥ १ ॥
 श्रावक श्रावक रें विनो वीयावच करें, तिण मे कहें छें घर्म ।
 बले घर्म कहें साता पूछीयां, ते भूला अग्यानी भर्म ॥ २ ॥
 साव साव रो विनो वीयावच करें, तिणरें कटें छें पाप कर्म ।
 ज्यूं श्रावक श्रावकां रें विनों वीयावच करें, तिणनें पिण छें घर्म ॥ ३ ॥
 साव साव रो विनों वीयावच करें, तिम श्रावक श्रावक रो जाण ।
 यो विनें मूल घर्म जिण भाषीयो, इसडी कहें छें मूढ अमाण ॥ ४ ॥
 त्यांरी सरधा रो खबर त्यांनें नही, थूंही करें वकवाय ।
 त्यांरी खोटी सरधा परगट कहं, ते मुणजो चित ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[श्रा अशुकम्पा जिण आग्या मे]

साव रो विनों वीयावच साव करें छें, ज्यूं श्रावक नें श्रावक रो करणो ।
 केइ मूढ मिथ्याती इसडी पल्पें, त्यांरी खोटी सरधा रो सांभलजो निरणो ।
 इण जंवी सरधा रो निरणें कीजो ॥ १ ॥
 एकण कागादिक मारण रो नेम कीवो, ते समविट्टी हुवो श्रावक व्रतधारी ।
 तिण पाछें एकण वारें व्रत लीघा, सांकडा सांकडा सूस कीघा भारी ॥ २ ॥
 कागादिक मारण रो सूस पेंहला कीयो छें, ते तो श्रावक छें उण सेती मोटो ।
 तिणरें विनों करणों सावां रें रीत छें तिम, न करे तो यारें लेखें यारो मत खोटो ॥ ३ ॥
 उणनें आवतों देख उभो होणों, धासण छोड विनो करणों सीस नमाय ।
 साता पूछणी दोमूं हाथ जोडी नें, आपयी उचे आसण बैसावणों साथ ॥ ४ ॥
 इत्यादिक विनों साव रो साव करें तिम, श्रावक रें विनो श्रावक नें सारोड करणों ।
 न करें तो यारो मत याहीज उथाय्यो, आप रा बोल्यां रो नहीं आप रें निरणों ॥ ५ ॥
 छोटो साव नें साव री आग्या में रहणों, ज्यूं श्रावक नें आवकां री आग्या माहे रहणों ।
 छोटो साव नें साव आग्या में चलवें, ज्यूं श्रावक नें श्रावकां री आग्या पालण रो कहिणी ॥ ६ ॥
 छोटो साव बडा री आग्या में न चालें, ते तो च्यार तीरथ सीसे छें भूंड ।
 ज्यूं यारा श्रावक उणरी आग्या नहीं पालें, तो यारा श्रावक यारें लेखें सगलाई बुढ ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

छोटा साघां ने बडा सर्व साघां री,
 ज्यूं यांरां श्रावक ने बडा सर्व श्रावका री,
 यांरां छोटा श्रावक बडा सर्व श्रावका री,
 तो यांरें लेखे यांरां सगलाइ श्रावक,
 बडा श्रावक रो करें विनो वीयावच,
 धर्म कहे पिण आगन्या न देवे,
 कोइ मा बाप पेंहली वेटो श्रावक हुवो,
 यांरें लेखे वेटा री आग्या मांहे रहणो,
 पेंहिला श्रावक रा व्रत वेटे लीया छें,
 तिणरो विनो करणो साघां रें रीत छे तिम,
 वेटा नें आवतो देख ऊभो हुणो,
 साता पूछणी दोनूइ हाथ जोडी ने,
 मन गमती वियावच करणी वेटा री,
 बले रेकारो वेटा ने कदे नहीं देणो,
 इत्यादिक साघ रो साघ विनो करे तिम,
 न करें तो यारो मत यांहीज उथाप्यो,
 छोटा साघ ने बडा साघा री आग्या में रहिणो,
 जो छोटा साघ ने बडा साघ आग्या में चलावे,
 छोटा साघ बडा री आग्या ने न चाले,
 जो उ बाप वेटा री आग्या नहीं पाले,
 छोटा साघ ने बडा सर्व साघां री,
 ज्यू बाप थकी वेटो बडो श्रावक छें,
 जो मा बाप थकी वेटो बडो श्रावक छे,
 तो यारे लेखे मा ने बाप दोनूइ,
 कोइ बाप पेहली वेटो साघ हुवो छे,
 ज्यू यारे लेखे विनो करणो वेटां रो,
 पेंहला तो वेटा री बहुआं श्रावका हुइ,
 यांरी सरधा रें लेखें सासू ने बहुआं रो,
 बडा साघ रो विनो वियावच करें तिम,
 न करें तो सासू अवनीत बहुआं री,
 जो उवा सासू बहुआं ने पगे लगावे,
 यांरें लेखे तो इण अवनीत पणा सुं,

आसातणा टालणी छें तेतीस ।
 आसातणा टालणी निसदीस ॥ ८ ॥
 आसातणा न टाले रुडी रीत ।
 चोडे दीसे उघाडा अवनीत ॥ ९ ॥
 यांरें लेखे तो ओहीज विने मूल धर्म ।
 थे मूला रे मूला अग्यानी भर्म ॥ १० ॥
 पछे मा बाप श्रावक हुआ वरत धार ।
 नित नित वेटा ने करणो नमसकार ॥ ११ ॥
 ते मा बाप थी तो छे श्रावक मोटो ।
 न करें तो यांरें लेखे यारो मत खोटो ॥ १२ ॥
 आसण छोड विनो करणो सीस नमाय ।
 आप थी उचे आसण बेसावणो ताय ॥ १३ ॥
 सेवा भगत करणी वेटा री दिन रात ।
 बात करता विचे नहीं करणी बात ॥ १४ ॥
 वेटा रो विनो मा बाप ने सारोइ करणो ।
 आप रा बोल्यां रों नहीं आप रें निरणो ॥ १५ ॥
 ज्यू मा बाप ने वेटा री आग्या मे रहिणो ।
 तो बाप ने वेटा री आग्या पालण रों कहिणो ॥ १६ ॥
 ते तो च्यार तीरथ माहे दीसे छें भूडा ।
 तो यारे लेखे मा ने बाप दोनूइ बूडा ॥ १७ ॥
 आसातणा टालणी तेतीस ।
 तिणरी आसातणा टालणी निसदीस ॥ १८ ॥
 तिणरी आसातणा न टाले रुडी रीत ।
 चोडें दीसे उघाडा अवनीत ॥ १९ ॥
 तिणरो विनो करे दिव्या मे बडो जाण ।
 आप सू वरतां माहे बडो पिछांण ॥ २० ॥
 पछे सासू हुइ वारे व्रत धारी ।
 विनो करणो रहिणो आगन्या कारी ॥ २१ ॥
 बहुआं रो विनो सासू नें करणो ।
 विने मूल धर्म गयो किम तरणो ॥ २२ ॥
 जब तो यारे लेखें सासू गाढी बूडी ।
 सासू ने बहुआं सारी जासी नरक नी तूडी ॥ २३ ॥

राजा रा अमराव नें चाकर बांदा,
 राजा सूं पेंहला श्रावक व्रत लीघा,
 बले छतीस पवन माहें श्रावक बडा छें,
 त्यांरो विनों करणों साधां री रीत छें तिम,
 चक्रवत सूं बडो छें दास रो दास,
 ज्यूं यारें लेखें राजा नें छतीस पवन रों,
 छोटी श्रावक सामायक पोषां माहें वेठों,
 तिणरो विनों करणों साधां रें रीत छें तिम,
 जब तो कहें ओ तो सामायक माहें वेठों,
 इण वंचीया ने छूटा रें विनो न करणों,
 बडो श्रावक तो छोटा नें नहीं वादे,
 ए दोनूइ मांहोमां अंठठ हुआ छे,
 जब तो यारे लेखें छोटां ने बडां रो,
 सांकडा पचखांग वाला श्रावक नें,
 छोटा श्रावक रे विरत मेरु जित्ती छें,
 जो सामाइ में बडां रो विनों न करे तो,
 छोटे श्रावक तो सील रतन आदरीयो,
 जो सामाइ में बडां रों विनो न करे तो,
 बडां श्रावक रें वरत पचखांग छें थोडा,
 जो सामाइ में बडां रो विनों न करणों तो,
 पेंहला तो छोटे श्रावक सामाइ कीधी छे,
 जब तो छोटी बडां रो विनों करे छे,
 वरतां लेखें तो बडां रो विनों न कीघों,
 इण बडां रो विनों कीयो किण लेखें,
 सामायक में सामायक वालो वादे छें,
 जिण पेंहली सामाइ करी ते बडो छें,
 सामाइ में तो बडां रों विनो न कीघो,
 पछे वरतां मे बडां नें सामायक वादे,
 साधां रो विनों साव करे तिम,
 तो श्रावक श्रावक नें तीखूता सूं वादे,
 घणो विनों कीयां घणो धर्म होसी,
 श्रावक री तीखूता सूं बंदणा उथापे,

बले ढोली डूंवादि सरगडा तांम ।
 त्यांरो राजा ने विनो करणों सीसनांम ॥ २४ ॥
 त्यांरो राजा नें पूछ नें काढणो निरणों ।
 ज्यूं आप सूं बडा श्रावक रो विनो करणों ॥ २५ ॥
 तिणरो चक्रवत विनों करे बडो जांण ।
 विनों करणो वरतां माहे बडा पिछांण ॥ २६ ॥
 कोइ बडो श्रावक तिणरें पासे आयें ।
 यारे लेखें तो कमीय न राखणी कायें ॥ २७ ॥
 बडो श्रावक तो इविरत माहें छूटो ।
 इण ही लेखें पिण यारो हियो फूटो ॥ २८ ॥
 छोटी श्रावक पिण बडा नें वादे नाही ।
 हिवें तो यारें विनो न दीसे काई ॥ २९ ॥
 कारण मूल न दीसैं काई ।
 बडा श्रावक नें वादणा नाही ॥ ३० ॥
 बडा श्रावक रे विरत राइ समान ।
 ओ पिण बडां रों विनो करसी किण ग्यांन ॥ ३१ ॥
 बडां रे सीलादिक नहीं विरत वशेखें ।
 ओ पिण बडां रो विनों करे किण लेखें ॥ ३२ ॥
 छोटा रें वरत पचखांग सूस वशेखे ।
 इण बडां रो विनो करणों किण लेखें ॥ ३३ ॥
 पछे बडें सामाइ कीधी छें आय ।
 तिण बडां रो विनों करे किण न्याय ॥ ३४ ॥
 सामाइ लेखे पछे कीधी ते छोटी ।
 सामाइ लेखें तो छोटी श्रावक मोटी ॥ ३५ ॥
 तो वरतां बडां रो कारण नहीं काई ।
 तो उ किण लेखे पछे बडां रापणां माही ॥ ३६ ॥
 जब तो बडां श्रावक रो बडपण गमायो ।
 हिवे बडां रों बडपण कठा सूं आयो ॥ ३७ ॥
 श्रावक रो विनो करणो श्रावक नें थापें ।
 तो तीखूता री बंदणा ने कांय उथापे ॥ ३८ ॥
 थोडो विनो कीयां छे थोडोइज धर्म ।
 त्यांरी सरघा रो त्यांहीज काढियो भर्म ॥ ३९ ॥

केइ भेषघास्यां रे इसडी छे सरघा,
सामाइ नें पोसा तो उंतर गुण विरत,
मूल गुण तो श्रावक रें जाव जीव छे,
मूल गुण विरत जिण पेहली क्रीया छे,
तिण लेखे सामाइ नें पोसा रे माहे,
जो संथारों करे तो बडां श्रावक रे,
यां तो छोटा रा विनो सामाइ मे थाप्यो,
यामें किण री साची किण री छोटी सरघा छे,
श्रावक रो विनो थापें छे साघ तणी पर,
त्यां विकला री सरघा तो पग पग पर अटके,
श्रावक श्रावक रो विनों साघ तणी पर,
युंही बकरोल करे छें अन्हाखी,
छोटो श्रावक भारी भारी वसतर पेंहरे,
जो उ बडा नें आछा वसतर नहीं देवें तो,
यांरां छोटा श्रावक रें भारी भारी गेहणा,
जब छोटो बडां श्रावक ने गेहणों न देवे,
छोटो श्रावक जीमे साल दाल ने मोदक,
यारें लेखें आछो आहार न दें बडा ने,
छोटा श्रावक रें चोखा हाट हवेल्या,
जो उ हाट हवेल्या बडां ने न आपें,
छोटा श्रावक तो हाथी घोडे रथ वेठां,
'त्यां पिण खोयो त्यारो विने मूल धर्म,
छोटो श्रावक चाले छे पालखी बेठी,
यारे लेखें पिण छोटके श्रावक,
छोटा श्रावक रे घर में धन घणो छें,
यारें लेखें यारा छोटा श्रावक ने कहिणो,
इत्यादिक छोटा श्रावक रे वसत अनेक,
जब यो पिण यारें लेखें अवनीत श्रावक,
विनों विनों कर रह्या मूरख,
श्रावक रो विनो करणों कहे साघ तणी परे,
यारो बडों श्रावक पिण छोटा श्रावक ने,
जब घूल पडी त्यांरा विने धर्म मे,

सामाइ में छोटा ने तीखूता सूं वादे ।
मूल गुण वाला बडा रें चालणो छादे ॥ ४० ॥
उत्तर गुण विरत इधकाइ रा ताम ।
जाव जीव छोटा सूं बडो छे तांम ॥ ४१ ॥
बडा श्रावक रो विनो साघां ज्यू करणो ।
सीस नमाय ने पगा मे पडणों ॥ ४२ ॥
या छोटा रा विना मे पाप बतायों ।
ते पिण विकला ने खबर न कायो ॥ ४३ ॥
ते मत निश्चेंइ जाणजो कूडों ।
त्यांरी छोटी सरघा रो सुणजो फित्तुरो ॥ ४४ ॥
करता तो किण ही नें निजरा न दीठो ।
तिणने प्रश्न पृच्छ्यां पडें पग पग फीटो ॥ ४५ ॥
बडा रें लीलर कपडा ने लीलर पागों ।
जब यारे लेखें छोटा रो पूरो अभागों ॥ ४६ ॥
बडां श्रावक नें गेहणो नही एक मासो ।
तिण तो क्रीयो विने मूल धर्म रो न्हासो ॥ ४७ ॥
बडो श्रावक जीमे छें कूकस कूर ।
तो विने मूल धर्म मे पड गइ घूर ॥ ४८ ॥
बडां रे छोटी टपरी छे तो पिण तूटी ।
जब यांरो विनो धर्म गयो उठी ॥ ४९ ॥
बडो श्रावक मूढा आगे चालें पालो ।
इण लेखे यारी सरघा नें लागें छें कालो ॥ ५० ॥
बडो श्रावक पालखी लीघी छें काधें ।
विने मूल धर्म नें खोयो छे आधें ॥ ५१ ॥
बडो श्रावक दलदरी तिणने न आपें ।
तूं विने मूल धर्म ने कांय उथापें ॥ ५२ ॥
ते बडो श्रावक मागें तो देवें नांही ।
तिणमे विने मूल धर्म न दीसे काई ॥ ५३ ॥
ते विनो करणो तो साघा रो चाल्यों ।
ओतो घोचो अणहूतों कुगुरां रो घाल्यों ॥ ५४ ॥
उलटो सीस नमाय करे नमसकार ।
यांरी सरघा ने दीजे तीन धिकार ॥ ५५ ॥

श्रावक रो विनों थापें साध तणी परें, आ तो सरघा उठी जठाथी भूठी ।
 ग्रहस्थ रा विनां माहें धर्म कहें त्यारी, हीया निलाड री दोनूइ फूटी ॥ ५६ ॥
 श्रावक तो निश्चें ग्रहस्थ सागे, वले अर्धमियां सूं करें संभोग ।
 तिणरो विनों थापे मूढ साध तणी परें, त्यारें मोटो छें मिथ्यात रो रोग ॥ ५७ ॥
 श्रावक तो मांहोमां पागडी पाडे, कांम पड्यां मांहोमां करें जीव घात ।
 तिणरो विनो थापें मूढ साध तणी परें, त्यांरो गाढे घट माहें घोर मिथ्यात ॥ ५८ ॥
 छ काय जीवां रो करे घमसाण, वले छ काय जीवां रो कर जाय गटको ।
 तिणरो विनों थापें मूढ साध तणी परें, त्यांरो सरघा नें जाणजो जेहर रो बटको ॥ ५९ ॥
 केइक तो मिथ्यातां विचेंई, केइ श्रावकां रें त्यांसूं इचको आरभो ।
 त्यांरो विनों थापें मूढ साध तणी परें, त्यां विकलां री सरघा रो जोयजो अचंभो ॥ ६० ॥
 श्रावक मांहोमां करें छें विनों वीयावच, वले हाथ जोडी साता पूछें वगेख ।
 नमसकार करें नीचो सीस नमाए, ते जिण आगन्यां मांहिले नही एक ॥ ६१ ॥
 इत्यादिक सगलाइ छें सावद्य कांमा, तिणमें श्रीजिण आगन्यां नही छें लिगार ।
 तिण माहें धर्म कहें छें अग्यांनी, त्यांरा घट माहें छें पूरो घोर अंधार ॥ ६२ ॥
 श्रावक श्रावक रा करणा गुण ग्राम, छता गुण ढांक न राखणा तिणरा ।
 उणरा दीपावणा ग्यांनादिक गुण नें, जिण आग्या सहीत गुणग्राम करणा तिणरा ॥ ६३ ॥
 सुसरका विनों तो साध रो करणो, श्रावक रा तो करणा गुणग्राम ।
 इमहीज विनों मतग्यांनादिक रो, जोय लेवो सूतर में ठाम ठाम ॥ ६४ ॥
 श्रावक मांहोमां आरंभ कर जीम्या, नमसकार कीयो ते सूतर में चाल्यो ।
 भगवंत भाव दीठा जिम भाप्या, ते जिण धर्म में भेषघाख्यां घाल्यो ॥ ६५ ॥
 जोड कीधी सावद्य विनों ओलखावण, पाली सहर में कीयो विचार ।
 संवत अठारें वरस बावनें, आसोज विद पांचम शुक्रवार ॥ ६६ ॥

ढाल : १५

दुहा

भेषधारी भिष्ट भागल हुआ तिके, करें असुघ वेंहरण री थाप ।
चोर ज्युं असुघ अर्थ हैरता, थोथा करें अग्यांनी विलाप ॥ १ ॥
किहां एक पाठ छे सूतर मे, तिणरो न्याय मेले नहीं मूढ ।
साधा ने असुघ वेहरायां घमं कहे, एहवी कर रह्या पापी रूढ ॥ २ ॥
एक पाठ छें भगोती मभे, शतक आठमा मांय ।
अर्थ करण वालो पिण डरपीयो, तिण केवलीया नें दीयो छें भलाय ॥ ३ ॥
साधां ने सचित असुघ दीया, कहे निरजरा बोहत अल्प पाप ।
ते उंधी सरघा रो निरणों कहूं, ते सुणजो चुपचाप ॥ ४ ॥

ढाल

[आ अशुकम्पा जिश आगन्या मे]

अफासु आहार ने सचित कहीजें, अणेसणीजेणं ते असुभक्तो जाणो ।
ते दीघां कहे अल्प दोष नें बोहत निरजरा, त्यां विकलां री सरघा री करजो पिछाणो ।
भेषधर नें भूलां रो निरणों कीजो ॥ १ ॥
काचो पाणी कोरों अन साधु नें वेंहरावे, वले खादिम सादिम सचित वेंहरावे ।
ए च्यारुंइ आहार सचित ने असुघ वेंहरावे, तिणरें अल्प दोष नें बोहत निरजरा वतावें ॥ २ ॥
अफासु ने अणेसणी पाठ छें चोडे, तिण पाठ रो अर्थ सूघो कहणी नावें ।
जथातय तिणरो अर्थ करें तो, घणा लोका माहे सेखी उड जावे ॥ ३ ॥
तिणरा भूठा भूठा अर्थ अनेक वतावें, कदे कारण पडियां रो नांम वतावें ।
कदे ओर सूतर सं घुचलाइ घालें, भारीकर्मा भोला लोकां नें भरमावें ॥ ४ ॥
ओ तो पाठ भगोती सूतर में घाल्यो छें, पिण आंघां रें अंतरंग नही छें पिछाणों ।
च्यारुं आहार सचित नें असुघ वेंहरायां, बोहत निरजरा किहांथी होसी रे अयाणो ॥ ५ ॥
फासु एसणीक साधु नें देवें श्रावक, ठांम ठांम बहू सूतरां रें मांही ।
ते सचित असुघ सुघ जाणें किम देवें, वले बोहत निरजरा जाणे किम ताहि ।
असुघ वेंहरण री थाप करो मत कोइ ॥ ६ ॥
इण पाठ नें मूढे आणें वाखंवार, त्यांरा सचित नें असुघ खावा रा परिणांम ।
जो असुघ वेंहरण रा परिणांम नही छें, तो यूही क्यांनैं वकसी वेकांम ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

च्याहं आहार सचित नें असुघ वेंहरावें, तिणरे तो अल्प आउखों बंधाय ।
 भगोती पांचमें सतक छठें उद्देशें, वले तीजें ठाणें ठाणाअंग मांय ॥ ८ ॥
 साधु जाण नें भोगवें आघाकर्मीं, ते तो बांधें छें उसम कर्म रा जाल ।
 ते तो नरक निगोद में भीका खासी, उतकठों हलें तो अनंतो काल ॥ ९ ॥
 साधु नें जाण नें आघाकर्मीं वेंहरावें, ते तो चारित धर्म रो लूणहार ।
 ते पिण नरक निगोद में भीका खावें, उतकठों हलें तो अनंतो काल ॥ १० ॥
 आघाकर्मीं वेंहरायां छें एकंत पाप, सचित नें असुघ वेंहरायां ओ पिण पाप ।
 च्याहं आहार सचित नें असुघ वेंहरायां, तिणनें मूढ करें बोहत निरजरा री थाप ॥ ११ ॥
 साधां ने असुघ आहार तो अभष कह्यो जिण, ते अभष आहार देवें दातार ।
 तिणरें अल्प दोष बोहत निरजरा कहें ते, ते तो भूला रे भूला थें मूढ गिंवार ॥ १२ ॥
 साधां नें आहार असुघ देवण रो, ओ त्याग करावें छें किण न्याय ।
 अल्प दोष नें बोहत निरजरा जाणें छें, तिणरें निरजरा री कांय देवें अंतराय ॥ १३ ॥
 वले साधां नें अंतराय आहार री पाडी, दातार नें अंतराय आहार दीधी वधेवें ।
 अल्प दोष थकी बोहत निरजरा हुंती थी, तिणनें सूंस करायां छें किण लेखें ॥ १४ ॥
 श्रावक साधां नें असुघ जाण नें वेंहरावें, तिणनें धर्म नें पाप दोनूइ जाणों ।
 ते दोय वांना नें मिश्र दांन कही थें, तिण दांन रा क्यूं करावो पचखाणों ॥ १५ ॥
 थें कही छों मिश्र दांन तणा म्हे, किणनेंइ सूंस करावां नांही ।
 इण मिश्र दांन रा सूंस करायां, थारी सरधा री वरग वूहा नहीं काई ॥ १६ ॥
 मूला गाजर जमीकंद दांन देवें छें, तिणमें धर्म थोडों नें धणों कही पाप ।
 तिण दांन रा सूंस करावों नांहीं, मिश्र दांन जांणी रहो चुपचाप ॥ १७ ॥
 अल्प दोष नें बोहत निरजरा जाणों छों, तिण दांन तणा पचखांण करावो ।
 बोहत पाप नें निरजरा अल्प जाणों थें, तिण दांन रा सूंस न करावो छों किण न्यावो ॥ १८ ॥
 साधां ने असुघ वेंहरावें तिणरो, बारमों व्रत भागों के नांय ।
 जब ओ कहें तिणरों बारमो व्रत भागों, तो बोहत निरजरा नहीं छें तिण मांय ॥ १९ ॥
 जो असुघ वेंहरायां बारमों व्रत भागें छें, तो बोहत निरजरा तिण में कदे म जाणों ।
 व्रत भांग्यां तो निश्चेंइ भूंडों होसी, तिणरी बुधवंत हीया में करसी पिछाणों ॥ २० ॥
 साधां नें असुघ वेंहरावें जाण नें, तिणनें एकंत पाप कहां नही कूड ।
 केइ अल्प दोष नें बोहत निरजरा कहें छें, त्यारी सरधा वो जाणजों फेंन फितुर ॥ २१ ॥
 मिश्र तणा बोल अनेक चाल्या छें, मिश्र दांन तो कठेय न चाल्यो ।
 भारीकमा जीवां रे उसम उदें सूं, मिश्र दांन रो घोचों पाषंड्यां चाल्यो ॥ २२ ॥
 मिश्र पष नें मिश्र भाषा कही जिण, मिश्र गुण ठाणों नें मिश्र परिग्रह दाल्यो ।
 वले मिश्र पांणी नें मिश्र शब्द कहा छें, वले मिश्र जोग भगवते भाख्यो ॥ २३ ॥

इत्यादिक दोग मिलीयां सुं मिश्र हुवे छे,
 पिण मिश्र दान सूतर में न चाल्यो,
 सुपातर नें कुपातर दांन तो चाल्या,
 पिण हीया फूट गधा रा साथी,
 श्रावक ने नेहत जीमावे तिण नें,
 भोलां ने भिष्ट करण ने अग्यानी,
 नीब रा ख्व मे आवो ख्व उगो,
 जब दोनूई ख्वा मे पाणी पोंहचे छे,
 ज्यू श्रावक ने असणादिक आहार जीमावे,
 तिणरे दोग वाना मिश्र दान नीपनो,
 जो जीमावण वाला ने दोग वाना मिश्र छे,
 इण पिण इण री विरत ने इविरत सीची छे,
 श्रावक तो अनेक नीलोती खाये छे,
 इत्यादिक भोगवे छे दरव अनेक,
 श्रावक ने दरव अनेक खवावे तिणनें,
 श्रावक घर रा दरव खावें छे तिण ने,
 घर रा दरव खावा कहे इविरत सीचाणी,
 विरत इविरत पोखी कहे श्रावक जीमायां,
 जो श्रावक असणादिक आहार खाधा थी,
 इण लेखे श्रावक रे कुसील सेव्यां थी,
 श्रावक असणादिक सू साता पावें छे,
 असणादिक सुं विरतने इविरत सीचाणी,
 यारे लेखे तो असणादिक रों त्याग कीघो,
 जब पिण श्रावक रे विरत इविरत पोषाणी,
 जो आगार सेव्या विरत इविरत सीचाणी,
 ओ तो उघो मत्या री सरघा रो लेखो,
 उपभोग परिभोग श्रावक भोगवें छे,
 तिणरो त्याग कीया थी विरत वघें छे,
 श्रावक रे बारे विरत नें बारें इविरत छे,
 इविरत सेव्यां सेवाया छे एकत पाप,
 विरत इविरत सीचे कहे छेश्रावक ने जीमाया,
 श्रावक ने जीमायां मिश्र दान कहे छे,

त्यारा नांम सूतर मे जूवो जूवो चाल्यो ।
 ओ तो भेष धार्या भूटो भगडो भाल्यो ॥ २४ ॥
 पिण मिश्र दान तो सूतर में नाही ।
 ते खूता छे मिश्र दांन री सरघा रे माही ॥ २५ ॥
 केइ भेषधारी मिश्र दांन बतावे ।
 कुण कुण कूडा कुहेत लगावें ॥ २६ ॥
 तिण नीब रा ख्व मे पाणी पावे ।
 नीब ने आंबो दोनूई फल फूल थावें ॥ २७ ॥
 जब विरत नें इविरत दोनूं सीचाणी ।
 एहवा कूहेत लगावे छे मूढ अयांणी ॥ २८ ॥
 तो जीमण वाला ने इण लेखे मिश्र होय ।
 यारें लेखे इण नें एकत पाप न कोय ॥ २९ ॥
 वले पीये छे काचो अणगल पांणी ।
 यारें लेखेतो विरत इविरत दोनूं सीचाणी ॥ ३० ॥
 विरत नें इविरत दोनूंइ सीची बतावे ।
 विरत इविरत सीची कहता लाज कयूं आवे ॥ ३१ ॥
 पार को खाधा दोनू कठाथी सीचाणी ।
 ते पूरा छे मूरख मूढ अयांणी ॥ ३२ ॥
 जो विरत इविरत दोनू पोखांणी ।
 विरत नें इविरत दोनूं सीचांणी ॥ ३३ ॥
 तो कुसील सू साता पामे वखो ।
 तो अस्त्री सेव्यां पिण ओहिज लेखें ॥ ३४ ॥
 वले कुसीलादिक रो कीयो पचखाणों ।
 यारी सरघा रे लेखे तो ओहीज जाणो ॥ ३५ ॥
 तो त्याग कीया पिण दोनू सीचांणी ।
 त्यां विरत इविरत हीया में नही पिछाणी ॥ ३६ ॥
 तिण सुं तो एकत इविरत सीचांणी ।
 विरत सींची कहे ते पाषडी री वांणी ॥ ३७ ॥
 त्यारा फलकोइ बुधवत लेसी पिछांणो ।
 विरत सेवायां एकत धर्मज जाणो ॥ ३८ ॥
 आ तो सरघा उठी जठाथी भूठी ।
 त्यारी हीया नीलाडी री दोनूंइ फूटी ॥ ३९ ॥

श्रावक रा काम भोग तो इविरत में छें, ते तो भोगव्यां उसभ कर्म लागें छें आणों ।
 ते- किपाक फल री छें ओपमा त्यानें, तीनूँइ करण सारीषा जाणों ॥ ४० ॥
 किपाक फल तो भोगवतां मीठा, तिणरो सचाद लागें जाणें अमीय समाणों ।
 नाडो नाड परगमीया पाछें, जूदा हुवें जीव काया प्राणों ॥ ४१ ॥
 ज्यू काम भोग भोगवतां मीठा, ते भोगवतां लागें अमीय समाणो ।
 तिण सूं कर्म लागें ते उदें आवें जब, भव भव में दुख उपजें आणो ॥ ४२ ॥
 किपाकफल तो एक भव दुखदाइ, काम नें भोग भव भव में दुखदायों ।
 ते काम नें भोग श्रावक नें सेवायां, धर्म नें मिश्र किहांथी थायों ॥ ४३ ॥
 किपाकफल खवावें तिणनें, ववेक विकल जाणें मित्री छें म्हारों ।
 जे चतुर विचवण डाहा हुवें ते, वेंरी जाणें घात रों करणहारों ॥ ४४ ॥
 ज्यू काम नें भोग भोगवावें छें तिणनें, ववेक रा विकल जाणें ओ मित्री छें रुडें ।
 जे चतुर विचवण डाहा हुवें ते, पाप कर्म रो दाता वेंरी जाणें पूरों ॥ ४५ ॥
 श्रावक तो जीवादिक पदार्थ जाणें, वले सावद्य निरवद भिन भिन पिछाणें ।
 ते तो श्रावक मांहोमां जीमें जीमावें, तिणमें धर्म तणों अंस कदेय न जाणें ॥ ४६ ॥
 श्रावक रा काम भोग शब्दादिक छें त्यानें, किपाकफल री ओपमा जाणी ।
 तीनां करणां नें पाप जाणें छें एकंत, तिण श्री जिण आग्या नें रुडी पिछाणी ॥ ४७ ॥
 रुंख वाढण नें साध कूहाडो दीघों, तिण कुहाडा सूं रुंख बाढें छें आणों ।
 रुंख बाढें तिणनें साज दीयों छें, त्यां दीयां नें एकंत पापज जाणों ॥ ४८ ॥
 धान पीसण नें साम् घरटी दीघों, तिण घरटी सूं धान पीसें छें आणों ।
 धान पीसें तिणनें साम् दीयों छें तिणनें, यां दीयां नें एकंत पापज जाणों ॥ ४९ ॥
 गांम बालण नें साम् अगन रों दीघों, तिण अगन सूं गांम बालें छें आणों ।
 गांम बालें तिणनें साम् देवें तिणनें, यां दीयां रो लेखों बरोबर जाणों ॥ ५० ॥
 इत्यादिक अनेक सावद्य रों साम् देवें छें, तिण सूं सावद्य काम करें छें जाणो ।
 सावद्य करें तिण नें साम् दीयों छें तिणनें, यां दीयां नें एकंत पाप पिछाणो ॥ ५१ ॥
 ज्यू श्रावक नें साम् असणांदिक रो दीघों, ते असणांदिक भोगवें अन पाणों ।
 खायें पीयें तिणनें साम् दीयों छें तिणनें, यां दीयां रो लेखों बरोबर जाणों ॥ ५२ ॥
 पाप करण रों साम् देसी तिणनें, एकंत पाप लागें छें आणों ।
 पाप रो साम् दीयां नहीं धर्म नें मिश्र, समझो रे समझो थें मूढ अयाणो ॥ ५३ ॥
 इविरत इविरत पोषी कहो श्रावक जीमायां, तो मिथ्याती पोष्यां इविरत पोषी जाणों ।
 इविरत पोष्यां एकंत पाप उवाडो, तिणरी पिण मूरख करें छें ताणों ॥ ५४ ॥
 तो मिथ्याती नें पोष्यां मिश्र किण लेखें, इणरी तो एकंत इविरत पोषाणी ।
 इविरत पोष्यां रों थें पाप बतायों, हिदें मिश्र कठा थी आयो अयाणी ॥ ५५ ॥

श्रावक भोगवें छें दरब अनेक, ते तो एकंत इविरत मांहे जाणों ।
 जीमावण वालों पिण इविरत में जीमावें, तिणमें धर्म नही छे रे मूढ अयाणों ॥ ५६ ॥
 श्रावक जीमायां नें मूढ मिथ्याती, विरत नें इविरत दोनूं पोषांणी जाणें ।
 जिण मारग रा अजाण अग्यांनी, पीपल बांधी मूरख जिम ताणें ॥ ५७ ॥
 श्रावक रा शब्दादिक भोग ओलखावण, जोड कीधी पाली सहर मभार ।
 संवत अठारे नें वरस बावनें, आसोज विद अमावस सोमवार ॥ ५८ ॥



ढुहा

भेषधारी भूला जिण धमं थी, ते कहें छें मिश्र दानं ।
सूतर विण करें छें परूपणा, त्यांरां धर माहें धोर अग्यांन ॥ १ ॥
सूतर ठाणांग तेह में, दस दानं कहाा भगवानं ।
गुण निपन त्यांरां नामं छें, पिण मिश्रन कहाा जिण दानं ॥ २ ॥
देवा नों नामं दानं छें, लेवा रो नामं लाभ ।
मिश्र दानं नें मिश्र लाभ नों, कठे नही सूतर में जाव ॥ ३ ॥
मिश्र दानं उठाय बेठों कीयों, त्यांरी सरधा नही छें सुध ।
ते तो माठी मत रा मानवी, त्यांरी भ्रिष्ट हुइ छे बुध ॥ ४ ॥
सावध निरवद दोनूं दानं चालीया, सुतर में ठामं ठामं ।
मिश्र दानं पापंडीयां परूपीयों, भूठा ले ले सूतर रों नामं ॥ ५ ॥
निज मत उथपत्तों जाण नें, थाप्यों छें मिश्र दानं ।
त्यांरी छोटी सरधा परगट करूं, ते सुणो सुख दे कानं ॥ ६ ॥

ढाल

[३ भविष्य संको ३]

दुरबल दुखीया री अणुकंपा आणे, तिणनें दे ते अणुकंपा दानं ।
तिण दानं नें मिश्र दानं कहें त्यांरो, भिष्ट हुवो विगानां रे ।
भविष्य मिश्र दानं कोइ मत मानो, ओ गूढ मिथ्यात छें छांनो रे । कुमत्यां* ।
आ सरधा छें जहर समानो ॥ १ ॥
तिणनें सचित अचित दोनूं देवें, छ ही काय हणी नें कोय ।
यो दानं संसार नो दीसैं उधाडों, तिण में मुगत रो भेल न होय रे ।
मिश्र दानं कठा न थी काढ्यों, इण मिथ्यात थी जगत नें दाढ्यों रे । कु० ।
आत्मा नें कलंक कांय चाढ्यों रे ॥ २ ॥
वंदीवांनादिक नें दानं दे तिणनें, संग्रह दानं कहाां जिण आप ।
तिण दानं नें मिश्र दानं कहें, तिण वीर ना दीया वचन उथाप रे ॥ ३ ॥
ओ पिण दानं संसार नों तिण में, मोष मारा रो भेल नहीं ।
कोइ चतुर विचपण डाहा हुवें ते, विचार देखों मन माहीं रे ॥ ४ ॥
भय रो घालीयों दानं दे तिणनें, भय दानं कहाां भगवानं ।
ए एकंत दानं संसार तणों छें, तिणनें मूढ कहें मिश्रदानं रे ॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ग्रह करडा जाण भय रो घाल्यो, तिणमें जिण धर्म रो भेल बतावें,
 खरच करें मूआं रे केडें, ए तो एकंत दान ससार नों तिण सूं,
 ए दान ससार तणों किरतब छे, तिणमे तो मोष रा मारग रो भेल बतावे,
 साकडे पडीयो दे लज्या रो घाल्यो, तिण दान नें मिश्र दान कहे त्यारें,
 सासरा में जमाइ लज्या तणें वस, ओ पिण एकंत दान संसार तणो छें,
 देवें रावलीया भाड भवइयादिक नें, मुकलावों पेंहरावणी देवे मूसालों,
 ओ एकंत दान संसार नों, इणमें मोष रा मारग रो भेल बतावें,
 गणिकादिक ने दान देवें छें, ओ तो दान उघाडो सावद्य,
 आठपो धर्म दान छें मोष रो मारग, सासता सुख पामें सिव रमणी रा,
 आपे ग्यान दरसण चारित नें तप, ए च्याळइ दान धर्म दान मे घाल्या,
 छ ही काय हणवा रा त्याग करें छे, तिण सू आवता पाप कर्म रुक जावें,
 निरदोषण दरव सावां नें देवे, तिण दान नें पिण धर्म दान मे घाल्यो,
 छ काय हणवा रो त्याग करें छें, आपें छें ग्यान दरसण नें चारित,
 हाती नेंहतादिक देवें सेण सगां ने, तिण पाछो लेवा री आसा सू दीघों,
 हाती नेंहतादिक देवे सेंण सगां ने, पेंहलां दीघों त्याने पाछों देवें छें,
 आमी साह्नी हाती देवे जीमें जीमावें, ए तो एकंत दान संसार ना दोनुं,

देवे थावरीयादिक रें हाथ । तिणरे बुकसीयो मिथ्यात रे ॥ ६ ॥
 ते तो चोथों कालुणी दान । वधें लोकां में मान रे ॥ ७ ॥
 तिणमे मोष रो मारग नांही । ते तो भूल गया भर्म मांही रे ॥ ८ ॥
 तिणने जिण कह्यो लज्या दान । घट माहें घोर अग्यान रे ॥ ९ ॥
 देवें जाचकादिक रे ताई । तिणमे जिण धर्म रो भेल नांही रे ॥ १० ॥
 भोपादिक नें देवें घर मान । गरब सू देवें ते गरब दान रे ॥ ११ ॥
 तिणमे संवर निरजरा नहीं अंसमात । तिण पडिवजीयो मिथ्यात रे ॥ १२ ॥
 कुसीलादिक सेवण काम । अधर्म दान छे तिणरो नाम रे ॥ १३ ॥
 तिण सू उतर जायें भव पार । तिणरो सांभलजो विसतार रे ॥ १४ ॥
 तिण सू पामे पद निरवाण । केवल ग्यांनीया ग्यान सू जाण रे ॥ १५ ॥
 ते अभेंदान कह्यो जिण राय । तिणने घाल्यो धर्म दान रे माय रे ॥ १६ ॥
 तिणने कह्यो सुपातर दान । भगवत श्री विरघमान रे ॥ १७ ॥
 सुपातर दान देवें छें तांम । धर्म दान छें तिणरो नाम ॥ १८ ॥
 नेहत घालें बनोला दें तांम । कायंती दान तिणरो नाम रे ॥ १९ ॥
 नेहत घाले बनोला दें तांम । कतंती दान तिणरो नाम रे ॥ २० ॥
 नेहत पिण घालें आंमी साह्नी । लेवा नें देवा रा छें कामी ॥ २१ ॥

नवमों दसमों दान देवो नें लेवो,
 तिणमें जिण धर्म रों भेल बतावें,
 ए दस विष दान कइया भगवते,
 केइ आठ दानां नें मिश्र कहें छें,
 त्यारिं बडा बडेरा आगें हुआ त्यां,
 मिश्र दान परूपें बडां नें विगोया,
 गिश्र दान रों थापण वालों,
 भूठी २ साख सूतर री दीधी छें,
 सूयगडाअंग इग्यारमें अघेनें,
 जो तिण ठामें मिश्र दान न काढें,
 सूयगडाअंग दूजें पांचमें अघेनें,
 बंतीसमी गाथा री साख दीधी छें,
 जो तिण ठामें मिश्र दान काढों,
 केइ चतुर विचषण डाहा होसी ते,
 आठ दानां में मिश्र दान बतावें,
 जो साची साख सूतर री दीधी हुवें तो,
 वले तीजा ठांगा री साख देइ नें,
 जो तिण ठामें मिश्र दान न काढें,
 वले घणा सूतरां नाम बतावें,
 जो किण ही सूतर में मिश्र दान न काढें,
 मिश्र दान परूपण वालें,
 वले सिष सिषणी छें निज पोता रा,
 मिश्र दान नें मिश्र धर्म,
 भारीकमा जीवां रें उसभ उदें सूं,
 मिश्र दान कहो भावे मिश्र धर्म कहों,
 मिश्र दान होसी तो मिश्र धर्म छें,
 किणही मिश्र दान तो कह दीयों चोडे,
 हिबें मिश्र दान तों कहितां न लाजें,
 सावद्य दान नें निरवद दान,
 पिण मिश्र दान सूतर में नाहीं,
 आठ दानां नें पिण सावद्य कहें छें,
 सावद्य कहाँ तिण अधर्म कहाँ छें,
 ख्याल छें धुर वोहरा वालों।
 तिण सरघा रो कीजों टालो रे ॥ २२ ॥
 मिश्र दान कहाँ नहीं एक।
 ते बूडें छें विनां ववेक रे ॥ २३ ॥
 मिश्र दान कहाँ दीसं नाहीं।
 पडीया पापंड पंथ रें मांहीं रे ॥ २४ ॥
 भूठ बोलतों संक्यों नाहीं।
 पिण नहीं छें सूतर रे मांहीं रे ॥ २५ ॥
 तिणरी साख दीधी ते कूडा।
 तो मूडे पडसी घूड रे ॥ २६ ॥
 मिश्र दान कहें छें तांम।
 साचा हुवें तो काढों तिण ठाम रे ॥ २७ ॥
 तो सरघा फेन फितूरों।
 थारों जाण लेसी मत कूडो रे ॥ २८ ॥
 ठांगाअंग दसमें कहे तांम।
 काढ दिखावो तिण ठाम रे ॥ २९ ॥
 कहें छें मिश्र दान।
 तो यूही वके जिम स्वान रे ॥ ३० ॥
 मिश्र दान कहें छें साप्यात।
 तो सरघा छे भूठ मिथ्यात रे ॥ ३१ ॥
 घणा जीवां नें विगोया।
 त्यांनें तो जाबक बोया रे ॥ ३२ ॥
 ए तो सूतर माहें न चाल्या रे।
 ए तो घोचा अणहंता घाल्या रे ॥ ३३ ॥
 ए तो परमारथ एक।
 समझों आण ववेक रे ॥ ३४ ॥
 तिण कह दीयों मिश्र धर्म।
 मिश्र धर्म कहितां आवें सम रे ॥ ३५ ॥
 दोनूं दान तो सूतर माह्यो।
 ओ तो गाला सूं गोलो चलायो रे ॥ ३६ ॥
 वले सावद्य में सरघें छे दोष।
 ते पिण विकलां नें खबर न कोय रे ॥ ३७ ॥

मिश्र दान कहे तिणरी सरखा रे लेखे,
मिश्र सावद्य के मिश्र निरवद कहिणों,
सावद्य नें तो मिश्र कहिता लाजे,
दांन मिश्र कहिता, नही लाजे,
सावद्य खोटो नें निरवद आछो,
सावद्य में धर्म ने पाप सरखे,
सावद्य किरतव ने अधर्म जाणो,
सावद्य मे कोइ मिश्र जाणो छे,
सावद्य कह्यो तिण कह दीयो अधर्म,
पिण पोता रा बोल्या री समझ न पोते,
असणादिक दातार देवे छे,
तिणमें पातर मे पुन कुपातरे पाप,
अन्न पाण पुने लेण ने सेण पुने,
याने मिश्र कहसी कोइ मूढ मिथ्याती,
अन्न मिश्र पाण मिश्र न चाल्यो,
वत्थ मिश्र भगवते न भाख्यो,
ए पांचूं बोला मिश्र दांन हुवे तो,
वले निरजर रा पिण मिश्र होय जावे,
आठ दांन देवण री भावना भावे,
तिणरी लेस्या किसी ने ध्यान किसों छे,
ध्यान लेस्या अधवसाय परिणाम,
ए च्यारूं भला के च्यारूं मूढा छे,
ए आठूइ दान संसार ना दान,
यामे मोष रा मारग रो भेल वतावे,
पातर कुपातर हर कोइ नें देवे,
तिणमे पातर दान मुगत रो पावडीयो,
खिम्यां सूर कह्या अरिहंता,
दाने सूर कह्या वेसमण देवता ने,
यामे दोय सूर तो संसार ना सूर,
वाकी दोय सूर निज आतम जीते,
संसार नो दांन ने मुगत रो दान,
मोष रा दांन सूं हुवे संवर निरजर,

सावद्य दांन न कहणो ।
पुच्छ्यां रो जाव सुघो हेंणो ॥ ३८ ॥
निरवदनेइ मिश्र कहितां लाजे ।
ते तो पिंडत भोलां मे वाजे ॥ ३९ ॥
आ तो सरखा छे सूधी ।
अकल तिणां री उंधी रे ॥ ४० ॥
अधर्म ने सावद्य जाणो ।
ते वूडे छे कर कर ताणो रे ॥ ४१ ॥
निरवद कह्यो तिण कह दीयो धर्म ।
ते तो मूला अग्यांनी भर्म रे ॥ ४२ ॥
तिणनें दान कह्यो जिणराय ।
ते तो जोय लों सूतर मांय रे ॥ ४३ ॥
वत्थ पुने कह्यो जगनाथ ।
तिणरी प्रतष भूडी बात रे ॥ ४४ ॥
लेण ने सेण मिश्र नाही ।
जोवो सूतर रे मांही रे ॥ ४५ ॥
आश्रव सबर मिश्र होय जाय ।
जोवो सूतर रे माय रे ॥ ४६ ॥
तिणरा किसा अधवसाय परिणाम ।
च्यारा मायलो कह्यो छो तांम रे ॥ ४७ ॥
ए तो मिश्र चाल्या नही कोय ।
मिश्र हुवे तो वतावो मोय रे ॥ ४८ ॥
त्यामे संवर निरजर नाही ।
ते तो खूता संसार ने माही रे ॥ ४९ ॥
तिणने कहीजे दातार ।
कुपातर सूं रूले संसार रे ॥ ५० ॥
तवे सूर कह्या अणगार ।
जुमे सूर वासुदेवा धार रे ॥ ५१ ॥
ते तो जस कीरत रा कार्मी ।
कर्म काटे हुवे सिव गांमी रे ॥ ५२ ॥
पिण मिश्र दांन न कोय ।
संसार ना दांन सूं आश्रव होय रे ॥ ५३ ॥

आठ दांन री साध परसंसा करें-तो, छ कय रों वच वंछणहारो ।
 देण वाला रे फल लागें ते, बृधवंत लेजों विचारो रे ॥ ५४ ॥
 ए बावीस टोलां नें साध कहें छे, ते पिण मिश्र दांन न मानें ।
 मिश्र दांन कहें तिणनें भूठो जाणें छें, सुध सरघा सूं कर दीयो कांनें रे ॥ ५५ ॥
 अघर्मी जीवां नें दांन देवे छें, ते एकंत अघर्म दांन ।
 धर्मी नें दांन निरदोषण देवें, ते धर्म दांन कह्यो भगवान रे ॥ ५६ ॥
 सुपातर नें दीयां संसार घटें छे, कुपातर नें दीयां वधें संसार ।
 ए वीर वचन साचा कर जाणों, तिणमें संका नही छे लगार रे ॥ ५७ ॥
 संसार ना दांन नें साध परसंसें, तिणनें कह्यो छ कय रों घाती ।
 तिणमें भुगत रा मारग रो भेल वतावें, ते तो पूरा छें मूंड मिथ्याती रे ॥ ५८ ॥
 जोड कीधी मिश्र दांन निषेदण, सोमत्त सहर मफारो ।
 संवत अठारे ने वरस तेपनें, सावण सुदि छठ नें सोमवारो रे ॥ ५९ ॥

ढलल : १७

दुहल

भेषघलरी भूला फलरे जेन रल, वलजे लोका मे अणगलर ।
ते धरुम कहू हलसल कीयल, ज्यलरी जीभ बहे ज्यू तरवलर ॥ १ ॥
ते खूटी करे छे परूषणल, जलवक सूतर वलरूष ।
तुयल जलण मलरग नही ओलूखुओ, तुयलरी भलषुट हुइ छे बुध ॥ २ ॥
जीव द्यल तुयलरल घट मे नही, हलसल रू उपदेस दे तलम ।
तुयलरू उपदेस सुणे छे तेहनुल, रहे जीव मलरण रल परलणलंम ॥ ३ ॥
सलवदुध दलन ससलरी जीवल तणू, तलणमे छु ही कलय री घलत ।
तलणमे धरुम नू पुन परूषतल, पलपी सके नही तललमलत ॥ ॡ ॥
वूरी उठुवल छे पलपी छु कलय नल, धरुम कहल कहल हूणलवे छु कलय ।
कलण वलध करे छे परूषणल, ते सुणजू वलतलतुयल ॥ ५ ॥

ढलल

[आ अरुकुमुपल जलण अगनुयल मे]

छु कलय रल पीहर वलजे लोका मे, पलण सलंनी करे छु ही कलय ने मरलवे ।
छु कलय हूणे कूड दलन देवू छे, तलण मे एकत धरुम ने पुन वतलवे ।
आ सरघल केइ भेष घलरुयल री ॥ १ ॥
मुरड मलटी खडी आदल अनेक पृथवी छे, तुयलरी जूदी जूदी दलन सलल मडलवे ।
दगचलल पलडुधलं तुयलरू दलन देवे छे, तलण मे एकत धरुम ने पुन वतलवे ॥ २ ॥
कूडल वलव खूणलवे तललव खूडलवे, अथवल पलंणी री पलण पू मडलवे ।
दगचलल पलडुधल दलम देवू पलणी रू, तलण में एकत धरुम ने पुन वतलवू ॥ ३ ॥
अगन रल खूीरल भूभर ने भरसलड, इतुयलदलक अगन री दलनसलल मडलवे ।
दगचलल पलडुधल दलन देवे अगन रू, तलण मे एकत धरुम ने पुन वतलवू ॥ ॡ ॥
आयल गयल ने वलयरू घललण, वीजूणल री दलनसलल मडलवे ।
दगचलल पलडुधल सहु ने वलयरू घललू, तलण मे एकत धरुम ने पुन वतलवे ॥ ५ ॥
प्रतेक ने सलधलरण वनसपती रू, तुयलरी जुदी जुदी दलनसलल मडलवू ।
दगचलल पलडुधल दलन देवे वनसपती नू, तलण मे एकत धरुम ने पुन वतलवे ॥ ६ ॥
ललवल तीतरलदलक तस जीव अनेक, तुयलरी जुदी जुदी दलनसलल मडलवे ।
तस जीव रू दलन देवू दगचलल, तलण मे एकत धरुम ने पुन वतलवे ॥ ७ ॥

अथवा छ काय जीवां नें जीवां हृणे नें, त्यांरी जुदी जुदी दांनसाला मंडावें ।
 दगचाल पाड्यां दांन देवें जीव हणी नें, तिण मे एकंत धर्म नें पुन बतावे ॥ ८ ॥
 कोइ छ काय जीवां रो गटकों करावे, अथवा छ काय मारे ते खवावें ।
 ओ जीव हिंसा नों राहज खोटों, तिण में एकंत धर्म नें पुन बतावे ॥ ९ ॥
 कोइ श्रावक री अणुकंपा आंणी नें, कोरी नीलोती सचित खवावे ।
 अथवा नीलोती रांध खवावें, तिण में मूरख धर्म बतावे ॥ १० ॥
 बेंगण बालोदिक अनेक नीलोती, रांध रांध जीमावें श्रावक जाणी ।
 तिण में इ धर्म कहें भेषधारी, त्यांरी भाषा छें जाणें बहती घांणी ॥ ११ ॥
 गाजर मूला नें सकरकंद कांदा, इत्यादिक जमीकंद श्रावक नें खवावे ।
 अथवा जमीकंद नें रांध रांध खवावें, तिण मांहे धर्म अनारज बतावे ॥ १२ ॥
 केइ बेंगण बालोदिक भडथा करे नें, श्रावक ने जीमावण त्यांरी कीघा ।
 तिण मे भेषधारी धर्म बतावें, त्यां नरक सूं डेरा सनमुख दीघा ॥ १३ ॥
 कोइ धर्म जाणें श्रावक रें काजें, कोरी कवली नीलोती छमक बधारी ।
 तिण मांहे दुष्टी धर्म बतावे, त्यांरि नरक जावा री हुइ तयारी ॥ १४ ॥
 श्रावक नें नीलोती विवध प्रकारें, कोरी काची खवावें बधार घूंगारी ।
 तिण मांहे धर्म कहे भेषधारी, त्यांरी भव भव में होसी घणी खवारी ॥ १५ ॥
 कोइ कोडां मण जमीकंद रांधी नें, श्रावक श्रावक नें देवें अणुकंपा आणी ।
 तिण दातार री लेस्या नें भली कहे छें, केइ भेषधारी बोलें एहवी वांणी ॥ १६ ॥
 श्रावक नें उन्हीं पांणी कर पावें, बले पावें काचो अणगल पांणी ।
 तिण में धर्म कहें भेषधारी अनारज, त्यांरी जीम बहे जाणें बहती घांणी ॥ १७ ॥
 श्रावक री अणुकंपा आंणी ने, खपें सो देवें अणगलीयों पांणी ।
 हरकोइ काम करवा रें काजे, तिण में धर्म कहें छें मूढ अयांणी ॥ १८ ॥
 श्रावक नें कल्पें ते वस्त दीयां में, धर्म कहें भेषधारी दिढाय दिढाय ।
 श्रावक तो हरकोइ वसत लेवें छें, आ पिण विकलां नें समझ न कांय ॥ १९ ॥
 श्रावक तो वसत इविरत में लेवें छें, देवाल पिण इविरत में दीघी ।
 इण वात रो निरणों कीयां विण विकलां, खोटी खोटी परूपणा पापीयां कीघी ॥ २० ॥
 अंबडना सिष्य सातसों हुंता, त्यांनें काचा पांणी री आगन्यां दीघी ।
 तिण मांहे धर्म कहें भेषधारी, आ पिण खोटी परूपणा कीघी ॥ २१ ॥
 आगन्या रे देवाल तो निसंक पणा सूं, सर्व नंदी री आगन्या दीघी छें तांम ।
 सर्व नंदी री आगन्या दीघी छें तिण रा, भेषधारी कहे चोखा परिणाम ॥ २२ ॥
 असंख्याता जीव तो पांणी तणा छें, बले नीलण फूलण रा जीव अनंत ।
 त्यांरी गटको करण री आगन्या दीघी, तिण नें भेषधारी धर्म भाखंत ॥ २३ ॥

काचा पांणी री आगन्या दीघी छे तिणने,
 भेपवारी भागल सरवा रा भिष्टी,
 जिण भाषीया तो सूतर बाचे,
 नदी रा पांणी री आगन्या दीघी,
 कोडा मण काचो अणगल पाणी,
 तिण माहे पुन कहे भेषचारी,
 जीव खवायां मे पुन परूपे,
 तिण सू आप डूबे अनेरां ने डबोवे,
 जीव खवाया मे पुन परूपे,
 पर जीव री पीडा न ओलखी त्यारी,
 जीव खवाया में पुन परूपे,
 त्यारी जीभ वहे तरवार सू तीखी,
 जीव खवाया मे पुन परूपे,
 ते दया रहीत छे दुष्ट अनारज,
 जीव खवाया पुन कहे जेनी होय ने,
 समकित श्रावक ने साध पणो हुवे,
 जीव खवायां मे पुन परूपे,
 इण सरवा सू नरक मे भीका खासी,
 जीव खवाया मे पुन परूपे,
 वले दुसमन रो जोग मिलसी तिणा ने,
 जीव खवायां पुन कहे भेषचारी,
 पापीया जेन रों भेष लजायो,
 जीव खवाया मे पुन परूपे,
 छानें छाने तो सरवा सीखावे,
 जीव खवाया मे पुन परूपे,
 परगट कहितां मूढा दीसे,
 जीव खवायां पुन कहे त्यारी सरवा,
 ते जेन तणा विगडायल पापी,
 कदे तो पुन कहे जीव खवाया,
 यां दोया रों निरणो न कीयों विकला,
 चोर चोरी री वसत छाने छानें वेचे,
 ज्यू जीव खवायां पुन कहे त्यांसूं,

साधु तो त्रिविधे त्रिविधे नही सरावे ।
 ते निसक पणे तिण ने धर्म बत्तावे ॥ २४ ॥
 वले लोका मे जेन रा साध बाजें ।
 तिण ने धर्म कहिता मूल न लाजें ॥ २५ ॥
 तिणरी आगना देवे हर कोइ ।
 त्या मानव नो भव दीघो खोइ ॥ २६ ॥
 त्या विकला री सरवा छे जेहर समान ।
 ते भव भव मे होसी घणा हिरान ॥ २७ ॥
 आ तो सरवा उठी जठायी मूठी ।
 त्यारी हीया नीलाड री दोनूड फूटी ॥ २८ ॥
 त्या दुष्टयां ने कहिजे निश्चे अनारज ।
 त्या विकला रा किण विध सीमस्ती कारज ॥ २९ ॥
 वले चिठाय चिठाय ने बोले सेठा ।
 नरक निगोद रा प्रावण होय बेठा ॥ ३० ॥
 ते नरक निगोद ने त्यारी हुबो ।
 त्यारे तीनूड बोला मे उठीयो धूओ ॥ ३१ ॥
 त्यां सुध वृष अकल ने जावक खोइ ।
 तिहा छोडावण वालो नही छे कोइ न कोइ ॥ ३२ ॥
 त्यांरे बाहलां तणो पडजाय विजोग ।
 वले वधतों जासी त्यारे रोग ने सोग ॥ ३३ ॥
 मुहपती बाघो री पिण वरग न बूहां ।
 विरत विहूणा नागडा निरलज हुआ ॥ ३४ ॥
 त्यानें पूछ्या थकां पलटे जावे वांणो ।
 त्यारी सरवा ने जार गरमजिम जाणों ॥ ३५ ॥
 ते सीह तणी परें कदे न गूजे ।
 त्याने प्रस्न पूछ्यां गाडर जिम धूजे ॥ ३६ ॥
 चोडे निसक सू निश्चेइ उधी ।
 त्यारी भापा पिण किण विध नीकलेंसूधी ॥ ३७ ॥
 कदे कहे जीव वचायां पुन ।
 यू ही वके गेहला ज्यू हीयासून ॥ ३८ ॥
 चोडे धाडें तिण सू वेचणी नावें ।
 चोडे लोकां में बत्तावणी नावे ॥ ३९ ॥

जीव खवाया पुन पल्पे, त्यांरी सरखा अतंत छे माठी सूं माठी ।
 आ उंची सरखा बेठी उसभ उदे सूं, त्यांरी सुध बुध अकल जावक गइ न्हाठी ॥ ४० ॥
 जीव खवायां पुन कहें त्यांरी सरखा, मांस अहारी ने हिंसा धर्म्या सूं मिलती ।
 एहवा अनारज तो आ सरखा सरासी, पिण जिण मारग सूं तो जावक ठळती ॥ ४१ ॥
 जीव खवायां पुन कहें ते पापी, पाघरा नरक निगोद मे जासी ।
 तिहां छेदन भेदन विवध प्रकारे, वले मार में मार अनंती खासी ॥ ४२ ॥
 जीव खवायां पुन कहे त्यां पापीयां नें, तातो तांबो उकाल नें नरक मे पासी ।
 वले जीभ काढसी त्यांरी जड सूं तांणी नें, खाल उतार नें वले खार लगासी ॥ ४३ ॥
 जीव खवायां पुन कहें भेषधारी, त्यांनें नरक री मार रो छेह न पारो ।
 छद्रमस्य सूं पूरी कहणी न आवें, पल सागरा लग खासी मारो ॥ ४४ ॥
 ते नरक मांसूं नीकल नें पापी, पछें रलतो रलतो निगोद में जासी ।
 तिहां जन्म नें मरण करसी अनंता, अनंतो काल तिहां दुख पासी ॥ ४५ ॥
 नरक निगोद नें तिरजंच गति में, आमां साह्यां घणा गोता खासी ।
 तिणरी मार तणो छेह वेगो न आवे, अनतो काल तिहां दुख पासी ॥ ४६ ॥
 नरक निगोद सूं नीकल नें पापी, नीठ नीठ नर नो भव पासी ।
 घणो दो भागीयो ने दलदरी होसी, तिणनें निजरां दीठा पिण किण नें न सुहासी ॥ ४७ ॥
 उगता रा मात पिता मर जासी, वले वाहलां तणो पड जासी विजोग ।
 दुसमण तणों संजोग आए मिलसी, वले वघतों जासी तिणरें रोग ने सोग ॥ ४८ ॥
 जीव खवायां पुन कहे भेषधारी, त्यां दुष्ट्यां री संगत दूर निवारो ।
 दया धर्मी री संगत कर नें, तिरण तारण गुर माथे घारो ॥ ४९ ॥
 वले कहि कहि नें कितरा एक केहूं, जीव खवाया पुन कहे त्यारा दुख ।
 ते भमन करसी अरट घटकारें न्यायें, तिण पापी ने किण विव होसी सुख ॥ ५० ॥
 हिंसाधर्मी ओलखावण काजें, जोड कीधी पाली सहर मभारे ।
 संवत अठारे नें पचावनें वरसें, आसोज सुद एकम नें बुववारे ॥ ५१ ॥

ढाल : १८

ढुहा

केइ भेषघारी भागल थया, त्यारी भिष्ट हुइ सुघ बुघ ।
 त्यां पेट भरण रे कारणे, कीधी परूपणा असुघ ॥ १ ॥
 ग्रहस्थ लाडू आदि मोल आण ने, अथवा घरे नीपाए तांम ।
 ते जीवावे त्यारा श्रावका भणी, तिणरो दया दीयो छे नांम ॥ २ ॥
 एहवो घर्म सीखायो श्रावका भणी, तिण सू उलटा बाघें छे कर्म ।
 जे सा कू तेसा मिल्या, भूला अग्यानी भर्म ॥ ३ ॥
 लाडू खवायां घर्म परूपीयो, ते आप रे मुतलव काम ।
 रस गिधी जीभ्या रा लोलपी, यारे आछा खावां री मन हाम ॥ ४ ॥
 दया पलाइ मुख सू कहे, पिण प्रतष दीसें गोठ ।
 तिण गोठ रों नांम दया दीयो, ते चोडे चलायो खोट ॥ ५ ॥

ढाल

[३ भवीयण सं०]

केइ दया पलावण चोखा रे ताड, मूसलां सू साल खंडावें ।
 एकीका मूसलरें घमके, असंख्याता वाउकाय मर जावें ।
 रे भवीयण आ दया कठा थी काढी, ओछा वेवज पेट रे कारण ।
 जिण घर्म तणी वरत वाढी रे, थे समझाया पिण समझों नांही ।
 थारें चोकडी दीसें जाडी रे* ॥ १ ॥
 जबूदीप भरे तिजारा रा दाणा थी, ते तो गिणती रा जीव असख्यात ।
 तिण थी असख्यात गुणा वाउ रा जीवा री, एके घमके हुवे घात रे ॥ २० ॥ २ ॥
 पछें छाज मे घाले माटक पछाटे, तुसनें चावल करें जुआ ।
 तिहां पिण एकीका छाज रें फरके, असख्याता वाउकाय मूआ रे ॥ ३ ॥
 दया पलावण चोखा पीसें ते, घरटी नें घमकावें ।
 एकीका घरटी रा फेरा में, असंख्याता वाउकाय मर जावे ॥ ४ ॥
 वले घरटी फेर्यां तेउकाय उठें छें, तिण अगन तणी हुवें घात ।
 एकीका घरटी रा फेरा मे, तेउकाय मरें असंख्यात रे ॥ ५ ॥
 वले मेदां मे घी ऊन्हो करे घालें, तिहां तेउ तणी हुवें घात ।
 खांड पाले दया रा लाडू वणावें, तठें दया नही तिलमात रे ॥ ६ ॥

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

केइ लाडू भुजीया नें मुरमुरीयां, दया पालण नें मोल मंगावे ।
 ओ पिण क्रय विक्रय नों दोष छें भारी, अठें पिण हिसादिक थावे रे ॥ ७ ॥
 वले दया पलावण नें सूठ भीजोवें, वले अथाणो मोल मंगावें ।
 बेंसवाख्या भूंगडा पिण ल्यावें, केइ पापड पिण सेकावें रे ॥ ८ ॥
 हलवाइ तो लाडू मोल बेचण कीघा, मोल लेवे त्पारें आवाकमी ।
 एहवा लाडू खावें खवावें, त्यांनै निश्चें जाणो अघमी रे ॥ ९ ॥
 गाम परगाम थी दही मोल मंगावे, नदी वाहला उलंधी ल्यावे ।
 नीलण फूलण रा जीव मारें अनंता, पांणी फूंवारादिक माख्या जावे ॥ १० ॥
 वले जातां नें आवतां नीलो चीथ्यो, तस थावर तणी हुवें घात ।
 वाजकाय मरें उघाडें मुख वोल्यां, तठे पिण दया नही तिलमत्त रे ॥ ११ ॥
 साघ साघवीयां नें श्रावक श्रावकां रो, सारां रो भेलों बाघें तुमार ।
 दया पलावण घर्म रे लेखें, इण विघ नीपजावें आहार रे ॥ १२ ॥
 मुदे तो रातां हाथ री बायां बुलावे, आप म्हारें आंगण पघारों ।
 थें दया घर्म रा लाडू खाय नें, म्हारा जीवां रों करो उघारो रे ॥ १३ ॥
 ए तो निरलजीयां इण कांमां नें बेंठी, ते तो मुणनै हरषत थावें ।
 पेलं रें घरे जाय उमाइ, दया घर्म रा लाडू खावें रे ॥ १४ ॥
 भेषघाख्यां नें घर सूं जाय बोलावें, म्हारें घरे आप पघारों ।
 वारमों वरत नीपजावों म्हारें, तिणसूं म्हारो होसी उघारो रे ॥ १५ ॥
 त्यांनै तेड्यां ततकाल जावें तिण घर, जाणें डोरी ताण्यो स्तान ।
 ताजें आहार तूटा पडें पापी, यारे पेट भरण रों तांन रे ॥ १६ ॥
 लाडूआं री दया तो यांहीज सीखाइ, ते तो आघों काढसी केम ।
 ए सगला लाडू खाए ते बेंहरें, पूरें मन रा मनोरथ एम रे ॥ १७ ॥
 बायां नें लाडू दया रा खवायां, त्यांसूं उपवास रो करे करार ।
 भेषघाख्यां नें लाडू तेड बहराया, त्यांसूं करार न कीघों ल्लार रे ॥ १८ ॥
 लाडू खाती खाती लेवे दही रा सबडका, सवाद सूं खावें मुरमुरी भुजीया ।
 धर्म रा लाडू खाती नहीं लाजें, ते तों छोडो लोकीक री लजीया रे ॥ १९ ॥
 उपवास री वांथवा कर लाडू खवावें, ते खावा री ओछ राखें किण लेखें ।
 भीकों उडावें लाडू खावारों, चांप चांप खावें वखोले रे ॥ २० ॥
 ताजी ताजी वसतां खावें प्रिधीपणा सूं, जो एक वसत माहें हुवें कजी ।
 तो भांड ज्यूं भांडें तिणनै भांडोंकाडीयां, तिणरी निंदां करें निरलजो रे ॥ २१ ॥
 ताजों आहार सराय सराय नें खावें, ते तो कर्म तणा पूज बाघें ।
 त्यां विकलां नें, जीमायां घर्म जाणें, तिण घर्म न ओलख्यो वाछे ॥ २२ ॥

आछों आछों खाये तिणरी दया सुघारे,
 एहवीः रस भ्रिघणीया जीभ्या री लपटण,
 मिनष आंतरीयो घुरल कें जूतों,
 उणरें प्राण छुटण री त्यारी हुइ छे,
 उण मादा तणा सुर बाज रह्या छे,
 ए लाडू खाती दही रा लेवें सबडका,
 तिण मांदा ने तिण दिन मरतों जाणे ने,
 दूजें टक खावा रें ताइ,
 मिनष आंतरीयो घुरलकें जूतों,
 ते मूखा पछें तिणरा न्यातीलां रे घर,
 एहवी रीता हाथां री बायां बारणें बेंसाणे,
 ए प्रतष कुसावण दीसें लोका रे लेखे,
 मंजारी जिम फिरती रहे छे,
 आछा खावा रो व्यांन लग रह्यो त्यारो,
 क्णिरें आरो मोसर जीमण करता,
 जब रस भ्रिघणीयां जिभ्या री लपटण,
 कहे मोने लाडू खवाय ने दया पलावें,
 म्हे लाडू खाय ने उपवास करस्या,
 जब वा वाइ थोडो हुंकारो भरे तो,
 धर्म रा लाडू खाती नही लाजे,
 ठडी रोटी ने घाट सू दया पलावे,
 ताजा माल साटें त्याने दया पलावे,
 ओ तो खावा तणी गटकाया उघाडी,
 तिणमे धर्म जाणें कुगुरा रा कह्या थी,
 एहवी खावा तणी गटकाइ त्यानें,
 धर्म रे ओले खाए ते धर्म ठगारी,
 दस बीस कोस उपर पकवान सुणें तो,
 ए तो घरे बेठी गुर री दलाली सू,
 हीडोला में बीस कोस खावा पढ्या जव,
 याने घरे वेठा मिलें दोनू टक लाडू,
 हीडोला तो जाये जीमे न्यात रे लेखे,
 ए पिण धर्म रा लाडू खावे निरलजीयां,
 ८१

उणी रहे तो उवा दया विगाडे ।
 ते पेला नें कदेय न तारें रे ॥ २३ ॥
 तिण उपर दया पलावें ।
 तिण घर बेठी लाडू खावे रे ॥ २४ ॥
 दोहरा लेवें छे सांस उसांस ।
 वले मन मे आण हुलास रे ॥ २५ ॥
 लाडू दही तिहां थी उठावें ।
 ओर जायगा आंणे ने खावे रे ॥ २६ ॥
 तिणरा मुख सू दया बोलावें ।
 घूरलाका रा दान रा लाडू खावे रे ॥ २७ ॥
 त्यानें जीमाया भलो न होगा ।
 जाणे मादा उपर नाचे मोगा ॥ २८ ॥
 जीमणवार री खबर रे ताइ ।
 ताणा वेजा लगा तिण माही ॥ २९ ॥
 बारदानो वधीयो सुणें ताय ।
 तिण दोली फिरे छे जाय ॥ ३० ॥
 याने इण बात रो होसी धर्म ।
 तिणसू थारे पिण कटसी कर्म ॥ ३१ ॥
 ए खावा ने होय जावे तयार ।
 त्यां विकला नें तीन धिकार रे ॥ ३२ ॥
 तो मुख सू कर दें नाकारो ।
 तो ए तुरत हुवे खावा ने तयारो रे ॥ ३३ ॥
 त्याने पोष्यां बंधे पाप कर्मों ।
 ते पिण भूला अग्यानी भर्मों रे ॥ ३४ ॥
 बुधवत जाणे धर्म ठगों ।
 भोला लोका ने देवं छे दगो ॥ ३५ ॥
 हीडोला खावां नें दोड्या जावे ।
 दोनू टका लाडूडा खावे रे ॥ ३६ ॥
 एक टक पिण नीठ सू खावें ।
 त्यासू लाडू छोड्या किम जावे रे ॥ ३७ ॥
 ते पिण निरलज हीडोला बाजे ।
 बेसरम्यां मूल न लाजे ॥ ३८ ॥

ओसर मोसर विनां पलार घर, जाए वेंटी पग पसार ।
 हींडोला जिम जीमें धर्म रे लेखें, घिग त्यांरो जमवार रे ॥ ३६ ॥
 मोटका घर रा केइ डाहा हुवें ते, विचार करें मन माहीं ।
 आपरा घर री लाडू खावा जाती हुवें, तिणनें पर घर जावा दें नाहीं ॥ ४० ॥
 रलीयार होर ज्यूं रलीयार हुवें ते, वरजें तोही वरजी न लागें ।
 दया पलावण रा लाडू कानें सुणें तो, होय जाए सगला रें आगें रे ॥ ४१ ॥
 दया रा लाडू खावा नें उमाइ, आंमी सांमी घणी जण्यां भटकें ।
 त्यांसू जिभ्या तणो चट रस नही छूटें, गटकाया हिली छे गटके रे ॥ ४२ ॥
 यारे मूदें तो रीता हाथा री बायां, कदा कांयक सुहागण आवें ।
 तिणने पिण कर दे गटकाइ, तिण सूं आ पिण त्यामें जावे रे ॥ ४३ ॥
 वीजासणीयां में खेतलो देवें, खेतला विण विजासणीयां नाहीं ।
 ज्यूं रीता हाथा री दया पालें छें, तो ही भेषघारी त्यां माहीं रे ॥ ४४ ॥
 यानें दया तणा लाडू खावा री, भेषघार्यां कुबद सीखाइ ।
 आप तणा मुतलब रें तांड, आ कुगुरां कुबद चलाइ रे ॥ ४५ ॥
 गाय सुखी हुवां गर्भ सुखी हुवें, कूए हुवें तो अवालें आवें ।
 जाणें यानें खवावसी तो मानेंइ वेरासी, तिण कारण ए चाला चलावें रे ॥ ४६ ॥
 कोई पांच तिथां उपवास करती न दीसैं, न करे एक टक पोहर बेपारी ।
 तिणनें लाडूआ साटें उपवास करावें, तिथां विनां हुवें उपवास नें तयारी रे ॥ ४७ ॥
 जो यारें दया पालण रा परिणाम हुवें तो, घर री रोटी खाए दया पालो ।
 उपवास करें वले करदों पोसो, छ काय तणो करो टालो रे ॥ ४८ ॥
 ए सांप्रत लाडू खाए धर्म लेखें, त्यांनं पूछ्यां बोल जाए कूर ।
 मूहपती वांधे नें भूठ बोले छें, त्यांरी दया में पड गइ घूर रे ॥ ४९ ॥
 ब्राह्मण तो मनसा भोजन धर्म रो जीमें, त्यांरों तो कुल में चेहरों न थाय ।
 माहजन री बेट्यां धर्म रा लाडू खाए तो, त्यांरी निद्या हुवें लोकां मांय रे ॥ ५० ॥
 ब्राह्मण तो धर्म रे लेखें भाता लेवें, दिषणा दीयां लेवें घन घान ।
 इत्यादिक यानें देवें ते लेवें, ते तो लेता न करे अभिमान रें ॥ ५१ ॥
 यानें मनसा भोजन आदि देवें नें लेवें, यांरा कुल री छें आहीज रीत ।
 जो डण रीतें दान महाजन री बेट्यां लेवें, तो लोकां में हुवें फजीत रे ॥ ५२ ॥
 आंतरीया ऊपरला लाडू खावें, त्यांनं भातादिक देवें सर्व लेंगों ।
 ब्राह्मण तो दातार नें धर्म कहेलें, ज्यूं यानें पिण धर्म केंगों रे ॥ ५३ ॥
 धर्म रा लाडू तो खाती नही लाजें, तो भातादिक लेती लाजें कांय ।
 धर्म रो लेंगो मांड्यो तो सब ही लेंगों, लेखो कर देखों मन मांय रे ॥ ५४ ॥

ब्राह्मण तो दातार ने आसीस देवे छे, दोनूं हाथ जोडी नमे सीस ।
 ज्यू ए पिण धर्म रा लाडू खाए ने, दातार ने देणी आसीस रे ॥ ५५ ॥
 आणद आदि देई श्रावक अनेक हुआ त्या, एहवी देया तो किण ही न पलाइ ।
 किण ही सूतर मे चाली नही दीसे, ये आ कुबद कठाथी चलाइ रे ॥ ५६ ॥
 त्यारे कोडाग मे धन घर माहे हुतो, जीव रा पिण किरपण नाही ।
 एहवी दया पलाया में धर्म जाणें तो, आघो न काढता काई ॥ ५७ ॥
 आगे गोतमादिक साध अनेक हुआ त्या, एहवी दया पालणी कही नाही ।
 लाडू खावां खवाया तो हिंसा उघाडी, तिणमे कला मत जाणो काई रे ॥ ५८ ॥
 एहवी दया भेषघाच्या सीखाई, तिणमे दया नही तिलमात ।
 लोलपणो तो उघाडो दीसे, वले छ काय तणी हुवे घात ॥ ५९ ॥
 लाडूवा खाणी दया ओलखावण, जोड कीधी नाथ दुवारा मभार ।
 सवत अठारे ने वरस छपने, पोह विद बीज सनीसरवार रे ॥ ६० ॥



ढाल : १९

दुहा

अंबरसिन्यासी श्रावक थयो, ते हुवो साधां रो सुवनीत ।
तिण लीघा व्रत चोखा पालीया, पिण छोडी नही मत रीत ॥ १ ॥
तिणरे भगवां वसतर पेहरणें, डंड कमडल तिणरें हाथ ।
ओर उपारण सिन्यासी तणां, ते लीया फिरें छें साथ ॥ २ ॥
काचों पांणी नदी तणों, ते पिण निरमल बेहतों जाण ।
ते पिण दीघो दातार नो, ते पिण पांणी लेणो छाण ॥ ३ ॥
ते पिण पांणी सावध जिण कह्यो, तिण पांणी रों अंबरनेअगार ।
अचित पांणी नें उन्हां पांणी तणो, तिण त्याग कीयो परिहार ॥ ४ ॥
आ रीत छें सिन्यासी तणी, छूटती नही दीघी तास ।
तिण श्रावक रा व्रत आदख्यां, श्री वीर जिणद रें पास ॥ ५ ॥
तिणरें विरत आदरतां इविरत रही, ते एकंत अघमं जाण ।
ते आश्रव पाप ना बारणा, तिण सूं पाप लागें छे आंण ॥ ६ ॥
तिणरों खांणो पीणों नें पेंहरणों, बले उपधि उपभोग परिभोग ।
ते सगलाइ राख्या ते इविरत में, त्याने भोगव्यां सावध जोग ॥ ७ ॥
भोगवे ते पेंहले करण पाप छें, भोगवावे ते दूजे करण जाण ।
सरावें ते करण तीसरें, सारां रे पाप लागें छें आंण ॥ ८ ॥
केइ अग्यानी इम कहे, अबर ने जीमायां धर्म ।
त्यां जिण मारग नही ओलख्यो, ते भूला अग्यानी भर्म ॥ ९ ॥
अंबर कीघो छें सों घरां पारणों, ते निरुचेइ इविरत में जाण ।
ते जथा तथ परगट कळं, ते सुणजो चतुर सुजाण ॥ १० ॥

ढाल

[दया भगवती छे सुप्त दाघी]

केइ कहें अंबर सिन्यासी श्रावक, सो घरां पारणों कीघो तामो जी ।
सों घरां रात रों बासों कीघों, ते धर्म दीपावण कामो जी ।
बुदवंत ग्यान करी नें देखो ॥ १ ॥
सों घरां अंबर पारणों कीघों, सों घरां बासों लीघों ताह्यो जी ।
कोइ धर्म दीपावण रो नाम लेवें छें, ते एकत मूषावायो जी ॥ दु० २ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक श्लोका के अन्त में है ।

सो घरां अंबर पारणों कीघों,
 तिणरो न्याय न जाणे अग्यांनी,
 अंबर सिन्यासी सो घरां पारणो किघो,
 तिण घणा लोकां नें विसमय उपजावण,
 वेक्रे लवघ फोरवी ते सावद्य जोग,
 वेक्रे सरौर करतां पाच किरिया लागी,
 काइया अह्मिगरणीया ने पाउसीया,
 ए पांच किरिया लागें वेक्रे कीघां,
 वेक्रे करने सों घरां वासो लीघों,
 ए तीनूं किरतव जिण आगन्या वारे,
 घुरसू वेक्रे कीघों ते सावद्य जोग,
 तीजों सों घरां वासो लीघो,
 ए तीनूंइ किरतव सावद्य कीघा,
 कोइ कहे घर्म दीपावण कीघा,
 घर्म दीपावण सों घरा पारणो कीघो,
 जो थे सूतर मांहे नही काढो तो,
 पारणो कीघों सों घरा घर्म दीपावण,
 ते जिण मारग रा अजाण अग्यांनी,
 सो घरां पारणों कीघो विसमय उपजावण,
 तिण मांहे घर्म कहे छे अग्यांनी,
 लवघ फोडवीयां जिण मारग दीपे तो,
 तो लवघ घणेरी हुंती,
 आप ने ओरां ने विसमय उपजावे,
 नसीत रे इग्यारमे उदेसे,
 विसमे ने इचरज कतोह्लादिक विद्या,
 ते विसमे उपजावण अंबर सिन्यासी,
 साधु विसमें उपजावे तों प्रायच्छित्त आवे,
 तो अंबर सिन्यासी विसमय उपजाइ,
 केइ कहे श्रावक रतना रो भाजत,
 पाप रें अंस तो मूल न लागे,
 जो श्रावक नें पोख्यां मे पाप हुवे तो,
 अंबर सिन्यासी पिण श्रावक हुंतों,

सो घरां वांसों लीयो ताहों जी ।
 थोथी करे वकवायो जी ॥ ३ ॥
 सो घरा वीसों कीयो छे तामो जी ।
 वेक्रे लवघ फोरवी इण कांमो जी ॥ ४ ॥
 वेक्रे सरौर कीघों तिण कालो जी ।
 तिणसूं पाप लागो दग चालो जी ॥ ५ ॥
 पारितावणीया पाणाइवायो जी ।
 पन्नवणा छत्तीसमां पद माह्यो जी ॥ ६ ॥
 वेक्रे कर सो घरां कीघों आहारो जी ।
 ते सावद्य जोग व्यापारो जी ॥ ७ ॥
 दूजो सो घरा कीयो आहारो जी ।
 ए तीनू सावद्य जोग व्यापारो जी ॥ ८ ॥
 ते तो विसमे उपजावण कामो जी ।
 ते भूठ बोले वेफामो जी ॥ ९ ॥
 तो थे सूतर मे काढ वतावो जी ।
 गाला रा गोला मती चलावो जी ॥ १० ॥
 आ तो उठी जठायी भूठी जी ।
 त्यारी हीया निलाड री फूटी जी ॥ ११ ॥
 ते तो उघाडो सावद्य साख्यातो जी ।
 ते प्रतख भूठ मिथ्यातो जी ॥ १२ ॥
 गोतमादिक साध अनेको जी ।
 ते तो मारग दीपावत वगोखो जी ॥ १३ ॥
 तिणने चोमासी प्राच्छित्त आवे जी ।
 तिणमे घर्म किहांथी थावे जी ॥ १४ ॥
 मत्र इद्रजालादिक जाणो जी ।
 फोडवी लवघ पिच्छाणो जी ॥ १५ ॥
 लागे एकत पाप कर्मो जी ।
 तिणने किण विघ होसी घर्मो जी ॥ १६ ॥
 तिण पोख्यां छे एकत घर्मो जी ।
 कटें निकेवल कर्मो जी ॥ १७ ॥
 अंबर नें पारणों नही करावत जी ।
 सो घरा पाप नही लगावत जी ॥ १८ ॥

यूँ कहि कहि अग्यानी श्रावक जीमायां, थापें छें एकंत धर्मों जी ।
 तिणनें विरत इविरत री खबर न काई, भूला अग्यानी भर्मों जी ॥ १६ ॥
 अंबर सिन्यासी सो घरां पारणों कीधो, तिणनें सों घर रो पाप लागो जी ।
 तिणरें खाणों पीणों सारो इविरत में थो, इविरत सेवी पिण वरत न भागों जी ॥ २० ॥
 अंबर सिन्यासी सों घरां पारणो कीधो, सों घरां रो लागो छें पाप कर्मों जी ।
 तिणनें पारणो कराय पाप लगायों, त्यानें किण विघ होसी धर्मों जी ॥ २१ ॥
 अंबर नें पेलें करण पाप हूवों छें, तो करावण वालो दूजें करण जाणों जी ।
 सरावण वालों तीजे करण पापी, यानें रूडी रीत पिछाणो जी ॥ २२ ॥
 अंबर नें काचो पांणी लेवण री, सर्व नदी री आगन्या दीधो जी ।
 तिणनें धर्म कहें छें अग्यानी, तिण हिसा धर्म री थापना कीधी जी ॥ २३ ॥
 जीव रो गटको करण री आगन्या देसी, तिणरे निश्चें बंधसी पाप कर्मों जी ।
 तिण माहें धर्म कहे छें पाखंडी, ते भूला अग्यानी भर्मों जी ॥ २४ ॥
 तीन काल रा श्रावक त्यांरों, खाणो पीणो एकंत अयमों जी ।
 ते अंबर नें पारणो करायां, किण विघ होसी धर्मों जी ॥ २५ ॥
 अंबर पारणो कीधो छे तिणरो, अंबर ने पाप लागो छे तांमो जी ।
 करावण वाला नें करावण रों पाप, यांरा जूआ जूआ परिणामो जी ॥ २६ ॥
 पेला रें लगायों तो पाप न लागें, आपरो लगायो पापज लागें जी ।
 सावद्य जोग दोयां रा जूआ जूआ वरत्या, त्यांरों पाप लागो छे सांगे जी ॥ २७ ॥
 अंबर तो सों घरां पारणो कीधों, तिणनें सिन्यासी जाण करायो जी ।
 करणवाला नें करावणवाला नें, भगवते नही सरायो जी ॥ २८ ॥
 अंबर सों घरां पारणों कीधो, सो घरां वासो लीयो ताह्यें जी ।
 तिण सावद्य कांग कीयो जब लोकां, सिन्यास्यां रो मारग दीपायो जी ॥ २९ ॥
 जिण मारग माहें कोइ लबध फोडवी तो, भगवंत नहीं सरावे जी ।
 तो अंबर सिन्यासी फोडवी लबध, तिण में धर्म केम बतावें जी ॥ ३० ॥
 अनेरा भेष में केवल ग्यांन उपजें, ते तो नही बागरें वाणी जी ।
 त्यां कर्ने दिष्या लेवें तो दिष्या न देवें, मिथ्यात बधतों जाणी जी ॥ ३१ ॥
 वांणी बागरीयां लोक सुणे इम बोलें, यामेइ उपजें केवल नांणो जी ।
 अनेरा मत री वधें परसंसा, वांणी नहीं बागरे इम जाणो जी ॥ ३२ ॥
 केवल ग्यांनी अनेरा मत री, महिमां बधती जांणी जी ।
 पाखंड मत ने बधतो देख्यों, यूँ जाणे नहीं बागरी वाणी जी ॥ ३३ ॥
 तो अंबर सिन्यासी फोडवी लबध, तिणनें लबध जीरवी नही जी ।
 तिण विसमें उपजावणा फोडवी लबध, तिणमें धर्म नही छे काई जी ॥ ३४ ॥

सिन्यासी रा भेप मे लवद फोडवी, तिण सिन्यासी री महिमा वधारी जी ।
 आपरें छादे लवद फोडवी तिणने, जिण आगन्या नही छे लिंगारी जी ॥ ३५ ॥
 जब कोइ कहे अंबर ने कह्यो अराधक, तिणने वीर जिणंद सरायो जी ।
 पांचमे देवलोके देवता हूवो, ते मिनष थइ मोष जायो जी ॥ ३६ ॥
 अबर तो अराधक हूवो, चोखा वरत पाल्या सू जाणो जी ।
 पिण लवध फोडवी तिण सू नही हूवो, तिणरी सूतर सू कीजो पिच्छणो जी ॥ ३७ ॥
 अनेरा भेष मे केवल ग्यान उपनो, ते भेष छे पेहरण तामो जी ।
 त्यानें साध श्रावक जाणे केवल ग्यानी छे, पिण वादे नही सीस नामो जी ॥ ३८ ॥
 तिण भेष थका साध श्रावक वादे, तिण मत रा पाखडी गूजे जी ।
 जांणे म्हाराइ मत मे केवल ग्यान उपजे, त्याने उडी तो मूल न सुम्ने जी ॥ ३९ ॥
 कदा साध श्रावक जो त्याने वादे, तो बिगडे छे जावक बातो जी ।
 घणा लोक त्यांरी देखा देख वादे, जब वधे घणो मिथ्यातो जी ॥ ४० ॥
 गोतम सामी पूछ्यो भगवत ने, अबर सिन्यासी छे तांमो जी ।
 इण काई करणी करे लवध पाइ छे, लवद फोडवे छे किण कामो जी ॥ ४१ ॥
 जब वीर जिणेसर कहे गोतम ने, सुण तू अबर री बातो जी ।
 अबर सिन्यासी प्रकत रो भद्रीक छे, जाव विनेवत साख्यातो जी ॥ ४२ ॥
 अबर सिन्यासी वेले वेले निरतर, आंतरा रहीत तपसा कीधी जी ।
 दोनूइ बाह्या उची राखी ने, सूर्य सामी आतापना लीधी जी ॥ ४३ ॥
 आतापना भूम नदी तट माहे लेता, आया सुभ परिणामो जी ।
 भला अधवसाय आया तिण काले, निरमली लेस्या वरती तामो जी ॥ ४४ ॥
 एकदा प्रस्ताव तदावर्णी कर्म, षयोपसम कर्म हूवा चकचूरी जी ।
 विचारणा करता तिण काले, वीर्य लवद पामी छे रुडी जी ॥ ४५ ॥
 वेक्रे करवा री सक्त पामी, वले पामीयो अवधि गिनानो जी ।
 वीर्य लवद छता रूप सकत, वेक्रे सू करे रूप असमानो जी ॥ ४६ ॥
 वेक्रे लवद फोडवे वेक्रे रूप कर ने, सो घरां पारणो कीयो तांमो जी ।
 वले वासो सों घरा मे लीधो, ते विसमे उपजावण कामो जी ॥ ४७ ॥
 वले गोतम सामी पूछ्यो भगवत ने, अबर मरने किहां जासी जी ।
 जब वीर कहे पाचमे देवलोके, महीडीक देवता थासी जी ॥ ४८ ॥
 देव चवी महाविदेह पेटर मे, चारित पाली निरदोपो जी ।
 आठोई कर्म तणों पय कर ने, पाध्रों जासी मोखो जी ॥ ४९ ॥
 अबर सिन्यासी री वेक्रे लवद ओलखावण, जोड कीधी गोधंदा मभारो जी ।
 सवत अठारे सतावने वरसे, चेत सुदि चोथ नै बुधवारो जी ॥ ५० ॥

ढाल : २०

दुहा

केइ हिसा धर्मी जीवडा, ते जीव माख्यां कहें धर्म ।
 ववेक विकल सुघ बुघ विनां, भूला अग्यांनी भमं ॥ १ ॥
 जिण आगम अर्थ ऊंथा करें, वले कूडा कुहेत ल्गाय ।
 हिसा कराय जीवां तणी, घणो हरस धरें मन मांय ॥ २ ॥
 टीका चूर्ण भास नियुक्ति नां, यांरा करे घणा वलांण ।
 ए च्याह्णई नहीं जिण भाखीया, त्यांरी बुघवंत करजो पिछ्छांण ॥ ३ ॥
 एवारे काली पछे कीया, भिष्ट आचाख्यां आप रे छंद्र ।
 त्यांमें विवध पणे भूठ गूंध नें, चोडें मांडवों भोलां नें फद्र ॥ ४ ॥
 ज्यूं ज्यूं अणाचार सेवीयां, ज्यूंज्यूं घाल्या टीकादिक मांहि ।
 वले जंवी जंवी सरधा धणी, ते घाली टीका में ताहि ॥ ५ ॥
 जीव हणवा रों उपदेस दें, घणी खोटी परुषें छें ताय ।
 थोडी सी परगट करूं, ते सुणजों चित्त त्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[२ प्राणी कर्म समो नहीं...]

देव गुर संघ काजें चक्रव्रत री सेना, कहे साघ करें चकचूरों ।
 जो नहीं करें तो दसमो प्राच्छित आवें, थे इसडो म भाषो कूडो रे ।
 कुभत्पां हिसा धर्म कांय थापो रे* ॥ १ ॥
 थे भगवंत भाष्या सूतर बाचो, वले साघ लोकां माहें बाजों ।
 जीव माख्यां में धर्म परुषों, इसडो म करों अकाजो रे ॥ कु० २ ॥
 गोसाले दोय साघ भगवंत रा बाल्या, वले वीर नें कीया लोही टांण ।
 त्यां साघां में सकत थी गोसाला बालण री, पिण खमता कीधी सुमता आंण रे ॥ ३ ॥
 ओ प्रतख गोसालो प्रतणीक हुवे, तिणरी साघां न करी घात ।
 थे प्रतणीक माख्यां में धर्म बतावों, ते मूरख मांनें बात रे ॥ ४ ॥
 प्रतख गोसालो प्रतणीक नें, जो नहीं हणीया प्राच्छित आवें ।
 तिण लेखें भगवंत रा साघ लब्ध धारी, प्राच्छित लीयां सुघ थावें रे ॥ ५ ॥
 सुसंगल आचार्य गोसाला नें बालसी, ते पिण मुख सूं बोली न्याय ।
 हुं छत्री सकत समर्थ नहीं खमवा, अकगुण काढसी आप मांय रे ॥ ६ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

बले दोय साधां रा ने वीर रा गुण गावसी, कहसी तोनें न बाल्यो तिण वार ।
 त्यांरो छती सकत चोखें चित खेमीयो, ते धन मोटा अणगार रे ॥ ७ ॥
 सुमंगल आचार्य गोसाला नें वालसी, तिणने वतावो थे धर्म ।
 ते क्रोध करे घात करसी राजा री, तिणरे बंधसी निकेवल करम रे ॥ ८ ॥
 कोइ लब्ध घारी साध लब्ध फोड नं, करे मिनषांदिक् नी घात ।
 ते जिण आग्या लोपे हुवो विराषक, तिणमे धर्म कहें ते मिथ्यात ॥ ९ ॥
 निदक जीवां ने माख्या धर्म थापो थें, ते चोडे कहो छो लोकां नें ।
 बले धर्म कहो निदक ने माख्या, ते तो मूढ मिथ्याती माने रे ॥ १० ॥
 तीन सो तेसठ पाखडी हुंता, त्या घणा जीव मिथ्यात मे पाड्यां ।
 बले निदक पूरा श्री जिण धर्म रा, त्याने साधां क्यू नही माख्या रे ॥ ११ ॥
 देवल काजें बलद मूआ तिणनें, आठमों सरग बतावो ।
 एहवा गोला थें गाला मां सू फेंको, भोला नें कांय थें भरमावो रे ॥ १२ ॥
 काजी मुल्ला जवें करें छें, ते कहे म्हे करा छां हलाल ।
 म्हें जीव मारां ते भिसत पोहचावां, एहवो थें पिण मांड्यो छें ख्याल रे ॥ १३ ॥
 थें बलदा नें मारें देवलोक पोहचावो, ते एकत मूसा वायो ।
 हिचें ओहीज प्रश्न पूछीयां थानें, मत करजो बकवायो रे ॥ १४ ॥
 थारा गुर गुर भाई कुटवं न्यातीला, त्याने संथारो कांय करावों ।
 यारे पिण माथे मोटी सिला देई नें, सुध गति क्यू नही पोहचावों ॥ १५ ॥
 थें देवल काजे पथर आंगो जव यारें माथें पिण आण्या किम दोष ।
 यानें पिण बलदा जिम मारें, क्यू नही मेलो मोख रे ॥ १६ ॥
 देवल काजे साध श्रावक मारें, तिणनें किम गिणसो दोखो ।
 तो ही श्रावक नें वारमे देवलोक नही मेलो, साधा नें पिण नही मेलो मोखो रे ॥ १७ ॥
 साध श्रावक नें इम सुध गति नही मेलो, त्यारो जीतव नही थें सुधारो
 तो रांक गरीब वापडा बलदा नें, देवल काजें कांय मारो रे ॥ १८ ॥
 जो बलद मरे आठमें सरग जावें, आ वात जांगो थे साची ।
 तो पथर रा जीवां री देवल प्रतिमा हूई, यारी पिण गति होसी आछी रे ॥ १९ ॥
 बले छ काय मूर्ई मरे नें बले मरसी, ते पिण देवल रे कामे ।
 जो बलद मूआ आठमे सरग जावें, तो सगलाई सदगति पामें रे ॥ २० ॥
 बलद मरे ते पर वस दुखीया, यारे उसभ उदे हूआ आयो ।
 त्यानें बिनां परिणांमा सदगति किम होसी, बले इम हीज जांगो छ कायो रे ॥ २१ ॥
 सिलावट मरें कोइ देवल करतो, तिणनें कहो वारमों देवलोक ।
 ओ पिण गोलो निकेवल गालां रो, ते पिण जांगों फोको रे ॥ २२ ॥

हिंसाधर्म जीव मरायां रो, मूल गिणें नही दोख ।
 भोलां नें भरमावें अग्यांनी, दले कहें यानि होसी मोख रे ॥ २३ ॥
 पेंलां ने माख्यां धर्म परूपें, आप नें माख्यां न कहें धर्मो ।
 ववेक विकल सुघ वुध विनां बोले, ते भूला अग्यांनी भर्मो रे ॥ २४ ॥
 धर्म रे कारण जीव हणें त्यांरो, मत छें जावक मूढो ।
 त्यांरो सरधा कोइ मूरख मानें, ते पिण नर भव खोय वूढो रे ॥ २५ ॥
 केइ ब्राह्मण कहें बकरा होमण रो, मुख सूं किण विध कहिसो ।
 जे थारे करणों छें होम बकरा रो, तो थें सावधान थकां रहिसो रे ॥ २६ ॥
 म्हें वेद भणतां भणतां बोलां जब, कहां अजा होमण रो पाठ ।
 जब थें अजा होम छाली रा जायां रो, होम में न्हांखज्यो सिर काट रे ॥ २७ ॥
 ज्यूं थें पुफांरो हण नें फलां रो हणवा रो, पाठ कहें नें समभावो ।
 उवे जीव होमें नें जज्ञ करावे, ज्यूं थें पिण पूजा करावो रे ॥ २८ ॥
 यांरा यज्ञ होम में थें पाप बतावो, तो थानें धर्म होसी किण लेखें ।
 ओ तो किरतव छें दोयां रो बरोबर, निज खोटी सरधा नहीं देखें रे ॥ २९ ॥
 उवे सिर कटाय होम माहें नखावे, थें प्रतिमा काजे हणावो ।
 जो यानें पाप तो थानेंई पाप छें, ओ जोवो उघाहो न्यावो रे ॥ ३० ॥
 केइ सिरदार चोरादिक नें मरावे, जब कहें दूध पीवा जाय ।
 जब अटवी माहें तिणने ले जावे, जुदा करें जीव काय रे ॥ ३१ ॥
 ज्यूं थें पिण छ काय रा जीव मरावो, जब पूजा रो नाम बताय ।
 जब गृहस्थ तो छ काय जीवां रा, जुदा करें जीव काय रे ॥ ३२ ॥
 चोरादिक मरावे ते खून कीयां थी, ते मन माहें पिण पिछतावे ।
 थें हर्ष धरी धर्म हेत मरावो, थानें पिछतावो पिण नही आवे रे ॥ ३३ ॥
 कसाई जीव हणियां तो पाप जाणें छें, तिणसूं मरावे छें गरथ देई ।
 थें जीव हण्यां रो पाप न जाणों, तो क्युं नहीं मरावो छो थें रे ॥ ३४ ॥

रत्न : ३२

श्रद्धा री चौपई

ढाल : १

दुहा

ठांणा अंग माहे कह्यो, दस प्रकार रो मिथ्यात ।
 त्यांरो विवरा सुध निरणो कहूं, ते सुणजो विख्यात ॥ १ ॥
 अघर्म ने घर्म सरदहे, घर्म ने सरघे अघर्म ।
 ते मूढ मिथ्याती जीवडा, भूला अग्यांनी भर्म ॥ २ ॥
 अजीव ने जीव सरदहे, जीव ने सरघे अजीव ।
 उण जीव अजीव न ओल्ल्या, ते पिण मिथ्याती जीव ॥ ३ ॥
 कुमाराग ने मारग जांणे मोष रो, मारग ने कुमाराग जाणें मूढ ।
 ते मिथ्याती सुध बुध बाहिरा, कर रह्या कूडी रुढ ॥ ४ ॥
 केई असाध ने साध सरघता, केई साध ने सरघे असाध ।
 ते बूडा मोह मिथ्यात मे, श्री जिण वचन विराध ॥ ५ ॥
 मोष न गया कर्म खपाय ने, त्यांनं सरघे अग्याती मोष ।
 मोष गया ने मोष सरघे नही, ते सरघा घणी छे सदोष ॥ ६ ॥
 ए दस प्रकार नां मिथ्यात मे, उग्रो सरघे एक बोल ।
 त्यांनं निश्चे मिथ्याती सरघजो, आख हीया री खोल ॥ ७ ॥
 भेषधारी ववेक रा विकल घणा, त्यारो जुदो जुदो समदाय ।
 उंधी सरघा पिण यारी जू जूई, पिण आघां ने खबर न कांय ॥ ८ ॥
 त्यांरो सरघाआचार नही सारिखो, तोही सरघे माहोमा साध ।
 त्यारे बोलेइ बध दीसे नही, मांहोमा पिण करे विषवाद ॥ ९ ॥
 अधकार घणो थारा भेष मे, तिणरो कुण काढे नीकाल ।
 हिवे थोडोसो परगट करू, ते सुणजो सुरत सभाल ॥ १० ॥

ढाल

[धीज करे सीता सती रे लाल]

यारे पेहरण साग साधा तणो रे, वले रह्या लोका मे पूजाय रे सुगुणनर* ।
 ए कुबदी खेला ज्युं नाचता रे लाल, पिण विकलाने खबर न काय रे सुगुणनर ।
 जोयजो अघारो भेष मे रे लाल* ॥ १ ॥
 केई सूतर सिद्धांत रा न्याय सू रे लाल, जोड करे सुध मान रे । सु० ।
 तिणमे केयक तो अघर्म कहे रे लाल, केई सरघे एकत घर्म ध्यांन रे ॥ सु० जो० २ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

जोड़ करणी निपेदे ते यानिं गिणें रे लाल, निन्हवां री पांत मांय रे ।
 ते नाम ले सुयगडा अंग नो रे लाल, तेरमों अचेन बताय रे ॥ ३ ॥
 वले जोड़ करे त्यानिं धालीया रे लाल, वेत्या रा करडिया मांय रे ।
 पलमां रा गेंहणा सरीषा कीयां रे लाल, ठांण अंग चोथो ठांणो बताय रे ॥ ४ ॥
 इत्यादिक अवयुण कहे घणा रे लाल, जोड़ करे तिण मांय रे ।
 वले भूठा बोला सरखे तेहने रे लाल, यानिं जाबक वीया उदाय रे ॥ ५ ॥
 जोड़ करणी थापें ते यानिं इम कहे रे लाल, ए भूठ बोले वेफांम रे ।
 जोड़ करणी उथापें अन्हाखी थकां रे लाल, भूठा भूठा ले सूतरां रा नाम रे ॥ ६ ॥
 कहे साधु तो जोड़े जुगत सूं रे लाल, सूतर केरे न्याय रे ।
 पिण कुबदी करे कदाग्रहो रे लाल, पिण सुबुदी रे आवे दाय रे ॥ ७ ॥
 नीर वखाणी बुध उतपात री रे लाल, नन्दी सूतर रे मांय रे ।
 वले श्रुत गिनांन रा भेद सू रे लाल, म्हें जोड़ करां इण न्याय रे ॥ ८ ॥
 वले ठांणा अंग नवमा ठांणा मभे रे लाल, उत्तराघेन गुणतीसमां मांय रे ।
 यांरा अर्थ तणा विसतार सूं रे लाल, म्हें जोड़ करा इण न्याय रे ॥ ९ ॥
 इत्यादिक अनेक सूतरां तणा रे लाल, नाम ले छे थापें करणी जोड़ रे ।
 जोड़ करणी उथापे तेहमें रे लाल, सरखें छें मोटी खोड रे ॥ १० ॥
 एक थापें एक उथपें रे लाल, इण विध करे मांहीमां विवाद रे ।
 यारे भलाडो लागो पीडीयां लगे रे लाल, यामे कुण छे साध असाध रे ॥ ११ ॥
 यामें कुण साचो कुण भूठो अछे रे लाल, कुण सूतर रो जाण अजाण रे ।
 यामें साची सरखा रो कुण समकती रे लाल, यामे कुण छे मिध्याती अयाण रे ॥ १२ ॥
 भूठ बोल्यां भागे विरत दूसरो रे लाल, उंचो सरख्यां आवे मिध्यात रे ।
 सूतर जोय निरणों करो रे लाल, आ मूंडा री नही छे बात रे ॥ १३ ॥
 केई अघमं नें धर्म सरदहे रे लाल, धर्म नें सरखे अघमं सदीव रे ।
 त्यानिं ठांणा अंग दसमें ठांणकहो रे लाल, ये दोनूं मिध्याती छे जीव रे ॥ १४ ॥
 यारे लेखें उवे भूठ बोले घणो रे लाल, यारे लेखें उवे बोले भूठा वाय रे ।
 वले सरखा पिण मांहीमां उंची कहे रे लाल, चोडे असाध कहे छे मांहीमांय रे ॥ १५ ॥
 त्यांरे कांम पडे सुतलव तणा रे, जब यानिं पिण कह दे असाध रे ।
 ए कूड कपट केलवे घणो रे लाल, यारे किण विध होसी समाध रे ॥ १६ ॥
 उंची सरखा नें भूठा बोला तेहने रे, साध सरखे ते मूंड अयाण रे ।
 ते निरुचें मिध्याती जीव छे रे लाल, जिण मारण रा अजाण रे ॥ १७ ॥
 मांहीमांही साध थापें नें उथपें रे, करे विकलां वाली बात रे ।
 ए सुने चित्त बकवो करे रे, यांरा घट मां सूं न गयो मिध्यात रे ॥ १८ ॥

यामें केयक तो करे घणा रे, नरकादिक ना चितरांम रे।
 तिणमें केयक तो अघर्म कहे रे लाल, केई घर्म कहे छें ताम रे ॥ १६ ॥
 चितरांम निषेधे करणा साध ने रे, वरज्यो कहे नशीत रे मांय रे।
 चितरांम करणा थापे साध ने रे, ते देवे नन्दी सूतर मे बताय रे ॥ २० ॥
 यामे कुण साचो कुण भूठो अछे रे, कुण सूतर रो जाण अजाण रे।
 यामे कुण मिथ्याती ने कुण समकती रे, आ पिण न करे पिच्छाण रे ॥ २१ ॥
 एक वचन उथापे सिघात नो रे, रुले उतकष्टो काल अनत रे।
 तो अनत ससारी कुण एह मे रे, इणरो निरणो करो बुधवत रे ॥ २२ ॥
 वलें साध मांहोमा ए सरवहे रे, ए इसडा छे मूढ अजाण रे।
 याने वादे पूजे गुर जाण ने रे, ते पिण विकल समाण रे ॥ २३ ॥
 वासी ठडी रोटी लालरी मळे रे, केई कहें छे वेइद्री जीव रे।
 केई कहे जीव निश्चे नही रे लाल, इम कर रह्या ताण अतीव रे ॥ २४ ॥
 ठंडी रोटी मे जीव सरघे तिके रे, टाले ग्रीषम रित ने चोमास रे।
 ठंडी रोटी में सरघे नही रे, ते वेहरे वारोई मास रे ॥ २५ ॥
 ठंडी रोटी लेनी थापे साध ने रे, ते बतावे अचारग री साख रे।
 वले नाम ले दसमा अग नो रे लाल, यामे वीर गया छे भाख रे ॥ २६ ॥
 ठंडी रोटी न लेंगी कहे साध ने रे, ते बतावें रस चलित रो पाठ रे।
 एक थापे एक उथापे रे लाल, यारे ओ पिण माहोमा छे फाट रे ॥ २७ ॥
 ठंडी रोटी मे कहे छें वेइद्री रे, त्यारे लेखे उवे साध न होय रे।
 जीवा नें खाय भूठ वोले तेह सूं रे, कहे भागा महावरत दोय रे ॥ २८ ॥
 एकद्री जीव खाए तेहने रे, साध सरघे त्यारे छे बूढ रे।
 तो ए खाए यारे लेखें वेइद्री रे, त्यानें साध सरघे तो एहीज मूढ रे ॥ २९ ॥
 ठंडी रोटी मे जीव सरघे नही रे, त्यारे लेखे उवे साध न होय रे।
 ए भूठ बोलें छे घणा विनां रे, यां दूजो वरत दीयो खोय रे ॥ ३० ॥
 ठंडी रोटी मे कहे छे वेइद्री रे, त्यानें निश्चे जाणे छे देता आल रे।
 जो एहीज यानें साध लेखे रे, तो ए पिण अग्यानी बाल रे ॥ ३१ ॥
 इण विध करे माहोमा निषेधणा रे, वले सरघे मांहोमाहिं साध रे।
 ए दोनूं वूढे छे वापडा रे, ए कर कर कूडो विषवाद रे ॥ ३२ ॥
 यारे न्याय निरणो तो दीसैं नही रे, कूडी मांड रह्या घमडोल रे।
 वले वेन्च नही यारे बोलीए रे, यारा मत माहे मोटी भोल रे ॥ ३३ ॥
 कहिवा नें लोकां आगे तो इम कहें रे, म्हे तो साध सरघा माहोमांय रे।
 पिण जावक उडावे जडां मूल सूं रे, तिणरी रेंस सुणो चित्त ल्याय रे ॥ ३४ ॥

ज्यानें साध चोडें मुख सूं कहे रे, त्यारी बंदणा देवें छुडाय रे।
 आप आप तणा श्रावकां कनें रे, अवगुण अनेक दरसाय रे ॥ ३५ ॥
 पछें श्रावक त्यानें वादे नही रे, केइ उंचोई न करें हाथ रे।
 तो साध मांहीमां सरखण तणी रे, बिखर गई विकलां री बात रे ॥ ३६ ॥
 यारे श्रावक त्यानें वादे नही रे, जब मूल न राखी त्यारी आव रे।
 तोही कहे म्हानें साध लेखवें रे, आव पाठी ते पिण देवे दाब रे ॥ ३७ ॥
 सुष साधां री संका घाल नें रे, त्यारी बंदणा छुडावें कोय रे।
 ते. बूडा भव सागर मभे रे, केई अनंत संसारी होय रे ॥ ३८ ॥
 ए साध मांहीमां चोडें कहे रे, वले बंदणा छुडावे मांहीमांय रे।
 ओ पिण न्याय निरणों नही रे, ए चोडें भूला जाय रे ॥ ३९ ॥
 यामें आवें त्यांरा टोलां मांहीलो रे, तिणनें दिष्या दे लेवें मांय रे।
 जब तो यानें असाध निरुचें गिण्या रे, यांरी काण न राखी कांय रे ॥ ४० ॥
 वले केकण नें दिष्या विण मांहें लीए रे, जब यांरी पिण नही परतीत रे।
 कदे थापें कदे उथपें रे, यारे गेंहलां वाली छे रीत रे ॥ ४१ ॥
 दिष्या नही आवे तिणनें दिष्या दीये रे, दिष्या आवे तिणनें देवें नांही रे।
 तिणनें दिष्या आवे इण डंड में रे, जोवो केतकल्प रे मांही रे ॥ ४२ ॥
 इसडा दोष यामें बत्तायां थकां रे, तिणरो नही काढे नीकाल रे।
 कुड कुड नें कूके घणा रे, जाणें सीयाला रा स्याल रे ॥ ४३ ॥
 यारे साध कहितां विरीयां नही रे, असाध कहितां नही कोइ बार रे।
 ज्यानें रात दिवस निवेदां रे, त्यांसूं प्राच्छित विनाइ कर ले आहार रे ॥ ४४ ॥
 आहार पांणी भेलो कीयां पछें रे, जब तो सरघे मांहीमां साध रे।
 वले आहार पांणी तूटां पछें रे, करे मन मांनें ज्यूं विषवाद रे ॥ ४५ ॥
 यारे उसभ उदे रा जोग सूं रे, दिन दिन इधको बंधें छें मिष्यात रे।
 वले बेधा उठायो रे नव नवा रे, ते इचरज वाली बात रे ॥ ४६ ॥
 धर्म अवर्म टाले आठ दांन में रे, केई कहे छें निनेवल धर्म रे।
 केई मिश्र कहे छें आठ दांन में रे, ए तो भूला मांहीमांही भर्म रे ॥ ४७ ॥
 नव प्रकारे पुन नीपजें रे, यारे ते पिण सरघा नही एक रे।
 उंची करे मांहीमां परूपणा रे, तिणमें विगटें छें बोल अनेक रे ॥ ४८ ॥
 केइ कहे सुपातर कुपातर भणी रे, सच्चित्त अचित्त देवें हर कोय रे।
 तिणमें एकंत धर्म पुन नीपजें रे, केइ कहे मिश्र धर्म होय रे ॥ ४९ ॥
 कोरो काचो अनादिक रांघ सेक नें रे, सर्व जीवां नें देवें कोय रे।
 तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई कहे धर्म नें पाप दोय रे ॥ ५० ॥

आषाकर्मिं वेंहरावे कोइ साध नें रे, जो उ कर कर छ काय री घात रे ।
 तिणमें केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छें साख्यात रे ॥ ५१ ॥
 कोई नेहत जीमावे श्रावका भणी रे, जो उ कर कर छ काय री घात रे ।
 तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छे साख्यात रे ॥ ५२ ॥
 भात वरोटी खरचादिक जीमण करे रे, आरभ कर कर जीमावे सारी न्यात रे ।
 तिणमें केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छे विख्यात रे ॥ ५३ ॥
 गाजर मूलादिक सर्व नीलोतरी रे, सगलां ने देवे अणुकम्पा आण रे ।
 तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छे कर कर तांण रे ॥ ५४ ॥
 गाजर मूलादिक सर्व नीलोतरी रे, राघे राघे सगलां ने देवें कोय रे ।
 तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई कहे छे धर्म ने पाप दोय रे ॥ ५५ ॥
 खणावें तलाव कूआ बावडी रे, घणा जीवा री अणुकम्पा आण रे ।
 तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छे ताण ताण रे ॥ ५६ ॥
 कोइ काचो पांणी पावे सकल नें रे, ते पिण अणगलीयो तिणमे तसकाय रे ।
 तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छे तिण माय रे ॥ ५७ ॥
 काचो पांणी उकाले भर भर ठामडा रे, साधा ने वेंहरावण ताहि रे ।
 तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छे तिण माहि रे ॥ ५८ ॥
 काचो अणगल पाणी उंनो करे रे, सगला नें पावा कांम रे ।
 तिण में केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र धर्म कहे ताम रे ॥ ५९ ॥
 केई जायगां करावे छे जू जू रे, सगलां ने माहे रहवा काम रे ।
 तिणमे केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे तिण ठाम रे ॥ ६० ॥
 मठ आसन बंधावे जोगी कारणे रे, भगत काजे मढी ने धर्मसाल रे ।
 तकीयो बंधावे फकीर रे रे, जती काजे उपासरो पोसाल रे ॥ ६१ ॥
 थानक करावे केई साध रे रे, श्रावक काजे पोषघ साल रे ।
 घर हाटादिक भवन मेंहलायतां रे, करावे जथाजोग संभाल रे ॥ ६२ ॥
 इत्यादिक जायगां कर कर देवें सकल नें रे, ते हण हण जीव छ काय रे ।
 तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे तिण मांय रे ॥ ६३ ॥
 पाट वाजोट करावे विरष बाढ नें रे, पछें देवे सगलां ने दांन रे ।
 तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छे कर कर तांन रे ॥ ६४ ॥
 केई वसतर वणाय धोवाय नें रे, पछे देवें सगलां ने ताहि रे ।
 तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छे तिण माहि रे ॥ ६५ ॥
 केई दोपद चोपद देवे सकल ने रे, देवे सोना रूपादिक सारी घात रे ।
 तिणमें केई कहे धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहे छें साख्यात रे ॥ ६६ ॥

देवें लूणादिक पृथवी काय नें रे, वले सगलां नें घालें तेजकाय रे ।
 तिणमें केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहें छें तिण मांय रे ॥ ६७ ॥
 इत्यादिक दान देवे छे ग्रहस्थी रे, त्यां दरबां रा नाम अनेक रे ।
 तिणमें केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र री कर रह्या टेक रे ॥ ६८ ॥
 उंची सरघा मांहोमां यारे दान री रे, तिणरो कहितां कहितां न आवें पार रे ।
 उंचो सरखे छे बोल अनेक में रे, यारे इसडो छें मांहोमां अंधार रे ॥ ६९ ॥
 सुध असुध सगलां नें देवें तेह में रे, जोग वरतें मन वचन नें काय रे ।
 तिणमें केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहें तिण मांय रे ॥ ७० ॥
 सुध साधां नें असुध देवें तेहमें रे, जोग वरतें मन वचन काय रे ।
 तिणमें केई कहें धर्म पुन एकलो रे, केई मिश्र कहें तिण मांय रे ॥ ७१ ॥
 धर्म कहें कुपातर दान में रे, ते गमावें मिश्र रो खोज रे ।
 कहें मिश्र री सरघा भाठी घणी रे, तिणनें छोड दो सूतर सोम रे ॥ ७२ ॥
 कहें ध्यांन लेस्या मिश्र नहीं रे, मिश्र नही अधवसाय परिणाम रे ।
 ए च्याहं भला के च्याहं वूरा रे, जोवो सूतर में ठाम ठाम रे ॥ ७३ ॥
 सचित अचित सगलां ने दान देवतां रे, भला परिणाम भला अधवसाय रे ।
 वले ध्यांन भलो लेस्या भली रे, जे मिश्र कहें ते भूसावाय रे ॥ ७४ ॥
 छ काय हणे पोपें सकल नें रे, तिणमें धर्म कहां म्हें इण न्याय रे ।
 उण रा परिणाम दान देवां तणा रे, जीव हणवा रा नही अधवसाय रे ॥ ७५ ॥
 दान देवां काजें हणे छ काय नें रे, तिणनें पाप न लाभें अंस मात रे ।
 सर्व जीवां नें पोष्यां धर्म एकलो रे, मिश्र कहें ते मिथ्यात रे ॥ ७६ ॥
 मिश्र कहें कुपातर दान में रे, धर्म कहें त्याने करें भंड रे ।
 उणरी सरघा उठावे जडां मूल श्री रे, वले देवें प्रायच्छित डंड रे ॥ ७७ ॥
 छ काय हणे छें उदीरनें रे, तिणरो मूल न सरखें छें पाप रे ।
 ए तो मारग छोड उजड पड्या रे, करे हिंसा में धर्म री थाप रे ॥ ७८ ॥
 धर्म कहें कुपातर दान में रे, त्याने जाबक भूठा ठहराय रे ।
 करे मिश्र धर्म री थापना रे, कूडा कूडा कूहेत लगाय रे ॥ ७९ ॥
 छ काय हणी नें पोपें सकल नें रे, हिंसा हुई तिणरा लागा कर्म रे ।
 धर्म हूवो साता पाई तेहनों रे, इण लेखें कहां छां मिश्र धर्म रे ॥ ८० ॥
 इण विष करें मिश्र री थापना रे, धर्म कहें त्याने भूठा घाल रे ।
 एक एक री करें उथापना रे, यारे सोकां वाली जाणों साल रे ॥ ८१ ॥
 यारे सरघा पल्पणा तो जू जूई रे, रह्या जूदो जूदो मत माल रे ।
 वले साध मांहोमांहिं लेखवें रे, आ तो चोडें पापडीयां री चाल रे ॥ ८२ ॥

यानें कदे माहोमां साघ लेखवे रे, कदे लेखवे माहोमां असाघ रे ।
 यारे गेहली वालो जांणों पेहरणो रे, ए तो मांहोमा करे उपाघ रे ॥ ८३ ॥
 गेहली कदे तो पेहरे चूप सूं रे, कदे नगन हुवे कपडा न्हाख रे ।
 ज्यूं ए साघ थाप ने वले उथपें रे, यारी फूटी अभितर आंख रे ॥ ८४ ॥
 छ काय हणी नें पोपें सकल ने रे, तिणमे केई कहे घर्म एकत रे ।
 केई मिश्र कहे पाप घर्म रो रे, ए दोनुंइ भूठ भखंत रे ॥ ८५ ॥
 मिश्र कहे कूपातर दान मे रे, तिण गाला मासूं गोला फेक रे ।
 इण उसभ उदे पंथ काढीयो रे, तिणमे लोक रह्या केई वेक रे ॥ ८६ ॥
 मिश्र कहे कूपातर दान मे रे, ते किणही सूतर मे नही वात रे ।
 ओ मिश्र मूरख रो पळ्हीयो रे, तिणरा घट माहे घोर मिथ्यात रे ॥ ८७ ॥
 किणरी मात पिता री न्यात जू जूइ रे, तिणरी कही छे वुकस जात रे ।
 ज्यूं कोइ मिश्र परुपे पाप घर्म रो रे, तिणरो वूकसीयो मिथ्यात रे ॥ ८८ ॥
 मिश्र कहे कूपातर दान मे रे, तिणरा कूड कपट रो नही थाग रे ।
 छल छिदर तिण माहे अति घणा रे, उण रे कुबुव कदाग्रह रो माग रे ॥ ८९ ॥
 किण नें दान दिरावण रो मन करे रे, जव राड जितो कहे पाप रे ।
 घर्म कहे मेरू जितो रे, करे एहवा मिश्र री थाप रे ॥ ९० ॥
 किणने दान दिरावण रो मन नही रे, जव मेरू जितो कहे पाप रे ।
 घर्म कहे राई जितो रे, करे एहवा मिश्र री थाप रे ॥ ९१ ॥
 कदे कहे लाभ थोडो ने तोटो घणो रे, कदे कहे थोडो घणो लाभ रे ।
 इण रा कूड कपट रो छेहडो नही रे, मन मानें ज्यूं काढे जाव रे ॥ ९२ ॥
 चोर चोरी कर ल्यावे धाडो पाड ने रे, पछे न्हासे भागे सेरी देख रे ।
 ज्यूं मिश्र परुपे दान मे रे लाल, तिणरा चाला चरित अनेक रे ॥ ९३ ॥
 सांबर केरा सीग में रे, सीग सीग मे सीग रे ।
 ज्यूं मिश्र परुपे त्यांरी वात मे रे, धीग धीग में धीग रे ॥ ९४ ॥
 बावल वाजे आकरी रे, जव उडे धूर धूर मे धूर रे ।
 ज्यूं मिश्र परुपे त्यांरी वात मे रे, कूर कूर मे कूर रे ॥ ९५ ॥
 वाजर खेत वावे तरे रे, वूट वूट में वूट रे ।
 ज्यूं मिश्र परुपे त्यांरी वात मे रे, भूठ भूठ में भूठ रे ॥ ९६ ॥
 चोर मिले उजाड में रे, करे भपट भपट मे भपट रे ।
 ज्यूं मिश्र परुपे त्यांरी वात मे रे, कपट कपट मे कपट रे ॥ ९७ ॥
 कोरड धान सुले तिहा रे, डक डक में डक रे ।
 ज्यूं मिश्र परुपे त्यांरी वात में रे, वंक वंक मे वक रे ॥ ९८ ॥

कपटी आलोचन करे तेहने रे, रहे सल सल में सल रे।
 ज्यूं मिश्र पहलें त्पारी बात में रे, गल गल में गल रे ॥६६॥
 थोरी नेवर नें मगरे छेडव्यां रे, लागे तोट तोट में तोट रे।
 ज्यूं मिश्र पहलें त्पारी बात में रे, खोट - खोट में खोट रे ॥१००॥
 बलतो दीवो तिहां आय नें रे, मरे पतंगीयो भांफ रे।
 ज्यूं मिश्र धर्म नें थापवा रे, पापी मारे फांफां में फांफ रे ॥१०१॥
 धर्म अधर्म करणी जू जूई रे, वले जुदा जुदा छे पुन तें पाप रे।
 एक करणी में दोय न नीपजें रे, भूठी कीची मिश्र री थाप रे ॥१०२॥
 ध्यान लेस्या मिश्र नहीं रे, मिश्र नहीं अववसाय परिणाम रे।
 ए च्याहूं भला के च्याहूं बुरा रे, जोवो सूतर में ठाम ठाम रे ॥१०३॥
 छ काय हणी पोषें कुपातरां रे, त्पारी माठी लेस्या माठो ध्यान रे।
 अववसाय परिणाम माठा तेहनां रे, ते निरणो करो बुववानं रे ॥१०४॥
 धर्म अधर्म मारग दोय छे रे, पिण तीजो पंथ न कोय रे।
 तीजो मिश्र मिथ्याती भूठो कहे रे, आप डूबें ओरां नें डबोय रे ॥१०५॥
 छ काय हणे पोषें कुपातरां रे, तिणमें कहे निकेवल धर्म रे।
 ते मारग छोड उजड पड्या रे, भूला अग्यानी भर्म रे ॥१०६॥
 छ काय हणे पोषें कुपातरां रे, तिणरा चोखा कहे अववसाय रे।
 ध्यान लेस्या परिणाम पिण चोखा कहे रे, ते तो चोडे भूला जाय रे ॥१०७॥
 पाप न गिणे छ काय हणी तेहनों रे, धर्म गिणे कुपातर पोष्यां मांय रे।
 ते दोनूं विघ बूडा बापडा रे, साधु नाम घराय रे ॥१०८॥
 प्रतष हणी छ काय उदीर ने रे, त्पारा हणवा रा न गिणे अववसाय रे।
 ओ मत साकमती पाषंडी तणो रे, जोवो सुयगडा अंग मांय रे ॥१०९॥
 साकमती पाषंडी इम कहे रे, कोइ हणे बालक जांणी सोय रे।
 जो उ राखें परिणाम तूंबडा तणा रे, तो बालक रो पाप न होय रे ॥११०॥
 इत्यादिक यारी उंची सरवा सुणी रे, जब आदर कुमार बोल्यो ताम रे।
 प्रतष बालक मारे उदीरने रे, त्पारा चोखा किहां थी परिणाम रे ॥१११॥
 बालक मास्त्रां रो पाप थे गिणो नही रे, तो थें बूडा खोटो मत भाल रे।
 याने आदर कुमार निषेध्यां घणा रे, जाबक भूठ घाल रे ॥११२॥
 ज्यूं केई हणे छ काय उदीरने रे, पछे पोषें कुपातरां रा थाट रे।
 तिणमें धर्म निकेवल कहे तिके रे, साकमती पाषंडी रे पाट रे ॥११३॥
 ज्यूं केई जीव हणे छ काय नां रे, पोषें कुपातरां नें ताय रे।
 त्पारा ध्यान लेस्या खोट घणा रे, वले खोट घणा परिणाम अववसाय रे ॥११४॥

धर्म कहे कुपातर पोषीयां रे, त्यारी प्रंतष भूठी बात रे।
 जीव हिंसा रा पाप न लेखवें रे, त्यारे भारी छे गूढ मिथ्यात रे ॥११५॥
 आगे हिंसाधर्मी हुवा घणा रे, त्यां हिंसा धर्म री कीषी थाप रे।
 पिण ए सगला हिंसा धर्म्यां सिरे रे, ते जीव माख्यां रो न गिणे पाप रे ॥११६॥
 नमसकार पुन कह्यो सिधंत में रे, यारे ते पिण सरधा नही एक रे।
 करे जुदी जुदी परूपणा रे, तिणमें विगटें छे बोल अनेक रे ॥११७॥
 नमसकार कुपातर ने करे रे, नीचो सीस नमी जोडे हाथ रे।
 तिणमें केई कहे पुन एकलो रे, केई पाप कहें छे विख्यात रे ॥११८॥
 सात नरक मे नेरीया रे, ते खाए छें मार अनत रे।
 केई पुन कहे त्याने वादीयां रे, केई पाप कहे छे एकत रे ॥११९॥
 भंड सूरु गघा कुता कागला रे, त्यानें नमसकार करे कोय रे।
 तिणमे केई कहे पुन एकलो रे, केई कहे एकत पाप होय रे ॥१२०॥
 जलचर मछ कछ्छादिक डेडका रे, थलचर चोपदादिक जाण रे।
 बले उरपर भुजपर ने पेहचरा रे, ए तिरजच भेद पिछ्छाण रे ॥१२१॥
 इत्यादिक तिरजच ने तिरजचणी रे, त्यारों कहितां कहितां नावें अत रे।
 केई पुन कहे त्याने वादीयां रे, केई पाप कहे छे एकत रे ॥१२२॥
 भोल कसाई थोरी बावरी रे, तुरक मेर मेणादिक जाण रे।
 बले भंगी ढोली नें सरगरा रे, डेढ जटीया अनेक पिछ्छाण रे ॥१२३॥
 बले तीनसो तेसठ पाषडीयां रे, उच नीच सगला मिनष नाम रे।
 केई पुन कहे त्याने वादीया रे, केई पाप कहे छें ताम रे ॥१२४॥
 च्यार जात रा देवी नें देवता रे, त्याने वादे कोइ सीस नाम रे।
 तिणमे केई कहे पुन एकलो रे, केई पाप कहे छे ताम रे ॥१२५॥
 भवानी भेरु ने खेतला रे, गोगा मोगा अनेक विध जाण रे।
 जष भूतादिक चूरामणी रे, ए विन्तर जात पिछ्छाण रे ॥१२६॥
 इत्यादिक मेला देवी ने देवता रे, त्याने वादे पूजे कोइ ताहि रे।
 तिणमें केई कहे पुन एकलो रे, केई पाप कहे तिण मांहि रे ॥१२७॥
 जीव अजीव री सगली थापना रे, त्याने वादे पूजे कोइ ताहि रे।
 तिणमे केई कहे पुन एकलो रे, केई पाप कहे तिण मांहि रे ॥१२८॥
 नमसकार पुन मे यारे वेदो घणो रे, ते कहितां कहितां नावें पार रे।
 एक थापे एक उथपे रे, यारे इसडो छे माहोमाहि अघार रे ॥१२९॥
 ते न्याय निरणो यारे नहीं रे, ए बूढे छे कर कर रुढ रे।
 बले साध माहोमांहि लेखवे रे, ए इसडा अग्यानी छे मूढ रे ॥१३०॥

पातर कुपातर उंच नीच नें रे, सगलां नें कीयां नमसकार रे।
 तिण माहें लाभ कहें तिके रे, विनेवादी पाषंडी रो पिरवार रे ॥ १३१ ॥
 विनेवादी पाषंडी इम कहें रे, सगलां नें नम्यां गुण- होय रे।
 ज्यू पुन कहें सगलां नें नम्यां रे, त्यांने पिण जाणो तिमाहिज सोय रे ॥ १३२ ॥
 नमसकार सगलां नें कीयां थकां रे, केई कहें बंधे पुन थाट रे।
 ते विनेवादी पाषंडी तणो रे, यां राख्यो अग्यान्यां पाट रे ॥ १३३ ॥
 केई बांदे पूजें छें कुपातरां रे, बले बांदे अजीव ने कोय रे।
 तिणमें पुन परुवें विकल थकां रे, त्यांमें निश्चें समकत न होय रे ॥ १३४ ॥
 साधु आहार करें छ कारणे रे, तिणमें कहें छे पाप रे।
 केई कहें धर्म एकलो रे, यारे ये पिण नही छें मिलाप रे ॥ १३५ ॥
 साधु आहार करें छ कारणें रे, तिणमें पाप कहे ते बोले भूठ रे।
 त्यां भेष भांड्यो भगवानं रो रे, दीधीं मुगत मारग नें पूठ रे ॥ १३६ ॥
 यारे सरघा सामग्री तो जू जू रे, जुदी जुदी परुपणा छें ताहि रे।
 कदे आय पडें यामें सांकडी रे, जब भूठ बोली मिल जाय रे ॥ १३७ ॥
 परदल कटक देखें आवतो रे, जब सगला नूनर एके हो जाय रे।
 परदल कटक पाछो फिख्यां रे, सगला नूनर बीखर जाय रे ॥ १३८ ॥
 ज्यू साधु आयां देख गांम नगर में रे, सगला भेषधारी एके थाय रे।
 बले साधु वीहार कीयां पछें रे, ये पिण खोटा कहें मांहोमांय रे ॥ १३९ ॥
 ए कदेक मांहोमां उथपें रे, कदेक देवें मांहोमां थाप रे।
 मोह कर्म उदे रा मतवाल सूं रे, ए बांधे छें बोहला पाप रे ॥ १४० ॥
 यारे सरघा सामग्री मत जू जूओ रे, त्यांरे विगटें छें बोल अनेक रे।
 पिण सुध साघां नें निषेधवा रे, हुवे मांहोमांहि पापीडा एक रे ॥ १४१ ॥
 मांहोमां करें कलेस कदाग्रहो रे, यारे सरघा खोटी घणी गंर रे।
 यारे साधु तो निजर पड्यां थकां रे, जाणें जाग्यो पूर्वलो वेंर रे ॥ १४२ ॥
 जो तुरक देखें करकांटीयो रे, तो जागे तुरकां ने घेष रे।
 ज्यू भेषधारी देखें साघ नें रे, त्यांनं जागे घेष वशेष रे ॥ १४३ ॥
 तुरक कहे इण करकांटीये रे, म्हांरा संद मराया इण बताय रे।
 तिणसूं वेंरी म्हांरो करकांटीयो रे, उ वेर मांगां छांं ताय रे ॥ १४४ ॥
 ज्यू भेषधारी कहे छे साघां भणी रे, यां कीघो छे म्हांरो उघाड रे।
 करडी कर कर परुपणा रे, म्हांरा श्रावक लीवां पाड रे ॥ १४५ ॥
 किरकांटीयां नें तुरक देख नें रे, मारें कूटें बोलें घणा गंर रे।
 ज्यू भेषधारी देखें साघ नें रे, तो जागें अमितर वेंर रे ॥ १४६ ॥

भेष अंधारी परगट करी रे, बगडी सहर मभार रे ।
संवत अठारें छत्तीसे समे रे, काती सुद पुनम मंगलवार रे ॥१४७॥



ढाल : २

[धीज करे सीता सती रे लाल]

केई आहार न मानें केवली भणी रे, केई कहें केवली करे आहार रे सुगुणनर* ।
 यामें साची भूठी सरधा केहतीं रे लाल, ते पिण विकलां रे नहीं छें विचार रे । सु० न० ।
 जोयजो अंधारो भेष में रे लाल* ॥ १ ॥
 थां दोयां जणां में एकण तणी रे, खोटी सरधा साख्यात रे । सु० ।
 वले साध मांहोमांहि लेखवें रे, ते दोयां जणां रे मिथ्यात रे ॥ सु० जो० २ ॥
 देस उणो कोड पूर्व लो रे, विनां कीयाई आहार रे ।
 बोलें चालें जीवें किण विघे रे लाल, आ पिण नहीं समझ लिगार रे ॥ ३ ॥
 केई कहें तीथंकर बोले नहीं रे, यारे अतिसय गुंजे रह्यो मांय रे ।
 केई कहें तीथंकर बोलता रे लाल, बवहार भाषा नें सत वाय रे ॥ ४ ॥
 यामें एक तो भूठो असाध निश्चें खरो रे, तो ही गिणे मांहोमां साध रे ।
 ते निरणों नहीं घट भितरे रे, तयारे किण विघ होसी समाध रे ॥ ५ ॥
 जो तीथंकर बोले नहीं रे, तो किण कह्यो पूर्व ग्यान रे ।
 लोक अलोक तणा भाव किण कह्या रे, केवली विण किण नें आसांन रे ॥ ६ ॥
 केई अछेरा दस मानें नहीं रे, केई मानें अछेरा तीन काल रे ।
 यामें एक तो भूठो निसंक सूं रे लाल, ते पिण विकलां रे नहीं छे नीकाल रे ॥ ७ ॥
 अछेरा दस मानें नहीं रे, तिणरी सरधा कहें छें अमुध रे ।
 वले तेहीज तिणनें साधु गिणे रे लाल, तो दोनूं जणां री भिट बुध रे ॥ ८ ॥
 अछेरा दस मानें नहीं रे, तिण सूतर दीया उथाप रे ।
 ते आप छांदे उंधी अकल सूं रे लाल, ते कर रह्या कूड विलाप रे ॥ ९ ॥
 केई कहें केवल ग्यान साध नें रे, उपजे बारा थी आय रे ।
 केई कहें केवल ग्यान उपजे रे, ते तो मांहि थी परगट थाय रे ॥ १० ॥
 केवल ग्यान बारा थी उपनों कहे रे, तिणरी खोटी छे मिथ्यादिह रे ।
 तिण जीव नें ग्यान न्यारो गिण्यो रे, तिणनें साध गिणे ते ही भिट रे ॥ ११ ॥
 केई कहें महावरत देसथी रे, तिणमें इविरत रो अमार रे ।
 केई कहें महावरत सर्व थी रे लाल, साध रे नहीं इविरत लिगार रे ॥ १२ ॥
 जिण साधु रे महावरत देसथी रे, ते नियमा निश्चें नहीं साध रे ।
 तिण देस विरती नें साध कहे रे, ते पिण निश्चें असाध रे ॥ १३ ॥
 साधु रे महावरत सर्व थी रे, उांगा अंग दसवीकाल मांय रे ।
 वले उवाइ सुयगडा अंग में रे, साधु रे नहीं इविरत कांय रे ॥ १४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

पाच महावरत सर्व थी रे, तिणमें कूड नही तिल मात रे ।
 केई कहे महावरत देस थी रे, ते निश्चें मिथ्याती साख्यात रे ॥ १५ ॥
 देस महावरत तो हुवे नही रे, महावरत तो सर्व थी होय रे ।
 देस विरत कीया श्रावक हुवें रे, तिणने साध म जाणो कोय रे ॥ १६ ॥
 कोइ देस विरती नें साधु कहे रे, ते पूरा मूंड गिंवार रे ।
 ते निश्चें मिथ्याती मूला रे लाल, साधु श्रावक री पात बार रे ॥ १७ ॥
 आहार उपघ साधु भोगवे रे, तिणमे केई कहे निरजरा धर्म रे ।
 केई परमाद ने इविरत कहे रे, तिण सू लागो कहें पाप कर्म रे ॥ १८ ॥
 आहार उपघ साधु भोगवे रे, तिणमे जाणे मिथ्याती पाप कर्म रे ।
 तिण मूंड मती ने साधु गिणे रे, ते पिण भूला अग्यांनी भर्म रे ॥ १९ ॥
 साध आहार कीयां माहे पाप छें रे, पाप नीपजें तो बूडो दातार रे ।
 तिण साधु नें पाप भेला कीयां रे, तिणरो किण विघ होसी उधार रे ॥ २० ॥
 नवपदारथ छे जूया जूया रे, जूओ जूओ छे त्यारो सभाव रे ।
 त्याने रूडी रीत न ओलख्या रे, त्यांरो मूड न जाणें न्याव रे ॥ २१ ॥
 केई नवपदारथ ने इम कहे रे, आठ जीव नें एक अजीव रे ।
 एहवी करें छे परूपणा रे लाल, कर कर खाच अतीव रे ॥ २२ ॥
 केई नव पदारथ मे इम कहे रे, एक जीव ने एक अजीव रे ।
 सात जीव तणी परजाय छे रे, ते तो नही छें जीव अजीव रे ॥ २३ ॥
 केई नवपदारथ मे इम कहे रे, पांच जीव ने च्यार अजीव रे ।
 एहवी करें छे परूपणा रे, कर कर खाच अतीव रे ॥ २४ ॥
 ए तीनोंइ सरघा छे जू जूइ रे, एकण टोला मभार रे ।
 वले साध माहोमा सरघ नें रे, भेलो करे अग्यांनी अहार रे ॥ २५ ॥
 त्यारी सरघा तो माहोमा जूजूइ रे, नही मानें एक एक री बात रे ।
 तोही करे संभोग साध सरघ ने रे, त्यांरो प्रतष देखो मिथ्यात रे ॥ २६ ॥
 यानें इतरी तो समझ पडे नही रे, ते तो पूरा छें मूंड गिंवार रे ।
 ते ववेक विकल सुघ दुघ विनां रे, त्याने मूर्ख सरघे अणगार रे ॥ २७ ॥
 त्याने श्रावक पिण इसडा मिल्या रे, त्यारा घट माहें घोर अंधार रे ।
 त्याने इतरी पिण समझ पडे नही रे, ते पिण पूरा छे मूड गिंवार रे ॥ २८ ॥
 केई कहें पुन पाप जीव छे रे, केई कहें पुन पाप अजीव रे ।
 केई कहे जीव अजीव दोनुं नही रे लाल, यांमे कुण छे मिथ्याती जीव रे ॥ २९ ॥
 जो तीनोंइ ने कहे समकती रे, तो बूड गई छे त्यारी बात रे ।
 खोटी नें साची सरघा रो निरणो नही रे, त्यांरे आय चूर्को छें मिथ्यात रे ॥ ३० ॥

कई आश्रव ने कहे जीव छें रे, कई आश्रव नें कहे अजीव रे।
 कई कहे जीव अजीव दोनूं नहीं रे लाल, जूआ जूआ बोलें छें निसदीव रे ॥ ३१ ॥
 संवर निरजरा मोप ने रे, कई कहे छें जीव साख्यात रे।
 कई कहे जीव अजीव दोनूं नहीं रे, ते पिण वद वद बोलें छे विख्यात रे ॥ ३२ ॥
 कई कहे छें वंघ अजीव छें रे, कई कहे छें वंघ छें जीव रे।
 कई कहे जीव अजीव दोनूं नहीं रे, ते पिण कर कर तांण अतीव रे ॥ ३३ ॥
 इण विघ सरघा छें जू जूइ रे, वले भेलो छे त्यारो संभोग रे।
 त्यामे संजम समकत्त किहां थकी रे, त्यारे मोटो मिथ्यात रो रोग रे ॥ ३४ ॥
 यारे सरघा तो मांहोमाहिं जू जूइ रे, वले सरघे मांहोमां साघ रे।
 सुघ साघां ज्यूं लोकां में पूजावता रे, त्यारे किण विघ होसी समाघ रे ॥ ३५ ॥
 याने श्रावक वांदे साघ जाण नें रे, ते श्रावक विकल समांन रे।
 यूंही बूडे छे वापडा रे, त्यांरा घट माहें घोर अग्यांन रे ॥ ३६ ॥
 वले तिरण तारण जाणें एहनें रे, इसडी गाढी बेठा छे धार रे।
 ते सुघ बुघ विनां जीव वापडा रे, भव भव में होसी खुवार रे ॥ ३७ ॥
 त्यां विकलां ने छेरव्यां थकां रे, तो लडवा नें छे तयार रे।
 त्यां सूं न्याय निरणो हुवें नहीं रे, करवा बेठा छे भगडो ने राड रे ॥ ३८ ॥
 यारे सरघा रो मूंह माथो नहीं रे, वले मिष्ट छे आचार रे माहिं रे।
 ते विकलां नें समझ पडे नहीं रे, कूडी पख भाले रह्या ताहि रे ॥ ३९ ॥
 साघां रे आल देतां संके नहीं रे, वले निन्दा करण ने सूर रे।
 भागल मिष्ट नें वांदे गुर जाण ने रे लाल, त्यां सूं दुरगति नहीं छे दूर रे ॥ ४० ॥
 खोटी सरघा रा मिष्टी ओलखायवा रे, जोड कीधी माघोपुर ममार रे।
 संवत अठारे अडतालेसमे रे लाल, आसोज सुद छठ ने सोमवार रे ॥ ४१ ॥

ढाल : ३

ढुहा

नमूं वीर सासण घणी, ते पोहता पद निरवांण ।
 जनम मरण दुख घेय करी, मेट्या आवण जाण ॥ १ ॥
 जे भाव भगवते परुपीया, ते गणघरे गूंथ्या जांण ।
 ते भेषघाख्यां रे पानें परुखा, उघा करे अर्थ अयाण ॥ २ ॥
 ते छठे गुण ठाणे निरंतर कहें, आरत ने धर्म घ्यांण ।
 ते परमारथ पायां विनां, बोले विकल समान ॥ ३ ॥
 श्री वीर कह्यो एकण समें, दोय ध्यान न घ्यावे कोय ।
 आरत ध्यान घ्यावे तिण समे, धर्म ध्यान किहा थी होय ॥ ४ ॥
 एहवी पिण समझ पडे नही, वले ओर परुपे विरुध ।
 आरत ध्यान घ्यावे तिण समे, कहे लेस्या तीनूंई सुध ॥ ५ ॥
 आरत ध्यान घ्यावे तिण समे, आछी लेस्या किहा थी होय ।
 जे ववेक विकल हुवा तेहने, आ पिण खबर न कोय ॥ ६ ॥
 लेस्या ने आरत ध्यान री, यांरा लखणा सू खबर पडत ।
 त्यांरा भाव भेद परगट करूं, ते सुणजो कर खंत ॥ ७ ॥

ढाल

[आ अशुकम्पा जिण आगन्था मे]

आरत ध्यांन घ्यायां माठी लेस्या आवे, तिण माहे सका मूल म आणो ।
 आ प्रतष साची बात उथापें, कांय बूडो कूडी कर कर तांणो ।
 माठी ध्यांन घ्यायां माठी लेस्या आवे ॥ १ ॥
 कहे छठे गुणठाणे आरत ध्यान घ्यायां, जव पिण कहे लेस्या वरते छे रुडी ।
 इसडी परुपें लोकां में अग्यांती, त्यारी प्रतष सरघा कूडी रे कूडी ॥ मा० २ ॥
 ज्यारे भावे किस्नादिक माठी लेस्या आवे, त्यांने तो जावक साध न सरघे ।
 ए प्रतष लोका आगे परुपी, ते तो छानी बात न राखी पडदे ॥ ३ ॥
 भावे किस्नादिक माठी लेस्या आवें, त्याने जो उसाध सरघे तो दीससी भूंडो ।
 जो छ लेस्या वाला नें साध सरघे बांदे, तो उ आप री सरघा रे लेखेई वूडो ॥ ४ ॥
 कदे उसम जोग साधु रा वरतें, जव लेस्या पिण साधु रे माठी आवें ।
 तिण उसम जोगां में मूढ मिथ्याती, लेस्या तिनूंई रुडी वतावें ॥ ५ ॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

कदे साधु चारितीयो मोहकर्म वस,
 खेती करसण आदि करे सुपनां में,
 वले विणज करे सुपनां में साधु,
 वले माठीई जोग नें माठीई लेस्या,
 कदे विषे कषाय माठा जोग वरतें,
 हस्त कर्मादिक कोइ करे कुचेष्टा,
 कदे कलहो करे साधु कर्म तणें वस,
 करडा काठा वचन काढे कर्म तणें वस,
 कदे लोलपणो आवे आहारादिक सूं,
 कदे फोरवे लब्ध कतूहल निमते,
 कदे शब्दादिक गमता अणगमता,
 कदे इरषा मान वडाई पिण आवे,
 इत्यादिक जागतां सूतां सुपनां माहें,
 जब माठीई ध्यान माठी लेस्या आवे,
 उसभ जोग आरतध्यान सरवे साधु रे,
 ते सूने चित्त सूतर बांचे मिथ्याती,
 आगे आगे हुआ मोटा साध रिषेसर,
 त्यां आलोई पडिकमे प्रायच्छित लीघो,
 सीहो मुनी मोटें मोटे शब्दे रोयो जब,
 जब पिण सीहा में आछी लेस्या बतावें,
 बाल भाव एमंतां मुनीसर नें आयो,
 ए प्रतष सावद्य किरत्तब कीघो,
 रहनेम चलो देख राजमती नें,
 त्यांनं पिण माठो ध्यान माठी लेस्या आई,
 इत्यादिक मोटा मोटा संत रिषेसर,
 ते आलोइ पडिकमी प्रायच्छित लीघा,
 केई भेष धाख्यां री एहवी सरघा,
 ते सूतर अर्थ जाणें नही भोला,
 पेंहले सतक भगोती रे पहले उद्देसे,
 तिणरा पाठ अर्थ री समभ पड्यां विण,
 द्रव ने भाव लेस्या रा गुण नहीं जाणें,
 भाव लेस्या री ठोड कहे द्रव लेस्या,

सुपनां माहें सेवे काम नें भोग ।
 जब माठी लेस्या ने माठा जोग ॥ ६ ॥
 वले पड जाए सुपनां में आल जंजाल ।
 थे समभो रे समभो सुरत संभाल ॥ ७ ॥
 कदे मईधुन संग्या साधुरे आवें ।
 जब पिण माठी लेस्या साधु में पावें ॥ ८ ॥
 आहार पांणी सिखादिक रे काम ।
 जब माठी लेस्या नें माठा परिणाम ॥ ९ ॥
 कदे आंसू पिण मोह कर्म वस आवें ।
 जब पिण माठी लेस्या साध मे पावें ॥ १० ॥
 त्यांसू पिण कदे थाए हरष नें सोग ।
 जब माठी लेस्या ने माठा जोग ॥ ११ ॥
 कदे साधु रा वरते छे उसभ जोग मेला ।
 ते परमारथ जाणें नहीं गेला ॥ १२ ॥
 पिण लेस्या नें सरवे साधु माहें मूडी ।
 परमारथआयां विणत्यारीपिडताईबूडी ॥ १३ ॥
 त्यांनं माठी लेस्या आई उचडी ।
 ते सांभलजो भवीयण विसतारी ॥ १४ ॥
 आरतध्यान ने माठी लेस्या आई ।
 त्यां विकलां नें सूतर री समभन काई ॥ १५ ॥
 जब पांणी पातरु दीयो तिराई ।
 जब माठीई ध्यान माठी लेस्या आई ॥ १६ ॥
 खोटा मन सूं काढी खोटी वाय ।
 तिण माहें संका मत आणों काय ॥ १७ ॥
 त्यांनं कर्म जोगे माठी लेस्या आई ।
 पिण ववेक विकला नें खबर न काई ॥ १८ ॥
 कहे साचां ने माठी लेस्या नही आवे ।
 गाला रा गोला घड घड चलावे ॥ १९ ॥
 वले ठांणां अंग रे तीजे ठांणे ।
 पींपल बांधी मूरख ज्यूं ताणे ॥ २० ॥
 ते तो द्रव लेस्या री ठोड भाव लेस्या बतावे ।
 ते ववेक विकल भोला नें भरमावें ॥ २१ ॥

भाव ने द्रव लेस्या जिणेसर भाषी,
 त्यांरो विवरो कहू सुतर मे भाळ्यो जिम,
 मूंडा भला वरण गन्व रस परस छे,
 जब जीव रा लक्षण भूडा भला आवे,
 पांच आश्रव परमाद आरंभ ना जोग,
 यां मांहींला केयक छठे गुणठाणे,
 इरषा ने मिरपा विपे अभिलापा,
 रस रा लोळपी नें साता रा गवेषी,
 वचने करे बाका ने धक आचरले,
 वले राग ने घेष अदत मद्धर भाव,
 तीन माठी लेस्या मांहींला लषण,
 जो छठे गुणठाणे आरत ध्यान सरघो,
 आरत ध्यान नें तीन माठी लेस्या रा,
 जो मिले सारिषा तो सरघलो एक,
 आरत ध्यान रा च्यार भेद कह्या जिण,
 अणमता शब्दादिक आय मिलीया,
 मन गमता शब्दादिक आय मिलीया,
 आतंक रोग आय सरीरे उपनो,
 सेवीया कांम भोग रा संजोग मिलीयां,
 ए आरत ध्यान रा भेद चारूंई माठा,
 जे करे आक्रंद मोटे मोटे सव्दे,
 दलगीर होय आसू न्हाखे रोवे,
 ए च्यारूं माठा लषणा आरत ध्यान जांणो,
 ए माठो ध्यान घ्यायां माठी लेस्या आवे,
 कदे आरत ध्यान साधु रे आवे जब,
 आरत ध्यान घ्यावे साधु तिण माहे,
 ए तो आरत ध्यान रा भेद नें लपण,
 एहवो आरत ध्यान साधु घ्यावे जब,
 आरत ध्यान आयो साधु रे बतावे,
 कोइ एहवो परूपें मूढ मिथ्याती,
 भेषधारी कहे म्हारा सर्व टोला मे,
 त्याने आप तणा किरतव नही सूभे,

त्यांरा लक्षण जूआ जूआ ओलख लीजे ।
 ते सुण सुण घट माहे निरणो कीजे ॥ २२ ॥
 एहवा गुण सूं दरव लेस्या पिच्छाणो ।
 ते गुण सूं भाव लेस्या ने जाणो ॥ २३ ॥
 इत्यादिक लषणां किस्न लेस्या पिच्छाणो ।
 साधु ने कदेयक लागता जाणो ॥ २४ ॥
 वले घेष परमाद बोले मूठ वाय ।
 ए लषणां सूं लेस्या नील कहवाय ॥ २५ ॥
 वले कपट ने दोष रो ढाकण हारो ।
 इत्यादिक माठा लषण कापोत रा धारो ॥ २६ ॥
 तेहीज लषण आरत ध्यान रा जाणो ।
 तो माठी लेस्या सरघण री कांय मांडी ताणो ॥ २७ ॥
 कोइ लषण मीढी जोय करो विचारा ।
 न मिले तो सरघलो न्यारा ॥ २८ ॥
 ते साभलज्यो भवीयण चित ल्याय ।
 जब तिणरों विजोग वाछे घेष ल्याय ॥ २९ ॥
 ते संजोग वाछे रागी थको जांण ।
 तिणरो विजोग वाछे घेष आंण ॥ ३० ॥
 ते पिण संजोग वाछे राग आण ।
 त्यांरा लषणा री दुववंत करजो पिच्छांण ॥ ३१ ॥
 वले दीन पणो करे सोग संताप ।
 वले करे अनेक विध मोह विलाप ॥ ३२ ॥
 च्यार भेद कह्या ते पिण माठा जांणो ।
 तिण माहे सका मूल म आंणो ॥ ३३ ॥
 लेस्या पिण साधु रे माठी आवे ।
 मूढमती लेस्या आछी बतावे ॥ ३४ ॥
 उवाइ उपग नें ठाणाअग मांय ।
 लेस्या पिण माठी व्यापे आय ॥ ३५ ॥
 जब माठी लेस्या आई नही बतावे ।
 इसडा अन्हाखी नें कुण समभावे ॥ ३६ ॥
 माठी लेस्या कदे नही व्यापे आय ।
 त्यांरा टोला रा चारित सुणो चित ल्याय ॥ ३७ ॥

आहार पांणी रे कारण करे लडाईं, वले लडतां विडतां लोट पातरा फूटे ।
 जब पिण कहे माठी लेस्या न आईं, ते निश्चें अग्यांनी लागा मत भूटे ॥ ३८ ॥
 वले चेला चेली आप करवा काजें, करे मांहोमांहि भूटा भगडा ।
 जब पिण कहे माठी लेस्या न आईं, एहवा मूठ बोले पावंडी घगडा ॥ ३९ ॥
 त्यांरा टोला में पग पग इसको खेघो, वले पग पग कर रह्या भगडा ने राड ।
 ए प्रतष उघाडी माठी लेस्या देखो, पिण सममे नही मूढ मिथ्याती गिंवार ॥ ४० ॥

ढलल : ॡ

दुहल

केई .भेषघलरी जेन रल, ते भलषें अग्यलनी अललल ।
 त्यलनें श्रलवक ववेक वलकल मलल्यल, ते पूरल अग्यलनी बलल ॥ १ ॥
 ते सूतर अर्य उंघल करी, भलषे हलंसल घर्म ।
 त्यलरी सरघल सुण सुण वलपडल, बलंघे बोललल कर्म ॥ २ ॥
 कहे सलघल री अणुकुम्म्यल आण ने, जीव मलरे मलध्यलती कोय ।
 तलणरे एकंत पुन नीपनें कहे, पलप रो बंध न होय ॥ ३ ॥
 सलधु कंपतो देखे सीतकलल मे, कोइ गृहसुथ अगन लगलय ।
 पकड तपलवे तलण सलघ ने, तलणरे पुन तणो बघ थलय ॥ ॡ ॥
 इण वलघ पुन कहे हलंसल कीयलं, ते वलकलं ने खबर न कलंय ।
 त्यलरी सरघल परगट कीयलं थकलं, ते फलरतलं पलण वलर न कलंय ॥ ५ ॥
 यलरी सरघल ने कूड कपट री, कही कठ लग जलय ।
 हलवे थोडी सी परगट कखं, ते सुणजो वलतत ल्यलय ॥ ६ ॥

ढलल

[२ प्रलसी कर्म समो नही कोइ...]

सलधु ने कंपतो देख सीयलले, कोइ अणुकुम्म्यल मलध्यलती आणे ।
 तलण अगन लगलए सलधु ने तपलयो, तलणमे पुन अग्यलनी जलंणे रे ।
 कुमत्यलं हलंसल मे घर्म कलंय थलपो* ॥ १ ॥
 तलण अगन लगलय सलधु ने तपलयो, ते हुंतो जीव मलध्यलती ।
 सलघ थई इण मे पुन परूपें, ते पलण उणरो सलथी रे ॥ कु० २ ॥
 सलधु तो मुख सूं नलं नलं कलहलतल, तोही पकड वेंसलण तपलयो ।
 तलण मोटो अकलर्य कीर्यो अग्यलनी, तलणमे पुन कलहल थी थलयो रे ॥ ३ ॥
 सलधु अगन रो आरंभ अनरुथ जलंण्यो, जब कलह्यो मोनें कल्पे नलंही ।
 तोनें पलण ए कलम जुगतो नही छे, पलप जलंण नलवेद्यो त्यलंही रे ॥ ॡ ॥
 जो पुन जलणे तो सलधु नही नलषेघतल, नलषेघो जब जलंण्यो छे पलप ।
 अनरुथ प्रलप जलंण्यो तलण मलहे, पुन री कलम करसी थलप रे ॥ ५ ॥
 सलधु ने तपलवें अगन लगलए, तलणमे सलधु तो पुन कहे नलहल ।
 केई जेन तणल भेषघलरी अग्यलनी, पुन कहे तलण मलंहल रे ॥ ६ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गलथल के अन्त मे है ।

साधु तो पेंहलां अनर्थ जाण निषेधो, पछे कह्यो थारे पुन वंघाणो ।
 इसडो भूठ साधु किम बोलें, थानें आ पिण नही छे पिछांणो रे ॥ ७ ॥
 साधु नें अगन लगाए तपाए, तिणमें पुन कहे छे पाषंडी ।
 बले साधपणा रों नाम धरावे, तिण भेष ले आतम मंडी रे ॥ ८ ॥
 साधु नें अगन लगायो तपायो, तिणरी लेस्या कहे छे रूडी ।
 बले परिणाम ध्यान आछा कहे तिणरी, सरधा छे जावक कूडी रे ॥ ९ ॥
 साधु नें अगन लगाय तपायो, तिणरी लेस्या घणी छे मूंडी ।
 बले परिणाम ध्यान आछा कहे तिणरी, बुध अकल गई बूडी रे ॥ १० ॥
 एक चिरमी जितरी तेउकाय में, जीव असंघ बतावें ।
 तो अगन जाले नें साधु नें तपायो, पुन कहितां लाज न आवें रे ॥ ११ ॥
 अगन रा आरंभ सूं दुरगत बधे छे, दसवीकालिक छटो घेन जोय ।
 तो साधु नें तपावण अगन जलायां, पुन किहांथी होय रे ॥ १२ ॥
 केइ जनम मरण मूकावण काजें, तेउकाय हणे छे कोय ।
 अहेत ने अबोध कह्यो छे तिणरें, आचारंग पेंहलो घेन जोय रे ॥ १३ ॥
 आठ कर्म गांठ बंधे अगन आरंभ सूं, बले मोह मार नरक होय ।
 इसडा फल लागे अगन हण्यां सूं, तो पुन किहांथी होय रे ॥ १४ ॥
 अर्थ अनर्थ धर्म रे हेवें, मंदबुधी हणे तेउकाय ।
 बले मार अनंती नरक निगोद में, ते जोवो दसमां अंग मांय रे ॥ १५ ॥
 साधु नें तपायां में पुन जांणे ते, रूद्ध्यान तणो भेद तीजो ।
 जो बंध पडे तो पडे नरक रो, ठांणाअंग उवाई जोय लीजो रे ॥ १६ ॥
 साधु रे काजे अगन लगाए, पछे साधु नें पकड तपावे ।
 तिणरी आछी लेस्या नें पुन बंध कहितां, विकलां नें लाज न आवे रे ॥ १७ ॥
 कोइ त्रिषा सूं पीड्या साधु नें पकड नें, मुख फाडे काचो पांणी पावें ।
 जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, इणरे पिण पुन थावें रे ॥ १८ ॥
 कोइ भूख सूं पीड्या साधु नें पकड नें, मुख फाड ने सचित खवावे ।
 जो अगन तपायां पुन होसी तो, इणरो पिण पुन थावे रे ॥ १९ ॥
 उजाड माहें थाका साधु नें पकड नें, गाडे उंट घोडे बैसावे ।
 जो अगन तपयां सूं पुन होसी तो, इणरो पिण पुन थावे रे ॥ २० ॥
 कोइ सीयां मरता साधु नें पकड नें, अगन अणमिलीयां राली ओढावे ।
 जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, इणरो पिण पुन थावे रे ॥ २१ ॥
 कोइ साधु रो पेट दुख्यो जांणे जब, अजमादिक उकाली पावे ।
 जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, इणरे पिण पुन थावे रे ॥ २२ ॥

कोइ साधु रो शरीर मेलो देखी नें, पकडे सिनांन करावे ।
 जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, इणरो पिण पुन थावे रे ॥ २३ ॥
 कोइ साधु रा कपडा मेला देखी नें, खोस ने काचा पांगी सूं बोवे ।
 जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, इणरो पिण पुन होवे रे ॥ २४ ॥
 कोइ साधु रा काजे जायगां कराए, साधु नें राखे तिण मांय ।
 जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, तिणरो पिण पुन थाय रे ॥ २५ ॥
 इत्यादिक अनेक बोलां में, साधु काजे हणें छे काय ।
 जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, सगलां मे पुन थाय रे ॥ २६ ॥
 जो किण ही बोला मे पुन बतावे, किण ही में कहे पुन नांही ।
 तो उण रे लेखें उण री बोली में, अंबारो घणो घट माही रे ॥ २७ ॥
 पुन कहे साधु नें अगन तपायां रे, ते उठी जठायी भूट्टी ।
 तेउकाय माखां रो पाप न जाणे, त्यारी दया दिल सूं गइ उठी रे ॥ २८ ॥
 कोइ सधारा माहें मुख फाडे ने, असणादिक धाले मुख माय ।
 जो अगन तपायां रो पुन होसी तो, इणरो पिण पुन थाय रे ॥ २९ ॥
 कोइ त्यागवाला रो मुख फाडे ने, त्यागी वसत धाले मुख मांय ।
 जो अगन तपायां सूं पुन होसी तो, इणरो पिण पुन थाय रे ॥ ३० ॥
 त्याग वालां रो त्याग भंगावे, ते जीव छे भारी कर्मो ।
 सूंस भगायां मंगायां निश्चें पाप बंधे छें, पिण निश्चें नही पुन धर्मो रे ॥ ३१ ॥
 ओर रो सूंस भगायाइ बूडें छें, बंधे छे पाप कर्मो ।
 तो साधु रा सूंस भंगावे तिण रे, किण विध होसी पुन ने धर्म रे ॥ ३२ ॥
 सूंसवालो जो सेंठो रहेसी, तिणरो तो सूंस न भांगो ।
 पिण सूंस भंगावण वालो तो बूडो, तिणरे निश्चेंद पाप कर्म लागो रे ॥ ३३ ॥
 आहार सेज्या वसतर नें पातरा, साधु नें असुच बेंहरावे ।
 तिणनेंइ एकंत पाप हुवे छे, तो अगन तपायां पुन किम थावे रे ॥ ३४ ॥
 साधु नें अगन सूं तपावे तिणमें, पुन कहे तिणरी बुध माठी ।
 ते कहिणवालां ने सरखवालां रे, हीया आडी आइ छें पाटी रे ॥ ३५ ॥
 साधु नें अगन तपावें तिणमें, पुन कहे मिथ्याती कोय ।
 तिणने सूतर ससतर ज्यू परगमीया, ते बूडा मानव सब खोय रे ॥ ३६ ॥
 साधु नें अगन सू तपावें तिणमें, पुन कहे ते भारी कर्मा जीव ।
 तिण आल दीयो अनंता अरिहंत ने, घणी करसी नरकां में रीव रे ॥ ३७ ॥
 साधु नें अगन सूं तपावे तिणमें, पुन कहे ते बोलें छें कूड ।
 ते प्रतष हिंसावर्मा अनारज, त्यांरा पिढतपणा में धूड रे ॥ ३८ ॥

साधु नैं तपायां में पुन परूषें, तिणरी अकल में घणो छे अंधारो ।
 बले विवध मिथ्यात छे तिणरा मत में, कहितां न आवें पारो रे ॥ ३६ ॥
 मिथ्याती साधु नैं तपावे अगन सूं, तिणने थें पुन ब्रतायो ।
 श्रावक तपावे तिणनें पाप ब्रतावो, ओ किण विघ मिलसी न्यायो रे ॥ ४० ॥
 श्रावक ने पाप मिथ्याती नैं पुन, ए उंची सरघा कांय थापो रे ।
 अगन रो आरंभ दोनूं जणा नैं, कीषां छें एकंत पापो रे ॥ ४१ ॥
 साधां ने अगन सूं तपावे श्रावक, तिणनें पाप कहो ते तो न्याय ।
 मिथ्याती तपावे तिणनें पुन कहें छें, ओ तो निश्चे उघाडो अन्याय रे ॥ ४२ ॥
 ए हिंसा धर्मी ओलखावण काजें, जोड कीषी नाथ दुवारा ममरारो रे ।
 संवत्त अठारे वरस तयाले, सावण विद अमावस मंगलवारो रे ॥ ४३ ॥

ढलल : ॡ

दुहल

केयक विगढलल जेन रल, त्यारे ग्यलन नही घट मलय ।
भूठ बोले अग्यलनी नलडर थकल, त्यलने परभव चलतल न कलंय ॥ १ ॥
कोइ तपसल करे सलघ सलघवी, त्यलरी नलंढल करे दलनरलत ।
ललल अणहूतल टेक दे, त्यलरी मूरख मलने वलत ॥ २ ॥

ढलल

[चतुर वलचलर करी ने देखे]

घोवण पलणी चलस अलछ रलखे ने, कोइ तपसल करे मोटी नलंनी रे ।
तलण तपसल ने मूरख खोटी जलणे, ते पूरल मूढ अग्यलनी रे ।
चलस पलणी रलखे ओर सगलेई त्यलग्यो, ते तो अणोदरी तप मोटे रे ।
तलण तपसल री नलंढल करे पलपडी, त्यलरों नीमल नलश्चे मत खोटे रे ॥ यलं २ ॥
तपसी तणल गुण ग्रलम करे तो, करमलं री कोड खपलवं रे ।
उतकष्टो पद तीथकर पलमे, तलणरल ओगण अग्यलनी गलवं रे ॥ ३ ॥
तपसी तणल गुण कीघलंई घर्म, तो तपसल कीघल मे इषको छे घर्मों रे ।
कोइ तपसल करे त्यलरी नलंढल करे छे, ते तो नलश्चें बलघे जलडल कर्मों रे ॥ ॡ ॥
तपसी तणल गुण हर कोइ गलवं, ते गुण खमणी न अलवं रे ।
तलण सूं अजलंण लोकलं ने कर कर तीखल, त्यलं आगल सूं ओगुण बोललवे रे ॥ ॡ ॥
तपसी रल ओगुण बोलें बोललवं, ते तो दोनूं परकलरे बूडे रे ।
ते मलठी गतल जलवल ने वीद बण्यल छे, भलरी होय जलसी नरक रे तूडे रे ॥ ॢ ॥
भगवत भलषी वलरे भेठें तपसल, तलणरो मूरख न्यलय ने जलंणे रे ।
तलणसूं मूढ मलथ्यलती भलरीकर्मल, नलंढल करतल संक न आणे रे ॥ ॣ ॥
एक सीत मलतर कोइ ओछो खलए, ते जलगन अणोदरी जलंणों रे ।
जलम जलम उदर उणों इषको रलखे, तलम तलम अणोदरी तप पलछंणो रे ॥ । ॥
पलंच वलणें एक वलणें कलण त्यलगी, ते पलण तपसल जलंणो रे ।
तो पलचोइ वलणें सर्वथल त्यलगी, ए रस त्यलग तपसल पलछंणों रे ॥ ॥ ॥
इण अणुसलरे तपसल रल भेद घणल छे, तलण मे ललभ कहुयो जलगरलय रे ।
तो चलस पलणी रलखें सगलल दरब त्यलग्यल, तलणमे तो बोहत नलरजरल थलयो रे ॥ १० ॥

*यह अलंकडी प्रत्येक गलथल के अन्त मे है ।

एक सीत त्याग्यां एक विगें त्याग्यां में,
 तो चास उपरंत सारी वसत त्यागी,
 एक दिन चास राखें सारी वसत त्याग्यां,
 तो चास राखें त्याग करें महीना लग,
 तिण तपसा रा कोइ ओगुण बोलें,
 तिण अरिहंत वचन उथाप्यो अग्यांनी,
 चास टाले ओर सगली वसत त्यागी,
 मोह मिथ्यात ने उसभ उदें सूं,
 तिणनें श्रावक मिलीया अतंत अग्यांनी,
 त्यां आगें मन मानें ज्युं गोला चलावें,
 थारा मत मांहे कोयक बुचवंत हुवें तो,
 तो छोड देंत ततकाल खोटो जांणी,
 तपसी तणा गुण कानें मुणे जब,
 वले उलटा ओगुण काडें तपसा,
 संवत अठारें वरस तयालें,
 मूड मती ओलखावण काजें,

तिणमें पिण कटें छें कर्मों रे।
 ते मोटों तप निरजर रा धर्मों रे ॥ ११ ॥
 तिणमेंइ निरजर रा थारें रे।
 ते कर्मा री कोड निश्चें खपावे रे ॥ १२ ॥
 आतमा नें लगावे छे कालो रे।
 दे दे अणहूंतो आलो रे ॥ १३ ॥
 ते गुण मूले न सूमें रे।
 दिन दिन इधका अलूमें रे ॥ १४ ॥
 त्यानें आंवा ज्युं-मूल न सूमें रे।
 तो पिण बलतों जाब न बूमें रे ॥ १५ ॥
 तुरत जाणें तिणनें कूडो रे।
 भूठा बोला रे मुख देइ धूडो रे ॥ १६ ॥
 वलें अग्यांनी री छाती रे।
 ते निश्चें जीव मिथ्याती रे ॥ १७ ॥
 आसोज विद नवमी सनीसर वारो रे।
 जोड कीधी नाथ दुवारा मभारो रे ॥ १८ ॥

ढलल : ६

दुहल

ऑर सलघवलयां ऑडडसु कुडडु, डलडु गलड डडडर ।
तडण डुं दुषुड डलडु ऑडडड, डलल दुडल वलवघ डुरकलर ॥ १ ॥
कुण-कुण डलल उऑड नुं, दुडल लुकलं डुं डुंलडड ।
ऑुडल सल डुरगऑ कलुं, तु सुणऑुडु ऑलतु लुडड ॥ २ ॥

ढलल

[डुरलरुड सडकुत उऑरु रु लल]

दुडुडल	लुवल	नुं	उऑडुडु,	तडणरु	लुलु	डगुडलनु	नलड ।
तडण	वुंहरलड	वसुतु	डसुडतुडु,	सुंखडुडलदलक		तलड	रु ।
				दुषुडु	डलल	दुतल	संकुडल नहुी* ॥ १ ॥
डललस	रुडडलडलं	रु	सुंखडुडु,	सलघवलयां	नुं	वुंहरलड	डलण रु ।
डुल	डंगलु	डुडुतल	थकुडु,	डसडु	कहु	ऑु कर कर	तलण रु ॥ दुु २ ॥
डुल	डलण	वुंहरलड	सुंऑुनु,	तु	डडण	वुंहर	लुडु ततकलल रु ।
वलु	वलसु	रलखु	कहु सुंऑु नु,	डु डडण	दुडुडु	डगुडलनु	डलल रु ॥ ३ ॥
सलघवलयां	कलऑु	सुलरु	करलड नुं,	सलघवलयां	नुं	दुडु	वुंहरलड रु ।
डु डडण	डलल	दुडुडु	ऑु डलडडलडलं,	वलु	दुडुडु	लुकलं डु	डुंलड रु ॥ ॡ ॥
षुत	नुं	खुडुरलदलक	डुल लु,	सलघवलयां	नुं	वुंहरलड	तलड रु ।
डहुवु	डलत	उऑलु	डलडडलडलं,	डकवु	करुं	ऑलड	ऑलड रु ॥ ॡ ॥
डलवडल	नुं	सुंस	डलरुडलं	दुडुडु,	डुरणवल	रल	करलडल तुडलण रु ।
डु डडण	डलल	दुडुडु	ऑु डलडडलडलं,	तुडलरु	ऑलणऑुडु	डुरु	डडलण रु ॥ ६ ॥
ऑुकलड	हुणवल	रल	सुंस करलडडलडलं,	घर डुं	रहुवल	रल	तुडलण करलड रु ।
डल	तुलनल	नुं	उऑकलडल	डलरुडलं,	डु डडण	डुकंत	डुसलवलड रु ॥ ७ ॥
डुऑु	डलतुर	रलखुडु	कहु सलघवुडलं,	वसुडुकरणलदलक		करवल	तलहु रु ।
डु डडण	डलल	दुडु	नुं डलडडलडलं,	डुंलडुडु		लुकलं	डलहुलु रु ॥ ॡ ॥
रलतु	थलनक	डु	रलखुडु	डलवडल,	डु डडण	डुलुडु	हुललहुल डुऑु रु ।
तडणरु	घुखु	घणु	डलरुडलं	थकुडु,	लुकल	डुं	कुडुडु डुऑु डलतुतुर रु ॥ ६ ॥
डुक	ऑणु	डलल	डसडु	दुडुडु,	डुणल	रुऑुडलं	करु कर ऑलर रु ।
डुहु	तु	वुंहरलड	डलरुडलं	डणु,	डुकण	दलन	डडडर रु ॥ १० ॥

* डहु डुलकुडु डुरतुडुक गलथल कु डनुत डु हु ।

इत्यादिक आल दीया घणा, फेलाया लोकां रे माहिं रे ।
 कर्मा वश बकिया बापडा, पर भव सूं पिण डरिया नाहिं रे ॥११॥
 दीख्या लेवा नें उठिया तेहनां, न्यातीलां उठाइ बात रे ।
 त्यां आल दीया छे अन्हांखी थकां, प्रसिद्ध कीधा लोकां में विख्यात रे ॥१२॥
 वले भेषधाखां री श्रावका, त्यां पिण दीधा अणहुंता आल रे ।
 ते आल फेलाया लोक में, बुद्धि विण कुण काढे निकाल रे ॥१३॥
 केइ टोला री टालोकर फिरें, त्यां सावां सूं धेष अतंत रे ।
 त्यांनैं अणहुंता दोष उतराय नें, त्यांरी पिण पूरी मन खंत रे ॥१४॥
 ते तों आगे पिण आल देतीं घणा, अवगुण बोलती थी दिन रात रे ।
 ते तों दोष उतार हरषी घणी, जाणें खरची वाइ म्हारे हाथ रे ॥१५॥
 फिरे छें ठाम ठाम बंचावती, अवगुण बोलें छें ठाम ठाम रे ।
 आयीं री उत्तारण आसता, यांरा दुष्ट घणा परिणाम रे ॥१६॥
 केइ दोष उतारे आणिया, केइ मुख सूं जोडी करे बात रे ।
 साधवियां नें आल देती फिरे, त्यां पुरो पडिवजियो मिथ्यात रे ॥१७॥
 भूठा दोष उताखा पापियां, ते पापणी लिया उतार रे ।
 त्यांरी बात साची कर मानसी, ते पिण बूडसी कालीघार रे ॥१८॥
 दोष उतारिया त्यांनैं पूछणों, थें दोष उतारिया किण कांम रे ।
 ए थें साचा उतारिया जाण नें, के थें भूठा जाणें नें ताम रे ॥१९॥
 ए तो दोष कहे लोकां मंभे, त्यां दोषां नें साचा ठहराय रे ।
 आयीं री उत्तारणें आसता, पांनो बंचाय बंचाय रे ॥२०॥
 त्यांनैं लजा नहीं इण लोक री, परभव री चिंता न कांय रे ।
 भूठ बोलती पिण सके नहीं, मन मानें ज्युं बोले ताय रे ॥२१॥
 आल उतार आयीं तणा, पांमी मन माहिं हरष रे ।
 जाणें डाकण पाली फिरें तेहनें, चढवा नें मिलियो जरख रे ॥२२॥
 ए तो आगेइ चारित भांग नें, आरें कर बेठी अनंत संसार रे ।
 ए साच किसी तरह बोलसी, यांरी परतीत नहीं छें लिगार रे ॥२३॥
 आहार अशुद्ध वेंहखो छे जाण नें, वले कहे म वेंहखो निरदोष रे ।
 इम भूठ बोले जाण जाण नें, एहवा मिष्टी न जाए मोष रे ॥२४॥
 आहार पांणी वेंहखो छे सूभतो, वले पूछ करे निरधार रे ।
 त्यांनैं भारीकर्मा केइ जीवडा, आल देता न सके लिगार रे ॥२५॥
 यां दोषां रो निकालो काडियो, पाइगांम मभार रे ।
 घणा बाई भाई बेठां थकां, आयीं में नहीं दोष लिगार रे ॥२६॥

आल दीयो अन्हांखी पापियां, त्यांरो हुबो घणो फितूर रे ।
 तोही नागा निरलंज लाजे नही, त्वारा जन्म जीतव ने विकार रे ॥ २७ ॥
 या आल दीयो अन्हारविया, त्यांरी मानी छे, साची बात रे ।
 ते पिण बूड गया छे बापडा, तिण में संका नही तिलमात रे ॥ २८ ॥
 एहवा आल सुणे भेषचारियां, साचा कर मान लीषा ताथ रे ।
 ए पिण गांम नगर कहता फिरे, मन मे हरषत थाय रे ॥ २९ ॥
 भेषघाखां नें बोया पापियां, आर्यां ने भूठा दे आल रे ।
 ए पिण पापी बकवो करें, पूरो काढें नही निकाल रे ॥ ३० ॥
 यां पोते पिण आल दीया घणा, वले दीसैं एहिज परिणाम रे ।
 ए दोष सुण ने हरषे घणा, जाणें सरिया मन वद्धित कांम रे ॥ ३१ ॥
 त्यानें परभव री चिंता हुवे, तो इण बात रो काढें निकाल रे ।
 वले नागडा भडंग हुवा तिके, सके नही देता आल रे ॥ ३२ ॥
 ओर जीवा नें कोइ आल दे, ते पिण रूले घणो संसार रे ।
 जिहां जाए तिहां परजले, पाछो आल पामें वाखंवार रे ॥ ३३ ॥
 तो साघां नें कूडा कूडा आल दे, तिण पापी रो पूरो अभाग रे ।
 भारी कर्म बांध्या तिण पापिए, तिण सूं पामे दुख अथाग रे ॥ ३४ ॥
 कदा बंध पडे जे नरक रो, तो जावे नरक ममार रे ।
 तिहां दुख असाता हुवे घणी, वले खाये अनंती मार रे ॥ ३५ ॥
 साघां रे आल देवे पापिया, मन माहे उजम आंण रे ।
 तिणरी परमाघांमी देवता, जीभ काढे जडां सूं तांण रे ॥ ३६ ॥
 साघां ने आल देवे पापिया, तिण छोडी लाज नें समं रे ।
 घणा मे मिश्र भाषा बोलता, बाघे महा मोहणी कर्म रे ॥ ३७ ॥
 केइ भूठ बोले नें पापिया, साघां ने देवे आल रे ।
 ते भ्रमण करे संसार मे, उतकष्टों अनंतो काल रे ॥ ३८ ॥
 ते दुख भोगवे नरक निगोद में, तिणरो कहितां न आवें पार रे ।
 ते तों प्रश्न व्याकरण माहे कह्यो, दूजा आश्रव द्वार ममार रे ॥ ३९ ॥
 कदा पाप उदे हुवें इण भवे, तो बघे घणो रोग सोग रे ।
 छेहडो आवे रिद्धि संपत्ति तणो, पडे बालां तणो विजोग रे ॥ ४० ॥
 केइ आंघां होय जावे इण भवे, जाबक होय जावे निराधार रे ।
 भीख भमता होवे इण भवे, साघां नें आल रो देवणहार रे ॥ ४१ ॥
 केइ तो अन्न विहूणा मरे, करता थकां विल विलाट रे ।
 साघां ने आल देवे तेहनां, भव भव में हुवे ओहिज घाट रे ॥ ४२ ॥

इत्यादिक आल दीया घणा, फेलाया लोकां रे मांहि रे ।
 कर्मा वस बकिया बापडा, पर भव सूं पिण डरिया नांहि रे ॥ ११ ॥
 दीख्या लेवा नें उठिया तेहनां, न्यातीलां उठाइ बात रे ।
 त्यां आल दीया छे अन्हांखी थकां, प्रसिद्ध कीघा लोकां में विख्यात रे ॥ १२ ॥
 वले भेषधार्यां री श्रावका, त्यां पिण दीघा अणहुंता आल रे ।
 ते आल फेलाया लोक में, बुद्धि विण कुण काढे निकाल रे ॥ १३ ॥
 केइ टोला री टालोकर फिरें, त्यां रे साघां सूं घेष अतंत रे ।
 त्यांनं अणहुंता दोष उतराय नें, त्यांरी पिण पूरी मन खंत रे ॥ १४ ॥
 ते तों आगे पिण आल देतीं घणा, अवगुण बोलती थी दिन रात रे ।
 ते तों दोष उत्तर हरषी घणी, जाणें खरची आइ म्हारे हाथ रे ॥ १५ ॥
 फिरे छें ठाम ठाम बंचावती, अवगुण बोलें छें ठाम ठाम रे ।
 आयां री उतारण आसता, यांरां दुष्ट घणा परिणांम रे ॥ १६ ॥
 केइ दोष उतारे आणिया, केइ मुख सूं जोडी करे बात रे ।
 साधवियां नें आल देती फिरे, त्यां पूरो पड्विजियो मिथ्यात रे ॥ १७ ॥
 भूठा दोष उताख्या पापियां, ते पापणी लिया उतार रे ।
 त्यांरी बात साची कर मानसी, ते पिण बूडसी कालीघार रे ॥ १८ ॥
 दोष उतारिया त्यांनं पूछणों, थें दोष उतारिया किण कांम रे ।
 ए थें साचा उतारिया जाण नें, के थें भूठा जाणें नें तांम रे ॥ १९ ॥
 ए तो दोष कहे लोकां मभे, त्यां दोषां नें साचा ठहराय रे ।
 आयां री उतारणें आसता, पांनो बंचाय बंचाय रे ॥ २० ॥
 त्यांनं लज्जा नहीं इण लोक री, परभव री चिता न कांय रे ।
 भूठ बोलती पिण सके नहीं, मन मानें ज्युं बोले ताय रे ॥ २१ ॥
 आल उतार आयां तणा, पांमी मन मांहें हरष रे ।
 जाणें डाकण पाली फिरें तेहनें, चढवा नें मिलियो जरख रे ॥ २२ ॥
 ए तो आगेइ चारित भांग नें, आरे कर बेठीं अनंत संसार रे ।
 ए साच किसी तरह बोलसी, यांरी परतीत नही छें लिगार रे ॥ २३ ॥
 आहार अशुद्ध वेंहख्यो छे जाण नें, वले कहे मै वेंहख्यो निरदोष रे ।
 इम भूठ बोले जाण जाण नें, एहना भिष्टी न जाए मोष रे ॥ २४ ॥
 आहार पांणी वेंहख्यो छे सूभतो, वले पूछ करे निरघार रे ।
 त्यांनं भारीकर्मा केइ जीवडा, आल देता न सके लिगार रे ॥ २५ ॥
 यों दोषां रो निकालो काढियो, पाहुंगांम मभार रे ।
 घणा बाई भाई बेठां थकां, आयां में नहीं दोष लिगार रे ॥ २६ ॥

आल दीयो अन्हांखी पापियां, त्यारो हुवो घणो फितूर रे ।
 तोही नांगा निरलंज लाजे नही, त्यारा जन्म जीतव ने विकार रे ॥ २७ ॥
 या आल दीयो अन्हारविया, त्यारी मानी छे साची बात रे ।
 ते पिण वूड गया छे बापडा, तिण मे संका नही तिलमात रे ॥ २८ ॥
 एहवा आल सुणे भेषवारियां, साचा कर मान लीघा ताय रे ।
 ए पिण गांम नगर कहता फिरे, मन मे हरषत थाय रे ॥ २९ ॥
 भेषवाख्यां नें बोया पापियां, आर्यां ने भूठा दे आल रे ।
 ए पिण पापी बकबो करें, पूरो काढे नही निकाल रे ॥ ३० ॥
 यां पोते पिण आल दीया घणा, वले दीसे एहिज परिणाम रे ।
 ए दोष सुण ने हरषे घणा, जाणे सरिया मन वच्छित काम रे ॥ ३१ ॥
 त्यानें परभव री चिंता हुवे, तो इण बात रो काढें निकाल रे ।
 वले नागडा भडग हुवा तिके, सके नही देता आल रे ॥ ३२ ॥
 ओर जीवा नें कोइ आल दे, ते पिण छले घणो संसार रे ।
 जिहां जाए तिहां परजले, पाछो आल पामे वाखंदार रे ॥ ३३ ॥
 तो साधां ने कूडा कूडा आल दे, तिण पापी रो पूरो अभाग रे ।
 भारी कर्म वांच्या तिण पापिए, तिण सूं पामे दुख अथाग रे ॥ ३४ ॥
 कदा वंघ पडे जे नरक रो, तो जावे नरक मकार रे ।
 तिहां दुख असाता हुवे घणी, वले खाये अनंती मार रे ॥ ३५ ॥
 साधां रे आल देवे पापिया, मन मांहे उजम आण रे ।
 तिणरी परमाधांमी देवता, जीम काढे जडां सूं ताण रे ॥ ३६ ॥
 साधां नें आल देवे पापिया, तिण छोडी लाज नें सम रे ।
 घणा मे मिश्र भापा वोल्ता, वाघे महा मोहणी कर्म रे ॥ ३७ ॥
 केइ भूठ बोले नें पापिया, साधां नें देवे आल रे ।
 ते अमण करे ससार मे, उतकाष्टें अनतो काल रे ॥ ३८ ॥
 ते दुख भोगवे नरक निगोद मे, तिणरो कहितां न आवें पार रे ।
 ते तों प्रश्न व्याकरण मांहे कह्यो, दूजा आश्रव द्वार मकार रे ॥ ३९ ॥
 कदा पाप उदे हुवें इण भवे, तो वधें घणो रोग सोग रे ।
 छेहडो आवे रिद्धि संपति तणो, पडे वालां तणो विजोग रे ॥ ४० ॥
 केइ आंथां होय जावे इण भवे, जावक होय जावे निराधार रे ।
 भीख भमता होवे इण भवे, साधा ने आल रो देवणहार रे ॥ ४१ ॥
 केइ तो अन्न विहंणा मरे, करता थकां विल विलाट रे ।
 साधां नें आल देवे तेहनां, भव भव मे हुवे ओहिज घाट रे ॥ ४२ ॥

साधु : साधवियां नैं आल दे, तिणरो भव भव माहिं अभाग रे।
 ते दुख भोगवे नरक निगोद में, तिणरो वेगो न आवे थाग रे ॥४३॥
 इम सांभल नैं नर नारियां, किणनेइ म दिज्यो आल रे।
 आल दीघां रा फल छे पाडुवा, श्री जिण वचन संभाल रे ॥४४॥
 आल दीघां रा फल ओलखायवा, जोड कीघी ईडवा मभार रे।
 संवत अठारे वर्ष चोपनें, चेत विद चोथ नैं बुधवार रे ॥४५॥

ढलल : ७

दुहल

केई अगुनल नुड कहे, सलघु नें कुड करणी नलहल ।
ते अन्हुलखी बकबुककरें, तुनरें गुनलन नही घट मलहल ॥ १ ॥
तुनलं सलवघु नलरवघु न ओलुखुओ, नही ओलुखी डलषल कुनर ।
ते कुड करणी उथलडवल, हुवल अगुनल तुनर ॥ २ ॥
शुरी अरलहंत डलषुडल अरुथ नें, ते गणघरे गुथुडुं सलघंत ।
तुनल कुड करी सुतरल तणी, तुनरुं अरुथ करे डतवंत ॥ ३ ॥
रलषड देवकुी रल सलघलं कुडुीडल, डडनल कुओरलसी हुकलर ।
शुरी वीर तणल सलघलं कुीडलं, कुवदें हुकलर डडनल सलर ॥ ॡ ॥
वले वलकुलल डलवुीस तलथकरल तणलं, सलघल कुीघल डडनल अनेक ।
तुं हलवडलं कुड नलरवघु करें, तुनलडे दुष ड कुणुं एक ॥ ॡ ॥

ढलल

[कुतुर वलकलर करी नै देखु]

केई कहे सलघलं नै कुड न कहुणी, कलहलतलं डंधे गुनलनलवरणी कडुं रे ।
दरसणलवरणी कडुं डंधे कुड सुणीडल, तलण कुड कहुनल नही घडुं रे ।
कुतुर वलकलर करी नें देखु* ॥ १ ॥
डेहलं तुं सलघलं नै कुड कहुणी नषेघुी, ते ही कुड कलहुवल ललगल रे ।
तुनल वलकललं नै सलघु कलण वलघ कलहलकुे, ए तुं वरत वलहुणल नलगल रे ॥ कु० २ ॥
कुड कहुनलं गुनलनलवरणी कडुं डंधे कुं, सुणुं ते दरसणलवरणी डलंधे रे ।
हलवुं तेहीकु कुड कहे तलणरे लेखुं, सडकुत कुलरलत कुुओडुं अलंधे रे ॥ ३ ॥
वले कुड कहुं तुनलं हुण वलघ कलहलतलं, गीतेरण कुुडुं गलवे गीतुं रे ।
ते डलण कुड नें डलल डलल गलवे, तुनलरुी वलकलल डलनं डरतुीतुं रे ॥ ॡ ॥
कुड कहुणी नषेघुं नें कलहुवल ललगल, तुनलं अड कहे कुड अडुं रे ।
थें सलघल नें कुड कहुणी नषेघुी, थें कुड कहुं कलण कलडुं रे ॥ ॡ ॥
कुड कहे डुहे कुड नें डुली न कुणलं, डुहे कहुल अनेरल नी कुीघुी रे ।
डरनी कुीघुी कुड कहुलं डरडेखल, डुहलनं अड डलली कुं सीघुी रे ॥ ॢ ॥
डुठ ललगुं कुड करणवलल नें, डुहलने तुं कलहलतलं डुठ न ललगुं रे ।
डुहे तुं कुलसी हुवे कुलसी कहे डतलवलं, लुक सुणुं तुनलं अलगुं रे ॥ ॣ ॥

*डुह अलंकडुी डुरतुडेक गलथल के अन्त डें हल ।

पेलों री जोड कीधी जोड भूंडी जाणों छों, तो थें कांय कहो लोकां आगे रे ।
 लोक पिण जोड सुण नें घणी सरावे, जब सगलां नें भूठ लागें रे ॥ ८ ॥
 जो पर नी कीधी जोड कहो परपेखा, तो कहि देणों लोकां आगें रे ।
 खोटी जोड नें थें मतीय सरावो, जब किणनेई भूठ न लागें रे ॥ ९ ॥
 खोटी जोड कहे ने थें धिन धिन कहावों, जब बकता सुरता दोनूं बूडा रे ।
 अठें तो ठगा सूं काम चलावे, आगे चिहूं गति में दीससी भूंडा रे ॥ १० ॥
 पर नी कीधी जोड कहो परपेखा, पिण मन माहें खोटी जाणों रे ।
 तो होली रा गीत नें गाल परपेखा, ते कहितां संक क्यूं आणों रे ॥ ११ ॥
 यांरा कहिण रे लेखे सगली जोड भूंडी, तो कांय करो टाला टोले रे ।
 कांई जोड कहो कांई कहिता संको, आ पिण थारे लेखे थामें भोलो रे ॥ १२ ॥
 जोड कहणी निषेधें नें कहिता जाए, त्यां विकलां री नही परतीतो रे ।
 सावद्य निरवद्य विण ओलखीयां, यूंही बोले घणा विपरीतो रे ॥ १३ ॥
 केई सावद्य चोरी अनेरा नी कीधी, ते पिण चोप्या कहवा लागा रे ।
 तिण माहें भूठ छें विवघ प्रकारें, ते पिण जोड कहिवा नें आगा रे ॥ १४ ॥
 एहवी पिण खोटी जोड कहे नें, लोक रीभावण लागा रे ।
 बले साधु रो विडद धरावें अग्यांनी, ते पिण विरत विहूणा नागा रे ॥ १५ ॥
 बले जोड कहें त्यांनं निन्व कहें छें, बले भूठाबोलां कहें तांमो रे ।
 सुयगडाअंग तेरमाधेन रो, ले ले अणहंतो नांमो रे ॥ १६ ॥
 बले जोड कहें त्यांनं वदवद धाल्या, वेस्या रा करंडीया माह्यों रे ।
 ठांगाअंग चोथा ठांगा रो नांम लेइ ने, ते पिण मूंसावायो रे ॥ १७ ॥
 निन्व ने बले भूठाबोला कहें छें, बले वेस्या जोडे दीघा रे ।
 बले दोष अनेक कहे जोड कीधां, त्यांरा वचन विकलां मान लीघा रे ॥ १८ ॥
 जोड करे त्यांनं कहें खोटा नें निन्व, जोड नें पिण कहें छें खोटी रे ।
 तेहीज जोड नें पोतें कहें छें, ते विकलां रे भोल्प मोटी रे ॥ १९ ॥
 बले जोड करें त्यांसूं संभोग भेलो, तिणनें साध गिणें आप सारिखो रे ।
 ते पिण रेलो आप में आवें, त्यांनं आ पिण नहीं छें ठीको रे ॥ २० ॥
 साधां नें निरवद्य जोड करणी उथापें, ते पूरा मूंड गिंवारो रे ।
 निरवद्य न्याय करे जोड साधु, तिणमें नही दोष लिगारो रे ॥ २१ ॥
 मतिग्यांन तणा दोय भेद कह्या जिण, नंदी सूतर रे माह्यों रे ।
 सूतर री नेश्राय सूं अर्थ बघारें, सूतर विण बुघ फेंलावें तांहां रे ॥ २२ ॥
 सूतर विनां कोइ बुघ फेंलावें, ते जोड करें निरदोषो रे ।
 च्यार भाषा तणा जे जाण होसी ते, जोड करसी तिको ग्यांन चोखो रे ॥ २३ ॥

ते उतपात री बुध वीर वखांणी, ते तो मेल दे वचन रसालो रे ।
 जिसरो नर देखे जिसरोइज साचो, उतर दे ततकालो रे ॥ २४ ॥
 सूतर विनां कोइ बुध फेलावे, ते तो बुध घणी छे भारी रे ।
 सावद्य निरवद्य अकल सूं जाणो, ते तो करसी जोड विचारी रे ॥ २५ ॥
 अणदीठो अणसांभल्यो काने, मन मे पिण न कीयो विचारो रे ।
 एहवो प्रश्न कोइ आय पूछे जब, ततषण जाव दे तिणवारो रे ॥ २६ ॥
 भारत रामायणादिक सास्त्र अनेक, ते अनतीर्थी कीया ग्रंथो रे ।
 ते साधु भणें सम सूतर हुवे, ते बुध सूं संवलो करे अर्थो रे ॥ २७ ॥
 अण तीरथीया रा कीघा सासत्र, त्याने हुंता ज्यू रा ज्यूं जाणो रे ।
 तो पोते जोड करसी तिण माहे, सावद्य किण विघ आणो रे २८ ॥
 केई मिथ्याती जोड करे तिण माहे, काई सांच काई कूडो रे ।
 ते सुणीयां थका रंग किण विघ आवें, जाणे मिली केसर माहे धूरो रे ॥ २९ ॥
 साधु तो कुड ने काने करेने, साच कहे सुखदायो रे ।
 जाणे गंगोदक मे केसकर घाली, ज्यू रग दीये चढायो रे ॥ ३० ॥
 साधु तो जोड करे छे जुगत सूं, सूतर केरे न्यायो रे ।
 पिण कुबदी जीव कदागरो माडे, सुबदी री आवे दायो रे ॥ ३१ ॥
 अनतीरथी री कीघी जोड माहिलो, कूड काने करे ताह्यो रे ।
 तो इसडी ओलखणा घट ज्यारे, ते न करे जोड अन्यायो रे ॥ ३२ ॥
 आचारग आदि दे सूतर अनेक, ते भाष्या अरिहत भगवानो रे ।
 तेहीज सूतर जाणे मिथ्याती, तिणरे हुवे मति अग्यानो रे ॥ ३३ ॥
 पुराण कुराण ने श्री जिण आगम, मिथ्याती जाणे तो अग्यानो रे ।
 तेहीज समदिष्टी जाणे तो ग्यांन, तिणरो निरमल मति गिनानो रे ॥ ३४ ॥
 सत असत ने बले मिश्र ववहार, ए च्याहई भाषा जाणे सोयो रे ।
 ते जोड करणी क्याने उथापे, साधु ने भाषा बोलणी दोयो रे ॥ ३५ ॥
 सत ने ववहार भाषा दोय बोले, ते पिण निरवद्य ने निरदोषो रे ।
 या दोय भाषा सूं जोड करे छे, त्यारो मति ग्यांन छे चोखो रे ॥ ३६ ॥
 ए दोय भाषा बोलण री साघां ने, भगवंत आग्या दीघी ताह्यो रे ।
 दसवीकालक सातमा अधेने, तीजी गाथा माह्यो रे ॥ ३७ ॥
 केई जोड करे केई जोड कहे छे, अथवा केई जोड सरावे रे ।
 जो धर्म होसी तो सगलां ने होसी, पाप होसी तो सगला ने थावे रे ॥ ३८ ॥
 बले उतराधेन गुणतीसमे धेने, तिहां अर्थ मे गाथा विसतारो रे ।
 जोड करे प्रवचन दीपावे, तिणने होसी लाभ अपारो रे ॥ ३९ ॥

ववहार समकत रा सतसठ बोल,
 तिणमें आठां बोलां प्रवचन दीपावें,
 वले ठांण अंग नवमां ठांणां मांहे,
 नवूं ही पाप सासत्र साध भणे तो,
 वले चोथें ठांणें च्यार काव्य कह्या छें,
 ते जोड कह्यां विण किण विध गावें,
 किण ही जेंहर नीपाए ० नें पीघों,
 तिण जेहर थकी दोनूं जणा ततषण,
 ज्यूं कोइ जोड करे नें कहे छें,
 जो जेंहर सरीषी जोड भूळी छे,
 जिण जेंहर नीपाए नें पीघो ते मूंओ,
 ज्यूं जोड करे नें कह्यां पाप लागें,
 जो निरवद्य जोड हुवें इमरत सरीषी,
 एहवी जोड करे नें कह्यां धर्म निश्चे,
 त्यां जोड करणी साधां नें निषेघी,
 ते प्रतष चोडें भूळबोला छें,
 पेंहलां तो कहितां साधां ने जोड न करणी,
 वेण सगाइ तो मेल न जाणें,
 त्यांरा बडा बडेरा आगें हूवा ते,
 त्यांनें पिण जाबक भूळ घाले नें,
 कोइ निरवद्य जोड सूतर न्याय करता,
 हिचे जोड करे त्यांनें आछा जाणें,
 संवत अठारे नें वरष तयांले,
 निरवद्य जोड करणी ओलखावण काजे,

तिणमें पिण ओहीज न्यायो रे ।
 तिहां जोड करणी तिण माहो रे ॥ ४० ॥
 तिहां अर्थ कह्यो छे आंमो रे ।
 धर्म पुसटों करे तांमो रे ॥ ४१ ॥
 गदबंध कथा गीतो रे ।
 ते पिछांण कीजों खडी रीतो रे ॥ ४२ ॥
 किणही जेंहर पीघों जाणें सीघो रे ।
 अकाले आउषो पूरो कीघो रे ॥ ४३ ॥
 कोइ जोड कहे सीघी जांणों रे ।
 तो दोयां नें पाप लागसी आंणो रे ॥ ४४ ॥
 सीघो जेंहर पीघो तेही मूंओ रे ।
 तो सीघी कही त्यांनेंइ पाप हूवो रे ॥ ४५ ॥
 ते कह्यां थकां कटें कर्मों रे ।
 सीघी कहणवालानेई धर्मों रे ॥ ४६ ॥
 तेहीज जोड करवा लागा रे ।
 ते वरत विहूंगा नागा रे ॥ ४७ ॥
 ते पिण जोड करवा नें दूका रे ।
 यूंही कुडीया थका करे कूका रे ॥ ४८ ॥
 साधां नें जोड करणी न थापी रे ।
 खोटी जोड करवा लागा पापी रे ॥ ४९ ॥
 त्यांरी निद्या करता दिन रातो रे ।
 तिण लेखें आगे हंतो मिथ्यातो रे ॥ ५० ॥
 काती सुदि तेरस नें सनीवारो रे ।
 जोड कीघी कोठाख्या मभारो रे ॥ ५१ ॥

ढाल : ८

ढुहा

केई मूढ मिथ्याती जीवडा, ते तो वूडे छे कर कर तांण ।
ते ववेक विकल सुघ वुव विनां, जिण मारग रा अजाण ॥ १ ॥
च्यार पाटीने काउसग कीयां विनां, कहे सामायक नही होय ।
एहवी उधी करे छे परूपणा, त्यां सुघ वुव दीधी खोय ॥ २ ॥
पेहिली करणी छे इरीयावइ तसोतरी, पछेंकाउसग करणों एक ठांम ।
पछे लोगसस कहे सामायक पचखणी, पछे कहिणो नमोथुण तांम ॥ ३ ॥
ए च्यार पाटीने काउसग कीयां विनां, सावद्यजोग रा करे पचखांण ।
तिणारे सामायक नही नीपजे, दसडी कहे मूढ अयांण ॥ ४ ॥
सका घाले लोकां ने अन्हांखी थकां, सामाइ री देवे अंतराय ।
रात दिवस बकवोकरे, तिणरा जावसुणो चित्तल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[२ भवियण सेवो २ साध सयाखा]

च्यार पाटी कहां विण समाइ न करणी, इम कहे त्यारी सरघा खोटी ।
ते जिण मारग रा अजाण अग्यांनी, त्यांरी अकल मे खांमी छे मोटी रे ।
भवियण जोवो हिरदय विचारी, थे काय करो आतम भारी रे ।
भवियण थे छोड दो रुढ हीया री* ॥ १ ॥
छ आवसग माहे पेहली समाइ, पछें चोवीसत्यो चाल्यो ।
ते वीर वचन उथापे अग्यानी, ओ घोचो अणहुंतो घाल्यो रे ॥ २ ॥
उतराघेन गुणतीसमे घेनें, पेंहलां सामायक रो फल भाल्यो ।
पछें चोवीसत्या सूं पचखांण लग, त्यांरो फल अनुक्रमें दाख्यो रे ॥ ३ ॥
अनुयोग दुवार में छ आवसग चाल्या, पेहिलो आवसग समाड जांणों ।
पछे चोवीसत्यो वंदणा पडिकमणो, पछे काउसग ने पचखांणो रे ॥ ४ ॥
समाइ चोइत्यो वंदणा पडिकमणो, काउसग ने पचखांणों ।
थे सांम सवेर रो करो पडिकमणो, जव थे इम काय दोलो वांणों रे ॥ ५ ॥
थारे लेखें याने पेहलां कहिणो चोइत्यो, पछें कहिणी थाने समाइ ।
जो थे पेंहलां नाम सामायक रो लेसो, तो थां में समम न दीसे कांई रे ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

च्यार पाटी कहां विण पचखें समाइ,
 जो थें साचा हुवों तो सूतर में बतावो,
 यारें लेखें तो च्यार पाटी समाइ,
 सामायक चोइत्थो ओलख्यां विण,
 च्यार पाटी नें काउसग कीयां विण,
 आतमा सुघ कीयां विण करे समाइ,
 एहवी उंधी परूपणा कर कर लोकां में,
 त्यांनैं सूतर सख्ज ज्यूं परगमीया,
 एहवा मूढ मिथ्याती नें पूछा कीजे,
 च्यार पाटी नें काउसग कीयां विण,
 हिंसा भूठ चोरी मैथुन परिग्रह,
 च्यार पाटी नें काउसग कीया विण,
 हिंसादिक अठारें पाप रो सेवण,
 च्यार पाटी नें काउसग कीयां विण,
 एहवा प्रश्न पूछ्यां रा जाब न आवे,
 त्यांरे कर्म जोगें डंक लागा कुगुरां रा,
 त्याग वेंराग री जेम् न करणी,
 वीर कहां उतराधेन दसमें अधेन नें,
 सामायक चारित वीर लीयों जद,
 सर्व पाप करणों नही मोनें,
 इरीया तसोतरी कहे काउसग कीघो,
 इतला माहें घर काम उपनों,
 पेंहला सावद्य जोग रा त्याग करे नें,
 तठा पछें कोइ घर काम उपनो,
 च्यार पाटी कहितां नें काउसग करतां,
 जब लग आश्रव नाला छूटा राख्यां,
 ते तो समें समें सात कर्म लागें छें,
 एक एक कर्म रा प्रदेस अनंता,
 किणनें वेंराग आयो समाइ करण रो,
 त्यांरें लेखें तो तिणनें सामायक न करणी,
 कोइ तो च्यार पाटी विनां कहांइ,
 तिण यारी सरखा सुण छोडी सामाइ,

तिणरी थें न गिणों समाइ ।
 नहीं तो कूडी कुबद चलाइ रे ॥ ७ ॥
 ते पिण विकलां नें समझ न काई ।
 थूंही करे लपराइ रे ॥ ८ ॥
 आतमा सुघ नहीं होय ।
 तो सामायक नहीं नीपजें कोय रे ॥ ९ ॥
 सामायक री देवें अंतराय ।
 तिण सूं कूडी करे वकवाय रे ॥ १० ॥
 जिण भाष्या बारें वरत सोय ।
 किसो किसो वरत नहीं होय रे ॥ ११ ॥
 ए पांचूंइ आश्रव जोय ।
 किसा आश्रव ना त्याग न होय रे ॥ १२ ॥
 ते सर्वथा सावद्य जाण ।
 किसा पाप रा न हुवें पचखाण रे ॥ १३ ॥
 जब बोलें अग्यानी ऊंघा ।
 ते किण विघ बोलें सूंघा रे ॥ १४ ॥
 पाप रो क्यांसूं होसी समाइ ।
 एक समों न करणो परमाइ रे ॥ १५ ॥
 च्यार पाटी तो गुणी न दीसैं ।
 इम कहां छे श्री जगदीसैं रे ॥ १६ ॥
 पछें लोगस कहां तिण ठाम ।
 तो उ जाय करे घर काम रे ॥ १७ ॥
 समाइ कर बेठो एक ठाम ।
 तो उ जाय न करे घर काम रे ॥ १८ ॥
 समा वहें असंघज कालो ।
 त्यांमें पाप आवें दगचालो रे ॥ १९ ॥
 हिंसादिक नाला करे प्रवेस ।
 जीव रें लागे एक प्रवेस रे ॥ २० ॥
 ते हुवो समाइ नें तयार ।
 उपनें पाटी न आवें च्यार रे ॥ २१ ॥
 सामायक करे हरषत होयो ।
 तिणनें ते यां जाबक बोयो रे ॥ २२ ॥

च्यार पाटी विना जो न हुवें सामाड,
 तो इण लेखें तो च्यार पाटी कहां विण,
 च्यार पाटी कहां विण दस वरत न सरघो,
 ओ तो अपछादे' ने उधी सुभी,
 इरीयावही तसोतरी काउसग,
 त्याने कहां विनां सामाड न सरघें,
 लोगस ने नमोत्थुण त्यामे,
 त्यानें कह्या विण सामाड न सरघें,
 यानें मोह मिथ्यात नें उसभ उदे सू,
 वले प्रबल राग नें घेष उदें छें,
 बाबल छुटी घर मे आवे कजोडो,
 त्यामें केई चतुर करें थोडा में,
 केई घर मासूं काढे कजोडो,
 पछें कजोडो' वुहारे करें भेलो,
 केई किवाड जड्यां विण बुहारो देवें,
 बुहारो देवें पिण कचरो न रहे आवतो,
 ज्यू जीव रूपीया घर मे कर्म कजोडो,
 त्यामे केइ चतुर चतुराई करें तो,
 घर जिम तालाब नें रीतो करणो,
 माहिलो पांणी मोरीयादिक सू काढे,
 जीव रूपीयो तलाब छें तिणरें,
 पछें तपसा करे ने कर्म खपावें,
 ए उतराघेन रें तीसमे अवेने,
 ज्यू आश्रव रुवे च्यार पाटी कह्या विण,
 सवर निरजरा गुण छे दोनूँड,
 च्यार पाटी कहां विण समाड न सरघें,
 सभायक उथापण ने मूढ मिथ्याती,
 पिण जिण मारग ओल्लखीयो छे त्यारे,
 च्यार पाटी ने काउसग कीया विण,
 त्यारी खोटी सरघा ओल्लखावण काजें,
 सवत अठारें ने वरष पचासैं,
 ते सुण सुण ने उत्तम नरनारी,

आ सरघा घारे वेंठो कोइ ।
 वरत न हुवें बारोंद रे ॥ २३ ॥
 नही सरघो सामाड नें पोसो ।
 ओ तो कर्म तणो छे दोषो रे ॥ २४ ॥
 ए तो पडिकमणा री पाटी ।
 त्यांरी अकल कर्म सू दाटी रे ॥ २५ ॥
 अरिहंत रा गुणग्राम ।
 ते तो यूंही बके बेफाम रे ॥ २६ ॥
 संवली तो मूल न सुमें ।
 तिणसूं दिन दिन इधिक अलुमें रे ॥ २७ ॥
 ते घर सुघ किण विघ थायो ।
 विकलां सू सुघ कीयो न जायो रे ॥ २८ ॥
 जब पेहलां जडे आडा किवाडो ।
 पछे न्हाख दे घर रे बारो रे ॥ २९ ॥
 ते कचरो उड उड पाछो आवे ।
 ते घर सुघ किम थावें रे ॥ ३० ॥
 समें समें निरंतर आवे ।
 जीव रूपीयो घर सुघ थावें रे ॥ ३१ ॥
 जब तो नाला रुंधणा पेंहला ।
 जब तालाव खाली हुवेला रे ॥ ३२ ॥
 पेंहला आश्रव नाला रुंध ।
 जब निरमल हुवें जीव सुघ रे ॥ ३३ ॥
 पेहला तो आश्रव रुंधवा चाल्या ।
 तिणमेंइ घोचा कुपातरा घाल्या रे ॥ ३४ ॥
 पेला पछे कीयां नही दोष ।
 आ उधी सरघा छे फोक रे ॥ ३५ ॥
 कूडा कुहेत लगावे अनेक ।
 थारीं वात न माने एक रे ॥ ३६ ॥
 नही सरघे छे मूढ समाड ।
 जोड कीधी सिरियारी मांहि रे ॥ ३७ ॥
 आसाड सुद बीज नें रिववारो ।
 कोइ संका म राखो लगारो रे ॥ ३८ ॥



ढाल : ६

दुहा

सासण श्री विरघमान रों, ग्यांनादिक गुण भंडार ।
साध साधवी श्रावक श्रावका, अे तीरथ कहाा जिण च्यार ॥ १ ॥
सर्व विरत धर्म साध रो, देस विरत श्रावक धर्म जाण ।
ए दोनूइ धर्म छें निरमला, समदिष्टीयां लीया छे पिच्छाण ॥ २ ॥
बीस भेद कहाा संवर तणा, बारां भेदां निरजरा जाण ।
संवर निरजरा में श्रीजिण आगन्या, तिणसूं जीव पोंहचें निरवाण ॥ ३ ॥
साध श्रावक रा धर्म में, हिंसादिक नहीं तिलमात ।
ओ निरवद्य धर्म परूपीयो, चोवीसमें जगनाथ ॥ ४ ॥
इण दुषम आरें पांचमें, गुण विण वधीयो भेष ।
ते भिष्ट छें सरघा आचार में, अरू बरू लो देख ॥ ५ ॥
ते पिण साधु बाजें छें लोक में, भूला अग्यांनी भर्म ।
हिंसा भूठ चोरी अबंभ परिग्रह, यामें कहें छें धर्म ॥ ६ ॥
हिंसा भूठ चोरी अबंभ परिग्रहो, यामें जिण कहाो एकंत पाप ।
त्यामें धर्म परूप्यों अनायी, श्री जिण वचन उथाप ॥ ७ ॥
ते चोरें कहितां तो लाजा मरें, वले कांम पड्यां फिर जाय ।
ते सरघा कहें छें किण विषें, ते सुणजों चित ल्याय ॥ ८ ॥

ढाल

[रे भविष्य जिण आगन्या...]

कहें समदिष्टी नें पाप न लागे, जो उ करे हर कोइ कांम ।
इसडी परूपणा करे अग्यांनी, भूठो ले ले सूतर रो नांम रे ।
कुमत्यां आ सरघा कठा सूं धारी रे, थें कांय करो आतम भारी रे ।
इण सरघा सूं घणी खुवारी* ॥ १ ॥
कहें समदिष्टी सतरें पाप सेवें, त्यांनें पाप रों अंस न लागों ।
इसडी उंधी सरघा परूपें छें त्यांरे, मोटो लागों मिथ्यात रो दागों रे ॥ २ ॥
कहें समदिष्टी देवता नें देवी, भोग भोगवें विवध प्रकार ।
वले कीला करें छें अनेक प्रकारें, त्यांनें पाप न कहाो लिगार रे ॥ ३ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

सक्र इन्द्र कोणक री भीड आए ने,
 एक कोड असी लाख मानव मूंआ,
 काली कुमरादिक दसोइ भायां ने,
 थे चेडा राजा ने पाप लागो नही जाणों,
 भरतादिक चक्रवत हुआ समदिष्टी,
 वले अनेक अस्त्रीयां सूं भोग भोगवीया,
 सकडाल पुतर थो वीर नो श्रावक,
 थें तिणमेंई पाप न सरघो रे विकलां,
 वीर तणो श्रावक आणंद हुंतो तिण,
 तिणनें खेती रो पाप लागो नही सरघे,
 समदिष्टी श्रावक घर मांहे बेंठा,
 त्यानें आरभ कीयां रो पाप न जाणें,
 त्यानें चोडें प्रव्न पूछ्यां लाजां मरें जब,
 कूड कपट करे निज सरघा ढांकण नें,
 दरवे पाप तो पाप छे नाही,
 दरव तीथंकर ते तीथंकर नाही,
 दरवे साध ने दरवे तीथंकर,
 ज्यू दरवे पाप कहिवा ने कहीजे,
 त्या विकला ने वले पृछा कीजे,
 तो थे दोनूंइ पाप रा जूआ जूआ फल,
 भावे पाप तणा फल कडवा बतावो,
 ए विरुध वात बताया लोकां मे,
 दरवे नें भावे दोय बतावो,
 जब तो दरव भाव एक कह्या थें,
 वा भूठी वकरोल करे लोकां में,
 दरवे ने भाव रो नांम लेइ नें,
 समदिष्टी ने पाप लागो न सरघो,
 थे तो हीयाफूट गधा रा साथी,
 थारी अंतरंग मे सरघा उघी,
 समदिष्टी भोग भोगवे त्यानें,
 सतरे पाप सेवे समदिष्टी तिणमे,
 वले पुन तणा थाट वधीया जाणो,

दोय दोय सगराम कीघा भारी ।
 इंध्रा ने पाप न कहो लिगारी रे ॥ ४ ॥
 चेडे माख्या एकेके बाण ।
 तो थे पूरा छो मूढ अयांण रे ॥ ५ ॥
 राज कीघो छु षंड रो आपो ।
 त्यानें मूल न सरघो थे पापो रे ॥ ६ ॥
 तिण घाल्या सइकडां निहाव ।
 थें पको कीघो बुडण रो उपाव रे ॥ ७ ॥
 पांचसो हलवा खेती कीघी ।
 तिण नरक तणी नीव दीघी रे ॥ ८ ॥
 त्यां आरंभ कीघा अनेक ।
 ते बूडें छें विनां ववेक रे ॥ ९ ॥
 दरवे पाप लागो बतावे ।
 ज्यूं त्यू कर नें पार होय जावें रे ॥ १० ॥
 दरवे साध ते साधु नाही ।
 विचार देखो मन मांही रे ॥ ११ ॥
 त्याने गिणती मे गिणीया नांही ।
 तिण सूं दुख उपजे नही काई रे ॥ १२ ॥
 पाप कहो थे दरव ने भावो ।
 जयातथ कहि बतावो रे ॥ १३ ॥
 दरवे पाप रा फल कहो मीठा ।
 परोला हाथा सूं फीटा रे ॥ १४ ॥
 जो दोया रा फल कडवा बतावो ।
 दोय कह्या किण न्यावो रे ॥ १५ ॥
 भोलां नें काय भरमावो ।
 गोला कांय चलावो रे ॥ १६ ॥
 पाप लागो कहो किण लेखे ।
 निज सरघा साहो क्यू नही देखे रे ॥ १७ ॥
 जाबक खोटी जवून ।
 सरघो छो निरजरा पुन रे ॥ १८ ॥
 थे जाणो छो कटता कर्म ।
 थारे मूदे तो ओ तत धर्म रे ॥ १९ ॥

समदिष्टी श्रावक र इण विघ, नीपनों जाणो छो धर्म ।
 काम भोग तणी अभिलाषा हुवें जब, भोग भोगवे नें तोडें कर्म रे ॥ २० ॥
 समदिष्टी आरंभ करें अनेक प्रकारें, खेती आदि दे विणज व्यापार ।
 इण किरतब में निरजरा पुन जाणें, थारी सरघा नें तीन धिकार रे ॥ २१ ॥
 केई समदिष्टी तो घर हाट करावें, करें छ काय संधार ।
 तिणमेंइ पाप न जाणों रे कुमत्यां, थें बुड गया काली धार रे ॥ २२ ॥
 समदिष्टी श्रावक रे काम पडें तो, करें संगराम अनेक ।
 तिणमेंइ थें धर्म ने पुन जाणों, थें बुडों छो विनां ववेक रे ॥ २३ ॥
 केई समदिष्टी खाएं चुगली नें चाडी, पेंला रों घर देवें गमाई ।
 तिणमें धर्म जाणों पिण पाप न जाणों, आ पूरी थारी विकलाइ रे ॥ २४ ॥
 केई समदिष्टी करें सिनांन सपाडा, रंगा चंगा रहें नित न्हाइ ।
 त्यांनं पिण पाप लागो नहीं सरघो, थारी अकल गइ दपटाइ रे ॥ २५ ॥
 श्रावक समदिष्टी मइथुन सेवें, ते भोग तणी छें लील ।
 श्रावक रा मइथुन नेक्कें कुसील, तिण कुसील नें जाणों सुसील रे ॥ २६ ॥
 हिवें कहि कहि नें कितरोंक कहूं, समदिष्टी करें अनेक आरंभो ।
 तिणनें पाप लागो नहीं सरघो, थारी सरघा रो बडो अचंभो रे ॥ २७ ॥
 समदिष्टी नें पाप लागो नहीं सरघो, आ तो उठी जठाथी भूठी ।
 प्रतष पाप कीयां में पाप न जाणों, थारी हीया निलाड री फूटी ॥ २८ ॥
 समदिष्टी श्रावक नें पाप लागो न सरघो, आ सरघा कठा सूं काडी ।
 आगम उथाप नें अंवला पडीया, मोष तणी वरत वाडी रे ॥ २९ ॥
 श्रावक नें सुसीलीयो कह्यो छे, तिणरो थें भेद न जाणो ।
 थें कुसील ने सुसील जाणों नें, पींपल बांधी मूर्ख जिम तांणो रे ॥ ३० ॥
 इविरती समदिष्टी अघर्मी, श्रावक धर्मीअघर्मी दोनूंइ ।
 श्रावक नें एकंत धर्मी सरघे, ते गया जमारो खोइ रे ॥ ३१ ॥
 इविरत रो पाप लागें श्रावक नें, किरतब करें जिसों पाप होइ ।
 श्रावक रें पाप लागो न सरघे, ते चाल्या जनम विगोइ रे ॥ ३२ ॥
 उवाइ सुयगडाअंग मांहें, श्रावक धर्मीअघर्मी चाल्यो ।
 श्रावक नें एकलो धर्मी कहेनं, थें घोचो अणहंतो घाल्यो रे ॥ ३३ ॥
 श्रावक नें पाप लागो न कहे मिथ्याती, त्यांनं ओलखावण ताहि ।
 भव जीवां नें समभावण काजें, जोड कीधी गुदवच रे मांहि रे ॥ ३४ ॥
 संबत अठारें नें वरस एकावनें, वेंसाष सुदि इग्यारस वार बुध ।
 ते सुण सुण नें उत्तम नर-नारी, सरघा धार राखो सुष रे ॥ ३५ ॥

ढलल : १०

दुहल

केई भारीकर्म जीवडल, त्यलरल घट ढलहे घोर अग्यलन ।
 त्यलरल डोल्यलं री सडडत्यलनें नही, ते जीव वलकल सडलन ॥ १ ॥
 नलरकी देवतल डे डेद जीव रल, तीन तीन कहे छे अयलंण ।
 इग्यलरडु तेरडुं नें चवदडु, इण लेखें वलकल सडलण ॥ २ ॥
 ते सूतर डलचें छे जलण डलषीयल, त्यलंरी रहस न जलणे डूड ।
 ते तलण करें छें डूठल थकलं, डलण लीघी न छुडे रुड ॥ ३ ॥
 त्यलरी डीढ्यलं खडुी डूठ डोलतलं, डलण कलण ही न कलढ्यु नलकल ।
 ववेक वलकल सुध डुध वलनलं, डूठी करे छे डडखल ॥ ॡ ॥
 कदल अजलंणडणे डूठ डुलीयो, डछेइ नलरणु करे सुयो ।
 ते आलुणें सुध हुवु, रुड रलखे ते डूडल सुयो ॥ ॡ ॥
 नलरकी नें सर्व देवतल डडु, दुयो डेद कहुल जलणरलय ।
 तेरडु ने वले चवदडु, तलणडे सकल न जलंणु कलय ॥ ६ ॥
 तीन डेद कहे छे तेहुनें, डूठल घललीजे एड ।
 त्यलंरल डलव डेद डरगट करूं, ते सुणजु घर डेड ॥ ७ ॥

ढलल

[आ अणुकडुडल जलण अलगुन्यल डे]

जीव रल तीन डेद कहे देवतल डे, ए डलत उठी छे तठलथी डूठी ।
 इण डुल रु नलरणु न करे छे त्यलंरी, हीयल ने नललड री दुनुंइ डूटी ।
 इण डूठलडुल रु नलरणु कीजु* ॥ १ ॥
 इग्यलरडु डेद जीव रें नलश्चे नलडुंसक, देवतल नही छे नलश्चे नलडुंसक तलड ।
 देवतल डे इग्यलरडु डेद कहुल तलण, देवतल ने नलडुंसक कहु देयल आड ॥ २ ॥
 देवतल ने तु नलडुंसक कहुतल ललजे, तु इग्यलरडु डेद कहे कलण लेखें ।
 त्यलरी अडडतर आख हीयल री डूटी, ते सूतर सलहुल डूल न देखें ॥ ३ ॥
 इग्यलरडु डेद कहे डलण न कहे नलडुंसक, एहुवु छे डेष घलख्यलं रे अंघलरु ।
 वले डलडडत नलंड घरलवे डूख, त्यल वलकल ने वलकल डलल्यल डरवलरु ॥ ॡ ॥
 इतरु डलण सडड डडे नही त्यलनें, सलची सरघल कलण वलध आवे ।
 सरघल तु डरड दुलड कही छे, एहुवल वलकल ने कुण सडडलवे ॥ ॡ ॥

* यह आँकड़ी प्रत्येक गलथल के अन्त डें है ।

वले देवता नें असनी कहें छें, इग्यारमों भेद जीव रों त्यामें बतावें ।
 त्यांरी अभितर आंख हीया री फूटी, त्यां ववेक रा विकलां नें कुण समभावें ॥ ६ ॥
 असनी पचिद्री रो अप्रजापतो छें, तिणमें जीव रो भेद इग्यारमों जाणों ।
 परजाय बाधे तो बारमो भेद होसी, ते चवदमो किहां थी होसी रे अयाणों ॥ ७ ॥
 इग्यारमों भेद परजाय बांध्यां बारमों हुवे, चवदमों हुवें तो कदेय म जाणो ।
 इग्यारमो परजाय बांध्यां चवदमों कहें छें, ते तो जिण मारग रा निश्चें अयाणों ॥ ८ ॥
 पेंहला भेद परजाय बांध्यां बीजों हुवें, तीजो भेद बांध्यां चोथो होय ।
 पांचमो भेद परजाय बांध्यां छठो होवें, सातमो परजाय बांध्यां आठमों जोय ॥ ९ ॥
 नवमो भेद परजाय बांध्यां दसमों हुवे छे, इग्यारमों परजाय बांध्यां बारमों जाणों ।
 इग्यारमो परजाय बांध्यां थी न हुवे चवदमों, चवदमों भेद कहे ते विकल समाणों ॥ १० ॥
 तेरमों जीव रो भेद परजाय बांधें ते, जीव तगो भेद चवदमों जाणो ।
 पिण इग्यारमां भेद रों न हुवे चवदमों, समभो रे समभो थें मूढ अयाणों ॥ ११ ॥
 इग्यारमों भेद कहें नारकी देवतां में, त्यांनैं एकंत भूठाबोला जाणों ।
 इग्यारमां सूं चवदमों हुवो कहें छें, ते यूंही बूढें छें कर कर ताणों ॥ १२ ॥
 पांचसो नें तेसठ जीव रा भेद, पोतें सीखे नें ओरां नें पिण सीखावें ।
 जब तो नारकी नें सर्व देवतां में, जीव रा दोय दोय भेद बतावें ॥ १३ ॥
 कठेंक तो नारकी देवतां में, जीव रा तीन भेद कहें छें ताय ।
 कठेंक त्यांमें कहें दोय भेद छें, त्यांरा बोल्यां री त्यांनैंइ समझन कांय ॥ १४ ॥
 ए पीढीयां खप भूठ बोलता आवें, पिण इण बोल रो किण ही न काढ्यो निकालो ।
 जेसा हुंता तेसा चेला पिण आय मिलीया, अभितर फूटी आडा आया कर्म जालो ॥ १५ ॥
 सातमें आठमें नें दसमें, वले इग्यारमें नें बारमें गुण ठाणें ।
 त्यांरें सुभ जोग नें सुभ लेस्या वरतें छें, त्यांरा माठा जोग अग्यानी जाणे ॥ १६ ॥
 त्यांने पिण भूठाबोला जाणें अग्यानी, मिश्र भाषा पिण बोलता जाणें छें यांनैं ।
 वले भूठो मन परवरतावता जाणें, मिश्र मन परवरतावता जाणें छें त्यांने ॥ १७ ॥
 ज्यांरा माठा जोग वरते छें ते तो, ते अपरमादी निश्चेइ न थाय ।
 अपरमादी साध नें भूठाबोला कहें छे, ते तो निश्चेइ चोडें भूला जाय ॥ १८ ॥
 ज्या तय चालें जथाख्यात चारितीयो, तिणनें पाप रो अंस न लागें ताहि ।
 त्यांनैं पिण भूठा बोलता कहें अग्यानी, ओ पिण अंधारो विकलां रे माहि ॥ १९ ॥
 इग्यारमें बारमें गुणठाणें त्यांरें, जथाख्यात चारित श्रीकारो ।
 भूठ बोलें छें त्यांनैं तो पाप लागें छे, पिण यांनैं तो पाप न लागें लिमारो ॥ २० ॥
 भूठ बोले कहें जथाख्यात चारितीयो, आ पिण विकलां रे भोल्प मोटी ।
 भूठ बोलें पिण पाप न लागें, आ पिण सरधा छे जाबक खोटी ॥ २१ ॥

आरभ री किरिया लागे छठे गुणठाणे,
उसभ जोग न वरते जब अणारंभी छे,
सातमा गुणठाणा थी अणारंभी छे,
ज्यू ज्यू आगले गुणठाणे चढे जब,
अप्रमादी ने अणारभा कह्या छे,
सका हुवे तो भगोती सूतर माहे जोवो,
सातमां सू ले ने बारमे गुणठाणे,
त्याने भूठाबोला कहे मूढ मिथ्याती,
त्यारा श्रावक त्यारे बदले भूठ बोले,
ते पिण बूढ गया त्यारे केडे,
बले अनेक भूठ त्यारे बासठीया में,
जीव रा तीन भेद कहे नारकी मे,
दस भवण पती ने वाण मतरा मे,
जीव रा तीन तीन भेद बतावे,
अवेदी मे जोग इग्यारे वतावे,
ओ पिण भूठ बोले छे अग्यांनी,
सुषम संपराय ने जयाख्यात चारित मे,
ओ पिण निरणों कीया विण अग्यानी,
तीन तीन भेद कहे नारकी देवता मे,
त्यारी पिंडताइ माहे पड गइ धूर,
देवता ने निपुंसक कहे छे त्यांने,
पोते निपुंसक कहे तिणरी ठीक नही छे,
देवता माहे तो कहे छे मूढ मिथ्याती,
जब देवता ने कह्या निश्चें निपुंसक,
देवता तो निपुंसक निश्चे नही छे,
देवता ने असनी ने निपुंसक कहे छे,
सतावन भेद संवर रा कहे छे,
ते पीढीया खप चालीया जाए छे,
बावीस परीसा पाच सुमत तीन गुप्त,
पाच चारित घाल्यां ए बोल सतावन,
बावीस परीसा ते जीव री सक्त छें,
चोखा परिणाम ते निरजर रा करणी,

ते तो उसभ जोगां सूं लागे छे ताम ।
आगे सुभ जोग नें सुभ लेस्या परिणाम ॥ २२ ॥
त्यारें तो उसभ जोग वरते नही तांम ।
चढती लेस्या नें ध्यान चढता परिणाम ॥ २३ ॥
त्यारा उसभ जोग तो वरतें छे नाही ।
पेहला सतक रा पेहला उद्देसा माही ॥ २४ ॥
त्यारा जोग कदे वरते नही भूढ ।
ते तो पीढीयां खप जाए छे बूढा ॥ २५ ॥
समभ पढ्यां विण करें छें ताणो ।
न्याय निरणा विण बोलें छें विकल समाणो ॥ २६ ॥
ते साभलजो भवीषण चित ल्यायो ।
तीन भेद कहे बले देवता माह्यो ॥ २७ ॥
बले कहे पेंहली नरक रें माह्यो ।
ओ पिण बोले छे मूसावायो ॥ २८ ॥
अकसाइ मे जोग नव वतावें ।
दर पीढ्यां भूठ बोलता आवे ॥ २९ ॥
यामे पिण नव नव जोग बतावें ।
गालां रा गोला मुख सू चलवें ॥ ३० ॥
सूतर भगोती देवे छे साख ।
यूही अलाल भाखे छें अन्हाख ॥ ३१ ॥
एकत भूठा बोला जाणें ।
पीपल बाधी मूख ज्यू ताणें ॥ ३२ ॥
जीव तणो इग्यारमों भेद ।
इग्यारमो भेद असनी निपुंसक वेद ॥ ३३ ॥
बले असनी पिण नही देवता तांम ।
ते तो निश्चेइ भूठ बोले वेफाम ॥ ३४ ॥
त्यामे पिण खोटा छे बोल अनेक ।
ते पिण विकला रे नही छे ववेक ॥ ३५ ॥
दस विघ जती घर्म ने भावना वारे ।
यां सारां नें सवर कहे विना विचारे ॥ ३६ ॥
विचार खमे ते चोखा परिणाम ।
त्यानें संवर कहे ते भूठाबोला आम ॥ ३७ ॥

पांच सुमत नें संवर कहें छें अग्यानी,
 पांच सुमत तो छें निश्चें निरजरा री करणी,
 दस विघ जती धर्म जिणेसर भाष्यो,
 दसूँइ बोलां नें संवर सरघे' छें,
 बारें भावना निरजरा री करणी छे निश्चें,
 त्यांनें संवर री ओलखणा नाहीं,
 संवर रा बोलां नें निरजरा में घालें,
 त्यांरी अभितर आंख हीया री फूटी,
 कर्म ग्रंथ सेतम्बर दिगम्बरा कीघा,
 ज्यां जिण मारग ओलखीयों होसी,
 कर्म ग्रंथ माहें कर्मा री प्रकृत,
 तिण माहें पिण छें भूठ अनेक,
 तिरजंच नें मिनष तणों आउखो,
 तिणमें असनी मिनष तणों आउखों,
 पांच थावर सुषम अपरयापता छें,
 यांरो पिण छें तिरयंच रो आउखो,
 पांच थावर नें वले तीन विकलेंद्री,
 आ पिण पाप री प्रकृत उघाडी,
 इत्यादिक छें तिरजंच रो आउखों,
 त्यांमें केकां रों आउखों पाप री प्रकृत,
 च्यारें प्रकारें बांधें तिरजंच रो आउखों,
 त्यांसू तो पाप री प्रकृत बंधे छें,
 तिरजंच जुगालीयां रो सुभ आउखों,
 अन तिरजंच रो आउखों पाप री प्रकृत,
 माठा माठा अधवसाय सू बंधे आउखों,
 संका हूवें तो भगोती सूतर में जोवों,
 देवता नें नपुंसक कहे त्यांनें ओलखावण,
 संवत अठारे वरस तेपने,

ओ पिण भूठ उघाडो बोले ।
 आ पिण आंख हीया न खोले ॥ ३८ ॥
 त्यांमें पिणकेई बोल निरजरा राजाणो ।
 त्यांनें पिण जाणजों मूढ अयाणों ॥ ३९ ॥
 त्यांनें पिण संवर सरघें छें मूढ मिध्याती ।
 त्यां विकलां रें निरणा तणी नहीं बाती ॥ ४० ॥
 निरजरा रा बोलां नें संवर में घालें ।
 ते मारग छोडी नें उजड चालें ॥ ४१ ॥
 तिण माहें बोल घणा छें विरुध ।
 ते विरुध टाले नें कर लेसी सुध ॥ ४२ ॥
 पुन पाप री प्रकृत न्यारी ठहराई ।
 ते पिण विकलां नें खबर न काई ॥ ४३ ॥
 तिणनें कहें छें एकंत पुन ।
 आ तो पाप तणी प्रकृत छें जबून ॥ ४४ ॥
 त्यांरा पिण आउखा नें कहे छें पुन ।
 पाप री प्रकृत जाबक जबून ॥ ४५ ॥
 त्यां अप्रज्यापता रो आउखों जबून ।
 सूतर में कठेय न दीसैं पुन ॥ ४६ ॥
 विवध प्रकार कह्यो जिणराय ।
 केकां रों आउखों दीसैं पुन रे मांय ॥ ४७ ॥
 ते च्यारूँइ बोल सावद्य नहीं रूडा ।
 त्यांरों आउखों पुन कहे ते कूडा ॥ ४८ ॥
 ते तो पुन री प्रकृत दीसती जाणों ।
 ते सूतर सू बुधवंत करसी पिछाणों ॥ ४९ ॥
 ते आउखो पाप री प्रकृत जाणों ।
 चोवीसमें सतक मांसू पिछाणों ॥ ५० ॥
 जोड कीघी छे खेरवा शहर मभारो ।
 आसोज विद अमावस नें बुधवारो ॥ ५१ ॥

ढलल : ११

दुहा

केई साधु नाम धरावतां, पिण हीया फूट ढोर समान ।
 त्यांरीबोल्यां री समझ त्यानें नही, त्यांरा घटमाहे घोर अग्यांन ॥ १ ॥ -
 कहे साधां ने नही राखणों, रात बासी रोगान ।
 पिण तेहीज रोगांन राखें रात रो, यूंही करें छे अभिमान ॥ २ ॥
 रात बासी राखे छें रोगान ने, पूछ्यां कहे म्हे राखां नांहि ।
 कपट सहीत भूठ बोलता, ते पिण समझे नही मन मांहि ॥ ३ ॥
 रोगांन वासी राखे रात रों, वले बोले भूठ मिथ्यात ।
 ते जथातथ परगट कर्हं, ते सुणजो विवरा सुध वात ॥ ४ ॥

ढलल

[जिण आगन्या सुखदायी]

टोपसी मे रोगांन वेहरे आंण्यो, पातरा रें देवें लगाय ।
 ते रोगांन रात रों नीलो रहे छे, ते निश्चें रात राख्यों ताय रे ।
 भवीयण बोलवो वचन विचारी, थे कांय करो आतम भारी रे ।
 भवियण छोड दो रुढ हीया री* ॥ १ ॥

पातरा मे राखो भावें टोपसी मे राखो, उहीज रोगांन राख्यो रात ।
 पातरा मे राखों ने टोपसी में न राखो, आ किसा सूतर री बात रे ॥ भ०२ ॥
 पातरा रे रोगांन जाडों लगाने, बीजे दिन लूही लूही रोगांन ।
 ते रोगांन ओर ठामां रे लगाने, एहवा काय करो तोफांन रे ॥ ३ ॥
 लोट नें पातरा रे रोगांन लगाने, सुकतां लागें दिन दाय च्यार ।
 ज्या लगतो राते नीलो रोगांन राख्यो, इणमे तो नही सका लिगार रे ॥ ४ ॥
 थें रात रो रोगान राखता जावों, वले कहो म्हे राखां नांहि ।
 ए साप्रत भूठ उघाडो बोली, हीया फूटा ने खबर न काई रे ॥ ५ ॥
 रोगान सूको पातरा रे राखो, घणा बरसां लग तांइ ।
 सूका रोगान ने पिण रोगांन कहीजे, तिणमें फेर न दीसैं काई रे ॥ ६ ॥
 रोगांन वासी राखें छे तिणनें, न गिणें ग्रहस्थ नें साग मांहि ।
 वले दसवीकालक री गाथा बोलाए, त्यानें जावक दीया उडाई रे ॥ ७ ॥
 रोगांन ने वासी राखणो निषेचे, ते तो गिणें छे आहार रे मांहि ।
 तिण लेखें तो नीलों सूको रोगांन, लागो न राखणो काई रे ॥ ८ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

रोगान न आहार गिणी पातरा रे, लागो राखें किण लेखें ।
 अभितर आंख हीया री फूटी, लागों अरु वरु नहीं देखें रे ॥ ९ ॥
 जब कहे नीलो रोगान छे तिणनें, गिणां छां आहार रे मांहीं ।
 सूको रोगान पातरा रे लागों, तिणनें आहार में गिणे नांहीं रे ॥ १० ॥
 तिण लेखें तो नीली चासणीयादिक, राखणी पातरा रे लगाय ।
 नीली छेत्यां लग आहार में गिणणी, सूकां पछे नहीं आहार रे मांय रे ॥ ११ ॥
 इत्याधिक वस्तु अनेक नीली ते, लोट नें पातरा रे लगाय ।
 त्यानें पिण आहार मांहीं जाबक नहीं गिणणी, जब तो वासी राखणा छे ताय रे ॥ १२ ॥
 सूकां नें नीला रो नांम लेइ नें, भोला लोकां नें भरमावें ।
 पिण सूकां रोगान ने नीलों रोगान दोनूंड, वासी राखता जावें रे ॥ १३ ॥
 रोगान नें आहार मांहीं गिणें नें, वासी राखता पिण जावें ।
 इसरा हीयाफूटेरा मांनव, त्यानें साधु किम समभावें रे ॥ १४ ॥
 वले रोगान वासी राखें छें त्यांसूं, भेलो करे छे आहार ।
 त्यांरा बोल्या री परतीत मूर्ख करसी, त्यारे अकल में घणों अंधारो रे ॥ १५ ॥
 रोगान ने वासी राखें छें त्यांसूं, प्राच्छित दीयां विण कीयों संभोग ।
 त्यारें बोलीयें बंधतो मूल न दीखें, त्यारें लागों जोग नें रोग रे ॥ १६ ॥
 त्यामें केई तों कूड नें कपट करेनें, वासी राखें छें रोगान ।
 असेक रोगान में भेल घालें, इण विघ वासी राखें छें ताम रे ॥ १७ ॥
 वले रोगान नें वासी राखें इण विघ, रोगान सहीत ठाम नें ल्यावें ।
 आण मेलें आप रा थानक में, लोट नें पातरां रे लगावें ॥ १८ ॥
 अनेक दिन लग रोगान रो ठाम, वासी राखें थानक मांय ।
 लोट नें पातरां रे संपूरण लगाए, पाछो सूपें घणी नें जाय रे ॥ १९ ॥
 जो रोगान नें आहार मांहीं गिणें तों, इण विघ राते राखणो नहीं ।
 इण विघ आहार थानक मांहीं राख्यां, ते तो नहीं साघां री पांत मांहीं ॥ २० ॥
 इण लेखें तो घ्रतादिक रा ठाम, आण मेलणां थानक मांय ।
 खातां खातां बाकी रह्यो घ्रतादिक, ग्रहस्थ नें पाछो सूपणों जाय ॥ २१ ॥
 रोगान नें आहार गिण इण विघ राखें, इण विघ राखणा च्यार आहार ।
 रोगान ज्यू आहार तणी खखवाली, करणी दिन रात मभार ॥ २२ ॥
 रोगान नें आहार मांहीं गिणें छें, अकल तिणां री उंची ।
 आहार गिण नें लागों राखें पातरा रे, भिष्ट हुइ छे त्यांरी बुधी ॥ २३ ॥
 आहार तो लेप मातर लागों न राखें, जोवो दसवीकालक मांय ।
 रोगान नें आहार गिणे नें, लेप लगाय राखें किण न्याय रे ॥ २४ ॥

कहि कहि नें कितरो एक कहूं, आहार माहे गिणें रोगांन ।
 ते सूनें चित्त वकें दिन राते, त्यांरा घट माहे घोर अग्यांन रे ॥ २५ ॥
 रोगांन राखणों निषेधें तिण उपर, जोड कीषी मेढता मभार ।
 संवत अठारे वरस चोपनें, वेंसाखी अमावस सोमवार रे ॥ २६ ॥

ढाल : १२

दुहा

आजुणा काल आरें पांच में, तीथंकर तों निश्चें नहीं होय ।
सुरत केवली पिण दीसैं नहीं, आगम वीहारी पिण नही कोय ॥ १ ॥
घणा भारीकर्मा जीव उपनां, इण पांचमां आरा मांहिं ।
त्यारें न्याय निरणा री बातां नहीं, पख भाल रह्या छे ताहि ॥ २ ॥
त्यांनैं समकत सरघा तो परम दोहिली, ते किण विघ करें तहदीक ।
मोटो परव पजूसण सवंच्छरी, तिणरी पिण नही ठीक ॥ ३ ॥
केई करें सावण में सवंच्छरी, केई करें भादरवा मांय ।
ओ गच्छवास्यां रें पिण बेदो पड्यो, त्यांरो कुण निवेडें न्याय ॥ ४ ॥
त्यां पाछें लुंका नीकल्या, त्यांरि पिण वेदो पडगयो ताहि ।
केई करें सावण में सवंच्छरी, केई करें भादरवा मांहिं ॥ ५ ॥
त्यां मांसूं नीकलिया दूंडीया, त्यांरि पिण पडी मांहोमां तांण ।
केई करें सावण में सवंच्छरी, केई करे भादरवे जांण ॥ ६ ॥
गच्छवास्यां रा भगडा मभे, साधु नैं परणों नांहि ।
उवें तों बांधी चाले छें रीत गछ तणी, आप आप तणा गछ मांहिं ॥ ७ ॥
पिण ए साधु नांम घरावता, बाजे लोकां में अणगार ।
ते पिण करें सावण में सवंच्छरी, यांरें पिण घोर अंधार ॥ ८ ॥
न्याय निरणों तो सवंच्छरी तणों, चाल्यो सूतर मांय ।
ते जथातथ परगट करूं, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ९ ॥

ढाल

[३ भवीयण सेवो ३]

सवंच्छरी पडिकमीयां पाछें, सितर दिवस तिहां रहणों ।
ए समवायंग रे सितरमें ठाणें, भगवंत नां ए वेणो रे ।
भवीयण जोवो हिरदे विचारी, छोड दो तांण हीयारी रे ।
भवीयण तांण सूं घणी खुवारी रे* ॥ १ ॥
चोमासी पडिकमीयां पाछें, बीतों छे महीनों नैं दिन बीस ।
जद सवंच्छरी पडिकमणों करणों, इम भाष्यों छें श्री जगदीस रे ॥ २ ॥
बीस दिन ने महीनों सवंच्छरी पेंहलां, सितर दिन दीया पाछिल्ला मेल ।
इण रीतें भगवंते भाष्यों, च्यार महीनां रो मेल रे ॥ ३ ॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

जो सब्छरी पेंहली महीनो बघे तो,
 कदा सब्छरी पाछे इधको महीनो हुवे तो,
 उन्हाला मे इधको महीनो हुवे तो,
 चोमासा मे महीनो बघे तो,
 जो सब्छरी पेहलां इधिक महीनो हुवे,
 जो सब्छरी पाछे महीनों बघें तो,
 ओ तो न्याय उघाडो दीसे,
 थे अंतर हीया मे जोय विमासो,
 कोइ रिष पाचम ने भादरवा महीना री,
 विना विचार्या आप रे छादे,
 त्याने पूछ्यां कहे म्हे चोमासो ठाया थी,
 सब्छरी करां म्हे विना भादरवे,
 गुणचास पचास दिन कहे ने,
 सितर दिन सब्छरी पाछे चाल्या छे,
 गुणचास पचास दिन सूतर मे चाल्या,
 गुणचास थापें सितरां नें उथापे,
 गुणचास पचास री थापनां कर ने,
 प्रतप सूतर रों पाठ उथापे,
 गुणचास पचास दिन काढेने,
 पाछिल्ला सितर दिन काढेने,
 सावण री सब्छरी कीधी तिणने,
 आसोजी पूनम रो कर पडिकमणो,
 यारे लेखे काती मे रहे ते अन्याइ,
 तो यारे लेखे याने कातकी पूनम,
 इधिक महीना रा दिन गिणेने,
 तो महीनो पिण गिणने आसोज महीना रो,
 कातकी पूनम रो चोमासो करे जब,
 इधिक महीना रा दिन सब्छरी कीधी,
 मेद गूंबडों ने मसादिक बघे ते,
 तिणरें बदले नाक कानादिक काटे,
 ज्युं किणहीक वरस में मास बघें जब,
 तिणरे बदले आगो पाछो गलत करे छे,

तिणने तो त्याहीज गलत करणो ।
 तिणने पिण त्यांहीज नही गिणणो रे ॥ ४ ॥
 उन्हाला मे गलत करणो ।
 चोमासा माहे नही गिणणो रे ॥ ५ ॥
 तो तेरे महीने सब्छरी ठवणी ।
 आगली तेरे महीने करणी रे ॥ ६ ॥
 तिणमे संका मूल म आणों ।
 मत करो कूडी तांणो रे ॥ ७ ॥
 सब्छरी दीधी उथापी ।
 सावण माहे सब्छरी थापी रे ॥ ८ ॥
 दिन काढें गुणचास पचास ।
 इणमे दोष नही छे तास रे ॥ ९ ॥
 सब्छरी करे सावण माहि ।
 त्याने जावक दीया उडाय रे ॥ १० ॥
 सितर दिन पिण सूतर मे चाल्या ।
 ए तो घोचा अणहूता घाल्या रे ॥ ११ ॥
 सितर दीना ने दीया उथापी ।
 सावण माहे सब्छरी थापी रे ॥ १२ ॥
 सब्छरी करी सावण मे तांम ।
 त्याने छोड देणो ते गांम रे ॥ १३ ॥
 रहिणो नही तिण गाव मभार ।
 काती विद पडिवा करणो विहार रे ॥ १४ ॥
 अन्हाखी थका न करे निरणो ।
 पच मासी पडिकमणो करणो रे ॥ १५ ॥
 सावण माहे सब्छरी थापी ।
 चोमासी काय उथापी रे ॥ १६ ॥
 इधिक मासो न गिणीयो लिगार ।
 ते महीनो काय घाल्यो विसार रे ॥ १७ ॥
 तिणनें दूर करे छे काटी ।
 तिणरी अकल आडी आइ पाटी रे ॥ १८ ॥
 त्यारो त्याहीज गलत करणो ।
 त्या जावक न कीयो निरणो रे ॥ १९ ॥

असाढी पुनम नें कातकी पुनम, तीजी फागण री पुनम जाणों ।
 यां तीनां मासां विण न हुवें चोमासी, तिणमें संका मूल न आणों रे ॥ २० ॥
 ज्युं भादरवा विण सवंच्छरी न हुवे, तिण माहें पिण संका मत आणों ।
 ज्यां सावर्ण माहें सवंच्छरी कीधी, ते जिण मारग रा अजाणों रे ॥ २१ ॥
 किण ही साहुकार रे पांच पूतर छें, तिणमें च्यार पूतर श्रीकारो ।
 पांचां में दूजों पूतर निपुंसक तिण रों, मंडें नहीं धरवारो रे ॥ २२ ॥
 ओ तो मरत यलत पूरो पड जासी, तिणरों वंस न वधें लिंगार ।
 तिणनें जन्म्यों जठा सूं एसोइ जाण्यों, कदे जाणी नहीं भली वार रे ॥ २३ ॥
 कोइ निपुंसक रो घर मंडावे, ते तो छें विकल समान ।
 तिणरें बदलें ओर नें राखें कवारों, ते जीव छें अगाध अग्यांन रे ॥ २४ ॥
 ज्युं किणही एक चोमासें पांच महीनां हुवेंजब, लूण महीनो वधीयो कहें लोग ।
 तिण लूंड महीना नें निपुंसग जिम जाण, तिणनें थूंहीं गमावणो फोक रे ॥ २५ ॥
 कोइ लूण महीना नें गिणती में गिण नें, सांवण माहें सवंच्छरी थापी ।
 त्यां विनां विमासीयों घोचो घालें, सवंच्छरी भादरवा री उथापी रे ॥ २६ ॥
 कहि कहि नें कितरोएक कहूं, भादरवा विण सवंच्छरी नाहीं ।
 सूतर कथा न्याय निरणों जोए, विचार देखो मन माहीं रे ॥ २७ ॥
 सवंच्छरी ओलखावण काजें, जोड कीधी पाली मफार ।
 संवत अठारें पचावनें वरसें, चोमासा माहें सुघ विचार रे ॥ २८ ॥

ढलल : १३

दुहा

केई भेषघारी भूला फिरे, त्याने जिण घर्म री नही सुघ।
 उंधी उधी करे छे परूपणा, त्यांरी भिष्ट हुइ सुघ बुघ ॥ १ ॥
 साघां दिष्या दीघी चोमासा मभे, कीयो ग्रहस्थ नो अणगार।
 तिण सू भेषघारी बकता फिरें, त्यामे सुघ न हीसे लिंगार ॥ २ ॥
 केई तो कहे चोमासा मभे, साघा नें दिष्या देंगीनांहि।
 दिष्या दीघी त्यांमे दोष छे, एहवो अघारो छे षटमांहि ॥ ३ ॥
 त्यां श्रावक पिण केई विकल थां, त्यां माने लीघी त्यांरी बात।
 त्यांरा गुर नें त्यांरा श्रावक तणों, षट माहे घोर मिथ्यात ॥ ४ ॥
 दिष्या देणी निषेघी चोमासा मभे, ते अघ अग्यानी बाल।
 त्यांमें फोडा पडे ससार में, उतकष्टो अनतो काल ॥ ५ ॥
 दिष्या देणी कही चोमासा मभे, तिणमे सका म जाणो कोय।
 थोडा सा परगट करू, ते सुणजो चितल्याय ॥ ६ ॥

ढलल

[आ अशुकम्पा जिण आगन्या में]

बावीसमा श्री नेम जिणेसर, त्या पिण दिष्या लीघी चोमासा मांहि।
 सावण सुदि चादणी छठि तणे दिन, सहंस पुरप साथे दिष्या लीघी ताहि।
 चोमासा मे दिष्या निसंक सू देणी* ॥ १ ॥
 राजमती दिष्या चोमासा मे लीघी, तीनसो जणीयां दिष्या लीघीं त्यांरी लार।
 तिणनें नेम जिणेसर मुदे थापी, तिण सू छोटी आयां चालीस हजार ॥ २ ॥
 पदम प्रभूनाथ छठा तीथकर, त्यां पिण दिष्या चोमासा में लीघी।
 काती विद तीज रे दिन सहस जणां सू, चोमासे दिष्या लीघी त्यां आछी कीघी ॥ ३ ॥
 अनता तीथकर चोमासा माहे, त्यां पिण दिष्या लीघीं सयमेव।
 वले अनता ने पिण दीख्या दीघी, जेज नही कीघी दिष्या दीघी ततखेव ॥ ४ ॥
 इम कह्या उधा बोले भेषघारी, तीथकर नीं बात क्यांनें चलावो।
 साघा ने चोमासा में दिष्या न देंगी, दिष्या देणी हुवे तो सुतर मे बतावों ॥ ५ ॥
 इणरो जाव कह्यो आचारंग माहें, केवलीये कीघो ते छदमस्थ नें करणो।
 जे केवलीया चोमासा मे दिष्या दीघी, ओ छदमस्थ रों पिण काढीयो निरणों ॥ ६ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है।

केवलीयें कीघो ते छद्मस्थ कीघो, यां तो चोमासा माहें दिष्या लीघी छें, कुमती कदाग्रही साघां रा निंदक, केई भेषधारी भूठा बोला अन्हाखी, उत्तराघेन रे दशमें अधेनें कह्यो जिण, तो चोमासा में दिष्या देणी निषेघी, दिष्या देणी निषेघे चोमासा माहें, तूं चोमासा में दिष्या देणी निषेघे, जो उ सूतर माहें नहीं बतावें, वले घणा लोकां माहें फिट फिट कीजें, घणा टोलां तणा साघ बाजें लोकां में, त्यां माहें तो दोष न सरघें लिगार, चोमासा माहें दिष्या देवे छें त्यांनें, सुघ साघ चोमासा में दिष्या दीघी, वले कहें दिष्या दीघी तिण गांम नें ठाम, ओ पिण भूठ बोलें भेषधारी, चोमासा माहें दिष्या देणी निषेघें, तिण जिण धर्म नहीं ओलखीयों आवें, चोमासा माहें दिष्या देणी निषेघी, उण उंघी सरघा तणें परतापें, चोमासा में दिष्या देणी निषेघें, त्यांमें दुख में दुख संसार में पडसी, चोमासा में दिष्या देणी निषेघें, ते जिण मारग रा अजाण अग्यांनी, चोमासा में दिष्या देणी निषेघें, त्यां विकला नें साघ सरघे नें बूडा, चोमासा में दिष्या देणी निषेघें, ते पिडत बाजें छें विकल लोकां में, चोमासा में दिष्या देणी निषेघे, त्यां तीन काल रा तीथंकरां नें, चोमासा माहें दिष्या देणी निषेघें, सुनें चित सूतर बाचें अग्यांनी,

यांनें पाप कठाथी लागो रे पापी । थें चोमासे में दिष्या देणी कांय उथापी ॥ ७ ॥ साघां रें आल देता सके नही पापी । त्यां चोमासे में दिष्या देणी उथापी ॥ ८ ॥ एक समों पिण नहीं करणो परमाद । त्यां विकलां रें किण विघ होसी समाद ॥ ९ ॥ तिण भूठा बोला नें पूछीजें ताय । ते सूतर माहें तूं काढ बताय ॥ १० ॥ तिण मूरख नें घालीजें कूरो । समभू लोकां में करणो घणों फितूरो ॥ ११ ॥ ते तो चोमासा में दिष्या देवें । सुघ साघ रों नाम अणहंतो लेवे ॥ १२ ॥ साघ सरघे नें मुख सूं सरावें । तिण माहें पापी दोष बतावें ॥ १३ ॥ तिण गांम नें ठाम तिणनें नहीं रहणो । त्यां विकलां री सरघा तणों कांई कहणों ॥ १४ ॥ त्यां श्रीं जिण वचन दीया छें उथापी । तिणनें जाण लीजे महा पापी ॥ १५ ॥ तिण मूरख री करसी मूरख परतीत । चिहूं गति माहें हुसी फजीत ॥ १६ ॥ ते तो अंध अग्यांनी जाबक बूडा । वले चिहूं गति माहें दीससी भूडा ॥ १७ ॥ आ तो उठी जठा थी भूटी । त्यांरी अभितर आंख हीया री फूटी ॥ १८ ॥ त्यांनें साघ सरघें ते पिण मूढ मिथ्याती । वले बूड गया त्यांरा पखपाती ॥ १९ ॥ ते तो नीमाइ निश्चें विकल समान । पिण घट माहें त्यारि छें घोर अग्यांत ॥ २० ॥ ते भूठा भूठा ले सुतर रो नाम । पापी आल देता डरीया नही ताम ॥ २१ ॥ ते निमाइ निश्चें मूढ मिथ्याती । हीया फूट गधा रा साथी ॥ २२ ॥

चोमासा में दीष्या देणी निषेघे, तिणरा श्रावक पिण सुण सुण नें गूजे ।
 ए पिण हीया फूट गघा रा साथी, इण बात रो न्याय निरणो न बूमें ॥ २३ ॥
 अनता साघा दिष्या चोमासा मे दीधी, तिण माहें दोष वतावे पापी ।
 इसडा केई भेषघारी अन्हाखी, त्या चोमासा में दिष्या देणी उथापी ॥ २४ ॥
 केई भेषघारी चोमासा मे दिष्या देवे, त्यानें तो मूरख सरघे छें साघ ।
 साघ चोमासा माहें दिष्या देवे, त्यानें असाघ कहे ने करे विषवाद ॥ २५ ॥
 चोमासा माहे साघ दिष्या दीघी, त्या कितो अकारज कीघो रे पापी ।
 आ तो पाप सेवण रा पचखाण कराया, थें चोमासा में दिष्या देणी कांय उथापी ॥ २६ ॥
 चोमासा में दिष्या देणी निषेघे, त्या विकलां री विकल राखें परतीत ।
 ते तो चोडें भूल छे अंध अग्यांनी, ते तो चिह्णगति माहें होसी फजीत ॥ २७ ॥
 चोमासा माहें दिष्या देणी ओलखावण, जोड कीघी छे केलवा सहर मभार ।
 सवत अठारे पचावनें वरस, फागुण विद एकम ने गुरवार ॥ २८ ॥



ढाल : १४

दुहा

केई मूढ मिथ्याती जीवडा, ते बोलें नहीं वचन विचार ।
साधां नें विहार करणो नहीं, चोमासे रे मभार ॥ १ ॥
कारण पडियां साधु नें, चोमासा माहें करणो विहार ।
श्री वीर जिणेसर भाषियो, ठांणा अंग सूतर मभार ॥ २ ॥
केई पिडंत बाजे लोक में, पिण घट में घोर अंधार ।
ते पिण कहें छें चोमासा मझे, सात्रां नें नहीं करणो विहार ॥ ३ ॥
ते तिवक छें साधां तणा, तिणसूं संवलो न सुझे लिंगार ।
परती करवा साधां तणी, तुरत होय जाय तयार ॥ ४ ॥
चोमासा में विहार करण तणा, कारण कह्या जिणराय ।
ते जयातथ प्रगट करूं सुणजो चितल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[जीव मोह अणुकम्पा न आशिये]

दुष्ट राजादिक वेरी नो भय हुवे, जाणे उपघादिक ना लूसणहार जी ।
त्यां उपघादिक नें राखवा भणी, चोमासा में करे विहार जी ।
श्री वीर तिणेस्वर भाषियो ॥ १ ॥
साधु मिल्या नें अभावे करी, नहीं मिलें पाणी नें आहार जी ।
जब थिर परिणाम रहे नहीं, चामासे में करे विहार जी ॥ २ ॥
कोइ प्रत्यनीक छे साधां तणो, तिण ग्रामादिक मभार जी ।
ते साधु नें काढे तिहां थकी, चामासे में करे विहार जी ॥ ३ ॥
गंगादिक ने उन्मार्गे, पाणी आवतो जाणे तिणवार जी ।
तिण पाणी सूं जाणे डूबता, चामासे में करे विहार जी ॥ ४ ॥
कोइ आवे छे मोटे आडम्बरे, जीतव चारित्र ना लूसणहार जी ।
ते म्लेच्छादिक दुष्ट जाणेलिया, चोमासे में करे विहार जी ॥ ५ ॥
ए पांच बोलां मांहिलो हुवे, तो चोमासा में करे विहार जी ।
तिण री जिन आग्यां छे साधु ने, तिणमें दोष नहीं छे लिंगार जी ॥ ६ ॥
वले पांच प्रकारां करी चोमासामें करणो विहार जी, ते पिण कह्यो छे घणा आगम मझे ।
ते सांभलज्यो विस्तार, चामासे में करे विहार जी ॥ ७ ॥

*यह आंकिड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

कोइ अनेरो आचार्य मोटको, अपूर्व ग्यान तपो भंडार जी ।
 त्या कर्ने जाये ग्यान भगवा भणी, चोमासे में करे विहार जी ॥ ८ ॥
 बले दरसण प्रभावना कारणे, ते पिण सास्त्र नो छे भंडार जी ।
 ते शास्त्र भणवा कारणे, चोमासे मे करे विहार जी ॥ ९ ॥
 आचार्य उवभाय मुनिसरु, त्या कीघो सुणियो संथार जी ।
 त्याने वांदवा ने कारणे, चोमासे में करे विहार जी ॥ १० ॥
 आचार्य उवभाय रह्या तिहा, साघ छे ओर क्षेत्र मभार जी ।
 त्यारी वैयावच करवा भणी, चोमासे में करे विहार जी ॥ ११ ॥
 गगा यमुना नें सरस्वती कोसिया ने एरावती जाण जी, ए पांचू नदी नावा सू उतरे ।
 महीना में एकवार प्रमाण जी, चोमासे मे करे विहार जी ॥ १२ ॥
 बले पांच कारण पडियां थकां, नदी उतरे वार अनेक जी ।
 एक दोय चारनो कारण नही, ते सुणज्यो आण ववेक जी ॥ १३ ॥
 भयनें भिख्याने अभावे करी, कोइ काढे गामादिक बार जी ।
 पाणी रो आगम जाण नें, बले म्लेच्छादिक नी सुण मार जी ॥ १४ ॥
 एहीज पांचू कारण करी, चोमासे मे करे विहार जी ।
 तेहीज कारण पडिया साघ नें, ए नदी पिण उतरे वारू बार जी ॥ १५ ॥
 इत्यादिक कारण पडियां साघ ने, चामासा मे करणो विहार जी ।
 त्यानें अरिहतनी छे आगन्या, साधु ने नही दोष लिंगार जी ॥ १६ ॥
 साधु विहार करे चोमासा मभे, तिणमे दोष नही तिल मात जी ।
 तिणमे दोष कहे अन्हाखी थका, त्यां साघां सू पडिवजियो मिथ्यात जी ॥ १७ ॥
 ते तो दोष अणहूतो काढता, बकवो करे दिन रात जी ।
 त्याने परभव री चिंता नही, न डरे भूछी करता बात जी ॥ १८ ॥
 चोमासा मे विहार करण तणी, जोड कीघी गुरला गाम मभार जी ।
 संबत अठारे नें वरस सतावनें, काती विद पांचम मंगलवार जी ॥ १९ ॥

ढाल : १५

दुहा

भेषधारी थानक ने रात रों, जडें उघाडें कमाड ।
तिहां हिंसा करे जीवां तणी, पिण संक न आणें लिगार ॥ १ ॥
वेतकल्प माहें कह्यो साध नें, रहणो उघाडे दुवार ।
ए वीर वचन नें आराधसी, ते किम जडे आडा कंवाड ॥ २ ॥
वले उत्तराघेन में बर्जीयो, पेंतीसमाधेन मांहि ।
हाथां सूं तो जडवो जिहांइ रह्यो, मन सूं पिण वांछणो नांहि ॥ ३ ॥
केइ श्री जिण आग्यां लोप नें, जडें उघाडें कमाड ।
त्यांनं छेडवीयां अवला पडें, वले बक उठें तिणवार ॥ ४ ॥
पाछो जाब देवा तो समर्थ नहीं, दोष छोडणरा नहीं परिणाम ।
तिण सूं कवाडीया रो नांम लें, दोष ढांकण रे कांम ॥ ५ ॥
मोटा कवाड नें कवाडीयो, थापें अग्यांनी एक ।
वले वदलतां विरीयां नही, ते सुणजो आण ववेक ॥ ६ ॥

ढाल

[आ अशुकम्पा जिण आगन्या में]

भेषधारी कमाड नें जडें उघाडें, त्यांमें खूंचणो काढ्यां घणों दुख पावें ।
ते आपणा दोष ढांकण नें मूखें, कवाडीया माहें दोष बतावें ।
कुगुर चिरत सुणो भव जीवां* ॥ १ ॥
केइ भेषधारी कहें कवाड जड्यां में, जो ओ म्हाने दोष लागें छें मोटो ।
तो कवाडीया रो आहार लेवें छें, त्यांनं पिण दोष लागें छें छोटो ॥ २ ॥
कवाडीया माहें दोष बतावें, ते तो कवाड री थाप करवा काजें ।
जो भूठ बोलीनेइ दोष बतायो, तो एं दोषीलो आहारलेता कयूंन लाजें ॥ ३ ॥
कवाडीया मांसूं आहार लीयां रो, कह दीयो चोडे दोष उघाडो ।
त्यांनं भारी परसी ए दोष परूपां, ते सांमलजो भवीयण विस्तारो ॥ ४ ॥
जिण जाणनें आहार दोषीलो वहख्यो, तिण रा साध पणारी हूइ धूर घांणी ।
तिण खावारे कारण जन्म विगोयो, दोषीलो आहार लीयो जांणी ॥ ५ ॥
जांणी नें आहार दोषीलो लेवें, ते निरलज परभव सांहों न देवें ।
तो यांरा श्रावक अकल रा मूढ मिथ्याती, ते बारमों वरत भांणें किण लेखें ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

कवाडीया माहे तो दोष बत्तावे,
त्यां दोषीली आहार खाए' दिन काढ्या,
वले परूपण करता इम बोले,
ते तो चारित धर्म रो लूटणहारो,
साधा ने आहार असुध चहरावे,
उणरे दरबेइ तोटो नें भावेइ तोटो,
एहवी परूपणा करता नही सकें,
जो उवे कवाडीया माहे दोष वताए,
यारी सरघा रे लेखें यांरा साध श्रावकां मे,
या असुध आहार जांणी वेहख्यो वेंहरायो,
कोइ आप रो नाक काटे नकटो हुवे,
ज्यूं साधां ने दोषीला करण भेषघारी,
उ तो ओर सवण ले गांव सिघायो,
पिण नकटो दुखी हूओ जीवे जठा लग्गे,
ज्यूं साध तो कवाड किवाडीया ने,
भेषघारी कवाडीया मे दोप बत्ताए,
ते तो रातरौ कवाड जड्वारे काजे,
ए पहिला तो दोष कदे नही सुणीयो,
ते तो किवाडीया माहे दोष वतावें,
यारा श्रावक मिल यारी परख करे तो,
यारा श्रावक यानें इण विघ पूछे,
किवाडीयो खोल नें आहार वहरायां,
म्हारो सूंस न भागे तो हू खोल वेहराऊ,
जब तो कहे इण रो दोष म जाणो,
यारा श्रावक याने वले इण विघ पूछे,
कवाड खोल ने आहार वेहराया,
म्हारो सूंस न भागे तो हू खोल वहराऊ,
साच बोले कहे दोष कमाड खोल्या,
ए साच बोलें ते तो साकडे पडीया,
भूळ वोलण री काइ सेरी न दीसे,
कवाड ने कवाडीयो एक कहता,
कवाड माहे तो दोष वतायो,

तो यारी पीडीया लग सगलाइ बूडा ।
ते चिहु गति मे दीससी अति भूंडा ॥ ७ ॥
साधां ने आहार असुध वहरावे ।
ते दातार गर्भ मे आडा आवें ॥ ८ ॥
त्यारें कर्म बघे' घर रो माल खूटे ।
ते तो सतगुर रा सयम नें लूटें ॥ ९ ॥
ते सुरपणो लोकां ने मनावे ।
तो कवाडीया रो वेंहरे क्यूं ल्यावे ॥ १० ॥
ज्याळं तीर्थ मे छें मोटी खामी ।
ते सगला छें दुरगत जावा रा कामी ॥ ११ ॥
ते तो पेला ने कुसवण करवा काजें ।
आप दोषीला हुता नही लाजें ॥ १२ ॥
ते तो कुसले खेमे माल कमाय ल्याओ ।
पिण नाक गमायो ते पाछो न आयो ॥ १३ ॥
या दोयां ने सरघे छे जुआ जुआ ।
पीडीया लग दोषीला हाथां सूं हूआ ॥ १४ ॥
कवाडीया माहे दोष बत्तायो ।
ए गाला सू गोलो घडनें चलायो ॥ १५ ॥
वले वतलाया बोलें अन्हाखी ऊवा ।
भेषघारी मुख बोले सूघा ॥ १६ ॥
म्हारे साधा ने सुध वहरावण रा त्यागो ।
म्हारो सूंस रहेसी के जासी भागो ॥ १७ ॥
हिवे उण वेला किण विघ बोले ऊवा ।
वेहरण रे काम पड्या बोले सूघा ॥ १८ ॥
म्हारे साधा ने असुध वेहरण रा छेत्यागो ।
म्हारो सूंस रहसी के जासी भागो ॥ १९ ॥
जब तो पिण केयक बोले सूघा ।
चोडे घाडें किम बोलें ऊवा ॥ २० ॥
त्याने सतवादी कदे मत जाणो ।
तिण सू साच बोलें पिण न छोडे ताणो ॥ २१ ॥
पिण अठें तो कर दीया जूजूआ दोइ ।
कवाडीया मांहे तो कहां दोष न कोइ ॥ २२ ॥

यांरा श्रावक चतुर विचषण हुवें तो, इम भूठा घाली मुख देवें घूडो ।
 थे कवाडीया मांहे दोष बताए, इतरा दिन कांय बोलीयो कूडो ॥ २३ ॥
 इणविष बुधवंत काडे निकालो, ते तो भूठाबोलां नें जाण ले भूंडा ।
 पिण आंवां नें साची बात न सूभें, ते तो कुगुर तणी तांण कर कर बूडा ॥ २४ ॥
 जे प्रतष भूठा नें साचो कहें छें, ते दिन दिन कर्म बांधे हुवें भारी ।
 जे कुगुर तणी पषपात करें त्यांरें, टांको भले तो हुवें अनंत संसारी ॥ २५ ॥
 वले कंवाडीयो नषेधवा काजे, मोटी छोटी लुगाइ रो दिष्टंत देवें ।
 यां दोयां रो साधु नें संघटो न करणो, ज्यूं कवाडीया रोइ आहार न लेवें ॥ २६ ॥
 इत्यादिक भूंडा भूंडा दिष्टंत देइ, कवाडीयां नें नषेधण सूरा ।
 वले आपतो आहार कवाड्या रो वहरें, ते हाथां सूं मूरख पडे छें कूडा ॥ २७ ॥
 छोटी नें मोटी दोनूइ अस्त्री त्यागी, ते कवाडीया रो आहार लेवें किण लेखे ।
 कवाड नें कवाडीयो एक कहे ते, आपरी सरघा सांहाओ क्यूं नहीं देखें ॥ २८ ॥
 छोटी डावडी ज्यूं कवाडीयो जाणो, वले आहार लेवें खोलाए कोठो नें आलो ।
 कवाडीयारो दोष जाण जाण सेवे, ते छोटी डावडी रो किम करसी टालो ॥ २९ ॥
 साधु तो कवाड कवाडीया नें, यां दोयां नें सरधें छें जूआ जूआ ।
 भेषधारी कवाड्या में दोष बताए, पीडीया लग दोषीला हाथां सूं हूवा ॥ ३० ॥
 वले केयक भेषधारी इम बोले, साधु ने रहणो कह्यो छें उघाडे दुवारो ।
 पिण जडणों उघाडणों वरज्यो न दीसे, तिणरे लेखे तो दोष नहीं छें लिगारो ॥ ३१ ॥
 दोष नही कहें हाथां सूं जडीयां, तिण भूठ बोले कीधी जडवा री थाप ।
 तिणनें ग्रहस्थ उघाडे नें आहार वहरावे, तो तिण वहर्यां में कांय परुमें पाप ॥ ३२ ॥
 इम भूठ बोलेमें कांम चलावे, पिण छोडें नहीं आडो जडवो कवाड ।
 ते निरलज्ज भारी करमा अग्यांनी, त्यां गहलां नें सीख न लागें लिगार ॥ ३३ ॥
 केइ भेषधारी कहें कवाड जड्यां सूं, साधां नें दोष जाबक नही लागें ।
 जो पहलो महावरत भागें कवाड जड्यां सूं, तो साधवीयां रो पिण पेंहलो महावरत भागें ३४ ॥
 इम साधवीयां रो नाम लेइनें, ते निसंक सूं जडवा लागा कवाडो ।
 ते कल्प न जाणें साधवीयां रो, ते सांभल जो भवीयण विस्तारो ॥ ३५ ॥
 साधवीयां तो च्यार पछेंवडी राखें, त्यांने तो दोष लिगार न लागें ।
 जो च्यार पिछेंवडी साधु राखें तों, जिण आग्यां लोप्यां तीजो वरत भागें ॥ ३६ ॥
 वले जांगीयो कांचूओ राखें साधवीयां, त्यांरो पिण दोष भगवंत न कह्यो लिगारो ।
 जो जांघीयो कांचूओ साध राखें तों, हुइ जाएं श्री जिण आज्ञा बारी ॥ ३७ ॥
 वले साधवीयां एकण गांव माहें, ए तो सेषाकाल रहें दोष मास ।
 जो सेषाकाल साधु जो बिमास रहें तो, जिण आगन्या लोप्यां हुवे वरत विणास ॥ ३८ ॥

साध तो राते रहे चोहटा विच में,
 साधवीयां राते रहे चोहटा विचें तो,
 इत्यादिक कल्प रा बोल अनेक,
 त्याने आपण आपण कल्प में रहणो,
 साधवीयां नें कल्पें ते राखे साधवीया,
 ज्यूं साधां ने कल्पे कह्यो दुवार उघाडें,
 जब केयक बापडा पाघरा बोलें,
 केइ कहें जडीयां दोष न लागें,
 इम सांभल नें उतम नर नारी,
 जो कुगुरां नें छोडे ने सतगुर सेवे,
 केई भेषघारी इम बोलें अग्यांनी,
 उघाडो राख्यां माल जाएं ग्रहस्थ रो,
 ग्रहस्थ रो माल जो चोर ले जावे,
 ग्रहस्थ रो माल रखवालवा काजे,
 ग्रहस्थ रो माल जो साध रखाले,
 वले हिंसा सु पहिलोई माहावरत भागो,
 घर रो घन माल जहर जांगी छोडयो,
 तिण समकत सहित साधपणो खोयो,
 ग्रहस्थ रा माल रखवालवा काजे,
 कदा जावतो करतां ढांडा माहें आवे,
 ग्रहस्थ रो माल रखवालवा काजे,
 कदा जावता करतां मांहे चोर आवे,
 नालेर कोपरादिक वस्त अनेक,
 घन राखवा काजे कवाड जडें त्याने,
 ग्रहस्थ रा घन काजे जडसी कवाड,
 ढुले फूटें उजाड हुवे तो,
 ग्रहस्थ रे परिगरो नव जात रो छे,
 ते भोला लोकां ने गमता लागे,
 केइ भेषघार्यां ने जाव न आवे,
 माने ग्रहस्थ घर मांहे रहिवा न दें छे,
 ते सूनो घर हाट उपाश्रों थानक,
 एहवा प्रश्न पुछ्यां रा जाव न आवें,

ते पिण खुलीए अवग दुवारे ।
 ते तो हुवें जाए श्रीजिण आगन्याबारे ॥ ३६ ॥
 ते तो साध साधवीयां रान्यारा न्यारा ।
 पिण साधु नेंन जडणो साधवीयां री लारा ॥ ४० ॥
 उतरा साधु राख्यां साधु रा वरत भागें ।
 जडें जिण साधु ने दोष क्यूं नही लागें ॥ ४१ ॥
 किवाड जड्यां मानें लागे छें दोषो ।
 ए भूठा बोला किम जासी मोखो ॥ ४२ ॥
 एहवा भूठाबोलां सूं रहजो दूरा ।
 ते तो चतुर विचषण प्रवीण पूरा ॥ ४३ ॥
 म्हे उतरां ओरा साल नें पोलमकारो ।
 तिण कारण आडा जडा कवाडो ॥ ४४ ॥
 तो उ ग्रहस्थ दुख पावे छे गाढो ।
 म्हे सेठो जड राखां कवाड ने आडो ॥ ४५ ॥
 तो प्रतष पांचमो माहावरत भागो ।
 जिण आगन्या लोप्यां अदत पिण लागो ॥ ४६ ॥
 जो उ ग्रहस्थ राघन रो करे रखवालो ।
 तिणने सासण मासूं दीयो बीर टालो ॥ ४७ ॥
 भेषघारी आडा जडे कवाड ।
 तिण लेखे तो घाकल काढणा बार ॥ ४८ ॥
 भेषघारी आडा जडे कवाड ।
 तो घणीनें जाय कहणो तिणवार ॥ ४९ ॥
 त्यां उपर स्वानादिक दूके आय ।
 यानें पिण अलगा कर देणा जाय ॥ ५० ॥
 त्याने पोहरो देइ काढणो दिन रात ।
 विगडवा नही देणों तिलमात ॥ ५१ ॥
 त्यारी भेषघारी करे रखवाली ।
 जाणें बाबो रो बाबोने हाली रो हाली ॥ ५२ ॥
 जब भूठ बोलें वात लेवे सवार ।
 तिण कारण आडा जडा कवाड ॥ ५३ ॥
 उठें किण लेखें जडें छें कवाड ।
 जब आलल भाषण ने हुय जाय तयार ॥ ५४ ॥

सवत अठारें वरस तेतीसैं, जेठ सुद बारस मंगलवार ।
 ए कुगुर तणा चरित परगट कीधी, सहर पीपाड तणें रें मझार ॥ ५५ ॥

ढाल : १६

ढुहा

केइ साधु नांम घरायने, आढा जडे छे किवाड ।
त्यामे केइ तो कहे दोष छे, केइ न कहे दोष लिगार ॥ १ ॥
त्यामें दोष बतावे कमाड नो, तिण रों जाव न देवें तांम ।
दोष कहे कवाड्या तणो, बकता फिरें गांम गांम ॥ २ ॥
कमाड तणों दोष ढांकवा, लेवें कवाड्या रो नांम ।
कहे कवाड कवाड्यो एक छे, एहवो बेदों घाल्यो छें तांम ॥ ३ ॥
कहिवानें एक कह दीयो, पिण त्याहीज कर दीया दोय ।
कवाड उघाड देवे तो लेवे नही, किवाड्या रो न छोडें कोय ॥ ४ ॥
दोष वतावे कवाड्या तणों, पिणवेहरे किवाड्यो खोलाय ।
एहवा विकलां री वात में, कला म जाणों काय ॥ ५ ॥
साधु दोष जाणे कवाड्या तणों, तों छोड दे तुरत सताव ।
हिंवे कवाड नें कवाड्या तणो, सुणो सुरत दे जाव ॥ ६ ॥

ढाल

[२ भविष्य षेवो रे साध सयाण]

कवाडजडवो तो साधूने वरज्यो सुतरमें ठांम ठांम, कवाड्या रों तो आहार कठेइ न वरज्यो ।
वरज्यो हुवें तो वतावो तांम रे, भवीयण जोवों हिरदय विचारी ।
म करो ताण हीया री रे, ताण कीघां सूं घणी खुवारी* ॥ १ ॥
पूरें मासे बाइ उठ बेस वेहरावें, तो साधु ने वेहरणो नांही ।
ओछा गर्भ री उठ बेस वेहरावे, ते वरज्यो नही सूतर रे मांही ॥ २ ॥
कोइ कहे कवाड्यो कठे चाल्यो छे, तिण रो जाव सुणो चित्त ल्याय ।
कवाड वरज्यो कवाड्यो नही वरज्यो, ओ देखो उघाडों न्याय रे ॥ ३ ॥
ज्यू पूरे मासे बाइ उठ वेहरावें, ते तो वरजी सूतर रे मांही ।
ओछा गर्भ वाली रो वरज्यो नाही, जब लेणो ठहरायो छे ताहि रे ॥ ४ ॥
इण दिष्टते कवाड्यां रो आहार, वेहस्थां मे दोषण नांही ।
छोटा गर्भ री नें कवाड्या रो आहार, वरज्यो नही सूतर मांही रे ॥ ५ ॥
ज्यू मोटा ने छोटा गर्भ मे फेर जाणो, ज्यू कवाड किवाड्यो मे जाणो ।
कवाड्यां खोले साधु ने वेहरावें, तिणरी म करो तांणो रे ॥ ६ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

ज्यांरा बज बडेरा आगे हूआ ते,
 तिण में दोष कह्या त्यांरा बज बडेरा,
 थोडा नें घणा उंचा थी वेंहरण रों,
 थोडा नें घणा बिच आंतरों नाहीं,
 हाथ रें आसरें उंचा थी वेंहरावें,
 जब तो साधु वेंहरतों संक न आणें,
 घणा उंचा थी आहार साधु नें वेंहरावें,
 आसरों उनमान अटकल नें वेंहरें,
 थोडा उंचा थी वेंहरायां दोष न जाणें,
 तिम कवाड्यां रा दोष तणी :ताण,
 धीरें धीरें चालें साधु नें वेंहरावें,
 जो उतावलों ने दोडे वेंहरावें,
 उतावल सूं चाल्या नें कमाड खोल्या रों,
 धीरें चाल्या नें कवाड्यों खोल्या रों,
 बावन अनाचार कह्या दशवीकालक में,
 तिण सूं साह्यों आण्यो तो साधु न बहरें,
 समचें तों कह्यो साह्यों आण्यो न लेंगों,
 थोडी दूर सूं तो साह्यों आण्यो वेंहरें,
 तीनां घरां थकी साह्यों आण्यो वेंहरें,
 तिमहीज कवाड्या नें जाणो,
 तीनां घरां सूं तों साह्यों आण्यो वेंहरे छें,
 तो पिण साधु नें वेंहरणों नाहीं,
 ज्यूं कवाड उघाडे नें आहार देवें तों,
 किवाड्या रों आहार कठे नही वरज्यो,
 घणी दूर सूं साह्यां आण्यो रा दोष,
 ज्यूं कवाड रो दोष कवाड्या रो नाहीं,
 इण अणुसारे किवाडीया उपर,
 कहि कहि नें कितराएक कहूं,
 कोइ कहें किवाड्यों कितोएक मोटो,
 इणरो उनमान तों जीतववहार सेती,
 हाथ सवा हाथ रें आसरें लांबों नें पेंहलो,
 इण वात रो निश्चों केवली जाणें,

बहख्यों कवाड्यां रो आहार ।
 गया जमारो हार रे ॥ ७ ॥
 सूतर में नहीं उनमान ।
 ते पिण जाण लेसी बुधवान रे ॥ ८ ॥
 साधु नें अन पांणी ।
 वेंहर छें निरदोष जांणी रे ॥ ९ ॥
 जब तों साधु करें छे टालों ।
 तिणरो सूतर में नहीं निकालो रे ॥ १० ॥
 दोष जाणें उंचा थी वेंहरायां ।
 छूटें न्याय हीया में आयां रे ॥ ११ ॥
 तो साधु वेंहरें अनादिक पांणी ।
 तो नहीं वेंहरे अजेंणा जाणें रे ॥ १२ ॥
 अं तो दोष उघाडो दीसैं ।
 दोष नहीं कह्यो जगदीसैं ॥ १३ ॥
 चोथों अणाचार साह्यों आण्यो ।
 मोटों दोष अणाचार जाण्यो ॥ १४ ॥
 इण ठामे तो मरजाद न कांड ।
 ज्यूं कवाड्यों जाणों मन मांहि रे ॥ १५ ॥
 तिण दूरी री विगत न कांड ।
 विचार करो मन मांही रे ॥ १६ ॥
 ते पिण कदा घणी दूर जाणें ।
 अकल सूं उनमान पिछाणें रे ॥ १७ ॥
 लेंगों वरज्यो सूतर रे मांही ।
 सूतर मांहे नकार छें नांही ॥ १८ ॥
 थोडी दूर रो दोष म जाणों ।
 ए लुडी रीत पिछाणो रे ॥ १९ ॥
 दिष्टन्त छें रे अनेक ।
 सममों आण ववेक रे ॥ २० ॥
 तिणरो सूतर में नहीं उनमान ।
 थाप करसी बुधवान रे ॥ २१ ॥
 एहवो बांघ्यों उनमान ।
 उनमान सूं जाणें बुधवान ॥ २२ ॥

ज्युं साध साधनी रे पिछेवरी रो, पेंहली तीन हाथ उनमान ।
 पिण लांबी रो निकाल तों नही सूतर मे, पांच हाथ थापी बुधवान रे ॥ २३ ॥
 ज्यु कवाडीया लांबा ने पेहला री, आ पिण थाप करी छे ताम ।
 ते निरुचों तो केवलग्यांनी जाणें, तिणरी खाच तणो नही काम रे ॥ २४ ॥
 कवाडीयो खोले आहार वेहरावें, तिणमे कोइ दोप मत जाणो ।
 कवाड कवाड्यो शरीषा नाही, हिवे तिणरों न्याय पिछाणो रे ॥ २५ ॥
 कवाडीयो नही धरती लगतो, कवाडीयो तो उचो जाणो ।
 कोठा कोठी नें आलादिक मे, तठे जीव रो नही ठिकाणो रे ॥ २६ ॥
 कीडी मकोडादिक जीवां रो ठिकाणो, धरती उपर फिरता जाणों ।
 आमा साहमा फिरे भवलेटी खाता, तठें हिंसा तणों छे ठिकाणों रे ॥ २७ ॥
 कमाड रो चूलीयों तो धरती उपर फिरें छे, तठें हिंसा तणो छे ठिकाणो ।
 तिणसूं कवाड ने जडवो वरज्यो छें, तिम कवाड्यां नें मत जाणो रे ॥ २८ ॥
 उची तो कीड्या चीगटादिक परसगे, कीड्यादिक री नाल बंधावें ।
 पिण कवाड्यां रा चूलीया हेठे, चीगट किहांथी पावें रे ॥ २९ ॥
 जो कवाडीया रो आहार टाले तिण नें, टालणा पडसी बोल अनेक ।
 तिण अनुसारे तिण सरीषा कहू छुं, ते सुणज्यो आण ववेक रे ॥ ३० ॥
 दही दूध री जावणी कोठा मासू काढे, साधु नें वेहरावें आय ।
 जो कवाडीया मा सू आहार न लेवे, तिणनें ए पिण न लेणा ताय रे ॥ ३१ ॥
 प्रत रो चाडों कोठा मा सू काढे, साधु नें वेहरावें आय ।
 जो कवाडीया मा सू आहार न लेवें, तिणने घी पिण न लेणों ताय रे ॥ ३२ ॥
 कवाडीया री चूक नें चूलिया फिरियां, आहार न वेहरें काइ ।
 तो जावणीयां रो तूडो कोठा फिरियां, दही नें दूध वेहरणो नांही रे ॥ ३३ ॥
 वले कोठा माहे घी रा चाडा रो तूडो, फेर नें बारें आण वेहरावे ।
 कवाडीया रो चूलीयो फिरियां न लेवे, तो घी पिण न लेणों इण न्यावे रे ॥ ३४ ॥
 इत्यादिक ठाम कवाडीया माहे, त्यारा तूडा फेरी देवें ताय ।
 कवाडीया रो आहार न लेवें, त्याने ओ पिण लेणों नही इणन्याय रे ॥ ३५ ॥
 कोठी उपरला ठाम नें फेर वेहरावें, फेरें ठाम उपर ला ठाम ।
 कवाड्या फेखा रों आहार न लेवे, त्याने ओ पिण लेणो नही ताम रे ॥ ३६ ॥
 केइ कहे कवाड्यो उधाड्यां, हिंसा तणी छें सक ।
 इण लेखे तो तिण ने अनेक बोलां रों, किण विघ करसी निसंक रे ॥ ३७ ॥
 केइ वाइ माइ चालेंन वेहरावें, केइ उमा ते बेस वेहराय ।
 जुंवादिक री हिंसा री संका, ते संका कम कढाय रे ॥ ३८ ॥

किण्णी भाइ री पाग में धान रो दाणों, उच्छल नें पडीयो आय ।
 तिणरा हाथ सूं वेंहरतां संका पडें तो, ते संका केम कढाय रे ॥ ३६ ॥
 खांडादिक वेंहरावें तिणमें, सचित्त री खबर न काय ।
 माहे धान रा दाणा री संका पडें तो, ते संका केम कढाय रे ॥ ४० ॥
 ध्रत री गोली मां सूं ध्रत वेंहरावें, तिणरें विच में फूलण होवें ताय ।
 ते वेंहरतां संका पडें साधु रे, ते संका केम कढाय रे ॥ ४१ ॥
 इम इत्यादिक अनेक वस्त में, संका पडें मन मांहीं ।
 पिण ववहार में सुघ हुवें तों, साधु वेंहर लेवें ताहि रे ॥ ४२ ॥
 तिम कवाड्यां रों ववहार सुघ जाण नें, साधु वेंहरें छें तांम ।
 इण बात रों निश्चे' तों केवली जाणें, खांच तणों नही कांम रे ॥ ४३ ॥
 जो कवाडीयां रा दोष री संका, तो इण लारें छें संका अनेक ।
 लारें संका कही ते सगली टालणी, समभों आण ववेक रे ॥ ४४ ॥
 आगें लूका नें ढूंढीया नीकलीया, जब तों हुंता वेंरागी विशेषों ।
 त्यां पिण कवाड्यो टाल्यो न दीसैं, हीयें विमासी देखो रे ॥ ४५ ॥
 सुघ साधु तों यांरो सरणों न लेवें, पिण सूतर में वरज्यो नांही ।
 जो कवाडीया रो दोष कहों छों, ते काढो सूतर रे मांही रे ॥ ४६ ॥
 सूतर मांहीं तों मूल न वरज्यो, परम्परा मे पिण वरज्यो नांहीं ।
 तिण सुं जीत ववहार निरदोप थाप्यां री, संका म करो मन मांहीं रे ॥ ४७ ॥
 जो कवाडीयां री संका पडें तो, संका छें ठांम ठांम ।
 ते कहि कहि नें कितराएक केहूं, संका रा ठिकाणां तांम रे ॥ ४८ ॥
 साधु तो हिंसा रा ठिकाणा टालें, छदमस्थ तणें ववहार ।
 सुघ ववहार चालतां जीव मर जाएं, तो विराघक नहीं छें लिंगार रे ॥ ४९ ॥
 जिण जिण बोलां रो नीकालो नही छें, ते केवलीयां नें भलावों ।
 कवाडीया री तांण करेनें, मत कोइ भूठ लगावों रे ॥ ५० ॥
 मोनें तों कवाड्यां रो दोष न भासैं, जाणें नें सुघ ववहार ।
 जे निसंक दोष कवाड्यां में जाणों, ते मत वहरजो लिंगार रे ॥ ५१ ॥
 कवाड्या रो दोष कहे तिण उपर, जोड कीवी पाहु मभारे ।
 संवत्त अठारें नें वरस चोपनें, वेंसाख विद दसम ने मंगल वारो रे ॥ ५२ ॥

ढाल : १७

दुहा

केइ नाम धरावें साध रो, पिण पूरा मूढ अयाण ।
त्यांरी ववेक विकल छें साधव्या, ते पिण जिण मारग री अजाण ॥ १ ॥
त्यानें समझ नहीं त्यारे वोलीये, कूडी करे बकरोल ।
त्यानें खबर नहीं त्यारा वरतरी, करे रही करम किलोल ॥ २ ॥
सूध साधा ने उथापण भणी, उधी कीधी परूपणा ताण ।
तिणसू उलटो उघाड हूओ आपरो, पडी गला ने आण ॥ ३ ॥
इण रे वडा वडेरा आगे हूआ, दर पीढ्या लग वाज्या साध ।
इण सूतर अर्थ उघा करे, कीया सगलां ने असाध ॥ ४ ॥
इण किण विध कीधी परूपणा, असाध ठहराया इण केम ।
इण चोहें करी छे परूपणा, ते सांभलजो घर प्रेम ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अशुकम्पा जिण आगन्या मे]

कठोतरी हाडादिक रा घोवण ने, दोय घडी ताइ कहे काचो पाणी ।
एहवी परूपणा कीधी पाना वाचेने, निसंक थका कहे कर कर ताणी ।
आ सरधा छे मूढ मती री* ॥ १ ॥
तिणसू साधा ने घोवण पूछेने लेणो, दोय घडी तांइ घोवण काचो पाणी ।
विण पूछ्या लीयो तिण काचो पाणी वेहस्थो, वले अरिहत नी आगना लोपाणी ॥ आ० २ ॥
जे सूतर न्याय चालें छे तिणने, दोय घडी हूआ पछे वेहरणो घोवण ।
पेंहला वेहस्थो तिणतो काचो पाणी वेहस्थो, ते तो अरिहत री आगनारा खोवण ॥ ३ ॥
एहवी परूपणा कीधी तिणने पूछ्यो, थे दोय घडी पहिली वेहरो के नाय ।
जब निसक थका कह्यो म्हें तो वेहरा, ए उतकछा बाजे ने वहरो काय ॥ ४ ॥
जब लोकां पूछ्यो थे किण लेखे वेहरो, साप्रत जांणने काचो पाणी ।
जब कहे म्हारे वडा वडेरें वेहस्थो, तिणसू म्हें पिण वेहरां त्यारी परतीत आणी ॥ ५ ॥
पिण घोवण तों निश्चेइ करने, दोय घडी ताइ काचो पाणी ।
तिणसू सुध साधाने वेहरणो नाही, एहवी अरिहत बोली छे वाणी ॥ ६ ॥
म्हारे तो थेटसू वेहरतां आवां, म्हां ढीला पस्था साहमो ए क्यू देखे ।
म्हें तो आगना लोपी नें लोपी कहा छा, आं आगना लोपी किण लेखे ॥ ७ ॥

*यह आंकीडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

ए कहेँ म्हे आगना माहेँ चालां छां,
 दाय घडी तांइ घोवण काचो पांणी छें,
 सुध साघां नें उथापण काजें,
 दाय घडी घोवण नें काचो पांणी थापे,
 ज्यूं कोइ पेंला नें कुसवण करण नें,
 ज्यूं सुध साघां नें असाघ थापणें,
 काचो पांणी जाणे जाणे नित वहरें,
 एहवा भेषधारी मिष्ट भोला लोकां में,
 दाय घडी पेहली म्हेँ घोवण पीयां ते,
 इम सांभल नें त्यांनें साघ सरघें छें,
 साघ होय नें काचो पांणी वेहरी बूडा,
 एं तो दोनूं जणां च्यार तीर्थ बारें छें,
 साघां नें काचो पांणी जाणें बेंहरायों,
 साघ पिण जाण बेंहरें काचो पांणी,
 एहवी परूपणा कीची तिण लेखें,
 बले बावीस टोला रा साघ वाजें छें,
 काचा पाणी रे संघटें तो आहार न वेंहरें,
 एहवाइ विकल साघ वाजें लोकां में,
 असुध आहार साधु नें अभष कह्यो छें,
 भगोती गिनाता नें निरावलिका में,
 असुध आहार साधुनें अभष कह्यो छें,
 जाण जाण असुध आहार अभष वेंहरें छें,
 दाय घडी घोवण नें कह्यो काचो पांणी,
 काचो पांणी कहे नें पीता जाएं,
 घोवण नें दाय घडी काचो पांणी जाणें,
 तेहीज पांणी पोतें जाण पीयें,
 *यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

तो एं जिन आगना स्हांमों क्यूं नही देखें ।
 तिण घोवण नें वेंहरें किण लेखें ॥ ८ ॥
 आप तणा वडेरों नें कांय विगोया ।
 साघपणा सगलां रा खोया ॥ ९ ॥
 आपरो नाक काटे नें करे असमाघ ।
 आप री पीढीयां खप हुवां असाघ ॥ १० ॥
 बले साघपणा रो नाम घरावें ।
 सुध साघां ज्यूं वंदावें पूजावें ॥ ११ ॥
 काचो पांणी कहेँ ते तो वात न भूठी ।
 त्यांरी हीया निलाड री दोनूंइ फूटी ॥ १२ ॥
 बेंहरावण बाला पिण बूडा छे विशेष ।
 जो सांसों हुवें तो सूतर माहेँ देखो ।
 आ सरघा श्री जिणवर भाषी* ॥ १३ ॥
 तिण श्रावक रो बारमों व्रत भागो ।
 तेतो निश्चें वरत विहूणा नागो ॥ आ० १४ ॥
 इण रा वड वडेरों तो निश्चें नही साधो ।
 त्यांनें पिण दर पीढ्यां कीया असाघ ॥ १५ ॥
 काचो पांणी रो जाणें कर जाएं गटकों ।
 त्यांनें विकल होसी ते करसी लटकों ॥ १६ ॥
 तिणमे सच्चित नें अभष कह्यो छें विशेषो ।
 जो सांसो हुवें तो तीनूंइ सूतर देखो ॥ १७ ॥
 तिण माहेँ संका नही छें लिगार ।
 ते तो नियमाइ निश्चें नही अणगार ॥ १८ ॥
 साघां में दोष ढाकण नें चलायो भूठों ।
 त्यांरो साघपणो तो जाबक गयो उठो ॥ १९ ॥
 ते तो भूठा थका करें फेन फित्तुरों ।
 त्यांरा संजम सरघा में पड गइ धूरो ॥ २० ॥

ढलल : १८

दुहल

कहू नलव धरलव सलघ सलघवी, डलण उडुडु डलीडल डलड ।
उवी उंधी करे छे डरूडणल, ते सुणओ डलतु लुडलड ॥ १ ॥

ढलल

[सलधु डत डलशु इडु डलगत सु]

कहू सुध सलघलं ने आहलर वहरणु, तीओ डुहर डडुलर ओ ।
ओ डुलरू डुहरडें करे गुओरु, ते शुरीओण आगुडल वलर ओ ।
आ सरघल छे डुंड डतुडलं री* ॥ १ ॥

तलण डुडडतुी ने डुछल कुीधी, थे 'सलधु नलंव धरलड ओ ।
थे डुलरू डुहर डें करुे गुओरु, ते कुलण लेखे कुलण नुडलड ओ ॥ २ ॥

ओव कहू डुहे तुओ ओण आगुडल डलरें, ओ दुषण छे डुहलरे डलंड ओ ।
ए उतकथल हुओ दुषण कलड सेवें, वले आगुडल लुडुी कलंड ओ ॥ ३ ॥

तीओ डुहरे गुओरु थलडे, सलघलं ने उथलडण कलओ ओ ।
तुलरे उलुतुी आड डडी गलडडे, तुल छुडी संओड ललओ ओ ॥ ॡ ॥

तीओ डुहरें गुओरु थलडे, करे डुलरू डुहर डडुलर ओ ।
वले डुख सूं कहू डुहे आगुडल लुडुी, तुलने कुण, कहलुी अणगलर ओ ॥ ॡ ॥

तीओ डुहरें गुओरु थलडें, करे डुलरू डुहर डडुलर ओ ।
ते डेतडरल उघलडल दुसैं, धुरलण तुलरुओ ओडवलर ओ ॥ ॢ ॥

डुलरू डुहर तणुी गुओरु सलघ नें, कहुी दुीधी शुरीओण आड ओ ।
ते वीर वओन उथलडुुु तुलरें, उदुे हुडल छे डलड ओ ॥ ॣ ॥

सलधु डुलर डुहर डे करे गुओरु, तुलरुु डुओु करे डलतुलर ओ ।
डुतें डुलरू डुहर डे करुें गुओरु, तुलरुल सलघ डणलडे धुलर ओ ॥ । ॥

कहू सुध सलघलं नें एकण दुनडे, आहलर करणुु एक वलर ओ ।
दुडु नें तुीन वलर आहलर करे ते, शुरी ओण आगुडल वलर ओ ॥ ॥ ॥

ओव लुुकलं इणने डुरशन डुलुडुु, थें एकण दुन डडुलर ओ ।
थे कुलतुलरुी वलरुीडलं आहलर करुे छुुु, ए उतुतर दुओ इण वलर ओ ॥ १० ॥

ओव कहु दुीडुुु डुहे एकण दुन डे, आहलर करलं घणुी वलर ओ ।
डुहे डुुड कहुलं ओण आगुडल' लुडुी, दुष सेवे करलं डुहे आहलर ओ ॥ ११ ॥

*डुह आंकुडी डुरतुडेक गलथल के अनुत डे हू ।

पिण एंतो कहे म्हे उतकथां छां, जिण आग्या रा पालण हार जी ।
 तो एं आग्यां लोप दोषण कांय सेवें, कांय करें घणी वार आहार जी ॥ १२ ॥
 म्हे तो दर पीढ्यां लग करता आया, च्यारूं पोहर में आहार जी ।
 एक दोय विरीयां रो कारण नाहीं, म्हांरो तो ओहीज आचार जी ॥ १३ ॥
 इण रें लेखे इण री दर पीढ्यां में, साध हुवो नहीं एक जी ।
 त्यां पिण असणादिक एकण दिन में, कीयो वार अनेक जी ॥ १४ ॥
 जो भगवंत कह्यो ह्वें सुघ साधां नें, बीजी वार न करणो आहार जी ।
 अनेक वीरीयां आहार करें छे, त्यांनं कुण कहिसी अणगार जी ॥ १५ ॥
 एकवार साघनं आहार परूयें, तिण चोडे चलायों कूड जी ।
 आप तो आहार करें बहु वीरीयां, तिण रा साघपणां में धूर जी ॥ १६ ॥
 साघ नें आहार छ कारणं करणों, कारण विण करणों नांहि जी ।
 एक दोय वार रो नाम न चाल्यो, जोवो सूतर रे मांहि जी ॥ १७ ॥
 कहे नितको साघ नें आहार न करणों, करे ते आग्या बार जी ।
 जब उण ने पूछ्यो थें कांय करो नित, असणादिक च्यारूं आहार जी ॥ १८ ॥
 जब कह्यो म्हे तों जिण आग्या लोपी, ओ दोषण छें म्हांरें मांय जी ।
 एं उतकथा वाज दोषण कांय सेवें, जिण आग्या लोपी कांय जी ॥ १९ ॥
 म्हे तो दर पीढ्यां लग खाता आवां छां, नितरा नित च्यारूं आहार जी ।
 वले कह दियो चोडें लोकां में, म्हे तो जिण आग्यां वार जी ॥ २० ॥
 तीजा पोहर टाल गोचरी न करणी, एक टक विण न करें आहार जी ।
 वले नित रो नित आहार नहीं करणो, ओ साघ तणों आचार जी ॥ २१ ॥
 म्हे कहां म्हे तों पुरों नहीं पालां, म्हे तों पालां जिसों फल होय जी ।
 इसी कहे नें पलो छुडावें, पिण भोलां खबर न कोय जी ॥ २२ ॥
 उंधी सरवा भेष धाख्यां नी परगट कीधी, सिरिधारी सहर मभार जी ।
 संवत अठारें वरस एकावनें, काती विद चवदस बुधवार जी ॥ २३ ॥

ढाल : १६

दुहा

भेषधारी भागल मिष्टी थया, त्यासूं पले नही आचार ।
 ते ववेक विकल मुघ बृघ विना, ते बोले नही मूंड विचार ॥ १ ॥
 'वघोतर देखे' जिण धर्म री, जब लागें अभितर लाय ।
 जब कूडा कूडा आल देसाघा भणी, पछे लोकां मांहे देवें फेलाय ॥ २ ॥
 पोते तो हूआ ठाला ठीकरा, पांचू महाव्रत दीया छेंबोलाय ।
 धीग होय बेंठा छे बाबा तणा, त्यारें भूठ री सृग न काय ॥ ३ ॥
 'मत विखरतों देखे' आप रो, फिरता देखे श्रावकां नें ताय ।
 तिणसु छल छिदर जोवें साघा तणा, आल देवण रों करें छेंउपाय ॥ ४ ॥
 जस कीरत देखे साघां तणी, त्यासूं एदुखसह्योंरेन जाय ।
 तिण सू आल दीयो अन्हारवी थकें, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अशुकम्पा जिण आगन्या मे]

मेला चीगटा कपडा मेह नां भीना, तिण में ज्यां लग सचित्त तणी हुवें संक ।
 तिण संका सहीत साधु कपडों नीचोवें, तिण साधु नें दोष लागें छें निसंक ।
 भेषधारी तो आल देता नही संके* ॥ १ ॥
 भूठ बोलण री त्यारें सृग नही छें, ते जे'न तणा विगडायल गेंरी ।
 ते नरक निगोद तणा होय बेठा, सुघ साघां तणां छें अंतरंग वेंरी ॥ २ ॥
 मेला चीगटा कपडा मेह सू भीना, तिण मे सचित्त री सका न हुवें लिगार ।
 तिण कपडा ने निसंक निचोवें साधु, तिण में दोष वतावे छें मूंड गिवार ॥ ३ ॥
 संका रहीत कपडा नें साघ नीचोवें, त्यारा पाचोइ महाव्रत कहे छें भागा ।
 केई भेषधारी तो इसडी परूपे, ते तों समक्त विरत बिहूणा नागा ॥ ४ ॥
 पांणी सचित्त हूवो अथवा अचित्त पांणी हुवो, साधु नें कपडो नीचोवणो नांही ।
 नीचोया साघपणा रो खेरोइ न रहे, इण सूं इधिको आकार्य नही छें कांई ॥ ५ ॥
 म्हारा बावीस टोला मांहे विगडायल, ते पिण कपडों नही नीचोवें ।
 एहवी उधी परूपणा कर कर पापी, भोला लोका नें निसंक डबोवें ॥ ६ ॥
 किणही ववेक रे' बिकल आय कह्यो जव, तिणरो तो पूरो न काढे निकालों ।
 अंतरंग छेप रो घालीयो पापी, सुच साघां नें दीयो अणहंतों आलो ॥ ७ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

बावीस टोला कहें छें तिणमें,
 तिण टोला तणा टाणोकड भिष्टी,
 आप रो मत थापण मूड मिथ्याती,
 तिण रा श्रावकां पासें बके दिन राते,
 इण भूठाबोलां री बात माने छें,
 तिण भूठाबोलां री पषपात् करसी,
 मेंमंत वरसात मंडीयो तिण काले,
 तिण मांहे तो नीलण फूलण रा जीव,
 सरखी मिटे नही तठा तांइ कपडा में,
 समे समे पिण विणसें छें अनंता,
 पांणी अचित्त हुआ कपडो नही नीचोवे,
 तिण हिंसारा पाप थकी साध रे,
 पहिलों महाव्रत राखण रें तांइ,
 तिण मांहे दोष कहें छें अग्यानी,
 अचित्त पांणी हूआं साध कपडों नीचोवे,
 ते बवेक तणो विकल छें मूर्ख,
 अचित्त पांणी हूआं पछें कपडों नीचोवे,
 ते जिण मारग रा अजाण अग्यानी,
 अचित्त पांणी हूआं पछें कपडों नीचोवे,
 तिण बवेक रा विकल नें साध सरखें छें,
 अचित्त पांणी हूआं पछें कपडो नीचोवे,
 तिण जीवां री दया तों ओलखी नांही,
 अचित्त पांणी हूवां पछें कपडों नीचोवे,
 ते सुनें चित्त हीयाफूट ज्यू बोले,
 एहवो आल अन्हाखी साधां नें दीघो,
 कदा टांकों भले इण आल दीयां थी,
 एहवो आलवेइ लोकां में फेंलायो,
 तिणरा सेवग सुण सुण हरष हूआ छें,
 आल देणवाला नें हरषणवाला,
 ते हीयाफूट गधां रा साथी,
 भेषघारी आल अणहूंतों दीघों,
 इण लेखें उण नें इतरो प्राछित्त आवें,

ढीला मे ढीलें टोलों विशेष ।
 आप रा किरतब स्हांमों मूल न देखें ॥ ८ ॥
 सुघ साधां ने दीयो अणहूंतों आलो ।
 ते पिण साच ने भूठ रो न काडें निकालो ॥ ९ ॥
 ते पिण तिण करे जाबक बूडा ।
 ते पिण चिहूं गति मांहे दीससी भूडा ॥ १० ॥
 मेंला चीगटा कपडा भीना राखें जाण ।
 समे समे अनंता उपजे छें आण ॥ ११ ॥
 समे २ अनंता उपजे छें तांम ।
 निरंतर मंडीयो रहे संग्राम ॥ १२ ॥
 तो अनंत जीवां री हिंसया साधु नें लगें ।
 पेहलो महाव्रत निश्चेइ पागे ॥ १३ ॥
 पांणी अचित्त हुआ साधु कपडों नीचोवे ।
 साधां नें आल देइ ने आत्मा डबोवें ॥ १४ ॥
 तिण मांहे दोष कहें छें पाषंडी ।
 तिण भेषलइ आत्मा नें भंडी ॥ १५ ॥
 तिणमें दोष कहें छें मूड मिथ्याती ।
 तिण विकलां री अकल रही छें जाती ॥ १६ ॥
 तिणमें दोष कहें तिण री भिष्ट छें बुध ।
 त्यामें पिण काइ म जाणजो सुघ ॥ १७ ॥
 तिण मांहे तो दोष माठी मत रें जाणें ।
 पीपल बांधी मूर्ख जिम ताणें ॥ १८ ॥
 त्यांरा पांचोइ महावरत कहें छें भागा ।
 ते विरत विहूणा कहीजे नागा ॥ १९ ॥
 ते निश्चेइ बूड गयो कालीघार ।
 तो पाधरो जाए नरक निगोद मभार ॥ २० ॥
 तिण दुष्टी रे संसार दीसें छें जादा ।
 जाणें पगां रें गूगरा बांधा ॥ २१ ॥
 साराइ कर्म तणा पूज बांधें ।
 त्यां श्री जिण धर्म न ओलख्यो आवें ॥ २२ ॥
 अणहूंताइ महावरत साधां रा उडाय ।
 कह्यो छें वेतकल्प नें ठांणाअंग मांहि ॥ २३ ॥

जणमें साधपणों तो आगेइ न दीसे,
 पिण जणरें लेखें उण ने साधपणो आवें,
 तिणनें साधपणो फेर दीधा विनाई,
 एहवा प्राच्छित रों गाला गोलो करे त्यामे,
 जिण टोला में दसमो प्राच्छित सेव्यो,
 एहवा पिण प्रायच्छित गउ कर बेंठा,
 अचित पांणी हूआं पछें कपडा नीचोवे,
 तिण तीनोंइ कालना रपेसरा नां,
 अचित पाणी हूवा निसंक सू साधां,
 बले आगमीये काल साध कपडा नीचोसी,
 अचित पाणी हूआं कपडा नही नीचोवे,
 आ पिण समझ नही विकलां ने,
 अचित पांणी हूआ कपडा नही नीचोवे,
 नीचोया थका पाप किसो लागे छें,
 साधु तो पाप अठारेइ त्याग्या,
 अचित पांणी हूआं पछे कपडा नीचोवें,
 अचित पाणी हूआ साधां कपडो नीचोवे,
 तो पाप अठारे जिण कह्यां तामें,
 पाणी सचित हूवो अथवा अचित पाणी छे,
 माहें नीलण उपजो भावे फूलण उपजो,
 नीलण फूलण सहीत कपडो सूके जब,
 अचित पांणी हूओ छें तोही कपडा ने,
 अचित पाणी हूआं पछे कपडों नीचोवें,
 इम कहि कहि' अग्यानी भोला लोका रे,
 जब तो वरस तो मेह उभो रह्यां पछें,
 जब तो तिण पांणी में पग नही देंणों,
 ग्रहस्य रे धरे घोवण रो कूडो भख्यो छे,
 तिण लेखे तो घोवण नही बहरणो,
 दूधे दही चास आदि अनेक दरव छे,
 तिण लेखें या दरवां ने बहरणो नाहीं,
 इम प्रश्न पूछ्या रा जाब न आवें,
 तो अचित पांणी हूआं पछे कपडो नीचोयो,

पिण साधांने आल दीयो छे अन्हाखी ।
 ठांणाअग ने वृहतकल्प छें साखी ॥ २४ ॥
 इण सूं केड भेलो करसी आहार ।
 साधपणा रो खेरो न दीसे लिगार ॥ २५ ॥
 अकार्य अकार्य हूआ विशेषे ।
 ते तो प्राच्छित लेसी किण लेखें ॥ २६ ॥
 त्यारा पांचोइ महावरत भागा ठेहराया ।
 पाचोइ माहावरत जाबक उडायी ॥ २७ ॥
 कपडा नें नीचोया छें गये कालो ।
 त्यां सगलां ने दुष्टी दीयो छे आलो ॥ २८ ॥
 तो नीलण फूलण रा जीव अनंता रों घाती ।
 ते हीयाफूट गवां रा साथी ॥ २९ ॥
 भीनो राखे ते कारण काइ ।
 ओ पिण विकला रे निरणों छे नाही ॥ ३० ॥
 चोखी छे त्यांरी सुमत ने गुपती ।
 त्याने पाप कठा सूं लागे रे कुमती ॥ ३१ ॥
 त्यांरो साधपणो पापी कहे छे भागो ।
 ते किसों पाप साधां ने लागों ॥ ३२ ॥
 पिण साधा नें कपडो नीचोवणो नाही ।
 तिणरो साधु नें पाप न लागे काई ॥ ३३ ॥
 साधू ने कपडा रे लगावणो हाथ ।
 साधू ने नीचोवणो नही असमात ॥ ३४ ॥
 ते नीचोवणो किण ही सुतरमे न चाल्यो ।
 हीया में घोचो अणहूंतो घाल्यो ॥ ३५ ॥
 पाणी बहे छें बजार रे माहि ।
 ओ पिण सुतर मे चाल्यो नाही ॥ ३६ ॥
 काचो पांणी घाल्यो तिण घोवण मांही ।
 ओ पिण सुतर मे चाल्यो नाही ॥ ३७ ॥
 काचो पांणी घाल्यो छें त्यां माही ।
 ओ पिण सुतर में चाल्यो नाही ॥ ३८ ॥
 जब तो कहे म्हे तो अचित हूआं ल्या छो ।
 तिणमे दोष कहे आल किण लेखेद्यो छो ॥ ३९ ॥

अचित्त पांणी हूआं पछें कपडों नीचोयों,
तो थे पिण पछें बोल कह्या त्यारों,
अचित्त पांणी हुआं कपडो नीचोयो तिणमें,
तिण साधणों ओलखीयों न दीसैं,
पातरा माहे दूध दही चास धोवण,
त्यानें तो खाता पीता नही संकें,
गोचरी करतां छांट पूंहरा आया,
तो अचित्त पांणी हूआं पछे कपडों नीचोवें,
अचित्त पांणी हुआं पछें कपडो नीचोयों,
अण विचार्या आल पाषंडीयां दीघो,
अचित्त पांणी हूआं पछें कपडो नीचोयों,
त्यानें बांदें पूजें सुध साध जाणनें,
इण भूठाबोलां री परतीत न करणी,
तिण पूछ्या रा जाब न आवें पूरा,
इण भूठाबोलां री परतीत करसी,
न्याय निरणा विना आल साघां नें देसी,
मेंला चीगटा कपडा मेह सूं भीना,
तिणमें नीलण फूलणादिक कंथूया उपजें,
दोय च्यार महीना तिण कपडा माहें,
जीव उपजे तों नचित्त सूं उपजों,
मेंला चीगटा कपडा मेह सूं भीना,
तो पिण कपडा नें भिनें राखणों,
अचित्त पांणी हूआं पछें कपडो नीचोवें,
इतरी पिण ओलखणा नही तिणनें,
अचित्त पांणी हूआं पछें कपडो नीचोवेणो,
समत अठारें सतावने वरसैं,

त्यानें कह्यो थें-सुतर में काढ दिखावों ।
सुतर मांसूं काढ वतावो ॥ ४० ॥
दोस कहें त्यारे पूरों अंधारो ।
भेष पहर नें आत्म कीधी खुवारो ॥ ४१ ॥
तिण माहे काचों पांणी पडीयो छें आयों ।
तो कपडों नीचोयां दोष कह्यो किण न्यायो ॥ ४२ ॥
जब उभा रहें ग्रहस्थ रा घर माह्यो ।
तिण माहे दोष कह्यो किण न्यायो ॥ ४३ ॥
तिणमें दोष कहें छें ते बोलें छें उंवा ।
ते भारीकर्मा किम बोलसी सूघा ॥ ४४ ॥
तिणमें दोष कहें मूढ विना विचारों ।
त्यारें पिण जाणजो पूरों अंधारो ॥ ४५ ॥
ओं तों कार्यों हूओकहि दे काचो पांणी ।
जब थोडां में बोलें फिरती वांणी ॥ ४६ ॥
ते भव २ माहे घणा पिच्छतासी ।
ते नरक निगोद में म्नीका खासी ॥ ४७ ॥
पांणी अचित्त हुआंइ नीचोवणों नांही ।
तिणरो साघू ने पाप न लागो कांइ ॥ ४८ ॥
नीलण फूलणादिक जीव उपजे आय ।
पिण कपडा नें नीचोवणों नहीं ताय ॥ ४९ ॥
पोहर हुवें तथा आधीरात ।
पिण नीचोवणा नही अंसमात ॥ ५० ॥
तिण में दोष कहें छें मतहीण भिष्टी ।
निश्चेंइ साध न जाणें समदिष्टी ॥ ५१ ॥
ते ओलखायो पुर सहर मभार ।
आसोज विद नवमी ने सुकरवार ॥ ५२ ॥

ढाल : २०

दुहा

केइ भेषघारी सुघ बुघ विना, बोले नही वचन विचार ।
कहे हिवडा आरो छे पाचमो, पूरो पले नही आचार ॥ १ ॥
म्हे दोष सेवा छा भारी २ जाण ने, तिणरो प्रायच्छित्त पिण न ल्यां तिलमात ।
तो पिण म्हे सुघ साध छां, प्रसिद्ध लोक विख्यात ॥ २ ॥
म्हे बाजार मे परठा मातरो, तिणरो चोमासी प्राच्छित्त साख्यात ।
ते म्हे परढ्यो परठां परठसां, तिणरो प्राच्छित्त न ल्या असमात ॥ ३ ॥
कोइ आवे नही ने देखे नही, तठे मातरो परठणो विचार ।
ते म्हे परठा छा लोकां देखता, तिणरो प्राच्छित्त नही ल्या लिगार ॥ ४ ॥
इत्यादिक दोष अनेक छे, ते पिण सेवा छा वाल्बार ।
ते म्हे दोष सेवा छा जाण २ ने, तिणरो प्राच्छित्त नही ल्यां लिगार ॥ ५ ॥
बाजार मे परठा छां मातरो, भारी दोष जाणे तिण माय ।
तिण लेखे त्यामे साघपणो नही, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[म० जिश आग्या०]

दस पांच वार एकण दिन माहे, मातरो परठे बाजार माय ।
यारी सरघा रे लेखे जिती वार परठे, जितरा चोमासी प्रायच्छित्त आय रे ।
भवीयण जोवो हिरदय विचारी, थे काय करो आत्म भारी रे ।
भवीयण सूत्र जोय करो निसतारी* ॥ १ ॥
एक दिन मातरो परठे तिणरो, चोमासी प्रायच्छित्त आवे ।
इण लेखे एक दिन रा मातरा परठण मे, अनेक दिना रो साघपणो जावे रे ॥ २ ॥
तो ए नित्त २ अनेक चोमासी रो प्राच्छित्त, जाण २ सेवे दिन रात ।
इण लेखे तो यामे साघपणा री, बाकी रह्यो नही असमात रे ॥ ३ ॥
इण विचे तो अनेक भारी २ दोष, नित्त २ सेवे छे ताहि ।
यारो साघपणो वहि गयो जाबक, मातरा परठण रा दोष माहि रे ॥ ४ ॥
या मातरा परठण मे दोष वतायो, तिण लेखे त्या साघपणो खोयो ।
तो बीजा भारी २ दोषां रो प्रायच्छित्त, त्यारी तिथ न करणी कोयो रे ॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

एक पइसा रा लेंगायत आगे, देवालें कढे दीयों नागें ।
 जब भारी र बोहरा हुता ते, तिण पासे आयनें कांइ मागें रे ॥ ६ ॥
 तो एक मातरों परठें बाजार में तिणरों, यांहीज दोष अणहूंतो बतायों ।
 इण लेखें तो यांहीज यांरो साधपणों, अमारे धूएं जाबक उडायो रे ॥ ७ ॥
 साधां ने दोषीला थापण नें, अपरोइ साधपणों गमायों ।
 बाजार मे मातरों परठण रो, अणहूंतों दोष बतायो रे ॥ ८ ॥
 कोइ पेंला नें कुसावण करवा, आपरो नाक देवें कटाय ।
 ज्यू ए साधां नें दोषीला थापण, आप दोषीला होय जाय रे ॥ ९ ॥
 यांरा बडवडेरा आगें हुआ त्यां, मातरों परठ्यों बाजार माह्यों ।
 तिण माहें चोमासी दोष बताए, यांरा बडां नें दीया उडायो रे ॥ १० ॥
 यांरा बडा बडेरा आगे हुआ ते, ओं तो दोष किणही न बतायो ।
 बाजार माहें मातरा परठण रों, ओं तो यांहीज दोष बतायो रे ॥ ११ ॥
 साधु तो बाजार में मातरों परठें, घणा लोकां देखंता ताहि ।
 तिण माहे दोष अणहूंतो बतायो, तिण रो-मूढ न जाणें न्यायो रे ॥ १२ ॥
 उचार पासवण परठण रों प्राच्छित कह्यों ते, उचार आश्री प्राच्छित जाणो ।
 पासवण परठ्यां रो प्राच्छित नही छें, तिणनें रूडी रीत पिछांणो रे ॥ १३ ॥
 पासवण तो कही छें उचार रें सहचर, एकली पासवण कही छें नांही ।
 तिणरों निरणों कहूं छें नसीत सूतर सूं, ते विचार करे देखों मन मांही रे ॥ १४ ॥
 नसीत सूतर रे चोथें उदेशें, उचारपासवण परठ्यां पछे सुच करणों ।
 कह्यो छें उचार रों असुच टालण नें, तिणरो बुधवंत कीजो निरणों रे ॥ १५ ॥
 उचारपासवण परठीयां पछें, कपडा सूं लूहें नांही ।
 तिणनें मासीक प्रायच्छित आवें, नसीत सूतर रे मांही रे ॥ १६ ॥
 उचारपासवण परठीयां पछें, लकडी नें वांस तण खपाट ।
 बले आंगुली ने सिलका करी लूहें, तिणने मासीक प्राच्छित रो पाठ रे ॥ १७ ॥
 कपडा सूं लूहणों चाल्यो, लकडादिक सूं लूहणों नांही ।
 ते पिण उचार आश्री कह्यों छें, पासवण रो लूहसी कांइ रे ॥ १८ ॥
 उचारपासवण परठीयां पछें, सुच नही लेवें ताय ।
 असुच तणों लेप लागों राखें, तिणनें मासीक प्रायच्छित आय रे ॥ १९ ॥
 लेप टालणों कह्यों छें सुच लेइ नें, ते तों उचार आश्री छें तांम ।
 पासवण तो पोंतैइज सुच छें, इणरो सुच तणो कांइ काम रे ॥ २० ॥
 उचारपासवण परठीयां पछें, तिण उपर सुच लेवें ताहि ।
 तिणनें मासीक प्राच्छित कह्यों छें, नसीत सूतर रे मांही रे ॥ २१ ॥

उच्चारपासवण परठीयां पछें, तिहांइज सुच लेवणो नाही ।
 ते पिण उच्चार उपर लेंणो वरज्यो, अठे पासवण रों कांम कांड रे ॥ २२ ॥
 उच्चारपासवण परठीयां पछे, सुच लेवे घणों अलगों जाय ।
 तिणने पिण मासीक प्रायच्छित आवें, ते पिण उच्चार आश्री छे ताहि रे ॥ २३ ॥
 उच्चारपासवण परठीया पछे, सुच लेणो कह्यो जिणराय ।
 तीन पुसली सूं पाणी इधको लेवे, तिणने मासीक प्रायचित्त आय रे ॥ २४ ॥
 तीन पुसली सूं सुच लेणो चाल्यो छे, उच्चार आश्री कह्यो छें ताम ।
 पासवण तों पोतेइ सुच छे, पासवण ने सुच रो नही कांम रे ॥ २५ ॥
 इतरा तो बोल नसीत मे चाल्या, चोथा उदेसा माहि ।
 वले चोमासी प्राच्छित रा बोल अनेक, पनरमे उदेशे छे ताहि रे ॥ २६ ॥
 कोइ आवे नही वले देखे नही, तिहां परठणो कह्यो जिणराय ।
 उत्तराघेन चोवीस मे घेने, तिणरों पिण न जांण्यो न्याय रे ॥ २७ ॥
 उच्चारपासवण तो लधू बडी नीत, खेल ते मुख नो बलखो जाणो ।
 सघाण ते नाक नों छे सलेषम, जल ते मेल लीजो पिच्छाणो रे ॥ २८ ॥
 आहार ते असणादिक च्यारू, उपधि ते सारा उपगरण जाणो ।
 देह सरीर जीव सूं रहीत हूवो ते, इत्यादिक दरव अनेक पिच्छाणो रे ॥ २९ ॥
 यामे तथाविध छें परठवा जोग, सुध थडले परठणा तांम ।
 जेंणा ने उपयोग सहीत सूं, राखेनें सुध परिणाम रे ॥ ३० ॥
 कोइ आवे नही वले देखे नांही, तिहां परठणों कह्यो जिणराय ।
 तिणमे किणही एक दरव आश्री कह्यो छे, उच्चारपासवण रें न्याय रे ॥ ३१ ॥
 ज्यूं मिनष मे उपीयोग बारे कह्या छे, पिण एकण मे बारे छें नाही ।
 ज्यूं समचे कह्यो आवे देखे नाही, तिहा परठण री विध जाणजो याही रे ॥ ३२ ॥
 कोइ आवें नही वले देखे नही तिहां, सरीरादिक परठणों जाय ।
 तिण संग्रह शब्द मे सगला कह्या पिण, सगला नही छें ताय रे ॥ ३३ ॥
 आहार उपधि गृहस्थ रे काम आवे छे, तिण देखतां परठणों नांही ।
 अथवा तिण देख्यां हेला निंदा हुवे, ते विचार करणो मन मांही रे ॥ ३४ ॥
 जब कोइ कहे ग्रहस्थ देखतां, परठणो नही लिंगारो ।
 उत्तराघेन मे सगलो वरज्यो छे, ओ देखलो पाठ उघाडो रे ॥ ३५ ॥
 इम कहे तिणनें ग्रहस्थ देखतां, काजो पिण परठणो नांही ।
 पग पूजें ने रज दूर न करणी, राखादिक नही परठणी कांड रे ॥ ३६ ॥
 पाणी नीतारीयां पछे लारलो गरवो, ते पिण देखतां परठणो नाही ।
 भोलो लूहणो गलणो घोया पछे, घोवण देखतां परठणो नही काई रे ॥ ३७ ॥

वधे धोवण पांणी पीतां बधे तो, ते पिण देखतां परठणों नांही ।
 वले फूकदादिक नें सरीर मेल, देखतां नही परठणो काइ रे ॥ ३८ ॥
 देखतां नही धोवण खोलीयादिक ने, पगादिक पिण धोवणा नांही ।
 गोबरादि पगां रे लागों हुवे तो, देखतां अलगो करणों नहीं त्यांही रे ॥ ३९ ॥
 भाडो ढलीयों बगदो ने रेत, ए पिण देखतां परठणा नांही ।
 वले खेल संघाण नें मातरादिक, देखतां परठणो नही काइ रे ॥ ४० ॥
 जो सगला दरब देखतां वरज्या छें, तों ए परठें छे किण लेखे ।
 त्यांरी अमितर आंख हीयारी फूटी, पोतें बोल्या री पोते न देखे रे ॥ ४१ ॥
 जब तों कहे म्हें दोष जाणे नें सेवां, तिण सूं देखतां परठां छां ताय ।
 पिण ए सुध साध बाजें लोकां मे, ते दोष सेवें किण न्याय रे ॥ ४२ ॥
 इम कहे ने अग्यानी पार होय जावें, साधां नें उथापण विशेषे ।
 परठण रो दोष अणहूतो बतावे, पिण सूतर साहो न देखें रे ॥ ४३ ॥
 साधां नें दोषीला थापण, पोतें पिण दोषीला जाय ।
 आपरो साधपणो जाबक उठे छे, तिणरी खबर न काय रे ॥ ४४ ॥
 पिण एतों अनेक दरब देखतां परठें, एक दिन माहे वार अनेक ।
 वले साधपणां रो नांव धरावें, ते बूडे छें विनां ववेक रे ॥ ४५ ॥
 ओर तो भारी भारी दोष अनेक, सेवे छें दिनरात ।
 पिण यां परठण रों दोष बतायो तिणमें, साधपणों न रह्यो अंस मात रे ॥ ४६ ॥
 अंग उपंग उधाडा करने, उचार परठणों एकंत जाय ।
 तिहां आवे नही देखें नही ग्रहस्थ, तो निद्या लोकां में न थाय रे ॥ ४७ ॥
 आहार सुखडी खादिम सादिम घणा हुवें, ते पिण देखतां परठणो नांही ।
 ते असणादिक ग्रहस्थ रे काम आवे, वले निद्या पांमे लोकां मांही रे ॥ ४८ ॥
 उपधि कपडादिक घणा हुवें तों, लोकां देखतां परठणों नांही ।
 ए पिण ग्रहस्थ रें काम आवे छें, वले निदा पांमें लोकां मांही रे ॥ ४९ ॥
 जीव रहीत सरीर हुवें जब, ते पिण देखतां परठणों नांही ।
 ते एकंत जायगा नहीं परठे तों, हेला निद्या पांमें लोकां मांही रे ॥ ५० ॥
 त्यामें केइ दरब तो मारग मांहे परठ्यां, बेइन्द्रीयादिक आवें साख्यात ।
 तिण सूं मारग टाले नें एकंत परठें, तो टलें जीवां री घात रे ॥ ५१ ॥
 जे जे दरब देखता परठ्यां, ग्रहस्थ रे काम नावे काइ ।
 वले हेला निदा अजेंणा न हुवें तों, देखतां परठ्यां दोष छे नांही रे ॥ ५२ ॥
 असणादिक सीतमात्र खारा खेरो, उपगरणादि अंसमात ।
 ते अजेंणा निद्या टालमें देखतां परठ्यां, तिणमें दोष नही तिलमात रे ॥ ५३ ॥

दस दोप रहीत षेत्र हुवें तिहां, परठणो रूठी रीत जाण ।
सगला वोला रो षेत्र समचे कह्यो छे, तिण री बुधवत करजो पिछ्छाण रे ॥ ५४ ॥
आवे नही वले देखे नाही, संजम प्रवचन विराधीजे नाही ।
वले उची नीची भूम नही हुवें, त्रिणा पत्रादिक नही त्याही रे ॥ ५५ ॥
थोडा कालनो अचित थडलो हुवे, विसतीरण कही जगनाथ ।
च्यार आंगुल कही अचित उपरली, गामादिक थी दूर विख्यात रे ॥ ५६ ॥
बिल उदरादिक नही रूघाइ, तस प्राण वीजादिक रहीत ।
दस बोल कह्या छें समचे दरवां रा, ज्यू उचार पासवण री रीते रे ॥ ५७ ॥
पिण सगलाइ दरब परठण रे उपर, दस दस बोल कह्या छे नाही ।
कोइ चतुर विचषण डाहा हुवें, ते, विचार करो मन माही रे ॥ ५८ ॥
तीन च्यार मारग भेला हुवे तिण ठामे, वले मझं बाजार रे माही ।
तिण ठामे साध ने उतरणो चाल्यो, ते क्यूं मातरो परठसी नांही ॥ ५९ ॥
मातरा ने ओर दरब परठण री, विघ ओलखाइ पुर सहर मझार ।
सवत अठारे सतावने वरसे, आसोज सुद तेरस मगलवार रे ॥ ६० ॥



दुहल

भलषुत भलगल वलकल हुलल तके, करुु अलसुध वुुहरण रल थलप ।
 ऑर ऑु अलसुध अरुु हुरुतल, थुथल करुु अगुुलनी वललप ॥ १ ॥
 कलहलंगक पलठ ऑु सुतर डुु, तलणरुु नुुलल डुुले नहुुी डुुड ।
 ललधल नुु अलसुध वुुहरलवुुलल धरुु कहुु, एहवुु करुु अगुुलनी रुुड ॥ २ ॥
 ललधल नुु अलसुध वुुहरलवुुलल, तलणडुु धरुु नहुुी अंसडलत ।
 धरुु कहुु अलसुध वुुहरलवुुलल, तलणरल घऑ डुु घुुल डलथुुलत ॥ ३ ॥
 ऑुलर आहलर लऑलत नुु असुडडतल, शुरलवक वुुहरलवुु ऑलण ऑलण ।
 तलणडुु डलप अलप डहुुत नलरऑरल, एहवुु करुु अगुुलनी तलण ॥ ॡ ॥
 ए पलठ डुुगुतुु सुतर डडुु, शतक आठडल डलंल ।
 तलणरुु अरुु करणवललु डलण डरडुुडुु, तलण कुवलुुललल नुु डुुडुु डललल ॥ ॡ ॥
 ऑुदडरुुथ अरुु करुु इहलं, तलणरुु कुवलुु ऑलण नुुलल ।
 कदल कुुडुु डुुववंत डुुध थकुु, उनडलंन थुु डुुवुु डतलल ॥ ॢ ॥
 ऑलण अडलसु थलडुुलल, वुुलर वऑन वलगऑलल ।
 सुतर सुु डलण डलले नहुुी, ते डुरतष डुुसुु अनुुलल ॥ ॣ ॥
 ललध नुु लऑलत नुु अलसुध डुुलल, कहुु डुुहुत नलरऑरल अलप डलप ।
 वलण उंघुु सरघल रुु नलरणुु कहुु, ते सुणऑुु ऑुपऑलप ॥ ॡ ॥

ढलल

[आ अलसुकडुुडल ऑलल शुरलगुुल डुु]

अडलसु आहलर नुु लऑलत कहुुी, ऑलण, अणलसणुुऑुुणं ते असुडडतुु थलवुु ।
 ते ललधल नुु शुरलवक ऑलणे वुुहरलवे, तलणरुु अलप डलप नुु डुुहुत नलरऑरल डतलवुु ।
 असुध वहरण रल थलप करुु ते अगुुलनी, तथल असुध वुुहरण रल थलप करुु डत कुुडुु* ॥ १ ॥
 कुुरु अन लऑलत नुु असुडडतुु ऑु, ते ललधल नुु शुरलवक ऑलण वुुहरलवुु ।
 तलणडुु ऑलण डलरग रल अऑलण अगुुलनी, तलणरुु अलप डलप नुु डुुहुत नलरऑरल डतलवुु ॥ २ ॥
 कलऑु डलणुु लऑलत नुु असुडडतुु ऑु, ते ललधल नुु शुरलवक ऑलण वुुहरलवुु ।
 तलणडुु ऑलण डलरग रल अऑलण अगुुलनी, अलप डलप नुु डुुहुत नलरऑरल डतलवुु ॥ ३ ॥
 कलऑु डलल डलडडलदलक असुडडतल ऑु, ते ललधल नुु शुरलवक ऑलण वुुहरलवुु ।
 तलण डुुलल डुु डुुड डलथुुलतुु ऑुलवडल, अलप तुु डलप नुु डुुहुत नलरऑरल डतलवुु ॥ ॡ ॥

*डुुह आँकडुु डुरतुुके गलथल कुु अनुुत डुु हुु ।

सचित्त पान ढोडादिक असुभता छें, ते साधा नें श्रावक जाणे वेहरावें ।
 तिण दीघां में मूढ मिथ्याती जीव, अल्प तो पाप ने बोहत निरजरा वतावे ॥ ५ ॥
 च्यारूं आहार सचित्त ने असुभता छे, ते साधाने श्रावक जाणे वेहरावे ।
 तिण दीघा में मूढ मिथ्याती जीव, तिणें अल्पपापने बोहत निरजरा वतावे ॥ ६ ॥
 साधानें आहार सचित्त ने असुघ वेहरावे, तिण श्रावक रों वारमों व्रत भागो ।
 साधु जाणेनें सचित्त असुभतो लेवें तो, ओ पिण व्रत भागे नें होय गयो नागो ॥ ७ ॥
 साधां रें आहार सचित्त ने असुघ लेवण रा, जीवे ज्यां लग्य छें पचखाण ।
 रोगादिक पीढ्यां साधू रा प्राण जाएं तोही, सचित्त नें असुभतो नही लेवें जाण ॥ ८ ॥
 असलं श्रावक ते साधाने असुघ न देवे, मुघ साधां रा जाता देखे तोही प्राण ।
 असुघ देवें साधां रो साधपणों न लूटें, पोता रा लीघा चोखा पाले पचखाण ॥ ९ ॥
 कदा राग रो घाल्यो असुघ वेहरावें, तिणमें संवर निरजरा अंस न जाणे ।
 व्रत मांगों नें पाप लागो छें तिणरो, प्राच्छित ले व्रत राखें ठिकाणे ॥ १० ॥
 च्यारूं आहार सचित्त ने असुभता छे, ते साधा नें श्रावक जाणें केम वेहरावें ।
 मुघ साधू तो जाणेने असुघ न वेहरें, अल्प पाप ने बोहत निरजरा किम थावे ॥ ११ ॥
 अफासु नें अणेसणीज्जे पाठ सूतर में, तिण पाठ रो अर्थ सूघो कहणी नावे ।
 जयातथ तिणरो अर्थ करे तो, घणां लोकां में सेखी उड जावें ॥ १२ ॥
 तिणरा भूठा भूठा अर्थ अनेक वतावें, कदे कारण पढीयां रो नाम वतावें ।
 वले विविध प्रकारे घुचलाइ घाले नें, भारीकर्मा भोला लोकां नें भरमावें ॥ १३ ॥
 ओ तो पाठ भगोती सूतर मे छे, पिण आधां रे अंतरंग नही छेपिछाणो ।
 च्यारूं आहार सचित्त ने असुभता दीघा मे, बोहत निरजरा किहाथी होसी रे अयाणो ॥ १४ ॥
 फासु एषणीक साधु ने देवे श्रावक, ठाम ठाम बहु सूत्रां रे माहि ।
 ते सचित्त असुघ जाणे किम देवे, वले बोहत निरजरा जाणे किम ताहि ॥ १५ ॥
 इण पाठ नें मूढे आणे वांरुंवार, त्यांरा सचित्त नें असुघ खावा रा परिणाम ।
 जो असुघ वेहरण रा परिणाम नही छें, तो यूंही क्यां नें बकसी वेकाम ॥ १६ ॥
 च्यारूं आहार सचित्त ने असुघ वेहरावें, तिणरे तो अल्प आउपो बंधाय ।
 भगोती पाचमें सतक छठे उदेसें, वले तीजें ठाणें ठाण अंग भाय ॥ १७ ॥
 साध नें आहार सचित्त नें असुघ वेहरावें, अल्प पाप ने बोहत निरजरा थाय ।
 जब तो ठाण अंग नें भगोती सूतर रो, पाठ ने अर्थ दोनुंइ लुथप जाय ॥ १८ ॥
 साधू ने जाणनें आघाकर्मा वेहरावें, ते तो चारित धर्म रो लूटणहार ।
 ते पिण नरक निगोद में भींकां खावें, उतकष्टों रुळें तो अनंतो काल ॥ १९ ॥
 आघाकर्मा वेहरायां छें एकंत पाप, सचित्त नें असुघ वेहरायां ओ पिण पाप ।
 च्यारूं आहार सचित्त ने असुघ वेहराया, तिणें मूढ करे बोहत निरजरा री थाप ॥ २० ॥

साधां नें असुध आहार तो अभष कह्यो जिण,
 तिणरें अल्प दोष बोहत निरजरा कहें ते,
 साधां नें असुध आहार तो अभष कह्यो जिण,
 ते अभष आहार साधां नें श्रावक वेंहरायां,
 कुसीलीया ते हीण आचारी,
 रोगीयादिक गिलाण नें अर्थे,
 ए तो आचारंग रे छठें अघेन नें,
 तो सचित्त नें असुभतो साधां नें दीघां,
 नही कल्पे ते वस्तु साधु वेंहरें तो,
 कह्यो छें आचारंग पेहलें सतखंघें,
 ठाम ठाम सूतरमें नषेध्यों,
 श्रावक नें पिण असुध न देंणों,
 च्यार आहार सचित्त नें असुभता छे,
 आपरी तरफ सू सुध व्यवहार करनें,
 तिणरी पागमें सचित्त पंखीयादिक न्हाख्यों,
 तिणरी श्रावक नें काइ खबर नहीं छें,
 इण रीतें आहार सचित्त नें असुभतो छें,
 अल्प पाप ते पाप तणों छें नकारों,
 कें तो अजाणणें साधु नें वेंहरावे,
 इण रीते ए पाठ नो अर्थ हुवें तों,
 उनों पाणी निसंक सू श्रावक जाणें छें,
 तिण ठाम में काचों पाणी घर रां घाल्यो,
 तिण पाणीनें श्रावक उनों जाणेनें,
 तिणरें अल्प पाप ने बोहत निरजरा हुवें तों,
 कोरा चिणा पड्या छें भूंगडादिक में,
 तिणरी श्रावक नें खबर न काई,
 अचित्त दाखां में सचित्त दाखां पडी छें,
 तिणरी श्रावक नें तो खबर न काइ,
 इत्यादिक अनेक सचित्त वस्तु छें,
 ते पिण आपरी तरफ सु चोकस करनें,
 इण रीतें श्रावक रें बहोत निरजरा हुवें,
 म्हें तो अटकल सू उनमान कख्यो छें,

ते अभष आहार देवें दातार ।
 भूल गया मूढ विना विचार ॥ २१ ॥
 निरावलिका भगोती गिनाता मांय ।
 अल्प पाप ने बोहत निरजरा किम थाय ॥ २२ ॥
 विणा विचारीयां बोलसी वेणों ।
 आधाकर्मीयादिक जाणें लेंणों ॥ २३ ॥
 ते जोयलो चोथा ज्वेसा मांय ।
 अल्प पाप ने बहोत निरजरा किम थाय ॥ २४ ॥
 तिणनें तो चोर कह्यो जिणराय ।
 अठमांघेन पहिला ज्वेसा मांय ॥ २५ ॥
 साधांनें असुध लेंणों नहीं काई ।
 असुध दीयां में धर्म छें नाहीं ॥ २६ ॥
 त्यानें श्रावक तो निसंक सू जाणें सुध मान ।
 साधां नें हरष दीयो छें दांन ॥ २७ ॥
 अथवा सचित्त रजादिक लागी छें आय ।
 पिण व्यवहार सू सुध जाण दियो वेंहराय ॥ २८ ॥
 पिण श्रावक तो सुध जाणे नें वेंहरावें ।
 चोखा परिणाम सू बहोत निरजरा थावें ॥ २९ ॥
 तिणरी तरफ सू फासु नें सुभतो जाण ।
 ते पिण केवल ग्यानी वदे ते प्रमाण ॥ ३० ॥
 तिण पाणी नें घर रां बावर दीयो ताय ।
 तिणरी तो श्रावक नें खबर न कांय ॥ ३१ ॥
 निसंक सू साधां नें दीयो वेंहराय ।
 ते पिण केवल ग्यानी नें देंणों भलाय ॥ ३२ ॥
 सचित्त गेहूं पड्यां छें बाणी रे मांय ।
 सुभता जाणी साधां नें दीयां वेंहराय ॥ ३३ ॥
 अचित्त खादम में सचित्त खादम छें ताय ।
 ते सुभतो जाणनें दीयो वेंहराय ॥ ३४ ॥
 ते श्रावक निसंक सु अचित्त जाण ।
 साधां नें वहरावें घणों हरष आण ॥ ३५ ॥
 तो पिण केवल ग्यानी जाणें ।
 वले सुतर रा अनुसारा प्रमाणें ॥ ३६ ॥

आधाकर्मी साधु जाणेने भोगवे तो,
 असुघ देवे ते संजम रो लूटणहारो,
 आधाकर्मी साधु अजाणे भोगवें तो,
 तिण दातार नें पूछें निरणों कर लीघो,
 आधाकर्मी आहार कीयो तिणरें घर,
 ते आहार अनेक घरां रे आंतरे,
 तिण आहार भोगवतां सुघ साधु रे,
 सुयगडाअग इक्वीसमे अधेने,
 च्यार आहार सचित ने असुभता छें,
 ते सुभता जाणे साधां ने वेंहरावे,
 च्यार आहार अचित्त नें सुभता छे,
 ते सका सहीत साधा ने वेहरावे,
 सावच्च जोग सूं एकत पाप लागे छे,
 थोडो पाप नें वोहत निरजरा बतावे,
 सका सहीत आहार साधां ने वेहरायो,
 तो सचित ने असुभतो जाणने देसी,
 सुघ साधा भेलो तो अभवी रहे छे,
 तिण अभवी नें साध वादे पूजे छे,
 साधां भेलो रहे चोथा व्रतरो भागल,
 तिणनें वादे पूजे आहार पांणी देवे छे,
 अभवी भागल ने जाणे माहे राखें,
 ज्युं सचित ने असुभतो जाण वेंहराया,
 सचित ने असुभतो आहार दीयां मे,
 दोय वाना सरध्यां मिश्र दान थपे छे,
 मिश्र वालां री सरधा ने खोटी कहे छे,
 आपरा बोल्यां री आपने समझ न काइ,
 मिश्र थापण वालां री तो सरधा खोटी छे,
 मिश्र दान रा सूंस न करावां म्हे किण नें,
 साधा नें आहार असुघ देवण रो,
 अल्प दोष नें बहोत निरजरा जाणे छे,
 कले साधा रे अंतराय आहार री पाडी,
 अल्प दोष थकी बोहत निरजरा हुंती थी,

नरक निगोद मे भीखा खावें ।
 चहू गति मे घणो दुख पावे ॥ ३७ ॥
 पाप रो अस न लागो लिगार ।
 संका सहीत पिण नही लीयो तिणवार ॥ ३८ ॥
 उणरे तों घरे साधु वेहरण गयो नांही ।
 निरणो करे वेहृच्छें प्रातरा माही ॥ ३९ ॥
 पापरो लेप न लागो कांइ ।
 जोयकरो निरणो घट मांही ॥ ४० ॥
 तिणरी श्रावकने खवर नही छें लिगार ।
 तिणरा छे निरवद जोग व्यापार ॥ ४१ ॥
 पिण श्रावक रे संका पडी तिणवार ।
 तिणरा सावच्च जोग व्यापार ॥ ४२ ॥
 निरवद जोग सूं निरजरा ने पुन थाय ।
 तिणने पूछीजे किसा जोगा सूं हुवे ताय ॥ ४३ ॥
 तिण घर रो माल खोयने पाप लगायो ।
 तिणरे वोहत निरजरा किण विघ थायो ॥ ४४ ॥
 तिणरो साधु देखें छे सुघ ववहार ।
 तिणरो साधा ने दोष न लागे लिगार ॥ ४५ ॥
 ते तो छानो छे तिणरो न पड्यो उघाड ।
 तिणरो साधां ने दोष न लागो लिगार ॥ ४६ ॥
 जब सर्व साधा रो साधुणो भागें ।
 तिणरे निश्चेइ एकत पापज लागें ॥ ४७ ॥
 अल्प पापने निरजरा सरखे किण लेखें ।
 मिश्र उथाप्यो तिण सामो क्यूं नही देखे ॥ ४८ ॥
 पोते पिण मिश्र थापे छे मूढ मिथ्याती ।
 ते तो हीयाफूट गधा रा साथी ॥ ४९ ॥
 ते कहे मिश्र मे मुन राखां छा ताय ।
 त्याने पिण त्यारा भूठरी खवर न काय ॥ ५० ॥
 ए त्याग करावे छे किण न्याय ।
 तिणरे निरजरा री कांय देवे अतराय ॥ ५१ ॥
 दातार नें अंतराय दीधी छे विशेखें ।
 तिणने सुस करायो छें किण लेखे ॥ ५२ ॥

श्रावक साधां नें असुध जांणनें वेंहरावें,
 तिणनें असुभक्तो दान देवण रा,
 मुख सूं कहो मिश्र दान तणा म्हे,
 इण मिश्र दान रा सूंस करायां,
 मूला गाजर जमीकंद दान देवें छें,
 तिण दान रा सूंस करावो नांही,
 अल्प पाप ने बहोत निरजर रा जाणो छो,
 बहोत पाप ने निरजर अल्प जाणो थे,
 कोइ कहे यां तो सूतर रो पाठ उथाप्यो,
 मोह मतवाला ज्यूं बोलें अग्यानी,
 च्याहूं आहार सचित नें असुभक्ता छें,
 अल्प पाप ने बहोत निरजरा कहे छें,
 च्यार आहार सचित नें असुभक्ता वेहरे,
 च्यार आहार सचित नें असुध न लेवे,
 च्यार आहार सचित सावां ने वेहरावे,
 च्याहूं आहार सचित नें असुध न देवें,
 जेसाइ साध ने जेसाइ श्रावक,
 जेसा कूं तेंसा आय मिलीया छें,
 अल्प पाप ने बहोत निरजर रा उपर,
 समत अठारें वरस सतावनें,

तिणनें धर्म ने पाप दोनूइ जांणो ।
 किसे लेखे करावो पचखाणो ॥ ५३ ॥
 किणनेंइ सूंस करावां नांही ।
 थांरी सरखा री वरग वूहा नही काई ॥ ५४ ॥
 तिणमें धर्म थोडो नें घणो कहे पाप ।
 मिश्र दान जाणी रहो चुपचाप ॥ ५५ ॥
 तिण दान तणां पचखाण करावो ।
 तिण दान रा सूंस करावो छो किणन्यावो ॥ ५६ ॥
 पिण पोतें उथाप्यो ते खबर न कांय ।
 ते सांभलजो भवीयण चित ल्याय ॥ ५७ ॥
 त्यांरा श्रावक त्यांनें क्यूं न वेंहरावे ।
 त्यांनें वेंहरावतां संका क्यूं ल्यावें ॥ ५८ ॥
 जब तो यां पाठ साचो करि थाप्यो ।
 जब पोतेंइज थाप्यो ने पोतें उथाप्यो ॥ ५९ ॥
 जब श्रावकाइ पाठ साचो कर थाप्यो ।
 जब त्यांहीज थाप्यो नें त्यांहीज उथाप्यो ॥ ६० ॥
 यां दोयां रे घट माहे घोर अंधारो ।
 उंटरे लारें उंट बांधी कतारो ॥ ६१ ॥
 जोड कीधी गंगापुर गांम मभार ।
 पोह सुद आठम मंगलवार ॥ ६२ ॥

ढाल : २२

ढुहा

भेषधारी मिष्टी भागला तणे, भूठ बोलण री सक न काय ।
 खोटी खोटी करे छे परूपणा, परभव सू डरे नही ताय ॥ १ ॥
 धावता वालक री माता भणी, दिष्या देणी नही छे जाण ।
 लेणवाली ने पिण लेणी नही, एहवी कहे छे अग्यांनी ताण ॥ २ ॥
 तीन च्यार वरस रो बालक हूवो, जाबक हांचल छोडयो छे ताहि ।
 ते बालक अन खातो हुवे, तठा पछे दिष्या ले माहि ॥ ३ ॥
 एहवी अछती अछती करे छें परूपणा, लोका सू मिलती बात जाण ।
 यारी सरवा सू एहीज फिट्टा पडे, ते सुणजो चतुर सुजाण ॥ ४ ॥

ढाल

[चतुर विचार करीने देखो]

जवू पद्दना मे अठारे नाता चाल्या, ते तो एहीज मिल मिल गावे जी ।
 धावतो वालक छोडे दिष्या लीघी वेस्या, तिणनें तो एहीज सरावें जी ।
 भूठबोला रो सग न कीजे* ॥ १ ॥
 त्रिण साप्रत धावतो बालक छोडे, एहीज कहे दिष्या लीघी जी ।
 एहीज इणनें सराय सराय, घणां लोकां मे प्रसिघ कीघी जी ॥ २ ॥
 यारा वड वडेरा दर पीढ्या लग, इण वेस्या ने घणी सराइ जी ।
 वले इणरो खेवो पार हूवो कहे, कहिता सक न आणी कांइ जी ॥ ३ ॥
 ए तो साचा जाण ने कहिता आया, आ तो कूडी न जाणी बातो जी ।
 त्या लारे कुववी कुमातर उठ्या, त्यानेंइज भूठा घाल्या साल्यातो जी ॥ ४ ॥
 वालक धावतो छोड दिष्या लीघी वेस्या, तिणने छहरायो एकत कूडो जी ।
 इणरा वड वडेरा कहितां आया त्यारे, भूठ घाले मूढे दीघी धूरो जी ॥ ५ ॥
 अठा पछें अठारे नाता ए कहसी, ए भूठा ने वले भूठ थासी रे ।
 यारे लेखे ए भूठ जाणे जाणे बोले, ते चिहुगति मे गोता खासी रे ॥ ६ ॥
 बालक धावे तिणरी माने दिष्या न देणी, ठाणा अग तीजो ठाणो छे साखी जी ।
 ओ पिण भूठ जाणेने बोले छे, इसडा भारीकर्मा छे अन्हाखी जी ॥ ७ ॥
 ठाणा अग तीजें ठाणे तीन जणा नें, दिष्या न देणी तामोजी ।
 नपुसक व्याधीयों कलीव तीजो, ओर वरज्या नही तिण ठामोजी ॥ ८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

बालक धावें तिणरी मानें दिष्या न देंगी,
 ते हीयाफूट गधा रा साथी,
 ठाणाअंग में तीजें अर्थ में घाल्यो,
 उगणीस जणां ने दिष्या न देणी,
 जो एं उगणीस बोलां ने साचा जाणें,
 उगणीस बोल मांहिला बोल अनेक,
 उगणीस बोलां में बालक विरध नें,
 तो एहीज बालक विरध मूंडे नें,
 बले चोर नें राजा रा अपराधी,
 वले आंधां नें दिष्या दे मांहि लीघो,
 उगणीस बोला माहें चाल्यो,
 तो एहीज दास दासी नें गोला,
 दुष्ट ने रिणीयो माथें देणहार,
 त्यांहीज त्यांनं दिष्या दीघी,
 बीहकण ने कहे छे दिष्या न देवी,
 ते बीहतो थको चोमासा माहे,
 वले बीजो बीहकण चोमासा माहे,
 भादरवे मास नीलो आलो चीथतो चाल्यो,
 अपहरने आंण्या बांदा ने,
 ओ पिण उगणीस जणां माहिलो,
 जात हीण नें पिण कहे दिष्या न देणी,
 त्यांनं पिण दिष्या देइ मांहि घाल्या,
 अंगहीण ने कहे छे दिष्या न देणी,
 ते ढचक ढचक करतो पग चाले,
 उगणीस जणां ने कहे दिष्या न देणी,
 त्यांनंइज दिष्या दीयां दोष न जाणें,
 एहव्रा भूटाबोलां री फिरती वांणी,
 ते समकत विरत विहूणा नागा,
 धावता बालक री मा दिष्या लेवें,
 न्यातीलां री आगता ले दिष्या लीघी,
 तिणमें भेषघार्यां तो दोष बतायो,
 सुध साधवी वधीयां यांने दुख लागो,

सूतर री साख दीघी ते भूठी जी ।
 तिणरी हीया नलाड री फूटी जी ॥ ९ ॥
 ते ग्रंथ तणा बोल जाणो जी ।
 ते जोय करो पिछ्छाणो जी ॥ १० ॥
 तो ए पग पग भूटा थावें जी ।
 यांहीज विकलां माहें पावें जी ॥ ११ ॥
 दिष्या देंगी वरजी छें त्यांही जी ।
 क्यूं लीघा टोला रें मांही जी ॥ १२ ॥
 त्यांनं पिण चारित दीघो जी ।
 ओ जाणेंनं खोटो काम कीघो जी ॥ १३ ॥
 दास नें दिष्या देंगी नांही जी ।
 मूंडलीया टोला मांही जी ॥ १४ ॥
 त्यांनं पिण कहे दिष्यां न देणी जी ।
 जब बूड गइ त्यांरी केणी जी ॥ १५ ॥
 तिणने पिण दिष्या दे माहें घाल्यो जी ।
 गाडें वेस दूजें गांम चाल्यो जी ॥ १६ ॥
 न्हास घोड ओर गांम लीघो रे ।
 काचो पांणी घणी वार पीघो जी १७ ॥
 तिणने पिण दिष्या दे माहे लीघो जी ।
 तो जाणं नें खोटो काम क्यूं कीघो जी ॥ १८ ॥
 जात हीण तो गोली नें गोला जी ।
 यूंही बोल्या फूटा जिम ढोला जी ॥ १९ ॥
 तिणनं पिण दिष्यो दे माहें घाल्यो जी ।
 तिण सूं सुखे न जांए चाल्यो जी ॥ २० ॥
 ए कह्या ते उगणीसा रें मांही जी ।
 यांरा बोल्या में साच न कांड जी ॥ २१ ॥
 तिणमें साच नहीं छें लिंगारो जी ।
 ते यूंही हारें जमवारो जी ॥ २२ ॥
 बालक न्यातीलां नें भलायो जी ।
 साधवीयां समीपें आयो जी ॥ २३ ॥
 दीयो अणहूंतो आलो जी ।
 तिण सूं बोलें आल पंपालो जी ॥ २४ ॥

वले कहे बालक री दया आणी ने, बालक री माने दिष्या न देणी जी ।
 सुव साधां रा घेष रा घाल्या, त्यांरी छे भूठी कहेणी जी ॥ २५ ॥
 वले एहीज बालक री माने, दिष्या लीधी बतावे जी ।
 एहवा भूठा बोला छे कुपातर, त्यारा बोल्या री परतीत नावे जी ॥ २६ ॥
 मेणरेहा बालक छोड दिष्या लीधी, तिणने तो एहीज थापें जी ।
 सुघ साघवीयां आगे दिष्या लीधी, तिणने भूठ बोली नें उथावे जी ॥ २७ ॥
 पद्मावती साघवी साघ पणामें, करकण्डू ने, जायो जी ।
 तिण मसाण मे बालक ने परठ्यो, तिणरी मन मे न आंणी कायो जी ॥ २८ ॥
 अठारे नाता मे बालक छोड वेस्या, चारित लीयो कहे साख्यातो जी ।
 सुघ साघवीयां आगे दिष्या लीधी, तिण सू बोले छे भूठ विख्यातो जी ॥ २९ ॥
 पद्मावती मेणरेहा कुबेर सेन्या वेस्या, सजम लीयो सुखदायो जी ।
 मेघघाख्या रे लेखे तीना रे, बालक री दया रही नही कायो जी ॥ ३० ॥
 या तीनां ने पहिला तो याहीज सराइ, हिवे याने भूठी ठेराइ जी ।
 साधा नें भूठा घालणने पापी, भूठी भूठी बातां उठाइ जी ॥ ३१ ॥
 किण ही बाइरे बंधो दिष्या लेवा रो, बधो पूरो हूवा दीक्षा लेंणी जी ।
 तिण दिन बालक हाचल धावें, यारे लेखे तो दिष्या न देणी जी ॥ ३२ ॥
 जो बालक री मा भेप घाख्यां ने पूछे, दिष्या लेउ के बालक घवाउं जी ।
 यामें घणो धर्म हुवे ते मोने वतावो, ज्यू हूं सुखसाता पाउजी ॥ ३३ ॥
 इम पूछ्यां मेघघाख्या ने जाब न आवे, जब अगल डगल उधा बोले जी ।
 न्याय निरणो तो मूल न दीसैं, जब भूठ रो टागरो खोलें जी ॥ ३४ ॥
 वीर कह्यो उत्तराघेन दसमे अवेने, समो एक न करणो प्रमादो जी ।
 तो बाइ तो दिष्या लेवण ने उठी, तिण री जेज किम करसी साधो जी ॥ ३५ ॥
 मेघघारी कहे उणने दिष्या न देंणी, बालक री दया आणी जी ।
 सूंस भागा रो कारण कोइ नही छे, एहवी बोले कुपातर वाणी जी ॥ ३६ ॥
 सूंस भाग्यां तो हुवे छे अनंत ससारी, बालक पाल्या वधे मोह कर्मो जी ।
 किसा बोल्यां री जिण आगना छे, किसा बोला माहे जिण घर्मो जी ॥ ३७ ॥
 सूंस भागे ने बालक पाले, तिणमे मेघघारी कहे घर्मो जी ।
 बालक छोडेन दिष्या लेवे, तिणरें वधे पाप कर्मो जी ॥ ३८ ॥
 सूंस न भागे ने दिष्या लेवे, तिणने भगवंत भाख्यो घर्मो जी ।
 सूंस भागे ने बालक पालें, तिणरें बघसी पाप कर्मो जी ॥ ३९ ॥
 बालक घवाया मे घर्म जाणें, ते निश्चे पापडी पूरा जी ।
 ते जिण मारग रा अजाण अग्यानी, जिण भाष्या घर्मं सूं हूरा जी ॥ ४० ॥

बाल घवायां में धर्म जाणें छें, दया जाणें छें रुडी जी ।
 तो सामायक माहें बालक न घवावे, आ दया तो पड गइ पूरी जी ॥ ४१ ॥
 किणरे मा ने बाप दोनूं छें बूढा, त्यांसूं हाल्यो चाल्यो नही जावें जी ।
 बले जाबक धन नही घर मांह्यो, वले कवडी कमावणी नावे जी ॥ ४२ ॥
 त्यारें एक बेटो माइतां नें, आंण देवें चुगो पांणी जी ।
 यारें लेखे तो इणनें दिष्या न देणी, माइतां री दया घट आंणी जी ॥ ४३ ॥
 एक दिष्या लीयां अनेक दुखी हुवें जब, तिणनें पिण दिष्या न देणी जी ।
 दिष्या लीधां किणनें दुख न हुवें, जब दीक्षा देणी ने लेणी जी ॥ ४४ ॥
 धावता बालक री मानें दिष्या न देणी, तिण लेखें घणां नें न देणी जी ।
 जो एं पाछला दुख पावें त्यानें दिष्या न देणी, तो बूड गइ त्यांरी केंणी जी ॥ ४५ ॥
 धावता बालक री माने दिष्या न देणी, ओं तो चोडें चलाया गोला जी ।
 यांरी डाहा हुवे ते बात न मानें, केइ मानें तके जाबक भोला जी ॥ ४६ ॥
 बालक री मां दिष्या लेवें तिणरा, परिणाम पाडें भेषधारी जी ।
 ते जिण मारग रा अजांण अग्यांती, ते भागल भिष्ट अचारी जी ॥ ४७ ॥
 तीरथंकर चक्रवत बलदेवादिक, ते संजम ले सुखीया हुआ जी ।
 त्यारें लारें अनेक दुखीया हुआ दीसैं, केइ हीयो फूटीने मूंआ जी ॥ ४८ ॥
 सेठ सेन्यापती. आदि वड वडा राजा, ते दिष्या ले हुआ सूरु जी ।
 त्यारें. पिण न्यातीला दुषीया हुआ, केइ अकाले पड गया पूरा जी ॥ ४९ ॥
 केइ निरघन भूखा दलदरीयादिक, संयम ले सुखी हुआ जी ।
 त्यारें न्यातीला बोहत दुखी तिण विना, अन बिना अकाले मूंआ जी ॥ ५० ॥
 धावता बालक री मां दिष्या लेवें, कहें बालक दुखीयो थावें जी ।
 तो राजादिक दिष्या लीघी छें त्यांरा, न्यातीला पिण दुख पावें जी ॥ ५१ ॥
 धावता बालक री मां नें दिष्या दीघां, बालक री दया न आंणी जी ।
 तो राजादिक नें दिष्या दीघी त्यां, पाछिलां री दया क्यूं न आंणी जी ॥ ५२ ॥
 भेषघास्थां नें आप तणां बोल्यां री, आपिण समझ न कांइ जी ।
 यां कने दिष्या लीघां लारला दुखी हुवें, त्यांरी एं पिण नाणें मन मांहीं जी ॥ ५३ ॥
 दिष्या लेंगवाला नें जेज न करणी, म्हारें कर्म काटे जांणो मोखो जी ।
 पाछला पाछला री कमाइ जासी, संजम लेंगों निरदोषो जी ॥ ५४ ॥
 पाछला दुखी हूवां मोने पाप न लागें, सुखी हूवां मोने नही धर्मो जी ।
 यां सूं मोह तोडे अलग्गा होसी, त्यांरा कटसी निकेवल कर्मो जी ॥ ५५ ॥
 लारला सुखी दुखी री कीरप करसी, आ लोकीक दया जाणो जी ।
 आ सावद्य दया छोड संजम लेसी, ते निश्चें जासी निरवांणो जी ॥ ५६ ॥

यामे एक जणो जो उज्जह चाले, तिण रो न काढे निस्तारो जी ।
वडा उट जिम आगे चालें, लारें बूही जाय क्तारो जी ॥ ५७ ॥
भेषघाख्यां री सरघा ओलखावण, जोड कीची पीपाड मभारो जी ।
संवत अठारें वर्ष गुणसठे, चेत सुद तेरस सोमवारो जी ॥ ५८ ॥



ढलल : २३

दुहल

केइ भेषधरल आरे पलंचमे, ते नलंम धरलवे सलध ।
 त्यलरल सरधल असुध छें अतल बूरल, त्यलरें कदेय म जलंगु सलमलध ॥ १ ॥
 त्यलरल टुलल घणल छे जू जूअ, पूछुरल कहेँ महेँ सधलल सलध ।
 पलण सरधल छें त्यलरल जू जूइ, वले कर रहुल मलंहेँ मलं वलवलद ॥ २ ॥
 सरधल तुल एक एकण तणी, चुडेँ खुटी कहेँ छें सलखुयलत ।
 पलण वलकलं नें सलमभ पडेँ नहेँ, चुडेँ देसें उघलडे मलथुयलत ॥ ३ ॥
 कलहलवल ने तुल इम कहेँ, महेँ सगललइ छलं सलध ।
 त्यलरें आचलर सरधल तुलं मललेँ नहेँ, तलणसूं मलंहेँ मलं करे वलषवलद ॥ ॡ ॥
 त्यलमें केइ कहेँ जलव खवलवीयलं, धरुम नें पुन एकंत ।
 केइ कहेँ जलव खवलवीयलं, मलशुर दलंन कहुंत ॥ ५ ॥
 मलंहेँ मलं उडलवेँ एक एक नें, त्यलरें ललगु मलंहेँ मलं तुलट ।
 एक एक तणी सरधल मभे, कहेँ खुलटल में खुलट ॥ ६ ॥
 त्यलरें मलंहेँ मलं सरधल तणु, फेर घणुं छें अतंत ।
 पलण थुलडे सुलं परगट कहुं, ते सुणजु मतवंत ॥ ७ ॥

ढलल

[आ अशुकम्पल जलशुं अगनुयल में]

प्रथवु पलंगु अगन नें वलय, वले वनसपतल ने छुठी तसकलय ।
 छ कलय रल छ दलंनसलल मंडलवे, तलणमें एकंत पुन कहे छें तलय ।
 त्यलनेँ सलध सरधेँ छें मूंड मलथुयलतुल * ॥ १ ॥
 अथवल छुही कलय नें जलवलं हणुनेँ, त्यलरल जूदुल जूदुल दलंनसलल मंडलवेँ ।
 पछें हलथलं सुं दलंन देवेँ दगचलल, तलणमें एकंत धरुम नें पुन बतलवेँ ॥ २ ॥
 अथवल छ कलय मलरेनेँ खवलवेँ ।
 अथवल छ कलय मलरेनेँ खवलवेँ ।
 तलणमें मलशुर कहे त्यलनेँ खुलटल कहेनेँ, एकंत धरुम ने पुन बतलवेँ ॥ ३ ॥
 कुलइ गलजर मूलल नें सकरकंद देवेँ, जमलकंद रु दलंन देवेँ छें तलहुलु ।
 तलणमें एकंत धरुम ने पुन कहे छें, मलशुर कहेँ त्यलनेँ देयल उडलयु ॥ ॡ ॥
 वेणुण वललुललदलक अनेक नुललुतुल, रलंधे रलंधे मलथुयलतुल जलवलं नें खवलवेँ ।
 तलणमें मलशुर कहेँ जुयलनेँ खुलटल कहेनेँ, एकंत धरुम ने पुन बतलवेँ ॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गलथल के अन्त में है ।

कोइ चिणा सेकी सेकी नें दान देवे,
 इत्यादिक अनेक धान सेकी ने देवे,
 कोइ कूआ बाब तलाब खोदावे,
 तिणमें एकंत धर्म ने पुन कहे छे,
 श्रावक नें माहोमां छकाय खवावे,
 तिणमे मिश्र कहे त्याने खोटा सरघे ने,
 समाइ पोसा रे काजे जागा करावे,
 तिणनें एकत धर्म ने पुन बताए,
 श्रावक ने देवे छें वस्त अनेक,
 तिणमे एकत धर्म ने पुन कहे छे,
 कल्पे ते वस्त श्रावक ने देवे,
 तिणमे एकंत धर्म ने पुन कहे छे,
 साध विना छे सगलाइ अनेरा,
 सचित्त अचित्त दीया कहे पुन निकेवल,
 तीर्थकर दान दीयो ने कीयो सिनान,
 तिणमे एकंत धर्म ने पुन कहे छे,
 भगवत पधाख्या री दीधी वधाइ,
 तिणमे एकत धर्म ने पुन कहे छे,
 दानसाला मंडाइ परदेसी राजा,
 एकंत धर्म ने पुन कहे छे,
 छ काय रा जीवा नें हणने मिथ्याती,
 तिणने एकंत धर्म ने पुन कहे छे,
 मिथ्याती साधां ने काचो पांणी वेहरावे,
 तिणमे एकंत धर्म ने पुन कहे छे,
 वले वेहरावे साधा नें सचित्त नीलोती,
 तिणने एकंत धर्म ने पुन कहे छे,
 आधाकर्मी आदि दे आहार दोषीलो,
 तिणमें एकत धर्म ने पुन कहे छे,
 साधु तो धुजतो देख मिथ्याती,
 तिणनें एकंत धर्म ने पुन कहे छे,
 कोइ साध उजाड मे थाको छे तिणनें,
 तिणनें एकंत धर्म ने पुन कहे छे,

कोइ गोहा नें सेकी सेकी देवे घांणी ।
 तिणमे एकत पुन कहे मूंड अग्याणी ॥ ६ ॥
 वले पावें काचो अणगल पांणी ।
 मिश्र कहे त्याने खोटा जांणी ॥ ७ ॥
 वले छकाय मारेने जीमावे ।
 एकत धर्म ने पुन बतावे ॥ ८ ॥
 छ काय जीवा रों करे घमसाण ।
 इणमे मिश्र कहे त्याने खोटा जांण ॥ ९ ॥
 छ काय जीवा रो करे घमसांणो ।
 मिश्र कहे त्याने खोटा जाणो ॥ १० ॥
 कल्पे जिण वेतर ने काल मे तांम ।
 मिश्र कहे त्यारी पाडी मांम ॥ ११ ॥
 त्यां सगलां ने दांन दीया कहे पुन ।
 मिश्र कहे त्यारी सरघा ने जाने जवूंन ॥ १२ ॥
 वले दिप्या रा महोछव कीया छे पूरा ।
 मिश्र कहे त्याने कहे छे कूडा ॥ १३ ॥
 तिणने धन धान घरती दीधी छे दान ।
 मिश्र कहे त्याने जाणे विकल समान ॥ १४ ॥
 समाइ ने पोसा जिम जाणे छे तांम ।
 मिश्र कहे त्याने खोटा कहे ठाम ॥ १५ ॥
 आहार नीपजाए साधा ने देवे छे दांन ।
 मिश्र कहे त्यारी जाणें छे खोटी सरघान ॥ १६ ॥
 वले वेहरावें कोरो काचो लूण धान ।
 मिश्र कहे त्यारी सरघा नें कर कर हिरान ॥ १७ ॥
 अथवा रावे राघे देवे साधां ने दांन ।
 मिश्र कहे त्याने जाणे छे घोर अग्यान ॥ १८ ॥
 कोइ मिथ्याती साधा ने देवे छे दान ।
 मिश्र कहे त्याने जाणें छे कपट री खान ॥ १९ ॥
 साधु नें तपावे छे हेठो वेसांण ।
 मिश्र री सरघा कहे छे जेहर समांण ॥ २० ॥
 गाडादिक बेसांणीने गाव मे आंणे ।
 मिश्र कहे त्यारी सरघा ने खोटी जाणे ॥ २१ ॥

मात पिता बले सासू सुसरादिक, त्यांरो विनो करें छें हरष धणों आणों ।
 तिणने' एकंत धर्म ने पुन कहें छें, मिश्र कहें त्यानि' जाणें छें मूंड अवाणो ॥ २२ ॥
 बले काको बाबो ने सेंण सगादिक, त्यांरो विनो करें धणों हरषमन आणो ।
 तिणने' एकंत धर्म ने पुन कहें छें, मिश्र कहें त्यानि' एकंत छोटा जाणो ॥ २३ ॥
 इत्यादिक संसारी अनेक जीवां रो, 'विनों करे' मन हरष आण ।
 तिणमें एकंत धर्म ने पुन कहें छें, मिश्र कहें त्यांरी सरखा नें छोटी जाण ॥ २४ ॥
 कोइ अणुकम्पा आंणी छकाय नें देवें, अथवा छ काय मारी नें खवावे' ।
 तिणने' एकंत धर्म ने पुन कहें छें, मिश्र कहें त्यांरी सरखानें छोटी सरखानें ॥ २५ ॥
 बंदीवानादिक नें सचित्तादिक देवें, अथवा छही काय हणें नें जीमावें ।
 तिणमें एकंत धर्म ने पुन कहे छें, मिश्र कहें त्यांरी सरखानें जाबक उठावें ॥ २६ ॥
 कोइ भय रों घालीयो दान देवे छें, थावरीयादिक नें देवे दरब अनेक ।
 तिणमें एकंत धर्म ने पुन कहें छें, मिश्र कहें त्यानि' जाणें छोटा विवोस ॥ २७ ॥
 खरच करे छें मूंआ रे केडें, सेंण सगा न्यात जीमावें तांम ।
 तिणमें एकंत धर्म ने पुन कहें छें, मिश्र कहें त्यानि' छोटा कहें गांम गांम ॥ २८ ॥
 कोइ लज्या रो घालीयो दान देवे छें, जाचक इंबरादिक ने जाण ।
 तिणने' एकंत धर्म ने पुन कहें छें, मिश्र कहे' त्यांरी सरखाने छोटी पिछाण ॥ २९ ॥
 रावलीया कीरतनीया नें भांड भवईया, त्यानि' दान देवें मन मांहे गर्ब आण ।
 बले देवें सगा नें पेंरावणी मूसालों, तिणमें पुन कहें मिश्र नें छोटी जाण ॥ ३० ॥
 हांती नेंतादिक आंमा साह्यां देवें छें, बले आंमा साह्यां जीमें ने जीमावे' ।
 तिणने' मिश्र कहे' त्यानि' छोटा कहेने', एकंत धर्म ने पुन बतावे' ॥ ३१ ॥
 अघर्म दान टालेने' नवही दान में, एकंत धर्म पुन बतावे' ।
 मिश्र दान कहे' त्यानि' छोटा कहे' छें, त्यांरी सरखानें जाबक जड सूं उठावें ॥ ३२ ॥
 मिश्र दान उथापण री जोड कीधी छें, तिणमें तो त्यानि' जाबक दीया उडाय ।
 नव दान में एकंत पुन कहेने', मिश्र दान में एकंत छोटी कहे' ताय ॥ ३३ ॥
 मिश्र दान कहें छें तिणने', धर्म तपो धडावत थाप्यों ।
 बले कहे' जमारो हार गयो छें, इम कहि कहि मिश्र दान उथाप्यों ॥ ३४ ॥
 मिश्र दान परुपें तिणने' कहें छें, इण पुन तणों कर दीयो छें नास ।
 इम कहि कहि नें एकंत पुन थापें, मिश्र दान री सरखा रो करे' विणास ॥ ३५ ॥
 बले मिश्र दान परुपें तिण नें, कह दीयो कागला रो साथी ।
 बले तेहीज तिणने' साध सरधें तो, ते पिण पूरा छें मूंड मिथ्याती ॥ ३६ ॥
 बले मिश्र कहें छे तिणने', देवालों काड्यों कहें छें निसको ।
 बले तेहीज तिणने' साध सरधें तो, त्यांरे पिण नही मिटीयो मिथ्यात रोडंको ॥ ३७ ॥

वले मिश्र दांन कहे छें तिण नें,
 अठां दाना में एकंत पुन थापण ने,
 मिश्र दांन री सरघा नें जेंहर कहें छे,
 वले तेहीज तिणनें साघ कहे तो,
 इत्यादिक जोड अनेक करेनें,
 एकंत घर्म ने पुन थापण ने,
 मिश्ररी सरघा वाला ने खोटा कहे छें,
 ते पिण निश्चे छे मूढ मिथ्याती,
 ज्याने घर्म तणा घाडायत थाप्या,
 वले तेहीज त्यानें साघ सरघें तों,
 वले पुन रो न्हास कीयो कहे ज्याने,
 वले तेहीज त्यानें साघ सरघे तो,
 मिश्र दांन कहे त्यानें कह्या देवाल्या,
 वले तेहीज देवाल्या ने साघ सरघे तो,
 साप रा मूढा सरीषा कहि दीया त्याने,
 वले तेहीज त्यानें साघ सरघे तो,
 मिश्र दांन कहे छे त्यांरी सरघा नें,
 वले तेहीज त्याने साघ सरघे तो,
 मिश्र दान कहे त्यानें खोटा कहे छें,
 ते पिण जिण मारग रा अजाण अग्यानी,
 जे साघ कहिता पिण वार न ल्यावे,
 त्यारा श्रावक पिण छे बवेकरा विकल,
 कोडान कोडगमे बोल न मिले,
 तो पिण मांहोमां साघ सरघे छे,
 एकीकों बोल उथाप्यो तिणने,
 अनेक बोल उथाप्यां त्याने साघ कहे छे,
 ए जिण जिण ठामें मिश्र ने थापे,
 मिश्ररी सरघा सू लोक बूढता जाणे,
 एं जिण जिण ठामे एकत पुन थापें,
 एकत पुन कहे ते तों पाषडीया री सरघा,
 भेषधार्यां री सरघा ओलखावण काजे,
 संवत अठारे वरस चोपने,

गाजी ने मुल्लाखारी ओपमा दीधी ।
 मिश्र वालारी घणी फजीती कीधी ॥ ३८ ॥
 वले कहें छे मिश्र ने साप रो मूढों ।
 त्यां पिण विकला रे मिथ्यात री मूढो ॥ ३९ ॥
 मिश्ररी सरघावाला ने घालीयो कूडो ।
 मिश्र री सरघा उपर न्हाखी छे घूरो ॥ ४० ॥
 वले तेहीज त्याने जो सरघे साघ ।
 त्यां विकलारे कदेय म जाणों समाघ ॥ ४१ ॥
 जब तो अनेक चोरा विच कहि दीया भारी ।
 त्यांरी पिण भव भव मेहोसी घणी खुवारी ॥ ४२ ॥
 वले कागला रा साथी कहि दीया ज्याने ।
 फिट फिट कहीजे त्या विकला ने ॥ ४३ ॥
 देवाल्यां कह्या तिण कह दीया चोर ।
 त्यारें अघकार मे अघारो घोर ॥ ४४ ॥
 जब तो भारी जाण्यो त्यारो जहर मिथ्यात ।
 विगड राइ विकलारी वात ॥ ४५ ॥
 भात भात करने खोटी दरसाइ ।
 त्याराबोल्यारी त्याने पिण समझन काइ ॥ ४६ ॥
 वले तेहीज त्याने कहे छे साघ ।
 त्यारें पिण कदेय म जाणो समाघ ॥ ४७ ॥
 असाघ कहितां पिण सक न आणे ॥
 गुर री सरघा पिण नही पिछाणे ॥ ४८ ॥
 त्यारे सरघा माहे अनेक बोलारो छे फेर ।
 एहवो छे भेष धार्यां रे अघेर ॥ ४९ ॥
 निन्वव कह्या छे श्री भगवान ।
 एहवो भेष धार्या रें छे घोर अग्यान ॥ ५० ॥
 ए तिण तिण ठामे एकत पुन थापे ।
 तिणसू मिश्र री सरघा जाबक परी उथापें ॥ ५१ ॥
 एं तिण तिण ठामे मिश्र ने थापें ।
 तिणनें विपरीत जाणेंने परी उथापें ॥ ५२ ॥
 जोड कीधी छे खेखा ममार ।
 आसोज सुद एकम वृहस्पतवार ॥ ५३ ॥

ढल : २४

डुहल

खुडु डलणु डलशु नुं उथलडुडुडु, थलडुडु डुं डकुत डुन ।
कुड डलशु डललु डलणु तुडलनुं उडलडनुं, कर डुडल कुडकु कुडनुं ॥ १ ॥

डलल

[आ अशुकडुडु कुन आडनुडु डु]

डलशु डलन उथलडुं डकुत डुन थलडुं, तुडलनुं अंतर डुडलन डलनलकुडुल डुं आंडल ।
अंतर डुडलन डलनल आंडल नलशुडुं डलशुडुलतुडु, तुडलनुं डडकुत आडलरल डलणु डड डुडल कुडलडल ।
तुडलनुं डलध सरडु डुं डुंड डलशुडुलतुडु* ॥ १ ॥

डलशु डलन उथलडु डकुत डुन थलडु, तुडलनुं कुडु डुडल नलशुडुं डललडलधडुडु ।
तु डल नलशुडु डलशुडुलतुडु डुडुं डुं, तु डल डलध नडुल डुं नलकुवल अडलडुडु ॥ २ ॥

डुल डलशु उथलडु डकुत डुन थलडु, तुडलनुं कुडुं तुडलरु अकुल डडु डडतलडु ।
डुल कुडुं डुलल लुकलनु डडुं डुं नुडलडुं, कुडल कुडल कुडुत लडलडु ॥ ३ ॥

डललडलधडुडु डुख सुं कुडु डुडल तुडलनुं, डुल कुडुं तुडलरु अकुल डडु डडतलडु ।
डुल तुडलनुं तुडुलकु डलध सरडु तु, तुडलं डलकुललं डुं कुलल ड कुलणु कुडु ॥ ॡ ॥

नलरडुडु डलन तुं कुडु डुडुडुं नलगुथ कुलरु, डलडुडु डलन डुडलरु नु कुलरु डुडुडु कुलरुं ।
तलणुडुं डलशु उथलडु डकुत डुन थलडुं, तुडलनुं नलशुडुं डलडुडु कुडु डुडल कुलरुं ॥ ॡ ॥

डुख सुं तुं डलडुडु कुडु डुडल तुडलनुं, डुण डलतनुं नलशुडुं न कुलणु डुडुडु ।
डुल डुल तुडुलकु तुडलनुं डलध सरडुं तु, डुडुडु नललडु रल डुनुं डु डुडुडु ॥ ॢ ॥

डलशु डलन उथलडु डकुत डुन थलडु, तुडलनुं कुडुं डुडु डुडलन लुकन डलणु अंडु ।
डुल तुडुलकु तुडलनुं डलध सरडुं, तु तु डल डलणु अडुडुडुडु अंडु नलरलडु ॥ ॣ ॥

डलशु डलन उथलडु डकुत डुन थलडु, तुडलनुं कुलडु डत डुलडुडुं कुडु तुडल ।
डुल तुडुलकु तुडलनुं डलध सरडुं तु, कुडु अु डलणु डलशुडुल कुडु डुल डुलल कुडु ॥ । ॥

डलशु डलन उथलडु डकुत डुन थलडु, तुडलनुं कुडुं डुं अडुडुडु डलडु कुललु ।
अडुडुडु डलडु डलल नुं डुलकु डलध सरडुं, तु डलकुलल रु डलकुडु डलशुडुलतु रु डुललु ॥ ॥ ॥

डलशु डलन उथलडुं डकुत डुन थलडुं, कुडु डलखडुडु डलडु न डलणुं तु आंडु ।
तुडलरु सरडुल डुं कुडु डुडुडु डलणुं न नुलकुलुं, डुल कुडुं तुडलनुं थुथल डतु डुडुडुडु ॥ १० ॥

डलशु डलन उथलडु डकुत डुन थलडुं, तुं डलणु डललल न डलनुं कुडु ।
तुडलरु डुडु तु डलडु कुडु कुडु कुडुं, डुल कुडुं डुं डुडुल आडु डलकुडुल आडु ॥ ११ ॥

*डुडु आंकडु डुरतुडुक डलथल कु अनुत डुं डु ।

थोथी कण रहीत कही त्यारी सरघा ने,
 वले तेहीज त्याने साघ सरघे तो,
 मिश्र दान उथापे एकंत पुन थापे,
 जव तो च्यार तीरथ मा सू वारे काढ्या,
 अन तीरथीयां रे जोडायत थापे,
 वले तेहीज त्याने साघ सरघे तो,
 मिश्र उथापे एकंत पुन थापे,
 पछे हुइ कहे छे हिस्स्या घर्म री सरघा,
 कातीयो पीजीयो कपास कीयो छे,
 वले तेहीज त्याने साघ सरघे छे,
 आरंभ करे जीमावे कोड सीघो खवावे,
 त्याने एकत पुन सरीषो कहे छे,
 मिश्रवाला तो अग्यानी कहि दीया त्याने,
 वले तेहीज त्याने साघ सरघे छे,
 सचित अचित दीयां कहे पुन सरीषो,
 इण मतने तो निश्चेइ कह दीयो कूडो,
 मिश्र दान उथापे एकत पुन थापे,
 तिण सूं उधी अकल रा कह दीया त्याने,
 कूडो मत तो कह दीयो त्यारो,
 वले तेहीज त्याने साघ सरघे तो,
 संबत अठारे ने वरस तेतीसे,
 मिश्र दान थाप्यो छे निसक सूं चोडे,
 एकत पुन कहे सूतर अर्थ मरोडे,
 ज्यां ने अर्थ उंघाइज सुमे,
 सूतर अर्थ उघा करे त्याने,
 एहवा अवगुण वतावे त्याने साघ सरघे,
 मिश्र दान उथापे एकत पुन थापे,
 जब मिश्र वाला कहे ए भूठ बोले छे,
 मिश्र दान उथापे एकत पुन थापे,
 साघ श्रावक त्याने निरणो पूछे जब,
 उणरा घर रो एकत पुन बताए,
 साघ थइ ने सूधा न बोले,

हीया आडी ढाकणी आइने कहे वुव भूंडी ।
 त्या पिण विकलां री सरघा भूंडी ॥ १२ ॥
 त्याने सिव घर्म्यांरो जोडायत थाप्या ।
 जडा मूल सूं त्याने जावक उथाप्या ॥ १३ ॥
 जब हिंसाघर्मीं कहि दीया त्याने ।
 ववेक रा विकल कहीजे यांने ॥ १४ ॥
 ते पहिला दयाघर्मी हुता कहे तासो ।
 या तो कातीयो पीजीयो कीयो कपासो ॥ १५ ॥
 त्या तो समकत सजम खोयो अग्यानी ।
 ते पिण निश्चेइ नही छे ग्यानी ॥ १६ ॥
 कोइ धोवण पावे कोइ काचो पांणी ।
 त्याने मिश्र वाला कहे निश्चे अनाणी ॥ १७ ॥
 अग्यांनी तो निश्चे नही समदिष्टी ।
 तो मिश्र वाला पिण निश्चेइ भिष्टी ॥ १८ ॥
 सुघ असुघ दीयां कहे पुन सरीषो ।
 हाथ रा कांकण नें स्यूं आरीसो ॥ १९ ॥
 ते तो तस थावर माख्यां रो पापन जाणे ।
 त्याने जावक उठावता सक न आणे ॥ २० ॥
 वले उधी अकल रा त्याने जाणे ।
 ए पिण निश्चे पहिले गुणठाणे ॥ २१ ॥
 एकत पुन कहे छे त्याने दीया उडायो ।
 खोटी जोड करेने ताह्यो ॥ २२ ॥
 वले गुर री पिण परतीत मूल न राखे ।
 पुन कहे त्याने मिश्र वाला इम भाखे ॥ २३ ॥
 वले गुर री परतीत न राखे लिंगारो ।
 त्याने पिण जाणजो पूरो अघारो ॥ २४ ॥
 आठोइ दान नें घर्म दान मे घाले ।
 यारो खोटो मत आधो नही हाले ॥ २५ ॥
 त्याने मिश्रवाला कहे कपट चलावे ।
 भूठ बोले उण रा घर रो पुन बतावे ॥ २६ ॥
 भरमावे छे लोग लुगाइ ।
 आ खोटी सरघा त्याने किण सीखाइ ॥ २७ ॥

नव दांतां में एकंत पुन परूपे, त्यानें मिश्र वाला जाणें भोलय मोटी ।
 साख्यात सूतर री बात न माने, त्यांरी सरघा ने एकंत कहें छें खोटी ॥ २८ ॥
 सुतर न मानें एकंत पुन थापें, कूड कपट सु भरमावें लोक लूगाइ ।
 यांनं खोटा कहे तेहीज साघ सरघें, त्यां पिण विकलां में कला न काइ ॥ २९ ॥
 मिश्र वाला कहें मिश्र वीर परूप्यों, पुन कहे नें म्हारों मिश्र दांन उथाप्यों ।
 ते तो जीव माख्या रो पाप न जाणें, त्यांतो धर्म नें पुन एकंत थाप्यों ॥ ३० ॥
 मिश्र दांन उथापे एकंत पुन थापे, ते तो भूठी करे छें अग्यानी भखालो ।
 ते अंतर ग्यांन विना जीव आंघा, त्यांरें आडा कहें छें अभितर कर्मजालो ॥ ३१ ॥
 वीर वचन उथाप्या कहें त्यांनं, अंतर ग्यांन विना आंघा कहि दीया त्यांनं ।
 वले तेहीज त्यांनं साघ सरघें, तों ववेकरा विकल कहीजे यांनं ॥ ३२ ॥
 भठी लगावें नें चरु चढावें, वले चूल्हों वाले रांघें तरकारी ।
 जे कोइ धर्म जांणी नें जीमावें, ब्राह्मण तथा वले ओर भिख्यारी ॥ ३३ ॥
 तिण नें एकंत पुन रो कारण कहें छें, देणवाला नें जाबक न कहें तोटो ।
 लेंगवालो उण री गति जासी, इण मत नें मिश्रवाला जाणें छें खोटों ॥ ३४ ॥
 खोटो मत तो कह दीयो त्यांरो, त्यांनं वले तेहीज सरघें छें साघ ।
 इसडा छें मूंड ववेकरा विकल, ते पिण निमाइ निश्चें असाघ ॥ ३५ ॥
 वाव तलाव नें कूआ खोदावें, वले पों मांडें पावें काचो पांणी ।
 कंद मूल नें सतूकार देवे, अणुकंपा मन माहे आणी ॥ ३६ ॥
 एणमें जीव माख्यां रो पाप न जाणें, कहे छें एकंत लाभ ठिकांणो ।
 एहवो धर्म बतावे लोकां नें, कहि २ मूडा सूं नवमो ठांणो ॥ ३७ ॥
 जीव माख्यां रो पाप न जाणें, कृपातर पोख्यां धर्म ने पुन जाणें ।
 त्यांनं पिण तेहीज साघ सरघें छें, ते पिण निश्चें पहले गुण ठांणें ॥ ३८ ॥
 जिण ठामें जीवां री हिस्स्या हुवे छें, वले जाए जीवां रा जाबक प्रांण ।
 तिण ठामें एकंत पुन परूपे, त्यांरी खोटी सरघा कहें छें तांण ॥ ३९ ॥
 वले मेश्री, ब्रह्मण, अगरवाला, त्यांरी सरघा छें सिव धर्मी री सेली ।
 केइ कुल जेंनी हिंसा धर्मी, त्यांरी पिण सरघा त्यांसूं कहें छें भेली ॥ ४० ॥
 हिंसा में पुन थापें तो कहि दीया त्यांनं, वले सिवधर्म्यां री त्यांरी सरघा जाणें ।
 त्यांनं वले तेहीज साघ सरघें छें, ते पिण निश्चें पहिलें गुणठांणें ॥ ४१ ॥
 मिश्र न जांणे नें पुन वखांणें, इण सरघा नें कहें छें जाबक भूंडी ।
 वीतराग रा वचन देखतां, आ कदेय न चालसी खोटी हूंडी ॥ ४२ ॥
 सरघा तों भूंडी कहि दीधी त्यांरी, वले कही त्यांरी सरघा नें खोटी हूंडी ।
 त्यांनं पिण तेहीज साघ सरघें छें, जब यांरी पिण सरघा जाबक गइ बूडी ॥ ४३ ॥

समत अठारे वरस इगतीसें,
 मिश्र दान पाषंड्यां चोडें थाप्यो,
 इम भगवंत ने आल देइनें,
 त्यां कूडाबोलां रो कांड पकडीजें,
 पुन कहे त्यानें मिश्रवाला कहे छें,
 मिश्र गोपवे नें मून कहे छे,
 त्यारी सरघा तो त्यांसूं चोडे कहुणी न जाए,
 वले वीर वचन गोपव्या कहे त्यानें,
 वाखंबार कूडाबोला कहु दीया त्याने,
 वले तेहीज त्याने साध सरधे छे,
 मिश्र दान उथापे एकत पुन थापे,
 माहा भय तो नरक निगोद माहे छें,
 पुन कहे त्यानें मिश्र वाला कहे छे,
 वले कूडपखी तो कहि दीयो त्याने,
 माहा भयकारी सरघा कहे छे त्यारी,
 वले तेहीज त्याने साध सरधे तो,
 त्यांसूं निरणो तो मूल कीयो नही जाए,
 उजडपडीया कहे त्याने मिश्र वाला,
 मिश्र दान उथापे एकत पुन थापे,
 त्यानें पूछे तो मून ओले छिप जावे,
 मिश्रीया कहे पुन पाप कहुणों जिण पाल्यो,
 ए तो नास्तक मत सूं मिलता बोले छे,
 आठ दान नें धर्म मे घाले छें त्यानें,
 मून तके सुध जाव न दीघां,
 नास्तक मत सूं मिलता कही दिया त्याने,
 वले तेहीज साध सरधे छे त्याने,
 दस दान नें वले नव पुन माहें,
 सावद्य मे एकत पुन सरधे,
 वडा अन्याइ तो कहि दीया याने,
 वले त्यानें तेहीज साध सरधे तो,
 कोरो अन काचो जल दीघां,
 प्रगट कहिता मूंडा दीसें,

मिश्र वाला कीघी जोड मेडता माह्यो ।
 पुन कहे त्याने जावक दीया उडायो ॥ ४४ ॥
 आप तो न्याराइज होय जावें ।
 मून तणें ओले छिप जावे ॥ ४५ ॥
 त्यासू तो कहे न्याय वोल्यो नही जायो ।
 वले कहे त्यानें चोडें कपट चलायो ॥ ४६ ॥
 वले कहे त्याने चोडें कपट चलायो ।
 वले घाल्या निन्व नें पाषंड्यां माह्यो ॥ ४७ ॥
 वले भात भात. त्यानें दीयो उडायो ।
 ते पिण पडीया छें अंधकार माह्यो ॥ ४८ ॥
 तिणने दोष कहे माहा भय रो ठिकाणो ।
 मिश्र वाला कहे यारो ए फल जाणो ॥ ४९ ॥
 यां आघा ने साची सरघा न सुके ।
 वले कहे त्याने आघा जेम अलूमें ॥ ५० ॥
 वले भूठाबोला ने आघा कहुया त्याने ।
 विकला री पात मे गिणलेजो यानें ॥ ५१ ॥
 दस दान ने वले नव पुन माही ।
 त्यामे साच रो सीचो न सरधे काइ ॥ ५२ ॥
 त्याने मिश्र वाला कहे एकत कूडा ।
 खोटी सरघा परुपे ने होय जाए पूरा ॥ ५३ ॥
 म्हे मिश्र कहा छा ते पिण पाल्यो ।
 वले कहे त्याने भूठो भगडो म्हाल्यो ॥ ५४ ॥
 मिश्रीया कहे मिश्र दान जो न छे ।
 घणा ने घणा पिछ्छताबोला पळे ॥ ५५ ॥
 वले कहे त्याने पिछ्छताबोला थापे पुन ।
 जब त्यारी पिण सरघा छे जावक जबून ॥ ५६ ॥
 त्यारो तो विवरो त्यासूं कीयो न जायो ।
 ओहीज बडो करे छे अन्यायो ॥ ५७ ॥
 वले साफ बोल्ता त्याने न जाणें ।
 पीपल बाघी मूर्ख जिम ताणें ॥ ५८ ॥
 पडदे पडदे पुन जणावे ।
 तिणसूं नवमो ठाणो दिखावे ॥ ५९ ॥

कहें ओ देखो अनेराने' दीघां, पुन तणी परकत तिणरे' बंधायो ।
 भगवंत निरणों मिश्र नहीं दाब्यो, तो म्हां सूं मिश्र केम कहवायो ॥ ६० ॥
 भेषघास्त्रां ने' ओलखावण काजे', जोड कीधी खेरवा सहर मझार ।
 संवत अठारे' वरस चोपने', आसोज सुदि पूनम वृहसपतिवार ॥ ६१ ॥

ढाल : २५

दुहा

किणही श्रावक रा व्रत आदस्खा, रोटी खाएँ छे मांग ।
तिणनें आहार ताजो मिले नही, तिण वणायो साधु रो साग ॥ १ ॥
ए सांग पेहर सोरो हूवों, दुनीया खादी खूंद ।
जिण सेरी साधु गया, ते सेरी दीघो बूंद ॥ २ ॥
श्रावक रा व्रता मभे, साध वणयो किण न्याय ।
उघाडो वाणीयो ठग लोक मे, ते भोला नें खबर न काय ॥ ३ ॥
श्रावक थयो साध रा भेष में, ठग ठग खाएँ लोका रा माल ।
बूडे थोडा सुख रे कारणे, पिण आगे होसी हवाल ॥ ४ ॥
तिणरा चाला चिरत तो अति घणा, ते पूरा केम कहवाय ।
थोडसा परगट करुं, ते सुणजो चित्तलाय ॥ ५ ॥

ढाल

[दिना रा भाव सुख सुख गुण]

गुण विण पेहख्यो साधु रो सांगो, भेष रे ओलखाए छे मांगो ।
ते तो वरत विहूणो नागो, पेट रे काजे माड्यो ठागो ॥ १ ॥
ते पर घर गोचरी जावे, अठे बुगल ध्यानी होय जावे ।
सूक्तो आहार जाणे ने देखे, तो पिण घणो पूछे विशेखे ॥ २ ॥
ठग थको आपो जणावे, भोला लोका ने भरमावे ।
धुरताई करे जाण जाणी, लोक जाणे ज्यू उतम प्राणी ॥ ३ ॥
इम कीयां लोक राजी होय जावे, तो मोने ताजो आहार वेहरावे ।
घी खाड दूध दही मिष्टान, मोने देसी दे दे सनमान ॥ ४ ॥
तिणने जाणजो मोटको ठागो, भोला लोकां ने देवे छे दगो ।
ठा ठग खाए छे लोका रा माल, तिणमे भव भव मे होसी हवाल ॥ ५ ॥
ग्रहस्थ रा भेष मे मांग खावे, तो कपट दगो टल जावे ।
पेलो ग्रहस्थ जाणनें ताम, ग्रहस्थ सारू होसी परिणाम ॥ ६ ॥
साध रो भेष पहरी ने ल्यावे, घणा लोका ने विसमे उपजावे ।
ते तो ठगा उपरलो ठागो, भेष रे लारे देवे दगो ॥ ७ ॥

ठग तो ठग ठग माल ल्यावे, पेंला नें, पाप नहीं लगावे ।
 तिण तो धन तणों दीयो दगों, तिण सूं धन तणों छें ठगो ॥ ८ ॥
 असाधु थकों मांगे ल्यावे, ओं तो पेंला नें पाप लगावे ।
 पेंलें तो साधु जाणने दीघो, इण साधू रा भेष में लीघो ॥ ९ ॥
 पेंलें दीघां मे जाण्यो धर्म, इण जाण्यो लागो पाप कर्म ।
 तिण सूं ओ तों छें धर्म ठगों, भेष पेंहरे मोटो दीयो दगों ॥ १० ॥
 ओ साध वण्यो विण काजें, निरलजा मूल न लाजें ।
 तिणने पूछ्यां न बोले सुघो, घणों छेडवीयां बोले उंघों ॥ ११ ॥
 भारीकर्मा जिभ्या रो लंपटी, धुरत मायावीयो छें कपटी ।
 तिण आपरो मतलब देख, गुण विण पेंहच्छों साधु रो भेष ॥ १२ ॥
 आछ्यों खावा पीव रे कांम, थो तों साध वण्यो छें तांम ।
 वले चढ गयो मान रे छाजें, अकार्य करतो नही लाजे ॥ १३ ॥
 इण नें उंचो करे कोइ हाथ, तिणरें निश्चें बंधें कर्म सात ।
 धर्म जांणे तो भारी मिथ्यात, चिकण कर्म लागें सात ॥ १४ ॥
 तिणने असणादि हरष सूं दीघो, तिण भारी कर्म बघ कीघों ।
 धर्म जाण्यो तिणरी विशेष खुवारी, ते हूवों मिथ्यात सूं भारी ॥ १५ ॥
 तिण घणा जाण नें बोया, पाप मांहें पूरा विगोया ।
 माल खाय नें भारी कीघा, धर्म ठिकाणे दगा दीघा ॥ १६ ॥
 ओ तों साध वणे हूवो भारी, घणा लोकां री कीघी खवारी ।
 आप बूडे ओरां नें बोया, घणा लोकां नें पापी विगोया ॥ १७ ॥
 इसडो पापी हरांम खोर, ते तीर्थकर नो चोर ।
 लूण हरांमी हूवो पको, ज्यारो खावो त्यानें दीयो घको ॥ १८ ॥
 बड बडा श्रावक नाम धरावें, इण छोटानें पेहली खमावें ।
 यां साराइ में पड गइ खांमी, इण रो विनो करे सीस नांमी ॥ १९ ॥
 वले विनो करे तिणने खमावें, नीचो होयनें सीस नमावें ।
 ओ वंदण भेलें मस्तक हलावे, साधा ज्यू पाछो तिणनें खमावें ॥ २० ॥
 वले मन में मगज न मावें, साधु ज्यू लोकां में पूजावे ।
 मगरुडाइ में होय रह्यो सेठो, कुकडवम राजा होय बेंडों ॥ २१ ॥
 दीसतों दीसैं मोटों अणगार, वणीयो सासण रो सिणगार ।
 ते तो कूड कपट तणों भंडार, पापी पाप सूं न डरे लिगार ॥ २२ ॥
 एहवा कनें बेंसैं केइ जाय, त्यारी अकल गइ वपटाय ।
 एहवा कनें करे समाई, त्यारी पिण गई अकल ढंकाई ॥ २३ ॥

तिणरे सनमुख बेंसें आण, तिण कने दरावे वखांग ।
 तिणने कहे थारी सत वांगो, त्यारेइ मोटी भोलप जाणो ॥ २४ ॥
 श्रावक तिण पासे आवे, जब लोकां मे प्रसंसा थावें ।
 भोलातो जाणे ओ साध रूडो, करणी करवृत माहे पूरो ॥ २५ ॥
 तिणने केइतो वाद खमावें, केई हरष सूं आहार वेंहरावे ।
 केई कपडो देवे चोखों, जाणे ओ तो साधू निरदोषो ॥ २६ ॥
 तिणने वाद्या पूज्यां जाणें धर्म, कटता जाणे वले कर्म ।
 असणादिक दीये पिण धर्म जाणें, वेहराए घणो हरष आणे ॥ २७ ॥
 ओ पिण छांनें छांनें कहे आप, मोने दीया म जाणो पाप ।
 घणे ठ्या सूं कांम चलावे, इण विध लोकां रो माल खावें ॥ २८ ॥
 कने वेस करे तिणसूं वात, घणो वधे लोका मे मिथ्यात ।
 कने वेठो तिण वात विगाडी, सावद्य आजीवकाय वधारी ॥ २९ ॥
 केई जाणे छे ओं साध नाही, साध रा गुण नही इण माही ।
 तो ही हरष सूं देवे आहार, करे करे घणी मनवार ॥ ३० ॥
 कपडा पिण मही मही दे जाण, मन माहे उजम आण ।
 मागे तका वसत करें त्यार, इसडो छे केकारें अघार ॥ ३१ ॥
 मन माहे तो इतरोई न देखें, ओ साध वण्यो किण लेखे ।
 इण मे दीसे छे मोटी खोड, ओ तीथकर नो चोर ॥ ३२ ॥
 इण साधू रो साग वणायो, इण कीयो उघाडो अन्यायो ।
 तिण ने इतरोड पूछे नाही, ओ पिण निरणो नही घट माही ॥ ३३ ॥
 कोइ चुतर विचखण ह्वेंत, तो तिणने नपेघ सांकड छेत ।
 तूं साध वण्यो किण लेखें, तूं तो वरता सांहाणें न देखें ॥ ३४ ॥
 तूं तो श्रावक थको वणीयो साध, मोटी अकार्य कीयो अगाध ।
 जिण मारग में कपट न पावे, श्रावक थको साध वणजावे ॥ ३५ ॥
 लोका री रोटी मागे खावे, साधु रो भेष धारीनें ल्यावें ।
 तू तो साध वण्यो छे ठगो, लोका ने देवानें दगों ॥ ३६ ॥
 तू तो दीसे उघाडो कपटी, जिभ्या तणो दीसें छे लपटी ।
 तो कने वेंसणो नही आछो, तूं तो ठग छे साचेलो साचो ॥ ३७ ॥
 तू तो ठगां मे मोटीं छें ठगो, भेष पाछे देवे छे दगो ।
 भात भात नपेदे पूरो, इण रो भेष कराय टें दूरो ॥ ३८ ॥
 पाछो ग्रहस्थ रो भेष करावें, उणरो कुर ने कपट छुडावें ।
 जब उण माहें हुवें बेराग, तो करदे सर्व सावद्य रा त्याग ॥ ३९ ॥

खावा पीवा री न करे परवाही, वेंरग करे मन माहि ।
 ज्यां लग साधां सूं रहूं छूं न्यारो, विगे पिण नही खांड लिंगारो ॥ ४० ॥
 मरणो पिण कर दें कबूल, असल साधु ज्यूं चालें सूल ।
 रहे साधां तणे हजूर, नही रहें साधा सूं दूर ॥ ४१ ॥
 हुवें साधां तणों सुवनीत, उपजावें पुरी परतीत ।
 साधां रो हुवें आग्याकार, आगन्या नही लोपें लिंगार ॥ ४२ ॥
 हिवे तो भेष लीयोस लीयों, मो सूं दूर नही जायें कीयो ।
 सांकडी वणीयां कहुं संथाहं, लीघो भेष ते नही उताहं ॥ ४३ ॥
 इसडी मन गाडी धारें, साधु भेष नही उतारें ।
 बले करें तिणरा गुणग्राम, थे म्हारो कपट छोडायो तांम ॥ ४४ ॥
 जो उण उपर आवें भेष, तो ज्यूंरो ज्यूं राखें भेष ।
 उलटो हुवे तिणरो वेंरी, केइ इसडा छें पापी गेरी ॥ ४५ ॥
 जो साध रो भेष न करे दूरो, तो उण रो करें लोकां में फितूरो ।
 प्रसिध चावो करें लोकां माहि, ओ ठग साध वणीयों छे ताहि ॥ ४६ ॥
 ओ तो उषाडो छें दगादार, कूड कपट तणों छें भडार ।
 इणरी संगत न करणी लिंगार, जिण मारग रो लजावणहार ॥ ४७ ॥
 इम कहे सारा लोकां रे मांहि, जब लोक पिण जाणीलें ताहि ।
 इणमे कला न वीसैं काई, इण मांडी छें ठगबाजाई ॥ ४८ ॥
 ओ तो गुण विण वणीयो छे साध, दोष काढ्यां करें विषवाद ।
 ओ तो मान वडाई में खूतो, भेष पेहरी नें यूही विगूतो ॥ ४९ ॥
 असाधु थको साधां ज्यूं पूजावें, ठग ठग लोकां रा माल खावें ।
 मान बडाइ में नही मावें, ते तो दिन दिन भारी थावें ॥ ५० ॥
 ग्रहस्थी थको वणीयों छें साध, तिणरे भव भव में होसी असमाध ।
 ते चिहूं गति मांहे गोता खावे, संसार में घणों दुख पावे ॥ ५१ ॥
 पाडें माहा मोहणी कर्म नों बंध, पछे होय जाय मोह अंध ।
 तिणनें सबली तो मूल न सुभें, दिन दिन इधिक अलुभें ॥ ५२ ॥
 ग्रहस्थी साधु रो वेस वणावें, ठग ठग लोकां रा माल खावें ।
 भेष रें पाछें खाएं रोटी, आ चाल घणी छें खोटी ॥ ५३ ॥
 भारी करमो जीव विशेषें, ओ साध वण्यों किण लेखें ।
 कदा निकाचत कर्म बंध जावें, तो उत्कष्टों संसार बंधावे ॥ ५४ ॥
 एहवा पापी नें दूर तजोजे, एहवा ठारों वेसास न कीजे ।
 इणरी संगत आछी नाही, इणसूं भलो न होसी काई ॥ ५५ ॥

एहवा दुष्टी जीव हुवे ताय, ते तो साधां सूं दे भिडकाय ।
 साधां रो हुवे उलटो वेरी, इसडो भारीकर्मो छे गेरी ॥ ५६ ॥
 वले बोलें घणों विकराल, अणहुता कूडा कूडा दे आल ।
 इणरें भूठ तणी सुग नाही, पापी पाप सूं डरपें नही काद ॥ ५७ ॥
 इणरी मूर्ख करसी परतीत, ते पिण चिहू गति मे होसी फजीत ।
 एहवारी माने साची वात, तिणरे वेगो आवें मिथ्यात ॥ ५८ ॥
 एहवा पापी सूं रहसी दूरा, ते तो परमेसर रा पूरा ।
 इसा नें मूढे नही लगावें, तो समकत नें धको न थावे ॥ ५९ ॥
 तिण कर्ने जाय बेसे वाइ, तिणरें वरत भांगण री लागे साई ।
 एकला री किसी परतीत, एकला नें जाण लेणो विपरीत ॥ ६० ॥
 विगडायल फिरें एकलो, तिणने कदेय म जाणो भलो ।
 इणरी वात तो धुर सूं बूडी, तिणरी संगत कीयां दीसें भूडी ॥ ६१ ॥
 इण कर्ने वेठां आवें आलो, तिणरो कुण काढें निकालो ।
 वात लोकांमें फेल जावें, वात पाछी ठिकाणें न आवे ॥ ६२ ॥
 जे जे लज्यावंत छे वाई, तिण कने न बेसें जाई ।
 घरे आयां पिण न करे वात, ले लज्यावंत साख्यात ॥ ६३ ॥
 इणसूं वात कीयां आछों नांही, वले चेंचे हुवे लोका मांही ।
 यूही लोकांमें हुवें फितूरो, अणहुंतो आल आवे कूरो ॥ ६४ ॥
 तिण सूं डाही हुवें ते वाई, तिण कने नही वेंसें जाई ।
 तिणने मूढें पिण न लगावें, घरे आया पिण नही बतलावे ॥ ६५ ॥
 केकांतो वले कपटाइ माडी, उघाडी करे ओघारी डाडी ।
 ओघे तो साघपणो नही लीघो, इणनें उघाडों काय कीघो ॥ ६६ ॥
 साघ रो भेष तो आप लीघो, तिण भेष ने दूरो न कीघो ।
 आप वणीयो रह्यो साघ, कपट ज्यूं रो ज्यूं राख्यो अगाध ॥ ६७ ॥
 लोक कांई जाणें डाडी उघाडी, लोक कांई जाणे डांडी ढकवारी ।
 लोक तो देखे साघ रो भेष, तिणने दांन दे हरष विशेष ॥ ६८ ॥
 तिणतो ज्यूरो ज्यूं राख्यो भेष, तो कपट मे कपट विशेष ।
 तिणसूं पाघरों ग्रहस्थ रेणों, के सुघ साघ पणें लेंणों ॥ ६९ ॥
 जो पोतीयो वांघने मांग खावे, कपट दगों तो टल जावें ।
 पेढी मांडे वखांग सुणावे, ते पिण सावद्य आजीवका वधावें ॥ ७० ॥
 तिण कर्ने जाय वखांग मंडावें, मुदें आगेंवाणी आप थावे ।
 जव इणरी देखादेख, लोक भेला हुवे वशेख ॥ ७१ ॥

जब केइ इनने उतम जांग, असणादिक देवे' हरष आण ।
 इणरी अजीवका सावद्य वधारी, लोक बूडवाने' हुआ त्यारी ॥ ७२ ॥
 इण कने जाय वखाण मंडावे, तो मिथ्यात घणों वध जावे ।
 इम कीयां मत बंध जाअे न्यारों, घणा लोकां ने करे खुवारों ॥ ७३ ॥
 पोतीयो बांधनें गांम गांम, मिथ्यात वधावे' ठांम ठांम ।
 ओ पिण मगरूडाइ भाडें, साधांनेइ वंदण छांडे ॥ ७४ ॥
 घणा लोकानें भिडकावें, साधांरी वंदण छोडावे ।
 तिणसू मागेनें खाएं तिणरी, संगत नहीं करणी जिणरी ॥ ७५ ॥
 तिण कने नहीं करणी समाई, तिण कने न वेंसणों जाइ ।
 इणरा सीलरी किसी परतीत, इण तों छोड दीधी छे' रीत ॥ ७६ ॥
 इणमें अवगुण दीसैं अथाय, ते पूरा केम कहवाय ।
 ओ तो आगुणग्राही चोर अवनीत, उंधी चल्लें वले विपरीत ॥ ७७ ॥
 भेष में ठा ओलखवाण ताहि, जोड कीधी पूहना सहर मांहि ।
 सतावनो वर्ष संवत अठार, माह विद बीज सनीसरवार ॥ ७८ ॥

ढाल : २६

दुहा

साध साधवी श्रावक श्रावका, जिण सासण मे तीर्थ च्यार ।
 ते धर्म ठगाइ करे नही, अभितर हीयें विचार ॥ १ ॥
 त्यामे साध साधवी री गोचरो, निरवद जोग व्यापार ।
 असणादिक करे ते निरवद्य जोग छें, त्यानें पाप न लागे लिंगार ॥ २ ॥
 श्रावक ने श्रावका तणो, खाणो पीणो छेइविरत मभार ।
 जे जे दरब श्रावक भोगवे, ते सावज जोग व्यापार ॥ ३ ॥
 श्रावक भोगवें ते पेहले करण छे, भोगवावे ते दूजें करण जांण ।
 अणमोदे ते करण तीसरे, त्याने पाप लागे छे आंण ॥ ४ ॥
 केइ श्रावक खाए छे कमाय ने, केइ श्रावक मागेने खाय ।
 ते भेष राखे ग्रहस्थ तणो, आगे हूतो ज्युरो ज्यू ताय ॥ ५ ॥
 केइ तो लोक ठावा कारणे, काइ तो राखे ग्रहस्थ रो भेष ।
 काई भेष बणावे साधू तणो, ते ठावाने लोक वशेष ॥ ६ ॥
 एअधवेसडो साग आछो नही, जिण सासण रे मभार ।
 तिणरा ठगा ने परगट करू, ते सुणजो विस्तार ॥ ७ ॥

ढाल

[विने रा भाव सुख सुख गुण]

पागडी ने भगो दूर कीघो, माथे पोतीयो वाघ लीघो ।
 मूढे मूहपती बांधी साख्यात, भोली पातरा लीधा हाथ ॥ १ ॥
 वले ओघो काख माहे घाल्यो, लोकारे घर बेहरण चाल्यो ।
 इण साग पांछे मिले रोटी, आ चलगत घणी छे खोटी ॥ २ ॥
 ओ तो वणीयो धर्म ठगो, धर्म री ठोर देवे छें दगो ।
 इण भेष सु ठागो चलावे, ठग ठग लोकां रो माल खात्रे ॥ ३ ॥
 इण भेष सूं लोक ठावावे, धर्म जाणी ने आछो बेहरावे ।
 त्या घररोइ माल गमायो, उलटो मिथ्यात वधायो ॥ ४ ॥
 मोला तो जांणे हूवें छे धर्म, पिण उलटा लाग्ता पाप कर्म ।
 इण भेष सूं लोक ठावें, घर रो माल इविरत मे गमावे ॥ ५ ॥

ओ जाणें मोनें वेंहरायों इणरें, उसम कर्म लागें छें तिणरें ।
 इण भेष पाछें देवें दगों, ते तो निश्चेंइ छें धर्म ठगो ॥ ६ ॥
 इण ओ भेष पहर्यां किण लेखें, आपरा किरतब साहमों न देखें ।
 ओ तो दीसैं उघाडो ठगो, देवें छें घणां नें दगों ॥ ७ ॥
 ओ तो ग्रहस्थ तणी पांत माह्यों, ओ तो सांग किण लेखें वणायो ।
 ओ तो एकंत रोट्यां रे काज, अधवेस वण्यों मुनीराज ॥ ८ ॥
 वेस वणायों पेट रें काजें, निरलजा मूल न लाजें ।
 ते तो भेष रो भांडण हारो, कीयो जिण मारग में विगाडो ॥ ९ ॥
 ए तो सांग घणों छें अजोग, तिण सूं सरम में पड जाएं लोक ।
 तिण आणें भोला लोक ठगावें, केई डाहा पिण कर्म में खावें ॥ १० ॥
 एहवो सांग पेहर्यां फिरे तास, भोला हुवे ते बेसैं तिण पास ।
 डाहा हुवें ते मूडें न लगावें, तिण नें पेंला पिण नहीं बतलावें ॥ ११ ॥
 इणतो साख्यात आण्यों सांगो, जिण मारग माहे पाडीयों भांगों ।
 अद्ध वेस सूं पर घर जावें, तिणनें आ पिण लज्या न आव ॥ १२ ॥
 केई कहें साघपणों छें भारी, ते लेवा री आसंग नही म्हारी ।
 तिणसूं श्रावक ना वरत लीघा, मोसूं पले जिसा व्रत कीघा ॥ १३ ॥
 तिणसूं पोतीयो बांधीयो माथें, भोली पातरा लीघा हाथें ।
 ओघो काख में घाली जावां, गोचरी आण मांगीनें खावां ॥ १४ ॥
 इण विघ करां आजीवकाय, म्हामे फोडा न दीसैं ताय ।
 म्हारा व्रत पिण चोखा पाल, सुखे गमावां छा काल ॥ १५ ॥
 तिण नें कहें मांग खावो लोकां रो, ओतो छांदो निकेवल थारो ।
 ओघो मूहपती पातरा हाथ, एं क्यूं ले जावो छो साथ ॥ १६ ॥
 जब ओ कहें इण वांना लारे, म्हारों आग हुवें छें सारें ।
 हरष सहीत आगा बोलावें, रोटी पिण आछी तरें वेंहरावें ॥ १७ ॥
 इण भेष पांछें रोटी आवें, इण भेष विण कुण वेंहरावें ।
 तिण सूं ओ भेष वणायों, हिवें कुमी रहे नही कायों ॥ १८ ॥
 जब ओ कहें थे छों धर्म ठगों, भोला लोकां नें देवों छो दगों ।
 इण भेष सूं लोक ठगावें, जाणें म्हानें धर्म थावें ॥ १९ ॥
 थे तो जाणों छों पाप उघाडो, भेष लारें पाडो छो घाडो ।
 थे जाणों हूं इविरत माहे ल्याउ, इविरत .मे पेंलां रो माल खाउ ॥ २० ॥
 इण लेखें थे धर्म ठगों, भेष पेंहरी नें देवो छों दगो ।
 माहामोहणी बंधती कर्मों, छूट जासी जिण धर्मों ॥ २१ ॥

टांको भूलीयां हुवें अनंत संसारी, भव भव माहे हुवेला खुबारी ।
 जिण सू ओ भेष परों उतारो, इण भेष मे घाडो म पाडो ॥ २२ ॥
 जो थारे मार्गेनें खाणो, तो पाघरो ग्रहस्थ होय जाणो ।
 जथातथ ग्रहस्थ होय जावें, तो कूडा कपट नही थावे ॥ २३ ॥
 जथातथ ग्रहस्थ होय लेवे, दाता पिण ग्रहस्थ जाण देवे ।
 जब नही काइ कपट ने दगो, तब नही कहीजें धर्म ठगो ॥ २४ ॥
 कोइ कहे साध ह्वेंणो छे मोय, घर रा आग्या न देवें कोय ।
 तिणसूं अर्घ सांग वणउ, घणा घर रो मार्गेने खाउ ॥ २५ ॥
 जब घर रा काया होय जावे, मोने आगन्या वेगी आवे ।
 इण कारण मार्गेने खाउं ताहि, जावजीव री नही मन माहि ॥ २६ ॥
 जब उण ने पाछो केणो ताह्यो, ओ थे साग क्याने वणायो ।
 मार्गेने खार्ये ते थारे छादे, ओ भेष ले कर्म काय बांवे ॥ २७ ॥
 पाघरो ग्रहस्थ रो हुवे साग, रोटीया खाता थे माग ।
 तो कूड कपट दगो टल जावे, जिण मारग री हलकी न थावे ॥ २८ ॥
 ओर न्यात रो मार्गेने खासो, ओर न्यात रो अन्न पाणी ल्यासो ।
 जब न्यातीला छोड देसी आसो, आग्या वेगी देसी तासो ॥ २९ ॥
 इम सुणे कोई हरषें विशेष, तुरत उतारे साधु रो भेष ।
 कोइ कहे थोरा दिनां रे तांइ, भेष उतारणी आवे नाही ॥ ३० ॥
 जब उणने वले केणो पाछो, ओ भेष नही छे आछो ।
 पिण इतरो कर ले वेराग, पाचू विगे रा कर दो त्याग ॥ ३१ ॥
 लूखोइ आहार जिण रो ल्यावो, तिण नें पाछों इतरो जणावो ।
 म्हा ने था जिम ग्रहस्थी जाणो, म्हा रे इविरत माहे छे खाणो ॥ ३२ ॥
 मोनें देख म भूलो भर्म, मो ने दीघा रो नही धर्म ।
 धर्म साधा ने दीया थावे, तिण रा पाप कर्म खय जावे ॥ ३३ ॥
 म्हे तो आगन्या लेवा कीयो साग, पार की रोटी खाउ छू मांग ।
 इम कहे पार की रोटी ल्यावे, तो कूड कपट दगो टल जावे ॥ ३४ ॥
 जो इतरी पिण करणी न आवे, भेष पिण उतारणी नावें ।
 जब तो साख्यात छे धर्म ठगो, घणा लोकां ने देवे छे दगो ॥ ३५ ॥
 भोला लोक पिण तिण आगे ठावे, आछो आछो तिणने वेहरावें ।
 ओ पिण होय जाए गटकायो, तिणसू संजम : लीयो न जायो ॥ ३६ ॥
 ताजे ताजे घर गोचरी जावे, जठी तठी फिर आछो ल्यावे ।
 ओ तो भेष ले हिलीयो गटके, सरस आहार रे कारण भटके ॥ ३७ ॥

भेष ले हूवो उलटों भारी, सुखसीलीयों साताकारी ।
 जाणें इण भेष में मांग ल्याउं, ठग ठग लोकां रा माल खाउ ॥ ३८ ॥
 साधपणों पिण लेणी न आवे, उलटो साधां मे दोष बतावें ।
 साधां रो उलटो हूवे वेंरी, केई इसडा पिण होय जाएं गेंरी ॥ ३९ ॥
 साधां नें पिण वंदणा छोडें, दुष्ट परिणामे बेंसें गोंडें ।
 छिदर जोवे दिन रात, आल दे काडें तुरत साख्यात ॥ ४० ॥
 अणहुता आंगुण बोलें ताम, गामां नगरां ठाम ठाम ।
 साधा री वंदणा छुडावें, लोकां नें साधा सूं भिडकावें ॥ ४१ ॥
 वले लोका आणें कहे एम, हूं साधपणो लेउं केम ।
 आगलइ साधां रे मांहि, साधपणो न दासैं ताहि ॥ ४२ ॥
 तिणसूं श्रावक पणों पालां चोखो, कांड मोडे रा जासां मोखो ।
 इम कहि लोकां नें भरमावें, ठगा सूं काम चलावें ॥ ४३ ॥
 केई इसडा पापी होय जावे, सुध साधां सूं भिडकावें ।
 पोतें सुखसीलीयो होय जावें, तिणसूं साधपणों लेंणी नावें ॥ ४४ ॥
 तिणसूं साधां रा अवगुण गावे, आपरा अवगुण सर्व छिपावें ।
 पछें संवलोतो मूल न सुभें, वले दिन दिन इधिक अलूभें ॥ ४५ ॥
 ओं तो विवध पणों बोले कूडों, धर्म नो छे दावानल पूरो ।
 भूठ बोलतो न डरे लिंगार, इण आरे कीयो अनंत संसार ॥ ४६ ॥
 श्री जिण मारग छें साचो, एहवो भे वधीयो नहीं आछों ।
 एहवा नें देखने केई भोला, त्यारो मन खाएं डमडोला ॥ ४७ ॥
 जाणे म्हे पिण इसडा होय जावां, इण विध मांगे म्हेइ खावां ।
 इम करतां करतां मत बांधें, मिथ्यात री वधोतर सावें ॥ ४८ ॥
 साध मारग रा होय जाएं धेखी, निजर वलें साधां नें देखी
 साध वधीयो तो मूल न चावे, ह्वेंतो देखे तिणनें भिडकावें ॥ ४९ ॥
 जिण मारण रा दावानल पका, भोला नें देवे धर्म रा घका ।
 इसडा भारीकर्मा जीव, त्या दीधी नरक री नीव ॥ ५० ॥
 तिणसूं अधवेसडों सांग भूडों, इण साग सूं घणा जाएं बूडो ।
 ओ अधवेसडों साग अजोग, तिणसूं वडें मिथ्यात रो रोग ॥ ५१ ॥
 इम सांभल ने नर नारी, इणरो संग न करणो लिंगारी ।
 इण सांग में मांगें नें खावें, ते घणा नें दगो लगावें ॥ ५२ ॥
 ओ भेष पेंहरी मांग खावें, तिणनें भगवंत नहीं सरावे ।
 जो ओ भगवंत भेष सरावत, तो ओं भेष घणो वध जावत ॥ ५३ ॥
 भगवंत याने केम सरावे, ओं तो उघाडो ठगो दिखावें ।
 घणा लोकां नें मिथ्यात पमावे, त्याने भगवंत केम सरावें ॥ ५४ ॥

आणंद आदि दे श्रावक हूआ, ते घरमे बेठा पडिमा वूहा ।
 त्यां आपरा न्यातील्यां रो आण्यो, न्यातीला पिण निज तणी जाण्यो ॥ ५५ ॥
 त्यां सगपण रे दावे दीघो, या पिण सगपण रें दावे लीघो ।
 त्यां अनेरा घर रो न लीघो, धर्म रे ओले दगो न दीघो ॥ ५६ ॥
 त्यां इग्यारमी पडिमा मे ताह्यो, न्यातीलां रो माग ने खायो ।
 आपरा घर ज्यू त्यारो जाण्यो, तिण सूं त्यांरा घर रो आप्यो ॥ ५७ ॥
 साध श्रावका आ सीख धारो, अघवेस साग मतीय वधारो ।
 आ सांग नही छे आछो, जिण मारग ने पाडे काचो ॥ ५८ ॥
 इण सागवाला ने मतीय सरावो, मूडे पिण मतीय लगावो ।
 मूडे लगायां विगडे छें बात, लोकां रे वघे मिथ्यात ॥ ५९ ॥
 ओ भेष नही सुखदाइ, साधां रे छे घणो दुखदाइ ।
 इण भेष सूं रहसी दूरा, ते परमेसर ना पूरा ॥ ६० ॥
 अद्र भेष ओलखावण ताई, जोड कीवी रावल्यां गांव माई ।
 सवत अठारें सतावना मभार, चेत सुद चोदस सूर्यवार ॥ ६१ ॥



ढाल : २७

दुहा

भेषधारी भागल तणा, श्रावक श्रावका अनेक छें तांम ।
 त्यांमें केयक तो दुष्टी घणां, त्यांरा दुष्ट घणा परिणांम ॥ १ ॥
 त्यांनं परभव री चिंता नही, ते बोले नहीं मूंड विचार ।
 साधां नें आल देता सके नही, पाप कर्म सूं न डरे लिंगार ॥ २ ॥
 किण ही दुष्टी अग्यांनी जीवरे, साधां नें आल दीयो छें ताय ।
 तिणरी साची बात ठेंहराय नें, देवें लोकां में फेलाय ॥ ३ ॥
 ठाम ठाम बकता फिरें, साधां रा अवगुण बोलें दिनरात ।
 उतारें साधां री आंसता, कर कर भूठी वात ॥ ४ ॥
 तिण सूं भेषधारी राजी घणा, तिणनें श्रावक जाणें सुघ मान ।
 ज्यूं ज्यूं अवगुण बोलें साधां तणा, तिणनें सरावें मूंड अयाण ॥ ५ ॥
 तिणमें कूड कपट रा चाला घणा, ते पूरा पूरा केम कहवाय ।
 थोडासा परगट करूं, ते सुणजो चित्तल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[आ अशुकम्या जिण आगन्था मे]

केई नागडा निरलज बथोकडा छें, ते तो कजीयो करण नें बेंठां त्यार ।
 ते साधां नें आल देता नही संकें, आंगुण बोलता पिण न डरें लिंगार ।
 एहवा दुष्ट श्रावक छे भेष धार्यां रा* ॥ १ ॥
 ते किरतघनी संसार रे लेखें, ते न गिणें किणरोई कीयो उपगार ।
 ते साधां नें आल देता नहीं संकें, भूठ बोलता न डरें लिंगार ॥ २ ॥
 चोरी जारी आदि कुलंछण तिणमें, वले वेसासघाती घणा दगादार ।
 ते साधां नें आल देतां नही संकें, ते पाप कर्म सूं न डरें लिंगार ॥ ३ ॥
 केई कजीयाखोर बथोकडा षटनट, ,रणभंज रिणा तणा भांजणहार ।
 ते साधां नें आल देता नही संकें, तिणारें परभव री चिंता न दिसे लिंगार ॥ ४ ॥
 वले चाडीखोड चुगल हुवे दुष्टी, वले कूड ने कपट तणो भंडार ।
 ते साधां नें आल देता नही संकें, तिण जीतब जन्म दीयो छें विगाड ॥ ५ ॥
 तिण री साख नें परख नहीं हुवे लोकां में, वले कजीया राड ने बेंठां छे त्यार ।
 ते साधां नें आल देता नही संकें, वले जाता भगडा तणा लेंगहार ॥ ६ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

हिण रा बोल्यः री परतीत नही छे लोकामे,
 ते साधां ने आल देतो वही संके,
 एहवा भेषधाखां रे श्रावक हुवे तो,
 तिण कने साधां ने आल देणा सीखावे,
 एहवा दुष्टी जीव नें कुबद सीखावें,
 पछें लोक जाणें ओ निरापेखी छे,
 ऐसा ही सेवग नें एसाइ सामी,
 ते कलेस कदागरो वधीया छे राजी,
 एहवा दुष्टी जीव छे भारीकर्मा,
 तिण दुष्टी जीव ने छेरवे कोई,
 एहवा दुष्टी अग्यांनी जीव छें पापी,
 तिणने छेडवीयां तो अवगुण होसी,
 ते तो निदक साधां तणो छे निरंतर,
 वले रात ने दिवस छें घेषी साधां रो,
 साधां रे आल अणहुता देवे छें,
 तिणरे मूढे तो दलदर बोले उघाडो,
 ले साधा रो निदक दुष्ट घणो हुवें,
 वले भव भव मे विजोग पडसी वाला रा,
 वले तांणां तांण मिटे नही तिणरी,
 जिहा जासी तिहां दुखीयो होसी,
 एहवा दुष्टी ते श्रावक बाजे लोकामे,
 वले साधां ने आल देता नही संके,
 सूघ साधांने आल दे अन्हाखी,
 भूठ रा पाप सूं न डरे पापी,
 एहवा विकलाने विकल आय मिलीया जब,
 ते तो गाडरी प्रवाह ज्यूं होय रह्या छे,
 त्यामें कैयक दुष्टी अतही घणो हुवे,
 ते भूठा भूठा आल लोका ने सीखावे,
 त्यांरो श्रावक साधां रे आल देवे जब,
 कांम पडे जब न्यारा होय जावें,
 थोरी वावरी केई सिकार जावे जब,
 आप तो गोली वावे छें अलगोज उभो,

इत्यादिक अनेक आंगुण रो भंडार ।
 तिणरी बात मानें ते बूडा कालीघार ॥ ७ ॥
 तिणने तो सगला मे आगे कीयों राखे ।
 पछें ओ तो फिरीयो २ अकाल भाषें ॥ ८ ॥
 आपतो बुगलच्यानी हो जावें ।
 पिण छानें २ कूड कपट चलावें ॥ ९ ॥
 जेसा कुं तेंसा मलीया छें आय ।
 तिणमें दुष्टी हुवे तिणने देवे लगाय ॥ १० ॥
 त्या छोडदीधी छेंलोका री पिण लजीया ।
 जव ओ त्यारी बेंठोछेकरवा ने कजीया ॥ ११ ॥
 तिण ने भलो मिनष तो छेडवे नांही ।
 भलो ह्वेतो म जांणजो काई ॥ १२ ॥
 वले आल देवण नें उदमी पूरो ।
 ते नरक निगोदसूं नही छें दूरो ॥ १३ ॥
 तिणरे नियमाइ निश्चे भूडो ह्वेतो जोगो ।
 वले घरमे पिण दलदर घसतो जाणो ॥ १४ ॥
 तिणनें भव भव मे दलदरी ह्वेतो जाणो ।
 तिण माहे संका मूल म आणो ॥ १५ ॥
 लारे लगी विपद रहे लागी ।
 वले भव भव मे होसी घणो दोभागी ॥ १६ ॥
 मुहपती वांधनें बोले मोटका कूडो ।
 त्यारा श्रावक पणमे पड गई घूरो ॥ १७ ॥
 वले वकवो करे छें दिन नें रात ।
 सुध साधां थकी पडवजीयो मिथ्यात ॥ १८ ॥
 मन माने ज्यू गालां रा गोला चलावे ।
 उट रे केडे उटडां चलीया जावें ॥ १९ ॥
 ते आल देतो संके नही तिलमात ।
 ते पिण वकवोकरें दिनरात ॥ २० ॥
 ए पिण मन माहे हरषत थावे ।
 पिण कुकला ने कुबद तो एहीज सीखावे ॥ २१ ॥
 सिकारी कुत्ता नें साथे लेजावे ।
 पछें सिकारी कुत्ता त्यां पासें लगावें ॥ २२ ॥

ते स्वान पिण सूसलादिक रांक जीवानें,
 त्यांरी खालडी ने वले मांस धुराघर,
 तिण स्वान थकी सिकारी छें राजी,
 ज्युं त्यांरों श्रावक साघांनं आल देवे जब,
 सिकारी तो स्वान नें वरज राखे जब,
 ज्युं एं पिण यांरा श्रावकांनं वरजे,
 सिकारी स्वान नें वरजे किण लेखे,
 ज्युं एं पिण श्रावकां नें वरजे किण लेखे,
 यांरा श्रावक साघां नें आल देवे ते,
 तिणरों निश्चो तो पुरो हाथे नहीं आयो,
 भेषवारी साघां नें आल देवे ते,
 तिण आल सूं हरपत होयनें पापी,
 कोई अनेरों आल साघां नें देवे ते,
 पछें फिरीया फिरीया अजाण लोकां नें,
 यांरी सरघा मांहे छें इसबो अंधारों,
 तिण रो न्याय निरणों तों मूल न काढे,
 भारीकर्मा जीव छें मूंड मिथ्याती,
 त्यांनं कुगुर मिलीया छें पूरा पापंडी,
 कहि कहि ने कितरो एक केहू,
 ते दुष्टीयां मांहे मोटो दुष्टी छें,
 जोड कीधी छें आल रा फल ओलखावण,
 संवत अठारें सत्तावनें वरसें,

विणास करे जीवां मारे छें तांम ।
 ते सारा आवें छें सिकाखां रें कांम ॥ २३ ॥
 तिण सिकारी नें स्वान घणों कांम आवें ।
 एं पिण घणां फलफूल होय जावें ॥ २४ ॥
 स्वान तो किणही जीव री न करे घात ।
 तो ए पिण साघां नें आल देता रहि जात ॥ २५ ॥
 पातें पिण छें जीवां रा मारणहार ।
 पोतेंई आल देंता न डरें लिंगार ॥ २६ ॥
 तिणरी वात नें साच मांनं छें तांम ।
 तोही कहिता फिरे छें गांम परगांम ॥ २७ ॥
 त्यांरा श्रावक त्यांरो साच मांनं ले तांम ।
 पछें ए पिण कहिता फिरें छे ठांम ठांम ॥ २८ ॥
 तिण आलरा घणी पोतें होय जावें ।
 तिण आल नें साचो करे दरसावे ॥ २९ ॥
 सांघां नें आल दें तिणनें जाणें छे पको ।
 यांनं कर्मा दीयो छें मोटो घको ॥ ३० ॥
 ते साघां नें आल देवणनें सूरा ।
 मानव नो भव खोयनें बूडा छें पूरा ॥ ३१ ॥
 साघां ने आल दे भारी कर्मा अन्हाखी ।
 ते सनमुख वीर गया छें माखी ॥ ३२ ॥
 मेवाड मांहे पुर सहर मझार ।
 आसोज विद अमावस ने बृहसपतवार ॥ ३३ ॥

ढालः २८

[३ जीवा मोह अशुकम्या न आशिये]

सुघ साघ साघवीयां री निद्या करे, बले देवें अणहूता आल जी ।
 ते यूँही बूडे छे बापडा, बाघें उसभ करमां रा जाल जी ।
 ते तो माठी गति रा प्रावणा* ॥ १ ॥

ओर हर कोइ री निद्या करें, तो पिण बचे पाप रा पूर जी ।
 तो साघां रा निदक पापीया, ते तो जासी वहती रें पूर जी ॥ २ ॥

साची ने साची कहे, ते तो निद्या म जाणो कोय जी ।
 अणहूती कहे कोइ पर तणी, ते निदक पापी सोय जी ॥ ३ ॥

खाटा खेटो करें नित् साघ थी, बले अवगुण बोलें दिन रात जी ।
 घण लोकां रा व्रंद मिलें तिहां, करें साघां री तात जी ॥ ४ ॥

जो उ गुण सुणें साघा तणा, तो उणरें लागें अभितर लाय जी ।
 रोम रोम माहे घणो प्रजले, बले मुख देवें कुमलाय जी ॥ ५ ॥

खीटोर खुराइ करें घणी, छल छिदर जोवे दिन रात जी ।
 गृण ग्राम करे लोक साघां तणां, तो इणरे छाती में न समात जी ॥ ६ ॥

कोइ जस कीरत करें साघां तणी, तिण सू पिण राखे घेष जी ।
 ते तो वीद वण्या छे नरक ना, त्याने अरू बरू ल्यो देख जी ॥ ७ ॥

अणहूतो अवगुण सुणे साघनां, तिण अवगुण ने साचो ठहराय जी ।
 पछें उजम आंण उदम करे, घणा लोकां में देवे फॅलाय जी ॥ ८ ॥

न्याय निरणो कीयां त्रिण पापीया, बोलें विरूआ वेण जी ।
 त्याने चिंता नही परभव तणी, त्यांरा फूटा अभितर नेंण जी ॥ ९ ॥

उण रें साघ निजर पडे जदी, जब जागें अभितर घेष जी ।
 मांठा परिणामा मूंह विगाड दे, जाणें वेरी ज्यूं वेर वशेष जी ॥ १० ॥

अनेक जीवां रे आल अनेक दे, एक साघ रें आल दें एक जी ।
 तो पिण भारी पाप छे एहनो, समभ जो आंण ववेक जी ॥ ११ ॥

साघां री निद्या , करें तेहने, कडवा फल लागें आंण जी ।
 ते थोडासा परगट कळं, ते सुणजों चुतर सुजांण जी ॥ १२ ॥

केई धुर सूं तो जाए नारकी, तिहां खाए अनंती मार जी ।
 पछे जाय पडें तिरजंच मे, तिण दुख रो कहित्वां नावें पार जी ॥ १३ ॥

* यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

नरक विचें तिरजंच में, दुख अनंत गुणा छें तांम जी ।
 काल अनंतो तिहां रहें, तिहां सुख रो नहीं कोइ ठांम जी ॥ १४ ॥
 कदे नरक निगोद थी नीकलें, पांमें नर अवतार जी ।
 तिहां पिण दुख पांमें घणा, ते कहितां नांवे पार जी ॥ १५ ॥

दुहा

केई मुघ साघां रा समदाय में, केई हुवे अवनित अजोग ।
 तिणने गुर काढें गच्छ वाहि रे, तिणने फिट फिट करे सह लोग ॥ १ ॥
 ते तो च्यार तीरथ बारें हुवो, तोही मन माहे अति अभिमान ।
 तिणने समदिष्टी साघ गिणें नही, तो पिण कर रह्यो मूढ गुमान ॥ २ ॥
 मुघ साघा ने ढीला कहें, जावक कहे साघां नें असाघ ।
 रात दिवस त्यारी निद्या करें, करे घणों घणो विषवाद ॥ ३ ॥
 ते पोंते विकलाइ करें घणी, हुओ आचार थी मिष्ट ।
 सुघ सरघा पिण विगडे गड, समकत पिण हुइ छे निष्ट ॥ ४ ॥
 केयक मिष्ट हुवा छे इण विघ विधें, सेवा लागा दोष अनेक ।
 ते थोढासा परगट करूं, ते सुणजो आण ववेक ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अशुकम्पा जिश आगन्या मे]

नीसरणी मांडने चढे उतरें छे, रात दिवस माहे बार अनेक ।
 तिण आगना लोपी थी अरिहंत नी, तिणरो मिष्ट हूवों छें आचार ववेक ।
 तिणने साधु किण विघ सरबीजे* ॥ १ ॥
 जो साघ निसरणी चढें उतरें तो, तिणने मोटों दोष कह्यो जिणराय ।
 दसवीकालक पांचमे अघ्येने, सठसठमी गाथा मांय ॥ २ ॥
 तीन गाथा तिहां लगती कही छें, तिहां छक्राय जीवा री कही छे विराघ ।
 बले हाथ पगादिक साधु रा भागें, तिण साधु रे श्री जिण कही असमाघ ॥ ३ ॥
 नीसरणी तले कीढ्यां नें लटादिक, जीव अनेक भेला हुवें आय ।
 ऋदां उतरतां नीसरणी सरके, जब अनेक जीव तिहां मारीया जाय ॥ ४ ॥
 बले नीलण फूलण चोमासें आवे, हेठें उंची नें गात्रादिक मांय ।
 बले छांट लागे मेह बूठां चोमासें, वले विवध प्रकारें अजयणा थाय ॥ ५ ॥
 ते तो सेवाकाल ने बले चोमासा माहें, साप्रत दोष सेवें छें साख्यात ।
 तिण दोष ने दोष न सरबे अग्यांनी, तिण चोडेंइ पडिवजीयो छें मिथ्यात ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

वले कल्प मरजादा उल्लेखें अग्यांनी, मनमानें जिता दिन रहिवा लागों ।
 वले भूठी परूपणा करें लोकां में, तिण छोड दीयो श्री जिणवर मागो ॥ ७ ॥
 कहें साठ वरसां माहें साध हूवो छे, तिणनें एक ठिकाणें रहिणों थापें ।
 वले सूतर रो नाम ले ले अग्यांनी, एहवो भूठ बोले वीर वचन उयापें ॥ ८ ॥
 सूतर माहें कठें नहीं चाल्यो, साठ वरस रा नें रहिणों एक ठिकाणें ।
 इण बात तणो कोइ निरणों करें तो, तिण भूठाबोला ने भूठा बोलो जाणें ॥ ९ ॥
 निसंक सूतर रो नाम बताए, भोला लोकां नें उपजावें वेसासो ।
 लाज सरम छोडे नें अग्यांनी, चोमासा उपर थाप्यो चोमासो ॥ १० ॥
 एक मास रही नें विहार कीघो छें, विमणा दिन बारें काढ्यां विण तिहांइज आवें ।
 सेषा काल पिण महीना थी इधिकों रहे छें, तिण भागल नें हटक में कुण चलावें ॥ ११ ॥
 हालण चालण री सक्त घटें जब, साधु ठाणापती रहें एक ठिकाण ।
 वरसां रो नाम न चाल्यो सूतर में, कारण विनां रहें मूढ अयाण ॥ १२ ॥
 नव दीषत सामायक चारित वालो, तिण कनें सिज्जातर रो आहार मंगावें ।
 ते सिज्जातर रो आहार तिणनें खवावें, इसरो चेला नें आचार सीखावें ॥ १३ ॥
 सिज्जातर रो आहार जाण जाण खवावें, तिणमें दोष कहें तिणने कहे अजाण ।
 ओ तो कल्प आचार साधु रो न जाणें, इसरी कहे मूढ कर कर ताण ॥ १४ ॥
 ए सांप्रत दोष उघाडो दीसें, तिण दोष नें कर लीघो छें आसांन ।
 वले मन माहें जाणें हूं प्रवीण पको, हीण वुधी थकों करें थोथों गुमान ॥ १५ ॥
 चोवीसोइ तीथंकर त्यांरा साधां ने, सिज्जातर पिड न कल्पें लिगार ।
 नव दिषत गिलाण नें बालक बूढा नें, त्यांने पिण नही खाणो सिज्जातर आहार ॥ १६ ॥
 मोटो दोष जाणें छें कमाड खोल्यां में, तो पिण हाथां सूं कमाड खोलवा लागो ।
 जीव हिंसा करतो नहीं संक्यों, हिंसा कीयां थी पंहेलें महावरत भागों ॥ १७ ॥
 कोइ पूछे तो कूड बोलें कपटी, म्हे तो जेंणा सूं हाथे खोल्यो कमाड ।
 मोनें पाप न लागों जेंणा सूं खोल्यां, इण विध भूठ बोलनें होय जायें पार ॥ १८ ॥
 कलाल तणो कुल मुख सूं निषेध्यों, तिणरो आहार लेवाने होय गयोत्यारी ।
 तिणनें जातो जांणी नें ग्रहस्थ निषेध्यों, थे म करो इण मारण री हाथां सूं खुवारी ॥ १९ ॥
 ग्रहस्थ वरज्यों जब जातों रह्यो छें, पिण उण रा परिणाम एहीज जाणो ।
 दुगच्छणीक रो आहार लेतो न संके, तिण भांग दीघी श्री जिणवर आणो ॥ २० ॥
 मेंणा रा घर री गोचरी थापी, छानें छानें खावों मेंणा रो आण्यो अहार ।
 वले मेंणा री गोचरी करवा ढूको, ते पिण लोकां में हूवो छें उचार ॥ २१ ॥
 लोकां माहें परूपणा प्रसिद्ध लीघी, हूं तो मेंणा रो आण्यो न खाउ अहार ।
 हूं इणनें अहार देउं पिण इण रों न लेउं, इण भूठ तणों पिण हूवों उचार ॥ २२ ॥

मनमानें जिता दिन रहिवा लागों ।
 तिण छोड दीयो श्री जिणवर मागो ॥ ७ ॥
 तिणनें एक ठिकाणें रहिणों थापें ।
 एहवो भूठ बोले वीर वचन उयापें ॥ ८ ॥
 साठ वरस रा नें रहिणों एक ठिकाणें ।
 तिण भूठाबोला ने भूठा बोलो जाणें ॥ ९ ॥
 भोला लोकां नें उपजावें वेसासो ।
 चोमासा उपर थाप्यो चोमासो ॥ १० ॥
 विमणा दिन बारें काढ्यां विण तिहांइज आवें ।
 तिण भागल नें हटक में कुण चलावें ॥ ११ ॥
 साधु ठाणापती रहें एक ठिकाण ।
 कारण विनां रहें मूढ अयाण ॥ १२ ॥
 तिण कनें सिज्जातर रो आहार मंगावें ।
 इसरो चेला नें आचार सीखावें ॥ १३ ॥
 तिणमें दोष कहें तिणने कहे अजाण ।
 इसरी कहे मूढ कर कर ताण ॥ १४ ॥
 तिण दोष नें कर लीघो छें आसांन ।
 हीण वुधी थकों करें थोथों गुमान ॥ १५ ॥
 सिज्जातर पिड न कल्पें लिगार ।
 त्यांने पिण नही खाणो सिज्जातर आहार ॥ १६ ॥
 तो पिण हाथां सूं कमाड खोलवा लागो ।
 हिंसा कीयां थी पंहेलें महावरत भागों ॥ १७ ॥
 म्हे तो जेंणा सूं हाथे खोल्यो कमाड ।
 इण विध भूठ बोलनें होय जायें पार ॥ १८ ॥
 तिणरो आहार लेवाने होय गयोत्यारी ।
 थे म करो इण मारण री हाथां सूं खुवारी ॥ १९ ॥
 पिण उण रा परिणाम एहीज जाणो ।
 तिण भांग दीघी श्री जिणवर आणो ॥ २० ॥
 छानें छानें खावों मेंणा रो आण्यो अहार ।
 ते पिण लोकां में हूवो छें उचार ॥ २१ ॥
 हूं तो मेंणा रो आण्यो न खाउ अहार ।
 इण भूठ तणों पिण हूवों उचार ॥ २२ ॥

कोइ गांम बारे जाय दिष्या लीघी,
 ते सांप्रत दोषीली सूखडी लेता,
 जो दिष्या लेतो हुवें तिणरो न्यातीलो,
 जो इधिकी आणे ओर साघां काजे,
 दिष्या लेतो थको आहार साथे लेवे तो,
 वले सका पडे ओर सगला साघां री,
 ओर साघां रे काजे मोल लेइ ने,
 ते सूखडी साराइ साघ खाए तो,
 पेंहला तो गुर चोलपटादिक घोवे,
 जब आप घोयो ते सहिल गिणनें,
 जब चेलो कहे हूं तो थांहरी देखादेखी,
 जो दोष हुवें तो दोया मे दोष,
 जब गुर कहे आगे घोवता आपे,
 जब चेलो कहे आ तो खवर नही मोने,
 कपडा घोवण रो गुर चेला रे,
 जब लोकां माहें पिण भूडा दीठा,
 सोभा विभूषा करवा ने काजे,
 तिण आगना लोपी श्री अरिहत री,
 अनता सिघा री साख करने,
 ते पिण सूंस भागे ने चेला कीघां,
 सूंस भागेनें चेला करतो नही लज्यो,
 ते पड गयो च्यार तीर्थ वारे,
 सगला साघ भेला होय मरजादा वाधी,
 ते पिण सूंस सगलाइ भांग्या,
 सगला साघा मिल ने मरजाद वाधी,
 अनता सिघां री साख करने,
 सगला सूंस करे मरजाद वाधी,
 तिण लिखत हेठें सगलां आषर कीघा,
 ए सूंस मरजादा भागे तिणनें,
 वले तिणने निदक जाणवो च्यार तीर्थ रो,
 इसडा सूंस कर ने पाना माहे लिखाया,
 ते पिण सूंस सगलाइ भांग्या,

कोइ साघ काजे सूखडी मोल ल्यायो ।
 लोक लज्या पिण छोडी छें तायो ॥ २३ ॥
 तिणरे तांइ आण ने तिणनें देवे कोय ।
 ते वेंहरे तो साघु ने दोषण होय ॥ २४ ॥
 आ पिण लोका मे आछी न लागे ।
 तिणरो न्याय निरणो करे किण किण आगे ॥ २५ ॥
 दिष्या लेणवालो ले नीकले साथ ।
 तिणने निश्चेंइ दोष कह्यो जगनाथ ॥ २६ ॥
 त्यारी देखा देख चेलो पिण घोयो ।
 चेला सू तोर ने लोकां मांहि विगोयो ॥ २७ ॥
 चोलपटादिक घोयो निसक ।
 म्हां एकला माहे नही छें वक ॥ २८ ॥
 ते हिवडा उवा रीत छे नांय ।
 थे पेहला मोने कह्यो नही काय ॥ २९ ॥
 एक एक रो मांहो मां कीयो उघाड ।
 वले माहो मां कीघा कजीया ने राड ॥ ३० ॥
 साघ थइ कपडादिक घोवे ।
 तिणरी चिह्नगति माहे खुराबी होवे ॥ ३१ ॥
 चेला करण रा कीया पचखाण ।
 तिण अनता सिघा री भाणी आण ॥ ३२ ॥
 ते तो होय गयो निश्चेंइ भागल भिष्टी ।
 तिणनें किण विघ साघ सरवे समदिष्टी ॥ ३३ ॥
 तिण मरजाद मे सूंस कीया अनेक ।
 वले भूठ बोले मूठ विना ववेक ॥ ३४ ॥
 सगलाइ साघ कीघा पचखाण ।
 आपे सगलाइ चालां यां सूंस प्रमाण ॥ ३५ ॥
 ते सूंस लिख्या छे पाना रे मांहि ।
 अनता सिघां री साख ठेहराइ ॥ ३६ ॥
 गिणवों नही च्यार तीर्थ माही ।
 तिणने वादे त्यानें पिण आगना नाही ॥ ३७ ॥
 अनता सिघा री साख करनें ताय ।
 वले जांणी जाणी बोले मूसावाय ॥ ३८ ॥

कदे तो कहे हं इण लिखत में नाही,
 कदे कहे म्हे लिखत मे आखर न कीघां,
 कदे तो कहें म्हे सरमासरमी,
 कदे कहें मोनें कहि नें करायो,
 कदे कहें मोसूं कपटाइ दगों करेनें,
 कदे कहें मोनें एकलो करता जांणी नें,
 कदे तो कहें हूं यांरां टोला मांहे रहूं सूं,
 कदे कहें लिखत म्हारें तांइ कीघो,
 कदे कहें म्हारें उसभ कर्म उदें आया,
 आतो भोलप होय गइ म्हारी,
 कदे तो कहें हूं सगलाइ चेलां में,
 हूं छोटां री आग्यां में किण विव चालूं,
 कदे तो कहें हूं रह्यो यांरा टोला में,
 पिण आत्मा रो अर्थी कोइ न दीठो,
 कदे कहें अविनारी ढालां जोडी ते,
 चेलां नें कह्यो ठाम ठाम कहो थे,
 इत्यादिक भूठ बोले छें अनेक प्रकारें,
 जांणी जांणी भूठ बोलें छें अग्यांनी,
 अनंता सिद्धां री साख करे सूंस कीघा,
 ते हुय गयो अपछंदो अवनीत,
 सुख साघां नें ढीला कहि कहि अग्यांनी,
 तिणनें च्याहंइ तीरथ साघ न जाणें,
 ज्यानें ढीला जाणें त्यांरा टोला रा भागल,
 त्यां सूं नरमाइ करे कह्यो मोनें ल्यो थे,
 थे कहो तो दूर कहुं म्हारा चेला,
 थें मोनें चलावो जिण रीत चालूं,
 दोय वार गयो त्यांमें जावानें काजें,
 त्यांनें अनेक वार कह्यो मोनें मांहे ल्यो,
 ज्यानें ढीला जाणें त्यांरा टोला रा भागल,
 त्यां भागलां पिण तिणनें मांहे न लीघो,
 पांचू विगैरा त्याग कीया तेही भांग्या,
 सूंस यांनें लिख्या ते पांनो ही फाड्यो,

कदे कहे म्हे लिखत आरे. न कीघो ।
 कदे कहे म्हे एक ससो कर दीघो ॥ ३६ ॥
 लिखत हेठें आखर कीया ताय ।
 कदे कहें म्हे लिखीयो सांकडे आय ॥ ४० ॥
 लिखत रे हेठें आखर कराया ।
 म्हे डरतें थकें आखर कीया छें ताय ॥ ४१ ॥
 तठा तांइ म्हारें छें पचखाण ।
 ए सगलाइ मो उपर कीघा मंडाण ॥ ४२ ॥
 जब लिखत हेठें आखर लिख दीया ताय ।
 तिण बात नें हूं रह्यो छूं पिच्छताय ॥ ४३ ॥
 हूं वडो हूंतो तिणनें मूंदे न कीघो ।
 तिण सूं टोलो म्हे छिटकाय दीघो ॥ ४४ ॥
 आत्मार्थी जोवण कांम ।
 तिण सूं एकलो नीकल्यो टोला सूं ताम ॥ ४५ ॥
 सगली ढालां मो उपर कीघी छें ताहि ।
 हिंवे हूं किण विव रहूं टोला रे मांहे ॥ ४६ ॥
 परभव रो डर नाणें मूल लग्गार ।
 खोय दीयो तिण संजम भार ॥ ४७ ॥
 ते सूंस भागे नें हूवो एकलो ।
 तिणनें साघ सरघ्यां किम होसी भलो ॥ ४८ ॥
 आप भागल थको उतकष्टो वाजें ।
 तो पिण नरलजो मूल न लाजें ॥ ४९ ॥
 त्यां भागलां में मन जावा रो कीघो ।
 त्यां पिण तिणनें मांहे नही लीघो ॥ ५० ॥
 थे कहो ते थानें परतीत उपाय ।
 थे मोनें मांहे ल्यो हूं थां मांहे आउं ॥ ५१ ॥
 जातो अनेक कोसां रो पेंडो कीघो ।
 तो पिण तिणनें त्यां मांहे न लीघो ॥ ५२ ॥
 उतकष्टो प्राच्छित छें त्यांनें मांहे ।
 तिण भागल री भोलां खबर न कांइ ॥ ५३ ॥
 वले सुखडी रा सूंस ते पिण भांग्या ।
 रंस गिघी थकें एहवा सूंस उलांग्या ॥ ५४ ॥

उषधादिक वासी राखवा लागें, ते पिण कपटाइ करेणें ताहि ।
 घणी रो ओषध घणी नें पाछो न सूप्यो, आप रें काजें सूप्यो अनेरा ने जाय ॥ ५५ ॥
 इणविघ नित रो नित आणने मेले, घणी नें पाछो न सूपें जाइ ।
 घणा मास दिवस तांइ सेव्यो निरंतर, वले तिण महिं दोष न सरखें छे ताहि ॥ ५६ ॥
 इसरा मोटा मोटा दोष जाणेनें सेवें, तिण भिष्टी री भोला करसी परतीत ।
 तिणें साधु सरघी तीखूतों कर वादें, ते पिण चिहूं गति मे होसी घणां फजीत ॥ ५७ ॥
 सुष साधाने मूर्ख ढोला परूपें, पोते भारी भारी दोष सेवन लागो ।
 वले कुडा कुडा आल देतो नही सकें, ते तो विरत विहूणो होय गयो नागो ॥ ५८ ॥
 तिण भागल ने ओलखावण काजे, जोड कीधी नेणवा सह्र मभार ।
 संवत अठारे वरस अडतालें, महाविदि अमावस नें सोमवार ॥ ५९ ॥



ढाल : ३०

ढुहा

सत्रुंजो पर्वत कह्यो, तीर्थ न कह्यो जिनराय ।
जो संका पडें इण बात री, तो जोवो सूतर रे मांय ॥ १ ॥
तिहां एकंत जायगां जाण ने, घणा साधां कीयां संथार ।
तिहां केवल ग्यान उपजाय ने, पोहता मुक्ति मभार ॥ २ ॥
केइ अग्यांनी इम कहें, सत्रुंजो पर्वत बंदनीक ।
तिहां कांकरे कांकरे सिघ हुवा, तिण सूं ओ तीरथ ठीक ॥ ३ ॥
तिण सूं तीरथ करां जातरा, जावां दूर थकी चलाय ।
बांदां पूजां सत्रुंजो भाव सूं, तो पातक दूर पुलाय ॥ ४ ॥
इण विघ विकलाई करें, जेंनी नांम धराय ।
भूला अग्यांनी भर्म में, जिण धर्म री खबर न काय ॥ ५ ॥
सत्रुंजा पर्वत मर्मै, साधु सीधा अनेक तिण ठाम ।
बंदनीक तो सिघ साध छें, पर्वत बांदे अग्यांनी तांम ॥ ६ ॥
साधु सीधां जायगां बंदनीक हुवें, तो कुण कुण जायगां बंदनीक ।
ते चित्त लगाय ने सांभलो, ज्यू पडें पाखंड री ठीक ॥ ७ ॥

ढाल

[रे भवियण सेवो रे साध सयाराण]

जो थें सत्रुंजा पर्वत नें बांदो, तो बांदणा द्वीप अढाई ।
वले बांदणा थानें समुद्र दोनूई, साधु सीधा एती ठोड मांहि रे ।
भवियण जोवो रे हिरदे विचारी, थें कांय करो आतम भारी रे ।
कुमत्यां हिंसा नहीं सुखकारी रे * ॥ १ ॥
लाख पैतालीस योजन मांहें, साधु सीधा छे सगली ठामो ।
सत्रुंजा ज्यू सगली जायगां नें, बांदे पूजै करणा गुण ग्रामो रे ॥ भ० २ ॥
थारे लेखे सगली जायगां बंदनीक, हिव पग मेलसो किण जागां ।
जो थें बंदनीक जायगां ऊपर पग मेलो, तो अकारज करवा कांय लाग़ा रे ॥ भ० ३ ॥
बंदनीक जायगां ऊपर पग मेले, वले करे कारज अनेक ।
मल मातरा तिण ऊपर न्हांखैं, बूडो छो विना विवेक रें ॥ भ० ४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

सत्रुजा नें वादे हाथ जोडी नें,
 वले मल मात्रो तिण ऊपर न्हांखै,
 ज्यानें वादे ज्यांरा इज सिर ऊपर,
 इसडों अंधारो छे घट जेहनें,
 थें सत्रुंजा रे सिर पग मेलो,
 आप थापी नें आप उत्थापो,
 साचां रा तो गुण बंदनीक,
 तो जायगां बंदनीक किस बिघ होसी,
 साधु सीषां सूं जायगां बंदनीय ह्वै,
 इण लेखे तो मनुष्य क्षेत्र में,
 सगली जायगां मांहे अकारज हुवा,
 अबंदनीक जायगां थारे किसी थापीजे,
 तो पांच तीर्थं जितरी जायगां में,
 जो जायगां बिगडे अकारज कियां तो,
 सत्रुंजो ' गिरनार ' अष्टापद ' ,
 ए पांच तीर्थं नें थेटरा कहे छें,
 ए आपरे छादे तीरथ थाप्या,
 वले नाम लेवे सूत्रां रो चोडे,
 शिव मारग ने मुसलमानां मे,
 त्यांरा पुराण कुराण मांहे कन्हो तिणसूं,
 त्यांरी देखादेख तीरथ थापे,
 ते जिनेश्वर देव तो नही थाप्यो,
 हरकेशी जी नें ब्राह्मणा पूछ्यो,
 कुण तीर्थं कीषां थकां म्हांरा,
 जब यां जिन धर्म रूपियो ब्रह्म बतायो,
 इण स्नान कियां जीव निर्मल होसी,
 तीर्थं करो तुम्हे शील रूपियो,
 शीतलीभूत हुवे सुगत में जाये,
 शील रूपियो तीर्थं श्री जिन भाप्यो,
 ओर तीर्थं सर्वं लोकिक रा जाणो,
 शील रूपियो तीर्थं थापेनें,
 यांरा कुल रा तीर्थं सर्वं छडाय ने,

तिण ऊपर चढे जोडी सूवा ।
 ए तो पूरा अज्ञानी अन्ना रे ॥ भ० ५ ॥
 पग देता न हुवे पाछा ।
 डाहा किम जाणे साचा रे ॥ भ० ६ ॥
 तिणनें तीर्थं थापे बांदो पूजो ।
 तो डाहो कुण माने हूजो रे ॥ भ० ७ ॥
 त्यांरी काया पिण नही बंदनीक ।
 थानें आ पिण नही छै ठीक रे ॥ भ० ८ ॥
 अकारज कियां सूं नही बंदनीक ।
 कोइ जायगां नही बंदनीक रे ॥ भ० ९ ॥
 साधु पिण सीषा सर्वं ठाम ।
 थें किसी जायगां बांदो शीश नाम रे ॥ भ० १० ॥
 आगे हुआ अकारज अनेक ।
 हिंवे तीर्थं न बांदणो एक रे ॥ भ० ११ ॥
 समेत ' शिखर आवु ' वादे ।
 वले अनेक थाप्या आप छांदे रे ॥ भ० १२ ॥
 कर कर कूडी टेको ।
 पिण सूत्र मे नही एको रे ॥ भ० १३ ॥
 आपणा कुल साहमो देखे ।
 त्यां तीर्थं थाप्या इण लेखे रे ॥ भ० १४ ॥
 आप छादे भाल रह्या टेको ।
 शंका हुवे तो सूतर मांही देखो रे ॥ भ० १५ ॥
 स्नान करवा नें ब्रह्म कुण थायो ।
 जन्म मरण मिट जायो रे ॥ भ० १६ ॥
 भली लेश्या रूप पाणो जाणो ।
 तिण सूं पामे पद निर्वाणो ॥ भ० १७ ॥
 तिण सूं जीव ह्वै निकलंको ।
 तिण मे म राखो शंको रे ॥ भ० १८ ॥
 तिण मांहे नही छे कूडो रे ।
 तिणसूं कर्म न हूवे पूरो रे ॥ भ० १९ ॥
 यांने आणिया मारग ठायो ।
 सत्रुंजादिक नही बतायो रे ॥ भ० २० ॥

जो सत्रुंजादिक तीर्थ कियां सूं, कटता देखता कर्मों ।
 तो ओहिज तीर्थ त्यानें पिण कहिता, त्यां कीषां बतावत धर्मों रे ॥ भ० २१ ॥
 शील रूपियो तीर्थ श्री जिन भाष्यो, उत्तराध्येन बारमों जोवो ।
 थें तीर्थ पर्वत पहाड़ थाप नें, नर भव नें कांय खोवो रे ॥ भ० २२ ॥
 वले थावरचा अणगार नें पूछ्यो, सुखदेव संन्यासी आयो ।
 जाना तुम्हारे छे के नहीं छे, सु यात्रा म्हारे छे सुखदायो रे ॥ भ० २३ ॥
 जब सुखदेव कहे थारे जाना किसी छे, किसी जाना करे काटो कर्मों ।
 जब सुखदेव संन्यासी नें कहे थावरचा, तूं सांभल म्हांरी जाना धर्मों रे ॥ भ० २४ ॥
 ज्ञान दर्शन चारित तप नें संजम ते, इत्यादिक सारा गुण निरदोखो ।
 यांरा जतन करां ते जानां छे म्हारे, तिण सूं पामें अधिचल मोखो रे ॥ भ० २५ ॥
 यां पिण ज्ञानादिक गुण री जाना कही छे, कांड बाकी न राखी विशेखो ।
 सत्रुंजादिक री जाना नहीं दाखी, गिनाता रो पांचमो अध्येन देखो रे ॥ भ० २६ ॥
 ठग ठग सिद्धान्त में जाना कही जिहां, ज्ञानादिक गुण बताया ।
 आ जाना उत्थापे पर्वत पहाड़ थापे, इसडा गोला कांय चलाया रे ॥ भ० २७ ॥
 भगवंते सूत्र मांहि निरवद्य, तीर्थ जाना बताई ।
 ते तीर्थ जाना थां सूं करणी नावें, तिण सूं मांडी थें विकलाई रे ॥ भ० २८ ॥
 साधु साधवी श्रावक नें श्राविका, ए च्याहं तीर्थ जिनजी बताया ।
 थें पांचमों तीर्थ सत्रुंजादिक थापे, इसडा गोला कांय चलाया रे ॥ भ० २९ ॥
 ए च्याहं तीर्थ रा गुण तेहिज तीर्थ छे, यांरी काया पिण तीरथ नाहीं ।
 तो थें सत्रुंजादिक अनेक कहो छे, ते किम तीरथ मांही रे ॥ भ० ३० ॥
 थें सावद्य तीर्थ जाना थापेनें, छ काय जीवां नें मरावो ।
 इसडो अकारज करो आप छांदे, तिण में जिन आज्ञा कांय बतावो रे ॥ भ० ३१ ॥
 थें जीव मारेनें धर्म कहो छो, ते भगवंत रा नहीं वेंणो ।
 थें मोह मतवाला गहला ज्यूं बोलो, थांरा फूटा अमितर नेंणो रे ॥ ३२ ॥
 जीव हण्या मांहें धर्म परुषें, त्यांरो मत जाबक खोटो ।
 ते साधु तणा वचन किम सरखे, त्यांरा घट में मिथ्यात छे मोटो रे ॥ ३३ ॥
 थानें हणे छेदे भेदे जीवां मारे, तिणरे बंध्या कहो पाप कर्मों ।
 थें ओर जीव मारे धर्म जांणो, ओ थानें किम होसी धर्मों रे ॥ ३४ ॥
 थानें हणे त्यानें पाप कहे ते, आ बात नहीं छें भूठी ।
 थें धर्म कहो पेला नें हणियां, तिण सूं अमितर री आंख फूटी रे ॥ ३५ ॥
 थें जीव हणेनें वले धर्म सरघो, आ मति किण दीधी माठी ।
 आ प्रतष चोडें खोटी सरघा, तिणनें झाल रह्या छो काठी रे ॥ ३६ ॥

रांक जीवां ने माख्यां धर्म कहता, वले सिंह तणी परे गाजो ।
भगवंत रा केडायत वाजो, ते पिण नावे थाने लाजो रे ॥ ३७ ॥



ढलल : ३१

दुहल

केई जेंनी नलंम धरलत नें, बोलें भूठ अतीव ।
 सलधु धोवण वहरें तेह में, कहे बेईद्री जीव ॥ १ ॥
 ते पोतें तो धोवण पीवें नहीं, पिये त्योंनं निदे दिन रलत ।
 ते अन्हलखी थकल बकवो करे, त्योंरल घटमलहें घोर मिथ्यलत ॥ २ ॥
 जिभ्यल रो स्वलद तज्यलं वलनलं, धोवण पियो किम जलत ।
 तिणसूं धोवण उथलपें वहरणो, भूठी कर कर मुख सूं बलत ॥ ३ ॥
 केई कहे वलसी आहलर में, एकण रलत रे मलंहि ।
 जीव बेईद्री उपजें, तिणसूं सलधलं ने वहरणो नलंहि ॥ ॡ ॥
 पोतें ठंडो आहलर भलवे नहीं, तिण सूं उंधी परूपें एम ।
 एहवल हिसलधर्म्यलं रल लक्षण बुरल, ते सुणज्यो धर प्रेम ॥ ५ ॥

ढलल

[धर्म ंरलरलधिघे ए]

कसलई विचे तो कुगुर बुरल ए, त्योंरे दयल नहीं लवललेश ।
 छ कलतल मलरण तणो ए, दे पलपी उपदेश ।
 पलखंडी गुर एहवल ए, उन्हों पलंणी धरलवे करे आमनल ए * ॥ १ ॥
 पछें भर भर त्योंलवे ठलंम, आधलकर्मिं भोगवे ए ।
 त्योंरल दुष्ट घणल परिणलंम, भविक निरणो करो ए ॥ पल० २ ॥
 करडो कलठो धोवण भलवे नहीं ए, उन्हों पलंणी लगे स्वलद ।
 तिण सूं अन्हलखी थकल ए, करे कूडी विषवलद ॥ ३ ॥
 कहे धोवण में उपजे घणल ए, दोय घडी पलछें जीव ।
 ए उंधी परूपनं ए, दे छें कुगुतल नीं नींव ॥ ॡ ॥
 धोवण इकवीस जलतल नों ए, सलधु नें लेणो कह्यो जिण आप ।
 आचलरलंण सूतर में ए, ते कुगुरलं दीयो उथलप ॥ ५ ॥
 इकवीस जलतल सूं मिलतो थको ए, घणी जलतल रो धोवण जलंण ।
 ते पिण लेणो कह्यो ए, तिणरी न करे मूढ पिछलंण ॥ ६ ॥
 अतेरो सस्त्र परिणस्यलं थकलं ए, वर्ण ने रस फिर जलत ।
 ते धोवण लेणो सलधु नें ए, ते विकललं नें खबर न कलत ॥ ७ ॥

*यह ंकडी प्रत्येक गलथल के अन्त में है ।

कहे घोवण मे जीव उपजें ए, दोय षडी मे आय ।
 ते पिण सूतर मे नही ए, मूठ थका बोले, मूसावाय ॥ ८ ॥
 ततकाल रो घोवण नहीं वेंहरणों ए, घणी बोलां रो घोवण लेणो जाण ।
 दसवकालक मे कह्यो ए, तोही करे अग्यांनी ताण ॥ ९ ॥
 कहे घोवण में जीव उपजें ए, ते अन तणे परवेश ।
 एहवो मूठ बोलनें ए, कर रह्या कूड क्लेश ॥ १० ॥
 जो घोवण में जीव उपजें ए, तो रोटी में ई उपजे आण ।
 दोय षडी मभे ए, ए लेखो बरोवर जाण ॥ ११ ॥
 इमहिज दाल खीच घाट में ए, इत्यादिक सगलो अन जाण ।
 सगलां में जीव उपजे ए, घोवण सूं यानें ल्यो पिछाण ॥ १२ ॥
 कठे पांणी थोडो नें अन घणो ए, कठे अन थोडो पांणी अत्यन्त ।
 पांणी नें अन सर्व मे ए, यां सगलां रो एक विरतंत ॥ १३ ॥
 दूष री जावणी रा घोवण मभे ए, यामे उपजें वेइंद्री आय ।
 तो दूष में पिण उपजे ए, पांणी मिले छे तिण मांय ॥ १४ ॥
 वले दही नें छाछ रा घोवण मभे ए, यामे उपजे वेइंद्री आय ।
 तो उपजें दही छाछ मे ए, पांणी मिले छे यारे ई मांय ॥ १५ ॥
 जिण जिण दरब रा घोवण मभे ए, जो उपजें वेइंद्री आय ।
 तो दरब में ई उपजें ए, पांणी मिले छे दरब रे मांय ॥ १६ ॥
 इतरा काल पछें जीव उपजे ए, ते सूतर मे न कह्यो भगवंत ।
 उपजता जीव जाण ने ए, व्हरे नहीं मतिवत ॥ १७ ॥
 केई रात बासी रोटी मभे ए, कहे उपजें वेइंद्री आय ।
 ते साधु नें नही वेंहरणी ए, एहवी कूडी करे बकवाय ॥ १८ ॥
 ऊन्ही रोटी ततकाल री ए, ते खातां लागे स्वाद ।
 ठंडी भावे नही ए, तिण सूं बोले मिरखावाद ॥ १९ ॥
 जीम तणा लंपटी थका ए, ठंडी रोटी माहे कहे जीव ।
 न कहे तो लेणी पडे ए, तिणसूं बोले मूठ सदीव ॥ २० ॥
 लाहू लापसी सीरा पकवान नें ए, बासी बहिरे मन चाय ।
 रोटी बहिरे नही ए, तिण माहे जीव वताय ॥ २१ ॥
 जो बासी रोटी में जीव उपजे ए, तो लाहू आदि दे सगलां मे जाण ।
 अन्त पाणी सगलां मभे ए, इणरी न करे मूठ पिछाण ॥ २२ ॥
 लाहू लापसी सीरो तो भावे घणो ए, ठंडी रोटी भावे नाहिं ।
 तिण सूं अन्हाखी थका ए, जीव कहे ठंडी रोटी माहिं ॥ २३ ॥

पोहर रात गयां रोटी करे	ए,	तिणने नही बेंहरे परभात ।
तिणमें जाणे जीवडा	ए,	तीन पोहर निकली कहे रात ॥ २४ ॥
तो परभाते रोटी नीपजें	ए,	आथम्यां सूधी खाणी नाहि ।
पोहर च्यार नीकल्या	ए,	इण लेखें बेइंद्री तिण माहि ॥ २५ ॥
उन्हाला री रात नान्ही हुवें	ए,	दिन मोटो छें साख्यात ।
कदे फेर दोढो परे	ए,	लेखो कीयां विना क्यूं खात ॥ २६ ॥
रात पड्यां जीव ऊपजें	ए,	दिन रा न उपजें तिण मांय ।
तो किण ही सूतर मभे	ए,	साचा हुवे तो काढ बताय ॥ २७ ॥
केई बासी वहिरे सीयाला मभे	ए,	शील सातम सूधी ताहि ।
आगे वहिरे नहीं	ए,	ते पिण नही सूत्र रे माहि ॥ २८ ॥
बासी विणस्यो नें कूयो घणो	ए,	वले अत्यन्त कूह्यो असार ।
एहवो आहार भोगवे	ए,	तो पिण नाणे द्वेष लिगार ।
		दसमां अंग में कह्यो ए ॥ २९ ॥
वले भगवंत वासी वहरियो	ए,	जोवो आचारांग मांय ।
मूरख माने नहीं	ए,	चोडे भूला जाय ॥ ३० ॥
जीभ्या रो लोलपी थको	ए,	जीव बासी में कहे ताण ।
उंधी सरघा थकी	ए,	बूडे छें मूढ अयाण ॥ ३१ ॥
जो ठडी रोटी में जीव बेइंद्री	ए,	तो यांरा श्रावक जाण ने कांय खाय ।
महाजन रा कुल मभे	ए,	इसडो कांय करे मूढ अन्याय ॥ ३२ ॥
कदा पोते कुगुरां रा भरभाविद्या	ए,	पोते बासी अन्न नही खाय ।
पिण घर रा मिनख नें	ए,	ठंडो आहार देवे खवाय ॥ ३३ ॥
व्यालूं करतां रोटी बचे	ए,	त्यांनं घरती क्यूं न देवे न्हांख ।
जाणे छे जीव उमना	ए,	पछे खातां ई नाणे शांक ॥ ३४ ॥
नित नित खावे बेइंद्री	ए,	जीव काया करे दूर ।
दांतां सूं मारेनं गिले	ए,	त्यांरो श्रावक पणो चकचूर ॥ ३५ ॥
जीव खाये खवरावे जाण नें	ए,	त्यां गुर री न राखी परतीत ।
महाजन रा कुल तणी	ए,	छोड दीधी त्यां रीत ॥ ३६ ॥
बासी अन्न माहें नीलणादिक ऊपजे	ए,	ते किण ही काल में जाण ।
देखी नें साधु परिहरे	ए,	ते डाहा चतुर सुजाण ॥ ३७ ॥
रात्रि भोजन करे तेह में	ए,	पाप कहे ते न्याय ।
पिण मुतलब आपरे	ए,	हुवे जिण सूं दे अधिको बताय ॥ ३८ ॥

भूठ बोले पाप अधिको कहै ए, आपरे उन्हों ल्यावण काज ।
 जिभ्या रा लोलपी थका ए, भूठ बोलता नाणे लाज ॥ ३६ ॥
 पिण भोलां नें खबर पडे नही ए, तिणरो कुण काढे निकाल ।
 विकलां नें कुगुरां न्हाखियो ए, मोटो मिथ्यात रो जाल ॥ ४० ॥
 कोरडू धान ने छाछ भेलां हुवां ए, तो उपजे वेइंद्री तिण माय ।
 पाखंडी इम कहे ए, ते एकंत मूसावाय ॥ ४१ ॥
 कहे खीत्र ने छाछ भेलो करी ए, कोई जीमे भाणा मांय ।
 तो उपजे वेइंद्री ए, एहवो दियो भूठ चलाय ॥ ४२ ॥
 जिण जिण धान मे कोरडू मिले ए, तिण माहे घाले छास ।
 तो उपजे वेइंद्री ए, ते खावां हुवे तिण रो विणास ॥ ४३ ॥
 छाछ नें कोरडू धान भेला हुवे ए, विदल दियो तिण रो नाम ।
 एहवा, विदल मम्मे ए, उपजे वेइंद्री ताम ॥ ४४ ॥
 एहवी करे पल्पणा ए, घाले भोलां रे शंक ।
 मिडकावे जिन धर्म थी ए, ओ चोडे कुगुरां रो डंक ॥ ४५ ॥
 आ सरघा दिगम्बर मत तणी ए, ते नही माने आगम ज्ञान ।
 केई विगड्या श्वेताम्बरी ए, त्यां पिण लीषी त्यांरी मान ॥ ४६ ॥
 कोरडू धान नें छाछ भेला कियां ए, उपजे वेइंद्री आय ।
 ते नही छें सिद्धांत में ए, ओ कुगुरां दीयो गोलो चलाय ॥ ४७ ॥
 कोरडू धान छाछ भेला कियां ए, जो उपजे वेइंद्री तिण मांय ।
 तो इण सरघा रा धणी ए, खाटादिक न्यूं खाय ॥ ४८ ॥
 वेजड, तणी रोटी हुवे ए, ते नहीं खाणी छाछ सूं लगाय ।
 इणमे ई जीव उपजे ए, उणरी सरघा रो ओहिज न्याय ॥ ४९ ॥
 जाण जाण नें खावें जीव वेइंद्री ए, जो खावे छै विना आगार ।
 ते भागल व्रतां तणा ए, त्यांरा श्रावकपणा ने धिक्कार ॥ ५० ॥
 केइ श्वेताम्बर नें दिगम्बरा ए, ते बोले भूठ निसंक ।
 ऊंवी करे पल्पणा ए, धांरी श्रद्धा माहे मोटो वंक ॥ ५१ ॥
 जो कदा न खावे जाणनें ए, आ खोटी मत री छें ह्द ।
 इसडी ऊंवी ताणनें ए, आगे गया अनता वूड ॥ ५२ ॥
 वारे कुल री साधां नें कही गोचरी ए, यां कुलां सूं मिलता वले जाण ।
 आचारांग मे कह्यो ए, ते उथापी मूढ अयाण ॥ ५३ ॥
 वारे कुल री कही छे गोचरी ए, ते तो चोथा आरा मांय ।
 हिवहां करणी नहीं ए, एहवो बोले मूपावाय ॥ ५४ ॥

पांचमे आरे साधु साधवी ए, जो चाले सूतर रे न्याय ।
 तो बारह कुल री करे ए, पिण विकला सूं किधी न जाय ॥ ५५ ॥
 ओर कुलां में आछो मिले नहीं ए, पोते भावे सरस आहार ।
 जिभ्यारा लंपटी थका ए, भूठ बोले जनम विगाड ॥ ५६ ॥
 ओर कुल री न करां म्हें गोचरी ए, ओर कुल में तो मद्य मांस खाय ।
 तिण सूं महाजन रा कुल ममे ए, गोचरी करां म्हें जाय ॥ ५७ ॥
 मांस खावे तिण घर वहिरे नहीं ए, मांस आहारी नें मूंड ले मांय ।
 भिन्न राखे नहीं ए, एकण पात्रे खाय ॥ ५८ ॥
 जिण कुल रो आहार वहिरे नहीं ए, तिण कुल रा नें मांहे ले मूंड ।
 संभोग भेलो करे ए, देखो अग्यान्यां री रूड ॥ ५९ ॥
 आगे क्षत्री कुल रा राजवी ए, ते मांस खाता घर मांय ।
 त्यांरे घरे बहिरता ए, साधु साधवी जाय ॥ ६० ॥
 उग्रसेन राय जीव भोला किया ए, ते गोरो देवा नें ताय ।
 यांरा कुल री रीत थी ए, त्यांरा कुल मांहे बहरता जाय ॥ ६१ ॥
 त्यांरा कुल रा हुंता साधु साधवी ए, ते मांस खाता घर मांय ।
 त्यांसूं भेला रह्या ए, त्यांरा कुलां में बहरता जाय ॥ ६२ ॥
 ऊंच नीच मध्यम कुल री गोचरी ए, साधु नें कही जिनराय ।
 बारे कुल मांहे आविया ए, जोवो सूतर रे मांय ॥ ६३ ॥
 ऊंच कुल क्षत्री राजा तणो ए, मध्यम बाणिया ब्राह्मण जाण ।
 नीच कुल पिण चोखो कह्यो ए, गूजरादिक मिलता पिछाण ॥ ६४ ॥
 बारह कुल री गोचरी निषेवसी ए, तिणरे बोहला पाप ।
 चोर तीर्थंकर तणो ए, कह्यो जिनेश्वर आप ॥ ६५ ॥
 लाडू पतासा री परभावना ए, दरावें उपासरा मांहि ।
 वखाण पूरो हूवां ए, ते किण ही सूतर में नांहि ॥ ६६ ॥
 खावारा लोलुपी थका ए, घणा भेला हुवे आय ।
 लेवण नें लाडुआ ए, लाजे नहीं मन मांय ॥ ६७ ॥
 आगे आनंदजी आदि श्रावक हुआ ए, त्यांरे कोडां रो घन घर मांय ।
 त्यां सावां रा थानक ममे ए, नहीं दीधी परभावना आय ॥ ६८ ॥
 वले भगवंत रा मांडला ममे ए, नर नारी मिलता अनेक ।
 जिण दिन पिण श्रावक घणा ए, लाडू बांट्या न दीसे एक ॥ ६९ ॥
 लाडू पतासा बांटण तणो ए, ओ कुनुरां तणो उपदेश ।
 ते मुतलब आपरो ए, कोई बुधिवंत जाणे त्यांरी रस ॥ ७० ॥

जो लाडू पतासा वापरे	ए, ते कोई यानें देवे	वहराय ।
ए मुतलव आपरो	ए, तिण सूं दीधी कुतुव	चलाय ॥ ७१ ॥
बले प्रशंसा वधारवा	ए, मान	वडाई काज ।
दरावे परभावना	ए, जावक छोडे दीधी	लाज ॥ ७२ ॥
ज्यारे लाडू पतासा पानें पडे	ए, ते तो करे गुण	ग्राम ।
समझे नही धर्म में	ए, त्यारे लाडू पतासा सूं	काम ॥ ७३ ॥
धर्म कही कही भोला लोका नें	ए, लाडू पतासा	वंटाय ।
घणा रे मन मानियो	ए, तिणरो कुण पूछे	न्याय ॥ ७४ ॥
खाणो पीणो विषय इंद्रिया तणो	ए, तिण सूं कर्म	वंघाय ।
जिनेश्वर इम कह्यो	ए, जोवो सिघांत रे	मांय ॥ ७५ ॥



रत्न : ३३

आचार री चौपई

ढाल : १

दुहा

पहिलां अरिहंत नें नमूं, ज्यूं सीभे आतम काम ।
 पिण वले विशेषे वीर ने, ए सासण नायक साम ॥ १ ॥
 कार्य सामी आपणा, ते पोंहता निरवाण ।
 सिद्धां ने वंदणा करू, त्या मेट्यो आवण जाण ॥ २ ॥
 आचार्यं सहू सारिषा, गुण रत्ना री खाण ।
 उवभाय ने सर्व साध जी, ए पाचूइ पद वखाण ॥ ३ ॥
 बांदोजे नित एहणें, नीचो सीस नमाय ।
 गुण ओलख वंदणा करे, तो भव भव ना दुख जाय ॥ ४ ॥
 सुगुरु कुगुरु दोनू तणी, गुण विन खबर न काय ।
 पहिलां कुगुरु ने ओलखो, सुण सूतर रो न्याय ॥ ५ ॥
 सूतर साख दीयां विना, लोक न माने वात ।
 सांभल ने नर नारियां, छोडो मूल मिथ्यात ॥ ६ ॥
 कुगुरु चरित अनंत छे, ते पूरा केम कहाय ।
 थोडा सा परगट करूं, ते सुणजो चित्तलाय ॥ ७ ॥

ढाल

[आदर जीव स्त्रिम्यागुण]

ओलखावण दोहरा भव जीवा, कुगुरु चरित अनंत जी ।
 कहितां छेह न आवे तिणरो, इम भाख्यो भगवंत जी ।
 साधु म जाणो इण चलगत सूं ॥ १ ॥
 आषाकर्मी थानक मे रहे तो, ते पाडे चारित मे भेद जी ।
 नशीत नें दशमे उदेशे, च्यार महीना रो छेद जी ॥ २ ॥
 अठारे ठाणा कहा जू जूआ, एक विराषे कोय जी ।
 वाल कह्यो श्री वीर जिनेसर, साधु म जाणो सोय जी ।
 कुगुरु पिच्छाणो इण चलगत सूं ॥ ३ ॥
 आहार सिज्या ने वस्त्र पातर, असुघ लियां नही सत जी ।
 दसवेकालक छटे अघ्ययने, भिष्ट कह्यो भगवंत जी ॥ ४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

अचित्त वस्तु	नें	मोल	लरावे,	तो	सुमत	गुप्त	हुवे	खंड	जी ।
महाव्रत	पांचूई	भागा,	चोमासी	नो	डंड	जी ॥ ५ ॥			
एतो भाव	नसीत	मे	चाल्या,	उगणीस	में	उदेश	जी ।		
सुध सांधु	बिन	कुण	सुणावे,	सूत्र	नी	उंडी	रेस	जी ॥ ६ ॥	
पुस्तक	पातर	उपाश्रादिक,	लिवरावे	ले	ले	नाम	जी ।		
आच्छा	मूंडा	कहि	मोल	बतावे,	ते	करे	ग्रहस्थ	नों	काम
गराग	नें	तो	कइयो	कहिजे,	कुगुरु	विचे	दलाल	जी ।	
बेचणवालो	कह्यो	वाणियो,	तीनां	रो	एक	हवाल	जी ॥ ८ ॥		
क्रय	विक्रय	मांहे	वर्ते	तो,	महादोषण	छे	एह	जी ।	
पेंतीसमां	उत्तराधेन	में,	साधु	न	कह्यो	तेह	जी ॥ ९ ॥		
नितको	बहरे	एकण	घरको,	च्यारा	में	एक	आहार	जी ।	
दसवेकालक	तीजा	में	कह्यो,	साधु	नें	अणाचार	जी ॥ १० ॥		
जो ल्यावे	नित	धोवण	पांणी,	तिण	लोप्यो	सूतर	नों	न्याय	जी ।
बतलायां	बोले	नही	सूधा,	दोषण	दीए	छिपाय	जी ॥ ११ ॥		
नहीं	कल्पे	ते	वस्तु	वेंहरे,	तिणमें	मोटी	खोड	जी ।	
आचारांग	पेंहले	श्रुतस्कंधे,	कह	दीयो	मगवंत	चोर	जी ॥ १२ ॥		
पेंहलों	व्रत	तो	पूरो	पडियो,	जब	आडा	जडे	किवाड	जी ।
कूटो	भागल	हुडो	अटकावे,	तो	निश्चे	नही	अणगार	जी ॥ १३ ॥	
पोते	हाथे	जडे	उघाडे,	ते	करे	जीवां	रा	जेन	जी ।
गृहस्थ	उघाडी	आहार	वेंहरावे,	तब	करे	अणहंता	फेन	जी ॥ १४ ॥	
साधवीयां,	नें	जडवो	चाल्यो,	तिणरी	म	करों	तांण	जी ।	
यां लारें	जो	साधु	जडे	तो,	ए	भागल	रा	अहनाण	जी ॥ १५ ॥
मन	करनें	जो	बांछे	जडवों,	तिण	नही	जाणी	पर	पीर
पेंतीसमा	उत्तराधेन	में,	बरज	गया	महावीर	जी ॥ १६ ॥			
पर	निदा	में	राता	माता,	चित्त	मे	नही	संतोष	जी ।
वीर	कह्यो	दसमां	अंग	में,	तिण	वचन	में	तेरे	दोष
दिष्या	ले	तो	मो	आगे	लीजे,	ओर	कनें	दे	पाल
कुगुरु	एहवो	सूस	करावे,	ए	चोडें	उंची	चाल	जी ॥ १८ ॥	
ए	बंधा	थी	ममता	लागे,	गृहस्थ	सूं	भेलप	थाय	जी ।
नशीत	रे	चोथे	उदेशे,	डंड	कह्यो	जिणराय	जी ॥ १९ ॥		
जीमणवार	में	वेंहरण	जाए,	आ	साधां	री	नहीं	रीत	जी ।
वरज्यो	आचारांग	वृहतकल्प	में,	उत्तराधेन	नसीत	जी ॥ २० ॥			

आलस नही आरा मे जाता, वले बेठी पांत वसेष जी ।
 सरस आहार ल्यावे भर पातर, त्यां लज्यां छोडी ले भेप जी ॥ २१ ॥
 चेला करण री चलगत उधी, चाला बोहत चलाय जी ।
 साथे लीयां फिरे गृहस्थ नें, वले रोकड दाम दराय जी ॥ २२ ॥
 ववेक विकल नें सांग पहराए, भेलो करे आहार जी ।
 सामग्री मे जाय वंदावे, फिर फिर करे खुवार जी ॥ २३ ॥
 अजोग ने दिप्या दीधी ते, भगवंत री आग्या बार जी ।
 नसीत रो डंड मूल न मान्यो, ते वितल हुवा बेकार जी ॥ २४ ॥
 विण पडलेह्या पुस्तक राखे, वले जमे जीवां रा जाल जी ।
 पडे कुंथुआ उपजे माकण, जिण बांधी भांगी पाल जी ॥ २५ ॥
 जोवे वरस छ मास निकलीयां, तो पेंहलां व्रत नो खंड जी ।
 नित पडलेहण मेली तिणनें, एक मास नों डंड जी ॥ २६ ॥
 गृहस्थ ने साथे कहे सदेसो, तो भेलो हुओ संभोग जी ।
 तिणनें साधु किम सरखी जे, लागो जोग ने रोग जी ॥ २७ ॥
 समाचार विवरा सुध कहि कहि, सानी कर गृही बुलाय जी ।
 कागद लिखावे करे आमना, परहय दीए चलाय जी ॥ २८ ॥
 आवण जावण बेसण उठण री, वले जायगां देवे बताय जी ।
 इत्यादिक साधु कहे गृहस्थ ने, तो दोनूं बराबर थाय जी ॥ २९ ॥
 गृहस्थ नें दे लोट पातरा, पूठा परत विशेष जी ।
 रजोहरण पूंजणी देवे, ते भिष्ट हुआ ले भेष जी ॥ ३० ॥
 पूछे तो कहे परठ दीया मे, कूड कपट मन मांहि जी ।
 काम पडे तो जाय उरा ले, न मिटी अंतर चाहि जी ॥ ३१ ॥
 कहे परठ्या गृहस्थ नें देइ, बोले वले अन्याय जी ।
 कह्यो अचारांग उत्तरावेन मे, साधु . परठे एकंत जाय जी ॥ ३२ ॥
 करे गृही सूं बदलो सदलो, पिंडत नाम घराय जी ।
 पूरी पडी सगला वरतां री, ते भेष ले भूला जाय जी ॥ ३३ ॥
 थोडो सो उपघ गृहस्थ नें दीघां, वरत रहे नही एक जी ।
 चोमासी डंड नसीत मे गूंथ्यो, तिण छोडी जिण घर्म टेक जी ॥ ३४ ॥
 विण अंकुस जिम हाथी चाले, घोडो विगर लगाम जी ।
 एहवी चाल कुगुरु री जाणों, कहिवा नें साधु नाम जी ॥ ३५ ॥
 अणूकंपा नही छही काय री, गुण विण कहे मे साव जी ।
 ए चरचा अणुजोग दुवार में, विरला परमारथ लाघ जी ॥ ३६ ॥

घृष्ट पुष्ट नें मांस बघारे, वले करे विगेरो पूर जी ।
 माठा परिणामा नाख्यां निरखे, ते साधुपणा थी दूर जी ॥ ३७ ॥
 सरस आहार ले विण मरजादा, तो बघे देही री लोथ जी ।
 काचमणी प्रकाश करे जिम, कुगुरु माया थोथ जी ॥ ३८ ॥
 दबक दबक उतावला चाले, तस थावर माख्यां जाय जी ।
 इर्या समिति जोया विण भागी, ते किम साधु थाय जी ॥ ३९ ॥
 कह्यो आचारंग उत्तराधेन में, जो करे चलतां बात जी ।
 उंची तिरछी दिष्ट जोवे तो, छ काय री हुवे घात जी ॥ ४० ॥
 कपडा में लोपी मरजादा, लांबा पेना लगाय जी ।
 इधिको राखे दोयवड ओढे, वले बोले मुसावाय जी ॥ ४१ ॥
 उपगरण नें इधिका राखे, तिण मोटो कीयो अन्याय जी ।
 नसीत रें सोल में उद्देशे, चोमासी चारित जाय जी ॥ ४२ ॥
 मूरख नें गुर एहवा मिलिया, ले डूबसी लार जी ।
 साचो मार्ग साधु बतावे, तो लडवा नें छे तयार जी ॥ ४३ ॥
 एहवा गुर साचा कर मानें, ते अंध अग्यांनी बाल जी ।
 फोडा पडे उतकष्टा तिणमें, तो हले अनंतो काल जी ॥ ४४ ॥
 हलुकर्मी जीव सुण सुण हरषे, करे भारीकर्मा घेष जी ।
 सूतर रो न्याय निदाकर मानें, ते डूवा वले विशेष जी ॥ ४५ ॥

ढाल : २

दुहा

समदिष्टी आरे पांच में, थोडी रिघ अपमान ।
मिथ्यदिष्टी जोडे हूसी, बहु रिघ बहु सनमान ॥ १ ॥
समण थोडा ने मुड घणा, पाचमे आरे चैन ।
भेष लेइ साघां तणो, करसी कूडा फेन ॥ २ ॥
साधु अल्प पूजावसी, ठाणा अग में साख ।
असाधु महिमा अति घणी, श्री वीर गया छे भाख ॥ ३ ॥
कुंगुर कुदेव कुघर्म मे, घणा लोक रजाबंध होय ।
ओलख ने निरणो करे, ते तो विरलां जोय ॥ ४ ॥
साधु मारग छे साकडो, भोला खबर न काय ।
जिम दीवे मरे पतंगियो, तिम पडे पगां मे जाय ॥ ५ ॥
घणा साधु ने साघवी, श्रावक श्राविका लार ।
उलटा पड जिण धर्म थी, परसी नरक ममार ॥ ६ ॥
महा नसीत मे इम कह्यो, गुण विण धारे भेष ।
लाखा कोडा गमे सावठा, नरका पढता देख ॥ ७ ॥
लोषा वरत न पालसी, खोटी दिष्ट अयाण ।
तिणनें कही छे नारकी, कोइ आप म लीजो ताण ॥ ८ ॥
आगम थी अंबला बहे, साधु नाम धराय ।
सुघ करणी वेगला, ते सुणजो चित्तल्याय ॥ ९ ॥

ढाल

[चन्द्रगुप्त राजा]

सीघा घर आपे साधु नें, वले ओर करावे आगे रे ।
एहवो उपाश्रो भोगवे, तिणनें वज्र किरिया लागे रे ।
तिणनें साधु किम जाणीए# ॥ १ ॥
आचारंग दूजे कह्यो, महा दुष्ट दोषण छे जिणमे रे ।
वीर वचन संवला करो, तो साधुपणो नही तिणमें रे ॥ २ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

साधु	अर्थे	करायो	उपाश्रो,	छायो लिप्यो ग्रहस्थ बाल रागी रे ।
तिण	थानक	रहे	तेहनें,	महा सावच्च किरिया लागी रे ॥ ३ ॥
त्यांनै	भावे	तो	ग्रहस्थ	कह्या, दियो आचारंग साखी रे ।
भेषधारी	कह्या	सिधंत	में,	भगवंत काण न राखी रे ॥ ४ ॥
सिज्यातर	पिंडज	भोगवे,	वले कुब्द	केलवे कपटी रे ।
घणी	छोड	आग्या	ले	अवरनी, सरस आहारादिकरा लंपटी रे ॥ ५ ॥
सबलो	दोषण	लागे	तेहनें,	वले नसीत में डंड भारी रे ।
अणाचारी	कह्या	दसवेकालिके,	तिण	भगवंत सीख न घारी रे ॥ ६ ॥
अणुकंपा	आण	श्रावक	तणी,	दरब दरावण आगा रे ।
दूजे	करण	खंड्यो	वरत	पांचमो, तीजे करण पांचूई भागा रे ॥ ७ ॥
ग्रहस्थ	जिभावणरी	आमनां,	जो	करे, साधु दलाली रे ।
चोमासी	डंड	नसीत	में,	व्रत भांगे हूआ खाली रे ॥ ८ ॥
करे	बांसादिकनो	बांधवो,	वले	किया भीतां रा चेजा रे ।
लीपवो	छायवो	आद	दे,	ते कहिजे सपरिकम सेजा रे ॥ ९ ॥
एहवी	वस्ती	भोगवे,	ते	साधु नहीं लवलेसे रे ।
मासीक	दंड	कह्यो	तेहनें,	नसीत नें पांचमें उद्देशे रे ॥ १० ॥
बांधे	पडदो	परेच	कनात	ने, वले चन्द्रवा सिरकी ताटा रे ।
साधु	अर्थे	किया	ते	भोगवे, तो ग्यानादिक गुण नाठा रे ॥ ११ ॥
थापीता	थानक	में	रहे,	तिण दिया महाव्रत भांगो रे ।
भावे	साधुगणा	थी	वेगला,	त्यांनै, गुण विण जाणो सांगो रे ॥ १२ ॥
काच	चशमो	वज्यो	ते	राखनें, जाणे दोषण छे थोरो रे ।
पांचमों	वरत	पूरो	पड्यो,	वले जिन आग्या नां चोरो रे ॥ १३ ॥
ग्रहस्थ	आयो	देखी	मोटको,	हावभाव सूं हरषित हुआ रे ।
करे	विछ्रावण	री	आमनां,	ते तो साधु मारग थी जूवा रे ॥ १४ ॥
ग्रहस्थ	तेरण	आया	साधु नें,	कपडादिक वेहरण ले जावे रे ।
इण	विघ	वहरे	तेहमें,	चारित किणविघ पावे रे ॥ १५ ॥
साहमों	आप्यो	लेजाए	तेरियो,	ए दोनूं दोषण छे भारी रे ।
यांनै	टाले	केडायत	वीर नां,	सेव्यां नहीं साधु आचारी रे ॥ १६ ॥
घोषणादिक	में	निलोतरी,	वले	जीव सहित कण भीनां रे ।
ते	पिण	वहरे	संके	नहीं, ते परमव सूं नहीं वीनां रे ॥ १७ ॥
एहवो	अनपाणी	भोगवे,	त्यांनै	साधु किम थापीजे रे ।
जो	सूतर	नैं	साचा	करो, तो चोरां री पांत घातीजे रे ॥ १८ ॥

ग्रहस्थ रे सभाय बोल थोकडा, साधु लिखे तो दोषण लागे रे ।
 लिखायाने अनुमोदिया, दोय करण उपरला भागे रे ॥ १६ ॥
 पहिले करण लिखायां मे पाप छे, तो लिखाया दोष उघाडा रे ।
 पाच महाव्रत मूलगा, त्या सगलां मे परिया वधारा रे ॥ २० ॥
 उपकरण भलावे ग्रहस्थनें, ओ नही साधु आचारो रे ।
 प्रवचन न्याय न मानियो, लियो मुगत सूं मारग न्योरो रे ॥ २१ ॥
 ग्रहस्थ रा उपधि रा जाबता, कीघां वरत चकचूरो रे ।
 सेवग हुओ संसारिया, ते साधुपणा थी दूरो रे ॥ २२ ॥
 साता पूछे पूछावे ग्रहस्थ ने, ते अविरत सेवण लागा रे ।
 अणाचारी कह्या दसवेकालिके, वले पांचूई महाव्रत भागा रे ॥ २३ ॥
 श्रावक ने वले श्राविका, करें मांहोमाहिं कारज रे ।
 साता पूछे विनो वियावच करे, यामे धर्म परूपे अनारज रे ॥ २४ ॥
 अणाचार पूरा नही ओलख्या, ते नवभागा किण विघ टाले रे ।
 ग्रहस्थने सीखावे सेवणा, लिया वरत नहिं समाले रे ॥ २५ ॥
 कारण परिया लेणो कहे साधुने, करे असुध वहरण री थापो रे ।
 दातार ने निरजरा घणी, वले थोडो बतावे पापो रे ॥ २६ ॥
 एहवी ऊची करे परूपणा, घणा जीवा ने उलटा नाखे रे ।
 अणविचारी भाषा बोळता, भारीकमां जीव न साके रे ॥ २७ ॥
 करे भिष्ट आचार नी थापनां, कहि कहि दुषम कालो रे ।
 हिवडां आचार छे एहवो, घणा दोषारो न हुवे टालो रे ॥ २८ ॥
 एक पोते तो पाले नही, वले पाले जिणसूं घेषो रे ।
 दोय मूर्ख तिणने कह्यो, पहलो आचारंग देखो रे ॥ २९ ॥
 पाट बाजोट आण्या ग्रहस्थ नां, पाछा देवण री नही नीतो रे ।
 मरजादा लोपीनें भोगवे, तिण छोडी जिन धर्म रीतो रे ॥ ३० ॥
 त्यानें डड कह्यो एक मास नों, नशीत उद्देशे बीजे रे ।
 ए न्याय मारग परगट कियां, भारीकमां सुण सुण खीजे रे ॥ ३१ ॥

ढलल : ३

ढुहल

घणल असलधु जलन कहुलल, ते लुक मे सलधु कहुलय ।
सलसुु हुवे तुु देखलु, दसवेकललक मलंय ॥ १ ॥
भेष सगललं रुु सलरुखु, ते भुलल खबर न कलय ।
वलवरुु वुीर वतलवलधु, दुुजुु गलथल मलंय ॥ २ ॥
गुलय दशुन कलरलत तप, ए कुलरलं मे रक्त अणर ।
एहुवे गुणुे सहलत छे, ते मुुठल अणगलर ॥ ३ ॥
इण वलघ सलधु ने ओलखे, ते तुु वलरलल जलण ।
ए नुलय मलरग जलणुयलं वलनल, करे अगुलयनुु तुलण ॥ ॡ ॥
कुुथे आरे अरलहंत थकलं, इम हलज खलंकल तुलण ।
णलषंड मे ढडतल घणल, कर्मल वस लुक अजलण ॥ ॡ ॥
भगडल रलड हुंतल घणल, कुुथल आरल मलंय ।
णलंकमलं रुु कहलवु कलसुु, ते सुणजुु कुुतललय ॥ ॢ ॥

ढलल

[जुुयजुु ३ कलयर हुुगल]

सलवतुथु तुु नगरु वुीर ढवलरलरल ये, गुुशलु भगडुुु छे तुलहलं आय रे
लुक मुुंडल सुु वलणुु इम वदे रे, कुण सलकुु कुण भूठुु थलय रे ।
णलषंड वघसुु आरे ढलंकमे रे* ॥ १ ॥
घणल लुकलंरे मन इम मलनलडुु रे, गुुशलु भलषे ते सत वलय रे ।
वुीर नहुु छे जलन कुुवुुसमलं रे, अणहुंतुु बलले मुसल वलय रे ॥ २ ॥
कुुएक उतुतम थल ते इम कहे रे, गुुशलु जलन नहुुं करे अनुलय रे ।
सतवलदुु वुीर जलनंद कुुवुुसमलं रे, ए कदेय न बलले मुसलवलय रे ॥ ३ ॥
कलतरलं एक रुु सलसुु मलठलडुु नहुुं रे, महुुलंने तुु सडड ढडे नहुुं कलय रे ।
जलण दलन ढलण सगललइ सडजुलय नहुु रे, भुलल घणुु थुु लुकलं मलंय रे ॥ ॡ ॥
शुरलवक गुुसलल रे सुणलणल अतल घणल रे, इगुलरे ललख इगसठ हुजलर रे ।
वुीर रे एक ललख बले अडरे रे, गुणसठ सहंस अधलक वलकलर रे ॥ ॡ ॥

*यहु अलंकडुु ढुरतुके गलथल के अनुत मे हुु ।

जद पिण पाखंडी था अति घणा रे, तो हिबडां पिण पापंडी नो जोर रे।
 वीर जिनद मुगत गया पछे रे, भरत मे हुओ अघारो घोर रे ॥ ६ ॥
 तिणमे घर्म रहसी जिनराजरो रे, थोडोसो आग्या नो चमत्कार रे।
 भ्रबको परे ने बले मिट जावसी रे, पिण निरंतर नहिं इकवीस हजार रे ॥ ७ ॥
 अल्प पूजा होसी सुघ साध री रे, आगूच वीर गया छे भाष रे।
 असाधु री पूजा महिमा अति घणी रे, ठाणा अंग माहे तिणरी साख रे ॥ ८ ॥
 ऊने ऊने ने बले ऊगियो रे, तो आयमिया विन किम उगाय रे।
 इण न्याय भविषण नही घर्म सासतो रे, हुय हुय भ्रलपट नें बुझ जाय रे ॥ ९ ॥
 लिंगरा लिंगरी वधसी अति घणा रे, करसी माहो माहिं भ्रगडा राड रे।
 जे कोइ काढे तिण मे खूचणो रे, क्रोध कर लडवा नें छे तयार रे ॥ १० ॥
 चेला चेली करण रा लोभिया रे, एकत मत बांधण सू काम रे।
 विकला नें मूंड मूंड भेला करे रे, दिराए ग्रहस्थ ना रोकड दाम रे ॥ ११ ॥
 पूजरी पदवी नाम घरावसी रे, में छां सासण नायक साम रे।
 पिण आचारे ढीला सुघ नहिं पालसी रे, नहिं कोइ आतम साधन काम रे ॥ १२ ॥
 आचार्य नाम घरासी गुण विना रे, पेटभरा ज्यारो परवार रे।
 लपटी तो हूसी इझी पोषवा रे, कपट कर ल्यासी सरस आहार रे ॥ १३ ॥
 तकसी तो देखी आरा टामला रे, रिगसी ए जाणी जीमणवार रे।
 पांत जीमें जिहा जाती पावरा रे, आग्या लोपे हूसी बेकार रे ॥ १४ ॥



ढाल : ४

दुहा

दावानल लागो अधिक, वले वाजे वाय अथाय ।
 अटवी मोटी इंधण घणा, ते किम आग बुजाय ॥ १ ॥
 आगा सूं इंधण अलगा करे, वले रहे वाजंतो वाय ।
 ऊपर जल सूं छांटियां, दावानल फिट जाय ॥ २ ॥
 तिम भर जोवन व्रत आदरे, वले डीलमें पुष्टी काय ।
 अति सरस आहार नित भोगवे, तो विषय बघंती जाय ॥ ३ ॥
 अति सरस आहार न भोगवे, वले खीणी पाडे काय ।
 बुभावे विषेरूप अगन नें, सुमतारस पाणी ल्याय ॥ ४ ॥
 विषे वधे तिम आहार न भोगवे, घष्टी पुष्टी न करे काय ।
 मांत मांत करे निषेधियो, सूत्र सिद्धांतां मांय ॥ ५ ॥
 आ भोल पडी मोटी घणी, त्यां जिभ्या दीधी मुकलाय ।
 खाणे पहरणे चित्त दियो, इण सबले सरणे आय ॥ ६ ॥
 भेष लेइ भगवान रो, खावा लोकां रा माल ।
 तप जप संजम बाहिरा, कूंदो वण रह्यो लाल ॥ ७ ॥
 छदमस्थ एलाणे ओलखे, ए भेष ले भूला जांय ।
 तिणरी खबर इण विध परे, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ८ ॥

ढाल

[जीव दया व्रत पालो]

रसगुद्धी ते हिलिया गटके रे, सरस आहार नें कारण भटके ।
 भेषलेइ आत्म नहि हटके रे, त्यारे चिहूं दिस फांदा लटके ॥ १ ॥
 रंगाळंगा नें डीलां सनूरा रे, लोहो मांस बध्या नहि रुडा ।
 ल्लिया व्रत न पाले पूरा रे, ते सिव रमणी सूं दूरा ॥ २ ॥
 चांप चांप नें कीषां आहारो रे, डील फाटे नें बघे विकारो ।
 त्यारी देही बघे ऊमी नें आढी रें, साथल पीड्यां पडे जाडी ॥ ३ ॥
 व्रत दूध दही मीठो भावे रे, कारण विण मांगी नें ल्यावे ।
 लूदा ल्यावे तपसा जणायो रे, ए तो पेट भरण रो उपायो रे ॥ ४ ॥

कोरो घृत पीए वीघारी रे, आ जुगती नहिं ब्रह्मचारी ।
 मरजादा विन करे आहारो रे, तिण लोपी भगवंत कारो ॥ ५ ॥
 ताक ताक जाए घर ताजे रे, साधु भेष लियो नहिं लाजे ।
 पर घर जाय पडगो माडे रे, नहिं दियां माडां ज्यूं मांडे ॥ ६ ॥
 दाता रा करे गुण ग्रामो रे, पारे नहिं दे तिणरी मामो ।
 करे ग्रहस्थ आगे वाता रे, नहिं बहरावे त्यांरी करे तातां ॥ ७ ॥
 श्रावक श्राविका ऊपर ममता रे, सिष्या री नहिं सुमता ।
 मूंडे वले काल्या दुकाल्या रे, त्यांसूं व्रत न जाए पाल्या ॥ ८ ॥
 बांध्यां थानक पकखा ठिकाणा रे, ग्रहस्थ सूं मोह वंधाणा ।
 मुखसीलिया साताकारी रे, डूबा साधु नो भेषधारी ॥ ९ ॥
 ए लखण कुगुर रा जाणो रे, उत्तम नर हिरदे पिच्छाणो ।
 देव गुर में खोटा जिण खाधा रे, तिणनें छे संसार जादा ॥ १० ॥
 एहवा नें गुरकर पूजे रे, समकत विन संवलो न सूझे ।
 तिणरे छे भारी कर्मो रे, ते किम ओलखे जिन धर्मो ॥ ११ ॥
 कुगुरा री भाली पखपातो रे, त्यांनें न्याय री न गमे वातो ।
 बुध उलटी ने मूढ मिथ्याती रे, साधु वचन सुण्या वले छाती ॥ १२ ॥
 घनावे सेठ वेटी नें खायो रे, कुसले राजग्रही आयो ।
 इम करसी साधु आहारो रे, तो पोहवे मुपात मकारो रे ॥ १३ ॥

ढाल : ५

ढुहा

खोटो नांगो नैं सांतरों, एकण नोली मांय ।
 ते भोला रे हाथे दियां, त्यांसूं जूआ किया किम जाय ॥ १ ॥
 ज्यूं साधु असाधु लोक में, दोयां रो एक आकार ।
 भोला भिन्न नहिं लेखवे, ते जाणे नहिं आचार ॥ २ ॥
 जिणरी बुध छे निरमली, ते देखे दोयां री चाल ।
 कुगुरां नैं काने करे, साधु वांदे पग भाल ॥ ३ ॥
 जे भारीकमां जीवडा, ते रह्या कूडी पख भाल ।
 पिण छिपायी छिपे नहीं, ते सुणजो कुगुर नी चाल ॥ ४ ॥

ढाल

[शदलरी—ए देसी]

ग्रहस्थ लीपे साधु कारणे, बले ऊपर छावे छान ।
 तिणरी करे अनुमोदना, ए कपट बुगल ज्यूं ध्यान ।
 ते किम तिरसी संसार नैं* ॥ १ ॥
 थानक भाडे लियो भोगवे, बले काचो पाणी तिण ठाम ।
 गच्छवासी भेला रहे, ए विटलां रो छे काम ॥ २ ॥
 मिनष आंतरिया ऊपरे, धन उदके थानक काज ।
 ते मोल लराय मांहे वसे, त्यां छोडी लोकां री लाज ॥ ३ ॥
 बले जागां बांधण कारणे, लेवे अउतरो माल ।
 तिण जागां मांहे रह्यां, ओ खांपणवालो ध्याल ॥ ४ ॥
 लिंगडा लिंगड्यां कारणे, जागां बांधी मठ जेम ।
 मठवासी ज्यूं मांहे वसे, त्यांनैं साधु कहीजे केम ॥ ५ ॥
 एहवा थानक भोगव्यां, बुद्धि अकल पत जाय ।
 भेष भांड्यो भगवान रो, साधु नाम धराय ॥ ६ ॥
 ए चाला तो पोते चालवे, काम पड्यां हुवे दूर ॥
 थानक भायां निमते कहे, कपटी बोले कूर ॥ ७ ॥

*यह आंकिडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

गृहस्थ वेलादिक तप कियां, तिण पासे घाल्यो डंड ।
 भोलां ने पाख्यां भर्म मे, ते हणे जीवां रा भंड ॥ ८ ॥
 लाडू करावे करे आमनां, सामग्री मे दराय ।
 ते रस गृद्धी चेंवे पख्यां, आणी आणी खाय ॥ ९ ॥
 केइ भेषधारी भूला कहे, पोखो धर्म रे नाम ।
 श्रावक नें श्राविका भणी, दया पालण रे काम ॥ १० ॥
 पछे गृहस्थ साधु श्रावकां तणो, भेलो वांघ तुमार ।
 मोल ल्यावे त्यांरे कारणे, के घरे नीपावे आहार ॥ ११ ॥
 तिण घर जाए तेरिया, ज्यूं डोरी ताण्यो स्वान ।
 ताजे आहार तूटा पडे, ओ पेट भरण रो तान ॥ १२ ॥
 ए जीमणरो नाम दया दियो, पिण प्रतख दीसे गोठ ।
 कावू करवा आपणो, चोडे चलायो खोट ॥ १३ ॥
 बले भेष पहरी लोलपी थका, हेरे परघर हाट ।
 इद्रयां मेली मोकली, त्यांरो परभव मे कुण घाट ॥ १४ ॥
 गुरु चेला एक समुदाय में, ते सगला एकण पांत ।
 आहार पाणी भेला करे, तिणमें क्यूं जाणे भांत ॥ १५ ॥
 केइ चेला ने जाण कुसीलिया, त्यांसूं तो तोडे संभोग ।
 गुरु सूं न तोरे संकता, एतो बात अजोग ॥ १६ ॥
 श्री वीर जिनेसर इम कह्यो, भेलो राखे भागल जाण ।
 तिण गच्छ सूं मेलप करे, ए बूडण रा अहलाण ॥ १७ ॥
 कुसीलियां भागल मेला रहे, तिणरो न काढे निकाल ।
 कूड कपट करता फिरे, वले सावां सिर दे आल ॥ १८ ॥
 परससा करे आप आपणी, दोषण देवे ढांक ।
 भागल भागल मिल गया, किणरी न राखे सांक ॥ १९ ॥
 जो एकण नें अलगो करे, तो करे घणा रो उघाड ।
 पलमों दूर कियां डरे, ओ खोटो नाणो असार ॥ २० ॥
 पांच सुमत तीन गुपत मे, दीसे छिदर अनेक ।
 पांच महाव्रत मांहिलो, आखो न दीसे एक ॥ २१ ॥
 ते गुरु करणें पृजावता, आप डूवे ओरा ने डवोय ।
 इम सामल नर नारियां, छोडो कुगुरु नें जोय ॥ २२ ॥
 भट्टी काढे कलाल तणे घरे, उनो पाणी हुवे तयार ।
 लिंगडा लिंगडी शहर मे, वांघे मकोडा ज्यं हार ॥ २३ ॥

कदा आगे पाणी नहिं उतरखो, तो तिहांइज ले विसराम ।
 भरभर ल्यावे लोट पातरा, ठाली कर दे ठाम ॥ २४ ॥
 ते पछे फेर भरावे ठामडा, काचो पाणी आण ।
 ते भारी दोष पिछ्छात सुं, ए बूडण रा अह्लाण ॥ २५ ॥
 त्यांरे परंपरा में निषेधियो, नहिं वहरणो घरे कलल ।
 तिण घर दूका वहरवा, भांगी परंपरा पाल ॥ २६ ॥
 त्यांरे लेखेइ तिण कुल वहरतां, आवे चोमासी नों डंड ।
 आला लोप बडा तणी, हुंवा जगत में भंड ॥ २७ ॥
 धुर सुं तो कुल जुगतो नहिं, बीजे गृहस्थ ले जावे साथ ।
 नित नित व्हरे ते तीसरो, चोथो दोष पिछ्छात ॥ २८ ॥
 वणीमग संकादिक दोषण घणा, पिण चावा दोषण च्यार ।
 ते लिंगडा लिंगडी टाले नहिं, ते वितल हुवा बेकार ॥ २९ ॥
 त्यांमें कितरा एक व्हरे नहिं, केइ व्हरे तिण घर जाय ।
 त्यांमें कुण साधु ने कुण चोरटो, ते पिण खबर न काय ॥ ३० ॥
 जो अस्त्री समझे साधां कनें, तो धणी नें देरे लगाय ।
 भरतार समझ्या नार नें, कुगुर कुब्द सिखाय ॥ ३१ ॥
 सासू बहू मा बेटियां, वले सगा संबीयां मांहिं ।
 त्यांने रागनें वेच सिखावता, भेद घलावे ताहिं ॥ ३२ ॥
 केइ आवे सुव साधां कनें, तो मतीयां नें कहे आम ।
 थें वर्जी राखो घर रा मनुष्य नें, जावा मत दो तामें ॥ ३३ ॥
 कहे दरसन करवा दो मती, वले सुणवा मत दो वाण ।
 डराए नें ल्यावो म्ह्यां कनें, ए कुगुर चरित पिछ्छाण ॥ ३४ ॥
 त्यांरी अकल लगे केई बापडा, त्यांमें बुद्धि नही लवलेस ।
 दगधे घर रा माणसां, कर रह्या कूड कलेस ॥ ३५ ॥
 केई अपचो कर भूखां मरे, वा खोटा मतरी रेत ।
 तिणरो दिन छे बांकडो, त्यांरे कुगुर तणो परवेस ॥ ३६ ॥
 हलुकरमी डराया डरे नहिं, त्यांनें रुचियो जिणवर धर्म ।
 चल जाए केयक बापडा, उदे हुवां असुभ कर्म ॥ ३७ ॥
 त्यांरा मत तणा घर मांहिलो, एक फिर्यां दुख थाय ।
 ताजा आहार पांगी कपडा तणी, जाणे रखें पडे अंतराय ॥ ३८ ॥
 पेट रे कारण पापीया, त्यांरा घर में घाले बेठ ।
 कलहो वधारे करे आमनां, ए तो खोटा कुगुर प्रेठ ॥ ३९ ॥

तिण घर एक समभू हुवें, तो राखे तिणरी आख ।
 सुध असुध लेवण तणी, आवे मन मे साक ॥ ४० ॥
 तिण कारण कुगुर कर रह्या, आमी सामी घमडोल ।
 तोही आघा ने मूल सूभे नही, जिम तांवा उपर भोल ॥ ४१ ॥
 भाग प्रमाणे कुगुर मिल्या, ते कर्म तणो छे दोप ।
 इम सामल नर नारीया, मत करो मांहो माहि रोप ॥ ४२ ॥



ढाल : ६

दुहा

भेषधारी विगख्या घणा, पांचमां आरा मांय ।
 नांम धरावे साधु रो, पिण घेठां सरम न काय ॥ १ ॥
 खेत खाघो लोकां तणो, पहर नाहर की खाल ।
 ज्यूं भेष लीयो साघां तणो, पिण चाले गघा री चाल ॥ २ ॥
 सरघा में भूला घणा, ते थापे हिंसा धर्म ।
 बले भिष्ट हुआ आचार थी, बोहला बांधे कर्म ॥ ३ ॥
 आभे फाटे थीगरी, कुण छ देवणहार ।
 ज्यूं गुर सहीत विगडीयो, त्यारे चिहुं दिस परिया बघार ॥ ४ ॥
 चोरी जारी आद दे, नीपजें माठा कर्म ।
 तोही आंधा जाय पगां पडे, ते मूल न जाणे मर्म ॥ ५ ॥
 गुर गुंरणी तणा चरित जांणियां, पिण छूटे नहीं पखपात ।
 तोही निरलज सुध साघां तणी, उठावे अणहूंती बात ॥ ६ ॥
 आल देवण आघा घणा, बले डरे नहीं तिल मात ।
 मूठ बोले मुख बांधनें, ते किम आवे हाथ ॥ ७ ॥
 ज्यारे लाय लागी चिहुं दिसा, रहे न तिणरी सुध ।
 ज्यूं विणास काले इण भेष री, उपनीं विपरीत बुध ॥ ८ ॥
 कुगुर चरित अनंत छें, कहितां नावें पार ।
 हिवे भव जीवां नें प्रति बोधवा, अल्प कहूं विस्तार ॥ ९ ॥

ढाल

[समरू मन हर्षे तेह]

एक्र एक तणा दोषण ढांके, अकारज करता नहीं सांके ।
 त्यांनं कोइ नहीं हटकण बालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ १ ॥
 त्यांरा विटल हुवा चेली चेला, गुर मांहुं पिण आवे रेला ।
 लोपी मरजाद फोडी पालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ २ ॥
 व्रत पचखाण में नही सेठां, ठाम ठाम थांनक मांडे बेठां ।
 श्री जिणवर सीख दीधी रालो, एहवा भेषधारी पांचमें कालो ॥ ३ ॥

साथे लीयां फिरे पुस्तक पोथा, आचार पालण जावक थोथा ।
 ते फस रह्या माया जालो, एहवा भेषधारी पाच मे कालो ॥ ४ ॥
 करणी करतूत माहे पोला, बले अरड वरड मिरषा बोला ।
 त्यारे भूठ तणो नही टालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ ५ ॥
 विकलां ने मूड कीया भेला, ते नाच रह्या कुबदी खेला ।
 जाणें भरभोलिया तणी मालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ ६ ॥
 त्यांरा श्रावक पिण केइ मूड मती, पेलारी बात करे अछ्छती ।
 परभव डर नाणे देता आलो, एहवा भेषधारी पाच मे कालो ॥ ७ ॥
 नाम घरावे साष सती, पिण लषण न दीसे एक रती ।
 मूढे भूठ तणो वेह रह्यो नालो, एहवा भेषधारी पाच मे कालो ॥ ८ ॥
 केई पदवीघर बाजे मोटा, चलगत उधी लषणा खोटा ।
 कण रहीत एकत परालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो ॥ ९ ॥
 केइक लिंगाडा ने लिंगाडो, त्यारी सुमत गुपत धूरसू बिगडी ।
 अतर नही घाल्यो बिचालो, एहवा भेषधारी पाच मे कालो ॥ १० ॥
 एक टोला मे तायफा रे घणा, तायफा तायफा मे भागल पणा ।
 कुण काढे त्यारो निकालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो ॥ ११ ॥
 उघाड माहोमाहि केम करे, पाणी सगलां रो माहि मरे ।
 लिंगाडा लिंगाड्या रो एक ढालो, एहवा भेषधारी पाच मे कालो ॥ १२ ॥
 भेष माहे करे चोरी जारी, त्यानें गृहस्थ बिचे कहिजे भारी ।
 त्यारे केरे लगा मूरख बालो, एहवा भेषधारी पाच मे कालो ॥ १३ ॥
 तिणरो करे रह्या गालागोलो, त्यारो बिगड गयो जावक टोलो ।
 त्या में कुकर्म रो बघियो चालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो ॥ १४ ॥
 एहवा कर्म करे साधु बाजे, निरलजा मूल नही लाजे ।
 निकाल काढ्या उठे भालो, एहवा भेषधारी पाच मे कालो ॥ १५ ॥
 त्यारो जथातथ्य उघाड करे, तो परिवार सहित तिणसू रे लडे ।
 भगाडो भाले बाधे चालो, एहवा भेषधारी पाच मे कालो ॥ १६ ॥
 जब आफे लोकां मे उघाड पडे, किण एक भागल ने दूर करे ।
 तिणनें प्रायच्छित विन ले माहे बालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो ॥ १७ ॥
 एतो कपट करे लोकिक राखी, इतरी न कियां जाय नाकी ।
 आहार पाणी आडो आवे तालो, एहवा भेषधारी पाच मे कालो ॥ १८ ॥
 इम कर कर 'ने राखे शेखी, त्याने केवलज्ञानी रह्या देखी ।
 एतो पेटतणी करे प्रतिपालो, एहवा भेषधारी पाच मे कालो ॥ १९ ॥

जो आप तणा किरतब देखे, तो ऊंचो सुर बोले किण लेखे ।
 समझे नहि ग्यान रहित बालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ २० ॥
 त्यामें अठारेइ पाप तणा खाता, तो पिण मूरख बोले ताता ।
 अग्यानी आपो नहि संभालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो ॥ २१ ॥
 लष्टपुष्टनें देह राखे चंगी, त्यामें मिले रे माठी चोभंगी ।
 तोही बोले आल नें पंपालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ २२ ॥
 मोची डूब घोबी नें पींजारे, ठगा सूं राज कियो च्यारे ।
 ए दिष्टंत लीजे संभालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ २३ ॥
 त्यानें प्रगट, क्रियां माडे कजिया, ज्यांरा विगड गया साधु अजिया ।
 तिणसूं सावां रे सिर देवे आलो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ २४ ॥
 ते परिवार सहित नरके जासी, पछे चिहुं गति मै भीका खासी ।
 भमसी अरट तणी ज्यूं घडमालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो ॥ २५ ॥
 में सुणिया था वीर नां वेणा, ते प्रत्यक्ष देख लिया नेणा ।
 सांसो हुवे तो सूत्र संभालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ २६ ॥
 अंधारा सूं चोर रहै राजी, जेहवी कुगुरु तणी चहरवाजी ।
 कोइ आय पडे भमर जालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ २७ ॥
 वैराग घट्यो ने भेष बधियो, हाथ्यांरो भार गधा लदियो ।
 थक गया बोज दियो रालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ २८ ॥
 धुर सूं केइ नवतत्व नही भण्या, तेतो सांग पहरी मुनिराज भण्या ।
 ज्यूं नाहर री खाल पहरी स्यालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ २९ ॥
 माहों मांहि निजर पड्यां खीजे, त्यानें उपमा स्वान तणी दीजे ।
 बतलायां करे मुंह विकरालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ ३० ॥
 केतला एक अदत्त लेवण लगा, कितला एक चोथा सूं भागा ।
 निकलियो भर्म पडियो देवालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ ३१ ॥
 चोरां माहें चोर जाय बस्या, भागलां में भागल आय घस्या ।
 कचरा कूटा ज्यूं दीसे ओ गालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ ३२ ॥
 रसगृद्धी ताके घर नें हाट, बले अवसर देख पाडे वाट ।
 डाकण ज्यूं दातार राखे ठालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ ३३ ॥
 इण भेष तणा कूडकपट तणी, कितली एक कहुं हो त्रिभुवन धणी ।
 रुलिया रां तणों नहिं रुखवालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ ३४ ॥
 त्यानें पिण गुरु जाणी पूजे, समकित दिन संवलो नहिं सुभे ।
 अभितर फूटी आयो जालो, एहवा भेषधारी पांच में कालो ॥ ३५ ॥

तिणरी दिस छे सगली काणी, ते खांच आपण मे ले ताणी ।
 अग्नि ज्यू उठे अंतर म्हालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो ॥ ३६ ॥
 समचे कह्यां पिण निंदा जाणे, बुद्धी मिष्ट थयां उलटी ताणे ।
 ते कर रह्या भूठी म्हालो, एहवा भेषधारी पाच मे कालो ॥ ३७ ॥
 जे अन्याय मारग रा पखपाती, ज्यारी सुण सुण बल उठे छाती ।
 त्यांन कुगुह तणी लागी लालो, एहवा भेषधारी पाच मे कालो ॥ ३८ ॥
 पखपात नही त्यारे मन भावे, पिण चोर चादणो किम सुहावे ।
 लारे बाहर रा पूर लागी लालो, एहवा भेषधारी पाच मे कालो ॥ ३९ ॥
 ए तो भाव आचारंग मे चाल्या, केइ ठाणावग माहिं सूं घाल्या ।
 विकला नें वीर दिया टालो, एहवा भेषधारी पाच मे कालो ॥ ४० ॥
 वले अंग उपग मूल नें छेद, तिण माहै पिण चाल्या भेद ।
 ओलखाय कियो वीर उजवालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो ॥ ४१ ॥
 कितरा एक चरित काने सुणिया, कितरा एक सूतर सू गुणिया ।
 केइ प्रतख देख लिया न्हालो, एहवा भेषधारी पांच मे कालो ॥ ४२ ॥
 सूतर तणो लेइ सरणो, पाषड पथ रो कियो निरणो ।
 खोटा नें उत्तम दे विडालो, एहवा विरला पाच में कालो ॥ ४३ ॥
 एतो कुगुर तणी छे निसाणी, सुण हरष धरे उत्तम प्राणी ।
 अमृत ज्यूं लागे रसालो, एहवा विरला पांच में कालो ॥ ४४ ॥



दुहा

ढाल : ७

केई भेषधारी भूला थका, ते कर रह्या उंधी ताण ।
 इविरत बतावें साध रे, ते सूतर अर्थ अजाण ॥ १ ॥
 त्यां साधपणो नही ओलख्यो, ते भूला भर्म गिवार ।
 सर्व सावद्य त्याग्यो मुख सूं कहें, वले पाप रो कहें आगार ॥ २ ॥
 आहार पांणी कपडादिक उपरे, उवे सदा रह्या मुरभाय ।
 एहवा भेषधाख्यां रे इविरत खरी, पिण साधां रें इवरत न कांय ॥ ३ ॥
 च्यार गुणठांणा इविरत कही, तठें विरत न दीसैं लिंगार ।
 देस विरत गुणठांणें पांच मे, आणें सर्व विरत अणगार ॥ ४ ॥
 जो साधां रे इविरत हुवें, तो सर्व विरती कुण होय ।
 त्यांरो भाव भेद परगट करूं, सांभलजो सहू कोय ॥ ५ ॥

ढाल

[आ अणु कम्पा जिण आ०]

चौबीसमां श्री वीर जिणेसर, निरदोष आहार आंणी नें खायो ।
 सुध परिणामे उदर में उताख्यो, त्यांनेइ मूरख पाप वतायो ।
 इण पापंड मतरो निरणो कीजो* ॥ १ ॥
 अन्त चौबीसी मुगत गइ, ते आहार ल्याया था दोषण ढालो ।
 तिणमें अग्यांनी पाप बताए, सगला रे सिर दीघों आलो ॥ २ ॥
 सर्व सावद्य जोग रा त्याग कीयां ते, सर्व विरत सुध साध कहावें ।
 तिरण तारण पुरपां रे अग्यांनी, इविरत रो आगार बतावें ॥ ३ ॥
 गोतम आदि दे साध अनंता, साधवीयां रो छेह न पारो ।
 सगला रो आहार अधर्म में घाल्यो, तिण आंख मीची नें कीयो अंधारो ॥ ४ ॥
 साध रो जनम हूओ जिण दिन थी, कल्पें ते वस्तु व्हरीनें ल्यावें ।
 ते पिण अरिहंत री आगना सूं, इणमेइ दूष्टी पाप बतावें ॥ ५ ॥
 वस्त्र पातर रजोहरणादिक, साध रा उपध सूतर में चाल्या ।
 भगवंत री आग्या सूं राखें, ते अधर्म माहें अग्यांनी घाल्या ॥ ६ ॥
 दसवीकालक ठांणां अंग में, प्रश्न व्याकरण उवाइ मांहुयें ।
 धर्म उपध साध रा विरत में, तिण माहें मूरख पाप वतायो ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

किण ही ग्रहस्थ नीलोतरी ने त्यागी,
उ सावपणो लेइ इविरत सरघे,
अधम जाणें नीलोतरी खाधा,
घर मे थका जावजीव त्यागी थी,
ग्रहस्थ जे जे वस्तु त्यागी ते,
ते सावपणो लेइ सेवा लागो,
जे इविरत सरघें नें सूस न पाले,
मारग छोडीने उजर पडीया,
करें वीयावच चेला गुररी,
तीथंकर गोत वधें उतकष्टो,
दसवीस चेला पडिकमणो करणें,
ते गुर नें पाप लगाए अग्यांनी,
गुर नें पाप लागे वीयावच कराया,
मुढ मती जीव भारीकरमा,
गुर ने पाप सूं भेलो कीया मे,
अभ्यतर फूटी ने अंध थया ते,
साध माहोमाही देवें लेवे,
ते पिण लीघा मे पाप बतावे,
दातार ने धर्म साधां ने बेहराया,
दातार तरीयो साधु डवोए,
जो पाप लागें साध आहार कीया में,
तिरण री आसा राखे किण लेखें,
साध तो पाप अठारेइ त्याग्या,
दातार कने सुध जाच लीया मे,
गुर दिप्या देइ सिख सिषणी करें ते,
मोह मिध्यात सूं भारीकरमा,
छठें गुणठांणे परमाद कहीने,
पूछ्यां कहे मे सर्व विरती छां,
छठें गुणठांणे परमाद कह्यो ते,
ते विषे कषाय उसम जोग आयां,
परमाद इविरत कहे आहार उपघ सू,
आहार उपघ केवली पिण आणें,
१०१

जीवे ज्या लग आण वेरागो ।
तो ववेक विकल खावा कांय लागो ॥ ८ ॥
तो पचखाण भाग्यो किण लेखें ।
तिण साह्यो मूरख काय नही देखे ॥ ९ ॥
अधम रो मूल इविरत जाणों ।
तो क्यू नही पाले लीयां पचखाणो ॥ १० ॥
ते भागल छे भारीकर्मो ।
साध आहार कीया मे सरघें अधमों ॥ ११ ॥
करम तणी कोड तेह खपावे ।
पिण गुर नें तो मूरख पाप बतावें ॥ १२ ॥
गुर री वीयावच करवा आवे ।
दुरगत माहे काय पोहचावें ॥ १३ ॥
ए सूतर माहे कठे नही चाल्यो ।
ए पिण घोचो अणहुतो घाल्यो ॥ १४ ॥
चेला रा करम कटें किण लेखे ।
सूतर सांह्यो मूल न देखे ॥ १५ ॥
वस्त्र पातर आहार ने पाणी ।
एहवी कुपातर बोलें वाणी ॥ १६ ॥
पिण साध वेंहरे हुवे पाप सूं भारी ।
आ पिण सरघा कहे मेषघारी ॥ १७ ॥
तिण पाप रो साम्द दीयो दातार ।
भूला रे भूला थे मुढ गिंवार ॥ १८ ॥
सुध छे तिणरी सुमति ने गुपती ।
पाप कठी सू लागो रे कुमती ॥ १९ ॥
निरजरा तणा भेद माहे चाल्या ।
ते पिण परिग्रहा माहे घाल्या ॥ २० ॥
साधा रे इविरत थापें खावारी ।
ओ पिण भूठ बोले मेषघारी ॥ २१ ॥
किणहीक वेला लागतो जाणो ।
पिण मुढ मती करें उघी ताणो ॥ २२ ॥
ते कर रह्या कुमती कूडी विषवादो ।
ते कठी गयो त्यारो परमादो ॥ २३ ॥

अप्रमादी . कह्या सातमें गुणठाणें,
 उवे पिण आहार उपाध भोगवता,
 छद्मस्थ आचरें केवलीए आचरीयो,
 आहार उपध केवली ज्यूं भोगवीयां,
 साध आहार करतां चारित कुसले,
 जब उंघ मती कोइ अवलो बोलें,
 पोहर रात तांइ साध उंचें सब्दे,
 उण उंघ मती री सरघा रे लेखें,
 जेंणा सूं साध करे पडिलेहण,
 उण उवमती री सरघा रे लेखें,
 मरजादा सूं आहार साध नें करणो,
 मरजादा सूं पडिलेहण करणी,
 ज्यूं साध नें आहार छ कारणें करणो,
 ए छवीसमो उत्तराधेन मांहें,
 जो धर्म हुवें साध आहार कीयां में,
 पाप जाणेंनें त्याग करे छें,
 साध काउसग में त्यागें हालवो चालवो,
 उण उलट बुधी री सरघा रे लेखें,
 कोइ बोलण रा त्याग करे गुण सामें,
 उण उलट बुधी री सरघा रे लेखें,
 कोइ साध सावां नें आहार देवण रा,
 उण उलट बुधी री सरघा रे लेखें,
 कोइ साध सावां री न करे वीयावच,
 उण उलट बुधी री सरघा रे लेखें,
 सर्व मूलगुण में सर्व सावद्य त्याग्यो,
 आगला करम काटणें साध नें,

साध उपवास बेलदिक करे संथारो,
 पाप रो त्याग बेहूं रे सरिषो,
 जेंणा सूं चाल्यां जेंणा सूं उभां,
 जेंणा सूं भोजन कीयां जेंणा सूं बोल्यां,

परमाद नहीं तिण गुण ठांगा आणें ।
 तो त्यानिं परमाद क्यूं नहीं लागें ॥ २४ ॥
 केवली ए ताग्यो ते छद्मस्थ त्यागें ।
 तिण साध नें परमाद किण विघ लागें ॥ २५ ॥
 सुध परिणामा सूं कटें आगला करमों ।
 कहे घणों खावो ज्यूं घणों हुवे घर्मों ॥ २६ ॥
 धर्मकथा कहे मोटें मंडाणो ।
 आखी रात में करणो वखाणो ॥ २७ ॥
 ते काटण करम आत्म नें उवरणी ।
 आखोइ दिन पडिलेहण करणी ॥ २८ ॥
 मरजादा सूं करणो वखाणो ।
 समभो रें समभो थे मूंद अयाणो ॥ २९ ॥
 उवें घणों घणो खासी किण लेखें ।
 वले छठो ठाणों मूंद क्यूं नहीं देखें ॥ ३० ॥
 तो क्यानिं करे आहार ना षचखाणो ।
 उलट बुधी बोले एहवी वाणो ॥ ३१ ॥
 वले मुख सूं न बोलें निरवद वाणो ।
 अं पिण पाप तणा पचखाणो ॥ ३२ ॥
 ते धर्मकथा मांडी न करे वखाणो ।
 अं पिण पाप तणा पचखाणो ॥ ३३ ॥
 त्याग करे मन उछरंग आणो ।
 अं पिण पाप तणा पचखाणो ॥ ३४ ॥
 त्याग करे मन उरंग आणो ।
 अं पिण पाप तणा पचखाणो ॥ ३५ ॥
 तिणसूं नवा पाप न लागें आणो ।
 उत्तर गुण छें दस विघ पचखाणो ।
 आ सरघा श्री जिणवर भाषी* ॥ ३६ ॥
 कोइ साध लेवें नितरो नित आहारो ।
 ओं तप तणों छें भेदजन्या रो ॥ ३७ ॥
 जेंणा सूं बेंठा जेंणा सूं सुवंता ।
 तिण साध नें पाप न कह्यो भगवंत ॥ ३८ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ए दसवीकालक चोर्थे अघेने, आठमी गाथा अरिहत भाषी ।
 छ वोल जेणा सू साध कीयां मे, पाप कहे भारीकर्मा अन्हाखी ॥ ३६ ॥
 निरवद गोचरी रखेसरां री, मोख री साधन भगवान भाषी ।
 ए दसवीकालक पांचमें अघेने बाणूमी गाथा बोले साषी ॥ ४० ॥
 सुघ आहार बहुखा साध सद गति जाअें, निरदोष दीया सुद गति जाअे दाता ।
 ए दसवीकालक पांचमे अघेने, पेंहला उदेसा री छेहली गाथा ॥ ४१ ॥
 सात करम साध ढीला पाडे, सुघ आहार करे साध तिण कालो ।
 ए भगवती सूतर पेहले सुतस्कघे, नवमो उदेसो जोय संभालो ॥ ४२ ॥
 आहार करे गुर री आगना सू, तिण साध ने वीर कही छें मोखो ।
 अठारमो अघेन गिनाता रो जोए, सांसो काढी मेटो मन रो घोखो ॥ ४३ ॥
 सब्द रूप गन्ध रस फरस री, साधा रे इविरत भूल न कायो ।
 ए सुयगडाग अघेन अठारमें, वले उवाइ सूतर माह्यो ॥ ४४ ॥
 साधा रे इविरत कहे पाषंडी, तिण कुमती री सगत दूर निवारो ।
 ए सुण सुण ने उत्तम नर नारी, सर्व विरती गुर माथे धारो ॥ ४५ ॥



ढलल : ८

दुहल

आहलर उडष ने उडलसरोँ, डुडगवें डुडष सहलत ।
डुडष थडल आडलर सूँ, तुडलं डुडडी सलडलं रल रलत ॥ १ ॥
आहलर उडषने उडलशुँ, असुड डें डलतलर ।
ते डुरलं सडेत दुरगलत डरें, डलडें अनंतल डलर ॥ २ ॥
सहु डुडषलं डें डुडष डुडडकुँ, आडलकडुडलं डलण ।
एहडल थलनकलदलक डुडगवें, तुडलं डुडगु डुडणवर डलण ॥ ३ ॥
डुडण आगनल डललें नहुल, ते डुडगल रल डुडें डलंत ।
ते कुड कुड अकलरुड कर रहलल, ते सुणडुँ कर डलंत ॥ ॡ ॥

ढलल

[आ अनुकडुडल डुडन आगलरडुडल डे]

केडुँ डुडषडलरल कहे डुडे डुडव डुडडलडलं, ते करें अनहुलडुडल अणहुतल कुकल ।
ते सलडषडणल रल नलड डलरलए, उलडल डुड कलड डलरलडण डुकुल ।
डुडण डलडड डतुरल नलरडुँ कलडुँ* ॥ १ ॥
डुडलू डुडतुरल डुरड डलडुँ डें, असंखुडलतल डुडव तेहुलड डतलवे ।
डलहु डुडगलडुडलनल डुडनलसर डेंडल, उडर थलडुँ थलडुँ डुरड नडलडुँ ॥ २ ॥
सलडल रल कलरण थलनक लुडडे, डुडलल डलणुँ रल डुडलं नें डलरल ।
डुड उण थलनक डें सलड रहें तुल, तुडणुँ तुल डुडर कडुँ डुडषडलरल ॥ ३ ॥
कुँडल सलंकल करलडे थलनक कलरण, डले डललल सलललड डेडल कडलडुँ ।
केलू कुँडुँडुँ ने कुँनु डलरलडुँ, डे डुडण डललल कुँनुडर डललडुँ ॥ ॡ ॥
एक आंकुरल डनसडुडल डें, डुडव अनतल तुल डुडख सूँ डतलवे ।
डुड थलनक उडर नललु उगुँ तुल, सलनुलकर दुडुँ डड सूँ कडलडुँ ॥ ॡ ॥
डलरतल लुडडतलं थलनक कुँणतलं, कलखुँ डलंकलदलक डलर अथलगु ।
डरें नहुँ दुडुँ अकलरुड करतल, तुडलरल करड डुडगु डंककुँनुडरुँ रल ललगु ॥ ६ ॥
डले डुडडरल डुडडडतल ने केलू डेरतलं, तडुँ नललणडुडलण डुडव डरुँ अणतल ।
डुडडलडल डलल उखेलें अगुडलनुँ, ते डुडण कुँनुडरुँ रल कलड हणतल ॥ ॡ ॥

*डुडह आंकडुँ डुरतुडेक डलथल के अनुत डें हल ।

ए थानक काजे हणे जीव दुष्टी, सरावण वाले तीजे करण डूवो, जिण थानक करावण गरथ दीयो ते, धर्म काजे दुष्टी जीव हणाए, अनंता जीव मारे थानक कीघो, भेषघाख्या सहीत श्रावक ने पूछीजे, कोइ श्रावक राते रोछार सूअे तो, ओ थानक सदाइ रोछार रहे छे, मठवासी ज्यू तिणमे मूरु रख्या छे, सार सभाल करे परीयां धूरीयां, कोइ पूछे तो कूड बोले कपटी, जो साचो हुवे तो माहे रहणो त्यांगे, छक्राय हणीने थानक कीघो, तिण थानक मे साघ रहे तो, वले ग्रहस्थ कह्यो तिणने वीर जिणेशर, आचारग दूजे श्रुतकंधे, आघाकर्मी थानक मे साघ रहे ते, ए भाव भगोती मे वीर कह्या छे, साघ रे कारण थानक करावे, त्याने कापे कापे काढे नान्हा काता, धन रे कारण जीव हणे त्याने, दयारी ठोर हिंसा ने थापी, धर्म हेते हिंसा कीयां समकत जावे, ए वीर वचन साचा कर सरदो, इम साभल ने उत्तम नरनारी, आहार उपघ सेज्या संथारो, न्याती अन्याती श्रावक अश्रावक ने, नसीत रे आठमे उदेसे, वासा रूप रहे तिणने नही नषेधे, तिण साथे वारे जाअे साथे आवे पाछो, सिघत रा पाठमें वीर नषेध्यो, उवें सूतर रो नामलेइ भूठ बोले,

हणावण वाले दूजे करण जाणो । पछे इविरत लेखे वरोवर जाणो ॥ ८ ॥ सर्व हिंसा रो कहीजे नायक । अनत जीवां रो हुवो दुखदायक ॥ ९ ॥ वले दिन दिन अनत मरे छे आगे । इण थानक रो पाप किण किण ने लागें ॥ १० ॥ तिणने पाप लागो कहे छे विमासी । तिण पाप थी दुरगत कुण कुण जासी ॥ ११ ॥ वले थानकरी राखे धणीयापो । तिणने लागे छें निरंतर पापो ॥ १२ ॥ श्रावका रे काजे कीघो बतावे । पछे कुण कुण श्रावक थानक करावे ॥ १३ ॥ ते तो थानक छे आघाकर्मी । धर्म सूं भिष्ट ने कहीजें अघर्मी ॥ १४ ॥ महासावद्य किरिया लागे भारी । भेपरे लेखे कह्यो भेपघारी ॥ १५ ॥ नरक निगोद मे भ्लीका खावे । वले चिहुं गत माहे घणो दुख पावें ॥ १६ ॥ ते गर्भमें आडो आवें दाता । वले नरकां मे मार अनती खाता ॥ १७ ॥ मदबुधी कह्या दसमे अगो । डूवा रे डूवा थे कुगुरां रे सगो ॥ १८ ॥ वले जनम मरण दुख वधे अथायो । पेला अघेन आचारंग माहयो ॥ १९ ॥ देवगुर धर्म काजे हिंसा नही कीजे । निरदोष हुवे तो देइ लाहो लीजे ॥ २० ॥ आषी आखी राति थानक मे वसावे । च्यार महीनां रो चारित्त जावे ॥ २१ ॥ कोइ नषेध्या पछेइ रहे जोरीदावे । तिणनेइ डंड चोमासी आवे ॥ २२ ॥ केइ भिष्ट आचारी कहे रहणों चाल्यो । ओ अथंमे घोचो अणहतो घाल्यो ॥ २३ ॥

कूडा कूडा अर्थ लोकां नें वचाएँ,
 अणहुंता अर्थ सूं पाठ उथापें,
 उदेसीक असणादिक भोगवें ते,
 बले नितपिड भोगवें एकण घरनो,
 एतो भाव कह्या उतरावेन माहें,
 त्यांनै पिण गुर जाणेंनै वादें अग्यानी,
 गांमवारें उतरीयो कटक सथवाडो,
 कोइ जिण आगना लोपी रात रहें तौं,
 एतो वेतकल्प रे तीजें उदेसैं,
 कोइ रातें रही बले दोष न सरधें,
 एहवा भारी भारी दोष जाणनें सेवें,
 ते समझाया, समझें नही मूरख,
 एहवा भेषघारी साव रा भेष माहें,
 त्यांनै वादें पूजें संतगुर जाणेंनै,
 उसभ करम उदें सूं संवलो न सूमैं,
 त्यांरी सेवा भगत कीयां ए फल लागें,
 इम सांभलनें उत्तम नरनारी,
 साधां री सेवा करें चित्त चोखें,

आप डूबें करें ओरां नें भारी ।
 जो टांकीं भलें तो हुवें अनंत संसारी ॥ २४ ॥
 बले मोल लीयो उपघादिक आहारो ।
 एहवा साव जासी नरक ममारो ॥ २५ ॥
 वीसमां अवेन में काढ्यो निकालो ।
 त्यांरी अभितर फूटी आया करम जालो ॥ २६ ॥
 तिहां गोचरी जावेंतो पाछो आवें ।
 च्यार महीनां रो चारित जावें ॥ २७ ॥
 सावनें कटक माहें न रहणो रातो ।
 तिण मूरख री मानें मूरख बातो ॥ २८ ॥
 बले बतलांया बोलें नही सूघा ।
 जिण आगना लोपी नें पडीया उंघा ॥ २९ ॥
 ते तो आप डूबें ओरां नें डबोवें ।
 ते पिण मानव रो भव खोवें ॥ ३० ॥
 त्यांनै गुर मिलीया छैं हीण आचारी ।
 टांकी भले तो हुवें अनंत संसारी ॥ ३१ ॥
 एहवा भेषघास्यां सूं रहजो दूरा ।
 ते तो चुतर विचषण प्रवीण पूरा ॥ ३२ ॥

ढाल : ६

दुहा

भेषधारी भूला फिरें, त्पारें घोर रुदर मिथ्यात ।
 वले भिष्ट थया आचार थी, त्यांरी भोला करें पखपात ॥ १ ॥
 आहार उपाधि ने उपाश्रो, असुघ भोगावें जाण ।
 त्यासूं आचार री चरचा कीयां, तो लागें जहर समांण ॥ २ ॥
 वले जीव हिंसा सू डरे नहीं, सके नहीं करता अकाज ।
 वले धर्म कहे हिंसा कीयां, नाणे मन माहे लाज ॥ ३ ॥
 पिण भोला ने खवर पडे नहीं, चोडें आचार री वात ।
 थोडीसी परगट करूं, ते सुणजो विख्यात ॥ ४ ॥

ढाल

[देवदानव तीथकर गणधर]

आधाकरमी थानक माहे साध रहे तो, पेंहलो महावरत भागें ।
 वले दया रहीत कह्यो सूतर भगोती मे, अनंत जनम मरण करसी आगें रे मुनिवर ।
 जीव दया विरत पालो* ॥ १ ॥
 वले सर्व सावद्य रा त्याग कहे तो, दूजोइ माहावरत भागो ।
 जो उ कहे थानक म्हारे काज न कीधो, तो कपट सहीत भूठ लागो रे ॥ मु० जी० २ ॥
 जे जीव मूआ त्यां सरीर न आप्यो, तिणसूं अदत उण जीवां रो लागो ।
 वले आगनां लोपी थी अरिहत री, तिणसूं तीजोइ माहावरत भागो रे ॥ ३ ॥
 तिण थानक नें आपणो कर राखें, वले ममता रहे नित लागी ।
 मठवासी ज्यूं माहे वसे तो, पांचमोइ गयो विरत भागी रे ॥ ४ ॥
 वाकी चोथो छठो विरत इण विध भागा, आचार कुसील रे लेखें ।
 एहवा भागल फिरें साध रा भेषमे, त्याने बुधवंत ग्यान सूं देखें रे ॥ ५ ॥
 एक काय हणे तिणनें उतकष्टे भागे, हिंसा छकाय री लागे ।
 ज्यूं एक विरत भाग्यां उतकष्ट भागे, विरत छहूड भागें रे ॥ ६ ॥
 ए आचारग रे दूजें अघेनें, छठो उदेसो सभालो ।
 ए भाव सुणेने हिये विमासो, मत वोलो आल पंपालो रे ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

इणसूं दोष मोटां मोटां सेवें, साध रा भेष मभारो ।
 कोइ चुतर विचषण जाण होसी ते, थानें किम सरखें अणगारो रे ॥ ८ ॥
 वले दोष बयांलीस भाख्या सूतर में, बावन कह्या अणाचार ।
 यां मांहिला दोष सेव्यां सेवायां, माहावरतां में परसी वधार रे ॥ ९ ॥
 कोइ थानक निमतें गरथ दे तिणनें, मुख सूं मतीय सरावों ।
 आप समाणा छ काय जीवां नें, सांनीकर कांय मरावो रे ॥ १० ॥
 थानक करावें त्यानिं धर्म कहें नें, भोलां नें मत भरमावो ।
 आप रहिवानें जायगां रे कारण, जीवां नें मतीय मरावो रे ॥ ११ ॥
 साधां रें कारण जीव हणें त्यारे, हुसी भूंडा सूं भूंडो ।
 जो उ साधु थइ उण जायगां में रहसी तो, साधपणो उणरोइ बूडो रे ॥ १२ ॥
 जिण गरथ दीयो जिण सूं जीव मूंआ त्यारो, उतरा जीवारो उणनें पायो ।
 वले धर्म जाणें तो पाप अठारमों, तिणसूं होसी घणो संतापो रे ॥ १३ ॥
 साध काजें दडें लीपें छपरा छ्रावें, वले जीव अनेक विध मारें ।
 आप डूबे वेर वाधें जीवां सूं, वले गुर रो जनम विगाडे रे ॥ १४ ॥
 थे धर्म ठिकाणें जीव हणों छो, तो दया किसी ठोड पालो ।
 कुगुरां रा भरमाया आंतमा नें, कांय लगावो कालो रे ॥ १५ ॥
 रात अंधारी में जीव न सुभें, जब आडा म जडो किवाडो ।
 छ कार्यां रा पीहर वाजो तो, हाथा सूं जीव म मारो रे ॥ १६ ॥
 जो थानें साची सीख न लागें, तो मतल्यो साधवीयां रो सरणो ।
 साध नें रहणों दुवार उघाडें, साधवीयां नें चाल्यो जडणो रे ॥ १७ ॥
 जो गृहस्थ साथे मेलो संदेसो, जब मारी जासी छ कायो ।
 उ जोयां विनां चाले मारग माहे, तो एहवो म करो अन्यायो रे ॥ १८ ॥
 साधपणो थांसूं समतो न दीसैं, तो श्रावक नाम धरावो ।
 सगत साह वरत चोखा पालो, दोषण मतीय लगावो रे ॥ १९ ॥
 आचार थांसूं पलतो न दीसैं, तो आरा रे माथें मत न्हांखों ।
 भगवंत रा केडायत वाजे, भूठ बोलता क्यूं नहीं सांको रे ॥ २० ॥
 थे विरत विहूणा साध वाजो, तो ही रह्या लोकां में पूजाय ।
 ठाला वादल उयूं थोथा गाजो, ओं मोनें इचर्य थाय रे ॥ २१ ॥
 इत्यादिक आचार में हीणां, ते पूरा केम कहवायो ।
 हिंसा माहें धर्म परूण्यो, थानें ते पिण खबर न कांयो रे ॥ २२ ॥
 तेलो करें तिणने तीनां दिनां लग, कोइ उनोपाणी कर पायो ।
 तिणनें तो आगली सरधा रें लेखे, थे एकंत पाप बतायो रे ॥ २३ ॥

तिणने चोथे दिन आरंभ करने, छ काय हणीनें जीमायो ।
 तिण माहे मिश्र घर्म बतावो, ते किण विघ मिलसी न्यायो रे ॥ २४ ॥
 तेला मे उनो पाणी कर पावें, तिणमे तो पाप बतायो ।
 चोथे दिन पोख्यो ते हिंसा घणीं करे, तिणमे मिश्र किहा थी थायो रे ॥ २५ ॥
 ओ मिश्र पळ्यो ते थारें लेखे, आघो न चालें कोय ।
 थे हिंसा माहे घर्म म थापो, सूतर सांद्दों जोय रे ॥ २६ ॥
 अर्थ अनर्थ घर्म जाणीनें, छकाय हणे मदवुची ।
 घर्म रे कारण जीव हणे त्यारी, सरघा घणी छे उधी ॥ २७ ॥
 सूइ नाके सिंघर पावे, कहो किम आगो पेंसें ।
 ज्यू हिंसा माहे घर्म पळ्यें, ते सालोसाल न वेसें रे ॥ २८ ॥
 ए समचें आचार साधरो बतायो, तिणमे राग खेख मत जांगो ।
 थे सुण सुणते समता भाव राखो, थे म करो खाचातांगो रे ॥ २९ ॥
 पीत पुराणी थी थासू पेहली, तिणसू भिन भिन कर समझावू ।
 जो थारा मनमे संका पडें तो, सूतर काढ बतावूं रे ॥ ३० ॥
 समत अठारे वरस तेतीसे, मेडता सहर मझारो ।
 वेंसाख विद नवमीं दिन थाने, दीघी सीखावण हितकारो रे ॥ ३१ ॥



ढल : १०

दुहा

ढलढुढ वलष डीघलं थकलं, जूढल हुवें जीव कलड ।
 कुगुर नें कोइ गुर करें, ते चलहूं गतल गोढल खलड ॥ १ ॥
 कुगुर कुडलतर अतल बूढल, डलखुडु शुरी डगवलं ।
 तुडलनें डलठी डलठी देउं ओडडल, ते सुणुओ सुरत दे कलं ॥ २ ॥

ढल

[वीर सुशुओ डुओरी वीनती]

वलष डीघुं नलरणें कुओं, डवन डुडुडुओ हुओ वले तलणहलज उलं ।
 नहुं ओषघ नहुं गलरडू, जलवन रुओ हुओ तलनरें कलठुओ कलं ।
 लखण सुणुओ कुगुरलं तणलं* ॥ १ ॥
 वलष जलड छें डलथुडलत अनलदरुओ, सरुड जेहुवल हुओ कुगुरलं रल डंक जलण ।
 जहर सगलेइ डरगडुडुओ, नहुं वलंछेंहुओ सुणवल सलघलं री वलंण ॥ २ ॥
 कदल सुणें तुओ सरखें नहुं, वलण सडडुडल हुओ करें उंघी तलंण ।
 सलघ शुरलवक घरुड न ओललखुडुओ, सलवघ नलरवद हुओ करणी रल अजलंण ॥ ३ ॥
 सनीडलत डुओलुओ घट तेहनें, घणुं डलडुकें हुओ डलडलं डलशुरी ने दूघ ।
 इड सलघ वचन सुणीडलं थकलं, डक उठें हुओ डलथुडलती वलण सुघ ॥ ॡ ॥
 केइ अगुडलनी इड कहें, डुहलरुओ तुओ हुओ घणल री डरतीत ।
 ते केडें ललगल कुगुरलं तणे, सडडण री हुओ न दीसें कलंइ रीत ॥ ॡ ॥
 जलजड वलछुडलइ कुवल उडरें, चलहूं कलंनी रे डेलुडुं उडर डलर ।
 डुओल वेंसे तलण उडरें, ते डूव डरें रे तलण कुवल डडलर ॥ ॢ ॥
 तलड कुगुर छें कुवल सलरलषल, जलजड सड रे कनें सलघ रुओ डेष ।
 तुडलनें गुर लेखव डंदणल करें, ते डूवें रे डुरुख अंघ अदेख रे ॥ ॣ ॥
 कुगुर डडडुंजल सलरलषल, तुडलंरी सरघल हुओ खुओटी डलड सडलंण ।
 डलरीकरडलं जीव चलणल सलरलषल, तुडलंनें डुओखे हुओ खुओटी सरघल डें अण ॥ । ॥
 चुरी जलरी करतल ललजे नहुं, ते कलड ललजे हुओ डुरुख देतल अल ।
 केइ डेषघलरी छें एहुवल, कर रहुडल हुओ डलडुी डुठी डलखल ॥ ॥ ॥
 एहुवल डेषघलखुडलं नें छेडवुडुडुलं, डक उठें हुओ वुलें अल डंडल ।
 कजीडल कलेस करें घणलं, नहुं सकें हुओ देतल कुडल अल ॥ १० ॥

*यहु अलंकडुी डुरतुडेक गलथल के अनत डें है ।

लोक सुणे वखांण रात रो, जब जाए हो पाषड पथ उठ।
 जब भेषघारी कुब्ता थका, ते तो बोलें हो पापी किण विघ्न भूठ ॥ ११ ॥
 परउपगार जाणने, साघ करे हो रात रो वखांण।
 तिणमें कहें दोष निसंक सू, ते भेषघारी हो एहवा मूढ अयाण ॥ १२ ॥
 रात तणो वखाण निषेधीयो, भेषघाख्या हो मूरखां बेफाम।
 ते चोडे मूठ चलावीयो, लेइ लेइ हो भगवंत रो नाम ॥ १३ ॥
 जो सूतर मे भगवंत वरजीयो, रात तणो नही करणो वखाण।
 साचा हुवें तो सूतर मे बताय दो, नही तो बूडो क्यू हो कूडी कर ताण ॥ १४ ॥
 रात तणो वखांण करणो नही, सूतर माहे हो नही वरज्यो साख्यात।
 भेषघाख्यां मूठ चलावीयो, त्यारी माने हो कोइ मूरख बात ॥ १५ ॥
 दोष जाणे वखांण राते कीया, तो कांय करें हो पोते राते वखाण।
 पोते साघ नाम घराय नें, कांय बूडे हो मूरख जाण जाण ॥ १६ ॥
 इम कह्या जाव न उपजे, जब बोले हो मूरख उची वांण।
 कहे म्हे दोष सेवां जाण जाणनें, पिण थाने हो नही करणो वखांण ॥ १७ ॥
 पोते भागल दोषीला ठहरने, निषेधो हो रात तणो वखाण।
 एहवा भेषघारी सुघ बुघ विनां, अणहूती हो लीधी गला में ताण ॥ १८ ॥
 कोइ नाक काटे आपरो, पेलाने हो कुसावण करवा काज।
 एहवा मूरख छे मानवी, नकटा हुवेतां हो मूरख नांणी लाज ॥ १९ ॥
 ज्यूं साधां नें दोषीला थापवा, भेषघारी हो दोषीला ठहरवा आप।
 नकटा तणी त्यांनं ओपमा, त्यारे होसी हो भवभव मे संताप ॥ २० ॥
 एहवा कुगुरां री परतीत सूं, आगे बूडा हो घणां जीव अनंत।
 ते नरक निगोद माहें पड्यां, त्यारो कहता हो किम आवें अत ॥ २१ ॥



ढलल : ११

दुहल

वलनें मूल धर्म जलण कहूओ, ते जलणें वलरलल जीव ।
 ते सतगुर रो वलनो करे, तलं दीधी मुगत री नीव ॥ १ ॥
 जे कुगुर तणो वलनो करे, ते कलम उतरें भवपलर ।
 जलं सुगुर कुगुर नही ओलखल, ते गलल जमलरो हलर ॥ २ ॥
 केई अगलंनी इम कहें, गुर नें बलप एक होय ।
 मूंडल भलल जे गुर कखल, तलंनै न छोडणल कोय ॥ ३ ॥
 जलण आगम मलंहे इम कहूओ, गुर करणल गुण देख ।
 खोटल गुर नें नही सेवणल, तलंरी कीमत करणी बशेष ॥ ॡ ॥
 कुगुर नें अजलणपणें गुर कीयो, ठीक पडीलं छोडणो सतलब ।
 आतो लीधी टेक न रलखणी, ते सुणजो सूतर रल जलब ॥ ५ ॥

ढलल

[जगत गुरु तलसलल नंदन वीर]

केई भोलल लोक इम कहें जी, गुर नही छोडणल कोय ।
 तलं आचलर तो ओलखलं नही, मन आवें जूं बोलें सोय ।
 चुतर नर छोडो कुगुरनो संग* ॥ १ ॥
 गुर गहलल गुर बलवल, तोही गुर देवन कल देव ।
 चेलो जों सेणो हुवे तो, उं करे गुरलं री सेव ॥ २ ॥
 सलचो मलरग सलधरो जी, खोट खटलवे नलंही ।
 चेलो गुर चूके कदल जी, तो छोडें खलण एक मलंही ॥ ३ ॥
 कहो सलध कलसकल सगल जी, तडकें तोडे नेह ।
 आचलरी सू हललमललें जी, अणलचलरी सू छेह ॥ ॡ ॥
 नीलटलंस कीडल चूगें जी, मलंहे वलरलजे रलंम ।
 कहे करणी रो कलरण नही, म्हलंरल दरसणरोइ कलंम ।
 ए अणतीरथी री वलंण ॥ ५ ॥
 नीलटलंस कीडल चूगेजी, तलणरे दलल नही घट मलंय ।
 पलपी रो मुख देखतलं जी, भलो कठल सू थलय ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

गुण लारें पूजा कही, तोही निगुण पूजता जाय ।
 चोंडे भूला मानवी, त्याने किम आणीजे ठाय ॥ ७ ॥
 सोंनारी छूरी चोखी घणी, पिण पेट न मारें कोय ।
 ए लोकीक दिष्टत सामले, तुम्हे हिरदे विमासी जोय ॥ ८ ॥
 ज्युं गुर कीघा तिखा भणी, ते ले जावे दुरगति मांय ।
 जे भागल तूटल गुर हुवे, त्याने उमा दीजे छिट्काय ॥ ९ ॥
 खोटा गुरने नही सेवणा जी, श्री वीर गया छे भाख ।
 कुण कुण गुरने छोडीया, त्यांरी सूतर मे छें साख ॥ १० ॥
 जमाली सिष्य भगवंत रो, तिणरे चेला पाचसो जांण ।
 एक वचन उथापे वीर नो जी, पर गयों उलटी तांण ॥ ११ ॥
 जब कितरा एक चेलां तणो जी, तुरत गयो मन भाग ।
 घणां चेलां जमाली ने छोडीयो जी, सावथी नगरी रे बाग ॥ १२ ॥
 केइ मूढ मिथ्याती कने रह्या, केइ आया भगवत पास ।
 जमाली ने खोटो जांण छोडीयो, त्याने वीर वखाण्या तास ॥ १३ ॥
 जमाली ने कुगुर जाण्या पछें जी, छोड दीयो ततकाल ।
 जो गुर छोड्यारी संका पडे तो, सूतर भगोती संभाल ॥ १४ ॥
 सावथी नगरी रे वाहिरे जी, कोठक नांमा बाग ।
 तठे गोसाले भगवत सू जी, कीयो सवादो लाग ॥ १५ ॥
 अजोग बोल्यो भगवंत नं जी, मूल न राखी काण ।
 दोय साध वाल्या भगवंत रा जी, वीर नें कीयो लोही ठाण ॥ १६ ॥
 लेस्या सू खाली हुवो जाणने जी, साध आया सताब ।
 गोसाला ने प्रश्न पूछीया, जब नायो गोसाला ने जाब ॥ १७ ॥
 जब गोसाला रा चेला तणो, उतरीयो गोसाला सूं राग ।
 तिणने खोटो जाणने छोडीयो जी, सावथी नगरी रे बाग ॥ १८ ॥
 त्यां गोसाला ने गुर कीयो हूतो, पिण छोडतां नांणी लाज ।
 पछे गुर करे श्री भगवत ने, त्या साख्या आतम काज ॥ १९ ॥
 केइ चेलां गोसाला कने रह्या, त्या राखी गोसाला री टेक ।
 ते तो कुगुर नें सेवनें जी, अे बूडा विना ववेक ॥ २० ॥
 गोसाला ने चेला छोडीयो जी, ते तिरीया ससार ।
 ए भगवती रे सतखंघ पनरमें, ते वुधवत करजों विाचर ॥ २१ ॥
 सोगंधीया नगरी तिहा जी, नीलासोग उद्याण ।
 सेठ मुदंसण तिहां वसे, ते डाहो चतुर सुजांण ॥ २२ ॥

सुखदेव	सिन्यासी	नें	गुर	कीयो	जी,	सेठ	सुदंसण	जांण ।		
खोटो	जाण्यो	जब	छोडीयो,	उणरी	मूल	न	राखी	कांण ॥ २३ ॥		
थावचा	अणगार	नें,	गुर	कीघा	उत्तम	जांण ।				
सुखदेव	सिन्यासी	ने	छोडीयो,	तिण	श्री	जिण	धर्म	पिछांण ॥ २४ ॥		
सुखदेव	सिन्यासी	सांभल्यो	जब,	आयो	वेग	सताब ।				
सेठ	सुदंसण	रे	घरे	जी,	आयो	करवा	जाब ॥ २५ ॥			
पछें	सुखदेव	ने	सुदंसण,	आया	नीलासोग	उद्यांन ।				
थावचें	अणगार	समझावीया,	जब	आयो	घट	में	ग्यांन ॥ २६ ॥			
सुखदेव	सिन्यासी	तिण	समें,	वले	चेला	एक	हजार ।			
थावचा	अणगार	नें	गुर	कीयां	जी,	लीघो	संयम	भार ॥ २७ ॥		
त्यां	आमला	गुर	नें	छोडतां	जी,	संक	न	आंणी	काय ।	
गिनाता	रा	पांचमां	अधेन	में	जी,	ए	चोडे	सूतर	रो	न्याय ॥ २८ ॥
सेलकराय	रषेसर	तणे	जी,	पांचसो	चेला	लार ।				
सेलगपुर	नगर	पवारीया	जी,	करता	उग्र	वीहार ॥ २९ ॥				
तठें	बेटें	कीघी	त्यांरी	वीनती	जी,	सरीर	मे	रोग	जांण ।	
जब	रथसाला	में	आय	उतख्या	जी,	पछें	ओषध	कीघा	आंण ॥ ३० ॥	
रोग	गयो	साता	हुइ	पिण,	न	करें	तिहां	थी	वीहार ।	
खावापीवा	उण	चित्त	दीयो	जी,	घिघी	थको	करें	आहार ॥ ३१ ॥		
उसनो	उसनविहारी	हुवो	जी,	पासथो	कुसीलीयो	जांण ।				
परमादी	नें	संसतो,	ए	पांचूई	बोल	पिछांण ॥ ३२ ॥				
जब	पंथग	वरजी	पांचसो	जी,	मिलनें	कीयो	विचार ।			
गुर	तो	पढ्या	परमाद	में	जी,	पिण	आपानें	सिरें	छें	वीहार ॥ ३३ ॥
एहवी	करें	विचारणा	जी,	परभाते	कीयो	वीहार ।				
गुरनें	ढीलें	जांण	छोडीयो,	ते	घिन	मोटा	अणगार ॥ ३४ ॥			
पंथग	वरजी	पांचसों	जी,	नांणी	गुर	री	परतीत ।			
त्यां	ढीलो	जाणीनें	परहख्यो	जी,	आजिण	मारग	री	रीत ॥ ३५ ॥		
पंथग	वीयावच	करीजी,	तिणनें	कहे	केइ	धर्म ।				
त्यां	जिण	मारग	नहीं	ओलख्यो	जी,	भूला	अग्यांनी	भर्म ॥ ३६ ॥		
उसनादिक	पांचूं	भणीजी,	असणादिक	दें	कोय ।					
तिणनें	चोमासी	डंड	नसीत	रें,	पनरमें	उदेसैं	जोय ॥ ३७ ॥			
तो	सेलगनें	जिण	घालीयो	जी,	उसनादिक	पांचूं	मांय ।			
तो	तिणरी	वीयावच	कीयां	में,	धर्म	किहां	थी	थाय ॥ ३८ ॥		

ज्ञाता अग मे जिण कह्यो जी, म्हारो साध साधवी होय ।
 जो सेलग ज्यूं ढीलो पडें तो, गण माहे आछो न कोय ॥ ३६ ॥
 घणा साध नें साधवी जी, श्रावक श्राविका मांय ।
 उ हेलवा निंदवा जोग छे, जाव अनत संसारी थाय ॥ ४० ॥
 जे हेलवा निंदवा जोग छे, तिणने वाद्या किहा थी धर्म ।
 तिणरो विनो वीयावच कीया मे, निश्चें वधसी कर्म ॥ ४१ ॥
 पथग वीयावच करीजी, ए आपरो छादो जाण ।
 धर्म नही तीन करण मे जी, नसीत सूं करो पिछाण ॥ ४२ ॥
 पथग ने वीयावच थापीयो, जब सगलाइ भेला जाण ।
 ते पिण छादो आपरो जी, पूरवली पीत आण ॥ ४३ ॥
 पंथग वरजी पाचसो, गुरनें छोड्या खोटं जाण ।
 पछे सुध हुवा काने सुण्या, जब सगलाइ मिलीया आण ॥ ४४ ॥
 ए ज्ञाता सूतर में कह्यो जी, पांचमां अघेन रे मांय ।
 खोटा जांणे गुर छोडणा जी, आ संका म आंणो काय ॥ ४५ ॥
 सकडाल गोसाला नें गुर कीयो जी, छेहलो तीर्थकर जाण ।
 तिण खोटो जांण्यो जब छोडीयो, उणरी मूल न राखी काण ॥ ४६ ॥
 पछें गुर कीघा भगवंत ने जी, कीयों गोसाला ने दूर ।
 ए सातमा अंग माहे कह्यो, ते निश्चे म जांणो कूर ॥ ४७ ॥
 पछें गोसालो सुण आयो तिहां, सकडाल नें फेरण कांम ।
 सकडाल गोसाला नें देखनें, वेठो रह्यो एकण ठाम ॥ ४८ ॥
 तिणने आदर सनमान दीयो नही, बले मीठ न मेली तांम ।
 जब गोसाले कपटी थके, कीघा भगवंत रा गुण ग्राम ॥ ४९ ॥
 हाट दीघा उतरवा तेहने, पिण माम पाडी तिण ठाम ।
 कह्यो तोने ओ दान दीयो तिको, म्हारे नही धर्म रो कांम ॥ ५० ॥
 अंगालमरदन साध रे, चेला पांचसो मुनीराय ।
 गुर तो अमवी जीव छे, पिण चेला नें खबर न काय ॥ ५१ ॥
 एक भडसूरों आगे चलें, तिणरें पांचसों हुस्ती लार ।
 एहवो सुपनो राय देखने, परभाते करे वीचार ॥ ५२ ॥
 इतला माहे आवीया, अंगालमरदन अणगार ।
 राजा देख सासे पड्यो, पछे परख करी उण वार ॥ ५३ ॥
 पछे चेलां पिण गुर ने जांणीयो, ए तिरण तारण नही होय ।
 दया रहीत जांणें छोडीयो, पिण मोह न आप्यो कोय ॥ ५४ ॥

ए ठांणाअंग रा अर्थ में, वले कह्यो कथा रें मांय ।
 खोटा गुर नें छोडणा कहा, ते निश्चें सूतर रोय न्याय ॥ ५५ ॥
 हूं कहि कहि नें कितरा कहुंजी, गुर छोड्यां रा नाम ।
 ते सूतर में छें अति घणा जी, आ कही वानंगो ताम ॥ ५६ ॥
 इत्यादिक साध नें श्रावकां जी, गुर नें छोड तिरीया अनंत ।
 जे करणी करें मुगते गया, त्यांरा गुण गाया भगवत ॥ ५७ ॥
 गुर गुर गेहला कर रह्या, पिण गुर री खबर न कांय ।
 जो हीण आचारी नें गुर करें तो, चिहूं गति गोता खाय ॥ ५८ ॥
 जे कुगुर छोड सत गुर करें, वले पालें बिरत अमंग ।
 ते तिच्छा तिरें तिरसी घणा जी, सतगुर रे परसंग ॥ ५९ ॥
 गुर नें ढीला जाण छोडीया, त्यांरी कही सूतर सूं बात ।
 हिवें परंपरा गुर छोडीया जी, ते सुणजो विख्यात ॥ ६० ॥
 लूकें साह गुर नें छोडनें जी, कीधी आपणी थाप ।
 जो गुर छोड्यां में दोष छें तो, इण मोटों कीधों पाप ॥ ६१ ॥
 त्यां मां सूं नीकल्या ढूंढीया जी, लूका गुरां नें छोड ।
 जो गुर छोड्यां में दोष छें तो, यामें ही मोटी खोड ॥ ६२ ॥
 लूकां नें ढीला जाण छोडनें जी, सयमेव चारित लीघ ।
 साध वाज्या तिण दिवस थी जी, ओर गुर कोइ माथे न कीध ॥ ६३ ॥
 जो गुर नही माथे केहनें जी, तिणमें बतावें दोप ।
 तो धुर सूं निगुरा छें ढूंढीया, इण लेखें ओही मत फोक ॥ ६४ ॥
 कोइ कहें गुर माथे कीयां विनां जी, नही उतरें भव पार ।
 तो इण लेखें सगलाइ ढूंढीया जी, अं निगुरां रों पिरवार ॥ ६५ ॥
 जो गुर छोड्यां में दोष छें, वले गुर नहीं कीधां रो दोष ।
 ए दोनूं दोष तो ढूंढीयां मे, ते किण विध जासी मोख ॥ ६६ ॥
 वले मांहेमां ढूंढीया जी, गुर छोडें छें ताम ।
 वले ओर करें गुर जायनें जी, तिणरो धरावें नाम ॥ ६७ ॥
 ढूंढीया में गुर छोडें घणां जी, त्यांरो किण किण रो कहुं नाम ।
 जो दोष हुवें गुर छोडीयां, तां अं सर्व बूडा वेकांम ॥ ६८ ॥
 केई संवेगीयां रा श्रावकां, त्यां गुर कीयां ढूंढीयां ताम ।
 जो दोष हुवें गुर छोडीयां ताम, अं खोटी हुवा वेकांम ॥ ६९ ॥
 वले भगत सिन्यासी ने सेवडा जी, केई गुर छोडी उभा जाय ।
 जो उवे गुर करें ढूंढीया भणी जी, तुरत मूडेले मांय ॥ ७० ॥

उगन आगला गुर छोटापने जी, आस टुसा गुर नास ।
 जो शेष कहें गुर छोटीया तो, वास बोधा त्पाने जास ॥ ५१ ॥
 यागे सरवा रें लेखें हम बोचणो जी, गुर मत छोजे गोस ।
 आगला गुर ने मेवनां, धानें मुघ गति देगी गोस ॥ ५२ ॥
 हम कहणी आवें नही, जव बोन्धा मूसी यास ।
 मोटा जांणी गुर छोडणा जी, करणा उत्तम गुर जास ॥ ५३ ॥
 तो कयूं कहो गुर ने न छोडणा जी, कूजे कांय कगे वरपास ।
 एण विघ लीवा नांरुहें, जव कोयत बोळें न्यास ॥ ५४ ॥
 कुगुर छोडणी करी जी, रीयां गांम मभास ।
 संवत अठारें तेतीसे समे, असाढ गुद तीज नें मोमवास ॥ ५५ ॥



ढाल : १२

दुहा

भेष पहख्यो भगवान रो, साधु नाम धराय ।
 पिण आचार में ढीला घणां, ते कह्यो कठा लग जाय ॥ १ ॥
 त्यानें वादें गुर जाणनें, वले कूडी करें पखपात ।
 त्यां भूठां नें साचा करण खपें, त्यारे मोटो साल मिथ्यात ॥ २ ॥
 कुगुर तणां पग वांदनें, आगें बूडा जीव अनंत ।
 वले बूडें नें बूडसी घणां, त्यारो कहतां न आवें अंत ॥ ३ ॥
 साध मारग छें सांकडों, तिणमें न चालें खोट ।
 आगार नहीं त्यारे पाप रो, त्यां वरत कीयां नवकोट ॥ ४ ॥
 भेषधारी भागल घणां, त्यांसूं पलें नहीं आचार ।
 ते कुण अकार्य कर रह्या, ते सुणजो विसतार ॥ ५ ॥

ढाल

[आदर जीवा रिदमा गुण आदर]

कुगुर तणां चिरत चावा करसूं, सूतर री दे साख जी ।
 सुमता आंण सुणो भव जीवां, श्री वीर गया छें भाख जी ।
 साध म जाणों इण आचारे* ॥ १ ॥
 जो कुगुरां नें सेंठा कर भाल्या, तोही सुण सुण म करो घेख जी ।
 साच भूठ रो करो निवेरो, सूतर सांहो देख जी ॥ २ ॥
 जीमणवार मांसूं कोइ ग्रहस्थ, ल्यावें घोवण पांणी मांड जी ।
 ते आप तणें घरें आंण वेंहरावें, ते करें भेष ने मांड जी ॥ ३ ॥
 जो जांण जांणनें साध वेंहरें, तिण लोप दीयो आचार जी ।
 ए प्रतख सांहो आप्यो लेवे, त्यानें किम कहिजें अणगार जी ॥ ४ ॥
 ए अणाचार उघाडों सेवें, जे सांहो आंण्यो ले आहार जी ।
 ए दसवीकालक तीजें अधेनें, कोइ जोवो आंख उघाड जी ॥ ५ ॥
 साध साधवी ठरलें मातर, एकण दरवाजें जांय जी ।
 वीर वचन सूं उलटा पडीया, ए चोडें कीयो अन्याय जी ॥ ६ ॥
 गाम नगर पुर पाटण पाडो, तिणरो हुवें एक नीकाल जी ।
 तिहां साध साधवी न रहें भेला, आ वांधी भगवंत पाल जी ॥ ७ ॥

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

एकण दरवाजें साध .साधवी, जो जाए नगरी वार जी ।
 तो अपरतीत उठें लोका मे, केइ विरत भांगी हुवे खुवार जी ॥ ८ ॥
 जुदो जुदो नीकाल छतो पिण, कोइ जाए एकण दरवाज जी ।
 ते घेठा हटक न मानें किणरी, धले नाणें मन मे लाज जी । ९ ॥
 एक नीकाल तिहां रहणोइ वरज्यो, तो किम जाए एकण दुवार जी ।
 ए वेतकल्प रे पहले उदेसें, ते बुधवत करो विचार जी ॥ १० ॥
 ग्रहस्थ रें घरे जाए गोचरी, जो जोडीयो देखें दुवार जी ।
 तिहां सुध साध तो फिर जाए पांछा, भागल जाए खोल किंवाड जी ॥ ११ ॥
 केई भेषघास्थां रे एहवी सरघा, ग्रहस्थ रे जड्यो दुवार जी ।
 तो धणी तणी आग्या ले साध, माहि जाए खोल किंवाड जी ॥ १२ ॥
 हाथा सूं साध किंवाड उघाडे, माहि जाए वेंहरण नें आहार जी ।
 इसरी ढीली करे परूपणा, ते विटल हुवा वेकार जी ॥ १३ ॥
 किंवाड उघाडने वेंहरण जाणरो, मूल न सरघे पाप जी ।
 कदा न गया तो पिण गया सारिषा, आ कर राखी छे थाप जी ॥ १४ ॥
 किंवाड उघाडने वेहरण जाए, तो हिंसा जीवा री थाय जी ।
 ते आवसग सूतर में वरज्यो, चोथा अघेन रे माय जी ॥ १५ ॥
 गाम नगर बारें उतरीयो, कटक सथवाडो ताहिजी ।
 जो साध रात रहे तिण ठामे, ते नही जिण आग्या माहि जी ॥ १६ ॥
 एक रात रहे कटक में तिणनं, च्यार मास रो छेद जी ।
 ते वेतकल्प रे तीजें उदेसे, ते सुण सुण म करो खेद जी ॥ १७ ॥
 इसरा दोष जांणीने सेवे, तिण छोडी जिण धर्म रीत जी ।
 एहवा भिष्ट आचारी भागल, त्यांरी कुण करसी परतीत जी ॥ १८ ॥
 विण कारण आंख्यां में अंजण, घालें आंख मम्हार जी ।
 त्यांने साधवीयां किम सरघीजें, त्या छोड दीयो आचार जी ॥ १९ ॥
 विण कारण जो अजण घाले, ते श्री जिण आग्या वार जी ।
 दसवीकालक तीजे अघेनें, ओ उघाडो अणाचार जी ॥ २० ॥
 वस्त्र पातर पोथी पानादिक, जाए ग्रहस्थ रें घरे मेल जी ।
 पछें करें विहार दे धणी भलावण, तिण प्रवचन दीघां ठेल जी ॥ २१ ॥
 पछें ग्रहस्थ आंमा साहा मेलतां, हिंसा जीवां री थाय जी ।
 तिण हिंसा सूं ग्रहस्थ नें साध, दोनूं भारी हुवे थाय जी ॥ २२ ॥
 भार पढावें ग्रहस्थ आगे, से किम साधु थाय जी ।
 नसीत रे बारमें उदेसे, चोमासी चारित जाय जी ॥ २३ ॥

बले विण पडिलेह्यां रहें सदा नित, ग्रहस्थ रा घर मांय जी ।
 ओ साधपणों रहसी किम त्यांरो, जीवों सूतर रो न्याय जी ॥ २४ ॥
 जो विण पडिलेह्यां रहें एक दिन, तिणनें छंड क्हाणों मासीक जी ।
 नसीत रे दूजें उदसें, तिहां जोय करों तहतीक जी ॥ २५ ॥
 मात पितादिक, सगा सनेही, त्यांरा घर में देखें खाल जी ।
 त्यांनें परिग्रहो साध दरावें, आ चोडें कुगुर री चाल जी ॥ २६ ॥
 सांनीकर साध दरावें रुपीया, वरत पांचमों मांग जी ।
 बले पूछ्यां भूठ कपट सूं बोलें, तिण पेंहर विगाड्यो सांग जी ॥ २७ ॥
 न्यातीलां नें दाम दरावें, त्यांरें मोह न मिटीयों कोयजी ।
 बले सार संभाल करावें त्यांरी, ते निश्चें साध न होय जी ॥ २८ ॥
 अनरथ रो मूल क्हाणों परिग्रहो, ठांगां अंग तीजें ठांग जी ।
 तिणरी साध करें दलाली, ते पूरा मूंड अयाण जी ॥ २९ ॥
 रिंत उनालें पाणी ठारें, ग्रहस्थ रा ठाम मभार जी ।
 मन मानें जब पाछा सूंपें, ते श्रीजिण आग्या बारजी ॥ ३० ॥
 ग्रहस्थ तणां भाजन में साधु, जीमें असणादिक आहार जी ।
 तिणनें भिष्ट क्हाणों दसवीकाल में, छठा अघेन मभार जी ॥ ३१ ॥
 केइ सांग पहर साधवीयां बाजें, पिण घट में नहीं ववेक जी ।
 आहार करें जब जडें किवाड, दिन में बार अनेक जी ॥ ३२ ॥
 ठरलें मातरे गोचरी जाए जब, आडा जडें किवाड जी ।
 बले साध कनें आवें तोही जडलें, त्यांरो विगड गयो आचार जी ॥ ३३ ॥
 साधवीयां नें जडवो चाल्यो, ते सीलादिक राखण काज जी ।
 ओर काम जो जडें साधवीयां, त्यां छोडी संजम लाज जी ॥ ३४ ॥
 आवसग में हिंसा कही जडीयां, आलोवण खातें ताहि जी ।
 मन करनें जडणो नहीं वांछें, उत्तराघेन पेंतीसमां मांहि जी ॥ ३५ ॥
 ओषध आद दे वेंहर आणें, केइ वासी राखें रात जी ।
 ते जाय मेलें ग्रहस्थ रा घर में, पछें नित ल्यावें परभात जी ॥ ३६ ॥
 आपरो थको ग्रहस्थ नें सूंप्यो, ए मोटों दोष पिछांण जी ।
 बले बीजो दोष वासी राख्यां रो, तीजो अजेयणा जांग जी ॥ ३७ ॥
 बले चोथो दोष पूछ्यां भूठ बोलें, वासी राख्यां न क्हें मूंड जी ।
 केइ भेषधारी छें एहवा भागल, त्यांरें भूठ कपट छें गूड जी ॥ ३८ ॥
 ओषध आद दे वासी राख्यां, वरतां में पडें वगार जी ।
 क्हायो दसवीकालक तीजे अघेनें, वासी राखें तो अणाचार जी ॥ ३९ ॥

केइ आघाकरमी पुस्तक वेंहरे, वले तेहिज लीघो मोल जी ।
 ते पिण साहो आण्यो वेंहरे, त्यारे पूरी जाणजो पोल जी ॥ ४० ॥
 कोइ आप कने दिख्या ले तिणरें, सांनीकर मेळे साज जी ।
 पुस्तक पांनादिक मोल लरावे, वले कुण कुण करे मकाज जी ॥ ४१ ॥
 गछवासी परमुख आगा सूं, लिखावें सूतर जाण जी ।
 पेंहला मोल कराय परत रो, सचकार दरावें आणजी ॥ ४२ ॥
 रुपिया मेलावे ओर तणे घर, इसबो सेठों करें काम-जी ।
 ते पिण हाथे परत आयां विण, दिख्या दे काहें ताम जी ॥ ४३ ॥
 पछें गछवासी कबल सूं डरतो, परत लिखें दिन रात जी ।
 जीव अनेक मरे तिण लिखतां, करें तस थावर री घातजी ॥ ४४ ॥
 इण विघ साध परत लिखावे, तिण सजम दीघो खोय जी ।
 जे दया रहीत छें एहवा दूष्टी, ते निरुचे साध न होय जी ॥ ४५ ॥
 छकाय हणीने परत लिखी ते, आघाकरमी जाण जी ।
 ते हिज परत जो साध वेंहरे, ए भागल रा अहलांण जी ॥ ४६ ॥
 वले तेहिज परत टोलां मे राखे, आघाकरमी जाण जी ।
 जे सेमल हुवा ते सगला बूडा, तिणमे संका मत आण जी ॥ ४७ ॥
 आघाकरमी रा लेवाल रुले तो, उतकष्टो काल अनंत जी ।
 दया रहीत कहरों तिण साध ने, भगोती मे भगवंत जी ॥ ४८ ॥
 कोइ श्रावक साध समीपे आए, हरषे वादे पग झाल जी ।
 जव साध हाथ दे तिणरे माथे, आ चोडे कुगुर री चाल जी ॥ ४९ ॥
 ग्रहस्थ रें माथें हाथ देवें ते, ग्रहस्थ बरोबर जाण जी ।
 एहवा विफलां नें साध सरधे, ते पिण विकल समाण जी ॥ ५० ॥
 ग्रहस्थ रे माथे हाथ दीयो तिण, ग्रहस्थ सू कियो समोग जी ।
 तिणनें साधु किम सरधीजे, लागो जोग ने रोग जी ॥ ५१ ॥
 दसवीकालक आचारग माहे, वले जोवो सूतर नसीत जी ।
 ग्रहस्थ रे माथें हाथ दीयो ते, आ प्रतख उधी रीत जी ॥ ५२ ॥
 वले चेला करें ते चोर तणी परें, टग पासीगर ज्यू तांम जी ।
 वले उजवक ज्यूं तिणने उचकाए, लेजाय मूडे ओर गांम जी ॥ ५३ ॥
 आछो आहार दिखाए तिणने, कपडादिक मही दिखाय जी ।
 इत्यादिक लालच लोभ बताए, भोलाने मूडे भरमाय जी ॥ ५४ ॥
 इण विघ चेला कर मत बांधे, ते गुण विण कोरो भेष जी ।
 साधपणा रो साग पेहर नें, भारी हुवे वशेष जी ॥ ५५ ॥

मूढ मूंडावी भेला कीघा, त्यांसूँ पळें नहीं आचार जी ।
 भूख तिरखा पिण खमणी नावें, जब लेवें असुध पिण आहार जी ॥ ५६ ॥
 अनल अजोग नें दिख्या दीघां, तो चारित रो हुवें खंडजी ।
 नसीत रे उदेसैं इग्यारमें, चोमासी रो डंड जी ॥ ५७ ॥
 ववेक विकल बालक बूढा नें, पेंहरावें सांग सताब जी ।
 त्यांनैं जीवादिक पदारथ नव रा, जाबक नावें जाबजी ॥ ५८ ॥
 सिष्य करणों तो निपुण बुधवालो, जीवादिक नव जाणें ताहिजी ।
 नहीं तों एकल रहणों टोला में, उत्तराधेन बतीसमा मांहि जी ॥ ५९ ॥
 केई दडें लीपें हाथां सूँ थानक, ते पिण ढलीया कूट जी ।
 इसरो काम करें तिण साधु, पाडी भेषमें फूटजी ॥ ६० ॥
 जो दडें लीपें थानक नें साधु, तिण श्री जिण आग्या भंग जी ।
 तीजा वरत री तीजी भावना, तिहां वरज्यो दसमें अंग जी ॥ ६१ ॥
 छ्त्री साधवीयां टोला मांहे, वले कारण पिण न पड्यो कोय जी ।
 तोही दोय साधवीयां रहें छें, ओ दोष उघाडो जोय जी ॥ ६२ ॥
 पवित्रणी रहें दोय साधवी, ते जिण आग्या में नांहि जी ।
 त्यांनैं वरज्यो ववहार सूतर में, पांचमां उदेसा मांहि जी ॥ ६३ ॥
 कारण विण एकली साधवी, असणादिक वहरण जाय जी ।
 वले ठरलें पिण एकलडी जावें, ते नहीं जिण आग्या मांय जी ॥ ६४ ॥
 वले एकलडी नें रहणों वरज्यो, इत्यादिक बोल अनेक जी ।
 ते वेतकल्प रें पांचमें उदेसे, ते समभों आण ववेक जी ॥ ६५ ॥
 कुगुरु एहवा हीण आचारी, साघां सूँ दे भिडकाय जी ।
 आप तणां किरतब सूं डरता, जिण मारग दीयो छिंपाय जी ॥ ६६ ॥
 इसडा कुगुरु नें गुरकर मांनैं, त्यांरें अभितर में अंधकार जी ।
 गुर में खोटो खाय अग्यानी, चाल्या जनम विगाड जी ॥ ६७ ॥
 उसभ करम ज्यारे उदें हुवा जब, इसरा गुर मिलीया आय जी ।
 दग्ध बीज हो जाबक बूडा, पछें चिहूंगति गोता खाय जी ॥ ६८ ॥
 इम सांभल नें उत्तम नरनारी, छोडो कुगुर नों संग जी ।
 सत गुर सेवो सुध आचारी, दिन दिन चढतें रंग जी ॥ ६९ ॥
 आ सभाय करी कुगुरु ओलखावण, पीपाड सहर मभार जी ।
 समत अठारें वरस चोतीसैं, आसोज सुद सातम बुधवार जी ॥ ७० ॥

ढाल : १३

दुहा

केई साधु नाम धराय नें, सेवें दोष अनेक ।
त्यांनैं ठीक नही त्यांरा दोष री, ते सुणजों आंण ववेक ॥ १ ॥

ढाल

[मगध देस को राजा राजेसर]

केइ भंगी रा घर री रोटी तो खावें, पिण भंगी री भीटी न खावें ।
इसडी उत्तमाई देखी विकलां री, डह्रा ते इचर्य पावे रे ।
जोवों हिरद विचारी, ये छोडों कुगुर री लारी रे ।
कुगुर हीण आचारी* ॥ १ ॥

ज्यूं केई हाया सूं जडें उघाडे किंवाड, ग्रहस्थ उघाड दीयां करें टालों ।
इसडों आचार देखो कुगुरां रो, ते प्रतष दाल मे कालो रे ॥ २ ॥
ग्रहस्थ उघाडे आहार वेंहरावें, ते वेंहरे नही दोष जाण ।
हाये जड्यां उघाड्यां रो दोष न जाणें, इसडा छें मूढ अयांण रे ॥ ३ ॥
गोचरी जाए जव जडें किंवाड, पाछा आयां पिण खोलें किंवाड ।
ग्रहस्थ रे घरे गयां खोल नें पेसैं, इसडों कुगुरां रो आचार रे ॥ ४ ॥
ज्यांनैं साध सरधें त्यांनैं भेला न राखे, एकण थानक मांहि ।
त्यांनैं पूछ्यां कहें म्हांरे नही संभोग, तिणसूं भेला उतरां नाहि रे ॥ ५ ॥
इम कहि कहि राते भेला न राखे, एकण थानक माय ।
तो यारे ग्रहस्थ सूं संभोग किसों छे, तिणनैं मांहि राखे कांय रे ॥ ६ ॥
ग्रहस्थ नें भेलां राखे सांधा नें नही राखे, जो दोनूं कानी देवालों ।
यां दोनूं बीलारो प्रायच्छित आवें, सूतर नसीत संभालो रे ॥ ७ ॥
कोइ सुध साधां रा कुल गण मांहि, भेद पाडें कर कर तांण ।
तिणनैं प्रायच्छित दसमों आवें, ठांणा अंग रे पांचमें ठांण रे ॥ ८ ॥
जो दोषीलां सूं संभोग तोडे तो, प्रायच्छित मूल न आवें ।
बले त्या दोषीला ने तेहिज वादें, तो सगला सरिषा थावें रे ॥ ९ ॥
कदा आप दोषीलां नें वंदणा छोडें, तो पिण श्रावकां नें दूकावें रें ।
ते आप तणां मुतलव रें अर्थ, ठागा सूं काम चलावें रे ॥ १० ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

बले धर्म कहें दोषीलां नें बांछा, तिणरें आय चूकों मिथ्यात ।
 तिण समकत सहीत साधपणों खोयो, उंहीं सरखें सूतर री बात रे ॥ ११ ॥
 त्यां दोषीलां नें साघां बंदणा छोडी, त्यांनैं श्रावक श्राविका वांदें ।
 तिणनें त्यांरा गुर री परतीत न आई, जिण धर्म न ओलख्यो आंघें रे ॥ १२ ॥
 ज्यांरी परतीत थी त्यां बंदणा छोडी, तो आप वांदें किण लेखें ।
 इसडो अंधारों छें घट भितर जेहनें, ते सूतर न्याय न देखें रे ॥ १३ ॥
 ज्यांनैं दोषीलां सरघें त्यांनैं हिज वांदे, इसडी ज्यांरें भोलप मोटी ।
 ते समर्के नहीं घमडोल में पडीया, सरघा भाल रह्या छें खोटी ॥ १४ ॥
 ढीला भागल नें साघ वांदे नहीं, लागतो जाणें पाप करम ।
 तो श्रावक श्राविका वांदसी त्यांनैं, किण विघ होसी धर्म रे ॥ १५ ॥
 जे घर हुवो असुभ्तो तिण दिन, जिण दिन वेंहरणों नांहि ।
 जो उणहीज दिन तिण घर रों वेंहरें, तो भागल री पांत मांहि रे ॥ १६ ॥
 पेंहला तो ज्यां घरां रो धोवण जाय ल्यावें, त्यां कठें असुभ्तों होय जावें ।
 पछे तिण दिन तिण हीज टोळारा, विण पूछ्यांही वेंहरी ल्याय रे ॥ १७ ॥
 उणहीज दिन उणहीज टोळारा, मन मांनैं तिण घर जावें ।
 असुभ्तो हुवो घर नहीं बत्तावें, विण पूछ्यांही वेंहरी ल्यावें रे ॥ १८ ॥
 इम प्रतष आहार असुभ्तो खावें, त्यांमैं आछी अकल किम आवें ।
 ते साधपणां रो नांम घरावें, इण लेखें दुरगत जावें रे ॥ १९ ॥
 कोइ कहें म्हें नितको एकण घर रों, नहीं वेंहरां आहार नें पांणी ।
 म्हें धोवणादिक वेंहरां ते न्हांखी तो, ओ पिण भूठ बोलें छें जांणी रे ॥ २० ॥
 तो पेंहलें दिन जिण घर जाय वेंहख्यो, असणादिक च्याखूं आहार ।
 बीजें दिन वीहर करतां नित वेंहरें, जब कठी गयो आचार रे ॥ २१ ॥
 उन्हों पांणी पिण नितकों वेंहरें, कलालादिक रें घरे जाय ।
 त्यांनैं पूछें पांणी नितकों कांय वेंहख्यो, जब साच बोल्यो नहीं जाय रे ॥ २२ ॥
 केइ पाडा बंध गोचरी वरजेनें, फूटकर घरां रे मांय ।
 सिष्य सिष्यणी सगला नें मेलें, तिहां वेंहरें नितरा नित जाय रे ॥ २३ ॥
 एक दोय सिंघाडे पेंहलें दिन वेहख्यो, केकां वेंहख्यो बीजें दिन जाण ।
 नितरो नित वेंहख्यो एकण टोला रां, गुर रें पास मेल्यो आंण रे ॥ २४ ॥
 केई एकण गुर रा सिष्य सिष्यणी छें, च्यारां पांचा जायगां रहें ताय ।
 ते गोचरी जाए विण पूछ्यां मांहोमां, एकण घर पिण वेंहरें आय रे ॥ २५ ॥
 उण वेंहख्यो ते घर बीजा न टाळें, बीजां वेंहख्यो ते ओ पिण न टाळें ।
 नितरो नित वेंहरें एकण टोला रा, अणाचार नें कुण संभालें रे ॥ २६ ॥

इत्यादिक बले कूड कपट सूँ, एकण घर वेंहरे नितको आहार ।
 ते अणाचारी उघाडा चोडें, ते पिण बाज रह्या अणगार रे ॥ २७ ॥
 च्यार पांच साव किहां रह्या चोमासें, आप आपरो वेंहख्यो खावें ।
 तो संकडाई पिण न पडे तिणा रे, सगला रे साता होय जावें रे ॥ २८ ॥
 च्यार पांच अनेक मेला-रहें साव, ते जूजूवा वेंहरण जावे ।
 तो एकण दिन एकण घर माहें, सगलाई वेंहरण आवे रे ॥ २९ ॥
 केई साव नांम धरावे त्यांरो, आचार छे घणों अजोग ।
 आहार पांणी तणां गिची छें गाढा, तिणसूँ तोडें मांहोमां संभोग रे ॥ ३० ॥
 इग्यारें सभोग तो भेला राखें, न्यारो करे आहार नें पाणी ।
 ते नितरो नित एकण घर वेंहरण, त्यांरा कपट नें लीजो पिछांणी रे ॥ ३१ ॥
 ते पिण मांहोमां देवें लेवे, तो भेलोइज आहार नें पांणी ।
 ते नित्य पिंड एकण घर रो खावें, त्यांरा चारित री धूर घांणी रे ॥ ३२ ॥
 सदा भेला रहे नित इण सरघा सूँ, सदा नित पिंड इण विष खावें ।
 ते पेटमरा साव रा भेष माहे, ठागा सूँ काम चलावे रे ॥ ३३ ॥
 कोड कारण वशेष रोगादिक आयां, नित पिंड ओषध ज्यूँ खावे ।
 राग बेष रहीत कोड कारण बतावें, ते तो निषेधणी नावें रे ॥ ३४ ॥
 जे जे बोल सूतर मे नाही, ते वांघणो जीत आचार ।
 ते प्रतख नित नित वेंहरे एकण घर, ओ तो उघाडो अणाचार रे ॥ ३५ ॥
 पांणी न वेंहरे ने धोवण वेंहरे, ते पिण सरघा खोटी ।
 धोवण माहे तो बले छे असणादिक, ते वेहख्यां छे भोलप मोटी रे ॥ ३६ ॥
 ते धोवण नें पाणी माहे न गिणे, ओ पिण मोटो अंधारो ।
 पांणी तो च्यार आहारां मे आयो, पिण धोवण नही त्या बारो रे ॥ ३७ ॥
 केई च्याराई आहारां रो उपवास करें छें, ते धोवण पीवें नांही ।
 जे धोवण पाणी माहे नही तो, क्यूँ न पीवें उपवास मांही रे ॥ ३८ ॥
 इकवीस जातरो पांणी चाल्यो, ते धोवण पांणी एक जात ।
 जे धोवण वेंहरेने पांणी न वेहरे, त्यारी मूरख माने बात रे ॥ ३९ ॥
 जो आप तणो वेहख्यो आप खावे, तो इसडो इज हुवें आचार ।
 तो जूजो जूजो वेहख्यो आंण खाघा रों, दोष नही छे लिगार रे ॥ ४० ॥
 तो जोड करीयाने. ओलखावण, यांरोइज ओलखायो आचार ।
 आप थापी ने आप उथापे, बोले नही वंघ लिगार रे ॥ ४१ ॥
 निरवद किरतव कहि कहि मूडें, पीढीयां खप करता आवें ।
 पिण सुघ साघां नें दोषीला ठहरावण, तिणमे हीज दोष बतावें रे ॥ ४२ ॥

कोइ आप तणों नाक जाबक काटें, पेंहला नें कुसावण काजें ।
 ज्युं साधों नें दोषीला थापण, आप दोषीला होता न लाजें रे ॥ ४३ ॥
 जिण जिण किरतव माहें दोषण थापें, ते छोड बतावें तो सुरा ।
 विण छोड्यां गेंहला ज्युं गूजें, ते साध मारग थी दूरा रे ॥ ४४ ॥
 दोष बतविं पिण छोडणी नावें, वले साध नाम धरावें ।
 वार वार तेहीज बातां करतां, निरलजा नें लाज न आवें रे ॥ ४५ ॥
 सुध बुध विंतीं विचार्यां बोलें, ते होय बेंठा छें भडंग ।
 त्यांसुं चरचा तणों कदे काम पडें तो, जाणक बोलें जडंग रे ॥ ४६ ॥
 इसडा छें कुंगुर हीण आचारी, ते पिण राखें छें मुगत री भासों ।
 ग्यानी पुरष इसडा विकला रों, देख रह्या छे तमासो रे ॥ ४७ ॥
 कांणी ; काजल घालें तिण बांखें, ते सोभा न पायें लिगार ।
 जो आचार बतावें, पिण पोंतें न पालें, ते पिण मूढ गिंवार रे ॥ ४८ ॥
 जे अणाचारी थका, आचार बतावें, ते थूही अन्हखी कूकें ।
 जाणें गायां तणां टोलारे मांहि, निकेवल गवा ज्युं भूके रे ॥ ४९ ॥
 साध मन करनें नहीं वांछें किवाड, उत्तराधेन पेंतीसमें चाल्यो ।
 पिण जडवो उघाडवों वरज्यो न दीसें, ओ घोचो कुगुरां रो घाल्यो रे ॥ ५० ॥
 मन करनें किवाड न वांछणों, ते जडवारो परमारथ जाणों ।
 थे हाथा सुं जडो उघाडो किवाड, तिणसुं उलटी मत तांणो रे ॥ ५१ ॥
 असणादिक च्याहई आहार, साध मन करें न वांछें रातो ।
 ते तो परमारथ खावारो जाणों, थे सरघो सूतर री बातो रे ॥ ५२ ॥
 मन करनें साध अस्त्री न वांछें, ते परमारथ सेवारो जाणों ।
 धर्म परमारथ वंछां करें तो, सावद्य कदेय म जाणों रे ॥ ५३ ॥
 मन करनें साध किवाड न वांछें, ते तो जडवा उघाडवा कामो ।
 तिण किवाड उपर सूअें बेसैं इत्यादिक, तो दोष नहीं छें तांमो रे ॥ ५४ ॥
 मन करनें साध धन न वांछें, ते तो राखवा काजें ।
 पिण थानक माहें धन पडीयो देखें तो, साध रों विरत मूल न भाजें रे ॥ ५५ ॥
 चंद्रवादिक साध मनकर न वांछें, पिण तिहां रहीतां दोष न लागें ।
 पिण छूटा चंदवा नें हाथां सुं वाधें, तो साध तणो विरत भागें रे ॥ ५६ ॥
 ज्युं मन करें साध किवाड न वांछें, तिहां रहीतां दोष न लागें ।
 पिण तेहीज किवाड जडें उघाडें, तो पेंहलों माहावतर भागें रे ॥ ५७ ॥

ढाल : १४

दुहा

भेषधारी विगड्या घणां, ते करे अनेक अन्याय ।
 ते नाम धरावे साधु रो, पिण जिण धर्म री खबर न काय ॥ १ ॥
 त्यामे चोरीजारी करे घणां, बोले भूठ अथाग ।
 निरलज सुध बुध बाहिरा, भूला मुगत रो माग ॥ २ ॥
 भूठा ने साचो करे, तिणरा दोषण देवे ढांक ।
 साचा ने भूठे करे, ते पिण नाणे सांक ॥ ३ ॥
 त्यामें कुबदी कंदाग्रही अति घणा, सके नही देता आल ।
 त्यारो गुर सहीत गण विगाडीयो, तिणरो कुण काढे नीकाल ॥ ४ ॥
 त्या भेषधास्यां रा टोला तणी, एक इचर्य वाली वात ।
 त्यामे धीगामस्ती मंड रही, ते सुणजो विख्यात ॥ ५ ॥

ढाल

[रे जीव मोह अशुकम्पा न आशिषे]

चोरी करे साधरा भेषमें, वले भूठ बोले फिर जाय रे ।
 मोटी चोरी करे छे तेहने, फेर दिख्या आवे छे ताय रे ।
 तुमे जोयजो अंधारो भेषमें* ॥ १ ॥
 तिणने चेलो चेली जाणे आपरो, थोरो प्रायच्छित्त देवे आप जी ।
 तिण उपरलो आय दिख्या दीये, उणरो दीघो डंड उथाप रे ॥ २ ॥
 राग रो घाल्यो थोडो डंड दे, तिणने उतरो प्रायच्छित्त आय रे ।
 जो उ प्रायच्छित्त डंड लेवे नही, तो उ साध केम कहवाय रे ॥ ३ ॥
 चोरने लेवे सूतर पारका, ओर पास देवे गलाय रे ।
 जाणे रखे चोरी चावी हुवां, मोने फेर साघपणो आय रे ॥ ४ ॥
 गालणवालो चोरी चात्री करे, तिणने फेर दिख्या दे जाण रे ।
 कहिने गलाया सूतर तेहने, दड थोडो दे मूढ अयाण रे ॥ ५ ॥
 ओर कने सूतर गलावीया, चोरी ढाकवा री मन आण रे ।
 तिण कूड कपट केलभ्यो घणां, मुदे तो चोर तेहीज जाण रे ॥ ६ ॥
 ओर रे कहे सूतर गालीया, ते तो भोलो छे विकल समान रे ।
 पछे चोरी चावी कीधी तेहनीं, गुर गुरणी ने कीया हेरान रे ॥ ७ ॥

*यह आंकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

चोरी नें चाबी कीधी तेहनें, फेर दिख्या देवें तांय रे ।
 मुदें चोर नें दिख्या दें नहीं, एहवो करें अग्यानी अन्याय रे ॥ ८ ॥
 मुदें चोर नें दीख्या दे नहीं, आघो काढें थोडो दे दंड रे ।
 तिणनें पिण दिख्या देंपी फेरसूं, च्यार तीरथ में करणो भंड रे ॥ ९ ॥
 तिणनें फेर दिख्या देवें नहीं, तो सगलाइ मूंड गिंवार रे ।
 एहवा नें आचार्य लेखनें, ते तो गया जमारो हार रे ॥ १० ॥
 वले केयक लिगडा नें लिगडीयां, ते तों करें मांहोमां अकाज रे ।
 चोथो वरत भांगें पापीया, लोकां री पिण नाणें लाज रे ॥ ११ ॥
 केयक वरत भांगें भेद सूं, ते तों मांहोमांहीं मिल जाय रे ।
 जो उ करें आलोवण तेहनें, फेर दिख्या देवें ते न्याय रे ॥ १२ ॥
 त्पारें भेद मांहें सेव्यो नहीं, त्यानें प्रायच्छित नावें लिगार रे ।
 तिणनें दिख्या देइ छोटी करे, ते तो पूरा मूंड गिंवार रे ॥ १३ ॥
 दिख्या नावें तिणनें दिख्या दीए, तिण मोटी कीयो अन्याय रे ।
 तिणनें पिण दिख्या आवें फेर सूं, चोडें देखो सूतर रो न्याय रे ॥ १४ ॥
 जो उणनें फेर दिख्या देवें नहीं, तो उण टोलां में भोल्य जाण रे ।
 सगला बूडें छें बापडा, तिणरें केडें कर कर तांण रे ॥ १५ ॥
 भागलां नें कोड कसाई विचें, मूंडा कहें मुख सूं जाण रे ।
 इम भेषघारी बकता फिरें, त्यांरा बोलां री करजो पिच्छांण रे ॥ १६ ॥
 त्यांरा टोलां मांसूं केई नीकले, त्यानें दिख्या विनां ले मांय रे ।
 वले वादें पूजें सुघ साध ज्यूं, त्यांसूं भिन न राखें कांय रे ॥ १७ ॥
 कहता कोड कसाया सूं बूरा, त्यानें विनां दिख्या ले मांहि रे ।
 पछें पूछ्यारो जाव न उपजें, तिणसूं बारें काख्या ताहि रे ॥ १८ ॥
 एक दोय वरस भेला रह्या, वादे पूजे भेलो कीयो आहार रे ।
 त्यानें फेर दिख्या आवें मूल थी, कोइ वुधवंत करजो वीचार रे ॥ १९ ॥
 कोइ साध कसायां भेलो रहें, एक दोय वरस परमाण रे ।
 जो उवे फेर दिख्या दें तेहनें, तिण लेखें त्यानेंइ जाण रे ॥ २० ॥
 फेर दिख्या दीयां पिण तेहसूं, जो उवे भेलो करें आहार रे ।
 तो उवे सगला बूडा छें बापडा, साध तणो भेषघार रे ॥ २१ ॥
 केइ वरत पालें श्रावक तणां, इण साध तणां भेष मांय रे ।
 त्यानें दिख्या विनां मांहें लीयें, वादें पूजें तिणरा पाय रे ॥ २२ ॥
 त्यानें श्रावक पिण नहीं सरधता, खोटी सरघारो कहता एम रे ।
 त्यानें दिख्या विनां मांहें लीयें, त्यानें साध कहिजें केम रे ॥ २३ ॥

दिख्या दीयां विनां माहे लीयां, तिणने पिण दिख्या दॅणी जाण रे ।
 गाला गोलो करे इण बात रो, सगला बूडा मूंड अयांग रे ॥ २४ ॥
 जो उणने दिख्या देणे माहे लीये, तो टलें सगलां रो संताप रे ।
 पछे मूठ बोले जो उ कपट सूं, तो उणरो उणनें इज लामें पाप रे ॥ २५ ॥
 केई भेषवाखां रा टोला ममे, एक उबी घणी छे रीत रे ।
 ते सुणतांइ इचर्ये उपजे, नही न्याय मेलण री नीत रे ॥ २६ ॥
 सील भांगें त्यांरा टोलां ममे, तिणनें फेर दिख्या दे ताम रे ।
 पिण छोटो रे पग पाडे नही, एहवा करे अग्यानी काम रे ॥ २७ ॥
 कहिवाने दिख्या दीधी फेर सूं, पिण डंड वीयों नहीं तिलमात रे ।
 बडो हुंतो ज्यूं रो ज्यूं राखीयो, त्यांरी मूरख माने बात रे ॥ २८ ॥
 फेर दिख्या दे बडो राखी, तिण चोडे चलायो मूठ रे ।
 उगरा टोलां माहे उण पापीयें, कीधी कुसील सेवारी छूट रे ॥ २९ ॥
 फेर दिख्या दे बडो राखीया, तो कुण डरे करतो अकाज रे ।
 तिण टोलां रा लिंगडा लिंगडीयां, सील भागता नाणें लाज रे ॥ ३० ॥
 सील भांगे तिणने दिख्या दीये, सगला सूं बडो राखे जाण रे ।
 एहवी मरजादा वांची तेहमे, दीसे भागल रा अहलांण रे ॥ ३१ ॥
 वले विगड्यो टोलो जाणें आपरो, पडतो दीसे घणांरो उघाड रे ।
 त्यांरा दोष ढांकण रे कारणें, कपटी एहवो वांध्यो आचार रे ॥ ३२ ॥
 केई टोलां में लूंठा घणां, केई वनीत छे त्यां मांहि रे ।
 ते अकारज कर दिख्या लीयें, ज्युंरा ज्यूं बडा राखें ताहि रे ॥ ३३ ॥
 लागबाजी हुवें रांक गरीब सूं, तिणरो करे तुरत उघाड रे ।
 तिणनें तो दिख्या दे छोटो करे, सगला रें पगे देवे पाड रे ॥ ३४ ॥
 प्रायच्छित्त सगलां ने नही दे सारिषो, जो उवे करे सारिषो अकाज रे ।
 आप छद्रदें करे मन जाणीयो, त्यानें किम कहीजे मुनीराज रे ॥ ३५ ॥
 सील भांगे नें फेर दिख्या लीये, बडा रहे करता ओ गाज रे ।
 तिण टोलांरा लिंगडा लिंगडी, किम संक सी करता अकाज रे ॥ ३६ ॥
 वरत भांगे नें फेर दिख्या लीयें, वडाने ल्गावे पाय रे ।
 तिण श्री जिण वचन उथाप नें, चोडे कीधो बुडण रो उपाय रे ॥ ३७ ॥
 वडा आंगें करावे वंदणा, तिण कीयो विना रो नास रे ।
 एहवा भेषवारी मूला थका, राखे मुगत जावारी आस रे ॥ ३८ ॥
 भेषवारी भागल चोथा तणां, त्यांरी खबर पडे नहीं काय रे ।
 आगा ज्यूं टोलां में वंदावता, एहवी धीगामस्ती छें ताम रे ॥ ३९ ॥

भागल नें, दिव्या दे बड़ो राखीयो, तिण टोलां में, पुरो अंधार रे ।
 त्यांन, त्रादे पूजें गुर जाणन, ते, पिण बड़ा कालीघार रे ॥ ४० ॥
 एहवा भेषघास्थां रा टोला मभे, उचडी भागलां री खान रे ।
 त्यांन, छोडे कोइ संजम लीयें, तिणन फिर फिर करें हेरांन रे ॥ ४१ ॥
 त्यां भेले रहें ज्यां लम भुण करें, पिण न करें, तिणरो उवाड रे ।
 जोउ संजम ले साधां कन, तिणन भाडें फिर फिर लार रे ॥ ४२ ॥
 त्यांन खोटा जाणें नें छोडीयां, तो उवे बोले अनेक विघ कूड रे ।
 पछे लागू थका बकनो करें, कूडा करें फेन फितुर रे ॥ ४३ ॥
 त्यां माहें रहें त्यां लम तेहनीं, करें कूडी घणीं पखपात रे ।
 दोष हवें ते सगला डांकन, सवारलें तेहनीं वात रे ॥ ४४ ॥
 त्यांन छोडें त्यांरा लागु घणां, तिणसूं पखजीयो, पुरो मिथ्यात रे ।
 तिणन आल देता सके नहीं, भूटी कर कर अन्हाखी वात रे ॥ ४५ ॥
 केई भेषघास्थां रा टोलां मभे, चोथा वरत सूं भागा अनेक रे ।
 त्यांरो लेखो कीयां तो लड पडें, भगडें मूंड बिनां ववेक रे ॥ ४६ ॥
 भेषघारी भागल नें छेडव्यां, तो उ भांवां धालें हाथ रे ।
 उलटो आल देवें पापीया, भूटी भूटी उठावें वात रे ॥ ४७ ॥
 त्यांरा भागलां नें चावा कीयां, करें ग्रहस्थ आणें पूकार रे ।
 केई ग्रहस्थ सुघ बुध बाहिरा, भगडो करवा नें हवें तयार रे ॥ ४८ ॥
 ते तो कुनरां रा भरमावीया, लडवा आवें भेली करें खेड रे ।
 उधर बोलें अजोग बूरी तरें, जाणें जाग्यो पूर्वलें वें रे ॥ ४९ ॥
 गुर गुरणी नें जाणें कुसीलीयां, ते किण विघ काडें निकाल रे ।
 उलटो आल देवें साधन, अन्हाखी थका भापें अलाल रे ॥ ५० ॥
 सती काडें कुसती रा खूचणा, तो उवा बोलें आल पंपाल रे ।
 कूड कपट केवल नें पापणी, उलटो देवें सती सिर आल रे ॥ ५१ ॥
 कुसती डरे नहीं सील, भांगती, तो उवा किम डरें देती आल रे ।
 तिणसूं सती डरें कुसती थकी, ते तो लोकीक सांझो न्हाल रे ॥ ५२ ॥
 ज्यं भेषघारी भागल घणां, त्यांरो कुण काडें निकाल रे ।
 भगडो भालें पापी तेहसूं, उलटो देवें अन्हाखी आल रे ॥ ५३ ॥
 अकार्य करता डरें नहीं, तो ए किम डरें देता आल रे ।
 एहवां भेषघारी भागलां तणीं, कहो किण विघ काडें निकाल रे ॥ ५४ ॥
 आपणा दोषण नें डांकवा, पापी बोलें अनेक विघ कूड रे ।
 त्यांन छेडवीयां गलें पडें, त्यांसूं बुधवंत रहजो दूर रे ॥ ५५ ॥

भेषघारी भागल तूटल घणां, होय बेंठा बावा रा धीग रे ।
 वेसरमा सुध बुध वाहिरा, सांहा माडें साधां सूं सीग रे ॥ ५६ ॥
 आपणा किरतब देखे नहीं, हाथां सूं चावा हुवें मत हीण रे ।
 त्यांरा दोष परगट हुवां परजलें, पछें भाषें लोकां आगे रीण रे ॥ ५७ ॥
 एहवा भेषघाख्यां नें गुर करें, ते तो गया जमारो, हार रे ।
 ते तो जासी नरक निगोद में, तिहां खासी अनती; मार रे ॥ ५८ ॥
 छेदन भेदन पांमसी अति घणीं, तिहां सुख नहीं लबलेस रे ।
 परमाघांमी, रे पांनै पढ्यां, पांमे दुख असाता कलेस रे ॥ ५९ ॥
 हम सुण सुणनै नर नारीयां, सतगुर सेवो रुडी रीत रे ।
 भेषघारी, भागल नें परहरें, राखो सुध साधां री परतीत रे ॥ ६० ॥
 भेष अंधारी, परगट करी, आणंदपुर सहर मभार रे ।
 समत अठारें तेतीसे समें, वेंसाख सुद इग्यारस रिबवार रे ॥ ६१ ॥



ढलल : १५

दुहल

अरिहंत सिध नें आयरिया, उवभ्रया सर्व साध ।
 मुगत नगरनां दायका, ए पांचूं पद आराध ॥ १ ॥
 वांदीजे नित एहनें, नीचो सीस नमाय ।
 गुण ओलख बंदणा कीयां, भव भव रा दुख जाय ॥ २ ॥
 साध साधवी श्रावक श्रावका, जिण भाष्या तीरथ च्यार ।
 छोटी मोटी माला गुण रतनां तणी, त्यांनें सीख कहूं हितकार ॥ ३ ॥
 साध साधवी श्रावक श्रावका भणी, चालणो इण मरजाद ।
 दोष देखे तो तुरत बतावणो, ज्यूं वधें नहीं विषवाद ॥ ४ ॥
 कोइ कषाय वस दुष्ट आतमा, ओर साधां सिर दे आल ।
 त्यांमैं घणां दिन दोष कहें घणां, तिणरो किण विध काढे निकाल ॥ ५ ॥
 ओरां में बतावे दोष घणां दिनां, तिणरी मूल न मानणी बात ।
 आ बांदी मरजादा सर्व साधनें, ते लोपणी नहीं तिलमात ॥ ६ ॥
 तोही दोष काढे घणां दिनां, वले भूठो करें विषवाद ।
 ते अपछंदा निरलज नागडा, तिण लोप दीधी मरजाद ॥ ७ ॥
 इसडा अजोग नें अलगो कीयां, जब उ काढे दोष अनेक ।
 वले ओगुण काढे अति घणां, तिणरी बात न मानणी एक ॥ ८ ॥
 इण रीते साधनें चालीयां, किणरे संका पडे नहीं काय ।
 वले वशेष परगट करूं, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ९ ॥

ढलल

[डाम मुंजादिकना डोरी]

हिचे सांभलजो नर नार, सुध साधां तणो आचार ।
 कदा कर्म जोगे दोष लागे, तो प्रायच्छित लेणो गुर आगे ॥ १ ॥
 कोइ गण माहें दोष ल्गावे, ते निजर आपरी आवे ।
 ते नहीं राखणो दाब, उणनें कही देणो तुरत सताब ॥ २ ॥
 गुर चेला नें गुर भाइ माई, दोष देखे तो देणो बताई ।
 त्यांसूं पिण करणो नहीं टालो, तिणरो काढणो तुरत निकालो ॥ ३ ॥

कोइ दोष जाणीने सेवे, तिणरो प्रायच्छित पिण नही लेवे ।
 तिणने कर देणो गणसू न्यारो, कुण डूवसी तिणरी लारो ॥ ४ ॥
 दोषीला सूं करे आहार नें पाणी, तिणरो चारित्र हुवे धूल घाणी ।
 दोषीलां ने राखे गण माय, तो सगलाइ भिष्टी थाय ॥ ५ ॥
 गुर रो दोष चेलो ढाके, मूढे पिण कहितो साके ।
 तिणरे रहगइ भोल्प मोटी, घर छोड हुवो छे खोटी ॥ ६ ॥
 किणरो द्वेषी कोइ होय जावे, तिणमे दोष अनेक बतावे ।
 कहे म्हे छानां राख्या दोष जाण, म्हे राखी घणा दिन काण ॥ ७ ॥
 घणा दिना रा दोष बतावे, ते तो मानवा मे किम आवे ।
 साच भूठ तो केवली जाणे, छदमस्थ प्रतीत न आणे ॥ ८ ॥
 हेत माहिं तो दोषण ढाके, हेत टूटा कहतो नहिं साके ।
 तिणरी किम आवे परतीत, उणने जाण लेणो विपरीत ॥ ९ ॥
 इण दोषीला सूं कियो आहार, जद पिण नहिं डरियो लिंगार ।
 हिंवे आल देतो किम डरसी, उणरी परतीत मूरख करसी ॥ १० ॥
 इण दोष क्याने किया भेला, इण क्यूं न कह्यो उण वेलां ।
 इणरी साघ तणी रीत हुवे तो, उणरो उण दिन कहेतो ॥ ११ ॥
 जद ऊ कहे न कह्यो डरते, गुर सू पिण लाजां मरते ।
 जब उणनें कहिणो पाछो, तोने किण विष जाणा आछो ॥ १२ ॥
 थें दोषीला सू कियो संभोग, थारा वरत्या माठा जोग ।
 थारी परतीत नावें म्हांनें, इणरा दोष राख्या ते छानें ॥ १३ ॥
 थें तो कियो अकारज मोटो, जिन मार्ग मे चलायो खोटो ।
 थारी भिष्ट हुइ मति बुद्ध, हिंवे प्रायच्छित ले हुय सुद्ध ॥ १४ ॥
 उणनें पूछ्यां ऊ आरे होय, तो उणने प्रायच्छित देसां जोय ।
 जो ऊ पूछ्यां आरे नही होय, तो उणसूं जोर न लागे कोय ॥ १५ ॥
 उणरी तो थारा कह्या सूं संक, पिण तू तो दोषीलो निसंक ।
 इम कहि तिणनें घालणो कूरो, प्रायश्चित नहिं ले तो कर देणो दूरो ॥ १६ ॥
 ज्यू कोइ वले नें दूजी वार, किणरा दोष न ढाके लिंगार ।
 दोष ढांक्या सूं हुवै खुवारी, टाको म्हेले तो अनंत ससारी ॥ १७ ॥
 संका सहित ने राखे माय, तो ओर साघ दोषीला न थाय ।
 दोषीला ने जाणी राखे माय, तो सगलाइ साघ असाघ थाय ॥ १८ ॥
 एक दोष सेवे नित साघ, तिण संजम दियो विराघ ।
 तिणनें साघ जाण वादे कोय, ते अनंत संसारी होय ॥ १९ ॥

तो घणां दोष सेवे साख्यात, तिणनें जाण वादे दिन रात ।
 ते तो पूरा अज्ञानी बाल, ते खलसी अनंतो काल ॥ २० ॥
 एक दोष रो सेवणहार, तिण बांधां बधे अनंत संसार ।
 तो तिणमें जाणे घणां दोष साल, त्यांनै बांधां हुवे कवण हवाल ॥ २१ ॥
 जाण जाण दोषीला नें बांढे, जिण धर्म न ओलख्यो आंधे ।
 ते तो बूड गयो कालीघार, आरे कियो अनंत संसार ॥ २२ ॥
 छिद्रपेही छिद्र घारी राखे, कदे काम पडे जद कही राखे ।
 तिणमें साध तणी नहीं रीत, तिणरो कुण मानें परतीत ॥ २३ ॥
 एहवारो वचन मांनै साचो, तो जिनमत पड जाय काचो ।
 पछे हरकोइ दोष बतावे, हरकोई भूठ चलावे ॥ २४ ॥
 उणरी मान्या ऊ होय जावे सूरु, तो जिनमत रो हुवे फित्तुरो ।
 शुद्ध साध हुवे मोत्यां री माल, त्यारे हरकोइ दे काढे आल ॥ २५ ॥
 घणां दिनां काढे दोष विष्यात, तिणरी मूल न मानणी बात ।
 शुद्ध सावां री ए मरजाद, तिणसूं बधे नहीं विषवाद ॥ २६ ॥
 ओर सावां में दोषण देखी, तुरत कहें ते निरापेखी ।
 तिणरे मूल नहीं पखपात, तिणरी मानणी आवे बात ॥ २७ ॥
 किण में दोष परपूठ बतावे, ओर सावां नें आय सुणावे ।
 तिणरो किण विघ काढे निकाल, दोनूं भेला नहीं तिण काल ॥ २८ ॥
 एहवे कारण पड्यां करे जेज, ओर मुतलव सूं नहीं हेज ।
 दोष ढांकण री नहीं नीत, आतो जिन मारग री रीत ॥ २९ ॥
 प्रायच्छित देवारा छे कामी, त्यांमें कदेय म जाणो खामी ।
 पछे करे दोग्यां नें भेला, निकाल काढे तिण बेलां ॥ ३० ॥
 जिणमें दोषण आप जाणे, प्रायच्छित देनै आणे ठिकाणे ।
 उतावल सूं न करणो विगाडो, प्रायच्छित न ले तो कर देणो न्यारो ॥ ३१ ॥
 कदा सहज दोष छे ताय, दोनूं भगाडे छे मांहेंमांय ।
 समभाया नहीं समभे ताय, तो केवल ज्ञानी नें देणो भलाय ॥ ३२ ॥

ढाल : १६

दुहा

भेषघारखां रा त्याग वेंराग मे, लखण नही तिलमात ।
विगे छोड बाजे वेरागीया, पिण एक इचर्य वाली बात ॥ १ ॥
उवे जाणे उत्तर गुण नीपनों, ते कर कर कूडी रूढ ।
मूल गुण सहीत उत्तर गुण, दोनूं विगड्या न देखें मूढ ॥ २ ॥
ते सूस लोका ने जणावता, नाणें मन मे लाज ।
ठाबाजीगर नी परे, करे अनेक अकाज ॥ ३ ॥
केइ-सूस करे सुध बुध विना, केइ मांन वडाइ आण ।
केई मसाणीया वेराग स्यूं, केइ सरमा सरमी जाण ॥ ४ ॥
त्यांसूं पछे न जाए पालीया, चोडे भाग्या पिण नही जाय ।
आरतध्यान मे दिन नीकले, पिण कारी न लागें कांय ॥ ५ ॥
सूस भागे पिण कपटी थकां, करे अनेक उपाय ।
ते तो ताकें सेरी चोर ज्यूं, भेल सभेल कर खाय ॥ ६ ॥
त्यां विकला रा सूसां तणी, परतीत आवें केम ।
ते डव घाव करे किण विघे, ते सुणजो घर पेम ॥ ७ ॥

ढाल

[विधिथा नी देशी]

केइ भेषघारी महीना ममे, पनरें दिन विगे त्यागें जाण रे ।
वेंराग विण सुध बुध बाहिरा, त्यारी बुंधवंत करजो पिछाणं रे ।
तुम्हें जोयजो सुंस विकलां तणां ॥ १ ॥
ते पिण कहिवाने पनरें दिन कहें, पिण आगार राखे अनेक रे ।
पूरा त्याग परुपें भूठा थका, ओ पिण घटमें नही ववेक रे ॥ २ ॥
एहवो त्याग परंपरा बांधीयो, ते पिण जोरी दावें कराय रे ।
आप लूखो खाए पेलो चोपड्यो, तिणसूं अन्हाखी दे अंतराय रे ॥ ३ ॥
उ जां लग त्याग करें नही, त्यां लग थोडो घालें चुगराय रे ।
ओर इवको लेवे चोरटा थका, उणणें त्याग बताय बताय रे ॥ ४ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

देखे आप सूं उषको खावतो, जब जागें अभितर घेष रे ।
 कूड कपट सूं करें नषेषणां, तिण पहर विगाड्यो भेष रे ॥ ५ ॥
 म्हां बरोबर त्याग कीयां पछें, विगें वाटे देसां तोय रे ।
 तिणसूं ते पिण त्यागें तिण विघें, इम सहु सरीषा होय रे ॥ ६ ॥
 विनां परिणांमा सूस करावीयां, इसको खेदो दीसैं साख्यात रे ।
 त्यांरा सूस पालण री विघ सुण्यां, एक इचर्य वाली बात रे ॥ ७ ॥
 दोय च्यार जणां गया गोचरी, वेंहरी लाया पूरण आहार रे ।
 पिण विगें थोडो आयो देखनें, करें मांहोमांहीं मनवार रे ॥ ८ ॥
 जाणें थोडा विगें रे कारणें, म्हांरे कुण लगावें आज रे ।
 तिणसूं नां कहें माथो घूणनें, पिण नाणें मूरख लाज रे ॥ ९ ॥
 न लगावें सर्व लोलपी थका, जाणें गिणती में दिन घट जाय रे ।
 जब मांहोमांहीं निदा करें, घृत कपडा रें देवें लगाय रे ॥ १० ॥
 कोइ वघतो देखे कलहो राड नें, कोइ डरतो थको मन मांय रे ।
 कोइ लाज सरम रो मारीयो, कदा थोडोसो देवें लगाय रे ॥ ११ ॥
 थोडो विगें खाषां वेदल हुवें, गिणती मां सूं घट्यो दिन जाण रे ।
 टाला टोलो करण खपें घणुं, पिण पडी गला नें आण रे ॥ १२ ॥
 घृत थोडोसो आयो देखनें, केई आहार रे देवें लगाय रे ।
 लेप लागें ते लूखा में गिणें, सूस भांगनें इण विघ खाय रे ॥ १३ ॥
 आइ फीणा रोटी चूरमादिक, वले गलगली रोट्यां पूर रे ।
 पिण घी थोडो आयो देखनें, कपटी किण विघ बोले कूड रे ॥ १४ ॥
 म्हें आज तो आहार लूखो करां, न लगावां विगें नें कोय रे ।
 तिणसूं फीणा रोटी चूरमादिक, लेवे पातरा मां सूं जोय रे ॥ १५ ॥
 चूरमा फीणा रोटीदिक मभे, जो तिणमें घी हुवें पाव अवसेर रे ।
 भावें जितो खाय लूखो गिणें, एहवो भेषघाख्यां रे अंधेर रे ॥ १६ ॥
 कोइ रांक थको बुघ केलवें, घृत ले काढें तिण मांय रे ।
 तिणनें डरावे लोलपी थका, वले भगडो राड मचाय रे ॥ १७ ॥
 त्यामें रांक रहें छें जोवतो, लूखो हुवे तो खाए डराय रे ।
 धींगामस्ती नें आरतध्यान में, यांरा दुख मांहें दिन जाय रे ॥ १८ ॥
 आपरें लूखो खाणो जिण दिने, कोइ आहार अपथ वेंहराय रे ।
 जब कपटी दगो करें इण विघें, विगें भेलों लेवें तिण मांय रे ॥ १९ ॥
 धापरें विगें खाणो जिण दिने, पेंलारें लूखो खाणो हुवे आहार रे ।
 जब आवे रोटी चोपडी, तो घाल दे घृत मभार रे ॥ २० ॥

कितला एक घी खाए घणों, केकां नें घणों विगें मांय रे ।
 जब कोयक कोरो घी पीवे, पिण लाजें नही मन मांय रे ॥ २१ ॥
 यांरा खावारा चरित अनेक छें, ते तो पूरा कह्या न जाय रे ।
 वले बेंहर ल्यावण री विध कहूं, ते पिण सुणीयां इचर्यं थाय रे ॥ २२ ॥
 सहर जाता विचे गांवडां मभे, कोइ ग्रहस्थ विगे वेहराय रे ।
 थोडो आवतो देख लेबे नही, आगे मोटी आसा मन माय रे ॥ २३ ॥
 घणो विगे खावारे कारणें, लगतो खावे लूखो आण रे ।
 ते तो सहर माहे गयां पछें, नित सरस विगे ले जाण रे ॥ २४ ॥
 घणों विगें ल्यावारी खप करे, ताक जाए ताजो घर जोय रे ।
 न मिलीयां न खाए तेहने, वेरागी मत जाणो कोय रे ॥ २५ ॥
 जिण दिन विगें खाणो आपरे, जद जाए ताजो घर टाल रे ।
 आप न खाए खाणो ओर रे, जब जोवें घर अदेवाल रे ॥ २६ ॥
 हुजे दिन विगे खावा कारणे, ताजा घर देवे टाल रे ।
 ओरां नें पिण जावा टे नही, एहवी पेट री बांधें पाल रे ॥ २७ ॥
 विगें देवे न देवे तेहनां, सगला घर राखे टाल रे ।
 आप मूतलब वेंहरे तिण घरे, विण मूतलब देवे टाल रे ॥ २८ ॥
 आपरें लूखो खाणो जिण दिने, जब आगूच बोले एम रे ।
 लूखो आवें ते वास बताय दे, तिणनें सरल कहिजे केम रे ॥ २९ ॥
 ते पिण पडीया पोमावता, ले ले त्याग रो मूरख नाम रे ।
 पिण खावा रो ध्यान मिटीयो नही, त्या जनम विगाड्यो वेकांम रे ॥ ३० ॥
 उवास करें जद पिण तेहनो, विगें खावारी न मिट्यो ध्यान रे ।
 ताजा घर थाप राखें पारणे, ओर साध ने न दें जाण रे ॥ ३१ ॥
 कदा बीजे दिन घर हुवे असूभतो, काई आय पडे अतराय रे ।
 उसभ करम बांधेने यू ही रह्यो, पुन विना विगें किम खाय रे ॥ ३२ ॥
 ओर साध ने अतराय पाडियां, करम आठोइ उसभ बधाय रे ।
 तीस कोडाकोड सागर तणी, उत्कष्टी बंधें अतराय रे ॥ ३३ ॥
 पछें जिण गति जाए तिण गते, अवस आय पडें अतराय रे ।
 आसा माडें ते न पडे पाधरी, चितवें ते निरफल थाय रे ॥ ३४ ॥
 विगें त्याग नें उत्तर गुण कीयां, जो पालें नही लूडी रीत रे ।
 उत्तर गुण नही भागां एकला, भांगां छे मूलगुण सहीत रे ॥ ३५ ॥
 कोइ विगे वेहरावे सुपातर जाणने, उलट परिणामा दातार रे ।
 पिण विगे न खाणों आपरे, जद माडे घणी मनवार रे ॥ ३६ ॥

कोइ लाज सरम रो घालीयो, विगें वेंहरावें दातार रे ।
 पिण आपरें खाणों जिण दिनें, ढीला मेलनें कहें नाकार रे ॥ ३७ ॥
 आप विगें न खाए जिण दिनें, कोइ दातार विगें वेंहराय रे ।
 तो सूभता में संका घालनें, आप बुगल घ्यानी होय जाय रे ॥ ३८ ॥
 आपरें विगें खाणों जिण दिनें, कोइ विगें देवें तिण काल रे ।
 असुघ हुवें तो पिण छोडें नहीं, पूछेनें नहीं काडें नीकाल रे ॥ ३९ ॥
 आपरें विगें खाणों जिण दिने, करें कुदम कुदा जाण रे ।
 आपरें नहीं खाणों तिण दिनें, वेंहर ल्यावें घर समुदाण रे ॥ ४० ॥
 एहवी ओघट घाट घटमें घणी, करें चाला चरित अनेक रे ।
 तिणरो भोलां नें रांक गरीब सूं, भेलो रहीवा रो मन बशेष रे ॥ ४१ ॥
 जिण साथे गयां विगें मिलें घणो, तिण साथे मेल्यां हरषत थाय रे ।
 थोडो मिलें तिण साथे मेलीयां, तो धडक पडें मन मांय रे ॥ ४२ ॥
 ओ तो किणही एक आगें रखां थकां, चाला चरित कीया नहीं जाय रे ।
 जब साप ठोडी दव्या नी परे, दुख पावें घणों सीदाय रे ॥ ४३ ॥
 गुर गुरभाइ नें ओर साघ सूं, इणरें किणसूं म जाणों पीत रे ।
 उणनें घणों विगें आण पोखीयां, तिणरोइ छे वनीत रे ॥ ४४ ॥
 तप करें विगें रें कारणें, तिणरा कुण कुण कहिजें दोष रे ।
 घणों खावानें मारें हिडवची, थोडें खायां न करें संतोष रे ॥ ४५ ॥
 विकल सूंस पालें इण विघें, ते तो निश्चें वूडा जाण रे ।
 बले सरघें साब्रपणों आपमें, ते तो मूढ मिथ्याती अयाण रे ॥ ४६ ॥
 एहवो त्याग परंपरा बांधनें, घाल्यो टोलां में भगडो राड रे ।
 हेत तूटें मांहोमांही तिम कीयां, ते तो पूरा मूढ गिंवार रे ॥ ४७ ॥
 थोडा घणां सांहो जोवे नहीं, सेजां आयो लगावें जाण रे ।
 परतीत उपजावें पालतो, तिणरा त्याग कीयां परमाण रे ॥ ४८ ॥
 समत अठारें बतीसें समें, आसोज सुद वीज मंगलवार रे ।
 विकल पचखांणी परगट करी, खेंवा सहर मभार रे ॥ ४९ ॥

ढाल : १७

दुहा

कोइक रे माहोमां अडो अडी, कोइ आणे मन वेंरग ।
जाव जीव विगें त्यागन करे, पछें कायर जाए भाग ॥ १ ॥
केई विगें खाए अपरेतीया, केदे हुवें अजीरण ताम ।
जावजीव विगे त्यागे तिण समे, त्यारो कठण घणों छें काम ॥ २ ॥
पछें भूरे रोट्यां देख चोपडी, इधकी लेवारें कांम ।
परठावणीया खावाने हीज रें, भूडा रहे परिणाम ॥ ३ ॥
खाजा साकुली आया देखने, मन मे रहे ओघट घाट ।
लाफसी सीरादिक जाणें आवीया, जोवे इधका लेवण री बाट ॥ ४ ॥
जो इधको न देवे तेहनें, तो जागे अंभितर रोस ।
आडी तेडी बातां घाली लडे, काढें अणहुंता दोष ॥ ५ ॥
दुष्ट परिणाम रहे तिण उपरें, वले बांछें तिणरी अंतराय ।
वेर बुषी ज्युं छिंदर जोवतो, वले खुद्र परिणाम घट मांय ॥ ६ ॥
विकलां रा सूंस पचखाण सूं, दिन दिन केंतब थाय ।
ओर साघा ने उपसर्ग उपजे, ते सुणजो चित्तल्याय ॥ ७ ॥

ढाल

[धीज कर सीता सती रे लाल]

विकल सूंस करतां थका रे, राखे अनेक आगार रे । सुगणनर* ।
ते करें विकलाइ अन्हाखी थका रे लाल, तिण घाली टोलां मे राड रे । सुगणनर ॥
सुणजो सूंस विकला तणां रे लाल* ॥ १ ॥
खावा नें मारें भाकुली रे, वले रहे निरतर सोच रे ।
तिणरी विकलाइ देखने रे लाल, ओर साघां ने उपजे संकोच रे ॥ सु० २ ॥
विगे आयो देखें पातरे रे, ओर साघां नें खाता देख रे ।
तिणनें टालेने देवें चोपडी रे, जब जागें मूरख ने घेख रे ॥ ३ ॥
जो टाल टालनें देवे चोपडी रे, वले सूंखडी आदि देवें टाल रे ।
तो दवीयो थको पडीयो रहे रे, नही देतो उठें घट भाल रे ॥ ४ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

तिणसूं आडी तेडी बातां घालनें, करें खोटोराइ जाण रे ।
 काडें अणहंता खूंचना रे, पग पग तांणा ताण रे ॥ ५ ॥
 पछें सावां नें सरधें लोलपी रे, वले बोलें अनेक विघ कूड रे ।
 आल देतों संकें नहीं रे, तिणरा त्याग कीयां में धूर रे ॥ ६ ॥
 कोई सराग रो घालीयो रे, टाल देवें घणां रो आहार रे ।
 ते दोनुइ चोर भगवांन रा रे, तीजो वरत भांजे हुवा खुवार रे ॥ ७ ॥
 कोइ विगें वेंहरावें तेहनें रे, तो नहीं वेंहरें मूंड अयाण रे ।
 ओरां री इरषा रो घालीयो रे, ए बूडणरा छें अहलांण रे ॥ ८ ॥
 दातार तो हरष पांमें घणों रे, नीठ मिलीयो सुपातर जोग रे ।
 उ उलट परिणामा वेंहरावतो रे, पिण विकल पचखांणी नें सोंग रे ॥ ९ ॥
 एहवा विकल भेला रह्यां रे, उ जद तद दावादार रे ।
 ते गुण कीयां पिण अवगुण गिणें रे लाल, वले छिदर गवेषणहार रे ॥ १० ॥
 इण विघ आगें बूडा घणां रे, त्यांरो कहितां न आवें पार रे ।
 ते समकत बोध गमायनें रे लाल, गया नरक निगोद मभार रे ॥ ११ ॥
 वले बेला तेलादिक पारणें रे, विगें खाए विण मरजाद रे ।
 ओरां नें राखें भीकता रे लाल, आप इधका करें विषवाद रे ॥ १२ ॥
 तपसा करें खावारें कारणें रे, ते पिण पूरा मूंड रे ।
 विगेंरो उद्यम करें पारणे रे, जाए ताजें ताजें घर वूंड रे ॥ १३ ॥
 ते पेटभरा छा भेष में रे, ते पिण बुगलव्यानी होय जाय रे ।
 त्यां भोलां नें पाड्या भर्म में रे लाल, ताजा माल आंणी खाय रे ॥ १४ ॥
 वले वीहार गामां नगरां करें रे, पिण रहें निरंतर संताप रे ।
 मिगसर महीना थी मांडनें रे लाल, करें चोमासा री थाप रे ॥ १५ ॥
 गमतो खेतर देखीनें कहें रे, म्हें अठें करसां चोमास रे ।
 ओरां री म करजो वीणती रे लाल, यारें मांहोंमां नहीं वेसास रे ॥ १६ ॥
 मिगसर मास लागां पछें रे, मांडें घणीं दोडादोड रे ।
 जाणें मन चितवीया खेतर में रे लाल, रखे करें चोमासों ओर रे ॥ १७ ॥
 वले छती सगत फिरवा तणी रे, तोही थाणें वेंसें रहें जाण रे ।
 ताजो खाणों मिलें तिण सहर में रे लाल, पर रहें मूंड अयाण रे ॥ १८ ॥
 जो ताजो आहार मिलें नहीं रे, तो छोड दें थाणों सताब रे ।
 वले अलगो खेतर आछो सुणे रे लाल, तो जाय वेंसें खेतर दाब रे ॥ १९ ॥
 थाणें वेंसें लोलपी थकारे, वले कूडा कारण बताय रे ।
 त्यांमें दोषां रो थांग दीसें नहीं रे लाल, ते पूरा केम कहीवाय रे ॥ २० ॥

तिणनें उपरलो आए मिले रे, तो छुडाय दें थाणों सताब रे ।
 विण परीणामां काडें दबकायने रे लाल, पाडे तिणरी आब रे ॥ २१ ॥
 उ साध श्रावका रो दबीयो थको रे, गयो अनेरे गाम रे ।
 पिण अंतरंग मे दुखीयो घणो रे, इणरो छूटो ठिकाणो ठाम रे ॥ २२ ॥
 इणने एकंत लोलपी जाणनें रे, ओरानें देतो जाणे अंतराय रे ।
 वले आंगुण घणां जाणे तेहनें रे, दीयो ठिकाणो छुडाय रे ॥ २३ ॥
 तोही तांणा वेजा तिणरे लागे रह्या रे, तिहां पाछा आवारा परिणाम रे ।
 जाणें चोमासो पूरो हूआ पछें रे, पाछो जाय बैसेसूं तिण ठाम रे ॥ २४ ॥
 सुखसाता आगा ज्यूं तिहां पावसू रे, इणरे इसरो छें मन वेसास रे ।
 इण आसा सूं दिन गिनतां थकां रे, पूरों करे छें चोमास रे ॥ २५ ॥
 चोमासो पूरो हूआ पछें रे, पाछो आय बैसें थाणे सताब रे ।
 तेतो लोलपी नगर पिडोलीयो रे, तिणनें खाणे कीयो छे खुराब रे ॥ २६ ॥
 कदेयक तो थाणे कहे रे, कदे कारण बतावें ताहि रे ।
 इणरें कूड कपट रो चालो घणो रे, तिणनें विकल राखें गण माहि रे ॥ २७ ॥
 कल्प मरजादा भांगी लोलपी थको रे, तिणरें कदेय म जाणो समाध रे ।
 तिणसूं आहार पांणी भेला करे रे लाल, त्यानें निश्चें कहीजें असाध रे ॥ २८ ॥
 वले तप करे महिमा वधारवा रे, पूजा सलाघा काज रे ।
 जस कीरत रा भूखा घणा रे, ठाला बादल ज्यूं करे ओगाज रे ॥ २९ ॥
 मत विखरतो जाणें आपरो रे, फिरता देखें श्रावक अनेक रे ।
 तो करे उपाय मत राखवा रे, ते सुणजो दिष्टंत एक रे ॥ ३० ॥
 जोगी ब्राह्मण आवदे दरसणी रे, ज्यारी जाती देखे डोली प्रास रे ।
 तो करे उदंगल अति घणां रे, त्यारें आजीवका रो विसास रे ॥ ३१ ॥
 हाथ फाडें चादी चिगदो करे रे, मारें जांघ गलें घाले जाण रे ।
 इतरें कीयें सुलमें नही रे लाल, तो जूंहर खडके आण रे ॥ ३२ ॥
 टूटो खोडो पांगलो रे, वले गरटो जोजरु जाण रे ।
 निकमां माणस भेला करी रे, खडकें जूंहर मे आण रे ॥ ३३ ॥
 जो माथा उपर ली आए वणे रे, तो न गिणें बालक बघेल रे ।
 भेलाकर होमें धरती कारणे रे, देवे जूंहर मे ठेल रे ॥ ३४ ॥
 कदा जूंहर रस आवें नहीं रे, तो वणजायें घणी खुराव रे ।
 घ्रास जायेंने फिट फिट हुवें रे, उतरजायें लोकां मे आब रे ॥ ३५ ॥
 इण दिष्टतें भेषधारी लोक मे रे, साधरो नाम धराय रे ।
 आजीविका अर्थ गच्छ बांधीयो रे लाल, मोलां आगें रह्या छे पूजाय रे ॥ ३६ ॥

ते अकारज अनेक करता थका रे, संकें नहीं मन मांय रे ।
 ते मतवाला ज्यूं छकीया रहें रे लाल, ते डरें नहीं करता अन्याय रे ॥ ३७ ॥
 उघाड पडें त्यांरो लोकमें रे, कदे पूजा श्लाघा घट जायरे ।
 वले श्रावक फिरें मत वीखरें रे लाल, जब कुण कुण करें उपाय रे ॥ ३८ ॥
 केई गरढा अवनीत अजोगनें रे, तिणनें पोगां चढाय चढाय रे ।
 लांबी तपसा करावें तेहनें रे लाल, कें संथारो देवें कराय रे ॥ ३९ ॥
 तोही आष आदर न हुवें लोक में रे, वले परजाअें इधको उघाड रे ।
 तो बाल जवानं पिण तेहनें रे लाल, करावें लांबो तप नें संथार रे ॥ ४० ॥
 इम कर कर काम चलावता रे, खाअें लोकां रा माल रे ।
 ते वरत विहूणा नागडा रे लाल, ते कूदा वण रह्या लाल रे ॥ ४१ ॥
 कदा संथारो रस आवें नहीं रे, तो वणजाअें घणी खुराब रे ।
 आजीवका घटें मत वीखरे रे लाल, उतर जाअें लोकां में आब रे ॥ ४२ ॥
 चांदी चिगदां सम त्यांरो तप कह्यो रे, संथारो जूंहर समाण रे ।
 ते तो ग्रास आजीवका कारणें रे लाल, करें मनख मारें घमसाण रे ॥ ४३ ॥
 कोइ जूंहर मां सूं नीकलें रे, तिणनें पकड जूंहर में दें भोक रे ।
 ज्यूं कोयक संथारो भांग नीकलें रे, तिणनें जोरी दावें राखें रोक रे ॥ ४४ ॥
 जो उ अनपांणी मांगे हेला करें रे, तो राखें अबोलो मुख मीच रे ।
 ते हाय विराय टलबल करें रे, तिणनें मारें भूंडीतरे कुमीच रे ॥ ४५ ॥
 खावापीवा रो अतुपतो मूआं रे, महा मोहणी कर्म बंधाय रे ।
 वले नरक निगोद मांहें पडे रे, पछें चिहूं गति भोला खाय रे ॥ ४६ ॥
 उणनें रोक राखें ते पापीया रे, ते मिनष ना मारण हार रे ।
 ते पिण बांधें महा मोहणी रे लाल, जासी नरक निगोद मभार रे ॥ ४७ ॥
 एहवीतरें मूआं नें मारीयां रे, दोनूं नें दुरगत होय रे ।
 यारें कर्म बंधें महा मोहणी रे लाल, दसासतकंधे सुतर में जोय रे ॥ ४८ ॥
 विना विचाखां लांबो तप करे रे, वले करें सल्लेखणा संथार रे ।
 पछें आरतध्यान मांहें मरे रे लाल, ते चाल्या जन्म विगाड रे ॥ ४९ ॥
 ग्रहस्थ रा घरमें कलहो हुवे रे, कोइ ताकें कूओ नें धेड रे ।
 कोयक आपच करे मरे रे, वले खाय मरें केई जहर रे ॥ ५० ॥
 ज्यूं भेषधारी घर छोडायनें रे, करें मांहोमा कजीया राड रे ।
 त्यांमें केयक दुखरा दाधा थका रे, करें सल्लेखणा संथार रे ॥ ५१ ॥
 त्यांरो संथारो पार पोहचें नहीं रे, पोहचें तोही असुघ परिणाम रे ।
 मरें लाज सरम रा मारीया रे, त्यांरो मरणो छें मरण अकाम रे ॥ ५२ ॥

जे बालमरण मूवा तके रे, बूडा घोर रुद्र संसार रे ।
 त्यांरा गुण कीरत महिमा करे रे लाल, ते पिण बूडा त्यांरी लार रे ॥ ५३ ॥
 विने करे सुतर भणे रे, करे तपसाने पाले आचार रे ।
 इहलोक परलोक जस कारणे रे लाल, ते तो भगवंत री आग्या वार रे ॥ ५४ ॥
 इहलोकादिक अर्थे तपसा करे रे, वले करे सल्लेखणा संथार रे ।
 कहां दसवीकालक नवमा अघेन में रे, अग्यां लोपी नें परीया उजाड रे ॥ ५५ ॥
 केई तपसा करे मांनी थका रे, केई पेट भराइ काज रे ।
 वले लोक सरायां हरषत हुवे रे लाल, त्याने केम कहीजे मुनीराज रे ॥ ५६ ॥
 ए सुण सुणनें नर नारीयां रे, करजो मनमें विचार रे ।
 समचे कह्या सगलां उपरे रे लाल, नांम लेइ न कख्यो उघाड रे ॥ ५७ ॥
 जिणमे अवगुण होसी एहवा रे, त्यांनं न गमें एहवी जोड रे ।
 बुधवंत सुण सुण हरषें घणा रे लाल, पामे आणंद कोड रे ॥ ५८ ॥
 सुस लेइ सुष पालजो रे, चोखा राखो परिणाम रे ।
 लोक वतावे आगली रे, एहवो म करजो काम रे ॥ ५९ ॥
 विकल पचखांणी आ दूसरी रे, कीषी खेखा सहर मकार रे ।
 संवत अठारें बतीसें समें रे लाल, काती विद वीज मंगलवार रे ॥ ६० ॥

ढाल : १८

दुहा

पचखाण सुणे विकलां तणी, करजो सूंस विचार ।
 सीखावण कहुं सर्व साधनें, ते बुधवंत लेजो धार ॥ १ ॥
 केई सूंस करे वेंराग सुं, तिण काले सुब परिणांम ।
 पछें पड जाअें केई आड दोढ में, तिण जन्म गमायो वेकांम ॥ २ ॥
 बले वाजें लोकां में वेंरागीया, त्याग बताय बताय ।
 पिण करे विकलाई अति घणी, तिणरी खबर न काय ॥ ३ ॥
 करे विकलाई तेहनें, सूंस कीया ते निरफल थाय ।
 बले खावापीवा रो अत्रिसो रह्यां, तिणरे मोहणी कर्म बंधाय ॥ ४ ॥
 तिणसूं पहिला तोलनें, कीजो उत्तर गुण पचखाण ।
 कीघां पछें सुध पालजो, ज्यूं वेगा पोंहचो निरवाण ॥ ५ ॥
 विकलाई देख विकलां तणी, समचे कहुं छूं भाव ।
 सूंस लेवण नें पालण तणीं, कही बतावूं न्याव ॥ ६ ॥

ढाल

[पूजजी पधारो हो नगरी सेविया]

कोइ बंधो करे जाव जीव लग एहवो, हूं एकटक करसूं आहार मुनिसर ।
 पछें चांप चांप आहार मरजादा लोपी करे, ते श्रीजिण आग्या बार हो मुनिसर ।
 करजो रे भवीयण सूंस विचार नें* ॥ १ ॥
 एक वार दोय वार आहार कीयां थकां, साध नें दोष न कोय हो ।
 चांप चांप आहार एकण टकमें कीयां, छिदर चारित रे होय हो ॥ २ ॥
 चांप चांप आहार करे एकण बार में, तेहिज आहार करे दोय वार हो ।
 तिण आज्ञा आराधी श्री जिणराज री, ते सुखे वहुं संयम भार हो ॥ ३ ॥
 जो करणी नावें अणोदरी तेह सूं, तो करणो पूरो उन्मांन हो ।
 पिणे कठोकठ साध नें आहार करणो नहीं, ते भाष गया भगवांन हो ॥ ४ ॥
 चांप चांप आहार करे छें तेहमें, दोषण उपजें अथाग हो ।
 निद्रा आलस रोग री उतपत हुवें, केई जाअें संजम सूं भाग हो ॥ ५ ॥
 जो करे उत्तरगुण आंण वेंराग नें, तो पालजे रूडी रीत हो ।
 जो आहार उनमांन एकण टकमें कीयां, ओर साधानें आवें परतीत हो ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

उपवास बेलादिक पारणे धारणे, तूं चांप चांप करेलो आहार हो ।
 जद पिण अरिहंत री आज्ञा नही, ग्यानादि गुण ने विगाड हो ॥ ७ ॥
 उपवास बेला तेलादिक तप तणी, तू वधो करेला जावजीव हो ।
 पछें आरत ध्यान माहे पडीया थकां, तो वधसी कर्म अतीव हो ॥ ८ ॥
 बंधो कीयां विण छूटो तप करें, जो रहिता जांणे थिर परिणाम हो ।
 पछे बंधो करे तो पाले रूडी रीत सू, ज्यूं सुघरें आत्म काम हो ॥ ९ ॥
 तू उपवास बेला तेलादिक तप करे, तो वैराग राखे घट माय हो ।
 ताजा घर पारणें धारणें नही राखणा, ओर सांचा नें न देणो अतराय हो ॥ १० ॥
 ताजा घर पारणें धारणें थाप राखीया, तो आ रीत छे घणी विपरीत हो ।
 वले साध सरखेला तोने लोलपी, थारी कृण मानेला परतीत हो ॥ ११ ॥
 तप कीजें सरल सभावे कर्म काटवा, उपवास बेलादिक जाण हो ।
 सहजें आयो कीजें पारणो धारणो, ज्यूं पामे पद निरवाण हो ॥ १२ ॥
 जावजीव पांचूइ विगें त्यागण तणा, थारा इसडा उठे परिणाम हो ।
 तो आगली पाछली कीजें विचारणा, ए कठण घणो छे काम हो ॥ १३ ॥
 सूस कीया पछे विगय खावण तणी, कारी न लागें काय हो ।
 पछें परिणाम आड दोड में वरतीयां, घणेरी खुराबी थाय हो ॥ १४ ॥
 तो सहजेइ विगे टाले सूस विण कीया, ओराने विगे खाता देखी ताम हो ।
 पछें लूखो आहार कीया सुं ताहरा, किसडा एक रहे परिणाम हो ॥ १५ ॥
 जो चोखा परिणाम रहे नित ताहरा, वरस छमास लगे जांण हो ।
 तो त्याग कीजें दोय च्यार वरसां लों, यूं सहिता सहितां कीजे पचखांण हो ॥ १६ ॥
 जो थिर परिणाम रहिता जाणे ताहरा, तो थागा थेगरा रो नही काम हो ।
 तूं त्याग कीजें जावजीव निसंक सू, चढता राखे परिणाम हो ॥ १७ ॥
 पाछें रिगेंला तूं रोट्यां देखे चोपडी, तो लागेली घणी विपरीत हो ।
 ओर साध सरखेला तोने लोलपी, उठेला घणी अपरतीत हो ॥ १८ ॥
 जे विगें त्यागे नें रोट्यां जोवे चोपडी, वले चोपडी रा जोवें दातार हो ।
 तिणरो खावारो ध्यान मिट्यो नही माहिलो, तिणनें बुधवंत देसी थिकार हो ॥ १९ ॥
 त्याग करें तो विकलाइ करे मती, राखे समता परिणाम हो ।
 ओर साध बतावें तोनें आंगुली, तूं इसडो म कीजे काम हो ॥ २० ॥
 कदे ओर साध तोनें जांणें सीदावतो, कोइ आहार आछो दें जोय हो ।
 ते पांती सुं इधिको लेवेंला कारण विना, तो कृण सरखें वैरागी तोय हो ॥ २१ ॥
 ओर साधां नें विगें खाता देखने, तूं घेष धरेंला मन माय हो ।
 साधां रो इसको खेदो कीयां थकां, ए पूरो वूडण रो उपाय हो ॥ २२ ॥

सूंस कीयां पेली ओर साधां भगी, कदे विगें नहीं धाम्यो तिलमात हो ।
 ते जावजीव सूंस करें तो पालण तणी, इचरज वाली छें बात हो ॥ २३ ॥
 वेंराग विनां विगें त्यागें उसभ उदें, वले ओर सूंसां रो करे पूर हो ।
 ते सूंस घणां माहें भाग सकें नहीं, पछें गणसूं हो जावें दूर हो ॥ २४ ॥
 उणरें ओघट घाट रहे घट में घणी, वलें पग पग कपट नें कूर हो ।
 उ खवारा चाला चिरत कुरें घणा, ते दिन दिन मुगत सूं दूर हो ॥ २५ ॥
 वले चेलां री भूख रहें तिणनें घणी, नहीं सूंस पालण री नीत हो ।
 सूंस लेइनें भागें तेहनी, चिहूं गति में होसी कूपीत हो ॥ २६ ॥
 कोइ विगेंरो त्याग करें जीवें ज्यां लगे, पारणें धारणे आगार हो ।
 जो उ तपसा करें विगेंरो लोलपी थको, उणरो पडजावे साधां में उघाड हो ॥ २७ ॥
 उ देखा देख पिण तपसा करतो नहीं, ते पिण रिंतु वरसात हो ।
 हिवें ग्रीषम रिंतु पिण ए एकलोइ तपकरें, ते लोलपी थको साख्यात हो ॥ २८ ॥
 ते थोडो विगें देखी तपसा करें नहीं, घणो आयो देख हुवें तयार हो ।
 एहवा चाला चिरत करें घणा, ते चाल्या जन्म बिगाड हो ॥ २९ ॥
 सूंस कीया जब परिणाम ओर था, पछें होय जायें ओर परिणाम हो ।
 तो थिर परिणाम करे सुघ पालजे, ज्यूं सुघ रें आत्म काम हो ॥ ३० ॥
 आहार विगें मरजादा सूं भोगवे, वले राग नें घेष रहीत हो ।
 देहीनें भाडो देवें छ कारणें, श्री जिण आग्या सहीत हो ॥ ३१ ॥
 जो इण रीतें आहार विगें नित भोगवें, तो साध नें दोष न कोय हो ।
 जो त्याग वेंराग करो कर्म काटवा, तो आपो वस आंगो सोय हो ॥ ३२ ॥
 वले केयकारी अथिर घणी छें आत्मा, ते खिण माहें रंग विरंग हो ।
 ते खिण एक में मंड जावें सलेषणा, वले खिण माहें जावें मन भंग हो ॥ ३३ ॥
 उणनें धाप्यां तो मीठी लागें सलेषणा, भूखां मीठो लागें अन्न हो ।
 जो एहवा जीव मंडे सलेषणा, त्यांरो थिर किम रहसी मन्न हो ॥ ३४ ॥
 देवल धजा सरीषो मन जेहनों, ते करें सलेखणा संथार हो ।
 त्यांनें भूख लागें परिणाम भागल हुवें, ते कुसले न पोहचें पार हो ॥ ३५ ॥
 ज विगर विचार्यां करसी सलेखणा, वले विगर विचार्यां संथार हो ।
 पछें आरतध्यान माहें परीयां तिके, ते गया जमारो हार ॥ ३६ ॥
 तो पहिलां तूं अणसण अणादरी तप करे, वले दिन दिन आहार घटाय हो ।
 विगें रो त्याग सहितों सहितों करे, इम खीणी पारें काय हो ॥ ३७ ॥
 पछें परिणाम दिड रहिता जाणें ताहरा, तो बात काडे मुख वार हो ।
 परतीत उपजें ए सगला साध नें, मंडजे सलेखणा संथार हो ॥ ३८ ॥

ते पिण गुरवादिक आग्या दीया, तो चढता हुवें परिणाम हो ।
 ते पिण देही नें पतली पाख्यां पछें, ढील तणों नही काम हो ॥ ३६ ॥
 एकासणो आंबल उपवास बेलादिक, वले विगे तणो परिहार हो ।
 इत्यादिक सूंस करे जाव जीवरो, तो करजे विचार विचार हो ॥ ४० ॥
 केई सूर ने वीरपणों मानें आपने, ते करे जावजीव पचखाण हो ।
 पछें सूंस न जायें गीदर सूं पालीया, ते भागे विकल जाण जाण हो ॥ ४१ ॥
 एहवा त्याग कीयां विण साध नें, दोष न लागें कोय हो ।
 तो काचा परिणामा सूंस न कीजीए, सूतर साहमो जोय हो ॥ ४२ ॥
 तप करता देख ओर साधा भणी, कोइ लोलपी फरें कपटाय हो ।
 उ तपसा छोडें विगेरें कारणे, उणरें गिरधिपणो घट मांय हो ॥ ४३ ॥
 तिणरें उपदेस देवारी खेद दीसैं नही, वले भणवा ने लिखवारी न काय हो ।
 तोही नित विगें खाअें तपसा करें नही, ओर साधां नें पाडें अंतराय हो ॥ ४४ ॥
 उणनें आछा घर न बतावे गोचरी, तो उलटो डरावे तांम हो ।
 अन्हाखी थको दुख देवें साधां भणी, ते विगय खावा रें काम हो ॥ ४५ ॥
 जो तपसा करण रो कहे कोइ तेहनें, तो उ भूठ बोले कारण बताय हो ।
 इसरा अजोग अवनित नें लोलपी, ते किण विघ आवें ठाय हो ॥ ४६ ॥
 जो उ आहार थोरो के उ आहार लूखो करे, वेंराग भावें रूडी रीत हो ।
 ते नित नित आहार करे तिण साध री, तिणरा कारण री आवें परतीत हो ॥ ४७ ॥
 केयक कारण अणहुता वताय ने, ते लाग छे खावा लार हो ।
 केयक सूंस भांगेनें विकल थया, यां दोयां री सगत निवार हो ॥ ४८ ॥
 तो बल समरथपणो देख सरीर नो, माहे सरधा वेंराग पिछ्छाण हो ।
 वले काया निरोगी देखे आपणी, तू होय अवसर नों जाण हो ॥ ४९ ॥
 वले दरब खेतर काल भाव विचारनें, वय जोवनादिक जाण हो ।
 वले गुरवादिक साधां नें पूछ्छने, कीजें जावजीव पचखाण हो ॥ ५० ॥
 सूंस कीया परिणाम सेठा रहे, त्यांरा सूंस कीया परिणाम हो ।
 जे सूरा वीरा पार पोहचावसी, ते पांमे पद निरवाण हो ॥ ५१ ॥
 ए भाव सुणे उत्तम नर नारीयां, चोखा पालजों सूंस हो ।
 ज्यूं फेरा टलें जन्म नें मरण तणा, पूरीजे मन हूस हो ॥ ५२ ॥
 समचें कही छें विकल सीखावणी, गुंदवच सहर मभार हो ।
 संवत अठारें बतीसा वरस में, बेसाख सुद ग्यारस सोमवार हो ।
 करजो रे भवीयण सूंस विचारनें ॥ ५३ ॥

ढाल : १६

दुहा

दुषम आरो पांचमो, घणो हलाहल मान ।
तिणमें भेषधारी हुसी घणा, कूड कपट री खान ॥ १ ॥
अ कुबदी खेला नाचसें, इण साध तणा भेष मांय ।
वले हिंसा धर्म परूपनें, अं परसी नरक में जाय ॥ २ ॥
त्यांरा विकल श्रावक नें श्रावका, ते करसी कूडी पषपात ।
त्यांनें कुबद कदाग्रह सीखाय नें, त्यांनें पिण लेसी साथ ॥ ३ ॥
ज्यांरे अंधकूप नें जलोजथा, त्यांरें दिवस तका हीज रात ।
ए गुधू सरीषा होय रह्या, वले दिन दिन अधिक मिथ्यात ॥ ४ ॥
अं नव नव आंकरा नवकडा, ते जासी नरक मभार ।
माहा नसीत में में सुण्या, ते सुणजो विस्तार ॥ ५ ॥

ढाल

[सल कोइ मत राख]

आचार्य नें साध साधवी, वले श्रावक श्रावका जांणो रे ।
अं गुण विण नांम धरायनें, नरक जासी त्यांरो परिमाणो रे ।
इण विघ ओलखों नवकडा* ॥ १ ॥
पचावन कोड नें लाख पचावन, वले पचावन हजारो रे ।
पांचसो नें पचावन उपरां, आचार्य जासी नरक मभारो रे ॥ २ ॥
छासठ कोड नें छासठ लाख, वले छासठ कह्या हजारो रे ।
छसों नें छासठ उपरें, साध जासी नरक मभारो रे ॥ ३ ॥
सितंतर कोड लाख सितंतर, वले सितंतर हजारो रे ।
सातसों नें सितंतर उपरें, साधव्यां जासी नरक मभारो रे ॥ ४ ॥
अठ्यासी कोडनें लाख अठ्यासी, वले अठ्यासी हजारो रे ।
आठसों नें अठ्यासी उपरें, श्रावक जासी नरक मभारो रे ॥ ५ ॥
निनाणूं कोडनें लाख निनाणूं, वले निनाणूं हजारो रे ।
नवसों नें निनाणूं उपरें, श्रावका जासीं नरक मभारो रे ॥ ६ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ए आचार्य नें साध साधवी, पदवी घर बाजे मोटा रे ।
 जे नरक जासी इण भेष मे, त्यांरा लक्षण घणां छे खोटा रे ॥ ७ ॥
 ते मिष्ट थया आचार थी, वले सरघा मे मूढ मिथ्याती रे ।
 पहरण सांग साधां तणों, पिण थोथा चिणां रा साथी रे ॥ ८ ॥
 खाए पीए सुखे दीहां सूय रहें, वले डील में वण रह्या लूठा रे ।
 गोचरी वीहार करें जरें, जांणे रावला कोतल छूटा रे ॥ ९ ॥
 अें तो फिरता वचन बोले घणा, वले कूड कपट मांहे राचे रे ।
 चरचा करें तिण अवसरे, जांणे ओषड उघाडा नाचें रे ॥ १० ॥
 न्याय निरणो कीयां विनां, कर रह्या फेन फितुरा रे ।
 जो सूतर री चरचा करें, तो पग पग पड जाय कूडा रे ॥ ११ ॥
 कूड कपट करे मत बांधीयो, ते तो पेट भराइ काजें रे ।
 आचार मे डीला घणा, तोही निरलजा मूल न लाजे रे ॥ १२ ॥
 ते साध नांव धरायनें, ठाम ठाम थानक करावें रे ।
 तिणरी सांनी सूं कर कर आंमना, छ काय जीवां नें मरावें रे ॥ १३ ॥
 आघाकर्मि थानक नें भोगवें, वले सांग साध रो घरीयो रे ।
 छ काय जीवां नें मरावता, थो तो पीहर पूरो पडीयो रे ॥ १४ ॥
 वले पडदा परेच बंधावता, चंद्रवा सिरकी ताटा रे ।
 वले छपरा छान करावता, तिणरा ग्यांनादिक गुण न्हाठा रे ॥ १५ ॥
 इत्यादिक थानक रें कारणें, जीव हणे वाह्वारो रे ।
 एहवा थानक साध भोगवें, ते चाल्या जन्म विगाडो रे ॥ १६ ॥
 साध थइ उदेसीक भोगवे, वले मोल लीयो वहरें आहारो रे ।
 नित पिंड वेहरे एकण घरे, ते जासी नरक मभारो रे ॥ १७ ॥
 ए उत्तराघेन रें वीसमे, वीरना वचन संमालो रे ।
 जे उदेसीकादिक भोगवें, त्यारें किम होसी नरक सू टालो रे ॥ १८ ॥
 थी खांड लाडू मिश्री मोल ले, त्यांरा भर भर मेलें चाडा रे ।
 मोल ले ले वेंहरावें साध नें, ते तो गर्भ में आवसी वाडा रे ॥ १९ ॥
 थी खांड लाडू लूंग मिश्रीयां, मोलरा लीवा वेहरें जाणो रे ।
 वले साध वाजें इण लोकमे, ते तो पूरा मूढ अयांणो रे ॥ २० ॥
 जो चेलो हूंतो जाणे आपरो, तो उणने रोकड दांम दरावे रे ।
 पांचमो महावरत भागनें, तोही साध रो विडद धरावें रे ॥ २१ ॥
 जीवादिक जांणे नही तेहनें, पांचोइ महावरत उचरावे रे ।
 साध रो सांग पेंहराय नें, भोला लोका ने पगां लगावें रे ॥ २२ ॥

बालक बूढो देखें नहीं, यारे पानें पड़ें ज्यूं ज्यूं मूँडें रे ।
 नांव ना करवा आपरी, ते तो मान बडाइ सूं बूँडें रे ॥ २३ ॥
 क्ले चेलो करवा कारणें, मांहोमां भगडो माँडें रे ।
 फाडा तोडो करता लाजें नहीं, इण साध रा भेष नें भडिं रे ॥ २४ ॥
 गांवां नगरां समाचार मेलवा, सांनीकर ग्रहस्थ बोलवें रे ।
 कागद लिखावें तिण कनें, विवरों आप बतावें रे ॥ २५ ॥
 ग्रहस्थ आगें वीयावच करावीयां, साध नें कह्यो अणाचारी रे ।
 दसवीकालक तीजा अघेन में, कोइ बुधवंत लेजो विचारी रे ॥ २६ ॥
 भागल तूटल त्यामें घणा, त्यांरो कुण काडें नीकालो रे ।
 जो थोडासा त्यानें छेडव्यां, उलटो दे अन्हाखी आलो रे ॥ २७ ॥
 आप सरीषा करवा खपें, दे दे अणहूँता आलो रे ।
 त्यानें परभव री चिंता नहीं, त्यारें भूठ तणो नहीं टालो रे ॥ २८ ॥
 सुध साधां रे माथें आल दें, त्यांरा टोला में तेह सपूतो रे ।
 तिण भूठ रो निरणो करें नहीं, त्यारें नरक जावारा सूतो रे ॥ २९ ॥
 भूठो आल देवें तेहनें, प्रायच्छित न दें लिगारो रे ।
 तिणसूं वाहार पांणी भेलो करें, ते बूड गया कालीघारो रे ॥ ३० ॥
 रेणादेवी री कुगुर नें ओपमां, ते सांभलजो चित्त ल्यायो रे ।
 कूड कपट करे पापीया, सुध साधां सूं दे भिडकायो रे ॥ ३१ ॥
 रेणादेवी दिखण रा वाग में, अणहूँतोइ सर्प बतायो रे ।
 तिण आपणा किरतब ढांकवा, उण बोलीयो मूसावायो रे ॥ ३२ ॥
 तिण जिणरिष नें जिणपाल रे, उण घाल्दी संका मोटी रे ।
 पिण बुधवंत जाए जोयों तिहां, जब जांणी छें तिणनें खोटी रे ॥ ३३ ॥
 ज्यूं कुगुर रेणादेवी सारिषा, संका साधां रो घालें रे ।
 ते आपणा किरतब ढांकवा, सुध साधां कनें जातां पालें रे ॥ ३४ ॥
 पिण बुधवंत पूछ निरणो कीयो, जब जांण लीया त्यानें खोटा रे ।
 ग्यांन किरिया में पोला घणा, जाणें पांणी तणा परपोटा रे ॥ ३५ ॥
 तिण रेणादेवी सांहमों जोयनें, जिनरिष हूवो खुवारो रे ।
 तिम कुगुरां परतीत सूं, दुरगत जाती नरभव हारो रे ॥ ३६ ॥
 रेणादेवी रो कपट जिहांइ रह्यो, पिण कुगुरां रा कपट छें भारी रे ।
 आप डूबें ओरां नें डबोवता, केई हुय जाए अनंत संसारी रे ॥ ३७ ॥
 सांग पहरे साधां तणों, खाधा लोकां रा मालो रे ।
 तप जप संजम बाहिरा, अें कूंदा बण रह्या लालो रे ॥ ३८ ॥

इम सुण सुणनें नर नारीयां, छोड दो कुगुर सताबो रे ।
 सुध सावां तणी सेवा करो, राखी चावों इजत आबो रे ॥ ३९ ॥
 संवत अठारें तेतीसे समे, जेठ सुदि पुनम शुक्रवारो रे ।
 कही छे कुगुरा री नचकडी, रीया गाव मभारो रे ॥ ४० ॥



ढाल : २०

दुहा

दुषम आरें पांचमें, श्रावक श्रावका नांम धराय ।
गुण विण ठाला ठीकरा, पडसी नरक में जाय ॥ १ ॥
ते हीण आचारी कुगुरां तणी, सेवा करें दिन रात ।
त्यां भूटा नें साचा करवा भणी, कूडी करें पखपात ॥ २ ॥
त्यां आंधा नें मूल सूभें नहीं, न्याय मारग री बात ।
पाषंड मत में रच रह्या, घट माहें घोर मिथ्यात ॥ ३ ॥
दीठी ने अणदीठी कहें, भूठ बोलता नाणें सांक ।
आल देवण नें नहीं आलसू, त्यांरी बोली में बांक ॥ ४ ॥
एहवा श्रावक जासी नरक में, त्यांरा चाला चिरत अनेक ।
वले थोडासा परगट कर्हं, ते सुणजो आण ववेक ॥ ५ ॥

ढाल

[२ जीव मोह अशुकम्पा न आशिधे]

नव नव आंकारा कुगुर नवकडा, ते तो जासी नरक मभार रे ।
त्यांरा श्रावक नें श्रावकां तणों, तुम्हें सांमलजों विस्तार रे ।
एहवा श्रावक जाणों नवकडा ॥ १ ॥
धुर सुं तो भूला मारग मुगत रों, गुर काजें हणें छें जीव रे ।
वले धर्म जाणें हिंसा कीयां, त्यां दीधी नरक री नीव रे ॥ २ ॥
चवतो देखे थानक जो गुर तणों, तिणरी आय करें संभाल रे ।
नीलों उखण उपर न्हांवें मुरड नें, करें अनंत जीवां रों खेंगाल रे ॥ ३ ॥
पीली पांणी तणा जीव मारनें, दहें लीये थानक नें आय रे ।
ते पिण गुर रें काजे निसंक सूं, अें तो हण रह्या जीव छकाय रे ॥ ४ ॥
केह करावें थानक मूल थी, धुर सूं नवी जायगां उठाय रे ।
पछें जीव विणासे विघ विधें, ते तो कहाँ कठा लग जाय रे ॥ ५ ॥
गाडां गाडां पृथवी मंगावता, वाणा वाणा पांणी मंगाय रे ।
कचरा कूटों करे छ काय रो, मन गमतों थानक बणाय रे ॥ ६ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

केई करे मजूरीया हाथ सूं, उडी उडी दरावें नीव रे।
 घर रो गरथ देई पापीया, छ काय रा मरावे जीव रे ॥ ७ ॥
 छ काय हणेने थानक करे, तिणमे धर्म जाणे निसंक रे।
 तिणसूं ठाम ठाम जायगा बधे, एहवा लगा कुगुरां रा डंक रे ॥ ८ ॥
 त्यानें पूछ्यां बोले केई पाघरा, केई भूठ बोले ततकाल रे।
 भायां निमते थानक करायो कहे, अन्हाखी थका भाषे अलाल रे ॥ ९ ॥
 प्रतख करायो गुर रे कारणे, लाजा मरता खाचेले आपरे।
 धर्म रे ठिकाणे भूठ बोलने, भारी हुवे चीकण बाधे पाप रे ॥ १० ॥
 धर्म ठिकाणे भूठ बोलीया, बधे महामोहणी कर्म रे।
 सित्तर कोडाकोड सागर लगे, नही पामे जिणवर धर्म रे ॥ ११ ॥
 ज्युं किणरी मा वेनादिक डाकण हुवे, त्यारी बात सुण्या पामे खीज रे।
 त्यानें साची करण खपे धणूं, भूठो थको पिण थापे धीज रे ॥ १२ ॥
 बले अनेक उपाय करे घणा, घर जाणो पिण कर दे कबूल रे।
 पिण मुख सू डाकण कहणी दोहिली, गाढोइ भूडो हुवे कबूल रे ॥ १३ ॥
 ज्युं भारीकरमा केई जीवडा, बोलें कुगुरा रे बदले भूठ रे।
 त्यानें साचा करण खपे धणुं, कूडा गुण करें मुख परपूठ रे ॥ १४ ॥
 अनत संसार सू डरे नही, नरक जाणों पिण करे कबूल रे।
 पिण मुख सू खोट कहणा दोहिला, रह्या पाषड मत मे भूल रे ॥ १५ ॥
 डाकण रे बदले धीज कीया थका, कदा राजा कोप्यां घर जाय रे।
 पिण कुगुरां काजे भूठ बोलीया, पडे नरक निगोद मे जाय रे ॥ १६ ॥
 आप आदरया त्यां कुगुरां तणा, देवें दोपण सगला ढांक रे।
 सुध साधा ने आल देता थका, पापी मूल न आणे साक रे ॥ १७ ॥
 सुध साधां री निदा करे, वले निजर पड्या जागे धेष रे।
 त्यासूं वरते वेरी ने सोक ज्युं, जोवे छल छिदर वसेष रे ॥ १८ ॥
 आप कुगुरा ने सेठ भालीया, त्यामे दोषां रो छेह न पार रे।
 तिण सुं साधां तणा दोप जोवता, खप कर रह्या मूढ गिवार रे ॥ १९ ॥
 पिण साधा माहे दोष देखे नही, जव कूडोइ देवें आल रे।
 पछे भूठ बोली वक्ता फिरे, त्यारे कुण काढे निकाल रे ॥ २० ॥
 कडवो तूवो वेहरायो साध ने, नागश्री ब्राह्मणी एक वार रे।
 तिणसूं ससार मे रली घणी, सातूं नरकां मे खाषी मार रे ॥ २१ ॥
 तिण तो न्हांखण रा आलस भणी, तूवो वहरायो साध ने देख रे।
 तिणराइ फल लागा पाडुआ, पामी दुख माहे दुख वसेष रे ॥ २२ ॥

तो साधां री केइ निंदा करें, बले राखें अभितर धेष रे ।
 अच्छतो पिण आल देवें निसंक सूं, ते तो बूढा बले वसेष रे ॥ २३ ॥
 केई करला बोलें बूरी तरे, केई बांछें साधां री घात रे ।
 केयक परीसा देवें वचन रा, केई तपता रहें दिन रात रे ॥ २४ ॥
 सर्व पाषंडीयां सूं मिल गया, बले लोकां नें देवें लगाय रे ।
 त्यारे केडें गमता बोलें घणा, साधां सूं वेंरी करंवा ताय रे ॥ २५ ॥
 एहवा नागश्री सूंड अति बूरा, त्यारो कहतां न आवें अंत रे ।
 तेतो नरक गांमी छें नवकडा, त्यांनं ओलखल्यो मतवंत रे ॥ २६ ॥
 नागश्री ब्राह्मणी दुख भोगवे, नीठ नीठ पाय्यो तिण अंत रे ।
 सदा वेंरी ज्यूं वरतें साध सूं, त्यारो हुसी कुण विरतंत रे ॥ २७ ॥
 हिवें कहि कहि नें कतरो कहूं, कोइ बुधवंत करजो विचार रे ।
 जे जे साधां रें सिर आल दें, ते तो बूढा कालीधार रे ॥ २८ ॥
 जो साची ने साची कहें, तेतो निदा म जाणों कोय रे ।
 साची नें साची कहणी निसंक सूं, ते पिण अवसर जोय रे ॥ २९ ॥
 अंतो जीव अजीव जाणें नही, आश्रव संवर की खबर न कांय रे ।
 आश्रव सेवें संवर धर्म जाणनं, अें तो चोडें भूला जाय रे ॥ ३० ॥
 उपभोग परिभोग श्रावक तणा, तेतो इविरत आश्रव मांहि रे ।
 सेव्यां सेवायां भलो जाणीयां, यामें धर्म जाणे छें ताहि रे ॥ ३१ ॥
 देवगुर धर्म ओलखीयां विना, रह्या ठाला बादल ज्यूं गूंज रे ।
 बले घोरी होय बेठा धर्म ना, पिण पूरा छें मूढ अबूज रे ॥ ३२ ॥
 केई चरचा में अटकें घणा, पिण सूधा न बोलें मूढ रे ।
 अण विचाख्यां उंधा बोलें घणा, पिण छोडें नहीं खोटी रुढ रे ॥ ३३ ॥
 बले गुर रों आचार जाणें नही, सरधां री पिण खबर न काय रे ।
 भेषधारी भागल तूटल भणी, तिखोतो कर वादें पाय रे ॥ ३४ ॥
 घी खांड लूंग मिश्री आदि दे, मोल ले ले वेंहरावे जाण रे ।
 बले नीपनो जाणें वरत बारमो, इसडा छें मूढ अयाण रे ॥ ३५ ॥
 बारमो वरत भांगें आपरो, साधां नें वेंहरावे ले मोल रे ।
 तका पिण समझ पडें नहीं, त्यांरा वरतां मांहे मोटी पोल रे ॥ ३६ ॥
 थानक मोल लें गुर रें कारणें, बले भाडें लेवें गुर काज रे ।
 बारमो वरत भांग भागल हुवा, नरक में जासी श्रावक बांज रे ॥ ३७ ॥
 कपडो मांगें साध साधवी, जब हाजर नही घर मांय रे ।
 मोल ले ले वेहरावें साध नें, गांव परगांव सुं मंगाय रे ॥ ३८ ॥

मोल ले ले कपडो वेंहरायनें, वले धर्म जाणे मन मांय रे ।
इसडी सरधा रा श्रावक श्रावका, ते तो दुरगति पडसी जाय रे ॥ ३९ ॥
जीमणवार आरा तणें घरे, माड धोवण उंनो पांणी जाण रे ।
ते साधां नें वेहरावा कारणे, आपरे घरे राखे आण रे ॥ ४० ॥
पछे तेड वहरावे साध नें, वले जाणे होसी मांनें धर्म रे ।
एहवा कुगुरां रा भरमावीया, भूला छें अग्यानी भर्म रे ॥ ४१ ॥
केई धोवण जाणे इधको करे, साधां ने वहरावण कांम रे ।
उंनो पांणी करे ठामडा भरे, ते पिण ले ले गुर रो नाम रे ॥ ४२ ॥
घणा साध साधवी जाण नें, इधको नीपजावें आहार रे ।
पछें भर भर वहरावें पातरा, ते तो परभव में होसी खुवार रे ॥ ४३ ॥
असुध आहार पांणी वहरावीयां, वंघें पाप कर्म रा पूर रे ।
साध पिण जाणे वेहरे असुभतो, ते तो साधपणा थी दूर रे ॥ ४४ ॥
केइ आहार वहरावे असुभतो, केइ कपडों वहरावें असुध रे ।
देवें धानकादिक असूभता, मिष्ट हुइ सगलां री बुध रे ॥ ४५ ॥
सामायक संवर पोसा मभे, करें सावध जोग रा त्याग रे ।
तिणमे भागलां ने वंदणा करे, सामाड पोसों पिण गया भाग रे ॥ ४६ ॥
एक समाइ भागे तेहनें, डंड देवे समाइ इग्यार रे ।
तो नितका सामाइ भागे तके, ते तो गया जमारो हार रे ॥ ४७ ॥
सूस न लें त्याने पापी कह्या, लेनें भागे ते महा पापी होय रे ।
वले जांने हूं श्रावक मोटको, त्याने नरक तणी गति जोय रे ॥ ४८ ॥
मांनें भागल तूटल एकल मणी, वीणती कर राखे चोमास रे ।
ते पिण साधां सुं धेवरा घालीया, वखाण सुणे तिण पास रे ॥ ४९ ॥
जो उ साधां रा आंगुण दोलें घणा, तिणने हरष सू देवें दान रे ।
वले करें प्रसंसा तेहनी, घणो देवे आदर सनमान रे ॥ ५० ॥
उणनें मन में तो साध जाणें नही, तोही वघारे उणरो आध रे ।
ते पिण साधां सुं धेष चलायवा, त्यारो निश्चेंइ जांणो अभाग रे ॥ ५१ ॥
आप आदख्या कुगुर तेहनां, गुण बोलावण रें कांम रे ।
उपिण लोभ रो घालीयो थको, भूठा भूठा करे गुण ग्राम रे ॥ ५२ ॥
एहवा चाला चिरत करें तेहनें, जो पाप उदें हुवें इण भव आण रे ।
दुख असाता अठेइज हुवें घणी, परभव मे तो संका मत आण रे ॥ ५३ ॥
भागल रा वखाण वांणी सुण्यां, केई पडवजें वेगो मिथ्यात रे ।
वले तहत वचन करे तेहनों, तिणनें हंकारें मूंगी बात रे ॥ ५४ ॥

ज्यारें कुगुरां सूं - राग अति घणों, वले साधां सूं अंतर घेष रे ।
 दोनुं कांनी देवालो तेहनें, ते तो बूडा में बूडा वसेष रे ॥ ५५ ॥
 करलो हंक लागों कुगुरां तणों, तिणसूं करें त्यांरी पखपात रे ।
 त्यांसूं लीघी टेक छूटें नहीं, त्यांरा घटें में छें मोटो मिथ्यात रे ॥ ५६ ॥
 संवत अठारें नें तेतीसे समें, असाढ बिद नवमी रविवार रे ।
 श्रावक नरकगांभी नवकडी, कीघी रीयां गांव मभार रे ॥ ५७ ॥

ढलल : २१

दुहल

भलरीकरडल जीव ससर डे, ते डूलल अगुडलनी डरुड ।
तुडलनें गुर डरण डूढ डूरख डललुडल, ते कलण वलड डलडे गलण डरुड ॥ १ ॥
सुध सलडल री नलडल करे, वले देवे अणहुंतुते अलल ।
तुडलरल डुलुडल री सडडतुडलनें नही, तलणरु कुण कलडे नीकलल ॥ २ ॥
तुडलनें ठीक नही डरुड अडरुड री, गुर कुगुर री खवर न कलड ।
वले सलधू तणल अलकलर री, सडड नही डन डलड ॥ ३ ॥
डलकण नें कडवल जरख डलले, जव डलकण हरखत थलड ।
डुडं भलरीकरडल नें कुगुर डलले, गलणे डलछ रही नही कलड ॥ ॡ ॥
तुडलनें कुगुर कुडुड सीखलड ने, कलेस करलवे दलनरलत ।
ते कुगुर सहलत गलडे कुगत डे, तलहुल डलर अनंती खलत ॥ ५ ॥

ढलल

[सडरूड डन हरडे तेह सती]

अनलदरुते जीव गुरुते खलवे, सडकत डंध हलडे नही अलवे ।
डलडुडलत डत डलहे कलीडल, करड गुरुते गुर डलठ डललीडल ॥ १ ॥
उसड उडे सुं सवलुते नही सुडे, वले डलव सहलत कुगुरल ते डुडे ।
ते डुगत डलरग सुं डरल टलीडल, करुड गुरुते गुर डलठ डललीडल ॥ २ ॥
गे कुगुर तणे डडुडल डलनें, ते सुगुर तणल वेण नही डलनें ।
डलडुडलत डत डे कलडल डललीडल, करुड गुरुते गुर डलठ डललीडल ॥ ३ ॥
भलरी डुडल ललगलवतल नही सलके, वले डलंकडल अलरल रे सलर न्हलखे ।
गुडलसुं वरत नही गलडे डलीडल, करुड गुरुते गुर डलठ डललीडल ॥ ॡ ॥
सुतर रुे नुडलड ती नही गलणे, कुगुरल री डख कलठी तलणे ।
उडल उंडल डुले कुरुड सुं वलीडल, करुड गुरुते गुर डलठ डललीडल ॥ ५ ॥
डलत डलत सलड तुडलनें सडडलवे, डलडुडल जीव रे डन नही डलवे ।
तुडलरे डलठी गतलरल टलंकल डुलीडल, करुड गुरुते गुर डलठ डललीडल ॥ ६ ॥
गुडलरे उसड करुड तणल गुरुते, ते केवलु थकल रहल गलल कुरुल ।
तुडलरल डरण वललुडल नही वलीडल, करुड गुरुते गुर डलठ डललीडल ॥ ७ ॥

मेंला जीव मारग नहीं आवें, त्यांनै उपदेस दीयो अहल्लें जावें ।
 ते मोहकर्म सूं माठा खलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ८ ॥
 भारीकरमा जीव मूंड मिथ्याती, साधू नें दीठा बल उठें छाती ।
 बले ओगुण बोलणें उललीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ९ ॥
 साध काजे बांधे ताटा ताटी, त्यां विकलां नें गति होसी माठी ।
 बले भीत चूणे भेलाकर ढलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १० ॥
 साध काजे परदा आण बांधे, जिण धर्म नहीं जाण्यो आंधे ।
 बले छावण लीपण नें हल फलिया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ११ ॥
 श्रावक नें जीमावे धर्म जाण, छ काय रो कर कर घमसाण ।
 ते जिन मारग सूं जाबक टलिया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १२ ॥
 कुगुरां रो तो दोष जाबक ढांके, साधां नें आल देता नहीं सांके ।
 त्यांरा लोकीक में पिण गुण गलिया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १३ ॥
 त्यांरे कुगुरां रा डंक भारी लागा, कजिया राड करवानें आगा ।
 वचन बोले अलिया अलिया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १४ ॥
 न्याय तणी चरचा करतां, त्यां विकलां नें वार नहीं लडतां ।
 उंधा बोलें क्रोध मांहे बलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १५ ॥
 जिण आगम न्याय देवें ठेली, अनमतीयां नें उठाय करें बेली ।
 पाणंडीयां में जाय मिलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १६ ॥
 गुणवंत साधां रा कोई गुण गावें, ते दुष्ट जीवां रें मन नहीं भावें ।
 ते रात दिवस रहें परजलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १७ ॥
 जीवादिक नवतत रो नही निरणों, बले क्रोध तणों लीधो सरणों ।
 त्यांनै मोहकर्म अजगर गलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १८ ॥
 न मिट्यो च्याहं गति में आवण जाणों, चौरासी में लागो बेजा ताणो ।
 जिम आंमा साहमां फिर रह्या नलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ १९ ॥
 देवगुर धर्म तणे काजें, जीवां नें हणता नहीं लाजें ।
 त्यांनै कुमत करे कुगुरां छलीयां, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २० ॥
 आचार री बात लागें काठी, त्यांरी सुध बुध अकल जाबक नाठी ।
 आंधें पुरुष घरटी में मोती दलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २१ ॥
 गुण विण साध रो सांग धरें, त्यां विकलां रा पनां में जाय पडें ।
 ते बीज विहुणा हांके हलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २२ ॥
 आधाकर्मी थानक सेवण लागा, ते चारित विहुणा छें नागा ।
 त्यांनै वादें पूजें मांनै मन रलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २३ ॥

सामायक पोसा मांहे भागलां नें वादे, ते करमां रा पूज भारी बाधे ।
 त्यारा समकत सहीत वरत गलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २४ ॥
 भागलां ने वादे जोडी हाथ, ते पाप करम बाधे सात ।
 उलटा कर्म रिणे मिलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २५ ॥
 हरीया जव देखीनें मिरग डरे, वावर माडी मे जाय पडे ।
 मिरग ज्यूं सेधे मारग जाए हीलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २६ ॥
 आप गुर रा किरतब देखें, तो उचे सुर बोले किण लेखे ।
 न्याय विना बोले सिकल विकलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २७ ॥
 ज्यारे कुगुरा रो डंक लागो भारी, त्यानें आचार री बात लागें खारी ।
 ते अणाचाख्या सू हिलिया मिलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २८ ॥
 पाच महावरता री चरचा छेरे, तो तुरत मूंहडा नो रंग फेरे ।
 अतरंग मे आषण ज्यूं उकलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ २९ ॥
 जो वरता री चरचा करे त्या आगे, तो क्रोध करे लडवा लागे ।
 जाणे भाड मा सू चिणा उछलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ३० ॥
 जो साध रो आचार कहे तिण आगे, तो रूम रूम मे लाय लागें ।
 मूह विगाड बोले क्रोध बलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ३१ ॥
 ज्यारे कुगुरा रो डक लागो जाणो, त्यारी बोली मे नही ठोर ठिकाणो ।
 कहि कहिने तुरत जाए बदलीया, कर्म जोगे गुर माठा मिलीया ॥ ३२ ॥
 जोड कीधी छे कोठरीये गांम, संवत अठारें तयाले वरस ताम ।
 काती सुद आठम नें सोमवार, उत्तम गुर सेवो नर नार ॥ ३३ ॥

दुहा

इणं दुषम आरें पांचमें, विगख्यो साधरो भेष ।
संका हुवे तो पूछ निरणों करो, बले अरुवरू लो देख ॥ १ ॥
साध मारग छें सांकडो, करडो छें त्यांरो आचार ।
ते जिण तिण सेती किम पलें, जावजीव रहणो एकघार ॥ २ ॥
केई सांग पेंहरे साध हुवा, त्यांरा घट में नहीं ववेक ।
त्यां साधपणो नहीं ओलख्यो, तिणसूं सेवें छें दोष अनेक ॥ ३ ॥
दोष सेव्यां भागें साधपणो, त्यांनें ते पिण खबर न काय ।
त्यांनें श्रावक पिण तेसाहीज मिल्या, त्यांनें समझ नहीं मन मांय ॥ ४ ॥
जो आचार बतावें त्यांनें साध रो, तो तुरत जांगें त्यांनें घेख ।
जाणें निंदा करें छें मारा गुर तणी, घटमें नहीं सुघ ववेक ॥ ५ ॥
आचार बतायां साध रों, तिणनें निंदा सरधे ते मूढ ।
ते ववेक विकल सुघ बुध बिना, त्यां भाली मिथ्यात री रूढ ॥ ६ ॥
साचीनें भूठी कहें, ते तो निंदा होय ।
साची बात कहें समझायवा, ते निंदा म जांगो कोय ॥ ७ ॥
जे भारीकर्मा जीवडा, त्यांनें न गमें आचार री बात ।
ते भूला छें भर्म अनादरा, त्यांरा घट माहें घोर मिथ्यात ॥ ८ ॥
पिण भव जीवां नें समझायवा, थोडी सी कहूं अल्प मात ।
ते सुण सुणनें नर नारीयां, छोंडें कुगुरां तणी पखपात ॥ ९ ॥

ढलल

[भविष्य जिरा आग्या०]

कोइ साधपणा रो नाम धरावें, पुरों पलें नहीं आचारो ।
त्यांरा श्रावक दोष सेवावण सेंमल, यां दोयां रे घट में अंधारो रे ॥ १० ॥
जोवों हिरद विचारी, छोड दो कुगुरां री लारी रे । १० ।
कुगुर छें हीण आचारी* ॥ १ ॥
आंधा नें आंधो आय मिलीयो जब, कुण बतावें वाटो ।
ज्यू कुगुरा नें विकल मिलीया श्रावक, यां दोयां रे अकल आडो पाटो रे ॥ २ ॥

* यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

त्यांरा श्रावक जीव हणे त्यारे काजे, ते तो दोनूइ हरषे छे हिंसा कीयां थी, कोइ सावां रे काजें नीळों उखेल नें, अनता जीवां रो घमसांण करतां, मोटी तिथ आठ्म नें चउदस, आप इव्हे भिष्ट करे गुरा ने, सावां रे काजे जायगा खोदनें, नीलणफूलण नीला अकूडा मारे, वले कसी सूं खोदे समी जागा करता, वले तिण माहे धर्म जाणें छे भोला, वले सावा रे काजे केलू फेरावे, वले नीलणफूलण रा जीवा ने मारे, घणो खात कचरादिक पडीयो जागा मे, पछे ओडीये ओडीये वारे नखावे, साघ काजे दडें लीपे छपरा छावे, वले विवध पणे घात करे जीवा री, एहवा किरतव करे छे साघा रे कारण, वले आप मुतलव जाण राजी हुवे, एहवा किरतव करावे आमनां करनें, वले पेहरण साग साघ रो छे त्यारे, जीवा री घात करने जागा करे चोखी, ते तो प्रतख्य असाघ उघाडा दीसे, केई सावां रे कारण नीव दराए, तिण जागामे साघ रहे ते. केई साघ रे काजे मोल ले जागा, तिण माहे रहे ते अणाचारी, साघ काजे दडे लीपें गार घालेने, साघ पिण तिण ठामे रहे ते, एक थानक तणा छे दोष अनेक, असुघ थानक भोगवे भेषघारी, नाटकीये सांग साघा रो आंण्यो, भेषघार्यां तो साघरो साग लजायो,

त्यां श्रावका ने तो वरजें नाही । त्यारे दया नही घट माही रे ॥ ३ ॥ वरसता मेह मे मूरड न्हाखें । पापी जीव मूल न साकें रे ॥ ४ ॥ तिण दिन पिण न करें टालो । आत्मा ने लगावे कालो रे ॥ ५ ॥ करे विषम जागाने सूधी । त्यारी अकल घणी छे उची रे ॥ ६ ॥ कीडी माकादिक देवे दाटी । त्यारें आइ अमितर पाटी रे ॥ ७ ॥ जमीया उखेले जालो । तस जीवा रो पिण करे खेंगालो रे ॥ ८ ॥ बुहार भेलो करे साघ रे भावें । तिहा पिण जीव माखा जावे रे ॥ ९ ॥ चद्रवा ने ताटादिक बाधें । तिण धर्म न ओलख्यो आघे रे ॥ १० ॥ त्याने साघ निषेधे जो नाही । त्याने गिणजो मती साघां माही रे ॥ ११ ॥ आपरे सुखसाता रें काजे । पिण निरलजा मूल न लाजे रे ॥ १२ ॥ तठे रहवा नें होय जावे त्यारी । त्याने वीर कह्या भेषघारी रे ॥ १३ ॥ नवी करावे जागा । विरत विहूणा नागा रे ॥ १४ ॥ केई साघा रे काजे छे भाडें । निश्चे सुघ साघ तणी पात बारें रे ॥ १५ ॥ ते पिण कर्म बाधेनें बूडा । चिहु गति मे दीससी मूंडा रे ॥ १६ ॥ ते तो पूरा केम कहवाय । ते भोला ने खबर न काय रे ॥ १७ ॥ ते पिण साग तणी वरग बूहो । स्वान ज्यूं पकड रह्या दूर्जा रे ॥ १८ ॥

अजुणाकाल में पांचमें आरें,
 एहवा अणाचाखां नें साध सरधे,
 एहवा भाव सुणेनें भारीकमां,
 कर्म जोणें त्यांनं कुगुर मिलीया,
 त्यांरा थानक में कोइ दोष बतावें,
 पाछो जाब न आवे जब क्रोध करेनें,
 सुध साध तो सुध थानक में रहें छें,
 भूठ बोले छें आप सरीषा करण नें,
 सुध साधां रे आल देता नहीं संकें,
 दोनू प्रकारे बूड गया त्यांनं,
 परभाते आहार वहख्यो त्तिण घर रों,
 कारण बिना दोनू टक वेहर ल्यावें,
 परभाते आहार ल्यावे त्तिण घर रों,
 आथण रों ल्यावें ऊनी दाल नें रोट्यां,
 त्यांरा श्रावक पिण छें ववेक रा विकल,
 जेसाकू तेंसो आय मिलीयां,
 कारण बिना उंनों आहार ल्यावें आथण रों,
 हिलीयो उंनी दाल नें रोट्यां रें रसकें,
 कोइ राखवीयादिक तेंवार आथण रों,
 पछें रसग्रिधी फिरें आथण रा,
 छतो आहार मिलें परभात रों त्यांनं,
 जांणे आंथण रो ल्यासू तेंवार रो जीमण,
 इम आरतघ्यांन करतो दिन काडें,
 वले घृत नें खांड रां करें चबोला,
 इण विघ तेंवार पूजें रसग्रिधी,
 ताजें आहार तूटा पडे पापी,
 ताजें आहार तेंवार रो सरस जाणें तो,
 एहवी विकलाइ करें छे त्तिणारा,
 एहवा रसगिरधी जिभ्या रा लंपटी,
 त्यांनं साध सरधें वाडें पूजें अग्यानी,
 कोइ कारण पडीयां जाअें आंथण रा,
 बिना कारण जाअें तेंवार जाणेंनें,

घणी हीण पडी छे बुध ।
 त्यांमें काय न दीसैं सुध रे ॥ १९ ॥
 पांमें नही चमतकारों ।
 त्यांरो किण विघ मिटें अंधारो रे ॥ २० ॥
 तो बोले घृणा आलपंपालो ।
 देवें अणहूंतो आलो रे ॥ २१ ॥
 त्यांमें दोष बतावें अन्हाखी ।
 त्यांरा भूठा बोला छें साखी रे ॥ २२ ॥
 आपरा दोष ढांकें निसंक ।
 आपरों नहीं सूमें वंकरे ॥ २३ ॥
 आथण रों वेंहरें दाल नें रोटी ।
 आ पिण चलगत खोटी रे ॥ २४ ॥
 बेपारां गुगरीयादिक आणें ।
 संका पिण किणरी न आणें रे ॥ २५ ॥
 त्यांरें मूल पडें नहीं संक रे ।
 हिवे कुण काडें त्यांरो वंक रे ॥ २६ ॥
 नही गरढो गिलाण विसेप ।
 त्यां छोडी लज्या ले भेष रे ॥ २७ ॥
 जवतो पेंहलां करें भालामालो ।
 ताजां घर संभाल संभालो रे ॥ २८ ॥
 तो पिण ग्रिधी थका वेंहरें नाहीं ।
 तांणां वेजा लगा त्तिण मांही रे ॥ २९ ॥
 सांभू रा ल्यावें सेवां नें कसार ।
 इण विघ पूजें तेंवार रे ॥ ३० ॥
 ते पिण नांम घरावें साध ।
 त्यांरे किण विघ होसी समाध रे ॥ ३१ ॥
 चांप चांप खाएं भरपूर ।
 परी साधपणा में धूर रे ॥ ३२ ॥
 त्यां पहर विगाड्यो भेख ।
 ते पिण बूडें छें बिना ववेक रे ॥ ३३ ॥
 जब दोष नही छें लिंगार ।
 त्यांनं छें तीन धिकार रे ॥ ३४ ॥

कोइ ग्रहस्थ घर सूं बोलावण आयो, म्हारें घरे वेंहरण पघारो ।
 तेडीया तिण घर जाअे तिणानें, किम कहीजे अणगारो रे ॥ ३५ ॥
 तेरण आयो ते छ काय मरदतों, तिणरा हाथ सूं पिण न करे टालो ।
 तेरीया गयामे दोष न जाणें, त्यारें आयों अमितर जालो रे ॥ ३६ ॥
 कदा कर्मजोगे साघ तेडीया जावे, तो प्रायच्छित ले हुवें सुधो ।
 पिण सदाइ तेडीया जाअे तिणारी, भिष्ट हुइ छें बुधो रे ॥ ३७ ॥
 जो सहजेंइ ग्रहस्थ आयो छें थानक मे, ते कहे म्हारा दिस पघारो ।
 तिण भावभेल न आण्यों साघां रो, जब गया नही दोष लिंगारो रे ॥ ३८ ॥
 तेडीया जावेनें आण दीघो लेवे, ते नीयमाइ निश्चे मिष्टी ।
 एहवा भागल भिष्ट हुआ छे त्याने, साघ सरखे नही समदिष्टी रे ॥ ३९ ॥
 केइ भेषधारी ग्रहस्थ ने देवें, पूठा पांना ने परत वशेष ।
 लोट पातरा नें ओघो पूंजणी देवें, ते तो भिष्ट हुआ ले भेष रे ॥ ४० ॥
 केइ भोला ग्रहस्थ तो इम जाणे, मोसूं दीसे छे साघा री मया ।
 पूंजणी काढ दीघी छें मोने, तिणसूं पाला छां म्हे दया रे ॥ ४१ ॥
 ग्रहस्थ नें साघ पूंजणी दीघा, भोला तो जाणे दोष न लागो ।
 पिण नसीत सूतर मे श्रीजिण भाष्यों, तिणरो चोमासी चारित भागो रे ॥ ४२ ॥
 ग्रहस्थ नें साघ पूंजणी देवे, ते निमाइ निश्चे मिष्टी ।
 पिण भोलां रे भावे तो तेहीज साघ, तिणने साघ न सरधें समदिष्टी रे ॥ ४३ ॥
 केइ कहे पूंजणी सूं तो दया पले छे, तिणसूं पूंजणी देवे छे साघ ।
 तिण लेखें तो मूहपती पिण देंणी, इणसू पिण दया पलसी वाघ रे ॥ ४४ ॥
 बले धोवणादिक पिण देणो ग्रहस्थ ने, तिणसू काचा पाणी तणो हुवें टालो ।
 आ पिण दया पले यारे लेखें, पूंजणी रो न्याय संभालो रे ॥ ४५ ॥
 पूंजणी देणी तो रोटीयां पिण देणी, तिणसू टलें चूला रो आरमो ।
 पूंजणी देवेनें रोटीयां न देवें, यारी सरघा रो वडो अचमो रे ॥ ४६ ॥
 कोइ काचा पाणी सूं कपडादिक धोवें, वांटादिकमे घालें काचो पाणी ।
 तिणनें धोवणादिक देणों दया पलावण, पूंजणी देवा रो लेखो जाणी रे ॥ ४७ ॥
 पूंजणी सूं तो गिणवा जीव पूजें, ते पिण थोडा सा अल्प मात ।
 उनें पांणी धोवण असणादिक दीघां, टले अनत जीवा री घात रे ॥ ४८ ॥
 ग्रहस्थ नें एक पूंजणी देणी, तिण लेखें तो देणी वस्त अनेक ।
 थोडीसी वस्त साघ देवें ग्रहस्थ नें, आखो वरत रहे नही एक रे ॥ ४९ ॥
 ग्रहस्थ नें साघ हाथ पकडनें, राग करनें हेठो वेंसाणें ।
 एहवा भागल भेषधारी छे त्यानें, डाहा हुवे ते साघ न जाणें रे ॥ ५० ॥

संवत् अठारे एकावने वरसे, सावण सुद तीजने बुधवार ।
 भेषघास्यां न ओल्लावण काजे, जोड कीधी सरियारी, मभार रे ॥ ५१ ॥

ढलल : २३

दुहल

सुघ सलघलं नल दलन असुघ दे, जलंनलं असुघ ले सलघ ।
ते दलनूं बूडे छे बलपडल, श्री जलण वचन वलरलघ ॥ १ ॥
असुघ देवल नलं लेवल रे, कडवल फल ललगे आण ।
ते जथलतथ परगट करूं, ते सुणजल चुतर सुजलण ॥ २ ॥

ढलल

[रलग उललली]

तीनल वललं करे जीवरे जी, अलप आउखल बंधलड ।
हलंसल करे प्रलंणी जीव री, वले वले मूसलवलड जी ।
सलघलं नलं असुघ वलंहरलड जी, हलंसलकर चलखी जलणल बणलड जी ।
सलघलं नलं उतलरे मलड जी, तलरल उसभ कर्म वघे आड जी ।
तीजे ठलणलं कहुं जलणरलड जी, वले सुतर भगलती रे मलड जी ।
श्री वीर कहे सुण गलडमल ॥ १ ॥

दडे लीपलं सलघल रे करणलं, वले छपरल छलवं आड ।
कलंलु पलण फेरतलं थकलं, जमीडल जलल उखेले तलड जी ।
नीलण फूलण मलरी जलड जी, अनतल जीव छे तलण मलड जी ।
वले और हणलं छकलड जी, तलरलरी दडल न आणे कलड जी ।
तलरलं पलण अलप आउ बंधलड जी, श्री वीर कहे सुण गलडमल ॥ २ ॥

वले नीव दरलए थेट सुं, वले ठलची बजलवे तलड ।
भेलकलर भलठल चुणलं, तलण बलहत मलरी छकलड जी ।
अनतल जीव हणीडल तलड जी, ते पूरल केम कलहलवलड जी ।
सलघलं नलं रहलवल री मन ललडलड जी, तलण मलटल कलडलं अनलडलड जी ।
तलणरलं पलण अलप आउ बंधलड जी, श्री वीर कहे सुण गलडमल ॥ ३ ॥

जलण गरथ दीडल थलंनक करलडवल, तलण पलण मरलड छकलड ।
कलणहली मलल भलडे भलण ललवे लीडलं, कलणहली थलड रलखुं छलं तलड जी ।
इतुडलदलक दलपीलल करलड जी, खणे खलदे समल कलडलं जलड जी ।
वलघ वलघ सुं मलरे छकलड जी, सलघल नलं उतलरलं मलड जी ।
वले मन मलं हरखत थलड जी, तलरलरे पलण अलप आउ बंधलड जी ॥ ॡ ॥

आहार सेज्या वसतर नें पातरो, इत्यादिक दरब अनेक ।
 असुध वेंहरावें साध ने, ते डूबें छे विना ववेक जी ।
 त्यां भाली कुगुरा री टेक जी, त्यारे कर्म तणी काली रेख जी ।
 त्यांनै सीख न लागे एकजी, गुर नें पिण कीया मिष्ट वशेष जी ।
 संका हुवें तो सूतर लो देख जी, श्री वीर कहें सुण गोयमा ॥ ५ ॥

पाप उदें हुवे तेहनें जब, पडें निगोद में जाय ।
 उतकष्टो अनंता भव करें, तिहां मार अनंती खाय जी ।
 रहें घणी संकडाई मांय जी, जक नहीं निगोद में ताय जी ।
 वले मरण वेगो वेगो थाय जी, उपजें नें विलें होय जायजी ।
 तिणरो लेखो सुणो चितल्याय जी, श्री वीर कहें सुण गोयमा ॥ ६ ॥

सतरें भव जाभेरा करें, एक सास उसास मभार ।
 एकण मोहरत नें मभे, भव करें साढा पॅसठ हजार जी ।
 वले छत्तीस इधिक विचार जी, एहवी जनम मरण री धार जी ।
 मरण पांमें अनंती वार जी, अनंता काल चक्र मभार जी ।
 तिणरो वेगो न पांमें पार जी, ए फल पांमें निगोद मभार जी ।
 असुध दांन तणो दातार जी, श्री वीर कहें सुण गोयमा ॥ ७ ॥

कदा पेंहला पडे बंध नरकनो, तो पडे नरक में जाय ।
 तिहां क्षेत्र वेदन छें अति घणी, परमाधामी मारें बतलाय जी ।
 तिहां मार अनंती खाय जी, उठें कुण छुडावें आय जी ।
 भूष त्रिषा अनंती ताय जी, दुष में दुख उपजें आय जी ।
 असुध दीघां रा ए फल जाणजी, श्री वीर कहें सुण गोयमा ॥ ८ ॥

दुख भोगवतां नरक में जी, सेष बाकी रहे पाप ।
 ते उपजें तिरयंच में, तठें पिण घणो सोग संताप जी ।
 ते छूटें नही कीघां विलाप जी, वले न्हाखें निगोद में पाप जी ।
 आडा नावे गुर मा वाप जी, दुख भोगवें आपो आप जी ।
 असुध दांन दीयो धर्म थाप जी, ते कुगुर तणो प्रताप जी ॥ ९ ॥

आधकर्मि साध जो भोगवें, ते बांधें चीकणा कर्म ।
 ते मिष्ट थया आचार थी, तिण छोड दीयो जिण धर्म जी ।
 नीकल गयो त्यांरो भर्म जी, त्यां छोडी लाज नें सर्म जी ।
 त्यां विगोय दीयो निज ब्रह्म जी, दुख पांमें उतकष्टा परम जी ॥ १० ॥

असुध जाणें भोगवें, त्यां भांगी जिणवर पाल ।
 ते भमण करसी संसार में, उतकष्टो अनंती काल जी ।
 नरक में जासी टांको भालजी, तिणनें मार देसी नरकपाल जी ।
 कीघा कर्म संभाल संभाल जी, रोसी किरतब सांहमो नाल जी ।
 भगोती पहलें सतक नीकाल जी, लीजों नवमें उदेशे संभाल जी ॥ ११ ॥

साघा रें काजें हणे छकाय ने, ते वार अनंती हणाय ।
 जो साघ जाणेने भोगवें, ते पिण अनत मरण करें तायजी ।
 अँ तो दोनूँई दुखीया थायजी, अनता भव माच्छा जाय जी ।
 एकवार मारी थी छकाय जी, त्या तो दुख भोगवे लीया ताय जी ।
 पिण यांरो पार वेगो नहीं आयजी, श्री वीर कहे सुण गोयमा ॥ १२ ॥

छकाय रे उसभ उदे हूवा, त्या तो पामी एक वार घात ।
 पिण साघ पढ्यो नरक निगोद मे, सेवगा नें पिण लीघा साथ जी ।
 त्या मानी कुगुरा री बात जी, कीधी तस थावर री घात जी ।
 अनतो काल दुख मे जात जी, वले मरण वेगो वेगो थात जी ॥ १३ ॥

ज्या गुर ने डबोया सेवगा, त्या सेवगा नें डबोया साघ ।
 ते दोनूँ पच्छा नरक निगोद मे, ते श्री जिण धर्म विराध जी ।
 बूडा संसार समुद्र अगाध जी, ते किण विघ पामे समाध जी ।
 जिण धर्म री रेस न लाधजी, भव भव में पामे असमाध जी ।
 ओ पिण कुगुर तणो परसाद जी, श्री वीर कहे सुण गोयमा ॥ १४ ॥

असुघ दान दीयों जिण साघ ने, तिण साघ ने लूट्या ताय ।
 तिणरे पाप उदें हुवे इण भवे, तो दलदर घसे घर माय जी ।
 रिघ सपत जाये विललाय जी, वले दुख माहे दिन जाय जी ।
 कदा पुन भारी हुवे तायजी, तो इण भवमे दुख न थाय जी ।
 परभव मे संका नहीं काय जी, श्री वीर कहे सुण गोयमा ॥ १५ ॥

इम साभल नें नर नारीया, कोइ करजो मन मे विचार ।
 सुघ साघा ने जाणनें, असुघ मत देजो किणवार जी ।
 असुघ मे नहीं धर्म लिगार जी, सुघ देने लाहो लो लार जी ।
 उतर जावो भवपार जी, ओ मिनख पणारो सार जी ॥ १६ ॥



दाल : २४

दुहा

दया सत दत्त सील सुघ, निप्रग्रही अणगार ।
 पांच महावरत आदरी, पालें निर अतिचार ॥ १ ॥
 यांसूं नवा करम नहीं नीपजें, अर जूना तप करि खपाय ।
 जब चेतन निरमल हुवें, मोक्ष विराजें जाय ॥ २ ॥
 हिंसा भूठ अदत्त अछें, कुसील परिग्रह धार ।
 इणसूं कर्म उपारजें, जीव भमत संसार ॥ ३ ॥
 हिंसा त्याग्यां सब तिगें, तीन करण तीन जोग ।
 ए जिण भाखित माहावरत, पाले सुघ उपयोग ॥ ४ ॥
 अणुक्रमें वरत आदरवा भणी, सिष पूछें जुगत ल्गाय ।
 सुणि सतगुर इसडी कहें, सांभलजों चित्तल्याय ॥ ५ ॥

दाल

[जगत गुरु तिसलानन्दन वीर]

कोइ कहें पहिलों माहावरत पालसूं जी, हणसूं नही छकाय ।
 पिण माहरी जिभ्या वस नहीं, हूं बोलसूं मूंसावाया ।
 चुतर नर समझों ग्यान विचार* ॥ १ ॥
 ओ महावरत भाख्यो भगवान रो, ते नही हुवें इण रीत ।
 तू हिंसा में धर्म परूप दें, थारी कुण मानें परतीत ॥ २ ॥
 कहें देवगुर धर्म कारणें, आरंभ कीयां रुडो थाय ।
 देवलादिक करावीया जी, जीव भली गति जाय ॥ ३ ॥
 धर्म हेतें जीव हिंसा कीयां में, थोडोसो पाप बंधाय ।
 तूं एहवी करें परूपणा, हिंसा मांहे सेंमल होय जाय ॥ ४ ॥
 इम हिंसा में धर्म सथापवा जी, करावें जीवां री घात ।
 माहावरत तो जिहांइ रह्या, जाय समकत होय मिथ्यात ॥ ५ ॥
 तो हूं हिंसा भूठ बेहें त्याग सूं, पिण चोर लेसूं पर माल ।
 माहरी धन उपर ममता घणी, मोसूं नहीं मिटें ओ साल ॥ ६ ॥
 जो तूं जीव हणसी नही जी, बले नहीं बोलसी कूड ।
 पिण पॅलारें दाह दीधां थकां, पेहिला माहावरत में पडसी धर ॥ ७ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

धन चोखां घणी दुख पामसी जी, हिंस्या लागी इम जोय ।
 जो तूं कहसी हिंसा लागी नही तो, दूजोइ वरत न होय ॥ ८ ॥
 तो तीजोइ माहावरत आदरू जी, चोळं नही परघन ।
 पिण सील मोसूं पले नही, म्हारो विषे सू लग रहों मन ॥ ९ ॥
 चोथो आश्रव सेवतां जी, तीन वरत जाय भाग ।
 सब गुण वाले पलक मे जी, जिम पीनी रूइ आग ॥ १० ॥
 जीव पचिंद्री नी हिंसा हुवे जी, हणवो नही ते भूठ ।
 बले आग्या नही वीतराग नी, जब तीन वरत- जाये उठ ॥ ११ ॥
 तो हूं चोथोइ माहावरत आदरू जी, पाचमो कीधो न जाय ।
 नवविष परिग्रह राख सू, मोसू ममता नही मूकाय ॥ १२ ॥
 खेतू वयू आदि परिग्रहो जी, ओ च्यारूइ आश्रव नो छे मूल ।
 एक परिग्रहो राखीया, च्यारू माहावरत मिलसी धूल ॥ १३ ॥
 सस्त्र छे छहू काय नो जी, कूड कपट नो ठाम ।
 आग्या नही जिणराज नी, बले नही रहे सील परिणाम ॥ १४ ॥
 पाचूइ आश्रव त्यागसूं जी, एक करण तीन जोग ।
 आग्या देसूं अणुमोद सूं, मोसूं सरागी बहू लोग ॥ १५ ॥
 एक करण तीन जोग थी जी, माहावरत नीपजे नही कोय ।
 त्रिविधे त्रिविधे सावद्य तागीया जी, माहावरत इण विध होय ॥ १६ ॥
 एक घर त्याग्यो आपरो, जिणमे कितरो एक घन धान ।
 हिवे हुकम चलासी लोकमे, इण लेखे जाणे राजान ॥ १७ ॥
 घरमे गिणत होती नही जी, पूरो न मिलतो नाज ।
 भेष लेड भगवान रो, केड करवा लागा राज ॥ १८ ॥
 दोय करण तीन जोग सू जी, पांचूइ आसरव त्याग ।
 अणुमोदना खाली राख सूं, माहरे एतो इज छे वेराग ॥ १९ ॥
 अणुमोदना खाली रही जी, जब तूं वेहरे असुध आहार ।
 सभोग करे गृहस्थी थकी, तिणसू पांचूं वरता मे पडे वगार ॥ २० ॥
 पाचूइ आश्रव ने विपे जी, हरष होवे मनमान ।
 तीनूंइ जोगां थकी, थारो न मिटयो खोटो ध्यान ॥ २१ ॥
 तीन करण तीन जोग सूं जी, सर्व सावद्य परिहार ।
 धर्म सुकल ध्यान ध्यावता, नीपजे पाचूइ माहावरत सार ॥ २२ ॥



ढलल : २५

दुहा

इण दुषम आरें पांचमें, गुण विण वधीयो भेष ।
ते समकत विरत विना फिरें, भूला भर्म वसेष ॥ १ ॥
ते सारंभीनें सपरिग्रही, वले करें अकार्य अनेक ।
ते पिण साध नाव धरावता, त्यां भाली मिथ्यात री टेक ॥ २ ॥
त्यां जूवा जूवा गच्छ बांधीया, मांहोमां कर कजीया राड ।
त्यांरी सरघा चलगत जू जूइ, वले जूओ जूओ छें आचार ॥ ३ ॥
सुध साधां सूं चरचा करें, जब सगला एकें होय जाय ।
कहें म्हे सगलाइ साध छां, एहवी बोलें अग्यांनी वाय ॥ ४ ॥
सावद्य कामा करता नें करावता, संका आणें नही मन मांय ।
हिवें कुण कुण अकार्य कर रह्या, ते सुणजो चितल्याय ॥ ५ ॥

ढलल

[भविश्य जिन आज्ञा]

साधारें काजें थानक करावें, छ काय रो कर घमसाण ।
तिण थानक माहें रहिवा लगा, त्यां भांगी छें श्रीजिण आण रे ।
भवीयण जोवों हिरदें विचारी, थें छोडो कुगुरां री लारी रे । भ० ।
थें ज्यूं उतरो भवपारी* ॥ १ ॥
सांप्रत एहवा थानक सेवें, वले भूठ बोलें ठाम ठाम ।
कहे थानक म्हारें काज न कीघो, श्रावकां रें काजें कीयो ताम रे ॥ २ ॥
त्यांरा श्रावकां नें कहें थे इम बोलो, थानक नें कहों धर्मसालों ।
ज्यूं थारी म्हारी आछी लागे लोका में, म्हानें तो दोषण मांसूं टालो रे ॥ ३ ॥
त्यांनं श्रावक पिण तेहवाइज मिलीया, त्यांनं ज्यूं सीखावें ज्यूं बोले ।
कहें धर्मशाला म्हारें काजें कराइ, भूठ बोलें वाजतें ढोलें रे ॥ ४ ॥
श्रावक त्यांसूं रीभू रह्या छें, जाणें बोलें पढाया ज्यूं सूआ ।
त्यांमें जाणपणा री जुगत न दीसैं, तेतो निदक साधां रा हुआ रे ॥ ५ ॥
व्यापाख्यां नें छां वेसासे, उजाड नें धतूरो खवार्यो ।
तेल बांमीहा छांमीया करता, मूआ उजाड रे माहो रे ॥ ६ ॥

*यह आँकडी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

ज्यू भेषघाख्यां लोकां ने वेसासे, भूठ बोलणों त्याने सीखायो ।
 इण थानक ने कहो धर्मसाला, ते धर्मसाला कहिता मरसी ताह्यो रे ॥ ७ ॥
 साघा रें काजे थानक कीघो चोडे, छ काय रो करे खेगाल ।
 ते थानक प्रतख छे पापसाला, तिणरो नाम दीयो धर्मसाल रे ॥ ८ ॥
 तिण थानक मे साघा रे काजें, मन गमती राखें बारी ।
 तिण हिंस्या थकी साघ नें श्रावक री, भव भव मे होसी खुवारी रे ॥ ९ ॥
 त्यांरा श्रावक पिण केइ मूढमती छे, जाण जाण गुर रा दोष ढाकें ।
 आवाकर्मो थानक ने कहे धर्मसाला, भूठ बोलता मूल न सांके रे ॥ १० ॥
 एहवा भूठा बोलाने पूछा कीजे, थे धर्मसाला करावण काजें ।
 थे रुपीया कठी थी आण कराइ, जब पाछो जाब देता लाजे रे ॥ ११ ॥
 थे कहो म्हारे काजे कीघी धर्मसाला, तो अजोग दान लीयो किण काजे ।
 थे कुण कुण दान ले साला कराइ, ते सुण सुणनें मत लाजो रे ॥ १२ ॥
 मिनष आंतरीयो घुरडके जूतो, ते धन उदके थानक काज ।
 ते दान लेइ धर्मसाला करावो, एहवो दान लेता क्यू नही लाजो रे ॥ १३ ॥
 वले धर्मसाला करावण काजें, लेवो अउतरो मालो ।
 ओ निरमायल माल लोकीक लेखे, ओ तो खांपणवालो ख्यालो रे ॥ १४ ॥
 कोइ अंतकाल समे धन उदके, रांक गरीब मिह्यारी ताई ।
 ते दान लेइ धर्मसाला करावो, तिणमे करो पोसा समाई रे ॥ १५ ॥
 वले गांम परगांव सूं मागणी करने, करावो छो धर्मसाला ।
 थे भिख्या मांगो नीचो हाथ मांडो, थारा कुल सहामो क्यूं नही न्हालो रे ॥ १६ ॥
 थे मोटका मिनप वाजो छो लोकां मे, वड वडा करो किरियावर काजो ।
 धर्मसाला कराइ अजोग दान ले, थे छोड दीघी सरम ने लाजो रे ॥ १७ ॥
 निरमायल दान मुरदा रों लेइने, थे धर्मसाला करावो छे ।
 तिण दान तणो लेवाल छें कुण कुण, तिणरो थे नाम बतावो रे ॥ १८ ॥
 उतो धर्म जांणी दान दें अतकालें, तिणरो लेवाल किणने थापो ।
 थे पेंला रे वदलें भूठ बोलनें, काय विगोयो आपो रे ॥ १९ ॥
 दातार तो दान देवे इम जाणी, साघारें जागा बाघण तांइ ।
 इण रुपीयां साटे चोखो थानक करासी, तो साघ उतरसी तिण मांही रे ॥ २० ॥
 यूं जाणे धन उदके आंतरीयो, निकेवल सांघां रे कांम ।
 थे कहो इसों दान साघ क्याने ले, तो किसें श्रावक लीयो छें तांम रे ॥ २१ ॥
 ओं तो दान साघ श्रावकां लीघो छें, तीजों न दीसे कोय ।
 इण दान तणो भेल्लू हवो तिणरों, चोडे नाम बताय दो सोय रे ॥ २२ ॥

जो साधां रो नांम बताय दे चोडें, तो साध सहीत श्रावक सर्व बूडा ।
 जो श्रावकां ओं दांन लीयो कहे तों, न्यात जात मे दीससी भूंडा रे ॥ २३ ॥
 त्यामें केयक तो पाप कर्म सूं डरता, केइ लोकीक सूं डरता ।
 ते तो कहिदें थांनक साधां रें काजे कीधो, सूधा बोले छे लाजां मरता रे ॥ २४ ॥
 केइ कहें थांनक म्हारें काजें कीधों छे, वद वदनें कहे वाख्खार ।
 त्यांमें इसडा इसडा केइ भूडा बोला छे, त्यांरा घटमे छे घोर अंधार रे ॥ २५ ॥
 त्यां भूडा बोलांनें पाछो इम कहिणों, जो थे लीयो आंतरीयो दांन ।
 इण दांन थकी जात न्यात लोकांमें, थे होसी घणा हिरांन रे ॥ २६ ॥
 मिनष आंतरीयो नें घुरडकें जूतों, तिण दांन रा थें लेवालो ।
 ते दांन लेइ धर्मसाला करावो, जब थें कुल नें लगावो कालो रे ॥ २७ ॥
 थे निरमायल दांन मुरदा रो लेइनें, जागा कराय हरषो तिण देखी ।
 तिण जागा मांहें करो पोसा सामांड, तो उड गइ जावक सेखी रे ॥ २८ ॥
 थे सांप्रत मुरदा रो दांन लेइनें, साधां रें काज थांनक करायो ।
 थे कहो थांनक म्हारें काजें कीधों, ओ तो भूड कुगुरां रो सीखायों रे ॥ २९ ॥
 आप आप तणा थांनक री ममता, दर पीढ्यां लप लागी छें ताहि ।
 यारी मरजी बिना अनेरा टोलां रां, कुण धसें तिण मांहि रे ॥ ३० ॥
 मठवाख्यां ज्यूं मठ मांडे वेंठा, मठवाख्यां ज्यूं राखें धणीयापो ।
 सांप्रत ममताधारी छे त्यांनें, साध किसें लेखें थापो रे ॥ ३१ ॥
 आप आप तणा थांनक मांड वेंठा, ओरा नें उतरण दें नांही ।
 कदा उतरण दें तोही धणीयाप यारो, उतारे खोज भांगण तांड रे ॥ ३२ ॥
 थांनक निमतें गरथ लागे ते, करें सामग्रीही में भेलों ।
 ओर सामग्री तणा नही देवे, यारें नहीं छे माहोमा मेलो रे ॥ ३३ ॥
 वले गांव परगांव सूं गरथ मंगावें, ते पिण सामग्री मांहीं ।
 कदा कोइ सरमा सरमी देवें अनेरो, ते तो लेखा में छें नांहीं रे ॥ ३४ ॥
 गच्छवासी ज्यूं गच्छ मांडी वेंठा, आप आपरा थांनक ठहराय ।
 ते पिण साध बाजें लोकां में, ते पिण भोलां नें खबर न काय रे ॥ ३५ ॥
 मुरदारो दांन ले थांनक करायों, ते थांनक नहीं छें सिष्ट ।
 तिण थांनक मांहे साध रहे छें, ते तो निमाइ निश्चें भिष्ट रे ॥ ३६ ॥
 मुरदा रो दांन ले थांनक करायों, त्यांरी भिष्ट हुइ छें बुध ।
 तिण थांनक मे करें पोसा सामाइ, ते पिण श्रावक नहीं छें सुध रे ॥ ३७ ॥
 कोइ मांदो आंतरीयो घुरलकें जूतो, ते धन उदकें थांनक काजों ।
 ते आंतरीयादिक रो दांन लेइनें, लोकां में वधारो छो व्याजों रे ॥ ३८ ॥

इण दान रो लेवाल किणने ठेहरायो,
 ओ किण किणरो वाजे छे परिग्रहो,
 इण मुरदा रो दान ले थानक करावें,
 तिण थानक मे करसी पोसा सामाइ,
 एतो निरमायल मुरदा रो माल,
 भगवत रा उत्तम च्यार तीरथ,
 एहवो फित्तरखानो मांड रह्या लोका मे,
 बुधवंत बिण कुण काढें निकालो,
 त्यांरा थानक रो कोइ काढे नीकालो,
 सुघ साध रहे निरदोष जायगा मे,
 आघाकर्मीयादिक छें थानक दोषीला,
 निरदोष जागां माहे साध रहे छें,
 एहवी अजोग जायगा माहे रहसी,
 त्यांरो असुघ उपदेस भूढा री वांणी,
 जाण जाणने एहवी जागा सेवें,
 ते प्रतख जेन तणा विगडायल,
 वीर विक्रमादीत रे सिंघासण बेंठां,
 ज्युं निरदोषण जायगा भोगवे त्यांरे,
 माहोमा कहे म्हे सघलाइ साध,
 वले माहोमा सरघा कहे त्यांरी खोटी,
 माहोमा आप तणा श्रावका नें,
 ते सामायक पोसा न करें त्यांरे पासें,
 माहोमा साध कहे त्यांरी बंदणा छुडावें,
 कपटी थका भूठ बोलें अग्यांनी,
 साध सरघे त्यांरी बंदणा छुडावे,
 साध कहें त्यांनें वाद्यां घर्म न सरघे,
 माहोमा भेला ह्रवां करे नही बंदणा,
 आवो पघारों पिण नही देवें माहोमां,
 आमना जणाय जणाय ग्रहस्थ ने,
 वले साध माहोमा कहें किण लेखें,
 जिगल दोय सहंस कोड साध जाभेरा,
 त्यां सावां नें थे वांदो वंदावो,
 ११०

किणरो थको वधे छे व्याजो ।
 ओ किण किणरे आवसी काजो रे ॥ ३६ ॥
 त्यांरी मत घणी छे माठी ।
 त्यांरी पिण अकल गड छे न्हाठी रे ॥ ४० ॥
 तिणने रांक भिळ्यारी भाले ।
 एहवा दान ने हाथ न घाले रे ॥ ४१ ॥
 त्यांरा मत माहे मोटी भोलो ।
 चोडे माड रह्या गागीरोलो रे ॥ ४२ ॥
 जब बोलें घणा आलपपालो ।
 त्यांरे उलटा देवें सावां सिर आलो रे ॥ ४३ ॥
 तिणने दीयों छे निरदोष थापी ।
 तिणमे दोष कहे छें पापी रे ॥ ४४ ॥
 त्यांमें अकल पिण एहवी आवे ।
 ते भवजीवां नें किम समझावें रे ॥ ४५ ॥
 वले असुघ लेवे अनपाणी ।
 त्यांरी खोटी बखाण री वाणी रे ॥ ४६ ॥
 लोक कहे आच्छी बुध आवें ।
 आच्छी आच्छी अकल बुध थावें रे ॥ ४ ॥
 माहोमा त्यांरी बंदणा छुडावें ।
 माहोमा दोष अनेक वतावे रे ॥ ४८ ॥
 साध कहे त्यांसूं भिडकावें ।
 वले बखाण सुणवा नही जावे रे ॥ ४९ ॥
 त्या विकलां री किसी परतीत ।
 त्यांमें साध तणी नही रीत रे ॥ ५० ॥
 त्यांरी सरघा घणी विपरीत ।
 ते भव भवमे होसी फजीत रे ॥ ५१ ॥
 साता पिण पूछे नांही ।
 नही उतारे थानक मांही रे ॥ ५२ ॥
 माहोमा देवें चदणा छडाय ।
 ओ पिण अंधकार त्यांरा मत माहि रे ॥ ५३ ॥
 उतकण्ट नव सहंस छे कोड ।
 सीस नामी नें वेकर जोड रे ॥ ५४ ॥

ज्यांरी वंदणा छुडावें त्यां साधां नें, काढ्या साधां तणी पांत बारें ।
 त्यांनं वले तेहीज साघ सरघें, ओ पिण विकलां रे नही छें विचार रे ॥ ५५ ॥
 ज्यां साधां री वंदणा छोडाई, त्यांनं साघ कहे किण लेखें ।
 अभितर आंख हीया री फूटी, ते सूतर सांहांनो न देखें ॥ ५६ ॥
 साघ सरघें त्यांरी वंदणा छुडावें, ते बूडगया कालीघारो ।
 ते भारी करमा छें मूढ मिथ्याती, त्यांरा घट माहे घोर अंधारो ॥ ५७ ॥
 माहोमा साघ कहें छें मूढां सुं, त्यांसूं पिण करें अंतरंग धेष ।
 वले इसको खेदो करें छें माहोमा, त्यां पहर विगाड्यो छें भेष रे ॥ ५८ ॥
 ज्यांनं कदेयक तो कहें साघ लोकां में, त्यांनं कदेयक कहि दे असाघ ।
 फिरती भाषा बोले अग्यांनी, त्यांरे किण विघ होसी समाघ ॥ ५९ ॥
 एहवा भेषघाख्यां नो वखांण सुणें छें, त्यांरे दिन दिन हुवें गाढो मिथ्यात ।
 ते कलेस कदाग्रहो करें साधां सुं, छेरवीयां करे उंधी वात रे ॥ ६० ॥
 संवत अठारें बावनें बरसें, भादरवा विद सातम मुक्रवार ।
 जोड कीधी कुगुरां रो कपट ओलखावण, पाली सहर मभार रे ॥ ६१ ॥

ढाल : २६

दुहा

भेषघारी भागल तूटल हुआ, त्यासूं पले नही आचार ।
दोष सेवे छें जाण जाणनें, पूछ्यां साच न बोलें लिभार ॥ १ ॥
त्यारो पोथ्यां तणो गिज देखनें, कोइ प्रश्न पूछे एम ।
ओ पोथ्यां रो गिज पखों तेहनी, पडिलेहण करों छों केम ॥ २ ॥
जब भारीकरमा जीवा थकी, साच बोल्यो नही जाय ।
निज दोष ढाकणने पापीया, बोले छें मूसावाय ॥ ३ ॥
कहे पोथ्या पडिलेहणी चाली नही, किण ही सुतर रे माहि ।
तिणसू नही पडिलेहा छां पोथियां, थे सका म राखो कांय ॥ ४ ॥
पोथ्यां नें नही पडिलेहीयां, तिणरो नही म्हांनें दोषनेपाप ।
म्हांनें हिंस्या पिण मूल लागे नही, एहवी कीवी लोका मे थाप ॥ ५ ॥
कपडा पाट बाजोट भोगवां, त्यारी करणी पडिलेहण जोय ।
नही भोगवां कपडादिक तेहनी, नही पडिलेह्या दोष न कोय ॥ ६ ॥
एहवो भूठ बोलनें दोष ढाकीयो, ते भोला खबर न काय ।
हिंवे कूड कपड त्यारो सुणों, एगाएक चित्त लगाय ॥ ७ ॥

ढाल

[ढाभ चतुर विचार]

कहे पोथ्यां री पडिलेहण नही चाली, तिणरी भाषा छे एकंत भूठी रे ।
सुतर अरथ सवला नही सुंने, तिणरी हीया निलाड री फूटी रे ।
भूठाबोलां री सगन कीजे* ॥ १ ॥
जो थोडी पिण उपधि नही पडिलेहे, तिणनें मासीक दड बतायो रे ।
संका हुवें तो नसीत सुतर माहे जोवों, दूजा उदेसा रे माह्यो रे ॥ २ ॥
दले आवसग दसवीकालिक आद देइ, घणा सुतरा री साखो रे ।
साघ नें नित पडिलेहण करणी, श्री वीर गया छे भाखो रे ॥ ३ ॥
राख रेत पोथी ने आखो थानक पडारो, विण वावरीया उपधि छें माही रे ।
त्यानें पिण एकवार तो अवस पडिलेहे, विण पडिलेह्या न राखे काइ रे ॥ ४ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त मे है ।

भेषधारी कहे पोथ्यां नही उपधि में,
 अंतो ग्यान तणी नैसराय छें तिणसूं,
 भूठ बोले पोथी री पडिलेहण उठाइ,
 तिणरों न्याय सुणे भव जीवां,
 पोथीयां रो गिज विण पडिलेह्यां राखे,
 नीलणफूलण चोमासा माहें आवें,
 कीडीया कंथू आदिक जीवां रा समूह,
 विण पडिलेह्यां पोथ्यां रा गिज में,
 विण पडिलेह्यां पोथ्यां रा गिज में,
 तिणरो पाप नें दोष लागों नहीं सरघे,
 पोथ्यां रा गिज नें विण पडिलेह्यां राखें,
 तिण हिसा तणो पाप किणनें लागों,
 जो पोथ्यां ने हिसा रों पाप लागों हुवे,
 नामे धरना में पाप रों भेळूं वतावों,
 जो किणनेंइ पाप लागों नहीं हुवें तो,
 जेसी हुवे तेंसी कहि वतावो,
 त्यांनं प्रश्न पुछ्यारों जाब न आवें,
 आल पंपाल बोले विनां विचाख्या,
 पोथ्यां रो गिज विण पडिलेह्यां राखें,
 पोथ्यां विण पडिलेह्यां रो पाप न सरघें,
 पोथ्यां गिजनें विण पडिलेह्यां राखें,
 पोथ्यां रा गिज सूं जीव मरे अनंता,
 कहें पोथ्यां नें कदे नही पडिलेह्यां,
 तो ग्रहस्थ रे घरे पोथ्यां नें मेल्यां,
 पोथ्यां नही पडिलेह्यां रों दोष न लागें,
 वले बेठीयां पोथीया पोथ्या चलाया,
 जो पोथ्यां नही पडिलेह्यां रो दोष न लागे,
 हिंसादिक दोष सेवे पोथ्यां रे तांइ,
 पोथ्यां नही पडिलेहें छे तिणरें लेखे,
 ओवरा भखारी में पिण मेलणी पोथ्यां,
 कहें पोथ्यां री पडिलेहण करणी,
 तो ग्रहस्थ रे घरे पोथ्या मेलण रो,

तिणसूं पोथ्यां पडिलेह्यां नाही रे ।
 नही पडिलेह्यां दोष न कांइ रे ॥ ५ ॥
 तिणने भारीकर्मों जीव जाणों रे ।
 तिण भूठा री पख मत ताणो रे ॥ ६ ॥
 त्यांमें जमें जीवां रा जालों रे ।
 घणा जीवां रों हुवें खेंगालो रे ॥ ७ ॥
 उपज उपज मरें तिण ठामो रे ।
 त्यांरें भारी मंड्यो संगरामो रे ॥ ८ ॥
 अनंत जीवां तणी हुवें घातो रे ।
 त्यांरी विकल मानें छें वातो रे ॥ ९ ॥
 अनंत जीवां रो हुवें घमसाणो रे ।
 चोडें कहिता संक म आणो रे ॥ १० ॥
 तो पोथ्यां रों नाव वतावो रे ।
 थारी सरघा नें मतीय छिपावो रे ॥ ११ ॥
 आ पिण कहि दो निसंको रे ।
 छोडों हीया रों वंको रे ॥ १२ ॥
 जब कूडा कूडा कूहेत लगावें रे ।
 गालां रा गौला मुख सूं चलावें रे ॥ १३ ॥
 त्यांनं पार लागें भरपूरो रे ।
 त्यांरो तो मत जावक कूडो रे ॥ १४ ॥
 त्यांरें सदा रहे असमाघो रे ।
 त्यांनं निश्चेइ जाणों असाघो रे ॥ १५ ॥
 तिणरो दोष न लागें कांइ रे ।
 ओ पिण दोष छें नाहीं रे ॥ १६ ॥
 तो गाडा मे मेल्यां दोष छें नाहीं रे ।
 ओ पिण दोष न लागे कांइ रे ॥ १७ ॥
 तो मोल लीधां वेहख्यां दोष नाहीं रे ।
 यारे लेखें तो दोष न कांइ रे ॥ १८ ॥
 मेलणी ग्रहस्थ घर माह्यो रे ।
 विण पडिलेह्यां राखे तिण न्यायो रे ॥ १९ ॥
 ते नही छे सूतर रे माह्यो रे ।
 ओ पिण नहीं छे नकारों ताह्यो रे ॥ २० ॥

पोथ्यां री पडिलेहण सूतर में न चाली,
 इम कहि कहि अग्यान्या पडिलेहण छोडी,
 पाट बाजोट कपडा ने पडिया राखे,
 त्याने उपघ जाण पडिलेहे नाही,
 आळा थान नें विण पडिलेह्यां राखे,
 वले पडिलेह्या विण उपघि राखे अनेक,
 कपडा ने पोथ्यां आला माहे घालें,
 जब पूरी पडी पडिलेहण त्यारी,
 मास छ मास ताइ न खोले आला,
 त्यामें जीव अनेक उपजे खपें छे,
 कोइ खोडो ने पांगलो लूलो होवे,
 दोनूं टंका न करे पडिलेहण,
 मंडुपती री तो करे नित पडिलेहण,
 तिण माहे जीव अनेक घसे छे,
 थानक आडा पडदा बाध्या छे,
 तिणरा सावपणा ने पलीतो लागो,
 तिण परदा रें नीलणफूलण आवे,
 तिण हिंसा तणो पाप साधा ने हूवो,
 जो सी राखणने पडदा हेठा करे छे,
 तिणने देव अदत ने परिग्रह लागो,
 जब कहे ग्रहस्थ री आगना लेने,
 तिण लेखे तो ग्रहस्थ री आगना लेइने,
 साधा रें कारण पडदा बाधें छे,
 तिण पडदा माहे रहे साध जाणने,
 कारण विण पिण महिना सूं इधिका रहे छे,
 तिण दोष तणो प्रायच्छित नही लेवे,
 केई चोमासी उतर गया पछे,
 खावा पिवा कपडादिक काजें,
 चोमासो करे तिण गाम नगर मे,
 तठा पहिली चोमासो करे तिण गामे,
 छती सगत छे पगा चालण री,
 कारण कहे छे दोप रो खोज भागण रो,

पोथ्यां ने न गिणे उपघि रे माह्यो रे ।
 ओ तो चोडे कपट चलायो रे ॥ २१ ॥
 इत्यादिक उपघि वशेषो रे ।
 ओ दोष सेवे किण लेखे रे ॥ २२ ॥
 न पडिलेहे पिछोवडी सीवी रे ।
 त्या खोइ संजम रूप नीवी रे ॥ २३ ॥
 उपर गारों लीपें छे काठो रे ।
 त्यारो चारित घट मा सू न्हाठो रे ॥ २४ ॥
 जब जमे जीवा रा जाल्य रे ।
 एहवा गुर छे विकलां वाला रे ॥ २५ ॥
 पगां बाधे इंडूणी गाबो रे ।
 तिणरो भागल काई देसी जाबो रे ॥ २६ ॥
 नही पडिलेहे पगारो गाबो रे ।
 त्याने देवे पगा सू दाबो रे ॥ २७ ॥
 ते साध हाथा सू खोलनें बाधे रे ।
 ओ पिण दोष न जाण्यो आधे रे ॥ २८ ॥
 आडो दीया छाटां लागे रे ।
 तिणसू पहिलो महावरत भागे रे ॥ २९ ॥
 जब तो पडदा भोगवीया साधो रे ।
 तिण चारित दीयो विराधो रे ॥ ३० ॥
 म्हे पडदा मेल्ला ढलकाउ रे ।
 सी राखण सीरख ओढणी साऊ रे ॥ ३१ ॥
 ते कर्म बाधे हूवो भारी रे ।
 तिणरी पिण घणी खुवारी रे ॥ ३२ ॥
 त्या भाग्यो कल्प लोपी मरजादो रे ।
 वले पूछ्यां करे विषवादो रे ॥ ३३ ॥
 कारण विण रहिवा लागा रे ।
 त्यासू छूटें नही सेदी जागो रे ॥ ३४ ॥
 नही करें चोमासा दोयो रे ।
 तिण चारित चोडे विगोयो रे ॥ ३५ ॥
 तो ही लेवे कारण रों नांमो रे ।
 पिण रहे छे मुतलव कामो रे ॥ ३६ ॥

त्यामें कोइ तो मुतलब खावारे काजे, केई चॅला रें मुतलब काजें रे।
 कोइ रहें कपडादिक काजे, तिणसं भूठ बोलतां न लाजे रे ॥ ३७ ॥
 कोइ तो जाणें म्हारा श्रावक फिर जासी, तो मत माहें पडसी वगारा रे।
 फिरता फिरता कदा सर्व फिरें तो, इहां थी छुट जासी पग म्हारा रे ॥ ३८ ॥
 जो श्रावक म्हारा फिर जाअें म्हांथी, तो पछें कारी न लागें कायो रे।
 भगवतें बांधी मरजादा भागेंनें, देवे चोमासों ठहरायो रे ॥ ३९ ॥
 कल्प मरजादा लोपतां संक न आणें, त्यामें साध तणी नहीं रीतो रे।
 ते तों इह लोकरा अर्थी छें अग्यांनी, ते चिहूं गति में होसी फजीतो रे ॥ ४० ॥
 साध एक मास रह्या तिण गांमें, तो बिमणा काडणा दिन बारे रे।
 तठा पहिली पिण तिहां आय रहें छें, ते तो विटल हुआ वेंकारो रे ॥ ४१ ॥
 कल्प भागेनें करें चोमासो, कल्प भागेनें रहें सेखा कालो रे।
 अणहंतों अग्यांनी कारण बतावे, त्यारें भूठ तणों नहीं टालो रे ॥ ४२ ॥
 कल्प भागेनें करें चोमासों, कल्प भागेनें रहें सेखा कालो रे।
 तिणनें पिण पूज जांनें अग्यांनी, त्यारे आयो अभितर जालो रे ॥ ४३ ॥
 जे सोइ पूजनें जेंसाइ चेला, जेसोंइ परवार छें दूजो रे।
 कल्प भागेनें करें चोमासो, ते पूज छें पूरों अबूजो रे ॥ ४४ ॥
 दोष सेंव्यारो प्राच्छित नहीं लेवे, आगा सूं नहीं पालें मरजादो रे।
 एहवी घिगांमस्ती मडे रही तिण गछ में, ते तो भगवत रा नहीं साधो रे ॥ ४५ ॥
 थानक माहें पांणी चवें जब, ठामडा मांड भेले पांणी रे।
 तिणनें हिंसा लागें छे तस थावर री, तिणरो दोष न जाणे अग्यांनी रे ॥ ४६ ॥
 काचों पांणी भेलें पोतें जाय ढोले, तिणरी दया घट मांसूं न्हाठी रे।
 एहवा पिण साध वाजें लोकां में, तिणरी चोडें छें चलगति माठी रे ॥ ४७ ॥
 त्यारें ग्रहस्थण थानक आय लीपें जब, आर्या घोवण गारा में घालें रे।
 केइ आर्या हाथां दडें लीपें छें, केइ गार पीडा हाथां भालें रे ॥ ४८ ॥
 केइ आर्या थानक तणी छंजाख्यां, पडी हुवें तो थानक माहे आणें रे।
 त्यां छंजाख्यानें आपरी कर जाणें, तिणसूं मेल दे एकंत ठिकाणें रे ॥ ४९ ॥
 ओषध आदि दे तंबाखू इधकी आणें, वधें ते बासी राखें छे रातो रे।
 त्यांनें पूछ्यां कहे अंतों ग्रहस्थ री छें, तिणरी फेर आग्या ले परभातो रे ॥ ५० ॥
 आपरी वस्त थानक में बासी राखें ते, ग्रहस्थ री थापी किण न्यायो रे।
 वले ग्रहस्थ री आग्या लेवें किण लेखें, त्यामें आ पिण अकल न कायो रे ॥ ५१ ॥
 मूआ गया रा पातरा इधिका हुवे ते, त्यांरी पिण ममता मूकें नांही रे।
 त्यांनें पडिया राखें छें विण पडिलेह्यां, आपरा थानक मांही रे ॥ ५२ ॥

'लोट पातरा थानक मे पडीया देखीनें, कोइ प्रश्न पूछें छें आंमो रे ।
 अँ लोटनें पातरा सावठा किणरा, जब तो कहे छें ग्रहस्थ रा ठामो रे ॥ ५३ ॥
 लोट नें पातरा ग्रहस्थ रा कहिने, आप न्यारों होय जावे रे ।
 एहवा एहवा भूठ जाणेनें बोले, त्यामें साध रो खेरो न पावें रे ॥ ५४ ॥
 ग्रहस्थ रे लोट पातरा क्यानें चाहीगें, ते थानक मे मेलें क्यानें रे ।
 आपरा पातरा ने कहे ग्रहस्थ रा, साध न कहीजे ज्यानें रे ॥ ५५ ॥
 जो आपरे चाहीजें लोट पातरा, तो लेवे छें तिण मासूं ताह्यो रे ।
 वले मूबां गया रा ववे लोट पातरा, ते मेल देवें तिण मांह्यो रे ॥ ५६ ॥
 ओ तो कोठार ज्यूं छें लोट नें पातरा, ते तो निश्चेंइ त्यांरा जाणो रे ।
 जो भेषधारी कहे अँतो ग्रहस्थरा छें, त्या विकलां रो करजो पिछांणो रे ॥ ५७ ॥
 विण पडिलेह्या राख्या पहिलो व्रत भागो, बीजो व्रत भागो भूठ भाख्या रे ।
 तीजो व्रत भागो जिण आगना लोप्यां, पाचमो व्रत भागो इधिका राख्या रे ॥ ५८ ॥
 आचार कुसील तणे लेखें तों, चोथो ने छठो व्रत भागा रे ॥
 विण पडिलेह्यां पातरा इधिका राखें, ते व्रत विहूणा नागा रे ॥ ५९ ॥
 लोट पातरा नें उपधि इधिका राखें, त्यामे छे मोटी खोडो रे ।
 इधिकाइ राखे ने विण पडिलेह्यां, ते तो निश्चें भगवान रा चोरो रे ॥ ६० ॥
 कुगुराने ओलखावण जोड करी छे, सोजत सहर मभारो रे ।
 समत अठारे ने वरस तेपनें, आसोज सुद सातम थावरवारो रे ॥ ६१ ॥



दुहल

भेषधलरी भूला ऒण धर्म थी, त्यांरल फूडल अंभतर नेत ।
 ते भोललं नें भलष करवल भणी, कूडल लुगलवें कूहेत ॥ १ ॥
 नलज दोषण ढलंकण भणी, भूठी भूठी बणलवें वलत ।
 त्यांरी बलत मलंनं तलण ऒव रें, आवे तुरत मलथ्यलत ॥ २ ॥
 चहरबलऒी तमलसल नी परें, ऒयूं भेषधलख्यलं मलंढ्यो फंढ ।
 कलणही भोलल नें न्हलंखी फंढ में, ऒव पलमें अधलक अणंढ ॥ ३ ॥
 कलचल पंखी रें पलंख अलइ नहीं, ते उखलल पडीयो अलल वलर ।
 तलणनं पडीयो देखनं पलपीयल, तुरलपे अलवें तुरत मभलर ॥ ॡ ॥
 ऒयूं कलचो ऒलणपणो छें तेहनं, तलणनं भलष करण हुवे तयलर ।
 तलणनं भलडकलवें सुध सलधलं थकी, कूड के लवे वलसंवलर ॥ ५ ॥
 कमलड ऒडधलंनं उधलडीयल, तलणनं दीसं उधलडो पलप ।
 ते वीर वचन उधलपनं, करं कवलड ऒडण री थलप ॥ ६ ॥
 चोढें दोष अणलचलर सेवतल, पूछ्यलं अरे न हुवं तलहल ।
 ते ढललें उतलरें कूड कपट सूं, ते सुणऒो चलत ल्यलय ॥ ७ ॥

ढलल

[अल अनुकम्यल ऒलन अलग्यल में]

केई सलध रो भेष पेंहरी नें भूलल, अलडल ऒडे उधलडे कमलड ।
 त्यांमें केई तो कहें म्हुलंनं दोष ललगे छें, केई कहें म्हुलंनं दोष न ललगें छें ललललर ।
 यलं भूठलबोललं रो नलरणं कीऒो* ॥ १ ॥
 कवलड ऒडे पलण दोष ऒलणें छें, ते तो छें एक मूलं री पलंत ।
 कवलड ऒडे नें दोष न ऒलणें, त्यांनं दोय मूलं कहीऒे भलीभलंत ॥ २ ॥
 त्यां भेषधलख्यलं नें पूछल कीऒे, थलंरो श्रलवक कहें थलंसूं ऒडी हलथ ।
 मोनं कमलड ऒडवो उधलडणो नलंहीं, ए सूंस करलवो मोनं सलंभीनलथ ॥ ३ ॥
 ऒव तो कहें म्हें उणनं सूंस करलवलं, तो कलसों बरत उणरें नीपनों ऒलणों ।
 ऒव कहें उणरें पेंहलो वरत नीपनो, हलंसल रों त्यलग कीयो छें सुमतल अलणो ॥ ॡ ॥
 ऒड कवलड हलथल सूं ऒडें उधलडे, ऒवकल सों व्रत उन श्रलवक रो भलगो ।
 ऒव तो कहें उणरों पेंहलो व्रत भलगो, हलंसल रो पलप सलगेड ललगें ॥ ५ ॥

*यह अंकडू प्रत्येक गलथल के अन्त में है ।

श्रावक जड्या उघाड्यां पहिलो व्रत भागो,
 थे पिण कवाड जडो नें उघाडो,
 दोष न गिणें छे कवाड जड्या उघाड्या,
 जब मूढो विगाडने पडगयो फीटो,
 वले भेषचारी नें पूछा कीधी,
 पाछा आवो जब पिण कवाड उघाडो,
 थानक रो कवाड तो जडो उघाडो,
 तो थे ग्रहस्थ तणों कवाड खोलेने,
 जब तो कहे म्हे कवाड जड्यां मे,
 आगे वाइ हुवे काइ. ढाकी उघाडी,
 इम भूठ बोलीनें होय गयो पार,
 हाट माहे तो वाइ थे वेठी न जाणो,
 कोइ वाइ ओरा रो कमाड उघाडे,
 माहे तो वाइ ढाकी उघाडी न जाणो,
 कोइ ग्रहस्थ कहे सामी कमाड उघाडे,
 जब थे कमाड उघाड माही क्युं न जावो,
 इत्यादिक खिष्ट कीया छे अनेक बोला सुं,
 कदा कवाड जड्या माहे दोष जाणें छें,
 यांरा वडा वडेरा दर पीढ्या लग,
 त्यां तो दोष जाणेनें नही लीघो,
 वयालीस दोषां मे दोष कह्यो छे,
 भिने दोष मे दोष जाणे ने टारयो छे,
 साववीयां रो नांम लेइने,
 ते परभव सू डरें नही पापी,
 साघ नें कवाड जडवो थापण ने,
 जो साघ जड्यां उघाड्या पेहलें व्रत भागो,
 तिण मूढमती ने पाछो इम कहीजे,
 साववीयां तो सील राखण ने जडे छे,
 जब मूढ मती पाछो इम बोलें,
 ढाला राखणें गोड जडीयां सू काडे,
 तिण मूढमती ने पाछो इम कहिणो,
 घर में एकली अस्त्री छे वाल जवान,
 १११

जब तो थारोई पहलो महान्नत भागो ।
 जब हिंसा रो दोष थानेई लागो ॥ ६ ॥
 तिणने जाब सू जाब देइ खिष्ट कीघो ।
 बलतो जबाब पाछो नही दीघो ॥ ७ ॥
 थे कवाड जडेने गोचरी जावो ।
 तो ग्रहस्थ रो आडो देख पाछा काय आवो ॥ ८ ॥
 तिणमे तो दोष गिणो नही कांइ ।
 क्यू नही जावो तिणरा घर माही ॥ ९ ॥
 दोष तो मूल न जाणो लिंगार ।
 तिणसूं माहे न जावो खोल कवाड ॥ १० ॥
 तिणने पाछो खिष्ट करवें छें एम ।
 तो हाट खोली वेहरायां वेहरो नही केम ॥ ११ ॥
 थाने वेहरावें तो वेहरो नही कांय ।
 हिवे कहो थे दोष गिणों किण माहि ॥ १२ ॥
 असणादिक वेहरण माहे पवारो ।
 कमाड खोल्यां में दोष न जांणो लिंगारो ॥ १३ ॥
 तिणरो पाछो जावतों मूल न आयो ।
 तो पिण पापी सू चोडेकह्यो नही जायो ॥ १४ ॥
 कहे कमाड खोलायने न लीयां आहार ।
 हिवे तो मूढ दोष न जाणें लिंगार ॥ १५ ॥
 यांरा वडा वडेरा रा आखर संभालो ।
 त्यारी सरघाने विकला लगायो छे कालो ॥ १६ ॥
 साघ ने कवाड जडवो थापे ।
 जाण जांणनें वीरना वचन उथापे ॥ १७ ॥
 पापी कूडा कुहेत लग्वाण लागो ।
 जो साघवियारोइ पहलो व्रत भागो ॥ १८ ॥
 तूं ओही विचार हीया मे न देखे ।
 साघ कवाड जडे किण लेखे ॥ १९ ॥
 सील राखण पेहलें व्रत भागो छे जेह ।
 ए खोटो दिष्टत देवें लोका आगें तेह ॥ २० ॥
 थें गोचरी जावो ग्रहस्थ नें घर ताम ।
 इतरे मेह आय गयो तिण ठाम ॥ २१ ॥

एकली अस्त्री छैं तिहां रहो कें न रहौं, म्हें बरसतें मेह नीकल जावां बारें, जो थे सील राखण नें पांणी माहे चालो, आर्या तौ कवाड जडे सील राखण, आपरो व्रत भागो तो केहणी न आवें, भोला लोकां नें समझ पडें नहीं कांड, वरसतें मेह नीकले अस्त्री कना थी, साधवीयां कवाड जडें सील राखण नें, सीलादिक कारण विण कवाड जडें छैं, जब तो पहिलो महाव्रत निश्चेंद भागो, त्यांनं कवाड जड्यां माहे दोष बतावें, कहें साध तौ फलसो हाथां सूं उघाडें, कवाड विचें तो फलसो भारी छैं, ते तो आचारंग सूतर माहें कह्यो छैं, कवाड जडण उघाडण रो दोष दांकणने, वले आचारंग माहे चाल्यो कहें छैं, कंटक बोदीया पाठ कहां छैं सूतर में, आचारंग दूजें सतक पेंहलें अवेनें, कंटक बोदीया साखा नें फलसो कहे छैं, ते तौ कवाड जडण नें उंघा अर्थ करें छैं, कंटक साखा रो ठूंठो पूंजे दुवार खोले, कंटक बोदीया रो अर्थ फलसो कहे ते, तिण भेषधारी ने पूछा कीजे, जो धर्म कहे तो लोकां में भूंडा दीसैं, कवाड जड्यां माहे दोष उघाडें, तो पिण पापी मूल न मानें, कवाड जड्यां उघाड्यां हिंसा कही जिण, थोडी हिंसा कीयां डंड आवें चोमासी, वेतकल्प सूतर रे पेंहले उदेशे, आडो जडनें रात रो रहिणों, साध नें रहिणो दुवार उघाडे, पोतें जडण उघारण रो काम न पडें तो,

जब तो कहें म्हें न रहां तिणठाम ।
 चोथो सील वरत राखण ने काम ॥ २२ ॥
 जब थारें लेखें थारों पहिलें व्रत भागों ।
 थे सील राखण जीव माख्या अथागों ॥ २३ ॥
 जाब अटक गया जब पड गया फीटा ।
 डाहा लोकां में तो घणा भूंडा दीटा ॥ २४ ॥
 तिण साध नें श्री जिण आगना जाणो ।
 तिण में पिण श्री जिण आग्या प्रमाणो ॥ २५ ॥
 सीलादिक कारण विण मेह में चालें ।
 तिण माहे घोचो अग्यानी घालें ॥ २६ ॥
 जब भूठ वोलें फलसों देवें बताइ ।
 तो कवाड जडवारी कुण चलाइ ॥ २७ ॥
 फलसों पूजें खोलेनं माहें जाणो ।
 म्हे कवाड जडण रो संक क्यूं आणों ॥ २८ ॥
 फलसों उघाडण रो भूठ चलायों ।
 ते पिण एकंत मूसावायो ॥ २९ ॥
 ते कंटक नी साखा डाली जाणो ।
 पांचमों उदेसो जोय करो पिछाणो ॥ ३० ॥
 तिण निश्चेंद चोडें चलायो छे कुडों ।
 त्यांरा साधपणा माहें पर गइ धूरो ॥ ३१ ॥
 फलसों होसी तो पूंजणी किम आवें ।
 निश्चेंद गालां रा गोला चलावें ॥ ३२ ॥
 कवाड जड्यां खोल्यां पाप कें धर्म ।
 पाप कहां निकल जावें सरघा रो भर्म ॥ ३३ ॥
 सांभलजों सूतर रो साख ।
 कवाड जडवो छे साध नें कहे छेअन्हाख ॥ ३४ ॥
 आवसग सूतर चोथा अवेन मभार ।
 नसीत बार में उदेसैं विचार ॥ ३५ ॥
 साधवीयां नें नहीं रहिणो उघाडे दुवार ।
 सील नें उपजतों जाण विगाड ॥ ३६ ॥
 साध नें कमाइ जडवो नहीं चाल्यो ।
 जडीयें दुवार तो रहणों नहीं पाल्यो ॥ ३७ ॥

आर्यां रो नाम लेइनें साध जडें छे,
 आर्यां न जडे तों जिण आगना लोपी,
 मन करनें पिण साध कमाड न बाछे,
 ते वरज्यो छें उत्तराघेन पेतीस मेअघेन,
 मनोहर घर ने वले चित्राम कीघा,
 कवाड सहीत ने घर घवलीयो हुवें,
 जो इतरा बोल माहिलो सहजा हुवे तो,
 आगे पडीया छे जिम नचित पख्या छो,
 चंद्रवा छूटा नें साध पाछा बाघे,
 ते चित्रामादिक समारे हाथा सूं,
 ज्याने मन करने वाछणा जिण पाल्या,
 वले कमाड जडवो साधा ने थापे,
 गोसालें पिण कमाड जडीयो नही दीसे,
 गोसालो मूआ पछें चेला जख्या छे,
 पेहला चेलां ने करडा सूस कराए,
 जब चेला टटवस करणो माड्यो,
 चेला टटवस करनें पाछो उघाड्यो,
 गोसाला ने घीसालतो लाजा मरे छें,
 गोसाला रे तो जागा सूतर में चाली,
 ते तीथकर वाजे ते किण विव जडसी,
 केई पापंडी पिण वाजे वेंरागी,
 भगवंत रा साध वाजे कमाड जडे छे,
 भूठ बोलता बोलता जाव मे अटके,
 वले क्रोध करे प्रजलता पापी,
 सावां रा भेष थका कमाड ने जडता,
 वले दोष काढे त्यासूं मड जाए साह्या,
 कमाड जडवारो दोष ओलखावण,
 समत अठारेनें वरस बावनें,

त्यानें जिण मारग रा कहीजे अजाण ।
 साध जडे तिण भागी छे जिणवर आण ॥ ३८ ॥
 ते काया सूं किण विघ जडें कमाड ।
 चौथी गाथा जोय करो निस्तार ॥ ३९ ॥
 माला सहीत ने धूपदिक वासकारी ।
 वले चंद्रवा सहीत न बांछें लिंगारी ॥ ४० ॥
 तिहां रहितां दोष न लागें कांइ ।
 त्यांरी बछ्छा पिण नही करणी मन माही ॥ ४१ ॥
 वले हाथां सू जडे उघाडें कमाड ।
 त्यांरो बिगड गयो जाबक आचार ॥ ४२ ॥
 त्यानें कायाइं करनें सेवण लागा ।
 त्यानें वरत विहूणा कहीजे नागा ॥ ४३ ॥
 ते सूतर भगोती सू करो पिछाणो ।
 ते तो आपरा मुतलब रे काम जाणों ॥ ४४ ॥
 पछे निज आलोवण कीधी गोसालें ।
 जब चेलां कमाड जडयो तिण कालें ॥ ४५ ॥
 बीजू तो आगें हुतो उघाडो दुवारों ।
 तिणसूं चेला जडीयो उघाख्यों कमारो ॥ ४६ ॥
 जडवो उघाडवों नही चाल्यों कवाड ।
 ओ पिण दीसैं उघाडो विचार ४७ ॥
 ते पिण आढा न जडे कमाड ।
 त्यां विकला नें दीजें तीन धिकार ॥ ४८ ॥
 तो अनेक आका भाका ले उठें ।
 सुघ साधा री निंदा करे परपूठें ॥ ४९ ॥
 निरलजा हुवें ते मूल न लाजे ।
 न्याय चरचा करे त्यासूं दूरा भाजें ॥ ५० ॥
 जोड कीधी पालीसहर ममार ।
 आसोज सुदि दीज ने वृधवार ॥ ५१ ॥

ढाल : २८

दुहा

दुषम आरें पांचमें, हीण परी लोकां री बुध ।
 त्यांनैं साध नैं असाध दोनूं तणी, पूरी परती न दीसैं सुध ॥ १ ॥
 भेषघारी भागल तूटल फिरें, इण साध तणा भेष मांहि ।
 त्यारें माया ममता अति घणी, ते कह्यो कठा लग जाय ॥ २ ॥
 गांमा गांमा थानक त्यारे बांधीया, छ काय रें कर घमसांण ।
 नामें पर नामें त्यारें जूजूआ, त्यांमें पर रह्या मूढ अयांण ॥ ३ ॥
 चेला चेली करणरा अति लोभी, त्यारें लागी तिसणा लाय ।
 वेक विकल बालक विरध नैं, तुरत मूढलें मांहि ॥ ४ ॥
 त्यां भेष भांड्यो छें भगवान रो, वले छोडी सरम नैं लाज ।
 चेला चेली करण रें कारणें, करें छें अनेक अकाज ॥ ५ ॥
 वले ओर दोष सेवे घणा, ते पूरा कह्या नहीं जाय ।
 थोडा सा परगट करू, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ६ ॥

ढाल

[पाषंड बधसी आरे पाचमें]

जिण साधपणा रा गुण जाण्या नही रे, वले नहीं जाण्यो समकत रो सरूप रे ।
 एहवा विकलां नैं मूंड भेला करे रे, ते भेष ले बूडा भवजल कूप रे ।
 त्यांनैं साध म जाणो श्री भगवान रा रे ॥ १ ॥
 बूढा नैं मूंडे बालक रें लालचे रे, जाणें बालक होसी म्हारें भणणार रे ।
 पिण अं दोनूंइ पेटभरा पेटारथी रे, त्यांनैं सांग पेंहराय कहें अणगार रे ॥ २ ॥
 तिण बालक ने न्याती लेगा पकडनें रे, तिणने ग्रहस्थ कीयो छें भेष उतार रे ।
 ते बालक विकल थको रमतों फिरे रे, ते पिण चाल्या छें तिणरी लार रे ॥ ३ ॥
 तिण ने पाछों ल्यावण री आसा धारने रे, धरणों पाछों तिण ठामें जाय रे ।
 तोही हाथ न आयों त्यारें डावडो रे, जब फेर धरणो दीयो छें ताय रे ॥ ४ ॥
 कहें मानें पाछों सूपेदो डावडो रे, नहीं तों अणसण कर छोडूंथां उपर प्रांण रे ।
 कें हूं पाछो होय जासूं ग्रहस्थी रे, जोरी दावें लेजा सूं तिणनें तांण रे ॥ ५ ॥

*यह आँकड़ी प्रत्येक गाथा के अन्त में है ।

बले कजीयो कलेस कीयो तिण अति घणो रे,
 ओघड ज्यू उघाडा नाच्या लोक मे रे,
 तो पिण हाथे नही आयो डावडो रे,
 भूखां मूखां ते पिण यूं ही गयो रे,
 पहिला तों विकलां नें मूंड माहे लीया रे,
 तिणानें तो विकल निजरां देखी लीया रे,
 भेषघारी विलखा वेदल हूआ घणा रे,
 आसा अलूघा पाछा आवीया रे,
 पछें माहोमां मिलनें मतो कीयो रे,
 हिंवें बालक विण बूढों किण कामरो रे,
 इम जाणे ने बूढा ने पिण छोडे दीयो रे,
 ओ पिण भेष छोडेने हूवो ग्रहस्थी रे,
 कलेस कदागरो करे घणो रे,
 तपकर मरवा माडे उपरे रे,
 तिणमे भेषघाख्यां नें सामल जाण जो रे,
 यांरा चेहन देखे ने याने अटकल्या रे,
 जो सेंमल न हुवे तो कह दो एतलो रे,
 लडे भगडे ल्यायानें माहे ल्या नही रे,
 जो त्याग न करे तो तिण कजीया मझे रे,
 एहवा कजीया कराएने चेला करे रे,
 जो इतरो कहें कजीया मूल करो मती रे,
 तिणरी आसा छोडे नें निरदावे हुवे रे,
 सुस करेनें कजीयो मेटे किण विधे रे,
 तेतो कुटंब छोडेने पडीयो वितंब मे रे,
 एहवा विकलां नें साधु सरवे छे भेलीया रे,
 त्याने कर्म जोगें एहवा कुगुर मिल्या रे,
 कोइ मादो अकेलो ग्रह करला थकां रे,
 एहवो पिण दान लेता लाजे नही रे,
 मिनष आंतरीयो जूतो घुरडके रे,
 बले साता उपजावण साधा नें दीयो रे,
 कोइ घर छोडतो थानक मोल ले रे,
 बले परिग्रह पिण छाने सूपे ग्रहस्थ ने रे,

छोरा नें पाछो लेजावण काज रे ।
 त्यां भेष री मूल न राखी लाज रे ॥ ६ ॥
 बले फीटा पडीया छें लोकां माहे रे ।
 पछें काया होय घरणो दीयो उठाय रे ॥ ७ ॥
 पछें घरणो पाडयो पिण ठामे जाय रे ।
 तो ही न मटी विकला नें तिणरी चाहि रे ॥ ८ ॥
 जाणे कोइ न सरीयो म्हारे काज रे ।
 घणा लोका मे खोए लाज रे ॥ ९ ॥
 आपे भूडा दीठा छा लोका माहि रे ।
 तो इण बूढा ने बारे काडे दो ताहि रे ॥ १० ॥
 जब बूढो तो जाय बेठो तिण गांम रे ।
 जेसा हुता जेसोइज कीघों कांम रे ॥ ११ ॥
 बले देवें करडा करडा सराप रे ।
 छोरा ने पाछा ल्यावण री थाप रे ॥ १२ ॥
 पिण निश्चे तो जाणे श्री भगवत रे ।
 यारे छोरा सूं दीसे ध्यान अतंत रे ॥ १३ ॥
 इणने लेसां म्हे आसी जब वेंराग रे ।
 साचा हुवे तो कर दो इणरो त्याग रे ॥ १४ ॥
 सेंमल छे चेला करवा काजरे ।
 ते निरलजा मूल न आणे लाज रे ॥ १५ ॥
 म्हारे छोरा ने लेवण रा छे त्याग रे ।
 जब तो थोडा मे कजीयो जावें भाग रे ॥ १६ ॥
 तिणरे चेला री लागी तिसणा लाय रे ।
 सुमता नही दीसे तिणरे माहि रे ॥ १७ ॥
 त्यारी पिण अकल गइ दपटाय रे ।
 ते पिण खूता छे मोह मिथ्यात रे माहि रे ॥ १८ ॥
 घन उदके साधा रे थानक काज रे ।
 त्या विकलाने किम कहीजे मुनीराज रे ॥ १९ ॥
 घन उदके साधां रे थानक काज रे ।
 ते दान लेतां पिण नाणे लाज रे ॥ २० ॥
 जाणे साध रहसी तिण थानक माहि रे ।
 साधां ने साता उपजावण ताहि रे ॥ २१ ॥

बले साधां रें थानक करावण कारणें रे, लवें छें अउत तणों तो माल रे ।
 एहवा थानक जे साध भोगवें रे, त्यामें भव भवमें होसी घणा हवाल रे ॥ २२ ॥
 बले कहि कहिनें त्यांनं कितरो कहूं रे, नही छोडें मुरदादिक रो घन माल रे ।
 ते पिण नांम धरावें साधरो रे, आ चोडे देखों कुगुरां री चाल रे ॥ २३ ॥
 तिण परिग्रहा नें कहें छें थानक तणो रे, आप तों होय जाअें छें दूर रे ।
 पिण अंतरंग में जाणें छें घन आपरो रे, कपटी जाणेंनें बोले कूड रे ॥ २४ ॥
 जिणरों थानक छें तिणरो परिग्रहो रे, पिण ओर रो भेल नही तिलमात रे ।
 तिण थानक रा धगी धोरी जो साध छें रे, तो साधां रो परिग्रहो छें साख्यात रे ॥ २५ ॥
 तिण घन रा भेलू त्यांरा श्रावक हुवें रे, ते मिल नें मेले ठिकाणों जोय रे ।
 ते गुपत छांनं छें सामग्री मभे रे, ते लोकां में चावो न करे कोय रे ॥ २६ ॥
 ते व्याज वधें छें सामग्री मभे रे, त्यां सगलां रो जाणें छें साध नांम रे ।
 ते अंतरंग में जाणें छें घन नें आपरो रे, ओ सगलोइ आसी म्हारें काम रे ॥ २७ ॥
 जिणमें नांणों छें तिणरा घर थकी रे, चाहीजे ते वेंहरी ल्यावें जाण रे ।
 घी खांड कपडादिक देवें मोकला रे, तिणरो लेखो उ जाणें ते परमाण रे ॥ २८ ॥
 जो थानक निमतें पइसों चाहिजे रे, बले काठ खांपण नें मांडी काम रे ।
 जब पिण सामग्री मांहे भेलो करे रे, तिण परिग्रह न लेवा न दें तांम रे ॥ २९ ॥
 करलो काम पख्यां लेवा दे तेहनें रे, कें लेवा दे खोज भागण रे काम रे ।
 ते पिण मुतलब जाणें आप रो रे, विण मुतलब लेवा न दे तांम रे ॥ ३० ॥
 त्यामें कितरायक मांग्यां पाछो दे नहीं रे, जोरीदावें बेंठा छें मूंढो मार रे ।
 जब अें लाजां मरता पाछा बोलें नही रे, पिण छानें छानें भायां में करें पुकार रे ॥ ३१ ॥
 एहवो पोलांगो छें इण भेष मे रे, ठागो चलायो लोकां माहि रे ।
 जाल मांड्यो छें मोहु मिथ्यात रो रे, तिण मांहे पडें अग्यांनी आय रे ॥ ३२ ॥
 कदे उसभ कर्म त्यांरें उदें हुआ रे, जब वात चावी हुइ लोकां माहि रे ।
 पापें भरीयो घडो फूटे गयो रे, हिवें दोष छिपाया न छिपें ताहि रे ॥ ३३ ॥
 जब साव श्रावक सारा लाजां मरें रे, लोकां में हवो जाण फितूर रे ।
 जब दोष ढांकण री खन करें घणी रे, हिवें विधविध सूं चोडें बोलें कूड रे ॥ ३४ ॥
 त्यांनं परभव रो डर तों मूल दीसें नहीं रे, भूठ बोले दोषां नें देवें दाब रे ।
 एहवा साध श्रावक सगला बूडे गया रे, ते चिह्नगति में होसी घणा खुराब रे ॥ ३५ ॥
 कोइ श्रावक यांरा ते खाअें मांगनें रे, तिणनें दरावें रोकड दाम रे ।
 तिण मांहे सीर जाणें छें आपरो रे, इणरें होसी ते आसी म्हारें काम रे ॥ ३६ ॥
 उ मोल ल्यावें घी सकर सूखडी रे, बले चिरक पिण मेवा नें मिसठांन रे ।
 उ पिण खाअें छें नम मांनं जीतो रे, गुर नें पिण देवें अढलक दांन रे ॥ ३७ ॥

तिणरें निठ जावें खाता देतां थका रे,
 कांनी कांनी गांमा नगरां थकी रे,
 तिणनें फेर दरावें कर कर आंमना रे,
 चोरां कुत्ती मिली ज्यूं मिल गया रे,
 किणरे दोय सीख्यां रे सोदो वेचणो रे,
 गराग ठगणनें कपट दगो करे रे,
 मिनष आतरीयो जूतो घुरडके रे,
 ते पिण दरावे तिण श्रावक भणी रे,
 हू कहि कहि ने वले कितरो कहूं रे,
 त्यारा श्रावक भोला नें समझ पडे नही रे,
 त्यामें दोष बतावे थानक तणो रे,
 कहे थानक चाल्या छे अठारें जातरा रे,
 इम कहि कहि दोषीला थानक भोगवे रे,
 हिवे अठारें जातना थानक तेहनो रे,
 देवरों सभा जायगा पोतणी रे,
 लुंष हेठें पिण साघ 'उतरे रे,
 गुफा नें लोहारादिक नी साला मझे रे,
 चोह कमावे तिण ठामे पिण उतरें रे,
 क्रियाणासाला ने जगनें मडप मझे रे,
 परवत घरनें वले हाट मे रे,
 यामे दोषीला थानक तों एको नही रे,
 त्यामे साघरो तो थानक चाल्यो नही रे,
 थानक तो कहे छे अठारे जातरा रे,
 दोषीला थानक रा दोष छिपायवा रे,
 भोला नें भरमावें कपट दगो करी रे,
 पिण मन माहे मूल न जाणें सुभत्ता रे,
 भेपघारी भागल तूटल ओलखायवा रे,
 संवत अठारे ने बरस तेपने रे,

तो फेर सरू करें दातार रे ।
 परियग्रह मेलण नें करें तयार रे ॥ ३८ ॥
 वले उण कना थी ल्यावें छें आप रे ।
 ज्यूं यारें पिण आकर राखी छें थाप रे ॥ ३९ ॥
 जब एक जणों वणे दलाल रे ।
 ये पिण इण विघ टग ल्यावें माल रे ॥ ४० ॥
 घन उदकें राक गरीब नें ताहि रे ।
 तिणरी पिण आसा छें मन माहि रे ॥ ४१ ॥
 इण भेष माहे छें घोर अधार रे ।
 ते पिण बूडें छे त्यारी लार रे ॥ ४२ ॥
 जब भोला नें किण विघ दें भरमाय रे ।
 तिणसूं म्हे पिण रहा छां थानक माय रे ॥ ४३ ॥
 गाला गोर्ली कर देवें ताय रे ।
 जू जूओ नाम सुणो चितल्यांय रे ॥ ४४ ॥
 परब्राजक नो कह्यो असरांम रे ।
 अस्त्री नें पुरुष रमवाना आराम रे ॥ ४५ ॥
 वले गुफा परवत नी हुवें रसाल रे ।
 विरष व्यापत उद्यान नें गडसाल रे ॥ ४६ ॥
 सूनो घर नें मसांण छत्री माहि रे ।
 इत्यादिक जाचीनें रहे तिण माहि रे ॥ ४७ ॥
 ए सगलाइ वीर कह्या छे सिष्ट रे ।
 थानक माडीनें बेंठा ते भिष्ट रे ॥ ४८ ॥
 अे वारुवार कहे किण कांम रे ।
 वले दोषीला सेवण रा परिणाम रे ॥ ४९ ॥
 तिणसूं भोला जाणे थानक निरदोष रे ।
 यां विकला नें किण विघ होसी मोख रे ॥ ५० ॥
 जोड कीची छे सोजत सहर मझार रे ।
 आसोज विद इग्यारस नें मंगलवार रे ॥ ५१ ॥

दुहल

आधल कर्मी नें उदेसीक जे कीयों, ते तों सलध नें कल्पें नलहल ।
 भोगवें त्यलनें भलषुी कहुल, नहीं सलध तणी पलंत मलहल ॥ १ ॥
 आधलकर्मी उदेसीक भोगवें, त्यलनें नषेधल शुरी भगवलन ।
 त्यलनें कुण कुण कहल वतललवीयें, ते सुणों सुरत दे कलन ॥ २ ॥

ढलल

[भवलयरुण जलन आ०]

आधलकर्मी उदेसीक भोगवें त्यलनें, नलश्चें कहुल अणलचलरी ।
 दसवीकललक तीजे अघनें, तलणमें संकल म जलणों ललगलरी रे ।
 भवीयरुण जेवुु हलरदुय वलचलरी, एहवल कुगुर छें हलण आचलरी रे ।
 त्यलनें वलंघल हुवें घणी खुवलरी* ॥ १ ॥
 आधलकर्मी उदेसीक भोगवें त्यलनें, भलषु कहुल भगवंत ।
 दसवीकललक रें छठें अघनें, ते नलरणों करुु मतवंत रे ॥ २ ॥
 आधलकर्मी उदेसीक भोगवें त्यलनें, कहुल छें गृहसुथ नें भेषधलरी ।
 मलहल सलवध कलरुीयल ललगु कहुी त्यलनें, आचलरंग सेधल अघन मभलरी रे ॥ ३ ॥
 आधलकर्मी उदेसीक भोगवें त्यलरल, भलगल छहु व्रत जलणों ।
 आचलरंग दुजल अघन रें छठें उदेशें, तलहल जेय करुु पलछलणुु रे ॥ ॡ ॥
 आधलकर्मी उदेसीक भोगवें त्यलनें, नरकगलमी कहुल भगवलन ।
 ते उतरलघनेरे वीसमें अघनें, ते नलरणों करुु वृधवलन रे ॥ ५ ॥
 आधलकर्मी भोगवीयल अघुुगलतल जलअें, वले कहुलें छें अनंत संसलरी ।
 भगुुती पहलल सतक रें नवमें उदुशें, तलहल वुुहत कहुलें वलसुतलरी रे ॥ ६ ॥
 आधलकर्मी उदेसीक न कल्पें ते लेवें, तलणमें छें मुुुटी खुुड ।
 आचलरंग रें पहलें सुतखुुंघें, तलणनें कहु देीयुु भगवंत चुर रे ॥ ७ ॥
 आधलकर्मी एकवलर भोगवें, तलणनें चुुुमलसी प्रलरुधुुत देणुु ।
 पलण सदल नलरंतर थेटसू भोगवें छें, तलणरल प्रलरुधुुत रुु कलंइ कहुणुु रे ॥ ८ ॥
 आधलकर्मी में एकवलर भोगवें, तलणनें सबलुुं दुुुषण ललगुु ।
 सदल नलरंतर - थेटसू भुुुगवें छें, तलणनें प्रलरुधुुत रुु नहीं थलगुु रे ॥ ९ ॥

*यह आंकड़ी प्रत्येक गलथल के अन्त में है ।

साधां रे काजे थानक दडे लीपें जद,
 लाखा कोडां गमें तस जीवां नें माख्या,
 अनेक तस जीवा ने, जीवां माख्या,
 कुगुरां काजे जीव इण विघ मारे,
 सास उसास रंबी तस जीव नें माख्यां,
 दसासतखघ सुतर में कह्यो छे,
 चिगटरो तिरको न्हांखे' तिण ठामे,
 तिहां गार दड्यां लीप्या दर रूंधाय,
 पूतीकर्म भोगवे' तिण साघ नें,
 दोय पक्ष तपो सेवणहार कह्यो छें,
 तो पूतीकर्म दोष विचे' आघाकर्मि,
 सदा निरतर आघाकर्मि सेवे' छे,
 आघाकर्मि थानक जाण जाच सेवे' छें,
 त्यारे तो माहामोहणी कर्म वधे' छे,
 आघाकर्मि थानक जाण जाणनें सेवे,
 मिश्रभाषा बोले महामोहणी वाधे,
 आघाकर्मि थानक जाण जाणनें सेवे,
 त्यांरा श्रावक पिण त्यारी साख भरे छे,
 आघाकर्मि तो थानक सेवे' उघाडों,
 त्यारा जेसाइ सामी नें जेसाइ सेवग,
 केइ श्रावक पिण त्यारा भारीकर्मा,
 आघाकर्मि नें निरदोष कहें छे,
 आघाकर्मि उदेसीक भोगवे त्याने,
 ठाणाअंग दसमें ठाणें कह्यो अर्थ मे,
 आघाकर्मि उदेसीक भोगवे त्यानें,
 ते सुध बुध वाहिरा जीव अग्यांनी,
 आघाकर्मि रा दोप सूतर सूं वताया,
 हिवे मोल लीया रा दोष कहू छूं,
 मोल रा लीया भोगवे त्याने,
 दसवीकालकं रे तीजें अघेने,
 मोलरो लीवों भोगवे त्याने,
 उत्तराघेन रें बीस मे अघेने,

कीड्यां ने माकाविक देवे दाटी ।
 त्या विकलां ने होसी गति माठी रे ॥ १० ॥
 अनेक जीवा उपर दीधी माटी ।
 त्यारी अकल आडी आइ पाटी रे ॥ ११ ॥
 माह मोहणी कर्म बंधाय ।
 ते पिण विकलां ने खबर न काय रे ॥ १२ ॥
 तठें कीड्यां लाखां गमे आवें ।
 लाखागमे कीड्यां मारी जाय रे ॥ १३ ॥
 कह्यो छें गृहस्थ नें भेषधारी ।
 सुयगडाअंग सूतर मम्मारी रे ॥ १४ ॥
 दोष विशेष छें भारी ।
 तेतो निश्चे नही अणगारी रे ॥ १५ ॥
 वले साघ वाजे छें अन्हाखी ।
 दसासतखघ सुतर छें साखी रे ॥ १६ ॥
 पूछ्यां पाषरा बोलणी नावें ।
 कूड कपट सूं काम चलावे रे ॥ १७ ॥
 पूछ्यां थका बोलें कूड ।
 ते पिण गया बहुती रे पूर रे ॥ १८ ॥
 वले भूठ बोले जाण जाण ।
 त्यारो बिगड्यो छे जाबक घाण रे ॥ १९ ॥
 भूठ बोलता न डरें लिंगार ।
 ते बूड गया कालीघार रे ॥ २० ॥
 साघ सरघे ते निश्चे मिथ्याती ।
 मूढा तणी म जाणो बाती रे ॥ २१ ॥
 साघ सरघें त्यारें भारी कर्मों ।
 ते किम पामे जिण घर्मों रे ॥ २२ ॥
 वले सूतर मे दोष अनेक ।
 सुणजो आण ववेक रे ॥ २३ ॥
 निश्चे कहा अणाचारी ।
 तिणमें सका म जाणों लिंगारी रे ॥ २४ ॥
 नरकगामी कहा सगवत ।
 ते निरणों करो मतवंत रे ॥ २५ ॥

मोलरो लीयो नहीं कल्पें ते वेंहरें, तिणमें ' छें मोटी खोड ।
 कह्यो छें आचारंग रे पहिलें सतखें, तिणनें कह दीयो भगवंत चोर रे ॥ २६ ॥
 मोलरो लीयो भोगवें त्यानें, भिष्ट कह्या भगवंत ।
 दसवीकालक रे छठें अघेने, ते निरणो करों मतवंत रे ॥ २७ ॥
 मोल रो लीयो भोगवें त्यांरा, सुमत गुपत महाव्रत भगा ।
 नसीत रें जगणीस में उदेशें, व्रत विहुणा छें नागा रे ॥ २८ ॥
 मोल रो लीयो एकवार भोगवें, तिणनें चोमासी प्राच्छित देणों ।
 पिण सदा निरंतर भोगवें तिणनें, प्राच्छित रों नहीं परमाणो रे ॥ २९ ॥
 मोल रो लीयो एकवार भोगवें, तिणनें सबलों दोषण लागो ।
 पिण सदा निरंतर भोगवें तिणनें, प्राच्छित रो नहीं थागो रे ॥ ३० ॥
 मोल लीघा रा दोष सूतर सूं बताया, वले सूतर माहे छें अनेक ।
 हिवें नित पिड वेंहख्यां रा दोष कहुं छुं, ते सुणजों आण ववेक रे ॥ ३१ ॥
 नितरों नित एकण घर रों वेंहरें, त्यानें निश्चें कह्या अणाचारी ।
 दसवीकालक रे तीजें अघेनें, तिणमें संका म जाणों लगारी रे ॥ ३२ ॥
 नितरों नित एकण घर रों वेंहरें, त्यानें भिष्ट कह्या भगवंत ।
 दसवीकालक रे छठें अघेनें, ते निरणो करों मतवंत रे ॥ ३३ ॥
 नितरो नित एकण घर रो वेंहरे, त्यानें नरक गांमी कह्या भगवान ।
 उत्तराघेन रें वीसमें अघेनें, ते निरणो करों बुधवान रे ॥ ३४ ॥
 नितरों नित एकण घर रों वेंहरे, तिणमें छें मोटी खोड ।
 आचारंग रे पेंहलें सतखें, कह दीयो भगवंत चोर रे ॥ ३५ ॥
 नितरो नित एकण घर रों वेंहरे, तिणनें मासीक प्राच्छित देणों ।
 पिण सदा निरंतर वेंहरें तिणनें, प्राच्छित रों नहीं प्रमाणो रे ॥ ३६ ॥
 कोइ भेषधारी भागल नित रो नित वेंहरे, एकण घर रों आहार ।
 त्यानें पूछ्यां थका पाधरा नही बोलें, भूठ बोलें विविध प्रकार रे ॥ ३७ ॥
 नित को एकण घर रो धोवण तों वेंहरां, नित पांणी न वेंहरां लगार ।
 धोवण नें च्यार आहार म्हें न गिणें, एहवों भेषधार्यां रे अंधार रे ॥ ३८ ॥
 तेहीज नित नित कलाल रा घर सूं, वेंहर ल्यावें छें उंनो पांणी ।
 चोडे धाडे पीढ्यां लग वेंहरतां आवें, वले भूठ बोलें जाण जांणी रे ॥ ३९ ॥
 चोडें भूठ सभा में बोल्यो, नितका पांणी न वेंहरां तांम ।
 तिण भूठ तणों उघाड कीयो जब, लीयो वडां रो नांम रे ॥ ४० ॥
 जो साचो हुवें तो सूतर माहे काढ बतावत, बडां रों नहीं लेतो नाम ।
 तिणरा बडेरा तो अणाचारी उघाडा, त्यांमें साधणो नहीं तांम रे ॥ ४१ ॥

भगवत भाष्या सूतर ने उथापें, वडा लारे सेवे अणाचार ।
 ते वूड गया बडा सहोत अग्यानी, ध्रिग त्यारो जमवार रे ॥ ४२ ॥
 वीहार करें जव नित को वेहरे, ते नितको वेहखो गिणे नाही ।
 इण विष कूड कपट करे नित वेहरे, ताजो आहार लेवारे ताडं रे ॥ ४३ ॥
 वीहार तणो नाम लेने अग्यानी, चोडे सेवे अणाचार ।
 आ आप छादे थाप कीधी अणहुती, ते विटल हुआ वेकार रे ॥ ४४ ॥
 केइ तों नित रों नित एकण घर नो, वेहरे घोवण ने पांणी ।
 ओ पिण उघाडो अणाचार सेवें, निहर थका जाण जाणी रे ॥ ४५ ॥
 केइ कहे म्हारें बधी गोचरी छे, तठें तो म्हे एकतर जावो ।
 बाकी फुंटर घर मोकलाय देवा म्हे, तिहां थो मनमाने सोइ ल्यावो ॥ ४६ ॥
 जको वेहरें तिणें नही जांणो, बीजा रे अटकाव छे नाही ।
 इण विष कूड कपट करें नित वेहरें, भोगवे सर्व टोला मांही रे ॥ ४७ ॥
 एकण टोला री एकण गाव मांही, ते जुदी जुदी थानक उतरे छें ।
 आरज्यां रहे छे अनेक, सगल्या रे सभोग छे एक रे ॥ ४८ ॥
 ते आपरें गोचरी जू जूइ जावे, ओर रा लीया घर नही टाले ।
 ते सगली जणी आहार पांणी ल्याए, गुर ने आण दिखा छें रे ॥ ४९ ॥
 सगला रो आंण्यो आहार गुर भोगवे छे, नित पिड रो न करे टालो ।
 एहवा भेषधारी भागल साध बाजें, त्या आत्मा ने लगावो कालो रे ॥ ५० ॥
 एक टोला रा नित जू जूओं वेहरें, एकण घर रों आहार पांणी ।
 त्या विकलां ने साध सरधें छें मूरख, ते पूरा छें मूड अयाणी रे ॥ ५१ ॥
 केइ भेषघास्थां रे इग्यारे सभोग, एक भेलो न करे आहार ।
 बधीयो घटीयो आहार देवे लेवे, वले माहोमा करे मनवार रे ॥ ५२ ॥
 आहार तणा सभोग ने तोख्यो, ते पिण खावा रें काज ।
 एक माडले आहार जू जूओ करता, निरलजा मूल न लाजे रे ॥ ५३ ॥
 आहार पाणी माहोमा देवे लेवें, वले कहे म्हारे नही सभोग ।
 एहवा भूठबोला भागल भेषधारी, त्यारें लागो जोगने रोग रे ॥ ५४ ॥
 आघाकर्मी ने मोल रो लीघों, नितकों एकण घर रों आहार ।
 ए तीनां दोषा रो फल ओलखायो, अल्प मात कह्यो विस्तार रे ॥ ५५ ॥
 आघाकर्मी नें मोलरो लीघो, नही बहरणों करडे काम ।
 निरदोषण नें नितपिड आहार, कारण पख्यां लेंगों कह्यो ताम रे ॥ ५६ ॥
 आघाकर्मी ने मोलरों लीघो, ओ तो निचें उघाडो असुघ ।
 नित पिड तो ढीला परता जांणी वरज्या, आ तीथंकरा नी वुघ ॥ ५७ ॥

वडा लारे सेवे अणाचार ।
 ध्रिग त्यारो जमवार रे ॥ ४२ ॥
 ते नितको वेहखो गिणे नाही ।
 ताजो आहार लेवारे ताडं रे ॥ ४३ ॥
 चोडे सेवे अणाचार ।
 ते विटल हुआ वेकार रे ॥ ४४ ॥
 वेहरे घोवण ने पांणी ।
 निहर थका जाण जाणी रे ॥ ४५ ॥
 तठें तो म्हे एकतर जावो ।
 तिहां थो मनमाने सोइ ल्यावो ॥ ४६ ॥
 बीजा रे अटकाव छे नाही ।
 भोगवे सर्व टोला मांही रे ॥ ४७ ॥
 ते जुदी जुदी थानक उतरे छें ।
 सगल्या रे सभोग छे एक रे ॥ ४८ ॥
 ओर रा लीया घर नही टाले ।
 गुर ने आण दिखा छें रे ॥ ४९ ॥
 नित पिड रो न करे टालो ।
 त्या आत्मा ने लगावो कालो रे ॥ ५० ॥
 एकण घर रों आहार पांणी ।
 ते पूरा छें मूड अयाणी रे ॥ ५१ ॥
 एक भेलो न करे आहार ।
 वले माहोमा करे मनवार रे ॥ ५२ ॥
 ते पिण खावा रें काज ।
 निरलजा मूल न लाजे रे ॥ ५३ ॥
 वले कहे म्हारे नही सभोग ।
 त्यारें लागो जोगने रोग रे ॥ ५४ ॥
 नितकों एकण घर रों आहार ।
 अल्प मात कह्यो विस्तार रे ॥ ५५ ॥
 नही बहरणों करडे काम ।
 कारण पख्यां लेंगों कह्यो ताम रे ॥ ५६ ॥
 ओ तो निचें उघाडो असुघ ।
 आ तीथंकरा नी वुघ ॥ ५७ ॥

भेषधारी तो दोष अनेक सेवे छें, ते पूरा कह्या न जाय ।
 वले साधपणा रो नाम धरावे, ते भोलां नें खबर न काय रे ॥ ५८ ॥
 अं तीनू दोष तों जाण जाण नें सेवे, वले वद वद नें बोले कूड ।
 त्यांरो घाण रो घाण बिगड गयो जावक, ते गया वेहती रे पूर रे ॥ ५९ ॥
 अं तीन दोष ओलखावण काजे, जोड कीधी छें पाली मभार ।
 संवत आठारे पचावन वरसें, भादरवा विद दसम बुधवार रे ॥ ६० ॥

ढाल : ३०

ढुहा

भेषधारी लांबी तपसा करे, प्रगट कर दे लोका माहि ।
वले बतावे दिन पारणा तणों, जाणे दीधी डबडबी बजाय ॥ १ ॥
त्यामे कोइ लांबी तपसा करे, केइ जस महिमा काम ।
केइ पेट भराई कारणे, आछो आहार खावा रा परिणाम ॥ २ ॥
ज्यू ज्यू सरावे तेहने, ज्यू ज्यू फल फूले होय जाय ।
ज्यू ज्यू कर्म बघे छें चीकणा, तिणसू ससार बघतो जाय ॥ ३ ॥
पारणा रो दिन चावो करे, आछो आछो खावा रे काज ।
सुघ अमुघ पिण वेहरता, मूल न आणे लाज ॥ ४ ॥
सुघ साघ लांबी तपसा करे, चावी न करे लोका माहि ।
वले न बतावे उण दिन पारणो, दोष लागतो जाणीने ताहि ॥ ५ ॥
लांबी तपसा चावी नही करे, त्याने कपटी कहे छे मूढ ।
उलटा दोष बतावे छे तेहमे, कर कर कूडी रूढ ॥ ६ ॥
लांबी तपसा रो पारणो, चावो कीया दोष लागे ताय ।
तिणरा भाव भेद परगट करू, ते सुणजों चित्त ल्याय ॥ ७ ॥

ढाल

[रे भवियण जिन आशा सुसकारी]

केइ भेषधारी लांबी तपसा करे जब, परगट करे लोका रें माहि ।
वले पारणा रो दिन कहे लोका मे, जाणे डबडबी दीधी बजाय रे । भणियण ।
आत्मकाय विगोवो, ओछा देवज पेट रे कारण ।
भोला लोकां ने काय डबोवो रे, परभव साहमों जोवो ॥ १ ॥
त्यारा श्रावक पिण ववेक रा विकल, जिण घर्म री रीत न जाणे ।
तपसी ने दान देवा रे कारण, अें पिण पारणो साथे आणे रे ॥ २ ॥
अे पिण पारणा रो दिन कहि रे ग्रहस्थ ने, त्याने पिण तपस्या करावे ।
आप तणा खावा नें काजे, त्याने पारणो साथे अणारे रे ॥ ३ ॥
ग्रहस्थ ने इग्यारस सवछरी रो, उपवास करताने नही करायों ।
दूजे दिन त्याने उपस कराए, पारणों आप साथ अणायो रे ॥ ४ ॥
अें पेटरे कारण ग्रीधी थका पापी, आरंभ करावणरो डर नाणें ।
त्याने श्रावक पिण तेसाइज मिलीया, ते विकलां नें विकल न जाणे रे ॥ ५ ॥

आपरा पारणा रो तो मिस करें, आरंभ करें छें विविध प्रकार ।
 तिणमें तपसी तणों भाव मेलें अग्यांनी, गुर सहित बूडा कालीघार रे ॥ ६ ॥
 पाछली रातरा उठ सवेरा, ताकीद सूं चूल धकावें ।
 उताबल नीपजावें असणादिक, जाणें रखे तपसी फिरजावे रे ॥ ७ ॥
 कोइ तो घनागरों कर राखें, कोइ करें सीरादिक तांम ।
 कोइ सूंठ कूटेणें करे अलोइ, तपसी नें वेंहरावण रे कांम रे ॥ ८ ॥
 कोइ दूध उनोकर अलगो मेलें, कोइ मोल लोई आवें तांम ।
 कोइ हाट थकी घरे आण राखें, तपसी नें वेंहरावण कांम रे ॥ ९ ॥
 इत्यादि अनेक असुध दरवां नें, आगा पाछा मेले राखें तांम ।
 असुध नें सुध करता नहीं डरपें, वेंहरावण रा आण परिणाम रे ॥ १० ॥
 त्यांरा गुर पिण त्यांने तेंसाइ जाणें, असुध वेहरता संक नहीं आणें ।
 सुध असुध लेता नहीं संके, त्यां चित दीयो छें खाणें रे ॥ ११ ॥
 साघां नें दांन देवाने काजे, प्रावणा आघा पाछा जीमावें ।
 ते तो दोष बयालीस में दोष छठों छें, ज्यूं अं पारणों साथे अणावे रे ॥ १२ ॥
 आणंद आद दे श्रावक अनेक हूआ छें, त्यांने सुतर माहे वखांप्या ।
 त्यां साघां नें दांन देवारे काजे, पारणा साघां साथे न आण्या रे ॥ १३ ॥
 तपसी तणा पारणा रे दिन, सामग्री ना घर मोटका जाण ।
 आछो आछो आहार देता जाणें तिण घर, पातरा मांडें आण रे ॥ १४ ॥
 वास वास में घर लांबा पातला हुवे ते, त्यांने तों देवे टाल ।
 वास वास माहे आहार आछो देवे छें, त्यां घर जाअें संभाल रे ॥ १५ ॥
 समदांणी गोचरी नें छोडेनें, यां गघा गोचरी मांडी ।
 एहवा भेषचारी पेटभरा छें पापी, त्यांरी चिहंगति में होसी भांडी रे ॥ १६ ॥
 कदा मोटके घर आहार आछों न देवे, तो पिण तिण घर वेहरें नांही ।
 रसग्रीवी ताजों आहार गवेषें, ताणा वेजा त्यांरा घट मांही रे ॥ १७ ॥
 तपसी रें तों आहार अल्प चाहीजें, ते आवें थोडा घर मफ्फारो ।
 तिण तपसी तणा पारणा रें दिन, सगला रह्या छें मूंह फाडो रे ॥ १८ ॥
 उण दिन तो तपसी रें ओले सगला, ल्यावे सरस आहार ।
 कांनी कांनी सूं घर संभाल संभाले, जाणें पूजणो मांड्यो तेवार रे ॥ १९ ॥
 ते आहार तपसी नें तपसी रा संभोगी, मिलनें सगलाई खावे ।
 उण तपसी लारे सगला हूआ त्रिपता, तिणसुं तपसी तणा गुण गावे रे ॥ २० ॥
 तपसी लारे सगलाइ त्रिपता हुआ, जाणें आज हूआ म्हें निहाल ।
 मुहपती बांधेने भेष लजायो, मांड्यो नाटकीया वालों ख्याल रे ॥ २१ ॥

नाटकीयो वरत उपर खेले,
नीचे उभा ते करे . धीग धीगा,
नीचला धीग धीगा तो कीधा घणाड,
दांन आयों ते नाटकीयो नाच्यो तिणसूं,
नाटकीयो वरत उपर नाच्यो ते,
ज्यूं यारें पिण लावी तपसा करे ते,
लावी तपसा रे पारणे तपसी जाणेने,
वले गोचरी मे गमतो आहार जाणेने,
गरढा गिलांण रोगी तपसी रे कारण,
यारें ओले भेषधारी सगला,
इण रीते ताक ताक आहार गवेपे,
एहवा भेषधाख्यां मे चारित नाही,
इह लोक रा अर्थी तपसा करे त्यारा,
ते तपसा नें परगट करदे लोका मे,
साधु नें लाबो तप करे जब,
ग्रहस्थ ने कहणों जिण वरज्यो,
जोग संग्रह ना बोल बतीस चाल्या छें,
अजाण्यो तप साध ने करणो,
वले समवाअग चोथा अग माहे,
त्यां पिण अजाण्यो तप करणों,
वले उत्तराधेन इगतीस मे अघेनें,
तिहां पिण बतीस जोग संग्रह छे,
वेसाली नगरी वीर पधाख्या,
त्यां पिण तपसा ने पारणा रो दिन,
त्यानें दांन देवा री भावना भाइ,
छानी तपसा मगवंते कीधी,
अभिग्रह करे ते न कहे लोकां नें,
ज्यूं लांबी तपसा रो पारणों जाणे जब,
एक आदि देइ दातरी तपसा करे ते,
ग्रहस्थ नें कहां दोष लागेतो जाणों,
साध रें महीना रो पारणो जाण्यो,
तिणरी जायगा मे पारणों करे साध,

नाच अनेक विध आणे .
ए पिण दान माहे सीर जाणे रे ॥ २२ ॥
पिण दांन तों नाच सारू आवें .
पिण मिल ने सगलाड खावे रे ॥ २३ ॥
सगला कुटंब रो काम चलावे .
पारणे सारा ताजो खावे रे ॥ २४ ॥
गमतो आहार आणेने देणो .
वले मागी मांगीने लेणो रे ॥ २५ ॥
गमतो आहार गवेपे ते लेखें .
ताजो ताजो आहार गवेपे रे ॥ २६ ॥
ते पिण खासी सराय सराय .
चारित हुवे त्यारो कोयला थाय रे ॥ २७ ॥
चोखा नहीं परणाम .
खावा पीवा जस कीरत काम रे ॥ २८ ॥
प्रछन छाने करणो .
तिणरो आवसग मे निरणों रे ॥ २९ ॥
तिण मे सातमो बोल पिछाणो .
अग्यात कुल गोचरी जाणो रे ॥ ३० ॥
जोग संग्रह ना बोल बतीस .
इम भाष गया जगदीस रे ॥ ३१ ॥
प्रश्नव्याकरण दसमा अघेन माहि .
नांम मात्र कह्या जिणराय रे ॥ ३२ ॥
तिहा पचख दीया मास च्यार .
किणनें कह्यो न दीसें लिगार रे ॥ ३३ ॥
च्यारू महीना जीर्ण सेठ .
ओ सुघ ववहार छें नेट ॥ ३४ ॥
जाणे रखे कोइ दोष लगवें .
केई भोला असुघ वेंहरावें ॥ ३५ ॥
ग्रहस्थ नें न कहे ताम .
लांबी तपसा पिण जाणों आम ॥ ३६ ॥
वाइ सीरो करने वेंहरायो .
तिणरो सोना रो वारलों लायो रे ॥ ३७ ॥

कर्म जोगें साध नें वमण हूइ जब, साध रो चित्त आयों ठिकाणें ।
 जब आप तगो अवगुण पिण सुइयों, आहार नें पिण असुध जाणें रे ॥ ३८ ॥
 गाढों निरणों करने सीरो न लीघों, उण पिण सीरों मोनें कर दीघों ।
 ते आहार कीयां म्हारी भिष्ट हुइ मत, तिणरो बारलों चोर मे लीघो रे ॥ ३९ ॥
 बाइ तो सीरों करे कर्म बांध्या, बले बारलो दीघो खोयो ।
 आ बाइ तो दोनूं प्रकारें बूडी, म्हें पिण चारित्त डबोयो रे ॥ ४० ॥
 म्हारा पारणा रो दिन बाइ जाण्यो तो, तिणसूं ए कर्म हूवों भारी ।
 ए सबली विचार तिहां थी निकलीयो, आयो बाइ रा घर मभारी ॥ ४१ ॥
 बाइ नें साध बोलाए साध, बारलों पाछो दीघों ताय ।
 पछें सगली बात सुणाए बाइ नें, ओलंभो दीयो तिणनें समभाय रे ॥ ४२ ॥
 सीरो असुध खायों तिणसूं बारलो लेगों, जब तूं तो ओर रे माथे देती ।
 इण पाप थकी परभव दुखपाती, अठे पिण घणा घमेडा लेती ॥ ४३ ॥
 आ कथा तो भेषधारी जाणें छें, ते कहि कहि घणी दिहावें ।
 पिण पोतें तो तपसा लांबी करे जब, घणा लोकां नें तुरत जणावे रे ॥ ४४ ॥
 लांबी तपसा नें पारणा रो दिन, घणा लोकां में देवें फेलाइ ।
 पेटभरा इह लोक रा अर्थी, जाणें डबडवी चोडे वजाइ रे ॥ ४५ ॥
 बाइ तों पारणों विना जांणायों जाण्यो, तिणसूं हूवो विगाडों ।
 तो आपरें मुतलब तपसा जणावें, ते भव भव होसी खुवारो रे ॥ ४६ ॥
 गाला गोली करे साध असुध लेसी, असुध आहार वाइ ज्यूं देसी ।
 ते दातार नें लेवाल बेहुइ, आगे घणा घमेडा लेसी रे ॥ ४७ ॥
 इह लोक रें अर्थे तपनहीं कारणों, परलोक रे अर्थे न करणों ।
 कीरत सलागादिक रे पिण अर्थे न करणों, दसवीकालक नव में अधेन निरणों ॥ ४८ ॥
 तप करणों कह्यो एक निरजरा नें अर्थे, ते लोकां में क्यां नें पमासी ।
 जे तप करने पमासी लोकां में, तिणरा फल आछा किम पासी ॥ ४९ ॥
 केई इह लोक रें अर्थे करें त्यांसूं, छांनें केम रहवायो ।
 परगट लोकां में कीयां विण तिणरो, जाणें पेट आफर गयो ताहो रे ॥ ५० ॥
 इह लोक रें अर्थे तप करेनें, ठाला बादल ज्यूं करे ओगाज ।
 मोटी तपसा सूं लेनें पारणा तांइ, जाणें ढीबकी रही छें बाज रे ॥ ५१ ॥
 पांच सात तांइ मोटो तप नही दीसे, मोटो तो पख मासादिक जाणो ।
 एहवो मोटकों तप लोक जाणें तो, दोष लागण रो दीसें ठिकाणो रे ॥ ५२ ॥
 मोटा तप रो पारणों कहां लोकां में, गुण तो कांइ न दीसें ।
 दोष लागतो उवाडों दीसें तिणसूं, छांनो तप कह्यो जगदीसें रे ॥ ५३ ॥

कोई भेषधारी भागल फिरें एकेलो, ते तपसी रो नाम धरावें ।
 बेलें बेलें पारणों कहेकहे, लोकां मे ठागो चलावें रे ॥ ५४ ॥
 तपसी तणों नाम ले ले कपटी, ठग ठग लोका रा माल खावें ।
 जाणें मॉनिं तपसी लोक जाणे तो, आछो आछो आहार बेंहरावें रे ॥ ५५ ॥
 तिणरी भोला लोकां नें तो ठीक नही छे, तपसी जाण आछो बेंहरावें ।
 इणरा तप तणो ठागों नही जाणें, तिणसूं लोक ठागि रे ॥ ५६ ॥
 ते डील तणों घट पुट थयों छे, बले लुटपुट डीला सनूरो ।
 बले चाल पिण तिणरी सेठी देखें, बुधवंत जाण लीयो फित्तूरो रे ॥ ५७ ॥
 लूखो सूको सरीर तपसी तणो हुवे, बले सरीर हुवे तेज रहीत ।
 बले तपसी तणा लोही मांस डीला हुवें, चलगत हुवे बेराग सहीत रे ॥ ५८ ॥
 केइ चुतर विचक्षण डाहा हुवे ते, दोया नें रूडी रीत पिछाणें ।
 तपसी नें तों तपसी जाणेंले, कपटी नें कूडो जाणें रे ॥ ५९ ॥
 एहवा भेषधारी भागल भिष्टी नें, एहवो भागल भिष्टी मिलें बाणों ।
 तों अँ ठग ठाने माल खावें लोकां रा, त्यारी भोला नें नही पिछाणो रे ॥ ६० ॥
 भेषधाखा तणा किरतब ओलखावण, जोड कीधी नाथदुवारा मभार ।
 समत अठारें वरस छपनें, काती सुद आठम मंगलवार रे ॥ ६१ ॥



ढाल ३१

[प्रभव०]

मोची तणों थो दीकरों, ते गयों देसांतर तांम ।
 आगें काल कीयों राजा तिहां, मोची गयों तिण ठंम ॥ १ ॥
 पुत्र नहीं तिण राय नें, जब किणनें बेंसाणें पाट ।
 अमराव सहू नें मित्रवी, मिलिया थाटो थाट ॥ २ ॥
 माहो माहि मिसलत करी, हथपी सिणगारो आज ।
 कुंवरी बरमाला घालसी, तिणनें बेंसाणां राज ॥ ३ ॥
 ए वात ठेंहराइ मिलीनें सहू, हिवे मेल्या राणोंरांण ।
 तिण स्वयंवर मंडप मभे, मोची पिण उभों अण ॥ ४ ॥
 तिण मोची रा गला मभे, कुंवरी घाली बरमाल ।
 दीठें रूप रलीयांमणो, रायपुत्र जाण्यो सुखमाल ॥ ५ ॥
 मंत्रीसरां मोची नें पूछीयों, तुमनों कुण कुल कुण जात ।
 जब इण कह्यो खत्री कुल जात छां, उंचो गोत कह्यो विल्यात ॥ ६ ॥
 इम सांमल सहू हरखीया, परणाइ राजकुमारी ।
 राज बेंसाणें राजा कीयों, मोची नें तिणवारी ॥ ७ ॥
 मात पिता छें मोची तणा, तिण देस में पडीयो काल ।
 मउ साथे आया तिण नगरीयें, तिहां मोची बेठें सरवर पाल ॥ ८ ॥
 तिण मातपिता नें ओलखे, पणां पख्यो छें आय ।
 समभाए ल्यायों सहर में, त्यां पिण दीधी जात छिपाम ॥ ९ ॥
 मोची मातपिता सहोत सूं, सुखे राज करें तिणवार ।
 पिण जात सभाव मिटें नहीं, त्यांरो त्यांसूं पडीयों उचाड ॥ १० ॥
 बहुना पगनी मोचडी, तिणरी कूट गइ छें तुट ।
 जब सुसरें तिण मोचडी तणी, चोखी लीधी कूट ॥ ११ ॥
 कूटी ले तो देखीयों, सुसरा नें तिणवार ।
 सांसो पडीयों तेहनें, जाण्यो खाधी वात विकार ॥ १२ ॥
 राजा दीसें रलीयांमणों, मन मान्यो मिलीयों मेल ।
 कूटी सांझों भाली जाणीयो, न्यूं दीसें जात में मेल ॥ १३ ॥
 कूटी अहलाणें जाणीयो, आ जात दीसें छें पोची ।
 ओ राज अंस दीसें नहीं, सकेत जात रो मोची ॥ १४ ॥

तिण रात घणी ने पूछीयो, एक अरज हमारी सुणसो ।
 हुवें जेसी फुरमावो मो कनें, आप जात रा कुणसो ॥ १५ ॥
 तू तो म्हारी अस्त्री, हूं छूं थारो वर ।
 पांणी तो पीधां पछें, हिवें काई पूछें छे घर ॥ १६ ॥
 जब बलती रायकुवरी कहे, हूं अस्त्री ने ये वर ।
 जो भेल हुवें तुम जात मे, तो जातों दीसे घर ॥ १७ ॥
 जो पहली मोने जताय दो, तो काई बाधे लेउं वात ।
 परधान कामदार प्रोहत मणी, तेढाउ रातोरत ॥ १८ ॥
 इणनें वार वार पूछ्यो घणो, जब ओ पिण उडो आलोची ।
 थारें करणो वेंसों कर लीजो, हू छू जात रो पिण मोची ॥ १९ ॥
 जब रातोंरात बोलवीयो, रायकुवरी परधान ।
 बिगडी बात सुवारलों तो, थे पूरा बुववान ॥ २० ॥
 वले राजा कहे परधान नें, तूं गलो हमारो काट ।
 हिवे ढील म कर इण काम री, किण री मत जोए वाट ॥ २१ ॥
 जब परधान कहे किण कारणे, इसडी बात करो छो पोची ।
 जब राजा कहे हू राजा नही, हू छूं जात रो मोची ॥ २२ ॥
 आ बात सुणे राजा तणी, परधान पिण पाम्यो हरख ।
 ओ पिण जात हीणो हूंतो, इणरेइ मिट गइ मन धरक ॥ २३ ॥
 ओ इहा देइ बोलीयो, पगमाल रह्यो छे लूंब ।
 मारी चिता मूल करो मती, हूं जात तणो छूं डूंब ॥ २४ ॥
 जब राज कहे तूं भूठ बोलनें, रखे पाडें म्हारी आव ।
 जब महिलां मांहे इंबडे, लेइ बाजाइ रबाव ॥ २५ ॥
 हिवे तेढावो कामदार नें, उण सू गाढी बाधो वात ।
 जो आपे चावा हुवां, तो उ करसी दोगा री घात ॥ २६ ॥
 इणनें पिण तेढावीयो, ते पिण आयो रातोरत ।
 राजा परधान कहे तेहनें, तूं म्हा दोगा री कर घात ॥ २७ ॥
 जब कामदार कहे किण कारणे, इसी कहो थे वात ।
 जब राय परधान दोनू कहे, म्हांरी बिगड गइ वात साख्यात ॥ २८ ॥
 हू मोची ओ इंबडो, म्हे ठगा सू खावो राज ।
 हिवें गलो काट तूं म्हारो, ज्यूं रहे दोगा री लाज ॥ २९ ॥
 इण वात सुणे दोनूं तणी, कामदार हरप्यो तिणवार ।
 मिट गइ चिता तेहनी, हिवें डर नही रह्यो लिंगार ॥ ३० ॥

थे चिता मत राखो माहरी, मोसूं मत जावो खोबी ।
 थे तो मोची नें डूब छो, हूं पिण जात रो घोबी ॥ ३१ ॥
 जब राजा घोबी नें कहे, रखे बात करें तूं फीटी ।
 जब घोबी महिलां मभे, दीधी हरष सूं सीटी ॥ ३२ ॥
 हिंवें तीनूं जणां मतों कीयो, हिंवें ल्यावो प्रोहित बोल्या ।
 बात चावी हुवें आपणी, तो ओ तीनूं देवें मराय ॥ ३३ ॥
 हिंवें प्रोहित नें बोलवीयो, तिणहीज रात मभार ।
 कहें प्रोहित नें तीनूं जणां, महां तीनां नें तूं मार ॥ ३४ ॥
 जब प्रोहित कहें किण कारणे, कळं तीनां री घात ।
 जब कहें तीनूंइ तेहनें, म्हांरी विगडी बात साख्यात ॥ ३५ ॥
 हूं राजा तो मोची अछूं, ओ डूब छें परघान ।
 कामदार घोबी हूवों, म्हें तीनूं नही सुघमानं ॥ ३६ ॥
 म्हां तीनां नें तूं मारसी, तो म्हांरी सोभा रहसी ताम ।
 उघाड न पडसी लोक में, सहू सुधरसी काम ॥ ३७ ॥
 ए बात सुणीनें हरखीयो, थे डर मत राखो म्हारों ।
 थे मोची डूब नें घोबी छों, ज्यूं हूं पिण जात रो पीजारो ॥ ३८ ॥
 जब राजा कहें भूठ मत बोलजे, जब काडी पीजण री घाइ ।
 घट धूं धूं करतो बोलीयो, जब संका न रही काइ ॥ ३९ ॥
 ते ठीक अमरांवां नें नहीं, यां राज कीयो छें खूब ।
 यां च्याळं जणां ठगो कीयो, तिणरी बाहर न बूब ॥ ४० ॥
 वले माहोमा एकएकनो, न करें मूल उघाड ।
 जात सघलां री पाडवी, तिणरो डर नही रह्यो लिगार ॥ ४१ ॥
 इण दिष्टतें जाणजों, भेषधारी छें अनेक ।
 ते साध बाजें लोक में, त्यां पेंहर विगाड्यो भेष ॥ ४२ ॥
 त्यांरा टोला बाजें जू जूआ, जू जूइ सरधा अनेक ।
 त्यांरो आचार पिण छें जू जूओं, पिण काम पड्यां कहें एक ॥ ४३ ॥
 पाणी सगलां माहे मरें, सगला सेवें अणाचार ।
 ते माहोमा सहू मिल गया, त्यांरों करें कुण उघाड ॥ ४४ ॥
 माहोमा सरधा एकएक नी, खोटी जाणें छें अंधकार ।
 पिण खोटा त्यांनें कहिता डरें, जाणें म्हारोइ करेला उघाड ॥ ४५ ॥
 असाध कहें जो तेहनें, ते पिण मनें कहें असाध ।
 जब उघाड पडें दोयां तणों, तिणसूं न करे छें विषवाद ॥ ४६ ॥

ते ठागो चलावे छे लोक मे, ठग ठग खावे लोकां रा माल ।
 ते जासी नरक निगोद में, त्यामे परसी घणा हवाल ॥ ४७ ॥
 माहोमा कहे म्हे सर्व साध छे, त्याने मन माहे जाणे असाव ।
 एहवा भेषधारी छे तेहनें, किण विव होसी समाध ॥ ४८ ॥
 ते माहोमा वंदणा छोडाय दे, वले मुख सू कहे त्यानें साध ।
 एहवा झूठाबोला छे तेहनें, भव भवमे होसी व्याध ॥ ४९ ॥
 ज्यूं यां च्याहं जणा ठागों करी, राज कीयो मोटे मडांण ।
 ज्यूं अं भेषधारी ठागो करी, माल खाअं लोकां रा आंण ॥ ५० ॥
 ज्यूं अं माहोमा च्याहं जणा, कहे माहोमा सुघमान ।
 ज्यूं भेषधारी माहोमा कहे, म्हे सर्व साधू छां गुणखान ॥ ५१ ॥
 ज्यूं अं माहोमा च्याहं जणा, जाणे म्हे छां घणा असुघ ।
 ज्यूं भेषधारी माहो माहि मे, जाणें म्हे पिण नही छा सुघ ॥ ५२ ॥
 ए च्याहं जणा चावा हुवे, तो एकण भव मे दुख धाय ।
 पिण भेषधारी दुखिया होसी घणा, त्यारो कह्यो कठ लग जाय ॥ ५३ ॥
 भेषधारी भागल तूटल भणी, त्याने ओलखें जथा तथ दुबवांन ।
 त्यारो सग परचों छोडाय दें, घाले घटमे ग्यान ॥ ५४ ॥
 रायकुमारी डाही हुंती, तिण कीधी त्यारी पिच्छांण ।
 कूटी लीधी देखने, मोची लीधी जाण ॥ ५५ ॥
 तिण सरीखो कोइ चुतर होसी, ते करसी पूरी पिच्छांण ।
 आचार पाडूओ देखनें, भेषधारी लेसी जाण ॥ ५६ ॥
 एक मोची ने परखीयां, तीनू परख्या तेह ।
 ज्यूं एक टोलाने परखसी, ते सगला परखसी जेह ॥ ५७ ॥



ढलल : ३२

दुहल

ओ दुषड आरु डलंओ, ते कल उतरतु डलण ।
तलणडें डेषधरु डलग घणल, डडकत वलण डूढ अडलण ॥ १ ॥
तुडलसूँ आओर तुु डलें नहुँ, तुु डलण नलड डरलवें डलध ।
कने डलण रलखें डलधलं तणु, डलंओ व्रत दुडल छे वलरलध ॥ २ ॥
तुडलरल दुष उधलडे तेहुसूँ, करे छें कओडल रलड ।
धरणु डलडें डलओर डें, लडवल नें हुड डलवे तुडलर ॥ ३ ॥
तुडलरल शुरलवक डलण डेडल हुवें, गुरलं ने डखलड डखलड ।
धरणु डरलवण रल तुडलरु करे, डेले डलओर रे डलहुँ ॥ ॡ ॥
तुडलं लओडल छुुडु लुकलं तणु, वले लओडलडु डलध रु डेख ।
ओ कलणरे संकल हुवे, तुु अरुवरु लु देख ॥ ॡ ॥

ढलल

[रे डवलडश डलन आओल]

तुडलरु डुललव्रत कुुड डलगु सुणने, तलणरु कुुड करे उधलड ।
ओड डलध शुरलवक डलल डेले हुुड नें, लडवल नें हुुड डलड तुडलर रे । डवुडलण ।
तुडलनें डलध सरधुओडें केड, तुडलरल डलगल व्रत नें नेड रे ।
हुुधल ठलल ठुकरल ओड* ॥ १ ॥
तुडलनें शुरलवक डलण तेँडल इओ डललुडल, तुडलरे नुडलड तणु नहुँ नुत ।
डलओ डूठ तणल नुकललल वलनलड, डूँड डगडें वेरुत रे ॥ २ ॥
ओथु व्रत डलगु कहे छें ओण रु, तलणनें तुु वेठु रलखें तलहु ।
ओर ओडल ओणल डलल डेले हुुड नें, धरणु डलडु डलओर रे डलहुँ रे ॥ ३ ॥
ओँ सुष दुष वलनल नलगड नलरलओल, डलनें ओणुडल इण धरणल ललडक ।
ते ववेक रल वलकल हुंतलं ओडलरेड, तुडलनें डेलेडल ठुलु रे नलडक रे ॥ ॡ ॥
ते ओडल ओणल छे डूख रल करडल, ते आडल डलओर रे डलहुँ ।
ते रलस डखुडल छे ओओवलडलन, तुडलं डलसें उडल छें आड रे ॥ ॡ ॥
शें डुडलरल डलध रु व्रत डलगु कहुु छुु, ते तुु दुु छुुँ अणहुंतुु आल ।
हुँवे डलओ नें डूठ रल खवर डडुडु, तलणरु कलडण आडल छुं नुकलल रे ॥ ॡ ॥

*डह आँकडु डुरतुडेक गलथल के अनंत डें हे ।

इण वात रो निकाल काढ्या विण थानें,
 अनंता सिधां री आण छे थानें,
 वळे राज री आण छै थाने,
 म्हे पिण च्यारुई आहार न खावा,
 अनता सिधा री ने तीर्थकरा री,
 वले राजा री आण दराइ छे थाने,
 मम वाजार मे एहवो घरणो पाख्यी,
 एहवा भेषघारी साध रा भेष माहे,
 यांरा साध साधवी ववेक रा विकल,
 भेषघारी इण हुपम कालें,
 ज्यानें अन पाणी खावा री आंण दराइ,
 भिनबां ने मारण रो उपाय कीयो छै,
 साध गोचरी जाअे छे तिण घर मे,
 तिण घर मे प्रवेस न करें साध,
 तो सांप्रत त्यानें आंण दराइ,
 उघाडी घात वाछी छे त्यारी,
 भूख रा सेंठा जाण्या त्यानें मेल्या,
 ते थोडा में लातर भूठा पर जासी,
 त्यां च्यारु जणा रां नाम दीया लोकां मे,
 नागण वाषण किककिला समूबांण,
 एक तो भेषघारी कहे इम बोल्यो,
 यांरा ने म्हारा पग भेला वाध देसा,
 एहवी वात करें लोक त्यांरे मूढें,
 तो पिण निरलजा भेषघारी,
 एहवा भारी दोषां री ठीक नही छें,
 ते पिण साग पेहरे साध वाजे लोकां मे,
 त्यानें श्रावक पिण तेहवा इज मिलीया,
 जंसा कू तेसा आय मिलीया जब,
 धुरसूं ओ हीज अन्याय उघाडो,
 जिणरो व्रत भागो कहे ते नही म्हाडे,
 साचो भूठो हुवें तो उणरी उ जाणें,
 ते निसक सूं इणनें साचो ठेहरावण,

च्यारु आहार नही खाणो ।
 वले तीर्थकरां री आंणो रे ॥ ७ ॥
 मत खाय जो च्यारुई आहार ।
 ओ घरणो दियो मम वाजार रे ॥ ८ ॥
 म्हे आण दीधी छै मम वाजार ।
 मत खायजो च्यारुई आहार रे ॥ ९ ॥
 घणा लोका ने कीया मेल ।
 जाणे नाच्या कुब्दी खेला रे ॥ १० ॥
 घरणो पारण सूं राच्या ।
 ओघड उघाडा नाच्या रे ॥ ११ ॥
 ज्यारी वछी अकालें घात ।
 त्यामे साधपणो नही असमात रे ॥ १२ ॥
 आगें उमो मिळ्यारी आणो ।
 पडती अंतराय जांणो रे ॥ १३ ॥
 च्यारुं आहार री दीधी अंतराय ।
 ते पिण विकला ने खबर न काय रे ॥ १४ ॥
 पेंलां ने भूख रा काचा जांण ।
 के छोड देसी अकाले प्राण रे ॥ १५ ॥
 अे तो च्यारुं नालां छे भारी ।
 अे वेख्यां री मारणहारी रें ॥ १६ ॥
 मुंजरी डोरी सीध री आंण ।
 आघा पाछा न देसां जांण रे ॥ १७ ॥
 बले ठाम ठाम कहें परपूठे ।
 घरणा सूं नही उठें रे ॥ १८ ॥
 त्याने समकत पिण नही पावे ।
 ते भेष ने यूही लजावें रे ॥ १९ ॥
 ते अकार्य करतां कुण पालें ।
 पाधरा किण विध चाले रे ॥ २० ॥
 ते अंतर माहे न देखें ।
 वीजा घरणो पाड्यो किण लेखें रे ॥ २१ ॥
 वीजाने पुरी खबर न कांय ।
 घरणो पाड्यो वाजार रे माय रे ॥ २२ ॥

जिणरा सीलव्रत नें भागो कहें छें, तिणनें पोते आए करणो निरणो ।
 इणरें बदले बीजा भेषघास्यां ने, किसें लेखें आए देणों घरणो रे ॥ २३ ॥
 घणां दिनां लग बाजार माहि, वासी घरणो पाड्यो ।
 इहलोक नें परलोक दोनूइ, जीतब जनम विगाड्यो रे ॥ २४ ॥
 इह लोक तो फिट फिट हुवा लोकां में, गांमां नगरां मे घणा भूंडा दीठ ।
 भेष भेषंतर जात न्यात रें माहि, सगलां में पडीया फीटा रे ॥ २५ ॥
 सुघ साघ जिणोसर ना छै त्यांनें, घरणो पारण री नहीं रीत ।
 भेषघारी भागल घरणा देसी, ते चिहूगति मे होसी फज्जित रे ॥ २६ ॥
 एहवा भारी भारी दोष चोडे सेवे, ते पिण साघ लोकां में वाजें ।
 अंतो नागडा निरलज दीसैं उघाडा, त्यांरा श्रावक पिण त्यांसूं न लाजें रे ॥ २७ ॥
 चौवीस तीर्थकर ना सासण माहे, किणही घरणो पाख्यो दीसैं नाहि ।
 इण दुपमकाल माहे भेषघास्यां, घरणो दीघो वाजार रे माहि रे ॥ २८ ॥
 जो सुघ साघ रे किण आल दीयो हवें, तो साघ तो सुमता आणें ।
 ओर किणहीनें दोष न देवें, आपरा संचीया कर्म जाणें रे ॥ २९ ॥
 जो म्है किणरेइ माथे आल दीयो छें, तो आल म्हारेंइ आयो ।
 ते आल समें परिणांमां खमीयां, म्हारें कर्म निरजरा थायो रे ॥ ३० ॥
 जो इतरी करणी नावें साघ सूं, अण वोल्यां रहिणी नावें ।
 ते च्यारूइ आहार ना त्याग करें नें, सागारी संथारो ठवे रे ॥ ३१ ॥
 इण कलंक उतरीयां विण मोने, च्यारूं आहार खावारा पचखाण ।
 जो कलंक न उतरे मारा माथा थी, च्यारूं आहार न खाउ जाण रे ॥ ३२ ॥
 इण विघ साघ अणसण करनें, आल उतरे तो उतारे ।
 जो कर्म जोगे आल नहीं उतरे तो, किण सूं घरणो मूल न पाडें रे ॥ ३३ ॥
 जब केई भेषघास्यां रा श्रावक इम बोल्या, इम कीयां अें सुघा न थावें ।
 आणें तो आल उत्तारण देवता आवता, हिवडां देवता नहीं आवें रें ॥ ३४ ॥
 तिण सूं आल देवे तिण नें पाघरो करणो, चोडे पारणो छें घरणो ।
 च्यारूं आहार खावा री आण दराए, इण विघ पाघरो करणो रे ॥ ३५ ॥
 भूखां मरसी वले तिरसां मरसी, जब उतार देसी उवे आल ।
 तिण सूं म्हारा साघ घरणो पाडे छें, वेगो काढण निकाल रे ॥ ३६ ॥
 यांरा श्रावक पिण एहवा छें अभ्यांनी, घरणो पाड्यां में दोष न जाणें ।
 त्यां जिण मारग ओलखीयो नाहीं, समरु पड्यां विण उंधी ताणें रे ॥ ३७ ॥
 यांरा श्रावक केइ पाघरा बोलें, साघ नें नहीं देणो घरणो ।
 केइ विकल कहें देणों छें घरणो, यांनें माहोमा पिण नहीं छें निरणो रे ॥ ३८ ॥

धरणो पारण गया ते ववेक रा विकल, त्यांनं मेल्या ते विकल विसेख ।
 ते हीया फुट गघा रा साथी, छोडी छें भेष री टेक रे ॥ ३६ ॥
 ते पिण पिंडत वांजें लोकां मे, धरणा पाड्यां में दोष न जाणें ।
 एहवा अजाण ते मूढ मिथ्याती, ते जिण धर्म नें केम पिछाणें रे ॥ ४० ॥
 साध रो नांम धराए अग्यांनी, धरणो पाडवा लागा ।
 भोला लोकां माहे पूजावें, ते व्रत विहूणा नागा रे ॥ ४१ ॥
 धरणो पाड्या में धर्म जाणें ते, निश्चेंद मूढ मिथ्याती ।
 तिणसूं आहार पांणी कोई भेलो करे छे, ते पिण तिण रो छें साथी रे ॥ ४२ ॥
 अन पांणी खावा री आंण दरावें, ते जेंन तणा छें जिंदा ।
 एहवा बिगडायल साध रा भेग मे, ते होय रह्या मोह अंधा रे ॥ ४३ ॥
 धरणो पाडे साध रा भेष मांहे, ते निमाइ निश्चें बूढा ।
 एहवा भेषधाख्यां नें गुर करसी, ते चिहुं गति माहे दीससी मूंडा रे ॥ ४४ ॥
 त्यांरा धरणा पाड्यां माहे दोष बतावें, त्यारे माथे दें अछतो आलो ।
 थारें पिण साधवी धरणो दीघो, तिणरो पाछो न काढे निकालो रे ॥ ४५ ॥
 दरवार थकी प्यादा मेल्ले नें, यानें बाजार माथी उठायी ।
 वले सिन्यास्यां पिण नषेध्या त्यांनं, जब झूठा पड हो गया काया रे ॥ ४६ ॥
 धरणो पाडेनं निकालो न काढ्यो, पाछा फिट्टा पडनें आया ।
 आल तो माथे ज्यूं रो ज्यूं राख्यो, ते तो सोमा कठेंद न पाया रे ॥ ४७ ॥
 चोथा व्रत भांगां रो आल लीयां फिरें छे, अजे क्यूं नही काढे छें तार ।
 आल रा देवाल तो अठे नेंडा फिरें छें, हिवें छोडी क्यूं यांरी लार रे ॥ ४८ ॥
 इण लेखें तो व्रत मागो छें इण रो, ते निश्चें तो ग्यांनी जाणें ।
 यांरा टोळावालां नें तो निश्चों न आयो, अें संका सहित क्यूं ताणें रे ॥ ४९ ॥
 भेषधाख्यां नें ओलखावण काजें, जोड कीधी पाली सहर मझार ।
 संवत अठारें वरस गुणसठें, आसोज विद एकम रविवार रे ॥ ५० ॥

रत्न : ३४

अवनीत रास

ढलल : १

दुहल

ढद वलषे कषलड वस आतुडल, तलणसू वलनो कीडो कलड डलड ।
तलणरी वणे खुरलवी अतल घणी, ते सुणओ ऑत लुडलड ॥ १ ॥

ढलल

[वलनल रल डलव सुख सुख गुणे]

कोड गण डे हुवे सलधु अहंकरल, तलणरी थोडल डे हुड डलअे खुवलरी ।
उणरुु गुण कही डोगल ऑढलवे, तो उ थोडल डे डललडू ल थलवे ॥ १ ॥
ओ उणने गुर गुरडलड सरलवे, तो उ डगऑ डे डूरु न डलवे ।
ओ रहे ठुलल डे रलऑ, ठलल वलदल ऑू करे ओ गलओ ॥ २ ॥
इसडु अडलडलनी दुष लुडलवे, तलणसू आलुवणी नही आवे ।
इह लुक रु अरुथी डूढ वलल, सल सहीत कर डलडे कलल ॥ ३ ॥
इसडु अडलडलनी हुवे अवनीत, कदे ऑले रीत कुरीत ।
तलणने गुर नलषेदे घणल डलंड, तो उ गुर रु धेडु हुड डलड ॥ ॡ ॥
तलण डूऑल ने कहे कोड डूऑु, तलण सू तु रहे नलत रुठु ।
खडे ऑे तलणने देवल आल, डलणे ठुलल डलसू देउ ठलल ॥ ॡ ॥
डल तु घणल सलधल रे डलहल, डूहलरी आव न रलखी कलड ।
डूहलरी आसतल ऑुडे उतलरे, तु हू कडलने रूह डलरे सलरे ॥ ॢ ॥
डलने ऑुडेने हुड डलऑ नुडलरु, डलरे डलण कलू वुहुत वलगलरु ।
डलडे दुष डलरू डलरी, ओ खवर डडे डलने डूहलरी ॥ ॣ ॥
डलरल ऑेलल ने वली ऑेली, तुडलने डलड कलू डूहलरल वेली ।
इसडु ऑलतवे डन डलंड, डलले ओर सलधल सू डलड ॥ । ॥
ऑलण वलध गुर सू डन डलगे, तेहवी वलत करे तलण आगे ।
ऑलण वलध डलगे गुर सू वेष, तेहवी करे वलत वशेड ॥ ॥ ॥
वले वुले आल डलडलल, डूऑल २ दे गुर रे आल ।
वले दुष अनेक वतलवे, डलवक खुठल सरधलवे ॥ १० ॥
गुर गुरडलड उडर धेड, तुडलरल अवगुण वुल अनेक ।
ऑूनल २ खुरट उखेले, आडरे डन डलने ऑू ठेले ॥ ११ ॥

बले आप रें स्वार्थ नावें, त्यामें दोष अनेक बतावे ।
 केकारी तों हूं परतीत नाणूं, त्यानें थेटरा असाध जाणूं ॥ १२ ॥
 टोला मांहें तो घणी ढीलाई, कह्यां ठीक न लागें काई ।
 तिणसूं म्हारे तो हूवेंणो न्यारो, यामें कुण विगाडें जमारों ॥ १३ ॥
 जो हूं इसडा जाणतो यानें, तो हूं घर छोडतो क्यानें ।
 हूं तो घर छोडनें पिछताणो, में तो खोटो खावा अजाणो ॥ १४ ॥
 कल्ह लगावण री करे वले वात, जाणे फाड लेउं म्हारे साथ ।
 जब पॅलों हुवे कांन रों काचो, तो उ मान ले इणरो साचों ॥ १५ ॥
 जब ओं राखें इणरी परतीत, ओ पिण बोलें इणहीज रीत ।
 ओं तों किणही मे दोष न जाणें, इणरा कह्यां सू ओपिण ताणें ॥ १६ ॥
 जब ओ आपरो वेली जाण, पछे गुर सू भगडें आण ।
 यां बॅठाहीज उंधो बोलें, आंगुणां रो पिटारो खोलें ॥ १७ ॥
 यां आगें बोल्यो तिणहीज रीत, गुर आगेइ बोले विपरीत ।
 वले बोले अन्हाखी अलाल, गुर नें देवें भूअ आल ॥ १८ ॥
 जिण इणनें घाल्यो थो भूअें, तिणसूं तो बेठो थो रूअें ।
 तिणमें दोष अनेक बतावें, मनमानें ज्यूं गोला चलावे ॥ १९ ॥
 हूंतों याने न जाणूं साध, घर में थकां रो जाणूं असाध ।
 यांरा महात्रत पांचूइ भागा, सुमत गुपत मे दोषण लागा ॥ २० ॥
 यानें राखसो टोला माहि, तो बारें नीकल सू ताहि ।
 थें तो यांरी करो पखपात, तिण सूं मानूं नहीं थारी वात ॥ २१ ॥
 वले घणी साधवीयां माहि, साधपणो न जाणूं ताहि ।
 वले दोष घणामें बतावें, विपरीत पणें सुणावे ॥ २२ ॥
 हूं धरती छोड परो नही जाउं, यां खेत्रां में साथे लगे आउं ।
 था सांहमो उतर सू आणो, ओर गया ज्यूं मोनें म जाणो ॥ २३ ॥
 थांरा दोष घणाने सुणाउ, थाने चोडे असाध सरघाउं ।
 इम बोलें घणो विकराल, संके नही देतो आल ॥ २४ ॥
 जिणसूं वात बांधी थी भेली, तिण चेपी साथे लगी मेली ।
 कांयक दोष ओ पिण काडे, उणने वले पोगां चाडे ॥ २५ ॥
 इणरी आगेंई कीधी पखपात, भूठी साख भरी साख्यात ।
 जब इणनेई निखेध्यो थो गाडें, तिणसूं ओपिण बोलें आडो आडों ॥ २६ ॥
 न्याय निरणा तणी नही वात, भूठी करवा लागो पखपात ।
 न्याय निरणारी हुवे नीत, तो इणने निपेवे इण रीत ॥ २७ ॥

ओ तों तौमे हीज छे वांक, थें दोषण राख्या ढांक ।
 थें तो लोप दीधी मरजाद, तूं तो भूठो करे विषवाद ॥ २८ ॥
 घणा दिना काडें दोष अनेक, तिणरी वात न मानणी एक ।
 आपारे छें इसडी मरजाद, हिवे क्याने करे विषवाद ॥ २९ ॥
 इणनें इण विघ पाडें कूडो, घणा वेठा घाले मुख घूडो ।
 पिण चोरा कुत्ती मिली तेह, ते तो पोहरा किण विघ देह ॥ ३० ॥
 ज्यूं मिलीयो अवनीत सूं जेह, तिणने निषेधसी किम तेह ।
 जब गुर जाण्यो इणरें सीहे, ओं तों बोलतो मूल न बीहें ॥ ३१ ॥
 ओं तों दीसैं छें भारीकर्मो, निरलज घणों वेसरमों ।
 इणनें प्रताख सूमी मूंबी, जब गुर तो विचारी उडी ॥ ३२ ॥
 रखे छूट एकलो थावे, रखे सका घणां रे परजावें ।
 रखे गूंजे पाखंडी अयाण, रखे जिणमत री पडे हांण ॥ ३३ ॥
 रखे घट जायेंला उपगार, वेंदो उठेंला लोक ममार ।
 जो इणनें करडा कहूं इणवारो, तो ए छूट होय जायला न्यारो ॥ ३४ ॥
 ओ तो चढियो क्रोध अहकारों, तो हिवें करणों कुण विचारो ।
 जो नरमाई कीयां ठाय आवें, कदा आलोय नें सुष थावें ॥ ३५ ॥
 इम जांणी कीधी नरमाई, परतीत पूरी उपजाई ।
 किणरे सका न राखी कांय, सगला नें दीया समम्माय ॥ ३६ ॥
 जब ओं किण विघ बोले उचो, हिवें ओ पिण बोलीयो सूवो ।
 अब तो जावजीव रहूं मांय, गण छोडण री काहूं वाय ॥ ३७ ॥
 इण दोषण काढ्या था अनेक, तिणरी पाछी न पूछी एक ।
 किणनें थोडो घणो दड देणों, ते पिण नही काढीयो बेणो ॥ ३८ ॥
 वले घणी साधवीयां माहि, साधपणों न जाणतरो ताहि ।
 त्यानें काढणी नही ठेराई, त्यारी वात न कीधी काई ॥ ३९ ॥
 यांनें छोड्या रहूं गण माहि, तका पिण काई वात न काय ।
 टोला मांहे कहेतो थों ढीलाई, तिणरी पाछी नही चलाई ॥ ४० ॥
 सगली ढीली मेले दीधी वात, विनें सहीत वोलें जोडी हाथ ।
 हिवें आप घणो पिछतावें, गुर नें वारुवार खमावें ॥ ४१ ॥
 म्हे तो कीघों छे कांम खोटो, अपराध कीयो म्हे मोटों ।
 मोनें आछो न जाणसो आप, इम करवा लागों विलाप ॥ ४२ ॥
 हिवें हू मन मे न राखू पाप, म्हांरी सुणों आलोवण आप ।
 म्हे तो आपरा अवगुण अनेक, सावां रे कने बोल्या वशेष ॥ ४३ ॥

ते हूं आपनें सब सुणाउं, जुदा जुदा कहे बताउं ।
 इण वात रो न काहूं आगों, इम कहि नें सुणावण लागों ॥ ४४ ॥
 वले आलोया बोल अनेक, हिवें सल न राखूं एक ।
 वले याद आवसी मनें, ते पिण कहि देसूं थानें ॥ ४५ ॥
 म्हांरा मन मांहे आई अनेक, पूरी कहणी न आवें वशेष ।
 म्हांरी भाषा तणें अंलांग, लेजों तिण अणुसारें जाण ॥ ४६ ॥
 म्हें तों इसरो जाण्यो मन माय, म्हांरी गिणती राखें नहीं काय ।
 म्हांरी आसता देवें उतारी, तिणसूं एकलो हुवेंगरी घारी ॥ ४७ ॥
 म्हें कीघो विचार वशेष, यानें इम कह्यां जागसी घेष ।
 जब अें करडा कहिसी तिणवारो, तब हूं एकलो होय जासूं न्यारो ॥ ४८ ॥
 तिण कारण हूं बोल्यो विपरीत, म्हांरें एकला हुवेंगरी नीत ।
 म्हें तों इसडी न जाणी थी काय, मों आगें करसी नरमाय ॥ ४९ ॥
 म्हें कीघों घणो विषवाद, म्हांरों खमजों सगलो अपराध ।
 म्हांरी गई आगावाली रीत, हूं तो हूओ घणो अवनीत ॥ ५० ॥
 वले मन मांहे बोहत सीदावें, मुखसूंई घणों पिच्छतावें ।
 म्हें तो खोई म्हांरी परतीत, मोनें आप जाण्यो अवनीत ॥ ५१ ॥
 म्हें तीं कीघो घणों अन्याय, थारा आंगुण वोल्या साघां माहि ।
 हूं तो वले इण भव मांहि, एहवों कांम न करसूं ताहि ॥ ५२ ॥
 कदा दोप जाणूं आप मांय, तो हूं कहि देसूं आप नें आय ।
 बीजानें कहितों कदेय म जाणों, हिवें तो म्हांरी संका म आणो ॥ ५३ ॥
 ओरां आगें न कहणरी थाप, म्हांरी परतीत राखजों आप ।
 इ' तो चालसूं आगली रीत, अठासूंघ जाणों वनीत ॥ ५४ ॥
 आपों हेले निन्दें गुर पासें, निज अवगुण अनेक परकासें ।
 वले कर कर घणी नरमाई, परतीत पूरी उपजाई ॥ ५५ ॥
 वले करें घणो पिच्छताप, हिवें प्रायाच्छित्त दों मोनें आप ।
 इम कीघी आलोवण ताय, जब गुर जाण्यो आयो ठाय ॥ ५६ ॥
 ओं तो प्राच्छित्त मांगें म्हां आगें, म्हांरें तो दीघां ठीक न लागें ।
 ओ तो कषाय वस बोल्यो जाण, प्राच्छित्त देउं इण अंलांग ॥ ५७ ॥
 कदे विकटे वलें किण काल, वले भांगी दे बांधी पाल ।
 प्राच्छित्त दीघों ते बोल संभाल, एक ओ पिण दे काढें आल ॥ ५८ ॥
 म्हें तो प्राच्छित्त यां कनें लीघों, मोसूं डरतां पूरो नहीं दीघों ।
 म्हांरा बोल्यां रो करत निवेरों, तो मोनें साधपणों देत फेरों ॥ ५९ ॥

कदे इसरोई दे काढे आल, तिणरो कुण काढे नीकाल ।
 इणरो आगा सूं नही वेसास, इसरो जाण टालो दीयो तास ॥ ६० ॥
 हिवडां तो न दीसैं खामी, प्राछित लेवारों छें कांभी ।
 वले कपट न दीसैं ताय, तो इणरो देउ इणने भोलाय ॥ ६१ ॥
 ओ तों करें आलोवण एम, ओछो प्राछित लेसी केम ।
 इसरो जाणें कह्यो तिननें आंम, थने भासे जितों लेवों तांम ॥ ६२ ॥
 आढ दोढ आई मन माय, ते पिण सारी याद अणाय ।
 जिण परिणामां कछ्यो ओरा पास, सगला दोष भेला करें तास ॥ ६३ ॥
 तिणरो प्राछित लें थारे मेले, वले याद आवे तिण वेलें ।
 थनें दीवी छें आग्या ताहि, कोइ सल मत राखजों माहि ॥ ६४ ॥
 जब ओ करवा लागो विलाप, मोने प्राछित देवो आप ।
 प्राछित मांग्यो घणां दिन ताय, तो पिण दीवो उणने भोलाय ॥ ५५ ॥
 पछे इणने कह्यो तूं वताय, ते हूं प्राछित ले काढूं ताय ।
 जब ओ कहे मोने खवर न काय, आपनें भासें ते लेवो ताय ॥ ६६ ॥
 इणने वतलायो घणी वार, दोष प्राछित न कहे लगार ।
 इणने पूछ्या रो उत्तर एह, आपने भासें ते लेवो तेह ॥ ६७ ॥
 पूछ्यां सीदावे संकोच पाम, जब इणरा जाण्या सुघ परिणाम ।
 कदा फेर अगन ज्यू ओ जागे, वले विगट वेदों करें आगें ॥ ६८ ॥
 तो इणने उत्तर देवा काम, तप थोडो घणों लेउं ताम ।
 दोष निरजर हत लीयों जाण, कलह्वादिक मेटण री मन आंण ॥ ६९ ॥
 ते तो केवल ग्यानी रह्या देख, पिण केतव न राख्यो एक ।
 जे कोइ माहे राखसी सल, तो उणरी उणनें मुसकल ॥ ७० ॥
 वले घणां साचां रे माय, त्याने दीयो वशेष जताय ।
 कोइ दोष जाणो जिण माय, प्राछित लेजों सुघ वताय ॥ ७१ ॥
 अठा पेंहली रा केतव अनेक, ते तो वाकी न राख्या एक ।
 अठा पेंहली रो अपराध सारो, ओ पिण खमार्यो वाख्वारो ॥ ७२ ॥
 सरल हूवो दीसैं सुवनीत, आगें हूंता तिणहीज रीत ।
 सहू हिल मिल नें एक हूआ, ओपरा नही दीसैं जूआ ॥ ७३ ॥
 कोइ गण ' माहें दोष लगावे, ते निजर आपरी आवें ।
 तिणने देणो तुरत वताई, आगली रीत सेंठी ठेंराई ॥ ७४ ॥
 कलहो मेट कीया जिण सुघ, जिणरी निरमल लेख्या बुध ।
 पिण दुष्टी रे समता न आवें, वले किण विघ कलहो उठावें ॥ ७५ ॥
 ११५

जिण आल दे काढ्या था दोखों, तिणरें मनमाहिं मोटो धोखों ।
 ओं तो आपरा किरतव देखें, तिणसूं पड गइ घरक वशोखें ॥ ७६ ॥
 म्हें तो कीधीं घणी अजोगाई, यांसूं छांनी न दीसैं काई ।
 मोनें जाण्यो घणो अवनीत, म्हारी किम करसी परतीत ॥ ७७ ॥
 रखे सगला साधां रे मांय, म्हारी परतीत देवें घटाय ।
 अवनीत मोनें सरघाय, म्हारी आसता देला उडाय ॥ ७८ ॥
 पछें सगलां नें ले बख मांय, म्हारा आंगुण त्यानें दरसाय ।
 रखे पछें मोसूं दाव वालें, एकला नें टोलां मांसूं टालें ॥ ७९ ॥
 तो हूं पिण यांरा गण मांय, साघ साघवीयां नें फटाय ।
 त्यानें फाड्यां सूं कळं न्यारा, त्यानें कर राखूं वेली म्हारा ॥ ८० ॥
 किणसूं सेंठी बांधे राखूं वात, मोनें छोड्यां आवें म्हारे साथ ।
 तिणरा परिणाम गुर सूं फारें, तिणनें सेंठी कर राखूं म्हारें ॥ ८१ ॥
 टोलो फारणरी घारी मन मांय, संकीयो नहीं करतो अन्याय ।
 ज्यां भेलो रहें दिनरात, त्यांसूंइज मांडी वेसासघात ॥ ८२ ॥
 माहिं थकों करें एहवा काम, तिणरा दुष्ट घणा परिणाम ।
 ते तो परभव साहो न जोवे, नर नों भव निरथक खोवें ॥ ८३ ॥
 तिण अवनीत नें सूभे उंधो, तिणरी भिष्ट हुइ मति वूवो ।
 संवलो सूभें नही तिलमात, तिणरें उदें थयो छें मिथ्यात ॥ ८४ ॥
 बाह्य विनो करें दिनरात, अभितर में खेल रह्यो घात ।
 घणो केलवें कपट नें कुरों, गुर रो धेषी होय गयो पुरें ॥ ८५ ॥
 वेंरी ज्यूं रह्यो डस भाल, मुख सूं करें लाल नें पाल ।
 विनो नरमाई करें वशोखों, छल छिद्र रह्यो नित देखों ॥ ८६ ॥
 चोर ज्यूं रहें दुष्ट परिणाम, साघ साघवी फारवा काम ।
 अवनीत उंधी उंधी घारे, आप विगड्यां ओरां नें विगारे ॥ ८७ ॥
 एकला री आसंग नही आवें, जब ओरां में वेली उठावें ।
 तिणनें लालच लोभ दिखावें, गुर सूं जाबक भिडकावें ॥ ८८ ॥
 जिण विघ गुर सूं मन भागें, तेहवी वात करें तिण आगें ।
 जिण विघ जागें गुर सूं धेष, तेहवी करें वात वशेष ॥ ८९ ॥
 आपां उपर छें गुर रो धेख, दाव वालसी अवसर देख ।
 एकें कर साघ साघवी सारा, आपां नें छोडसी न्यारा न्यारा ॥ ९० ॥
 आपां सूं बोळें नरम वशोखें, ते तो आपरों मुतलब देखें ।
 यांनें मुघा कदे मत जाणों, यांरी परतीत मूल म आणों ॥ ९१ ॥

जों आपामासू करे एक काल, तो एकण ने दे गण सूं टाल ।
 माहे राखें तो फोरा पारें, वले परतीत पूरी उतारे ॥ ६२ ॥
 तो आपा पिणं टोला माहिं, आपणा कर राखा ताहि ।
 त्यांसूं सेठो, कर कर करारो, ते गुर ने लखाव म पारो ॥ ६३ ॥
 इम कहि कहि उणने भरमावे, सिष पदवी रो लोभ दिखावे ।
 तिणसू कर कर घणी नरमाय, वले विविघ पणें ललचाय ॥ ६४ ॥
 जों उणरे उदे हुवे मिथ्यात, तो उ मांन ले उणरी वात ।
 परमारथ पिण पूरो न बूभे, कर्मा वस सवली नही सूभे ॥ ६५ ॥
 जब ओ गुर आग्या दे ठेली, अवनीत रो होय जाये बेली ।
 तिणसू करे अग्यानी एको, बोल बंध सेठा लेवे वशेखो ॥ ६६ ॥
 वले माहोमा सूंस खावे, जिलो बाध एके होय जावे ।
 अवनीत सू एके होई, लोभ रे वस आत्म विगोई ॥ ६७ ॥
 सिख पदवी री तिणरे चाहिं, पूजा सलाघा री मन माहि ।
 इत्यादिक लोभ मन माहे आण, अवनीत सू एको कीयो जाण ॥ ६८ ॥
 अवनीत रे एको ने मिलाप, जब करें अविना री थाप ।
 आपा ने गुर सू डरतो न रहिणों, करडा कहे पाछो करडो कहिणो ॥ ६९ ॥
 आपा डरता रहिसां किण लेखे, आपा री तो परतीत वशेखे ।
 आपा तो रहिसां गण माहे जोडे, इसडो कृण आपा सू तोडे ॥ १०० ॥
 कदे परषदा लोक हुवे भेला, थाने करडा कहे तिण वेला ।
 जब थे पिण करडा पाछा कहिजो, लोका वेठा डरता मत रहिजो ॥ १०१ ॥
 पाछो न कह्या लागें हलकाई, थारी गिणत रहे नही काई ।
 तिणसू थे पिण करडो कहिजो पाछो, नही कह्या न लागे आछो ॥ १०२ ॥
 करडा पाछा कह्यां तोडें थासू, जब थे आय मिलजो म्हासूं ।
 थारो उपर राखजो बोलो, ज्यूं वघे आपा रो तोलो ॥ १०३ ॥
 मोने अलगो जाणो तिण वेला, तोही आय होयजो मो भेला ।
 म्हांरी सका कदे मत आणो, मोने थारो थकोईज जाणो ॥ १०४ ॥
 इण विघ हुआ अविना मे सेठा, उलटा लडवा ने बेठा ।
 कजीयो करवारी बाट जोवे, छेरेवे तो ततपर होवे ॥ १०५ ॥
 तिणने गुर कहे सहिज में सूघो, तो उ पड जाये मूरख उघो ।
 तिणरा लखण घणा छे माठा, उलटो गुर ने कहे करडा काठा ॥ १०६ ॥
 गुर ने करडो काठो कहिणो पाछो, ओ किरतब जाणीयो आछो ।
 तिणरी फिर गई सवली दिष्ट, हुआ जिण मारग थी मिष्ट ॥ १०७ ॥

तिणनें गुर करडा कहें किण वारें, जब उ अवनीत पास पुकारें।
 जब अवनीत कहें उणनें एम, थें क्यूं पाछों कह्यों नहीं केम ॥ १०८ ॥
 इसरी करे अविनां री थाप, मांहोमां कीधो त्यारि मिलाप।
 वले जिलो बांधण रे काज, हिर्वें कुण २ करें अकाज ॥ १०९ ॥
 हिर्वें मिल २ नें करें चोरी, गण में करे फारा तोरी।
 उणरी बात करें उण आगे, जिण विध मांहोमां कलह लागें ॥ ११० ॥
 गुर सूं पिण मेलें मूरख दांडी, तिण भेष ले आतमां भांडी।
 गुर सूं चेलो हुवें उदास, तेहवी वात कहें तिण पास ॥ १११ ॥
 किणनें कहें थां उपर धेख, ते अरुवर ल्यो देख।
 किणनें कहें थारी कीधी उतरती, मो आगें पिण कीधी परती ॥ ११२ ॥
 किणनें वले कहें छें आंम, थानें लोलपी कहें छें तांम।
 किणनें कहें थानें कहितां वेंगो, इणनें महीं कपडो नही देणो ॥ ११३ ॥
 किणनें कहें थे प्राच्छित लीघो, ते तो मों आगें कहि दीघो।
 थारी आसता एम उतारें, वले निन्दा करें पूठ लारें ॥ ११४ ॥
 किणनें कहें थानें कहितां चोरो, किणनें कहे थांसूं हेत थोरो।
 किणनें कहें थानें कहितां अविनीत, किणनें कहें थारी करें अप्रतीत ॥ ११५ ॥
 किणनें कहें थाने नही भणावें, किणनें कहे थानें नहीं बतलावें।
 किणनें कहें थानें रोगी जाणें, पिण ओपघ कदेय न आणें ॥ ११६ ॥
 किणनें कहें थानें चोमासें काल, लांवा खेतर बतावे टाल।
 आछे खेतर थानें नही मेलें, सेपें काल पिण इमहीज ठेलें ॥ ११७ ॥
 किणनें कहें थारो न करे वेसास, मांहें रहिवा री न करे आस।
 जिण विध जागें गुर सूं धेप, तेहवी करें वात वशेप ॥ ११८ ॥
 जिण विध गुर सूं मन भागें, तेहवी वात करें उण आगें।
 जिण विध गुर सूं हेत तूटें, तेहवी वात करें परपूठे ॥ ११९ ॥
 इण विध साघ साघवी फाडें, गण में भेद इण विध पाडें।
 गुर सूं परिणाम उतारे, सुघ साधां नें मूढ विगारे ॥ १२० ॥
 वले गुर में अवगुण दरसावें, भूछा २ दोप बतावे।
 वले निन्दा करे छानें-छानें, जिणरे असुभ उदें ते मानें ॥ १२१ ॥
 जिणनें गुर सूं करें उपराठो, आपरो कर राखें काठो।
 जिणनें निसंक आपरो जाणें, तिणनें घगो घगो बलाणें ॥ १२२ ॥
 ओर साघ नें मेल उण साथ, जब पिण करें वेसासघात।
 उणनें फार करें आप कानी, पछें निन्दा करे मन मानी ॥ १२३ ॥

इण विध करे फारातोडी, गुर सू छाने छाने करे चोरी ।
 त्यासूं छाने छाने जिलो बाधे, जिण घर्म न ओलख्यो आवे ॥ १२४ ॥
 माहोमा मिल जिलो बाधे, गुर आग्या विण आपरे छादे ।
 इसरो करे अकारज खोटो, तिणने दोष लागे छे मोटों ॥ १२५ ॥
 एहवा दोष री कर राखे थाप, पछे सेवे निरतर आप ।
 बले साधु नाम धरावे, तो उ पेहिले गुणठाणे आवे ॥ १२६ ॥
 जों उः दोष ने दोष न जाणे, तो पिण पेहिले गुणठाणें ।
 ते तो मूढ मिथ्याती पूरो, पडीयो च्यार तीरथ थी दूरो ॥ १२७ ॥
 तिणरे सरघा जमाली री आई, मूल की पूंजी सर्वं गमाई ।
 समकत ने साधपणो खोयो, जिलो बाध नें जनम विगोयो ॥ १२८ ॥
 एहवा गेरी थका गण माय, तिणरी गुर ने खबर न काय ।
 मुख उपर तों करे गुणग्राम, छाने छाने करे एहवा काम ॥ १२९ ॥
 गुर रे मुख तो गुण गावे, छाने छाने अक्वगुण दरसावे ।
 मुख उपर तों बोले राजी, छाने छाने करे दगाबाजी ॥ १३० ॥
 बले वादे गुर ने जोडी हाथो, पगा मे देवे नित नित माथो ।
 बांदताई करे गुणग्राम, सारा पेहली ले गुरा रो नाम ॥ १३१ ॥
 बले लोकां ने बंदणा सिखावे, त्यामे पिण गुर रो नाम घलावें ।
 लोका आंगे करे गुणग्राम, पिण मन रा मेला परिणाम ॥ १३२ ॥
 जोम अहंकार मे नही मावे, त्यासू आलोवणी नही आवे ।
 प्राच्छित लेने सुध नही थावें, पूरी परतीत नही उपजावे ॥ १३३ ॥
 जब याने जाण्या दगादार पूरा, तब कर दीया गण सू दूरा ।
 जब अे हुआ जावक अपच्छदा, विगडायल जेन रा जिदा ॥ १३४ ॥
 त्या छोडी लाज ने मरजाद, सके नही करता विषवाद ।
 त्यारे भूठ तणो नही टालो, कूड कपट तणो बोहत चालो ॥ १३५ ॥
 त्यारा नेम वरत सर्वं भागा, हुआ वरत विहूणा नागा ।
 परीया च्यार तीरथ सू वारे, आप विगड्या ओरा नें विगाडें ॥ १३६ ॥
 गण मे करता था फारा तोरो, त्याने जाण्या घणा जणां चोरो ।
 संगला सार्धा मे परतीत खोई, त्यारी साख भरे नही कोई ॥ १३७ ॥
 त्यारे सिध पदवी री थी आस, तिण थी पिण हुआ निरास ।
 त्यारो वेसास आगा सू भागों, आत्म ने कलक मोटो लागो ॥ १३८ ॥
 गण मे कीधी थी वेसासघात, पिण कोइ न लागो हाथ ।
 ज्याने आपरा कीधा था फार, ते पिण न गया त्यारी लार ॥ १३९ ॥

त्यां पिण यांनं खोटा जाण, गुर नीं आग्या कीधी परमांण ।
 अं तो गण मांहे भूंडा दीठा, सगला साधा में पर गया फीटा ॥ १४० ॥
 साध तो कोइ हाथे न लागों, श्रावकां सूं करें हिंवे ठाणों ।
 त्यां आगें बोलें सूधा वशोख, मिनकी ज्यूं रह्या छल देख ॥ १४१ ॥
 त्यां देखतां करें खप गाढी, न्हार भगत तणी चाल काढी ।
 बुगलध्यानी ज्यूं वणीया ताहि, लोकां नें न्हाखवा फंद मांहि ॥ १४२ ॥
 श्रावकां री लागी त्यांरे चाय, त्यांनं फारण रो करें उपाय ।
 मान बडाई नें पेट काज, हिंवे कुण कुण करें अकाज ॥ १४३ ॥
 खोटी पेडी जमावण काजें, भूठ वोलता मूल न लाजें ।
 आपणा दोष सगला ढांके, ओरां सिर आल देता न सांके ॥ १४४ ॥
 जाणें गुर मांहे दोष वताय, श्रावक श्रावकां लेउं फंटाय ।
 इसरी आसा बांधे मन मांय, रात दिवस करें वक्रवाय ॥ १४५ ॥
 श्रावक श्रावकां पूछे ताय, वले पूछें अनेराई आय ।
 वले पूछें त्यांनं ओर लोक, जब अे गुर में वतावें दोख ॥ १४६ ॥
 घणां लोकां में भूठ चलावे, अणहुंता दोष गुर में वतावें ।
 आपरें मन मानें ज्यूं बोलें, आं गुणां रो पिटारो खोलें ॥ १४७ ॥
 दोष वीसां तीसां रो ले नांम, पछें बोले अग्यांनी आम ।
 यांमं दोषां रो कहूं उनमान, ते सुणों सुरत दे कांन ॥ १४८ ॥
 सां मण तणी खांड माहि, तिण मांसूं एक मूठी दिखाइ ।
 ज्यूं छें दोष घणां यां मांहि, थांनं थोडासा दीया वताय ॥ १४९ ॥
 घणी ढीलाइ छें टोला मांय, ते तो लोकां नें खबर न कांय ।
 यांरे खोट घणों छें मांहि, परूपे जिम पालें नांहि ॥ १५० ॥
 अं आचार घणोंई दिढावें, पोते तों पूरो पालणी नावें ।
 अं तो कपट सूं कांम चलावें, यांमं साधपणों नहीं पावें ॥ १५१ ॥
 म्हें यांमं आगेई दोष वताया, यांनं प्राच्छित दीघों छोंं ताय ।
 पिण अं वले न चालें सूधा, तिणसूं म्हें हो गया जूदा ॥ १५२ ॥
 म्हारि आचार री छें सगाई, यांमं तो दीसैं घणी ढीलाई ।
 जब म्हें असाध जांणीया यांनं, खोटा जाण छोडीया त्यांनं ॥ १५३ ॥
 म्हें मिनष तणो भव हार, म्हें किम वूडां यांरे लार ।
 म्हें करसां आतमा रो किल्याण, चोखो चारित पालसां जाण ॥ १५४ ॥
 जिणरा छे धेषी पूरा, तिणरें आल दे कूडा कूडा ।
 तिणमं दोष अनेक वतावें, जावक खोटो सरघावें ॥ १५५ ॥

गुर गुर भाई उपर घेष, त्यारा आंगुण वोलें वशेष ।
 जूना जूना खुरट उ खेलें, आपरें मन मानें ज्यू ठेलें ॥ १५६ ॥
 जिण घाल्यो थो इणने भूठो, तिण सूं तो वेठो थो ल्ठो ।
 तिणमें दोष अनेक वतावें, मन मानें ज्यू गोला चलावे ॥ १५७ ॥
 तिणसूं तो आवें लागा लागा, तिणने आल देवा नें आगा ।
 तिणरी परती परती काढें वात, हिला निन्दा करें दिन रात ॥ १५८ ॥
 वले करे घणों विषवाद, सगला साघां नें कहे असाघ ।
 घणा लोकां मे वद वद वोलें, आंगुणा रो पिटारो खोलें ॥ १५९ ॥
 किणनें कहे यानें प्राच्छित आवे, तो प्राच्छित यासू लेणी न आवे ।
 तिण कारण म्हे नीकलीया वारें, कुण बूढसी यारे लारें ॥ १६० ॥
 किणनें कहे यानें म्हे दड दीघों, जब तो प्राच्छित यां लीघो ।
 वले यां दोष सेव्या छे ताहि, प्राच्छित विन लीघा किम रहां माहि ॥ १६१ ॥
 किणनें कहे यानें दोषण लागा, यारा पांचोई महावरत भागा ।
 सुमत गुपत हुआ चकचूर, इण कारण यांसूं हो गया दूर ॥ १६२ ॥
 किणनें कहे यामे नही आचार, दोष सेवतां न डरें लिगार ।
 अणाचारी न लागे प्यारा, तिण कारण यांसूं हो गया न्यारा ॥ १६३ ॥
 किणनें कहे अे तो बोलें फिरता, भूठ सूं नही दीसे डरता ।
 कूड कपट घणो यां माहि, यारा बोल्या री परतीत नाहि ॥ १६४ ॥
 किणनें कहे अें तो सुघ न चालें, दोष सेवें तो कुण यानें पालें ।
 जे कोइ दोष काढें या माहि, तिणसूं डस म्हाल राखें ताहि ॥ १६५ ॥
 हुंतो कहितो याने दोष देख, जब अें म्हांसूं पिण करता धेख ।
 म्हांरी वात नें देता उडाय, मोनें तो राखता दबकाय ॥ १६६ ॥
 म्हारे हुंती घणी मन मांय, एकलां री आसग नही कांय ।
 हिवें तो म्हे हुआ छां दोय, दोष सेवण न दयां कोय ॥ १६७ ॥
 इसरा घड घड नें भूठ चलावे, आपरो सूरपणों मनावे ।
 आपरा दोपां सांमो न देखें, भूठ मे भूठ बोले वशेखे ॥ १६८ ॥
 किणनें कहे यामे दोषण पावे, विविध प्रकारे प्राच्छित आवे ।
 म्हांमें दोषण मूल न पावे, मिच्छामि दुकडं पिण नहीं आवे ॥ १६९ ॥
 किणनें कहे यां क्हांों म्हारें पास, एक लिखत कर दचों मोने तास ।
 जो थें नीकलों टोला वार, जब थानें करणा नहीं च्याहं आहार ॥ १७० ॥
 पाछें भागल तूटल रहे ज्यानें, सगला पातां सूप देणा त्याने ।
 इसरों लिखत कर दचों कहे म्हांनें, इण कारण यांसूं हो गया कानें ॥ १७१ ॥

अँ तो ढीला पारण रे काम, एहवा बंध बांधे ताम ।
 इसरा बंध में परां नहीं ताहि, म्हारें कुण रहसी ढीलां मांहि ॥ १७२ ॥
 किणनें कहें यामें पेहलो गुणठाणों, निश्चैइ मिथ्याती जाणो ।
 यानें साध साचेला जाणें, ते पिण पेहलें गुणठाणें ॥ १७४ ॥
 किणनें कहें यामें समकत नांहि, साधपणो जाणें आप मांहि ।
 जो अँ आपनें असाध जाणें, जब तों चोथें गुणठाणें ॥ १७३ ॥
 यानें किणही पूछ्यो किण वेलां, किण भांत हुवो यांसूं भेला ।
 जब कह्यो म्हारें भेला होवो, इण भव में वाट म जोवो ॥ १७५ ॥
 जो अँ प्राच्छित ले सुध थाय, तो म्हें यांसूं भेला रहां जाय ।
 यानें प्राच्छित लेता जाण्या नांहि, दीघां विण नहीं जावां मांहि ॥ १७६ ॥
 यानें किणहीक पूछ्यो आय, मो आगें कहीजों सतवाय ।
 यानें असाध जाणों के साध, जब कह्यो म्हे जाणां असाध ॥ १७७ ॥
 जब यानें फेर पूछ्यो मीठी वाणो, किण दिन पछें असाध जाणों ।
 जब अँ बोलीया वचन विराध, म्हानें छोडीयां पछें असाध ॥ १७८ ॥
 थानें तों यां कर दीया जूआ, पछें असाध क्यांथी अँ हुआ ।
 जब तों पाछों जाव न आयो, मून साम रह्या मुरभायो ॥ १७९ ॥
 यानें पूछ्यो किणही किण वेर, हिवें दिख्या लेंता दीसो फेर ।
 जब कहें फेर दिख्या ल्यां म्हें क्यांनें, खोटा जाण छोड दीया त्यांनें ॥ १८० ॥
 म्हामें ओर दोषण नहीं पावें, म्हानें फेर दिख्या क्यांनें आवें ।
 म्हें भेला रह्या भागलां मांय, तिणरो प्राच्छित ले सुध थाय ॥ १८१ ॥
 इण रीतें करें वकवाय, ते तो पूरी केम कहवाय ।
 जिण तिण आगें इण विघ बोलें, ओंगुणां रो पिटारो खोलें ॥ १८२ ॥
 यारे ओहिज मुदें ध्यान, यारे ओहिज मुदें ग्यान ।
 जाणें गुर नें खोटा सरघाय, श्रावक श्राविका लेंउं फंटाय ॥ १८३ ॥
 जाणें म्हें यारी वंदणा छुडाय, सगलां नें पारां म्हारे पाय ।
 जो जाणें यानें लोक खोटा, तो म्हानें जाणें अँ पुरुष मोटा ॥ १८४ ॥
 जिण विघ गुर सूं मन भागें, तेहवी वात करें तिण आगें ।
 जिण विघ गुर सूं हुवें उदास, तेहवी वात करें तिण पास ॥ १८५ ॥
 जिण विघ गुर सूं हेत तूटें, तेहवी वात करें परपूठें ।
 जिण विघ जागें गुर नें घेष, तेहवी करें वात वशेष ॥ १८६ ॥
 जिण विघ गुर नें न जाणें आछा, जिण विघ जाणें आप नें साचा ।
 एहवी भूठी वातां वणावें, ते भूठ लोकां में फेलावें ॥ १८७ ॥

जिण विष गुर ने असाध जाणे, एहवी वात घणी मुख आपणे ।
 सके नही वेता आल, वले कर रह्या भूठी भलाल ॥ १८८ ॥
 लोका सूं करें 'घणी नरमाय, मीठा बोले त्यासू मिल जाय ।
 त्यारी करे खुसामदी जाण, जाणे फद माहे न्हाखू नाण ॥ १८९ ॥
 यारी धुरताई ने कपटाई, तिणमे पाछ न दीसे काई ।
 त्यारे घात घणी घट माय, त्यारी काचा ने खबर न काय ॥ १९० ॥
 श्रावक श्रावका री त्यारे चाहि, तिणसू सवलो न सूर्जे ताहि ।
 घणो भूठ बोले जाण, त्यारी बुधवंत करजो पिच्छाण ॥ १९१ ॥
 यातो कीघो अकारज खोटो, याने दोषण लागो मोटो ।
 गुर सूं छाने २ वांध्यो जिलो, याने कर्मा दीघो टिलो ॥ १९२ ॥
 गण में कीघी फारा तोरी, करवा लाग छाने २ चोरी ।
 गुर सूं माडी वेसासघात, त्यारी परगट होय गई वात ॥ १९३ ॥
 वले सेवीया दोष अनेक, ते पिण चावा हुआ वगोख ।
 तिणरो प्राछित न हुआ आरे, जब काढ दीया गण बारे ॥ १९४ ॥
 खोटा जाण ने छोडीया याने, ते वात न राखी छाने ।
 यानें चोडें छोड्या साख्यात, तिणमे कूड नही तिलमात ॥ १९५ ॥
 अें तो कहें छें घणा लोकां मांहि, म्हें छोड्या छें याने ताहि ।
 इण विष बोले छें परपूठ, ते तों निश्चेइ बोले छे भूठ ॥ १९६ ॥
 किणने कहे या छोडीया म्हाने, किणनें कहे' म्हे' छोडीया याने ।
 इम भूठ बोले जाण जाण, सके नही मूढ अयाण ॥ १९७ ॥
 जिण किरतव सूं कीया बारे, तिण वात रो नाम न काडे ।
 हिचे ओर री ओर ले उठें, अें तो लाग रह्या मत भूठे ॥ १९८ ॥
 आप माहे' छे दोष अनेक, ते तों बारे न काडे' एक ।
 उलटों ओरा मे दोष वतावे', भूठ मे भूठ जाण चलावें ॥ १९९ ॥
 ओगुण सुण २ ने समदिष्टि, यानें जाणे धर्म सूं मिष्टि ।
 यांरा बोल्यां री परतीत नाणें, भूठ मे भूठ बोल्ता जाणे, ॥ २०० ॥
 श्रावक आरें करता दीसे' नाहिं, जब अे प्राछित ओढे आया माहि ।
 आ आलोवण करणी थापी ताय, प्राछित पूरो लेणो ठेंहराय ॥ २०१ ॥
 पांचूं पद विचे' दे आया मांय, परतीत पूरी उपजाय ।
 तिणरा साखी ग्रहस्थ ठेहराय, तठा पछें लीया मांय ॥ २०२ ॥
 टोला रा साघ साधवी मांहि, किणरे' प्राछित ठेंहरायों नाहि ।
 किणही प्राछित मूल न लीघो, मिच्छामि दुकडं पिण नही दीघो ॥ २०३ ॥

किण्ही में न काढयो बंक, सगलां नें कर दीघां निसंक ।
 प्राच्छित विण दीघां आया मांहि, सगलां नें सुध जाणी ताहि ॥ २०४ ॥
 यांरी तरफ सूं चोखा जाण, गुर रे पगां पडीया आण ।
 जो अें दोष जाणें किण मांहि, तो अें आगों काढें जिसा नांहि ॥ २०५ ॥
 ज्याने असाध कह्या था मुख सू, त्यांरा वांदीया पग मसतक सूं ।
 त्याने प्राच्छित मूल न दीघो, उलटों आप प्राच्छित ओढ लीघो ॥ २०६ ॥
 ज्यांरा पांचूव्रत कह्या भागा, त्यांरे हीज पगां आय लागा ।
 ज्यांनें कह्या था लोकां में खोटा, त्यांनेंहीज लेखव लीया मोटा ॥ २०७ ॥
 ज्यामें काढ्या था अनेक दोप, ते तो कर दीया सगला फोक ।
 उलटों आपरें डंड ठेंहराय, इण विघ आया गण मांय ॥ २०८ ॥
 ज्यांनें ढीला कहिता ताण ताण, वले भागल कहिता जाण जाण ।
 ज्यांरी वंदणा देता छुडाय, त्यांरा हीज पोतें वांदीया पाय ॥ २०९ ॥
 ज्यांनें कहिता पेहलें गुणठाणें, त्यांराहीज पग वांदीया आणें ।
 अणाचारी कहिता दिनरात, तिका पाछी न पूछी वात ॥ २१० ॥
 ज्यांनें प्राच्छित केंता था आप, ते तो जावक दीघों उथाप ।
 उलटो आप डंड कराय, गण मांहे पेंठा छें आय ॥ २११ ॥
 कहितो थों मोमें दोप न पावें, मिच्छामि दुकडं पिण नहीं आवें ।
 तिणनें प्राच्छित देणों ठेंहराय, तठा पछे लीघों गण मांय ॥ २१२ ॥
 कहितो आलोवण करूं नांहि, आप छांदे रहिसूं गण मांहि ।
 तिण आलोवण करणी थाप, ते प्राच्छित पिण ओढीयो आप ॥ २१३ ॥
 ज्यांमें कहिता कपट नें भूठ, हिला निन्दा करता परपूठ ।
 त्यांनें उत्तम पुरुष ठेंहराय, प्राच्छित ओढ आया त्यां मांय ॥ २१४ ॥
 ज्यांनें खोटा सरधावण ताय, कीघा था अनेक उपाय ।
 त्यांनें तिरण तारण ठेंहराय, प्राच्छित ओढे आया त्यां मांय ॥ २१५ ॥
 यांरी करता था केई तांण, त्यांरो गल गयो जावक मांण ।
 यांरी करता केई पखपात, त्यांरी पिण विगड गइ वात ॥ २१६ ॥
 यांनें जाणता था केई साचा, ते तों प्राच्छित ले हुवा काचा ।
 वले तांणे यांरी दूजीवार, तों अें पूरा मूढ गिंवार ॥ २१७ ॥
 आगें तो यांरी राखें परतीत, निज गुर सूं हुवा विपरीत ।
 सुध साघां नें कह्या वले भूंडा, ते तो दोनूं प्रकारे दूडा ॥ २१८ ॥
 जो यांरे बंधीया निकाचित कर्म, तों यांसूं छूट जासी जिण धर्म ।
 जासी मानव रो भव हार, पडसी नरक निगोद मभार ॥ २१९ ॥

जो यारे न वध्यो निकाचित कर्म, कदा परजात्रे पाछा नमं ।
 कदा आलोए ने सल काढे, निज काम सिराडे चाढे ॥ २२० ॥
 न्यारा थका हुता गेरी, गण रा हुआ था पूरा वेरी ।
 सर्व साधां ने असाध सरधाया, त्यामेहीज डड ओढ ने आया ॥ २२१ ॥
 यां तो च्यार तीरथ रे माय, कीघो थो घणो अन्याय ।
 पिण प्राछित ले आया माहि, टोला री परतीत अणाई ॥ २२२ ॥
 घणा थावक हुआ निसक, यामेहीज जाणीयो वक ।
 या तो दोष बताया यां माय, आ तो भूठी कीघी वकवाय ॥ २२३ ॥
 वारे थका तो कहिता असाध, माहे आय सरध लीया साध ।
 इण विघ वोल्या था विपरीत, त्यारी तुरत नावे परतीत ॥ २२४ ॥
 टोला रा साध साववी माहि, साधपणो न कहिता ताहि ।
 इण वात सू घणा भूडा दीठा, परीया च्यार तीरथ मे फीटा ॥ २२५ ॥
 अे तो प्राछित ओढे माहि आया, सगला साधा ने सुव ठेंहराया ।
 पिण यारो छूटो नही अभिमान, वले किण विघ विगडे छे तांन ॥ २२६ ॥
 जिण दोष थी काढीया बार, ते पिण दोप सगला चितार ।
 ते आलोवणा गुर हजूरो, तिणरे प्राछित लेणों पूरो ॥ २२७ ॥
 सगला साधा ने असाध सरधाया, त्यांमे दोष अनेक बताया ।
 ते तो दोष साधा में न पावे, तिणरो प्राछित पिण याने आवें ॥ २२८ ॥
 ते पिण आलोवणो गुर पास, प्राछित लेणो आण हुलास ।
 ते आलोवण करणी न आवे, प्राछित पिण लीघो न जावे ॥ २२९ ॥
 उणनें कह्यो घणीवार ताम, पिण आलोवण रा नही परिणाम ।
 ओ तो भारीकर्मों नही सरलो, तिणने आलोवणो काम करलो ॥ २३० ॥
 जिण ऊंर प्राछित ठेंहरायो, तिणने पिण घणो जतायो ।
 इणने प्राछित दीजो भारी, इणरी सक म करजो लिंगारी ॥ २३१ ॥
 इणने प्राछित पूरो दीजो, थाने दोष लागे ज्यू म कीजो ।
 जब इण पिण नही मानी वात, इणरी छूटी नही पखपात ॥ २३२ ॥
 इणरेई दगों मन माहि, ते कहे हुंतो प्रायछित देउ नाहि ।
 जे दोष भ्याससी ते उण माहि, उणरो उहिज ले काढसी ताहि ॥ २३३ ॥
 उणरो प्राछित उणने भलावे, गुर आगे लेणो नही बतावे ।
 जब जाण्यो इणने अवनीत, इणने उंधो सूभुचों विपरीत ॥ २३४ ॥
 आप तो उणने प्राछित न देवें, उणरें मेले उ प्राछित लेवे ।
 गुर आगे लेण री नही वात, ओ उचाडोई मिथ्यात ॥ २३५ ॥

गुर आगे प्राच्छित लेवे नाहि, आप छादे लेवें मन माहि ।
 जब तो चोरेंई जाणों अवनीत, त्यामे साध तणी नहीं रीत ॥ २३६ ॥
 साधां तो यानें दीयो जताय, जे दगा सू आया दीसे मांय ।
 यांरी किम आवे परतीत, यांरी देखलो पाछली रीत ॥ २३७ ॥
 जब तो पाछो बोलीयो आंम, म्हें दगो करसां किण काम ।
 म्हारें सिपं करवारी न काई, सूंस करने परतीत उपजाई ॥ २३८ ॥
 म्हारे सिप सिपणी करणों नाहि, म्हारे सूंस छे इण भव माहि ।
 संभोगी करवारो छें आगार, ओ फिरतो बोल्यो तिणवार ॥ २३९ ॥
 जब उणनें पाछो दीयो खराय, आ थें फिरती बोल्या क्यूं वाय ।
 थारे टोला रे वाहिर जाय, संभोगी पिण न करणों छे ताय ॥ २४० ॥
 जब ओ बोल्यो कर नरमाय, संभोगी पिण न करसां ताय ।
 ज्यूं रो ज्यूं पाछो आरे कराय, काची वात न राखी काय ॥ २४१ ॥
 केई साध बोल्या इण रीत, यारा सूंसां री नही परतीत ।
 याने सूंस करावे अनेक, पालता नही जाण्यां एक ॥ २४२ ॥
 याने आगेंई सूंस कराया, अनंता सिद्ध साखी ठेहराया ।
 ते सूंस पानां में लिखाया, नीचें यांरा आखर कराया ॥ २४३ ॥
 इण रीते सूंस कराया, ते पिण सूंस सगला उडाय ।
 चोरे भाग कीया चकचूर, इणमे मूल न दीसे कूर ॥ २४४ ॥
 तो लारला सूंस इमहीज जाणो, यांरी परतीत मूल म आणो ।
 बले एक साध बोल्यो एम, थारी परतीत आवसी केम ॥ २४५ ॥
 म्हारा पांचूं वरत कह्या भागा, थें तो लोकां मे कहिवा लगा ।
 सुमत गुपत भागी केता म्हारी, मोने साध न गिणता लिगारी ॥ २४६ ॥
 मोने असाध कह्यो लोकां माय, मो में दोष अनेक वताय ।
 ते प्राच्छित म्हें तो मूल न लीघो, मिच्छामि दुकडं पिण ही दीघो ॥ २४७ ॥
 थें प्राच्छित पिण मोनें न ठेहरायो, तोही आंय वाच्या म्हारा पायो ।
 मोने परूप्यो लोकां में असाध, हिवे हु किण विध हुओ साध ॥ २४८ ॥
 आ देख लीघी थारी रीत, इम नावे थारी परतीत ।
 जब कहे म्हें लोका रे मांहि, थाने असाध परूप्या नाहिं ॥ २४९ ॥
 पाछो जाब नायो तिण ठांम, भूठ बोलें चलायो काम ।
 इणरी किणनें न आई परतीत, भूठाबोलो जाण्यां विपरीत ॥ २५० ॥
 यानें पाछा लीया गण मांहि, जब यांसूं पेंहली वात ठहराइ ।
 सिप सिपणी न करणा सोय, जुदो टोलो न वाचणो कोय ॥ २५१ ॥

कदा गुर ने पिण दोषण लागे, तो कहणों नही ओरा आगे ।
 गुर नेंइज कहिणो सताव, घणा दिन नही राखणो दाव ॥ २५२ ॥
 बले फाडा तोडा री वात, किणसूं करणो नही तिलमात ।
 जिलो बांधणो नही माहोमाहि, फेर साथे ले जावणो नाहि ॥ २५३ ॥
 पाचू पद विचे दीया ताय, आलोवण प्राछित पूरो ठेहराय ।
 आग्या मे चालणो रुडी रीत, पूरी उपजावणी परतीत ॥ २५४ ॥
 आगा विचेड रहिणो वनीत, बाकी सर्व आगली रीत ।
 इत्यादिक पेहली सेठी ठेहराय, पछे गण मे लेणा थाप्या ताय ॥ २५५ ॥
 एक वले परतीत उपजावो, बले कर्म जोगे न्यारा थावो ।
 तो न बोलणा अवगुणवाद, इसडो करणो नही विषवाद ॥ २५६ ॥
 जिण बोल सू वले तूट जाय, तेहिज बोल कहिणो लोका माय ।
 ओर बोल न कहिणो एक, आ परतीत उपजावो वशेख ॥ २५७ ॥
 जब ओ पिण बोल्यो चोखी वाणो, हिचे इण भव मे सका मत आणो ।
 तो पिण ओ बोल गाढो खराय, इत्यादिक घणा बोल जताय ॥ २५८ ॥
 पछे दीय सूस कराय, तठा पछे लीया गण माय ।
 आलोवणा प्राछित पूरो ठेहराय, अनन्ता सिघ विचे दे आया माय ॥ २५९ ॥
 ते आलोए प्राछित लेणी नावे, तिणसू भूठी भूखलाया खावे ।
 जाणे आगे ठेहराइ ते भेलो, प्राछित लेवू म्हारें मेलो ॥ २६० ॥
 ओ पिण खाचाताण माडी, जाणे टल जाये ज्यू म्हारी भाडी ।
 जब साघां घणो दबकायो, घणो दोरोसो आरे करायो ॥ २६१ ॥
 गृहस्थ बेठा ठेहराइ वात, ते प्रसिघ करणो विख्यात ।
 जिण में हुतो जिण रो जाणे वक, ज्यू भागे लोका री सक ॥ २६२ ॥
 आगे कीघो थो तिम ठेहरायो, प्राछित लेणो आरे करायो ।
 जब उणने कह्यो इण जाय, जब ऊ ओर ले उठीयो ताय ॥ २६३ ॥
 जो हूं प्राछित था आगे लेसूं, ते ओर आगे कहण नही देसू ।
 साघां री रीत तिम कीघो कहिणो, प्राछित रो नाम किणरो नही लेणों ॥ २६४ ॥
 ओर कहिवा रो कीघो छे टालो, सगला सूस कीया ते सभालो ।
 ओ तो भूठो ले उठीयो भोर, साघा तो सूस कीघो ते ओर ॥ २६५ ॥
 जो सूंस कीयो जाणे एह, तो दूजो वपू आरे हुओ तेह ।
 लोकां कने प्राछित कहिणो थाप, उण कने जाय दीयो उथाप ॥ २६६ ॥
 ओ तो उणरेइज बल भूंमे, पोते काई सवली नही सूमे ।
 जाणे ओ करसी म्हारें रुडो, इणरे पाछे लागो पूरो ॥ २६७ ॥

ओं तो गुर नें उलटो डरावे, उली पेंली अनेक बतावें ।
 सूंस कर नें बदल गयों ताय, बोलीए पिण बन्धन थाय ॥ २६८ ॥
 हू तो ज्यां लग रहिसूं गण मांहि, किणरो अवगुण बोलसूं नाहि ।
 म्हें तो सूंस जटेताई कीधो, जाव जीव रो सूंस न लीधो ॥ २६९ ॥
 इणनें जाबक बदल गयो जांण, जब फेर पूछयों मीठी वांण ।
 यांरी परख करवा कह्यो आंम, सगला सूंस करो एक तांम ॥ २७० ॥
 कदा आहार पांणी तूट जाय, तो किणरा अवगुण न बोलणा ताय ।
 जिण बोल सूं तूट जाये आहार, तेहिज बोल कहिणों विचार ॥ २७१ ॥
 ओर अवगुण न बोलणा जांण, ओं तो सगला करो पचखांण ।
 जब यां पाछों उत्तर दीयो एम, ओं तो न करां म्हें नेम ॥ २७२ ॥
 ओं सूंस म्हारे ठीक न लागें, कदा तूट जाये वले आगें ।
 पेंहला सूंस कीयो ते भागो, आगा सूं इम बोलवा लागो ॥ २७३ ॥
 जब इणनें जाण्यो घणों अवनीत, साधु तणी न जाणी रीत ।
 ओगुण बोलण सं काई काम, इणरा दुष्ट जाण्या परिणाम ॥ २७४ ॥
 ओगुण बोलण रों डर दिखाय, गण माहें रहिता जाण्या ताय ।
 आगा ज्युं जाण्यो भूठ रो चालो, ते कदे दे काढे मोटोई आलो ॥ २७५ ॥
 अें दगा सूं आया दीसे ताहि, इसडा आछा नहीं गण मांहि ।
 तो याने वेगा देंगा छिटकाय, इसडी धारी मन मांय ॥ २७६ ॥
 प्राच्छित लेंणों तो बदलीयो नांहि, पिण मांन घणों घट मांहि ।
 जो म्हारो प्राच्छित कहे लोका आगें, तो म्हारी जाव हलकाई लागें ॥ २७७ ॥
 तिण कारण वले अडवी मांडी, हुंती देख आपरी भांडी ।
 वाखंवार आहिज घणी ताणें, रखे लोक भूंडो मोनें जाणे ॥ २७८ ॥
 प्राच्छित चावो न करूं लोकां मांहि, गाला गोले छानो राखूं ताहि ।
 पिण आ तों प्रसिध वात, ते छिपाई केम छिपात ॥ २७९ ॥
 ओर साधां प्राच्छित लीधो नांहि, त्यानें कहवा न दूं लोकां मांहि ।
 जो उवे कहें म्हानें प्राच्छित न दीधो, तो हूं पिण केसूं म्हेंई न लीधो ॥ २८० ॥
 जब इणनें वले पूछीयो जांण, कोई ग्रहस्थ पूछे मोनें आंण ।
 थारा सूंस भागा सुणीया तास, थाराइज सिपां रे पास ॥ २८१ ॥
 नहीं भागा ने नही भागो तो कहि सूं, अण वोल्यो वेठों किम रहिसूं ।
 इसडों आल माथे किम लेसूं, जब ओ कहे यूं तो कहिण न देसूं ॥ २८२ ॥
 साधां री रीत कीधो कहिणों, ओर उत्तर पाछो नही देणो ।
 आमना करे देवो जणाय, तेहवी पिण नही काढणी वाय ॥ २८३ ॥

जो थे कहिसो म्हामे दोष नाहिं, तो हू कहि देसू दोष या माहिं ।
 म्हे कह्यो ते नही छे भूठ, तो वले वेदो जासी उठ ॥ २८४ ॥
 जिण प्राच्छित नही लीघो छे ताय, तिणने न लीयो न काढणी वाय ।
 जिण प्राच्छित लीघो छे ताम, तिणरो पिण नही लेणो नाम ॥ २८५ ॥
 लीघा न लीघा रो नाम नकारो, ग्रहस्थ आगे न कहिणो लिगारो ।
 जो थे कहिसो इणने प्राच्छित दीघो, तो हू कहिसू म्हे मूल न लीघो ॥ २८६ ॥
 इसडो आल कुण ओढे माथे, प्रतीत जात्रे इण वाते ।
 ग्रहस्थ नें भर्म ओर रों होवे, तो यारें वदलें परतीत कुण खोवे ॥ २८७ ॥
 ग्रहस्थ पिण साचा ने भूठो जाणें, भूठ ने साचो कहे अजाणें ।
 ग्रहस्थ दोनूं प्रकारें हुवे भारी, केयक होय जाए अनत ससारी ॥ २८८ ॥
 जाण नें साचा भूठ रो, सरीखो भर काढे हू कारो ।
 एहवी मिश्र भाषा सू हुवें खुवारी, ज्यू वणी वसुदेव राजा री ॥ २८९ ॥
 इसडों कुण करसी अन्याय, वले निज परतीत गमाय ।
 कोइ जाणें यारे सिपां री चाहि, यानें प्राच्छित विण लीया माहिं ॥ २९० ॥
 आप प्राच्छित लीयो ते छिपावे, न लीयो तिणने दीयो सरघावें ।
 लोकां ने कहिवा न दे इण काम, यांरा दुष्ट घणा परिणाम ॥ २९१ ॥
 म्हांने प्राच्छित लीयो जाणे लोक, तो म्हांमे जाण लेसी दोष ।
 नही तो यामे हिज जाणें दोष, यानें प्राच्छित लीयो जाणे लोक ॥ २९२ ॥
 इसडी गूढ माया सेवे, ओर साधा सिर आल देवे ।
 इसडा आछा नही गण माहि, जाण्यो वेगा दीजे छिट्काइ ॥ २९३ ॥
 एक आचार्य पदवी रो भूखो, कदागरो करवा दूकों ।
 पदवी मूढे आगे वारुवार, कहितो पिण नही लाजें लिगार ॥ २९४ ॥
 जिणने थाप्यो आचार्य आप, तिणने तो जाणे देउं उयाप ।
 आचार्य पदवी हू लेऊं, जाणे सगला रो नायक वेऊ ॥ २९५ ॥
 जिणने थाप्यो आचार्य जाण, जाव जीव रा करे पचखाण ।
 तिणमे अनंता सिद्धां री साख, त्या सूसा री करवा माडी राख ॥ २९६ ॥
 आचार्य पदवी रे काजें, सूस भांग तों पिण नही लाजें ।
 हूवो पदवी रो मोह मतवालो, आत्मा ने लगावे कालो ॥ २९७ ॥
 इसडों अभिमानी ने अवनीत, माडी गच्छवास्या वाली रीत ।
 पदवी पदवी करतो दीठों भूडो, अवनीत सू एको कर वूडो ॥ २९८ ॥
 यारें एको माहोमां न छूटें, उणरें वदले ऊ वोलें भूठों ।
 एक एक रा दोषण ढांके, गुर आगे पिण कहितो साकें ॥ २९९ ॥

वले बोलें घणा घणा उंधा, सरलपणें न बोलें सूचा ।
 करें जोम नें गाढ री वात, मिटियो नहीं त्यांरो सल मिथ्यात ॥ ३०० ॥
 पांचू पद बिचें दे आया मांहि, कपट दगो छूटों नहीं ताहि ।
 यानें जाण्यो अँ वेसासघाती, मांहोमां करें पखपाती ॥ ३०१ ॥
 यांरो जाण्यो मांहोमां एको, चाला चरित देख्या अनेको ।
 आगा ज्यूं चोखी रीत ठँहरायो, तिका पिण नही दीसैं कायो ॥ ३०२ ॥
 इणनें एक बाई पूछ्यो एम, सांमीजी सूं जुदा हुवा केम ।
 जब ओर साध बोल्यो इम बाण, अब तों गुरों रे पगे पडीया आण ॥ ३०३ ॥
 जब उण साध नें कह्यो इण एम, इसडो थें बोलीया केम ।
 म्हानें पगा पडीयो कह्यो कांय, हूं तो करार करे आयो मांय ॥ ३०४ ॥
 आज पछें थें इसडी वाय, मूढा वारें म काढजों ताय ।
 अँ तों बोले अग्यांनी एम, ते तो गुर नें आरावसी केम ॥ ३०५ ॥
 यानें जाण्यो घणों अबनीत, नहीं चारित पालण री नीत ।
 छोडी जिण मारग री रीत, इणरी जावक नावें परतीत ॥ ३०६ ॥
 ग्रहस्थ आगें कहिवा रा पचखाण, ते पिण सूंस भांगीयो जाण ।
 प्राच्छित ठँहरायो घणा री साखी, ते वदल गयो अन्हाखी ॥ ३०७ ॥
 वले घणा लोकां रे मांय, भूठी भूठी करे वकवाय ।
 वले वद वद नें बोले करों, जब इणनें तों कर दीयो दूरो ॥ ३०८ ॥
 दूजोडा नें न छोढ्यो ताय, तिणनें दीयो एम जताय ।
 जो थारें एको न छें मांहोमांहि, फाडा तोडो न कीधो छें ताहि ॥ ३०९ ॥
 तो तूं मत जाए उणरी भार, उण दोपीला नें काढीयो वार ।
 ऊ प्राच्छित आढ वदलीयो तांम, तिण भूठा बोला सूं नहीं कांम ॥ ३१० ॥
 जो तूं जाएला उणरी लारी, तो थें एको कीयो गण फारी ।
 इम कह्यां वेठो रह्यो तांम, अंतरंग तों मेला परिणांम ॥ ३११ ॥
 उण सूं मिल मिल नें करें वात, उणरीज करें पखपात ।
 उणरो थको वेठो गण मांय, जाण जाण करे कपटाय ॥ ३१२ ॥
 ओं तो जाणें रहूं गण मांय, पिण उण विण रह्यो न जाय ।
 तिणरी करें दलाली आप, करें मांहें ल्यावण री थाप ॥ ३१३ ॥
 आगें ठँहरायो प्राच्छित ताहि, ते प्राच्छित दे लेवो मांहि ।
 इणरो परमारथ छें एह, मों उपर प्राच्छित थापों तेह ॥ ३१४ ॥
 जब उणनें पाछो कह्यो एम, तो उपर थापां प्राच्छित केम ।
 थारें उणरी दीसैं पखपात, वले भेली दीसैं थारी वात ॥ ३१५ ॥

जब इण कहीं मों उपर थे थाप्यो, ते थेइज कांय उथाप्यो ।
 जब इणने कहीं बले आम, उणहीज उथापीयो ताम ॥ ३१६ ॥
 उण कहीं प्राछित लेऊं नांहि, तिणनें किण विघ राखां मांहि ।
 जब इण भूठ बले तिणवार, उणरी बात लीघी संवार ॥ ३१७ ॥
 उ तो प्राछित बदले क्यांने, उणने आवे जितो देणो म्हाने ।
 फाडा तोडो न कीयो म्हे सोय, तिणरो प्राछित न लेउ कोय ॥ ३१८ ॥
 उ तो बदलीयो ते इण न्याय, ओ बोल्यो इसडो भूठ बणाय ।
 जब उणनें दीयो जताय, तोसूं प्राछित दीयो न जाय ॥ ३१९ ॥
 म्हे तो सरल हुवो जाण्यो ताह्यो, जब था उपर प्राछित ठेंहरायो ।
 अब तो सरल न दीसो एक, छल खेलता दीसो अनेक ॥ ३२० ॥
 उणनें प्राछित भारी आवे, ते तोसूं पूरो दीयो नही जावे ।
 तोनें प्राछित कुण भलावे, थारी परतीत मूल न आवे ॥ ३२१ ॥
 तूं प्राछित दीषां रो करे नांम, ते तो खोज भांगण रे काम ।
 तूं प्राछित रो करे गाला गालो, इसडों दूजो कुण बेटो छे भोलो ॥ ३२२ ॥
 जो उणरे रहिणों होसी गण मांय, तो गुर कनें प्राछित लेसी आय ।
 गुर छोडे तोकनें लेवें ताय, ते कारण मोहि बताय ॥ ३२३ ॥
 आ उषाडा दगा री बात, मिल मिल नें करो वेसासघात ।
 थामे साध तणी नही रीत, उषाडाई दीसो अवनीत ॥ ३२४ ॥
 गुर कनें प्राछित लेवा नें पाछो, तिणने कदे म जाणजो आछो ।
 इसडाने राखें गण माय, तो सगलां नें आछो नही थाय ॥ ३२५ ॥
 जब उणरी पख में बोल्यो पूरो, जब इणनेंइ कर दीयो दूरो ।
 इणनेंइ नही राखियो माय, जब ओ उण सूं भेलो हुवो जाय ॥ ३२६ ॥
 जो उ न जाअे उणरी लार, तो उ कर दे इणरो उषाड ।
 कदा दसमो प्राछित बतावे, ते इणसूं पछे लीयो न जावे ॥ ३२७ ॥
 ओ जाणें म्हारी पारेला कूक, अठ सूं पिण जाउला चूक ।
 भेला होय नें कीघा छे कर्म, चावा हुवा निकल जाअे भर्म ॥ ३२८ ॥
 जो आप मे खामी न हुवे लिंगार, तो कुण जाए भागल री लार ।
 ओ तो आपरा किरतब देखे, ते गुर सूं भेलो रहे किण लेखें ॥ ३२९ ॥
 जो उणने प्राछित आप ओढावे, तो उ इणनें उतरो बतावे ।
 तिणसूं उणनें प्राछित देणी नावें, आप सूं पिण लेंगी न आवे ॥ ३३० ॥
 इणरे इसडी वणी छे आय, आड दोड मे पडीयो जाय ।
 अवनीत सूं गाढी जोडी, गुर सूं तो पेहलाइज तोडी ॥ ३३१ ॥

गुर कीघो थो उपगार भारी, ते तो घाल दीयो विसारी ।
 अवनीत रे जिले जूतो, नर नों भव खोय विगूतो ॥ ३३२ ॥
 यानें छोडीया पेंहली वार, दोयां नें साथे काढीया वार ।
 हिवें छोडीया दूजी वार, एकीकानें काढीयो वार ॥ ३३३ ॥
 हिवें अवनीत हुआ दोनूं भेला, करवा लगा गुरां री हेला ।
 सूंस वरत सर्व यांरा भागा, हुवा वरत विहूणा नागा ॥ ३३४ ॥
 प्राच्छित न ले तिणसूं काढ्या बारें, तिण वात रो नांम न काढे ।
 उलटो दोष साधां में वतावे, भूठ बोलतो संक न ल्यावे ॥ ३३५ ॥
 जब गृहस्थ बोल्या वाय, यामें दोष हुवें ते दचो वताय ।
 जब ओ पाछो बोल्यो तिणवार, यांरा दोषां रो घणों विसतार ॥ ३३६ ॥
 हिवें काल पडिकमणा रो आयो, ते तों पूरा केम कहिवायो ।
 चेडा नें कोणक री हुइ राबो, ज्यूं यांरा दोषां रो छें विसतारो ॥ ३३७ ॥
 पछें घणा लोक मिल आया, त्यां कनें दोष अनेक वताया ।
 जब लोक पाछा बोल्या एम, ओ गढ इण विघ भांगे केम ॥ ३३८ ॥
 कोइ भारी वतावो दोष, ज्यूं सुणें सगलाई लोक ।
 जब कह्यो मोटों दोष नहीं मांय, अणहूतो वतायो न जाय ॥ ३३९ ॥
 जों अंही दोष यामें हुवेंसी, तिणरों अें प्राच्छित लेसी ।
 जब कहें प्राच्छित तों यामें नाहीं, आयें सुघ हुवा म्हां माहीं ॥ ३४० ॥
 जब लोकां कह्यो तो क्यूं वतावो, यामें दोष हुवें ते सुणावो ।
 जब कहें अें तों म्हे वातां वताई, यांरी उठांणपरीया सुणाई ॥ ३४१ ॥
 जब लोकां कह्यो बले यानें, आ निरथक सुणाई थे क्यांनें ।
 हिवें थें प्राच्छित ले आवो मांहि, जिलो मत राखो ताहि ॥ ३४२ ॥
 जो थें जिला सहित आवो मांहि, जब तो माहे न लेवें ताहि ।
 थारी परतीत यानें न आवे, रषे बले किणनेई ले जावे ॥ ३४३ ॥
 जब अें पिण बोल्या बेरीत, म्हांनें यांरी नावें परतीत ।
 अें म्हांसूं गाढो करे करार, पछें काढें एकीका नें वार ॥ ३४४ ॥
 जब गृहस्थ बोल्या तिणवार, थानें दोष विनां काढें वार ।
 तो म्हे बंदणा छोड दचां यानें, इसडी वात विचारो क्यांनें ॥ ३४५ ॥
 जब कहें म्हे रहिसां दोय, तीजां नें नहीं फाडां कोय ।
 इसडी परतीत उपजावां, दोय तो वीखर न्यारा न थावां ॥ ३४६ ॥
 मुदें जिलो विखेरणों पेंहलो, ओं तो दोष नहीं छें संहिले ।
 चोरी सहीत लेवें गण मांय, तो सगलाई मिष्टी थाय ॥ ३४७ ॥

जिलो विखेरण रा नही परिणाम, प्राच्छित लेवा रो पिण काठो कांम ।
जब लोका पिण जाणे लीया ताहि, अे दगा सहीत आवें गण माहिं ॥ ३४८ ॥
वले गृहस्थ बोल्या केई वाय, गुर कनें प्राच्छित ल्यो जाय ।
जब ओ बोल्थो अविनेकारी वाणो, आ वात इण भव मे मत जाणो ॥ ३४९ ॥
जो म्हें जावा यारा गण माय, तठे तो म्हारी गिणत न कांय ।
म्हाने दिख्या दे लेवे माय, सगला रे पगा देवे लगाय ॥ ३५० ॥
आपणा किरतब देखे, ते गण मे आवसी किण लेखे ।
आलोवण पिण करणी नावे, प्राच्छित पिण लेणी न आवे ॥ ३५१ ॥
जथातथ निज ओगुण बतावे, तो यानें प्राच्छित दसमो आवे ।
एहवो वेराग ने नरमाई, ते मूल न दीसे काई ॥ ३५२ ॥
जब घणा लोका जाण्या अजोग, याने माहे लेवा नही जोग ।
लोका पिण क्छों साधा ने आय, काची बाता म ल्यो याने माय ॥ ३५३ ॥
अपच्छदा पळीया गण . सू जूआ, च्यार तीरथ मे फिट फिट हूवा ।
धावक हुंता चतुर सुजाण, याने वदणा छोडी खोटा जाण ॥ ३५४ ॥
अे जाणे यामे दोष बताउ, धावका ने यासू भिडकाउ ।
यारे उसभ उदे हुआ आण, मुख सू पिण नीकले खोटी वाण ॥ ३५५ ॥
विसवा पिण म्हाराई घट जासी, लोका मे पिण आछी नही थासी ।
पिण यारा धावका ने करू एम, वाहे बलीया आकडा जेम ॥ ३५६ ॥
या कने हरकोइ आवे, जब अें गुर माहे दोष बतावे ।
अे तो मिल मिल ने भूठ बोले, अवगुणा रो पिटारो खोले ॥ ३५७ ॥
आगे बोलीया अवगुण अनेक, तिण विचेइ बोले छे वखे ।
यारें निन्दा तिकोइज ध्यान, यारे निन्दा तिकोइज ग्यान ॥ ३५८ ॥
जाणें अवगुण काढ्या दिन रात, कोयक लागें म्हारेइ हाथ ।
इण कारण करे छे विलाप, यारे उदे हुआ छे पाप ॥ ३५९ ॥
अवगुण सुण सुण ने समदिष्टी, याने जाणे धर्म सूं भिष्टी ।
यारा बोल्या री परतीत नाणें, भूठ मे भूठ बोलता जाणें ॥ ३६० ॥
सगला श्रावक सारीखा नाहिं, अकल जुदी जुदी घट माहिं ।
समदिष्टी री साची हुवे दिष्ट, ते याने करे थोडा माहे खिष्ट ॥ ३६१ ॥
ते याने न्याय सू देवे जाब, पारे घणा लोकां माहे आब ।
यारी मूल न आपे सक, याने देखाल दे यारो वक ॥ ३६२ ॥
अें घणा दोष क्छो गुर माहिं, घणा वरसां रा जाणो छो ताहि ।
तो थें पिण साध किम थाय, जाण जाण भेला रह्या माय ॥ ३६३ ॥

जो यामें दोष घणा छे अनेक, कदा दोष नही छें एक ।
 ते तो केवलग्यानी रह्या देख, पिण थें तो बूडा ले भेख ॥ ३६४ ॥
 जो यामें दोष कह्या थें साचा, तोही थें तों निश्चें नहीं आछा ।
 जो भूठा कह्या तो वशेष भूंडा, थें तो दोनूं प्रकारें बूडा ॥ ३६५ ॥
 थें दोषीला नें वांछा कहो पाप, भेला पिण रह्यां कहो मंताप ।
 दोषीला नें देवें आहार पांणी, बले उपधादिक देवे आंणी ॥ ३६६ ॥
 हरकोइ वसत देवें आंण, करें विनो वीयावच जांण ।
 दोषीला सूं करें संभोग, तिणरा पिण जाणों छों माठा जोग ॥ ३६७ ॥
 इत्यादिक दोषीला सूं करंत, तिणमें पाप कहो छो एकंत ।
 अं थें जाणे कीया सारा काम, ते पिण घणा वरसां लगे तांम ॥ ३६८ ॥
 घणा वरस कीया एहवा कर्म, तिण सूं बूड गयो थारो घर्म ।
 निरंतर दोष सेवण लागा, हुआ वरत विहुंणा नागा ॥ ३६९ ॥
 ओ थें कीधो अकारज मोटों, छांनें छांनें चलायो खोटें ।
 थे तों वांध्या करमा रा जालो, आतमा ने लगायो कालो ॥ ३७० ॥
 थें गुर ने निश्चें जाण्यां असाध, त्याने वांध्या जांणी असमाध ।
 त्यांराहीज वांध्या नित नित पाय, मस्तक दोनूं पग रे लगाय ॥ ३७१ ॥
 यांसूं कीधा थें बारें संभोग, ते पिण जाण्यां सावद्य जोग ।
 सावद्य सेव्यो निरंतर जांण, थें पूरा मूढ अयांण ॥ ३७२ ॥
 थें भण भण नें पाना पोथा, चारित विण रहि गया थोथा ।
 थे कहो अर्थ करां म्हें गूढा, तो थें भण भण नें काय बूडा ॥ ३७३ ॥
 थें वीहार करता गांम गांम, सिप सिषणी बधारण काम ।
 किणने देता बंधो कराय, किणनें देता घर छोडाय ॥ ३७४ ॥
 बले कर कर गुर रा गुण ग्राम, चढावता लोकां रा परिणाम ।
 जब थें गुर ने खोटा जाणो ताहि, ओरां नें क्यूं न्हाखता यां माहि ॥ ३७५ ॥
 पोते पडीया जाणों खाड मांय, तों ओरां नें न्हाखता किण न्याय ।
 ओरां नें डबोवण रो उपाय, जांण जांण करता था ताय ॥ ३७६ ॥
 पांच पद बंदणा सीखावता ताहों, तिणमें गुर रो नाम बलायो ।
 तिण गुर ने वांध्या जांणता पाप, तो ओरां नें कांय बोया आप ॥ ३७७ ॥
 ज्यूं नकटो नकटा हुआ चावें, उसभ उदे माठी मत आवें ।
 ज्यूं थें डूवता दोषीलां माहि, ज्यूं ओरां नें डबोवता ताहि ॥ ३७८ ॥
 ओरां सूं करता एहवो उपगार, थारा भणीया रो ओहीज सार ।
 इसडो कूड कपट थें चलायो, थारो छूटको किण विध थायो ॥ ३७९ ॥

थें तो जिण मारग मे हुआ ठगो, थे दीयो घणा नें दगो ।
 ठग ठग खावा लोका रा माल, थारो होसी कुण हवाल ॥ ३८० ॥
 आछी वसत हूती घर माहि, आहार पांणी कपडादिक ताहि ।
 थानें गुर जाणे हरख सूं देता, सो थारा तो अे निकल गया पेंता ॥ ३८१ ॥
 म्हे थानें वादता वारूंवार, जद म्हाने हुवतो हरप अपार ।
 थाने जाणता सुघ आचारी, थे छाने र्ह्यां अणाचारी ॥ ३८२ ॥
 म्हे थाने जाणता था पुरष मोटा, पिण थे तो निकल गया खोटा ।
 म्हे थानें जाणता उत्तम साध, थे तो होय नीवरीया असाव ॥ ३८३ ॥
 थे जाणे र्ह्या दोपीला माह्यो, ठागा सू थे कांम चलायो ।
 थे जीतव जनम विगास्थो, नरनो भव निरथक हास्थो ॥ ३८४ ॥
 थें घणा दिनां रा कह्यो छो दोष, थारी वात दीसे छे फोक ।
 साच भूठ तो केवली जाणे, छदमस्थ तो परतीत नाणे ॥ ३८५ ॥
 थें हेत माहे तो दोपण ढाक्या, हेत तूटे कहिता नही साक्या ।
 थारी किम आवे परतीत, थाने जाण लीया विपरीत ॥ ३८६ ॥
 थे दोपीला सूं कीयो आहार, जद पिण नही डरीया लिंगार ।
 तो हिवें आल देता किम डरसी, थारी परतीत मूरख करसी ॥ ३८७ ॥
 अे थे दोष क्याने कीया भेला, अे थें क्यूं न कहा तिण वेला ।
 थामे साध तणी रीत हुवेतो, जिण दिन रो जिण दिन केतो ॥ ३८८ ॥
 थे दोपीला सूं कीयो सभोग, थारा वरतीया माठा जोग ।
 थारी परतीत नावे म्हाने, थारा दोष राख्या थे छाने ॥ ३८९ ॥
 थे तों कीघो अकारज मोटो, जिण मारग मे चलायो खोटो ।
 थारी भिष्ट हुइ मति बुध, हिवे प्राच्छित ले होवो सुघ ॥ ३९० ॥
 उणरी तो थारा कहा सूं सक, पिण तू तो दोपीलो निसक ।
 इम कहि उणने घालणो कूडो, घणा वेठां देणी मुख धूडो ॥ ३९१ ॥
 ज्यूं कोइ कले न दूजीवार, किणराई दोप न ढाके लिंगार ।
 दोष ढाक्यां हुवे घणी खुवारी, टाको भलें तो अनंत ससारी ॥ ३९२ ॥
 संका सहीत ने राखे माय, तो ओर साध दोपीला न थाय ।
 दोपीला ने जांणी राखे माय, तो सगलाई असाध थाय ॥ ३९३ ॥
 इम कहां यानें जाव न आवे, जव भूठी भूठी वाता वणावे ।
 थारा दोष न कहा म्हे डरते, गुर सू पिण लाजा मरते ॥ ३९४ ॥
 रखे कर दे मोनें टोला बारे, मुदे तो ओहीज डर र्ह्यो म्हारे ।
 म्हे दोष सेव्या थारे कहे जाण, या सेव्या री करी तांण ॥ ३९५ ॥

कदे देतों हूं दोष बताय, जब म्हारी देता वात उडाय ।
 म्हां एकला री आसंग नही कांय, तिण सूं रह्यो दोषीलां मांय ॥ ३९६ ॥
 हिवें तों हुआ म्हे दोय, दोप सेवण न दचां कोय ।
 इसडी जोमरी वातां वणावे, मन मानें ज्यूं गोला चलावे ॥ ३९७ ॥
 जब यानें पाछो कहिणो एम, थारो साधपणो रह्यो केम ।
 थें डरता अकारज कीवो, तिणरो प्राच्छित पिण नही लीवो ॥ ३९८ ॥
 कदा गुर काचो पाणी मंगावत, तो थें डरता थकां भर ल्यावत ।
 करावत पाप हर कोई, तो थें डरता करता सोई ॥ ३९९ ॥
 कदा गुर पिण भारी पाप करता, तोही थें तो भेला रहिता डरता ।
 भागलां माहें रहिता खूंता, पिण थें एकला कदेय न हूंता ॥ ४०० ॥
 इसडी थारी गीदडाई, थेंइज थारे मुख सूं वताई ।
 इसडा पाक्रम थां माहे पावें, थारी आगा सूं परतीत नावें ॥ ४०१ ॥
 साधां नें डरतो मूल न रहिणो, दोष देखे सताव सूं कहिणो ।
 डरता न कह्या तो थें गीदड पूरा, हिवें किण विघ होसो थें सुरा ॥ ४०२ ॥
 एकला होयवा सूं डरते, दोष न कह्या थें लाजां मरते ।
 तो हिवे ढाकोला दोप अनेक, जाणे होय जावांला एक एक ॥ ४०३ ॥
 हिवें थारे दोयां रे माय, कोइ दोप दे अनेक लगाय ।
 तो पिण चावा न करो लाजां मरता, एकला होण सूं वले डरता ॥ ४०४ ॥
 एकला होण सूं डरो दोई, मांहोमा दोप देसो लकोई ।
 आ देख लीधी थारी रीत, हिवें जावक नावें परतीत ॥ ४०५ ॥
 थारे तो मांहोमां दोप देख, हिवे तो ढांकसो वशेख ।
 एकला होवण रो डर थानं, मांहोमां दोप राखसो छाने ॥ ४०६ ॥
 जो हिवें कहो म्हे न राखां छानें, तो हिवे वात थारी कुण मानें ।
 थें बेंठा परतीत गमाय, थारी मूर्ख माने वाय ॥ ४०७ ॥
 किणही चोर रो हुवो उघाडों, फिट फिट हुवो सहर मभारो ।
 घणा लोकां जाणीया तास, पछे कुण करे तिणरो वेसास ॥ ४०८ ॥
 ज्यूं थारो पिण हुवो उघाडों, दोपीलां भेलो काढ्यो जमारो ।
 परगट न कीया त्यारा दोष, थें जनम गमायो फोक ॥ ४०९ ॥
 एक दोप सेवें नित साध, तिण संजम दीयो विराध ।
 तिणने गुर जाण नें वांदे कोय, तो उ अनंत संसारी होय ॥ ४१० ॥
 तो घणा दोप जाणें थें साख्यात, त्यानें जाणे वांद्यां दिनरात ।
 तो थें पूरा अग्यांनी वाल, थें रुलसो कितोएक काल ॥ ४११ ॥

एक दोष रो सेवणहार, तिण वादचा वधे अनत ससार ।
 थें घणा दोष जाण्यां त्यां माय, त्यांरा हीज वादचा नित नित पाप ॥ ४१२ ॥
 भागलां रा वादचा जाणें पायो, जिण मारग माहे ठगो चलायो ।
 रह्या कूड कपट माहे भूल, हिचे थारो होसी कुण सूल ॥ ४१३ ॥
 जो थे गुर माहे दोष वताया, घणा वरस थे राख्या छिपाया ।
 तिण लेखें पिण थेंडज भूडा, ग्यांनादिक गुण खोई वूडा ॥ ४१४ ॥
 जो थे दोष कह्या यामे कूरा, जव तो थे जावक वूडा पूरा ।
 थें दीया अणहूता आल, हिचें सलसो कितो एक काल ॥ ४१५ ॥
 थें दोनूं विध वूडा इण लेखे, साच भूठ तों केवली देखें ।
 छदमस्थ तों या अेह्लाणें, थानें जावक भूठा जाणें ॥ ४१६ ॥
 यां कने पेहला अवगुण कहिवाय, पछे खिष्ट करे इण न्याय ।
 यांरा वचन ने सेठा भाले, यानें पग २ भूठा घाले ॥ ४१७ ॥
 याने जाव न आवे पूरा, चरचा करता परजाअें कूरा ।
 ज्यू बोले ज्यू पकडावे, भागवा री सेरी न पावे ॥ ४१८ ॥
 अें तों अवगुण बोले अनेक, वृधवंत नही माने एक ।
 यानें जाणे पूरा अवनीत, यारी मूल नाणे परतीत ॥ ४१९ ॥
 अवनीतां रो करे वेसास, तो हुवे बोध वीज रो नास ।
 च्यार तीरथ सूं पडीया कानें, त्यारी वात अग्यानी माने ॥ ४२० ॥
 अविनीतां रो करे परसग, तो साधां सूं जाअें मन भग ।
 अे साधा ने अमाध सरचावे, भूठा २ अवगुण वतावे ॥ ४२१ ॥
 यांरो जाय सुणे वखाण, तिण लोपी जिणवर आण ।
 यांरी तहत करे कोड वाणी, आ दुरगत नी अेंलाणी ॥ ४२२ ॥
 किणरें उसभ उदे हुवे आण, ते करे अविनीत री ताण ।
 त्यां भूठा नें साचा दे ठेहराई, त्यारे अनत संसार री साई ॥ ४२३ ॥
 यानें कहि वतलावे सामी, तिणमे पिण जाणजों मोटी खामी ।
 यानें उचो करे कोड हाथ, तिणरे निग्चे वधे कर्म सात ॥ ४२४ ॥
 यांरो जाय वखाण मंडावे, वले ओर लोकां ने बोलावे ।
 इसडी कोड करे दलाली, ते पिण धर्म सूं होय जाए खाली ॥ ४२५ ॥
 यानें च्यार तीरथ माहे जाणे, ते पिण पेहले गुणठाणे ।
 यांरी करे कोड पखपात, तिणरें आय चूको मिथ्यात ॥ ४२६ ॥
 यांसूं करे आलाप सलाप, तिणरे पिण वधे चीकणा पाप ।
 यानें वंदणा करे जोडी हाथ, तिणरे वेगो आवे मिथ्यात ॥ ४२७ ॥

यांरी भाव भगत करे कोइ, वले आदर सनमान दे सोई ।
 तिणरें सरखा न दीसे साची, गुर री पिण परतीत काची ॥ ४२८ ॥
 यांसूं करे विनो नरमाई, तिणरें लागी मिथ्यात री साई ।
 घणों २ जो यां कर्नें जावे, ते समकत वेगी गमावे ॥ ४२९ ॥
 अँ अवनीत नें भागल पूरा, वले आल दे कूडा कूडा ।
 त्यांरी मान लेवे कोई वात, ते तों बूढ चूका साख्यात ॥ ४३० ॥
 कोइ भणवा रा लालच रो घाल्यो, त्यांरे कर्नें जावें कोई चाल्यो ।
 ते तों गुर रो न मानें हटको, तिणरो तो हुंतो दीसे छे गटको ॥ ४३१ ॥
 चरचा बोल सीखे त्यां आगे, तिणरें डंक मिथ्यात रो लागे ।
 यांरो संसतो परचों न करणो, यांरो संग जाबक परहरणो ॥ ४३२ ॥
 समकत रा अतिचार संभालो, तो अवनीत सूं देजो टालो ।
 जोवो आणंद श्रावक री रीत, राखो सूतर री परतीत ॥ ४३३ ॥
 अँ अवगुण बोलें चिठाय चिठाय, किणही भोला रे संक पड जाय ।
 जो उ न करे त्यांरी पवपात, तिणरो काढणों सोहरो मिथ्यात ॥ ४३४ ॥
 त्यांरी गाढी भाले पष कोई, ते नहीं छोडे भूटा जाणें तोही ।
 ते बूडसी अवनीतां रे लारें, त्यां अहली दीयो जनम विगाडें ॥ ४३५ ॥
 कोई लीधी टेक न मेले, आपरें मन मानें ज्यूं ठेले ।
 जिण धर्म री रीत न जाणें, मूढ मूर्ख थको यूंही ताणें ॥ ४३६ ॥
 यां कर्नें करे कोई पोसो समाई, यां कर्नें करे पचखाण जाई ।
 तिणरी पिण जाणजो मति काची, जिण मारग में न कीधी आछी ॥ ४३७ ॥
 जे अवनीत रा पपपाती, त्यांरी सुण २ वल उठे छाती ।
 अवनीतां रो करे उघाड, जब पिण मूढो देवे विगाड ॥ ४३८ ॥
 कोई गण में हुवे अवनीत, तिण सूं गाठी बांधे पीत ।
 ते पिण ओगुण बोलावण कांम, इसडा छे मेला परिणांम ॥ ४३९ ॥
 जिणरो धेव छे घणा दिन पेलो, दुष्ट परिणांमी जीव छे मेलो ।
 तिणरें उदे हुवे कर्म मिथ्यात, ते तुरत मानें त्यांरी वात ॥ ४४० ॥
 ते अवनीतां री करे पवपात, तिणरे आय चूको मिथ्यात ।
 खप करे त्यांरी करवा थाप, तिणरें उसभ उदे हुवा पाप ॥ ४४१ ॥
 जाणें अभिमांनी ने अवनीत, तोही राखे त्यांरी परतीत ।
 तिणरे प्रतष पूरो अंधारो, बूडें छे अवनीत रे लारो ॥ ४४२ ॥
 जिणनें गुर रा अवगुण सुहावे, ते अवनीत नें मूढे लगावे ।
 त्यां कर्नें गुर रा अवगुण बोलावे, पछे लोकां में आप फेंलावे ॥ ४४३ ॥

करे जिण तिण आयं वात, करे अवनीता री पखपात ।
 अवनीता ने साचा साचा सरघावे, गुर माहे अवगुण दरसावे ॥ ४४४ ॥
 वादें तो गुर नें सीस नाम, करे अवनीता रा गुणग्राम ।
 ते होय वेंठा अवनीता री लारी, वले ओरा ने खपें करवा खुवारी ॥ ४४५ ॥
 गुर सू लोकां रा परिणाम फारें, आप विगड्यो ओरा नें विगाडे ।
 इसडो श्रावक वेसासघाती, ते पिण होयचूको मिथ्याती ॥ ४४६ ॥
 गुर री साची वात दे ठेली, अवनीतां रो होय जाए वेली ।
 हरकोई अवनीत छूटे, तिणरो वेली होय उठे ॥ ४४७ ॥
 साधा रा अवगुण अवनीत बोले, तिण सूं वात करे दिल खोले ।
 अवनीत ने मिलीया अवनीत, त्यारी तेहीज करे प्रतीत ॥ ४४८ ॥
 गुर सू पिण जावक नही तोडें, अवनीत सू पिण सटकें नही जोडें ।
 धरपाधर रह्या छे देख, छल छिदर जोवे छे वशेख ॥ ४४९ ॥
 जो अवनीता ने लोक न मानें, तो आप पिण होय जाए काने ।
 अणसरते दबीया रहे माहिं, पिण लखण भदर लीया ताहिं ॥ ४५० ॥
 केई श्रावक दोपडपीटा, ते पिण पडीया यारे सग फीटा ।
 जो कोई बंध निकाचत पाडें, ते पिण अनत संसार वघारे ॥ ४५१ ॥
 केई श्रावक भागल साख्यात, ते भागला री करे पखपात ।
 जाणे चोर सूं मिल गई कुती, भूठी वाता करे अणहूती ॥ ४५२ ॥
 ते भागलां नें कहे उतकिष्टो, तिणरी पिण मति होइ गई मिष्टो ।
 तिण भागल नें भागल मिल्या, जब पूरीजे मन रलीया ॥ ४५३ ॥
 असाधा नें सरघे साध, साधा नें सरघे असाध ।
 दोनूं प्रकारें मूरख बूडे, ते पिण जाय बेससी तूडे ॥ ४५४ ॥
 एहवा अभिमानी ने अवनीत, होसी चिहुगति माहे फजीत ।
 याने भूंडा कह्या लोका आगे, यारा पखपाती रे दाह लागे ॥ ४५५ ॥
 ए समचे भाव कह्या छे जाण, कोई आप म लीजो ताण ।
 एहवा अवगुण छे जिण माय, ते छोड्या विण सुख नही थाय ॥ ४५६ ॥
 ए विगडायल जेन रा पूरा, त्याने कर दीया गण सू दूरा ।
 लाज सरम त्या अलगी मेली, भेषघारी भागल त्यारा वेली ॥ ४५७ ॥
 ए साधां मे दोष बतावे, ते भेषघाख्या रे मन भावे ।
 यारी ठडी कीधी या छाती, ए पिण हुवा त्यारा पखपाती ॥ ४५८ ॥
 या तो दुरगत री नीव दीधी, भेषघाख्या रे खरची कीधी ।
 इण खरची सू होसी खुराव, पडसी चिहु गति माहे आव ॥ ४५९ ॥

ए तो आगेइ देता था आल, ते भूठ रो क्यानें काढें नीकाल ।
 ओ सहजें पडीयो भूठ पानें, हिवें ए क्यानें राख्या छानें ॥ ४६० ॥
 भेषवाख्यां रा श्रावक आवे, त्यासूं तो घणा मिल जावे ।
 त्यानें मीठा वचनां बोलावे, त्यां आगें गुर में दोष वतावे ॥ ४६१ ॥
 जब ए पिण राजी होय जावे, असणादिक आछी रीत वेंहरावे ।
 वले ए पिण यांनें पोगां चढावे, वाळ्वार अवगुण बोलावे ॥ ४६२ ॥
 वले मांहोमां कलहो दें लगाइ, आमी सामी भेटी मेलें ताहि ।
 यारे आगेई साध सूं घेष, तिणसूं यांरी मानें वसेष ॥ ४६३ ॥
 वले यांनें पूछें केइ एम, थानें गण बारे काढीया केम ।
 जब ए कहे म्हांनें काढें क्यानें, म्हें तो ढीला जाणें छोड्या यांने ॥ ४६४ ॥
 इसडा भूठ बोळें जाण जाण, तिणरो कठें नहीं परमाण ।
 यांनें छोड्या एकीकानें ताय, तका तो वात दीधी छिपाय ॥ ४६५ ॥
 कमलप्रभ आचार्य नें देखो, तिण विचे यांरी विगडी वसेखों ।
 उण वचन फेखो एकवार, तों हलीयो अनंत संसार ॥ ४६६ ॥
 ए तों बके घणा दिनरात, कूड कपट सहीत करे वात ।
 वले विवचपणें देवे आल, तों ए रलसी कितोएक काल ॥ ४६७ ॥
 इसडा अनंत हुआ नें होसी, परभव सामो विरला जोसी ।
 वले आरा आजूणा मांहि, म्हें पिण देख लीया छे ताहि ॥ ४६८ ॥
 ए भाव कह्या तिण मांहि, कोई बोल टले छे ताहि ।
 केई अणुसारें मेल्या छे न्याय, कोई बोली रो फेर छे मांय ॥ ४६९ ॥
 इत्यादिक यांमें आंगुण जाण, जब लागा छे जहर समांण ।
 यांनें निन्व जाणें कीया दूर, तिणमें मूल म जांणजों कूड ॥ ४७० ॥
 सेतीसें वरस संवत अठारें, काती सुद एकम सनीसरवार ।
 निन्व भागल रो विसतार, कीघो पाहु गाम मभार ॥ ४७१ ॥

